मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश

संपादक

जयंत कोठारी

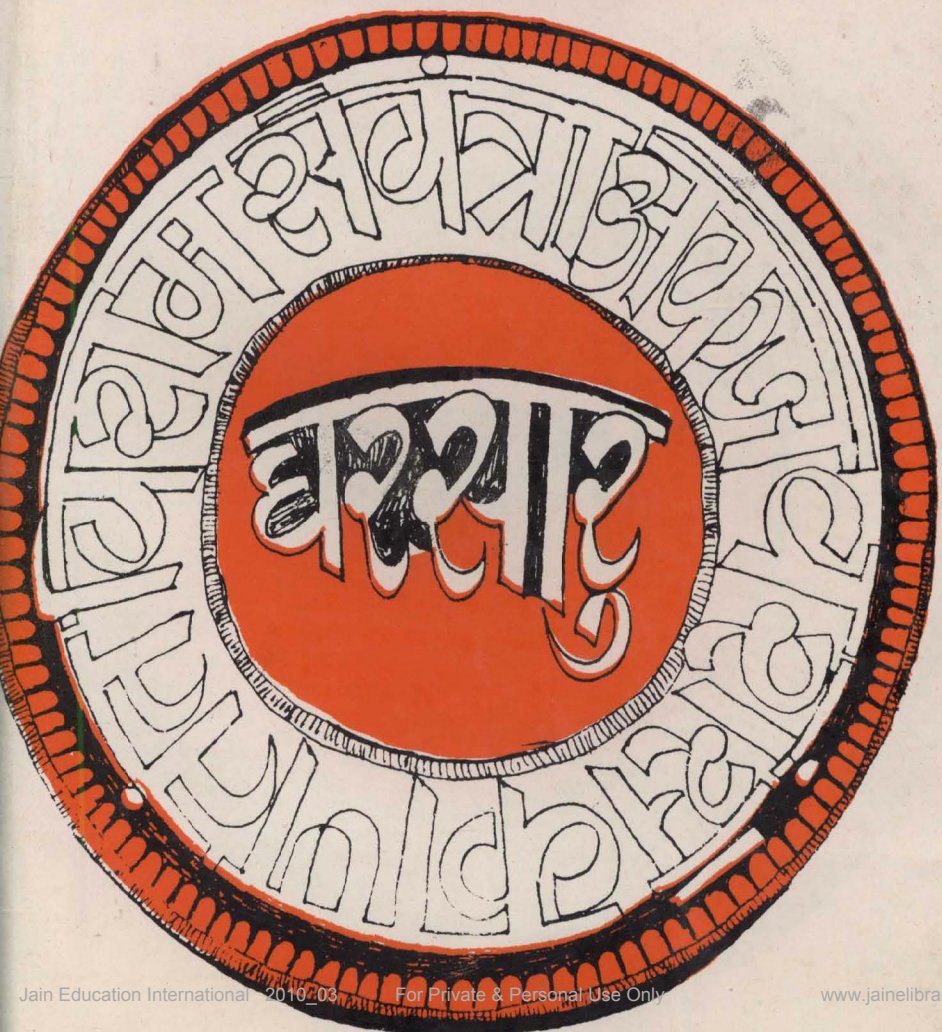

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयंत कोठारी (ज.२८-१-१९३०) अमदावादनी कॉलेजोमां गुजराती भाषासाहित्यना अध्यापक तरीके वर्षो सुधी कार्य करी निवृत्त थया छे. वच्चे गुजराती साहित्य परिषदमां 'गुजराती साहित्यकोश (मध्यकालीन)'ना संपादक तरीके (१९८१–१९८४) अने मानार्ह संपादक तरीके (१९८४–१९८७) कार्य कर्युं.

एमनी बीजी महत्त्वनी कामगीरी ते मोहनलाल दलीचंद देशाई संयोजित 'जैन गूर्जर कविओ'नुं नवसंस्करण. एना सात भाग प्रसिद्ध थई चूक्या छे (१९८६–१९९१) अने आठमो भाग मुद्रणाधीन छे.

एक ज विषयनी छ मध्यकालीन गुजराती कृतिओने समावती ने एमनो तुलनात्मक अभ्यास रजू करती 'आरामशोभा रासमाळा' (१९८९) एमनुं एक नमूनेदार संपादन छे.

साहित्यना तत्त्वविचार, विवेचन, संशोधन ने आस्वादनी एमनी प्रवृत्ति 'भारतीय काव्यसिद्धांत' (नटुभाई राजपरा साथे, १९६०)थी मांडीने आज सुधी अनवरत चालती रही छे अने आ प्रकारना १५ ग्रंथो एमनी पासेथी मळ्या छे.

१९९४मां पांचमी आवृत्तिमां प्रवेशेल 'भाषापरिचय अने गुजराती भाषानुं स्वरूप' (१९७४) स्नातक कक्षाना शिक्षणनी आवश्यकता पूरी पाडनार अनन्य ग्रंथ बनी रह्यो छे. शाळाकक्षानां व्याकरणोमां पण एमणे पोतीकी सूझथी काम कर्युं छे.

आ उपरात एमणे शैक्षणिक जरूरियातने अनुलक्षीने तेमज बीजां घणां साहित्यिक संपादनो पण कर्यां छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षण निधि

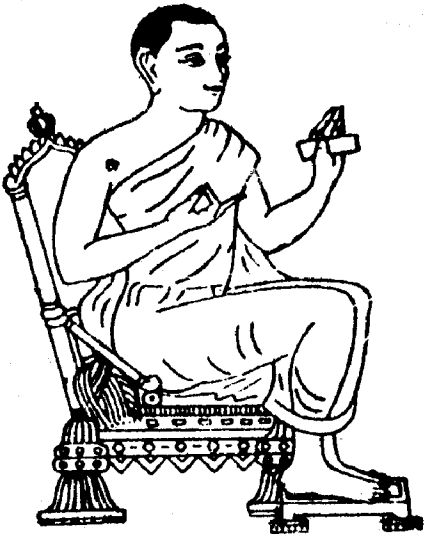

श्री हेमचन्द्राचार्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सम्यक् प्रयुक्तः
स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति ।

•

योग्य रीते जाणेलो अने योग्य रीते प्रयोजायेलो एक शब्द
स्वर्गमां अने पृथ्वीमां इच्छित सर्व आपनार नीवडे छे.

पतंजलि

इदम् अन्धम् तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् ।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिः आसंसारं न दीप्यते ॥

•

जो समस्त संसारमां शब्द नामे ज्योति प्रकाशे नहीं
तो आ त्रिभुवन आखुं गाढ अंधकार रूपे परिणमे.

दंडी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश

संपादक
जयंत कोठारी

प्रकाशक
कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षण निधि
अमदावाद

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Madhyakālīna Gujarātī Śabdakośa (Medieval Gujarati Dictionary), ed. Jayant Kothari, Pub. Kalikāla-Sarvajña Śri Hemcandrācārya Janma-Śatābdī Smṛti Saṁskāra Śikṣana Nidhi, Ahmedabad, 1995

© जयंत कोठारी, रोहित कोठारी

प्रथम आवृत्ति : जून १९९५
नकल : १०००

किंमत : रू. ३००.००

प्रकाशक :
कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षण निधि,
लालभाई दलपतभाईनो वंडो, पानकोरनाका, अमदावाद ३८० ००१

विक्रेताओ :
१. गूर्जर साहित्य भवन, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८० ००१
२. आर. आर. शेठनी कंपनी, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८० ००१
तथा शामळदास गांधी मार्ग, मुंबई ४०० ००२
३. के. बी. बुकसेलर्स, बालाहनुमान, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८० ००१
४. सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथीखाना, रतनपोळ, अमदावाद ३८० ००१

लेसर टाइपसेटिंग अने मुद्रणस्थान :
निर्मळाबहेन ठाकोरलाल शाह
शारदा मुद्रणालय
जुम्मा मस्जिद सामे, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८०००१

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्गत भूगुराय अंजारियाने

आ काम करती वखते सतत सामे रह्या ते तमे ज,
पोताथीये जलदी राजी न थनारा,
विषयने संलग्न सर्व कंई खूंदी वळनारा
ने संपूर्णता माटे मथ्या करनारा तमे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आर्थिक सहयोग

- श्री प्राकृत जैन विद्याविकास फंड, अमदावाद
- श्री शाहपुरी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, कोल्हापुर
- श्री विश्वनंदीकर जैन संघ, पालडी, अमदावाद
- श्री प्रेमवर्धक घंटाकर्ण महावीरदेव ट्रस्ट, धरणीधर सोसायटी, अमदावाद

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय निवेदन

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यनी नवमी जन्मशताब्दीनी मंगल स्मृतिमां, पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसूर्योदयसूरीश्वरजी महाराजनी शुभ प्रेरणाथी स्थपायेला आ ट्रस्टना माध्यमथी, भारतीय संस्कृतिना अणमोल वारसारूप अनेक ग्रन्थोना प्रकाशन रूपे सम्यग्ज्ञाननी भक्ति करवानो अवसर प्राप्त थतो रहे छे ते ट्रस्ट माटे धन्य अनुभव छे. पं. श्री शीलचन्द्रविजयजी गणिनी प्रेरणाथी आपणा साहित्यना तथा आपणी भाषाना नामांकित मूर्धन्य विद्वज्जनो द्वारा सर्जित अने संशोधित-संपादित प्रकाशनोने मुद्रित करवानुं श्रेय आ ट्रस्टने मळतुं रहे छे ते पण गौरवनी वात छे.

आपणा, मध्यकालीन गुर्जर साहित्यना प्रकांड अभ्यासी विद्वान प्रा. श्री जयंतभाई कोठारीए, वर्षोना सूझबूझभर्या परिश्रमना अंते 'मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश' नामे आ एक सुन्दर सन्दर्भग्रंथ तैयार कर्यो छे. "मध्यकालीन साहित्यना अध्येताओ माटे आ कोश एक मार्गदर्शक दीवादांडीरूप बनी रहे तेम छे, अने तेथी ट्रस्ट द्वारा एनुं प्रकाशन करवा योग्य छे," एवी प्रेरणा अमने पं. श्री शीलचन्द्रविजयजी द्वारा प्राप्त थतां ज, अमोए ते प्रेरणाने वधावी लीधी, अने प्रा. जयंतभाईए तथा प्राकृत जैन विद्याविकास फंडना डॉ. के. आर. चन्द्राए अमारी विनंति स्वीकारीने आ प्रकाशननो लाभ अमारा ट्रस्टने आप्यो ते बदल अमो तेओना खूब ऋणी रहीशुं. प्राकृत जैन विद्याविकास फंडे आ ग्रंथना प्रकाशनखर्चमां रू. ३०,०००नुं मातबर योगदान आपेल छे तेनी पण अमे साभार नोंध लईए छीए.

आपणा मूर्धन्य कवि श्री उमाशंकर जोशीए "जे जन्मतां आशिष हेमचन्द्रनी पामी विरागी जिन-साधुओ तणी" एम कहीने गुर्जरी गिरानो अनुबन्ध श्री हेमचन्द्राचार्य साथे जोडी आप्यो छे ए ज गुर्जर साहित्य-गत शब्दोनो कोश श्री हेमचन्द्राचार्यना नाम साथे जोडायेला एक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित थाय त्यारे एक सुभग योगानुयोग सहजपणे रचातो अनुभवाय छे.

आ प्रकाशन माटे विविध धर्मसंस्थाओए आर्थिक सहयोग आप्यो छे ते सौनो हार्दिक आभार मानीए छीए.

आ कोशनो जिज्ञासुओ खूब उपयोग करे तेवी भावना साथे

मार्च, १९९५
लालभाई दलपतभाईनो वंडो
पानकोर नाका
अमदावाद ३८० ००१

कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षण निधिनो ट्रस्टीगण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादकनुं निवेदन

मध्यकालीन गुजराती साहित्यनी कृतिओ साथे काम पाडवानुं थतुं हतुं त्यारे मध्यकालीन गुजराती शब्दकोशनी खोट हंमेशां सालती हती. केटलांक मध्यकालीन कृतिसंपादनोमां शब्दकोश छे एनी मदद लेवानो प्रयास हुं करतो हतो. पण एकाद शब्द माटे आम जुदाजुदा ग्रंथोना शब्दकोशो जोवानुं घणुं अगवडभर्युं हतुं. ए श्रम पछीये कशुं हाथमां न आवे एम बने. आ परथी विचार आव्यो के संपादित ग्रंथोमां रहेला शब्दकोशोने संकलित करी लेवानुं तो, ओछामां ओछुं, थवुं जोईए. एनी व्यवस्थित योजना करवानी तो मने अनुकूळता नहोती पण मारा अंगत रसथी अने अंगत उपयोग माटे में मध्यकालीन संपादित कृतिओना शब्दकोशोनां कार्ड करावववानुं शरू कर्युं. ए काम घणुं धीमुं चालतुं केमके केटलाक ग्रंथोमां 'करइ' जेवा सामान्य उच्चारभेदवाळा तेमज आजे जाणीता घणा शब्दो पण शब्दकोशमां समावाया हता ते बाद करीने कार्ड करवा आपवानुं मारे थतुं.

आ काम शरू कर्या पछी एक वखत डॉ. हरिवल्लभ भायाणी साथे मारे वात थई. एमणे आने बदले कृतिओमांथी सीधा ज शब्दो लेवानुं अने प्रथम तबक्के चौदमी-पंदरमी सदी सुधीनी कृतिओने ज समाववानुं सूचन कर्युं; एमनी पासे आवां केटलांक कार्ड तैयार हतां ते तेओ मने आपशे एम पण कह्युं. मने ए काम मारी शक्ति बहारनुं लाग्युं. कृतिओमां तो अनेक एवा शब्दो पडेला होवाना (ने संपादके जो शब्दकोश कर्यो होय तो एमां समावेश न पामेला होवाना) जेना अर्थो निर्णीत करवानुं अत्यंत कपरुं होवानुं. आरंभकाळनी कृतिओमां तो स्वाभाविक रीते अपभ्रंश शब्दोनुं घणुं भरणुं होय. मारा जेवा प्राकृत-अपभ्रंशथी अनभिज्ञ माणसनुं एमां शुं गजुं ? अंधारामां अथडावानुं ज थाय, खोवाई जवानुं ज थाय. में कह्युं, "ए काम तो डॉ. भायाणी ज करी शके." तैयार शब्दकोशोमां केटलीक तकलीफो तो होवानी, पण एमां जे-ते ग्रंथना संपादके करेला श्रमनो लाभ मळे अने एने सहारे आगळ वधवानुं सुकर बने.

डॉ. भायाणी मारी साथे संमत थया हता एवुं तो नहीं, परंतु एमणे एमनी लाक्षणिक उदार विद्याप्रीतिथी मने मारे मार्गे जवा दीधो. एटलुं ज नहीं, हुं गुजराती साहित्य परिषदना साहित्यकोशना कार्यमांथी परवारवामां हतो त्यारे मे १९८७मां तो एमणे प्राकृत जैन विद्याविकास फंडना मंत्री डॉ. चन्द्रानो प्रस्ताव मारी समक्ष मूक्यो के हुं मारी रीतनो मध्यकालीन शब्दकोश तैयार करी आपुं. त्यां सुधीमां तो बहु ओछां पुस्तकोनां कार्ड तैयार थयां हतां ने चकासणीनुं काम तो आरंभायुं ज नहोतुं, परंतु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यकोशना कार्यमांथी हुं परवारवामां होई हवे आ योजना पाछळ वधु समय आपवानी स्थितिमां हुं हतो तेथी में ए प्रस्ताव होंशथी स्वीकारी लीधो.

प्राप्त शब्दकोशोने केवळ संकलित करी लेवानो आशय तो नहोतो. एक शक्य तेटलो प्रमाणभूत कोश रचवानो आशय हतो. जे-ते संपादके पोताने प्राप्त साधनो ने पोतानी सज्ञता तथा समजने आधारे अर्थ आप्या होय. अनुमानथी अर्थ आपवानुं बनी गयुं होय अने क्यांक गेरसमज पण प्रवर्ती होय. आजनी आपणी समज अने आजे प्राप्त साधनथी अर्थोने चकासीए तो ज प्रमाणभूत कोश ऊभो थई शके. अर्थोने त्यारे ज चकासी शकाय ज्यारे शब्दनो ज्यां प्रयोग थयो होय ए स्थान सुधी आपणे पहोंचीए. आथी आ योजनामां एवी मर्यादा पहेलेथी ज स्वीकारी हती के आमां एवा शब्दकोशो ज संकलित करवा जेमां शब्दो वर्णानुक्रमे अपायेला होय अने शब्द कृतिमां जे स्थाने वपरायो होय तेनो निर्देश होय.

बधा शब्दार्थो कंई चकासी शकाय नहीं, चकासवाना होय नहीं, ज्यां शंका जाय त्यां ज चकासी शकाय. पण चकासीने सुधारवा पडे एवा शब्दार्थो धार्या करतां घणा वधारे नीकळ्या. डॉ. भायाणीने आ प्रकारना संकलन सामे जे वांधो हतो के एमां साफसूफीनी महेनत वधी पडे ने एना करतां तो कृतिमांथी ज स्वतंत्र रीते कोश करवानुं सुगम पडे एनुं वाजबीपणुं समजाय एवी परिस्थिति सामे आवी. आम छतां में जोयुं के कृतिमां तो शब्दकोशमां न समावायेला होय एवा घणा कूट शब्दो पडेला हता अने शब्दकोशोमां पण विद्वानोए घणे स्थाने, हुं सहेलाईथी ज्यां पहोंची शक्यो न होत एवा अर्थो निर्णीत करी आपेला हता. चकासवा पडे एवां घणां स्थानो मळवा छतां मने जे तैयार सामग्री मळती हती ए ओछी न हती अने स्वतंत्र रीते कोश करवानुं काम तो आथी अनेकगणुं महेनतभर्युं बनी गयुं होत, मारा गजा बहारनुं बनी गयुं होत ए प्रतीति तो मारी छेवटे रही ज.

कृतिमांथी सीधा शब्दो लईने तैयार करेला शब्दकोशनुं महत्त्व स्वयंस्पष्ट छे. एनुं स्थान आ संकलित कोश न ज लई शके. पण ए कदाच एक व्यक्तिनुं काम न होई शके, ए एक व्यवस्थित विभाग द्वारा ज वधारे सारी रीते थई शके. एमां पण डॉ. भायाणीए विचार्युं हतुं तेम बारमी सदीथी सैकावार जवानुं ज ठीक पडे. मने तो एम लागे छे के पहेलां एक-एक कृतिना विस्तृत ने सर्वग्राही कोशो तैयार करवा जोईए. 'षडावश्यक बालावबोध' के 'विमलप्रबंध' जेवी कृतिओना केटलाबधा लाक्षणिक मध्यकालीन शब्दो त्यां आपेला शब्दकोशनी बहार रह्या छे ! आवी एक कृतिनो संपूर्ण शब्दकोश पण श्रमभर्यो प्रकल्प बनी रहे.

पण आपणी पासे डॉ. भायाणीए एमनां संपादनोमां आपेला अने प्राच्य विद्यामंदिरनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रंथमाळामां डॉ. सांडेसराना शब्दकोशो छे ज. डॉ. भायाणीनी प्रमाणभूतता तो अनन्य जेवी छे. आधार विना के अटकळे ए कशुं न आपे. डॉ. सांडेसराए पण पोतानी सघळी सज्ञता कामे लगाडीने ने प्रमाणमां विस्तृत शब्दकोशो आपेला छे. 'गुर्जर रासावली'मां मधुसूदन मोदीए पण केवो मोटो शब्दकोश आपेलो छे ! आ बधुं अंके करी लेवा जेवुं खरुं ज. आ सामग्री आमतेम वेरविखेर पडी रहे तेना करतां आवा कोश रूपे संकलित थाय त्यारे ज एनी खरी उपयोगिता सिद्ध थाय. आ कोशनी आ एक सार्थकता छे.

आम आ कोश पासे केटलीक उत्तम सामग्री आवी छे अने चकासवा-सुधारवानी मोटी कामगीरी पण एने करवानी थई छे. काम करतां-करतां संपादकनी नजर घडाती गई अने शंकानां स्थानो वधारे ने वधारे पकडावा लाग्यां. भेगां थयेलां घणा संदर्भो अने कोशो वगेरेमांथी चावीओ जडती गई अने डॉ. प्रबोध पंडित, डॉ. भायाणी अने डॉ. सांडेसरा जेवा आपणा प्रथम पंक्तिना विद्वानोए आपेला अर्थोने छोडवा-सुधारवानुं पण क्यांक-क्यांक एमनाथी घणा नाना आ संपादकने हाथे बन्युं जे आ कोश-रचना माटे स्वीकारेली पद्धतिनी सार्थकतानी निशानीरूप गणाय. चकासणी अने शुद्धिनी प्रक्रिया केवी झीणवट ने तीव्रताथी चाली छे ए ए परथी समजाशे के मारा पोताना ताजा ज संपादन 'आरामशोभा रासमाळा'ना थोडाक शब्दार्थो पण अहीं सुधारवाना थया छे.

आम थतां कोशनुं काम संकलन करतां वधारे तो संशोधननुं बनी गयुं. केटलीक वार तो एकएक शब्द माटे अनेक साधनो फंफोसवानां थयां. डॉ. भायाणी मने सतत थोडोक वारता रह्या. केटलाक शब्दो पाछळ महेनत करवी वृथा हती एम ए सूचवता रह्या, परंतु हाथवगां साधनोमां फरी वळवानो लोभ हुं खाळी शक्यो नहीं, भले केटलीक वार एनुं परिणाम शून्य ज आव्युं. संपादकीय कामगीरी आम विस्तरती गई तेम मारो श्रम वधतो गयो अने समय लंबातो गयो. एक वर्षमां जे कार्य करवा धार्युं हतुं एने सात वरस थयां ! केटला कलाको में आ कोशरचना पाछळ आप्या छे तेनो तो कोई हिसाब ज नथी. केटलीक वार तो दिवसना आठदश कलाक पण कोशना काम पाछळ मंड्यो रह्यो छुं. पण मने एनो थाक कदी वरतायो नथी. ऊलटुं, मध्यकालीन शब्दोनी दुनियाने में आश्चर्यवत् जोई छे ने एनी गलीकूंचीओमां भटकवानो में आनंद माण्यो छे. मारे माटे तो मारा कामनुं आ ज खरुं वळतर बनी रह्युं छे.

एक संशोधित ने शक्य तेटलो प्रमाणभूत कोश आपी शक्यानो मने उमंग छे. मारी जिंदगीनुं आ एक मोटुं अने वधु टकाउ काम हुं गणुं छुं. छतां मारा कामने मर्यादाओ वळगेली छे ए हुं समजुं छुं. डॉ. भायाणीनी जेवी नजर पहोंचे तेवी मारी न ज पहोंचे. भ्रष्ट पाठ पकडायो न होय, अर्थ बराबर न होवानी शंका ज न गई होय के में सुधारेला

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थोमां पण सरतचूक के गेरसमज काम करी गई होय. मारी सज्जता अने समजनी मर्यादाओ आ कोशरचनामां भाग भजवे ज. एटले आ कोशमां पण केटलुंक चकासणीपात्र होवानुं अने विद्वानो एवां स्थानोनी चर्चा करशे तो आपणा मध्यकालीन शब्दार्थज्ञानमां निःशंक वधारो थशे तेमज भविष्यना आथीये सध्धर कोश माटेनो मार्ग रचातो जशे.

संशोधनात्मक कोशरचना जेवुं आवुं मोटुं काम अनेक प्रकारनां साधन, सगवड अने सह्रय विना न थई शके. ए पूरां पाडनार सौनो हुं ऋणी छुं. एमां सौथी मोटुं ऋण डॉ. भायाणीनुं छे. डॉ. भायाणी होय नहीं ने आ अने आवो कोश होय नहीं. एमणे प्राकृत जैन विद्याविकास फंडने आ कोशना प्रकाशनने माटे भलामण करी अने पछीथी पण सतत मार्गदर्शन-मदद पूरां पाड्यां. कोशनुं काम व्यवस्थित शरू करतां पहेलां एमां कया प्रकारना शब्दो समाववा ए में एमने पूछीने ज नक्की कर्युं अने पछी मारी सघळी मथामण पछी कूट रहेला शब्दोना अर्थ माटेये वारंवार दोडी गयो एमनी पासे ज. आ छेल्लो कचरो हतो अने एमांथी सार शोधवानुं मुश्केल हतुं (आवा शब्दो एमना हाथमां आववाथी ज हुं कंईक वृथा श्रम करी रह्यो छुं एम डॉ. भायाणी मानता थया हता), पण बे स्थाने पण डॉ. भायाणी पासेथी प्रकाश सांपडतो हतो ए मारे माटे घणो मूल्यवान हतो. एक शब्दनो पण निश्चित रूपे साचो अर्थ हाथमां आवे एनो मने रोमांच पण हतो. मनमां तो एवुं थतुं के कोशना हजु घणा शब्दो पर डॉ. भायाणीनी नजर पडे तो केवुं सारुं ! पण, एमना अत्यंत प्रेमोत्साहभर्या सहकार छतां, मने एमनो वधु समय लेवानो हंमेशां संकोच रह्यो. जे शब्दो हुं एमने तपासवा आपतो ए पण एमने एम कहीने आपतो के तमे बहु श्रम न लेशो, सहजपणे सूझे ए ज नोंधशो. आम छतां ए घणी वार संदर्भो, आधारो पण पूरा पाडता. पाछळथी कंई याद आवे के हाथमां आवे तो तरत फोनथी जणावे. हुं पण चालु कामे कंई मूंझवण ऊभी थाय तो एमने फोनथी ज पूछी लउं. आ कोशकार्यमां डॉ. भायाणीनां हूंफाळो साथ ने शीळी छाया में हंमेशां अनुभव्यां छे. अंते, आ ग्रंथनुं प्रोत्साहक पुरोवचन लखी आपीने एमणे एमना सद्भावने जाणे शग चडावी छे.

शब्दार्थ परत्वे अन्य केटलीक व्यक्तिओनी मदद पण मळी छे. मुनिश्री प्रद्युम्नविजयजीने जैन परंपराना शब्दो विशे वारंवार पूछवानुं थयुं अने मुनिश्री शीलचन्द्रविजयजी समक्ष पण पण थोडाक शब्दो मूकेला. डॉ. भोगीलाल सांडेसराने मारी 'आरामशोभा रासमाळा' जोवानी थतां एमणे केटलाक शब्दो विशे नोंध लखी मोकलेली ते आ कोशमां मने काममां आवी ! उकेल मागता शब्दो विशे जे-ते क्षेत्रना अनुभवी ने जाणकार मित्रो-स्नेहीओ साथे तक मळ्ये गोष्ठी करी छे. यज्ञविधिना बेएक शब्दो श्री शरद पंडिते आबाद खुल्ला करी आपेला एनुं सुखद स्मरण अत्यारे थाय छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण आवा बधा प्रसंगो कंई अत्यारे याद न आवे. टीपेटीपे सरोवर भराय एवुं आ कोशरचनामां थयुं छे. आ सौ प्रत्ये हुं ऊंडी कृतज्ञता अनुभवुं छुं.

एवी ज कृतज्ञता हुं में जे शब्दकोशो वगेरे साधनोनो आ कोश रचवा माटे उपयोग कर्यो छे एमना निर्माताओ प्रत्ये पण अनुभवुं छुं. आ कोशने साधार बनाववामां एमनो फाळो घणो छे.

अने जेमना ग्रंथोनी शब्दार्थसामग्री अहीं लीधी छे एमने केम भुलाय ? एमना खभा पर तो हुं ऊभो छुं.

आ ग्रंथनां घणांखरां कार्ड अने प्रेसकॉपी दीप्ति शाहे, एक वाणिज्यना विद्यार्थी पासे सहेलाईथी आशा न राखी शकाय एवी चोकसाईथी अने एवा रसथी तैयार करी आप्यां छे. कांतिभाई शाह, कीर्तिदा जोशी, नीता कोठारी, लिपि कोठारी, गाभाजी ठाकोर वगेरे केटलाके पण प्रसंगोपात्त आ कोशना काममां हाथ बटाव्यो छे. आ प्रकारनी स्नेहभावभरी सेवा मेळववा माटे हुं मारी जातने सद्‌भागी गणुं छुं.

आवा संदर्भग्रंथना निर्माणने ग्रंथालयो ने ग्रंथपालोनी कृपा विना केम चाले ? श्रीमती सद्‌गुणा सी. यु. आर्ट्स कॉलेज ना आचार्यश्रीओ अने ग्रंथपालिका श्री मृदुलाबहेन महेताए ग्रंथालय मारे माटे हंमेशां खुल्लुं राख्युं. ने एवुं ज जी. एल. एस. आर्ट्स कॉलेजना आचार्य श्री मधुसूदन बक्षी तथा ग्रंथपाल श्री भोईवालाए कर्युं. आमणे कोईए मने विरल पुस्तको आपतां पण संकोच न अनुभव्यो ने मारे जेटलो समय राखवां पडे एटलो समय राखवा दीधां. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरनुं ग्रंथालय तो संशोधको-विद्वानो माटेनुं ज ग्रंथालय छे. एनी उदार व्यवस्थानो में भरपूर लाभ उठाव्यो छे. गाभाजी ठाकोर मारफत गुजरात युनिवर्सिटीना पण अदेय विभागनां पुस्तको मने प्राप्य बन्यां. आटला लांबा समय सुधी चालेलुं कोशकार्य ग्रंथालयोनी आ उदार मदद न मळी होत तो केवी रीते चाल्युं होत एवो विचार सहेजे आवे छे अने हृदय अत्यंत आभारवश बनी जाय छे. विद्याप्रीति अने विश्वासनुं आ परिणाम हतुं एम हुं समजुं छुं.

आ कोशनी योजना मने सोंपनार प्राकृत जैन विद्याविकास फंड अने एना मंत्री डॉ. के. आर. चन्द्रा, एने माटे प्रारंभिक आर्थिक जोगवाई पूरी पाडनार कस्तूरभाई लालभाई ट्रस्ट, एक तबक्के एना प्रकाशनमां रस बताववनार शारदाबहेन चीमनभाई एज्युकेशन रिसर्च सेन्टर तथा एना नियामक डॉ. जितेन्द्र शाह, अने छेवटे ए मोटी जवाबदारी पोताने माथे लेनार कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम शताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षण निधि तथा एमां प्रेरक बननार मुनिश्री शीलचन्द्रविजयगणी – आ सौनो हुं खरे ज उपकारवश छुं. एमणे मने एक उत्तम विद्याकार्य करवानी ने एने जाहेरमां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूकवानी तक पूरी पाडी छे. आवा ग्रंथनुं छापकाम पण घणी सूझ, चीवट अने महेनत मागे. शारदा मुद्रणालय (लेसर विभाग)ना रोहित कोठारीए अंगतभावथी सघन, सुंदर टाइपसेटिंग ने ले-आउट करी आप्या ने भाग्ये ज भूल होय एवां प्रूफ मारा सुधी पहोंचाड्यां ए एक विरल अनुभव छे ने रोहित मारो पुत्र होवाथी हुं एनो उल्लेख न करुं तो हुं नगुणो कहेवाउं. प्रेसने तो मारी मांदगीने कारणे, थयेलुं कम्पोझ घणो समय साचवी राखवानुं पण थयुं.

आजुबाजु तैयार थयेलां कार्डनां बॉक्स, जेमांथी शब्दो लेवामां आव्या होय ए पुस्तको अने शब्दकोशो तथा अन्य संदर्भग्रंथोनो पथारो करी घरमां कलाको सुधी बेसी रहेनार मने सहन करी लेनार स्वजनोना स्नेहने पण दाद आपवी ज जोईए ने ?

आ कोशरचनाए, आम, अनेक रीतना समृद्ध अनुभवनुं भाथुं पूरुं पाड्युं छे. मारी विद्यायात्रामां – अने जीवनयात्रामां – पण ए हंमेश प्रेरकपोषक बनी रहेशे – बनी रहो !

२० मार्च, १९९५ **जयंत कोठारी**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक नूतन शिखरनुं सफळ आरोहण

मित्र जयंत कोठारी एक पीढ अने खडतल पर्वतारोहक छे. तेमनी अत्यारनी कृश काया अने कांईक डगमग चाल जोईने मारुं आवुं विधान वांचतां 'तमारी मति तो ठेकाणे छे ने ?' एवो प्रश्न केटलाक जरूर करे. पण जयंतभाईए 'गुजराती साहित्यकोश (मध्यकालीन)' अने 'जैन गूर्जर कविओ'नुं नवसंस्करण – एवां बे उन्नत शिखरो सर कर्या पछी हवे आ त्रीजुं शिखर पण सर कर्युं छे – नानीमोटी टूंकोनुं तेमनुं आरोहण तो ते साथे चालु ज होय छे – ते जोतां मारा विधाननी सार्थकता अवश्य प्रतीत थशे.

मने याद छे तें प्रमाणे एक वार अमारी वच्चे जूनी गुजरातीनो शब्दकोश तैयार करवो घणो जरूरी छे एवी वात थयेली. पण सातसोएक वरसना गाळानी हजारो कृतिओमांथी शब्दसंचय करवानुं भगीरथ काम तो जो आपणी पासे जूनी गुजरातीना जाणकारोनुं तेमज कोशविज्ञानना जाणकारोनुं एक जूथ होय, अने कोई मातबर संस्था ए योजना हाथ धरे तो ज पार पडी शके ए देखीतुं हतुं. सद्गत विद्वान डॉ. भोगीलाल सांडेसरा द्वारा वडोदरा युनिवर्सिटी तरफथी जे यशस्वी प्राचीन गूर्जर ग्रंथमाळा संपादित-प्रकाशित करवामां आवी हती, तेनो एक हेतु, पछीथी, ते ग्रंथमाळामां प्रकाशित थयेली कृतिओना महत्त्वना शब्दोनुं संकलन करीने संक्षिप्त प्राचीन गुजराती कोश तैयार करवानो पण हतो एवो मारो ख्याल छे. ते पछी हुं ज्यारे गुजरात युनिवर्सिटीना भाषाभवन साथे संकळायेलो हतो त्यारे में पण ए दिशामां एक चाळो सद्गत उमाशंकरभाईनी प्रेरणाथी कर्यो हतो, अने वीशपचीश जूनी गुजराती कृतिओमांथी नोंधपात्र शब्दोनो संचय, प्रयोगवाक्योनां उद्धरणो साथे तैयार करवानुं आरंभ्युं हतुं. पण विविध कारणे तेमांथी कशुं नीपजी न शक्युं.

जयंतभाईनी विद्याप्रीति जेटली गाढ, तेटली ज तेमनी दृष्टि पण व्यवहारु. तेमणे अमारी वातचीत दरमियान कह्युं के जूनी गुजरातीनी अनेक प्रकाशित कृतिओमां अंते महत्त्वना शब्दोनी जे ससंदर्भ, सार्थ सूचिओ आपेली होय छे ते सूचिओने संकलित करवानुं काम उपयोगी अने व्यवहारु छे. थोडाक सहायकोनी मददथी ते धार्या समयमां अवश्य पार पाडी शकाय. एटलुं ज नहीं, ए कामनो पोते शुभारंभ करी दीधो होवानुं पण तेमणे मने जणाव्युं !

आ तो थोडांक वरस पहेलांनी वात. अनेक विद्याकार्यो वच्चे तेमनुं आ काम पण चालतुं रह्युं, डॉ. चंद्राए प्राकृत जैन विद्याविकास फंड द्वारा जयंतभाईनुं ए काम पुरस्कार्युं, अने साहित्यसंशोधन अने पांडित्य प्रत्ये सतत सक्रिय आदर सेवता अने

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेना प्रोत्साहन माटे दत्तचित्त मुनिश्री शीलचंद्रविजयगणिना अनन्य सद्‌भावने परिणामे हवे ए कोश अध्येताओना करकमळमां पण आवे छे.

जयंतभाईए मात्र शब्दसूचिओनुं संकलन ज नथी कर्युं. एम करे तो जयंतभाई शाना ? तेमणे ज्यांज्यां अर्थ वगेरे बाबत शंकास्पद जणाई त्यांत्यां चोकसाई अने शुद्धि करी छे, अने ते माटे अनेक कोशो उथलाव्या छे, अनेक मूळ कृतिओ के संलग्न कृतिओने तपासीने यथाशक्य प्रामाण्य साधवानी मथामण करी छे. आ कोशथी मूळ कृतिओने समजवामां सहाय मळशे, ते उपरांत घणी अर्थघटननी गूंचो पण ऊकलशे, अने तुलनात्मक सामग्री गुजराती शब्दोना इतिहास माटे पण सहायभूत बनशे. स्वास्थ्य अत्यंत खखडी गयुं हतुं, कार्यशक्ति लुप्तप्राय थवानां डरामणां एंधाण वरतातां हतां, ते बधा सामे टक्कर झीलीने दृढ संकल्पबळे आवा कोशनुं परिश्रमसाध्य काम पार पाडवा माटे 'धन्यवाद' शब्द तो घणो मोळो लागे. पण शब्दप्रयोग हीरो बने के कथीर तेनो आधार तो प्रयोजकनी भावना पर ज होय छे. जयंतभाईए जे नानो छोड उछेर्यो छे तेमांथी आगळ जतां वृक्ष बने एवी आशा अने श्रद्धा आपणे केम न राखीए ?

१ मार्च १९९५ **हरिवल्लभ भायाणी**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न वीसरवा जेवो वारसो

बारमी सदीथी ओगणीसमी सदी पूर्वार्ध सुधीनुं गुजराती साहित्य, जेने आपणे प्राचीन के मध्यकालीन गुजराती साहित्य तरीके ओळखीए छीए ए आपणो एक न वीसरवा जेवो, मूल्यवंतो वारसो छे. आम कहेवानुं प्राप्त थाय छे ते एटला माटे के ए साहित्य आपणे माटे हवे केटलुं प्रस्तुत रह्युं छे ए विशे आपणने शंका छे अने शाळा-महाशाळाना आपणा अभ्यासक्रमोमां एनुं स्थान घटतुं जई रह्युं छे. मध्यकालीन साहित्य एटले भक्तिवैराग्यनुं गाणुं अने ऊछरती पेढीने एना पाठ भणाववानुं औचित्य केटलुं एवो प्रश्न करवामां आवे छे अने महाशाळानी कक्षाए पण एना अभ्यासनी सार्थकता आपणने झाझी वरताती नथी. शाळाकक्षानां पाठ्यपुस्तकोमां मध्यकालीन कृतिओनुं प्रतिनिधित्व अत्यारे चारछ कृतिओ पूरतुं – पाठ्यपुस्तकना पांचमा-छठ्ठा भाग जेटलुं थई गयुं छे अने गुजरात युनिवर्सिटीना द्वितीय वर्ष बी.ए.ना मध्यकालीन गुजराती साहित्यना प्रश्नपत्रमां हमणां ज नर्मदयुगने जोडी दईने मध्यकालीन साहित्यना अभ्यासने पांखो बनावी देवामां आव्यो छे.

पाश्चात्य प्रजाना संपर्क पछी, आपणने एवुं लागे छे के, आपणां जीवन अने साहित्यनी दिशा एटलीबधी बदलाई गई छे के आपणे पूर्वकाळथी जाणे विच्छिन्न थई गया छीए. आपणी रहेणीकरणी, आपणां साधनसगवड, आपणां विश्वासो-मान्यताओ, आपणां ज्ञानविज्ञान, आपणां तंत्रो-संस्थाओ – आ बधांमां क्रान्तिकारक परिवर्तन आव्यां छे अने आपणा साहित्ये जुदां ज आदर्शो, प्रयोजनो अने रचनारीतिओ धारण कर्यां छे. पूर्वकाळना साहित्यमां रस लेवानुं, तेथी, आपणे माटे बहु ओछुं शक्य रह्युं छे अने ए साहित्यप्रणालिका आजे आपणने कंई काममां आवी शके एवुं पण आपणने खास देखातुं नथी. मध्यकालीन साहित्य धर्मना संकुचित वाडामां बंधायेलुं छे – जीवननी विशाळता एमां व्यक्त थती जणाती नथी, ए परंपरानिष्ठ छे – एमां मौलिकतानो अनुभव आपणने खास थतो नथी, ए हेतुलक्षी छे – एमां कळासर्जननी स्वायत्तता प्रतीत थती नथी.

ए वात साची छे के मध्यकालीन साहित्य बहुधा कंईक ने कंईक धार्मिक-सांप्रदायिक संदर्भ लईने आवे छे. आनुं कारण ए छे के मध्यकाळमां धार्मिक-सांप्रदायिक संस्थाओए साहित्यने आश्रय आप्यो छे अने वधारे अगत्यनुं तो ए छे के मध्यकाळमां प्रजाजीवन धर्मसंप्रदायबद्ध हतुं. केटलीक वार जैन साहित्यने ज सांप्रदायिकतानी छाप लगाववामां आवे छे, जाणे के जैनेतर साहित्यमां सांप्रदायिकता न होय. आ यथार्थ दर्शन नथी. ब्राह्मणधर्म के हिन्दुधर्मनां तत्त्वो विशाळ जनसमाजमां फेलायेलां छे अने इतर प्रजावर्गोनेये

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एटलांबधां परिचित छे के एमां सांप्रदायिकता भासती नथी. जैनधर्मीओए पण एमांनुं केटलुंक स्वीकारी लीधुं छे. त्यारे जैन धर्मनां तत्त्वो एटलां अन्यपरिचित नथी. नवकारमंत्रनो महिमा, नवपदपूजा, दानमहिमा, कर्मवाद, दीक्षा वगेरेमां सांप्रदायिकता छे, तो अवतारवाद, अद्वैतवाद, यज्ञयागादि कर्मो, कृष्ण-शिव-शक्तिभक्ति, वर्णाश्रमधर्म वगेरेमां सांप्रदायिकता नथी एम केम कहेवाय ? शामळनी कौतुकरसप्रधान लोकवार्ताओमां पण आवी रेखाओ तो जडवानी. हिंदु संस्कार बहुमती संस्कार छे, एनाथी अलिप्त बीजा प्रजावर्गो भाग्ये ज रही शके. त्यारे जैन, मुस्लिम, ख्रिस्ती वगेरे लघुमती संस्कार छे. ए अलग पडी जवाना अने तेथी एमां सांप्रदायिकता सहेजे प्रतीत थवानी. सांप्रदायिकतानुं ओछुंवत्तुं भारण ए जुदी चीज छे अने सांप्रदायिकताने वटी जती बौद्धिक प्रतिभा अने काव्यशक्ति प्रवर्ते ए पण जुदी बाबत छे. एथी कृतिमां धार्मिक-सांप्रदायिक संस्कारनी भूमिका होवानुं मिथ्या थतुं नथी.

मध्यकाळमां प्रजाजीवन धर्मसंप्रदायबद्ध हतुं एनो अर्थ एवो थतो नथी के ए समयना लोको, मुनशी कहे छे तेम, परलोकपरायण थई गया हता, भक्तिवैराग्यमय जीवन जीवता हता ने ऐहिक जीवनरसो परत्वे अनासक्त हता. प्रजाजीवनना केन्द्रमां धर्म हतो, पण एनी आजुबाजु संसार – एना सर्व रंगो साथे – विस्तरेलो हतो. मध्यकाळमां ज्ञानभक्तिवैराग्यनां गाणां ज मळे छे एवुं थोडुं छे ? आख्यानो, लोकवार्ताओ, रासाओ आदिनुं साहित्य पण विपुल प्रमाणमां मळे छे, जेमां ऐहिक जीवनना घणा रसो व्यक्त थया छे, भले एमां ओछोवत्तो धार्मिक संदर्भ रहेलो होय. अने भक्तिसाहित्य – खास करीने कृष्णभक्तिनुं साहित्य लौकिक मानवभावो – सहज मानवसंवेदनोथी नथी धबकतुं शुं ? मध्यकालीन साहित्य जीवनरसथी अनभिज्ञ प्रजानुं सर्जन नथी ज, भले एना जीवनादर्शो जुदा होय.

अने आपणुं जीवन पाश्चात्य संस्कृतिने रंगे शुं एटलुंबधुं रंगाई गयुं छे के आपणे मध्यकालीन साहित्य साथे कशो अनुबंध न अनुभवी शकीए ? आकाशवाणी वहेली सवारमां ज (अने पछीथी पण) भजनसंगीत रेलावे छे, लोकसाहित्यना डायराओमां लोको ऊमटे छे अने गुजराती फिल्म-उद्योग मध्यकालीन कथावार्ता पर ज नभे छे एनुं शुं ? समाजनो एक मोटो वर्ग कया वातावरणमां श्वसे छे एनो ए संकेत नथी शुं ? हिंदी फिल्मोमां निरुपातुं परंपरागत कुटुंबजीवन अने एनी समस्याओ लोकोने पोतीकां नथी लागतां ? वस्तुतः आपणुं आधुनिक जीवन पाश्चात्य संस्कारो अने परंपरागत भारतीय संस्कारोना अजब मिश्रण समुं छे. संयोगोए आपणा कुटुंबने विभक्त कर्युं छे, पण विच्छिन्न कर्युं नथी. हजु आपणे सामाजिक प्रसंगोथी, कर्तव्योथी, अपेक्षाओथी, भावनाओथी बंधायेला रह्या छीए अने सांसारिक-सामाजिक-कौटुंबिक सुखदुःखोना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुभव आपणे माटे अशेष थई गया नथी. आपणी ज्ञातिसंस्थानुं अस्तित्व मट्युं नथी, एणे नवां कार्यो स्वीकारी पोतानी जातने टकावी राखी छे. धार्मिक संस्थाओ हजु मजबूत अने प्रभावक रही छे, अने धार्मिकता-आध्यात्मिकताना नवां मोजां पण लहेरातां देखाय छे. मध्यकालीन साहित्यनी दुनिया आपणे माटे सर्वांशे पराथी थई गई होय एवुं लागतुं नथी. एमां एवा अंशो जरूर छे जेनी साथे आपणुं चित्त अनुबंध जोडी शके. ऊलटुं आधुनिक साहित्यना केटलाक मनोभावो बहुजनसमाजने पराया जेवा लागे छे अने एमां रस लेवानुं एमनाथी थतुं नथी.

मध्यकालीन साहित्यमां केटलाक जीवनप्रदेशो-अनुभवक्षेत्रो बाकात रह्यां छे जरूर, पण एनी दुनिया आपणे मानी लीधी छे एटली सांकडी छे के केम ए विचारवा जेवुं छे. स्थूळ रीते ज जोईए तो ज्ञान-भक्ति-वैराग्यना विपुल पदसाहित्य उपरांत एमां फागु-बारमासा जेवां केवळ प्रकृतिवर्णन ने मनोभाववर्णननां काव्यो छे, पौराणिक-लौकिक-ऐतिहासिक कथाकाव्यो छे, चरितकाव्यो छे, रूपककाव्यो छे, तत्त्वविचारात्मक ने खंडनमंडनात्मक कृतिओ छे, विवादकाव्यो छे, तथा अनेक प्रकीर्ण प्रकारनी कृतिओ छे. आपणा साहित्य-इतिहासो मध्यकाळना साहित्यना सर्व आविष्कारोनी पूरती नोंध भाग्ये ज लई शके छे. जेमके, आपणे गणतर ऐतिहासिक काव्योनी नोंध लई, ए प्रकारना साहित्यनी ओछपनी फरियाद करता होईए छीए, पण जैन कविओने हाथे श्रेष्ठीओ तथा साधुओनां चरित्र तेमज तीर्थयात्राओ वर्णवता जे अनेक रासाओ रचायेला छे एमां पडेली इतिहाससामग्री आपणा लक्ष बहार होय छे. ऋषभदासकृत 'हीरविजयसूरि रास'मांथी मळतो मोगलकाळनो केटलोक इतिहास आनो एक दाखलो छे. समकालीन प्रजाजीवननी घणी रेखाओ पण आ रासाओमां गूंथायेली होय छे. वैष्णव आचार्योनां केटलांक चरितकाव्योमां पण आवी सामग्री छे, जेने विशे आपणे लगभग कशुं जाणता नथी. स्वामिनारायण संप्रदायमां सहजानंद स्वामी विशनां अनेक काव्योमांथी पण आ प्रकारनी सामग्रीनो अभ्यास करवानुं हजु बाकी छे. सांस्कृतिक अध्ययननी तो भरपूर सामग्री मध्यकालीन साहित्यमां वेरायेली पडी छे. वर्णकोने रूपे एवी सामग्री संचित पण थई छे. भोगीलाल सांडेसरा-संपादित 'वर्णकसमुच्चय'ना बे भागमां वर्णको ने एनो अभ्यास प्रस्तुत थयां छे ए आना नमूनारूप छे – एमां आवरी लेवायेला विषयो केटलाबधा छे : भोजनसामग्री, वस्त्रो, आभूषणो अने सुशोभनो, रत्नो, विद्याकला अने मंत्र, लिपि, वाजिंत्र-वाद्य, देशप्रदेश स्थानविशेष आदि, नगररचना अने स्थापत्य, राजलोक अने पौरलोक, राजवंश, शस्त्रास्त्रो अने युद्धसामग्री, अश्वजाति, करवेरा, नौयान, रोग, व्रत, लब्धि. आ विषयोनी केटली वीगतो प्राप्त छे ए जोईए तो आशरे ३५० जेटलां खाद्य पदार्थो अने वानगीओ नोंधायेल छे; पदार्थोनी जुदीजुदी जातिओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने बनावटो पण एमां छे, जेमके चोखानी ३० जेटली जातो, लाडुना ५० जेटला प्रकारो अने १०० जेटलां शाक. केटलीक वानगीओ केम बनावाय छे तेनी प्रक्रिया वर्णवाई छे तेमज भोजननी बेठकव्यवस्था अने पिरसणविधिनां मनोरम चित्रो आलेखायां छे. आ वर्णको उपरांतनो बीजो घणो रसिक सांस्कृतिक संभार मध्यकालीन कृतिओमां सचवायेलो छे. पण सामान्य रीते एने बाजु पर राखीने ज कृतिनो आस्वाद करवा आपणे टेवायेला छीए तेथी घणी वीगतो आपणा लक्ष बहार रहे छे. नरसिंह महेता जेवा आपणा प्रियतम कविनां पदोमां रहेली वैष्णव परंपरानी केटलीक लाक्षणिक सांस्कृतिक रेखाओने ओळखवा आपणे प्रयास कर्यो नथी ने एथी काचां अर्धघटनो पर निर्भर अधूरा काव्यास्वादोथी आपणे रीझ पामीए छीए. मध्यकालीन गद्यसाहित्यनी समृद्धिथी तो आपणे अजाण जेवा छीए. मोटा भागनी कृतिओ तो हजु प्रकाशनी राह जोती हस्तप्रतभंडारोमां दटायेली पडी छे. एमां कथावार्ता, चरित्र, तीर्थ-इतिहास, गच्छा-परंपरा, धर्मोपदेश, आचारविधि, तत्त्वज्ञान, योग, गणित, ज्योतिष, सामुद्रिकशास्त्र, शकुनशास्त्र, कोकशास्त्र, रमलतंत्र, वैदक, शिल्प, अलंकारशास्त्र, व्याकरण, कोश, संगीतविद्या आदि अनेक विषयो खेडायेला जोवा मळे छे. गद्यसाहित्य बहुधा बालावबोधो रूपे – संस्कृत-प्राकृत-गुजरातीना कोई मूल ग्रंथना विवरण रूपे – जैन साधुकविओ पासेथी प्राप्त थाय छे एटले जैन शास्त्रोनी एमां प्रधानता होय ए समजाय एवुं छे पण उपर नोंधेला विविध विषयोना अने 'भगवद्गीता' 'अमरुशतक' जेवी कृतिओना बालावबोधोनो पण एमां समावेश छे ए आ गद्यसाहित्य द्वारा केवी व्यापक ज्ञानोपासना थई छे अने लोकशिक्षणनो केवो मोटो उद्यम थयो छे ए बतावे छे.

मध्यकालीन साहित्यनी देखीती एकविधतानी नीचे जिवाता जीवननां अने जगतज्ञाननां केवां वैविध्योने अवकाश मळयो छे एनुं आ दिग्दर्शनमात्र छे. हस्तप्रतभंडारोमां दटायेलुं मध्यकालीन साहित्य हजु बहार आवशे अने एनो सूक्ष्मताथी, गहनताथी अने सर्वांगीपणे अभ्यास थशे त्यारे एना वैविध्यनी आपणने कदाच वधारे प्रतीति थशे.

बारमाथी ओगणीसमा सैका सुधीना सातसो वरसना गाळामां सैकावार जे विपुल साहित्य गुजराती भाषामां मळे छे ए जगतसाहित्यमां एक विरल घटना छे. भाषाविकासनुं अने भाषाभिव्यक्तिनी कलानुं एक समृद्ध चित्र एमांथी आपणने मळे छे. एनां शब्दराशि, रूढिप्रयोगो, वाक्यछटाओ, वाग्भंगिओ – सर्व कंईमां आपणा रसविषय बनवानी क्षमता छे. ए भाषाजगतनो विहार कौतुकभर्यो बने तेम छे. आपणे अखाभगत के प्रेमानंदनी वाक्शक्तिने पिछानीए छीए अने एना पर वारी जईए छीए, पण सातसो वरसना साहित्यना भाषावैभवने प्रत्यक्ष करवो आपणे बाकी छे. ए मोटो पुरुषार्थ मागे पण ए पुरुषार्थनुं पूरतुं वळतर मळी रहे तेवो ए वैभव छे. एना शब्दजगतनी कंईक झांखी अहीं रजू

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थयेला मध्यकालीन गुजराती शब्दकोशथी थशे, तो भाषाविकास, रूढिप्रयोगो, वाग्भंगिओ वगेरेनो एक नानकडो दस्तावेज हरिवल्लभ भायाणीना 'गुजराती भाषानुं ऐतिहासिक व्याकरण'मांथी सांपडशे पण अनेक प्रकाशित-अप्रकाशित कृतिओमां सावधानपणे विहरवुं अने एना भाषावैभवने झीलवो ए जुदी वात छे. बालावबोधोनी गद्याभिव्यक्ति, जे वधारे जीवंत अने वास्तविक छे एनो तो आपणने अंदाज ज नथी. आपणे एम मानीने चालीए छीए के मध्यकाळमां गद्य कां तो 'पृथ्वीचंद्रचरित्र' जेवुं पद्यकल्प गद्य छे, कां तो विवरणनुं शास्त्रीय गद्य छे. वास्तविक व्यवहारु गद्य तो जाणे पहेली वार ज 'वचनामृत'मां सांपडे छे. पण मध्यकाळमां शास्त्रीय बालावबोधोमां पण – खास करीने एमां आवती दृष्टांतकथाओमां तळपदा शब्दो ने रूढिप्रयोगो तथा बोलाती वाणीनी लढणो धरावतुं जीवंत गद्य आपणने मळे ज छे.

बारमाथी ओगणीसमा सैका सुधीनुं जे विपुल साहित्य आपणने मळे छे ते जैन संप्रदाये ऊभा करेला ज्ञानभंडारोने आभारी छे. स्वाभाविक रीते ज एमां जैन साहित्य वधारे सचवायुं होय. प्राप्त मध्यकालीन साहित्यमां जैन संप्रदायनो हिस्सो घणो मोटो – लगभग ७५ टका जेटलो – छे एनुं कंईक कारण एमांथी आपणने जडी आवे छे. आ जैन साहित्यमांथी घणुं आपणे सांप्रदायिक गणीने आपणा अभ्यासनी बहार राख्युं छे. पण ते उपरांत पुष्टिसंप्रदायना सघळा साहित्यने पण आपणे लक्षमां लीधुं नथी, भले, नरसिंह, मीरां, दयाराम जेवां कृष्णभक्तिना कविओमां आपणे घणो रस लीधो होय. स्वामिनारायण संप्रदायना साहित्यनो आपणो अभ्यास बहु थोडा साधुकविओ पूरतो मर्यादित छे तो रविसाहेब जेवा कबीरपरंपराना संतकविओ, मुस्लिम संतकविओ वगेरे अनेक धार्मिक सांप्रदायिक साहित्यप्रवाहोना कविओनो आपणे संपूर्ण अभ्यास कर्यो छे एवुं कहेवाय एवुं नथी. खोजा कविओ ने अनेक रूखडिया संतकविओ अने भजनिको तरफ तो आपणे नजर पण करी नथी. प्रणामी संप्रदायना प्रवर्तक प्राणनाथ स्वामी अने एमना साहित्यिक प्रदाननी हजु हमणां ज आपणने खबर पडी छे. आवा अनेक नानामोटा धर्मसंप्रदायो अने परंपराओए मध्यकाळना गुजराती साहित्यनुं घडतर कर्युं छे अने एमने ज्यारे योग्य न्याय मळशे त्यारे मध्यकालीन साहित्यनुं आपणुं दर्शन बदलाशे, पूरिपूर्ण बनशे अने अनेक नूतन प्राप्तिओ आपणने थशे. जयंत गाडीत घणा वखतथी मध्यकाळना धार्मिक-सांप्रदायिक साहित्यप्रवाहोनो अभ्यास करवानी अभिलाषा सेवी रह्या छे, ते एमनी अभिलाषा वहेलासर फळीभूत थाय एवुं आपणे इच्छीए.

मध्यकालीन गुजराती साहित्य बहुधा परंपराग्रस्त छे अने एमां मौलिक सर्जकतानो अनुभव ओछो थाय छे ए फरियादना संदर्भमां बेत्रण बाबतो लक्षमां राखवी जोईए. एक तो ए के औपचारिक शिक्षणव्यवस्था नहींवत् हती एवा ए समयमां साहित्य पर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोकशिक्षणनी अने परंपराना सातत्यने नभाववानी जवाबदारी आवी पडी हती. आ कारणे मौलिकतानुं आजना जेवुं मूल्य के महत्त्व ए वखते ऊभुं थयुं नहोतुं अने अनुसर्जन, अनुकरण के ऊछीनुं लेवामां कशो बाध मनातो न हतो. प्रेमानंद जेवा प्रथम पंक्तिना आख्यानकार आखुं ने आखुं कडवुं पुरोगामीमांथी उठावी लेवामां कशुं अनुचित न माने. सर्जकता परंपरानो लाभ लईने आगळ वधवामां जाणे धन्यता अनुभवती हती. मौलिकता करतां परिणामनी उत्तमता एने माटे जाणे वधारे महत्त्वनी हती. छेवटे, परंपसने झीलवानां सूझ-सामर्थ्य होय छे अने परंपराना सर्जनात्मक-कलात्मक विनियोग जेवी पण कोई चीज होय छे, तेथी परंपरानिष्ठता पोते कोई अपमूल्य नथी, जेम केवळ मौलिकता पण, कदाच, आपोआप कोई मूल्य नथी. 'वसंतविलास', जयवंतसूरिकृत 'शृंगारमंजरी' अने गणपतिकृत 'माधवानलकामकंदलाप्रबंध' पर संस्कृत-प्राकृत साहित्यपरंपरानो प्रबळ प्रभाव छे, परंतु आ परंपरा तो बीजाओ पासे पण हती. आवुं परिणाम अन्य कोई सिद्ध करी शकतुं नथी ए शुं बतावे छे ? आ कृतिओना रचयिताओ पासे परंपरानी जे अभिज्ञता अने रसज्ञता छे ते कंईक अनन्य छे अने पोतानी सर्जकताने एमणे परंपरानी भूमिमां रोपी छे एम कहेवाय. अखाभगतमां ज्ञानमार्गी कविताधासनो तो प्रेमानंदमां आख्यानकवितानी परंपरानो उत्कर्ष छे. अने दयाराम पासे तो कृष्णभक्तिनी परंपरानो केटलो लांबो वारसो छे ! पण ए वारसाने, रामनारायण पाठक कहे छे तेम, एमणे दीपाव्यो छे, उजाळ्यो छे. मध्यकालीन साहित्ये परंपराबद्ध रहीने पण भावविचारद्रव्य, कथाघटको, वर्णनरूढिओ, पद्यबंधो, प्रास, ध्रुवा, वाग्भंगिओनी जे समृद्धि निपजावी छे ए असाधारण छे अने अखाभगत, प्रेमानंद वगेरे थोडा कविओना जेवा प्रतिभावंत सर्जको तो आज सुधीना गुजराती साहित्यमां आपणने गणतर ज सांपडे छे. गुजराती भाषा जेमने माटे हंमेशां गौरव अनुभवी शके एवा ए साहित्यस्वामीओ छे.

बेशक, मध्यकालीन साहित्य बहुधा हेतुलक्षी छे – पछी ए हेतु वैचारिक मतनी स्थापनानो होय, धर्मबोधनो होय, सांप्रदायिक महिमागाननो होय के लोकशिक्षणनो होय. मध्यकाळना रचयिताओ पोताने कवि तरीके ओछुं ओळखावे छे, ए भक्तो छे, ज्ञानीओ छे, संतो छे, कथा कहेनारा 'भटो' छे. कविकर्मनी सभानता एमनामां केटली हशे ए कहेवुं मुश्केल छे. पण ए याद राखवुं जोईए के कोई पण प्रकारनी हेतुलक्षिताथी साव अलिप्त, केवळ रसलक्षी कहेवाय एवी थोडीक, 'वसंतविलास' 'माधवानल-कामकंदलाप्रबंध' जेवी कृतिओ आपणने मध्यकाळमां मळे ज छे. जैन साधुकविने हाथे पण 'विराटपर्व' के 'वसंत फागु' जेवी धर्मबोधना ने सांप्रदायिकतानाये स्पर्श विनानी कृतिओ मळे छे. एवी तो अनेक कृतिओ मळे छे, जेनी भोंय चोक्कस धर्मसंस्कारनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परंपरानी होय पण समग्र निरूपण रसलक्षी ज होय. राधाकृष्णविषयक बारमासा वगेरे प्रकारनी घणी कृतिओ आमां आवे, तो जयवंतसूरिना 'स्थूलिभद्रकोशाप्रेमविलास फाग' जेवी कृतिमां पण वस्तु जैन परंपरानुं छे, ए बाद करीए तो ए शुद्ध विरहकाव्य ज बनी रहे छे. एमां जैनत्वनी बीजी कशी छाया पडेली नथी. अने धर्मोपदेशनो के एवो हेतु गौण के आनुषंगिक बनी जतो होय अने कविकौशलनुं प्रवर्तन ने रसदृष्टि मुख्य बनी जतां होय एवी कृतिओनो तो मध्यकाळमां तोटो नथी. आख्यानकविता अने जैन रासाओ निर्मायेला तो छे कशाक धार्मिक-सांस्कृतिक बोध माटे, एवी सामग्री एमां ओछीवत्ती होय छे, छतां एनी साथेसाथे एमां कथारस, जनस्वभावरस, वर्णनरस अने पद्यरस पण वहे छे. शामळ भट्टमां कवित्व कंई ऊंची कोटिनुं नथी, ने एमनी वारताओनो एक महत्त्वनो हेतु लोकशिक्षण छे, तेम छतां कथाकौतुकरसथी ए वार्ताओ छलकाय छे अने आस्वाद्य बने छे. कविनी प्रतिज्ञा के एना प्रगट हेतुथी आपणे भ्रान्तिमां पडी एनाथी विमुख थई जवा जेवुं नथी.

छेवटे, साहित्यनी शुद्धता ए कंई कलात्मकतानो पर्याय नथी अने हेतुनिष्ठता कंई अनिवार्यपणे कलात्मकताने अवरोधक नथी. ज्ञानवैराग्यभक्तिना भावो ने उपदेशवृत्ति सुध्धां काव्योंचित विषय होई शके छे. काव्यभावनी व्याख्या संकुचित करवानी जरूर नथी. भारतीय काव्यशास्त्रे भावो(संचारिभावो)नी लांबी यादी करी छे अने आपणे एमां उमेरो करी शकीए. भक्तिनो भाव तो मध्यकाळमां वारंवार हृदयंगम अभिव्यक्ति पाम्यो छे अने ज्ञानविचारने पण अखाभगत जेवामां केवी अद्‌भुत मूर्तता सांपडी छे ! हेतुनिष्ठता होवा छतां अने कविपणानो दावो न करवा छतां मध्यकालीन साहित्यना रचयिताओए जे अनेकविध प्रकारनां कविकर्मो अने काव्यसिद्धि प्रगट कर्यां छे ते काव्यरसिकोने माटे मोटी वस समान छे ने अंके करी लेवा जेवां छे. माणिक्यसुंदरना 'पृथ्वीचंद्रचरित'नी गद्यलीला, जयवंतसूरिनां भावप्रवणता अने सुभाषितकौशल, गणपतिना 'माधवानलकामकंदला प्रबंध'नो वर्णनवैभव, विश्वनाथ जानीना 'प्रेमपचीशी'नी नाट्यगीतात्मक भावाभिव्यक्ति, यशोविजयजीनुं बुद्धिचातुर्य अने अलंकारचातुर्य – आवुं तो केटकेटलुं, मध्यकालीन साहित्यसृष्टिमां आपणे आपणी काव्यरसिकताने मोकळी मूकीए त्यारे, आपणी सामे आवे छे ! बेशक कोई पण समयनी चोक्कस साहित्यिक परिपाटीओ होय छे अने एनो आस्वाद एनी शरतोए ज लेवानो होय छे. मध्यकाळनां प्रासचातुर्य, ध्रुवानावीन्य, पद्यगानछटावैविध्य वगेरे केटलांक कविकौशलो पण छे अने एमां आपणे रस लई शकीए तो मध्यकालीन साहित्यनो आपणो आस्वाद वधारे समृद्ध बने.

आपणे जाणीए छीए के मध्यकालीन साहित्य कंई एकांतमां अंगत वाचन माटेनुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्य न हतुं. प्रत्यक्ष रजूआत अने समूहभोग्यतानी दृष्टिथी ए रचातुं हतुं अने एनो एना स्वरूपनिर्माणनां महत्त्वनो फाळो हतो. लोकोनी मध्यकालीन साहित्यना सर्जनमां परोक्ष सामेलगीरी हती. लोकोनी विविध जरूरियातो संतोषवा निर्मायेलुं, सर्व प्रकारनां काव्यचातुर्योनो आश्रय लेतुं अने गानादि कळाने पण पोतानी सहायमां लेतुं मध्यकालीन साहित्य शुद्ध साहित्य नहोतुं पण, कहो के, संपूर्ण साहित्य हतुं. हा, जेम संपूर्ण रंगभूमि (टोटल थिएटर) जेवी कोई वस्तु छे, तेम संपूर्ण साहित्य (टोटल लिटरेचर) जेवी कोई वस्तु पण होई शके. मध्यकालीन साहित्यने संपूर्ण साहित्यनां धोरणोथी माणवुं-नाणवुं जोईए.

मध्यकाळथी आपणे आजे ठीकठीक दूर पडी गया छीए. आजे आपणे जुदी हवामां श्वसीए छीए. मध्यकाळना साहित्यनो रस माणवामां, तेथी, आपणने अवश्य केटलांक विघ्नो नडे – भाषाप्रयोगोथी मांडीने सांस्कृतिक परिवेश सुधीनां, तेम छतां आ विघ्नोनुं आपणे निवारण न करी शकीए एवुं नथी, केमके ए आपणी ज पूर्व परांपरा छे. संस्कारभूमिकानी केटलीक समानता एनी साथे आपणे शोधी शकीए, एनी साथे आत्मीयता साधी शकीए तेमज एनो रस माणी शकीए. जरूर छे मात्र एना प्रत्ये अभिमुख थवानी. अंग्रेजी साहित्यथी प्रभावित कवि कान्तने एक वखते प्रेमानंद मात्र पद्यजोडु लागेला, परंतु न्हानालाले एमनी पासे प्रेमानंदनां आख्यानो वांच्या पछी एमनो अभिप्राय बदलायेलो. आधुनिक बोधना गुजराती आदिकवि निरंजन भगत हमणां मध्यकालीन कविओ विशे नियमित रीते व्याख्यानो आपी एमने पोतीकी रीते प्रकाशित करी रह्या छे अने आपणा आधुनिक कवि लाभशंकर ठाकर पण प्रेमानंदना आख्यानना पठनना जाहेर कार्यक्रमो करी लोकोने एनो रसास्वाद करावो रह्या छे ने ए रीते मध्यकालीन साहित्यवारसानी मूल्यवत्ता स्थापित करी रह्या छे. सर्जको माटे तो मध्यकालीन साहित्य खरेखर एक अखूट खजानो छे. आजे आपणा सर्जको लोकभाषा, लोकजीवन अने तळपदी साहित्यप्रणालिओनो कार्यसाधक विनियोग करी पोतानां सर्जनोमां ताजगी अने नूतनता नथी आणी रहेला देखाता ? तो ए रीते मध्यकालीन साहित्यपरंपरानो पण नूतन सर्जनात्मक विनियोग जरूर थई शके. एनां शब्दराशि, रूढिप्रयोगो ने वाक्छटाओमांथी तो घणुं पुनर्जीवित करवा जेवुं मळी रहे. में अखाभगतना छप्पाओना अर्थविचारना लेखो लखेला एमां आधुनिक साहित्यना सर्जक कोईकोई कविमित्रोए रस लीधानुं में जाण्युं त्यारे पहेलां तो मने आश्चर्य थयेलुं पण पछी ए स्वाभाविक लागेलुं (जोके ए लेखोनुं, १९८९ना वर्षना विवेचनविषयक सन्धान क्रिटिक्स एवॉर्डने पात्र बनेलुं पुस्तक घणुं ओछुं वेचाय छे ने एनुं कशे अवलोकन थयुं नथी ए पण एक वास्तविकता छे). आ संदर्भमां भृगुराय अंजारियाए युवाकवि हरीन्द्र दवेने आपेली शीख

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याद आवे छे :

"तमे नवीन कविओनुं ज वाचन करो छो. एथी बहु तो आ जमानानी काव्यप्रतिभाना अनुयायी (कॅम्प-फॉलोअर) बनी शको. तमे जो नरसिंह, प्रेमानंद, अखो, दयाराम बराबर वांची शको तो सारुं. अर्वाचीनमां ठाकोर, कान्त अने न्हानालाल.

मध्यकालीन कविता बने तेटली काव्यदोहननां पुस्तको द्वारा वधारे वांचो."

बधा ज लोको मध्यकालीन साहित्यमां रस लेता थाय के एनो अभ्यास करता थाय एवी अपेक्षा राखवानी न ज होय. पण साहित्यना रसियाओ अने अध्येताओ पासे ए ओछुंवत्तुं रहे एवी इच्छा राखवामां कंई वधु पडतुं नथी. शिक्षणमां मध्यकालीन साहित्यनुं स्थान टकी रहेवुं जोईए – अलबत्त, विवेकपूर्वकनुं अने सूझबूझपूर्वकनुं. हमणां धोरण ११ अने १२नां गुजराती पाठ्यपुस्तकोना मध्यकालीन विभाग जोवानो प्रसंग ऊभो थयो हतो. धोरण ११मामां तो छापभूलो ने पाठदोषो एटलांबधां हतां के आमां भणनार-भणावनारनुं शुं थाय ए प्रश्न गंभीरपणे उपस्थित थतो हतो. ते उपरांत बन्ने पाठ्यपुस्तकोमांथी बीजा महत्त्वना मुद्दा पण सामे आवता हता. आपणे मध्यकालीन साहित्यकृतिनी पसंदगी केवी रीते करीए छीए ? जूनां पाठ्यपुस्तकोमांथी कृतिओ उपाडी लईए छीए के नवेसरथी श्रम करीने योग्य कृतिओ खोळीए छीए ? हाथमां आवी ते वाचना स्वीकारी लईए छीए के शुद्ध अने उत्तम वाचनानो आग्रह राखीए छीए ? पसंद करेली कृतिओमां अर्थघटननी कोई मूंझवण नथी एनी आपणे खातरी करी होय छे ? विद्यार्थीओ अने शिक्षकोने भटकवानुं न थाय ए माटे शब्दार्थनी पर्याप्त सहाय पूरी पाडेली होय छे ? में जोयुं के कदाच संपादको पण संतोषकारक रीते अर्थ न करी शके एवी पंक्तिओ आ संपादनोमां नजरे पडती हती, शब्दार्थ ने समजूती क्यांक खोटां हतां, तो आपवा जोईता घणा शब्दार्थो अपाया न हता, केटलाक शब्दोनी मध्यकाळनी विशिष्ट अर्थछाया पकडी शकाई न हती. आ रीते तो आपणे मध्यकालीन साहित्य प्रत्येनी अभिमुखता नहीं विमुखता केळववामां ज फाळो आपी शकीए.

शाळाकक्षाए मध्यकालीन कृतिओने केवी रीते रजू करवी ए पण हवे नवेसरथी विचारवा जेवुं लागे छे. धोरण १२ना पाठ्यपुस्तकमां राजेनुं एक पद रमेश जानीना ताजेतरमां प्रसिद्ध थयेला संपादनमांथी लेवायेलुं. रमेश जानीए उक्त संपादनमां हस्तप्रतमां जे ग्राम्य उच्चारण-लेखन मळ्यां ते यथावत् राखेल छे. घणा शब्दो एमां एवे स्वरूपे मळे छे जे मध्यकाळमां पण मान्य के व्यापक हता एम न कहेवाय. एथी अवबोधमां मोटो अंतराय ऊभो थाय छे ने अभ्यासीए पण जरा विचार करवा थोभवुं पडे एवुं थयुं छे. विशाळ शिक्षकवर्गनुं तो आमां शुं गजुं ? आपणे शब्दार्थनी मदद पूरी पाडीए, पण ए श्रम पछीये शुं ? मूळ कृति साथे मननो मेळ रचावो मुश्केल. आ कक्षाए तो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृतिने मान्य शब्दस्वरूपोथी ज रजू करवानुं इष्ट नहीं ? अंग्रेजी भाषामां तो शेक्स्पिअर पण शाळाकक्षाए आधुनिक लेबासमां ने संक्षिप्त रूपे रजू थाय छे. आपणे मध्यकालीन साहित्यने पण थोडा संमार्जन-संपादनपूर्वक न मूकवुं जोईए ? अलबत्त, मध्यकालीन साहित्यनी मध्यकालीनता नष्ट न थाय एनी काळजी राखवी जोईए. वधारे जूनां के ग्राम्य उच्चारणरूपोने स्थाने पाछळना समयनां उच्चारणरूपो स्वाकारी शकाय, परंतु मध्यकालीन शब्दोने स्थाने अर्वाचीन शब्दोनुं भरणुं न करी शकाय. दुर्बोध रहेता अंशोने छोडी दई शकाय, पण अणसमजमां कंई अगत्यनुं नीकळी न जाय एनी काळजी राखवी जोईए. सरेराश शिक्षक सहेलाईथी गति करी शके अने विशाळ विद्यार्थीवर्गनुं मन जेमां लागी शके एवां मध्यकालीन कृतिओनां संपादन-रजूआत होवां जोईए. आ अधिकार गमे ते व्यक्तिने न ज होई शके, ए काम ए माटेनी सज्ञता अने सूझ धरावती व्यक्तिने हाथे ज थवानो आग्रह राखवो जोईए.

कॉलेज अने युनिवर्सिटीकक्षाए अलबत्त मध्यकालीन कृतिओनी शास्त्रीय रीते संपादित थयेली अधिकृत वाचनाओ ज नियत करवी जोईए.

कॉलेजकक्षाए मध्यकालीन साहित्यना एक पूरा प्रश्नपत्रमां काप न ज मूकी शकाय. ए पगलुं तो मध्यकालीन साहित्यनी विशाळताथी आपणे बेखबर छीए एम ज बतावे. मध्यकालीन साहित्याभ्यासने सांस्कृतिक अभ्यास साथे सांकळी एने जीवंत बनाववो जोईए, अने मध्यकाळना नानामोटा सर्व साहित्यप्रवाहोनी अभिज्ञता केळवाय एवो प्रयत्न करवो जोईए. पांच-छ मोटा कविओना अभ्यासमां ज मध्यकालीन साहित्य सीमित थई जाय छे ए निवारवुं जोईए. आम करवा जतां कदाच एक प्रश्नपत्र पण ओछुं पडे एवो संभव छे. तो ए माटे पण कंईक व्यवस्था विचारवी जोईए.

पण मध्यकालीन साहित्यनी विशिष्ट तालीम पामेलो एक नानकडो वर्ग आपणे ऊभो नहीं करी शकीए तो उपर सूचवेली व्यवस्थाओ पार पडवा संभव नथी. जेमनी पासे संस्कृत-प्राकृत ए पूर्वपरंपरानुं पण ज्ञान छे एवी मध्यकालीन साहित्यनी पारंगत पेढी तो हवे लुप्त थवामां छे, नव-अभ्यासीओ घणा ओछा प्राप्त थई रह्या छे, एमनी सज्ञता पांखी पडी रही छे – ऊणी ऊतरी रही छे ने सूंठने गांगडे गांधी गणाई जवाय एवी स्थिति प्रवर्तवा मांडी छे. विदेशोमां मध्यकालीन गुजराती साहित्यकृतिओनां संपादनो थाय छे, मध्यकालीन परंपराओ विशे परिसंवादो योजाय छे अने मध्यकालीन साहित्यना अभ्यासनी सगवडो पण ऊभी थाय छे त्यारे आपणे आपणा आ समृद्ध वारसा परत्वे जाणे उदासीन छीए. हजु तो हस्तप्रतभंडारोमां अभ्यासीओनी राह जोतुं विपुल साहित्य पडेलुं छे. एनो उद्धार कोण करशे ? आनो कंईक नक्कर उपाय आपणे विचारवो जोईए.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एम लागे छे के मध्यकालीन साहित्यना अभ्यासने ज वरेली एक विद्यासंस्था जोईए अने युनिवर्सिटीओमां अनुस्नातक कक्षाए मध्यकालीन गुजराती साहित्यनो बे प्रश्नपत्रोनो – भले वैकल्पिक रूपे पण – अलायदो अभ्यासक्रम जोईए. एमां हस्तप्रतवाचन, पाठसंपादन, भाषाविकास, संस्कारपरंपराओ, पद्यबंधो अने अन्य साहित्यप्रणालिओना ऊंडा झीणवटभर्या अभ्यासनो समावेश होय. मध्यकालीन कृतिओना अने एने विशेना अभ्यासोना प्रकाशननी एक मातबर व्यवस्था जोईए अने नव-अभ्यासीओना उद्यमने सत्कारतुं, नानीनानी मध्यकालीन कृतिओने तथा अभ्यासलेखोने प्रकाशित करतुं एक सामयिक पण जोईए. वडोदरानी महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटीमां एक वखते प्राचीन गूर्जर ग्रन्थमालानी प्रवृत्ति सध्धर रीते चाली हती ए आजे तो एक रोमांचक स्मरण अने भविष्यनुं स्वप्न बनी गयेल छे, एने पुनर्जीवन मळवुं जोईए. शब्दकोशादि साधनो पण ऊभां थवां जोईए.

हा, अहीं रजू करेली अपेक्षाओ शमणांओ समी भासे एम छे. पण मध्यकालीन साहित्यना समृद्ध वारसाने आपणे वीसरवा न मागता होईए तो ए शमणांओ साचां पाडवां पडशे. भले ए दिशामां एक पछी एक नानांनानां डग भरीए. आ मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश पण ए दिशामां एक नानकडुं डग छे. ए मध्यकालीन साहित्यना अवबोधमां सहायरूप थशे अने मध्यकालीन साहित्यना आपणा अभ्यासोने वधु अर्थपूर्ण बनावशे तो एमां एनी सार्थकता हशे.

१४ मार्च १९९५ **जयंत कोठारी**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादकीय भूमिका

आ कोश एक संकलित कोश छे. एमां मध्यकालीन कृतिओना अनेक संपादित ग्रंथोना शब्दकोशनी सामग्री भेगी करवामां आवी छे. पण ए सामग्री जेम मळी छे तेम मूकी देवामां नथी आवी. एमां हानोपादाननो विवेक करवामां आव्यो छे, सामग्रीने संशोधित करवामां आवी छे अने एमां पूर्ति पण करवामां आवी छे. देखीती रीते ज, आ माटे केटलीक नीतिरीतिओ पहेलेथी नक्की करवी पडे अने सामग्रीनी रजूआतनी पण चोक्कस पद्धति निपजाववी पडे. एवुं अहीं करवामां आव्युं छे पण, काम घणो लांबो समय चाल्युं अने संपादकनी मांदगीनो पण मोटो विक्षेप पाम्युं तेथी, एमां सो टका एकरूपता रही शकी नथी, जोके ए माटे शक्य सघळो प्रयास करवामां आव्यो छे.

आ कोशनी सामग्रीनी पसंदगी, शुद्धिवृद्धि वगेरेनी नीतिरीति अने रजूआतनी पद्धति एवी विशिष्ट छे के एनी वीगते अने सदृष्टांत समजूती आपवी आवश्यक छे. कोशना चार विभागो – शब्दसामग्री, आधारग्रंथो, शब्दार्थ अने शब्दमूळ – ने अनुलक्षीने ए समजूती आपीशुं.

शब्दसामग्री

अहीं आरंभे घाटां बीबांमां जे शब्द छे ते आधारग्रंथना शब्दकोशमांथी प्राप्त थयेलो मध्यकालीन शब्द छे.

एक नियम तरीके अहीं एवा शब्दकोशो समाव्या छे, जे वर्णानुक्रमिक होय, जेमां शब्द कृतिमां क्यां वपरायो छे एनो निर्देश होय अने शब्दनो अर्थ पण साथे ज नोंधवामां आव्यो होय. एवा संपादित ग्रंथो पण मळे छे के जेमां शब्दकोश वर्णानुक्रमिक न होय, जेमके के. का. शास्त्री अने चैतन्यबाळा ज. दिवेटिया संपादित 'प्रेमानंदनां त्रण आख्यान', शिवलाल जेसलपुरा संपादित 'प्राचीन मध्यकालीन बारमासा संग्रह' वगेरे (आमां शब्दो एमना प्रयोगना स्थानना क्रममां छे), अथवा शब्दकोश वर्णानुक्रमिक होय परंतु शब्दना प्रयोगस्थाननो निर्देश न होय, जेमके ह. चू. भायाणी, र. म. शाह अने गीताबहेन संपादित मेरुसुंदरगणिविरचित 'शीलोपदेशमाला बालावबोध' वगेरे, अथवा शब्दकोश वर्णानुक्रमिक होय, स्थाननिर्देश पण होय परंतु अर्थ दर्शाववामां आव्यो न होय, एने माटे टिप्पणनो हवालो आपवामां आव्यो होय, जेमके के. ह. ध्रुव संपादित भालणकृत 'कादंबरी : उत्तर भाग', मंजुलाल मजमुदार संपादित प्रेमानंदकृत 'रणयज्ञ' वगेरे. आवा शब्दकोशो आ संकलित कोशमां समाव्या नथी अने पंक्तिक्रमे अपायेला टिप्पणोमां रहेला शब्दार्थोनो समावेश तो स्वाभाविक रीते ज न होय. आमां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक अपवाद कर्यो छे ते 'उक्तिरत्नाकर'नो. एमां वर्णानुक्रमिक शब्दसूचि छे ने स्थाननिर्देश पण छे पण अर्थ तो निर्दिष्ट स्थाने आपणे जोवानो रहे छे. आ ग्रंथनो अपवाद करवानुं कारण ए हतुं के ए मध्यकाळमां ज रचायेलो शब्दकोश छे अने तेथी मध्यकाळमां आ शब्दो कया अर्थमां वपराता हता तेनी प्रमाणभूत माहिती एमांथी मळे छे. एना आ रीतना महत्त्वने अनुलक्षीने, डॉ. भायाणीना सूचनथी, आ अपवाद कर्यो छे.

छेवटे, आ कोशमां पाछळ यादी आपी छे ते मुजब ६६ संपादित ग्रंथोना ७१ शब्दकोशो (चार ग्रंथोमां अलगअलग कृतिओना अलग शब्दकोशो आपेला छे) संकलित करेला छे. बे ग्रंथोनी बीजी आवृत्तिना शब्दकोशोने पण उपयोगमां लीधा छे. आ बधा शब्दकोशो एक दृष्टिथी तैयार थयेला न ज होय. ए ग्रंथोनो हवे पछी परिचय आप्यो छे ते मुजब केटलाक संपादकोए उदारताथी शब्दो लीधा छे – सामान्य उच्चारभेदवाळा शब्दो लीधा छे अने अत्यारे वपराशमां होय एवा थोडा शब्दो पण आववा दीधा छे, तो केटलाक संपादकोए शब्दपसंदगी चुस्त मध्यकालीनताना धोरणे करी छे अने सामान्य उच्चारभेदवाळा शब्दो टाळ्या छे. कोईए विभक्ति के काळ-अर्थना रूपभेदोने पण कोशमां दाखल थवा दीधा छे तो कोईए विभक्तिप्रत्ययो टाळ्या छे अने क्रियापदोनुं कोई एक ज रूप – विध्यर्थ-कृदंतनुं रूप ('करवुं') के धातुरूप ('कर-') – आपवानुं राख्युं छे. आनी पाछळनां प्रयोजनो जुदांजुदां पण रह्यां छे. अंग्रेजी भाषाना माध्यमथी ग्रंथो तैयार थया छे त्यां संपादकनी नजर सामे गुजराती भाषा न जाणतो होय एवो वर्ग पण होवाथी एमणे सर्वग्राही थवानी नेम राखी छे, तो बीजा केटलाके सहज उदारताथी, सर्वसंग्रहनी वृत्तिथी आम कर्युं छे.

उपयोगमां लेवायेला ग्रंथोमां भले शब्दसामग्री परत्वे एकरूपता न होय, आ शब्दकोशना संपादके तो ए निपजावी ज रहे. एम करवा जतां केटलाक कोयडाओ ऊभा थाय एनो सामनो पण करवो रह्यो अने घटतो उकेल शोधवो रह्यो.

एक नियम तरीके अहीं

(१) आजना शब्दथी साव सामान्य उच्चारभेद दर्शावता ने तेथी सहेलाईथी समजाई जता शब्दो छोडी देवामां आव्या छे. जेमके, अंत्य स्थाने 'ए' 'ओ' 'औ'ने बदले 'अइ' 'अउ'वाळा शब्दो (अनइ, घोडउ), 'श'ने स्थाने 'स'वाळा शब्दो (निरास, प्रकासुं), 'ळ'ने स्थाने 'ल'वाळा शब्दो (उजलउं), संयुक्त व्यंजनना विश्लेषवाळा शब्दो (निरमल), 'ह' श्रुतिवाळा शब्दो (अह्मारु) वगेरे.

आम छतां आवा एकथी वधु उच्चारभेदो एकसाथे होय के अन्य कोई शब्द साथे संभ्रम थवानी शक्यता होय के शब्द कंईक अपरिचित बनी जतो होय त्यां आवा शब्दो साचव्या पण छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) अन्य केटलाक उच्चारभेदवाळा शब्दो साचवी लीधा छे. जेमके अनंत्य स्थाने 'ए' 'ओ' 'औ'ने बदले 'अइ' 'अउ'वाळा शब्दो (पईसइ, कउण), 'न'ने बदले 'ण'वाळा शब्दो (अणसण, अणुसरइ), 'य' श्रुतिवाळा शब्दो (अत्य=अति), 'इ'कारवाळा शब्दो (लिखइ, राति), 'अय'ने बदले 'ए'वाळा शब्दो (अतिशे), संयुक्त व्यंजनने बदले एकवडा व्यंजनवाळा शब्दो (उछेद, उधार), अंत्य स्थाने अंगविस्तारवाळा शब्दो (अमीअ) वगेरे.

आथी वधारे वर्णभेदवाळा शब्दो तो स्वाभाविक रीते ज अहीं होय.

(३) सहेलाईथी समजाय पण अत्यारे ए रूपे न वपराता शब्दो पण साचव्या छे. जेमके 'करतउ' शब्द नथी लीधो पण 'अकरतउ' लीधो छे. ए ज रीते 'अचींतविउ' शब्द राख्यो छे, केमके आपणे अत्यारे 'अणचिंतव्युं' बोलीए छीए पण 'अचिंतव्युं' नहीं. सामान्य रीते जेने क्रियापद तरीके आपणे वापरता नथी तेवा 'आनंदए' जेवा शब्दो पण लीधा छे. 'उजलउं' नहीं पण 'उजल' अहीं मळशे ते पण आ कारणे.

(४) अत्यारे व्यापक रीते प्रचलित शब्दो तो न ज लेवाना होय पण एनो विवेक एटलोबधो सरळ नथी बन्यो. अत्यारे प्रचलित शब्दो विशिष्ट अर्थछाया धरावता देखाया छे ते साचव्या ज छे. अहीं 'अटकवुं' 'आदरवुं' 'आछउं (=आछुं)' 'अखाडउ' 'अंग' 'अंत' वगेरे शब्दो जोवा मळशे ते आ कारणे. जे संस्कृत शब्दो अत्यारे काव्यमां वपराता होय पण व्यापक रीते परिचित होवानुं शंकास्पद होय ते छोडवानुं योग्य गण्युं नथी. सामे, तळपदा व्यवहारमां आ के ते प्रदेशमां अत्यारे वपराता पण शिष्ट वर्गने अजाण्या होवानो संभव जणायो तेवा शब्दोने पण छोड्या नथी. आ कारणे, अत्यारना शब्दकोशोमां जोवा मळता केटलाक शब्दो पण आ कोशमां मळशे. केटलीक वार तो एवुं बन्युं छे के अत्यारनो शब्दकोश पण आ शब्द नोंधे छे ए संपादकने मोडेथी जाणवा मळेलुं. एटलेके ए शब्द हजु सुधी क्यांक टकेलो छे एवी एनेय खबर नहोती.

अत्यारे प्रचलित केटलाक जैन शब्दो साचववानुं राख्युं छे – समग्र जैनेतर समाजने ए परिचित न पण होय एवा ख्यालथी.

(५) 'आनंदघन बावीशी' परना ज्ञानविमलसूरिना स्तबकमां जोवा मळता बौद्ध, न्याय वगेरे दर्शनोना अत्यंत पारिभाषिक शब्दो अहीं लीधा नथी केमके साहित्यमां अन्यत्र ए जोवा मळवानो संभव भाग्ये ज छे अने ए शब्दो विशिष्ट समजूती मागे एवा छे. ब्राह्मण अने जैन परंपराना केटलाक पारिभाषिक शब्दो उपयोगी जणावाथी साचव्या पण छे – जैन दर्शनना खास, केमके ए विशाळ जनसमाजने अजाण्या होवानी शक्यता छे.

(६) पात्रनामो सामान्य रीते लीधां नथी. ऐतिहासिक नामो ने स्थळादिनां नामो महत्त्वनां होय ते राखवानुं वलण रह्युं छे पण एमां पूरी सुसंगतता साचवी शकाई नथी.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेमके, महीराजकृत 'नलदवदंती रास'मां आवतां बधां ज देशनामो आ कोशमां समावेश पाम्यां छे.

(७) हिंदी भाषाना 'इसउं' 'इसिउं' जेवा आजे परिचित शब्दो पण मध्यकालीन भाषाना अंगभूत गणी रहेवा दीधा छे.

(८) संपादित ग्रंथोमां एवी कृतिओ पण संग्रहाई छे जेनी भाषा प्राकृत के अपभ्रंश छे. एना शब्दो पण ते-ते ग्रंथना शब्दकोशमां आवेला छे. आ शब्दोने गुजराती भाषाना शब्दो केटले अंशे गणवा ए एक विचारणीय मुद्दो छे. आम छतां, गुजराती भाषाने ए भाषास्वरूप साथे निकटनो संबंध छे, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंशना अनुसंधानमां मध्यकालीन गुजराती विकसी छे, तेथी एवा शब्दोने आ संकलित कोशमां स्थान आपवानुं इष्ट गण्युं छे.

परंतु 'प्रेमानंदनी काव्यकृतिओ'मां संग्रहायेल 'शामळदासनो विवाह' जेवी कोई कृति अर्वाचीन होवानुं निश्चित थाय छे तेना शब्दोने आ संकलित कोशमां स्थान आप्युं नथी, केमके अर्वाचीन कृतिओना शब्दो लेवानुं आ कोशनी मूळभूत कल्पनाथी विरुद्ध गणाय.

(९) मूळ संपादित ग्रंथोमां जे शब्दोना अर्थ आपी शकाया न होय ने संकलित कोशना संपादक पण आपी शके तेम न होय तेवा शब्दो प्राथमिक तबक्के छोडी दीधा हता. पछी एम लाग्युं के आ शब्दो तो साचवी लेवा जोईए. एथी, छोडी दीधेला शब्दो पाछा दाखल करवानो श्रम कर्यो छे, पण ए काम पूरी चोकसाईथी थई शक्युं हशे के केम ते विशे शंका छे.

(१०) एवुं तो बने ज के जुदाजुदा ग्रंथोमांथी रूपभेदे एक ज शब्द प्राप्त थाय (कोई संपादित ग्रंथमां तो एक ज शब्दना एवा रूपभेदो अलग नोंधायेला छे). आवा रूपभेदो साचववा जतां आ संकलित कोशमां मोटुं जंगल ज ऊभुं थाय. ए रूपभेदोनुं सरलीकरण करवुं अनिवार्य हतुं. ए माटे एक सामान्य रूप ज स्वीकारवानुं धोरण अहीं अपनाव्युं छे. नामिक रूपो परत्वे सामान्य रीते विभक्तिप्रत्यय विनानुं रूप आपवानुं राख्युं छे. पण कोई एक ज ग्रंथमांथी, कोई एक ज विभक्तिप्रत्ययवाळुं रूप आव्युं होय तो ते एम ने एम रही गयानुं पण देखाशे. उपरांत, थोडी बदलाती अर्थछाया, बीजा कोई शब्द साथे संभ्रम थवानी स्थिति के एवा कोई कारणथी विभक्तिप्रत्यय विनानुं ने विभक्त प्रत्ययवाळुं एम बन्ने रूप साचव्यां छे. जेमके 'अकाज' अने 'अकाजि'.

क्रियापदोनां रूपोनो कोयडो जरा वधारे अटपटो बन्यो छे. विविध काळ-अर्थनां रूपो एमां प्राप्त थाय, जेमके 'भिलइ' 'भिलिउं' 'भिली' 'भिल्यउ'. केटलाक संपादकोए विध्यर्थकृदंतनां 'वुं'वाळां रूपो (जेमके 'भिलवुं') आप्यां छे, तो कोईए मूळ धातु ज

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

('भिल-') आपेल छे. आ स्थितिमां सामान्य रीते कोई एक ज रूप स्वीकारवानुं राख्युं छे, बहुधा 'भिलइ' ए वर्तमानकाळनुं रूप, तो केटलीक वार विध्यर्थकृदंतवाळुं रूप के मूळ धातु. आम छतां अहीं पण कोई एक ज रूप प्राप्त थयुं छे त्यां एम ने एम राख्युं छे अने आवश्यकता जणाई त्यां एकथी वधु रूपो पण रहेवा दीधां छे.

एक ज रूप अंत्य स्वरना भेदथी पण आवी शके छे, जेमके 'पूगइ' 'पूगे' 'पूगै'. आवुं बन्युं छे त्यां सामान्य रीते जूनुं 'पूगइ' ए रूप आपवानुं राख्युं छे ने आवश्यकता जणाई त्यां रूपभेद साचव्या पण छे.

रूपभेद के जोडणीभेदनुं आवुं सरलीकरण के एकीकरण करीए एटले एक कोयडो तो ऊभो थाय. एकीकृत रूपनी सामे आधारग्रंथो तो बधा निर्देशाय, जेमां वास्तविक रीते ए एकीकृत रूप नहोतुं, जुदां रूपो हतां. एथी जे-ते ग्रंथमां ए शब्द शोधवामां अगवड ऊभी थाय. 'भिल्यउ' 'भिलइ'मां समाई जाय एटले जे ग्रंथमां 'भिल्यउ' होय त्यां पण आपणे 'भिलइ' ज शोध्या करीए अने ए आपणने न मळे. आपणे याद राखवुं पडे के क्रियापदरूप अन्य पण होई शके छे. आ अगवडमांथी बचवानो कोई रस्तो नहोतो ने संकलित कोशथी आगळ जनार जूज अभ्यासीओने ज आ अगवड वेठवानो वारो आवशे एवी समजण रही छे, तेथी रूपवैविध्य टाळीने कोई एक ज रूप आपवामां कशो बाध मान्यो नथी.

क्रियापदोमां, अलबत्त, कर्मणि, प्रेरक ने कृदंतनां रूपो अलग साचव्यां छे. मूळभूत रीते शब्द अत्यारे वपराशमां होय त्यां पण आ रूपो अत्यारथी जुदां पडतां देखायां तो ए खास साचव्यां छे. जेमके 'रहइ' लेवानी जरूर नहीं, पण 'रहतउ' (अत्यारे 'रहेतो'), 'रहितउं' 'रहीतूं' 'रहीइ' (कर्मणि), 'रहिवउं' 'रहाविउ' ए रूपो लीधां छे.

(११) ज्यां एक ज लिंगनुं रूप मळ्युं छे त्यां एम ने एम राख्युं छे, परंतु भिन्नभिन्न लिंगनां रूपो मळ्यां त्यां एक ज लिंगनुं – सामान्य रीते नपुंसकलिंगनुं रूप राख्युं छे. आम छतां आवश्यकता लागी त्यां भिन्नभिन्न लिंगनां रूपो साचव्यां छे.

एक नियम तरीके आवुं बधुं विचारेलुं छे, छतां, आरंभमां कह्युं तेम, एमां सो टका एकरूपता रही हशे एवी खातरी आपी शकाय तेम नथी. थयुं छे एवुं के साव प्राथमिक तबक्के मारा अंगत रसथी हुं प्राप्त शब्दकोशोमांथी कार्ड करावतो हतो त्यारे उच्चारभेदवाळा तथा संस्कृत अने अन्य घणा मने परिचित लागता शब्दो काढी नाखतो हतो. पछीथी प्राकृत जैन विद्याविकास फंडने आश्रये में विधिसर रीते योजना हाथमां लीधी त्यारे शब्दपसंदगीनी बाबतमां डॉ. हरिवल्लभ भायाणीनी साथे चर्चा करी. एमणे थोडा उदार थवानी भलामण करी. खास करीने एटला माटे के आपणे त्यां मध्यकालीन भाषानुं ज्ञान घणुं ओछुं छे ने थोडा वधु शब्दो हशे तो ए उपयोगी थशे ज. आम जे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तकोनां कार्ड थई गयां हतां एमां केटलाक शब्दो फरीने दाखल करवानी स्थिति आवी. एनो प्रयत्न तो कर्यो छे, पण ए प्रयत्न पूरो सफळ थयो हशे, एकसरखो नियम प्रवर्त्यो हशे एम कहेवुं मुश्केल छे.

संपादित ग्रंथोमांथी शब्दो लेवा जतां सौथी वधु मूंझवनारी बाबत तो ए बनी छे के एमां कृतिपाठना भूलभरेला वाचनने कारणे अथवा पाठनी भ्रष्टताने कारणे केटलाक खोटा शब्दो आवी गया छे. शब्द ज खोटो होय तो आ संकलित कोशमां केवी रीते आवी शके ? एटले आरंभमां तो आवा शब्दो छोडी देवानुं राख्युं हतुं. पण पछी देखायुं के केटलेक स्थाने पाठदोष के वाचनदोष तो पकडाय छे, पाठांतरनी मददथी के तर्कथी पाठने सुधारी शकाय छे, ने परिणामे मध्यकाळनो एक लाक्षणिक शब्द हाथमां आवे छे. ए शब्द केटलीक वार अन्यत्रथी भाग्ये ज मळतो होय. आवा शब्दने जतो करवानुं जिगर केम चाले ? पण आ रीते हाथमां आवेलो शब्द कंई मूळ संपादित ग्रंथमां न होय. तो एने आ संकलित कोशमां मूळ ग्रंथनो आधार आपीने केवी रीते मूकी शकाय ? मथामण करतां आ गूंचनो मार्ग मळ्यो. मूळ ग्रंथनो शब्द तो राखवो ज ने कौंसमां साचो शब्द मूकवो. ए साचा शब्दने पाछो एना वर्णक्रममां मूकवो अने त्यां मूळ ग्रंथना शब्दनो प्रतिनिर्देश करवो.

दाखलाओथी आ वात बराबर समजाशे. मूळ आधारग्रंथमां 'उथउ' शब्द नोंधायेलो छे. पण संदर्भमां 'ओघो', जैन मुनिनुं रजोहरण' ए अर्थ स्पष्ट छे तेथी पाठ 'उघउ' ज होवो जोईए. 'उथउ' ए हस्तप्रतनो भ्रष्ट पाठ होय के संपादकनो वाचनदोष होय. आ हकीकतने आ संकलित कोशमां आ रीते रजू करी छे :

उघउ जुओ उथउ

***उघउ [उघउ]** **उपबा.* [ओघो, जैन मुनिनुं रजोहरण]

शब्दनी पूर्व मूकेली फूदडी * ते पाठ खोटो के शंकास्पद होवानी निशानी छे. [ ] चोरस कौंसमां मूकेल छे ते पाठ आ संकलित कोशना संपादके विचारेलो छे.

संकलित कोशना संपादकने पोते विचारेला पाठनी खातरी न होय एवुं पण बने. पण मूळ पाठ संगत न लागतां एक तर्क रूपे बीजो पाठ मूक्यो होय. त्यां एनी पूर्वे पण फूदडी मूकी छे. जेमके,

***आरेणि [*आराडि]**

***उपवी [*उपची]**

केटलीक वार पाठांतरमांथी ज साचो पाठ सांपड्यो छे. ते ( ) गोळ कौंसमां ज मूकेल छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेमके,

करमि (करमइता)

घाडि सईनी (घाडि सईनी)

खोटा वाचनमां केटलीक वार खोटो शब्दभंग रहेलो होय छे. जेमके, 'अनुभाव' ते खरेखर 'अनु भाव' (=अने भाव) छे. 'घडी अरध घडी आल ज करे' ए पंक्तिमां संपादके 'आल' शब्द वांच्यो छे ते खरेखर 'घडीआल' (=समय दर्शाववा वगाडवामां आवती झालर) वांचवानो छे. अहीं पण खरुं वाचन ( ) गोळ कौंसमां आपेल छे :

अनुभाव (अनु भाव)

आल (घडीआल)

कोई वार खोटो शब्दभंग बे शब्दोने स्पर्शे छे. 'तपि उतारीउ अचट' एम वांची संपादके 'अचट' शब्द शब्दकोशमां लीधो होय, परंतु 'तपि उतारी उअचट' एम 'उअचट' शब्द वांचवो वधु योग्य होय. 'दीवटी आकडिइ' एम संपादके वांच्युं होय अने ए बे शब्दोने शब्दकोशमां दाखल कर्या होय, परंतु 'दीवटीआ कडिइ' एम वांचवुं योग्य होय तेथी बन्ने शब्दो बदलाई जाय. आ छेल्ला दाखलामां शब्दो आ रीते आपवाना थया छे :

आकडिइ (दीवटीआ कडिइ)

कडइ जुओ आकडिइ

दीवटी (दीवटीआ)

केटलीक वार एवुं बन्युं छे के मूळ ग्रंथना संपादके आपेलो शब्द आम बराबर होय परंतु एटलाथी अर्थ बराबर न थतो होय के खोटो थतो होय ने मूळमांथी वधारे संदर्भ लेवो जरूरी होय. 'इक आछण पामी छांडती'मां संपादके 'इक आछण'ने शब्दकोशमां लीधेल होय पण 'आछण'नो संबंध 'इक' साथे नहीं, 'पाणी' साथे वास्तविक रीते होय, 'आछण पाणी' एटले 'नितरामणनुं पाणी' एवो अर्थ होय. त्यां 'इक आछण'ने स्थाने 'इक आछण पाणी छांडती' पूरी उक्ति आपवानी जरूर पडे.

केटलीक वार शब्दने अलग जोवा करतां रूढिप्रयोगना भाग रूपे जोवानुं वधारे अर्थपूर्ण होय छे. त्यां एम करवानुं पण आ संकलित कोशमां इष्ट गण्युं छे. जेमके,

अउले (अउले खाले वहे)

अधर (अधर किया)

अलजो (अलजो जाय)

अहीं नोंधवुं जोईए के कोई वार कौंसमां उक्तिनो वधारानो अंश मूकवानुं के

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ सुधारवानुं मूळ संपादके पण कर्युं होय छे. जोके झाझे ठेकाणे तो आवुं आ संकलित कोशना संपादके ज करवानुं थयुं छे.

प्राथमिक तबक्के छोडी देवायेला खोटा शब्दो बधा ज चोकसाईथी पाछा दाखल नहीं थई शक्या होय. ते उपरांत जेनां पाठांतरो कशो प्रकाश पाडनारां नहोतां के जेनो कोई अर्थ बेसाडी शकातो नहोतो एवा भ्रष्ट जणायेला केटलाक शब्दो तो आ संकलित कोशमां छोड्या ज छे. ज्यां भ्रष्ट पाठने सुधारतां हाथमां आवतो शब्द अत्यारे परिचित होय त्यां ए पण न ज लेवानो होय. जेमके 'सीगरि'ने स्थाने 'सागरि' पाठ नक्की थतो होय, तो 'सीगरि' शब्द अहीं लेवानी जरूर होय नहीं.

मूळ आधारग्रंथोना शब्दकोशोमां केटलीक छापभूलो ने सरतचूको पण पकडाई छे. शब्दकोशमां 'अखर', 'उतरीअ', 'कडुक' ने 'जटाजूटी' होय पण कृतिपाठमां 'अखेर', 'उत्तरीअ', 'कटुक' ने 'जटाजूटा' होय. आवां स्थानोए केटलीक वार शब्द आ संकलित कोशमां सीधो सुधारीने ज मूक्यो छे; तो केटलीक वार मूळ शब्द राखी सुधारेलो शब्द बाजुमां ( ) कौंसमां मूक्यो छे. ज्यां शब्द सीधो सुधारी लेवामां आव्यो छे त्यां मूळ ग्रंथमां शब्द ए रूपे न मळे ए देखीतुं छे. पण अभ्यासीने मूळ शब्द पकडी पाडतां मुश्केली नहीं पडे. ज्यां संभ्रमनी शक्यता होय त्यां मूळ शब्द ने सुधारेलो शब्द बन्ने आप्या ज छे.

मध्यकालीन लेखनपद्धतिमां 'ख' 'ष' तरीके लखातो, 'ज'ने स्थाने 'य' लखातो अने 'ब'-'व' वच्चे अभेद जेवुं हतुं. 'वीसळदेव रासो'ना संपादके 'ख' उच्चारणवाळा शब्दो 'ष'मां ज आप्या छे, तो 'उक्तिरत्नाकर'मां एवा शब्दो 'ख'मां तेमज 'ष'मां पण अपायेला छे. अलबत्त, मोटा भागना कोशो आवा शब्दो 'ख'मां ज बतावे छे. आ संकलित कोशमां आवा शब्दो 'ख'मां लई लीधा छे, सिवाय के 'ष' उच्चारण ज ज्यां अभिप्रेत होय. आ संकलित कोशमां 'ख'थी आरंभाता शब्दो मूळ ग्रंथमां शोधती वखते आ स्थिति लक्षमां राखवानी रहेशे.

'व'ने स्थाने 'ब' के 'ब'ने स्थाने 'व' मूकवाथी शब्द वधारे स्पष्ट थतो होय तो अहीं एवुं कर्युं छे, मूळ शब्दनी बाजुमां सुधारेलो शब्द मूक्यो छे ने सुधारेलो शब्द एना वर्णक्रममां मूकी प्रतिनिर्देश कर्यो छे. जेमके,

अबंझ [अवंझ]

अवंझ जुओ अबंझ

'ज'ने स्थाने 'य' लखायो होय त्यां पण आवुं कर्युं छे. जेमके,

जमिवउं जुओ यमिवउं

जसउ जुओ यसउ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यमिवउं [जमिवउं]

यसउ [जसउ]

छेल्ले, आ संकलित कोशमां शब्दोनो जे वर्णानुक्रम गोठववामां आव्यो छे ते विशे थोडी स्पष्टता जरूरी छे. एक महत्त्वनो फेरफार करवामां आव्यो छे ते 'ळ'ना स्थान परत्वे. गुजरातीमां 'ळ' वर्णमाळामां छेल्ले मुकाय छे. परंतु घणा शब्दोमां 'ल' 'ळ' वैकल्पिक छे. जेमके कल – कळ, कलियुग – कळियुग, घडियाल – घडियाळ. उपरांत, मध्यकाळनी लिपिमां तो 'ल' ज हतो ने 'ळ' पण 'ल' चिह्नथी दर्शावातो. केटलाक संपादकोए 'ल'नो 'ळ' कर्यो होय, केटलाके न कर्यो होय. 'वीसळदेव रासो'मां तो राजस्थानी उच्चारने अनुलक्षीने सर्वत्र 'ळ' ज छे, 'ल' नहीं. 'ल'-'ळ'ना भेदे शब्दोने अलग राखीए तो वस्तुतः एक ज छे ते शब्द बे ठेकाणे नोंधाय. एने कारणे एक ज शब्दना संदर्भो पण बे ठेकाणे वहेंचाई जाय अने शब्द तेमज शब्दार्थनुं समग्र चित्र ऊपसवामां अंतराय ऊभो थाय. आथी, आ संकलित कोशमां 'ळ'ने 'ल'नी साथे ज मूक्यो छे. आथी नीचेना जेवो शब्दक्रम नजरे पडशे.

– **अतलिबळ, अतलीबल, अतुलीबल**

– **अमल, अमळ**

– **आगलिथु**

आगळो

आगल्यो

– **आलति, आलती**

आळपंपाळ

आलरां

मध्यकाळनी गुजराती कृतिओनी हस्तप्रतो जोडणीनी एकरूपता दर्शावती नथी. केटलीक वार अल्पशिक्षित, अणघड लहियाओने हाथे लखायेली हस्तप्रतो जोडणीनी अराजकता प्रगट करे छे. मध्यकालीन कृतिओना संपादको पण जोडणीनी एकरूपता भाग्ये ज ऊभी करे छे. सामान्य रीते आपणे त्यां हस्तप्रत मुजब ज जोडणी राखवानुं स्वीकारायुं छे. एमां फेरफार करवा जतां अनेक कोयडाओनो सामनो करवानो आवे. आथी एवुं बने छे के एक ग्रंथमां जे शब्द ह्रस्व 'इ' के 'उ'वाळो होय ते बीजा ग्रंथमां दीर्घ 'ई' के 'ऊ'वाळो होय; एक ग्रंथमां सानुस्वार शब्द होय ते बीजामां निरनुस्वार होय; एक ग्रंथमांनो 'श'वाळो शब्द बीजा ग्रंथमां 'स'वाळो होय, वगेरे. आवा शब्दो वेरविखेर ज रहे तो एमना विशेनी माहिती पण वेरविखेर रहे, जे कोई वार शब्दार्थनी प्रमाणभूतता प्रगट करवामां बाधक बने. आवा शब्दोने कोई पण रीते सांकळी शकाय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए जरूरी हतुं. एक रस्तो जेम 'ल'-'ळ'नो भेद अवगण्यो हतो तेम 'इ'-'ई' वगेरेनो भेद अवगणी एमने एक ज वर्णक्रममां मूकवानो हतो. परंतु आ कोशमां आवुं वारेवारे करवानुं थाय तो एथी एनो उपयोग करनारना मनमां गूंच ऊभी थाय अने एमनी अगवडमां खास्सो वधारो थाय. एथी जे शब्दो आवा जोडणीभेदथी आव्या होय तेमने एक स्थाने भेगा करी, बीजे स्थाने प्रतिनिर्देश करवो एवी पद्धति स्वीकारी. जेमके,

आलिंघन, आलीघन, आर्लीघन

आलीघन जुओ आलिंघन

आर्लीघन जुओ आलिंघन

आम भेगा करवानुं सळंगसूत्र रूपे थयुं नथी ने बन्ने ठेकाणे प्रतिनिर्देश करी बे शब्दोने सांकळवानुं पण कर्युं छे. 'श'-'स'ना भेद परत्वे तो एम ज कर्युं छे. आ बेमांथी एकेय प्रक्रिया न थई होय एवा शब्दो पण रही गया हशे. परंतु विरलपणे मळता के अर्थदृष्टिए ध्यान खेंचता शब्दो ज्यारे उच्चारणभेदथी आव्या होय त्यारे एमने कोई ने कोई रीते सांकळी लेवानी काळजी राखी छे.

पूर्वे अनुनासिक व्यंजनवाळो जोडाक्षर गुजरातीमां अनुस्वारथी दर्शाववानी व्यापक रूढि छे – 'अङ्क'ने स्थाने 'अंक', 'अन्त'ने स्थाने 'अंत'. मध्यकाळमां पण व्यापक रीते सानुस्वार रूप ज मळयुं छे. तेथी बन्ने रूपो मळयां छे त्यां एक ठेकाणे एकठां करी बीजा रूपने एने स्थाने मूकी प्रतिनिर्देश कर्यो छे. जेमके,

अन्तरि जुओ अंतरि

अंतरि, अन्तरि

ज्यां एकलुं अनुनासिक व्यंजनवाळुं रूप मळयुं छे त्यां पण अनुस्वारवाळा रूपमां एने दर्शावी प्रतिनिर्देश करवानुं वलण राख्युं छे, जेथी अनुस्वारवाळा रूपे तो आवा शब्दो बधा मळे ज. जेमके,

चन्द्रोदय

चंद्रोदय जुओ चन्द्रोदय

आम छतां, जे शब्दो एना अनुनासिक व्यंजनवाळा रूपमां सहेलाईथी समजी शकाय तेवा होय ने एनुं सानुस्वार रूप अन्यत्रथी मळतुं ज होय त्यां बे रूपोने जोडवानो के प्रतिनिर्देश करवानो हंमेशां आग्रह राख्यो नथी.

आ संकलित कोशमां समावायेला शब्दकोशो जे कृतिओने आवरे छे ते बारमाथी अढारमा सैका सुधीमां रचायेली छे. आटला लांबा समयगाळामां भाषास्वरूप खास्सुं परिवर्तन पाम्युं होय अने ए परिवर्तनने झीलता शब्दो आ कोशमां दाखल थया होय. एटलेके एक ज शब्द भिन्नभिन्न स्वरूपे प्राप्त थयो होय. जेमके, अउखध, उखध,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओखध; अउलवइ, उलवइ, ओलवइ; खइडां, खेडुं; कइलि, कयलि, केलि; किण, केण; उपन्नउं, उपन्युं; उब्भइ, ऊभइ वगेरे. 'ह', स्वार्थिक 'ल', 'इ', 'उ'ना प्रक्षेपो के लोपथी शब्दस्वरूप बदलायुं होय, के बीजां केटलांक ध्वनिपरिवर्तनो पण थयां होय. जेमके, उशंकल, ओशंकल, ओशिंकळ; ऊलखउ, ऊलिखउ; उमाहउ, उमाहलउ; कउतिग, कुतम, कुतिक, कुहुतग, कौतग, कौतिक, कौतुक; कियारइ, किवारइ, किहारि, किहारे, किहिवारि वगेरे. आवा शब्दो अहीं जुदीजुदी रीते रजू थयेला देखाशे. केटलीक वार आवा शब्दोने एक स्थाने एकठा करी लेवामां आव्या छे ने पछी दरेक शब्दने एने स्थाने पण मूक्यो छे ने प्रतिनिर्देश कर्यो छे. केटलीक वार आवा शब्दोने अलग ज राखी प्रतिनिर्देश कर्यो छे. तो केटलीक वार शब्दोने अलग राख्या छे ने प्रतिनिर्देश पण कर्यो नथी. खास करीने जे शब्दस्वरूप अने अर्थ परत्वे कशी भ्रान्तिने अवकाश न होय ते परत्वे प्रतिनिर्देश करवानुं अनिवार्य लेख्युं नथी. अने ज्यां शब्दस्वरूपोनुं मळतापणुं जलदी ख्यालमां आवे एवुं न होय के ज्यां अर्थनी लाक्षणिक छायाओ विकसी होय के लीधेला अर्थने घणा आधारोथी पुष्ट करवानो होय त्यां ए शब्दस्वरूपोने भेगा करवानुं अथवा जुदा राखी प्रतिनिर्देश करवानुं आवश्यक लेख्युं छे.

अहीं ए नोंधवुं जोईए के केटलीक वार आवां शब्दस्वरूपो मूळ ग्रंथना संपादके ज भेगां करेलां होय छे.

आधारग्रंथो

आ शब्दकोशमां दरेक मूळ शब्दो पछी तरत ए ज्यांथी प्राप्त थयो छे ते सघळा आधारग्रंथोनो निर्देश त्रांसां (इटॅलिक) बीबांथी करवामां आव्यो छे. ए माटे आधारग्रंथोना नियत करेला संक्षेपाक्षरो वापरवामां आव्या छे (जे संक्षेपाक्षरो पाछळ मूकेली आधारग्रंथोनी सूचि साथे जोडवामां आव्या छे). केटलीक वार एवुं बन्युं छे के मूळ आधारग्रंथना शब्दकोशमां शब्दनो जे अर्थ आपवामां आव्यो होय ते पछी शुद्धिपत्रकमां सुधारवामां आव्यो होय. आ संकलित कोशमां ए शुद्धिपत्रकनो अर्थ आमेज करवामां आव्यो छे अने तेथी आधारग्रंथना संक्षेपाक्षरने 'शु' जोडीने दर्शाववामां आवेल छे. जेमके, *आरारा-शु.* केटलीक वार मूळ आधारग्रंथमां शब्दकोश उपरांत टिप्पण के अनुवाद पण होय छे. शब्दकोशमां अर्थ आपवामां न आव्यो होय ते टिप्पण के अनुवादमांथी मळे अथवा शब्दकोशना अर्थ करतां टिप्पण के अनुवादमां कंईक जुदो अर्थ होय अने ए वधारे बंधबेसतो होय एवुं पण बन्युं छे. आ स्थितिमां टिप्पण के अनुवादनो आधार लेवानुं थयुं छे अने ए 'टि' के 'अनु' जोडीने दर्शाव्युं छे. जेमके, *गुर्जरा-टि., हरिवि-अनु.*

आधारग्रंथना निर्देश पूर्वे * निशानी आवे छे ते एम सूचवे छे के ए आधारग्रंथमां नोंधायेलो अर्थ यथायोग्य नहीं होई अहीं छोडी देवामां आव्यो छे. जेमके,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणगाल **अभिऊ.* [अकाल, खराब समय]

चोरस कौंसमांना अर्थो संकलित कोशना संपादके आपेला अर्थ छे.

अचय्युं *अखाका. अखाछ. अखेगी. *नरका.* न कहेलुं, अवर्णनीय

आ दाखलामां *नरका.*नो अर्थ छोडवामां आव्यो छे पण बाकीना त्रण ग्रंथोमां तो शब्दनो अहीं नोंधेलो साचो अर्थ ज मळे छे एम समजवानुं छे.

अजमाल **अखाका. *अखाछ. चित्तसं.* ?, [*उजमाळ, *उज्वल, *प्रकाशमान, *प्रकाशित]

आ दाखलामां *अखाका.* अने *अखाछ.*ना अर्थो छोडवामां आव्या छे, ज्यारे *चित्तसं.*मां अर्थने स्थाने '?' छे एम समजवानुं छे. चोरस कौंसमां संकलित कोशना संपादके आपेला अर्थो पण केवळ तर्करूप ने तेथी संदेहास्पद छे एम फूदडीनी निशानी बतावे छे.

आधारग्रंथमां शब्द जे स्थाने होवानुं निर्देशायुं होय त्यां ए घणी वार मळ्यो नथी. आनुं कारण, अलबत्त, पृष्ठ के कडी-पंक्तिना अंकोमां थयेली छापभूल होय छे. आ कोशना संपादके साचो स्थाननिर्देश शोधवा प्रयत्न कर्यो छे अने घणी वार मळी पण गयो छे. तो स्थाननिर्देश घणा प्रयत्नो पछी पण न मळ्यो होय एवुंये बन्युं छे. केटलीक वार आधारग्रंथना संपादकथी स्थाननिर्देश करवानुं चुकाई गयुं होय छे. स्थाननिर्देश न जड्यो होय त्यां शब्दार्थनी चकासणी न थई शकी होय ए स्वाभाविक छे. आ स्थितिने दर्शाववा आधारग्रंथना संक्षेपाक्षर पूर्वे ० मींडानी निशानी करेल छे. जेमके,

किलिट्ठु *०ऐतिका.* क्लिष्ट

अहीं एम समजवानुं छे के *ऐतिका.*मां आ शब्दनो स्थाननिर्देश नथी अथवा खोटो छे ने साचो स्थाननर्देश मेळवी शकायो नथी. अर्थ, अलबत्त, स्वीकार्य ज लाग्यो छे.

डुडी *कामा(त्रि). ०कामा(शा).* दांडी, ढंढेरो

अहीं एम समजवानुं छे के आपेलो अर्थ तो *कामा(शा).*मांथी मळ्यो छे, परंतु एमां स्थाननिर्देश नथी अथवा साचो नथी.

ए ध्यानमां राखवानुं छे के आ संकलित कोशना संपादके घणे स्थाने साचो स्थाननिर्देश शोधी लीधो छे पण ए कंई आ कोशमां आपी न शकाय. एटले मूळ आधारग्रंथ सुधी जनारने अहीं ० निशानी न होय तेवा ग्रंथमां पण निर्दिष्ट स्थाने शब्द न जडे एवुं बनशे. ते उपरांत जे शब्दनो अर्थ चकासवानी जरूर पडी होय तेनुं स्थान ज आ संकलित कोशना संपादके शोध्युं होय. अन्य शब्दो परत्वे खोटा स्थाननिर्देशो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होय तोपण अहीं ० निशानी न होय.

आ संकलित कोशमां अमुक प्रकारना उच्चारभेदोथी आवेला शब्दो केटलीक वार साथे लई लीधा छे ने बधा आधारग्रंथोने एकसाथे मूकी दीधा छे. त्यां कया उच्चारभेदवाळो शब्द कया आधारग्रंथमांथी छे एनी स्पष्टता नथी थती. तेथी मूळ ग्रंथ सुधी जनारने ए बधा विकल्पोनो प्रयत्न करी जोवानो रहेशे. जेमके,

अधकेरु, अधिकेरु *उपबा. प्रबोप्र. षडाबा.*

आ दाखलामां निर्दिष्ट ग्रंथोमांथी कोईमां **अधकेरु** ने कोईमां **अधिकेरु** हशे, कोईमां बन्ने पण होई शके. ए हकीकतने लक्षमां राखीने मूळ ग्रंथ सुधी जनारे एमां शब्द शोधवानो रहेशे.

केटलीक वार उच्चारभेदोने लुप्त करी शब्दनुं कोई सामान्य रूप स्वीकार्युं छे त्यां मूळ ग्रंथमां शब्द शोधवानुं थोडुं वधारे मुश्केल बनवानुं ए वात आगळ करी छे. एनो दाखलो लईए तो आ संकलित कोशमां

पडखइ *उक्तिर. कादं(शा). *गुर्जरा. जिनरा. नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. विराप. शृंगारमं.* राह जुए, थोभे; **अखाका.* [थोभे, विचारे]

आम मळे छे, तेमां निर्दिष्ट आधारग्रंथोमां वस्तुतः **पडख-, पडखइ, पडखतउ, पडखि, पडखी, पडखीने, पडखे** एम जुदाजुदा शब्दो छे. (**पडिखइ,** अलबत्त, अलग राखेल छे.) मूळ आधारग्रंथमां शब्द शोधनारे आ स्थिति लक्षमां राखवानी रहेशे.

'ख'वाळो शब्द मूळ आधारग्रंथमां 'ष'मां होय एवुं पण बनवानुं ते वात पण आपणे आगळ करी गया छीए. *उक्तिर. उपबा. देवरा. वीसरा.* ए ग्रंथोमां 'ख'वाळा शब्द 'ष'मां मुकायेला छे.

उपरांत, जुदाजुदा ग्रंथनी शब्दक्रमनी थोडी जुदीजुदी पद्धति जोवा मळी छे. जेमके, *प्रबोप्र.*मां 'क्ष' वर्णमाळाने छेडे छे, 'क'ना जोडाक्षरना स्थाने नहीं. *ऐतिरा.*मां अनुस्वारवाळा शब्दो अनुस्वार वगरना शब्दो पूर्वे मुकाया छे, जेमके 'आ' पूर्वे 'आं'. (जोके 'अं'मां आ नियम जळवायो नथी.) *षडाबा.*मां अनुस्वारवाळा शब्दो जे-ते वर्णना सर्व स्वरांत रूपो पूरा थया पछी आवे छे. जेमके, 'का', 'कि', 'कु' वगेरे पछी 'कां' 'किं' 'कुं' वगेरे. मूळ आधारग्रंथोनी वर्णक्रमनी आवी भिन्नभिन्न रीतने कारणे पण एमां शब्द शोधवामां थोडी महेनत पडवानी.

छेल्ले, मूळ आधारग्रंथोमां अवारनवार सरतचूकथी वर्णक्रमभंग पण थयो छे, कोई वार तो मोटो. ए स्थिति पण आ संकलित कोशनो शब्द आधारग्रंथोमां शोधवामां आडे आववानी.

पण आ संकलित कोशनो उपयोग करनारे एटली खातरी राखवानी छे के अहीं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोंधायेलो शब्द आधारग्रंथमां उच्चारभेदथी, क्रमभेदथी के क्रमभंगथी पण जरूर मळवानो. तेथी ए माटे ए जरा आमतेम खांखांखोळां करे ए जरूरी छे.

आधारग्रंथोनी केटलीक खासियतो आ पछी ए ग्रंथोनो संक्षिप्त परिचय आप्यो छे एमांथी जाणवा मळी शकशे.

शब्दार्थ

आधारग्रंथोना निर्देश पछी शब्दार्थ सादां अने सीधां बीबांमां आपेल छे. केटलाक आधारग्रंथोमां शब्दार्थ अंग्रेजीमां छे – जेमके *उपबा., गुर्जरा., वसंवि(ब्रा)., वीसरा.* अने *षडाबा.*मां; केटलाकमां हिंदीमां छे – जेमके *ऐतिका.* तथा *जिनरा.*मां; तथा कोईकमां संस्कृतमां – जेमके *उक्तिर.* अने *प्राचीसं.*मां. अहीं आ शब्दार्थोनो गुजरातीमां अनुवाद करी लीधो छे, सिवाय के हिंदी के संस्कृत शब्द गुजरातीमां पण वपरातो होय.

आ एक संकलित कोश होई एनो मुख्य आशय तो शब्दो तेमज शब्दार्थो बन्ने मूळ आधारग्रंथोमां होय ते ज आपवानो होय. परंतु मूळ आधारग्रंथमां जेम खोटा पाठवाचनने कारणे के भ्रष्ट पाठने कारणे खोटा शब्द आवी गया छे एम एने लीधे के संपादकनी समजफेरने लीधे खोटा शब्दार्थ पण आवी गया छे. आ कोशने मात्र संकलित कोश नहीं पण संशोधित कोश बनाववानो आशय रह्यो होवाथी जेम पाठसुधारणा करवानी थई तेम शब्दार्थसुधारणा पण करवानी थई छे. पाठसुधारणा करतां मूळ ग्रंथनो शब्द बदलायो, छतां मूळ ग्रंथनो शब्द राखीने ज सुधारेलो शब्द आप्यो, केमके मूळ ग्रंथमां शब्द जेम होय तेम राखवो अनिवार्य हतो. ए द्वारा ज मूळ ग्रंथना प्रयोग सुधी पहोंची शकाय. पण शब्दार्थ बदलातो होय त्यां मूळ शब्दार्थ साचववो अनिवार्य न हतो केमके एथी मूळ ग्रंथ सुधी पहोंचवामां कोई बाधा ऊभी थती नहोती. ने मूळ शब्दार्थ शुं हतो ए जाणवा इच्छनार मूळ ग्रंथ सुधी पहोंचीने ए सहेलाईथी मेळवी शके तेम हतुं. बीजी बाजुथी खोटा शब्दार्थोथी आ कोशने भरी देवाथी एनो उपयोग करनार मोटा भागना वर्ग उपर निरर्थक बोजो पडे ने एने निरर्थक गूंचवावानुं थाय एवुं बनतुं हतुं. वळी, शब्दार्थ साचो होवा विशे शंका जाय पण ए खोटो होवानुं खात्रीपूर्वक कही न शकाय अथवा तो ए अपर्याप्त होय अने एनी पूर्ति ज करवानी जरूर होय एवुं पण केटलाक दाखलाओमां देखातुं हतुं. आम शब्दार्थनी कंईक संकुल परिस्थिति सामे आवी अने शब्दार्थने केम रजू करवा ते जरा कोयडारूप बन्युं.

उपरांत, मूळ ग्रंथना शब्दार्थ छोडवाना थाय के ए शंकास्पद लागे के एमां पूर्ति करवानी थाय त्यारे कोशना संपादक पोताना अर्थ आपी शके के न आपी शके, के

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खातरीपूर्वक न आपी शके – केवळ तर्क रूपे ज आपी शके, आम विविध स्थितिओ संभवती हती. आ बधी स्थितिओमां शुं करवुं अने शब्दार्थने केम रजू करवा ए विशे चोक्कस नीतिनियम नक्की करवा जरूरी हता. केटलीक मथामणने अंते शब्दार्थ रजू करवानी नीचे प्रमाणेनी पद्धति नीपजी आवी :

(१) मूळ ग्रंथमां स्पष्ट रीते खोटो शब्दार्थ होय ते आ शब्दकोशमां न ज लेवो. आ कोशना संपादक पोताना तरफथी अर्थ आपी शके तेम होय त्यां ए [ ] चोरस कौंसमां मूकवो, एणे आपेलो अर्थ खातरीपूर्वकनो न होय, तर्करूप होय त्यां एनी आगळ * फूदडी करीने ए स्थिति दर्शाववी अने ए कोई प्रकारनो अर्थ आपी शके तेम न होय त्यां प्रश्नार्थ ज मूकवो. कोई एक ग्रंथमांथी एक शब्दनो खोटो अर्थ छोडवानो थाय अने बीजा ग्रंथोमांथी एनो साचो अर्थ मळी रहेतो होय त्यां, देखीती रीते ज, आ कोशना संपादके कंई करवानुं न रहे. एणे जे ग्रंथनो अर्थ छोड्यो होय तेना संक्षेपाक्षरनी पूर्वे * फूदडी मूकीने परिस्थितिनो निर्देश मात्र करवानो रहे.

थोडा दाखला जोईए :

पड (पड पितराई) **प्रेमाका.* [पितराईना पितराई, वधु एक पेढी दूरना पितराई]

पड-पितराई **नरका.* [दूरना पितराई]

*प्रेमाका.*मां 'पड' शब्द छे ने एनो अर्थ आप्यो छे 'रणपट, युद्धनुं मेदान'. कृतिमां शब्दनो प्रयोग आम मळे छे – *मेल मेल रे* ***पड, पितराई*** *!* दुर्योधनपुत्र लक्ष्मण अभिमन्युना सकंजामां आवतां ए आंखमां आंसु साथे आ उक्ति बोले छे. मूळ ग्रंथना संपादके आपेलो अर्थ पहेली दृष्टिए बेसतो लागे, पण जरा विचार करतां आपणने शंका थाय छे के लक्ष्मण अभिमन्युने युद्धमेदान छोडवानुं कहे के पोताने छोडवानुं कहे ? आ ज कृतिमां अन्यत्र थयेलो 'पड पितराई' प्रयोग पण आपणी नजर सामे आवे छे :

मस्तक छेदवा आवतो दीठो ज्यारे ***पड-पितराई***
पड्यां पड्यां अभिमन्युने क्रोध आव्यो भराई.

दुःशासनपुत्र काळकेतु अभिमन्यु सामे आवे छे तेनो अहीं उल्लेख छे. देखीती रीते अहीं काळकेतुने ज 'पड-पितराई' कह्यो छे. हिंदीमां प्रपौत्र माटे परपोता, पडपोता एवा शब्दो छे ते जोतां 'पडपितराई'मां 'पड' 'प्र'मांथी आवेलो छे एनी शंका रहेती नथी. प्रपौत्र, परपोता के पडपोता एटले पौत्रनो पुत्र, तो 'पडपितराई' एटले पितराईनो पितराई, वधु एक पेढी दूरनो पितराई. अर्जुन ने दुर्योधन के दुःशासन ए पितराई, तेथी अभिमन्यु अने लक्ष्मण के काळकेतु ए पडपितराई. तेथी 'मेलमेल रे, **पड-पितराई'** एम पाठ सुधारी लक्ष्मण पोताना पडपितराई अभिमन्युने पोताने छोडी देवा वीनवे छे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एम अर्थ लेवानो थाय. परिणामे मूळ ग्रंथनो अर्थ छोडी आ कोशना संपादकने पोतानो अर्थ मूकवानो थयो छे. मूळ ग्रंथना संक्षेपाक्षर पूर्वे * फूदडी करीने अने कोशना संपादकनो अर्थ चोरस कौंसमां मूकीने आ दर्शाववामां आव्युं छे.

*नरका.*मां 'पडपितराई'नो 'पितराईओनो समुदाय' एवो अर्थ आपवामां आव्यो छे, पण कृतिमांनी पंक्ति आ प्रमाणे छे : ***पड-पितराई*** *भोजाई वहेवाईनां शोधी शोधी दीधां वस्त्र पोती.* कुंवरबाईना मामेराप्रसंगे थती पहेरामणीनुं आ वर्णन छे. भगवान पहेरामणी करवा बेठा एटले कुंवरबाईनां सासरियांने केटलो लोभ लाग्यो ते दर्शावती आ पंक्ति छे. एटले एमां 'पितराईओनो समुदाय' नहीं, 'दूरना पितराई' एवो अर्थ ज घटित गणाय, अने उपर जोयुं तेम ए अर्थने ज भाषादृष्टिए टेको मळे तेम छे. 'समुदाय'नो अर्थ आपनार आ शब्दमां कशुं नथी. एटले ए अर्थ छोडवो ज पडे. अहीं पण मूळ ग्रंथना संक्षेपाक्षर पूर्वे * फूदडी करी अने कोशना संपादकनो अर्थ [ ] चोरस कौंसमां मूकीने आ स्थितिनो निर्देश कर्यो छे.

पडोचा **उषाह.* [*अपेक्षा] [*प्रा.पडुच्चा, सं.प्रतीत्य]

*उषाह.*मां आ शब्दनो अर्थ 'विलाप' आप्यो छे. *करी* ***पडोचा*** *कुंवरी रडइ* ए पंक्तिमां ए अर्थ बेसी जाय छे माटे अनुमानथी ए आपवामां आव्यो जणाय छे पण आ शब्दनो ए अर्थ लेवा माटे कशो आधार नथी. 'विलाप करीने रडे छे' एम आमां पुनरुक्ति पण थाय छे. तेथी संकलित कोशना संपादके प्राकृत कोशना शब्दने आधारे 'अपेक्षा' एवा अर्थनो तर्क कर्यो छे. स्वप्नमांथी जागेली अने अनिरुद्धनो संग गुमाव्यो छे एवी उषानी आ उक्ति होई ''अनिरुद्धनी अपेक्षा करीने रडे छे'' एम कदाच अर्थ होई शके. आ अर्थ खातरीपूर्वकनो नहीं, पण एक अटकळ रूपे होई एना पूर्वे * फूदडी मूकी छे.

परगडउ *आरारा.* **ऐतिका. ऐतिरा. प्राचीफा.* प्रकट, प्रसिद्ध

अहीं एम समजवानुं छे के *ऐतिका.*मां आपेलो अर्थ छोडवानो थयो छे अने साचो अर्थ अन्य निर्दिष्ट ग्रंथोमांथी मळ्यो छे ते ज छे.

(२) मूळ ग्रंथनो अर्थ खातरीपूर्वक साचो के खोटो कही शकाय तेवुं न होय एटलेके शंकास्पद लागतो होय त्यां ए अर्थ आपी एनी पूर्वे * फूदडी करवी. संकलित कोशना संपादक अर्थ उमेरी शके त्यां उमेरे – खातरीपूर्वक के अटकळे. जेमके,

परजियो *नरका.* *परजियो सोनी, [*कोई अलंकार]

अहीं *नरका.*नो 'परजियो सोनी' ए अर्थ शंकास्पद लाग्यो छे, ते साथे संकलित कोशना संपादके आपेलो 'कोई अलंकार' ए अर्थ पण अटकळरूप छे एम समजवानुं छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पराभव *गुर्जरा.* अपमान, [तिरस्कार] (सं.); *लावल.* *पराजय, [तिरस्कार, अनादर]

अहीं *लावल.*नो 'पराजय' अर्थ शंकास्पद छे, पण 'तिरस्कार, अनादर' ए अर्थ संदर्भमां बराबर बेसे छे एम समजवानुं छे.

***परालें [पडाळे]** *नरप.* *राते, [परसाळे]

अहीं मूळ ग्रंथनो 'परालें' पाठ अने तेनो 'राते' ए अर्थ बन्ने शंकास्पद छे तेमज 'पडाळे' पाठ अने एनो 'परसाळे' अर्थ लेतां संदर्भमां बराबर बेसे छे एम समजवानुं छे.

(३) मूळ ग्रंथमां ज आपेला अर्थ सामे प्रश्नार्थ मूकी संशय व्यक्त कर्यो होय त्यारे जो अर्थ साधार ठरतो होय तो प्रश्नार्थ रद करवो; ए अर्थ साव खोटो ज साबित थतो होय तो छोडी देवो; अन्यथा एम ने एम राखी संकलित कोशना संपादकथी खातरीपूर्वकनो के अटकळे अर्थ आपी शकातो होय तो आपवो. जेमके,

परीकरी *प्रेमप.* वींटाळी ?

अहीं मूळ ग्रंथना संपादके ज पोते आपेला अर्थ परत्वे संशय व्यक्त कर्यो छे ने संकलित कोशना संपादकने एमां कंई सुधारवा जेवुं लाग्युं नथी एम समजवानुं छे.

परीभव *कामा(त्रि).* हार, अपमान ?, [कष्ट, पीडा]

अहीं मूळ ग्रंथना संपादके संशयपूर्वक आपेला अर्थ खोटा छे एम खातरीपूर्वक कही शकातुं नथी, पण 'कष्ट, पीडा' ए अर्थ योग्य रीते बेसी जाय छे एम समजवानुं रहे छे.

पुंछ *सिंहा(शा).* झडपी ?, [*पहोंच, *गति]

अहीं मूळ ग्रंथनो अर्थ तो शंकास्पद रह्यो ज छे ते साथे संकलित कोशना संपादके आपेला अर्थ पण अटकळपूर्वकना ज छे एम समजवानुं छे.

(४) मूळ ग्रंथना संपादकने शब्दार्थ बेठो न होय तेथी एणे कोई शब्दार्थ आप्यो ज न होय के केवळ प्रश्नार्थ मूकी चलाव्युं होय एम पण जोवा मळे छे. मूळ ग्रंथमां शब्दार्थ न होय त्यां '–' गुरुरेखा मूकी ए स्थिति दर्शावी अने प्रश्नार्थ होय त्यां एम ने एम राखवो तथा संकलित कोशना संपादकथी अर्थ आपी शकाय तो आपवो. (जो के आरंभमां '–' के '?' मूकवाने बदले मूळ ग्रंथनो अर्थ छोड्यानी निशानी करी हती जे पछी सुधारी लीधुं छे, पण क्यांक सुधारवानुं रही गयुं पण हशे.)

दाखला तरीके,

अरंण (अरंण मूके) *मदमो.* –, [*अरण्यमां मूके, *दूर राखे, *छोडे]

अहीं मूळ ग्रंथना संपादके अर्थ आप्यो नथी अने संकलित कोशना संपादके

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थनी अटकळ करी छे एम समजवानुं छे.

पांडर *प्राचीसं.* ?, [*फिक्कुं]

अहीं मूळ ग्रंथमां शब्दार्थने स्थाने केवळ प्रश्नचिह्न छे. संकलित कोशना संपादकने 'फिक्कुं' ए अर्थनी शक्यता जणाई छे एम समजवानुं छे.

पिहिति *आरारा.* ?, [रांधेली दाळ, लचको]

अहीं पण मूळ ग्रंथना संपादके कोई शब्दार्थ न आपतां प्रश्नचिह्न मूक्युं छे, पण संकलित कोशना संपादकने 'रांधेली दाळ, लचको' ए निश्चित अर्थ जणायो छे एम समजवानुं छे.

*उक्तिर.*ना शब्दार्थ आ संकलित कोशमां रजू करवामां जरा जुदी रीत अपनाववानी थई छे ए तरफ खास ध्यान दोरवुं जोईए. *उक्तिर.*मां संस्कृत पर्यायो आपवामां आव्या छे, एनो अहीं गुजराती अनुवाद करी लेवानुं राख्युं छे, पण एमां मूंझवणभरी परिस्थितिओ सामे आवी छे. केटलाक संस्कृत शब्द एकथी वधारे अर्थ धरावता होय, केटलाक शब्द संस्कृत शब्दकोशोमां मळे नहीं अने प्राकृत के देश्य शब्दने संस्कृत रूप अपायुं होवानो संभव लागे, केटलीक वार मूळ शब्दनुं ज कृत्रिम संस्कृतीकरण करी नाखवामां आव्युं होय. आथी *उक्तिर.*ने कयो अर्थ अभिप्रेत हशे ते नक्की करवानुं मुश्केल बनी जाय. *उक्तिर.*मां जूज अपवादो बाद करतां शब्द वाक्यमां वपरायेलो नथी. तेथी ए चावी तो अहीं आपणा हाथमां नथी. *उक्तिर.*ना जे शब्दो अन्य ग्रंथोमां पण वपरायेला मळे छे त्यां एना अर्थ पण आपोआप मळी जाय छे. ते उपरांत, *उक्तिर.*ना घणा शब्दो अमुकअमुक जूथमां नोंधायेला छे, जेमके खाद्यपदार्थने लगता शब्दो, जीवजंतुओने लगता शब्दो, घरवखरीने लगता शब्दो, विविध प्रकारनी स्थितिओने लगता शब्दो वगेरे. आमांथी केटलीक वार सूचन मळे छे ने अर्थनिर्णय थई शके छे. पण बधी वखते एम थई शकतुं नथी. अने जूथमां न गोठवाता होय, छूटा रही जता होय एवा शब्दो पण घणा होय छे ज. आथी *उक्तिर.*ना शब्दार्थ रजू करवामां आवी पद्धति अपनाववी पडी छे.

(१) ज्यां अपायेलो संस्कृत शब्द परिचित ज होय त्यां ए ने एम ज राखी देवो. जेमके,

अउध *उक्तिर.* अयोध्या

(२) ज्यां संस्कृत शब्दनो एक अर्थ निश्चित थई शकतो होय त्यां ए मूकवो अने गुजराती शब्दनी व्युत्पत्तिनी के एवी कोई दृष्टिए आवश्यक होय तो संस्कृत शब्द कौंसमां बतावो. जेमके,

अउधारिवुं *उक्तिर.* अवधारवुं, ध्यानमां लेवुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अउलवइ *उक्रिर.* ओळवे, कपटथी पडावी ले (सं.अपलपति)

३. ज्यां एक अर्थनी अटकळ ज थई शकती होय के एकथी वधु अर्थनी शक्यता देखाती होय त्यां एवा अर्थो संपादकना [ ] चोरस कौंसमां फूदडी करीने ज दर्शाववा. जेमके,

पाटलउ *उक्रिर.* [*पाटले बेसाडी करातो सत्कार] (सं.पाटाचारः)

बकोर *उक्रिर.* [*शोर, *हांसी] (सं.बर्करिका) [दे.बक्कर]

(४) ज्यां अपायेला पर्यायनो कोई अर्थ पकडी ज न शकाय त्यां संकलित कोशना संपादक तरफथी [ ] चोरस कौंसमां '?' मूकवो. आ संयोगोमां पर्याय-शब्द कृत्रिम संस्कृतीकरणवाळो होय तोपण कौंसमां मूकी साचववो. जेमके,

ऊसलसीधुं *उक्रिर.* [?] (सं.उल्लासित-संधिकम् / उत शलंध्रं)

जुदाजुदा ग्रंथोमांथी एक ज शब्दना अर्थ एकथी वधु पर्यायो रूपे मळ्या होय त्यारे अहीं एने संकलित करी लीधा छे. ने जरूर लागी त्यां पर्यायोमांथी पसंदगी करी लीधी छे तेमज क्यांक शाब्दिक फेरफार करी लीधो छे. आथी निर्दिष्ट ग्रंथोमांथी कोईमां शब्दनो अहीं अपायेलो अर्थ बराबर ए ज शब्दरूपमां न मळे एम बने, पण ए त्यां तत्त्वतः तो जोई ज शकाशे.

तत्त्वतः एक ज अर्थ जुदाजुदा पर्यायशब्दोथी दर्शावातो होय त्यारे ए पर्यायशब्दो अल्पविराम-चिह्नथी जुदा पाडी एकसाथे लीधा छे; पण जे अर्थो के अर्थछायाओ तत्त्वतः भिन्न छे तेमनी वच्चे अर्धविरामचिह्न मूक्युं छे. आमां ज्यां जुदाजुदा आधारग्रंथो जुदाजुदा अर्थो आपता होय त्यां एमने पण जुदा पाड्या छे. जेमके,

उफराटुं, उफराठुं, ऊफराटुं, ऊफरांठुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ऊंचुं करेलुं, उलाळेलुं; **कादं(शा). *नलाख्या. *प्रबोप. *प्रेमाका.* [पराङ्मुख, अवळुं, पीठ फेरवेलुं]; *शृंगामं, सिंहा(शा).* अवळुं, [प्रतिकूळ]; *शृंगामं.* आडुं, अवळुं, [ऊलटी दिशामां]; [अवळो भाग, पूंछडुं]

अर्धविरामचिह्न ';' थी जुदी पाडेली आ शब्दनी पांच अर्थछायाओ अहीं नोंधायेली छे एम कहेवाय. बीजी रीते जोईए तो आ शब्द *प्रेमाका.*मां बे अर्थछायाओमां अने *शृंगामं.*मां त्रण अर्थछायाओमां वपरायेलो मळ्यो छे.

आ संकलित कोशमां घणा अर्थनिर्णयो करवाना थया छे एमां मुख्य परिबळ अने चावी तो शब्दोना कृतिओमां थयेला वास्तविक प्रयोगो छे. प्राप्त अर्थ, शब्द कृतिमां जे रीते वपरायो होय ए जोतां असंगत के शंकास्पद लागे एटले साचो अर्थ शोधवा तरफ वळवानुं थाय. केटलीक वार तो शब्दना घणा प्रयोगो एकठा थवाथी एमांथी ज खरा अर्थनो संकेत थयो छे. पछी संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशी, फारसी, उर्दू, हिंदी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थानी अने गुजराती कोशोनी भरपूर मदद लीधी छे. आ कोशोए कोई वार शब्दना अर्थने आबाद उघाडी आप्यो छे. अलबत्त, शब्द त्यां उच्चारभेदथी पडेलो होय ने एना सुधी पहोंचवा मथामण करवी पडी होय एवुं बन्युं छे. डॉ. भायाणीनी शब्दचर्चाओ-शब्दकथाओ, डॉ. सांडेसरानां *लेक्सिकोग्रेफिकल स्टडिझ इन जैन संस्कृत* ने *वर्णकसमुच्चय* जेवां संपादनो, वनस्पतिकोशो, जैनधर्मविचारना ग्रंथो वगेरे प्रकारनां केटलांक इतर साधनोनो पण वारंवार उपयोग कर्यो छे अने ए उपयोग सार्थक पण थयो छे. डॉ. भायाणीना परामर्शननो लाभ वारंवार लीधो छे ते उपरांत जुदाजुदा विषयना केटलाक जाणकारोने पूछवानुं पण अवारनवार बन्युं छे. आ संपादकनी पोतानी मध्यकालीन भाषासाहित्यनी जाणकारी पण केटलेक स्थाने काम आवी होय. एक ज शब्द माटे अनेक साधनोमां खांखांखोळां करवा पड्या छे ने अंते संपादके पोतानां सूझ अने विवेक वापरवा पड्यां छे एवुं पण बन्युं छे. आ आखी प्रक्रिया अहीं बतावी न शकाय तेमज आ संकलित कोशमां मूळना अर्थो ज्यां बदल्या छे त्यां कया आधारे एम कर्युं छे ए पण कोशमां न दर्शावी शकाय. पण संपादके ज्यां अर्थ बदल्या छे त्यां आधारपूर्वक ज एम कर्युं छे एनी खातरी जरूर आपी शकाय. ज्यां नवा अर्थ विशे पूरी खातरी थई शकी नथी त्यां शंकाचिह्न मूकवानी पण काळजी राखी छे. आम छतां संपादकनी सरतचूक के गेरसमज काम नहीं करी गई होय एवुं तो साव न कही शकाय.

आ कोशमां अर्थनिर्णयनी प्रक्रिया केवी रीते चाली छे एनो थोडो अंदाज आ ग्रंथमां पाछळ थोडीक शब्दार्थचर्चा मूकी छे तेना परथी आवशे.

कोशमां अर्थनिर्णय माटे उपयोगमां लीधेला ग्रंथोनी यादी पण पाछळ जोडवामां आवी छे.

शब्दमूळ

शब्दार्थ आप्या पछी कौंसमां शब्दमूळ एटलेके व्युत्पत्ति आपवामां आवेल छे. गोळ कौंस( )मां छे ते मूळ ग्रंथमांथी प्राप्त थयेल शब्दमूळ छे, चोरस कौंसमां छे ते आ संकलित कोशना संपादके आपेल छे. आ विशे आरंभे ज स्पष्टता करवी जोईए के कौंसमां बधे चुस्त रीते व्युत्पत्ति अभिप्रेत नथी. केटलेक स्थाने मळतापणुं ज अभिप्रेत छे. एटले मध्यकालीन गुजराती शब्दने मळतो शब्द अन्यत्र प्राप्त थतो होय तो ए पण नोंध्यो छे. कौंसमां भीली, कच्छी, हिंदी, मराठी, पंजाबी, पालि वगेरे भाषाना शब्दो नोंध्या छे त्यां समान्तरता ज समजवानी छे.

आम तो, डॉ. भायाणीनो अभिप्राय एवो हतो के व्युत्पत्तिना विषयमां बहु पडवा जेवुं नथी. आपणे त्यां घणी वार व्युत्पत्ति अपाय छे ते आधारभूत होती नथी, ए गमे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेम बेसाडी देवामां आवेली होय छे के अटकळे मुकायेली होय छे. छतां व्युत्पत्ति आपवी ज होय तो अत्यंत प्रमाणभूत होय तेवी ज आपवी. खोटी व्युत्पत्तिना प्रसार-प्रचारमां आपणे साधनरूप न थवुं.

खरी वात छे के व्युत्पत्ति ए एक स्वतंत्र ने अलायदुं विषयक्षेत्र छे अने ए जुदी ज सज्जता ने जुदो प्रयास मागे. आ कोश मुख्यत्वे शब्दार्थकोश छे, ए ने माटे व्युत्पत्ति आपवी अनिवार्य नथी. एटले डॉ. भायाणीनी ए सलाह योग्य ज हती के व्युत्पत्ति मर्यादित रूपे ने एकदम प्रमाणभूत होय ते ज आपवी. परंतु प्राप्त व्युत्पत्तिनी प्रमाणभूतता चकासवानी आ कोशना संपादकमां पूरी योग्यता नहोती अने हानोपादाननो विवेक करवो एने माटे मुश्केल हतो. बीजी बाजुथी एम जोवा मळतुं हतुं के निर्दिष्ट व्युत्पत्तिओ के समान्तरताओथी घणी वार शब्दने वधारे सारी रीते ओळखी शकातो हतो ने एना अर्थने टेको प्राप्त थतो हतो. घणी वार शब्दना अर्थनो निर्णय करवानी प्रक्रियामां संस्कृतादि भाषाना शब्दो मळी आव्या छे. एम पण लाग्युं के शब्दमूळ अंगेनी जे कंई सामग्री प्राप्त थती होय ए एक वखत संकलित थई जाय तो एमां कंई खोटुं नथी. मूळ संपादित ग्रंथो सिवायनां साधनोमांथी एवी सामग्री मळती होय तो एनेये, आ दृष्टिए, आमेज करवी जोईए.

आम, आ कोशमां शब्दना स्वरूप अने प्रयोग पर प्रकाश पाडनार व्युत्पत्तिनी के एवी सामग्री आपवामां संकोच राख्यो नथी. पण साथेसाथे डॉ. भायाणीनी प्रमाणभूतता माटेनी जिकरने अवगणी पण नथी. मूळ ग्रंथोमां के अन्यत्रथी प्राप्त व्युत्पत्तिओ पोताना मर्यादित ज्ञानथी पण संपादकने निराधार जणाई त्यां ए छोडी ज दीधी छे. ज्यां संपादकथी निर्णय थई शक्यो नथी त्यां फूदडी मूकी शंका दर्शावी छे. मूळ ग्रंथमांनी अने अन्यत्रथी प्राप्त के संपादके विचारेली एम बन्ने व्युत्पत्तिओ साथे मूकवानुं पण घणी वार बन्युं छे. संस्कृतनां कल्पित रूपो पण एना संकेत साथे साचवी लीधा छे – ए मान्य प्रणालिका होवाथी. *उक्ति*र.ना संस्कृत शब्दो तो व्युत्पत्तिनी दृष्टिए टकी शके तेम न होय त्यां पण, अर्थप्रकाशक होवाने कारणे साचवी लेवानुं बन्युं छे.

ए हकीकत ध्यानमां राखवानी छे के मध्यकालीन शब्दनी व्युत्पत्ति दर्शावती वखते ए ज विभक्तिरूप के क्रियापदरूप आपवानो आग्रह राख्यो नथी. शब्दनुं मूळ कोई पण रीते सूचवाय ए ज पर्याप्त लेख्युं छे.

ज्यां शब्दार्थ रूपे ज संस्कृतादि भाषानो मूळ शब्द आवी जतो होय त्यां पछी व्युत्पत्तिना विभागमां ए शब्द फरी बतावावानुं राख्युं नथी, केमके आ कंई व्युत्पत्तिकोश नथी ने अहीं तो गमे ते रीते मूळ शब्द दर्शावाय ते चाली शके.

थोडाक दाखलाओथी आ बधा मुद्दा समजीए :

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्खइ *षष्टिप्र.* कहे छे (सं.आख्याति)

अहीं गोळ कौंसमानी व्युत्पत्ति मूळ ग्रंथमांथी छे एम समजवानुं छे.

अज्जवि *ऐतिका.* आज पण [सं.अद्यापि]

अहीं चोरस कौंसमांनी व्युत्पत्ति संपादके पूरी पाडेली छे एम समजवानुं छे.

अउगनाइ *उक्तिर.* ध्यानमां न ले (सं.अपकर्णयति) [सं.अवकर्णयति]

गोळ कौंसमां आपेली व्युत्पत्ति मूळ ग्रंथमांथी छे पण एने माटे पूरो आधार नथी एम फूदडी करीने दर्शाव्युं छे. चोरस कौंसमां मूकेली व्युत्पत्तिने माटे आधार छे एम समजवानुं छे.

अत *षडावा.* *अहीं, [*आ बाबतमां] (सं.अत्र), [*कदाच, *संभवतः] [सं.उत]

आ दाखलामां मूळ ग्रंथमां **अतने** सं.'अत्र'मांथी व्युत्पन्न करी अर्थ आपवामां आव्यो छे, जे शंकास्पद जणायो छे. आथी संपादके एनी सं.'उत'मांथी व्युत्पत्ति साधी बीजा अर्थनो तर्क कर्यो छे.

अतांड *प्रेमाका.* खूब ऊंचेथी [*सं.उत्तान]

अहीं मूळ ग्रंथमां व्युत्पत्ति आपवामां आवी नथी, ने आ कोशना संपादके पण तर्क कर्यो छे.

आफरिउ *गुर्जरा. विराप.* आफरो चडेलुं, [उन्माद चडेलुं]; *प्रद्युच.* आफरो चडेलुं, फूलेलुं (सं.आ+स्फुर्) [सं.आ+स्फर्]

अहीं मूळ ग्रंथमां अपायेली व्युत्पत्ति उपरांत संपादके उमेरेली व्युत्पत्ति पण शक्य छे एम समजवानुं छे. वस्तुतः संस्कृतमां ज 'आ+स्फुर्' परथी 'आ+स्फर्' थयेल छे.

आ रीते एक करतां वधु ग्रंथोमांथी शब्द मळेलो होय त्यां व्युत्पत्ति एमांना कोई एक के वधु ग्रंथमां अपायेली समजवानी छे, एनी तरत पूर्वे निर्दिष्ट ग्रंथमांथी ज छे एम समजवानुं नथी.

आखडे *प्रद्युच.* ठोकर खाय; **अखाका. कादं(शा). नेमिछं. *प्रेमाका.* लथडी पडे; *नरका.* [लडे] (सं.आस्खलति) [सं.*आक्षुटति]

अहीं मूळ ग्रंथमां अपायेली व्युत्पत्ति सामान्य रीते स्वीकृत व्युत्पत्ति छे सं. 'आक्षुटति'मांथी शब्द वधारे सारी रीते व्युत्पन्न थई शके तेम होवाथी संपादके ए व्युत्पत्ति उमेरी छे, पण 'आक्षुटति' ए संस्कृतमां प्रयोजातुं रूप नहीं पण कल्पित रूप छे एम एनी पूर्वे फूदडी करी छे ते परथी समजवानुं छे. संस्कृतमां 'क्षुट्' शब्द मळे छे, 'आक्षुट्' शब्द मळतो नथी.

आमलीय *तेरका.* आंबळो (सं.*आमलिका, अप.आमलीय)

अहीं एम अभिप्रेत छे के संस्कृतमां 'आमलिका' शब्द मळतो नथी, पण एवा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द परथी ज अपभ्रंशमां मळतो 'आमलीय' शब्द आवी शके.

आमोडउ *प्राचीसं.* अंबोडो (सं.आम्रमुकुट) [दे.आमोडो]

मूळ ग्रंथमां व्युत्पत्ति आपी छे ते बराबर छे, पण साथे 'आमोडो' शब्द देश्य शब्द तरीके पण नोंधायेलो मळे छे ए संपादकना उमेरणनुं तात्पर्य छे.

अजमाण *नरका.* अजमो [हिं.अजवाइन]

अहीं संपादके हिंदी शब्दनी समान्तरता दर्शावी छे एम समजवानुं छे एटलेके 'सरखावो हिं.अजवाइन' ए तात्पर्य छे.

अडसीला **नेमिछं.* [हठीला] [रा.अडसाला]

अहीं राजस्थानीमां 'अडसाला' शब्द आ अर्थमां प्राप्त थाय छे एटलुं ज तात्पर्य छे. **अडसीला**मां पाठदोष जोई शकाय एवुं नथी तेथी बन्ने शब्दो एम ज राख्या छे.

कणि *आरारा.* कन्या, पुत्री (रा.; सं.कनी)

अहीं एम दर्शाववामां आव्युं छे के **कणि**नुं मूळ सं.'कनी'मां छे, पण राजस्थानीमां पण **कणि** शब्द नोंधायेलो छे.

आ साथे ज ए स्पष्टता करवी जोईए के ज्यां शब्दने राजस्थानी, हिंदी वगेरे कह्यो छे त्यां ए केवळ राजस्थानी के हिंदी छे एम हंमेशां तात्पर्य नथी, भगवद्गोमंडल जेवो कोश पण घणी वार ए शब्द आपतो होय छे अने घणी गुजराती कृतिओमां ए प्राप्त थतो होय छे, परंतु राजस्थानी के हिंदी कोशमांथी ए शब्दने समर्थन मळे छे ए बतावववानुं तात्पर्य होय छे.

आराडि *षडाबा.* आक्रंद, चीस, बराडा (सं.आरटते)

अहीं, जोई शकाय छे के, संज्ञारूपना मूळ तरीके क्रियापदरूप अपायेलुं छे. संस्कृतमां संज्ञारूप मळतुं न होवाथी क्रियापदरूप परथी ए सधायुं होवानी धारणा एनी पाछळ छे.

अकयत्थ *आरारा.* एळे; *ऐतिका.* अकृतार्थ, [जेनुं जीवन सार्थक नथी एवो]

अहीं **अकयत्थ**नुं मूळ सं.'अकृतार्थ' छे, जे शब्दार्थ तरीके ज आवेल छे तेथी व्युत्पत्ति-विभागमां एने दर्शावेल नथी.

अणगाल **अभिऊ.* [अकाल, खराब समय] [प्रा.]

अणगाल सं.'अकाल'मांथी आवेल छे, जे शब्दार्थमां आवी गयेल छे. पण प्राकृतमां 'अणगाल' मळे छे ते अहीं दर्शाववामां आव्युं छे.

अशाबो *नरप.* असबाब, सरसामान, अलंकार

अहीं **अशाबो**नुं मूळ अरबी/फारसी 'असबाब' शब्दार्थमां आवी गयेल छे. तेथी अलग दर्शावेल नथी.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादके व्युत्पत्ति के समान्तरता दर्शावी छे एमां अन्य साधनोनी घणी मदद लेवामां आवी छे. व्युत्पत्तिनी बाबतमां, सामान्य रीते, डॉ. भायाणीए एमना ग्रंथोमां आपेली व्युत्पत्तिओ वधु साधार लेखवानुं वलण रह्युं छे. छतां संपादक पोताना आ प्रयासनी अधूरपथी सभान छे ज. एथी ज एवी विनंती करवानी छे के अभ्यासीओ अहीं अपायेली व्युत्पत्तिओने कामचलाउ रीते अपायेली लेखे अने प्रमाणभूत व्युत्पत्ति माटे मान्य लेखातां साधनोनो आश्रय ले. हवे तो डॉ. हरिवल्लभ भायाणीना *गुजराती भाषानो लघु व्युत्पत्तिकोश*मां घणी व्युत्पत्तिओ हाथवगी पण थई छे. अलबत्त, ए अर्वाचीन गुजराती शब्दोनो व्युत्पत्तिकोश छे, तेथी केवळ मध्यकाळमां प्रचलित शब्दोनी व्युत्पत्ति एमांथी नहीं जडे. जेवी छे तेवी आ संकलित कोशमां अपायेली व्युत्पत्तिओ थोडी पण काम आवशे तो संपादके ए माटे करेलो श्रम लेखे लागशे.

आधारग्रंथो

(शब्दसामग्री माटे उपयोगमां लीधेला संपादित ग्रंथोनो परिचय,
एमना संक्षेपाक्षरोने क्रमे)

अखाका. *अखानी काव्यकृतिओ खंड* २, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, १९८८.

आ संपादन अखाभगतनां पदो उपरांत बीजी केटलीक कृतिओने समावे छे. कोई कृति रचनावर्ष धरावती नथी, परंतु अखाभगतनो कवनकाळ सत्तरमी सदी मध्यभाग निश्चित छे.

आमां आशरे १५०० शब्दोने समावतो कोश छे. एमां संस्कृत शब्दो अने रूढिप्रयोगो पण नोंधवामां आव्या छे. 'शुद्धि अने वृद्धि'मां पण शब्दकोशने लगती शुद्धिवृद्धि छे.

अखाछ. *अखाना छप्पा*, संपा. उमाशंकर जोशी, प्रका. वोरा, अमदावाद, त्रीजी आवृत्ति १९७७.

आ कृतिने पण रचनावर्ष नथी, परंतु अखाभगतनो कवनकाळ सत्तरमी सदी मध्यभाग सुनिश्चित छे.

आमां ४५०० जेटला शब्दोने समावती शब्दसूचि छे ते उपरांत छप्पाओनी साथे टिप्पण रूपे पण अर्थ ने समजूती आपेलां छे. टिप्पणमां अपायेला शब्दार्थोमांथी केटलाक शब्दसूचिमां आव्या न होय एवुं देखाय छे. शब्दकोशमां शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे.

अखेगी. *अखेगीता*, संपा. उमाशंकर जोशी अने रमणलाल जोशी, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, बीजी आवृत्ति १९७८.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ कृतिनुं रचनावर्ष १६४९ (सं.१७०५) मळे छे.

२०० उपरांत महत्त्वना शब्दोनो कोश आमां छे. आमां पण शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे. शब्दकोश उपरांत विस्तृत टिप्पण पण छे.

अभिऊ. (दिहलकृत) *अभिवन-ऊझणुं*, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. पोते, अमदावाद, १९६२.

कृतिनो रचनासमय नथी, पण एनी हस्तप्रतनुं लेखनवर्ष १६२४ मळे छे. कर्ता १५०० आसपास हयात होवानुं अनुमान थयुं छे.

शब्दकोशमां ४०० उपरांत शब्दो छे. शब्दोना व्याकरणी पदप्रकार दर्शावेल छे अने घणा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे.

अंगवि. (कीकु वसहीकृत) *अंगद-विष्टि*, संपा. हरिनारायण आचार्य. जुओ *कृष्णबा.*

अंबरा. (वाचक मंगलमाणिक्य विरचित) *अंबड विद्याधर रास*, संपा. बलवंतराय क. ठाकोर, प्रका. एन. एम. त्रिपाठी लिमिटेड, मुंबई, १९५३.

कृतिनुं रचनावर्ष १५८३ (सं.१६३९) मळे छे.

कृतिनो मूळ पाठ छपाया पछी बलवंतराय ठाकोरनुं अवसान थयेलुं. एमनी आंखनी तकलीफने कारणे प्रूफवाचननी घणी भूलो रही जतां भोगीलाल सांडेसराए विस्तृत पाठशोधन आप्युं छे अने शब्दकोश पण उमेर्यो छे. एमां २५० जेटला शब्दो नोंधायेला छे. केटलाक शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देश करेल छे. 'ष'ने 'ख'ना क्रममां मूकेल छे. जेमके 'षासर' (=खासर).

आनंस्त. *'आनंदघन बावीसी' पर ज्ञानविमलसूरिकृत स्तबक*, संपा. कुमारपाळ देसाई, प्रका. कौशल प्रकाशन, अमदावाद, १९८०.

स्तबकनुं रचनावर्ष नथी, परंतु सौथी जूनी हस्तप्रत १७१३ (सं.१७६९)नी लखायेली मळे छे जे ज्ञानविमलसूरिना जीवनकाळ (१७२६ सुधी हयात)नी छे. एटले ए वर्षे के एनी पूर्वेनां थोडां वर्षोमां स्तबक रचायो हशे एम अनुमान थई शके.

आशरे ७०० शब्दोने समावतो विस्तृत शब्दकोश आमां छे. 'नीपजइ' 'पदार्थनइ' जेवा अंत्य स्थानना सामान्य उच्चारणभेदवाळा घणा शब्दो ने 'अकस्मात भय' जेवा चालु शब्दो नोंधाया छे, जे आ संकलित शब्दकोशमां छोडी दीधा छे. ते उपरांत, जैन, बौद्ध, न्याय वगेरे दर्शनोना घणा पारिभाषिक शब्दोनी समजूती पण एमां छे. ए शब्दो पण चालु भाषाना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न होई अने दार्शनिक संदर्भ धरावता होई सामान्य रीते छोडी दीधा छे. आम छतां जैन दर्शननना केटलाक शब्दो अन्य मध्यकालीन कृतिओमां सामान्यपणे वपराता जणाया ते साचववानुं पण बन्युं छे.

शब्दो परत्वे एकथी वधारे स्थानोनो निर्देश थयो छे.

संपादके शब्दकोशमां मात्र स्तबक-अंतर्गत शब्दो ज समाव्या छे, स्तवनोमां रहेला शब्दो लीधा नथी पण स्तबकोमां मूळ शब्द आपी एनो अर्थ नोंधवानी एक रूढि छे तेथी स्तवनना केटलाक शब्दोने स्थान मळ्युं छे. जेमके स्तबकमां *गंजी जीति न सकइ* एम छे त्यां 'गंजी' मूळ स्तवननो शब्द छे ने एनो स्तबककारे 'जीति' अर्थ आप्यो छे. पण स्तबकमां मूळना बधा शब्दो आव्या नथी अने तेथी केटलाक लाक्षणिक मध्यकालीन शब्दो स्तवनोमां ज रह्या छे, एमने शब्दकोशमां स्थान मळ्युं नथी.

स्तबककारे पोते शब्दना अर्थ कर्या छे ने क्यारेक पर्याये कथन कर्युं छे तेथी मध्यकालीन शब्दार्थ के कर्तानें अभिप्रेत शब्दार्थ प्रमाणभूत रीते आपणा हाथमां आवे एवुं अहीं बन्युं छे. जोके संपादक एनो लाभ न लई शक्या होय एवां स्थानो पण देखाय छे. जेमके 'वृष'नो अर्थ संपादक 'श्रेष्ठ' आपे छे, परंतु 'ऋषभ' (वृषभ) शब्द समजावतां स्तबककारे आम लखेलुं छे : "वृष कहेतां आत्मभावरूप धर्म... भ कहेतां शोभइ..." संस्कृत कोशो पण 'वृष'ना 'धर्म, नीति, सत्कर्म' वगेरे अर्थो नोंधे छे.

आरारा. *आरामशोभा रासमाळा*, संपा. जयंत कोठारी, प्रका. प्राकृत जैन विद्याविकास फंड, अमदावाद, १९८९.

अहीं समाविष्ट आरामशोभा कथानकने वर्णवती छ कृतिओ १४७९थी १७०५ सुधीनां रचनावर्षो धरावे छे.

शब्दकोश २००० उपरांत शब्दोने समावे छे. एकथी वधारे स्थानोनो निर्देश पण छे. शुद्धिपत्रकमां थोडाक शब्दोना अर्थ सुधारवामां आव्या छे, जेनो अहीं लाभ लेवायो छे. शब्दकोशमां क्यांक क्रमभंग छे.

आरारा(व). उपर्युक्त ग्रंथनो वनस्पतिकोश. एमां आशरे २५० शब्दो छे.

उक्ति. (साधुसुन्दरगणी विरचित) *उक्तिरत्नाकर*, संपा. जिनविजय मुनि, प्रका. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, १९५७.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी, परंतु कर्तानो सर्जनकाळ १६२४थी १६२७ जाणवा मळे छे. ग्रंथमां आ कृति उपरांत अन्य बे अज्ञातकर्तृक औक्तिको पण छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ कृतिओ गुजराती भाषानां शब्दो, व्याकरणरूपो अने वाक्योने संस्कृत पर्यायो आपीने समजावे छे. छेल्ले सर्व सामग्रीने आवरी लेतो विस्तृत शब्दानुक्रम छे, जेमां ४००० उपरांत शब्दो ने शब्दसमूहो नोंधाया छे. आ केवळ शब्दानुक्रम छे, त्यां अर्थ नोंधेल नथी, पण निर्दिष्ट स्थाने अर्थ – अलबत्त संस्कृतमां – मळे छे. सत्तरमी सदीना शब्दार्थोना एक प्रमाणभूत दस्तावेज तरीके आ ग्रंथनी सामग्रीनुं मोटुं मूल्य छे. तेथी संस्कृतना आधारे गुजराती अर्थ करीने आ ग्रंथना शब्दकोशनो लाभ लेवानुं इष्ट मण्युं छे. सत्तरमी सदीमां वपराता शब्दोमां आजे वपराता शब्दो पण होय ज. ए अहीं लेवाना न होय ए स्पष्ट छे.

मध्यकाळमां 'ख' माटेनुं लिपिचिह्न पण 'ष' हतुं. आ पुस्तकना शब्दानुक्रममां 'ख'थी आरंभाता शब्दो 'ख'मां तेमज 'ष'मां एम बन्ने स्थाने मुकायेला छे. 'ष'मां 'ष(ख)ईइ' एम करीने शब्दो नोंध्या छे. आ संकलित शब्दकोशमां बधा शब्दो 'ख'ना क्रममां ज लीधा छे.

उपबा. *अ स्टडी ऑव् ध गुजराती लॅंग्विज इन ध सिक्स्टिन्थ सेन्च्युरी (वी.एस.) विथ स्पेशिअल रेफरन्स टु ध एमएस. बालावबोध टु उपदेशमाला,* त्रिंबकलाल एन. दवे, ध रॉयल ॲशिआटिक सोसायटी, लन्डन, १९३५.

आमां नन्नसूरिरचित बालावबोध समाविष्ट छे. ए १४८७मां रचायेलो छे.

बालावबोधना लगभग १६०० शब्दोने समावतो शब्दकोश आमां छे. कृतिपाठ, शब्दकोश वगेरे सघळुं रोमन लिपिमां छे. शब्दो परत्वे लगभग अशेषपणे स्थाननिर्देश करवानो प्रयत्न देखाय छे अने दरेक स्थाने वपरायेला शब्दना व्याकरणी रूपने पण ओळखाव्युं छे. शब्दोना अर्थ अंग्रेजीमां छे, जेनो अहीं गुजराती अनुवाद करवामां आव्यो छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति दर्शाववामां आवी छे. 'ख' 'ष' रूपे लखायेलो होवाथी एनाथी आरंभाता शब्दो (जेमके 'खउरउ') 'ष'ना क्रममां ज मूकेला छे, जे आ कोशमां 'ख'ना क्रममां लई लीधा छे.

उषाह. (वीरसिंहकृतं) *उषाहरण,* संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९३८.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी पण प्राप्त प्रतनुं लेखनवर्ष १५१३ (सं.१५६९) छे ने एनो रचनाकाळ पंदरमी सदीनुं त्रीजुं चरण होवानुं अनुमान थयुं छे.

शब्दकोशमां आशरे ४०० शब्दो छे. मूळ संस्कृत-प्राकृत-देश्य शब्दो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा समांतर हिंदी, मराठी, आधुनिक गुजराती शब्दो पण नोंध्या छे.

ऐतिका. *ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह*, संपा. अगरचंद नाहटा, भंवरलाल नाहटा, प्रका. शंकरदान शुभैराज नाहटा, कलकत्ता, सं.१९९४.

आमां बारमी सदी पूर्वार्धथी ओगणीसमी सदी पूर्वार्ध सुधीनी कृतिओ संघरायेली छे.

शब्दकोशमां लगभग १३०० शब्दो छे. अत्यारे गुजरातीमां अत्यंत अपरिचित एवा 'अढळक दान' जेवा कोईक शब्दो पण नोंधाया छे, ते राजस्थानी प्रदेशमां अत्यारे वपराशमां नहीं होय ते कारणे हशे. आ ग्रंथमां अर्थ हिंदी भाषामां आपवामां आव्या छे, तेनो आ कोशमां सामान्य रीते अनुवाद करी लीधो छे.

ऐतिरा. *ऐतिहासिक राससंग्रह*, भाग पहेलो, संपा. विजयधर्मसूरि, प्रका. यशोविजय ग्रंथमाळा, भावनगर, सं.१९७२.

ग्रंथमां पंदरमी सदी उत्तरार्धथी सत्तरमी सदी पूर्वार्ध सुधीनी कृतिओ संगृहीत थई छे.

शब्दकोशमां आशरे ३५० शब्दो छे. प्रथमाक्षरमां 'अं'कारवाळा शब्दो ('भंति') जुदाजुदा क्रमे मुकाया छे पण 'आं'कारवाळा शब्दो 'आ'कारनी पूर्वे ज मुकाया छे. 'ख'थी आरंभाता शब्दो 'ष'मां छे, जे आ कोशमां 'ख'मां लई लीधा छे.

कर्पूमं. (मतिसारकृत) *कर्पूरमंजरी*, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९४१.

कृति १५४९(सं.१६०५)मां रचायेल छे.

शब्दकोश आशरे १०० शब्दोने समावे छे. संस्कृत-प्राकृत-देश्य ने क्वचित फारसी शब्दमूळ तेमज हिंदी, मराठी, अर्वाचीन गुजराती, प्रादेशिक गुजराती वगेरे प्रकारनां समान्तर रूपो दर्शाव्यां छे. 'ए' 'नि' वगेरे प्रत्ययो लीधा छे ते आ संकलित कोशमां छोडी दीधा छे.

कस्तुवा. (शामळ भट्ट कृत) *कस्तुरचंदनी वारता*. जुओ *नंदब*.

कादं(ध्रु). (कविश्री भालणकृत) *कादंबरी, पूर्व भाग*, संपा. केशवलाल ह. ध्रुव, प्रका. पोते, अमदावाद, १९१६.

कृतिनो रचनासमय मळतो नथी. पण भालणनो जीवनकाळ सोळमी सदी पूर्वार्ध आसपासनो होवानुं अनुमान थयुं छे.

'केटलाक असाधारण शब्दो' ए शीर्षक नीचे २०० उपरांत शब्दोना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ आपवामां आव्या छे. शब्दो परत्वे काव्यपंक्तिनो तेमज टिप्पणना पृष्ठनो संदर्भ आपेल छे. आथी, क्यांक अर्थ नोंध्या नथी ('पोतृ' 'प्रणीता' जेवा खास शब्दोना) त्यां टिप्पणमांथी मेळवी शकाय छे ते उपरांत केटलाक शब्दोनी विशेष समजूती पण त्यांथी मेळवी शकाय छे.

कादं(शा). (कवि भालणकृत) *कादंबरी, पूर्व भाग,* संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. भारत प्रकाशन, अमदावाद, बीजुं संस्करण १९६९; (कवि भालणकृत) *कादंबरी,* उत्तर भाग, संपा. प्रका. ए ज, प्रथम संस्करण १९६९.

बंने ग्रंथोमां बन्ने भागोने आवरी लेतो समान शब्दकोश आपवामां आव्यो छे. ए शब्दकोशमां आशरे ६०० शब्दो छे. थोडा शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देशो छे. व्युत्पत्तिविषयक ने व्याकरणविषयक नोंधो बधा शब्दोमां आपी छे.

कामा(त्रि). (लोकवार्ताकार शिवदासकृत) *कामावती,* संपा. भूपेन्द्र बा. त्रिवेदी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९७२.

कृतिनुं रचनावर्ष १५१७ (सं.१५७३) मळे छे.

शब्दकोशमां आशरे २०० शब्दो छे. उच्चारणभेदथी आवता शब्दो साथे ज लई लीधा छे. जेमके, 'ओहोलास, होलास [५९० व.] – उल्लास'. आथी थोडाक शब्दो एमना वर्णानुक्रमथी अलग स्थाने नोंधाया होवानी स्थिति ऊभी थाय छे.

कामा(शा). *कामावतीनी कथानो विकास अने कवि शिवदासकृत 'कामावतीनी वार्ता',* प्रवीण अ. शाह, प्रका. पोते, विरमगाम, १९७६.

शब्दकोशमां २०० उपरांत शब्दो छे. अहीं पण उच्चारभेदवाळा शब्दो साथे लीधा छे. थोडाक शब्दो परत्वे स्थानिर्देश आपवानो चुकाई गयो छे.

कृष्णच. (अज्ञात कविकृत) *कृष्णचरित्र.* जुओ *कृष्णबा.*

कृष्णबा. (कीकु वसहीकृत) *कृष्ण-बालचरित तथा अन्य मध्यकालीन रचनाओ,* संपा. हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९९२. अन्य मध्यकालीन रचनाओमां कीकु वसहीकृत *अंगदविष्टि,* अज्ञात कविकृत *कृष्णचरित्र* अने अज्ञात कविकृत *रावणचरित्र*नो समावेश छे.

एकेय कृति रचनावर्ष धरावती नथी. परंतु कीकु वसही पंदरमी सदीना अंते के सोळमी सदीना आरंभे हयात होवानुं अनुमान थयुं छे अने अज्ञातकर्तृक बे कृतिओ अनुक्रमे पंदरमी सदी अंतभाग अने तेरमी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शताब्दी लगभगनी होवानुं अनुमान थयुं छे.

रावणचरित सिवायनी त्रणे कृतिओना अलग शब्दकोश आपवामां आव्या छे, जे अनुक्रमे १००, ५० अने १०० शब्दोने समावे छे. *अंगदविष्टि*ना शब्दकोशने मथाळे भूलथी *कृष्णविष्टि* छपायुं छे.

गुर्जरा. *गुर्जररासावली,* संपा. बी. के. ठाकोर, एम. डी. देसाई, एम. सी. मोदी, प्रका. ऑरिएन्टल इन्स्टिट्यूट, बरोडा, पुनर्मुद्रण १९८१.

आ ग्रंथमां १३५४(सं.१४१०)थी १४२९(सं.१४८५) सुधीनी कृतिओ संघरायेली छे. २२६ पानांमां विस्तरता शब्दकोशमां ३५०० जेटला शब्दो छे. शब्दोनां विविध विभक्तिओ के काळ-अर्थनां रूपो नोंध्यां छे, एमनां प्रयोगस्थानो प्रचुरताथी निर्देश्यां छे अने दरेक शब्द परत्वे व्युत्पत्तिविषयक, व्याकरणविषयक, अर्थविषयक नोंध वीगते आधारो साथे आपी छे. केटलाक शब्दोना अर्थ टिप्पणमां सुधार्या छे, जेनो आ संकलित कोशमां उपयोग करी लीधो छे. शब्दकोशमां सर्वग्राही बनवानो हेतु होवाथी 'द्रौपदीअ' 'धणियाणी' 'नागिणी' 'नाचइ' जेवा शब्दो पण आप्या छे, जे आ संकलित कोशमां छोडी दीधा छे. ग्रंथमां अर्थो अंग्रेजीमां आपेला छे तेनुं अहीं गुजराती करी लीधुं छे.

चतुचा. (विश्वनाथ जानीरचित) *चतुरचालीसी,* संपा. महेन्द्र अ. दवे, प्रका. क. ला. स्वाध्यायमंदिर, अमदावाद, १९८६.

आ कृति रचनावर्ष धरावती नथी, पण विश्वनाथ जानी, १६५२नी अन्य रचनाओ मळे छे.

शब्दसूचिमां २५० उपरांत शब्दो छे.

चंद्रवा. (शामळ भट्टकृत) *चंद्र-चंद्रावती वारता,* संपा. हीरा रा. पाठक, प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अमदावाद, १९६८.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी, परंतु शामळनी अन्य कृतिओ १७१८थी १७६५नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोशमां ३०० जेटला शब्दो छे. एकथी वधु स्थाननिर्देशो थया छे ने उच्चारभेदवाळा शब्दो एकसाथे लई लीधा छे. अर्थ निश्चित न थई शक्यो होय तेवां स्थानोए प्रश्नार्थ मूक्यो छे.

शब्दकोशने मथाळे "पहेलो क्रम पृष्ठनो छे, बीजो कडीनो छे" एम कह्युं छे ते भूल छे. पहेलो अंक कडीनो ने बीजो चरणनो छे.

चारफा. *पंदरमा शतकनां चार फागुकाव्यो,* संपा. कान्तिलाल ब. व्यास, प्रका.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९५५.

संगृहीत कृतिओ रचनावर्ष धरावती नथी, पण ए १४००थी १४७५ना आसपासना गाळामां रचायेली होवानुं नक्की थई शके छे.

शब्दकोशमां १५० जेटला शब्दो छे. शब्दोना संस्कृत-प्राकृत-देश्य मूळ दर्शाव्यां छे.

चित्तसं. (अखाजीकृत) *चित्तविचारसंवाद*, संपा. कीर्तिदा जोशी, प्रका. पोते, अमदावाद, १९९२.

कृति रचनावर्ष धरावती नथी, परंतु अखाभगतनो कवनकाळ सत्तरमी सदी मध्यभाग नक्की थई शके छे.

शब्दकोश बे विभागमां वहेंचायेलो छे – सामान्य शब्दकोश तथा पारिभाषिक अने पौराणिक कोश. आ संकलित शब्दकोशमां सामान्य शब्दकोशना शब्दो ज लीधा छे, परंतु एमां पारिभाषिक कोशनो हवालो आप्यो छे त्यां पारिभाषिक कोशने आधारे आ संकलित कोशमां अर्थ आप्यो छे.

सामान्य शब्दकोशमां ६०० उपरांत शब्दो छे. शब्दो परत्वे प्राप्त बधा संदर्भो नोंध्या छे. थोडाक शब्दो वर्णक्रमभंगथी मुकाया छे.

जिनरा. *जिनराजसूरि-कृति-कुसुमांजलि*, संपा. अगरचन्द नाहटा, प्रका. सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टिट्यूट, बिकानेर, सं.२०१७.

आमां समाविष्ट बे दीर्घ कृतिओ १६०८ अने १६२२नां रचनावर्षो धरावे छे, पण बीजी घणीबधी लघु कृतिओ रचनावर्षो धरावती नथी. ते उपरांत जयकीर्तिगणिनो *जिनराजसूरि रास* पण आमां समावायो छे. जिनराजसूरिनो जीवनकाळ १५९१थी १६४३ अने कवनकाळ १६०८थी १६४३ प्राप्त छे. *जिनराजसूरि रास* एमनी हयातीमां ज रचायो छे.

शब्दकोशमां आशरे ५०० शब्दो छे. संगृहीत कृतिओमां कोईक प्राकृत छे ने घणा जैन पारिभाषिक शब्दो धरावे छे तेना शब्दो पण आ कोशमां छे. एकथी वधु स्थानो निर्देशायां छे, पण केटलाक शब्दोना अर्थ आपवाना रही गया छे. अर्थ हिंदी भाषामां आप्या छे तेनुं आ संकलित कोशमां, जरूर लागी त्यां, गुजराती करी लीधुं छे. शब्दो क्वचित वर्णक्रमभंगथी मुकाया छे.

तेरका. *तेरमा-चौदमा शतकनां त्रण प्राचीन गुजराती काव्यो*, संपा. हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९५५. संगृहीत कृतिओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरमी सदी पूर्वार्धथी चौदमी सदी पूर्वार्धना गाळानी छे.

शब्दकोशमां आशरे १२५० शब्दो छे. लगभग अशेषपणे शब्दो नोंधवानुं वलण जणाय छे, तेथी 'आसो' 'आहार' 'इंद्रमंडप' जेवा शब्दो जोवा मळे छे, जेना अर्थो आपवानी संपादकने जरूर जणाई नथी. बधा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे ने सघळा स्थाननिर्देश कर्या छे. क्रियापदो मूळ धातु रूपे ज दर्शाव्या छे, जेमके 'अवगन्'. ग्रंथपाठ शंकास्पद लाग्यो छे त्यां प्रश्नार्थ मूक्यो छे. ते ज रीते ज्यां अर्थ आपी शकायो नथी त्यां पण प्रश्नार्थ मूक्यो छे. त्रणे कृतिओना अनुवाद आपवामां आव्या छे त्यां आवां स्थानोनो अर्थ बेसाडवानी कोशिश करी छे, जेनो आ संकलित कोशमां लई शकायो त्यां आधार लीधो छे.

दशस्कं(१). *दशमस्कंध–१*, संपा. उमाशंकर जोशी अने हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, १९६६.

प्रेमानंदनी आ कृतिमां रचनावर्ष नथी, पण आ अधूरी रहेली कृति एमनी छेल्ली कृति होवानुं समजाय छे तेथी एनो रचनासमय सत्तरमी सदीनुं बीजुं चरण गणाय.

शब्दसूचिमां ५०० उपरांत शब्दो छे. केटलाक शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देश छे. आ शब्दसूचि उपरांत कृतिनां पंक्तिवार टिप्पणो करेलां छे तेमां पण शब्दार्थो आपेला छे. आ संकलित कोशमां एनी क्वचित् मदद लीधी छे.

दशस्कं(२). *दशमस्कंध–२*, संपा. उमाशंकर जोशी अने हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, १९७१.

आ ग्रंथनी शब्दसूचिमां आशरे २५० शब्दो छे. अहीं पण टिप्पणो छे.

देवरा. (अज्ञात कविकृत) *देवकीजी छ भायारो रास*, संपा. बिपिनचंद्र जी. झवेरी, प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अमदावाद, १९५८.

कृतिमां रचनावर्ष नथी पण एनी रचना अढारमी सदी पूर्वार्धनी अनुमानवामां आवी छे.

शब्दसूचिमां आशरे ७०० शब्दो छे. काव्यनी शरूआतनी बेत्रण ढाळोमांथी प्रत्येक शब्द नोंध्यो छे, तेथी जेनो अर्थ आपवानी जरूर नथी लागी तेवा 'अचरज' जेवा शब्दो पण सूचिमां जोवा मळे छे. उच्चारभेदथी आवेला शब्दोने एमना क्रममां ज मूक्या छे, पण आ एक ज शब्दना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्चारभेदो छे ए दर्शावती निशानी करी छे. 'ख'थी आरंभाता शब्दो 'ख'ना तेम 'ष'ना क्रममां पण मुकाया छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति संस्कृत, अरबीफारसी वगेरेमांथी नोंधी छे. विस्तृत टिप्पणो छे तेमां पण शब्दार्थो नोंधाया छे. शुद्धिपत्रकमां शब्दसूचिना कोई शब्दार्थनो ने केटलीक व्युत्पत्तिओनो सुधारो नोंधायो छे.

नरका. *नरसिंह महेतानी काव्यकृतिओ*, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य-संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, १९८१.

नरसिंह महेतानी कोई कृतिमां रचनावर्ष मळतुं नथी, पण नरसिंह महेतानो समय पंदरमी सदी मानवामां आव्यो छे. जोके नरसिंहने नामे पाछळथी घणुं उमेरायुं होवानी शक्यता छे तेथी आ ग्रंथनो शब्दकोश पंदरमी सदीनो ज छे एम कहेवुं मुश्केल छे.

शब्दकोश आशरे १३०० शब्दोने समावे छे. क्वचित पाठांतरमांथी पण शब्द लीधेल छे. 'अंतराय' 'आभरण' जेवा अत्यारे वपराता थोडा शब्दो पण एमां जोवा मळे छे.

नरका–२. *नरसिंह महेतानी काव्यकृतिओ*, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य-संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, बीजी संशोधित आवृत्ति, १९८९.

आ आवृत्तिमां पहेली आवृत्तिमां लीधेली केटलीक कृतिओ छोडी देवामां आवी छे ने तेथी शब्दकोशमां पण केटलोक फेरफार थयो छे. पहेली आवृत्तिना थोडा शब्दो आमां नथी, थोडाक नवा संदर्भो दाखल थया छे ने क्यांक अर्थनो फेरफार पण जोवा मळे छे. आ फेरफारो पूरतो, आवश्यकता जणाई तेटलो, आ बीजी आवृत्तिना शब्दकोशनो आ संकलित कोशमां उपयोग कर्यो छे.

शब्दकोशनी शब्दसंख्या पहेली आवृत्तिथी खास फरक बतावती नथी.

नरप. *नरसैं महेतानां पद*, संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. गुजरात साहित्य सभा, अमदावाद, १९६४.

आ ग्रंथमां आशरे १६५० सुधीनी बे हस्तप्रतोमांथी ज पदो लेवामां आव्यां छे.

शब्दकोश नानकडो – आशरे ७५ शब्दोनो छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति आपेली छे. कोईक शब्द क्रमभंगथी मुकाया छे. 'ज्योवन-नाडा' शब्द छेक 'धेडी' पछी आवे छे ! 'चाउख'ने बदले 'उख' छपायुं छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरप(द). *नरसिंह महेतानां पद* (अप्रकाशित), संपा. रतिलाल वि. दवे, प्रका. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९८३.

आ संग्रहनां घणां पदोनुं भाषास्वरूप ए घणा मोडा समयनी रचनाओ होवानो संकेत करे छे.

शब्दकोशमां आशरे १५० शब्दो छे.

नलरा. (महीराजकृत) *नलदवदंती-रास,* संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९५४, बीजी आवृत्ति, १९७७.

कृति १५५६(सं.१६१२)मां रचायेली छे. एनी साथे जोडवामां आवेल अज्ञात कविकृत *नलदवदंती-चरित्रनुं* रचनावर्ष नथी. पण एनी एक प्रतनुं लेखनवर्ष १४८३ (सं.१५३९) छे. ए कृति पंदरमा शतकना त्रीजा चरणमां रचायेली होवानुं अनुमान थयुं छे.

बन्ने कृतिओने आवरी लेता शब्दकोशमां लगभग १२०० शब्दो छे. शब्दो विशे व्युत्पत्तिविषयक तेमज अर्थविषयक नोंधो आपवामां आवी छे अने मध्यकालीन गुजराती वगेरेना प्रयोगोना आधारो पण घणा शब्दो परत्वे दर्शाव्या छे. उच्चारभेदथी आवेला शब्दो एक मुख्य शब्दना पेटामां दर्शाव्या छे. जेमके 'परिष'नो अर्थ आपी पछी एना पेटामां 'परिषी' 'परीखडी' नोंध्या छे. आथी, देखीती रीते ज, वर्णक्रमभंग थाय. 'ख' उच्चारवाळा पण 'ष'नी जोडणीवाळा शब्दो 'ख'ना क्रममां ज मूक्या छे.

नलाख्या. (भालणकृत) *नलाख्यान,* संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, आवृत्ति बीजी १९६५.

आ कृति रचनावर्ष धरावती नथी, परंतु भालणनो जीवनकाळ सोळमी सदी पूर्वार्ध आसपासनो होवानुं अनुमान थयुं छे.

११० पानां सुधी विस्तरता शब्दकोशमां आशरे ९०० शब्दो छे. लगभग अशेषपणे शब्दकोश आपवानुं धार्युं जणाय छे, केमके एमां 'अजगर', 'अढार', 'अधमुआ', 'अपार', 'अभिराम' जेवा आजे जाणीता घणा शब्दो जोवा मळे छे (जे आ संकलित कोशमां लीधा नथी). शब्दो विशे व्युत्पत्तिदर्शक, व्याकरणविषयक अने अर्थविषयक वीगते नोंध छे.

नंदब. (शामळ भटकृत) *नंदबत्रीसी अने कस्तुरचंदनी वारता,* संपा. इंदिरा मरचंट, रमेश जानी, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९६७.

बेमांथी एकेय कृति रचनावर्ष धरावती नथी पण *कस्तुरचंदनी वारता,*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*सिंहासन बत्रीसी*नी २३मी वार्ता होई ए १७२९थी १७४५ सुधीमां रचायेली गणाय. शामळनी अन्य कृतिओ १७१८थी १७६५नां रचनावर्षो बतावे छे.

बन्ने कृतिओना अलग शब्दकोशो छे. *नंदबत्रीसी*ना शब्दकोशमां आशरे ९० तथा *कस्तुरचंदनी वारता*ना शब्दकोशमां आशरे ७५ शब्दो छे.

नेमिछं. (कवि लावण्यसमयविरचित) *नेमि रंगरलाकर छंद*, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९६५.

कृति १४९०(सं.१५४६)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां ९०० जेटला शब्दो छे. 'अणावइ' 'करि' (=करमां, कर वडे) जेवा केवळ मध्यकालीन अंत्य प्रत्ययवाळा शब्दोनो समावेश छे अने 'गयणंगण' 'गयणंगणं' 'गयणंगणि' ए जुदां विभक्तिरूपोवाळा शब्दो पण अलग नोंध्या छे. शब्दोनां व्याकरणी रूपो घणे स्थाने ओळखाव्यां छे ने व्युत्पत्ति पण दर्शावी छे.

पंचवा. (अज्ञात गुजराती गद्यकार विरचित) *पंचदंडनी वार्ता*, संपा. सोमाभाई धू. पारेख, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७४.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी, परंतु एनी हस्तप्रतनुं लेखनवर्ष १६८२ (सं.१७३८) मळे छे.

शब्दकोशमां आशरे २०० शब्दो छे. '०का' जेवा कोई प्रत्ययनो पण एमां समावेश छे. शब्दो विशे व्युत्पत्तिदर्शक विस्तृत नोंध छे ते उपरांत केटलाक शब्दोना अर्थने पूर्वपरंपरा आपीने वीगतथी समजाव्या छे. लेखनमां 'ष' पण उच्चारमां 'ख'थी आरंभाता शब्दो 'ख'ना क्रममां ज लीधा छे.

'उणे' (=एणे), 'उवा' (=ए), 'क' (=के), 'कणे' (=कोणे), 'क्युं' (=कह्युं) वगेरे शब्दो बतावे छे के कृतिनी हस्तप्रत तद्दन लौकिक, ग्राम्य उच्चारणोने अनुसरे छे.

प्रद्युचु. (वाचक कमलशेखरकृत) *प्रद्युम्नकुमार चुपई*, संपा. महेन्द्र बा. शाह, अमदावाद, १९७८.

कृतिनुं रचनावर्ष १५५० (सं.१६२६) छे.

शब्दकोश आशरे २०० शब्दोने समावे छे. घणा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे अने केटलाक शब्दोना अर्थो माटे आधारो आप्या छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रबोप्र. (भीमकृत) *प्रबोधप्रकाश,* संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९३६.

कृतिनुं रचनावर्ष १४९० (सं.१५४६) छे.

शब्दकोश आशरे २५० शब्दोने समावे छे. शब्दमूळ दर्शावेल छे ने क्वचित् शब्दनुं व्याकरणी रूप ओळखावेल छे. मध्यकाळमां 'ज'ने स्थाने केटलीक वार 'य' लखातो. अहीं एवा शब्दो 'य'मां ज रहेवा दीधा छे. जेमके, 'यिशु' (=जिशु) 'यीव' (=जीव), 'यीवता' (=जीवतां). 'क्ष'ने 'क'ना जोडाक्षरना क्रममां नहीं, पण अंते 'ह' पछी मूकेल छे.

प्राचीका. *सत्तरमा शतकनां प्राचीन गूर्जर काव्य,* संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९४८.

समाविष्ट कृतिओ १६०४(सं.१६६०)थी १६९८(सं.१७५४)नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोशमां आशरे ४०० शब्दो छे. शब्दोनां संस्कृत-प्राकृतादि मूळ दर्शावेल छे, समांतर हिंदी, बंगाळी, मराठी, अर्वाचीन गुजराती, प्रादेशिक गुजराती शब्दरूपो नोंध्यां छे ने क्वचित् अन्य प्रयोग पण आपेल छे.

प्राचीफा. *प्राचीन फागुसंग्रह, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा,* सोमाभाई धू. पारेख, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, बीजी आवृत्ति १९६०.

संग्रह १२८५ आसपासथी १६८२ आसपासनी कृतिओने समावे छे.

शब्दकोशमां आशरे ६०० शब्दो छे. एमां 'ोचइ' जेवा केटलाक प्रत्ययोनो पण समावेश छे. शब्दो विशे *पंचवा.*ने धोरणे नोंधो थयेली छे.

प्राचीसं. *प्राचीन गूर्जर काव्यसंचय,* संपा. ह. चू. भायाणी, अगरचंद नाहटा, प्रका. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९७५.

संगृहीत कृतिओ बारमीथी चौदमी सदी सुधीमां रचायेली छे. जूना समयनी केटलीक कृतिओनी भाषा अपभ्रंशप्रधान छे.

शब्दकोशमां आशरे ८०० शब्दो छे. शब्दोना अर्थ संस्कृतमां आप्या छे. ते पछी घणे स्थाने गुजराती, हिंदी, मराठी वगेरेना मळता आवता शब्दो नोंध्या छे. आ संकलित कोशमां संस्कृतनुं गुजराती करी लीधुं छे. क्रियापदो धातु रूपे ज नोंध्या छे – 'खिज्ज' वगेरे. उच्चारभेदवाळा शब्दो साथे लई लीधा छे – 'वछ' 'वाछ' 'वाछडउ' – तेथी वर्णक्रमभंग थाय छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति पण आपी शकाई त्यां आपी छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेमप. (विश्वनाथ जानीरचित) *प्रेमपचीसी,* संपा. महेन्द्र अ. दवे, प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अमदावाद, १९९२.

कृति रचनावर्ष धरावती नथी, परंतु कविनी अन्य बे कृतिओ १६५२(सं.१७०८)मां रचायेली मळे छे.

शब्दकोश १५० जेटला शब्दोनो छे. एमां क्यांक वर्णक्रमभंग थयो छे.

प्रेमाका. *प्रेमानंदनी काव्यकृतिओ खंड १ अने २,* संपा. केशवराम का. शास्त्री, शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य-संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, १९७८ अने १९७९.

प्रेमानंदनी कृतिओ १६६७ (संभवतः) के १६७१थी १६९०नां रचनावर्षो दर्शावे छे.

आ संग्रहमां *शामळशानो विवाह* प्रेमानंदनी अधिकृत रचना नथी, ए अर्वाचीन समयनी सरजत होय एवुं ज जणाय छे. *श्राद्ध* पण प्रेमानंदनी कृति नथी पण ए मध्यकालीन तो छे ज, प्रेमानंद पछीना समयनी. *रुक्मिणीहरण, सप्तमस्कंध* जेवी बीजी थोडीक कृतिओ पण प्रेमानंदनी होवा विशे शंका छे. ए पण पाछळना समयनी होवा संभव छे.

आ ग्रंथमां आशरे ३२०० शब्दोने अने रूढिप्रयोगोने समावतो मोटो कोश छे. एमां 'आणे' (=लावे), 'आदरुं' (=शरू करुं), 'आणुं' जेवा अत्यारे प्रचलित थोडा शब्दो छे ते आ संकलित कोशमां छोडी दीधा छे, ते उपरांत *शामळशानो विवाह* मध्यकालीन कृति न होई एना शब्दो पण छोडी दीधा छे.

मदमो. (शामळ भटकृत) *मदनमोहना,* संपा. हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९५५.

कृतिमां रचनावर्ष नथी. परंतु शामळनी अन्य कृतिओ १७१८थी १७६५नां रचनावर्षो बतावे छे.

ग्रंथमां ५०० उपरांत शब्दोने समावतो शब्दकोश छे. केटलाक शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे.

मदमो–२. (शामळ भटकृत) *मदनमोहना,* संपा. हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद, १९८९.

पहेली आवृत्ति तरीके ओळखायेली आ वस्तुतः बीजी आवृत्ति छे. आ आवृत्तिनो शब्दकोश एकबे स्थाने अर्थनो सुधारो बतावे छे तेटला

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूरतो अहीं एनो उपयोग कर्यो छे.

मोसाच. (विश्वनाथ जानीरचित) *मोसाळाचरित्र,* संपा. महेन्द्र अ. दवे, प्रका. परिमाण प्रकाशन, अमदावाद, १९८७.

आ कृतिनुं रचनावर्ष १६५२ (सं.१७०८) छे.

शब्दकोशमां आशरे ८० शब्दो छे.

रूपच. (शिवदासकृत) *रूपसेन चतुष्पदिका,* संपा. कनुभाई व्र. शेठ, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९६८.

कृतिमां रचनावर्ष नथी, परंतु कवि शिवदास सोळमी सदीना अंतमां के सत्तरमी सदीना आरंभमां थया होवानुं अनुमान थयुं छे.

शब्दकोशमां ७० जेटला शब्दो छे. एमां क्वचित् वर्णक्रमभंग देखाय छे.

रूस्तस. (कवि शामळ भट्टरचित) *रूस्तमनो सलोको,* संपा. हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९५६.

कृतिनी रचना १७२५(सं.१७८१)मां थयेली छे.

शब्दकोशमां ८० जेटला शब्दो छे. एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे.

परिशिष्ट रूपे एक प्रतमांनी टिप्पणीओ नोंधी छे तेमां केटलाक शब्दार्थो छे ते शब्दकोशना शब्दो परत्वे पण क्यांक मार्गदर्शक बने छे.

ललिरा. (क्षमाकलशकृत) *ललितांगकुमार रास,* संपा. कनुभाई व्र. शेठ, धनवंत ति. शाह, प्रका. समता प्रकाशन, अमदावाद, १९८२.

कृतिनुं रचनावर्ष १४९७ (सं.१५५३) छे.

शब्दकोशमां आशरे ८० शब्दो छे. एमां छापभूलो छे ने स्थाननिर्देशमां पण क्यांक भूल थयेली छे.

लावल. *कवि लावण्यसमयनी लघु काव्यकृतिओ,* संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. पोते, विरमगाम, १९६९.

संगृहीत कृतिओ १४९७(सं.१५५३)थी १५३१ (सं.१५८७) आसपासनां रचनावर्षो दर्शावे छे.

शब्दकोशमां १६०० उपरांत शब्दो छे. एमां 'गढ' 'दोट' जेवा अत्यारे जाणीता कोई शब्दो छे, 'नइ' 'नवउ' 'नडइ' जेवा अत्यारना शब्दथी केवळ अंत्य स्वरनो ज उच्चारभेद दर्शावता शब्दो छे, ने 'पइठउ' 'पइठा' जेवा केवळ व्याकरणी रूपे करीने जुदा पडता शब्दो पण छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दोनां व्याकरणी रूपो ओळखाव्यां छे अने क्वचित् शब्दमूळ दर्शावेल छे. स्थाननिर्देश एकथी वधु करेल छे.

वसंफा., वसंफा(ल). *वसंतविलास फागु*, संपा. मधुसूदन मोदी, प्रका. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, १९६०.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी, पण एना रचनासमय विशे १२५०थी १३५० सुधीनां अनुमानो थयां छे.

आ संग्रहमां *वसंतविलास*नी बृहद् वाचना तथा लघु वाचना बन्ने आपवामां आवेल छे अने बन्नेना अलग शब्दकोश आपवामां आवेल छे. लघु वाचनाना शब्दकोशमां आशरे ५०० अने बृहद् वाचनाना शब्दकोशमां आशरे ८०० शब्दो छे. एमां 'अति' 'अपार' 'अवतार' 'उदर' जेवा अत्यारे प्रचलित शब्दो पण छे ते बतावे छे के शब्दकोश लगभग अशेषपणे करवानी नेम छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति दर्शाववामां आवी छे. अर्थो अंग्रेजीमां छे, जेनो आ संकलित कोशमां अनुवाद करी लेवामां आव्यो छे. शुद्धिपत्रकमां शब्दकोशविषयक शुद्धिओ पण छे ने कृति विशे टिप्पणो छे तेमां पण शब्दार्थ-समजूती छे.

वसंवि. *वसंतविलास*, संपा. कान्तिलाल ब. व्यास, प्रका. एन. एम. त्रिपाठी प्रा. लि., मुंबई, पुनर्मुद्रण १९६९.

आमां पण बृहद् अने लघु बन्ने वाचना समाविष्ट छे. शब्दकोश बन्ने वाचनाने आवरी लेतो भेगो ज छे. एमां ९०० जेटला शब्दो छे. 'अंग' 'अधीर' 'अनइ' जेवा शब्दो बतावे छे के शब्दकोश लगभग अशेषपणे आपवानी नेम राखी छे. शब्दोनां व्याकरणी रूप ओळखाव्यां छे, एकथी वधु व्याकरणी रूप नोंध्यां छे अने व्युत्पत्ति पण आपी छे. अर्थ गुजराती तेमज अंग्रेजी बन्ने भाषामां आप्या छे, जेनो आ संकलित कोशमां लाभ लीधो छे. कृतिनां टिप्पण अने अनुवाद आपेलां छे ते पण मददरूप थई शके.

कोईक उपयोगी शब्दो पेटामां जता रह्या छे तेथी शब्दकोशमां सीधा जोवा न मळे एवुं बन्युं छे. जेमके 'अलि'ना पेटामां 'अलिजन' 'अलिराज' शब्दो छे, 'नवी'ना पेटामां 'नवनेह' 'नवरंग' वगेरे शब्दो छे.

वसंवि(ब्रा). *ध वसंतविलास*, संपा. डबल्यू. नॉर्मन ब्राउन, प्रका. अमेरिकन ऑरिएन्टल, न्यूहेवन, १९६२.

आमां पण बन्ने वाचना छे. शब्दकोश बन्नेनो भेगो ज छे. अन्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादनोमां पाठांतर रूपे ज रहेलां पद्योना शब्दो पण अहीं शब्दकोशमां स्थान पाम्या छे. शब्दकोश सर्वग्राही छे अने १००० जेटला शब्दोने समावे छे. शब्दोनां व्याकरणी रूप ओळखाव्यां छे अने शब्दमूळ दर्शावेल छे. समासात्मक शब्दो समास रूपे नोंधाया छे, ते उपरांत पाछळनो शब्द घणी वार अलग पण आप्यो छे. 'वंदरवाल' जेवो शब्द तो बे टुकडे 'वंदर' अने 'वाल' एम ज मळे छे.

वाग्भवा. (मेरुसुन्दर उपाध्याय कृत) *वाग्भटालंकार बालावबोध,* संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७५.

बालावबोधनी रचना १४७९(सं.१५३५)मां थयेल छे.

शब्दकोशमां १३० जेटला शब्दो छे. '०तु' जेवा प्रत्ययोनो पण एमां समावेश छे. स्थाननिर्देश एकथी वधु – क्यांक बधा ज – करेला छे. मूळ संस्कृत कृति पण आपेल होई अर्थोने चकासवानी एक सगवड मळे छे.

विक्रच. (राजशीलकृत) *विक्रमखापराचरित्र,* संपा. कनुभाई व्र. शेठ, धनवंत ति. शाह, प्रका. समता प्रकाशन, अमदावाद, १९८२.

कृति १५०७(सं.१५६३)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां १२० जेटला शब्दो छे. केटलाक शब्दो परत्वे शब्दमूळ दर्शावेल छे.

विक्ररा. (उदयभानुकृत) *विक्रमचरित्र रास,* संपा. बलवंतराय ठाकोर, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९५७.

कृति १५०९(सं.१५६५)मां रचायेली छे.

बलवंतराय ठाकोरना आ मरणोत्तर प्रकाशननो शब्दकोश रणजित पटेले तैयार कर्यो छे. एमां आशरे ३०० शब्दो छे. उच्चारभेदवाळा शब्दो एक मुख्य शब्दना पेटामां नोंध्या छे. तेथी 'भारोट'ना पेटामां 'भारवट्टि' मळे छे.

विमप्र. (लावण्यसमयविरचित) *विमलप्रबंध,* संपा. धीरजलाल धनजीभाई शाह, प्रका. गुजरात साहित्य सभा, अमदावाद, १९६५.

कृति १५१२(सं.१५६८)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां ७०० उपरांत शब्दो छे. एमां '०हि' वगेरे केटलाक प्रत्ययोनो पण समावेश थाय छे.

विराप. (शालिसूरिविरचित) *विराटपर्व,* संपा. चिमनलाल त्रिवेदी, कनुभाई शेठ,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अमदावाद, १९६९.

कृति पंदरमी सदीमां १४२२ पूर्वे रचाई होवानुं नक्की थाय छे.

शब्दकोशमां ४५० जेटला शब्दो छे. 'रखे' 'रडवडइ' 'रूपइ' 'रूडउं' जेवा सामान्य उच्चारभेदथी अत्यारे प्रचलित शब्दो पण नोंधाया छे. शब्दोनां व्याकरणी रूपो ओळखाव्यां छे ने व्युत्पत्ति दर्शावी छे.

वीसरा. *ध वीसळदेव रास, ए रेस्टोरेशन ऑव् ध टेकस्ट,* ज्हॉन डी. स्मिथ, प्रका. केम्ब्रिज युनिवर्सिटि प्रेस, केम्ब्रिज, १९७६.

कृतिमां रचनावर्ष नथी, पण एनी रचना १४५० आसपासमां थई होवानुं अनुमानवामां आव्युं छे.

शब्दकोश आशरे १४५० शब्दोने समावे छे. एकेएक शब्द अने एकेएक प्रयोग नोंधवामां आव्यो छे. एमां अत्यारे प्रचलित घणा शब्दो पण होय ज. देखीती रीते ज आ बधा शब्दोने आ संकलित कोशमां स्थान न होय. शब्दोना व्याकरणी पदप्रकार दर्शाववामां आव्या छे. क्रियापदो धातु रूपे ज नोंध्यां छे. शब्दमूळ दर्शाव्यां छे अने शब्दोनी विशेष समजूती माटे टिप्पणनो हवालो आप्यो छे. कृतिनो अनुवाद छे ते पण अर्थने स्पष्ट करवामां काम आवे तेम छे. अर्थो अंग्रेजीमां छे तेनो आ संकलित कोशमां गुजराती अनुवाद करी लीधो छे.

राजस्थानी भाषानी एक लाक्षणिकता तरीके अहीं सर्वत्र 'ळ' राखवामां आव्यो छे, 'ल' नहीं, जोके वर्णक्रममां ए 'ल'ने स्थाने ज छे. 'ख' उच्चारवाळा शब्दो 'ष' लिपिचिह्नथी अने 'ष'ना ज क्रममां मुकाया छे. आ संकलित कोशमां एने 'ख'ना क्रममां लई लीधा छे.

वेताप. (शामळ भट्टकृत) *वेतालपचीसी,* संपा. अंबालाल स. पटेल, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९६२.

कृतिनुं रचनावर्ष १७४५ (सं.१८०१) छे.

शब्दकोशमां आशरे १७५ शब्दो छे.

शब्दकोश हरिवल्लभ भायाणीए तैयार करेलो छे.

शीलक. (उदयकलशकृत) *शीलवती कथा,* संपा. कनुभाई व्र. शेठ, धनवंत ति. शाह, प्रका. समता प्रकाशन, अमदावाद, १९८२.

कृतिनुं रचनावर्ष १५५२ (सं.१६१८) छे.

शब्दकोशमां आशरे १०० शब्दो छे. थोडा शब्दोमां व्युत्पत्ति दर्शावी छे. कोईक शब्दो वर्णक्रमभंगथी मुकाया छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शृंगारमं. (जयवंतसूरिकृत) *शृंगारमंजरी (शीलवतीचरित्र रास)*, संपा. कनुभाई व्र. शेठ, प्रका. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९७८.

कृति १५५८(सं.१६१४)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां ५०० उपरांत शब्दो छे. केटलाक शब्दोमां व्युत्पत्ति दर्शावी छे. शब्दकोशमां केटलीक छापभूलो रही गई छे. असंगत शब्द अने अर्थ पण एक स्थाने आवी गयेल छे ने वर्णक्रमभंग पण थयो छे.

षडाबा. (तरुणप्रभाचार्यकृत) *षडावश्यक बालावबोध*, संपा. प्रबोध बे. पंडित, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९७६.

कृति १३५५(सं.१४११)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां आशरे २३०० शब्दो छे. शब्दकोश सर्वग्राही करवानो आशय जणाय छे तेथी 'अमुक' 'अरण्य' 'आदित्यु' 'आकर्षइ' जेवा शब्दो जोवा मळे छे, जोके छतां कृतिमांना अनेक मध्यकालीन शब्दो कोशमां आवी शक्या नथी. शब्दोना अर्थ अंग्रेजीमां छे ने एमने विशे व्याकरण तथा व्युत्पत्तिविषयक वीगते नोंध छे, अन्यत्र मळता समांतर प्रयोगो पण नोंध्या छे. अनुस्वारवाळा शब्दो जेते वर्णमां छेल्ले लीधा छे, जेमके 'कौशाम्बी' पछी 'कंपावतउ' 'कांगुण' वगेरे आवे छे, जोके 'कृमि' ए पछी छे. शब्दोना रूपभेदो पेटामां मूक्या छे ने एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे.

षष्टिप्र. (नेमिचन्द्र भंडारीविरचित) *षष्टिशतक प्रकरण* (त्रण बालावबोध सहित), संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९४३.

मूळ प्राकृत कृति परना त्रण बालावबोधो १४४०(सं.१४९६)थी १४६९(सं.१५२५)नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोश स्वाभाविक रीते ज त्रण गुजराती बालावबोधोनो छे. एमां २७५ जेटला शब्दो छे. शब्दोनां व्याकरणी रूपो ओळखाव्यां छे, व्युत्पत्ति आपी छे अने अर्थविषयक विस्तृत नोंधो करी छे. स्थाननिर्देश बधा ज करवानी नेम जणाय छे. 'रुलइ' पछी 'कुटकइं' अने 'द्रइ' आवे एटलो मोटो वर्णक्रमभंग पण थयेल छे. उच्चारभेदवाळा शब्दो एक मुख्य शब्दना पेटामां दर्शाव्या छे.

त्रण बालावबोधो लगभग समांतर चालता होई, एक बालावबोधना शब्दनो खुलासो बीजा बालावबोधमांथी मळे एवुं बने छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यचो. (यशोविजयजीविरचित) *सम्यकृत्व षट्स्थान चउपइ* (स्वोपज्ञ बालावबोध सहित), संपा. प्रद्युम्नविजयजी गणि, प्रका. अंधेरी गुजराती जैन संघ, मुंबई, सं.२०४६.

कृति तथा बालावबोध बन्ने गुजरातीमां छे. बालावबोध १६८५ (सं.१७४१)मां रचायो होय एम समजाय छे. यशोविजयजीनी अन्य कृतिओ १६५५थी १६८३नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोश नानकडो – ३३ शब्दोनो ज – छे, जेमां स्वाभाविक रीते ज घणा मध्यकालीन शब्दो बाकात रह्या छे. अहीं लाभ ए छे के मूळ गाथाना शब्दनो स्वोपज्ञ वृत्तिमां ज अर्थ करेलो छे. तेथी तत्कालीन शब्दार्थनी सीधी माहिती मळे छे.

सिंहा(म). (मलयचन्द्रकृत) *सिंहासनबत्रीसी,* संपा. रणजित मो. पटेल ('अनामी') प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७०.

कृति १४६३(सं.१५१९)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां १२० जेटला शब्दो छे. घणा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे, एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे अने अर्थविषयक नोंधो पण छे. क्रियापदो धातु रूपे आपी पछी कृतिमांनुं एनुं व्याकरणी रूप पण आप्युं छे. क्वचित् उच्चारभेदवाळो शब्द पेटामां मुकायो छे, जेमके 'अखत्र'ना पेटामां 'अखंत्र'.

सिंहा(शा). (शामळ भट्टकृत) *सिंहासनबत्रीशी,* संपा. हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९६०.

आमां संघरायेली *सिंहासन-बत्रीशीनी* वार्ताओ १७२९थी १७४५ना गाळामां रचायेली छे.

शब्दकोशमां २५० जेटला शब्दो छे. स्थाननिर्देश बधा कर्या होय एवुं जणाय छे. केटलाक शब्दोनी व्युत्पत्ति दर्शावी छे.

स्थूलिफा. (हलराजकृत) *स्थूलिभद्र फागु – एक परिचय,* संपा. कनुभाई व्र. शेठ, स्वाध्याय पु.८ अं.३, एप्रिल १९७१.

कृति १३५३(सं.१४०९)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां आशरे ७० शब्दो छे. क्वचित् वर्णक्रमभंग थयो छे.

हम्मीप्र. (अमृतकलशकृत) *हम्मीरप्रबंध,* संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, सोमाभाई धू. पारेख, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७३.

कृति १५१८(सं.१५७५)मां रचायेली छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दकोशमां २०० उपरांत शब्दो छे. उच्चारभेदवाळा शब्दो पेटामां मूक्या छे. केटलाक शब्दोमां स्थाननिर्देश एकथी वधु कर्या छे.

हरिख्या. (रत्नदासकृत) *हरिश्चन्द्राख्यान*, संपा. केशवलाल ह. ध्रुव, प्रका. गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९२७.

कृति १६४८(सं.१७०४)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां आशरे २७५ शब्दो छे 'दारिद्र्य' 'दिनकर' जेवा घणा जाणीता संस्कृत शब्दो एमां छे. शब्दमूळ दर्शावेल छे.

हरिवि. (अज्ञातकर्तृक) *हरिविलास : रासलीला*, संपा. हरिवल्लभ भायाणी अने अन्य, प्रका. पोते, अमदावाद, १९८८.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी, पण एनो रचनासमय १४५०थी १५५० (विक्रमनी सोळमी शताब्दी) अनुमानवामां आव्यो छे.

संग्रहमां बीजी कृतिओ पण छे, परंतु शब्दार्थ *हरिविलास*ना ज आपवामां आव्या छे. एमां ९० जेटला शब्दो छे. थोडा शब्दोमां व्युत्पत्ति आपी छे.

कृतिनो अनुवाद आपवामां आव्यो छे तेमांथी केटलाक शब्दार्थनी चावी मळे छे.

शब्दकोश माटे उपयोगमां लेवायेला ग्रंथोनी समयानुक्रमणी

आम तो, केटलाक ग्रंथो समयना लांबा गाळाने आवरे छे, छतां भाषाना विकास-इतिहासनो अभ्यास करनारने आ समयानुक्रमणीमांथी केटलोक आधार अवश्य सांपडी रहेशे.

समय	ग्रंथ के कृति
१२मीथी १४मी सदी	प्राचीन गूर्जर काव्यसंचय
१२मी पूर्वार्धथी १४मी पूर्वार्ध	ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह
१३मी पूर्वार्धथी १४मी पूर्वार्ध	तेरमा-चौदमा शतकनां त्रण प्राचीन-गुजराती काव्यो
१२५०थी १३५० दरम्यान	वसंतविलास (फागु)
१२८५ आसपासथी १६८२	प्राचीन फागुसंग्रह
१३५३	स्थूलिभद्र फागु
१३५४थी १४२९	गुर्जर रासावली
१३५५	षडावश्यक बालावबोध
१४००थी १४७५ आसपास	पंदरमां शतकनां चार फागुकाव्यो
१५मी सदी	नरसिंहनी काव्यकृतिओ, नरसैं महेतानां पद, नरसिंह महेतानां पद

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५मी पहेलुं चरण	विराटपर्व
१४४०थी १४९०	'षष्टिशतक प्रकरण'ना त्रण बालावबोध
१४५० आसपास	वीसळदेव रास
१४५०थी १५५० दरम्यान	हरिविलास
१५मी त्रीजुं चरण	उषाहरण
१५मी उत्तरार्धथी १७मी पूर्वार्ध	ऐतिहासिक राससंग्रह
१४६३	सिंहासनबत्रीसी (मलयचंद्र)
१४७९	वाग्भटालंकार बालावबोध
१४७९थी १७०५	आरामशोभा रासमाळा
१४८७	उपदेशमाला बालावबोध
१४९०	नेमिरंगरत्नाकर छंद, प्रबोधप्रकाश
१४९७	ललितांगकुमार रास
१४९७थी १५३१	लावण्यसमयनी लघु काव्यकृतिओ
१५मी अंतभाग	कृष्णचरित्र
१५मी अंत के १६मी आरंभ	अंगदविष्टि, कृष्ण-बालचरित
१५०० आसपास	अभिवन-ऊझणुं
१६मी पूर्वार्ध आसपास	कादंबरी, नलाख्यान
१५०७	विक्रमखापराचरित्र
१५०९	विक्रमचरित्र रास
१५१२	विमलप्रबंध
१५१७	कामावती
१५१८	हम्मीरप्रबन्ध
१५४९	कर्पूरमंजरी
१५५०	प्रद्युम्नकुमार चुपई
१५५२	शीलवती कथा
१५५६	नल-दवदंती रास
१५५८	शृंगारमंजरी
१५८३	अंबड विद्याधर रास
१६मी अंत के १७मी आरंभ	रूपसेन चतुष्पदिका
१७मी पूर्वार्ध	उक्तिरत्नाकर, जिनराजसूरि-कृति-कुसुमांजलि
१६०४थी १६९८	सत्तरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७मी मध्यभाग	अखानी काव्यकृतिओ, अखाना छप्पा, चित्तविचार-संवाद, चतुरचालीशी, प्रेमपचीसी
१६४८	हरिश्चन्द्राख्यान
१६४९	अखेगीता
१७मी उत्तरार्ध	प्रेमानंदनी काव्यकृतिओ
१६५२	मोसाळाचरित्र
१७मी चोथुं चरण	दशमस्कंध
१६८२ पहेलां	पंचदंडनी वार्ता
१६८५ के १७मी उत्तरार्ध	सम्यक्त्व षट्स्थान चउपइ
१८मी पूर्वार्ध	देवकीजी छ भायारो रास
१७१३ के ते पूर्वे	आनंदघन बावीसी स्तबक
१७१८थी १७६५ आसपास	चंद्र-चंद्रावती वारता, नंदबत्रीसी, मदनमोहना
१७२५	रूस्तमनो सलोको
१७२९थी १७४५ दरम्यान	कस्तुरचंदनी वारता, सिंहासनबत्रीशी (शामळ)
१७४५	वेतालपचीसी

संदर्भग्रंथो

(शब्दार्थनिर्णय तथा व्युत्पत्तिना विषयमां सहायरूप थयेला महत्त्वना ग्रंथोनो परिचय)

अनुशीलनो, हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. धी पॉप्युलर पब्लिशिंग हाउस, सूरत, १९६५.

आ ग्रंथमां पृ.७८–९२ पर प्राकृत-अपभ्रंश अने प्राचीन गुजरातीना २५ जेटला शब्दोनी प्रयोगोनी नोंधपूर्वक चर्चा छे ते अहीं उपयोगी थई छे.

अभिधान चिन्तामणि कोश (हेमचन्द्राचार्यविरचित), अनु. संपा. विजयकस्तूरसूरिजी, प्रका. जसवंतलाल गिरधरलाल शाह, अमदावाद, वि.सं.२०१३.

आ नामकोश छे. नामो जुदाजुदा वर्गोमां रजू थयां छे, जेमके देवाधिदेवो, देवो, मनुष्यो, तिर्यंचो, नारकी, साधारण पदार्थो वगेरे. एमां घणा पेटावर्गो पण पडे छे जेमके तिर्यंचोमां पृथ्वीकाय, वनस्पतिकाय, कृमिओ, स्थलचारो, खेचर, जलचर, वगेरे; साधारण पदार्थोमां चीजवस्तुओ, भावो, गुणो, क्रियाओ वगेरे. वळी नामोना सघळा पर्यायो पण आपवामां आव्या छे. आ रीते, आ कोश संस्कृत भाषानां सर्व नामोने अशेषपणे संघरे छे. तेम प्राकृत-अपभ्रंश-देश्य भाषाथी प्रभावित नामो पण एमां छे. कुल १५००० जेटलां नामो एमां छे. अनुवादमां एना गुजराती पर्यायो नोंधाया छे. पाछळ संस्कृत शब्दोनी तेमज गुजराती शब्दोनी एम बे वर्णानुक्रमिकसूचिओ छे. केटलाक विरल शब्दार्थोमां आ कोश चावीरूप बन्यो छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उर्दू-हिन्दी शब्दकोश, संपा. मुहम्मद मुस्तफां खां 'मद्दाह', प्रका. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, १९८९ (षष्ठ संस्करण)

सानुस्वार वर्णो पहेलां अने निरनुस्वार पछी ए वर्णक्रम अहीं छे. एटलेके 'कं' पहेलां अने 'क' पछी. मध्यकालीन गुजरातीमां वपरायेला केटलाक फारसी-अरबी शब्दो माटे तेमज केटलाक शब्दोनी एमनी आजे अपरिचित अर्थछाया माटे आ कोश काममां आव्यो छे. आ कोशमां ३५००० उपरांत शब्दो छे.

गुजराती भाषानो लघु व्युत्पत्तिकोश, संपा. हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर, १९९४.

अत्यारे प्रचलित गुजराती शब्दोनी व्युत्पत्ति आमां आवी छे. व्युत्पत्तिमां प्राकृत अने संस्कृत भूमिकानां शब्दरूपो नोंध्यां छे. टर्नरने अनुसरी संस्कृत-प्राकृतनां कल्पित रूपोनो पण आश्रय लीधो छे. आशरे ३००० शब्दो आमां समावेश पाम्या छे. पाछळ केटलाक शब्दो विशे व्युत्पत्ति तथा प्रयोगविषयक टूंकी नोंध आपी छे तेमां मूळ शब्दकोशमां नहीं आवेला प्राचीन शब्दो पण जोवा मळे छे.

आ कोशना ठीकठीक शब्दो उच्चारभेदे मध्यकाळमां मळे छे एटले व्युत्पत्तिना विषयमां आ ग्रंथ घणो मार्गदर्शक बन्यो छे.

गुजरातीमां प्रचलित फारसी शब्दोनो सार्थ व्युत्पत्ति कोश, भाग १थी ४, संपा. छोटुभाई रणछोडजी नायक, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, १९७२–१९८८.

आ कोशमां गुजरातीमां प्रचलित शब्दोनां मूळ अरबी-फारसी रूप तेमज अर्थ दर्शाववामां आव्यां छे अने गुजरातीमां शब्द जे अर्थ के अर्थोमां प्रचलित होय ते पण आपवामां आवेल छे. केटलेक ठेकाणे शब्दना प्रयोग दर्शावती पंक्तिओ पण उद्धृत थई छे. कोशमां आशरे छ हजार शब्दो छे.

उद्धृत थयेली केटलीक पंक्तिओ मध्यकालीन कृतिओमांथी छे, ते उपरांत पण मध्यकाळमां वपरायेला केटलाक फारसी शब्दो अहीं जडे छे, तेथी अर्थनिर्णयमां आ कोश पण उपयोगी थयो छे.

देशी शब्दकोश, संपा. मुनि दुलहराज, प्रका. जैन विश्वभारती, लाडनूं, १९८८.

आ ग्रंथमां देशी शब्दो एना अर्थ ने प्रयोगना स्थाननिर्देश साथे आपवामां आवेल छे. केटलेक स्थाने उक्ति पण उद्धृत थई छे. अर्थ हिंदी भाषामां आपवामां आव्या छे. आशरे ११००० शब्दोनो एमां समावेश छे. परिशिष्ट रूपे उत्तरकालीन प्राकृत ग्रंथोमां एमना संपादकोए आपेला शब्दकोशोने संकलित करी लेतो एक कोश आपवामां आव्यो छे, जेमां आशरे ३००० शब्दो छे. बीजा परिशिष्टमां देशी धातुओनो अर्थ साथेनो अने केटलेक स्थाने आधार पण निर्देशतो कोश छे, जेमां १६००

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेटला धातुशब्दो छे. परिशिष्टना बन्ने कोशोना घणा शब्दो, स्वाभाविक रीते ज, मूळ कोशमां मळे छे. वर्णक्रम आ पछीना प्राकृत कोश प्रमाणे छे.

मध्यकाळमां वपराशमां रहेला देशी शब्दो परत्वे आ कोश घणो उपयोगी थयो छे.

पाइअसद्दमहण्णवो, पंडित हरगोविंदास त्रि. शेठ, प्रका. प्राकृत ग्रंथ परिषद्, वाराणसी, १९६३ (द्वितीय संस्करण).

प्राकृत भाषाना आ कोशमां शब्दार्थ आधारग्रंथना निर्देश साथे आपवामां आव्या छे. क्वचित् पंक्ति पण उद्धृत थई छे. अर्थ हिन्दी भाषामां छे. समाविष्ट शब्दोमां संस्कृतमांथी ऊतरी आवेला तेमज देश्य भाषाना शब्दो पण छे. सानुस्वार वर्णो निरनुस्वार वर्णोनी पूर्वे छे, पण पाछळ स्वरवाळा वर्णो पहेलां मुकाया छे. जेमके, क, कइ वगेरे, पछी कं, कंइ वगेरे, पछी कंक, कंकड वगेरे, पछी ककाणि, कडुध वगेरे. कोशमां आशरे ५७००० शब्दो छे.

प्राचीन गुजराती भाषानो प्राकृत भाषा साथेनो संबंध घणो गाढ होई केटलाक शब्दोनी चावी उकेलवामां आ कोश खास काममां आव्यो छे.

बृहद् गुजराती कोश खंड १–२, केशवराम का. शास्त्री, प्रका. युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बॉर्ड, अमदावाद, १९७६ अने १९८१.

सार्थ गुजराती जोडणीकोश उपरांत भगवद्गोमंडल आदि कोशोनी सहाय लईने रचायेला आ कोशमां ७५०००थी ८०००० शब्दो समाविष्ट छे. जोके संस्कृत तत्सम शब्दोने बाद करतां आ कोश सार्थ गुजराती जोडणीकोशथी खास विशेष सामग्री आपतो जणातो नथी. शब्दना अर्थ नोंधवा उपरांत शक्य बन्युं त्यां, शब्दनां मूळ पण दर्शावेल छे. साधित अने सामासिक शब्दो स्वतंत्र राख्या छे, पण रूढिप्रयोगो शब्दना पेटामां मूक्या छे.

बृहद् हिन्दी कोश, संपा. कालिकाप्रसाद वगेरे, प्रका. ज्ञानमंडल लि., वाराणसी, १९८४ (पंचम संस्करण).

आ कोशमां हिन्दी शब्दो एना हिन्दी पर्याय साथे आपवामां आव्या छे. क्वचित् शब्दनो प्रयोग दर्शावती पंक्ति टांकवामां आवी छे. सामासिक शब्दो अने रूढिप्रयोगो शब्दना पेटामां लीधा छे. आमां संस्कृत शब्दो मोटा प्रमाणमां समावी लेवाया छे. अने केटलाक मध्यकालीन शब्दो पण जोवा मळे छे. सानुस्वार वर्णो पहेलां अने निरनुस्वार वर्णो पछी एवो वर्णक्रम छे. कुल शब्दसंख्या १,४०,३०० छे.

नोंधायेला केटलाक जूना हिन्दी शब्दो, केटलाक फारबी-अरबी मूळना शब्दो अने केटलाक संस्कृत शब्दोना आ कोशना अर्थो मध्यकालीन गुजराती शब्दोना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थनिर्णयमां उपयोगी थया छे.

भगवद्गोमंडल भाग १थी ९, भगवतसिंहजी, प्रका. प्रवीण प्रकाशन, राजकोट, १९८६ (पुनर्मुद्रण).

अनेक संस्कृत शब्दो, मध्यकालीन शब्दो, विविध विद्याशाखाना पारिभाषिक शब्दो, ऐतिहासिक नामो – व्यक्तिओ वगेरेनां – ने समावतो आ कोश मात्र शब्दार्थ-कोश नहीं पण कंईक अंशे सर्वसंग्रह बनवा ताके छे. जोके एमां पूरी अधिकृतता साधी शकाई नथी. शब्दोना अनेक अर्थो नोंधाय छे ते घणी वार तो काचांपाकां साधनोमांथी भेगा करेला जणाय छे. मध्यकालीन शब्दो परत्वे घणी वार एना प्रयोग दर्शावती पंक्ति उद्धृत करवामां आवी छे. परंतु करवामां आवेलो अर्थ एमां बंध बेसती न होय एवुं पण कोईकोई वार जोवा मळ्युं छे. तेम छतां काळजीपूर्वक उपयोग करीए तो आ ग्रंथमांथी काची सामग्री अवश्य मळी रहे छे. आ ग्रंथमां २,८१,००० उपरांत शब्दो छे.

राजस्थानी सबद कोस खंड १थी ४ ग्रंथ १थी ९, सीताराम लालस, प्रका. राजस्थानी शोध संस्थान, (पछीथी) उपसमिति, राजस्थानी सबद कोस, जोधपुर, १९६२–१९७८.

आ कोश राजस्थानी शब्दोना अर्थ हिंदी भाषामां आपे छे. सानुस्वार वर्णो निरनुस्वार वर्णोनी पूर्वे मुकायेला छे ते उपरांत वर्णक्रमनी एक ध्यान खेंचती लाक्षणिकता ए छे के एमां ल-ळने एकरूप गणी 'ल'ना क्रममां साथे ज राखेल छे. 'श' ने 'ष' नथी, एकलो 'स' छे. एटले 'श'वाळा शब्दो 'स'मां ज शोधवाना रहे छे. शब्दार्थोनी साथे घणी वार उदाहरणरूप पंक्तिओ – एकथी वधु पण – टांकी छे. चारणी भाषाना घणा शब्दोनो समावेश छे, ते उपरांत घणा उच्चारभेदोने समावी लेवाया छे. अपायेला अर्थो सो टका प्रमाणभूत नथी, पण कदाच भगवद्गोमंडल करतां आ कोशनी प्रमाणभूतता वधारे छे. आ कोशमां आशरे २,००,००० शब्दो छे.

मध्यकालीन गुजरातना जैन साधुकविओ राजस्थान-गुजरातमां विहार करनारा हता. तेथी राजस्थानीमां टकेला अने गुजरातमां लुप्त थयेला घणा शब्दार्थो एमनी कृतिओमां जोवा मळे छे. एवा शब्दार्थो परत्वे आ कोश खूब उपयोगी थयो छे. एम पण कही शकाय के मध्यकालीन गुजराती शब्दकोशने सौथी वधु उपयोगी थयेलो आ कोश छे.

लेक्सिकोग्रॅफिकल स्टडिझ इन जैन संस्कृत, बी. जे. सांडेसरा अने जे. पी. ठाकर, प्रका. ओरिएन्टल इन्स्टिट्यूट, बरोडा, १९६२.

आमां त्रण जैन प्रबंधोना शब्दो, कृतिवार अलगअलग आपवामां आवेल छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रही गयेला शब्दो पूर्ति रूपे आपवामां आवेल छे. संस्कृत शब्दोना अंग्रेजीमां अर्थ आपवामां आव्या छे अने घणे स्थाने शब्दनो प्रयोग दर्शावती मूळनी पंक्तिओ उद्धृत करी छे. शब्दो नागरी लिपिमां अने संस्कृत कोशना वर्णक्रममां छे. बधी कृतिओना थईने कुल ४००० जेटला शब्दो नोंधायेला छे, परंतु एक शब्द एकथी वधु कृतिओमां मळतो होय एवा दाखला पण घणा छे.

जैन संस्कृत देशी शब्दोना संस्कृतीकरण माटे जाणीतुं छे. केटलाक शब्दोमां विशिष्ट अर्थछायाओ पण विकसी छे. मध्यकालीन गुजरातीमां पण आमांना केटलाक शब्दोनुं अनुसंधान देखाय छे ने तेथी केटलाक लाक्षणिक शब्दप्रयोगोमां आ कोश मार्गदर्शक बन्यो छे.

वनौषधिकोश, संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. प्राच्यविद्या मंदिर, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९८२.

आ ग्रंथनो मुख्य भाग ते वनस्पतिओनां संस्कृत नामोनो कोश छे. मूळ शब्द, एना एक के वधु गुजराती पर्यायो मूळ शब्दना अन्य संस्कृत पर्यायो, लॅटिन पारिभाषिक पर्याय अने मळी शक्या ते मराठी, हिंदी, पंजाबी, बंगाळी, तामिळ अने अंग्रेजी पर्याय – ए रीते बधां वनस्पतिनामो अकादिक्रमे आपवामां आव्यां छे. आ कोशमां आशरे ४५०० वनस्पतिनामो छे. चार परिशिष्टोमांथी पहेलामां कच्छी नामो गुजराती पर्याय साथे, बीजामां लॅटिन नामो संस्कृत पर्याय साथे, त्रीजामां गुजराती नामो संस्कृत पर्यायो साथे अने चोथामां 'सोढल-निघंटु'मां मळतां नवां वनस्पतिनामो समावायां छे.

मध्यकालीन गुजराती वनस्पतिनामोने उकेलवामां आ कोश उपयोगी थयो छे.

वर्णकसमुच्चय भाग १ अने २, (भाग १) संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, (भाग २) भोगीलाल ज. सांडेसरा अने रमणलाल ना. महेता, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९५७ अने १९५९.

पहेला भागमां वर्णको छे अने बीजा भागमां एने आधारे करवामां आवेलुं सांस्कृतिक अध्ययन अने शब्दसूचिओ छे. शब्दसूचिओ बे प्रकारे छे – विषयवार अने सामान्य. विषयवार शब्दसूचिमां भोजनसामग्री, वस्त्र, अलंकार, देशप्रदेश, नगररचना अने स्थापत्य, राजलोक अने पौरलोक, शस्त्रास्त्रो, अश्वजाति वगेरेनां नामोनी सूचिओ छे अने सामान्य शब्दसूचिमां ए सिवायना सर्व शब्दोनी सूचि छे. शब्दसूचिमां पहेला भागनो स्थाननिर्देश मात्र छे, अर्थो नथी, परंतु जुदाजुदा विषयोना जे शब्दो छे तेनी समजूती ए विषयोना सांस्कृतिक अध्ययनोमांथी मोटे भागे मळे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे, जोके आ शब्दो परत्वे आ बीजा भागना सांस्कृतिक अध्ययननो पृष्ठांक आपी शकायो नथी ए अगवड रही गई छे. सामान्य शब्दोना अर्थ माटे तो ए ज्यां वपरायो छे ते स्थान जोतां संदर्भ परथी घणी वार अर्थ ऊकले छे. पहेला भागमां परिशिष्ट २ तरीके मुकायेल क्रयाणक-वस्त्र-आभरण नामावलिना शब्दो सूचिमां आव्या नथी. विषयवार शब्दसूचिमां आववा जोईता थोडा शब्दो सामान्य शब्दसूचिमां रही गया छे. विषयवार शब्दसूचिमां ३५०० जेटला अने सामान्य शब्दसूचिमां २८०० जेटला शब्दो छे.

मध्यकालीन गुजरातीना केटलाक शब्दोना उक्तिप्रयोगो आ ग्रंथमांथी मळे छे ए रीते एणे अर्थनिर्णयमां घणी वार मदद करी छे.

व्युत्पत्तिविचार, हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बॉर्ड, अमदावाद, १९७५.

आ ग्रंथना बीजा खंडमां संस्कृतथी अर्वाचीन गुजराती सुधीना ध्वनिविकासमां जोवा मळता नियमो उदाहरण सहित आपवामां आव्या छे अने त्रीजा खंडमां केटलाक शब्दो विशे व्युत्पत्ति ने अर्थविषयक नोंधो छे. बन्नेमां आवता गुजराती शब्दोनी अकारादि सूचि पाछळ पृष्ठांकनिर्देश साथे आपी छे. ते द्वारा शब्दनां व्युत्पत्ति ने अर्थ सुधी पहोंची शकाय छे. शब्दसूचिमां १४०० उपरांत शब्दो छे.

आमांनी घणी व्युत्पत्तिओ तो 'गुजराती भाषा लघु व्युत्पत्तिकोश'मां हवे अकारादि क्रमे प्राप्त थई छे, पण शब्दार्थ-विषयक नोंधोनी पोतानी जुदी उपयोगिता छे, जेनो लाभ आ संकलित कोशमां लेवामां आव्यो छे.

शब्दकथा, हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. क. ला. स्वाध्याय मंदिर, गुजराती साहित्य परिषद, अमदावाद, १९८३.

आ पुस्तकमां शब्दोनां स्वरूप, इतिहास अने अर्थछायाविषयक नोंधो छे. एमां संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिंदी, मराठी वगेरे भाषाओमां जोवा मळता शब्दार्थरूपोने आवरी लेवायां छे. १५० जेटली नोंधो छे पण एक नोंधमां एकथी वधु शब्दो विशे पण चर्चा थई छे. पाछळ आपेली शब्दोनी सूचिमां उल्लेखायेला सघळा शब्दो छे ने ए २८०० जेटला छे जेमां एक शब्दना उच्चारभेदोनो पण समावेश छे.

आमां अपायेलो शब्दना स्वरूप अने अर्थनो इतिहास आ संकलित कोशमां अवारनवार सहायरूप थयो छे.

शब्दपरिशीलन, हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अमदावाद, १९७३.

आ पुस्तकना विभाग बीजामां केटलाक प्राचीन शब्दप्रयोगो विशे नोंधो छे. नोंधो १२ छे पण एमां समाविष्ट शब्दप्रयोगो २२ जेटला छे. ए नोंधो आ संकलित

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोशमां अर्थनिर्णय परत्वे मददरूप थई छे.

संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी, सर मॉनिएर-विलिअम्झ, प्रका. मारवाह पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ही, १९६६ (पुनर्मुद्रण).

आ कोशमां संस्कृत शब्दो नागरी तेमज रोमन लिपिमां आपेला छे, जोके मुख्य शब्दना पेटामां आवता सामासिक शब्दो केवळ रोमन लिपिमां आपेला छे. अर्थो अंग्रेजी भाषामां छे. शब्द जे-ते अर्थमां ज्यां वपरायो छे ते कृतिओ पण निर्देशी छे. उपरांत, अन्य शब्दकोशो वगेरेमांथी मळता शब्दो पण समावी लीधा छे. आम आ कोश सर्वग्राही थवा जाय छे. आ कोशना शब्दक्रमनी एक लाक्षणिकता खास ध्यानमां राखवा जेवी छे के एमां मूळ धातु परथी साधित थयेला शब्दो, एना वर्णानुक्रमने बदले, धातु पछी तरत आपवामां आव्या छे. जेमके कृ पछी करण, कर्तृ वगेरे. आ संवर्धित आवृत्तिमां आशरे १,८०,००० शब्दो छे. थोडा शब्दो पूर्ति रूपे छे.

सर्वग्राही कोश होवाने कारणे केटलाक विरल शब्दोनां स्वरूप अने अर्थनी चावी एमांथी मळी छे.

संस्कृत साहित्यमां वनस्पति, बापालाल ग. वैद्य, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९५३.

आम तो, आमां जुदीजुदी वनस्पतिओ संस्कृत साहित्यमां क्यांक्यां निर्देशाई छे ए पंक्तिओ उद्धृत करीने दर्शाव्युं छे. साथे ए वनस्पतिनी लाक्षणिकताओ वर्णवी छे, एनां संस्कृत नामान्तरो नोंध्यां छे अने गुजराती वगेरे भाषाओणां ए वनस्पति कये नामे ओळखाय छे ते पण बताव्युं छे. अनुक्रम अकारादि क्रमे छे तेमां १९० वनस्पतिओ उल्लेखाय छे, परंतु पाछळनी शब्दसूचिमां संस्कृत उपरांत गुजराती वगेरेनां वनस्पतिनामो आवरी लेवायां छे. एमां १८०० उपरांत शब्दो छे, जेमां थोडा ग्रंथ, व्यक्ति वगेरेनां नामो छे.

वर्णनात्मक होवाने कारणे आ ग्रंथ केटलांक वनस्पतिनामोने ओळखवामां विशेष उपयोगी थयो छे.

संस्कृत-हिन्दी कोश, (छात्र-संस्करण), वामन शिवराम आप्टे, प्रका. नाग प्रकाशक, दिल्ली, १९८८ (पुनः मुद्रित संस्करण)

आ कोशमां संस्कृत शब्दोनुं घडतर दर्शाववामां आव्युं छे, एना हिन्दी अर्थो आपवामां आव्या छे अने शब्दो ज्यां वपराया छे ए कृतिओना निर्देशो पण छे. केटलीक वार पंक्ति पण उद्धृत थई छे. कोशमां आशरे २५,००० शब्दो छे. शब्दना पेटामां मुकायेला सामासिक वगेरे शब्दो जुदा. परिशिष्ट रूपे ५००० शब्दो पाछळथी उमेरायेला छे.

खास करीने संस्कृत मूळना मध्यकालीन शब्दोना योग्य आधुनिक पर्यायो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेळववामां आ कोश उपयोगी थयो छे.

सार्थ गूजराती जोडणीकोश, प्रका. गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद, १९६७ (पांचमी आवृत्ति).

शब्दोना गुजराती पर्यायो आपवा उपरांत एना संस्कृतादि मूळनो शक्य होय त्यां निर्देश कर्यो छे. साधित शब्दो मूळ शब्दोना पेटामां लीधा छे ने रूढिप्रयोगो पण त्यां लई लीधा छे. कोशनी आ पांचमी आवृत्तिमां ६८४६७ शब्दो छे.

आ कोशना केटलाक तळपदा शब्दो मध्यकाळ साथे समान छे, तेथी अर्थ निश्चित करवामां आ कोशनो उपयोग थयो छे.

आ उपरांत, *शब्द अने अर्थ* (भोगीलाल सांडेसरा), *लोकसाहित्य शब्दकोश* तथा *संतसाहित्य शब्दकोश* (जेठालाल त्रिवेदी), *डिक्शनरी ऑव् इन्डो-आर्यन लॅंग्वेजीझ,* अन्य केटलाक कोशो तेमज केटलाक जैनधर्मविषयक ग्रंथोनो प्रसंगोपात्त उपयोग करवानो थयो छे.

सांकेतिक चिह्नो अने सामान्य संक्षेपाक्षरो

[ ] आ कौंस सर्वत्र संपादकीय नोंधने निर्देशे छे.

( ) (१) आ कौंसमां मुकायेला मध्यकालीन शब्द मूळ कृतिमां पाठांतर रूपे मळे छे एम समजवानुं छे. (२) आ कौंसमां मुकायेली व्युत्पत्तिओ मूळ आधारग्रंथमां छे एम समजवानुं छे.

* फूदडीनी निशानी (१) मध्यकालीन शब्दनी पूर्वे होय त्यारे ए शब्दनुं ए रूप शंकास्पद होवानुं दर्शावे छे; (२) आधारग्रंथना संक्षेपाक्षरनी पूर्वे होय त्यारे ए आधारग्रंथनो अर्थ छोडवामां आव्यो छे एम दर्शावे छे; (३) आपेला अर्थनी पूर्वे होय त्यारे ए अर्थ विशेनो संशय दर्शावे छे अने (४) अपायेली व्युत्पत्तिनी पूर्वे होय त्यारे ए व्युत्पत्तिनी प्रमाणभूतता शंकास्पद होवानुं दर्शावे छे, पण संस्कृत शब्दरूपनी तरत पूर्वे होय त्यारे ए कल्पित रूप छे एम दर्शावे छे.

० मींडानी निशानी आधारग्रंथना संक्षेपाक्षरनी पूर्वे ज आवे छे अने मध्यकालीन शब्द ए आधारग्रंथमां निर्दिष्ट पृष्ठ पर मळतो नथी, अथवा तो एमां पृष्ठांकनो निर्देश नथी एम दर्शावे छे.

अ. अरबी

अप. अपभ्रंश

उ. उर्दू

क. कन्नड

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का.	काठियावाडी
गुज.	गुजराती
दे.	देश्य
पं.	पंजाबी
पा.	पाली
प्रा.	प्राकृत
फा.	फारसी
ब.व.	बहुवचन
भी.	भीली
म.	मराठी
सर.	सरखावो
सं.	संस्कृत

*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रम

प्रकाशकीय निवेदन • [७]

संपादकनुं निवेदन • [८]

एक नूतन शिखरनुं सफळ आरोहण • हरिवल्लभ भायाणी • [१४]

न वीसरवा जेवो वारसो • जयंत कोठारी • [१६]

संपादकीय भूमिका • [२७]

मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश • १–५६४

थोडी शब्दार्थचर्चा • ५६५–६२७

१. अउले खाले वहै • ५६८; २. अउल्हाइ • ५६८; ३. अउगनाइ • ५६८; ४. अउगउ, उगउ • ५६९; ५. अखाडो • ५६९; ६. अछूतउ • ५७०; ७. अकज, अकाज • ५७१; ८. अखत्र, अखंत्र, अखतर, खत्र • ५७२; ९. अगम, निगम • ५७३; १०. अगाज • ५७५; ११. अघाट (आघाट) ऊभो • ५७५; १२. अच्छउं, आछुं • ५७६; १३. अज उभां • ५७६; १४. अजंण • ५७७; १५. अडसाला/अडसीला • ५७७; १६. अणगाल/अगाल • ५७७; १७. अणाथ, अणाथि, आथ, आथि, आथ्य • ५७८; १८. अणिख • ५७९; १९. अणिअ/अणीय आखइ • ५७९; २०. अणीसर • ५७९; २१. अणूरुं, अणूरति • ५८०; २२. अत • ५८१; २३. अतिधज • ५८२; २४. अतिसंता • ५८२; २५. अधरास, ओलववुं, ऊलववुं • ५८२; २६. अनिवड, निवड • ५८४; २७. अनुभाव, अनु भाव • ५८६; २८. अप्रमाण • ५८६; २९. अबाह • ५८७; ३०. अभोखउ, आभोखउ, अभोखण, अभोखणुं, अंबोषण, अबोखण • ५८७; ३१. अमलीमाण, अमलीमान • ५८९; ३२. अमाइ, अमामो, अमाणुं, अमान, अमानी • ५८९; ३३. अनिआउ, अन्या, अंन्रा, अन्नैयो, अन्याई • ५९०; ३४. अरज • ५९३; ३५. अलगुं, अलगेरी • ५९३; ३६. अंक भरवो • ५९५; ३७. आघुं, आघेरुं • ५९६; ३८. आडइ, आडौ • ५९७; ३९. आदर, आदरवुं • ५९८; ४०. करो • ६०१; ४१. खगां, खगमंडल, खगाकार • ६०१; ४२. खराप • ६०२; ४३. गान, किण गानइ • ६०२; ४४. उशंकल, उसंकल, उसीकल, उसींकल, ओशिंगळ, ओशींकल, ओशींगल, ओसंकल, ओसीकल • ६०३; ४५. काण, काणि, काणी, कांणि, कुलकाणि, मुहकाणि • ६१३

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंग्रेज, फ्रेन्च वगेरे पाश्चात्य प्रजाओए पोताना वापरमांथी के शब्दकोशोमांथी जुनवाणी शब्दो के रूढिप्रयोगो पर ढांकण दईने भाषाना कलेवरने शोषावा न देतां तेमने जीवता राख्या अने तेमां नवा अने नरवा अर्थभाव (कन्टेन्ट)नां टॉनिक पूरीने भाषाना हाडने पुष्ट राख्युं छे, ज्यारे आपणे त्यां आजनो आपणो शिष्ट वर्ग एवी सामग्रीना वापर सामे मों मचकोडे छे.

भाषा ए धरती परनो पाणीवीरडो छे. जनवाणी ए एनी अखूट सरवाणी छे. घडा पाणीना वीरडाने वाडकी के छालियाथी उलेच्ये जाओ ने सो बेडां पाणी भरी त्यो. न उलेचो तो वीरडानुं पाणी घडो ज रहेशे. एम वाडकी-छालियाथी एने उलेचवानी प्रक्रिया पण जनवाणी ज छे. एनाथी रोजेरोज उलेचाया वगर वीरडो मेलो ने बंधियार बनी जशे. भाषारूपी वीरडानुं पाणी जनवाणीने वाटके चडे त्यारे ज ए फिल्टर अने क्लॉरिनेट थईने प्रजाना वापर माटे नरवुं थयुं गणाय.

स्वामी आनंद

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश

शब्दो थकी चित्त पंखाळुं बनी जाय छे.
ॲरिस्टॉफनीझ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जूनी वस्तुओ वेचनार एक दुकानदारने त्यां में एक टेबल जोयेलुं. लागतुं हतुं तो सामान्य पण एनी किंमत हजारो रूपियामां अंकाई हती. एनुं कारण पूछतां एणे कह्युं : "जूनुं छे एटले मोंघुं छे. एना उपर घणा हाथ बेठा छे, एनुं काष्ठ घणी आंगळीओना स्पर्शथी सुंवाळुं बन्युं छे... आ टेबल उपर पेढीओनो इतिहास बेठो छे एटले मूल्यवान छे. जाणकार घराक ए बराबर जाणे छे."

भाषा ए पुराणी चीजवस्तुओनो भंडार. दरेक शब्द ज्ञाननो रत्नजडित नानकडो कोश छे. ज्ञानी घराकनी जेम एनी कदर करतां शीखीशुं तो एनो पहेलो लाभ आपणने ज मळशे.

फाधर वालेस

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ *षष्ठिप्र.* निश्चयार्थ अव्यय, [ज] (सं.च)

अइ *तेरका.* अति

अइठि *लावल.* एंठ, उच्छिष्ट [सं.*आचष्ट]

अइरावण *तेरका.* ऐरावण, [इंद्रनो हाथी]

अइसा *नरप.* आवा (सं.ईदृश) [हिं.]

अइसिउं *नलरा.* एवुं (सं.ईदृश)

अइहवि *गुर्जरा-टि.* सौभाग्यवती स्त्री (सं. अविधवा)

अउ *उक्तिर.* आ (सं.अयम्)

अउआरणे *कर्पूमं.* ओवारणे [सं.अपवारण]

अउखध *प्राचीसं.* औषध

अउगनाइ *उक्तिर.* ध्यानमां न ले (*सं. अपकर्णयति) [सं.अवकर्णयति]

अउगनिया जुओ अडगनिया, अवगनियां, उगनियुं

अउगी **तेरका. प्राचीसं.* मूगी; जुओ उगउ

अउज *उक्तिर.* अयोध्या

अउठ, अऊठ *अंबरा. उक्तिर. नलरा. स्थूलिफा.* साडा त्रण (सं.अर्धचतुर्थ)

अउत *मदमो.* अयुत, दश हजार

अउधारिवुं *उक्तिर.* अवधारवुं, ध्यानमां लेवुं

अउलवइ *उक्तिर.* ओळवे, कपटथी पडावी ले (सं.अपलपति); जुओ ओलवइ

अउले (अउले खाले वहे) **जिनरा.* [अवळी खाळे वहे, ऊभराय, छलकाय]

अउलेवेवउं *षडाबा.* ओळववुं (सं.अपलप्)

अउल्हाइ *जिनरा.* *संकुचित थाय, [पाछुं पडे, खिन्न थाय] [दे.ओहुल्ल]

अउहटइ *जिनरा.* दूर थाय, [आघुं खसे]

अउंगउ-मुगउ *उक्तिर.* ऊगोमूगो, मूगो (सं.अवाङ्मूक); जुओ उगउमुगउ

अऊठ जुओ अउठ

अकज *अखाका. न करवा जेवुं काम, [न थवा जेवुं, अघटित] दशस्कं(२). प्रेमाका. सिंहा(शा).* नकामुं, व्यर्थ (सं. अकार्य)

अकयत्थ *आरारा.* एळे; *ऐतिका.* अकृतार्थ, [जेनुं जीवन सार्थक नथी एवो]

अकरणि *षडाबा.* नहीं करवामां

अकरतउ *षडाबा.* नहीं करतो

अकलि *ऐतिरा.* नहीं कळातुं, नहीं समजातुं

अकह *प्राचीफा.* अकथ्य, अवर्णनीय (सं. अकथ)

अकाचीन *सिंहा(शा).* ?, [*अकिंचन, *कर्मशून्य]

अकाज *अखाछ. आरारा. शीलक.* नकामुं, व्यर्थ, खोटुं; *अखाका.* अकार्य, न करवा जेवुं काम, [हानि]; *उपबा. चतुचा.* *रूपच. अघटित कार्य

अकाजि *गुर्जरा. विराप.* अकारण, [खोटी रीते, खराब रीते, खोटुं करीने] (सं.अकार्य)

अकाम *अखाका.* निष्काम

अकारिम *प्राचीफा.* अकृत्रिम, स्वाभाविक (सं.अ+कार्मिक ?)

अकित्ती *जिनरा.* अकीर्ति, [अपयश अपावनार नामकर्मभेद] [जै.]

अकीधइ *षडाबा.* वणकीधे, वणकर्ये

अकुप्य *वाग्भबा.* सोनुं-चांदी [सं.]

अकुळीणउ *वीसरा.* अकुलीन [रा.]

अकेकलां *कादं(शा).* एकेक, प्रत्येक

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.एकैक)

अकोटडो, अकोटी *नरका. प्रेमाका.* स्त्रीओनुं कानमां पहेरवानुं एक घरेणुं [सं. अर्कपत्रिका]; जुओ अखूटी

अक्खइ *षष्टिप्र.* कहे छे (सं.आख्याति)

अक्खरु *षष्टिप्र.* अक्षर

अक्खीण *षडाबा.* अक्षीण, अनश्वर

अक्रत्य *देवरा.* अकृत्य, [दुष्कृत्य]

अक्रित *प्रेमाका.* अकृत्य, दुष्कृत्य

अक्षर *प्रेमाका.* विधिना लेख, भाग्यलेख

अक्षुरस *विमप्र.* शेरडीनो रस [सं.इक्षुरस]

अक्षाणुं *आरारा.* शुभ कार्यमां भरवामां आवतुं चोखा वगेरे अखंड अनाजनुं पात्र, पूजानो उपहार (सं.अक्षतवायन) [सं.अक्षतदान]; जुओ अख्याणुं

अक्षोद *कादं(शा).* अखोडना वृक्षनुं लाकडुं (सं.)

अखइ *ललिरा.* अक्षय, *अखूट, [अनश्वर, हानिरहित]

अखउत्र *आरारा.* पूजानी सामग्री (सं. अक्षतपात्र)

अखडाय *प्रेमाका.* अथडाय, अफळाय

अखडावखडी *उपबा.* खाडाखबडावाळी

अखत जुओ झखत

अखत्र, अखंत्र *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. *सिंहा(म). *हरिख्या.* अयोग्य, निंद्य, खराब, अनिष्ट (सं.अक्षात्र); जुओ खत्र

अखय *नेमिछं. लावल.* अक्षय

अखयदान *आनंस्त.* अक्षयदान, [अभयदान]

अखंच *विमप्र.* खचकाया विना

अखंज *अभिऊ.* अक्षय, [अखंड] [सं.अ+खंज]

अखंत्र जुओ अखत्र

अखंप *अभिऊ.* [खांप – खामी वगर], पुष्कळ, [पूरेपूरुं] [सं.]

अखा *उषाह.* ओखा (सं.उषा)

अखाडउ *उक्तिर. *गुर्जरा. *विराप.* [शौर्यस्पर्धा], शौर्यस्पर्धानुं मेदान (सं.अक्षपाटक)

अखाडामंडप **षडाबा.* [क्रीडाभूमि, रमतनुं मेदान] (सं.अक्षपाट+मंडप)

अखाडे *अखाका.* अथडावे, अफळावे

अखियात *जिनरा.* आख्यात, यश, [प्रसिद्धि]; **ऐतिका.* [प्रसिद्ध, यशस्वी]

अखी *जिनरा.* अक्षय, [अमर]

अखीऊ *गुर्जरा.* कह्युं (सं.आख्यातम्)

अखीणमहाणस *ऐतिका.* लई आवनार पोते न जमे त्यां सुधी भिक्षान्न खूटे नहीं एवी शक्ति [सं.अक्षीण+महानस]

अखूटइ *गुर्जरा. प्रद्युच.* आयुष्य खूट्या वगर

अखूटी *नेमिछं.* अकोटी, काननुं एक आभूषण; जुओ अकोटडो

अखे *अखाछ. दशस्कं(१). प्रेमाका.* अक्षय, न खूटे एवुं

अखेतरिया उतरावो **नरका.* [दाणा जोवडावी शुं वळग्युं छे ते नक्की करावो]

अखेदपणइ *आनंस्त.* अखेदपणे, [तकलीफ विना, सहजपणे]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अखेपद *चित्तसं.* अक्षयपद, ब्रह्मपद

अखेपात्र *अखेगी.* अक्षयपात्र

अखेर *कामा(त्रि).* *कामा(शा).* *चंद्रवा.* अक्षर

अखेला *अखाका.* खेल्या वगर

अखोड *आरारा(व).* *उक्तिर.* *ऐतिका.* अखरोटनुं वृक्ष (सं.अक्षोटक)

अख्याणां *प्रेमाका.* मंगळ प्रसंगे भरवामां आवतुं अखंड अनाजनुं पात्र [सं.अक्षत-वायन, अक्षतदान]; जुओ अक्षाणुं

अगड *नरका.* *प्रेमाका.* प्रतिज्ञा, बाधा [*अ.अक्द]

अगड *नलरा.* साठमारीनुं मेदान

अगडी *ऐतिका.* अभिग्रह, [व्रत, बाधा] [*अ.अक्द]

अगत्य *दशस्कं(१).* अगम्य गति

अगथीउ *आरारा(व).* वृक्षविशेष, अगथियो, सेगरो (सं.अगस्ति)

अगनि-झाला *लावल.* अग्निनी ज्वाळा

अगनि साधी जुओ साधी

अगम *दशस्कं(२).* अमंगळ भाविना संकेत; **अखाका.* **नरका.* [आगम, मूळ शास्त्र – वेद]; जुओ अगंम, आगम

अगर *आरारा(व).* *उक्तिर.* *ऋषिरा.* *कामा(शा).* *तेरका.* *नरका.* *नलरा.* *वसंवि(ब्रा).* अगुरु, एक जातनुं सुगंधी लाकडुं

अगरज *वसंवि.* अगुरुवृक्ष, अगरजा

अगररस *नरका.* अगुरु(सुगंधी लाकडुं)नो रस

अगरु *प्रेमाका.* ए नामना वृक्षनी छालनो भूको

अगरु उखेव- *प्राचीसं.* अगर उखेववुं, अगरनो धूप उडाडवो; जुओ उखेवे

अगवाणि *वीसरा.* आगेवान, अग्रणी (सं. अग्रयावन्)

अगस्ति *विराप.* अगस्त्य ऋषि

अगंजिउ *ऐतिका.* अपराजित [सं.अगंजित]

अगंजी *नेमिछं.* गांज्यो न जाय तेवो

अगंम *मदमो.* आगम, *शैव शास्त्रो, [परंपरा-प्राप्त मूळ शास्त्रो – वेद]; जुओ अगम

अगाज *आरारा.* दुष्कर; *शृंगामं.* अग्राह्य, [अस्वीकार्य]; *प्रेमाका.* अग्राह्य, अगाध, [पार न पामी शकाय एवुं]; **विमप्र.* [*अग्राह्य – मोटो उत्सव]; जुओ अघराज

अगाध *सम्यचो.* निस्तरंग, [स्थिर]

अगाल *प्रबोप्र.* *प्राचीफा.* अकाळ, अयोग्य समय, कवखत

अगावती *चंद्रवा.* वृक्षवाळी (सं.अग परथी)

अगाश, अगास *गुर्जरा.* *विमप्र.* *विराप.* आकाश

अगाहा *आरारा.* अगाध, ऊंडी

अगि *गुर्जरा.* आग (सं.अग्नि)

अगिअर, अगियर *नलाख्या.* *प्रेमाका.* अजगर

अगिया *प्रेमाका.* आगिया

अगिलउ *वीसरा.* अग्रणी, महान (सं.अग्र)

अगुण *तेरका.* एक वनस्पति

अगुरुलहु *जिनरा.* अगुरुलघुपर्याय, [शरीर-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नी अगुरु (स्थूळ के भारे नहीं) तथा अलघु (कृश के हळवी नहीं) स्थिति, सप्रमाणता, ए प्राप्त करावनार नामकर्म-भेद] [जै.]

अगेवाण *उक्तिर.* आगेवान (सं.अग्र परथी)

अगेवाणु *उक्तिर.* आगळ रहेनार, मोखरानुं; *गुर्जरा.* नेतृत्व

अगोचरनी गत्य *प्रेमाका.* अदृश्य रहेवानी शक्ति

अगोप *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गोप्य, गुप्त

अग्गलि *तेरका.* आगळ, [पासे, समक्ष] (सं.अग्र परथी)

अग्गली *नलरा.* आगळ पडती, विशिष्ट, आगली

अग्गि *प्राचीसं.* अग्नि, आग

अग्गिम *उक्तिर.* आगळ रहेलुं, अग्रिम

अग्गेवाणि *आरारा.* आगळ चालनार, अग्रेसर

अग्गेवाणु *उक्तिर.* आगळ रहेनार, मोखरानुं

अग्यर *चतुचा.* अगुरु, अगर

अघ *नरका. हरिख्या.* पाप [सं.]

अघउ *विमप्र.* शोभ्यो

अघ-ओघ *प्रेमाका.* पापसमूह [सं.]

अघ-ओघ-दहन *दशस्कं(१).* पापसमूहने बाळे तेवुं [सं.]

अघगम *सिंहा(शा).* आगम ने निगम साथे गणावेलो एक शास्त्रप्रकार, [*अघमर्षण मंत्र] (सं.अघ+गम=पापविनाशक)

अघमर्षण *कादं(शा).* पापनो नाश करनार मंत्र के मंत्रविधि (सं.)

अघराज *नरका.* अग्राह्य, ग्रहण न करी शकाय एटलोबधो, अगाध; जुओ अगाज

अघाट (उभो अघाट) **नंदब.* [चारे आघाट – सीमा वच्चे ऊभो रहीने, जाहेरमां, खुल्लेखुल्लुं]; जुओ आघाट

अघाती *आनंस्त.* अघाती कर्म, जीवना मूळ गुणोनो घात नथी करतुं ते कर्म [जै.]

अघोरा *ऐतिका.* जे घोर नथी होतुं ते, [सौम्य, सुंदर]; जुओ उअचट

***अचट (*उअचट)** **चारफा.* [गर्व] [सं.उच्चटा]; जुओ उअचट

अचरत *मदमो.* अचरज

अचरिज, अचरिज्ज, अचरीज *आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. देवरा. नरका. प्रद्युचु. प्राचीफा. विक्ररा.* अचरज, आश्चर्य

अचल जुओ अवल

अचव्युं *अखाका. अखाछ. अखेगी.* **नरका.* न कहेलुं, अवर्णनीय; *अखाछ.* ब्रह्म

अचंभ *आरारा.* आश्चर्यकारक, नवतर (सं.अत्यद्भुत); जुओ असंभि

अचंभउ, अचंभू *ऋषिरा. प्रद्युचु. प्राचीसं.* अचंबो (सं.अत्यद्भुत)

अचालनिउ *षडाबा.* अडग, दृढ (सं. अचालनीय)

अचाले *नंदब.* अनिवार्यपणे, [न चालतां]

अचित्त *कादं(ध्रु).* बावरुं

अचिरज, अचिरत, अचीरीज *आनंस्त. प्राचीफा. वेताप. सिंहा(शा).* अचरज, आश्चर्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अचिरेण *शृंगामं.* तरत (सं.)

अचिंतु *गुर्जरा.* अणचिंतव्युं, ओचिंतुं (सं. अचिंतित)

अचीरीज जुओ अचिरज

अचींतविउ *गुर्जरा.* अणचिंतव्युं

अचोरिउं *षडाबा.* वणचोरेलुं

अज्जभु *गुर्जरा.* अत्यंत विस्मयकारक (सं. अत्यद्भुत)

अज्जब्भुय *प्राचीसं.* अति आश्चर्यकारक (सं. अत्यद्भुत)

अच्छइ, अछइ, अछि *आरारा. उक्तिर. उषाह. गुर्जरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रबोप्र. प्राचीफा. प्राचीसं. विराप. हरिवि.* छे (सं.आक्षेति); *प्राचीसं.* रहे

***अच्छक (उच्छक)** *जिनरा.* उत्सुक

अच्छय *तेरका.* आछुं, [सुंदर] (सं.अच्छ)

अच्छर, अच्छरा, अच्छरी *तेरका. प्राचीसं.* अप्सरा; जुओ कइच्छरी

अच्छरक *हम्मीप्र.* आज्ञाभंग

अच्छरा जुओ अच्छर

अच्छरायण **चारफा.* [नृत्य]; जुओ अछरायण

अच्यंत *चित्तसं.* अचिंत्य, घणुं

अच्छरी जुओ अच्छर

अच्छेरा *षष्टिप्र.* अचरज (सं.आश्चर्य)

अच्यंत *चित्तसं.* अचिंत्य, घणुं

अछइ जुओ अच्छइ

अछतउ *उक्तिर.* होतो, रहेतो

अछतो *अखाका. अखाछ. जिनरा. प्रबोप्र.* जेनुं अस्तित्व नथी तेवो, असत्, मिथ्या

अछरायण *प्राचीफा.* नृत्य (सं. अप्सरायन ?); जुओ अच्छरायण

अछं *आरारा.* छुं

अछाडवुं *दशस्कं(१).* पछाडवुं (दे.अच्छोड)

अछाणिइ *षडाबा.* गाळया वगरनुं (सं.क्षण् परथी); जुओ अणछाणियां

अछि जुओ अच्छइ

अछिवउं *उक्तिर.* होवुं, रहेवुं

अछीउं *उक्तिर.* रखातुं

अछूतउ *उक्तिर.* स्पर्शदोषना अभाववाळुं, निर्मल (सं.अच्छुप्त)

अछेद *आनंस्त.* अछेद्य

अछेप *जिनरा.* अस्पृश्य

अछेरुं *षष्टिप्र.* अचरज[भरी घटना], [अपूर्व घटना] (सं.आश्चर्य)

अछेह *आरारा.* छेडा वगरनुं, पार वगरनुं, खूब [सं.अ+छेद]

अछोपादि **षडाबा.* [अस्पृश्यता वगेरे]

अज *अखाका. अखेगी. नरका.* ब्रह्मा [सं.]; *प्रेमाका.* बकरुं [सं.]

अज (अजउभां) *सिंहा(शा).* ?, [*अत्यारे ज, ऊभाऊभ]

अजइ *वीसरा.* हजी, हवे (सं.अद्यैव)

अजमाण *नरका.* अजमो [हिं.अजवाइन]

अजमाल **अखाका. *अखाछ. चित्तसं.* ?, [*उजमाळ, *उज्ज्वल, *प्रकाशमान, *प्रकाशित]

अजयणाइ *उपबा.* [जीवरक्षानी] जतन – संभाळ विना

अजयणावंत *षष्टिप्र.* जयणा विनाना, [हिंसा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टाळवानी काळजी विनाना]

अजर *अभिऊ. कस्तुवा. चंद्रवा. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा).* ढील, विलंब (अ.अज्र)

अजर *अखाका. प्रेमाका.* जरा – वृद्धत्व विनानुं, जीर्ण न थाय तेवुं; *नरका.* पच्युं नथी एवुं, [टक्युं नथी एवुं, गुमादेलुं, नष्ट] [सं.]

अजरण-जरण *अखाका.* अजीर्णता अने जीर्णता

अजस *उपबा. गुर्जरा.* अपयश

अजस्र *नरका.* सतत, [निरंतर] [सं.]

अजंण *मदमो.* अजंपो, [अस्वस्थता, वलोवाट] [अ.अज्न]

अजा *अखाका. अखेगी. प्रेमाका.* माया [सं.]; *प्रेमाका.* माया, [जोगमाया]; बकरी [सं.]

अजाचिक *आरारा.* अयाचक, अजाचक, न मागवुं पडे तेवा

अजाणतो *उपबा. विराप. षडाबा.* नहीं जाणतो, अजाण (सं.अ+ज्ञान परथी)

अजाणि *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अज्ञान, मूर्ख (स्त्री)

अजाणिवउं *उपबा. षष्टिप्र.* [न जाणवुं ते], अज्ञान

अजापति *अखाका. अखेगी.* मायानो पति, ब्रह्म [सं.]

अजारो *नंदब.* इजारो

अजिउ *तेरका.* हजी (सं.अद्यापि+खलु); जुओ अज्जिउ

अजिय *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* हजी [सं.अद्यापि]

अजिर *कादं(शा).* आंगणुं (सं.)

अजी *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा.* हजी (सं.अद्यापि)

अजीउ *गुर्जरा.* हजी (सं.अद्यापि); जुओ अज्जिउ

अजीय *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* हजीये, हजी पण (सं.अद्यापि)

अजुआली *शृंगामं.* अजवाळी, [शुक्ल पक्षनी]; *ऐतिका.* उज्ज्वल [करी]

अजूआलउं *ऋषिरा. षष्टिप्र.* अजवाळुं (सं.उज्ज्वालयितम्) (सं.उज्ज्वालकम्)

अजूआले *लावल.* अजवाळे, प्रकाशित करे

अजूठुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अजीठुं, एठुं [*सं.आजुष्ट]

अजूयालउं *विराप.* *अजवाळुं, *गुर्जरा.* [उजाळायेलुं] (सं.उज्ज्वालयितम्)

अजोगी *जिनरा.* अयोगी [केवली], सर्वव्यापाररहित केवल – शुद्ध ज्ञाननी आत्मावस्था] [जै.]

अज्ज *तेरका.* आर्य [आदरवाचक]

अज्ज-कल्लि *प्राचीसं.* आजकालमां, [थोडा समयमां] [सं.अद्य+कल्य]

अज्जवसाण *जिनरा.* अध्यवसाय, [आत्मानो] परिणामविशेष, [भावोत्कर्ष] [जै.]

अज्जवि *ऐतिका.* आज पण [सं.अद्यापि]

अज्जा *नेमिछं.* आर्या, साध्वीओ

अज्जिउ, अज्जिय, अजिउ, अजीय, अजीउ *प्राचीसं.* हजु, हजी, [सं.अद्यापि]

अज्जीउ *गुर्जरा.* हजी (सं.अद्यापि)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्ञो *प्रबोप्र.* महानुभाव (सं.आर्यः)

अटकण *अखाका.* अंतराय; *नरका.* न बोली शकाय एवुं, [आडुंतेडुं, मनफावतुं (वचन)]

अटकली *आरारा.* अनुमान करी, विचारी, नक्की करी

अटकवुं *दशस्कं(१).* युद्ध करवा बाथ भीडवी; *प्रेमाका.* अटकी जवुं, चोंटवुं, लुब्ध बनवुं

अटकाणउ *जिनरा.* अटकी रह्यो, [थंभी गयो]

अटणाता *प्राचीका.* अथडाता (सं.अट्)

अटाट *अखाका. अखाछ.* नकामुं, फोगट; नकामी प्रवृत्ति

अटारुं, अटारुं *नरप(द). नरका. प्रेमप. प्राचीका. शृंगामं.* वांकुं, अटकचाळुं [*सं.अट्ट]

अटाल, अटालि, अटाळी *दशस्कं(२). प्राचीफा. प्रेमाका. रूपच.* अटारी, बारी, झरूखो (सं.अट्टालिका)

अट्ठ *तेरका. नेमिछं.* आठ (सं.अष्ट)

अट्ठम तप *जिनरा.* एक साथे त्रण दिवसना उपवास [सं.अष्टम+तपस्]

अट्ठमि, अट्ठमी *गुर्जरा. नेमिछं.* आठम (सं.अष्टमी)

अट्ठाणऊ सउ *षडाबा.* एकसो अट्ठाणुं (सं.अष्टानवति+शत)

अट्ठावय *गुर्जरा. तेरका.* अष्टापद [पर्वत]

अट्ठेतालीस *षडाबा.* अडतालीस (सं.अष्टचत्वारिंशत्)

अट्ठोतरु सउ *गुर्जरा. षडाबा.* एकसो आठ (सं.अष्टोत्तरशत)

अट्ठोत्तरु सहस्सु *षडाबा.* एक हजार आठ (सं.अष्टोत्तर-सहस्र)

अठ *आरारा. गुर्जरा. तेरका.* आठ (सं.अष्ट)

अठतालीस *उक्तिर.* अडतालीस (सं.अष्टचत्वारिंशत्)

अठत्रीस *उक्तिर.* आडत्रीस (सं.अष्टत्रिंशत्)

अठम *आरारा.* सळंग त्रण दिवसना उपवास

अठमि, अठ्ठमि *आरारा.* आठमनो (सं. अष्टमी)

अठसट्ठि *षडाबा.* अडसठ (सं.अष्टाषष्टिः)

अठहत्तरि *उक्तिर.* अठ्योतेर (सं.अष्टसप्ततिः)

अठंगी *प्रेमाका.* अढेली, टेको दई

अठार *उक्तिर.* अढार (सं.अष्टादश)

अठाही *उक्तिर.* अठाई, आठ दिवसनुं तप [सं.अष्टाह्निका]

अठितालीस *षडाबा.* अडतालीस (सं.अष्टाचत्वारिंशत्)

अठील *षडाबा.* बेडी

अठ्ठमि जुओ अठमि

अठ्ठसट्ठा *विमप्र.* अडसठ [सं.अष्टाषष्टिः]

अठ्ठोतेर सो *प्रेमाका.* एकसो ने आठ [सं. अष्टोत्तरशत]

अठ्ठोत्तर सो *आनंस्त.* एकसो ने आठ

अड *ऐतिका. जिनरा. प्राचीसं.* अष्ट, आठ

अडकदडक *प्रेमाका.* दडी जवाय – गबडी पडाय तेवी

***अडगनिया [अउगनिया]** *ऐतिका.* काननुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक आभूषण

अडनउय सयं *षडाबा.* एकसो अठाणुं (सं. अष्टानवतिशत)

अडयाला *षडाबा.* अडतालीस [सं.अष्ट-चत्वारिंशत्]

अडवडे *उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका.* डगडगतो पडी जाय, लथडियां खाय, गोथां खाय (दे.)

अडवण *प्रेमाका.* जोडा वगरना, उघाडा (सं.अनुपानह); जुओ अणवण

अडवन *जिनरा.* अठ्ठावन [सं.अटानवति]

अडवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अथडामणमां आववुं, लडवुं; *चंद्रवा. सिंहा(शा).* वळगवुं, चोंटवुं; *चंद्रवा. नरका. मदमो.* अटकवुं, अटकीने रहेवुं, थया विना रहेवुं; *मदमो. रूस्तस. लावल.* पहोंचवुं, थवुं; *प्रेमाका.* अटकाववुं; *मदमो.* नडवुं

अडसीला * *नेमिछं.* [हठीला] [रा.अडसाला]

अडागर *अंबरा. प्राचीफा.* नागरवेलनां पान

अडागर पान *वसंवि(ब्रा).* नागरवेलनां पान

अडाणा *विमप्र.* [गीरवे लीधेला], भाडेथी

अडाया *लावल.* लगाड्या

अडीअल *मदमो.* छंदविशेष

अडी बेसवुं *प्रेमाका.* हठ, जीद करवी; जुओ हडी

अडुयो *वेताप.* अडवो, [आभूषण वगरनो]

अडुयो-पडुयो *वेताप.* अडवो-पडवो, साव अडवो, [आभूषण वगरनो]

अडूई *विमप्र.* अडवे (खाली), [आभूषण वगरना]

अडे *चित्तसं.* नडे

अडोली *जिनरा.* आभरणहीन, [अडवी]

अड्डिय *प्राचीसं.* आडी [*सं.अड्ड]

अड्युं राखे *प्रेमाका.* विनानुं राखे, अटकावी राखे

अड्युं रहेतुं *चित्तसं.* अटकी रहे छे

अढाई *षडाबा.* अढी (सं.अर्धत्रियः)

अढार भार *आरारा. प्रेमाका.* अढार जातनी, बधी जातनी (वनस्पति)

अढारोतरु सउ *षडाबा.* एकसो अढार [सं.अष्टोत्तरशत]

अण **जिनरा.* [अनंतानुबंधी, अनंतकाळ सुधी आत्माने संसारमां भ्रमण करावनार] [प्रा.] [जै.]

अणआधारिइं *उपबा.* आधार – आश्रय – मदद विना

अणआलोई *ऋषिरा.* आलोचना विना, गुरु समक्ष दोषनो स्वीकार कर्या विना

अणआलोची **षडाबा.* [विचार्या विना] (सं.आलोच्)

अणऊगिइ *उपबा.* वणऊग्ये, ऊग्या पहेलां

अणऊठीं *षडाबा.* ऊठ्या विना, बरखास्त थया विना

अणकरतउ *उपबा. वाग्भबा.* नहीं करतो

अणकहिउं *उपबा. गुर्जरा.* वणकह्युं

अणकीधइ *उपबा.* वणकर्ये, कर्या विना

अणख *वीसरा.*रोष [दे.अणक्ख; सं.अनीक्षा]

अणखलिउ *उपबा.* न चूके एवो (सं.अन्+स्खलित)

अणखाइय *प्राचीसं.* अप्रसन्न, रुष्ट

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणखि, अणखी *नरका. नेमिछं.* क्रोध, रोष, अणगमो (दे.अणक्ख) [सं. अनीक्षा]

अणखूटि *अंगवि.* आयुष्य खूटे ते पहेलां

अणगमी *गुर्जरा.* न गमी (अण+सं.गम्यते)

अणगल *अभिऊ.* पुष्कळ (सं.अनर्गल)

अणगार *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. देवरा.* घर विनाना, परिव्राजक, साधु (सं. अनागार)

अणगाल **अभिऊ.* [अकाल, खराब समय] [प्रा.]

अणगुक *उक्तिर.* अणगो, रांध्या विनानुं भोजन(सं.अनग्निपक्वः)

अणघातिइ *षडाबा.* नाख्या विना

अणचय्युं *अखाका. अखाछ. अखेगी.* न कहेलुं, अवर्णनीय, ब्रह्म

अणछतुं *अखाका. अखाछ. अखेगी. चित्तसं.* जेनुं अस्तित्व नथी तेवुं, असत्, मिथ्या; *उपबा.* न होय तेवुं

अणछाणियां *षडाबा.* गाळ्या विनानां, जुओ अछाणिइ

अणछांडीइं *उपबा.* वणछांड्ये, छांड्या विना

अणछेदिउं *उपबा.* वणछेद्युं, छेद्या विनानुं

अणजस *उपबा.* अपयश

अणजाणवुं *उपबा. गुर्जरा.* न जाणवुं

अणझूझंतउ *गुर्जरा.* युद्ध न करतो

अणडही *गुर्जरा.* गाय (सं.अनडुही)

अणतेडिउं *गुर्जरा.* वणतेड्युं, वणनोतर्युं

अणतोछडकं *उपबा.* तोछडुं नहीं तेवुं (सं. अन्+तुच्छ)

अणत्थिइं *नेमिछं.* अनर्थथी, [अनिष्टाथी, बुराईथी]

अणदीधउं *उपबा. षडाबा.* वणदीधुं, न दीधेलुं

अणदेवउं *उपबा.* न देवा जेवुं, [न देवुं ते]

अणनमतउ *उपबा.* नहीं नमतो

अणपडिहिं जि *षडाबा.* न पड्युं [न नाख्युं] होय त्यारे ज

अण परी *गुर्जरा.* आ रीते

अणपरीछिउं *उपबा.* [वणपारख्युं], बराबर न जाणेलुं [सं.अन्+परीक्ष्]

अणपलोट *प्रेमाका.* पलोट्या विनाना

अणपामिउ *उपबा.* वणपाम्युं, नहीं पामेलुं

अणपूगइ *षडाबा.* आवी पहोंच्या वगर, [(प्रहर) चड्या वगर, थया वगर]

अणपूछिउ *उपबा. षडाबा.* वणपूछ्युं

अणपूंजतउ *उपबा.* न वाळनारो, साफसूफ न करनारो

अणप्रीछिइं, अणप्रीछविइं *नेमिछं. लावल.* प्रीछ्या के जाण्या वगर

अणबीह *जिनरा.* निर्भय

अणबीहतउ *गुर्जरा. विराप.* न बीतो, निर्भय (अण+सं.बिभेति)

अणभिडिउ *ऐतिका.* सामे नहीं आवेलो, मुकाबलो कर्या विना

अणभोगवता *उपबा.* नहीं भोगवता

अणमणतां *नरका.* मन वगर [उदास – खिन्न – अस्वस्थ थतां]

अणमणुं *नरका. प्राचीफा. मोसाच.* मन विनानुं, उदास (सं.अन्+मनस्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणमवी *अखाछ.* अणमापी, अमित

अणमारे *गुर्जरा. विराप.* वणमार्ये

अणमिलतुं *कादं(ध्रु).* अजुगतुं; *उपबा.* अणसरखुं, [मळतुं न आवतुं]

अणमूउ *गुर्जरा.* वणमूउं, न मूएलुं

अणरमिवउं *उपबा.* आनंद न पडवो ते

अणरस *प्राचीफा.* अरसिक (सं.अन्+रस)

अणरहिवउं *उपबा.* न रहेवुं ते

अणरागिय *गुर्जरा.* अनुरागी

अणलहतउ *षष्टिप्र.* नहीं मेळवतो (सं.अन्+लभ्)

अणलंग *अखेगी.* अणलिंगी, [ब्रह्मज्ञानी]

अणलागइ *उपबा.* न लागेलुं होतां, लाग्या विना

अणलाजमणउं *उपबा.* लज्जा नहीं करावनारुं

अणलाधउ *षष्टिप्र.* अणलाध्यो, [वण-मेळव्यो]

अणलिंग *अखेगी.* लिंग वगरनुं, ब्रह्म *चित्तसं.* अणलिंगी, ज्ञान, ब्रह्मस्वरूप

अणलिंगी *अखाका.* देहभावथी मुक्त, ब्रह्मज्ञानी

अणलेखे *प्रेमाका.* हिसाब वगरनो, घणो

अणलेहेतुं *प्राचीका. मोसाच.* अणसमजु, बाळकबुद्धि

अणवट *अभिऊ. दशस्कं(१). नरका. प्राचीफा. प्रेमाका.* स्त्रीना पगना अंगूठानुं एक घरेणुं

अणवण *वेताप. सिंहा(शा).* अडवाणुं, [पगरखां विनानुं] (सं.अन्+उपानह्)

अणवरी *नरका.* वर्या विनानी, अपरिणीत

अणवाणे *चंद्रवा.* अडवाणे, खुल्ले, जोडा वगर [सं.अन्+उपानह्]

अणवांछतउ *उपबा.* न इच्छतो

अणविमासिउं *गुर्जरा.* वणविचार्युं (अण+सं.विमर्शितम्)

अणविहरतां *षडाबा.* विहार न करतां

अणवूंठिं *शृंगामं.* वरस्या वगर

अणसण *आरारा. ऋषिरा. नलरा. प्रद्युचु. षडाबा.* अनशन, उपवास

अणसणीआ *उपबा.* उपवासी

अणसत्र *नलरा.* आहारत्याग, उपवास (सं. अनशन)

अणसरइ, अणिसरइ *नलरा. प्रबोप्र.* पाछळ जाय; *अभिऊ. प्रबोप्र.* अनुसरे, अनुयायी थाय, [-नुं पालन करे]; *ऋषिरा.* अनुसरे, [-नी प्रमाणे करे]; *नलाख्या.* अनुसरे, [-नी दिशा ले]

अणसंदहितु *शृंगामं.* अश्रद्धावान, अंदेशो करतो

अणसार, अणसारो *दशस्कं(१). प्रेमाका.* इशारो, निशानी [सं.अनुसार]

अणसीझतइ *उपबा.* असिद्ध थतां, पार न पडतां

अणहारउ *उक्तिर.* अनुकरणरूप (सं. अनुहारः); जुओ अणुहार

अणहितूआ *उपबा.* अहित करनारा

अणहुति **ऐतिरा.* [न होवा छतां]

अणहुंणी *आरारा.* न थनार

अणहूतु *अखेगी.* जे थयुं नथी ते

अणहूंतुं *षडाबा.* नथी तेवुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणहूंतीइ *उपबा.* न होतां

अणंगु *गुर्जरा. वसंफा(ल).* अनंग, कामदेव

अणंत *गुर्जरा.* अनंत

अणंतकाई **गुर्जरा.* [जेमां अनंत जीवो छे तेवी (वनस्पति)] (सं.अनंतकायिक)

अणंतरु *तेरका.* पछी (सं.अनंतरम्)

अणाथ, अणाथि, अणाथ्य *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. *ललिरा. सिंहा(शा).* दारिद्र्य, गरीबी; *आरारा. नंदब.* दरिद्र, गरीब (सं.अन्+अस्ति)

अणादि *गुर्जरा. अनादि*

अणावण *आरारा.* अणाववुं ते, तेडाववुं ते

अणाह *आरारा. उषाह. प्राचीका.* अनाथ, रंक, गरीबडुं, दीन; *गुर्जरा. विराप.* अनाथ, असहाय

अणिअ आखइ *लावल.* आखी अणीए, अणीशुद्ध, [अखंड] [सं.अनीक+अक्षत]; जुओ अणीय आंखइ

अणिख **अभिऊ.* [*सुंदर, *अद्भुत, *भयानक, *तेजस्वी] [अ.अनीक; रा. अणीख]

अणि परि *गुर्जरा.* आ रीते

अणिमा *शृंगामं.* सूक्ष्मता, [पातळापणुं] (सं.)

अणिसरइ जुओ अणसरइ

अणीइं *अभिऊ.* सेनामां (सं.अनीक)

***अणीय आंखइ [अणीय आखइ]** **लावल.* [अखंडपणे, संपूर्णपणे] [सं.अनीक+अक्षत]; जुओ अणिअ आखइ

अणीसर **विक्ररा.* [आरपार]

अणु *प्राचीसं.* अने [सं.अन्यद्]

अणुआंणे *वेताप.* अडवाणे, [जोडा वगरने, खुल्ले] [सं.अन्+उपानह्]

अणुक्कमि *ऐतिका.* अनुक्रमे, [एक पछी एक]

अणुजणावइ *उपबा.* अनुज्ञा – रजा आपे

अणुठाणु *षडाबा.* अनुष्ठान

अणुत्तरि *गुर्जरा.* अनुत्तर, जैनोना पांच देवलोकमांनुं एक

अणुदिण *गुर्जरा.* दररोज (सं.अनुदिन)

अणुपुव्वि *जिनरा.* आनुपूर्वी, [नामकर्मनो एक भेद, वर्तमान शरीर मूक्या पछी एने ऊपजवाना स्थळ तरफ खेंची जनार कर्म] [जै.]

अणुरत्तउ *प्राचीफा.* अनुरक्त, आसक्त

अणुराउ *नलरा.* अनुराग, प्रेम

अणुरागु *तेरका.* अनुराग

अणुवाइ *षडाबा.* अभ्यास करनार (सं. अनुवाचिन्)

अणुवाणो *मदमो.* अडवाणो [पगरखां विनानो] (सं.अनुपानह्)

अणुसरइ *आरारा.* अनुपालन करे; *ऐतिका. गुर्जरा.* अनुसरण करे, [अनुपालन करे, सेवे]

***अणुहण (अणुहाण)** *विमप्र.* अडवाणुं, उघाडुं, [पगरखां विनानुं] [सं. अनुपानह्)

अणुहर- *तेरका.* अनुसरवुं (सं.अनु+हर्)

अणुहाण, अणुहाणुं *प्राचीका. लावल. हरिख्या.* अडवाणुं, उघाडुं, पगरखां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विनानुं (सं.अनुपानह्); जुओ अणुहण

अणुहार, अणुहारि, अणुंहार *आरारा. जिनरा. देवरा.* अनुकरणरूप, -ना जेवां; जुओ अनुहार

अणूरउं *आरारा. नलरा. विमप्र.* न्यून, ओछुं, अधूरुं (सं.अन्+पूर्); **नेमिछं. गुर्जरा.* [ओछपवाळुं], वणपुरायेली आशावाळुं, असंतुष्ट

अणूरति *आरारा.* अधूरापणुं, ओछापणुं, [न्यूनता, खोट] (अण+सं.पूर्ति)

अणूवांणे *देवरा.* अडवाणे, जोडा विना (सं.अनुपानह्)

अणूहाण *नलरा.* पगे जोडा पहेर्या विना, अडवाणा (सं.अनुपानह्)

अणूहार, अणूंहार *देवरा.* -ना जेवा (सं. अनुहार)

अणूंअर *नलरा.* अणवर (सं.अनुवर)

अणोसरुं *उषाह.* उदास

अत *चतुचा.* अति

अत *षडाबा.* *अहीं, [*आ बाबतमां] (सं. अत्र), [*कदाच, *संभवतः] [सं.उत]

अतयान *शृंगामं.* अतिजाण, समजु

अतलिबळ, अतलीबल, अतुलीबल *नरका. मदमो. प्रेमाका. सिंहा(शा).* अतुलित-बल, अतुल – अपार बळवाळो

अतंतर *देवरा.* बेकाबू, पार विनानो (सं. अतंत्र)

अतांड *प्रेमाका.* खूब ऊंचेथी, जेमतेम, [खुल्लेखुल्लुं] [*सं.उत्तान]

अतिकाळ *प्रेमाका.* मोडुं

अतिकुंअल, अतिकूंअलि, अतिकूंवली *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* अति-कोमळ

अतिक्रम्यु *आरारा.* वटाव्युं, छोड्युं

अतिक्रमावइ *षडाबा.* वितावे, पसार करे

अतिखूत *ऋषिरा.* अत्यंत खूंपी गयेलो

अतिघण *अभिऊ. गुर्जरा.* अतिघणुं (सं. अतिघन)

अतिचरिउं *षडाबा.* भंग कर्यो (सं.अतिचर्)

अतिचार *उपबा.* [व्रत के नियमनो] भंग (सं.)

अतिजाण *गुर्जरा.* घणुं जाणनार

अतिधज **विक्ररा.* [भारे मोटो, भव्य] (सं.अतिध्वज)

अतिलील *ऋषिरा.* अतिसुंदर

अतिवंकुड *वसंवि(ब्रा).* घणी वांकी (सं. अतिवक्र)

अतिविस *उक्तिर.* अतिवख, एक वनौषधि (सं.अतिविषा)

अतिशि, अतिसि *नलाख्या.* घणुं, खूब (सं.अतिशय)

अतिशे *चित्तसं.* अतिशय

अतिसउ, अतिसय *षडाबा.* अतिशय वधारे प्रमाण; [चमत्कारिक] प्रभाव; *देवरा.* महिमा, प्रभाव [प्रभावक चमत्कारिक लक्षण] (सं.अतिशय); जुओ यतिसय

अतिसयवंत *नलरा.* महिमावंत, प्रभावशाळी

अतिसय ज्ञानी *आरारा.* विशिष्ट ज्ञान धरावता, खास करीने अन्य काळनुं ज्ञान धरावता ज्ञानी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिसंता **ऋषिरा.* [विश्रांत, अत्यंत आराम पामेल] (सं.अतिश्रान्ता)

अतिसंमदा *ऋषिरा.* घणो हर्ष [सं.अति-संमुदा]

अतिसि जुओ अतिशि

अतिसी *षडाबा.* अळसी (सं.अतसी)

अतिहि, अतिहिं *उपबा. गुर्जरा. विराप.* खूब ज

अतीत *अखाका.* पर थयेलो, अलिप्त [सं.]

अतीत *अखाछ. प्रेमाका.* अतिथि, भिक्षुक, साधु-संन्यासी

अतुली *आरारा.* अतुल्य, अमाप

अतुलीबल जुओ अतलीबल

अतोल *अखाका. कस्तुवा. प्रेमाका.* अतुल, अतुल्य

अत्तागम *आनंस्त.* आत्मागम, [भगवान महावीर पासेथी प्राप्त थयेलो सिद्धांत] [जै.]

अत्थ *जिनरा.* अर्थ, [तात्पर्य]

अत्थत्थ *ऐतिका.* अर्थ-अर्थ, [विभिन्न अर्थ]

अत्थमण *शृंगामं.* आथमवुं ते (सं.अस्तमन)

अत्थि *ऐतिका.* छे (सं.अस्ति)

अत्य *चंद्रवा. चित्तसं. प्रेमप. मदमो.* अति

अत्यारताइ *पंचवा.* अत्यार सुधी (सं.अत्र+वार)

अत्र-अमुत्र *ऋषिरा.* आ लोकमां अने परलोकमां [सं.]

अत्रिसुत *प्रेमाका.* सूर्य [सं.]

अथ किंवा *दशस्कं(२).* तो शी गणना ? [सं.]

अथगी *ऋषिरा.* अटक्या विना, [थाक्या विना] [दे.अत्थक्क]

अथा *अखाछ.* अथाग, [अत्यंत] [सं. अस्थाघ]

अथाह *उक्तिर.* अगाध, ऊंडुं (सं.अस्थाघ)

अथिर *जिनरा.* अस्थिर, [नामकर्मनो एक भेद, जेना उदयथी कान, पांपण, जीभ वगेरे अवयवो चपळ होय] [सं.]

अथिर, अथीर *अभिऊ. ऐतिरा. देवरा.* अस्थिर

अथिरता *आनंस्त.* अस्थिरता

अथीर जुओ अथिर

अदपडियाळी *प्रेमाका.* अडधी मींचेली; जुओ अधपडियाळी

अदबद, अदबदा *अखाका. अखाछ. अखेगी. चित्तसं. नरका.* अद्‌भुत, अलौकिक, परम तत्त्व

अदबुद, अदभुद *प्राचीफा. प्राचीसं.* आश्चर्य-जनक, अद्‌भुत

अदभूय *गुर्जरा.* अद्‌भुत

अदंसण *शृंगामं.* अदर्शन, [न देखावुं ते]

अदाप *दशस्कं(१). प्रेमाका.* दुःख, वेदना, त्रास

अदिकेरुं रूस्तस. अदकेरुं, अधिकतर

अदीण *आरारा.* अदीन, गौरववाळो

अदृष्टायका *कृष्णच.* अधिष्ठात्री

अदेखता *षडाबा.* नहीं देखता

अदेखवा *प्रेमाका.* अदेखा, ईर्षाळु

अद्देसउ *उक्तिर.* उपदेशक, मार्गदर्शक (सं. उद्देशक)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधक्कु *मदमो.* अधिक

अद्याप *अखाका.* अद्यापि, हजु सुधी

अद्यापिक *प्रेमाका.* अद्यापि, हजु सुधी

अद्रि *चित्तसं.* पर्वत

अद्वीत *दशस्कं(२).* अद्वैत, अनन्य

अधकी *चतुचा.* वधारे [सं.अधिक]

अधकेरडी **मदमो.* [अदकेरी, घणीबधी] (सं.अधिकतर+डी)

अधकेरु, अधिकेरउं *उपबा. प्रबोप्र. षडाबा.* अदकेरुं, वधारे (सं.अधिकतर)

अधन्न *आरारा.* अधन्य, पापी

अधपडियाळी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अडधी बीडेली; जुओ अदपडियाळी

अधर *अखाका-शु.* धारण न करी शकाय एवुं; ०*अखाका-शु.* निरालंब; *चित्तसं.* अध्धर, ऊंचे

अधर *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* नीचुं

अधर (अधर किया) *वसंवि.* नीचे (उतारी पाड्यां)

अधरइ *गुर्जरा.* धारण करे छे (सं.आधरति)

अधरवटे *प्रेमाका.* ऊर्ध्व वाटे, [स्वर्गे]

अधरास **नरका. *नरप.* [अधरासव, अधरामृत]

अधलउं, अधलूं *उपबा. नलरा.* अर्धुं

अधवधरा, अधिवधिरा *आरारा. नरका.* अधकचरा, ओछी समजवाळा

अधवारुं **अखाका.* [भागीदारी, सहियारापणुं, समकक्षता] [सं.अर्ध+वारक]

अधविचि *उपबा.* अधवच्चे [सं.अर्ध+ *व्यच्च]

अधसस्ता *प्रेमाका.* अधमूआ [सं.अर्ध+श्वस्]

अधार *वीसरा.* आधार

अधाशण *प्रद्युचु.* अर्धासन, उभडक बेसवुं ते

अधांध *नरप(द).* *पुष्कळ

अधिकरी *उक्तिर.* अधिष्ठित करीने, -मां रहीने

अधिकार *उपबा. ऐतिरा. नलरा. लावल.* वृत्तान्त, विषय, विभाग (सं.)

अधिकेरउं जुओ अधकेरुं

अधिरातिइ *आरारा.* अधराते, अर्धी रात्रे

अधिवधिरा जुओ अधवधरा

अधिवासियां *षडाबा.* [धूप आपी अर्च्या] (सं.अधिवासित)

अधिष्टत *आरारा.* अधिष्ठित, -मां रहेलो

अधीकार *कामा(त्रि.) कामा(शा).* अधिक संख्यामां

अधुर *कामा(त्रि). चतुरा. नरका. मदमो.* अधर, नीचलो होठ, होठ

अधेन *देवरा.* अधन्य, [खराब] (कार्य)

अधोपचार *अखाका.* अधकचरा उपचार के उपाय

अध्यारु *नलरा. प्रेमाका. सिंहा(शा).* अध्यापक, शिक्षक, गुरु (सं.अध्वर्यु)

अध्यास *चित्तसं.* वस्तुनुं अन्य रूपे भासवुं ते

अन *चतुचा.* अन्य

अन *वीसरा.* अन्न

अनइरुं *वाग्भबा.* अनेरुं, बीजुं [सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्यतर]

अनकुळ **प्रेमाका.* [प्रतिकूळ]

अनख *नरप(द).* ईर्षा, [रोष]; जुओ अणखी

अनडां *ऐतिका.* अनम्र, [उद्दंड, निर्बंध]

अनडुही *विराप.* गायो (सं.)

अनपत्य *कादं(शा).* अपत्य – संतान विनानुं (सं.)

अनपुरांण *सिंहा(शा).* अन्नपूर्णा

अनभे *अखाका. प्रेमाका.* अभय, निर्भयता

अ-नमणा *प्रेमाका.* असुंदर, न गमे तेवा

अनमान *आरारा.* अपमान

अनमिष *आरारा.* अनिमेष, अपलक

अनमी *कस्तुवा. प्रेमाका.* अणनम

***अनय** *गुर्जरा.* अने [सं.अन्य]

अनरत *सिंहा(शा).* अनृत, असत्य

अनल *अखाका. अखाछ.* अगनपंखी, एक पंखी, जे पोतानी मेळे बळी मरे छे अने तेनी भस्ममांथी बीजुं अनलपंखी उत्पन्न थाय छे

अनहात **उषाह.* [असंभव – वधारे पडती वात] [*रा.अणहोतो; *हिं.अनहोता]

अनंतर जुओ घनंतर

अनंतरागम *आनंस्त.* भगवाने पोताना शिष्यने सीधुं शीखवेलुं शास्त्र [जै.]

अनाघात प्रेमाका. *ताजुं, *सबळ

अनाड *उक्तिर.* जार, उपपति (*सं.अनाट) [दे.अणाड]

अनाणी *प्रांचीका.* अज्ञानी

अनादेय जुओ नादेय

अनाम *नलरा. हम्मीप्र.* इनाम, बक्षिस

अनामिक *हरिख्या.* चंडाळ (सं.अनामक)

अनारिज *गुर्जरा.* अनार्य

अनाधिष्णि *कृष्णच.* अनाधृष्टि [एक नाम]

अनाशातना *आनंस्त.* आशातना न करवी ते, विनय

अनाशंसा *आनंस्त.* निष्काम भाव, [कामनाथी अलिप्तपणुं] [सं.]

अनाहूत *प्रेमाका.* पूछ्या विनानुं, [वण-बोलाव्युं] [सं.]

अनिआउ **उषाह.* [दोष]; जुओ अन्या, अन्याय

अनिक *अभिऊ.* अनेक

अनिमिष *ऐतिरा.* [जेने आंखनो पलकारो नथी तेवा], देव [सं.]

अनिमेषी *गुर्जरा. विराप.* जेनी आंखमां पलकारा नथी थता ते, देवी

अनियट *जिनरा.* अनिवृत्ति, [जीवोनी विशुद्धिमां तारतम्य न होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

अनिर्वाची *नरका.* वर्णवी न शकाय एवो, [अनिर्वचनीय]

अनिवड **आरारा. *जिनरा.* [निःस्नेही, अ रागी] [सं.अ+निकट/निबिड]

अनिवार *आरारा.* अनिवारित, अपार; *नेमिछं.* *सतत, [खूब]

अनी *गुर्जरा.* अने (सं.अन्य परथी)

अनीठ, अनीठउं **अखाछ. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). शृंगामं.* अनंत, अपार, अखूट (सं.अनिष्ठित)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनीत *प्रेमाका.* अनीतिभर्युं

अनीरा *षष्टिप्र.* बीजा (सं.अन्यतर)

अनीलभ्रखक *चंद्रवा.* पवननो भक्षक, साप

अनु *गुर्जरा. चारफा. तेरका. प्राचीफा.* अने (सं.अन्यत्); जुओ अनुभाव

अनुकार *आरारा.* जेवा [सं.]

अनुक्रमी *प्रेमाका.* [एक पछी एक] पसार करी

***अनुक्रम्ये** *अखाका.* [अनुक्रमे, -ना अनुक्रममां, वगेरे]

***अनुखळ** *प्रेमाका.* खांडणियो; जुओ ऊखल

अनुग्रह *प्रेमाका. हरिख्या.* शाप पाछो खेंचवानी कृपा के ए माटेनो उपाय, दंडनुं निवारण, माफी (सं.)

अनुचार *प्रेमाका.* सेवक, नोकर (प्रास माटे 'अनुचर'नुं रूप)

अनुदिन *लावल.* दरेक दिवसे, हंमेशां [सं.]

अनुप *चित्तसं.* अनुपम, जुदुंजुदुं, जुदुं; जुओ अनूप

अनुभाव *गुर्जरा.* प्रताप, [गौरव, महिमा] (सं.)

अनुभाव [अनु भाव] **आनंस्त.* [अने भाव]

अनुमत *देवरा.* अनुमति

अनुमनइ *षडाबा.* माने (सं.अनुमन्यते)

अनुमिणइ *षडाबा.* अनुमान करे, अनुमान-पूर्वक जाणे (सं.अनुमिमान)

अनुसारि *आरारा.* जेवी

अनुहार *देवरा.* -ना जेवा (सं.)

अनुंध *कृष्णच.* अमर्याद, अत्यंत [रा.अनूंतौ]

अनूप **अखाका-शु. आरारा. कादं(शा). चंद्रवा. नलाख्या. प्रेमाका.* अनुपम, उत्तम; जुओ अनुप

अनेकप *गुर्जरा.* हाथी (सं.)

अनेकि परि *गुर्जरा.* अनेक रीते

अनेतइ, अनेति *उक्तिर.* अन्यत्र

अनेथइ, अनेथि, अन्येथि *उक्तिर. ऐतिरा. जिनरा. नलरा. वाग्भबा. *विमप्र. षष्टिप्र.* बीजे स्थाने, बीजे स्थळे [सं.अन्यत्र]

अनेरउं *आनंस्त. आरारा. उपबा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. चित्तसं. तेरका. देवरा. नलरा. प्राचीसं. लावल. वाग्भबा. विमप्र. षष्टिप्र. षडाबा.* बीजुं; जुदुं (सं. अन्यतरक); *उक्तिर.* बीजुं, वळी

अनेरडउ *जिनरा.* बीजो

अनेरि परि *उक्तिर.* बीजी रीते

अनेरिसिउ *उक्तिर.* अनोखुं, (सं.अन्यादृशः)

अनेरी वार, अन्येरी वार *उक्तिर.* बीजी वखते

अनेसउ *उक्तिर. प्राचीसं.* अनोखो (सं. अन्यादृशः)

अनोपम *नलाख्या. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अनुपम

***अनोहक** *गुर्जरा.* वृक्ष (सं.अनोकह)

अन्तरि जुओ अंतरि

अन्तेउर जुओ अंतेउर

अन्न जुओ अंन

अन्नइ *गुर्जरा.* अने (सं.अन्य परथी)

अन्नलि गढिउ *ऐतिका.* अन्नल राजानो गढ

अन्नैयो *नरका.* *वांकाबोलो, अणचियो, [अळवीतरो, तोफानी]

अन्या, अन्याय **कस्तुवा. चतुचा. *नलरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेमाका. *वेताप. दोष, वांक, दुष्कर्म; जुओ अंन्ना

अन्याइ *नलाख्या.* अन्यायी, अन्याय करनार, [खोटुं करनार]

अन्येथि जुओ अनेथि

अन्येरी वार जुओ अनेरी वार

अप *चित्तसं.* पाणी

अपघात *देवरा.* मुश्केली (सं.उपघात)

अपछर, अपछरा *आरारा. उक्ति. गुर्जरा. दशस्कं(१). प्रद्युचु. *विमप्र. वीसरा.* अप्सरा

अपजत *जिनरा.* अपर्याप्त, [नामकर्मनो एक प्रकार, स्वयोग्य पुद्गळोनो संचय पूरो न थयो होय एवी जीवदशा, कर्मदशा] [जै.]

अपणउ *अभिऊ. वीसरा.* आपणो, पोतानो (सं.आत्मनक)

अपत्थिय *जिनरा.* वणमाग्युं [मोत], (सं. अप्रार्थित)

अपत्य *चित्तसं.* बाळक, संतान [सं.]

अपभ्राजना *कृष्णच.* निंदा [सं.]

अपमत्त *जिनरा.* अप्रमत्त[विरत], [अप्रमाद-पूर्वकनी विरति जेमां होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

अपर पाख *प्राचीसं.* अपर पक्ष, [कृष्ण पक्ष, वद], [अहीं] श्राद्ध पक्ष

अपराधइ *उक्ति.* -नो अपराध करे, [-ने हानि करे] (सं.अपराध्यति)

अपराठी *विराप.* विमुख; जुओ उपराठी

अपवरग, अपवर्ग *आरारा. चित्तसं.* मोक्ष [सं.अपवर्ग]

अपवाद *नरका.* आळ, आक्षेप, दोषारोपण [सं.]

अपसोस *आरारा.* अफसोस, विषाद

अपहरइ *षडाबा.* लई ले, लूंटी ले; *गुर्जरा.* अपहरण करे, उपाडी जाय (सं. अपहरति)

अपाइ *षडाबा.* दुःखमां, मुश्केलीमां (सं. अपाय)

अपान *आनंस्त.* गुदा [सं.]

अपाय *कर्पूमं.* उपाय

अपाया *ऋषिरा.* संकटो (सं.अपाय)

अपारि *कादं(शा).* हुं पार पाडुं छुं (सं. आपारये), हुकम बजावी लवांय छे (सं.आपार्यते)

अपारि *कादं(शा).* अपार, घणुं

अपांगरंग *कादं(ध्रु).* कटाक्षलीला [सं.]

अपुणीक *नलरा.* पुण्य विनाना (सं. *अपुण्यिक)

अपूरणु *षडाबा.* परिपालन न करवुं

अपूरब *वीसरा.* अपूर्व, असाधारण

अपूरव *आरारा.* नवुं

अपोपा **अभिऊ.* [पोते]; जुओ आपोपुं

अप्प *आरारा.* आपणी, पोतानी (सं.आत्म)

अप्पउ *आरारा.* पोताने

अप्पण *तेरका.* आपणुं; पोताने (सं.आत्मनः)

अप्पणउं *प्राचीसं.* आपणुं, पोतानुं (सं. आत्मनः)

अप्पथुइ *षडाबा.* पोतानी जातनी प्रशंसा (सं.आत्मस्तुति)

अप्पाण *प्राचीसं. ललिरा.* पोताने (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आत्मानम्)

अप्पियउं *ऐतिका. नेमिछं.* आप्युं [सं. अर्पित]

अप्रमाण, अप्रमांण *आरारा.* असिद्ध, [नहीं बननारी हकीकत]; **गुर्जरा.* [असिद्ध, नकामुं] (सं.)

अप्रार्थक *आनंस्त.* इच्छारहित [सं.]

अ-प्रोजन *कादं(शा).* कारण विना (सं. अप्रयोजन)

अफराटां *चतुचा.* पीठ फेरवेलुं, [अवळुं]

अफू *अंबरा.* अफीण

अफेडणु *षडाबा.* नष्ट न थवुं ते

अबछरा *मदमो.* अप्सरा

अबद *मदमो.* वरस (सं.अब्द)

अबल *वसंफा. वसंफा(ल).* अबळा, स्त्री

अबलख, अबलखा *मदमो. हम्मीप्र.* घोडानी एक जात, काबरचीतरो (घोडो)

अबलिय **ऐतिका.* [अबळा]

अबंझ [अवंझ] *ऐतिरा.* अवंध्य, सफळ

अबाह **गुर्जरा.* [अबाध, अन्तराय विना, खूब]

अबाहु *गुर्जरा.* अबाध, अंतराय विना, खूब; [जेने कशो अंतराय नडतो नथी एवो वीर पुरुष]

अबांधतउ *षडाबा.* न बांधतो, बांध्या वगर

अबीर *नलरा. नेमिछं.* एक प्रकारनुं सुगंधीदार सफेद चूर्ण, अबील (अ.)

अबीह, अबीहो *अखाका. ऋषिरा. जिनरा. विमप्र. स्थूलिफा.* बीक विनानुं, निर्भय (सं.अ+भी); (जुओ अविह)

अबुह *ऐतिका.* अबोध, [अज्ञानी]

अबूके [हबूके] *नरप.* धबकारा करे, [धडके]

अबूझ, अबूझणा, अबूझ्या *अभिऊ. आरारा. लावल. शीलक.* अज्ञानी, समज विनाना (सं.अ+बुध् परथी)

अबूझी *आरारा.* अज्ञानी (स्त्री)

अबोखण *सिंहा(शा).* अपोशण, [भोजन वखते आचमन करवुं ते] (सं.आपोशान)

अब्बुय *प्राचीसं.* अर्बुद, आबू पर्वत

अभव्य *षष्टिप्र.* मोक्षनो अनधिकारी (जै.)

अभराख *नेमिछं.* अभरखो, [अभिलाषा, तृष्णा] [रा.अभलाष]

अभरे भर्युं *प्रेमाका.* पुष्कळ [भरेलुं]

अभंड *विमप्र.* असभ्य, [अशोभनीय] [सं. उद्भांड; दे.उब्भंड]

अभावडि *षष्टिप्र.* अभाव, अणगमो

अभिख *प्राचीफा.* अभक्ष्य, नहीं खावा जेवुं

अभिगम *देवरा.* [जिनदेवने वांदवा जतां पाळवाना] शुद्धि ने विनयना नियमो (जै.)

अभिग्गह, अभिग्रह *ऐतिका. तेरका. नलरा. प्राचीफा.* प्रतिज्ञा, धार्मिक नियम (सं. अभिग्रह)

अभिचार *कादं(शा).* तांत्रिक-मांत्रिक धर्मक्रिया (सं.)

अभि-दान *देवरा.* अभयदान, जीवतदान

अभिधा *ऐतिका.* नाम

अभिध्यान *अंबरा.* अभिधान, नाम

अभिध्यान *सम्यक्त्वो.* अभिमुख ध्यान,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[चिंतन]

अभिनवेरउ *ऐतिका.* [साव] नवुं

अभिप्राउ *षडाबा.* अभिप्राय, मत, विचार

अभिमान-तन *दशस्कं(१).* अभिमन्युपुत्र परीक्षित

अभिवनु *गुर्जरा.* अभिमन्यु

अभिषेचन *प्रेमाका.* अभिषेक, स्नान [सं.]

अभिसिंचावइ *षडाबा.* अभिषेक करावडावे

अभिहाण *ऐतिका.* नाम (सं.अभिधान)

अभीतर, अभींतर *कामा(शा). कामा(त्रि).* अभ्यंतर, अंदर, अंतरमां

अभीधांन, *अवीधांम *कामा(शा).* नाम

अभीरांम *कामा(त्रि). कामा(शा).* आनंद [सं.अभिराम]

अभीरु *षडाबा.* निर्भय (सं.)

अभींतर जुओ अभीतर

अभूमीयउ **वीसरा.* [अ-भोमियो, मार्ग नहीं जाणनारो]

अभूल *अखाछ.* भूलचूक वगर

अभेदान *नरका.* अभयनुं दान

अभेपद *नरका.* अभयपद

अभोखउ, अभोखु *उक्तिर.* **विक्रच.* [सत्कार रूपे पाणीनुं] सिंचन, छंटकाव (सं.अभ्युक्षण); जुओ आभोखइ

अभोखण, अभोखणुं *उक्तिर.* **विमप्र.* **लावल.* [सत्कार रूपे पाणीनुं] सिंचन, छंटकाव (सं.अभ्युक्षणम्); जुओ अंबोषण

अभोखु जुओ अभोखउ

अभोगत *अखाछ. चित्तसं.* भोगव्या (अनुभव्या) विनानो

अभ्यसइ *उक्तिर. ऋषिरा. कादं(शा).* अभ्यास करे, तालीम ले, शीखे; *षडाबा.* अभ्यास करे, प्रयोग करे, करे; *चित्तसं.* सेवन करे

अभ्यंतर *प्रेमप.* अंतरमां [सं.]

अभ्याख्यान *ऋषिरा. ऐतिका.* आळ, खोटुं तहोमत, अढार पापस्थानकमांनुं एक (जै.)

अभ्यास *आरारा.* हंमेशां बनती क्रिया; *गुर्जरा.* पुनरावर्तन (सं.)

अमकइ *षष्टिप्र.* अमुकमां (सं.अमुके); जुओ उमकु

अमग्गउ *ऐतिका.* कुमार्ग, मिथ्यात्व [जै.]

अमथुं **अखाका. दशस्कं(१).* एमनुं एम; *प्रेमाका.* [एम ने एम ज], कारण वगर

अमथां नाखीए *प्रेमाका.* नकामां गणीए, [नकामां गणी एम ने एम राखीए]

अमथो रह्यो *प्रेमाका.* [एम ने एम रह्यो], नकामो थई पड्यो

अमन, अमंन *अखाका. अखाछ.* एषणा के इच्छा विनानुं मन; मननी पारनी (अतिमनस) स्थिति; एवी स्थितिए पहोंचेलुं

अममा *देवरा.* अममदेव, आवती चोवीसीना एक तीर्थंकर

अमया *उषाह.* उमिया

अमरख *नलरा. विमप्र.* अदेखाई (सं.अमर्ष)

अमरख *अखाछ.* *व्यर्थ, [मिथ्या] [सं.*मृषा परथी]; *खरेखर [सं.अ+मृषा]

अमरतां *उपबा.* न मरतां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमरविमाण *आरारा.* देवविमान, देवलोक, स्वर्ग

अमरसाल *गुर्जरा.* देवलोक, [स्वर्ग] (सं. अमरशाला)

अमराउरि *गुर्जरा.* अमरापुरी, देवनगरी, [स्वर्ग]

अमरिख *प्रबोप्र.* क्रोध (सं.अमर्ष)

अमरी *प्रद्युचु. प्राचीफा. विक्ररा.* देवांगना (सं.अमर परथी)

अमरी *प्राचीफा.* कसबी वस्त्र (सं.अंबर)

अमरेसर *तेरका.* अमरेश्वर, [देवोनो अधिपति इन्द्र]

अमल, अमळ *अखाका. अखेगी. नरका. प्रेमाका.* मल वगरनुं, निर्मळ, पवित्र

अमल **अखाका. अखाका-शु.* अफीण, केफी पदार्थ

अमल करे *चित्तसं.* वर्ते, वर्तन करे

अमलीमाण **ऐतिका. जिनरा.* [अमर्दित मानवाळो], अपराजित

अमंदो *लावल.* अमंद, तेजस्वी

अमंन जुओ अमन

अमाइ *तेरका.* ?, [ऊभराय] [सं.अ+मा]

अमाणुं **अखाका.* [मान – माप वगरनुं, अनंत]

अमान **अखाका.* [मान – माप वगरनुं, अनंत]

अमानी **अखाका.* [मान – माप वगरनी, अनंत]

अमामो **जिनरा.* [अमाप, पुष्कळ]

अमाय *आनंस्त.* माया विनानुं, [निष्कपट, सरळ]

अमारि, अमारी *आरारा. उपबां. ऐतिका. गुर्जरा. विक्ररा.* अहिंसा, हिंसानिषेध, जीवितदान (सं.)

अमावस, अमावसि *उक्तिर.* अमास (अं. अमावास्या)

अमिअ-वाणी *चारफा.* अमृत समी वाणी-वाळा

अमित *चित्तसं.* अमाप, ऊंडो [सं.]

अमिय, अमीय *ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. प्राचीफा. वसंफा(ल).* अमी, अमृत

अमिय-कलश, अमीय-कलसा *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अमृतभर्या कळश

अमिय वूठ *प्राचीसं.* अमृत-वृष्टि

अमीअ *लावल.* अमृत

अमीउ *विराप.* अमी, अमृत

अमीकंदा **लावल.* [अमृतनो कंद, अमृत-मय मूळियुं]

अमीछंटा नांखी *प्रेमाका.* कृपा करी

अमीनिधि *प्रेमाका.* अमृतनो भंडार, चंद्र

अमीय जुओ अमिय

अमीयकलसा जुओ अमिय-कलश

अमीसारणी *प्राचीफा.* अमृतनो प्रवाह (सं. अमृतसारणी)

अमुजावुं *वेताप.* अकळावुं [सं.*आमुह्यति]

अमुत्र *कादं(शा).* परलोकमां (सं.); जुओ अत्र-अमुत्र

अमुनित *षष्टिप्र.* अज्ञात (प्रा.मुण परथी)

अमुलीक जुओ अमूलक

अमूझ *नलरा.* विकल, आकळो (सं.मुह्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परथी)

अमूलक, अमूलिक, अमुलीक *अभिऊ. आरारा. ऐतिका. नलाख्या. प्रेमाका. रूपच. षडाबा. सिंहा(शा).* अमूल्य, कीमती (सं.अमूल्यक)

अमृतकुंडली *प्रेमाका.* एक वाद्य

अमेल्लतउ *षडाबा.* न छोडतो, छोड्या वगर

अमोघ *चित्तसं.* निष्फळ के अफळ न थाय तेवुं, कायमी

अमोरी *आरारा.* कोईक वस्त्रप्रकार

अम्ब *प्रबोप्र.* आंबानुं वृक्ष

अम्मा-पिइ, अम्मा-पिउ *प्राचीसं.* मातापिता (सं.अम्बा-पितृ)

अम्मीणा *शृंगामं.* अमारा

अम्ह *नेमिछं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अमारा *गुर्जरा. षडाबा.* अमे (सं.अस्मद्)

अम्हासिउ *गुर्जरा.* अमारा जेवा (सं. अस्मादृश)

अम्हासित *उक्तिर.* अमारा जेवा (सं. अस्मादृश)

अय *शृंगामं.* लोढुं (सं.अयस्)

अयरावइ *ऐतिका.* ऐरावत, [इंद्रना] हाथी

अयाण *आरारा. जिनरा. ऐतिका. प्रबोप्र. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा. षष्टिप्र.* अज्ञानी, अजाण, मूर्ख; जुओ एआण

अयुत *प्रेमाका.* दश हजार [सं.]

अर *पंचवा. वीसरा.* अने (सं.अपर)

अरइ *जिनरा.* अरति, [इन्द्रियोने प्रतिकूळ विषय मळे त्यारे चित्तमां थतो उद्वेग, चारित्रमोहनीय कर्मनो प्रभेद] [जै.]

अरइंपरइं *आरारा.* आजुबाजु [सं.आरात्-परात्]

अरगचा *ऐतिका.* अरगजा

अरगजा, अरघजा *कामा(शा). नरका. प्रेमाका. मदमो.* एक सुगंधी भूकी

***अरघल [*परघल]** *प्राचीफा.* पुष्कळ, जुओ परघल

अरचइ *उक्तिर. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अर्चे, पूजे

अरचनियाण *नरका.* अर्चना – पूजाने योग्य [*सं.अर्चनीयानाम् परथी]

अरचा *आरारा.* पूजा; **ऐतिका.* [अंगलेप]; *प्रेमाका.* अर्चा, कपाळे चंदनादि लगाडवां ते

अरची *लावल.* अर्चेली, सुसज्ज, [शोभित]

अरज **मदमो.* [निवेदन, रजूआत] [अ. अर्ज]

अरजना *प्रेमाका.* कमाणी (सं.अर्जन)

अरड **विमप्र.* [हठ]

अरडक-मल्ल *उक्तिर. ऐतिरा. प्राचीका.* अजेय मल्ल, शूरवीर

अरडावुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* आरडवुं

अरडी *पंचवा.* भेंकडो ताणीने (सं.आ+रट्)

अरडूसउ, अरडूंसु *उक्तिर. आरारा(व).* अरडूसो, एक वनस्पति (सं.अटरूष)

अरणइ, अरणए *उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अरति, असुख, पीडा, शोक, चिंता

अरणि *ऋषिरा. *जिनरा. दशस्कं(२).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरणिनुं जंगली वृक्ष, इंधण (सं.); *अखाका.* सूर्य [सं.]

अरणी *ऋषिरा.* घसवाथी अग्नि पेदा करनार काष्ठ (सं.)

अरणेटउ *षडाबा.* एक प्रकारनी धोळी माटी

अरणोदय *आरारा.* अरुणोदय

अरत-परत *उक्तिर.* आकृतिए-प्रकृतिए, [*आमथी-तेमथी, *बधी रीते] [सं. आरात्-परात्]

अरति *गुर्जरा. नेमिछं. लावल. विराप.* दुःख, वेदना, [असुख] (सं.)

अरथइ *उक्तिर.* मागे, विनंती करे (सं. अर्थयति)

अरथिया *अखाका.* अर्थ – उद्देशवाळा, [इच्छुक, अभिलाषी] [सं.अर्थिन्]

***अरद** *कामा(त्रि).* अर्ध

अरदास *आनंस्त. देवरा. वीसरा. हम्मीप्र.* प्रार्थना, अरजी, विनंती (फा.अर्जदास्त)

अरध-ऊरध *नरका.* अधः अने ऊर्ध्व, पातालथी आकाश

अरधंगी *नरप(द).* अर्धांगना

अरन्न *तेरका.* अरण्य

अरबद *चित्तसं.* मांसनो लोचो, काचो गर्भ (सं.अर्बुद)

अरभ *मदमो.* बाळक (सं.अर्भक)

अरभक *चित्तसं.* अर्भक, बाळक

अररि *ऐतिका.* अरेरे [सं.अरेअरे]

अरलू *आरारा(व).* अरडूसो, अरलवो, एक वनस्पति (सं.अरलु)

अरवाकी, अर्वाकी **अखाका. अखेगी.* अर्वाचीनो, [पाछळना समयना]

अरस **अखाका.* [रसनो अभाव, स्वादनो अभाव]

अरसविरस *आरारा.* लूखुंसूकुं

अरहट *उक्तिर. गुर्जरा. नलरा.* रहेंट (सं. अरघट्ट)

अरहु *उक्तिर. विमप्र.* नजीक [सं.आरात्]; जुओ उरहउं

अरहु-परहु *अंबरा. ऋषिरा.* आमतेम, आगळ- पाछळ [सं.आरात्-परात्]

अरंण *मदमो.* अरण्य

अरंण (अरंण मूके) *मदमो.* –, [*अरण्यमां मूके, *दूर राखे, *जतुं करे]

अराति *प्रबोप्र. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* शत्रु (सं.)

अरापरी *सिंहा(शा).* आघीपाछी (प्रा. अरहुपरहु); जुओ अरुंपरुं

अरियण, अरीअण, अरीयण *ऐतिरा. गुर्जरा. जिनरा.* अरिजन, शत्रु

अरिरम, अरीरम *उक्तिर.* बीजे दिवसे (*सं. अपरेद्युः); जुओ अरीम

अरिष्ट *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अनिष्ट, पीडा; *कादं(ध्रु).* लीमडो [सं.]

अरिष्या *प्रेमप.* ईर्ष्या

अरीअण जुओ अरियण

अरीगंजण *चंद्रवा.* शत्रुविनाशक [सं. अरिगंजन]

अरीठा *लावल.* अरिष्ट, पाप

अरीम *उक्तिर.* बीजे दिवसे (*सं.अपरेद्युः); जुओ अरिरम

अरीयण जुओ अरियण

अरीरम जुओ अरिरम

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरु *आरारा. चारफा. प्राचीसं. वीसरा.* के, बीजा, अने (सं.अपर)

अरु, अरुं *अखेगी. विमप्र.* पासे, नजीक [सं.आरात्]; जुओ अहरुं

अरुणपण *आरारा.* लालाश

अरुणी *ऋषिरा.* ज्वाला, लालिमा, लालाश (सं.अरुण)

अरुपरुहु *कादं(शा).* आसपास, आमतेम, (सं.आरात्-परात्)

अरुं जुओ अरु

अरुंपरुं *कामा(त्रि). कामा(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). *नरप(द). प्रेमाका. मदमो.* आघुंपाछुं, आडुंअवळुं, अहींतहीं, आगळपाछळ (सं.आरात्-परात्, प्रा. अरहु-परहु); जुओ अहरुपरु

***अरू** *कामा(त्रि).* उर, स्तन

अरूठ *प्रेमाका.* अप्रसन्न [सं.आरुष्ट]

अरोग *अखाका.* आरोग्य

अर्क *अखेगी. नरका.* सूर्य (सं.); *प्रेमाका.* सूर्यना प्रकाशमां, दिवसे; *हरिख्या.* आकडो (सं.)

***अर्खेकर्खे [अर्खेपूर्खे]** **अखाछ.* [आगळ के पाछळ]

अर्घ *हरिख्या.* पुष्प-चंदनवाळी अंजलि आपी सत्कार करवो ते [सं.]

अर्घपाद *ऋषिरा.* पग धोवा वगेरे सत्कार-सामग्री [सं.]

अर्घपादार्घ जुओ अर्धपादार्घ

अर्चिमारग *अखाका.* तेजनो – आत्मज्ञाननो मार्ग

अर्जुन *चित्तसं.* मोर [सं.]

अर्ण *वेताप.* अरण्य, वन

अर्थतु *वाग्भवा.* अर्थात्

अर्थी *हरिख्या.* गरजु (सं.)

अर्द्धासिनि *शृंगामं.* अडधे आसने

अर्धचंद्र बाण *पंचवा.* बीजना चंद्रनो आकार जेनो होय छे ते बाण (सं.)

***अर्धपादार्घ [अर्घपादार्घ]** **पंचवा.* [फूल वगेरे अर्पवा अने पग धोवारूपी सत्कार] [सं.अर्घपाद्यार्घ]

अर्वसी *प्राचीफा.* उर्वशी, एक अप्सरा

अर्वाकी जुओ अरवाकी

अर्वाक्ये *अखाछ.* अर्वाकीए, अर्वाचीनोए, [पछी आवनाराओए]

अर्वाची *अखाछ.* वाचाथी पर

अर्हपद *गुर्जरा.* मुक्तिपद (सं.अर्हत्+पद)

अलका *ऋषिरा.* वाळनी लट (सं.अलक)

अलक्ष *आनंस्त.* अलक्ष्य, [संसारीथी कळी न शकाय एवो]

अलखत, अलखत्य *कस्तुवा. चंद्रवा. मदमो. रूस्तस. सिंहा(शा).* धनदोलत, समृद्धि

अलग *विमप्र.* दूर, [वेगळा]; *वसंवि.* अळगो, [वेगळो] (अं.अलग्न)

अलगुं *आरारा. *कादं(शा). *नलाख्या. नेमिछं. लावल.* दूर, आघुं, वेगळुं

अलगेरी *उषाह.* अळगी, [वधारे आघी] (सं.अलग्नतर)

अलछ *मोसाच.* फूवड स्त्री [सं.अलक्ष्मी]

अलज, अलजउ, अलज्यो *आरारा. उक्तिर.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*ऐतिका. *कादं(शा). *गुर्जरा. चतुचा. नरका. प्रेमाका. लावल. विमप्र. शृंगामं.* आतुर, उत्कंठ; आतुरता, उत्कंठा

अलजईआं **विमप्र.* [उत्कंठापूर्वक]

अलजउ जुओ अलज

अलजो (अलजो जाय) *ऐतिका.* उत्कंठित थवाय

अलज्यउ *जिनरा. नरका. प्रेमाका. विरापं. शृंगामं.* उत्कंठित थयो, तलस्यो, ओरतो थयो

अलज्यो जुओ अलज

अलझी *नरका. *नरप.* अलजी, आतुर थई

अलप *मदमो.* गुप्त, लुप्त

अलपाइ, अळपाये *अखाका.* ढंकाय, वींटाय; *चित्तसं.* लपाय, छुपाय, लुप्त थाय, समाय

अल पूरीउ जुओ पूरीउ

अलव *नरप(द.)* *अटकचाळुं, *अडपलुं, [*लीला, *नखरां]

अलवइ *अखाका. ऋषिरा. कर्पूमं. जिनरा. दशस्कं(र). नरका. नरप. नरप(द). नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). *विमप्र. वेताप. शृंगामं. सिंहा(म).* अनायासे, सहजभावे, लीलापूर्वक, रमतमां, हळवेथी, सुंदर रीते

अलवेसर *गुर्जरा. *जिनरा. नलरा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). हम्मीप्र.* अलबेलो, सुंदर, वरणागियो, रसीलो

अलसाणउ *जिनरा.* आळस्यो

अलसिवेल *उक्तिर.* अळसीनुं तेल (सं. अतसीतैलम्)

अलस्यां *नरका.* शिथिल, मदभर्यां, [आळस- भर्यां]

अलंकरिउ *उक्तिर. वाग्भवा.* अलंकृत कर्युं, शणगार्युं

अलंगक्रत *मदमो.* अलंकृत

अलाधो जुओ अलाधो

***अलाधो [अलाधो]** *सम्यचो.* अळगो, जुदो [रा.अलागौ]

अलाप *अखाका.* आलाप, वाणी

अलाबु *कादं(शा).* तूंबडुं (सं.)

अलाभइ *ऋषिरा.* न मळतां, [प्राप्त न थतां] [सं.अलब्ध]

अलिअ *ऐतिका.* अप्रिय, [अनिष्ट] (सं. अलीक); जुओ अलीय

अलिअल, अलीअल, अलीयल *प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* भमरो, (सं.अलिकुल)

अलियरपणुं *अखाका.* भ्रमरवृत्ति

अलीअल जुओ अलिअल

अलीअल-आण **वसंवि(ब्रा).* [भमराओनी सत्ता]

अलीक *जिनरा. शृंगामं.* मिथ्या, [खोटुं] (सं.)

अलीय **ऐतिका.* [अप्रिय, अनिष्ट] (सं. अलीक); जुओ अलिअ

अलीयल *हरिवि.* भ्रमर [सं.अलिकुल]; जुओ अलिअल

अलीयल *हरिवि.* मिथ्या वचन ?

अलूक *अंबरा.* ऊलूक, घुवड

अलूणिय *गुर्जरा.* असुंदर (सं.अलवणिका)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलूणुं *कादं(शा).* असुंदर, वरवुं (सं.अलवणकम्)

अलूरवुं *कृष्णबा.* अळवीतराई करवी, [परेशान करवुं, हानि करवी] [प्रा. उल्लूर]

अलेल **अखाछ.* [नियमरहित, निराळुं] [दि.अल्लिलह]

अलेहेती *प्रेमाका.* अज्ञान, अणसमजु

अलोकित *वेताप. सिंहा(शा).* अलौकिक

अलौकि *प्राचीका.* अलौकिक

अल्पार्थीउ *उपबा.* दरिद्र

अल्यावि *प्रद्युचु.* अलावो, अपावो

अल्ल- *प्राचीसं.* आलवुं, [आपवुं]

अवकर *वीसरा.* अपमान, निंदा[युक्त वचन], [अपशब्द] [सं.अपकृ-; प्रा.)

अवगत्य *अखाछ.* अवगतिए गयेलो

अवगनियां *जिनरा.* काननुं एक आभूषण; जुओ अउगनिया

अवगन्न- *तेरका.* अवगणवुं (सं.अव+गण्)

अवगाह *कादं(शा).* स्नान (सं.)

अवगाहइ **ऐतिका.* अवगाहन करे, [ऊंडे सुधी जाय]; **कादं(ध्रु). वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* डूबकी मारे, स्नान करे (सं.अवगाहति)

अवगाहनारूपइ **आनंस्त.* [अंगभूत रीते]

अवगुणउं **ऋषिरा.* [अवगणुं, छोडी दउं]

अवग्रह *गुर्जरा.* केदखानुं (सं.)

अवघट *शृंगामं.* मुश्केल, [विकट, दुर्गम]; जुओ ऊघड, ओघट

अवघाय *अखाका. चित्तसं.* डूबी जाय, [अवगाहन करे]

अवछरा *मदमो.* अप्सरा

अवज्झा, अवझा *प्राचीफा. प्राचीसं.* अयोध्या

अवटाडिउ **शृंगामं.* [मूंझव्युं, दुःखी कर्युं] [सं.आवर्त्]

अवटाय **ऋषिरा.* [भमे, आथडे]; *ऋषिरा. *नरका. *प्रेमाका.* मूंझाय, दुःखी थाय, [पीडा अनुभवे] [सं.आवर्त्]; *प्रेमाका.* ऊछळे; जुओ आवटे

अवटावि **नलाख्या.* [पीडे, दुःखी करे] (सं.अप+वृत्) [सं.आवर्त्]

अवडा *ऐतिका.* अयोध्या

अवतंस *कादं(शा).* काननुं घरेणुं (सं.)

अवतारीइं **आनंस्त.* [संशोधीए, घटावीए]

अवतारीक *मदमो.* जन्मथी; अवतारी, अवतार धारण करेलो

अवत्था *आरारा.* अवस्था

अवदात **ऐतिका. ऋषिरा. नलरा.* वृत्तान्त; *ऐतिका. ऐतिरा. *गुर्जरा. जिनरा.* यशस्वी वृत्तान्त, चरित्र; यश; गुण; *सम्यचो.* चरित्र; प्रकट; *विक्ररा.* दुश्चरित, [करतूत]; *अंबरा.* वृत्तान्त; [करतूत] (सं.)

अवधारइ, अविधारइ *अखाका. अभिऊ. आनंस्त. आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नरका. प्रेमाका.* ध्यानमां ले, विचारे, धारे; नक्की माने; धारण करे, सांभळे

अवधि *आरारा.* अवधिज्ञान, दूर रहेला पदार्थनुं इन्द्रियोनी मदद विना ज्ञान

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवधिज्ञान, अवधीगिनांन *देवरा. नलरा.* अतीन्द्रिय ज्ञानविशेष, दिशा या कालनी अमुक सीमा सुधीनी घणी या सर्व बाबतो जोई शकवानी शक्ति [सं.]

अवधू *हम्मीप्र.* अवधूत, वेरागी

अवध्य *प्रेमाका.* अवधि, मर्यादा, हद

अवधूत *नलरा.* मस्त, [उन्मत्त]; **ऋषिरा.* [उन्मत्त, घेलो, क्षुब्ध]

अवन *आनंस्त.* जतन करवुं [सं.]

अवनी *चित्तसं.* पार्थिव तत्त्व [सं.]

अवने *चतुचा.* अविनय

अवभंगिहिं, अविभंगिहिं *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अंतराय विना, (सं. अविभंगेन)

अवयरिउ *ऐतिका.* अवतर्यो

अवयार *तेरका.* अवतार

अवयारिय *तेरका.* उतार्युं (सं.अवतारित)

अवर *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* बीजुं, अथवा वळी, [अने, वळी] (सं.अपर)

अवरतउ *प्राचीसं.* अभिलाष, ओरतो [सं. आतुरत्व]

अवरथा *प्रेमाका.* व्यर्थ, नकामुं [सं.वृथा परथी]

अवरल *विक्ररा.* पुष्कळ [सं.अविरल]

अवराउं **प्रेमाका.* [ओवारणां लउं, ओवारी जाउं]

अवराह, अवराहु *गुर्जरा. शृंगामं.* अपराध, दोष

अवरि **नलाख्या.* [वळी] (सं.अपरे)

अवरी *आरारा.* बीजी

अवरोध *गुर्जरा.* विरोध विना, [मेळपूर्वक] (सं.अविरोधम्)

अवरोह **ऐतिका.* [आग्रह, अनुरोध] [सं. उपरोध]

अवल *प्राचीफा.* *मुख्य, [उत्तम] (अ. अव्वल)

अवल *प्रेमाका.* अवळ, अवळां, ऊंधां [सं.उद्वल]

***अवल [अचल]** **ऐतिका.* [निश्चल, स्थिर]

अवलवणु **षडाबा.* [द्रोह] (सं.अपलप्)

अवलसवल *चित्तसं.* अवळी अने सवळी बाजु, पाछळनी अने आगळनी बाजु; [सं.उद्वलसुवल]

अवलासवलां आंक *चंद्रवा.* समस्या वगेरे जेवो एक रचनाप्रकार

अवलोइंयइ *ऐतिरा. तेरका.* अवलोकीए, जोईए

अवलोण *तेरका.* अवलोकन

अवशमिव, अवशमेव, अवसमेव *कादं(शा). नलाख्या.* अवश्यमेव, जरूर

अवसप्पिणि *गुर्जरा.* अवसर्पिणी, एक अवनतिकारक काळविभाग [जै.]

अवसमेव जुओ अवशमिव

अवसर *प्राचीफा.* समारंभ, [उत्सव], सभा

अवसाण *जिनरा.* मोको, तक

अवसोयण *प्राचीसं.* अवस्वापिनी, [ऊंघाडी देनारी विद्या]

अवस्ता *वेताप.* माठी दशा [सं.अवस्था]

अवहथइ *उक्तिर.* त्याग करे (सं.अप-हस्तयति)

अवहरइ *आरारा. ऐतिका.* हरी ले, लई

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ले, दूर करे

अवहित *चित्तसं.* अविहित, शास्त्रमां जेनुं विधान नथी तेवुं (कर्म), अनुचित (कर्म)

अवहील, अवहीला *आरारा. लावल.* अवहेलना, अवगणना, तिरस्कार

अवहेल *उपबा.* अपमान, तिरस्कार [सं.]

अवहेलइ *उपबा. गुर्जरा. षडाबा.* अवहेलना करे, तिरस्कार करे, अपमान करे

अवंझ जुओ अबंझ

अवाच्यक *चित्तसं.* अवाचक, मूंगा

अवाच्यवीर्य *चित्तसं.* अवाच्यवीर्य, अवाच्य एटले ब्रह्म – तेनी शक्ति जेनामां छे ते

अवाठी *गुर्जरा. विराप.* स्थान पामेली, वसेली (सं.उपस्थिता) [सं.अवस्थिता]

अवाडूउ *उक्तिर.* प्रतिकूल; जुओ उवडु

अवाणगू *जिनरा.* गुमसुम, [निस्तेज] [*अ+रा.वाणक]

अवारिय सत्त *प्राचीसं.* अवारित सत्र, [अणअटकाव्युं – अविरत चालतुं – अन्नसत्र]

अवारी, अवारीय, अवेरी *मदमो. *विमप्र. सिंहा(शा).* अविरत, निरंतर (सं. अवार्य); जुओ आवारी

अवारी-स्थंभ *प्रेमाका.* यूप, यज्ञस्तंभ, [अश्वमेध यज्ञनो (*अप्रतिरोधसूचक) स्तंभ]

अवारीय जुओ अवारी

अवाली जुओ सवाली

अवाश, अवास *गुर्जरा. कादं(शा). नलाख्या. वीसरा.* आवास

अवांछतउ *षडाबा.* न वांछतो, न इच्छतो

अवि *उपबा.* वळी (सं.अपि)

अविकत्थना *ऋषिरा.* बडाश न मारवी ते [सं.]

अविकल *विराप.* संपूर्ण, [अखंड] (सं.)

अविकुल *गुर्जरा.* अविकल, अखंड

अविगत, अविगति, अविगती, अविगत्य *अखाका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. नरप. प्रेमाका.* अव्यक्त

अविघन *विक्रच.* अविघ्न, [निर्विघ्नता]

अविछिन्न *आरारा.* अविछिन्न, अखंड

अविणउ *गुर्जरा.* अविनय

अविणासी *शृंगामं.* अविनाशी

अवितथ *आनंस्त.* साचुं [सं.]

अवितथनामा *नलाख्या.* यथार्थनामा (सं.)

अवित्त *कादं(शा).* निर्धन, बापडुं [सं.]

अविधारइ जुओ अवधारइ

अविनि *कादं(शा).* अविनय

अविभंगिहिं जुओ अवभंगिहिं

अवियुगतूं *गुर्जरा.* अवियुक्त, छूटुं न पडेलुं

अविरति *लावल.* अविरक्ति; *आनंस्त.* व्रतनो अभाव, [असंयम, अविरक्ति] [सं.]

अविलोक, अविलोकन *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* अवलोकन

अविलोकवुं *दशस्कं(१).* अवलोकवुं

अविह (अबीह) *देवरा.* न बीधेलुं, निर्भय (सं.अ+भी)

अविहड *ऐतिका. ऐतिरा. कर्पूमं. *गुर्जरा. जिनरा. नलरा. विक्ररा.* अभग्न, सातत्य-युक्त, अतूट, अखंड (सं.अविघट)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

***अवीधांन, *अवीधाम, *अवीधांम** *कामा(त्रि).* अभिधान, नाम; *कामा(शा).* जुओ अभीधांन

अवीससिवउ *उपबा.* अविश्वासपात्र

अवीसास *उपबा.* अविश्वास

अवेरी जुओ अवारी

अवेला, अवेलां, अवेली, अवेलु *अभिऊ. उपबा.* कवेळा; * *गुर्जरा. देवरा. *विराप.* मोडुं

अवेव, अव्येव *अखाका. अखेगी. कादं(शा). चित्तसं. दशस्कं(१). नरप(शा). प्रेमाका.* अवयव

अव्येर *चंद्रवा.* अवर, अधम

अव्येव जुओ अवेव

अशकटा *षडाबा.* जेनी पासे गाडुं नथी तेवा

अशठु *षडाबा.* प्रामाणिक, सज्जन

अशनपणे, असनपणे *नरका. नरप. प्राचीका. प्रेमप.* *निर्दोषताथी, अज्ञानथी, अजाणतां, अणसमजमां; *अंगवि.* मूर्छा – बेभानदशामां (सं.असंज्ञ-)

अशतरी *कामा(त्रि).* स्त्री

अशमेव *कामा(शा).* चोक्कस (सं.अवश्यमेव)

अशर्णाशर्ण *दशस्कं(१).* अशरणनुं शरण

अशंमरथे *मदमो.* असामर्थ्ये

अशाबो *नरप.* असबाब, सरसामान, अलंकार

अशिम *उषाह.* बेधारुं खड्ग

अशुकुनु *षडाबा.* अपशुकन (सं.अ+शकुन)

अशुं *अखाका. चित्तसं.* आवुं, एवुं (सं.ईदृश)

अश्या *प्रबोप्र.* आवा प्रकारना

अश्रज, असरज, अस्रज *कामा(त्रि)* आश्चर्य

अश्वत्थळ *दशस्कं(१).* अश्वत्थनुं स्थळ, पीपळवृक्ष

अश्वबंध, अस्वबंधु *गुर्जरा. विराप.* अश्वपाल (सं.)

अश्वमुख *कादं(शा).* किन्नर, [एक देवकल्प योनि] (एनां मोढां घोडानां जेवां होय छे) [सं.]

अश्वमेव *दशस्कं(१). प्रेमाका. हरिख्या.* अवश्यमेव, अवश्य

अश्ववार *गुर्जरा. विराप.* असवार (सं.)

अष्ट कर्म *विक्ररा.* [जीवने वळगतां] आठ प्रकारनां कर्मपुद्गल (जै.)

अष्ट कुल *कृष्णबा.* आठ कुलपर्वत

अष्ट मासीध *चंद्रवा.* आठ प्रकारनी महासिद्धिओ

अष्टादश भार *दशस्कं(१).* अढार प्रकारनी वनस्पति

अष्टापद *नलरा.* एक पौराणिक पर्वत (सं.)

असउण *गुर्जरा.* खराब शुकन (सं.अशकुन)

असक्ता *षडाबा.* अशक्त

असगाह *प्राचीसं.* दुराग्रहथी, [हठपूर्वक, अटक्या वगर, खूब ज] (सं.असद्ग्राह)

असगां *विमप्र.* सगां न तेवां

असथान *गुर्जरा.* सभाखंड (सं.आस्थान); जुओ अस्थान

असदारंभ * *आनंस्त.* [आरंभनो अभाव,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यवहारक्रियामांथी निवर्तन] [सं.]

असद्ग्रही *आनंस्त.* असद् ग्रहण करनार, [दुष्टजन] [सं.]

असन, असन्न, असंन *०अखाका-शु. अखाछ. प्रेमाका. हरिख्या.* अज्ञानी, अबूझ, मूढ (सं.असंज्ञ); *चतुचा.* भोळुं, निर्दोष; **नरका. शृंगामं.* शून्यमनस्क; जुओ आसनउं

असनपणे जुओ अशनपणे

असनादिक *आरारा.* खावापीवानुं (सं.अशनादिक)

असन्न जुओ असन

असन्नी *षडाबा.* जेने मननी इन्द्रिय नथी तेवो (जीव) (जै.) (सं.असंज्ञी)

असपख *हम्मीप्र.* तंबु माटे उपयोगमां लेवातुं एक प्रकारनुं कापड

असबाब *पंचवा.* सरसामान, [मालमिल्कत] [अ.]

असमत्थु *षष्टिप्र.* असमर्थ

असमाधि, असमाध्य *गुर्जरा. प्रेमाका. शृंगामं. षष्टिप्र.* चित्तनी अस्थिरता, अस्वस्थता, अशांति [सं.]

असमाधियो *आरारा.* आकुल, अस्वस्थ, [दुःखी]

असमाध्य जुओ असमाधि

असमान, असमानि, असमानौ *अभिऊ. आरारा. *ऐतिका.* अद्वितीय, असाधारण, मोटुं, भारे

असम्भावि *प्रबोप्र.* न कळी [धारी, विचारी] शकाय तेवुं (सं.असंभाव्य)

असरज जुओ अश्रज

असराल, असरालउ *आरारा. *ऐतिका.* जोरावर, भयंकर, भारे (रा.); *आरारा. *देवरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. हम्मीप्र.* पुष्कळ, अत्यंत, मोटुं, विशाळ; जुओ सरालउ

असरीखउं *गुर्जरा.* अणसरखुं, असमान (सं.अ+सदृक्ष)

असलेष, असलेस *उक्ति. प्राचीसं.* आश्लेषा नक्षत्र

असंकल *कृष्णबा.* ऋणमुक्त; जुओ उशंकल

असंकलेस *आनंस्त.* क्लेश विनानी स्थिति, [समाधि – शुद्धिनी अवस्था]

असंक्षात *चित्तसं.* असंख्य

असंख *आरारा. गुर्जरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* असंख्य

असंख्यात *उपबा. प्रेमाका.* असंख्य

असंधउ *गुर्जरा.* अश्वपालक; जुओ अश्वबंध

असंन जुओ असन

असंबो *सिंहा(शा).* अचंबो; जुओ असंभि

असंभम *अंबरा. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. सिंहा(म). सिंहा(शा).* असंभव, अशक्य, हेरतभर्युं

असंभवि *नलाख्या.* असंभाव्य, असंभवित

असंभावना, असंभाव्य *चित्तसं.* जीव अने ब्रह्मनी एकता विशे संशय होवो ते [सं.]

असंभावि जुओ असम्भावि

असंभाव्य जुओ असंभावना

असंभि *प्राचीका.* आश्चर्यजनक (*सं. असंभव) [*सं.अत्यद्भुत]; जुओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अचंभ, असंबो

असाबु **नेमिछं.* [आंगळीओ] [अ.असाबे]

असाय *जिनरा.* अशाता, [शारीरिक, मानसिक पीडा, व्याधि, वेदनीयकर्मनो एक प्रकार] [जै.]

असारइ **नेमिछं.* [निःसार – निर्बळ थईने]

असांभरताई *षडाबा.* न सांभरतां पण

असिउं *नलरा. लावल.* एवुं (सं.ईदृश)

असिणि *ऐतिका.* अश्विनी (नक्षत्र)

असिपद *अखाका.* ब्रह्मपद, [*तत्त्वमसिपद, – ते ब्रह्म हुं छुं एवी स्थिति]

असिपत्र *नेमिछं.* जैन धर्मनी मान्यता अनुसार नर्कमां आवेलुं, तरवार जेवां पांदडांवाळुं एक वृक्ष के एनुं पांदडुं, पापीओने शिक्षा करवा जेनो उपयोग थाय छे [सं.]

असिय *ऐतिका.* भक्षित (सं.अशित)

असिव *ऐतिका. गुर्जरा.* अकल्याण, अमंगल (सं.अशिव)

असी *उक्तिर. प्राचीसं. वीसरा.* एंसी (सं.अशीति)

असीमउ *उपबा.* एंसीमो

असी-सउ *षडाबा.* एकसो एंसी (सं.अशीति +शतम्)

असुणिउ *उक्तिर.* अपशुकनियाळ (सं.अशकुनिक)

असुर-मळतो *प्रेमाका.* असुरोनो मळतियो

असुह *ऐतिरा.* असुख

असुहाणी *आरारा.* अणशोभती के असुख आपनारी, अणगमती

असुं *आरारा.* एवुं, आम [सं.ईदृश]

असूझतां *उपबा.* अशुद्ध

असूत्र *प्रेमाका.* शास्त्र विरुद्ध

असूर *ऋषिरा.* सांज, [सूर्य आथम्या पछीनो समय, रात] (सं.उत्सूर, अ-सूर); *नरका. नलाख्या. प्रेमाका.* मोडुं

असेस *आरारा. गुर्जरा. वीसरा.* अशेष, संपूर्ण, खूब

असोई *उक्तिर.* उपश्रुति, [श्रवण; वचन; संमति]

असोय *तेरका.* अशोक वृक्ष

असौच *शीलक.* अशुद्ध [सं.अशौच]

अस्त, अस्ति *अखाछ. दशस्कं(२). नंदब. *वेताप. सिंहा(म).* अस्थि, हाडकां

अस्तीरज *कर्पूमं.* स्त्रीराज्य, त्रियाराज

अस्त्री *अभिऊ. आरारा. नलरा. विक्ररा. वीसरा.* स्त्री

अस्थ *प्रेमाका.* अस्थि

अस्थर **हम्मीप्र.* [चामडी] [सं.आस्तर]

अस्थान **सिंहा(म).* [सभामंडप] [सं. आस्थान]; जुओ असथान

अस्मेव *प्राचीका.* जरूर (सं.अवश्यमेव)

अस्त्रज जुओ अश्रज

अस्वबंधु जुओ अश्वबंध

अह *गुर्जरा. प्राचीफा.* हवे (सं.अथ); *तेरका.* गेय पंक्तिने आरंभे आवतो एक अलंकारार्थ उद्‌गार (सं.अथ)

अहडि *विक्ररा.* हेड, पगमां नाखवानी लाकडानी बेडी

अहनसि, अहनिशि, अहनिसि *आरारा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमिछं. गुर्जरा. लावल. अहर्निश, दिवस अने रात, रोजेरोज

अहमति *गुर्जरा.* अहंभाव (सं.अहं+मति)

अहमेव *अखाका. दशस्कं(२). चंद्रवा. प्रेमाका. हरिख्या.* अहंभाव, अहंकार

अहर *उषाह. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. वीसरा. शृंगामं.* अधर, होठ

अहरुपरु, अहरुंपहरुं *चतुरा. नंदब.* आमतेम [सं.आरात्+परात्]; जुओ अरुंपरुं

अहरुं *अखाका. *अखाछ. चित्तसं.* ओरुं, नजीक, पासे, [अही], [सं.आरात्]; जुओ अरु

अहेरु **अखाछ.* [अहीं, नजीक, पासे] [सं.आरात्]

अहर्धणी *अखेगी.* सूर्य [सं.अहः+गु.धणी]

अहलौ, अहल्यउ, अहिलउ *आरारा. जिनरा.* व्यर्थ, एळे (सं.अफल)

अहल्ल *तेरका.* एक वनस्पति, [संभवतः अफल, झाडूक]

अहव *गुर्जरा. प्राचीका. प्राचीफा.* अथवा

अहवाहुहव *आरारा.* अविधवा अने सधवा – सौभाग्यवती स्त्रीओ (द्विरुक्त प्रयोग); जुआ इहिविसूहिवि

अहवा *आरारा.* अथवा

अहवातन *अभिऊ.* अहेवातण, सौभाग्य (सं.अविधवा+त्वन)

अहवि *चारफा. *प्राचीफा.* *अथवा, *के

अहवि, अहिवि *प्रद्युचु. प्राचीफा. प्राचीसं. विक्ररा.* अविधवा, सौभाग्यवती स्त्री

अहंकार *कादं(ध्रु)-टि.* ब्रह्मभाव, (अहं-ब्रह्मास्मि रूपे अहंपणुं)

अहंकृत्य *अखेगी.* अहंकृति, अहंकार

अहार *देवरा.* आहार

***अहारग (आहारग)** *जिनरा.* आहारक शरीर, [योगबळे प्राप्त अन्य सूक्ष्म शरीर]; जुओ आहारग

अहां *उक्तिर. उपबा.* अहीं

अहिडी, अहेडी *नलाख्या. पंचवा. वीसरा.* शिकारी (सं.आखेटिक)

अहिठाण *ऋषिरा. ऐतिका. विक्ररा. विमप्र. शृंगामं.* अधिष्ठान, स्थान

अहिणव *आरारा. तेरका.* अभिनव, नूतन

अहितूउं *उपबा.* अहित करनारुं

***अहिधर [*अहिवर]** **शृंगामं.* [सर्प]

अहिनशे, अहिनसि, अहेनश *कादं(शा). नलाख्या. विमप्र.* अहर्निश, रातदहाडो, दररोज

अहिनाण, अहिनाणि, अहिनाणी, अहिनांण *आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिका. कृष्णच. गुर्जरा. जिनरा. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. विमप्र. विरापं. वीसरा. शीलक. शृंगामं. षष्प्रि.* एंधाण, एंधाणी, निशानी (सं.अभिज्ञान)

अहिनिस *शृंगामं.* रात अने दिवस [सं.अहर्निश]

***अहियासने [अहियासे]** *ऐतिका.* अनुभव करे, सहन करे [सं.अधि+आस्]; जुओ अहीआसइ

अहिराणी *प्राचीका.* सर्पिणी (सं.अहिराज्ञी)

अहिरु *प्राचीफा.* होठ (सं.अधर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिलउ जुओ अहलौ
अहिलास *शृंगामं.* अभिलाष, इच्छा
अहिलोक *सिंहा(म).* जगत, इहलोक
अहिवर जुओ अहिधर
अहिवा *उक्ति.* विधवा ,(सं.अधवा)
अहिवि जुओ अहवि
अही *चित्तसं.* सर्प
अहीअं *वाग्भवा.* अहीं [सं.अस्मिन्]
अहीआसइ **उपवा. ऋषिरा.* सहन करे (सं.अधि+आस्); जुओ अहिधासने
अहीआसणहार **उपवा.* [सहन करनार]
अहीणुं *उक्ति.* गाय वगरनुं (सं.अधेनुकम्)
अहींकणि *कादं(शा.)* *अहीं नजीकमां, [अहींयां] (सं.अस्मिन्+*कर्णस्मिन्)
अहुण, अहुंण, अहूण *उक्ति. वेताप.* हमणां; आ काळे, ओण (सं.अधुना)
अहुरणी *कस्तुवा. वेताप. सिंहा(शा).* ऋण-मुक्त, (सं.उत्+ऋण)
अहुंण जुओ अहुण
अहूठ *गुर्जरा. चारफा. प्राचीफा. प्रेमाका. षडाबा.* ऊंठ, साडा त्रण (सं.अर्धचतुर्थ)
अहूण जुओ अहुण
अहे *प्राचीफा.* हवे (सं.अथ)
अहेडइ *गुर्जरा.* शिकारमां (सं.आखेटक)
अहेडी जुओ अहिडी
अहेनश जुओ अहिनशे
अहेंली *सिंहा(शा).* हेली, [निरंतर वर्षा]
अह्म *लावल. वसंवि.* अमारुं; *गुर्जरा.* अमे (सं.अस्मद्)
अह्रुपह्रु *कादं(शा).* आसपास, आमतेम (सं.आरात्-परतः)
अंक *कादं(ध्रु).* चिह्न, अभिज्ञान [सं.]
अंक भरतां **नरका.* [आलिंगन लेतां] [हिं.]
अंकुरियइ *गुर्जरा.* अंकुरित थाय
अंकुल्ल *तेरका.* अंकोलवृक्ष
अंके **नरका.* [निश्चित, खरेखर]
अंकोर *अखाका. अखेगी. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* अंकुर; *नंदब. सिंहा(शा).* अंकुर, मूळ, मर्म, रहस्य, भेद
अंकोल *उक्ति.* ए नामनुं वृक्ष, अंकोठ
अंखि *गुर्जरा.* आंख (सं.अक्षि)
अंखी *लावल.* जोईने [सं.अक्ष्]
अंग *आरारा. ऐतिका.* जैन अंग-शास्त्रो; *आरारा.* प्रकारो; *उक्ति.* अंगदेश
अंगउ *वीसरा.* अंग, भाग
अंगउवंग *ऐतिरा.* अंग अने उपांग [नामनां जैन शास्त्रो]; जुओ अंगोवंग
अंगओलगूं *नलरा.* *अंगरक्षक, [अंग-सेवको]
अंगचेन *कामा(शा).* अंग उपरनां लक्षणो [सं.अंग+चिह्न]
अंगण *तेरका. लावल.* आंगणुं [सं.]
अंगद *वसंफा.* बाजुबंध, कांडा परनुं कडुं (सं.)
अंगन्यास *प्रेमाका.* शरीरनां जुदांजुदां अंगोने हाथथी स्पर्शी ते-ते अंगमां मंत्रनुं आरोपण करवानो विधि [सं.]
अंगरखी *उक्ति. प्रेमाका. हम्मीप्र.* अंगनुं – शरीरनुं रक्षण करनार, बख्तर (सं. अंगरक्षिका)
अंगरेची *रूस्तस.* अंग्रेज

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगलूहणउं *षडाबा.* शरीर लूछवानुं वस्त्र (सं.अंग+लूष्)

अंगा *ललिरा.* एक प्रकारनुं बख्तर

अंगारसगडी *उक्तिर.* सगडी (सं.अंगारशकटिका)

अंगारूउ *नलरा.* अंगारारूप, [दाहक]

अंगारो *अखाका.* जुवार इत्यादि अनाजनो एक रोग, तेथी बीज-दाणा बळी जाय छे

अंगित *ऋषिरा. नलरा.* संकेत, इशारो, चेष्टा (सं.इंगित)

अंगीकरे, अंगेंकरे *ऋषिरा. गुर्जरा. देवरा. प्रेमाका. षडाबा.* अंगीकार करे, स्वीकारे; *अखाका.* अंगीकार करे, *पकडे, [ले, धारण करे]

अंगीठउ, अंगीठडी, अंगीठी *उक्तिर. ऋषिरा. प्रेमाका.* सगडी (सं.अग्निष्ठिका)

अंगुल *गुर्जरा.* आंगळ (माप) (सं.)

अंगुलफरस *नलरा.* आंगळीनो स्पर्श

अंगुल मोड्या *आरारा.* टाचका फोड्या, निंदा करी

अंगूठी *प्रेमाका.* हाथनी आंगळीए पहेरवानी वींटी [सं.अंगुष्ठ+इका]

अंगूंथल **कृष्णबा.* [आंगळीओ] [सं.अंगुलस्थल]

अंगूथली **रूपच.* [आंगळी]

अंगेंकरे जुओ अंगीकरे

अंगोल *ऐतिका.* पुत्र

अंगोवंग *जिनरा.* [शरीरनां] अंगोपांग, [ए निर्णित करतो नामकर्मभेद] [जै.]; जुओ अंगउवंग

अंगोहल *विमप्र.* अंघोळ, स्नान [सं.अंगहोल]

अंघोल, अंघोळ, अंघोलि *कृष्णच. प्रेमाका. विमप्र.* स्नान, नाहवुं ते, माथुं पलाळ्या विनानुं स्नान [सं.अंगहोल]

अंघोळवुं *आनंस्त. दशस्कं(१). *प्रेमाका.* नाहवुं

अंच **अखाका.* [अग्निनी आंच]; *गुर्जरा.* दुःख, बळतरा (सं.अर्चिष्)

अंच- **ऋषिरा. प्राचीसं.* अर्चवुं, पूजवुं; **प्राचीफा.* [अर्चवुं, कपाळे लगाडवुं]

अंचल *उषाह.* आंचळ, [स्तन, छाती] [सं.]

अंज- *तेरका.* आंजवुं (सं.)

अंजण *आरारा(व). तेरका.* अंजनवृक्ष

अंजत *प्राचीफा.* काजळ आंजेल (सं.अञ्जित)

अंजल, अंजळ *आरारा. वीसरा.* अंजलि, प्रणाम

अंजुलि *अंबरा.* अंजलि, [हाथजोड, प्रणाम]

अंड *अखाका.* ईंडुं [सं.]

अंडुउ *षडाबा.* जेना हाथमां हथोडो छे ते, [हथोडाथी काम करनार व्यवसायीनुं नाम]

अंडुय *षडाबा.* हथोडो

अंत *कादं(ध्रु). वसंवि.* भाग, छेडो; *लावल.* अणी; *कादं(ध्रु).* सुधी, [अंते]

अंतक्षर *गुर्जरा.* अंत्य अक्षर

अंतगड *प्राचीफा.* ए ज जन्ममां मुक्ति पामनार (सं.अंतकृत्)

अंतर *विमप्र.* भेदभाव

अंतरउ *गुर्जरा.* आंतरो, फरक (सं.अंतरक)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतर करी *कामा(शा).* वच्चे पडदो राखी

अंतरगत, अंतर्गत *दशस्कं(२).* अंतःकरण; *प्रेमाका.* अंतरमां

अंतरगति *नलाख्या.* मनमां (सं.अंतर्+गत)

अंतरघट *नरप(द).* मनमां

अंतरद्वार *चित्तसं.* मर्म, रहस्य

अंतरपथ *तेरका.* वच्चेनो मार्ग

अंतरपुर *दशस्कं(२).* अंतःपुर

अंतरभूत *चित्तसं.* अंदर समायेलुं

अंतरमांहां *चित्तसं.* अंदर

अंतराइ *ऋषिरा. नरका.* अंतराय, अडचण, [विघ्न]; *प्रेमाका.* अंतराय, जुदाई, तफावत

अंतराइ, अंतराय *आनंस्त. गुर्जरा. नलरा.* अंतरायकर्म, जे शुभ कार्योमां विघ्नरूप थाय छे (जै.)

अंतराल *गुर्जरा. विराप.* *मध्य भाग, [अंतरीक्ष] (सं.)

अंतरालि *ऋषिरा.* वच्चे

अंतरि, अन्तरि *गुर्जरा. *प्रबोप्र. विराप.* [अंतरमां], अंदर, वचमां

अंतरे *तेरका.* वच्चेवच्चे (सं.)

अंतर्गत जुओ अंतरगत

अंतर्गृह *कादं(ध्रु).* अंतःपुर

अंतर्ध्यान *दशस्कं(१).* अंतर्धान, [अदृश्य]

अंतर्य *चित्तसं.* अंदर

अंतस्कर्ण *दशस्कं(१).* अंतःकरण

अंति *आरारा.* अंदर, -मां

अंतेउर *अंबरा. आरारा. उक्तिर. ऐतिरा. कादं(शा). गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. प्राचीफा. लावल. विमप्र. वीसरा. सिंहा(म). हम्मीप्र.* अंतःपुर, राणीवास; राणीओ

अंतेउरि, अंतेउरी, अंतेवरी *अंगवि. अंबरा. आरारा. उक्तिर. उपबा. उषाह. कादं(ध्रु). लावल. विक्ररा. हम्मीप्र.* राणीओ (सं.अंतःपुर उपरथी)

अंतेवारा **नेमिछं.* [राणीओ]

अंत्यावरी *मदमो.* राणी (सं.अंतःपुर+इका)

अंत्रस *प्रेमाका.* आंतरो, जुदाई

अंथ *अखाछ. चित्तसं. प्रेमाका.* सहेज पण, लेश पण, [साव, बिलकुल]; **मदमो.* [साव, बिलकुल, पूरेपूरुं]

अंदर *देवरा.* इंद्र

अंदोह *आरारा. *गुर्जरा. जिनरा. नलरा. प्रद्युचु. विक्रच. *विमप्र. *शृंगामं. सिंहा(म).* चिंता, विनाशण, खेद

अंद्र *उषाह. प्राचीका.* इन्द्र

अंद्रगोप *प्राचीका.* चोमासामां थतुं एक जीवडुं (सं.इन्द्रगोप)

अंद्रजाल *प्राचीका.* इंद्रजाल, एक प्रकारनुं जादु

अंद्रासन *प्राचीका.* इन्द्रनुं आसन (सं. इन्द्रासन)

अंद्री *प्राचीका.* इन्द्रिय

अंद्रीव्रत्य *प्राचीका.* इन्द्रियवृत्ति, [इंद्रिय-व्यापार, इंद्रियसुख]

अंध *लावल.* *अंधारी, *काळी, [*अर्ध]

अंधकार *कादं(ध्रु).* अंधापो

अंधकूप *विक्रच.* [न देखाय तेवो,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कशाकथी ढांकेलो, छानो कूवो]

अंधण *षष्टिप्र.* अंधापो

अंध-धंध जुओ धंध, धंध-धुवारी

अंधल *सम्यचो.* आंधळो

अंधमूंधपणइ *उक्तिर.* ऊंधमूंधपणे, ऊंधे माथे, बेभानपणे [सं.अवमूर्धा+मूर्धा]

अंधेर *चित्तसं.* अंधकार [सं.अंधकर]

अंध्य *नलरा.* आन्ध्रप्रदेश

अंन, अन्न *आरारा. गुर्जरा. चतुचा. तेरका.* अन्य, बीजुं

अंनमी *चंद्रवा.* न नमे तेवो, अणनम

अंन्ना, अन्या *चंद्रवा.* दोष, वांक, खोड-खांपण

अंब *उषाह. चित्तसं.* पाणी (सं.अम्बु)

अंब *आरारा.* अंबा, माता

अंब, अंबउ *अभिऊ. आरारा(व). तेरका. प्राचीफा. लावल. वीसरा. षडाबा.* आंबो (सं.आम्र)

अंबर *कामा(शा). *नरका.* वस्त्र [सं.]

अंबर *तेरका.* एक वनस्पति

अंबवण *तेरका. प्राचीफा.* आंबावाडियुं (सं. आम्रवन)

अंबा *मोसाच.* माता [सं.]

अंबाइय *प्राचीसं.* अंबामाता, अंबाई

अंबाएवि *ऐतिका.* अंबादेवी

अंबाड्य *तेरका.* एक वनस्पति, अंबाडो (सं.आम्रातक)

अंबार *मोसाच. शृंगामं. हरिख्या.* ढगलो, भंडार

अंबाविउ *प्राचीसं.* प्रचलित कर्यो, प्रवर्ताव्यो

अंबिक *तेरका. नलरा.* अंबिका देवी

अंबिकि *गुर्जरा.* अंबिका देवी

अंबिल *तेरका.* आंबेल, [एक जैन तप-प्रकार, जेमां छ प्रकारना विकृतिजनक आहारनो त्याग होय छे] (सं.आचाम्ल)

अंबिलीय *तेरका.* आमली (सं.अम्लिका)

***अंबोषण [अभोखण]** **अभिऊ.* [सत्कार रूपे पाणी सींचवुं ते]; जुओ अभोखण

अंस *कादं(धु). *कादं(शा).* *लगार

अंसु *तेरका.* अश्रु

आइ *प्रबोप्र.* आयु

आइ, आई *कादं(शा). प्राचीका.* माता, (*सं.आर्या) [सं.*आप्पिका]

आइ *गुर्जरा.* आ वडे

आइ *आरारा.* आवीने

आइखइ *आरारा.* कहे (सं.आचक्षते)

आइम *जिनरा.* आदिम, [पहेलुं] [प्रा.]

आइवुं *आरारा.* आववुं

आइस *गुर्जरा. प्रबोप्र. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). स्थूलिफा.* आदेश, आज्ञा

आइसु *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* आवुं (सं.एतादृश)

आई जुओ आइ

आउ *जिनरा.* आयु [नामनां कर्मपुद्गल], [कई गतिमां केटलो काळ गाळवो एनुं निर्माण करतां कर्म] [जै.]

आउ, आऊ *गुर्जरा. सदमो. विमप्र.* आयुष्य (सं.आयु)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउकार *जिनरा.* आवकार, स्वागत

आउख, आउखउ, आऊखउ *उक्तिर. उपबा. ऐतिका. कामा(शा). गुर्जरा. जिनरा. प्राचीसं. विमप्र.* आयुष्य

आउज *गुर्जरा. प्राचीसं.* आतोद्य, एक वाद्य

आउध *नलाख्या. नेमिछं.* आयुध, शस्त्र

आउधशालां *नेमिछं.* शस्त्रशाळामां

आउलि *आरारा(व). शृंगामं.* आवळ (सं. आहुल्य)

आउव जुओ वुज्ञोय

आउवुज्ञोय जुओ वुज्ञोय

आऊ जुओ आउ

आऊखउ जुओ आउखउ

आएस *ऐतिका. तेरका. प्राचीफा.* आदेश, अनुज्ञा

आक *अखाका. अखेगी. आरारा(व). उक्तिर. नरका. वीसरा.* आकडो (सं.अर्क)

आक-इंधण *ऋषिरा.* आकडानुं बळतण (सं.अर्क+इन्धन)

आकडिइ (दीवटीआ कडिइ) **विमप्र.* [गोळाकारे वींटळायेला मशालची] [सं.दीपवर्तिक + सं.कटकित, प्रा. कडइअ]

आकमदार *आरारा(व).* आकडो ए ज मदार के मंदार (सं.अर्कमदार)

आकरखवुं *चतुचा.* आकर्षवुं, [पासे खेंचवुं]; *दशस्कं(१).* आकर्षवुं, [खेंची लेवुं, लई लेवुं]

आकरसी *ऋषिरा.* आकर्षीने, खेंचीने

आकर्षइ *उक्तिर. प्रेमाका. षडाबा.* खेंचे, ताणे

आकरो *चित्तसं.* न छूटे तेवो, दृढ

आकलइ *उक्तिर. गुर्जरा. *नलाख्या.* समजे, जुए (सं.आकलयति)

आकलूं *कादं(ध्रु).* गीच (सं.आकुलम्)

आकंप *गुर्जरा.* कंप, धुजारी (सं.)

आकंपियउ *गुर्जरा. स्थूलिफा.* कंप्यो

आकारण *प्रद्युचु.* नोतरुं, तेडुं, कहेण, संदेशो (सं.)

आकुड्य *षडाबा.* दीवालने अढेलीने बेसवुं ते (सं.कुड्य परथी)

आकुलउ, आकुळउ *उपबा.* व्याकुळ, [घेरायेलो]; *वीसरा.* आकळो, रोषीलो, (सं.आकुल); *गुर्जरा.* व्याकुळ, [व्यस्त, लीन]; *विराप.* व्याकुळ, अस्वस्थ

आक्रमइ, आक्रमिइ *उक्तिर. उपबा. षडाबा.* आक्रमण करे, हल्लो करे, चढी आवे

आक्रंदइ *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* आक्रंद करे, रडे

आक्रुसिउ *उक्तिर.* निंदित, शापित (सं. आक्रुष्टः)

आक्षर जुओ ए आक्षर

आक्षान *चंद्रवा. मदमो.* आख्यान

आक्षेप *चित्तसं.* विस्तार [सं.]

आखइ *उक्तिर. ऐतिरा.* बोले (सं.आख्याति)

आखउ *उक्तिर. वीसरा.* चोखा (सं.अक्षत)

***आखउंडली [आंखउडली]** *उक्तिर.* पोपचुं (सं.अक्षिपटलिका)

आखडी *आरारा. ऋषिरा. ऐतिरा. जिनरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमिछं. प्रेमाका. विक्रच. विमप्र. शृंगारं. जिनरा. व्रत, नियम, बाधा, मानता

आखडे *प्रद्युचु.* ठोकर खाय; **अखाका. कादं(शा). नेमिछं. *प्रेमाका.* लथडी पडे; **नरका.* [लडे] (सं.आस्खलति) [सं. *आक्षुटति]

आखपाखनो नेह जुओ आंखपांखनो नेह

आखर *षडाबा.* अक्षर; *वीसरा.* पत्र

आखंडल *विमप्र.* समग्र भूमंडळ

आखा **प्रद्युचु.* [नाम, ओळखाण] [सं. आख्या]

आखा *उक्तिर.* चोखा (सं.अक्षताः)

आखा तीज, आखा त्रीज *उक्तिर. ऐतिका.* अक्षयतृतीया, [अखा त्रीज]

आखा पाणी *प्रद्युचु.* चोखा अने पाणी (सं.अक्षत) [+सं.पानीय]

आखी अणी *प्रेमाका.* अक्षत अणीए, संपूर्ण सलामत; जुओ अणिअ आखइ

आखुडइ *उक्तिर.* आखडे, ठोकर खाय (सं.आस्खलति) [सं.*आक्षुटति]

आखे *प्रेमाका.* अक्षत, चोखा

आखेट *पंचवा. प्राचीफा. हरिख्या.* शिकार, मृगया (सं.)

आखेप *जिनरा. प्रबोप्र.* आक्षेप, [नाखवुं ते]; आळ, आरोप, [टीका]; *ऐतिरा.* आक्षेप, [परिश्रम, यत्न] [रा.]

आख्यपाख्य *नरप.* आसपास, फरते (सं.पार्श्व); जुओ आंखपांखनो नेह

आख्यान *कादं(शा).* वात, कथा (सं.)

आगइ *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नरका. नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा. शृंगारं.* आगळ, अगाउ, पूर्वे, पहेलां, अगाउथी (सं.अग्रे); *लावल.* *अग्रिमपणे, [पूर्वेथी]; *गुर्जरा. विराफ. षडाबा.* आगळ, समक्ष; *षडाबा.* आगळ, हवे पछी; *विराफ.* पूर्वेनुं

***आगउ (आगुओ)** *चित्तसं.* अग्रयायी, आगळ चालनार [सं.*अग्रगू]

आगन्या *आरारा. कादं(शा). नलाख्या.* आज्ञा

आगम *आरारा.* आगमन; *प्रेमाका.* भविष्यनुं दर्शन, [थनार वस्तुनी एंधाणी]; **ऋषिरा. विक्ररा.* शास्त्र; जुओ अगम

आगमाथुं *प्रेमाका.* अवाथुं

आगमिचि *उषाह.* आगमच, आगळथी; [तरत ज, एकाएक]

आगमो *अभिऊ.* मोवडी (सं.अग्रिम)

आगर *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. ऐतिरा. तेरका.* भंडार, समूह (सं.आकर); *अखाका.* सागर, [पाणीनो] भंडार

आगर **ऋषिरा. ऐतिका. देवरा. नेमिछं.* मकान, घर, निवास (सं.आगार)

आगरउ *उक्तिर.* आग्रा नगर (सं. अर्गलापुरम्)

आगल *उक्तिर.* आगळो (सं.अर्गला)

आगल, आगलउ, आगळो *आरारा. ऐतिरा. गुर्जरा. चंद्रवा. नलरा. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. मदमो. वीसरा.* आगळ, आगळ पडतो, अग्रणी, चडियातो, श्रेष्ठ (सं.अग्र परथी)

आगलि, आगळि *आनंस्त. उक्तिर. उपबा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*कदं(शा). गुर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. *विराप. वीसरा.* आगळ, पासे, समक्ष (सं.अग्र+स); *उपबा. रूपच. लावल. शीलक.* आगळ, [अग्रस्थाने]; *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आगळ, समक्ष, [-नी तुलनामां]; *उपबा. गुर्जरा.* पहेलां, पूर्वे; *आनंत. लावल.* आगळ, [हवे पछी]

आगतिउ **गुर्जरा.* [अग्रज, मोटो]

आगतिषु *शृंगामं.* आगळथी, पहेलांथी

आगळे जुओ आगल

आगल्यो *अखाका.* आगळनो, *भूत-भविष्यनो, [*प्रत्यक्ष पदार्थनो]

आगामिउं *षडाबा.* आगामी, आवनारुं

आगार *अखाका. प्रेमाका.* निवासस्थान, रहेठाण, [मकान] [सं.]

आगास *उक्तिर.* आकाश

आगासगामिनी *षडाबा.* आकाशगामिनी विद्या

आघि *अभिउ. नलाख्या.* अगाउ, पूर्वे (सं.अग्र)

आघि, आघी *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. षडाबा. षष्टिप्र.* आग (सं.अग्नि)

आग्नेय *गुर्जरा.* अग्निमय (बाण) (सं. आग्नेय)

आग्रेसउ *उक्तिर.* अग्रेसर

आग्रेसउं, आग्रेसलं *उक्तिर.* आगळ, आगळनुं (सं.अग्र); *आनंत.* हवे पछीनुं; *उपबा. षडाबा.* आगळनुं, पूर्वेनुं, आगळ रहेलुं

आग्रेवाण *प्राचीसं.* आगेवान

आगी जुओ आगि

आगुओ जुओ आगउ

आगुनी *नरका.* अगाउनी, पहेलांनी

***आगुं [आंगुं]** *नलरा.* एक प्रकारनुं बख्तर (सं.अंग परथी)

आगे *चित्तसं.* आगळ, पहेलां

आगेवाणि **विक्रच.* [आगेवान, अग्रणी, आगळ चालनार]; जुओ अगेवाणि

आघ **विक्रच.* [पासे, नजीक] (सं.अग्र)

आघउ **अभिऊ. *नलाख्या. प्रद्युचु. षडाबा.* [पोताना स्थळथी] आगळ; *आरारा. उक्तिर.* [पोताना स्थळथी] आगळ, [बीजानी नजीक]; *नरप(द). गुर्जरा. विराप. *षडाबा.* आगळ, नजीक, पासे], समक्ष (सं.अग्र परथी)

आघलउ *विमप्र.* नजदीक (सं.अग्र)

आघाट **नलरा.* [सीमा, चारे सीमा, चारे सीमा साथे] [सं.]; जुओ अघाट

***आ धी** [*आ धी] *गुर्जरा-शु.* आ विचार

आघुं, आघेरुं *अखाका. नलाख्या.* [आगळ], *दूर; *चित्तसं.* आगळ, आगळनुं, आगळनी स्थिति

आचमइ *उक्तिर.* आचमन करे (सं. आचामति)

आचरणी *हरिख्या.* धार्मिक क्रिया आचरतुं, आचार पाळतुं

आचाम्ल *षष्टिप्र.* व्रतविशेष, जेमां लूखुंसूकुं खावानुं होय छे, आंबेल [सं.] (जै.)

आचारज, आचारिज *अखाका. अखेगी. आरारा. उक्तिर. प्रेमाका.* आचार्य

आचारी *हरिख्या.* आचार पाळनार (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यांस *उक्ति.* आचार्यवर (सं.आचार्य-मिश्राः)

आच्छिंदइ *उक्ति.* आंचके, झूंटवी ले (सं.आ+छिद्)

आछइ *आरारा. जिनरा. प्राचीसं.* छे [सं.आक्षेति)

आछउ **गुर्जरा.* [भले रह्युं, पडतुं रह्युं]

आछउं *प्राचीफा.* *झीणुं, [सुंदर]; *उक्ति. वीसरा.* सुंदर, सरस (सं.अच्छ)

आछटे *दशस्कं(२). प्रेमाका.* पछाडे, झापटे; *हरिख्या.* पछाडा खाय

आछडतां *प्रेमाका.* पछाडतां

आछण *ऐतिरा. *नलरा. लावल. षडाबा.* नीतरामण, आछरेलुं पाणी; जुओ इक आछण

आछणची (आछण चीनउ भात) **जिनरा.* [चीणा भात – एक प्रकारना जंगली चोखा – नुं नितरामण, धोवण]

आछाई *प्रद्युचु.* आच्छादन करी (सं. आच्छादित)

आछोटई *उक्ति.* पछाडे (सं.आछोट्यति)

आजतां जुओ जतां-आजतां

आजूणउं, आजूनुं *उक्ति. कृष्णच. जिनरा. *षडाबा.* आजनुं, अद्यतन, हमणांनुं [सं.अद्य+खलु+गु.नउं]

आज्य *अखेगी. प्रेमाका.* घी (सं.)

आटारणमां गई *रूस्तस.* अटामणमां गई, धूळधाणी थई

आटारेहण जाय *आरारा.* अटामणमां जाय, नकामुं नीवडे

आटीने *चतुचा.* ?

आठकाठ *अखाछ.* आटकाठ, कमठाण

आठगुणउं *गुर्जरा.* आठ गणुं (सं.अष्ट-गुणकम्)

आठमि *उक्ति. उपबा.* आठम (सं.अष्टमी)

आठवइ *उषाह.* स्थापित करे, विचारे; **गुर्जरा. *विराप.* योजे, विचारे, गोठवे; *लावल.* मूके, गोठवे (सं.आस्थापयति)

आठु *मदमो. वेताप.* आठेय (सं.अष्ट+खलु)

आठोठ *अखाछ.* व्यापेलुं

आठोडवुं **अखाका.* [खंखेरवुं]

आड, आड्य *अखाका.* अंतराय, विघ्न

आड *चंद्रवा.* *हठ [करीने]

आडइ **नेमिछं.* [हठे, आडाइए]; **जिनरा.* [शरणमां] [रा.]; *प्रेमाका.* वच्चे, [मददे] [रा.]; जुओ आडौ

आडउ *जिनरा.* हठ, [आडाई, अडपलुं]

आडण *उक्ति.* अंगमंडन, अंगशोभा

आडणी *गुर्जरा. लावल.* जमती वखते थाळी मूकवानो पाटलो; *विमप्र.* अढेलीने बेसवा माटेनुं आसन, [*थाळी टेकववा माटेनो पाटलो]

आडल *मदमो.* छंदविशेष, [अडिल्ल]

आडाखोडी *लावल.* *अनादर, [आडखीली, विघ्न]

आडाबंग *उक्ति.* अडबंग, ढंगधडा विनानुं, विलक्षण, अटपटुं

आडांत्रेडां *उपबा. प्राचीसं.* आडांअवळां, वांकां

आडि *ऋषिरा.* आड, [कपाळमां करवामां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवती रेखा]

आडि *उक्ति.* एक पक्षीनुं नाम (सं.आटिः)

आडि *शृंगामं.* जीद, हठ (दे.अड्ड)

आडी लीट वळी जुओ वळी आडी लीट

आडे जुओ सीध्यां आडे

आडे चड्यो *प्रेमाका.* तोफाने चड्यो, [हठे भरायो]

आडौ [आडौ आसै] *जिनरा.* काममां आवशे, [मददरूप थशे] [रा.]; जुओ आडइ

आड्य जुओ आड

आढउ *उक्ति.* अनाजनुं एक माप (सं. आढकः)

आढवइ *उक्ति.* आरंभे [दे.]

आण, आंण *अखाका. आरारा. उक्ति. उपबा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. देवरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* आज्ञा, सत्ता; *चतुचा. वीसरा.* आज्ञा, सोगंद, मनाई

आणइ *आरारा. कादं(शा). लावल.* आ(मां), आ (वडे)

आणनहार *उक्ति.* आणनार (सं.आनय्)

आणंदइ *वसंवि.* आनंद आपे; *वीसरा.* आनंद करे

आणंदिण *ऐतिका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आनंदजनक

आणा *ऐतिका. ऐतिरा.* आज्ञा

आणावी *आरारा.* बोलावीने [सं.आनय्]

आणि *नलाख्या.* आण, शपथ [सं.आज्ञा]

आणि *अभिऊ.* आणा माटे, [तेडुं करवा] (सं.आ+नय्)

आणि, आणी *आरारा. चित्तसं. प्रेमाका.* आ

आणीतउं *उक्ति.* अणातुं, लवातुं (सं. आनीयमानम्)

आणी वार *दशस्कं(१).* आ वारे, आ वखते

आणे *आरारा. चतुचा. प्रेमाका.* आ

आणेश कान *अखाका.* सांभळीश

आतपत्र *आनंस्त.* छत्र [सं.]

आतमलक्ष *चित्तसं.* आत्मबोध

आता *कादं(धु). कादं(शा). दशस्कं(१). नरप(द). प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका.* पुत्रने लाडमां करातुं 'बापा'ना प्रकारनुं संबोधन [सं.*अत्त]

आती *प्रेमाका.* आटली

आतुरी *प्रेमाका.* आतुरताभर्यो, [कामातुर]

आतुंपोतुं **विमप्र.* [मूडी, थापण]

आत्थि *हम्मीप्र.* धन, साधनसामग्री [सं. अस्ति]; जुओ आथ, आथि

आत्मनिष्ठित *आनंस्त.* आत्मनिष्ठ, [आत्म-भावमां स्थित]

आथ *अखाका. अखाछ. अंबरा. जिनरा. देवरा. सिंहा(शा).* धन, पूंजी, समृद्धि [सं.अस्ति]; जुओ आथ, आथि

आथडी *नलाख्या.* अथडाई, [भटकाई पडी]

आथमण *षडाबा.* आथमवुं ते (सं.अस्तमन)

आथर *अभिऊ. उक्ति.* आच्छादन, पाथरणुं, पशुनी पीठ उपर नाखवामां आवती डळी (सं.आस्तरः)

आथि *आरारा.* छे (सं.अस्ति)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आथि, आथ्य *अखाका. अंबरा. आरारा. कस्तुवा. नंदब. प्राचीका. मदमो. विक्रच. विमप्र. वेताप. हम्मीप्र.* पूंजी, धनवैभव, साधनसंपत्ति (सं.अस्ति); जुओ आत्थि

आथो **देवरा.* [पूंजी, संपत्ति, (प्रास माटे 'आथ'नुं 'आथो')]

आथ्य जुओ आथि

आवउ *उक्तिर.* आदु (सं.आर्द्रकम्)

आवक्षण (आ वक्षण) **शृंगामं.* [आ साचुं]

आद पुरुष *प्रेमप.* आदिपुरुष विष्णु

आदर **अखाका.* [आश्रय]; *अखाछ. अखेगी.* प्रयत्न

आदरण *जिनरा.* स्वीकार

आदरवुं *अखाछ. अखेगी. *प्रेमाका.* प्रयत्नशील थवुं, [प्रवृत्त थवुं, करवुं]; *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. *आनंस्त. आरारा. *नरका. लावल.* स्वीकारवुं, आश्रय लेवो, पामवुं; *आरारा. गुर्जरा.* विवाह करवो, सगपण करवुं; *उपबा. नलाख्या.* *शरू करवुं, [मांडवुं, करवुं]

आदरी **गुर्जरा.* [आदरपूर्वक]

आदानभय *आनंस्त.* मागणी मुजब मळशे के नहीं तेवो भय

आदिक्षर *गुर्जरा.* आदि अक्षर

आदित, आदीत *कामा(त्रि). कामा(शा).* आदित्य, सूर्य

आदिशवुं *उक्तिर.* आदेश आपवो

आदिस *देवरा.* आदेश, आज्ञा

आदीत जुओ आदित

आदीतवार *कामा(त्रि).* रविवार

आदे *देवरा.* आदि, [वगेरे]

आदेशकार *ऐतिका.* आज्ञाकारी, [आज्ञानुवर्ती, आज्ञा पाळनार]

आदेसडइ *लावल.* आदेशथी, आज्ञाथी

आद्य *चित्तसं.* -थी मांडीने

आद्ये देई जुओ देई

आद्रहणु *उक्तिर.* आंधण, उकाळवुं ते [सं. आदहन]

आध, आध्य *अखाका. अखाछ. कामा(त्रि). कामा(शा).* आधि, मानसिक पीडा, चिंता

आधउ *उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा.* अर्धो

आधरण *उक्तिर.* आंधण, उकाळवुं ते [सं. आदृह]

आधाकर्मी *षष्टिप्र.* साधु माटे खास तैयार करेलुं भोजन, जे जैन साधु माटे लेवानुं निषिद्ध छे (प्रा.आहाकम्मिय) (जै.)

आधानु *गुर्जरा.* गर्भाधान

आधावेध *प्रेमाका.* हूंसातूंसी, अंदरोअंदरनो विरोध

आधीन *चित्तसं.* परवश, गौण, ऊतरतुं

आधेन *मदमो-२.* अध्ययन

आधोरण *कादं(शा). गुर्जरा.* हाथीनो महावत (सं.)

आध्य जुओ आध

आध्यार *अंबरा.* आधार

आध्ये-व्याध्ये *नरका.* आधि अने व्याधिऐ

आनपान *षडाबा.* श्वासोच्छ्वास (सं.आन+प्राण)

आनंदए *वसंफा.* आनंद आपे

आनुपूरवी *ऐतिका.* [नाम]कर्मनो एक भेद, [वर्तमान शरीर मूक्या पछी एने ऊपजवाना स्थळ तरफ लई जनार कर्म] [जै.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आन्या *आरारा.* आज्ञा

आप *आनंस्त. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. दशस्कं(१). नलाख्या. प्रेमाका. लावल. वीसरा.* पोतानी जात, पोते (सं.आत्मा); *कादं(ध्रु). दशस्कं(२). प्रेमाका.* शरीर, स्वरूप; *अखाका. चित्तसं.* आत्मा, आत्मस्वरूप, आत्मभाव; अहंभाव; जुओ आपो

आप *अखाका.* पाणी (सं.अप्)

आपइणी *उक्तिर.* जाते, पोतानी मेळे

आपडइ *उक्तिर.* आवी पडे (सं.आपतति)

आपडियइ *षडाबा.* आवी पडे

आपण *षष्टिप्र.* पोतानुं; *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आपणुं, आपणे, आपणी वच्चे (सं.आत्मन्)

आपणइ *आरारा. लावल.* पोताने

आपणउं *आरारा. उक्तिर. उपबा. दशस्कं(२). नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. विराप. वीसरा. षडाबा.* पोतानुं (सं. आत्मनः); *चित्तसं.* पोतापणान, आत्मतत्त्वनुं

आपणडइ *जिनरा.* आपणे, पोताने

आपणपइ *आरारा.* आपणाथी, आपणे, पोते; जुओ आपोपे

आपणपउं, आपणपुं *आरारा. उपबा. कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. षडाबा. षष्टिप्र.* पोतानी जात, पोते (सं. आत्मन्+त्व); *कादं(शा).* आत्मत्व, स्वत्व; जुओ आपोपुं

आपणहार *गुर्जरा.* आपनार

आपणी घायउ *उक्तिर.* आत्मसंतुष्ट (सं.आत्मना ध्रातः)

आपणीहीज *आनंस्त.* आपोआप ज, [पोतानी मेळे]

आप-नैवेदी *प्रेमाका.* पोतानी रसोई पोते बनावी जमनारो, स्वयंपाकी

आपन्या *अखेगी.* शाता, [तृप्ति]

आपहणी *आरारा. उपबा. *विक्रच.* आपमेळे, आफणिये, जाते

आपहे *षडाबा.* जाते

आपापणा, आप्पपणा *आनंस्त. आरारा. चंद्रवा. चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. विक्रच.* पोतपोताना, एमना पोताना, पोताना, आपणा

आपापर *अखाका. अखेगी.* पोते अने अन्य

आपुण *प्राचीफा.* पोतानी (सं.आत्मन्)

आपुलउ *चारफा. नरका. नेमिछं. प्राचीसं.* पोतानुं (सं.आत्म परथी)

आपुं *अखाछ.* पोतापणुं; जुओ आपोपुं

आपे *वीसरा.* आपणे

आपेथ्य *चंद्रवा.* *आप्येथी, [आपे] [प्रासार्थे 'आपे'नुं आपेथ्य]

आपो *अखाका.* अहंभाव; आत्मा; जुओ आप

आपोपुं *अखेगी. ऐतिरा. *नरका.* पोतापणुं, स्वरूपत्व; *अखाका.* आत्मतत्त्व; *चित्तसं.* पोतापणुं, अहंभाव, हुंपणुं; *अखाका. *अखेगी.* अहंभाव, देहभाव; जुओ आपणपउं, आपुं

आपोपे *दशस्कं(२). नरप(द). मदमो.* आपे, जाते, पोते; जुओ आपणपइ

आपोह *ऋषिरा.* विचारणा, [तर्क] (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपोह)

आप्पपणा जुओ आपापणा

आप्यायमान *कादं(शा).* पोषित थतुं, भरावदार थतुं (सं.)

आप्लवन *कादं(शा).* कूदवुं ते (सं.)

आफणी, आफणिये, आफणीए *अखाका. अखेगी. अंबरा. उषाह. कादं(शा). कामा(त्रि). कामा(शा). चतुचा. चित्तसं. दशस्कं(१). नरका. प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका. सिंहा(म). हरिख्या. हरिवि.* पोतानी मेळे, आपमेळे, आपोआप

आफरिउ *गुर्जरा. विराप.* आफरो चडेलुं, [उन्माद चडेलुं]; *प्रद्युचु.* आफरो चडेलुं, फूलेलुं (सं.आ+स्फुर्) [सं.आस्फर्]

आफलइ, आफळइ *गुर्जरा. चित्तसं. प्रेमाका. *शृंगामं.* अथडाय, [भटकाय]

आफाणी *जिनरा.* पोते, जाते ज

आभ *दशस्कं(२).* आभा

आभ अधारी *प्राचीफा.* कांचळी माटेनुं एक कीमती काळुं वस्त्र

आभउं, आभूउं *उक्तिर. नलरा.* वादळुं (सं.अभ्र)

आभडछोत *अखाछ.* आभडछेट, छूताछूत

आभडवुं *अखाका. हरिख्या.* अडकवुं

आभर्ण *नलाख्या.* आभरण, घरेणुं

आभले *कादं(शा).* आकाशमां (सं.अभ्र परथी)

आभसे *चतुचा.* वारंवार करे (सं.अभ्यस्)

आभा *ऋषिरा.* वादळ (सं.अभ्र)

आभाषी जुओ आभीषी

आभिडइ *उक्तिर.* -नी तरफ जाय, मळे, भेगुं थाय; *गुर्जरा.* अथडाय, स्पर्शे (प्रा. अब्भिड्)

आभिओगिक *षडावा.* देवोनो एक प्रकार (जै.) (सं.आभियोगिक)

आभीर *नलरा.* देशविशेष, आभीरोनो – आहीरोनो देश

***आभीषी [*आभाषी] *षडावा.* [कही]**

आभुक्षण *मदमो.* आभूषण

आभूउं जुओ आभउं

आभूयानुं *उक्तिर.* प्रस्फुटित थतुं, अंकुरित थतुं (सं.उद्भिद्यमानम्)

आभोखइ *आरारा.* सत्कार रूपे पाणीनुं सिंचन करवामां (सं.अभ्युक्षण); जुओ अभोखउ

आभोखो **जिनरा.* [*उपभोग]

आभ्यंतर *चित्तसं.* अभ्यंतर, अंदर

आभ्र *दशस्कं(१).* अभ्र, [आकाश, वादळ]

आभ्रण *अखाका.* आभरण, शणगार

आम *उषाह. कर्पूमं.* अमारा, मारा (सं. अस्मद्, प्रा.अम्हज); *नलरा.* अमे; पोताना; मारा

आमखि **विमप्र.* [भक्ष्य] (सं.आमिष)

आमण *चतुचा.* गूंथणी ?

आमणदूमणी *आरारा. जिनरा. प्रद्युचु.* निराश, उदास, सर्चित (सं.अमनदुर्मन); जुओ ऊमणदूमणउ

आमय *अखेगी. प्रबोप्र.* रोग (सं.)

आमलउ, आमळउ *आरारा. *जिनरा. नरका. *प्रबोप्र. ललिरा.* वळ; द्वेष,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खार; रीस; *विमप्र.* *गूंच, *मर्म, [*वळ, *वर्तुळाकार विस्तार]

आमलवेत्तस *उक्तिर.* रसोईमां खटाश माटे वपराता आंबली, कोकम जेवा पदार्थ (सं.आम्लवेतस), अमलबेत – एक लताफळ [रा.]

आमलसारउ *उक्तिर. तेरका.* आमलक, मंदिरशिखरना कळश नीचेनो भाग

आमलाग्रमाण **पंचवा.* [आमळा जेवडां, मोटां]

आमलीय *तेरका.* आंबळो, एक वनस्पति (सं.*आमलिका, अप.आमलिय)

आमान, आमन्न *प्रद्युचु. प्रेमाका.* रांध्या विनानुं, काचुं अनाज, सीधुं [सं.आमान्न]

आमे *अखाका.* आमय, पीडा, रोग

आमोडउ *प्राचीसं.* अंबोडो (सं.आम्रमुकुट) [दे.आमोड]

आम्नाय *ऐतिका.* [शास्त्र]परंपरा, संप्रदाय [सं.]

आम्नायवंत *आनंस्त.* [शास्त्र]परंपरानो जाणकार

आम्बिल जुओ आंबिल

आय *कस्तुवा.* आई, मा [सं.*आप्पिका]

आय *अखाका. नेमिछं. *विमप्र.* आयुष्य (सं.आयु)

आयड्ढिय *प्राचीसं.* आकृष्ट, खेंचेलुं

आयत *कादं(शा).* पहोळुं (सं.)

आयतुं *उक्तिर.* -ने अधीन [सं.आयत्त]

आयपद *उपबा.* आवक, [पेदाश, लाभ] (सं.)

आयरिय *ऐतिका.* आचार्य

आयरिस *प्राचीफा.* आरीसो (सं.आदर्श)

आयस *अभिऊ. उषाह. कर्पूमं. कृष्णबा. गुर्जरा. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* आदेश, आज्ञा

आयसइ *आरारा. उक्तिर.* आदेश आपे

आयास *चतुचा. चित्तसं. कष्ट,* तकलीफ, श्रम

आयासी *प्रेमाका.* कष्ट सहन करनार, [(तपनो) श्रम करनार]

आर *नंदब.* आहार

आरउ *गुर्जरा.* नियत काळविभाग (सं. आरक); जुओ आरा

आरखे *ऐतिका.* प्रकारे, [समान] [रा.]

आरठी *आरारा.* अरीठी, एक वनस्पति (सं.अरिष्ट)

आरडे *गुर्जरा. जिनरा. विराप.* आक्रंद करे, रडे (सं.आरटति); *उपबा. प्रेमाका.* बराडा पाडे

***आरणि [आरेणि]** **अभिऊ.* [सेनानी प्रथम हरोळ, युद्धनो मोखरो]

आरत, आरति *अखेगी. आरारा. उक्तिर. चतुचा. *चारफा. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. हरिख्या.* दुःख, पीडा (सं.आर्ति)

आरतवंत **हरिख्या.* [दुःखी]

आरति जुओ आरत

आरति ध्यान *आरारा.* इष्टवियोग वगेरेथी उत्पन्न थती दुःखभरी मनस्थिति [सं. आर्तध्यान]

आरतियां *शृंगामं.* आतुर, [कामातुर] (सं. आर्त)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरतीक *दशस्कं(२). प्रेमाका.* आरती (सं.आरात्रिक)

आरतीयासरु *उक्तिर.* आरतीनो ओरडो (सं.आरात्रिकावसरः)

आरत्ति *तेरका.* आरती (सं.आरात्रिक)

आरंभ *उषाह.* [उत्सव], आनंद; *आरारा.* प्रयत्न [सं.]

आरा **ऐतिका.* [नियत कालावधि, काळ-विभाग] [जै.]; जुओ आरउ

आराडि *षडाबा.* आक्रंद, चीस, बराडा (सं. आरटते); जुओ आरेणि

आराधण्हार *षष्टिप्र.* आराधना करनार, [सेवनार, श्रद्धापूर्वक करनार]

आराम **अखाका. चतुचा.* सुखशांति, प्रसन्नता [फा.]

आराम, आरांम *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नलरा. वाग्भबा. विक्ररा.* बगीचो, उपवन (सं.)

आरामी *उषाह.* माळी (सं.आराम परथी)

आरासणउं *प्राचीसं.* आरासणुं, एक गाम

आराहइ *आरारा.* आराधे

आराहण *ऐतिका.* आराधना, [पूजा]

आरांम जुओ आराम

आरिज *ऐतिका.* आर्य, [महानुभाव]; *ऐतिका. गुर्जरा. शीलक.* आर्य[देश]

आरिमकारिम *आरारा.* ? [*दानादि अद्‌भुत कार्यो]

आरीसउ *उक्तिर. उपबा. प्रबोप्र. लावल. षडाबा.* अरीसो, दर्पण (सं.आदर्श)

आरुत *शृंगामं.* अवाज [खास करीने पंखी-ओनो] (सं.)

आरुहइ *उक्तिर. ऐतिका. प्रद्युचु.* आरोहे, चडे

***आरेणि [*आराडि]** *अभिऊ.* त्राड, [चित्कार, नाद] [दे.आराडी]

आरेणि, आरेणी **अभिऊ. *प्रबोप्र.* [सेना-नी प्रथम हरोळ, युद्धनो मोखरो]; जुओ आरणि

आरोग *आरारा.* आरोग्य

आरोग्य *प्रेमाका.* तंदुरस्ती, सलामती, [क्षेमकुशळता]

आरोट **विमप्र.* [पराक्रमी] [रा.आरोड]

आरोडइं *गुर्जरा.* *अवरोधे (*सं.आरुणद्धि) [आक्रमण करे, आक्रमक शब्दो बोले] [दे.]

आरोपीनइं *आनंस्त.* आरोपीने, [रोपीने, सर्जीने, ऊभी करीने], *चित्तसं.* रूपक वगेरेमां थती आरोपणनी क्रिया करीने

आरोविय *तेरका.* मूक्युं (सं.आरोपित)

आल, आळ *चतुचा. नरका.* अटकचाळुं, अडपलुं; *अभिऊ. *उपबा. तेरका. प्राचीसं. *वीसरा. वेताप. हरिख्या.* असत्य, मिथ्यावचन, नकामुं वेण (दे.); *०जिनरा. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. विमप्र.* आळ, मिथ्यारोप, आक्षेप [दे.]; **गुर्जरा. देवरा.* एळे, [व्यर्थ, नकामुं]; जुओ आलि

आल (घडीआल) **कामा(त्रि).* [समय दर्शाववा वगाडवामां आवती झालर]

आलइ *शृंगामं.* निष्फळ, [एळे]

आलउ *षडाबा.* घर (सं.आलय)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलउनीलउ *आरारा.* लीलुंछम (सं. आर्द्रनील)

आलउं, आलूं *उक्तिर. प्रद्युचु.* आर्द्र, लीलुं, भीनुं

आलजाल, आळजाळ *उक्तिर.* असंगत, अर्थहीन; *अखाका.* उपाधि, खोटी जंजाळ [दे.]

आलतउ *प्राचीफा.* अळतो (सं.अलक्तकः)

आलति, आलती *लावल. हरिख्या.* आलाप [सं.आलप्ति]

आळपंपाळ *अखाका.* मिथ्या वस्तुओ; *प्रेमाकां.* आडुंअवळुं, [कालुंघेलुं, पटामणुं, खुशामतभरेलुं]

आलरां *सिंहा(शा).* ?

आलवइ *कृष्णबा. गुर्जरा. नलरा. प्रद्युचु. वसंफा. वसंवि. सिंहा(शा). *स्थूफा. हरिख्या.* आलाप करे, गाय, वगाडे (सं.आलपति)

आलवणी *प्रद्युचु.* वीणा (सं.आलापिनी)

आलवाल *कादं(शा).* क्यारो (सं.)

आलस *आरारा.* आळसु (सं.); *वसंवि(ब्रा).* आळसभर्युं, सुस्त (सं.)

आलसियां *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अलस बन्यां, [सुस्त बन्यां] (सं.आलसित)

आलंगन *कामा(शा).* आलिंगन

आलंगिउ *ऐतिका.* आलिंगन आप्युं, [भेट्यो]

आलंघन **कादं(धु).* [आलिंगन]; जुओ आल्यघंन

आलंबडु *शृंगामं.* आलंबन, आधार

आलाणथंभ *उक्तिर.* हाथीने बांधवानो स्तंभ (सं.आलानस्तंभः)

आलालुंबु *चित्तसं. शृंगामं.* तृष्णा, लालसा, [लालच]

आलालुंबे लाय **अखाका.* [तृष्णाने वळगे]

आलावउ *उक्तिर. षडाबा.* पाठ, परिच्छेद, ग्रंथांश (सं.आलापकः)

आलि *विमप्र. हरिवि.* आप, दे, लगाड [सं.आ+ली-]

आलि, आळि **चारफा.* **नेमिछं. प्राचीसं. लावल. वीसरा.* तोफान, मजाक, मस्ती, आळवीतराई, [अटकचाळो]; *उषाह.* झघडो, [लडाई]; **प्रबोप्र.* [मिथ्या, खोटुं]; *ऐतिका.* **नलरा. लावल. विराप. प्राचीसं.* एळे, व्यर्थ, नकामुं; जुओ आल

आलि, आली *कादं(शा). प्राचीसं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). हरिवि.* सखी, सहियर (सं.)

आलिजा जुओ आलीजा, जालिजा

आलिंघन, आलीघन, आलींघन *चतुचा. दशस्कं(२). नलाख्या. नंदब. सिंहा(शा).* आलिंगन

आली जुओ आलि

आलीगारउ *उक्तिर.* **चतुचा. नरका. प्रद्युचु.* अटकचाळो, तोफानी, मस्तीखोर

आलीघन जुओ आलिंघन

आलीजा **ऐतिका.* [उत्कंठा]; जुओ आलिजा

आलीमाली *प्रद्युचु.* आलीलीली, लीलीछम

आलींघन जुओ आलिंघन

आलुं **नरप(द).* [अटकचाळा] (ब.व.)

आलूजइ *उक्तिर.* मूंझाय [रा.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलूं जुओ आलउं

आले, आळे *अखाका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* एळे, फोगट, निरर्थक; *चित्तसं.* तोफाने

आले *अखाका.* आलय, रहेठाण

आळे चडवुं *दशस्कं(१).* तोफाने चडवुं

आलोअण, आलोयण *आरारा. ऐतिका. स्थूलिफा.* गुरु पासे पोताना दोषो बतावी प्रायश्चित्त लेवुं ते (सं.आलोचना)

आलोइ *आरारा. प्राचीसं. षष्टिप्र. षडाबा.* आलोचे, प्रायश्चित्त करे

आलोच *स्थूलिफा.* मनन, चिंतन [सं.]

आलोचइ *आरारा. उक्तिर. *षडाबा.* विचारे

आलोडइ *कादं(ध्रु). कादं(शा).* हलावे, डखोळी नाखे (सं.आलोडयति)

आलोयण जुओ आलोअण

आलोवुं *जिनरा.* आलोचना करुं, [प्रायश्चित्त करुं]

आल्य, आळ्य *नरप(द).* आळ, [आक्षेप]; जुओ आल

आल्यघंन, आल्यंघन *कादं(शा). मदमो.* आलिंगन; जुओ आलंघन

आवइ *कादं(ध्रु). गुर्जरा. षडाबा.* आवडे, जाणे (*सं.आवर्तते) [सं.आपयति]

आवटे **अखाछ. कामा(शा). *दशस्कं(१). *दशस्कं(२). नलरा. *प्रबोप्र. प्रेमाका. शृंगामं.* मूंझाय, दुःखी थाय; *अंगवि.* *ऊकळे, ऊछळे [सं.आवर्तयति]; जुओ अवटाय

आवटे (जई आवटे) **अखाछ.* [जई पहोंचे]

आवटे (वढी आवटे) **अखाछ.* [वढी पडे, वढी मरे]

आवट्टिय **प्राचीसं.* [आथडी रहेला, खदबदी रहेला]

आवडली **नेमिछं.* [आवडीक]

आवण *आरारा.* आववुं ते

आवणहार *उक्तिर. षडाबा.* आवनार

आवतिया *ऐतिरा.* आवे छे

आवरजइ, आवर्जइ *विक्ररा.* प्रसन्न करे. (सं.आवर्जयति)

आवरत *ऐतिरा.* लहेर, तरंग [सं.आवर्त्त]

आवरिया, आवरीआ *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आवर्या, ढांक्या, गोपन कर्युं (सं.आवृत)

आवरो *नरका.* आवक लखवानो हिसाबनो चोपडो

आवर्जइ जुओ आवरजई

आवर्जन *विक्ररा.* प्रसन्न करवुं ते

आवर्जिंतु *षडाबा.* प्रसन्न, राजी (सं. आवर्जित)

आवर्जिया *उपबा.* प्रसन्न (सं.आवर्जित)

आवर्त्त **ऐतिका.* [वंदन करतां पूर्वे जोडेला हाथने गोळाकारे फेरववा ते, एक प्रकारनी उत्कृष्ट वंदनक्रिया] [जै.]

आवला *चतुचा.* *विमप्र. उतावळा (सं. आकुल)

आवली *षडाबा.* जैन परंपरा मुजबनुं एक सूक्ष्म कालपरिमाण (सं.आवलिका)

आवस *ऋषिरा.* घर, [आवास] [सं. आवसथ]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवसत, आवसथ *कस्तुवा. प्रेमाका.* अग्निशाळा, वेदी, घरमां अखंड प्रज्वलित राखवामां आवतो अग्नि, पांच अग्निप्रकारोमांनो एक (सं.आवसथ्य)

आवसही *जिनरा.* निवृत्तिमांथी आवश्यक प्रवृत्तिमां जवुं (धर्मस्थानमांथी नीकळती वखते बोलातो शब्द) [जै.]

आवागमण, आवागमन *अखाका. नरका. प्रेमाका. प्राचीसं.* आववुं अने जवुं, जन्म अने मरणना फेरा

आवाठउं *गुर्जरा.* उपस्थित थयुं, आवी पहोंच्युं (सं.उपस्थितकम्)

आ वारकी *दशस्कं(१).* आ वारे, आ वखते

***आवारी [अवारी]** **प्रेमाका.* [अवारित, अटक्या विना]; जुओ अवारी

आवीतउं *उक्तिर.* अवातुं [*सं.आ+या परथी]

आवीस *चंद्रवा. मदमो.* आयुष्य

आव्रण *अखाका.* आवरण

आशरो **प्रेमाका.* [गजुं]

आशवासना, आसवासना *कामा(शा). दशस्कं(१). प्रेमाका. वेताप.* आश्वासना, आसनावासना

आशंक *उक्तिर. प्रेमाका.* आशंका, [अंदेशो, *खटको, *संकोच]

आशंशा *षडाबा.* इच्छा, अभिलाष (सं. आशंसा)

आशिका *विमप्र.* आशीर्वाद

आशिखा *प्रबोप्र.* आशीर्वाद (सं.आशिष्)

आशी *नरका. प्रबोप्र. मोसाच.* आशीर्वाद (सं.आशिष्)

आशी *अखाका.* *आशयवाळा, [आशा – झंखनावाळा)

आशे *अखाका. अखाछ. अखेगी.* आशय

आश्या *कादं(शा).* आशा

आश्रइ *उक्तिर. उपबा.* आश्रय ले (सं. आश्रयति)

आश्रज *कामा(त्रि). कादं(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलाख्या. प्रेमाका.* आश्चर्य

आश्रयउ *उक्तिर.* आश्रय करनार, आश्रये रहेनार

आश्रयी **षडाबा.* [-ने आश्रय करीने, अनुलक्षीने]

आश्रव *प्राचीका.* कर्मोनुं प्रवेशद्वार, [कर्म-बंधनुं कारण] [जै.]

आश्री *आनंस्त.* आश्रयी [-ने आश्रये रहेनार]

आश्रीनइ *आनंस्त.* आश्रय करीने

आश्वास *प्रेमाका.* आश्वासन, [आसना-वासना]

आश्लेषिउ *उक्तिर.* भेट्यो

आष्या *नलरा.* आशा, इच्छा

आस **अभिऊ. उपबा. गुर्जरा. देवरा. विक्ररा. वीसरा.* आशा

आस *प्राचीसं.* अश्व

आस *आरारा.* मुख, धार, छेडो (सं.आस्य)

आस *नलाख्या.* आनुं, [एने] (सं.अस्य)

आसउज *प्राचीसं. षडाबा.* आसो मास (सं. आश्वयुज)

आसदु *आरारा(व).* आसद, अश्वत्थ,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पींपळो ? आसोंद, अश्वगंधा ?

आसडी *ऋषिरा.* आशा

आसण *उपबा.* आसन; *गुर्जरा.* योगासन

आसन *आरारा.* पासेनी (सं.आसन्न)

आसनउं *विमप्र.* अजाणतां, [अज्ञानपूर्वक] (सं.असंज्ञक); जुओ असन

आसनउं, आसंन्नूं *गुर्जरा.* पूर्ण, [समाप्त, नष्ट] (सं.आसन्न); *आरारा. ऐतिरा. कृष्णच. लावल.* पासे, पासेनुं (सं.आसन्न); *आरारा. *विमप्र.* रहेलुं (सं.आसन्न)

आसन्नसिद्धि *ऐतिका.* नजीकना समयमां मुक्ति पामी शके एवा

आसमुद्द *गुर्जरा.* समुद्र सुधी (सं.आसमुद्र)

आसरज, आस्रज *कामा(शा).* आश्चर्य

आसर्युं *आरारा.* सामे थयो (दे.आसरिअ)

आसवामता *गुर्जरा.* अश्वत्थामा

आसवासना जुओ आशवासना

आसं *आरारा.* आशा

आसंकी **नरका.* [संभावना – कल्पना करी] [सं.आशंक्]

आसंघु *कादं(शा).* विश्वास, भरोसो (दे. आसंघ)

आसंग, आसंगा **जिनरा.* [आसक्ति, अनुराग, *भरोसो] [रा.]

आसंगायत *ऐतिका. जिनरा.* *आश्रित, *आधीन, [अनुरागवश, आसक्त]

आसंगो *नरका.* आसक्ति

आसंजिका *कादं(शा).* नानी बेठकवाळी पाटली (सं.आसंदिका)

आसंधि *आरारा(व).* आसोंद, एक वनस्पति (सं.अश्वगंधा)

आसंन्नूं जुओ आसनउं

आसंस *देवरा.* इच्छावाळो, आसक्त [सं. आशंसु]

आसंसादि *आनंस्त.* कामना वगेरे [सं. आशंसादि]

आसा *प्राचीफा.* दिशा (सं.आशा)

आसात *प्रेमाका.* आशातना, पीडा, व्यथा

आसातन *गुर्जरा.* [दुःख लगाडवुं ते], आशातना, अविवेक, अनादर [जै.]

आसासिउ *गुर्जरा. तेरका.* आश्वासन आप्युं (सं.आश्वासित)

आसांचरीजि *गुर्जरा.* संचर्या, गया

आसि *आरारा.* छे (सं.अस्ति)

आसि *देवरा.* आवशे

आसि *तेरका.* हतुं (सं.आसीत्)

आसि *गुर्जरा.* आशा

आसी *आनंस्त.* आशाभरेली, आशायुक्त

आसू *उक्तिर.* आसो मास (सं.आश्विन)

आसेविवउ *षडाबा.* आचरवुं, करवुं

आसोज *वीसरा.* आसो मास (सं.अश्वयुज)

आसोजी *षष्टिप्र.* आसो मासनी (सं. आश्वयुज)

आसोय *प्राचीसं.* आसो मास (सं.आश्वयुज)

आस्ता *शीलक.* षष्टिप्र. आस्था, श्रद्धा

आस्त्य *अखाछ. अखेगी.* अस्ति (छे) एवो भाव, अस्तित्व, होवुं ते

आस्त्य-नास्त्य *अखाका.* अस्तित्व अने तेनो अभाव

आस्फोटन **प्रेमाका.* [ठोक लगाववी ते] [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आस्वागत *नंदब.* स्वागत

आस्या *आरारा.* आशा

आस्रज जुओ आसरज

आस्वासइ *उक्तिर.* आश्वासन आपे

आह *गुर्जरा.* हवे

आह, आहि *आरारा.* आ

आह, आहि, आह्म *अंबरा. कर्पूमं. नलरा. प्रद्युचु. प्रेमाका. लावल. हरिवि.* शक्ति, हिंमत (सं.आय)

आहण *प्राचीफा.* प्रहार (सं.आ+हन्)

आहणइ *उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. षष्टिप्र. षडाबा.* प्रहार करे, मारे, कूटे, फटकारे, ठपकारे (सं.आ+हन्)

आहरइ *उपबा. षडाबा.* खाय (सं.आहरति)

आहर-जाहर, आहार-जउहार *आरारा. उक्तिर. शृंगामं.* आवजा, आवरोजावरो

आहव *गुर्जरा. विराप.* युद्ध (सं.)

आहवु *नलरा.* आवो, आ प्रकारनो

आहारग *जिनरा.* आहारक शरीर, [योगबळे प्राप्त सूक्ष्म शरीर]; जुओ अहारग

आहारजउहार जुओ आहर-जाहर

आहि जुओ आह

आहिडी, आहेडी *अंबरा. उक्तिर. गुर्जरा. दशस्कं(र). नरका. नलाख्या. प्रेमाका. रूस्तस. वाग्भबा. विमप्र. षडाबा. सम्यचो.* शिकारी, पारधी (सं. आखेटकः)

आहीठाण *जिनरा.* अधिस्थान, [ठेकाणुं]

आहीरडि *अभिऊ.* आहीरोना, [आभीर प्रदेशना]

आहुकार *कस्तुवा.* आवकार

आहुलां *अखाका.* आवलां, फांफां, मिथ्या प्रयत्न

आहेडइ *गुर्जरा.* शिकारे (सं.आखेटक)

आहेडउ *उक्तिर. नलरा. विमप्र. षडाबा.* शिकार, मृगया (सं.आखेटकः)

आहेडी जुओ आहिडी, आहेरडी

आहेरडी, आहेडी *चंद्रवा.* शिकारी, पारधी

आह्म जुओ आह

आं *कर्पूमं.* आंय, अहीं

आंकडीआ *विमप्र.* एक प्रकारनुं घरेणुं

आंकडो **आनंस्त.* [अंदाज, निश्चय]

आंकणी *गुर्जरा. प्राचीफा. प्राचीसं.* ध्रुवपंक्ति, टेकनी पंक्ति (सं.अंकनिका)

आंकिलु *गुर्जरा.* अंकित, निश्चित (सं.अंक परथी)

आंकुडी *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आंकडी, छेडेथी वांकुं वाळेलुं शस्त्र (सं.अंकुट)

आंकुरीइं *विराप.* अंकुरित थाय, [ऊभा थाय]

आंकुस *उक्तिर.* अंकुश

आंखउडली जुओ आखउंडली

***आंख-पांखनो [आखपाखनो] नेह** **नरका.* [आसपास – पासेपासे होवानो – निकटतानो स्नेह]; जुओ आख्यपाख्य

आंखि *उक्तिर. उपबा. वीसरा. विराप.* आंख (सं.अक्षि)

***आंखुडी [*आंटडी]** **गुर्जरा.* [गूंच,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुश्केली]

आंखुलडी *विराप.* आंख

आंग *षडाबा. षडाबा.* शरीरनो अवयव (सं.अंग); *षष्टिप्र. षडाबा.* अंग, जैन आगमसाहित्यनो एक विभाग; *षष्टिप्र.* अंग, [भाग]

आंगडणु *उक्तिर.* अंगमंडन

आंगमइ *षष्टिप्र.* स्वीकारे, [पामे] (सं.अंग+गम्)

आंगलु *प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका.* झभलुं, अंगरखुं (सं.अंग उपरथी)

आंगा *विक्ररा. हम्मीप्र.* एक प्रकारनां बख्तर

आंगी *प्राचीफा.* जैन मूर्तिनो शणगार

आंगीगमइ *आरारा. षष्टिप्र.* स्वीकारे, ले, [पामे] (सं.अंग+गम्)

आंगुं जुओ आगुं

आंगुलि *षडाबा.* आंगळी (सं.अंगुलि)

आंगळियउ *वीसरा.* आंगळी (सं.अंगुलि)

आंगुली, आंगुळी, आंगूळी *उक्तिर. उपबा. नलरा. वीसरा.* आंगळी (सं.अंगुलि); **वीसरा.* [*वींटी] [सं.अंगुलीयक]

आंच (आंच दीधी) *मदमो.* धमकी [दीधी]

आंचलि, आंचली *प्राचीफा. लावल.* टेकनी पंक्ति, ध्रुवपद (सं.अंचल परथी)

आंचो **प्रेमाका.* [हरकत, आफत] [सं. अर्चिः]

आंजणी *वीसरा.* *स्त्री

आंटडी जुओ आंखुडी

आंटलीए वले *चतुचा.* आडा फरे

आंटि (आंटि देतां) **कादं(ध्रु).* [पग भरावतां, पग लगाडतां]

आंटीयो **चंद्रवा.* [आंटी, कोयडो]

आंटे **नरका.* [आंट – हठ के टेकथी]

आंटो *अखाका.* गूंच, मुश्केली

आंड *उक्तिर.* ईंडुं (सं.अण्डम्)

आंण जुओ आण

आंतरइ *आरारा.* वच्चे, -मां, आश्रये; आंतरे, पछी

आंतरणी **षडाबा.* [तूटकपणुं, खंडितपणुं]

आंतरुं **ऋषिरा.* [वहेरो, भेदभाव]; *आनंस्त.* अंतर, छेटापणुं, [जुदाई]

आंतरो *अखाका.* भेद, जुदाई, अंतर; *प्रेमाका.* अंतर, समयगाळो

आंतलूहण, आंत्रलूहण *जिनरा.* आत्मज, [संतान]

आंत्र *उक्तिर. षडाबा.* आंतरडां (सं.अन्त्र)

आंत्रलूहण जुओ आंतलूहण

आंदोल थया *प्रेमाका.* हली ऊठ्या

आंधउ, आंधो *आनंस्त. गुर्जरा.* आंधळो (सं.अंध)

आंब *अभिऊ. नलरा.* आंबानुं झाड (सं.आम्र)

आंबइरा *उक्तिर.* आंबाना

आंबर *प्राचीफा.* कीमती वस्त्र, (सं.अंबर)

आंबळी *प्रेमाका.* मरडी

आंबलु, आंबुलु *वसंफा-शु. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पति, प्रियतम

आंबलु, आंबुलु *प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आंबलो, आंबो (सं.आम्र)

आंबलो, आंबळो *नरका. वेताप.* आमळो, अमळाट, खार, [रीस]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आंबिल, आम्बिल *उक्ति. ऐतिका. षडाबा.* आयंबिल, आंबेल, जैन तपप्रकार [जेमां विकृतजनक आहारनो त्याग होय छे] (सं.आचाम्ल)

आंबिलवर्धमानु *गुर्जरा.* एक प्रकारनुं तप, एक आंबेलनी साथे वधता जता उपवासना दिवसो [के एक उपवासनी साथे वधता जता आंबेलना दिवसो] (सं.आचाम्लवर्धमान)

आंबिली *उक्ति. गुर्जरा. जिनरा. वसंफा. वसंवि. विराप.* आमलीनुं झाड (सं. अम्लिका)

आंबुलउ *वसंवि(ब्रा).* आंबानुं

आंबुलु जुओ आंबलु

आंम तात *कृष्णच.* आदरणीय वडील, [आप वडील]

आंमला *गुर्जरा.* विनाशक (सं.आ+मृद्)

आंहां *प्रेमाका.* अहीं, अहींयां

इ, इं, ई **षष्टिप्र.* [पण, छतां] [सं.अपि]; *उपबा. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा. *षष्टिप्र.* [अंतर्भावात्मक] पण, य (सं.अपि)

इ, इं, ई **उपबा. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा. षष्टिप्र.* निश्चयार्थ अव्यय, ज (सं.च)

इ, इं, ई, ईं *अभिऊ. उक्ति. नरप(द). नलरा. नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* आ, ए (सं.इदम्, एतत्)

इउ *षडाबा.* अहीं, आ तरफ (सं.इतः)

इउ, यउ *तेरका. षडाबा.* आ, आम (सं. इदम्)

इक *ऐतिरा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा(ल). वसंवि.* एक; *गुर्जरा.* कोई-एक, केटलाक; **विराप.* [केटलाक]

इक आछण (इक आछण पाणी छांडती) **विमप्र.* [एक नितरामणनो पण त्याग करती]

इकलास *जिनरा.* प्रीति [फा.इखलास]

इकवीस *उक्ति.* एकवीस (सं.एकविंशत्)

इक-संथ *प्राचीसं.* एक वखत सांभळवाथी जेने बराबर याद रही जाय ते (सं. एकसंस्थ)

इकावन *उक्ति.* एकावन (सं.एकपंचाशत्)

इकि *षष्टिप्र.* एक ज

इक्क *गुर्जरा. तेरका. षष्टिप्र.* एक

इक्कक्क *ऐतिका.* एकेक, [दरेक] [सं.एकैक]

इक्कारस *तेरका.* अगियार (सं.एकादश)

इक्किक्कइं *गुर्जरा.* एकएक वडे [सं.एकैकेन]

इक्षरस *लावल.* इक्षुरस, शेरडीनो रस

इक्षुक *प्रेमाका.* शेलडी

इक्ष्वाकुळ *दशस्कं(२).* इक्ष्वाकु कुळ

इखू *शृंगामं.* शेरडी (सं.इक्षु)

इग, इगु *उक्ति. नेमिछं. प्राचीफा.* एक

इगतालीस *उक्ति.* एकतालीस (सं. एकचत्वारिंशत्)

इगसठि *उक्ति. प्राचीसं.* एकसठ (सं. एकषष्टि)

इगसय *जिनरा.* एक सो [सं.एकशत]

इगहत्तरि *उक्ति.* एकोतेर (सं.एकसप्ततिः)

इगार *षडाबा.* अगियार (सं.एकादश)

इगारमउ *षडाबा.* अगियारमो

इगु जुओ इग

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इगुणचालीस *उक्ति.* ओगणचालीस (सं. एकोनचत्वारिंशत्)

इगुणतीस, इगुणत्रीस *उक्ति. रूपच. षडाबा.* ओगणत्रीस (सं.एकोनत्रिंशत्)

इगुणनवइ *षडाबा.* नेव्यासी (सं.एकोन-नवतिः)

इगुणपचास, इगुणपंचास *उक्ति. षडाबा.* ओगणपचास (सं.एकोनपंचाशत्)

इगुणवीस *उक्ति. षडाबा.* ओगणीस (सं. एकोनविंशतिः)

इगुणसठि *उक्ति.* ओगणसाठ (सं.एकोन-षष्टिः)

इगुणहत्तरि *उक्ति. गुर्जरा.* ओगणोसित्तेर (सं.एकोनसप्ततिः)

इगुणीसमउ *उक्ति.* ओगणीसमो (सं.एकोन-विंशतितमः)

इगुण्यासी *उक्ति.* ओगणाएंसी (सं.एकोना-शीतिः)

इग्यार *उपबा. गुर्जरा.* अगियार (सं.एकादश)

इग्यारमउ *आनंस्त. उक्ति. गुर्जरा. वीसरा.* अगियारमुं (सं.एकादशम)

***इच्छे-वेय [इत्थिवेय]** *जिनरा.* स्त्रीवेद, [स्त्रीने पुरुष साथे कामभोगनी इच्छा थाय ते] [प्रा.] [जै.]

इजि *उपबा.* केवळ, मात्र, [ज]

इटाल, इंटाल *ऐतिका. लावल.* ईंट, ईंटाळा, [पथ्थरना रोडा] [सं.इष्टा]

इठ *शृंगामं.* इष्ट

इठिया *लावल.* एंठा [सं.*आचष्ट]

इण, ईण *आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछं. प्रबोप्र. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि.* ए, आ (सं.एतेन)

इण ताल *आरारा.* अत्यारे

इण परि, इणि परि, ईण परि *उक्ति. गुर्जरा. वसंफा.* आ प्रकारे, आ रीते

इणि, ईणि *आनंस्त. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. विराप. षडाबा.* आ (-ए, -थी, -ने, -मां), ए (-ए, -थी, -ने, -मां) (सं.एनेन)

इणि उपाइ *आरारा.* एने लीधे

इणि परि जुओ इण परि

इतउ *षडाबा.* -थी, वडे, पूर्वक

इतराइ *कृष्णच.* *आछकलापणुं, [गर्वनो देखाडो, फुलाश, बडाश] [हिं.ईतराना]

इतस्तत *अखाका.* आमतेम

इति *अंबरा.* अति

इत्तलउ *प्राचीसं.* एटलुं [सं.इयत्+तुल्य]

इत्थिवेय जुओ इच्छेवेय

इथी *उषाह.* स्त्री [प्रा.इत्थि]

इधाण *कादं(शा). नलाख्या.* एंधाण, निशान, चिह्न (सं.अभिज्ञान)

इधूणि *प्राचीका.* एंधाणी (सं.अभिज्ञान)

इभ्य *आरारा. ऋषिरा.* धनवान, धनाढ्य शेठ (सं.)

इम, इंम, ईम *अभिउ. उक्ति. उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. षडाबा.* आम, आ प्रमाणे, एम (सं.एवम्)

इमइ, इमै, ईमइंइ *तेरका.* एम ने एम

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.एवम्+अपि); *उक्ति.* आम ज, एम ज

इमेवइ *नेमिछं.* आ ज रीते (सं.एवमेव)

इमै जुओ इमइ

इय *तेरका.* आट्लुं, आवुं, आम (सं.इति)

इय, इयउं *चारफा. षडाबा.* आ, आवुं (सं.इयम्)

इरियावही *षडाबा.* हलनचलन वगेरे शारीरिक चेष्टा(थी नीपजतां कर्म) (सं.ईर्यापथिकी) [जै.]

इलि *ऐतिका.* पृथ्वी पर [सं.इला]

इलिका, इली *आनंस्त.* इयळ [सं.]

इवडे *जिनरा.* आवा, आवडा

इसी, इसी *आरारा. कादं(शा). तेरका.* आवी, एवी (सं.ईदृशिका)

इस *लावल.* ईश, ईश्वर

इस *गुर्जरा.* आवुं (सं.ईदृश)

इसउं *उक्ति. गुर्जरा. वसंफा(ल). वसंवि. वीसरा. षडाबा.* आ, आवुं, आ प्रकारनुं, आम (सं.ईदृश)

इसडे *ऐतिका.* एवा (हिं.ऐसा)

इसर, ईसर *गुर्जरा. विमप्र. शृंगामं.* महादेव, शिव (सं.ईश्वर)

इसाऽरति *शृंगामं.* ईर्षा अने अरति – अरुचि

इसिउं *उपबा. नेमिछं. लावल.* आवुं, एवुं (सं.ईदृशम्)

इसी जुओ इशी

इसी *षडाबा.* एंशी (सं.अशीतिः)

इस्त्री *प्राचीका.* स्त्री

इस्यउ *उक्ति. उषाह. लावल. वसंफा. षष्टिप्र.* आ प्रकारनो, आवो, एवो, (सं.ईदृश)

इह, इहु, ईह, ईंह, ईहं *आरारा. गुर्जरा. तेरका. षडाबा.* ए, आ (सं.एषः)

इह *आरारा. ऐतिरा. गुर्जरा.* अहीं (सं.); *तेरका.* आ, अहींनुं (सं.)

इहकार *प्रबोप्र.* अहंकार (पात्रनुं नाम)

इहरति *प्राचीसं.* आ लोकमां [सं.इहत्र, प्रा.*इहरत्त]

इहां, ईहां, ईहं *आरारा. उक्ति. उपबा. गुर्जरा. नरका. पंचवा. विरापं. षडाबा.* अहीं, अहींयां

इहां किणइ *आरारा.* अहींयां

इहि, ईही *प्रबोप्र. षडाबा.* अहीं, [आ लोकमां] (सं.इह)

इहिनाणि *आरारा.* एंधाण, निशानी (सं. अभिज्ञान)

इहिनिश *प्रबोप्र.* अहर्निश, दिनरात

इहिवातन *कृष्णबा.* हेवातन, [सौभाग्यवतीपणुं] [सं.अविधवात्वन]

इहिविसूहिवि जुओ विसू

इहीणइ ०*उपबा.* एणे

इहु जुओ इह

इहे आनंस्त. आवा, [आ]

इं जुओ इ

इंगटि **लावल.* [तबलाना तालसूचक ध्वनिशब्द]

इंटाल जुओ इटाल

इंद *नरका. नलाख्या.* इन्दु, चंद्र

इंव, इंदा *ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* इन्द्र

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इंदियाल *प्राचीसं.* इन्द्रजाल, [जादु]
इंदिरा *ऋषिरा.* लक्ष्मी (सं.)
इंदु *गुर्जरा.* इन्द्र
इंदु निदान *प्रेमाका.* नक्की चंद्र
इंद्रजाल, इंद्रजाळ *अखेगी. प्रेमाका.* जादु [सं.]
इंद्रजिमलवेला *आरारा.* इन्द्रयमलवेला, [कोई ज्योतिषयोग]
इंद्रवारणो *प्रेमाका.* कडवा पण सोनेरी रंगना [इंद्रवारुणीना] फळ जेवो, सोनेरी
इंद्रवारुणी *प्रेमाका.* देखावे सुंदर पण झेरी फळवाळो एक छोड [सं.]
इंद्राइसि *गुर्जरा.* इंद्रना आदेशथी
इंद्रिलोक *गुर्जरा.* इंद्रलोक
इंद्री *नलाख्या.* इन्द्रियो
इंम जुओ इम
इंहिकू *षडाबा.* आ लोकनुं, ऐहिक

ई जुओ इ
ईछाइ *कादं(ध्रु).* यथेच्छ
ईछाचारी *आनंस्त.* स्वेच्छाचारी, [स्वेच्छाथी वर्तनार]
ईट *उक्तिर.* ईंट (सं.इष्टिका)
ईड *नलरा.* ईंडुं (सं.अंड)
ईण जुओ इण
ईणइ *उपबा. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* एणे (सं.एतेन)
ईण परि जुओ इण परि
ईणं **षष्टिप्र.* [एनाथी] (सं.एतेन)
ईणं लाजीइ *उक्तिर.* आनाथी शरमाय
ईणि जुओ इणि
ईतर-स्युं *लावल.* बंनेथी, बंने वडे
ईति *ऐतिका.* धान्यादिकने हानि पहोंचाडनार उंदर वगेरे प्राणी [सं.]
ईधण *उक्तिर.* ईंधण (सं.इन्धनम्)
ईभ *मदमो.* हाथी (सं.इभ)
ईम जुओ इम
ईमइइ जुओ इमइ
ईयाहु *अखाछ.* पोतानी इच्छाथी बळी जनारुं अने स्वाति नक्षत्रमां वर्षाबिंदुथी फरी सजीवन थतुं (काल्पनिक) पंखी
ईरजा-सुमति, ईर्या-सुमति *ऐतिका. देवरा.* चालवामां संयम, विवेक (सं.ईर्या-समिति) [जै.]
ईरजादी *देवरा.* चालवामां जीवादि प्रत्ये संयम वगेरे (सं.ईर्यादि) [जै.]
ईर्या-सुमति जुओ ईरजा-सुमति
ईश *ऋषिरा.* महादेव, शंकर
ईष जुओ हलरी ईष
ईस *उक्तिर.* धरी, धूंसरी (सं.ईषा)
ईसउ *उक्तिर.* आवो (सं.ईदृशः)
ईसर जुओ इसर
ईह जुओ इह
ईहइ *प्राचीसं.* षष्टिप्र. इच्छे (सं.ईह्)
ईहणां *जिनरा.* इच्छुक, [याचक] [सं.ईह् परथी] [रा.]
ईहां जुओ इहां
ईही जुओ इहि
ईं जुओ ई
ईंडुं चड्युं *प्रेमाका.* शिखर चड्युं, विजय थयो, नामना थई

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईंडुं राख्युं *नरका.* श्रेष्ठता सिद्ध करी

ईंह, ईंहं जुओ इह

ईंहां जुओ इहां

उ *आरारा.* ए; *कृष्णबा. हरिवि.* ओ

उअचट *प्राचीफा.* अभिमान [सं.उच्चटा]; जुओ अचट

उअर, उयर *ऐतिका. नेमिछं.* उदर

उअहाणउ *गुर्जरा.* उखाणुं, कहेवत (सं. उपाख्यान)

उआरणां *अभिऊ.* ओवारणां [सं. अपवारण]

उइखहु *ऐतिका.* उपेक्षा करो

उइलउ *उक्तिर.* ओलुं, पेलुं [सं.अवर+प्रा. इल्ल]

उइसइ *उक्तिर.* बेसे (सं.उपविशति)

उकडच्छी **गुर्जरा.* [उभडक आसन करी] [सं.उत्कटुक+आसनिक]; जुओ उत्कडु

उकसइ, ऊकसइ *जिनरा.* उन्नत बने, ऊंचुं थाय (सं.उत्कर्ष्)

उकांटउ, ऊकांटउ **ऋषिरा. कादं(ध्रु). कादं(शा). *चतुचा. *नलाख्या. षष्टिप्र.* रोमांच, कंप, धुजारी; रोमांचित, कंपायमान (सं.उत्कंटक)

उक्कंठिउ *ऐतिका.* उत्कंठित थयो

उक्षा *नलाख्या.* बळद (सं.)

उखध, उखधी, ऊखध *कस्तुवा. वीसरा. शीलक.* औषध, औषधि

उखाणउ, ऊखाणउ *अंबरा. जिनरा. षष्टिप्र.* कहेवत (सं.उपाख्यानकम्)

उखांगे *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* आरडे

उखुडइ *उक्तिर.* ऊखडे, तूटे [प्रा.; सं. उत्स्कृत]

उखेलइ, ऊखेलइ *उक्तिर. षष्टिप्र.* उखाडे, उखेडे (सं.उत्कीलयति) [दे.उक्खिल]; *आरारा.* खोले (रा.)

उखेवे, ऊखेवे *ऐतिका. कादं(शा). प्रेमाका.* छांटे, ऊंचे उडाडे, धूप करे (सं.उत्क्षेप्); जुओ अगरु उखेव-, उवेखे

उगउ **षडाबा.* [मूगो]; जुओ अउगी

उगउमुगउ, उगमुगउ *उक्तिर.* मूगो; जुओ अउंगउ-मुगउ

उगट, उगटण, उगटी, ऊगट, ऊगटि *अभिऊ. आरारा. तेरका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नेमिछं. प्राचीका. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. स्थूलिफा. हरिवि.* सुगंधी पदार्थोनो लेप, अंगराग (सं.उद्वर्तन)

उगणत्रीस *उपबा.* ओगणत्रीस (सं.एकोनत्रिंशत्)

उगणीस *उक्तिर.* ओगणीस (सं.एकोनविंशति)

उगणीसमा *आनंस्त.* ओगणीसमा

उगत्त *आरारा.* उक्त, कह्युं

उगनिउं **अभिउ. नरका. नलरा.* स्त्रीनुं काने पहेरवानुं एक घरेणुं; जुओ अउगनिया

उगमइ *विक्ररा.* ऊगे [सं.उद्+गम्]

उगमुगउ जुओ उगउमुगउ

उगरतउ *उपबा. नरका. षडाबा.* बचेलो,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाकी रहेतो, वधेलो [*सं.उद्+वृ]

उगाल *प्रद्युच्.* पाननो चावेलो कूचो [दे. उग्गाल]

उगाह *पंचवा.* साक्षी [*फा.गवाह]

उग्ग- *तेरका.* ऊगवुं (सं.उद्+गा)

उग्गमणे *ऐतिका.* उदित थतां, ऊगतां [सं. उद्गमने]

उग्रबुद्धि *अखाका.* *कुशाग्र के सूक्ष्म बुद्धि, [अग्रबुद्धि, आगळ जनारी – दूरदर्शी बुद्धि]

उग्रह- *वीसरा.* ऊभराय, उत्पन्न थाय, [बहार नीकळे] (सं.उद्ग्रह्)

उग्रहणी *उक्तिर.* उघराणी, चूकवणी माटे तकादो (सं.उद्ग्रहणिका)

उघउ *नलरा.* जैन साधुनुं रजोहरण, ओघो (सं.अवग्रह); जुओ उथउ

उघरेटी *नरका. नरप.* ऊंघरेटी, निद्राळु, ऊंघथी भरेली

उघेला जुओ उधेला

उचरन *पंचवा.* बोलवा (सं.उच्चर्)

उचलवुं, ऊचलवुं, ऊचळवुं, ऊंचलवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ऊंचकवुं, उपाडवुं [सं.उच्चल्]; उचाळा भरवा; *कादं(शा).* ऊपडी नीकळवुं, चाली नीकळवुं

उचाट्यो *अभिऊ.* [विनाशक बन्यो] (सं. उच्चाट्); जुओ ऊचाटइ

उचितबोलु *नलरा.* प्रसंगानुसार उचित वाणी बोली राजानुं मनरंजन करनार

उचीतु *अभिऊ.* ओचिंतुं (सं.अचिंत्य)

उचेर्या *प्राचीका.* छंछेडया

उचेल, ऊचेल *अखाका. *कादं(शा).* [खोळो, गोद]

उच्छक, उछक *आरारा. कादं(शा). जिनरा. नलरा. प्रबोप्र. विमप्र.* उत्सुक, आतुर; जुओ अच्छक

उच्छरंग, उछरंग *आरारा. ऐतिका. देवरा.* उत्साह, [उमंग], आनंद

उच्छव, उछव *आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. देवरा. प्रेमप. षडाबा.* उत्सव

उच्छंग, उछंग *अखाका. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(शा). चतुचा. तेरका. नरका. नेमिछं. प्रेमाका.* खोळो (सं.उत्संगः)

उच्छाह, उछाह, उछाहो, ऊछाह *आरारा. उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. कृष्णच. गुर्जरा. देवरा. नरका. नलाख्या. पंचवा. प्रेमाका. *वीसरा.* उत्साह, उमंग; *प्राचीसं.* उत्साह, गीतकाव्यनो एक प्रकार

उच्छाहिवउं *उक्तिर.* उत्साह आपवो, प्रेरवुं

उच्छांछली *आरारा.* चंचळ, तरल, थरकती

उच्छुकपणउ *उक्तिर.* उत्सुकता

उच्छेद धातवुं *दशस्कं(१).* सत्यानाश करवो

उछउं, ऊछउं *अभिऊ. अंबरा. उपबा. नलरा. नेमिछं. विमप्र.* ओछुं, अधूरुं, ऊणुं (दे. उच्छ) [*सं.ओच्छ]; जुओ उछं

उछक जुओ उच्छक

उछकपणइ *नलरा.* आतुरपणे (सं.उत्सुक)

उछरंग जुओ उच्छरंग

उछराण *कर्पूमं.* आनंद, [हर्षोल्लास]

उछलइ, ऊछलइ *अंबरा. जिनरा.* फरफरे, ऊडे [सं.उच्छलति]

उछव जुओ उच्छव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उछहामणउ *जिनरा.* तरवरियो, [मस्त, उन्मत्त, नटखट] [रा.]

उछं *कर्पूमं.* ओछुं; जुओ उछउं

उछंक ०*कामा(शा).* उच्छृंखल

उछंकल, उछंगल *दशस्कं(१). प्रेमाका.* उच्छृंखल, स्वच्छंदी

उछंग जुओ उच्छंग

उछंग *गुर्जरा.* होंश, उमंग, उमळको [सं.उत्संग]

उछंगल जुओ उछंकल

उछाह, उछाहो जुओ उच्छाह

उछांइ *प्रद्युचु.* उत्साहथी

उछांइयो *अखेगी.* ओछायो [सं.अपच्छाया]

उछांग *अखाका.* उछाळो, [पुरस्करण, विस्तरण] [*दे.उच्छंगिय]

उछेद *चित्तसं.* दूर करवुं ते, नाश

उछेरइ *जिनरा.* रमाडे, [लालन करे]

उछेरडउ *नलरा.* वधारे प्रमाणमां ओछुं (प्रा.उच्छ) [सं.*ओच्छ]

उजम, उजंम, ऊजम *अंबरा. उपबा. कर्पूमं.* उद्यम, प्रयत्न; *कामा(त्रि). कामा(शा). प्रेमाका. हरिख्या.* उमंग, उत्साह

उजमदार *प्रेमाका.* उद्यम करनार, [श्रम करनार, कामवाळो]

उजल *नंदब.* उज्ज्वल

उजवालण *ऐतिका.* अजवाळनार (सं.उज्ज्वल् परथी)

उजंम जुओ उजम

उजाइ, ऊजाइ *अखाका. अभिऊ. अंगवि. अंबरा. उक्तिर. कर्पूमं. कादं(ध्रु). कादं(शा). कृष्णबा. *गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीफा. विक्ररा. शृंगामं.* दोडे, दोडीने जाय, धसमसे (सं.उद्+याति)

उजागरता *आनंस्त.* उजागरो [सं.उज्जागर+ता]

उजाडि *शृंगामं.* उज्जडपणुं (दे.उज्जड)

उजाडो जुओ लोक-उजाडो

उजाणी, ऊजाणी *आरारा. नरका. *नलाख्या. *नेमिछं.* धसमसी, दोडी, चाली नीकळी (सं.उद्+या); जुओ उज्जाणउ

उजाती *नरका. *नरप.* दोडती (सं.उद्+या)

उजेणी *दशस्कं(१).* उजाणी [सं.उद्यानिका]

उजेणी, ऊजेणी *कस्तुवा. गुर्जरा.* उज्जयिनी

उजेशकार *प्रेमाका.* [उजाश, ऊजळुं काम]

उज्जलो *गुर्जरा.* ऊजळो (सं.उज्ज्वल)

उज्जाणउ *प्राचीसं.* दोडतो (सं.उद्+या); जुओ उजाणी

उज्जिल *तेरका.* गिरनार (सं.ऊर्जयंत परथी)

उज्जित *तेरका.* गिरनार (सं.ऊर्जयंत)

उज्जोइउ *ऐतिका.* प्रकाशित कर्युं [सं. उद्योतित]

उज्जोय *जिनरा.* उद्योत, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीवनुं शरीर शीतल प्रकाश आपे] [जै.]; जुओ वुज्जेय]

उज्जोयकरु *षष्टिप्र.* प्रकाश करनार (सं. उद्योतकर)

उझल *प्रद्युचु.* ओझल, पडदो, बुरखो

उझेडो *प्रेमाका.* उझरडी नाखो

उझित *जिनरा.* [शुष्क, लूखुं] [दे.उज्झिअ]

उट *सिंहा(शा).* ओट [सं.अवघट्ट]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उट्ठीय *गुर्जरा.* ऊठी, [(आग) लागी] (सं. उत्थित)

उठंभ *उपबा.* आधार, टेको [सं.उपष्टम्भ]; जुओ ओठंभ

उठां मेली जुओ ठांमेली

उठींगणि, उट्ठीगणि *लावल. विमप्र.* ओठींगणे, अढेलवा माटे

उट्ठवणी, ऊठवणी **गुर्जरा. *विमप्र.* [आक्रमण, हल्लो] (सं.उत्थापनिका) [रा.]; जुओ ऊटवणिय

उट्ठीगणि जुओ उठींगणि

उडगण *चित्तसं.* उडुगण, ताराओनो समूह

उडद *विक्रच.* अडद [दे.]

उडपति *चित्तसं.* उडुपति, ताराओनो राजा, चंद्र

उडल *सिंहा(शा).* बाथ; जुओ उंडल

उडवउं *अंबरा. ऋषिरा. गुर्जरा.* पर्णशाला, झूंपडुं (सं.उटज)

उडवुं, उढवुं *ऐतिरा. सिंहा(म). सिंहा(शा).* ओडवुं, आगळ धरवुं, मागवा माटे हाथ लंबाववो; *नलाख्या.* ओडवुं, होडमां मूकवुं (दे.हुड्ड); जुओ ओडइ

उडीस, उडीसउ *नलरा. वीसरा.* ओरिस्सा (सं.ओड्रदेश)

उडुकारकरणु *षडाबा.* ओडकार खावो ते

उडुगण *नरका.* तारा [सं.]

***उडुय [उदु]** **विमप्र.* [उदय हो]; जुओ उदो

उड्डमर *प्राचीसं.* उग्र भय, [विप्लव वगेरेनी स्थिति] [सं.उत्+डमर]

उड्र *नलरा.* वर्तमान ओरिस्सा प्रान्तनो प्रदेश [सं.ओड्र]

उढण *प्राचीसं.* परिधान, [पहेरवेश]

उढणउं, ऊढणूं *आरारा. उपबा. उषाह. कादं(शा). विमप्र.* ओढणुं, [ओढवानुं वस्त्र] (दे.ओड्ढण)

उढवुं जुओ उडवुं

उढवुं, ऊढवुं *उपबा. उषाह. कादं(शा). विमप्र.* ओढवुं

उण *ऐतिका. पंचवा. वीसरा.* ए (सं.एन परथी)

उणम *सिंहा(शा).* स्वामी (सं.ऊन+म)

उणमण *सिंहा(शा).* स्वामी

उणहार *वीसरा.* मुखाकृति, [अणसार] (सं. अनुहार) (रा.)

उणि, उणी *आरारा. पंचवा.* ए (स्त्री) (सं.एन परथी)

उतइं *गुर्जरा.* आ बाजु, आम

उतपत *देवरा.* उत्पत्ति

उतपति *गुर्जरा.* उत्पत्ति, जन्म

उतलीबल *प्रद्युचु.* अतलीबल, अतुल्य बळवाळो

उतापइ *शृंगामं.* संतापे [सं.उत्तापयति]

उत्कडु **षडाबा.* [उभडक, लपाईने] (सं. उत्कटुक); जुओ उकडचंडी, ऊकडू

उत्तर-उत्तर *आरारा.* एक पछी एक, क्रमशः (सं.)

उत्तरगोग्रह **गुर्जरा.* [उत्तर दिशामां गायोने वाळी जवानो प्रसंग] (सं.)

***उत्तराणम्** *उक्तिर.* ऋणमुक्त; जुओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊतरिण्यु

उत्तरासण *आनंत. नलरा.* उत्तरासंग, वंदन करती वखते उत्तरीय वस्त्रने शरीर उपर अमुक रीते राखवुं ते [जै.]

उत्तरी, उत्तरीअ *ऋषिरा. कादं(शा).* उपर ओढवानुंवस्त्र, पछेडी, खेस (सं.उत्तरीय)

उत्तंग *आरारा.* ऊंची कोटिनुं, मोटुं; *आरारा. ऐतिका.* उत्तुंग, ऊंचुं

***उत्तंभ, [*उत्तंभ]** *ऋषिरा.* *चेन न पडवुं, [खिन्न, उद्विग्न] [प्रा.उत्तम्भ]

उत्तीरण *हरिख्या.* पार ऊतरेलुं, मुक्त थयेलुं (सं.उत्तीर्ण)

उत्थपिय, उथप्पिय *ऐतिका.* उथापी [सं. उत्था-]

उत्पत्य *प्रेमाका.* उत्पत्ति

उत्पात *चित्तसं.* मुश्केली

उत्सूत्राविधि *ऐतिका.* उत्सूत्र [सूत्रविरुद्ध] तथा अविधि [विधिविरुद्ध]

***उथउ [उथ्उ]** **उपबा.* [ओघो, जैन साधुनुं रजोहरण] [सं.उपग्रह]

उथप्पिय जुओ उत्थपिय

उथल थाए *मदमो.* ऊथली पडे [सं.उत्थल्]

उथाप *अखाछ.* उथापवुं ते [सं.उत्स्थाप]

उथापतां **चंद्रवा.* [अवगणतां, टाळतां]

उदइ *आरारा.* उदय; *गुर्जरा. ०षडाबा.* उदयमां, उदये

उदक, ओदक *०कामा(शा).* पाणी [सं.]

उदकवुं *दशस्कं(१).* (आवेशथी) ऊछळवुं, [सफाळा ऊभा थवुं, चोंकी ऊठवुं]; जुओ उधडकवुं

उदपात *चंद्रवा.* उत्पात

उदभीज *दशस्कं(१).* उद्भिज्ज, वनस्पति

उदभुत *नलरा.* अद्भुत; जुओ उद्भुत

उदमाद *दशस्कं(१). प्रेमाका.* उधमात, तोफान-मस्ती

उदयो, उदियो, ऊदीओ *दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो.* उदित थयो, ऊग्यो

उदवस, उदवस्त *दशस्कं(१). सिंहा(शा).* उज्जड (सं.उद्ध्वस्त)

उदंत *आरारा. ऋषिरा.* समाचार, वृत्तांत (सं.; रा.)

उदंप, ऊदंप *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* गर्विष्ठ, हर्षाविष्ट, मदमत्त (सं.उद्दृप्त)

उदार *आरारा.* विशाळ (सं.)

उदारथ, उदारय *सिंहा(म).* उदारता (सं. औदार्य)

उदालइ, ऊदालइ *अखाछ. अंबरा. आरारा. गुर्जरा. नरका. प्रद्युचु. प्राचीफा. ललिरा. विराप.* झूंटवे, छीनवे, बळात्कारे पडावी ले, खेंची ले (दे.उद्दाल); जुओ ओदाली

उदास *चित्तसं.* उदासीन, तटस्थ

उदासन *षष्टिप्र.* तटस्थ (सं.उदासीन)

उदाहरणतु *वाग्भबा.* उदाहरण आपतां

उदाहरी *षडाबा.* उदाहरण आप्युं (सं.उदाह)

उदियो जुओ उदयो

उदी, ऊदी *कामा(त्रि). कामा(शा).* आछा वादळी रंगनी [फा.ऊदू]

उदीओ जुओ उदयो

उदीपक, ऊदीपक *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* अजवाळतो (सं.उद्दीपक)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदीरनै *जिनरा.* प्रयत्नपूर्वक निपजावीने

उदीसइ *शृंगारमं.* उदय थशे, ऊगशे [सं. उदिश्यति]

उदु जुओ उडुय

उदुंबर *हरिख्या.* उमरडानुं झाड (सं.)

उदे *अखाका. देवरा. नरका. प्रेमाका.* उदय

उदेग, ऊदेग *आरारा. उपबा. ऐतिका.* उद्वेग

उदेगइ *उक्तिर.* उद्वेग पामे, दुःखी थाय

उदेगामणउं, ऊदेगामणउं *उक्तिर.* उद्वेग-जनक

उदेही, ऊदेही *उक्तिर. षडाबा.* ऊधई [दे. उद्देही]

उदो उदो *आरारा.* उदय हो, जय हो; जुओ उदु

उद्गता *ऐतिका.* उदित थतो, ऊगतो

उद्दिसी *षडाबा.* उद्देशीने

उद्धरइ *प्रेमाका.* उद्धार करे, [ऊंचे लई जाय, तारे]; *तेरका.* उद्धार करे, समरावे

उद्धरियलि *प्राचीसं.* उद्धार कर्यो, [तार्या] (सं.उद्धृत)

उद्धसइ, ऊद्धसइ, ऊधसइ *विराप. शृंगारमं. षडाबा.* (रूंवाडा) ऊभां थाय (सं.उद्+हर्षति); **गुर्जरा.* [रोमांचित थाय, उल्लास पामे]; जुओ उधसइं, ऊध्रसइ

उद्धसी जुओ उद्धसी

उद्धसिवा *गुर्जरा.* नाश करवा (सं.उद्ध्वस्)

उद्भिज्ज, उद्भीज *अखेगी. प्रेमाका.* वनस्पति [सं.]

उद्भुत, उद्भूत *नलरा. नेमिछं. शृंगारमं.* अद्भुत; जुओ उदभुत

उद्यम *आरारा. नलाख्या.* ऊजम, खंत, उत्साह, उमंग [सं.]

उद्यमइ *उक्तिर.* उद्यम करे

उद्यमभरे *आरारा.* प्रयत्नपूर्वक

उद्वस *कादं(शा).* उज्जड, नष्ट (सं.); जुओ ऊवस, उध्वस

***उद्वसी [उद्धसी]** *गुर्जरा.* (रूवाडां) ऊभां थई गयां (सं.उद्+हर्षित)

उद्वस्त *हरिख्या.* उज्जड [सं.उद्ध्वस्त]

उधडकवुं *नरका. प्रेमाका.* चोंकी ऊठवुं, [आवेशथी ऊछळवुं]; जुओ उदकवुं, उधरकवुं

उधन *नेमिछं.* ओधान, गर्भधारण

उधमाद *प्रेमाका.* उन्मादं, धमपछाडा

उधरकवुं, उधकवुं, ऊधरकवुं *उक्तिर. दशरकं(१). नरका. प्रेमाका.* धडकवुं, (आवेशथी) ऊछळवुं; जुओ उधडकवुं

उधरी **लावल.* [उतारवामां आवे, लखवामां आवे]

उधरुं *लावल.* उद्धारुं

उधसइं *कृष्णच.* झडपथी धसे; जुओ उद्धसइ

उधाण, ऊधाण, ऊधाणह *अखाका. *ऋषिरा. दशरकं(१). प्रेमाका. विमप्र.* समुद्रनी मोटी भरती

उधाणी *नरका.* उधाण – मोटी भरती पामी, [वृद्धि पामी]

उधार *उक्तिर.* उद्धार, [उगार, बचाव]

उधारवुं, ऊधारवुं *आरारा. वीसरा.* उद्धारवुं, बचाववुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उधारो *प्रेमाका.* उधार, बाकी, मुलतवी राखवुं ए, [विलंब]; *प्रेमप.* ओछप, [खोट]

उधि *गुर्जरा.* अवधि, सीमा; जुओ ओधि

उधेला [*उधेला] *ऐतिरा.* खर्च, [उछाळवुं ते, वापरवुं ते]; जुओ ऊघलवुं

उध्रक्वुं जुओ उधरकवुं

उध्वभूय *शृंगामं.* ऊंचा हाथ राखीने (सं. उर्ध्वभुज)

उध्वस, उध्वस्त *दशस्कं(१). प्रेमाका.* उज्जड [सं.उद्ध्वस्त]; जुओ उद्वस, उद्वस्त

उनइओ *शृंगामं.* आकाशमां झळूंबी रहेलो [सं.उन्नत]

उनपचास *नरका.* ओगणपचास [सं.एकोनपंचास]

उनमे, ऊनमे *प्रेमाका.* ऊमटे, [ऊंचे चडे] [सं.उन्नमति]; जुओ ऊनविउ

उनमेख *शृंगामं.* आंखनो पलकारो (सं. उन्मेष)

उन्नयउं, ऊनयउ, ऊन्नयउ *अंगवि. आरारा. ऋषिरा. प्राचीफा. स्थूलिफा.* उन्नत, ऊंचे रहेलो, ऊंचे चढी आवेलो, उपर छवायेलो

उन्मनी *नरका.* योगीना चित्तनी अंतिम अवस्था, [मननी पारनी अवस्था]

उन्माद *दशस्कं(२).* उत्पात, तोफान

उन्मारग, उन्मार्ग *उपबा. प्रेमाका.* खोटो के अवळो मार्ग

उन्मूलइ *उक्तिर.* उन्मूलन करे, उखेडी नाखे

उन्हालडइ *लावल.* उनाळामां [सं.उष्णकाल]

उप *गुर्जरा.* पाणी (सं.अपस्)

उपइ, ऊपइ *उषाह. ऐतरा. कर्पूमं. नेमिछं.* ओपे, शोभे, [दि.ओप्प]

उपकरइ, उपगरइ *उक्तिर.* उपकार करे (सं.उपकरोति)

उपकंठ *अखाका. कामा(शा). प्रेमाका.* किनारो [सं.]

उपकीर्ति *प्रेमाका.* अपकीर्ति

उपखाणा *नरप.* उखाणां, [कहेवत] (सं. उपाख्यान)

उपगरइ जुओ उपकरइ

उपगरण *आरारा.* *उपबा. देवरा.* साधन (सं.उपकरण)

उपगार *आरारा. उपबा. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा.* उपकार

उपघात *कामा(त्रि). कामा(शा).* ईजा, हानि (सं.)

उपचईइ *उक्तिर.* उपचय पामे, वृद्धि पामे (सं.उपचीयते)

उपचार *अभिउ.* आचार, रीत, [व्यवहार] (सं.)

उपची जुओ उपवी

उपजण्य *चित्तसं.* उत्पन्न थयेलुं तत्त्व

उपतृष्टो **अखाका.* [तृष्णाविहीन थयेलो] [सं.अप+तृष्ट]

उपतृष्णा *चित्तसं.* तृष्णा विना (सं.अपतृष्ण)

उपतेज *चित्तसं.* अपतेज, तेजहीनता, अंधारुं

उपदिशइ, उपदिसइ *उपबा. ऐतिका. षडाबा.* उपदेश आपे

उपदिशा *नलरा.* खराब दशा, अवदशा (सं.अपदशा)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपदिसइ जुओ उपदिशइ

उपदेश **नरका.* [चिह्न, ठेकाणुं] [सं. अपदेश]

उपधान *ऐतिका.* तपविशेष, [जेमां नियमानुसार उपवास अने एकासणां करवानां होय छे] [जै.]

उपनउं, उपन्नउं, ऊपन्युं *अखाका. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. कादं(शा). गुर्जरा. चित्तसं. दशस्कं(१). देवरा. नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. शृंगामं. षडाबा.* उत्पन्न थयुं, उत्पन्न थयेलुं

उपनय *आनंस्त.* *वस्तुनो उपसंहार करीने कहेवुं ते, [दृष्टांतना अर्थने प्रस्तुत वात साथे जोडवो ते] [सं.]

उपनले *ऐतिका.* उत्पन्न थया

उपम, उपमा, ऊपम *उपबा. गुर्जरा.* उपमा; *वसंफा.* सरखुं होवुं ते [सं.औपम्य]; **उपबा. हरिख्या.* वडाई, [महिमा, गौरव]; **नरका.* [शोभा]; जुओ ओपम

उपम जाइ *वसंवि.* उपमा आपी शकाय, [सरखावी शकाय]

उपमा जुओ उपम

उपमाण *तेरका.* उपमान

उपमानवुं *कृष्णबा.* अपमानवुं

उपमांन *सिंहा(शा).* अपमान

उपरछलुं *अखाका.* उपरउपरनुं, [बाह्य]; *अखाछ.* उपर थईने, [-थी उपरनुं, उपरवट]

उपरणा *प्रेमाका.* खेस

उपरम **कादं(शा).* [मृत्यु] (सं.)

उपरमिउ *षडाबा.* विलीन थयो [सं.उपरम्]

उपरवट्ट *प्राचीसं.* अधिक, [चडियातो]

उपरवाड, ऊपरवाड *नरका.* **षडाबा.* गामनी नजीकनो [बहारनो] भाग; *जिनरा.* उपरनो मार्ग, [उपरनो भाग – प्रदेश]

उपराजन *शृंगामं.* उपार्जन, [प्राप्ति]

उपराजइ, ऊपराजइ *ऋषिरा. दशस्कं(२). सिंहा(शा).* उपार्जन करे, प्राप्त करे, कमाय

उपराठउ, ऊपराठउ *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* पराङ्मुख, अवळुं, पीठ करीने; *उपबा.* [विमुख, ऊलटुं, विरुद्ध]

उपरि, ऊपरि *उक्तिर. उपबा. कादं(शा). तेरका. नेमिछं.* उपर (सं.); *वीसरा.* उपरनुं; *गुर्जरा. षडाबा.* उपर, [तरफ]

उपरि ठाइ *उक्तिर.* उपर रहेलुं (सं.उपरि स्थायी)

उपरियामणुं *उक्तिर.* व्याकुळता, खेद; जुओ उफरियामणु

उपरेण *वेताप.* उपरनुं पाथरणुं, ओछाड [सर. उपरणुं]

उपरोध **गुर्जरा.* [आग्रह, अनुरोध] (सं.)

उपलभी *षडाबा.* प्राप्त करी

उपवाद, ऊपवाद *कामा(त्रि). कामा(शा). सिंहा(म).* निंदा (सं.अपवाद)

***उपवी [*उपची]** **रूपच.* [पुष्ट करी, एकत्र करी, पिंड रूपे बांधी]; जुओ उपचईइ

उपशम *उपबा.* शांत थवुं ते, शमन (सं.); *ऐतिका.* [कषायादि] शांत थवा ते, [इन्द्रियनिग्रह, वैराग्य] [जै.] [सं.]

उपशमावइ *उपबा.* शांत करे, शमन करे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपशमिउं *षडाबा.* उपशम पाम्युं, शांत थयुं, [नष्ट थयुं]

उपशहीअर *प्राचीका.* संकेली ले, (सं. उपसंहर)

उपसमण *ऐतिका.* उपशमन, [कषायोनुं शमन] [जै.]

उपसमवासी *ऋषिरा.* कषायोने शांत करनार [जै.]

उपसमी *आरारा.* उपशमी, शांत थई, दूर थई

उपसर्ग *उपबा. नलरा.* विघ्न, अंतराय (खास करीने तपश्चर्यामां) (सं.) [जै.]

उपसंहरतउ *षडाबा.* पूरुं करतो

उपस्ती *प्रेमाका.* सेवक, अनुचर [सं.उपस्ति के उपास्ति]; जुओ उवस्ती

उपस्थगुह्य *आनंस्त.* लिंग, [जननेंद्रिय] [सं.]

उपहरुं, ऊपहरउं, ऊपहिरु *सिंहा(म).* उपर; *उषाह.* -थी उपर, [ऊंचे]; *उपबा.* -थी उपरांतनुं, [-ना सिवाय]; *विमप्र. षडाबा.* उपरांतनुं, [वधु समय के अंतरनुं]; **षष्टिप्र.* [-थी उपरवट, -थी आगळ जईने]; जुओ उफरुं

उपंग *कादं(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* एक प्रकारनुं वाद्य

उपाइ *गुर्जरा. प्रबोप्र.* उपाय; *विराप.* *उपाये, [कारणे]

उपाइ, ऊपाइ *ऐतिरा. ऋषिरा. गुर्जरा. कादं(ध्रु). नलाख्या.* उपजावे, उत्पन्न करे (सं.उत्+पद्)

उपाउ *उषाह.* उपाय; *गुर्जरा.* उपाय; [कारण]

उपाडी, ऊपाडी *गुर्जरा. हरिवि.* उखेडी, उखाडी (सं.उत्पाट्); *गुर्जरा. विराप.* उगामी

उपाध्यायांस *उक्तिर.* उपाध्यायवर (सं. उपाध्यायमिश्राः)

उपान, उपानह *आनंस्त. कादं(शा). प्रेमाका.* जोडां, पगरखां

उपायउं, ऊपायु *अखाका. अखाछ. आरारा. कादं(ध्रु). कादं(शा). प्रद्युचु.* प्रगट्युं; उत्पन्न कर्युं, उपजाव्युं (सं. उत्पादित)

उपायनां *षष्टिप्र.* मानता, आखडी (सं. उपायन)

उपारजइ, उपार्जइ *उक्तिर. प्रेमाका. षडाबा.* उपार्जन करे, मेळवे

उपासी जुओ कुंभकर्णना उपासी

उपांगे *प्रेमाका.* उपाये

उपोषितु *षडाबा.* उपवासी (सं.उपोषित)

उप्पलु *ऐतिका.* उत्पल, कमल

उफराटुं, उफराठुं, ऊफराटुं, ऊफरांठुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ऊंचुं करेलुं, उलाळेलुं; **कादं(शा). *नलाख्या. *प्रबोप्र. *प्रेमाका.* [पराङ्मुख, अवळुं, पीठ फेरवेलुं]; *शृंगामं. सिंहा(शा).* अवळुं, [प्रतिकूळ]; *शृंगामं.* आडुं, अवळुं, [ऊलटी दिशामां]; [अवळो भाग, पूंछडुं]

उफरुं, ऊफरुं *कादं(शा).* ऊंचुं, [ऊंचुं करेलुं]; *अखाका.* उपर, [उपरवट, पर]; अलग [थईने]; *चित्तसं.* उपरवट, अलग; *कर्पूमं,* [उपरांत], विशेष; *कामा(त्रि). दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलरा. प्रेमाका.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपरवट, ऊंचुं, चडियातुं; जुओ उपहरुं

उबकी *प्रद्युच्.* ऊलटीथी [सं.*उब्बक्क]

उबटणुं, ऊवटणउ *उक्तिर. नरप(द).* खुशबोदार मर्दन, अंगलेप (सं.उद्वर्तन)

उबरन *ऐतिका.* ऊंबरानुं वृक्ष (सं.उदुम्बर)

उबाड, उंबाडु, ऊंबाडु *गुर्जरा. षडाबा.* उंबाडियुं, सळगतुं लाकडुं (*दे. उम्माडिय); जुओ उमाड

उबारी **नरका.* [ऊभराती, छलकाती, आवेशभरी]

उबार्या *नरका.* उभरायेलां, [आवेशभर्यां]

उबीठउ, उवीठउ, ऊबीठ, ऊबीठउं *आरारा.* अरुचिवाळो, अनुराग वगरनो (सं.उद्+द्विष्); *नेमिछं.* **प्राचीफा.* **वसंफा(ल). वसंवि. षडाबा.* अरुचि-भर्युं, अकारुं, अणगमतुं; जुओ ऊभीठउ

उब्भ- *प्राचीसं.* ऊभुं करवुं (सं.ऊर्ध्व); जुओ ऊभइ

उभगइ, ऊभगइ *ऐतिका. जिनरा. शृंगामं.* उद्विग्न थाय, निर्वेद अनुभवे, अरुचि थाय (सं.उद्भग्न); जुओ उभाजणी

उभजइ, ऊभजइ **ऋषिरा. शृंगामं.* उद्वेग करे, [अरुचि अनुभवे, कंटाळे] (सं.उद्+भंज); जुओ ओभजउं

उभाखरु **विमप्र.* [भटकतो] [रा.]

उभाजणी जुओ गुभाजणी

उभात *अखाछ.* भात मटी जवी ते, [भात – छाप विनानी स्थिति]; जुओ ऊभति

उभे *प्रेमाका.* उभय, बे

उमकु *षडाबा.* अमुक (सं.अमुक); जुओ अमकइ

उमगवुं, ऊमगवुं *नरका.* [उत्साहथी] ऊछळवुं; *नरका. नरप.* ऊभरावुं, ऊलटवुं (सं. उन्मग्न); *अखाका.* *ऊभरावुं, [उल्लसवुं]; *चित्तसं.* प्रसरी रहेवुं, स्फुरी रहेवुं, फेलावुं

उमग्गु *षष्टिप्र.* आडो मार्ग, [खोटो मार्ग] (सं. उन्मार्ग)

उमता *हम्मीप्र.* उन्मत्त

उमाइ *देवरा.* उमंगथी [दे.उम्माहिअ]

उमागि *प्राचीसं.* उन्मार्गे

उमाड *उक्तिर.* उंबाडियुं [दे.उम्माडिय]; जुओ उबाड

उमाह- *वीसरा.* ऊभरावुं, विकसवुं, फेलावुं (रा.उमहणौ); *प्राचीफा.* उत्साहित थवुं; जुओ उम्माहियउ

उमाह, उमाहउ, उमाहलउ, ऊमाह, ऊमाहउ, ऊमाहलउ *अंबरा. आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. ऐतिरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. वीसरा. शृंगामं.* उमंग, उत्साह, होंश (दे.उम्माह)

उमाहलुं *प्रद्युच्.* आतुर, उत्सुक (सं.उन्माथ, प्रा.उम्माह)

उमी *गुर्जरा.* गरम थईने, तपीने (सं.ऊष्माइत)

उमेलइ **कृष्णबा.* [उखेडी नाखे]; **गुर्जरा.* [प्रकाशमान थाय, उल्लसे] (सं. उन्मील् परथी); जुओ ऊमेल्यां

उमेहि *आरारा.* उमंगथी, उत्साहथी, इच्छाथी (दे.उम्माहिअ)

उम्माहियउ, ऊमाहिउ **गुर्जरा. तेरका.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नलाख्या. प्राचीसं. विराप. उत्कंठित, [उत्साहसभर, आनंदपूर्ण] (सं. उन्माथित); जुओ उमाह-

उम्मूलिय, उम्मूलेवि *कृष्णच. ऐतिका.* उन्मूलित करी, उखेडी

उयर जुओ उअर

उयारउ *षडाबा.* ओवारो (सं.अवतारक)

उयारि *आरारा.* उतारी ? पार उतारी ?

उर (वरि) *वसंवि.* उदर (उपरनी); जुओ उअर

उरग *तेरका. प्रेमाका.* नाग [सं.]

उरज *अखाका. कादं(शा). नरका. प्रेमाका.* स्तन (सं.उरोज)

उरझ्यां *नरप.* [अलज्यां], आतुर थयां; जुओ अलज्यउ

उरडउ *अंबरा. नेमिछं. प्राचीफा. शृंगामं.* ओरडो (सं.अपवरक)

उरणी (परणी-उरणी) *वीसरा.* निरर्थ प्रतिध्वनि शब्द, [परणी करीने]

उरतउ, ऊरतु *कर्पूमं. कस्तुवा. गुर्जरा. विमप्र. विराप. शृंगामं.* ओरतो, अभिलाष (सं.आतुरत्वम्)

उरध, ऊरध *कादं(शा). दशस्कं(२). नलरा.* ऊर्ध्व, ऊंचुं, ऊंचे

उरन्निउं *उक्तिर.* ओलुं, [पेलुं] [प्रा.अवरिल्ल]

उरव *नरका.* [छाती स्तन]

उरवसी, उरवंशी *नेमिछ. वेताप.* उर्वशी, ए नामनी अप्सरा

उरहउं *उक्तिर. षडाबा.* अहीं, आ बाजु, पासे; *आरारा.* *उपबा. आ तरफ, आम; *आरारा.* आपणी पासे, पाछुं; जुओ अरहु, उहरउं, ओरहुउं

उरहभरि *उषाह.* छाती वडे, छातीभेर [सं. उरस्]

उरहां परहां जुओ परहां

उरंगी *शृंगामं.* नागिणी [सं.]

उरा *प्रद्युचु.* ओरडा, कोठडी (सं.अपवरक); जुओ ओरि

उराउर *प्रेमाका.* सामी छातीए

उरि *लावल.* उदरमां; जुओ उअर

उरि *वीसरा.* छाती (सं.उरस्)

उरि, उरै *जिनरा.* *रूपच. अहीं, [आ बाजु] [रा.]; जुओ ओरइ

उलखइ, ऊलखइ, ऊळखइ *अभिऊ. आनंस्त. आरारा. उपबा. उषाह. कादं(शा). नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. वीसरा. शृंगामं. षष्टिप्र.* ओळखे (सं. उपलक्षति)

उलग, ऊलग *अंबरा. नंदब.* सेवक, दास; *अंबरा. उषाह. कर्पूमं. गुर्जरा. प्राचीफा. विमप्र. सिंहा(शा). हम्मीप्र.* ओळग, सेवा, चाकरी; *वीसरा.* परदेशमां राजसेवा (दे.ओलग्गा) (क.ऊळिग); जुओ ओलग

उलगइ, ऊलगइ *नलरा. लावल. हम्मीप्र.* सेवा करे; *वीसरा.* परदेशमां राजसेवा करे; जुओ ओलगइ

उलगाण, उळगाण *जिनरा.* सेवक; *वीसरा.* परदेशी राजसेवक; जुओ ओलगाणउ

उलझण *अखाका.* गूंच, [मूंझवण, मुश्केली]

उलट, उल्लट, ऊलट *अभिऊ. ऋषिरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐतिका. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. जिनरा. नरका. नलाख्या. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. विमप्र. उत्साह, होंश, उमंग (दे.उल्लट्ट)

उलट-भाव *देवरा.* उल्लास – उमंगनो भाव

उलपट *वीसरा.* *छाती पर राखवानुं वस्त्र, [एक वस्त्रप्रकार]

उलपति *अंबरा.* गुप्तता, [छुपाववुं ते] [सं. अप+लप्]

उलभउ *आरारा.* ओलंभो, ठपको, टीका (सं.उपालंभ); जुओ उलंभउ

उललियै, ऊललियइ *जिनरा.* ऊंधुं पडी जाय, [ऊलाळ ले, पाछळ ढळी जाय] [सं.उल्लयति]; *उक्तिर.* उलाळे (सं. उल्लालयति)

उलवइ, ऊलवइ *उपबा. नलरा.* ओळवे, पचावी पाडे; *अंबरा. सिंहा(म).* छुपावे, संताडे; *आनंस्त. उपबा.* लोप करे, द्रोह करे (सं.अपलपति); जुओ ओलवइ

उलविवापूर्वक *वाग्भबा.* अपह्नुतिपूर्वक, ढांकवा साथे

उलवी *हरिवि.* संताई, [छेतरी]

उलवे, ऊलवे *प्राचीका.* *गुप्त स्थानमां, [आडशमां, पडछे]; *वेताप.* ओळवेथी, [आडशमांथी, गुप्त रीते, संताईने] [सं. अपलप्]; जुओ ओलवे

उलश-वालस *वेताप.* आकळविकळ, ऊंचो-नीचो

उलसतइ *जिनरा.* प्रकाशित थतां

उलंच, ऊलंच *कादं(ध्रु). कादं(शा).* चंदरवो (सं.उल्लोच)

उलंभउ, ऊलंभु *अभिऊ. अंबरा. आरारा. कादं(शा). जिनरा. नलरा. प्राचीफा. शृंगामं.* उपालंभ, ठपको, कहेणी, [महेणुं]; जुओ उलभउ, ओलंभउ

उलंभडउ, ऊलंभडउ *वीसरा. शृंगामं.* ठपको, महेणुं (सं.उपालंभ)

उलाण *नलाख्या.* ओलाण, शांति (दे.ओल्हव)

उलाद, उल्लाद *मदमो. वेताप. सिंहा(शा).* आह्लाद, उल्लास

उलालो, उलाळो, उल्लाळ *अखाका. अखेगी.* उछाळो, उदय, [उल्लसवुं प्रगट थवुं]

उलावी *अभिऊ.* अवलंबन आपी

उलास, ओलाश, ओहोलाश *कामा(शा).* उल्लास

उलि, उली *ऐतिरा. नेमिछं. विमप्र. हम्मीप्र.* हार, पंक्ति [सं.आवलि]; जुओ ओल, ओली

उलिइ *षष्टिप्र.* पेलामां, ओल्यामां

उलिउं *षडाबा.* [पेली तरफ] [प्रा. अवरिल्ल]; जुओ ओलिउं

उलूरइ *उक्तिर.* तूटे [प्रा.]

उलोच *गूर्जरा.* चंदरवो (सं.उल्लोच)

उल्लट जुओ उलट

उल्लसइ *शृंगामं.* उल्लास पामे; *तेरका.* शोभे; [दीदीप्यमान बने, विस्तीर्ण बने]; *षडाबा.* प्रकाशित थाय, प्रगट थाय; *गुर्जरा.* प्रकाशे [शोभे]; *चित्तसं.* चाले, गति करे, प्रवृत्त थाय, प्रगटे

उल्लसे *चित्तसं.* उल्लासथी, प्रगटीकरणथी

उल्लाद जुओ उलाद

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्लाळ जुओ उलालो

उल्लावइ *उक्तिर.* मोटेथी पोकारे, बकवाद करे (सं.उल्लापयति)

उल्लींचइ *उक्तिर.* उलेचे, खाली करे [सं. उद्+रिच्]

उल्लोच *ऋषिरा.* चंदरवो (सं.)

उल्लोय *आरारा.* चंदरवो (सं.उल्लोच)

उल्हववुं *नलरा. प्रद्युचु. शृंगामं.* ओलववुं, (दे.उल्हव) [सं.उद्र परथी]

उल्हारो **प्राचीसं.* [ऊमटवुं ते, छलकावुं ते] [रा.]

उल्हावइ *शृंगामं.* ओलवे, [बुझावे] (प्रा. ओल्हव)

उवइसइ *जिनरा.* उपदेश आपे

उवएस *आरारा.* उपकेश, ए नामनो गच्छ – साधुसमुदाय [जै.]

उवएस *आरारा. गुर्जरा. चारफा. तेरका. विक्ररा.* उपदेश

उवघाइ *जिनरा.* उपघात, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी शरीरना अवयवोथी पीडा थाय] [जै.]

उवज्झाय, उवझाय *ऐतिका. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीसं.* उपाध्याय, जैन साधुनी एक पदवी

उवट, ऊवट *उक्तिर. उपबा. जिनरा. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीका. प्राचीफा. *सम्यचो.* आडो रस्तो, अवळो रस्तो, खोटो रस्तो (सं.उद्वर्त्म); जुओ ऊवट्टहं

उवठाणसाल **देवरा.* [सभामंडप, विश्राममंडप] [सं.उपस्थानशाला]

उवडु **शृंगामं.* [अवळुं, प्रतिकूळ]; जुओ अवाडूउ

उवर *प्राचीसं.* उदर

उवरि, ऊवरि *तेरका.* उपर, उपरवट (सं. उपरि)

उवरे *पंचवा.* बचे, बाकी रहे (सं.उद्धरति); जुओ ऊवर्यउ

उवलक्ख *प्राचीसं.* ओ ळखवु (सं .उपलक्ष्)

उवली **गुर्जरा.* [पाछी फरी] (सं.उद्वलिता); जुओ ऊवलइ

उवसग्ग *ऐतिका.* उपसर्ग, विघ्न

उवसम *तेरका.* उपशम, [वैराग्य]

उवसमघोडां *चारफा.* इन्द्रियनिग्रहरूपी घोडां (सं.उपशम+गु.घोडा)

उवसंत *जिनरा.* उपशांत[मोह], [मोहनीय कर्म ज्यां उपशांत – ढंकायेलां रहे छे तेवी आत्मावस्था] [जै.]

उवसिमिग *जिनरा.* औपशमिक, [उपशम पामेला, शांत थयेला]

उवस्ती **प्रेमाका.* [साथीदार, सहायक] [सं.उपस्ति, उपास्ति]; जुओ उपस्ती

उवा *पंचवा.* ए (स्त्री) (सं.एषा)

उवाट *अखाका. कृष्णबा. प्रेमाका.* उन्मार्ग, अवळो मार्ग, आडो मार्ग (सं.उद्+वर्त्म)

उवाणउ ठाण *उक्तिर.* चूलो (सं.उद्वानं स्थानम्)

उवारणइ *आरारा.* ओवारणे, सामानुं दुःख लई लेवा माटे थती विधिमां [सं. अपवारण]

उवारु *शृंगामं.* उगारो, बचाव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवास *प्राचीसं.* उपवास

उवीठउ जुओ उबीठउ

उवीली *कादं(ध्रु).* यज्ञनुं कोई पात्र के साधन, [यज्ञनुं एक साधन, मंथन- दंडनो उपलो भाग जेमां घूमे ते] [सं.ओवीली]

उवेख *जिनरा.* उपेक्षा; *चित्तसं.* उपेक्षा, इन्कार

उवेखे *ऐतिरा.* [उखेवे], पाछुं हठावे, [फेंके]; *दशस्कं(२).* *नरका. प्रेमाका.* उछाळे, प्रसरावे (सं.उद्+क्षिप्); जुओ उखेवे

उशंकल, उसंकल, ओशंकल, ओशिंकळ *कस्तुवा. *वेताप.* [ऋणमुक्त; बदलो वाळवो ते]; *उपबा. सिंहा(शा).* ऋण चूकवेल, ऋणमुक्त (सं.उत्+शृंखल); जुओ गुणउसंकल, उसीकल, ओशिंगळ

उशीर *कादं(शा).* सुगंधी वाळो (सं.)

उषधि *प्राचीका.* दवा (सं.औषधि)

उषर, ऊषर *अखाका. प्रेमाका.* खारवाळी जमीन (सं.)

उष्ट्र *अखाका.* ऊंट [सं.]

उसन्नइं *उपबा.* आचारभ्रष्ट साधुवर्गमां (सं. उत्सन्न) [जै.]

उसन्नापणउं *उपबा.* शिथिलाचारीपणुं [जै.]

उसप्पिणि *गुर्जरा.* उत्सर्पिणी, उन्नतिकारक कालविभाग [जै.]

उसभ *ऐतिका.* ऋषभदेव

उसर, ऊसर *अंबरा. उषाह. गुर्जरा.* नृत्य (*सं.अप्सरस् परथी) [सं.अवसर]

उसरइ, ऊसरइ *प्रद्युचु. *शृंगामं.* पाछा हठवुं (सं.अप+सृ); *सिंहा(शा).* -थी दूर भागवुं, शरमावुं; *अखाछ. *अंबरा.* ओसरे, पूरुं थाय; जुओ ओसरे

उसर्या *वेताप.* 'रोया', 'रड्या' के 'मुआ' जेवी एक गाळ

उसवि *आरारा.* ऊंची धरीने (अप.ऊसविय)

उससइ, ऊससइ *उक्तिर. नलरा.* खीले, विकास पामे (सं.उत्+श्वस्) [प्रा.]; *गुर्जरा. *वीसरा.* [आवेश अनुभवे, उल्लसे, उमंगथी ऊछळे]

उसह *षडाबा.* औषधि

उसंकल जुओ उशंकल

उसंख- *नलरा.* संकोच पामवो, ओशंकावुं (सं.उत्+शंक)

उसाई *लावल.* ओसावीने [सं.अवस्राव्]

उसारण *अखाछ.* उसरडी लेवुं ते, ओसरवुं ते [सं.उत्+सार्]

उसास, ऊसास *उपबा.* श्वास लेवो ते; *गुर्जरा. षडाबा.* उच्छ्वास; *जिनरा.* उच्छ्वास, [एक नामकर्म, जेना उदयथी श्वासोछ्वासनी तकलीफ न थाय] [जै.]

उसासे जुओ सासे-उसासे

उसिणीस *प्राचीसं.* पाघडी, साफो, मुगट (सं.उष्णीष)

उसिरि *कादं(शा).* *-ने निमित्ते

उसीआलु *उक्तिर.* [*ओशियाळुं] (*सं. अस्पृष्टालयम्) [सं.अवशी परथी]

उसीकल *नलरा. *सिंहा(म).* [ऋणमुक्त, बदलो वाळवो ते] [सं.उत्+शृंखल]; *शृंगामं.* *ऋणमुक्त, [(वचन) पाळवुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते]; जुओ उशंकल

उसीसउं, ऊसीसउं *उक्तिर. प्राचीसं. वीसरा.* ओशीकुं (सं.उच्छीर्षकम्)

उसूर *उक्तिर. प्राचीसं.* असूरुं, मोडुं (सं. उत्सूर)

उस्सासहि *ऐतिका.* आनंदित थाय, उत्साहित थाय

उहरउं, उहुरउं *अभिऊ. उक्तिर.* ओरुं, अहीं, पासे; जुओ उरहउं

उहना *आरारा.* एना

उहलाइ, ऊहोलाइ *नलाख्या. शृंगामं.* ओलवाय, बुझाय (दे.ओल्हव)

उहलि(?) *तेरका.* ?

उहां *पंचवा.* त्यां (सं.अमुष्मात्)

उहिं *गुर्जरा.* त्यां

उहुण *गुर्जरा.* ओण, आ वरसे (सं.अधुना)

उहुरउं जुओ उहरउं

उह्लाव *नलाख्या.* आह्लद, आनंद

उह्लास *नलाख्या.* उल्लास, उमंग

उंकार *चंद्रवा.* ओमकार

उंघांवता *आरारा.* ऊंघ आवतां

उंछ *शृंगामं.* वीणी लीधेली वेरायेली वस्तु (सं.)

उंजइ *उक्तिर.* ऊंजे, तेल सींचे (सं. उदंजयति)

उंजणी नाखवी *वेताप.* मंत्र भंणीने कपडुं, मोरपींछ, सावरणी इत्यादिना छेडाथी रोगने काढवानी क्रिया करवी

उंझरुं *अभिऊ.* आणुं (प्रास माटे 'ऊझणुं'नुं 'उंझरुं'); जुआ ऊझणूं

उंडल, उंडळ, ऊंडल, ऊंडळ *अंगवि. कस्तुवा. दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. वेताप.* बाथ, आलिंगन; जुओ उडल

उंण *सिंहा(शा).* अत्यारे (सं.अधुना)

उंदिर, ऊंदिर *उक्तिर. उपबा. षडाबा.* उंदर (सं.उन्दुर)

उंबर, ऊंबर *आरारा(व). उक्तिर. उपबा. तेरका. विक्रच.* उंबरो, उमरो, एक वृक्ष (सं.उदुम्बर)

उंबर-पाट *शृंगामं.* उंबराना लाकडानी पाट, [(घरना) उंबरानो पट्टो]

उंबरा *चित्तसं.* उंबराना वृक्षनां फळ

उंबरा, ऊंबरा *ऐतिका. हम्मीप्र.* उमराव

उंबाडु जुओ उबाड

ऊअररसरि *चारफा.* उदररूपी सरोवर

ऊआरणउं *नलरा.* ओवारणुं [सं.अपवारण]

ऊआस *प्राचीसं.* उपवास

ऊकडू, ऊकूडउ *उक्तिर.* उभडक (सं. उत्कुटुक); जुओ उत्कडु

ऊकदइ *उक्तिर.* ऊंचे कूदे, ऊछळे, (*सं.उत्कूर्दते)

ऊकलंबइं *गुर्जरा.* जकडीने लटकावे, फांसीए लटकावे (प्रा.उक्कलंब-)

ऊकसइ जुओ उकसइ

ऊकास *अखेगी.* अवकाश, खाली जग्या

ऊकांटउ जुओ उकांटउ

ऊकुडउ जुओ ऊकडू

ऊखडि *आरारा.* भार लाद्ये (रा.उखणौ)

ऊखध जुओ उखध

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊखल, ऊखळ, ऊखलउ *उक्ति. दशस्कं(१). नरका. प्राचीफा. प्रेमाका. षडाबा.* खांडणियो (सं.उदूखलः)

ऊखाणउ जुओ उखाणउ

ऊखेलइ जुओ उखेलइ

ऊखेवे जुओ उखेवे

ऊगट जुओ उगट

ऊगटइ *आरारा. उक्ति. कृष्णबा.* **जिनरा.* अंगलेप करे (सं.उद्वर्तयति); **अखाछ.* [आगळ जाय, उपरवट थाय] [सं. उद्वर्तयति]

ऊगटि जुओ उगट

ऊगरतउ जुओ उगरतउ

ऊगवियां *कादं(शा).* सूकव्यां

ऊगाइ *नलाख्या. प्राचीफा.* सुकाय

ऊगाहउ *ऐतिका.* लई जाओ, चढावो

ऊघड जुओ ऊधड

ऊघडदूघडउ *उक्ति.* गूंचवायेलुं (*सं.उद्घट-दुर्घटम्) [पं.अघडादुघडा]

ऊघलवुं *अखेगी.* मर्यादा मूकवी, [छलकावुं]; **प्रेमाका.* [विदाय थवुं] [सं.उद्घल्]; जुओ उघेला

ऊचट- *वीसरा.* नष्ट थवुं (सं.उच्चट्यते)

ऊचलवुं, ऊचळवुं जुओ उचलवुं

ऊचाटइ *उक्ति.* नाश करे (सं.उच्चाट्यति); जुओ उचाट्यो

ऊचालडा *शृंगामं.* उचाळा [सं.उच्चाल]

ऊचेल जुओ उचेल

ऊछउं जुओ उछउं

ऊछलइ जुओ उछलइ

ऊछव जुओ उच्छव

ऊछाह जुओ उच्छाह

ऊजउ-उधारउ *आरारा.* उछीउधारुं

ऊजड वाळवुं *दशस्कं(१).* पायमाल करवुं, ठेकाणे करी नाखवुं [दे.उज्जड]

ऊजडे *प्रेमाका.* उज्जड थाय

ऊजम जुओ उजम

ऊजमणा *आरारा.* उजवणा, उत्सव (सं. उद्यापन)

ऊजमवंत *उपबा.* उद्यमवंत, प्रयत्नशील

ऊजमाल *उपबा.* उद्यमशील

ऊजलि *गुर्जरा.* उर्जयंत – गिरनार पर; जुओ ऊजिल

ऊजलिगिरि *चारफा.* ऊर्जयंत गिरि, गिरनार पर्वत

ऊजाइ जुओ उजाइ

ऊजाणां **नलाख्या.* [धसमसतां, दोडतां] (सं.उद्+या)

ऊजाणी जुओ उजाणी

ऊजिल *तेरका. प्राचीसं.* ऊर्जयन्त गिरि, ऊजल गिरि, गिरनार; जुओ ऊजलि

ऊजेणी जुओ उजेणी

ऊझणूं *अभिऊ.* कन्याने सासरे विदाय करवी ते, आणुं (सं.उज्झन)

ऊझरा *देवरा.* ऊछर्या

ऊटवणिय **प्राचीसं.* [आक्रमण, हुमलो] [रा.] (सं.उत्थापनिका); जुओ उड्डवणी

ऊटंटइ *उक्ति.* [*उन्मुक्त बने, *उन्मत्त बने] (*सं.उद्बन्धयति) [दे.उट्टेंट]

ऊटाटीयुं *उक्ति.* [*मोटी उधरस] [*सं. उट्टीकनम्]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊठ *अखाका. नरका. प्रेमाका.* साडा त्रण [सं.अर्धचतुर्थ]

ऊठमण *उपबा.* [दीक्षानी] अंतिम विधि, [वडी दीक्षा] [सं.उपस्थापना]

ऊठवणी जुओ उट्ठवणी

ऊड *षडाबा.* ओड, खोदकाम करनारी एक जाति [दे.ओड्ड]

ऊड *उक्तिर.* ओरिस्सा (सं.उड्र)

ऊडण *गुर्जरा.* ढाल (दे.अड्डण)

ऊडण-पीपळी, ऊडन-पीपळी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* एक बाळरमत

ऊडी *अखाछ.* कूदको [म.]

ऊडुपति *अखाका.* ताराओनो पति, चंद्र [सं.]

ऊढणि *उषाह.* ओढवामां, पहेरवामां

ऊढणी, ऊंढणी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ईंढोणी; जुओ ऊंडहणुं

ऊढणूं जुओ उढणउं

ऊढवुं जुओ उढवुं

ऊणीझूणी *जिनरा.* उदास

ऊणोदरी *आरारा.* ओछुं खावुं ते, एक तप (सं.ऊन+उदर)

ऊतजिइ *गुर्जरा.* तजाय (सं.उत्त्यज्यते)

ऊतरिण्यु *उक्तिर.* ऋणमुक्त (*सं.उत्तारित-ऋणम्) [हिं.उतरिन]; जुओ उत्तराण

ऊतारणउं *उक्तिर. षष्टिप्र.* उतारणुं, उतारीने फेंकी देवुं ते, [वारी जवुं ते] (सं. उत्तारणम्, अवतारणम्)

ऊतारु *विमप्र.* उतारो, [ऊतरवानुं स्थळ]

ऊत्रेवडि *नेमिछं.* उतरेड, एक पर एक मूकेलां वासण के माटलांनी हार (दे.उत्तिरिविडि)

ऊथड्या *अखाछ.* खोटे मार्गे टिचाता, [आथड्या]

ऊथानदशा *चित्तसं.* उन्नत दशा

ऊथापणी *ऋषिरा.* स्थानभ्रष्ट करवुं, घर बहार काढी मूकवुं ते (सं.उत्थापन)

ऊदलइ *उक्तिर.* आंचके, झूंटवी ले

ऊदंप जुओ उदंप

ऊदारिक *आनंस्त.* औदारिक, स्थूळ, [मनुष्य के तिर्यंचनुं] (शरीर) [जै.]

ऊदालइ जुओ उदालइ

ऊदालिवउं **उपबा.* [छीनवी लेवुं] [दे. उद्दाल]

ऊदी जुओ उदी

ऊदीपक जुओ उदीपक

ऊदेग जुओ उदेग

ऊदेगामणउं जुओ उदेगामणउं

ऊदेगियइ *षडाबा.* उद्वेग पामे

ऊदेही जुओ उदेही

ऊदोत *देवरा.* भपको, [शोभा] (सं.उद्योत)

ऊद्धसइ जुओ उद्धसइ

ऊध(मुखि) *गुर्जरा.* नीचे [मुखे], ऊंधे – ऊलटे [मुखे]

ऊधड** [ऊघड**] *अखाका.* *अटकळ, *मननी कल्पनाओ, [मुश्केली] [सं. अवघट]; जुओ अवघट, ओघट

ऊधरइ *अखाका. उपबा. गुर्जरा. लावल.* ऊंचके, उपाडे, उपर काढे, बहार लावे [सं.उद्धरति]; *प्रेमाका.* *उत्कर्ष पामे, [ऊछरे]; *वीसरा.* उद्धार पामे

ऊधरकवुं जुओ उधरकवुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊधसइ जुओ उद्धसइ

ऊधंधलु, उधांधलु *उक्ति.* झांखुं (*सं. उद्धूलिकम्)

ऊधाण, ऊधाणह जुओ उधाण

ऊधारइ *उक्ति.* उधारे, उधार, बाकी (सं. उद्धारके)

ऊधारवुं जुओ उधारवुं

ऊधांधलु जुओ ऊधंधलु

ऊधि *षडाबा.* गाडानो धोरियो, बहार ताणेलां बे लाकडांनी मांडणी [सं.उद्धि]

ऊध्रसइं *गुर्जरा.* (रूंवाडा) ऊभां थाय (सं. उद्+हर्ष); जुओ उद्धसइ

ऊनधां (उनथां) *ऐतिका.* उद्दंड [सं.उन्नद्ध/उद्+नाथ]

ऊनमे जुओ उनमे

ऊनयउ जुओ उनयउ

ऊनवा *प्रेमाका.* पेशाबनी बळतरा [सं.उष्ण+वात]

ऊनविउ ऐतिका. ऊमट्या; जुओ उनमे

ऊपइ जुओ उपइ

ऊपज- *हरिख्या.* [मनमां उत्पन्न थवुं], सूझवुं [सं.उत्पद्यते]

ऊपज्य *चित्तसं.* उत्पत्ति, परिणाम

ऊपणइ *उक्ति.* झाटके, साफ करे (सं. उत्पुनाति)

ऊपनउं, ऊपन्नउं, ऊपन्युं जुओ उपनउं

ऊपम जुओ उपम

ऊपरवाड जुओ उपरवाड

ऊपराजइ जुओ उपराजइ

ऊपराठउ जुओ उपराठउ

ऊपरि जुओ उपरि

ऊपरिलुं *उक्ति.* उपर रहेलुं, उपरनुं

ऊपरूं *उक्ति.* उपरनुं, उपरांत

ऊपवाद जुओ उपवाद

ऊपहरउं, ऊपहिरु जुओ उपहरुं

ऊपाइ जुओ उपाइ

ऊपाडणहार *ललिरा.* उपाडनार

ऊपाडी *षडाबा.* प्राप्त करी [*सं.उत्पातय्]

ऊपाडी जुओ उपाडी

ऊपातु *कादं(शा). प्राचीका. प्रेमप.* उत्पन्न थतुं, उत्पन्न करतुं (सं.उत्पादित परथी)

ऊपाय *कादं(ध्रु). हरिख्या.* उपजावीने (सं. उत्पाद्य)

ऊपायु जुओ उपायउं

ऊपावेवा *आरारा.* उपार्जन करवा, मेळववा (सं.उत्पादय्)

ऊपेला *षडाबा.* उपर, उपरांत (प्रा. उप्पेलिअ)

ऊफरुं **प्रेमाका.* [उपरांत]; जुओ उफरुं

ऊफराटुं, ऊफरांटुं जुओ उफराटुं

ऊफरुं जुओ उफरुं, ऊफरडुं

ऊफरे *अखाका.* उपर, [उपरवट]

ऊफिरीयामणु *उक्ति.* व्याकुळता, खेद; जुओ उपरियामणु

ऊबर्यउ [उवर्यउ] *जिनरा.* बची गयो, [ऊगरी गयो]; जुओ उवरे

ऊबाहुल *तेरका. प्राचीसं.* उत्कंठित (दे. उव्वाहुल)

ऊबीठ, ऊबीठउं जुओ उबीठउ, उभीठउ

ऊभइ **विक्ररा.* [ऊंचुं करे, (बीडुं) जाहेर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करे, फेरवे]; *उषाह. [ऊंचो करे]; [सं.ऊर्ध्व परथी]; जुओ उब्भ-

ऊभगइ जुओ उभगइ

ऊभगउ, ऊभंगउ *आरारा. *उपबा.* उद्विग्न (सं.उद्भग्न)

ऊभजइ जुओ उभजइ

ऊभड *आरारा.* उद्धत (प्रा.उब्भड)

ऊभडू *षडाबा.* उभडक (सं.ऊर्ध्व-)

***ऊभति [कुभति]** *षष्टिप्र.* खराब भात – चित्रामण (सं.उद् +भक्ति); जुओ उभात जुओ कुभति

ऊभलूंखी *षडाबा.* [(तेल चोपडेली पण) अर्धी लूखी – तेल वगरनी], ओछा तेल-वाळी (तावी)

ऊभविय *ऐतिका.* [ऊभी करी], ऊंची करी

ऊभंगउ जुओ ऊभगउ

ऊभारा *नेमिछं.* ऊभरा, [उत्साह, आवेश] (सं.उद्भारः)

ऊभार्युं *अभिऊ. [(बीडुं) धर्युं, राख्युं] (सं.उद्+भृ-)

ऊभांभली *ऋषिरा.* *मूंझायेली, *ऊंचा मनवाळी, [अत्यंत अरुचिवाळी]

ऊभीठउ *गुर्जरा. [अणगमतो] [सं.उद्+द्विष्]; जुओ उबीठउ

ऊभगवुं जुओ उमगवुं

ऊमटे *चित्तसं.* थाय, आवी पडे [स.उन्मृष्ट]

ऊमटे (ऊमडे) *अखाका.* ऊखडी पडे

ऊमडे *चित्तसं.* नष्ट थाय, (सं.उन्मर्द्, प्रा. उम्मड); जुओ ऊमटे

ऊमणदूमणउ *गुर्जरा.* चिंतातुर, [उदास] (सं.उन्मन-दुर्मन); जुओ आमणदूमणी, ऊंमणदूमणुं

ऊमहइ *ऐतिरा.* होंश राखे (दे.उम्माहिअ)

ऊमही *आरारा.* उमंगथी, [उमंग राखी] (दे.उम्माहिअ)

ऊमाह, ऊमाहउ, ऊमाहलउ जुओ उमाह

ऊमाहवुं *कृष्णबा.* ऊत्कंठित थवुं

ऊमाहिउ जुओ उम्माहियउ

ऊमाहे *आरारा.* फेलाय, छवाय (रा.ऊमहणौ = ऊमडवुं, ऊभरावुं)

ऊमेल्यां *कादं(शा).* उखेडी नाख्यां (सं. उन्मेलित्तानि); जुओ उमेलि

ऊयेणी *ललिरा.* उज्जयिनी

ऊर *कादं(ध्रु). गुर्जरा.* ऊरु, साथळ

ऊरण, ऊरिण *अंबरा. ऋषिरा. गुर्जरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. लावल. विक्ररा.* ऋणमुक्त (सं. उद्+ऋण)

ऊरणा *अखेगी.* ऊन, [करोळियानी] लाळ [सं.ऊर्ण]

ऊरतु जुओ उरतउ

ऊरध जुओ उरध

ऊरहि *चारफा.* [छाती साथे], छाती वडे

ऊरिण जुओ ऊरण

ऊर्णनाभ, ऊर्णनाभि *अखाका. अखेगी.* करोळियो [सं.]

ऊलखइ, ऊळखइ जुओ उलखइ

ऊलखउ, ऊलिखउ, ओलखउ *उक्तिर. उपबा.* खास करीने हाजते जती वखते वपरातुं पाणीनुं नानुं वासण, जैन साधुनुं एक उपकरण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊलग जुओ उलग

ऊलगइ जुओ उलगइ

ऊलट जुओ उलट

ऊलटभेद **अखाका.* [मनना उमळकारूपी मर्म – युक्ति]

ऊलटमान *कादं(शा).* ऊभरातुं

ऊलटवुं **नरका.* [उत्साहित थवुं, आनंदित थवुं]; *वीसरा.* ऊभरावुं [प्रा.उल्लट्ट-]

ऊलडइ *उक्ति.* फेंकी दे, नष्ट करे (दे.उल्लुड)

ऊलतु *कादं(शा)* अळतो, लाखनो रंग (सं. अलक्तकः)

ऊललियइ जुओ उललियै

ऊलवइ जुओ उलवइ

ऊलवें जुओ उलवे

ऊलसो *देवरा.* उल्लस्यो, ऊछळ्यो, ऊभरायो

ऊलंच जुओ उलंच

ऊलंभडउ जुओ उलंभडउ

ऊलंभु जुओ उलंभउ

ऊलिखउ जुओ ऊलखउ

ऊवट जुओ उवट

ऊवटइ *उक्ति.* अंगलेप करे (सं.उद्वर्त्तयति)

ऊवटणउ जुओ उबटणुं

ऊवट्टहं *कृष्णच.* आडवाटे; जुओ उवट

ऊवरथइ *नलरा.* व्यर्थ करे, [खोटुं पाडे, उथापे] (*सं.उद्+व्यथ)

ऊवरि जुओ उवरि

ऊवर्यउ जुओ ऊबर्यउ

ऊवलइ *अंबरा.* [पाछुं वळे], दूर थाय [सं.उद्वलति]; जुओ उवली

ऊवलतउ *उक्ति.* पाछो वळतो (सं.उद्वलन्)

ऊवस *शृंगामं.* उज्जड (दे.उव्वस) [सं. उद्ध्वस]; जुओ उद्वस

ऊवेजइ *प्रबोप्र.* उद्वेग करे (सं.उद्वेजयति)

ऊवेढइ *उक्ति.* छोडे, जुदुं करे (सं.उद्वेष्टते)

ऊषध, ऊसध *उपबा. प्रबोप्र. विक्रा. षडाबा.* औषध

ऊषर जुओ उषर

ऊस *गुर्जरा.* बळद (सं.ऋषभ)

ऊसध जुओ ऊषध

ऊसनउ *उपबा.* विनष्ट; क्षीण; भ्रष्ट (सं. उत्सन्न); **गुर्जरा.* [*क्षीण, *खिन्न] [*सं.अवसन्न]; *नलरा. विमप्र.* क्षीण थयेल, बरबाद थयेल

ऊसर जुओ उसर

ऊसरइ जुओ उसरइ

ऊसरीइ *अभिऊ.* ओसरे, खसी जाय (सं.अप+सृ)

ऊसलसीधुं *उक्ति.* [?] (सं.उल्लासित-संधिकम् के उत शलंघ्रं)

ऊससइ जुओ उससइ

ऊसारइ *लावल.* उपाडे, [दूर करे] (सं.उत् +सृ-)

ऊसास जुओ उसास

ऊसिय **प्राचीसं.* [-थी व्याप्त, -मां रोकायेलुं] [सं.उत्सृत]

ऊसीसउं जुओ उसीसउं

ऊसु *षडाबा.* ओस, झाकळ (सं.अवश्या, अवश्याय)

ऊहटइ *अंबरा.* दूर जाय [सं.अपघट्ट]

ऊहाडउ *उक्ति.* आंचळ (*सं.ऊधस्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊहोलाइ जुओ उहलाइ

ऊंचलवुं जुओ उचलवुं

ऊंठां **अंबरा.* [ओठां, दृष्टांतरूप कहेवत] [*सं.अवष्टंभ]

ऊंडल, ऊंडळ *दशस्कं(र). नरका. प्रेमाका.* बाथ, आलिंगन

ऊंडळगूंडळ *प्रेमाका.* जेमतेम वींटेली, [घाट-घूट वगरनी, बेडोळ]

ऊंडहणुं *उक्तिर.* उढाणुं, ईंढोणी [दे.ऊंड+सं.धा]

ऊंढणी जुओ ऊढणी

ऊंदिर, ऊंदिरउ *उक्तिर. उपबा.* उंदर (सं.उन्दुर)

ऊंध *प्रेमाका.* गाडानी धूंसरी अने मांचडाने जोडतो भाग

ऊंबर जुओ उंबर

ऊंबरा जुओ उंबरा

ऊंबाडु जुओ ऊबाड

ऊंमणदूमणुं *कृष्णच.* ऊचक मनवाळुं, व्याकुळ, उन्मनस्क; जुओ ऊमणदूमणउ

ऋतुदान *प्रेमाका.* गर्भ रखाववो ते, संभोग

ऋदइ, ऋदय *आरारा.* हृदय, हृदयमां

ऋषिमती *ऐतिका.* तपगच्छवाळाओनुं एक उपनाम [जै.]

ए *गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* आ (सं.एषः)

एअ *गुर्जरा.* आ

ए आक्षर *गुर्जरा.* आ शब्दो, [वेण, चिट्ठी]

एआण, ऐआण, ऐयाण *प्रबोप्र.* अज्ञानी; जुओ अयाण

एउ *उक्तिर. वसंफा. विराप. षडाबा.* आ, ए (सं.एषः)

एक *गुर्जरा. वसंफा. *वसंवि. षडाबा.* कोई, केटलाक (सं.)

एकउडउ *उक्तिर.* एकवडुं वस्त्र (सं.एक-पटिकः)

एकएकने *चित्तसं.* दरेकने

एकचोई *हम्मीप्र.* [एक थांभलावाळो, नानकडो] एक प्रकारनो तंबु

एकण *जिनरा.* देवरा. एक ज

एकण बार *जिनरा.* एक ज वार

एकताई *प्रेमाका.* कीमती [एक पनावाळो बारीक] उपरणो

एकपखी *आनंस्त.* एकपक्षी, एक बाजुनी

एकपत्य **अखाका.* [एकाधिपत्यवाळुं, चक्रवर्ती]

एक परि *उक्तिर.* एक प्रकारे

एकभवी *अखाछ.* एक भवमां साक्षात्कार मेळवनार, [पुनर्जन्ममांथी मुक्ति मेळवनार]

एकमनउ, एकमंनउ **अखाका. उपबा. ऋषिरा. नरका.* एक मनवाळो, दृढ मनवाळो, स्थिर मननो; *कादं(शा). गुर्जरा.* एकमन, [एकचित्त, एकाग्र]

एकरस्यो *ऐतिका. जिनरा.* एक वार

एकलमल्ल *चित्तसं.* मस्त, एकलविहारी ब्रह्मज्ञानी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकवटाह जुओ वटाह

एकवारकु *दशस्कं(१).* एक वार

एकवाहुं *अखाछ.* एक मारगे जतुं; [एक तरफ ढळतुं, एकपक्षी]

एकसरा, एकसरां *गुर्जरा.* एकी वखते, [एकी साथे] (*सं.एकसरक); *वीसरा.* सीधेसीधा, तरत ज (दे.एक्कसरिसं)

एकसाटिक *आनंस्त.* एक वस्त्रवाळुं [सं. एकशाटिक]

एकहथी *अखाछ.* एक हाथे

एकहु *आनंस्त.* एक ज

एकहुत्तरि *षडाबा.* एकोतेर (सं.एक-सप्तति)

एकंत *आरारा.* एक बाजु; *आरारा. गुर्जरा.* एकांत; *ऐतिरा. लावल.* एकलो

एकाउलि *नलरा.* एक सेरनो (हार), एकावळ (हार) (सं.एकावलि)

एकाएक *आरारा.* एकेएक, दरेक

एकातीत *अखाका.* एक अने [सर्वथी] अतीत – [पर], परब्रह्म

एकारो *प्रेमप.* गर्वभर्यो उद्‌गार, वर्तन [सं.अहंकार]; जुओ एंकार

एकावलहार *आरारा.* एक सेरनो हार (सं. एकावलि)

एकाशनी *विक्ररा.* दिवसमां एक वार जमनार [सं.]

एकांत *चित्तसं.* संपूर्णपणे, हंमेशां [सं.]

एकीभाव *आनंस्त.* एकभाव, [एकरूप थवुं ते]

एकु *अखाका. उपबा. दशस्कं(१). प्रेमाका.* एकेय [सं.एक+खलु]

एकु सउ सतेतालु *षडाबा.* एकसो सुडतालीस (सं.एकशत+सप्तचत्त्वारिंशत्)

एके *चित्तसं.* दरेक

एको *प्रेमाका.* एके, एकेय

एकोई *अभिऊ.* एक पण (सं.एकः अपि)

एकोत्तर सउ *उक्तिर.* एकसो एक (सं. एकोत्तरं शतम्)

एख *शृंगामं.* आ (सं.एष)

एखटा, एखठा *कादं(शा). नलाख्या.* एकठा, साथे, एकत्रित थयेल (सं. एकस्थकाः)

एखलो *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* एकलो

एग *आरारा. जिनरा. षडाबा.* एक

एगारमि *जिनरा.* अगियारमे [सं.एकादशम]

एगावलि *देवरा.* एकसेरो (हार) (सं. एकावलि)

एगासण *तेरका.* एकासणुं, एकटाणुं (सं. एकासना)

एज *सिंहा(शा).* गरम ?, [*एज्य, *पूज्य, *पवित्र]

एणं *वाग्भबा.* एणे, ए वडे, [आणे, आ वडे] [सं.एतेन]

एणि *लावल.* ए(मां) (सं.एनेन)

एणी *आनंस्त. चित्तसं. नलाख्या.* ए, [आ] (सं.एतेन)

एणी *आरारा. नलाख्या.* हरणी (काळा रंगनी एक जात) (सं.)

एणीनयणी *ऋषिरा.* हरिणी जेवी आंखो-वाळी, मृगाक्षी

एत [ए ति] *विराप.* [ए ते]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतइ *गुर्जरा.* एटलामां; *नेमिछं.* एटलाथी (सं.एतद् परथी)

एतउं, एतु *आरारा. गुर्जरा. पंचवा. मदमो. लावल. शृंगामं.* एटलुं, एवडुं (सं.एतद् परथी) (सं.एतावत्)

एतलइ *अभिऊ. आनंस्त. उपबा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. विराप.* एटला वडे; एटले, माटे; एटलामां

एतलउं *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. रूपच. षडाबा.* आटलुं, एटलुं [सं.इयत् +तुल्य]

एतलं *गुर्जरा.* एटलामां

ए ति जुओ एत

एतुं जुओ एतउं

ए-थां *कादं(शा).* एनाथी

एधाण *नलाख्या.* एंधाण, निशान, चिह्न (सं.अभिज्ञान)

एन *अखाका. *मदमो. *वेताप.* असल, खरुं, [खरेखरुं] (अ.ऐन); जुओ येन

एम-थो *नरका.* एम ने एम, एवो ने एवो

एमंतो *देवरा.* अतिमुक्त, [एक मुनिनुं नाम]

एय, एयु *उक्तिर. गुर्जरा.* आ (सं.एतद्)

एरसउ *गुर्जरा.* आवो (सं.ईदृश)

एरावण *आरारा. कृष्णबा. षडाबा.* इंद्रनो हाथी (सं.ऐरावण)

एरिस, एरिसु *ऐतिका. तेरका. विराप.* आवुं, एवुं (सं.एतादृश)

एला *ऋषिरा.* इलायची (सं.)

एलियउ *उक्तिर.* एळियो, एक प्रकारनुं गंधद्रव्य, [कुंवारपाठाना रसमांथी थतो पदार्थ] (सं.एलेयम्)

एळे *अखाछ.* वगर महेनते, फोगटमां, [अनायास] [सं.अफल]

एवड, एवडउं *आरारा. उक्तिर. जिनरा. नलरा. प्राचीसं. *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* एटलुं, एवुं, आटलुं (सं. एतावत्)

एवंविह *गुर्जरा.* आ प्रकारनुं, आवुं (सं. एवंविध)

एवातण *नरका. प्रेमाका.* सौभाग्यवतीपणुं (सं.अविधवा+त्वन)

एवाल *उक्तिर.* बकरा चरावनार [सं. अजापाल] [रा.]

एषणासुमति *ऐतिका.* एषणासमिति, निर्दोष आहारनुं ग्रहण, [साधुनो भिक्षाचर्या-विषयक विवेक] [जै.]

एषा *आरारा.* आ (स्त्री) (सं.)

एस *अखाका.* ओसरतां, दूर थतांथतां, [विनाश] [*अ.ऐस]

एस, एसु *गुर्जरा. विराप.* आ (सं.एष)

एह *आनंस्त. उक्तिर. गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. वीसरा. षडाबा.* ए, आ (सं.एषः)

एह भणी *उपबा.* एथी

एहिवूं *नलाख्या.* एवुं

एही ज *आनंस्त.* ए ज

एहु *गुर्जरा.* आवुं, आ; *तेरका.* ए (सं.एषः)

एहे *उपबा.* आनाथी, एनाथी (सं.एषः)

एहेवो स्यो *चित्तसं.* एवा प्रकारनो

एहेशी *रूस्तस.* एंशी [सं.अशीति]

एंकार *नरका.* अहंकार, अभिमान; जुओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकार

ऐआण, ऐयाण जुओ एआण

ऐरावण *ऐतिका.* हाथी [सं.]

ऐश्वर्ज्य *चित्तसं.* ऐश्वर्य

ऐंद्र *प्राचीका.* इन्द्र

ऐंद्री *प्राचीका.* इन्द्रिय

ओकली *गुर्जरा. षडाबा.* ओकळी, तरंग, तरंगनी भात (सं.उत्कलिका)

ओखणवुं *प्रेमाका. विमप्र.* खांडवुं, छडवुं [दे.उक्खण][सं.उत्क्षण्]

ओखणो *प्रेमाका.* खांडणियो

ओखद, औखद *दशस्कं(२). प्रेमाका. वेताप.* औषध, ओसड

ओखध, ओखधी **कादं(शा). प्राचीका.* औषधि, दवा

ओखर *विमप्र.* विष्ठानुं भोजन [सं.अवस्कर]

ओखांगे *प्रेमाका.* बराडा पाडे

ओगालइ *उक्तिर.* फरीफरीने चाववुं, वागोळवुं [प्रा.ओग्गाल]

ओगुणीस *षडाबा.* ओगणीस [सं.एकोनविंशति]

ओघ *अखाका. दशस्कं(१). प्रेमाका.* जथ्थो, भंडार, समूह (सं.)

ओघउ *उक्तिर. षडाबा.* ओघो, जैन साधुओनुं रजोहरण (सं.अवग्रह)

ओघट *अखाछ.* मुश्केली [सं.अवघट्]; जुओ अवघट, ऊघड

ओघराळा *प्रेमाका.* लपेडा, रेला

ओघसंज्ञा *आनंद्स.* *चित्तनी विचारशून्य सामान्य अवस्था, [लोकबुद्धि, चीलाचालु समज] [सं.]

ओचरे *नलाख्या. प्रेमाका.* उच्चरे

ओच्छव *नरका. प्रेमाका.* उत्सव

ओछरंग *कामा(त्रि). कामा(शा).* उछंग, खोळो [सं.उत्संग]

ओछंग *कामा(शा). दशस्कं(१). प्रेमाका.* उत्संग, खोळो

ओछावणु *षडाबा.* ढांकवुं ते (सं. अवच्छादन)

ओझउ, ओझा *उक्तिर. जिनरा.* उपाध्याय, शिक्षक

ओझड *नरका.* झपट

ओझा जुओ ओझउ

ओट *अखाका. अखाछ.* पडदो, आवरण, [आडश, अंतराय]; **कादं(शा).* [ओठुं, *आडश, *अंतरपट] [सं.अपवृत्ति]

ओटइ *नेमिछं. लावल. विमप्र.* ओटला उपर

ओटइ *उक्तिर.* ढांके [दे.ओहट्ट]

ओटहिया *षडाबा.* (धूळमां) रगड्या

ओठंभ **जिनरा. षष्टिप्र.* आलंबन, [सहारो] (सं.अवष्टम्भ); जुओ उठंभ

ओठंभइ *उक्तिर. षडाबा.* टेको आपे, अढेले (सं.अवष्टम्भते)

ओठी *उक्तिर.* ऊंटसवार (सं.औष्ट्रिकः) [रा.]

ओठीडा *ऐतिका.* ऊंटसवार

ओठुं *प्रेमाका.* पडदो, अंतराय; *लावल.* समर्थन माटे दृष्टांत

ओठे *अखाका.* ओथे, -नी पाछळ, [आडशे]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओड *उक्ति.* ओरिस्सा (सं.ओड्रः)

ओडइ **षडाबा.* [प्रतिरूप – समान आकार-ने लीधे] [दे.अवडअ=चाडियो]

ओडइ *नलाख्या.* होडमां मूके (दे.हुड्ड); जुओ उडवुं

ओडइ, ओढे *अभिऊ. ऐतिरा. चतुचा. नरका. नलाख्या. प्रेमाका. मोसाच. लावल. वेताप. सिंहा(शा).* (हाथ) लंबावे, धरे; जुओ उडवुं

ओडक *उक्ति.* अटक, शाख, अवटंक

ओडणु *विराप.* ढाल (प्रा.अड्डण)

ओडववुं *गुर्जरा. प्राचीसं. विराप.* सामे धरवुं, तैयार करवुं

ओडाववुं *कृष्णबा.* लंबाववुं

ओडियां *नलाख्या.* शरतमां – होडमां मूक्यां (दे.हुड्ड)

ओडो (ओडो बांध्यो) *नरका.* अंतराय, अटकायत [करी], [आंतर्या]

ओढे जुओ ओडइ

ओतरादुं *प्रेमाका.* उत्तरादुं, उत्तर दिशानुं

ओतळी *अखाका.* सरी जई, [आघो जई]

ओतावलु *विमप्र.* उतावळो

ओथार **प्रेमाका.* [दुःस्वप्न]

ओदओ *ऐतिरा.* ऊग्यो (सं.उदित)

ओदक जुओ उदक

ओदाली *षडाबा.* झूंटवी [दे.उद्दाल]; जुओ उदालइ

ओद्यम *नलाख्या.* उद्यम, [प्रयत्न]

ओधरे *कामा(त्रि). कामा(शा).* उद्धार पामे

ओधाण *प्रेमाका.* उधाण, मोटी भरती

ओधार *प्रेमाका.* उद्धार

ओधारि *षडाबा.* उधार, उछीनुं (सं.उद्धार)

ओधाहूली *उक्ति.* ऊंधाफूली, एक वनस्पति (सं.अधःपुष्पी)

ओधि *गुर्जरा. विराप.* मर्यादा, अवधि; जुओ उधि

ओपटी **प्रेमाका.* [मुश्केली, संकडामण]

ओपम *उषाह. मदमो.* औपम्य, उपमा, सरखामणी; जुओ उपम

ओपमा *अखेगी. देवरा. नलाख्या.* उपमा, [सरखामणी] (सं.औपम्य)

ओपरी *विमप्र.* उपर

ओपाए *चतुचा.* उपाये

ओपाणुं *अखाछ.* [घसाईने] ओप (चळकाट) पाम्युं

ओभजउं **विमप्र.* [पाछो हठुं, नासुं] [सं. उद्+भंज्]; जुओ उभजइ

ओयणु *गुर्जरा.* बगीचो (सं.उपवन)

ओयरइ *षडाबा.* ओरे, रांधवा नाखे [सं. अवपूरयति]

ओर *आनंस्त.* बीजुं [हिं.]

ओर *अखाका.* पट, असर

ओरइ *षडाबा.* नजीकमां, ओरुं, वहेलुं (सं.अवरः) [सं.आरात्]; जुओ उरि

ओरणी **अखाका.* [ओरण, खेतरमां अनाज ओरवानुं साधन]

ओरस, ओरसीउ, ओरसु *उक्ति. गुर्जरा. विमप्र.* ओरसियो, चंदन घसवानो पथ्थर (सं.अवघर्षक) [दे.ओहरिस]; जुओ ओरीसउ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरहुउं *उक्ति.* *षडाबा. अहीं, आ बाजु; जुओ उरहउं, ओहरी

ओरि *प्राचीका. [ओरडी, स्थान]; [रा. [सं.अपवारिका]] जुओ उरा

ओरिओ, ओरियो *कादं(शा). प्रेमाका.* ओरतो, अभिलाष, लहावो

ओरिया वीतवा *दशस्कं(१).* ओरता पूरा थवा

ओरी *प्रेमाका.* सुधीमां, [लगभग]

ओरीसउ *उक्ति.* ओरसियो, चंदन घसवानो पथ्थर (सं.अवघर्ष) [दे.ओहरिस]; जुओ ओरस

ओर्वशी *नलाख्या.* उर्वशी

ओल *रूसस.* जामीन [हिं.]

ओल, ओळ *अखाछ. [रेखा, लीटी]; *अखाका.* पंक्ति, [वर्ग, प्रकार] [सं. आवलि]; जुओ उलि

***ओळ [ओर]** *अखाका.* गर्भ

ओलउ *उक्ति.* ओलो, चूलानी पाछळनो नानो चूलो

ओलखउ जुओ ऊलखउ

ओलखाणउ *उक्ति.* परिचय, प्रसिद्धि [सं. उपलक्षण]

ओलखियउ *आरारा.* स्वीकार्यो, बनाव्यो (सं.उपलक्षित)

ओलग, ओलिग *उक्ति. गुर्जरा. चंद्रवा. नरका. नरप. विक्ररा. *विमप्र. विराप.* सेवा (दे.ओलग्गा); जुओ उलग

ओलगइ, ओळगइ *उक्ति. ऐतिका. जिनरा. नरका. षडाबा. हरिख्या.* सेवा करे (दे. ओलग्गा) [सं.अवलग्यति]; जुओ उलगइ

ओलगाणउ *पंचवा. प्राचीसं.* सेवक (क. ऊळिग परथी); जुओ उलगाण

ओलजो *जिनरा.* [क्लेश अनुभवो]

ओलण *षडाबा.* [ओसामण, आर्द्र करवुं ते, द्रवरूप] [दे.उल्लण]

ओलतु *कादं(शा).* अळतो, लाखनो रंग (सं.अलक्तकः)

ओळपाणां *नरका.* झांखां पाड्यां, [सर. अळपाणां]

ओलवइ, ओळवइ *उक्ति. *गुर्जरा. विराप.* छुपावे, संताडे (सं.अपलपति); *नरका. *नरप.* *पचावी पाडे, [चोरी ले, झूंटवी ले]; जुओ अउलवइ, उलवइ

ओलवडे *नरका. *नरप.* [आडशे], ओथे

ओलवा *नलाख्या.* [आडश, पडदो, ओथ]

ओलवे *अखाछ.* ओथे, [आडशे]; जुओ उलवे

ओलंघन *प्रेमाका.* उल्लंघन

ओलंडवुं *उक्ति. वेताप.* ओळंगवुं (सं. ओलंडयति) [दे.ओलंड]

ओलंभइ *उक्ति.* ठपको आपे, टोणो मारे (सं.उपालभते)

ओलंभउ *आनंस्त. आरारा. उक्ति. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. नरका. नरप(द). प्रेमप.* उपालंभ, ठपको, मर्मप्रहार; जुओ उलंभउ

ओलाश जुओ उलास

ओलां *चतुचा.* भोळां

ओलि *कृष्णबा.* [आडशे], गुप्त स्थाने

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओलिउ जुओ दधि ओलिउ

ओलिउं, ओल्यउं *उक्ति. विक्रा.* ओल्युं, पेलुं, [आ] [सं.अवरिल्ल]; जुओ उलिउं

ओलिग जुओ ओलग

ओली *उक्ति. ऋषिरा.* पंक्ति, श्रेणी (सं. आवली); जुओ उलि

ओलीजे **जिनरा.* [क्लेश अनुभवीए]; जुओ ओलजो

ओले *नरका.* ओथे, [आडशे]

ओळे चढ्युं *अखाका.* बराबर तैयार थयुं [वावेतरनी – डूंडानी हार थई]

ओळोसोळो **प्रेमाका.* [उत्सव-अवसर] [गु.सोहलो परथी]

ओल्यउं जुओ ओलिउं

ओल्हाणी *रूपच.* ओलायेली आग

ओवउ [ओवरउ] *उक्ति.* ओरडो (सं. अपवरकः)

ओशंकल, ओसंकल **विक्रा.* [ऋणमुक्त] [सं.उत्+शृंखल]; जुओ उसंकल

ओशंके, ओसंके *नरका. प्रेमाका.* शरम के संकोच अनुभवे (सं.अपशंक्)

ओशिंकळ जुओ उशंकल

ओशिंगळ, ओशीकल, ओशींकल, ओशींगल, ओसीकल, ओसीकळ *दशस्कं(१). दशस्कं(२). *नलाख्या. प्रेमाका. मदमो.* ऋण के भारमांथी मुक्त, [बदलो वाळवो ते]; (सं.उत्+शृंखल); **रूत्तस.* [ऋणमुक्त, बदलो वाळनार]; जुओ उशंकल

ओषधी *चित्तसं.* मादक पदार्थ

ओस *अखाका. उक्ति.* झाकळ (सं. अवश्यायः)

ओसउ *ऐतिका.* औषध

ओसप्पिणिसप्पिणि *गुर्जरा.* अवसर्षिणी-उत्सर्पिणी, ए नामना काळविभागो [जै.]

ओसरे *नरका. *प्रेमाका. सिंहा(शा).* पाछा हठे, -थी दूर भागे, शरमाय; *उषाह.* दूर जाय (सं.अपसरति); जुओ उसरइ

ओसहु *षडाबा.* औषध

ओसंकल जुओ ओशंकल

ओसंके जुओ ओशंके

ओसाण **दशस्कं(२). प्रेमाका.* [स्वत्व, पोतापणुं], हिंमत, जुस्सो; *प्रेमाका.* ओळखनी निशानी, स्मरण

ओसामणु **षडाबा.* [आर्द्र करवुं ते, द्रवरूप] [सं.अवस्रावण]

ओसार *प्रेमाका.* पीछेहठ [सं.अप-सार]

ओसीकल, ओसीकळ जुओ ओशिंगळ

ओसीसउं *आरारा. नलरा. प्राचीफा. प्रेमाका.* ओशीकुं (सं.उत्शीर्षक); जुओ उसीसउं

ओहट्ट- *तेरका.* घटवुं, ओछुं थवुं (सं.अव+ *घट्ट)

ओहड **तेरका.* [रुकावट] [रा.ओहडणौ] [सं.अवघट]

ओहडणु **षडाबा.* [रोकवुं ते, रुकावट] [रा.]

ओहरी *विक्रा.* [ओरी], नजीक; जुओ ओरहुउं

ओहली **षडाबा.* [घसीने] [प्रा.ओहलिय]

ओही **षडाबा.* [साधुनां वस्त्ररूप उपकरणो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सं.उपधि]

ओही वींट *उक्तिर.* साधुना वस्त्ररूप उपकरणोनो वींटो (सं.उपधिवेष्टिका)

ओहोणुंका *प्रेमाका.* आ सालना, आ वर्षना, चालु समयना [सं.अधुना परथी]

ओहोलाई *प्रेमाका.* ओलाई, शांत थई

ओहोलावीए *अखाका.* ठंडुं करीए [दे. ओल्हव] [सं.उद्र परथी]

ओहोलाश, ओहोलास *कामा(त्रि). प्रेमाका.* उल्लास; जुओ उलास

ओहलाद *कादं(शा).* आनंद (सं.आह्लाद)

औखद जुओ ओखद

औलिखि *उषाह.* ओळख, ओळखाण कर

क *गुर्जरा. पंचवा.* के, अथवा (फा.के)

कइ *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि.* केटलीये, केटलीक (सं.कापि) [सं.केऽपि]; जुओ केइ

कइ *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वीसरा.* कां [तो], अथवा, के

कइ *ऐतिका.* कृत, [कर्यु]

कइच्छरी *गुर्जरा.* कोई अप्सरा; जुओ अच्छर

कइजिनइ *षष्टिप्र.* कोईकना ज

कइय *गुर्जरा.* क्यारे, [क्यारें पण] (सं.कदा+अपि)

कइयइ *जिनरा.* क्यारेय; *ऐतिका.* क्यारेक, कोई वार

कइर *विक्ररा. शृंगामं. स्थूलिफा.* केरडो, वृक्षविशेष [सं.करीर]

कइरीय *हरिवि.* केरी (फळ)

कइलि *प्राचीफा.* केळ (सं.कदली)

कइवार *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). *विमप्र. शृंगामं. सिंहा(म).* प्रशंसा; जुओ कयवार

कइसा *लावल.* केवा [सं.किदृशकम्]

कउ *आरारा.* कहो

कउ *वीसरा.* केरुं, -नुं

कउगला *जिनरा.* कोगळा

कउछ *उक्तिर.* कौवच, ए नामनी वनस्पति (सं.कपिकच्छू:)

कउठ *आरारा(व). उक्तिर. षडाबा.* कोठुं, ए नामनी वनस्पति (सं.कपित्थ)

कउडां, कउडी *उक्तिर. उपबा. प्राचीसं. षडाबा.* कोडी (सं.कपर्दिका)

कउडि-जक्ख *तेरका.* कपर्दियक्ष, एक यक्ष

कउण *गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* कोण (सं.कः पुनः)

कउतिग *गुर्जरा. षष्टिप्र.* कौतुक, आश्चर्य, [नवाईभर्युं]; *आरारा. तेरका. प्राचीफा.* कौतुक, आश्चर्य; *लावल. षडाबा.* कौतुक, [विनोद, गम्मत]; *वीसरा. [अभिवादन]; जुओ कुतगि, कुतिक, कुहुतग, कौतग

कउतिगामणी *उपबा.* कौतुक उपजावनारी, [मनोरंजक, रसभरी]

कउमुदि भेर *देवरा.* भेरीनो एक प्रकार

कउरव *गुर्जरा.* कौरव

कउल *गुर्जरा. विराप.* कोळियो (सं.कवल)

कउलिउ, कउली *प्राचीफा. प्राचीसं. *पंजो,* [मूठी] (सं.कवल)

कउसीसउ *उक्तिर. प्राचीसं.* कोसीसां, कांगरां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.कपिशीर्षकम्); जुओ कोसीस

कए *ऐतिका.* करातां [सं.कृते]

ककाण *नलरा.* बलूचिस्तान पासेनो देश, कयकाण, केकाण

ककाह *आरारा(व).* एक प्रकारनो कपास (हिं.ककही) ?

कक्षापुट *प्रेमाका.* काख, बगल(सं.)

***कखर(खर)** *विमप्र.* खर कर्म, [कठोर कर्म], [जेमां अनेक जीवोनी हानि थाय छे एवां काम – धंधा]; जुओ खंतिक्खर

कखा *अखाछ.* कषाय, मेल, विकार

कखांबर *सिंहा(शा).* काषाय वस्त्र, [भगवां वस्त्र]; जुओ काषांबर

कच *नलरा.* कच्छ देश; जुओ काछ

कचकडउ *ऐतिका.* वस्तुविशेष, [*कचकडानुं आभूषण के रमकडुं]

कचको *नरका.* *कचकचाट, *नकामी माथा-फोड, [मरडाट]

कचकोल **चंद्रवा.* [भिक्षापात्र] [फा. कच्कूल]

कचनारि *आरारा(व).* कचनार, एक वृक्ष (सं.कांचनार)

कचपच, कचपिचि *प्राचीफा.* [कचकच], ककळाट, [नकामी माथाफोड, तकरार]; *नलरा.* न समजाय तेवो अवाज, [*ककळाट]

***कच-भूषण** *प्रेमाका.* वाळनुं भूषण, चोटलानो गोफणो(सं.)

कचि *आरारा(व).* एक वनस्पति, कचियुं के काचकुं ?

कचित्र *नलाख्या.* कुचित्र, कद्रूपुं

कचुंडली *विमप्र.* कचोळुं, [(फूल माटेनुं) पात्र] [प्रा.कच्चोलय]

कचूर *आरारा(व).* कचूरो, एक वनस्पति (सं.कर्चूर)

***कचूंबरि [*कचूवरि]** *गुर्जरा.* कच – वाळनी उपर

कचोल, कचोळ *ऐतिका. वीसरा.* कचोळुं; जुओ कचुंडली, कंचोला

कचोलडी *जिनरा.* कचोळुं

कचोलडु, कचोलय *तेरका. नलरा.* प्यालो, [कचोळुं] [प्रा.कच्चोलय]

कचोली, कचोलीय *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कचोळुं (प्रा.कच्चोलय)

कच्चोलक *षडाबा.* कचोळुं (प्रा.कच्चोलय)

कच्छ *प्रेमाका.* काचबो (सं.कच्छप)

कछोटी *नलरा.* लंगोटी (प्रा.कच्छोटी) [सं. कक्षापट्टिका]

कछ्यो *प्रेमाका.* कस्यो, बांध्यो; जुओ काछ कछवो

कज *अंबरा.* **प्राचीका.* कमळ (सं.)

कजा **अखाछ.* [हुकम, फेंसलो, निर्माण] (फा.)

कजाकजीया *सिंहा(शा).* कलहटंटा(अ.)

कजामणु (तिलक जामणु) **विमप्र.* [जमणे अंगे टीलुं]

कज्ज *आरारा.* कार्य; काजे, माटे

कज्जल *तेरका.* –, [काजळ] (सं.)

कज्जारंभ *ऐतिका.* कार्यारंभ, कार्यप्रवृत्ति

कज्जि *उषाह. गुर्जरा.* काजे, माटे (सं.कार्ये)

कट *प्रेमाका.* कटि, केड; जुओ केसरी-कटे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कटक *चित्तसं.* कडुं [सं.]

कटकाइ *मदमो. रूस्तस.* पराक्रम, बहादुरी [सं.कटक परथी]

कटरि *ऐतिका.* आश्चर्य अने प्रशंसासूचक अव्यय [अप.]

कटले *देवरा.* केटले [सं.कियत्+तुल्य]

कटा **नलरा. विमप्र.* कट्टा, कट्टर, [दृढ, अणनम (योध्दा)]

कटाभेद **अखाका.* [*आवरणभंग]; जुओ कटाह

कटारूं *लावल.* कटार [सं.कर्त्तारिक]

कटाव *प्रेमाका.* रंगीन कापडना वेलबुट्टा जेना पर सीवेला होय तेवुं कापड

कटाह **अखाका.* [*आवरण] [सं.]; जुओ कटाभेद

कटिक *कादं(शा).* लश्कर, सेना (सं.कटक)

कटिमेखला *प्रेमाका.* कमर पर बांधवानो घूघरीवाळो कंदोरो [सं.]

कटिलंक *कशस्कं(१).* केडनो वळांक

कटीरक *गुर्जरा.* पोलो भाग, खाडो(सं.)

कटुक *षडाबा.* कडवुं (सं.)

कट्ट *प्राचीसं.* कापवुं (सं.कृन्त्)

कट्टु *ऐतिका.* कष्ट, [कष्टकारक कर्म], [पापकर्म]

कठिणुं *प्रेमाका.* कठण[पणे], घणुं, [भारे]

कठूबरि *आरारा(व).* कोठींबडी, कोठीमडी [सं.कपित्थ परथी)

कठोदर *आरारा.* कबजियात (सं.कष्टोदर)

कट्ठ (कट्ठ लेसउं) *शीलक.* काष्टभक्षण करीश, चिता सळगावी बळी मरीश

कड *उषाह. ऐतिरा. नेमिछं.* केड (सं.कटि)

कड *तेरका.* एक वनस्पति, [एक प्रकारनुं घास, खस]

कडउ *उक्तिर.* कडुं, [आभूषण], (सं.कटक)

कडकडइ *उक्तिर.* [*चकळवकळ थाय] (सं.कटकटायते) [*दे.कडयडिअ]

कडकडता **षष्टिप्र.* [शुद्ध कियावंत, दृढ आचारशील]

कडक्ख *तेरका. प्राचीफा.* कटाक्ष, प्रेमभरी वांकी दृष्टि

कडखइ *प्राचीफा.* आंखनो कटाक्ष करे

कडखु *शृंगामं.* आंखनो कटाक्ष

कडग *देवरा.* कडुं, [हाथनुं आभूषण] (सं. कटक)

कडछिऊ **नलरा.* [कसीने पहेर्यो]

कडडेरा (?) *तेरका.* वधु करडा ? [*कठोर, *रुक्ष]

कडण, कडणि *उक्तिर. तेरका.* [पर्वतनो] चडाव, टूंक

कडथले *प्रेमाका.* केड मांडीने, [केड लंबावीने] [सं.कटिस्थल]

कडनौ **जिनरा.* [केडनो, पासे छे ते]

कडब *उक्तिर. विमप्र.* सूकी चार, (सांठा)

कडली *नेमिछं.* हाथना कांडानुं एक आभूषण (सं.कटक+अप.इल्ल)

कडवउ *वीसरा.* कडी, [पद्यनो एकम] (सं. कडवक)

कडहटउ *उक्तिर.* [*कटासणुं – साधुओनुं ऊननुं पाथरणुं] (*सं.कटाहकम्)

कडाजूड *प्रेमाका.* भींसोभींस, [परस्पर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिडायेला]

कडाह *आरारा(व). तेरका.* वृक्षविशेष (प्रा.) (सं.कटाह)

कडाह, कडाउह *गुर्जरा. षडाबा.* कडाई, कडायो (सं.कटाहः)

कडि **नलरा.* [पाछलो भाग]

कडि *उक्तिर. उपबा. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. *विराप. वीसरा.* केड, कमर (सं. कटि); *विक्रमा.* केड उपर

कडिइ जुओ आकडिइ

कडिचीरु *गुर्जरा.* केड पर पहेरेलुं अधोवस्त्र

कडिदोरउ *उक्तिर.* कंदोरो [सं.कटि+दे.दोर]

कडियाली **षडाबा.* [लगाम] [रा.]

कडिलंक जुओ कंडिलंक

कडीआरा *कामा(त्रि).* एक जातना सोनी

कडीउ जुओ कंडीउ

कडु, कडुं, कडू *आरारा(व). उक्तिर. नरका.* कडो, अंदरजो (सं.कटुक, कुटज)

कडु (कूड) **अखाका.* [भारे कपट, कूडकपट]

कडुआवीया *शृंगामं.* दुभाव्या, [पीडित, संतप्त] (दे.कडुयावियं)

कडुउं *कादं(शा). गुर्जरा.* कडवुं (सं.कटुक)

कडुछउ *उक्तिर.* कडछो [दे.कडुच्छय]

कडुछी *उक्तिर.* कडछी [दे.कडुच्छय]

कडुय *तेरका.* कडवुं (सं.कटुक)

कडुवउ *वीसरा.* कडवुं, कठोर (सं.कटुक)

कडुं, कडू *नरका.* जुओ कडु

कडूउं *उपबा. नलरा. वाग्भबा. शृंगामं.* कडवुं (सं.कटुक)

कडे कीधां *नरका.* *जीत्यां, [प्रभुत्व मेळव्युं]

कडेवर *आनंत. प्राचीसं.* कलेवर, शरीर

कडै *जिनरा.* केडे, पाछळ

कड्ढीय *गुर्जरा.* काढी, खेंची (सं.कर्ष्)

कड्यें *अखाछ.* कटिए, केड पर

कढा *अखाका. प्रेमाका. मदमो. वेताप.* कडाई (सं.कटाहिका)

कढावुं लीह **लावल.* [हद वाळुं, शिरमोर ठरुं]

कण **नलरा.* [अनाजना दाणा, भिक्षान्न] [सं.]

कणअर *विमप्र.* करेणनां फूल [सं.कर्णिकार]

कणइअर *प्राचीफा.* करेणनुं झाड, (सं. कर्णिकार)

कणइर-कंब *प्राचीसं.* करेणनी सोटी (सं. कर्णिकारकम्बा)

कणउज *उक्तिर.* कनोज (नगर) (सं.कन्य-कुब्जम्)

कणग *देवरा.* सोनुं (सं.कनक)

कणगावलि *गुर्जरा.* तपनो एक प्रकार, जेमां उपवासोनी हारमाळा होय छे [जै.] (सं.कनकावलि)

कणदियो *नरका.* स्त्रीओना हाथना कांडा उपर पहेरवानुं एक घरेणुं

कणदोरो *ऐतिरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* कंदोरो (सं.कनकदोर)

कणब *चारफा.* कुटुंब

कणमणवुं *शृंगामं.* [कणकणवुं], त्रासवुं, दुःखी थवुं

कणय *ऐतिका. गुर्जरा. विक्रच.* सोनुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.कनक)

कणयर *आरारा(व). उक्तिर. ऋषिरा.* करेण-नुं झाड (सं.कर्णिकार)

कणयाचल *ऐतिका. विक्ररा.* कनकाचल, मेरु पर्वत

कणवंटिया *प्रेमाका.* कण – दाणानी भिक्षा मागनारा ब्राह्मण (सं.कणवृत्ति परथी)

कणवार **नलरा. *सिंहा(म).* [सारसंभाळ]

कणहतउ *उक्तिर. *विमप्र.* रोजी तरीके अपातुं अनाज (सं.कणभक्तम्)

कणहू *वाग्भवा.* कोईक [सं.कः परथी]

कणि *आरारा.* कन्या, पुत्री (रा./सं.कनी)

कणि *कर्पूमं.* कोणे (सं.केन)

कणि *दशस्कं(२). नलाख्या.* कने, पासे [सं.कर्णे]

कणि [तीहां कणि] *सिंहा(म).* पासे, कने, [त्यां] (सं.कर्णे); जुओ तिहां किणइ

कणिक्क **षडावा.* [कणेक, पाणीथी बांधेलो लोट] [सं.कणिका; दे.कणिक्का]

कणियार *उक्तिर.* करेण (सं.कर्णिकार)

कणे *पंचवा.* कोईए [सं.कः परथी]

कणेर-काम, कणेरकांब *दशस्कं(१). प्रेमाका.* करेणनी सोटी [सं.कर्णिकार-कम्बा]

कतीफा **हम्मीप्र.* [मखमलनुं कपडुं] [अ.; रा.]; जुओ कथीपा

कतूहल *नलरा.* [कुतूहल], कौतुक, [विनोद; विनोदक्रीडा]

कतेब *अखाका.* *किताब, *ग्रंथो, [इस्लामी धर्मग्रंथ], कुरान [हिं.; रा.]

कत्तिग, कत्तिय *तेरका. प्राचीसं.* कारतक (सं.कार्तिक)

कथलो कीजे *मोसाच.* कूचो करवो, बगाडवो

कथातां *प्रेमप.* कथतां, कहेतां

कथीपा *ऐतिका.* वस्त्रविशेष; जुओ कतीफा

कथीर *गुर्जरा.* एक हलकी धातु

कदघस (कदघ स) *सिंहा(म).* संकट ?, [*ते संकट] [*सं.कद्+अघ]

कदर्ज *प्रेमाका.* कदरूप (सं.कदर्य); जुओ कदर्य, कद्रज

कदर्थिवउं *उपबा.* *अपमान करवुं ते, [सतावबुं ते] [सं.कदर्थय्]

कदर्य *दशस्कं(२).* कृश, [कदरूपुं] (सं.); जुओ कदर्ज

कदलि, कदली *आरारा(व). तेरका. प्रेमाका.* केळ (सं.); जुओ कंदली

कदलीदल *आरारा.* केळनो गर्भ

कदलीथंभा *लावल.* केळना स्तंभ

कदलीपत्र *प्रेमाका.* केळनुं पांदडुं, [तेना जेवो वांसो]

कदलीहर *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंहा(म).* कदलीगृह, केळ-नो मंडप

कदही, कदिहिं *ऋषिरा. प्राचीसं.* क्यारेय पण [*सं.कदा+हि, किं+दिवि+हि]

कदाचि *कादं(शा). नलाख्या.* कदाच (सं. कदाचित्)

कद्रज *प्रेमाका.* कदरूप; *अखाका.* मेल (सं.कदर्य); जुओ कदर्ज

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कद्रु-जात, कद्रु-सुत *दशस्कं(१). प्रेमाका.* कद्रुनां संतान, नाग

कनक *अंबरा. आरारा(व).* धंतूरो (सं.)

कनककेलबंध *प्रेमाकं.* सोनेरी के सुवर्णना चूनाथी बद्ध – युक्त

कनककेवडी *आरारा(व).* केवडानी मादा जात (सं.कनककेतकी)

कनकफल *जिनरा.* धतूरा[नां बी] (सं.)

***कनकवजी (कनवजी)** *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात, [*कनोजी, *कनोज प्रदेशना]

कनात *नरका.* तंबुनी कपडांनी भींत, कापडनो पडदो

कनेउर *गुर्जरा.* काननुं एक घरेणुं (सं.कर्णपूर)

कन्त जुओ कंत

कन्ध *गुर्जरा. प्रबोप्र.* खांध, खभो (सं.स्कन्ध)

कन्न *उषाह. तेरका.* कान (सं.कर्ण)

कन्न *गुर्जरा. तेरका.* कन्या

कन्न *गुर्जरा.* कर्ण (सारथिपुत्र)

कन्यो *दशस्कं(२).* अत्यंत प्रचंड कदनी कन्या

कन्ह *गुर्जरा. प्राचीसं.* कृष्ण

कन्हइ *उक्तिर. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. विराप. षडाबा. षष्टिप्र.* कने, पासे (सं.कर्णे)

कन्हड *गुर्जरा.* कृष्ण

कन्हलि *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. विक्ररा.* कने, पासे (सं.कर्णे)

कन्हा *जिनरा.* पासे [सं.कर्णे].

कन्हेली *प्राचीफा.* कने, पासे (सं.कर्णे)

कपर्दक *षडाबा.* कोडी (सं.)

कपाट *नरका. प्रेमाका. षडाबा.* कमाड, बारणुं (सं.)

कपिला, कपिलावर्णी *अखाका.* प्रेमाका. घेरा बदामी रंगनी (सं.)

कपीलउ *उक्तिर.* कंपीलो, एक वनस्पति (सं.काम्पिल्यम्)

कपीलकृत *मदमो.* केशपाशनुं उपमान, [काळा रंगनुं]

कपीवार **कामा(त्रि).* [रविवार] [सं. कपिवार]

कपोल *आरारा. लावल. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* गाल (सं.)

कपोले कर दइ *प्रेमाका.* [गाले हाथ मूकी], निराश थई

कप्पड *ऐतिका.* कपडां, वस्त्र [सं.कर्पट]

कप्पतरो *ऐतिका.* कल्पतरु, कल्पवृक्ष

कप्पयरु *ऐतिका.* कल्पतरु, कल्पवृक्ष

कप्पिय *तेरका.* काप्युं (सं.कर्तित)

कफ *चित्तसं.* कप, चकमकना तणखा झीलवानुं रू, जामगरी

कबची *हम्मीप्र.* *एक प्रकारनुं बख्तर, [*कवच धारण करनार सैनिक]

कबधी *विमप्र.* कुबुद्धि, कमअक्कल

कबरी *ऋषिरा. दशस्कं(१). प्रेमाका.* चोटलो (सं.)

कबही *आरारा.* क्यारेय (हिं.) [सं.क्व+हि]

कबंध *गुर्जरा. प्रेमाका.* धड (सं.)

कबाइ *वीसरा.* जामो, झभ्भो (फा.कबा)

कबाडी *सिंहा(म).* कठियारो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कबाड्या *पंचवा.* कदरूपा, खराब, [खवायेला, सडेला, भांग्यातूट्या] (*सं. कर्बट); जुओ कवाड्यउ

कबाडी *अभिऊ.* *शिकारी; *लुच्ची, *प्रपंची, *जूठी

कबाहि *विक्रच.* जरीनो जामो, वाघो (फा. कबाह); जुओ कुलह कबाइ

कबांन *प्राचीफा. मदमो.* कामठुं, धनुष्य (फा.कमान)

कबुएक *मदमो.* क्यारेक (हिं.कबहु+क) [सं.क्व+खलु+क]

कबुध *सिंहा(शा).* कुबुद्धि

कबुयक *सिंहा(शा).* कदीक; जुओ कबुएक

कबुल करो *मदमो.* [अपनावो], पोताना तरीके स्वीकारो

कभाअ, कभाय *कामा(त्रि). दशस्कं(२). प्रेमाका.* अंगरखुं, झभ्भो, कसबी वाघो [फा.कबाह]

कम *चतुचा.* क्यम, केम

कमकेहे *चंद्रवा.* कमखे (फा.कमूखा)

कमग्ग *प्राचीसं.* चरणाग्र (सं.क्रमाग्र)

कमठ *प्रद्युचु.* [ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मबंधनो] (सं.कर्म+अष्ट); जुओ कमढ

कमठाय *प्राचीसं.* कमठाण, [वांस वगेरेथी ऊभुं करेलुं काचुं माळखुं] [सं.कमठ परथी]

कमढ [कमठ] *प्राचीसं.* [ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मबंधनो]; जुओ कमठ

कमण *गुर्जरा. विक्ररा.* कोण, कयुं [सं.कः पुनः]

कमल *वेताप.* मस्तक, ब्रह्मरंध्र; *अभिऊ.* शीश [सं.]

कमलउ *उक्तिर.* *कमळो (सं.कामलकः)

कमलणी *आरारा.* कमलिनी

कमलनहीणे *प्रेमप.* कमलनयने कृष्णे

कमलभाखणी *चतुचा.* कमलतंतुनो आहार करनार हंस, हंसिणी [सं.कमल+भक्ष्]

कमलभू *अखाका.* कमळमांथी उत्पन्न थयेला ब्रह्मा [सं.]

कमलभू-तन *दशस्कं(१).* ब्रह्माना पुत्र नारद

कमल-मृणाल *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कमल-नाळ, कमलदंड (सं.)

कमलंतरि *गुर्जरा.* कमळनी अंदर

कमल-सकुंअला *लावल.* कमळ जेवा सुकोमळ, सुंवाळा

कमला *आरारा.* लक्ष्मी, श्री, वैभव; *ऐतिका.* लक्ष्मी [सं.]

कमलाइ *आरारा. कामा(त्रि).* करमाय [सं. कलाम्]

कमलागेह *गुर्जरा.* लक्ष्मीना निवास समान, [धनसमृद्ध] (सं.)

कमलाणी *आरारा.* करमाणी [सं.कलाम्]

कमलिणि *गुर्जरा.* कमळनो छोड (सं. कमलिनी)

कमली, कवली *उक्तिर.* वांसनी पट्टी अने कपडानुं बनेलुं पोथीओनुं एक प्रकारनुं बंधन [*दे.कवलिआ]

कमाइ *आरारा. नेमिछं.* करे, कामकाज करे, (तैयार) करे, [बनावे] (सं.कर्म

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परथी) [सं.कर्मापय्]; जुओ कुडकमाइ

कमाण *आरारा.* [धनुष्यनी] कमान

कमायुं *आरारा. लावल.* कर्युं (सं.कर्म परथी); *आरारा.* कामकाज कर्युं

कमावइ *आरारा.* तैयार करे, [चढवे, रांधे] [सं.कर्मापय्]

कमावीइं *आरारा.* -नी तैयारी थाय

कमेडी *वीसरा.* एक जातनुं कबूतर

कमोदनी *दशस्कं(२).* कुमुदिनी

कमूहरति *हम्मीप्र.* खराब मुहूर्तमां

कम्म *उपबा. कर्म; तेरका. नेमिछं.* कर्म-(बंधन)

कम्म **जिनरा.* [कार्मण शरीर – जे जीवने वळगेलां कर्मोनुं बनेलुं होय छे, आ शरीरनी प्राप्ति करावनार नामकर्म] [जै.]

कम्मपयडि *ऐतिका.* कर्मप्रकृति, [कर्म-बंधनना प्रकार]

कय **नलरा. प्राचीसं.* अथवा, के

कयत्थ *तेरका.* कृतार्थ

कयर *आरारा. उक्तिर. नलरा.* एक वृक्ष-विशेष, केरडो (सं.करीर)

कयलि *प्राचीसं.* केळ (सं.कदली)

कयवन्नउ *प्राचीसं.* कयवन्नो, कृतपुण्य, एक श्रावकनुं नाम

कयवार *प्राचीफा. *विमप्र.* प्रशस्ति; जुओ कइवार

कयंब *तेरका.* कदंब

कया *कृष्णबा.* काया (छंद खातर 'कया')

कयाणउं *प्राचीसं.* करियाणुं (सं.क्रयाणकम्)

कयावि *जिनरा.* कदापि, [क्यारेय]

कयुं *पंचवा.* कह्युं (सं.कथित)

करअल **गुर्जरा.* [हाथ] (सं.करतल)

करकडा *वेताप.* ककडा, कटका

करकडा *प्रेमाका.* कागारोळ, [दुःखना चित्कार] [हिं.करकना]

करकरो **नरका. प्रेमाका.* [खरबचडो], घसाया विनानो [सिक्को]; *अखाका.* *कठण, [करडो, आकरा स्वभावनो]

करकस, करकसु **वसंफा. *वसंफा(ल). *वसंवि. *वसंवि(ब्रा). विमप्र.* आकरा, [दृढ, कसीने] (सं.कर्कश)

करखे *नरप.* खेंचे, [*उत्तेजित थाय] (सं. कृष्) [हिं.]

करगर **अखाका. *कर्पूमं. विक्ररा. *विमप्र.* कचकच, [ककळाट]; जुओ किरगिरइ

करजडो *अभिऊ.* [कणजी], कणेजरो, एक प्रकारनो छोड [सं.करंज]

करजाळी *दशस्कं(२).* कजराळी, काजळनी दाबडी

करट *ऐतिका.* हाथीनुं गंडस्थळ, लमणुं [सं.]

करटि *ऐतिका.* हाथी [सं.]

करडउ जुओ सरडउ

करडि *प्राचीसं.* वाद्यविशेष [दे.करटी]

करण *आरारा. लावल.* कर्ण, कान

करणइ **गुर्जरा. नेमिछं. विमप्र.* रडे, आक्रंद करे, [कणसे]

करणकतूहल **गुर्जरा.* [ज्योतिषविषयक एक ग्रंथ, ज्योतिषशास्त्र] (सं.करण-कुतूहल)

करणढ *चंद्रवा.* करणाट नामे एक वाद्य;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ करणाट

करणहार, करणहारु *उक्तिर. उपबा. नलरा.* करनार (सं.करण+कार)

करणाट *रूस्तस.* एक वाजुं; जुओ करणढ

करणाहरु *उक्तिर.* करनार, करवा इच्छनार

करणी *ऋषिरा.* हस्तिनी, हाथणी (सं.करिणी)

करणी *विमप्र.* काज, वरा

करणी, करणीअ *नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* करेण (सं.कर्णिकार)

करणीकर *आरारा.* हाथणीनी सूंढ (सं. करिणीकर)

करणीकर *आरारा(व).* गरमाळो (सं. कर्णिकार)

करतम्य, करतव्य *चित्तसं.* कर्तव्य, कर्म, क्रियाकारित्व

करताकारैता *अखेगी.* कर्ता अने कारयिता, करता-कारवता

करतार *गुर्जरा. प्राचीसं.* सृष्टिकर्ता, किरतार, [ईश्वर] [सं.कर्ता]

करतारथ *आरारा.* कृतार्थ

करतारि *आरारा.* *करतलमां, *हथेळीमां, [हाथमां]

करतुत, करतुं, करत्रुत *प्रेमाका. वेताप. सिंहा(शा).* करतूक, [कार्य, कृत्य], आचरणरूप प्रवृत्ति

करपट, करपटि *आरारा(व). तेरका.* करपटी, कांकडनुं झाड

करपण *आरारा.* कृपण, लोभी

करपा *लावल.* *करपडी, *कापवानुं एक ओजार, [*दांता]

***करपा [*करभा]** **लावल.* [मदनियां]

करपी *नंदब. प्रेमाका.* *मदमो. कृपण, कंजूस; *मदमो.* –, [कृपण] जुओ क्यरपी, क्रपी

करब *तेरका.* एक वनस्पति

करबक *गुर्जरा.* कुरबक, [कांटासेरियो], एक वृक्ष

करबुज *दशस्कं(२).* कुब्जा, [कूबडी]

करभ *आरारा.* ऋषिरा. ऊंट (सं.)

करभा जुओ करपा

करम *प्रेमाका.* कर्म, भाग्य; *विमप्र.* कर्म, [भाग्यनिर्माण]; *तेरका.* कर्म[बंधन]

करम *प्रेमाका.* डगलां, पगलां (सं.क्रम)

करमइता जुओ करमि

करम काढवां *प्रेमाका.* फळ पामवां, परिणाम मेळववुं, [पराक्रम बतावववुं]

करमना भोग *प्रेमाका.* नसीबनी माठी दशा

करमने पार *प्रेमाका.* कर्म – भाग्य पण न बनावी शके तेवुं, असाधारण

करमपासो *लावल.* कर्मनां बंधन [सं. कर्मपाश]

करमलो *नरका.* दहींमिश्रित भात [सं.करंभ]

करमा-धरमा *प्रेमाका.* करेलां कर्म अने धर्म प्रमाणेना, [कर्मधर्म अनुसार]

करमि (करमिता, करमइता) *लावल.* कर्मी, कार्य- कुशळ

करमो *दशस्कं(१). नरप(द). प्रेमाका.* दहीं-भात (सं.करंभ)

करयल *गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा.* हथेळी, हाथ (सं.करतल)

करल *आरारा. प्राचीफा.* वाळ, वाळनो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बांधेलो गुच्छो (सं.कुरुल); जुओ कुरुल

करलकेस *रूपच.* वांकडिया वाळ (दे.कुरुल+सं.केश)

करलीइ *ऐतिरा.* कचवाय, [ककळाट करे]; जुओ कुरलइ

करवउ *गुर्जरा. विराप.* करवडो, [नाळचावाळो लोटो] (सं.करक)

करवडो *दशस्कं(१). प्रेमाका.* नाळचावाळो लोटो

करवतुं **हरिख्या.* [डंगोरो, नानी डांग] [सं.करवेत्रक]

करवर *तेरका.* एक वनस्पति, [*करवीर, *करेण]

करवरु **विमप्र.* [मृत्यु]

करवंदी *तेरका.* करमदी (सं.करमर्दिका)

करवाल *आरारा. गुर्जरा. विक्रच. विक्ररा. शीलक.* तलवार (सं.)

करवाळुं *प्रेमाका.* देवाळुं

करवी *लावल.* करवडी, नाळचावाळी लोटी [सं.करक]

करवीर *तेरका.* एक वनस्पति, [करेण] (सं.)

करशंपुट करी *कामा(शा).* हाथ जोडी

करशण *सिंहा(शा).* खेती, ऊभो मोल (सं. कर्षण)

करशंणी *मदमो.* खेडूत (सं.कर्षण+ई)

करसउ *उक्तिर.* खेडूत (सं.कर्षक)

करसण *अखाछ. अखेगी. ऐतिरा. कृष्णबा. *लावल.* खेती, वावेतर [सं.कर्षण]

करसणी *अखाछ. अखेगी. उपबा. सम्यचो.* खेडूत (सं.कर्षण+इ)

करसणु *उक्तिर.* खेती (सं.कर्षण)

करसाण **अखाका.* [अग्नि] [सं.कृशानु]

करहडी **उषाह.* [करेढी, गढ के महेल परनी रक्षको माटेनी ओटली के पाळ]

करह, करहउ, करहु *उक्तिर. प्राचीफा. वीसरा. षडाबा.* ऊंट (सं.करभ); *अभिऊ.* ऊंट, [सांढणी]

करहला *आरारा.* ऊंट (सं.करभ)

करहा *विमप्र.* करा (बरफना) [सं.करक]

करहा, करहां *उषाह. विमप्र.* ऊंट (सं. करभ)

करहु जुओ करह

करंक *ऋषिरा. कस्तुवा.* हाडपिंजर, हाडकां (सं.)

करंकइ *प्रद्युचु.* (कागडो) ककळे

करंगी *प्राचीफा.* हरणी (सं.कुरंगी)

करंड *ऋषिरा. कादं(शा). विक्रच.* करंडियो (सं.)

करंबउ *उक्तिर.* दहींमिश्रित भात (सं. करंभः)

करंबक *गुर्जरा.* दहींमिश्रित भात (सं. करंभक)

करंबला, करंबा *नेमिछं. लावल.* दहींमिश्रित भात (सं.करंभक)

करंबु, करंबुलउ *आरारा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* दहींमिश्रित भात

करंम *मदमो.* कपाळे; जुओ कर्म

कराअइ *उक्तिर.* कराय

कराड *नरका.* भेखड

कराडा *दशस्कं(२).* भेखडो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कराडी *आरारा.* करावीने

करार, करारु *आरारा. मदमो.* शांति, शाता (फा.)

करालिउ, करालिय, करालियउ, करालीय *उक्तिर. गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा.)* पीडित (सं.करालित)

करावणहार *षडाबा.* करावनार

करावणु ०*षडाबा.* करावबुं ते

करां *मोसाच.* करे; *पंचवा.* करीशुं, [करुं]

करांबला, करांबुला **वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* एक वृक्ष [बिजोरी के] करमदी (सं.कराम्लक)

करांबुलु *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा.)* करंबो, [दहींमिश्रित भात] (सं.करम्भक)

करि *आरारा. विमप्र.* जाणे के (सं.किल)

करि *देवरा.* -थी, थकी

करिअल **गुर्जरा.* [हाथ] (सं.करतल)

करिकुंभा *ऋषिरा.* हाथीनां कुंभस्थळ [– लमणां] (सं.करिकुम्भ)

करि जाणे *उषाह.* जाणे के

करियल *कृष्णच. चारफा. स्थूलिफा.* हाथ (सं.करतल)

करिवउं *उक्तिर.* करवुं

करिवाल *प्राचीफा.* तलवार (सं.करवाल)

करिंदो *गुर्जरा.* करीन्द्र, उत्तम हाथी

करी *प्रेमाका.* हाथी [सं.करिन्]

करी *नरका.* परहेजी, चरी

करी *आरारा. देवरा.* -ने लईने, -थी वडे

करी (तीणि करी) **विराप.* [तेने लीधे, तेवी रीते]

करीमि *कादं(शा).* हाथीमय, हाथीथी भरपूर (सं.करिमय)

***करी लंकनी [*केसरी-लंकनी]** **रिंहा(शा).* [सिंह जेवी कमरवाळी]

करीस *उक्तिर.* छाणुं (सं.करीषः)

करुण **गुर्जरा. तेरका.* एक वनस्पति, [करुणी]

करुण पलाव *चारफा.* करुण प्रलाप, आक्रंद

करुणी, करुणीअ **वसंफा(ल). *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* एक पुष्पवृक्ष (सं.)

करुंडइ *आरारा.* करंडियामां (सं.करंड)

करुंबु *उषाह.* दहींमिश्रित भात (सं.करंभ)

करूप *नलाख्या.* कुरूप, कद्रूपुं

करेळी *प्रेमाका.* *कमकमाटी, [रोषनी झाळ]

करेवउ *आरारा-शु.* कागडो (रा.)

करो **नंदब.* [खेडूत] [रा.करौ]

करोट, करोटक, करोटी *षडाबा.* एक वासण, कटोरो (सं.)

करोडि *गुर्जरा.* करोड [संख्या] (सं.कोटि)

करोत *चंद्रवा.* करत

करोस *प्रबोप्र.* करीश

कर्णाटो *प्रेमाका.* कनातो, [तंबुनी कपडांनी भींत]

कर्णिके *विमप्र.* कानमां [सं.कर्णके]

कर्तु *प्रेमाका.* कृत्य

कर्तुमकर्तुम् *दशस्कं(१). प्रेमाका.* करवाने अने न करवाने, सर्जवाने अने नष्ट करवाने

कर्प *प्रेमाका.* कृप, कृपाचार्य

कर्प्यासनां वस्त्र *उक्तिर.* सुतराउ वस्त्र

कर्बुज *प्रेमाका.* कूबडी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्म *आरारा. नरका. प्रेमाका.* भाग्य; *दशस्कं(२). प्रेमाका.* कपाळ, ललाट; जुओ करंम

कर्मइजिनइ *षष्ठिप्र.* कर्मने ज

कर्मक्षयावाप्त *आनंस्त.* कर्मक्षय करीने प्राप्त करेलुं [सं.]

कर्मडां *प्रेमाका.* *तुच्छ कर्मो, *चेनचाळा, [*भाग्य]

कर्मनिकाय *ऋषिरा.* कर्मसमूह(सं.)

कर्मलडो *मोसाच.* [दहींमिश्रित भात], [करमानो] कोळियो [सं.करंभ]

कर्मविपाक *आनंस्त. आरारा.* कर्मनो परिपाक, परिणाम [सं.]

कर्मी *नेमिछं.* (मोटां) कर्म करनारो, [पराक्रमी; भाग्यशाळी] [सं.]

कर्म्माइ *विमप्र.* करमाय, चिमोडाय [सं.कूर्मायते]

कर्योस *ललिरा.* *करीश, [*करशो, *करशे]

कल *प्राचीसं.* कादव [प्रा.; सं.कल्क]

कल *षडाबा.* [स्थळनुं] अंतर, [योजननो एक अंश] [जै.]

कल *चतुचा.* कळियुग [सं.कलि]

कलक *वेताप.* औषधनो छूंदो, [चूर्ण] (सं. कल्क)

कलकलइ *गुर्जरा. विराप.* कोलाहल करे, गाजे; *कादं(शा).* ककळाट करे; *चित्तसं. *नेमिछं.* [तपे, धगे, दाझे]

कलकलतउं *षडाबा.* कळकळतुं, ऊकळतुं, दाझतुं (सं.कलकल्)

कलकंठी *ऋषिरा.* [मधुर कंठवाळी स्त्री] (सं.)

कलगलीय *गुर्जरा.* कोलाहल करी (सं. कलकल्)

कलगेर *प्रेमाका.* एक प्रकारनुं रेशमी वस्त्र के रेशमी साडी

कल छूटवी *चित्तसं.* कळ वळवी, मूर्छा दूर थवी

कलण *अखाछ. चित्तसं.* कलन, कळवुं (समजवुं) ते

कळण *अखाका.* खूंची जवाय एवो कादव

कलणा *अखाछ.* कलना, कळवुं ते

कलतरु *सिंहा(शा).* [खेतरमां पाकेलुं] धान्य कळनार, [अंदाज काढनार] [सं.कल् परथी ?]

कळतो *अखाका.* [कादवमां] खूंची जतो

कलत्र *आरारा. नरका. प्रेमाका.* स्त्री, पत्नी (सं.)

कलत्रुक *वेताप.* खेतरमां पाकेलुं धान कळनार, [अंदाज काढनार] [सं.कल् परथी ?]

कलपइ *आरारा.* देवलोकमां (सं.कल्प)

कलपतरो *गुर्जरा.* कल्पतरु

कलपना *नरका.* [दुःख, पीडा]

कळपना *अखाका. नरका. प्रेमाका.* कल्पांत, दुःख, वलोपात

कळपावो *प्रेमाका.* दुःखी करो

कलपांत *गुर्जरा.* प्रलय (सं.कल्पान्त); जुओ कल्पांत

कलपे *उक्तिर. प्रेमाका.* कळपे, कल्पांत करे

कलम *ऋषिरा.* चोखानी एक उत्तम जात

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.)

कलमाधुरी *नरका.* अवाजनी सुंदरता, [स्वर-माधुर्य]

कलमे शरीख *अखाछ.* कलामे शरीफ, कुरान

कलयल *गुर्जरा. तेरका. प्रद्युचु.* कोलाहल (सं.कलकल)

कळवकळ *अखाछ.* युक्ति अने विशेष युक्ति, [युक्तिप्रयुक्ति]

कळवकळिया *प्रेमाका.* युक्तिबाज, विचक्षण

कळविकळ **नरका.* [युक्तिप्रयुक्ति]

कलवो *प्रेमाका.* वरने जानीवासेथी नीकळतां पहेलां कन्यापक्ष तरफथी मोकलवामां आवतुं हळवुं भोजन, [सं.कल्यवर्त]; जुओ कलुवो; कलेवउ

कलश *नेमिछं.* समाप्तिनी कडीओ (सं.)

कलस, कलसा *तेरका. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* षडाबा. कळश, घडो

कलहंसा *ऋषिरा.* हंस, [एक हंसजाति] (सं.)

कलही *चित्तसं.* कलाई, सीसानो ढोळ

कलंकिय, कलंकीय *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कलंकित, जेनामां डाघ छे ते

कलंबी *नलरा. ललिरा.* कणबी, खेडूत (सं. कुटुंबी)

कला, कळा *हरिख्या.* मुखकळा, मुखमुद्रा, [शरीरकांति]; *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* (चंद्रनो) अंश, भाग

कलाई *उक्तिर.* कोणीथी कांडा सुधीनो हाथनो भाग [प्रा.कलाइआ]

कलाउ *प्राचीफा.* [मोरनो] कलाप

कळाकर *प्रेमाका.* मोर

कळा पाडी *नरका. प्रेमाका.* [शरीरनी कांति झांखी पाडी], स्वरूप ढांकी, नवुं स्वरूप करी

कलामीय *वसंफा.* क्लान्त, थाकेल (सं. क्लामित)

कळा मूके *प्रेमाका.* क्षीण थाय, [कांति ओछी करे]

कलायु *लावल.* कळायो, समजायो, ओळखायो

कलाल *उक्तिर. विक्रच.* मद्य – दारूनो वेपारी (सं.कल्यपाल)

कलावी *शृंगामं.* कलापी, मोर

कलांण *कामा(शा). चंद्रवा.* कल्याण

कलि *ऐतिरा.* कळवामां, समजवामां

कलि *आराम.* काळे (सं.काल)

कलि *तेरका.* कलियुग

कलि, कळि *आरारा. वीसरा.* कजियो, झघडो (सं.)

कलिट्ठु **षष्टिप्र.* [कठिन, क्लेशजनक] (सं.क्लिष्ट)

कलिउ *कादं(शा). नेमिछं. प्रेमप.* जाण्यो, ओळख्यो [सं.कलितः]; **कादं(शा). नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका.* डूब्यो, खूंप्यो, [गरकाव थयो] (सं.कलितः)

कलि-कुरंग **लावल.* [पापबुद्धिनो खराब रंग]

कलि ज *विराप.* समज ज, मान ज

कलिय, कलीय *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* (फूलनी) कळी; **वसंफा. वसंवि(ब्रा).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(दीवानी) शग (सं.कलिका)

कलुवो *नरका.* कलवो, परणवा आवनार वरने माटे कन्यापक्ष तरफथी मोकलवामां आवतुं जमणनुं भाणुं [सं.कल्यवर्त]; जुओ क़लवो

कलुस *तेरका.* कलुष, [मेल]

कलुहु *प्रबोप्र.* कजियो (सं.कलह); जुओ कलवो

कलेवउ *उक्तिर.* कलवो, कन्यापक्ष तरफथी वरने अपातुं प्रारंभिक हळवुं भोजन (सं.कल्यवर्त)

कलो *नंदब.* जाणो

कलो *अखाका. अखाछ. नरप(द).* कलह, कजियो

कलोडी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* एके वेतर न थयेली गाय, [वाछडी] (दे.कल्होडी)

कलोल *ऋषिरा. प्रेमाका. विमप्र.* कल्लोल, आनंद; *चित्तसं.* कल्लोल, [सागरनां] मोजां

कल्प *प्रेमाका.* चार युग जेटलो समय

कल्प *अखाका.* *-ने योग्य; [*कामकला, *कामोपभोग]

कल्पद्रम *गुर्जरा.* कल्पवृक्ष

कल्परस **अखाका.* [*कामरस, *कामोपभोग]

कल्पवरखी *चतुचा.* कल्पवृक्ष समी

कल्पवेलि *आनंस्त.* इच्छित फळ आपनार वेल [सं.]

कल्पा *गुर्जरा.* [धारेला], निश्चित करेला (सं.कल्पिता)

कल्पांत *गुर्जरा. अखाका. विराप.* युगनो अंत, प्रलय (सं.); *दशस्कं(१).* कल्पांतकारी, भयंकर; जुओ कलपांत

कल्मष *हरिख्या.* पाप, मळ (सं.)

कल्याणय *तेरका.* कल्याणक, [जिन भगवानना जीवनना मंगल अवसर]

कल्यावंत *अंबरा.* कलावंत

कल्लाणवल्ली *लावल.* कल्याणरूपी वेली

कल्लाळ **वीसरा.* [शराब वेचनार] (सं. कल्यपाल)

कल्लां *प्रेमाका.* कडलां, स्त्रीओना पगनां कांडां पर पहेरवानां घरेणां [सं.कटक+लां]

कल्लोल *प्रेमाका.* छोळ, मोजां

कल्हार *आरारा(व).* धोळुं सुगंधी कमळ (सं.कह्लार)

कल्होडउ *उक्तिर.* वाछडो (दे.)

कवडउ *उक्तिर.* कोडो (सं.कपर्दकः)

कवडप्रपंच *गुर्जरा.* कपटजाळ

कवडि-जक्ख*प्राचीसं.* एक यक्ष, कपर्दियक्ष

कवण *आरारा. गुर्जरा. तेरका. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. रूपच. लावल.* कोण, केवो, कयो, शो (सं.कः पुनः)

कवरधुं *प्रेमाका.* वधु पडतुं खराब, [वांकुं, अघटित]

कवराव *ऐतिका.* कविराज [रा.]

कवर्ते *अखाका.* खराब रीते वर्ते

कवली जुओ कमली

कवाड *उक्तिर.* कमाड (सं.कपाटम्)

कवाडचउ **वीसरा.* [खवायेलुं, भांग्युंतूट्युं, सडेलुं]; जुओ कबाडचा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवि *लावल.* केटलांये (सं.के अपि, प्रा. केवि)

कवि *आरारा.* कवे, वर्णवे (सं.कवति)

कवित, कवित्त *गुर्जरा. प्राचीसं. विराप.* काव्य (सं.कवित्व)

कविता, कवीता *अखाछ. अखेगी. कर्पूमं. ०कामा(शा). प्राचीका. प्रेमाका. मदमो.* कवयिता, कवन करनार, कवि

कवियण *आरारा. नेमिछं. विक्ररा.* कविजन

कवियणजण *नेमिछं.* कविजनोनो समूह

कविलउ, कविळउ *उक्तिर. वीसरा.* घेरा बदामी रंगनुं (सं.कपिलः)

कविळास *वीसरा.* कैलास पर्वत (प्रा.)

कविसमय *वाग्भवा.* काव्यरचना अंगेनी प्रचलित संकेतपरंपरा, [काव्यरूढि]

कवीता जुओ कविता

कवीयण जुओ कवियण

कव्व *ऐतिका.* काव्य

कव्वट्ठ *ऐतिका.* कवित्त, काव्य

कशकशतो **मदमो.* [थनगनतो]

कशण *नरप.* कापडानी कस – दोरी [सं. कशा]

कशिम, कसिम *प्राचीका.* कुसुम, फूल

कशुं *चित्तसं.* केटलुं [सं.कीदृशकम्]

कश्यपी *मदमो.* कश्यपनी, आसुरी

कश्यपसुत, कस्यपसुत *कामा(त्रि). कामा(शा).* सूर्य

कष *देवरा.* कष्ट

कषाय *अखाका. आनंस्त. आरारा. उपबा. ऐतिका.* चित्तविकार, दुर्वृत्ति; क्रोध, मान, माया, लोभ ए चार संसारहेतुओ

कषायां *नलाख्या.* खराब, गंदा (सं.कषाय)

कषियइ *षडाबा.* खेंचाय, घसडाय (सं.कष्)

कष्टइ *नलाख्या. प्रेमाका.* कष्ट आपे, दुःखी करे

कस *लावल.* कोई (हिं.किस)

कस जुओ कसप्रहार

कसउटउ *उपबा.* कसोटी करवानो पथ्थर [तेना समो], [परीक्षा करनारो] (सं. कषपट्टक)

कसकसी *नरका.* खेंची, ताणी, [कसीने, तंग करीने] [सं.कष्]

कसण *अखाका. *अभिऊ. कादं(शा). नरका. नरप(द). प्रेमाका. *स्थूलिफा. हरिवि.* कस, चोळी के कापडाने बांधवानी दोरी [सं.कशा]

कसतां **प्रेमाका.* [कसकसतां, कूदतां]

कसत्तुरीय *गुर्जरा.* कस्तूरी (सं.कस्तूरिका)

कसथूरिय *प्राचीफा.* कस्तूरी (सं.कस्तूरिका)

कसप्रहार *आरारा.* चाबुकना प्रहार (सं.कश-प्रहार)

कसमस, कसमसतु *प्राचीसं. प्रेमाका. लावल.* खेंचातुं, तणातुं, [कसकसतुं], तंग

कसमसे *नरका.* खूब खेंचाय, [तंग रहे]

कसमीर *उक्तिर. तेरका.* काश्मीर देश (सं. कश्मीराः)

कसवट्टउ *प्राचीसं.* कसोटीनो पथ्थर (सं. कषपट्टकः)

कसा *लावल.* कोई (हिं.किस्या)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कसार *प्राचीसं.* कंसार [दे.]

कसि *नलरा.* कसोटी (सोनानी), [कस, आंक] (सं.कष)

कसिउं *नलरा.* शुं, [कोई]; [केम, शा माटे] (सं.कीदृशकम्); *लावल.* शुं, केवुं

कसिण *नेमिछं.* काळी (सं.कृष्ण)

कसिम जुओ कशिम

कसिया *प्रेमाका.* कसेला [सं.कषित्]

कसी *उक्तिर.* चाबुक (सं.कशिका)

कसी *आरारा. लावल.* केवी [हिं.कैसी]

कसीदो *कामा(शा).* जरीनुं भरतकाम [फा. कशीदो]; जुओ हाथकसीदो

कसुटी *विमप्र.* कसोटी [सं.कषपट्टिका]

कसुं *मदमो.* शुं [प्रश्नार्थक] (सं.कीदृशकम्)

कसुंबो *नरका.* कसुंबनां फूल [जे केसरी – लाल रंगनां होय छे]

कसुंभउ *आरारा(व).* कसुंबो (सं.कुसुम्भ)

कसूंबिया *नरका.* कसुंबाना रंगना – लाल रंगना

कसे *प्रेमाका.* पीडे, दुःख दे [सं.कष्]

कसै *जिनरा.* कष्ट आपे

कस्मली *गुर्जरा. विराप.* श्याम – धूंधळी (सं.कश्मलित)

कस्यउ *लावल.* *कसेलो, [*खेंचीने बांधेलो], [*केवो, *केवो सुंदर]

कस्यपसुत *कामा(त्रि).* सूर्य; जुओ कश्यप-सुत

कस्युं *प्रेमाका.* कशुं, केवुं, शी गणनामां [सं. कीदृशकम्]; *चित्तसं.* कयुं

कह-अंब *आरारा(व).* कोसंबो – लाखनुं झाड (सं.कोशाम्र) ?

कहइ *आरारा.* क्यांय

कहण *आरारा. ऋषिरा. नलरा. पंचवा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* कहेवुं ते (सं. कथ्)

कहणहार *उपबा.* कहेनार

कहने *चतुचा.* क्यां

कहर *ऐतिका.* *मोत, [दैवी आफत] [अ. कह्र]

कहरा *कस्तुवा.* करा, [वरसादी बरफना कणो] [सं.करक]

कहं *षष्टिप्र.* तुं कहे (छे)

कहा *ऋषिरा.* कथा

कहाणउ *जिनरा.* कहेवायो

कहाणी *उक्तिर. प्राचीफा.* वात, वृत्तान्त, [घटना] (सं. *कथानिका)

कहाणी *लावल.* कहेवाई

कहां *षडाबा.* [कहे छे]

कहि *नलरा. वाग्भबा.* कोई (सं.कापि);) *उपबा. षडाबा.* कोण; जुओ कही

कहि न *चारफा.* कहे ने

कहियइ *उक्तिर*क्यारे,क्यारेक

कहिं, कहीं *षडाबा.* क्यारेक, कोई वखते; *प्रेमाका.* क्यांक; [क्यारेय]; *नरका.* क्यांय, कोई स्थळे; *चित्तसं.* क्यां; शुं

कही *चतुचा.* कई; *षडाबा.* कोई (सं. कस्यापि); *आरारा.* क्यांय, कदी; *तेरका.* क्यांय (सं.कस्मिन्); जुओ कहि, क्यहीं

कहीअं *गुर्जरा.* क्यां (सं.कस्मिन्+चित्)

कहीइ *आरारा. कादं(शा).* क्यारे (सं.कस्मात्

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परथी); *आरारा.* क्यांय; *उपबा.*क्यांय; क्यां; *उक्तिर.* क्यारेय; जुओ कंहीए

कहीइ *उपबा.* एटलेके

कही चाहीजइ *आरारा.* कहेवी जोईए

कहीं जुओ कहिं

कहींइ *कादं(शा).* क्यारे पण, [क्यारेय]

कहींए *प्रेमाका.* क्यारे; *चित्तसं.* क्यांय

कहींएक *प्रेमाका.* क्यारेक

कहींय *उक्तिर.* क्यारे, क्यारेय

कहींये **प्रेमाका.* [क्यारे]

कहूआलउ *उक्तिर.* कोलाहल

कह्नइ *कादं(शा). नलाख्या. प्रबोप्र.* कने, [-नी पासे] [कर्णे]

कह्नलि *वाग्भवा.* कने, पासे [सं.कर्णे]

कंक *ऋषिरा.* बगलो (सं.)

कंकण *प्राचीका* कंकर, कांकरो (सं.कर्कर)

कंकणी *चतुचा.* घूघरी [सं.किंकिणी]

कंकरी *प्राचीका.* दासी (सं.किंकरी)

कंकुम *नलरा.* कंकु (सं.कुंकुम)

कंकोडउ *उक्तिर.* कंकोडानुं झाड (सं. कर्कोटक) [दे.कंकोड]

कंकोडी *अखाछ. अखाछ-टि.* एक जातनी कठण माटी, एक वनस्पति, जे गठ्ठा जेवी होय छे; *आरारा(व).* कंकोडा – कंटोलानुं झाड (दे.कंकोड)

कंख **ऐतिका.* [शंका] [सं.कांक्षा]

कंचकी *चतुचा.* कंचुकी, कांचळी

कंचण *गुर्जरा. तेरका. लावल.* कंचन, [सोनुं]

कंचनवन्नि *गुर्जरा.* कांचनवर्णी, सोना जेवा वाननी

कंचल *उषाह.* कांचळी [सं.कंचुक]

कंचवो *नरका.* कांचळी, कमखो [सं.कंचुक]

कंचु *नरका.* कंचवो, कमखो (सं.कंचुक)

कंचुक *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कांचळी (सं.)

कंचुकिउ **विराप.* [-नुं बख्तर पहेर्युं छे एवो, -ना आवरणवाळो]; जुओ कुंचुकिउ

कंचुकी *प्रेमाका.* कांचळी, कमखो [सं.]

कंचुयउ *वीसरा.* कांचळी (सं.कंचुक)

कंचुलिय, कंचुली *अखेगी. तेरका.* कांचळी (सं.कंचुलिका)

कंचुवा *देवरा.* कांचळी (सं.कंचुकक:)

कंचू *प्राचीसं. वीसरा.* कांचळी (सं.कंचुक)

कंचूअउ *ऐतिका.* कंचवो, कांचळी

कंचूअडउ *लावल.* कंचवो, कांचळी [सं. कंचुक]

कंचूउं *प्राचीफा.* कांचळी (सं.कंचुक)

कंचोला *प्राचीफा.* कचोळां, प्यालां (प्रा. कच्चोलअ); जुओ कचोल

कंझार (लीलां कंझार) *सिंहा(शा).* (लीलां)-छम (कणझर उपरथी)

कंट *गुर्जरा.* कांटो (सं.कंटक)

कंटकसंकट *वसंवि.* कंटकोथी भरेला (सं. कंटक+संकट)

कंटेलइ *आरारा.* ऊंटने प्रिय वनस्पति, कंटोली, कंकोडी, ऊंटकंटो

कंठ *आरारा.* कंठमाळ, ए नामनो रोग

कंठ *अखाका.* किनारे, कांठे; जुओ कूआ-कंठइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंठमां (कंठे) कांटा पडवा *अखाका. प्रेमाका.* खूब तरस लागवी, शोष पडवो

कंठीर (कंठीरव) *ऐतिका.* सिंह [सं.]

***कंडिलंक [कडिलंक]** *स्थूलिफा.* केडनो लांक – वळांक [सं.कटि+दे.लंक]

***कंडीउ [कडीउ]** *नलरा.* कडियो (दे. कडइअ)

कंदुक *दशस्कं(२). कंदुक*, दडो

कंत, कन्त *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नलरा. प्रबोप्र. लावल.* पति, कंथ (सं.कान्त); *आरारा.* प्यारा (सं.कान्त); जुओ कंन

***कंन [कंत]** **प्राचीफा.* [कान्त, प्रियतम]

कंता *आरारा. लावल.* कान्ता, पत्नी; पति, कंथ (सं.कान्त)

कंति, कंती *ऐतिरा. तेरका. नेमिछं.* कान्ति, प्रकाश, रूप

कंथा *ऋषिरा.* गोदडी, [चींथरानुं वस्त्र, साधु-वस्त्र] (सं.)

कंथेर *आरारा(व). मदमो.* एक हलकी कांटाळी वनस्पति (सं.)

कंद **अखाका. गुर्जरा. *नरका. लावल.* मूळ, गांठ (सं.); *चित्तसं.* मूळ, मूळ स्थिति

कंदए *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* खांडे, चूरो करे (सं.कंडयति)

कंदर्प-दर्प-तर्प *प्रेमाका.* कामदेवना गर्वने तृप्त करे तेवा

कंदल **नेमिछं. प्रद्युचु.* लडाई, [झघडो], वादविवाद (सं.)

कंदली *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* केळ (सं. कदली); जुओ कदलि, कदली

कंदुक *ऋषिरा. प्रेमाका.* दडो (सं.)

कंदू *चारफा.* कुंदनां फूलो

कंद्रप *नरका.* कामदेव [सं.कंदर्प]; *चित्तसं.* कामवासना

कंध जुओ कन्ध

कंधरा *अखाका. कादं(शा).* गरदन, डोक (सं.)

कंपवाय *प्रेमाका.* कंपवायु, कंपारी, ध्रुजारी

कंपीर *तेरका.* एक वनस्पति (*कंपिल्ल, *कपीलो)

कंब, कंब *नलरा. प्राचीफा.* सोटी, छडी (सं.कम्बा)

कंबलि *उषाह.* आभूषणविशेष, कांबडी, [बंगडी]

कंबु *प्रेमाका.* शंख (सं.)

कंबुवत *दशस्कं(१).* शंख जेवो

कंबोज *नलरा.* एक देशनाम, अफघानिस्तान (सं.कांबोज)

कंभ *प्राचीफा.* घडो (सं.कुम्भ)

कंमिण *ऐतिका.* कर्मथी, कृत्यथी

कंव जुओ कंब

कंवल **षडाबा.* [गायभेंस वगेरेने गळामां नीचे लटकती चामडी] [सं.कंबल]; जुओ गलकंवल

कंस *नलाख्या.* पात्र, वासण, (लक्षणार्थे) विचार, आत्मा, [जात, प्रकृति]

कंसाल *आरारा. उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. स्थूलिफा.* एक वाद्य-विशेष – कांसीजोडना प्रकारनुं (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांस्यताल, कांस्याल)

कंहीए *चतुचा.* क्यांये, क्यारेय; जुओ कहीइं

का *षडाबा.* कोई (सं.)

काअ *कामा(त्रि).* कोई पण [सं.काऽपि];

काइ *आरारा.* कोई [सं.काऽपि]

काइ *तेरका.* शुं (सं.किम्, अप.काइं), जुओ कांइ

काइ *चित्तसं.* काया, शरीर; *षडाबा.* कायाथी

काइया *षडाबा.* शारीरिक (सं.कायिका)

काइर *प्रबोप्र.* बायलो (सं.कातर)

काइं *गुर्जरा. तेरका.·वीसरा. षडाबा.* केम, शा माटे (सं.कानि; अप.काइं)

काइं *गुर्जरा.* कांई, कंईक; *षडाबा.* कांई, कंई (सं.कानिचित्)

काउसग, काउसग्ग *आरारा. उक्तिर. ऐतिका. देवरा. षडाबा.* कायोत्सर्ग, देहथी पर थवुं ते, एक जैन ध्यानक्रिया

काकडासींगी *उक्तिर.* एक वनस्पति (सं. कर्कटशृंगिका)

काकबउ *षडाबा.* शेरडीनो अर्धो काढेलो रस

काकर, काकरउ, कांकर *अखाका. अंबरा. उक्तिर. विमप्र.* कांकरो (सं.कर्कर)

कार्कीडउ *उक्तिर.* काचंडो (दे.कक्किड)

काकूंबर *उपबा.* वृक्षविशेष, [एक जातनो उंबरो] [सं.काकोदुम्बर]

काख बजाई *जिनरा.* काखली कूटीने, आनंदमां आवीने

कागमुं *प्रेमाका.* *रथ उपर फरकती धजानो दंडो, [*रथनुं अडा आगळनुं लाकडुं]

कागलउ, कागुलउ *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कागडो (सं.काकः)

कागळ चढशे लेखे *प्रेमाका.* भणतर लेखे लागशे, सफळ थशे

काग-वांझ *प्रेमाका.* एक ज वार फळनार वनस्पति [सं.काकवंध्या]

कागिणी **उपबा.* [कोडी, एक मूल्य तरीके] (सं.काकिनी)

कागु *उक्तिर.* कागडो (सं.काक)

कागुलउ जुओ कागलउ

काचकी बाझवी *प्रेमाका.* शोष पडवो, गळुं सुकाई जवुं

काचली *जिनरा.* लाकडानुं नानकडुं पात्र, [नाळियेरनुं भांगेलुं कोचलुं]; जुओ काछली

काचसकल *जिनरा.* काचना टुकडा [सं. काचशकल]

काछ *नलरा.* कच्छ देश

काछ *नरका. प्रेमाका.* कच्छ, कछोटो; जुओ वाच-काछ

काछउ *उक्तिर.* कछोटो (सं.कच्छः)

काछ कछवो *दशस्कं(१).* कच्छो मारवो, [कछोटो बांधवो]

काछड *नलरा.* काछडो, कछोटो (सं.कक्ष +ड)

काछडा (काछडा करवा) **अभिऊ.* [*पेंतरा करवा]

काछबा *उपबा.* काचबा (सं.कच्छप)

काछली *जिनरा.* लाकडानुं नानकडुं पात्र, [भिक्षापात्र]; जुओ काचली

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काछवउ *उक्ति. षडाबा.* काचबो (सं. कच्छप)

काछ वाच निकलंक *जिनरा.* चारित्र्यमां अने वाणीमां निष्कलंक

काछे वेश **अखाका.* [वस्त्र पहेरे]; जुओ काछ कछवो

काज *उपबा. गुर्जरा. देवरा.* कार्य, काम; **उपबा. गुर्जरा.* प्रयोजन, कारण

काजइ *आनंस्त. गुर्जरा. प्रबोप्र.* माटे [सं. कार्ये]

काजउ **षडाबा.* [कचरो, पूंजो] [दि.कज्ज]

काजगरउ **अखाका. उपबा. चित्तसं.* उपयोगी, काममां आवे एवुं, [फायदाकारक] (सं.कार्यकारक)

काजल *हरिवि.* काळी गाय ? [जेनी आंखना चारे बाजुना भाग काळा होय एवी गाय] [हिं.काजरी]

काजळराणी **नरका.* [काजळिया त्रीज, श्रावण वद त्रीज]

काजलवाइ **गुर्जरा.* [काजळभरी] (सं. कज्जल-)

काजळी *नरका. वीसरा.* [काजळिया त्रीज, श्रावण वद त्रीज], एनो उत्सव

काजु *विराप.* कार्य; *षडाबा.* काम; [उपयोग]

काट- *अखाका.* कापवुं; *वीसरा.* (दिवस) निरर्थक पसार करवा (सं.कर्तति) [हिं. काटना]

काट **अखाछ.* [दांतथी कापीने, कटकट करीने]

काटका *गुर्जरा. प्रेमाका.* कडाका, मोटा अवाज

काटयउ *उपबा.* काट लागेलो, [मार मरायेलो, हणायेलो]

काटल *लावल.* वजन करवानां काटलां

काटी *उक्ति.* लोखंडनो काट [दि.कट्ट; रा.]

काट्ठ *कर्पूमं.* लाकडुं (सं.काष्ठ)

काठ *उक्ति. मदमो. वीसरा.* लाकडुं

काठउ *उक्ति. जिनरा. नेमिछं.* कठोर, पाकुं, मजबूत [सं.कष्ट]

काठ खावुं, काष्ट मुख देवुं, काष्ट लेवुं *पंचवा.* चितामां प्रवेशी बळी मरवुं

काठिमी, कांठिमी *उषाह.* काष्ठमय, [लाकडानी]; काष्ठनुं बळतण

काठिया, काठीआ, काठीया *उक्ति.* **गुर्जरा. प्राचीफा. लावल.* जे कारणोथी जीव हितकारी ज्ञान प्राप्त न करी शके ते आळस वगेरे तत्त्वो (जै.) (सं. *कष्टिक)

काठीहारउ *उक्ति.* कठियारो (सं.काष्ठहारकः)

काढउ *वीसरा.* काढो, उकाळो (सं.क्वाथ)

काण *आरारा. जिनरा.* **हरिख्या.* संकोच, शरम (रा.); **अखाका.* [संकोच] जुओ काणि

काणण *गुर्जरा.* कानन, जंगल

काणि, काणी, कांणी **अंबरा. आरारा. प्रद्युचु.* **प्राचीसं. हरिवि.* शरम, संकोच (रा.); **कर्पूमं.* [संकोच, खटक, शल्य]; **नलाख्या.* [संकोच, खटक, वसवसो] **प्राचीका.* [कष्ट] [हिं.कानि]; **वीसरा.* [संकोच, कुलमर्यादा, लोकलज्जा; कष्ट,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दु:ख]; *गुर्जरा. [संकोच, खटक, वसवसो]; सम्यचो. खोट, हानि; जुओ काण, कुलकाणि, मुहकाणि

काणीकथा चतुचा. कहाणीकथा

काणेतर मोसाच. विचित्र दृश्य ?, [*कौतुकभर्यो बनाव, *विघ्नरूप घटना]

काततउ उक्तिर. षडाबा. कांततो (सं.कृत्)

कातरणी उक्तिर. ऋषिरा. कातर (सं.कर्तरी)

कातरि उक्तिर. कातर (सं.कर्तरी)

कातरो अखाछ. केळांनी लूम

कातळो अखाका. कातरो, केळांनी लूम

कातिग वीसरा. कारतक (सं.कार्तिक)

काती उक्तिर्. प्रद्युचु. कारतक (सं.कार्तिक)

काती अखाका्. कामा(त्रि). प्रेमाका. छरी [सं.कर्तकी]

कातुं प्रेमाका. मोटी छरी [सं.कर्तक]

काथ नेमिछं. वीसरा. [पानमां वपरातो] काथो[सं.क्वाथ]

कादम उक्तिर. प्राचीफा. षडाबा. षष्टिप्र. कादव (सं.कर्दम)

कादी हम्मीप्र. काजी, इस्लामी विद्वान (फा.)

कान आणेश जुओ आणेश कान

कानडे लावल. कानमां [सं.कर्ण]

***काानन** पंचवा. काननां

काना लगी प्रेमाका. [वासणनी] उपरनी किनारी – टोच् – [धार] सुधी

कानिथी कादं(शा). कनेथी, पासेथी (सं. कर्णे)

कानी उक्तिर. [*कमलनो बीजकोश, *फळनी डांखळी] [सं.कर्णिका]

कान्ह गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा. कृष्ण

कान्हअडा लावल. कृष्ण

कान्हइ प्राचीसं. समीपे, कने [सं.कर्णे]

कान्हजी उषाह. कृष्ण

कान्हड प्राचीफा. कृष्ण

काप उक्तिर. प्रक्षालन, धोवुं ते (सं.कल्प)

कापड षडाबा. कपडां, वस्त्र (सं.कर्पट)

कापडी उक्तिर. कामा(त्रि). कामा(शा). *गुर्जरा. नलरा. विक्ररा. विमप्र. सिंहा(म). साधु, तापस (सं.कार्पटिक)

कापुरिस ऐतिरा. कायर पुरुष [सं.कापुरुष]

काबरउ षडाबा. काबरचीतरो, विविधरंगी [सं.कर्बुर]

काम वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). कामदेव

काम, कामइ आरारा. कामे, काजे, माटे, अर्थे

कामकुंभोपम ऐतिका. कामकुंभ[इच्छित वस्तु आपनार कुंभनी समान]नी समान [सं.]

कामगवी ऐतिका. जिनरा. कामधेनु

कामण जिनरा. कामिनी

कामणगारिउ नलरा. कामण करनार, कामणगारो (सं.कार्मणकारक)

कामणि, कामणी आरारा. वीसरा. कामिनी

कामणियां नरका. कामण [सं.कार्मण]

कामणी नरका. कामण कर्युं, वश करी

कामणी जुओ कामणि

कामदुघा अखाका. कामधेनु, [इच्छित वस्तु आपनारी गाय] [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामदुरघा *दशस्कं(२). मदमो.* इच्छित वस्तुओ आपनारी गाय, कामधेनु (सं. कामदुघा)

कामदुर्गा *प्रेमाका.* इच्छित वस्तुओ आपनारी गाय, कामधेनु (सं.कामदुघा)

कामना क्रोड *प्रेमाका.* [जाणे] करोडो कामदेव

कामाक्षा *नलरा. नलरा.* कामाख्या देवीनुं पीठ ज्यां आवेलुं छे एवो प्रदेश, कामरूप अर्थात् आसाम

कामासण *शीलक.* कामशास्त्रमां वर्णवायेलां आसन

कामालय **गुर्जरा.* [कामदेवनुं मंदिर]

कामिणि *गुर्जरा. विराप.* कामिनी, स्त्री

कामिय *तेरका.* कामी, [प्रेमी]

कामिय *गुर्जरा.* अभिलाषावाळुं, [अभिलाषाओनुं]

कामी *अखाका.* कामनावाळो, इच्छावाळो

कामीक *नलाख्या.* काम्यक वन

कामीय *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कामीजन, प्रेमीजन

कामु, कांमु *गुर्जरा.* इच्छा; कामभाव, रतिभाव; कामदेव

कामुक *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कामीजन, प्रेमीजन

कामुरडां *प्रेमाका.* बाळको, नानां छोकरां

काम्य *आनंस्त.* इच्छित, [इष्ट, प्रिय, मनगमता]

काम्यउ **ऐतिरा.* [इच्छ्युं, कामना करी]

काय *गुर्जरा.* कांई (सं.कानिचित्)

कायउ *वीसरा.* शो, केवो (सं.किम् परथी ?)

काया *हरिख्या.* जात

कायाकल्प *अखाका.* शरीरनुं रूपांतर, [औषधिओनाउपयोगथीजर्जरितशरीरने नवुं बनाववुं ते, एक सिद्धि] [सं.]

कायि *प्रबोप्र.* काजे, माटे (सं.कार्यै)

कायोच्छर्ग *आरारा.* देहथी पर थवुं ते, एक प्रकारनी जैन ध्यानक्रिया; जुओ काउसग्ग

कार **कस्तुवा. देवरा. प्रेमाका. मदमो. *शीलक.* वक्कर, शाख, आबरू, [कुलवट]

कार *नलरा.* एक प्रदेश (सं.कारा)

कारग *तेरका.* करनारुं (सं.कारक)

कारग **जिनरा.* [शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया [प्रा.]

कारज *अखाका. अखाछ. देवरा. नरका. प्रेमाका.* कार्य, काम, [प्रयोजन]

कारज्य *चित्तसं.* कार्य

कारज्यवादी *चित्तसं.* कार्यवादी, परिणामवादी

कारटउ *उक्ति्र.* कायटुं, मरनारना अगियारमा दिवसे करवामां आवती क्रिया के जमण

कारटियो *उक्ति्र. प्रद्युचु.* कायटियो, मरनारना अगियारमाने दिवसे करवामां आवती क्रिया करावनार ब्राह्मण, [हलको ब्राह्मण] (सं.करट; दे.करट्ट)

कारण *कामा(त्रि).* [न बनवा जेवुं], अकस्मात, उपाधि, संकट; *कृष्णबा.* चमत्कार; *दशस्कं(२).* चमत्कारी, [दिव्य]

कारण (कारणरूप) **कामा(त्रि).* [चमत्कारी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिव्य]; जुओ कारणरूप

कारण-अवतार *नरका.* चमत्कारी [दिव्य] अवतार

कारणइ *आरारा.* माटे, तरफ, उपर, -ने; उपायथी

कारणपणइं *उपबा.* कारण तरीके, कारण रूपे

कारणरूप *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अगम्य शक्ति के परचो धरावनार, चमत्कारी, [दैवी, अद्‌भुत]

कारमुक *नरका.* ओचिंतुं

कारमुं *आरारा. वेताप.* कृत्रिम, बनावटी (दे.कारिम); *मदमो.* अद्‌भुत; *प्रेमाका.* *अजुगतुं, [असाधारण, अद्‌भुत]; नवाईभर्युं, [आश्चर्यचकित]; [कोमळ, निर्बळ] *नरका.* [कारमुंक], ओचिंतुं; *देवरा. [खोटुं, मिथ्या]; जुओ कारिमउं

कारमोक *नरका.* ओचिंतो

कारयं *प्रेमाका.* आकारनां

कारवइ *ऐतिका.* करावे

काराग्रेह *प्रेमाका.* कारागृह, केदखानुं

काराभवन *प्रेमका.* कारागृह, केदखानुं

कारिम *आरारा.* अद्‌भुत [दे.]

कारिमउं *चारफा. जिनरा. *नलरा. *लावल. *सिंहा(म).* व्यर्थ, खोटुं, [मिथ्या]; *आरारा. कर्पूमं.* कृत्रिम, बनावटी; *सिंहा(शा).* अद्‌भुत (दे.कारिम); *प्राचीसं. [निर्बळ, नश्वर]; जुओ कारमुं

कारिय *तेरका.* कराव्युं (सं.कारित)

कारी *आरारा.* करावीने

कारी *प्रेमाका.* कारमां, भयंकर

कारीय *वसंफा.* करवामां आवी, [करीने, करावीने]

कारीया **हम्मीप्र.* [करनार] [सं.कार]

कारु, कारू *उक्तिर. नलरा. विक्ररा. विमप्र.* गांछा, छीपा, लुहार, मोची, दरजी ए पांच कारीगरजाति (सं.)

कारुण्ण **ऋषिरा.* [करुण, शोकभर्युं]

कारू जुओ कारु

कार्तस्वर *ऐतिका.* सुवर्ण [सं.]

काल *लावल.* *काळ, *विनाश, [*विलंब, *आवती काल]

कालक, काळक *वेताप.* काळप; *अखाछ.* काळप, कलंक; जुओ कालीक

कालट, काळट *दशस्कं(१). प्रेमाका.* काळप, काळाश; जुओ कालिटि

कालपराण *ऋषिरा.* काळबळ, [कालदेवता – यमदेवनुं सामर्थ्य] (सं.कालप्राण)

काळभाथी *प्रेमाका.* काळ जेवो योद्धो

कालभुयंगम *ऋषिरा.* काळरूपी सर्प, [मृत्युदेवरूपी सर्प] (सं.कालभुजंगम)

कालमुहउ **उपबा. *गुर्जरा.* [काळा पडी गयेला मुखवाळुं, शोकमग्न, निराश] (सं.कालमुखक)

कालवन *आरारा.* काळा वर्णनुं

कालंद्री *प्रेमाका.* कालिंदी, यमुना नदी

काला *प्रेमाका.* अणसमजु, [भोळा, लाडका, प्रेमभीना] [सं.कल्य]

कालाखरिउ *उक्तिर.* धीमेथी अक्षर शीखनार, वांचतां शीखवानुं शरू ज कर्युं होय तेवो (सं.कालाक्षरिक)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालाग्रह, कालाग्रेह *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* कारागृह

कालानी कच **अखाका.* [*काला – अणसमजुनो निरर्थक बबडाट]

कालाभोवन *दशस्कं(१).* काराभवन, कारागृह

कालिज *उक्तिर. वसंवि.* काळजुं (सं. कालेय)

कालिटि *अंबरा.* काळाश; जुओ कालट

कालियु *उक्तिर.* सारस; बगलो (सं. कालिकः); क्रौंच पक्षी (हिं.)

कालिंद्री *दशस्कं(१).* कालिंदी, यमुना

काली *मदमो.* कालिदास [कवि]

काळी *प्रेमाका.* कोयल

कालीउं *नलरा.* स्त्रीनो एक अलंकार, [काळा पारानी कंठी]

कालीक *वेताप.* काळप; जुओ कालक

कालीरोली *मदमो.* रोळीकोळी, सांजनी (वेळा)

कालुंबरि *आरारा(व).* एक करियाणुं; काळो उंबरो, घुरडो (सं.काकोदुम्बर) ?

कालूनूं *उक्तिर.* कालनुं, गई काल साथे संबंध धरावतुं (सं.कल्यतनम्); जुओ काल्हनउं, काल्हूणउं

कालेयक *षडाबा.* काळजुं (सं.)

काल्यु (?) *नलाख्या.* काळो

काल्हनउं *उक्तिर.* कालनुं, गई कालने लगतुं (सं.कल्यतन); जुओ कालूनुं

काल्हा *जिनरा.* कालो, भोळो, अज्ञानी [*दे.काहल]

काल्हि, काल्हे *उक्तिर. वीसरा. षडाबा.* काले (सं.कल्ये)

काल्हूणउं *उक्तिर.* कालनुं, गई काल साथे संबंध धरावतुं (सं.कल्यतनम्); जुओ कालूनूं

काल्हे *वीसरा.* जुओ काल्हि

काल्हे वाल्हे **जिनरा.* [कालावाला करीने]

कावडि *उक्तिर.* कावड [दे.]

कावडीया *ऋषिरा.* कपटकरनारा, [मायावी] (सं.कार्पटिक)

कावजि *उक्तिर.* [?] (सं.कायाटनी, कायावालिनी वा)

का वलि *जिनरा.* कोण वळी

कावली *प्राचीफा.* बंगडी, चूडी

काश्मीरमुद्रा *ऋषिरा.* केसरनी कानसळा, [योगीओनुं एक आभूषण]

काषांबर *प्रेमाका.* भगवां वस्त्र [सं. कषायांबर]; जुओ कखांबर

काष्ट *गुर्जरा. विराप.* काष्ठ, लाकडुं

काष्ट मुख देवुं, काष्ट लेवुं जुओ काठ खावुं

काष्ठा *उक्तिर.* अवधि, छेल्ली हद (सं.)

कास *विमप्र.* नानी नहेर, [नीक]

कासग *गुर्जरा. नलरा. प्राचीसं.* एक प्रकारनी जैन ध्यानक्रिया (सं.कायोत्सर्ग); जुओ काउसग

कासडली *नरका.* कासळ, नडतर, पीडा

कासर *नलरा.* जंगली पाडो (सं.)

कासळ *अखाका. अखाछ.* आडखीली, [नडतर, पीडारूप वस्तु] [सं.काश];

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ कांसलि

कासंधरउ *आरारा(व).* कासूंदरो (सं. काशमर्द); जुओ कासुंदउ

कासी *आरारा.* कांसी, एक वाद्य

कासुंदउ *उक्तिर.* कासूंदरो, एक वनस्पति (सं.काशमर्द); जुओ कांसधरउ]

कासूं *आनंत.* केम, शा माटे

काहणी *विक्ररा.* [कहाणी], कथनी [सं. कथा परथी]

काहरिं *अभिऊ.* क्यारे

काहल, काहली *गुर्जरा.* [ढोल के भेरीना प्रकारनुं] एक वाद्य (सं.); जुओ रणकाहल

काहला *आरारा.* काला, घेला

काहली जुओ काहल

काहवानूं(?) **नलाख्या.* [*कंटाळावाळुं, *श्रमित, *दुःखी]

काहाणी *नलाख्या.* कथनी (सं.कथनिका)

काहाली **ऋषिरा. कादं(शा).* ढोल के भेरीना प्रकारनुं वाद्य (सं.काहल)

काहावी *नलाख्या.* कहेवडावीने (सं. *कथापय्)

काहू *आरारा.* कोईने

काह्यरपणुं *मदमो.* कायरपणुं [सं.कातर-]

कां *गुर्जरा. नरप(द). नलाख्या. नेमिछं. लावल. विराप.* केम, शा माटे

कांइ *ऋषिरा.* कयां (सं.क्व)

कांई *उक्तिर. उपबा. कादं(शा). लावल. वीसरा.* केम, शा माटे (सं.किम् परथी); जुओ काइ

कांइजइ जुओ जइ

कांकडु *प्रेमाका.* [कांगडु], चड्या वगरनो, करडु, [दे.कंकडुअ]

कांकण *उपबा.* कंकण, बंगडी

कांकणिया *नरका.* हाथना कांडे पहेरवानां आभूषण, कांगरावाळी चूडी

कांकणी *मदमो.* कंकण

कांकर जुओ काकर

कांकसी *उक्तिर.* कांसकी [दे.कंकसी]

कांकसीआ **विमप्र.* [एक वनस्पति, कांकचियो]

कांकिमपणउं *नलरा.* हांकी काढवानी प्रवृत्ति

कांकोल *नरका.* कांटावाळी एक वनस्पति [सं.कंकोल]; जुओ कंटेलइ

कांगउ *उक्तिर.* कांग, एक हलकुं धान्य [सं.कंगु]

कांगवा **नरका. *प्रेमाका.* [एक हलकुं धान्य]

कांगुण *षडाबा.* एक वेल, [मालकांगण]

कांचलडी, कांचू *लावल. हरिवि.* कांचळी, स्त्रीओनुं छाती उपर पहेरवानुं वस्त्र, कापडुं [सं.कंचुलिका]

कांठलि *जिनरा.* कंठमां, गळामां

कांठिमी जुओ काठिमी

कांडी *उक्तिर.* [*एक वनस्पति, *तणखलुं, *सळी] (सं.काण्डी)

कांणि जुओ काणि

कांत *चतुचा.* कान्ति, प्रकाश

कांतिमत्ता *वाग्भबा.* कान्तिमत्व, [कांतिमय होवुं ते]

कांत्य *अखाका.* कांति, शोभा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांत्युं थाय कपास *अखाका.* *हतुं तेवुं थाय, [करेलो श्रम एळे जाय]

कांदमी जाइ *आरारा(व).* जाईनी कोई जात (सं.कर्दमी जाति ?)

कांदे *वाग्भवा.* कंद [एक वनस्पति, जंगली कांदो] वडे

कांपे *प्रेमाका.* कादव के कीचड वडे

कांब *चतुचा. नरका. प्राचीफा.* छडी, सोटी (सं.कम्बि)

कांबडी *उक्तिर.* छडी, सोटी (सं.कंबि)

कांबी *उक्तिर.* सोटी, छडी (सं.कम्बिः); *नरका.* स्त्रीना पगनुं घरेणुं

कांबु *नेमिछं.* कांब, छडी (सं.कम्बा)

कांम *कामा(त्रि).* कामदेव; *मदमो.* कामिनी

कांमकोट **कामा(शा).* [कोटि – करोडो कामदेव समान]

कांमु जुओ कामु

कांम्य *मदमो.* कामिनी, स्त्री

कांम्यी *मदमो.* कामी

कांस *गुर्जरा.* कंस

कांसलि *आनंस्त.* खटक, वसवसो; जुओ कासळ

कांसीवाजउ *उक्तिर.* कांसीजोड, झांझ (सं. कांस्यवाद्यम्)

कांहनासोरी *ऐतिरा.* छानी वात कानमां कहेवी ते, [कानफूसी]

कांहां *प्रेमाका.* क्यां, केम, शा माटे; *नलाख्या.* क्यां, कये स्थळे (सं.कस्मात्)

कि **वसंफा. *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* जाणे के, जाणे, जेवुं के; *कादं(शा). गुर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. षडाबा.* के, अथवा (सं.किम्); *तेरका. वीसरा.* शुं (सं.किम्)

किअ **नेमिछं.* ['सारुं', 'खरे' जेवो उद्गार]

किइ *आरारा.* कां, अथवा; *आरारा.* जाणे के

किउ, कीउ *आरारा. प्रबोप्र. विमप्र.* कर्यो (सं.कृत+क)

किउ, किउं, क्युउं, क्युं *वीसरा.* केम, शा माटे, केवी रीते (सं.किम्+एवम्)

किछउं *प्राचीसं.* केवुं, शानुं (सं.कीदृक्षकम्)

किडउ *उक्तिर.* चटाई (सं.कटः)

किण *आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. लावल. वीसरा. षडाबा.* कयुं, केवुं, कोण, कोई (सं.केन परथी)

किणइ जुओ तिहां किणइ

किण गानइ *आरारा.* कई विसातमां; जुओ केणइ गान, गाने

किण परि *आरारा.* केवी रीते, कोई रीते, गमे तेम

किण मेलि *आरारा.* कोई मेळथी, कोई संयोगथी

कित्ति *ऐतिका.* कीर्ति

किन्न *ऐतिका.* कृष्ण

किन्नरकंठि, किंनरकंठि *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* किन्नर [एक देवकल्प योनि]ना जेवा मधुर कंठवाळी स्त्री

किम, कीम *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नलाख्या. पंचवा. लावल. वीसरा. षडाबा.* केम, शा माटे; केवी रीते

किमइ *आनंस्त. कादं(शा). *गुर्जरा. तेरका.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केमेय, मुश्केलीए (सं.कथमपि) [अप.]; *उक्ति. नरका. नेमिछं.* केमे, कोई पण रीते; *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* केमेय, कोई पण रीते, मुश्केलीए

किमइय, किमए *गुर्जरा.* मुश्केलीए पण; कोई पण रीते

किमकिम *उपबा.* केवीकेवी रीते, कईकई रीते

किमहि, किमही *आनंस्त. कादं(शा).* केमेय (सं.कथम्+हि परथी)

किमाड *वीसरा-अनु.* कमाड, बारणुं (सं. कपाट)

किम्हइ *उक्ति.* केमे, कोई पण रीते (सं. कथमपि)

किय *तेरका. लावल.* कर्युं (सं.कृत)

कियउ, कीयउ *उक्ति. नरका. लावल. वीसरा.* कर्यो (सं.कृत)

कियय *तेरका.* कर्युं (सं.कृत+क)

किया *आरारा.* क्रिया

किया *प्रबोप्र. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कर्या (सं.कृत)

कियारइ **विमप्र.* [*कोई वार]

किर, किरि *उक्ति. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा.* खरेखर, समजो के, मानो के, जाणे के (सं.किल); जुओ किरि

किरगिरइ *उक्ति.* कचकच करे, ककळाट करे; जुओ करगर

किरडा *नलाख्या.* केरडानो छोड (सं.करीर)

किरणी *अखाका. अखेगी.* सूर्य (सं.)

किरतारथ *देवरा.* कृतार्थ

किरवाण *वीसरा.* किरपाण, तरवार (सं. कृपाण)

किराण *प्राचीसं.* करियाणुं (सं.क्रयानक)

किरातउ *उक्ति.* करियातानो छोड (सं. किरातः)

किरि *उक्ति. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाग्भबा. षडाबा.* खरेखर, जाणे के (सं. किल); जुओ किर

किरिया *आरारा.* क्रिया

किरुण *प्राचीफा.* करुण

किलकइ *प्रद्युचु.* किलकारी, करे [सं. किलकिल परथी; रा.]

किलबिलाटु *विराप.* किलकिलाट, [कलबलाट, शोर] (सं.किलकिल परथी)

किलामण *जिनरा.* कष्ट, [थाक, खेद] [सं. क्लमना]

किलिट्ठु ०*ऐतिका.* क्लिष्ट

किलूषीउ, किल्विषीआ *उपबा.* [चांडाळना प्रकारनां हलकां कार्यो करनार एक देवजाति] [जै.] (सं.किल्विष)

किलेश *आनंस्त.* क्लेश

किलेस *आरारा.* क्लेश

किलोळ *वीसरा.* किल्लोल, आनंदप्रमोद

किल्मिष, कीलमीश *अखाका. दशस्कं(१).* पाप (सं.)

किल्विषीआ जुओ किलूषीउ

किव *गुर्जरा.* कृपाचार्य, पांडवोना गुरु

किवहर *गुर्जरा.* कृपाचार्यनुं घर (सं.कृपगृह)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किवाड *प्राचीसं.* कमाड (सं.कपाट)

किवाडी *उक्तिर.* कमाड, झांपली (सं. कपाटिका)

किवाण *ऐतिका.* कृपाण, [तलवार]

कि वार *आरारा.* क्यारेय [सं.किं वारम्]

किवारइं *उपबा. *नेमिछं.* क्यारेय, कोई वार (सं.किं वारम्)

किवाहरइं **वाग्भवा.* [क्यारेक]

किवि *गुर्जरा.* केटलांक (सं.केऽपि)

किव्हारि *अंबरा.* क्यारे, [कोई वार, थोडी वार] [सं.कस्मिन् वारे]

किशइ *प्रबोप्र.* केवी रीते (सं.कीदृश)

किशल **वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* किसलय, कूंपळ

किशलकृपाण *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कूंपळ-रूपी तरवार

किशलसंतान **वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कूंपळोनी हार

किशलय **वसंफा.* [कूंपळ]

किशलयकोमल *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कूंपळ जेवुं कूणुं

किशा *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* शा माटे; *अखाका. कादं(शा). नरका. नलाख्या.* केवा, शा (सं.कीदृश)

किशूं *वाग्भवा.* शुं (प्रश्नार्थक)

किशोर *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* युवान (सं.)

किसउं *आनंस्त. उक्तिर. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* शुं, केवुं, केटलुं, कशुं, केम (सं. कीदृश)

किसण *ऐतिका. जिनरा.* कृष्ण पक्ष

किसल *वसंवि(ब्रा).* कूंपळ

किसलय **वसंफा.* [कूंपळ] [सं.]

किसले *अखाका.* किसलय, कूंपळ

किसा *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* शा माटे

किसानउं *आरारा.* कशानी

किसिइं *नेमिछं.* शाथी (सं.कीदृश परथी)

किसिउं *आरारा. उपबा. नेमिछं. लावल. वाग्भवा.* केवुं, शुं, कयुं, कंई (सं. कीदृश)

किसोयरी *प्राचीफा.* पातळी कमरवाळी (सं. कृशोदरी)

किसोर *हम्मीप्र.* *वछेरो, [घोडानी एक जात, किसोयरा] [*सं.कृशोदर]

किसोर *तेरका.* किशोर, बच्चुं

किस्युं *ऋषिरा. नरका. लावल. वसंफा. वसंवि.* केवुं, शुं, केम (सं.कीदृश)

किस्योई *आनंस्त.* कशोय

किह, किहइं, कीहं *आरारा. *ऐतिरा. गुर्जरा.* क्यां, क्यांय (सं.कस्मिन्)

किहाडा *अभिऊ.* एक जातना घोडा

किहारि, किहारे, किहिवारि *कादं(शा). नलाख्या.* क्यारे (सं.कस्मिन् वारे)

किहां, कीहां *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. लावल. वीसरा. षडाबा.* क्यां (सं.कस्मात्)

किहांइं *गुर्जरा.* क्यांय

किहांतउ *उपबा. वाग्भवा.* क्यांथी

किहां हूतउ *उक्तिर.* क्यांथी, कये स्थळेथी

किहि *कादं(शा). गुर्जरा.* क्यांय(सं.कस्मिन्)

किहि *प्रबोप्र.* कहे (सं.कथय्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किहिण *नलाख्या.* कहेण, [कहेती, लोक-प्रसिद्ध कथनी] (सं.कथनी)

किहिवारि जुओ किहारि

किहिं *गुर्जरा.* क्यांय

किही *गुर्जरा.* कोई [सं.कति, प्रा.कइ परथी]

किही *नलाख्या.* *क्यांय, *कोई स्थळे,[क्यां]

किहीं *कादं(शा). नलाख्या.* क्यां, कये स्थळे, क्यांक (सं.कस्मिन्)

किहु *उषाह.* (सं.कीदृश)

किहो *नरका.* कयो, शो [सं.कीदृश]

किह्यां *गुर्जरा.* [क्यां] (सं.कस्मात्)

किं *प्रेमाका.* तेथी शुं, [शुं थयुं जो]

किंकणी *प्रेमाका.* झीणी घूघरी [सं. किंकिणी]

किंकिणि, किंकिणी *तेरका. नरका.* घूघरी, नानी घंटडी [सं.]

किंगाई *ऋषिरा.* केकारव करे [सं.केकायते]

किंचूण *षडाबा.* थोडुंक ओछुं, [लगभग पूरुं] (सं.किंचित्+ऊनम्)

किंनर, कीनर *कामा(शा). नेमिछं.* एक देवकल्प योनि, [व्यंतरदेवनी एक जाति] [सं.]

किंनरकंठि जुओ किन्नरकंठि

किंनरय *तेरका.* किन्नर, [व्यंतरदेवनो एक प्रकार] (सं.किन्नरक)

किंपि *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं.* *विराप. कंई पण (सं.किमपि)

किंबा *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* पण, तोपण; अथवा; शुं थयुं जो, तेथी शुं, छोने (सं.)

की *पंचवा.* केवी रीते (सं.कथं)

की *पंचवा.* क्यां (सं.कुत्र)

की *नरका.* केवी, शी; *वीसरा.* शुं (प्रश्नार्थक) (सं.किम्)

कीउ जुओ किउ

कीकर *मदमो.* किंकर

कीकीयउ *जिनरा.* कीकलो, बाळक

कीगरी *कामा(शा).* सारंगी [सं.किंनरी]; जुओ कीनरी

कीच *अखाका.* कीचड, कादव

कीजइ *आनंस्त. उपबा.* कराय, करवामां आवे [सं.क्रियते]

कीजउ *उक्तिर. तेरका.* करायुं

कीजतउं *उक्तिर. षडाबा.* करातुं (सं.क्रियमाणम्)

कीजिसिइ *उक्तिर.* कराशे

कीटउं *षडाबा.* कीटुं, घीमां जमा थतो मेल (सं.किट्टम्)

कीटिका *षडाबा.* कीडी (सं.)

कीटी *उक्तिर.* रूमां वळगेलुं कस्तर के तेल-घीनुं कीटुं (सं.किट्टिका)

कीडीउं *नलरा.* नानो काचनो मणको, [एनो लगीनो] (दे.चीड)

कीडी-नगरां *आरारा.* कीडियारां, कीडीनां दर

कीड्य *वेताप.* खजवाळ, चळ

कीणइ *उपबा.* कोनाथी (सं.केन)

कीध, कीधउं *आनंस्त. उपबा. ऋषिरा. नलाख्या. लावल. वीसरा. षडाबा.* कर्युं (सं.कृतम्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीन आरारा. कर्युं, कीधुं, प्रवर्ताव्युं (रा.)
कीनर जुओ किंनर
कीनरी, कींगरी *कामा(त्रि).* सारंगी [सं. किंनरी]; जुओ कीगरी
कीम जुओ किम
कीयउ जुओ कियउ
कीर *अखाका. कामा(त्रि).* पोपट (सं.)
कीर *प्रद्युचु.* देशविशेष, [काश्मीर] (सं.)
कीर-आनन *प्रेमाका.* पोपटनी चांच
कीरत *नरप(द).* कीर्तन, [भक्तिगान]
कीरत *अखाका. कामा(शा).* कीर्ति
कीरत्य *अखेगी.* कीर्ति
कीरपी *वेताप. सिंहा(शा).* कृपण
कीर्त्तइ *उक्तिर. षडाबा.* स्तुति करे, यश गाय (सं.कीर्तयति)
कीलइ **ऐतिका.* [डामर वडे]
कीलमीश जुओ किल्मिष
कीव *गुर्जरा.* पावैयो (सं.क्लीव)
कीवाचारु *गुर्जरा.* पावैयाओनो आचार्य (सं.क्लीवाचार्य)
कीसी *गुर्जरा.* कोई पण (सं.कीदृशानि)
कीहं जुओ किह
कीहा *चतुचा. प्रेमाका.* कयां [सं.कीदृश]
कीहा *पंचवा.* क्यां (सं.कस्मात्)
कीहां जुओ किहां
कीहि *कादं(शा).* कये
कीहु *रूस्तस.* कयुं
कीहूं *कादं(ध्रु). कादं(शा).* कयुं
कीहे **अखाछ. दशस्कं(१). प्रेमाका.* कये; कया
कीहो *प्रेमाका.* कयो
कींगरी जुओ कीनरी
कींगाइ, कींगायइ *उक्तिर. शृंगामं.* केकारव करे (सं.केकायते)
कु *नेमिछं.* कोई, कोईक; *गुर्जरा. तेरका.* कोण (सं.कः); जुओ कु जि
कुई *उषाह. तेरका.* कोई (सं.कोऽपि)
कुउ, कुयु, कूउ *आरारा. उक्तिर. वाग्भवा.* कूवो (सं.कूप)
कुउण *षष्टिप्र.* कोण (सं.कः पुनः)
कुएक *नलाख्या.* कोईएक, कोक (सं.कोऽपि एकः)
कुकतु *वाग्भवा.* ग्रहण करतो, लेतो, [उच्चार करतो] [*सं.कु; प्रा.कुक्क]; जुओ कूकइ
कुगला *आरारा. कादं(शा).* कोगळा
कुग्गह *ऐतिका.* कुग्रह, दुष्ट ग्रह
कुघाट *उक्तिर.* [?] (सं.)
कुच *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* स्तन (सं.)
कुचभर **वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* स्तननी परिपूर्णता, [पुष्टता] (सं.)
कुचभरभार *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* स्तननी पुष्टतानो भार (सं.)
कुचेल *उक्तिर.* एक वनस्पति, काळी पाठ (सं.कुचेला)
कुच्छि *ऐतिका.* कुक्षि, कूख
कुच्छित, कुछित, कुछित्र *उक्तिर.* निंद्य, नीच, गंदो (सं.कुत्सितः); *नलाख्या. नलरा.* *निंद्य, [गंदुं, कद्रूप, मेलुं]
कुछनउ *वीसरा.* फूवड, [हलका] [सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुत्स परथी]

कुछोभी *मदमो.* निर्लज्ज ?, [*कलंकिनी, *दुष्ट]

कुजकोइ *जिनरा.* हरएक, सर्व

***कुजर [कुंजर]** *कामा(त्रि).* हाथी

कु जि *उक्तिर.* [*कोई ज, *कंई ज]; जुओ कु

कुटकई *षष्टिप्र.* टुकडो पण

कुटम *देवरा.* कुटुंब

कुटल *आरारा.* कुटिल, कपटी

कुटंब *गुर्जरा.* कुटुंब

कुटी *ऋषिरा.* कुटणी, वेश्यानी दलाली करनार स्त्री (सं.कुट्टिनी)

कुटीरडउ **गुर्जरा.* **विरापं.* [एक छोड] [सं. कुटीर]

कुटुंबी *षडाबा.* कुटुंबवाळो, गृहस्थ

कुटो *मदमो.* भंगार [सं.कुट्ट-]

कुट्टि *उक्तिर.* कोंटियो, खूंधो (*सं.कुट्टी)

कुट्टिम *कादं(शा).* फरसबंधी (जमीन) (सं.)

कुठ *आरारा(व).* कोठी, कोठुं (सं.कपित्थ)

कुडंबउ *आरारा.* कुटुंब

कुडा *तेरका. वाग्भबा.* कुटज, वृक्षविशेष

कुडि *प्राचीसं.* शरीर (सं.कुटि)

कुडि *नलरा.* कोडी, शंखलुं (सं.कपर्दिका)

कुड़ी (कूडी) *उक्तिर.* चामडानी कुप्पी (*सं. कुतूः); जुओ कूडी

कुडीरउं *प्राचीसं.* कुटीर, झूंपडी

कुडुछी *षडाबा.* कडछी [दि.कडच्छु]

कुडुं *ऐतिका. देवरा.* मिथ्या, खोटी; जुओ कूडुं

कुडुंबउ *गुर्जरा.* कुटुंब

कुडुंबी *उक्तिर.* कुटुंबी, [*कणबी]

कुड्मल *कादं(शा).* कूंपळ (सं.)

कुढार *दशस्कं(२).* कुहाडो [सं.कुठार]

कुढि *उक्तिर.* कोढियो, कोढवाळो (सं. कुष्ठी)

कुण, कुंण, कूण, कूंण *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलाख्या. लावल. वाग्भबा. वीसरा.* कया, कोण, कोई (सं. कः पुनः)

कुणइ **षडाबा.* [कोणे] (सं.कः पुनः)

कुणउं *आरारा.* कूणुं, निर्बळ

कुणएक *उपबा.* कोईएक, कोईक

कुणओ *चारफा.* [बाळक], अधूरो, [काचो] (दि.कूणिअ?) [सं.कुणक]

कुणप *ऋषिरा.* मडदुं (सं.)

कुणबी *सिंहा(म).* खेडूत (सं.कुटुंबी)

कुणबु *आरारा. गुर्जरा.* कुटुंब

कुणहइ, कुणहि *गुर्जरा. वाग्भबा.* कोई पण, कोईक

कुणंति *ऐतिका.* कहे, [गणगणे] [सं.कुण्]

कुणिकि *कादं(शा).* कोईके (सं.कः पुनः)

कुणे *मदमो.* खूणे [सं.कोण]

कुणेक **नलाख्या.* [कोईएक, कोईक]

कुण्डी *उक्तिर.* कमंडळ (सं.)

कुतकुं, कुतको *सिंहा(शा).* दंडूको; दस्तो (फा.कुल्कः)

कुतगि *नेमिछं.* आश्चर्यथी, [कुतूहलथी], [विनोदमां] (सं.कौतुक); जुओ कउतिग

कुतबी *हम्मीप्र.* कुत्बुद्दीने पडावेली (महोर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुतिक, कुतिग *कर्पूमं. विक्ररा. शीलक.* कुतूहल, इंतेजारी; *आरारा. विक्ररा. सिंहा(म).* नवाई, [नवाईभरी घटना – बाबत]; *गुर्जरा. नलरा.* कौतुक, [गम्मत, विनोद]; *नेमिछं.* आश्चर्य, [मनोरंजन]; *नेमिछं.* *आश्चर्यकारक हावभाव [विनोदात्मक चेष्टा]; *गुर्जरा. विराप.* कौतुक, इच्छा, [उमंग]; *प्रद्युचु.* [तमाशो]; जुओ कउतिग

कुतिगीउ *उक्तिर. विमप्र. हम्मीप्र.* कौतुकयुक्त, [कुतूहलवाळो] (सं. कौतुकिकः)

कुतूहल *सम्यचो.* कौतुक, गम्मत, [विनोद, कल्पनाविलास, मनोरंजन] [सं.]

कुतोहल, कुतोहळ *कादं(शा).* कौतुक, [उत्कंठा] (सं.कुतूहल); *दशस्कं(१).* कौतुक, [कौतुकभरी, नवाईभरी]

कुथ *कादं(शा).* सादडी (सं.कुथा)

कुद्दल *षडाबा.* कोदाळी (सं.)

कुधातु *आनंस्त.* हलकी के उपेक्षणीय धातु

कुपइ *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा.* कोपे, गुस्से थाय (सं.कुप्यते)

कुबेर *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

कुभति *षष्टिप्र.* खराब भात – चितरामण (सं.कुभक्ति); जुओ ऊभति

कुमर *गुर्जरा. तेरका. देवरा. विक्ररा.* कुमार, कुंवर

कुमर-सरोवर *तेरका.* कुमारी सरोवर, [एक सरोवरनुं नाम]

कुमरि, कुमरी *आरारा.* कुमारिका; *गुर्जरा. वीसरा.* दीकरी, राजकुंवरी

कुमलाइ *अंबरा.* करमाय [सं.क्लाम्यति]

कुमळाणउ *वीसरा.* करमायेलो

कुमाग *ऐतिरा.* कुमार्ग

कुमाणस *उपबा.* खराब माणस (सं.कु+ मानुष)

कुमारीपुर *कादं(शा).* कुमारीओने रहेवानो वास

कुमास *प्राचीसं.* अडद, अडदना बाकळा (सं.कुल्माष)

कुयु जुओ कुउ

कुर, कूर *आरारा. ऐतिरा. नरका. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* भात, [रांधेला चोखा] [सं.कूर]

कुरकट *मदमो.* कूकडो (सं.कुक्कुट)

कुरडबरडादिकनी *आनंस्त.* कुरंड, बरुड (मनुष्यनी हलकी जातिनां नाम) आदिनी

कुरणी *प्राचीफां.* करेण (सं.करेणु)

कुरबक, कुरुबक *ऋषिरा. कादं(शा). तेरका.* एक प्रकारनुं झाड, [कांटा-शेरियो] (सं.)

कुरमाणी *गुर्जरा. शीलक.* करमाई, खिन्न थई (सं.क्लाम्यति परथी) [सं.कूर्मायते परथी]

कुररी *अखेगी. विराप.* टिटोडी (सं.); जुओ कुरुरी

कुरलइ, कुरळइ *प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. हम्मीप्र.* टहुके, चीसो पाडे, आक्रंद करे, का का करे, बोले, [अवाज करे] (दे.कुरुल)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुरव *गुर्जरा.* कौरव

कुरवदल *अभिऊ.* कौरवोनुं सैन्य

कुरंग *वसंफा.* कमळ (सं.); *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कुरंग, [मोगरा के जूई-जाईनी जातिनो] छोड (सं.)

कुरंग, कुरंगो *ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका.* हरण (सं.)

कुरांण *सिंहा(शा).* करुणा, [कृपा, दया]

कुरुखेत, कुरुखेत्र *उक्तिर. गुर्जरा.* कुरुक्षेत्र

कुरुटतउ *उक्तिर.* खोतरतो, कातरतो

कुरुत *अखाका.* कृत्य, कर्म

कुरुदल *गुर्जरा. विराप.* कौरवोनुं सैन्य

कुरु-नरिंदु *गुर्जरा.* कुरुराज (सं.कुरुनरेन्द्र)

कुरुबक जुओ कुरबक

कुरुरी *गुर्जरा.* टिटोडी (सं.कुररी)

कुरुल *प्राचीफा.* वांकडिया (सं.कुरल)

कुरुविंद *शृंगामं.* हींगळो [सं.]

कुरुंआइय *तेरका.* करमाव्युं (सं.कूर्मायित)

कुल *तेरका.* समूह [सं.]; *कादं(ध्रु).* समूह, जथ्थो; [(गुरु)गृह]

कुलकरणी *ऋषिरा.* कुलना आचार के रिवाज (सं.)

कुलकाणि *कादं(ध्रु). कादं(शा).* कुलनी मर्यादा, प्रतिष्ठा [रा.]; जुओ काणि

कुलखंपण *प्रबोप्र. विक्ररा.* कुलकलंक, [कुळनी खांपण, एब]

कुलख्यणा *आरारा.* कुलक्षणवाळा

कुलथ, कुलथी *उक्तिर.* कळथी, एक अनाज (सं.कुलत्थ)

कुलदेवति *लावल.* कुलदेवता

कुलदेवलि *गुर्जरा.* कुळदेवी

कुलबाला *ऋषिरा.* खानदान कुटुंबनी स्त्रीओ [सं.]

कुळ-बेडो *प्रेमाका.* कुळने तारनार [नाव] [सं.कुल+दे.बेड]

कुलबोई *गुर्जरा. विराप.* कुळने बोळनार

कुलमंडण *गुर्जरा. विक्ररा.* कुलमंडन, कुलना आभूषणरूप

कुलवट *आनंत. गुर्जरा.* कुलाचार, कुळनी रूढि; जुओ कुलिवट

कुळ-वत्रेक *प्रेमाका.* कुळथी विरुद्ध, [कुळथी जुदो], [*कुलश्रेष्ठ] [सं.कुल-व्यतिरेक]

कुलसिणगारी *गुर्जरा.* कुळना शणगाररूप (स्त्री)

कुळह *वीसरा.* टोपी (फा.कुलाह)

कुलह कबाइ, कुलह कबाहि *हम्मीप्र.* प्रीतिदान तरीके अपातां वस्त्रालंकार, [टोपी-झभ्भो, अमीरोनो एक पोषाक] [फा.कुलाह+कबा]; जुओ कबाहि

कुलंछणु *गुर्जरा.* खराब लांछन, [एब] (सं. कुलांछन)

कुलाचल *नेमिछं. लावल.* ए नामनो पौराणिक पर्वत [सं.]

कुलाहल *दशस्कं(१). रूतस.* कोलाहल

कुलिवट *अभिऊ.* कुळवट, कुलीनता (सं. कुल+वर्त्म); जुओ कुलवट

कुली *अभिऊ. आरारा. गुर्जरा. *विमप्र. हरिवि.* कळी (सं.कलिका)

कुली **वसंवि(ब्रा).* [*कूला, *नितंब,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*थापा] [दे.कुल्ल]; जुओ कूलीय

कुळी *वीसरा.* कुळ, वंश

कुलीक **जिनरा.* [कलंक, लांछन]

कुल्लडउ *वीसरा.* कूलडी, नानुं वासण (दे. कुल्लड)

कुश-अग्र *ऋषिरा.* डाभ – एक घास – नी अणी (सं.)

कुशम *प्राचीफा.* फूल (सं.कुसुम)

कुशलीखेम *कामा(शा).* क्षेमकुशळ

कुशोभो *नलरा.* शोभानो अभाव, अपकीर्ति

कुष्ट *कादं(ध्रु).* उपलेट, [कोठुं, एक करियाणुं]; [कोढ]; [श्लिष्ट शब्द] [सं.कुष्ठ]

कुष्टी *ऋषिरा. पंचवा.* कोढियो (सं.कुष्ठिन्)

कुस *आरारा.* कुश, एक प्रकारनुं घास

कुसइ *उक्तिर.* रुए, आक्रंद करे (सं. क्रोशति)

कुसका *प्रेमाका.* फोतरां [दे.कुक्कुस]

कुसणइ *उक्तिर.* कसणे, [दाळभात वगेरे] चोळे [दे.कुसण परथी]

कुसलखेमि *आरारा.* क्षेमकुशळ

कुसहिज *सिंहा(म).* अनुदारता, कृपणता; जुओ सहिज

कुसा *षडाबा.* नाना सळिया जेवा टुकडाओ

कुसाटि *आरारा.* खोटो सोदो

कुसि *उक्तिर.* दोरडी, लगाम (सं.कुशा)

कुसुधउ *गुर्जरा.* अमंगल (सं.कु+शुद्ध)

कुसुमचय *लावल.* पुष्पोनो समूह [सं.]

कुसुमबाण *तेरका.* [कुसुम जेनां बाण छे ते] कामदेव (सं.)

कुसुमायुध *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कुसुम जेनां शस्त्र छे ते कामदेव (सं.)

कुसुंब *प्रेमाका.* कसुंबो, [*पीतांबर – नीचेनुं वस्त्र]

कुसुंभ *कांद(शा).* कसुंबल – राता रंगनुं (सं.कौसुंभ)

कुसूत *वीसरा.* खराब गोठवण, खराब रचना (सं.कुसूत्र)

कुहइ *उक्तिर.* कोहे, सडी जाय, नाश पामे (सं.कुथ्यति)

कुहका *आरारा.* कुहु कुहु अवाज

कुहणी *उक्तिर. वीसरा. षडाबा.* कोणी (सं.कफोणि)

कुहरिया **वसंफा. *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कोयलना अवाजथी गुंजी ऊठ्या (प्रा. कुहुरिअ)

कुहाडि (मत्थइ भागी कुहाडि) *नेमिछं.* माथे अतिशय दुःख नाख्यां

कुहिउं *उक्तिर. शीलक. षडाबा.* कोहेलुं, सडी गयेलुं, वासी (सं.कुथितम्)

कुहु *नलाख्या.* कहो (सं.कथय)

कुहुतग *कर्पूमं.* आश्चर्य, [मनोविनोद] (सं. कौतुक); जुओ कउतिग

कुहुने *कादं(शा).* कोने

कुहुंनइ *ऋषिरा.* कोईने

कुहे *नलाख्या.* कोई (सं.कः अपि)

कुहिन *नलाख्या.* कोने

कुंअर *उक्तिर. गुर्जरा.* कुमार, राजकुमार

कुंअलउं *उक्तिर. प्राचीफा. लावल.* कोमल,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाजुक; *विमप्र.* कोमळ, नम्र

कुंअरि *उक्ति.* कुमारी

कुंआरि *आरारा(व).* कुंवार, कुंवारपाठुं (सं. कुमारी)

कुंआरि, कुआरी *उक्ति. गुर्जरा.* कुमारी

कुंकउती *ऐतिका.* कुंकुमपत्रिका

कुंकण *नलरा. नेमिछं.* एक देश, कोंकण; केळानी एक जात सूचवतुं विशेषण [कोंकणना ?]

कुंकण *आरारा(व).* रातुं कमळ (दे.)

कुंकणा *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात, [कोंकणना]

कुंकमरोल *ऋषिरा. *विमप्र.* मंगल माटे ज्यां कंकु रेलावेलुं होय ते, [कंकुनो छंटकाव]

कुंकावटी *दशस्कं(१).* कंकावटी

कुंकुमघोल *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* केसर [कंकु] घोळेलुं पाणी, कंकुनो रगडो [सं.कुंकुम+प्रा.घोल]

कुंकू *उक्ति.* कंकु (सं.कुंकुम); जुओ कूंकम

कुंच, कूंच *अंबरा. प्राचीसं. *विमप्र.* दाढी; दाढी-मूछ [सं.कूर्च]; जुओ मूछकूछ

कुंचकी *प्राचीफा.* कांचळी (सं.कंचुकी)

कुंचुकिउ (कंचुकिउ) **गुर्जरा.* [-नुं बख्तर पहेर्युं छे एवो, -ना आवरणवाळो]; जुओ कंचुकिउ

कुंजर *नरका. प्रेमाका. वीसरा.* हाथी (सं.); जुओ कुजर

कुंजर-शौचपणुं *अखाका.* (हाथी नहावाना शोखीन होय छे, छतां मेला देखाय छे ते परथी) मिथ्या बाह्याचार

कुंझीबाल *अखाका.* फ्लेमिंगो के बगला जेवा एक पक्षीनां बच्चां, [कुंजडीनां बच्चां]

कुंठसस्त्र *उक्ति.* कुंठित – बूठुं शस्त्र (सं. कुंठं शस्त्रम्)

कुंडल, कुंडळ *तेरका. नरका-२. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). हम्मीप्र.* काननुं आभूषण

कुंडळी *दशस्कं(२). प्रेमाका.* कुंडाळुं – गूंचळुं वळेलां शींगडांवाळी

कुंडलूं *नलाख्या.* कूंडाळुं, [गूंचळुं] (सं. कुंडलकम्)

कुंडी जुओ कुण्डी

कुंडे चडवुं [कूडे चडवुं] *प्रेमाका.* लडाईमां दावपेच खेलवा; जुओ कूडे चडवुं

कुंडे फरे [कूडे फरे] *प्रेमाका.* दावपेच खेले

कुंढ *उक्ति.* मंद, मूर्ख, आळसु (सं.कुंठम्)

कुंढगोठि *उक्ति.* मूर्खाओनी मंडळी (सं.कुंठ-गोष्ठी)

कुंढली जुओ कूंढली

कुंण जुओ कुण

कुंतल *रूस्तस.* घोडा (उ.कोतल) [तु. कुतल]; जुओ कोतल

कुंतार *दशस्कं(२). प्रेमाका.* महावत [*सं. कुन्त परथी]

कुंथुया *षडाबा.* एक नानकडुं जीवडुं [प्रा. कुंथु]

कुंद *तेरका.* मोगरो (सं.)

कुंवकुसुम *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कस्तूरी मोगरो (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंदण *नलाख्या.* कुंदन, सोनुं

कुंब *हरिवि.* कंबु, शंख

कुंभकर्णना उपासी *प्रेमाका.* [कुंभकर्णना उपासक], कुंभकर्ण जेवा ऊंघणशी

कुंभी *उक्तिर.* घडो – धान्यनुं एक माप (सं.)

कुंभीय *गुर्जरा.* हाथी (सं.कुंभिन्)

कुंमख *रूस्तस.* कुमक, [मदद], [सहायता अर्थे मोकलेली सेना]

कुंमारउ (कुंमारउ सोनउ) *उक्तिर.* शुद्ध सोनुं (सं.कुमारं सुवर्णम्)

कुंयर *विक्ररा.* कुंवर, कुमार

कुंयरि *गुर्जरा.* कुंवरी, राजकुंवरी

कुंयारी *आरारा.* कुंवारी

कूअडा *हम्मीप्र.* कूवा [सं.कूप]

कूआकंठइ *उक्तिर.* कूवाकांठे (सं.कूपकंठे)

कूइ, कूए *अभिऊ. उपबा. गुर्जरा.* कूवामां

कूउ जुओ कुउ

कूओ *प्राचीफा.* वहाणनो एक भाग, कूवाथंभ (सं.कूप)

कूकइ *उक्तिर.* बोलावे [सं.कु, प्रा.कुक्क]; जुओ कुकतु, कूकूइ, कोक-

कूकट *अखाका.* दंभ, [कपट, जूठ, मिथ्या]

कूकर *उक्तिर. विक्रच. षष्टिप्र.* कूतरो (सं. कुक्कुर)

कूकस *अखाका. अखाछ. नलरा. वीसरा. सिंहा(म).* कुशका, फोतरां (दे.कुक्कुस)

कूका *उक्तिर.* तीव्र स्पृहा, उत्कंठा

कूकूइ *प्रद्युचु.* कू कू एम अवाज करे, [बडबडे, दुःखनो अवाज करे] [सं.कु, प्रा.कुक्क]; जुओ कूकइ

कूखडी *नेमिछं.* कूख, उदर (सं.कुक्षि)

कूछ जुओ मूछकूछ

कूट *अखाछ.* कूड़ी, [भूंडी, खोटी] (सं.)

कूटज्ञानी *अखाछ.* कूडभर्यो ज्ञानी, [मिथ्या-ज्ञानी]

कूटणउ *उक्तिर.* कूटणुं, कूटवुं ते (सं. कुट्टनम्)

कूटणी *वीसरा.* वेश्यानी दूती – दलाल (सं.कुट्टिनी)

कूटतारूढ *षडाबा.* खोटां वजनियां मूकवां

कूटिवइ *उपबा.* कूटवामां, मारवामां (सं. कुट्ट)

कूड *अखाका. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नरका. नलाख्या. नेमिछं. लावल. विराप. *वीसरा.* कपट, छळ, प्रपंच (सं.कूट); *जिनरा.* *मिथ्या, [*खोटुं], [*कपट]

कूडउं *उपबा. षडाबा.* असत्यमय, जूठुं

कूडकमाइ (कूड कमाइ) **नेमिछं.* [कपट करे]; जुओ कमाइ

कूडकला *आरारा.* छळकपटनी कळा (सं. कूटकला)

कूडछी *उक्तिर.* कडछी [दे.कडच्छु]

कूडाबोलउ *उपबा.* खोटाबोलो

कूडी *षडाबा.* चामडानी कुप्पी; जुओ कुडी

कूडीउ *गुर्जरा.* कपट करनार (सं.कूटिक)

कूडी कूडी *नरका.* *खोटी, [*नकामी, *अमथी]

कूडुं *आरारा.* कपटी, बनावटी (सं.कूट);

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिऊ. प्रेमाका. कपटयुक्त, [खोटुं, खराब]; *****नलाख्या. [खोटुं]; जुओ कुडुं

कूडे चडवुं *दशस्कं(१).* लडाईमां दावपेच खेलवा; जुओ कुंडे चडवुं

कूडे फरे जुओ कुंडे फरे

कूण *उपबा.* कोण; जुओ कुण

कूति *****षडाबा. [एक प्रकारनी मधमाखी] [दे.कुत्तिका]

कूतिर, कूतिरउ *आनंस्त. विक्रच. षडाबा. षष्टिप्र.* कूतरो (सं.कुक्कुर; प्रा.*****कुतुर) [दे.कुत्ती]

कूपइ *उक्तिर.* कोपे, गुस्सो करे (सं.कुप्यति)

कूपचक्र *अखेगी.* कूवानो रेंट [सं.]

कूपल, कूपळ *गुर्जरा. वीसरा.* कूंपळ (सं.कुड्मल)

कूभार *गुर्जरा.* कुंभार (सं.कुंभकार)

कूया *आरारा. षडाबा.* कूवा (सं.कूप)

कूर *गुर्जरा.* क्रूर, [निर्दय]

कूर जुओ कुर

कूरी *प्रेमाका.* कूर, भात, रांधेला भात

कूर्म्म *आरारा.* काचबो (सं.)

कूलउं *उपबा.* [कूळुं], अविकसित, [पोचुं] (सं.कोमलकम्)

कूल-झरो *चंद्रवा.* ?, [*****कुळना प्रवाहरूप, *****कुळने आगळ लई जनार]

कूलिरि *सिंहा(म).* घी-गोळ साथे चोळेलो बाजरीनो लोट, कुलेर (दे.कुल्लुरी)

कूलीय *****गुर्जरा. [*****कूला, *****नितंब, *****थापा] [दे.कुल्ल]; जुओ कुली

कूलु *गुर्जरा.* कांठो (सं.कूल)

कूलेरा जुओ वेलाकूले

कूल्ह *उक्तिर.* नहेर, खाई (सं.कुल्या)

कूव *गुर्जरा.* कृपाचार्य

कूवडउ *उक्तिर.* गाडा वगेरेनो आगळनो भाग, धूंसरीनुं लाकडुं (सं.कूवरः)

कूवडिय *तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं.* नानो कूवो, कूई (सं.कूपिका)

कूशके *नरका.* फोतरामां

कूंअर *नलाख्या.* राजपुत्र [कुंवर, दीकरो] (सं.कुमार); *नेमिछं.* कुंवर

कूंअलउं *उक्तिर. वसंवि.* कूंळुं, सुकुमार (सं.कोमल)

कूंकम, कूंकूं *वीसरा.* कंकु (सं.कुंकुम); जुओ कुंकु

कूंकूय *गुर्जरा.* कुंकुम

कूंच जुओ कुंच

कूंढली (कुंढली) *उक्तिर.* वर्तुळाकार शिंगडा-वाळी (सं.कुंडलितशृङ्गी)

कूंण *गुर्जरा.* कोण (सं.कः पुनः); जुओ कुण

कूंपली *प्रेमप.* कुप्पी, [चामडानी शीशी]

कूंपी *वीसरा.* शीशी, चामडानुं सांकडा मोंनुं पात्र [सं.कुतुप]

***कूंपु [खूंपु]** *****अभिऊ. [माथा परनो फूलनो एक शणगार, शहेरो] [दे.खुंपा]

कूंभट *उक्तिर.* कुब्जकंटक, [*****गोरडियो बावळ, *****एक कांटाळी वनस्पति जेनां फळनां बी शाकमां वपराय छे] [रा. कूभटौ]

कूंभी *उक्तिर.* थांभला नीचेनी पथ्थर अथवा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाकडानी बेसणी (सं.कुम्भी)

कूंभी *गुर्जरा. षडाबा.* नानो घडो (सं. कुम्भिका)

कूंयर *ऐतिरा. गुर्जरा.* कुंवर, राजकुंवर (सं. कुमार)

कूंयर *गुर्जरा. विराप.* कुंवरी, राजकुंवरी (सं.कुमारिका)

कूंयरपणइं *नेमिछं.* कुमारावस्थामां, [युवराजपद पहेलांनी अवस्थामां]

कूंयार *गुर्जरा.* राजकुंवर (सं.कुमार)

कूंयारि *गुर्जरा.* राजकुंवरी (सं.कुमारिका)

कूंयारी *गुर्जरा.* कुंवारी (सं.कुमारिका)

कूंली *ऋषिरा.* कुमळी, सुंवाळी (सं.कोमल)

कूंवळउ *वीसरा.* कूणुं, नाजुक (सं.कोमल)

कृतमअकृतम *दशस्कं(१).* कर्तुम् अकर्तुम्, करवानुं ने नष्ट करवानुं

कृत श्येन *कांद(शा).* ऊजळो सत्ययुग (सं.)

कृतांत *आरारा. प्रेमाका.* यमदेव, काळदेवता (सं.)

कृत्या *गुर्जरा.* मारणकर्म माटे आराधाती देवी (सं.)

कृपणाई *आरारा.* कृपणता, लोभ; *लावल.* कृपणपणुं, कंजूसाई, [दरिद्रता, लघुता]

कृपागरु *प्राचीफा.* कृपानिधान (सं.कृपाकर)

कृपागुर *गुर्जरा.* गुरु कृपाचार्य

कृपाण *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* तरवार (सं.); जुओ किशलकृपाण

कृपाणपाणि *गुर्जरा.* हाथमां तलवार धारण करनार (सं.)

कृपाणी *लावल.* तरवार [सं.कृपाण+ई]

कृशतणुं *ऋषिरा.* दुर्बळ, सूकुं शरीर [जेनुं छे एवी स्त्री] (सं.कृशतनु)

कृशि-कटी *कादं(शा).* पातळी केडवाळी (सं.कृश-कटी)

कृष्ण-भग्गां *अभिऊ.* कृष्णथी भागेलां [के पराजित] [सं.कृष्ण+भग्न]

कृष्णागर, कृष्णागुरु *आरारा(व). ऋषिरा. नरका. नरप(द). नेमिछं. प्रेमाका.* काळुं अगरु

के *उषाह. नरप(द). नलरा. विमप्र. षडाबा.* कोई, केटलाक, कया (सं.कः, के)

के (जदुपतिके) *चतुचा.* (जदुपति) पासे; जुओ तमके, माहावके, राधाजीके

केइ, केई *आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. *देवरा.* केटलाय (सं.के अपि)

केई जुओ केइ

केई केई *प्रेमाका.* कईकई, केटली

केउर *गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* केयूर, बाजुबंध, कडां

केकणो (कींकणो) *मदमो.* छंदविशेष

केकाण, केकांण *गुर्जरा. नलरा. प्राचीसं. प्रेमाका. मदमो. रूस्तस. ललिरा. विक्ररा. वीसरा.* कयकान प्रदेशना घोडा

केकि, केकिय *ऋषिरा. गुर्जरा.* केका करे ते, मोर (सं.केकिन्)

केटिलि *नलाख्या.* केटलेक (सं.कियत्+तुल्यकम्)

केड *जिनरा. नरका. प्रेमाका.* केडो, पीछो, [केडे, पाछळ] [सं.कटि]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केडइ *गुर्जरा. जिनरा. रूपच. षडाबा.* पाछळ (सं.कटि); *गुर्जरा.* पछीथी

केडउ करइ *प्राचीसं.* पीछो करे

केडाइतपणउं *षष्टिप्र.* अनुयायीपणुं

केडावेड *वेताप.* वाराफरती, [*केडाकेड, *पाछळपाछळ]

केडि *नलाख्या.* केड, पूंठ, [पछी] (सं. कटि); *अंबरा. नेमिछं. प्रबोप्र.* केडो, [पीछो]; *ललिरा.* केडे, पाछळ

केडिलु *षष्टिप्र.* पाछळनो

केण *कामा(त्रि).* कहेवापणुं, [लोकापवाद] [सं.कथन, प्रा.कहण]

केण *आरारा.* शा माटे, [कया कारणथी] [सं.केन]

केणइ *आरारा.* कया; *ऐतिरा.* कोईए; *लावल.* कोणे; कोईए

केणइ गान *आरारा.* कई विसातमां; जुओ किण गानइ

केणी *आरारा.* कई

केत *उक्तिर. हरिवि.* केतु, एक ग्रह; *कादं(शा).* भूतप्रेत (सं.केतु)

केतइ *ऋषिरा.* केटलेक [सं.कैयत्तिक]

केतन *गुर्जरा.* चिह्न (सं.); *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* ध्वज, चिह्न (सं.)

केतलउं *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. जिनरा. नलरा. षडाबा.* केटलुं [सं.कियत्+तुल्यम्]

केतलाएक *आनंस्त. उपबा.* केटलाक

केती वार *षडाबा.* केटलीये वार, वारंवार (सं.कैयत्तिक वार)

केतु **वसंफा. वसंवि(ल). वसंवि(ब्रा).* धूमकेतु (सं.)

केतुकि *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* केतकीनो छोड

केतुं *अभिऊ. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. मदमो. लावल.* केटलुं, केटलुंक [सं.कैयत्तिक]

केथउं *गुर्जरा.* *क्यांय [अप.केत्थु], [*निरर्थक, *मिथ्या] [सं.कदर्थ, प्रा. कयत्थ]

केथि *आरारा.* *क्यां, [क्यांय] [अप.केत्थु]

केदार *उक्तिर.* क्यारो (सं.)

केनी *नरका.* कोईनी

केर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* केरडां, केरडांनुं अथाणुं [सं.करीर]

केरडुं *अखाका. ऋषिरा. लावल.* केरुं, तणुं

केल, केलि *अखाका. नरका.* प्रेमक्रीडा, कामक्रीडा [सं.केलि]

केलवइ **अंबरा. आरारा. ऋषिरा. *नलरा. प्राचीफा. *विक्ररा.* करे, बनावे, [उत्पन्न करे, तैयार करे, घडे, सज्ज करे, रचे, सर्जन करे] [दि.केलाय]

केलवण **नलरा.* [रचना, उत्पत्ति]

केलि *नरका-२. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* रतिक्रीडा (सं.); जुओ केल

केलि, केळि *आरारा. उक्तिर. नलरा.* केळ (सं.कदली); *वीसरा.* केळ, केळुं

केलिहरां *विक्ररा.* कदलीगृह, [केळनो रचेलो मंडप]; जुओ केलीहर

केली *नरका.* प्रेमक्रीडा [सं.]

केलीशुक *ऋषिरा.* रमतनो [मनोविनोद माटे पाळेलो] पोपट (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केलीहर *गुर्जरा.* केळनो रचेंलो मंडप (सं. कदलीगृह); जुओ केलिहरां

केले *आखाका.* केलिमां, [क्रीडामां]

केव **नलाख्या.* [केमेय] [अप.केम्व]

केवओ *चारफा.* केमेय (अप.केवं)

केवड *आरारा(व).* केवडो (सं.केतकी)

केवडियालउ *प्राचीसं.* केतकीयुक्त, [केवडाना फूलनो बनेलो]

केवडी *आरारा(व). गुर्जरा.* केवडो (सं. केतकी)

केवडी **चारफा.* [केटली, केवी]

केवडीआलउ *गुर्जरा.* केवडाना फूलनुं बनेलुं

केवल *नलरा. प्राचीफा.* सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सर्वज्ञता, केवलज्ञान

केवलउं *उपबा.* मात्र; [कशा विशेष अर्थ विना]; वृथा

केवलकमला *लावल.* केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी [सं.]

केवलग्यान, केवलज्ञान *ऋषिरा. गुर्जरा. प्राचीका.* सर्व पदार्थोनुं ज्ञान, सर्वज्ञता

केवलनाणी *गुर्जरा.* केवळज्ञानी, [सर्वज्ञ]

केवलनाणुं *गुर्जरा. प्राचीफा.* केवळज्ञान, [सर्वज्ञता]

केवललच्छी *नेमिछं.* केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी

केवलि, केवली *गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा.* केवळज्ञानी, सर्वज्ञ

केवि, केवी *उषाह. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा.* कोई, केटलाक (सं.के अपि)

केशी **प्रेमाका.* [केशवाळीवाळा, घोडा] (सं.),

केशु *दशस्कं(१). प्रेमाका.* केसूडां (सं. किंशुक) [सं.कैंशुक]

केशुं *प्रेमाका.* केवुं [सं.कीदृश]

के-शुं *नरका.* कोनी साथे

केसर *आरारा.* केसरी, सिंह

केसर *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पुष्परज, फूलनां तंतु

केसर *गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* बकुलवृक्ष (सं.)

केसरमुकुल *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* बकुलनी कळीओ (सं.)

केसरयालां *गुर्जरा.* केसररंगी, [केसर छांटेलां – युद्धनी तैयारी रूपे]

केसर-लंक, केसर-लंकी *हम्मीप्र.* सिंह जेवी पातळी कमरवाळी [सं.केसरि+दे.लंक]

केसर-सटा *लावल.* केसरीना जेवी केशवाळी जेनी छे ते

केसरी-कटे *प्रेमाका.* केसरी – सिंह जेवी पातळी कटिए – कमर उपर

केसरी-लंकी *नरका.* सिंहना जेवी पातळी कमरवाळी; जुओ करी-लंकनी

केसु, केसुअ, केसुय, केसू, केसूअ, केसूय *आरारा(व). उक्तिर.* केसूडो, केसूडानां फूल (सं.किंशुक) [सं.कैंशुक]

केसु-वरणा *देवरा.* केसूडाना रंगना

केह *गुर्जरा.* केटलाक, कोई (सं.के खलु); *अभिऊ. आरारा.* कोण

केहइ **ऋषिरा.* [कया]; *गुर्जरा.* कोईक

केहउ *आरारा. विमप्र.* केवो

केहर, केहरि *जिनरा. प्राचीफा.* सिंह (सं. केसरी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केहवी *ऋषिरा.* केवी (*सं.कीदृशी)

केहि *नलाख्या.* कहे (सं.कथय)

केहिइं *आरारा.* कया

केही *चित्तसं.* कई

केही *चित्तसं.* कहे

केहुं *अखाका. अभिऊ. आनंस्त. आरारा. कादं(शा). जिनरा. नरका. नलाख्या. प्रबोप्र. प्राचीसं. प्रेमाका. विमप्र. शीलक.* कयुं, केवुं (*सं.कीदृश/किम्)

केहे *चित्तसं. मदमो.* के, [अथवा]

केहेने *चित्तसं.* शेने; कोईने

केहेने *चित्तसं.* कने, पासे, साक्षात्

केहेनो *अखाका. प्रेमाका.* [केनो], कोनो

केह्या *वाग्भवा.* कया

केंगार *प्राचीफा.* मोरनो केकारव

कैट **प्रबोप्र.* [कीटस्थान, गंदुं – अपवित्र स्थान] (सं.)

कैतव प्रेमाका. कपटी, जुगारी (सं.)

कैही *मदमो.* क्यहीं, क्यांय

कैहीइ *नलाख्या.* क्यांय पण

कैंद्रव्य जुओ द्रव्य

कोइयउ *वीसरा.* (आंखनो) खूणो, [डोळो]

कोइल, कोइला, कोइलि, कोइली *आरारा. ऐतिरा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. नलरा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप.* कोयल (नर/मादा) (सं.कोकिल)

कोउ *दशस्कं(१).* कोई [सं.कः]

कोउ *शृंगामं.* (अडायानो) अग्नि (दे. कोउआ)

कोक *आरारा.* देडकी (सं.); *हरिवि.* चक्रवाक (सं.); *मदमो.* कोकशास्त्र

कोक- *वीसरा.* बोलावबुं (सं.*कुकति; प्रा. कोक्क-); जुओ कूकइ

कोककला *नरका.* प्रेमशास्त्र, [कामकळा] [सं.]

कोक-गत *नरका.* प्रेमनी रीत, [काम्भोगनी रीत]

कोकील *मदमो.* एक लुटारु जातिनो पुरुष

कोकोला (कोकोला *बिणि) [कोकोला-गिणि] **प्राचीफा.* [अडायानो अग्नि] [सं.कुकूलाग्नि]

कोट **नरका.* [*मुश्केलीए, *मांडमांड] [दे.कोट्टी=स्खलना, भूल]

कोट *अभिऊ. कादं(शा). गुर्जरा.* डोक, गरदन (सं.)

कोट, कोट्य *अखाका. कामा(त्रि). कामा(शा). चतुचा. नरका. प्रेमाका.* कोटि, करोड, [असंख्य]; जुओ कांमकोट

कोटडउं *उक्तिर.* कोट, किल्लो (सं.कोट्ट)

कोटडी ०*नरका.* डोकमां पहेरवानुं एक आभूषण

कोटवाल *उक्तिर. पंचवा.* कोटनो – शहेर के गामनो बंदोबस्त राखनार अमलदार, नगररक्षक (सं.कोट्ट+पाल)

कोटानकोट, कोटनकोटी *नरका. प्रेमाका.* करोडो, [असंख्य]

कोटान्तर *कामा(शा).* [कोटकोटान्तर], करोडो, [असंख्य]

कोटि *प्रेमाका.* प्रकार (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोटिइं *आरारा.* कोटे, गळे (दे.कोट्टा)

कोटिक *कामा(त्रि).* उत्तम, अपूर्व (सं.); *दशस्कं(१). नरका.* करोड जेटला, [असंख्य]

कोटिध्वज, कोटीधज, कोटीध्वज *अंबरा. नरका. प्रेमाका. विक्ररा.* करोडपति, (करोडाधिपतिनी निशानी तरीके मकान उपर धजा फरकती); **अंबरा.* [करोडाधिपतिनी निशानीरूप धजावाळो (महेल)] [सं.]

कोटिया *नरका.* करोडो, [असंख्य]

कोटिं *ऐतिरा.* कोटे, गळे

कोटी **अखाका.* [विकल्प, जोड, समान] [सं.]

कोटी *नेमिछं.* करोड,. [विपुल]

कोटीक *मदमो.* कोटि, करोड

कोटीधज, कोटीध्वज जुओ कोटिध्वज

कोटीर *आनंस्त. ऐतिका.* मुगट समान, अग्रणी, श्रेष्ठ (सं.)

कोटीलउ *उक्तिर.* हथोडो, मोगरी (सं.कुट्ट परथी) [दे.कोटिल्ल]

कोट्ट *षडाबा.* कोट, गढ [दे.]

कोट्य जुओ कोट

कोट्य कोटा *अखाका.* अनेक प्रकारना, [असंख्य]

कोठउ *उक्तिर.* [*कोठो – धान्य भरवानुं मोटुं पात्र, *ओरडो, *अटारी, *पेट] (सं.कोष्ठकः)

कोठी *प्रेमाका.* पेढी [सं.कोष्ठिका]

कोठीभडउ *उक्तिर.* कोठींबडुं [सं.कपित्थ परथी]

कोठीवाल *प्रेमाका.* पेढीनो मालिक [सं. कोष्ठिका+पाल]

कोड *देवरा. हरिख्या.* करोड, [असंख्य] (सं.कोटि)

कोड **अखाका.* [*कूड, *मिथ्या, *अभिलाषा]

कोडणु *प्रबोध.* धनुष, कामठुं (सं.कोदंड)

कोडाकोडि *अंबरा. उपबा. गुर्जरा. तेरका.* करोड गुण्या करोड, [असंख्य] (सं. कोटाकोटि)

कोडि *अभिऊ. आरारा. ऐतिरा. उक्तिर. उपबा. उषाह. कादं(धु). कादं(शा). गुर्जरा. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. विक्ररा. विराप. वीसरा. शृंगामं. षडाबा. षष्टिप्र.* कोटि, करोड, [असंख्य]

कोडि **ऐतिका.* [कोड, होंश, अभिलाष]; *गुर्जरा.* कोडपूर्वक, होंशपूर्वक (*सं. कौतुक, दे.कुड्ड)

कोडि(कोडि सिला) **नेमिछं.* [कोटिशिला, कोटि लोकोथी उपाडाय तेवी – भारे – शिला]; जुओ कोडिसिला

कोडिगुणउ *उपबा.* करोड गणो

कोडिमउ *उक्तिर.* करोडमो (सं.कोटिमः)

कोडिसिला *लावल.* जैन श्रुति अनुसार सिद्धोए जेना उपर बेसीने तप करी मुक्ति मेळवी हती एवी शिला, [(अहीं) कोटि लोकोथी उपाडाय तेवी – भारे – शिला]; जुओ कोडि

कोडी *प्रेमाका.* वीसनी संख्या

कोडी *चतुचा.* कोटि, अनेक

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोडी (कोडी तणुं) *चतुचा.* [कोडी जेटलुं], जरा जेटलुं

कोडीधज, कोडीध्वज *ऐतिका. रूपच.* करोडपति, [कोटि धननी निशानी तरीके जेना निवास पर धजा फरके छे ते] [सं.कोटिध्वज]

कोडो *लावल.* कोड, [अभिलाष], होंश [दे.कुड्ड]

कोड्य *अखाका.* करोड, [असंख्य]

कोढ *आरारा.* कपट

कोणे (कोणे करी) *षडाबा.* खूणो काढीने

कोतर *नलाख्या.* दर (सं.*कोटर)

कोतल *प्राचीका. प्रेमप.* सवारी माटेनो खास घोडो [उ.; तु.कुतल]; जुओ कुंतल

कोतिल *ऐतिका.* कोतल, [खास सवारीनो घोडो]

कोदंड *गुर्जरा. प्रेमाका.* धनुष (सं.)

कोदिरा *ऋषिरा.* कोदरा, [एक हलकुं अनाज] (सं.कोद्रव)

कोपति **प्रबोप्र.* [कोपते, कोप्या त्यारे]

कोपातर *देवरा.* क्रोधायमान (सं.कोपातुर)

कोपीन *प्रेमाका.* कौपीन, लंगोटी; जुओ कौपीन

कोमास *षडाबा.* अडद (सं.कुल्माष)

कोयलडा *प्रेमाका.* कोलसा (दे.कोइला)

कोरक *गुर्जरा.* कूंपळ (सं.)

कोरडी* *अभिऊ.* [वीसनी के करोडनी संख्या]

कोरडइ *लावल.* कोरा (मन) वडे

कोरडुं *चित्तसं. प्रेमाका.* कोरुं, भींजाया विनानुं

कोरडु *विमप्र.* न चड्या होय तेवा दाणा

कोरण *आरारा.* कोरवुं ते, कोतरणी, शिल्प

कोरण *अखाका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्राचीफा. प्रेमाका.* धूळनी आंधी, वंटोळियो

कोरण वाइं जुओ रणवाइं

कोरंग *कामा(त्रि). दशस्कं(२). प्रेमाका.* कुरंग, हरण

कोरिउ *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कोर्यो, छेद्यो, भेद्यो (सं.कोरित)

कोरियउ *उक्तिर.* कंडारेलुं, चीतरेलुं (सं. कोरितम्)

कोरिवउ *उक्तिर.* कोरवुं ते, कोतरवुं ते, कापवुं ते

कोलंबो, कोळंबो *नरका.* वृक्षनी डाळीनो नमेलो अग्र भाग, [डाळी]

कोलिक *सम्यचो.* करोळियो

कोलिका-जालक *षडाबा.* करोळियानुं जाळुं (सं.कौलिक+जाल)

कोली, कोळी *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* कवली, कपिला, [बदामी रंगनी], वाछडुं बताव्या विना दोहवा देती गाय

कोविलडी *प्राचीसं.* कोकिला, [कोयल]

कोश *प्रेमाका.* म्यान (सं.)

कोशीशां *दशस्कं(२).* कांगरा [सं.कपिशीर्षक]

कोस *उक्तिर. प्रेमाका.* एक गाउ(त्रण किलोमिटर)नुं अंतर (सं.क्रोश)

कोसंब *प्रेमाका.* कसुंबानो लाल रंग [सं. कौसंभ]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोसीरीआ *मदमो.* करकसरिया

कोसीस, कोसीसां *ऐतिरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. प्रेमाका. विक्ररा.* कोट उपरना कांगरा (सं.कपिशीर्षक); जुओ कउसीसउ

कोसींटउ *उक्तिर.* रेशमनो कीडो, एनुं कोकडुं [*सं.कोशस्थः]

कोसेर *कस्तुवा.* करकसर

कोसेरीआ *मदमो.* करकसरिया

कोह *प्रद्युचु.* क्रोध

कोहग्गि *गुर्जरा.* क्रोधाग्निथी

कोहलउ *उक्तिर.* कोळुं (सं.कूष्माण्ड)

कोहलुं *वेताप. सिंहा(शा).* ढाल

कोहली *उक्तिर.* कोळी, कोळानी वेल

कोहाइय *जिनरा.* क्रोधादिक

कोही *चित्तसं.* सडीने

कोहो *चित्तसं.* कोण

कौअचि *ऋषिरा.* कौवच नामनी वनस्पति

कौतग *मदमो.* कौतुक, [कुतूहल]; जुओ कउतिग

कौतिक, कौतीक *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* कौतुक, आश्चर्यकारक वर्तन; मजाक, विनोद

कौतुक *प्रेमाका.* आश्चर्य, मजाक, विनोद

कौपीन (कोपीन) **कादं(ध्रु).* [लंगोट] [सं.]

कौमोदी *मदमो.* सिद्धांतकौमुदी [ए नामनो व्याकरणग्रंथ]

क्यउं जुओ किउ

क्यरपी *मदमो.* कृपण; जुओ करपी

क्यर्ण *चित्तसं.* किरण

क्यवराज *ऐतिरा.* कविराज, कवि

क्यहीं *प्रेमाका.* क्यां; जुओ कही

क्यंनर-मिथुन *कादं(शा).* किंनर पति-पत्नीनुं जोडुं (सं.किंनर-मिथुन)

क्याहइं *गुर्जरा.* क्यांय

क्याहारि *कादं(शा).* क्यारेक

क्याहार्ये *रूस्तस.* क्यारे

क्यांथो *प्रेमाका.* क्यांथी

क्युं *आरारा.* कंई; केम

क्रडा *सिंहा(म).* क्रीडा

क्रत *मदमो.* कृत्य

क्रतव्य *प्रेमाका.* कर्तव्य, कार्य

क्रत्य *चित्तसं.* क्रियाकारिता, प्रवृत्ति

क्रपी *मदमो.* कृपण; जुओ करपी

क्रम *चित्तसं.* कर्म

क्रमइ *उक्तिर.* चाले (सं.क्रामति) [सं.क्रमते]

क्रमि **ऐतिका.* [पदवीए]

क्रमु *गुर्जरा.* कर्म[बंधन], [भाग्य]

क्रयाणउं *उक्तिर. षडाबा.* करियाणुं, ले-वेचनी वस्तु

क्रश्न *देवरा.* श्रीकृष्ण

क्रसाण *अखेगी.* अग्नि (सं.कृशानु)

क्रंम *अंबरा.* चरण (सं.क्रम)

क्रिपाण *प्रेमाका.* किरपाण, नानी तलवार जेवुं हथियार [सं.कृपाण]

क्रिया-उधार *ऐतिका.* शुद्ध मार्गनुं प्रवर्तन

क्रियाणा *हम्मीप्र.* करियाणां, वेचवानो माल (सं.क्रयानक)

क्रीडइ *उक्तिर.* रमे, खेले (सं.क्रीडति)

क्रोड *प्रेमाका.* करोड

क्रोडि *षडाबा.* करोड (सं.कोटि)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रोड्य *नरका.* करोड, [असंख्य वार]
क्रोध्या *दशस्कं(२).* कोप्या
क्रोश *कादं(शा).* बे माइल[त्रण किलो-मिटर]नुं अंतर (सं.)
क्लीब *अखाका.* नपुंसक (सं.)
क्लीब *विराप.* [नपुंसक, पावैयो] (सं.क्लीब)

क्षउ *षडाबा.* क्षय, नाश
क्षण *नलरा.* पर्वदिवसनी कथा के व्याख्यान (सं.)
क्षणदा *कादं(शा).* रात्रि (सं.)
क्षणु, क्षणुं *मदमो.* क्षण पण, जरा पण (सं.क्षण+खलु)
क्षणुक्षणुए *दशस्कं(१).* क्षणेक्षणे, थोडीथोडी वारे
क्षत्रीनंदन *प्रेमाका.* क्षत्रियनो पुत्र
क्षप *षष्टिप्र.* श्रम, [प्रयत्न] (सं.क्षप् परथी)
क्षपइ *षष्टिप्र.* खपावे, दूर करे, [नाश करे] [सं.क्षप्]; जुओ क्षिपइ
क्षपकश्रेणि *आनंस्त.* मोहनीय कर्मनो क्षय करनारी गुणस्थाननी [आत्मावस्थानी] श्रेणी [जै.] [सं.]
क्षपणक *कादं(शा).* बौद्ध के जैन साधु (सं.)
क्षमिउ *उक्तिर.* क्षमा आपी [सं.क्षम्]
क्षयकारणाहरु *वाग्भवा.* नाश करनार
क्षरइ *उक्तिर. वाग्भवा.* झरे (सं.क्षरति)
क्षात *चतुचा.* ख्याति
क्षामोदरि *ऋषिरा.* कृशोदरी, [पेटनो भाग कृश होय तेवी स्त्री] [सं.]
क्षालण *प्रबोप्र.* धोनार (सं.क्षालन)
क्षालन *प्रेमाका.* प्रक्षालन, धोवुं ते [सं.]
क्षि *कादं(शा).* क्षय, नाश
क्षिइ *षडाबा.* क्षय पामे, नाश पामे (सं. क्षयति)
***क्षित्तित्र (कित्तिग?)** *तेरका. प्राचीसं.* कृतिका नक्षत्र
क्षिपइ **उपबा.* [-नो ह्रास करे, नाश करे] [सं.क्षप्]; जुओ क्षपइ
क्षिमि *षडाबा.* क्षमा आपो (सं.क्षम्)
क्षीणमोह *आनंस्त.* ए नामनुं गुणस्थानक, जेमां मोहनीय कर्मनो क्षय थई गयो होय एवी आत्मावस्था [जै.] [सं.]
क्षीरहरो *गुर्जरा.* क्षीर सरोवर (सं.क्षीरह्रद)
क्षुद्र *नलरा.* छिद्र, दोष
क्षुभाय *आरारा.* क्षुब्ध बने
क्षुभि *कादं(ध्रु).* आकळविकळ थाय [सं. क्षुभ्]
क्षुर *अभिऊ.* खरी (सं.क्षुरा)
क्षुरी *कादं(शा).* खरी, डाबलो (सं.)
क्षेत्र, क्षेत्रु, खेत्र *उपबा.* प्रदेश, स्थान (सं.); *उक्तिर.* खेतर(सं.); *नलरा.* धन वापरवानुं स्थान (जै.)
क्षेद *नलरा.* खेद, क्लेश; जुओ खेद
क्षे-ले *अखाका.* क्षय अने लय
क्षोणि तलि (क्षोणि तलि कीध) **लावल.* [पृथ्वी तळे करी, कबजे करी]
क्षोभन *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* क्षुब्ध – व्याकुल करनार (सं.)
क्षोभिवि *उपबा.* हलावी, चलित करी
क्षोहणी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अक्षौहिणी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोक्कस संख्यानां रथ, हाथी, अश्व अने लडवैयानो समावेश करतुं सेनादळ

खइ *गुर्जरा.* क्षय[रोग]

खइडां *ऐतिका.* खड्ग, तलवार; जुओ खेडुं

खइर *प्राचीसं. शृंगामं. षष्टिप्र.* खेर, एक झाड (सं.खदिर)

खईइ *उक्तिर.* क्षय पामे, नाश पामे (सं. क्षीयते)

खउरउ **उपबा.* [खोरुं, कलुषित] (दे. खउर)

खउळि *वीसरा.* चांल्लो, तिलक, त्रिपुंड्र (हिं.खौर)

खउली *अंवरा.* खोळी, [तपासी]

खग-जन *दशस्कं(१).* पक्षी (सं.)

खगपती *कामा(त्रि).* पक्षीराज गरुड

खग-मंडल *वेताप.* गगनमंडळ; जुओ खगां

खगाकार **अखाका.* [आकाशना जेवुं, शून्यवत्]

खगां **प्रेमाका.* [आकाश] [दे.खग]; जुओ खगमंडल

खग्ग *ऐतिका. कर्पूमं. तेरका. प्राचीफा.* तलवार (सं.खड्ग)

खचकउ *लावल.* खचको, क्षति, [अटकाव, अंतराय]; *नरका.* अंतराय, अटकायत; [संकोच]

खचकी *प्रेमाका.* रोकाई, अटकी

खचखची *प्रेमाका.* खीचोखीच

खचर *षडाबा.* आकाशमां ऊडता (सं.)

खजड *आरारा(व).* वृक्षविशेष, [*खीजडो] (सं.खर्ज, प्रा.खज्ज ?)

खजमति, खजिमति, खिजमति, खिजमती *ऐतिका. हम्मीप्र.* खिदमत, सेवाचाकरी

खजिनो, खजीनो *देवरा. हम्मीप्र.* खजानो (फा.खजिन)

खजिमति जुओ खजमति

खजीनो जुओ खजिनो

खजुअउ, खजूअउ *उक्तिर. वाग्भबा.* खद्योत, आगियो

खजूरउ *उक्तिर.* [*खजूरनो कोई प्रकार, *खलेलुं, *खारेक] (सं.खर्जुरकः)

खज्ज- *तेरका.* खवावुं (सं.खाद्य-)

खट *अखाका. आरारा. चित्तसं. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. नलाख्या.* छ (सं. षट्)

खटकइ *लावल.* खट खट एवो अवाज करे

खटकर्म *आरारा. प्रेमाका.* ब्राह्मणे करवानां छ कर्म; *प्रेमाका.* सवारे करवानां छ नित्यकर्म

खटकाय *आरारा. देवरा.* छ प्रकारना जीव, छकायना जीव (सं.षट्काय) [जै.]

खटकुइ *शृंगामं.* खटके

खटचक्र *प्रेमाका.* योगदर्शन प्रमाणे मनुष्यनां शरीरनां छ चक्रो

खटण *ऐतिका.* प्राप्त करनार

खट तस्कर *प्रेमाका.* छ चोर : काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद अने मत्सर

खट दरिशण, खट दर्शन *अखेगी. विक्ररा.* छ दर्शन[शास्त्रो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खटदश रूप *नरका.* सोळ शणगार

खटपट *प्रेमाका.* चिंता, [उचाट]; *अखाका.* वादविवाद, [झघडो]

खटपद् *दशस्कं(१). प्रेमाका.* षट्पद, भमरा

खटमल *उक्तिर.* मांकड (सं.खट्वामल्ल)

खटमुखवाहन *दशस्कं(१). प्रेमाका.* षण्मुख – कार्तिकेयनुं वाहन एटलेके मोर

खटमे *प्रेमाका.* छट्ठे

खटवुं *अखाछ.* खाटवुं, फाववुं

खटी **दशस्कं(१). *प्रेमाका.* [*खटखटती, *खखडती]

खटूके *नरका.* [खटकखटक] अवाज करे

खडइ *आरारा.* खडो रहेजे, ऊभो रहेजे

खडकी *नेमिछं. प्राचीफा.* घर आगळनी बांधेली बारणावाळी छूटी जगा, डेली, [डेलीनो] दरवाजो (दे.खडक्की)

खडके *लावल.* ढगले

खडग *उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या. प्रेमाका.* खांडुं, तलवार (सं.खड्ग); *कादं(शा).* गेंडो; तलवार (सं.खड्ग)

खडग्ग *तेरका. प्राचीफा.* तलवार (सं.खड्ग)

खडताले *मदमो.* [खरीना प्रहारपूर्वक], चट दईने, [वेगपूर्वक]

खडधान *प्रेमाका.* हलकी जातनुं अनाज – राजगरो, मोरैयो वगेरे

खडभड्य *नरप(द).* *गडभांज, [खटखट, धांधल, पीडा]

खडहडइ *उक्तिर. *नेमिछं. प्रद्युच्. प्राचीसं.* [कडकडाट करे, खळभळे, लडथडे], खखडी पडे, तूटी पडे

खडहडी **नेमिछं.* [कोपरुं, सूका नाळियेरनी काचली]

खडहली *चारफा.* कडकडीने, [तीव्र] (दे.)

खडियो, खडीउ *जिनरा. प्रेमाका. *विमप्र.* थेलो, झोळी, खलतो

खडी *नेमिछं. लावल.* ऊभी

खडी *उक्तिर. नेमिछं. षडाबा.* धोळी माटी (सं.खटिका)

खडीउ जुओ खडियो

खडी घसी *प्रबोप्र.* स्पष्ट स्वरूपमां जणावी

खडु *आरारा.* चाखडी (हिं.खडाउ)

खडु खाबडां *प्रेमाका.* खाडा-खाबोचियां

खडोकळी *दशस्कं(१).* कुंड, होज

खडोखडी *उषाह.* नानो कुंड

खडोखली, खड्डोखलिय, खंडोखलि *अंबरा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. चारफा. जिनरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल.* क्रीडा माटेनी नानी वाव, कुंड, होज [दे.खड्ड+ओखली]; जुओ खलोखली

खढहढ *विमप्र.* खळखळ करतां

खण *उक्तिर.* मजला, माळ [रा.]; खंड, ओरडो (सं.क्षण)

खण *उक्तिर.* [?] (सं.क्षणः)

खण, खणु *कामा(त्रि). गुर्जरा. प्रबोप्र.* क्षण, पळ

खणइ *अखाका. उक्तिर. गुर्जरा. प्रबोप्र. प्रेमाका. सिंहा(म).* खोदे (सं.खनति)

खणण *षडाबा.* खनन, खोदवुं ते

खणश *प्रेमाका.* शंका, अंटस, वेरझेर

खणावइ *आरारा.* खोदावे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खणीतउ *षडाबा.* खोदातो (सं.खन्)

खणु जुओ खण

खणेत्रउ *उक्तिर.* कोदाळी, खुरपी (सं. खनित्रम्)

खत *उक्तिर.* घा (सं.क्षत)

खत्ती *अभिऊ.* क्षत्रिय

खत्र *गुर्जरा.* सारुं, [उचित] [सं.क्षात्र]; जुओ अखत्र

खद्ध *प्रबोप्र.* खाधेलुं, [करडेलुं] (सं.खादित)

खद्योत *अखाका. अखेगी. प्रेमाका.* आगियो (सं.)

खनक *षडाबा.* खोदनार (सं.)

खप *अखाका. अखेगी. *उपबा. प्रेमाका. षष्टिप्र.* श्रम, प्रयत्न, [उद्यम] (सं.क्षप्); *आरारा. नरका. नलरा.* उपयोग (सं. क्षप्); *अंबरा.* इच्छा; जुओ हेत-खप

खपइ *अखाका. गुर्जरा.* वपराय, उपयोगी थाय (सं.क्षप्यते); *अखाका. गुर्जरा.* पूरां थाय, नाश पामे; *अखाछ.* जोईए

खप करी *दशस्कं(२).* खंतथी, [प्रयत्न करी]

खपरियो **चंद्रवा.* [*हळधारी, *खेडूत]

खपाया *ऐतिका.* पूरां कर्यां, नाश कर्यो

खपावइ *षडाबा.* पूरां करे, नाश करे

खपुआं, खपुवा *दशस्कं(२). प्रेमाका.* शस्त्र-विशेष

खबेर *प्रेमाका.* समाचार, (प्रास मेळववा माटे 'खबर'नुं रूप)

खभेडइ **विमप्र.* [धांधलधमालपूर्वक]

खमइ **उपबा. गुर्जरा. षडाबा.* क्षमा करे (सं.क्षम्); *उपबा.* सहन करे

खमण *गुर्जरा.* उपवास (सं.क्षपण)

खमण **अखाका.* [अभिवादन] [रा.]

खमणउ *विक्रच.* श्रमण, साधु [सं.क्षपण]

खमणा *प्रबोप्र.* जैन [साधु] [सं.क्षपणक]

खमयो *ऋषिरा.* क्षमा करजो

खमवुं **अखाका.* [*धारण करवुं, *उपाडवुं]

खमाया *ऐतिका.* खमाव्या, क्षमा मागी

खमावीउ *शीलक. शृंगामं.* क्षमा मागी

खमासण, खमासणु *उक्तिर. षडाबा.* एक जैन वंदनक्रिया (सं.क्षमाश्रमण)

खमि *गुर्जरा.* क्षमामां (सं.क्षम्)

खय *तेरका.* क्षय, [क्षीण थवुं ते]

खयडउ *उक्तिर.* खेडुं, गाम (सं.खेटक)

खयन *आरारा.* क्षय

खयर *आरारा(व).* खेर, खेरियो बावळ (सं.खदिर)

खयरवडी *उक्तिर.* खदिरनी गोळी (सं. खदिरवटिका)

खया *ऋषिरा.* क्षय, नाश

खर *अखाका.* क्षर, नाशवंत

खर जुओ कखर

खर जुओ खंतिक्खर

खरखशो **चतुचा.* [झंझट, उपाधि, *चिंता]

खरच-खूटण *प्रेमाका.* *खर्चमां पडती तूट, [परचुरण खर्च, हाथखर्ची]

खर-छूच *प्राचीसं.* ?, [*टूंका बरछट वाळ, *वाळना खूंपरा]

खरजे *प्रेमाका.* खरजवाथी, खूजलीथी [सं. खर्जू]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खरड *षष्टिप्र.* हलकी मनुष्यजाति (प्रा.)

खरदूखर *अंगवि.* खरदूषण, [ए नामना बे राक्षसयोद्धा]

खरमां **लावल.* [एक फळमेवो, खजूर] [फा. खुर्मा]; जुओ खुरमा

खरवलतउ *षडाबा.* खणतो, खोतरतो

खरसणीउ *आरारा(व).* एक वनस्पति, खरसण, खरसाणी – खरसांडी, के खरसाणी – एक थोर ?

खरसिल *प्राचीसं.* खरशिला, आधारशिला

खरहडी *उक्तिर.* कोपरुं, सूका नाळियेरनी काचली (*सं.खरकाष्ठिका)

खरहर **गुर्जरा. लावल.* करकरा

खरंटितु *षडाबा.* खरडायेलुं, अशुद्ध थयेलुं (प्रा.खरंट)

खराप *अखाका.* *खराब, [विनाश, बरबादी] (अ.खराब)

खरारे, खरार्य *अखाछ. चित्तसं.* खरेखर

खरीअ *लावल.* खरी, सुंदर, मोटी [सं.खर-]

खरीदार *सिंहा(शा).* खरीददार, [खरीदनार] (फा.)

खरेरो *प्रेमाका.* घोडाना शरीर उपरनी धूळ साफ करवानुं साधन [हिं.खरहरा]

खल *उक्तिर. षडाबा.* तल वगेरेनो खोळ; खळुं (सं.)

खळ *प्रेमाका.* खल, कपटी, लुच्चुं

खलइ *आरारा.* स्खलित थाय, चूके; *कादं(शा).* पडे (सं.स्खलति)

खलइ *षडाबा.* खळामां

खलउ *उक्तिर.* खळुं (सं.खलम्)

खलका *उपबा.* खणखणाट, रणकार

खलके, खळके *ऋषिरा. गुर्जरा. प्रेमाका. लावल.* *खळखळ अवाज करे, खखडे, रणके

खलखल *कादं(धु).* खणखण, [सांकळनो अवाज]

खलबत *मदमो.* खानगी बेठक, [मुग्ध एकांत गोष्ठि] [फा.खलाबत]

खलहल, खळहळ *तेरका. प्राचीसं. वीसरा.* खळखळ

खळहाण *उक्तिर.* खळुं (सं.खलधान्यम्) [हिं.खलिहान]

खलहिउ **गुर्जरा.* [दुष्टताभर्युं आचरण कर्युं]

खलाया *शृंगामं.* स्खलितथया, [ठोकरखाधी]

खली *उक्तिर.* तैली धान्यनो खोळ (सं.खलिः)

खलीता **प्रेमाका.* [थेला] [फा.खरीतो]

खलूकि *अभिऊ.* खळके, अवाज करे

खलेलुं *हरिख्या.* खजूरीनुं फळ

खलोखली *प्रेमाका.* खडोखली, क्रीडावाव; जुओ खडोखली

खल्या *लावल.* खाळ्या, [रोक्या], पाछा वाळ्या

खल्ली *उक्तिर.* वायुप्रकोपने कारणे चडती खाली (सं.)

खव- **प्राचीफा.* [झबकवुं, चमकवुं] [सं. क्षिप्]; जुओ खिवइ

खवा *विमप्र.* खभा (दे.खवय); जुओ खवे

खवा (खवा काढी) **विमप्र.* [*खभे उचाळा लई]

खवाखाजि **गुर्जरा. विराप.* [खभानी]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंजवाळ, चळ (दे.खवय+सं.खजू)

खवास *प्रेमाका.* सेवक, [हजूरियो] (फा.)

खवासी *नरका.* सेवा

खवु खोटी *कृष्णच.* खभो ठोकीने

खवे *गुर्जरा.* खभे [दे.खवय]; जुओ खवा

खशबोई, खसबोई *मदमो. वेताप.* खुशबो

खसइ *उक्तिर.* [*ईजा करे, *खसेडे, *खसे] (सं.खषति) [दे.]

खसर **विमप्र.* [घसारो, उझरडो]

खं *अखाका.* आकाश, [आकाश समुं ब्रह्म] [सं.ख]

खंखर *शृंगामं.* ठूंठुं, [हाडपिंजर]

खंखोळी *प्रेमाका.* खोळीखोळी, शोधीशोधी

खंच *विमप्र.* खचको, खचकाट [प्रा.]

खंचइ *नरका. प्राचीसं.* खेंचे, [ताणे]; *नंदब. प्राचीफा.* खेंचे, [पकडे, ग्रहण करे], राखे; *ऋषिरा.* [पाछुं खेंचे], रोके; *वीसरा.* खेंचे, घसडे (प्रा.)

खंचइ(दृष्टि न खंचइ धार) *विक्ररा.* रोके, [नजरनो प्रवाह रोकाय नहीं, नजर एकटश बने]

खंचि करि *प्राचीसं.* खेंचीने, [ताणीने, लंबावीने]

खंजन *ऋषिरा. प्रेमाका.* ए नामनुं पक्षी (सं.); [गालना] खाडा; *नरका.* चपळता-(वाळां), चंचळता(वाळां)

खंड *आरारा.* प्रदेश (सं.); *षडाबा.* खांड (सं.)

खंड *तेरका.* खांडु, [तरवार] (सं.खड्ग)

खंडइ *आरारा. उक्तिर. षष्टिप्र.* खंडन करे, खांडे, तोडे (सं.खंडयति)

खंडउ, खंडू *उषाह. वीसरा.* खांडुं, तरवार (सं.खड्ग)

खंडण *तेरका.* खंडन करनार (सं.खंडन)

खंडणा, खंडना *अखाछ. प्रेमाका.* टुकडा करवा ते

खंडविखंड जुओ विखंड

खंडायितु *उक्तिर.* तलवारधारी

खंडी *उक्तिर.* खंडित, खांडी, तूटेली

खंडू जुओ खंडउ

खंडोखलि जुओ खडोखलि

खंडोखंड *ऋषिरा.* टुकडेटुकडा

खंति *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. शीलक. शृंगामं.* खांत, होंश, उमंग (सं.क्षान्ति)

खंति **ऐतिका.* [क्षमा, शमभाव]

खंतिक्खर (खंति खर खग्गु) **ऐतिका.* [क्षांतिरूपी – उपशमरूपी कठोर खड्ग]

खंध *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं.* खांध, खभो (सं.स्कंध)

खंधवालि *गुर्जरा.* केशवाळी (सं.स्कंध+वाल); जुओ खंधावलि

खंधागलि *गुर्जरा.* खभा पर चडवानी क्रीडा (सं.स्कंधकेली)

खंधार *उक्तिर. प्रबुचु. *विमप्र. हम्मीप्र.* सैन्यनो पडाव, छावणी, शिबिर (सं. स्कन्धावार)

खंधावलि **विमप्र.* [केशवाळी]; जुओ खंधवालि

खंध्ये *चित्तसं.* खंधे, खभे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंपण *आरारा. ऋषिरा. प्राचीसं.* *रूपच. *विमप्र.* खांपण, क्षति, दोष, कलंक, एब

खंभ, खंभा *गुर्जरा. प्रेमाका.* स्तंभ, थांभला

खंभायत *प्राचीसं.* खंभात [सं.स्कंभादित्य]

खाखत्य **नरप.* [खेधे, केडे, पाछळ]; जुओ खांखते

खाखर *नरका.* खाखरो, केसूडानुं वृक्ष

खाखसि **गुर्जरा.* [*सफाचट]

खाग्य *ऐतिरा.* खड्ग, खडग वापरवामां, [शूरवीरतामां]

खाज *उक्तिर.* खंजवाळ, खूजली (सं.खर्ज्जूः)

खाजइ *उक्तिर.* खंजवाळे

खाजइ *उक्तिर. विराप.* खवाय (सं.खाद्यते)

खाजलु, खाजहलउ *उक्तिर.* खाद्यपदार्थ (सं. खाद्यफलम्)

खाट *उक्तिर. नेमिछं. लावल.* खाटलो, [पलंग] [सं.खट्वा]

खाटइ *ऐतिका. जिनरा.* प्राप्त करे

खाटकडी *नरका.* सूवा माटेनी खाट

खाटि *उक्तिर.* खाट, खाटलो, पलंग (सं. खट्वा)

खाण, खाण्य *अखाका. अखाछ. चित्तसं. नरका-२.* उत्पत्तिस्थान, जीवयोनि; *चित्तसं. नलाख्या.* खाडो (सं.खनि)

खाण *विमप्र.* घोडाओने खावानुं जोगाण [सं.खादन]

खाणहार *षष्टिप्र.* खानार (सं.खादन+कार)

खाणि, खाणी, खांणि *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा. षडाबा.* खाण, भंडार (सं.खनि)

खाणी (वाणी-खाणी) *अखाछ.* [बोलवा-ना] ढंग, [बोलचाल] [हिं.खानि; रा.खाणि]

खाणीकणउं *उक्तिर.* खाउधरुं, भोजनप्रिय (सं.खादन परथी) [रा.खांणखंडौ]

खाण्य जुओ खाण

खात *आरारा.* खातां

खात *प्राचीका.* कीर्ति (सं.ख्याति)

खात्र *उक्तिर.* (खेतरमां नाखवानुं) खातर [दे.खत्त]

खात्र *उक्तिर. लावल. विक्ररा.* खातर, चोरी करवा माटे घरमां प्रवेशवा भींतमां पाडवामां आवतुं काणुं (दे.खत्त)

खाप *प्रेमाका.* दर्पण, अरीसा; आभलां, [काच, अबरख वगेरेनी पतरी, चीप]

खाप **कस्तुवा.* [खांपण, कलंक]

खापड्यो चोर *पंचवा.* खापरो चोर

खापण, खांपण *गुर्जरा. चंद्रवा. प्रेमाका.* *खोट, खामी, क्षति

खापर, खापरउ, खापरुं *उपबा.* **विक्रच.* भीखनुं शकोरुं (सं.कर्पर); *उक्तिर.* शकोरुं, ठीबडुं (सं.खर्परः)

खामणउं *उक्तिर. षडाबा.* क्षमा मागवानी एक जैन क्रिया

खामणुं *अखाका.* वासण मूकवानी बेसणी – बेठक; *प्रेमाका.* *कद, [बांधो, काठुं]

खामे *अखेगी.* खामणामां, [खाडामां]

खामो *ऐतिका.* कमी, त्रुटि, [खामी, चूक]

खाय हाडा *अखाका.* फोगट फांफां मारे,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[दोडादोडी करे]

खायिक *आनंस्त.* क्षायिक, कर्मनो क्षय थवाथी उत्पन्न थतुं [जै.]

खार *उक्तिर.* क्षार, मीठुं

खारा *प्रेमाका.* खार–ईर्षाथी भरेला, [वेरझेर-वाळा, अकारा]; *प्रेमप.* अकारा, दुःखी

खारिक, खारिकि *आरारा(व). उक्तिर. लावल.* खारेक (दे.खारिक्क)

खारेख *आरारा(व).* खारेक (दे.खारिक्क)

खाल, खाळ *गुर्जरा. प्राचीसं. शीलक.* खाळ, [नीक, मोरी]; *वीसरा.* जळप्रवाह (दे.)

खाल *चंद्रवा.* छाल, [चामडी] (दे.खल्ला)

खालि *आरारा.* [खाळ], नालिका, नीक (दे.)

खालि **उपबा.* [*खाडामां] (अप.खयाल)

खाळी (खाळी लीध) *नरका.* पडावी [लीधा]

खाले पड्यो *प्रेमाका.* पाछळ पड्यो

खास *आरारा. उक्तिर.* खांसी (सं.कास)

खासइ *उक्तिर.* खांसी खाय (सं.कासते)

खासर, खासरुं *अंबरा. गुर्जरा.* खासडुं

खासा *उषाह. प्रेमाका.* खास प्रकारना, सारा, [उत्तम, सुंदर]; *प्राचीफा.* एक कीमती वस्त्र, [*उत्तम, *सुंदर] [फा. खास]

खासी *प्रेमाका.* ('खवासी'नुं प्रास मेळववा माटेनुं रूप), सेविका, दासी

खांखते *नरका.* केडे, पाछळ, [खेधे]; जुओ खाखत्य

खांखल *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* खखडी गयेला, हाडपिंजर समा

खांखलपांखल जुओ छांछलपांछल

खांगुं *अभिऊ.* त्रांसुं, [आडुं]

खांचइ *आरारा. प्रेमाका.* खेंचे (रा.) [प्रा. खंच]

खांचियइं *षडाबा.* खेंचवामां आवे, नाखवा-मां आवे (प्रा.खंच)

खांडउ *उक्तिर.* तूटेला शींगडावाळो (आखलो) (सं.खंडित)

खांडणां *कृष्णबा.* खांडतां गवातां गीत, खायणां

खांडमी *प्रेमाका.* भोजननी एक [फरसी] वानी, [खांडवडी]

खांडासरमु *गुर्जरा.* तलवार चलावची ते (सं.खड्गश्रम)

खांडी *दशस्कं(१). दशस्कं(२). *प्रेमाका.* खांडां [–तूटेलां] शींगडांवाळी [गाय]; *जिनरा.* खंडित, भांगेली

खांडुं *अखाका. उक्तिर. प्रेमाका. लावल. शृंगामं.* खड्ग, तलवार

खांडो *प्रेमाका.* खंडित

खांणि जुओ खाणि

खांत, खांति *अखाका. लावल.* काळजी; *गुर्जरा.* *धैर्य, [काळजी, उद्यम, उत्साह]; *आरारा.* होंश; *चतुचा. नरका. नलाख्या. विक्रच.* होंश, इच्छा; *नरका.* लालसा, [तृष्णा] (सं.क्षान्ति)

खांधउ *उक्तिर.* खांध, खभो (सं.स्कंध)

खांध्य (खांध्य भागवी) *अखाका.* खांध – गरदन [मारवी], [नाश करवो]

खांपण जुओ खापण

खांपी नाख्यो *प्रेमाका.* तोडी नाख्यो, [सोरी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाख्यो, उझेडी नाख्यो]

खांमइ *ऋषिरा.* खमावे, क्षमा मागे (सं.क्षम् परथी)

खांवंन *नंदब.* खाविंद, [मालिक]

खांसकरणु *षडाबा.* खांसी खावी ते (सं. कास)

खिजमति, खिजमती जुओ खजमति

खिज्ञ- *प्राचीसं.* खेद पामवो, क्लेश थवो (सं.खिद्यते)

खिडियुं *आरारा.* रचायेलुं, पर ऊभेलुं (रा.)

खिण *आरारा. ०कामा(त्रि). ऋषिरा. गुर्जरा. देवरा. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल.* क्षण, पळ, अत्यंत अल्प समय; *विक्ररा.* [पर्वदिवसनुं] व्याख्यान; जुओ क्षण

खिणमात *देवरा.* क्षणमात्र

खिणि *आरारा.* क्षणे, समये

खिणिखिणि *लावल.* क्षणेक्षणे

खिणु *नरका.* क्षण, पळ

खिति *प्रबोप्र.* पृथ्वी (सं.क्षिति)

खित्तवाल *ऐतिका.* क्षेत्रपाल, [क्षेत्ररक्षक देव]

खित्री *आरारा.* क्षत्रिय

खिपइं *गुर्जरा.* खपे, नाश पामे; जुओ खपइ

खिपकश्रेणि **देवरा.* [मोहनीय कर्मनो जेमां क्षय थाय छे एवी गुणस्थानकनी श्रेणी] [सं.क्षपकश्रेणि] [जै.]

खिप्र *आरारा.* उतावळ; तरत (सं.क्षिप्र)

खिमा, खीमा *आरारा. देवरा. प्राचीफा. सिंहा(शा).* क्षमा

खिर *नलाख्या.* खेरनुं झाड (सं.खदिर)

खिरइ *उक्तिर. नेमिछं.* खरे (सं.क्षरति)

खिल. *तेरका.* खेलवुं, क्रीडा करवी (सं.खेल्)

खिल्ल- *प्राचीसं.* खेले, [जुगारमां होडमां मूके]

खिवइ, खिवाइ *प्राचीसं. वीसरा.* चमके, झबकारा करे (सं.क्षिपति); जुओ खव-, खींबें

खिसइ *उक्तिर. लावल.* खसे, [सरके, बाजु पर जाय]; *आरारा. षडाबा.* खसे, जतुं रहे; *ऐतिका.* हटे, [आघा जाय, अटके]; *जिनरा.* सरके, [जाय, आगळ जाय] (प्रा.)

खिसरहंडी *उक्तिर.* [?] (सं.क्षिप्रसरहिंडिका)

खिहाला *ऐतिका.* खाद्य वस्तुविशेष, [*कंद-विशेष], [*दे.खिल्लहल]

खिंगाल **अभिऊ.* [प्रलयाग्नि] [सं. क्षयांगार]

खीच, खीचु *उक्तिर.* खीचडी; **गुर्जरा. विराप.* लोचो (दे.खिच्च)

खीज *अखाका.* क्रोध, [खिन्नता]

खीजइ *उक्तिर. गुर्जरा.* खिन्न थाय; *लावल.* *खिजाय – गुस्से थाय; खिन्न थाय, (सं. खिद्यते); *प्रेमाका.* गुस्से थाय

खीजविय *प्राचीसं.* खीजवी, दुःखी करी, पजवी

खीजवे *नरका.* चीडवे, [परेशान करे]

खीटलां *अभिऊ.* [काने] पहेरवानुं घरेणुं

खीटलिया, खीटलियाळा, खींटळियाळा *दशस्कं(१). प्रेमप. प्रेमाका.* वांकडिया, गूंचळावाळा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीटली, खींटली *नरका. नलरा. *नेमिछं. प्राचीफा. लावल. विमप्र.* स्त्रीओनुं काननुं घरेणुं

खीण *आरारा. उपबा. गुर्जरा. चित्तसं. जिनरा.* क्षीण, दुर्बल; *मदमो.* खोट

खीणइ *गुर्जरा.* क्षीण थाय

खीणपण *कृष्णबा.* क्षीणता

खीणा *जिनरा.* क्षीण[मोह], [मोहनीय कर्म ज्यां क्षीण – नष्ट थयां होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

खीन, खीना *तेरका. प्राचीसं.* खिन्न

खीमा जुओ खिमा

खीर *कादं(ध्रु). *गुर्जरा. नलरा. मदमो. विराप.* दूध (सं.क्षीर)

खीरणा, खीरणी *आरारा(व). उक्तिर.* खीरण, खीरवेल, एक वनस्पति

खीरवास *अभिऊ.* बारीक सफेद रेशमी वस्त्र (सं.क्षीर+वासस्)

खीरह *ऐतिका.* क्षीर, दूध

खीरि *उक्तिर. षडाबा.* खीर (सं.क्षैरेयी)

खीरोदक *अभिऊ. ऐतिरा. *गुर्जरा. नरका. पंचवा. प्रेमाका. विमप्र.* एक जातनुं धोळुं रेशमी वस्त्र (सं.क्षीरोदक); **विमप्र.* [क्षीरसागर]

खीलइ *उक्तिर. चारफा. हरिख्या.* रोके, [स्तंभित करे, बांधे] (सं.कीलयति)

खीलउ *उक्तिर.* खूंटो, स्तंभ (सं.कीलकः)

खीसउ *उक्तिर.* थेली, पाकिट, गजवुं [अ. कीसः]

खींख *अंबरा.* हरकत, [हानि] [रा.खीखां]; *उक्तिर.* विनाश (सं.क्षिति); जुओ खींव

खींचाताणि *आरारा.* खेंचताण, आनाकानी

खींचे *नरका.* खेंचे

खींटळियाळा जुओ खीटलियाळा

खींटली जुओ खीटली

खींबें *०जिनरा.* चमके, कडाका करे; जुओ खिवइ

खींव [***खींख**] *कर्पूमं.* नुकसान [रा. खीखां]; जुओ खींख

खुटकइ *गुर्जरा.* खटके (दे.खुडुक्क)

खुडत *गुर्जरा.* आखडता [दे.खुडिय]

खुत्तउ, खुतउ *गुर्जरा. प्राचीसं.* खूत्यो, [खूंप्यो, गरकाव थयेलो] [दे.]

खुदालिम, खुंदालिम *हम्मीप्र.* शहेनशाह (फा.)

खुभइ *उक्तिर. गुर्जरा.* क्षुब्ध थाय (सं.क्षोभते)

खुर, खुरउ *उक्तिर. उषाह. गुर्जरा. प्रेमाका.* पगनी खरी (सं.क्षुर)

खुरमा **नेमिछं.* [एक फळमेवो, खजूर] [फा.खुर्मा]; जुओ खरमां

खुरुणा** [परुणा**] *नंदब.* ?, [परोणो, महेमान]

खुलु *अभिऊ. नलाख्या.* खोळो (दे.खोल= वस्त्रनो एक भाग, ते परथी)

खुसइं **गुर्जरा.* [खोसे, अंदर धकेले, घाले] [रा.; दे.खुसिय] (**सं.कुष्यति*)

खुहे *नंदब.* खूए

खुंट *षष्टिप्र.* निरंकुश माणस

खुंटियइ *गुर्जरा.* खेंची कढाय, तोडाय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(दे.खुट्टइ)

खुंदकार *हम्मीप्र.* खूनी, [खूंखार, जालिम, क्रूर] (फा.खूंख्वार)

खुंदालिम जुओ खुदालिम

खुंप, खूप, खूंप *उषाह. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. स्थूलिफाः* माथा उपरनो पुष्पनो एक शणगार, शहेरो (दे.खुंपा)

खूटवइ *गुर्जरा.* खुटाडे, दूर करे (दे.खुट्ट)

खूण *हरिवि.* *कलंक, *लांछन, [अपराध, पाप] (दे.)

खूणालउ *लावल.* खूणावाळो [सं.कोण-]

खूतउ जुओ खुत्तउ

खूप जुओ खुंप

खूपइ *उक्तिर. षडाबा.* खूंपे, ऊंडुं पेसे

खूह *जिनरा.* *खभो, [कूवो] [रा.]

खूंखारी *प्रेमाका.* खोंखारो करी

खूंट *अखाका.* माप, हद, सीमा; खूंटी, अवरोध [दे.खुंट]

खूंटइ *गुर्जरा.* खेंची काढे, तोडे (दे.खुट्टइ)

खूंटीइ *विराप.* *खोतरीए, [खेंची काढीए]

खूंधा *प्रेमाका.* खूंधवाळा

खूंप जुओ खुंप

खूंपु जुओ कूंपु

खेअ *मदमो.* क्षय

खेउ *गुर्जरा.* खेद

***खेकट [खेटक]** *विक्रच.* ढाल [सं.खेटक]

खेकारि *देवरा.* क्षयकारी, [विनाशकारी]

खेचर *चित्तसं.* आकाशमां ऊडनारा [सं.]

खेचरी *प्रेमाका.* पक्षिणी

खेचरु *गुर्जरा.* आकाशमां ऊडनार (देव के देवकल्प योनि)

खेचित *देवरा.* [(रत्नो वगेरे) जडेली] [सं.खचित]

खेजडी *गुर्जरा. विराप.* खीजडो, शमीवृक्ष

खेटक *प्रेमाका.* खेडनार, हांकनार

खेटक जुओ खेकट

खेड *उक्तिर.* गाम (सं.खेट)

खेडइ *लावल.* ढाल वडे (सं.खेटक)

खेडइ *उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या. प्राचीफा. प्रेमाका. विक्ररा. विराप.* हांके, चलावे, आगळ लई जय, (प्रा.खेड); *ललिरा.* [धसे]

खेडउं *उक्तिर. उपबा. लावल. *विमप्र.* ढाल (सं.खेटक)

खेड खेड करंता *मदमो.* दडमजल करतां

खेडावि *नलाख्या.* हंकावे, [चलावडावे]

खेडु *अखाका.* ढाल (सं.खेटक)

खेडु *दशस्कं(१).* कापवानुं एक ओजार

खेडुं *अखाछ. मदमो.* गामडुं [सं.खेट]; *प्रेमाका. रूस्तस. लावल. *विमप्र.* ढाल [सं.खेटक]

खेडुं *दशस्कं(२).* खड्ग, तलवार; जुओ खइडां

खेडू, खेडूं *कादं(ध्रु). कादं(शा).* षड्ज स्वर, [खरज, संगीतनो स्वरविशेष]

***खेण** *नरप(द).* क्षण

खेत *अखाका.* क्षेत्र, रणक्षेत्र

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेतरपाल *ऐतिका.* क्षेत्रपाल, [क्षेत्ररक्षक देव]

खेतल *उषाह. प्राचीसं.* क्षेत्रपाल, [खेतरनो रक्षक देव]

खेतलवीर *विमप्र.* क्षेत्रपाळ, [एक प्रकारना नीचली कोटिना देव]

खेत्र *आरारा. गुर्जरा. लावल.* क्षेत्र, स्थान, प्रदेश; जुओ क्षेत्र

खेत्रपाल *पंचवा.* क्षेत्रदेवता, खेतरनो रक्षक देव [सं.क्षेत्रपाल]

खेद *हरिख्या.* *क्रोध, [रंज, अप्रसन्नता]; जुओ क्षेद

खेदवुं **अखाका. नंदब. प्रेमाका. मदमो. वेताप. सिंहा(शा).* छेदवुं, [कापी नाखवुं]; *कृष्णच.* थकववुं, [पीडवुं]

खेप *आरारा.* नाखवुं ते (सं.क्षेप)

खेप *अखेगी.* *सफर, *मुसाफरी, [*खांत, *उद्यम]

खेपइं *शृंगामं. षष्टिप्र.* फेंके, नाखे (सं.क्षेप्)

खेपन *अखाछ.* गाळवुं ते, [व्यय करवो ते] (सं.क्षेपन)

खेपावुं *ऐतिरा.* नखावुं [सं.क्षिप्]

खेम *आरारा. कादं(शा). गुर्जरा. प्रेमप.* कुशळपणुं, सुख (सं.क्षेम)

खेमा *कामा(त्रि).* क्षमा

खेय *रूत्तस.* धूळ (दे.खेह)

खेरी *अखेगी.* घेटो

खेल **नलरा. विक्रच.* लीला, रंगराग, [क्रीडा, आनंदप्रमोद] [सं.]

खेलउ *प्राचीसं.* रमनारा, [नर्तक]

खेलणउ *उक्तिर.* खेलवुं ते, क्रीडा, रमकडुं (सं.खेलनकम्) [हिं.खिलौना]

खेलणा *०जिनरा.* क्रीडा

खेलन *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* क्रीडा माटे (सं.)

खेला **अंबरा. तेरका. *प्राचीफा.* रमनारा, खेलाडी, [नट, नर्तक] (सं.खेलकाः)

खेलाखेली **प्राचीसं.* [रमनारा-रमनारी]

खेली **अंबरा.* [नर्तकी, नटी]

खेलो *मदमो.* [*खेळ, *आर, *कांजी]

खेलो *नरका.* संघरो, संग्रह

खेव **प्रबोप्र.* [फेंकवुं ते, दूर करवुं ते, नाश] [सं.क्षेप]

खेव *आरारा. ऋषिरा. कृष्णच.* वार, विलंब (सं.क्षेप)

खेव *उषाह. ऋषिरा. कांद(धु). कादं(शा). चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. हरिख्या.* जलदी, तरत ज (सं.क्षिप्र); **कामा(शा).* [तरत तो, हमणां]

खेव *सिंहा(शा).* जलदी (के खेवनाथी ? काळजीथी ?)

खेवइ *आरारा.* नाखे, प्रसारे (सं.क्षेप्); *ऋषिरा.* नाखे, फेंके

खेवउ *प्राचीसं.* [अगरनो] उछाळ (सं.क्षेप)

खेवि (इणि खेवि) *कृष्णच.* आ क्षणे, अत्यारे

खेस *ऋषिरा. नलरा.* **विमप्र.* खार, द्वेष; **ऐतिरा. प्राचीफा.* क्षति, ऊणप (*दे.खस =खसवुं उपरथी) [रा.खेसौ]

खेह *प्राचीफा.* ?, [*पक्षी] [रा.खे]

खेह, खेहा *अंगवि. आरारा. गुर्जरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रद्युचु. प्राचीसं. प्रेमाका. रूस्तस. वीसरा. शृंगामं. सिंहा(शा). हम्मीप्र. धूळ, रज [दे.]

खेहाडंबर *वीसरा.* धूळनी डमरी

खेंम *चंद्रवा.* क्षेम, [कुशळपणुं, सुख]

खोई *प्रेमाका.* [बाळकने सुवाडवा माटेनी] झोळी

खोटारा *प्रेमाका.* खोटा, जूठा, [खोटाबोला]

खोटि *गुर्जरा.* सीमा, मर्यादा (दे.खोड); *आनंस्त. नलाख्या.* खोट, खामी, ऊणप

खोटियइ *षडाबा.* खोडीए, साथे जोडीए

खोड *नलरा. प्रेमाका.* थडियुं, लाकडुं (दे.; *सं.क्वोट)

खोड *प्रेमाका.* आफत, [दुःख, पीडा]

खोड- *प्राचीसं.* खंडित करे, फोडे

खोडउ *उक्तिर.* लंगडो [दे.; खारेक, खोटक]

खोडायइ *उक्तिर.* लंगडाय [रा.]

खोडि, खोडी *अभिऊ. उपबा. जिनरा. नलाख्या. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. विमप्र.* क्षति, खामी, खोड, [दोष] (दे.)

खोडी *उक्तिर.* फोल्ली (*सं.स्फोटिका) [*दे. खोडी]

खोडी *नरका-२.* खोडवाळी; *प्रेमप.* खोडवाळी स्त्री, कुब्जा

खोणि *ऐतिका.* क्षोणी, पृथ्वी

खोभइ *उक्तिर.* क्षुब्ध करे (सं.क्षोभयति)

खोल *उक्तिर.* माथे बांधवानुं वस्त्र (दे. खोल्ला)

खोलइ *आरारा.* बंधन छोडे

खोळबी *प्रेमाका.* खोळवाळुं, काचबो – कच्छप

खोवलउ *नलरा.* खोबो, खोबलो

खोसइ *आरारा.* लई ले, लूंटी ले (रा.); **गुर्जरा. *विराप.* [नष्ट करे]

खोह *ऋषिरा. *नरप(द). नलरा. प्रेमाका. शृंगामं.* खो, खीण, कोतर

खोही *चितसं. प्रेमाका.* खोई, गुम करी, दूर करी

खोही बांहे *प्रेमाका.* बांह्यमां – बाहुमां खोसीने – घालीने

ख्यात *प्रेमाका.* ख्याति

ख्याल **अखाका.* [कल्पना, तरंग, तरंग लीला]; **नरका.* [गम्मत, क्रीडा]

ख्याली **अखाका.* [कल्पनाक्रीडा करनार]

गइ *अभिऊ.* हाथी (सं.गज, प्रा.गय)

गइ *जिनरा. तेरका.* गति, जन्मयोनि

गइल **वीसरा.* [गमन, जवुं ते, प्रवास]; जुओ गजगेली, गेली, गैला

गइला *नरका-२.* गयो (म.)

गइवर, गइंवर *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* उत्तम गज, उत्तम हाथी (सं.गजवर)

गइंडउ *उक्तिर.* गेंडो (सं.गण्डकः)

गइंद *प्राचीफा. वीसरा.* हाथी (सं.गजेन्द्र)

गइंवर जुओ गइवर

गईमर *उषाह.* हाथी [सं.गजवर]

गउ *अभिऊ. गुर्जरा. नेमिछं. वाग्भबा. वीसरा.* गयो (सं.गत)

गउख, गउखु *उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. प्राचीफा. वसंवि. वीसरा. शीलक.* गोख,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झरूखो (सं.गवाक्ष)

गउंछणउं *उक्ति.* पात्र वगेरे साफ करवानुं कपडुं [दे.गोच्छअ]

गउड *ऐतिका.* गौडी रागणी

गउडीय *आरारा.* गोडी – एक तीर्थ [जै.]

गउण *जिनरा.* गमन, [चाल्या जवुं ते]; *आरारा.* जतां रहेवुं ते (सं.गमन; हिं. गवन, गौना); जुओ गवन

***गउयडइ [गडयडइ]** *ऐतिका.* गडगडे, [ढळी पडे]; जुओ गडमडत

गउर *उक्ति.* गौर, ऊजळो

गउरव *प्राचीफा.* वरनुं सन्मान करवा कन्या-पक्ष तरफथी अपातुं जमण (सं.गौरव); जुओ गोरवु

गउरी *ऐतिका.* गौरी [राग]

गउरी *वीसरा.* पार्वती (सं.गौरी); *गुर्जरा.* गाय (स.गौरी); जुओ गावरी

गच्छ *ऐतिका.* समुदाय [जै.]

गच्छ *विक्ररा.* जा [सं.]

गछी *सिंहा(शा).* चूनागच्छी, धाबो,

गज *नेमिछं.* हाथी

गज *नेमिछं.* बे फूट [साठ सेन्टिमिटर] अंतर

गजकोठा *चित्तसं.* गजकपित्थन्याय, हाथीए गळेला कोठानो न्याय

गजगाह **ऐतिका.* [वीर पुरुष] [रा.; *सं.गज+ग्राह]

गजगेली *आरारा.* गजगामिनी स्त्री (प्रा. गजगइल्ली)

गज-जुवती *नरका.* हाथणी

गजथर *उक्ति.* मंदिरमां हाथीओना शिल्पनी हारमाळा (सं.गजस्तरः)

गजथाट *ऐतिका.* हाथीओनो समूह, [हाथी जेवा गौरववंत पुरुषोनो समूह]; जुओ थाट

गजधर *लावल.* सुथार; [कडियो, स्थपति; दरजी]

गजमुक्ता *प्रेमाका.* हाथीना मस्तकमांथी नीकळतां मनातां मोती [सं.]

गजयज (गजवज) [*गजवय] *विमप्र.* हाथी [*सं.गजपति]

गजवड, गजवडि *गुर्जरा. प्राचीसं.* एक जातनुं *रेशमी कापड – गजचित्रयुक्त (सं.गजपटी)

गजवय जुओ गजयज

गजवाड *प्रेमाका.* हाथीखानुं

गजा **विमप्र.* [हाथीओ]

गजार *प्रेमाका.* रसोडा के भंडार तरीके वपराय एवो नानो खंड

गजियाणी *प्रेमाका.* एक प्रकारनुं रेशमी कापड – [गजना मापनुं]

गजियां *प्रेमाका.* गज पनानां कापड

गज्ज *तेरका.* गाज, (मेघ)गर्जना (सं.गर्ज-)

गज्जइ *गुर्जर. तेरका. लावल.* गर्जना करे, गाजे (सं.गर्जति)

गज्जु विज्जु *प्राचीसं.* गाजवीज (सं.गर्जितम् विद्युत्)

गड *उक्ति.* ढीमडुं, फोल्लो (सं.गडुः)

गड *कामा(त्रि).* *हाथी

गडगडती *प्रेमाका.* [गाजती, जगजाहेर], जाणीती

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गडदउ *अंबरा.* गडदो, [मूठीनो] प्रहार

गडमडत *गुर्जरा.* *गडगडतुं, *गडगडाट करतुं [*गबडी पडतुं]; जुओ गडयडइ

गडयडइ जुओ गउयडइ

गडार, गडारउ *उषाह. *प्राचीसं.* [मकानना पायानी ऊभणी, प्लिन्थ]

गडिया *शृंगामं.* बख्तर वगेरेथी सज्ज थयेल (दे.गुडिअ)

गडुलु *षडाबा.* [चोखा वगेरेनुं धोवण]

गढरि प्रवाह *आनंत.* गाडरियो प्रवाह

गढरोहउ *उपबा.* [गढने घेरो घालवामां आवे ते] (दे.गढ+सं.रोधक)

गढिउ जुओ अन्नलि गढिउ

गण *कर्पूमं. प्राचीफा.* गुण; *अभिऊ.* [धनुष्यनी] दोरी, [पणछ] [सं.गुण]

गणक *कांद(शा).* जोशी (सं.)

गणधर *कादं(धु). कादं(शा).* गंधर्व, गानारा

गणधर *ऋषिरा.* तीर्थंकरना प्रधान शिष्य

गणधार *गुर्जरा. चारफा. लावल.* जिनदेवना प्रधान शिष्य, अनुपम ज्ञानादि गुणयुक्त जैन साधु के आचार्य (सं.गणधर)

गणहर *ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं. षष्टिप्र.* गणधर; जुओ गणधार

गणि *उपबा. गुर्जरा.* साधुओना एक समूहना अधिपति (सं.गणिन्) [सं.]

गणित *नरका.* गणी शकाय एवुं, [हिसाब थई शके एवुं, पार पामी शकाय एवुं]

गणीअल *प्राचीका.* गुणियल, [गुणवान]

गणीउ *नलरा.* ज्योतिषी (सं.गणक)

गणीस *उक्तिर.* गणीवर, गणाधिपति (सं.गणिमिश्रः)

गणीस *विमप्र.* ओगणीस [सं.एकोनविंशति]

गणेश *आरारा-शु.* तेतर

गत *आरारा.* गति, [झडप]; *अखाछ. कामा(शा). नरका. प्रेमाका.* गति, दशा, स्थिति; *अखाका. प्रेमाका. मदमो.* गति, चाल, रीत; *नरका.* गति, [समज, बुद्धि, भान]; *चित्तसं.* गति, शक्ति

गतभंग *कामा(शा).* बेभान

गति *आरारा.* जवुं ते, गमन; जीवयोनि; *उपबा.* स्थिति, [जीवस्थिति, जीवनी अवस्था]; *वीसरा.* बाबत, [अवस्था, हालत] (सं.)

गतिमागु *गुर्जरा.* [पंचम गति एटले मोक्षनो मार्ग]

गत्य *चित्तसं.* गति, [स्थिति, दशा]

गत्यमत्य *नरका.* गति अने मति, [सानभान]

गत्य थाए *चित्तसं.* गत थाय, दूर थाय

गद *प्रेमाका.* [गद्य], कहेलां

गदकलां *नरका.* गतकडां, टोळ, मश्करी

गदहिला *उक्तिर.* बळद वगेरेने चलाववा माटे वपराती आर (दे.गद्दहिला)

गद्दहउ *उक्तिर.* गधेडो (सं.गर्दभ)

गद्य *प्रेमाका.* सीधांसादां वचन, [शब्दोमां कही शकाय एवुं]

गनीम *रूस्तस.* मराठा

गन्हउ *विक्ररा.* गुनो

गफा *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* गुफा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गब्भ *तेरका.* गर्भ

गभरु *अखाका.* [बच्चुं], वाछरडुं

गभार, गभारा, गंभारउ *उक्तिर. ऋषिरा. षडाबा.* गभारो, गर्भगृह, [देवालयनो अंदरनो भाग] (सं.गर्भागार)

गभु *गुर्जरा.* गर्भ

गभेलउ **गुर्जरा.* [नौकानो चाकर] (दे. गब्भेल्लग)

गम *अखाका. *अखाछ. गुर्जरा. प्रेमाका.* सूझ, दृष्टि, समज; *अखाका.* स्वरने कंपावीने गावुं ते, [एक प्रकारनो स्वरबंध]

गम *उषाह. [गम्य, मनमां लाववुं ते]; दिशा, [युक्ति, मार्ग]; *वीसरा.* गमन

गमइ *आरारा. गुर्जरा. लावल.* निर्गमन करे, पसार करे, वितावे [सं.गमयति]; *गुर्जरा.* सूझे

गमइ, गमइं **प्रद्युचु.* [तरफ, माटे]; *उक्तिर. नेमिछं. लावल. *विमप्र. षडाबा.* बाजुए, [दिशामां, तरफ] (सं.गम्य)

गमण *गुर्जरा. तेरका. लावल.* गमन

गमणागमणु *षडाबा.* गमनागमन, आव-जा

गमती *आरारा.* पसार करती

गमा *उक्तिर.* बाजु

गमाणि *उक्तिर.* गमाण (सं.गवादनी)

गमाया *नेमिछं. लावल. वीसरा.* गुमाव्या, नाश कर्यो

गमारि *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* गमार स्त्री (दे.गामार)

गमां *कामा(शा). चंद्रवा. नरका.* बाजु, दिशा, तरफ

गमांतरुं *सिंहा(शा).* गामतरुं [सं.ग्रामान्तर]

गमीआं *ऋषिरा.* गुमाव्यां

गमीजइ *विराप.* (दिवसो) पसार करीए. वितावीए (सं.गम्यते)

गमे *नेमिछं. विमप्र.* बाजुए, दिशाए, [तरफ]

गमेइ *आरारा. गुर्जरा. विराप.* (समय) पसार करे, वितावे (सं.गमयति)

गमें *आनंस्त.* प्रकारे

गम्य *चित्तसं. प्रेमाका.* गम, सूझ

गय *जिनरा.* गति, [जीवयोनि]

गय *अंबरा. आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. दैवरा. नेमिछं. विराप.* हाथी (सं.गज)

गयगत्त **प्रद्युचु.* [नष्ट] [सं.गतगात्र]

गयगमणी *आरारा. कृष्णच. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* हाथी-ना जेवी चालवाळी (सं.गजगमनी)

गयण *ऐतिका. ऐतिरा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. हरिवि.* गगन, आकाश

गयणगंग *तेरका.* गगनगंगा, [आकाशगंगा]

गयणंगण *गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. शृंगामं.* गगननुं आंगणुं (सं.गगनांगन)

गयदूषण *नेमिछं.* जेमनां दूषण गयेलां छे तेवा, दोष विनाना, [खामी विनाना]

गयमर *उषाह. गुर्जरा. नलरा.* हाथी (सं. गजवर)

गयय *तेरका.* गयुं (सं.गत+क)

गयराय *तेरका.* गजराज

गयवर *आरारा. गुर्जरा. विक्ररा. शृंगामं.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथी (सं.गजवर)

गयंद *अभिऊ. अंगवि. नरका. नंदब. प्राचीफा. मदमो. शृंगामं. हम्मीप्र. हरिवि.* हाथी (सं.गजेन्द्र)

गयंदर जुओ गयंधर

गयंदवय *प्राचीसं.* गजेन्द्रपद, [गिरनारनुं एक जलतीर्थ]

***गयंधर [गयंदर]** *विराप.* सुंदर हाथी, [उत्तम हाथी] [सं.गजेन्द्र]

गरइ *प्रबोप्र.* गळी जाय, [क्षीण थई जाय] (सं.गिरति); जुओ गरी पडे

गरकलुं (गरफलुं) *सिंहा(शा).* गळचटुं ?, [*फरसुं]

गरका *प्रेमाका.* टुकडा

गरकाव्य *अखाका.* गरकाव, [संकोडाईने चालवुं ते]

गरजण *चंद्रवा.* [गरजाण], गीधण, [गीध]

गरठ्ठिउ *ऐतिका.* गरिष्ठ, मोटो

गरढउ *आरारा. उक्ति्र. ऐतिका. कर्पूमं. नलरा. प्रद्युचु. प्रेमाका. वाग्भबा. विक्ररा.* घरडो, वृद्ध (सं.जरठ)

गरढपणि *प्रबोप्र.* घडपणमां

गरणां-गोर *वेताप.* गणागौर, गणगौरी, [पार्वतीनुं प्रतीक-रूप, जेनुं आ व्रतमां पूजन करवामां आवे छे]

गरत (घरत) *देवरा.* घी (सं.घृत)

गरथ *कामा(शा). नरका. प्रेमाका. *वीसरा.* नाणुं, धन

गरधव *मदमो.* गर्दभ, गधेडो

गरफलुं जुओ गरकलुं

गरब, गरबु *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* गर्व, अभिमान

गरभ **वीसरा.* [गर, अंदरनो मावो] (सं.गर्भ)

गरभु *प्राचीफा.* गर्व, अभिमान

गरवी *लावल.* गर्ववाळी

गरसली *नलरा.* स्त्रीनुं एक घरेणुं, [गलसिरी, गळानुं घरेणुं]

गरहइ *उक्ति्र.* निंदा करे (सं.गर्हति)

गरहणइ *विक्ररा. शृंगामं. हम्मीप्र.* घराणे, गीरो तरीके [सं.ग्रहणक; दे.गहण]

गराण **विमप्र.* [भारे, वजनरूप, अप्रिय] [फा.गिरां; हिं.गरां]

गरिट्ठ, गरिठ *आरारा.* गरिष्ठ, महान, महिमावंत

गरिहउं **षडाबा.* [निंदुं] [सं.गर्ह्]

गरी पडे *प्रेमाका.* खरी पडे, गबडी पडे; जुओ गरइ, गिरी पडवुं

गरीठो *ऐतिका. लावल.* गरिष्ठ, महान, श्रेष्ठ

गरीधर *प्राचीका.* कृष्ण (सं.गिरिधर)

गरुअओ *वसंफा.* मोटो (सं.गुरुक)

गरुई *आरारा. षडाबा.* मोटी (सं.गुरु+ई)

गरुउ, गरूउ *उक्ति्र. उपबा. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाग्भबा. षष्टिप्र.* गरवो, मोटो, महान (सं.गुरुक)

गरुज *हम्मीप्र.* गुरज, [गदा जेवुं] एक हथियार (फा.गुर्ज)

गरुयउ *उक्ति्र. चंद्रवा. तेरका. षडाबा.* मोटुं, गरवुं (सं.गुरुक)

गरुयड **ऐतिका.* [मोटाई, महत्ता]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गरुयडि, गरूयडि *शृंगामं. षष्टिप्र.* मोटाई; *आरारा.* गौरवपूर्वक
गरुवो *नरका.* गौरवशाळी
गरूअडी *नलरा.* मोटाई, माहात्म्य
गरूई *षडाबा.* मोटी (सं.गुरु परथी)
गरूउ जुओ गरुउ
गरूयडि जुओ गरुयडि
गरेणे *कामा(त्रि).* गीरवे [सं.ग्रहणक, दे.गहण]; जुओ ग्रहण
गर्थ *प्रेमाका.* पैसा, धन
गर्धव *दशस्कं(१).* गर्दभासुर
गर्भकमल *चित्तसं.* अंदर रहेल कमलरूपी अवयव [सं.]
गळ *वीसरा.* गळुं (सं.गल-)
गलअलइ *उक्तिर.* गळगळे, आर्द्र थाय
गलउ *आरारा.* गळ्युं, मीठुं
गळउ *वीसरा.* गळुं (सं.गल-)
गलकंवल *षडाबा.* गाय वगेरेनी गळा नीचे-नी लटकती चामडी (सं.गलकंबल)
गलकी *वेताप.* गंडकी नदी
गल गरजत *ऐतिरा.* गाल गजावता, [गाल-थी गर्जना करता]
गलगलीया *गुर्जरा.* गर्जना करी ऊठ्या (प्रा.गुलगुलइ)
गलगांठी *उक्तिर.* गळानी ग्रंथिओ (सं. गलग्रन्थयः)
गलचामीकर *सम्यचो.* [कंठनी शोभारूप] गळानो सोनानो हार [सं.]
गलणउ *उक्तिर. विक्ररा.* गळणुं, गरणुं (सं. गलनकम्)
गलतडी **उषाह.* [गळती, पाणी गळतुं रहे तेवी गोठवण]
गलशिथिल जुओ शिथिल
गलसरण *षडाबा.* हीबकां (सं.गलस्वर)
गळस्थळ *नरका. प्रेमाका.* गाल
गलहथउ *उक्तिर.* बोची पकडवी ते, पराजित करवुं ते (सं.गलहस्तः)
गलहथियउ *उक्तिर.* जेनी बोची पकडायेली छे ते, पराजय पामेल (सं.गलहस्तितः)
गलान्य *चित्तसं.* ग्लानि
गळा मांह्य पग घालुं जुओ पग घालुं गळा मांह्य
गलाल *प्राचीफा.* गुलाल
गलित *अखाळ. अखेगी. प्रेमप.* गळेलुं, नम्र, आर्द्र [सं.]
गलितपणे *अखेगी.* नम्रताथी
गलियार *उक्तिर.* गळियो बळद, हृष्टपुष्ट पण सुस्त बळद (सं.गलिः) [सं.गलित-]
गळियो *प्रेमाका.* चालवाने अशक्त, [चालवा न मागतो, सुस्त] [सं.गलित]
गलि साहै *जिनरा.* गळामांथी पकडीने
गली *नेमिछं.* ढीला थईने
गलीउ *नेमिछं.* गळयो, [मीठो] [सं.गुल्य]
गलीया *आरारा.* बेठुं ऊठे नहीं तेवुं, [सुस्त, आळसु] [सं.गलित]
गळुबंध *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गळामां पहेरवानुं आभूषण
गलेलवुं *सिंहा(शा).* ढीला थवुं, [गळिया थवुं]
गलोठुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गलोटियुं [दे. गलत्थिअ]
गलोढां *प्रेमाका.* गलोफां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गलोलां **नरप(द).* [टींडोरां]

गल्ल *कादं(शा). प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* गाल (सं.)

गवन *दशस्कं(१).* गमन; जुओ गउण

गवन-धवन *अखाका.* जवुं ते, [दोडधाम] (सं.गमनधावन)

गवरी *विराप.* गायो; जुओ गउरी, गौरी

गवाणि *उक्तिर.* गमाण, ढोरने ज्यां घास नाखवामां आवे छे ते स्थान (सं. गवादनी)

गवानिक *प्रेमाका.* [दररोज काढवामां आवतो] गोग्रास; जुओ गवांनक

गवालु *अंबरा.* गवाळो, सरसामाननो जथ्थो

गवाळो *प्रेमाका.* वस्त्र के सरसामाननो जथ्थो

गवाही *प्रेमाका.* साक्षी [फा.]

गवांनक, गवांनीक *सिंहा(शा).* गोग्रास, [रोज अपातो चारो] (सं.गवाह्निक); जुओ गवानिक

गविल **आरारा. गुर्जरा.* दूधनुं बनेलुं (सं. गव्य+इल्ल)

गविल *लावल.* *जंगली पाडो [प्रा.गवल], [दूर कर्यो] [हिं.गैल=जवुं]

गवेषीइं *आनंस्त.* गवेषणा करीए, शोध करीए

गव्यूति *कादं(शा).* गाउ, [त्रण किलोमिटर] (सं.)

गशाव्यो *मदमो.* ग्रस्त थयो, वश थयो

गह *आरारा. ऋषिरा. तेरका.* ग्रह

गहइगिहिती, गहगहती *आरारा.* आनंद पामती, हर्षभरी (दे.)

गहइली, गहेली *लावल.* घेली [सं.ग्रह+इल्ल]

गहगहवुं, गहगहिवुं *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. विक्ररा. विराप.* आनंद पामवुं, हर्षथी भराई जवुं; *नलरा.* सुगंधथी महेकवुं; *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वृद्धि पामवुं, विस्तरवुं (दे.)

गहगाट, गहिगाट *आरारा. ऐतिका.* आनंद, आनंदनी अभिव्यक्ति, [आनंदकिल्लोल]

गहण *तेरका.* वगडो (सं.गहन); ऊंडाण (सं.गहन)

गहबरइ *प्रद्युचु. प्राचीफा.* गभराय

गहलो *विक्ररा.* घेलो [सं.ग्रह+इल्ल]

गहवरिउ *प्राचीसं.* व्याकुळ थयुं

गहिगाट जुओ गहगाट

गहिबर *शृंगामं.* गभरु, [व्याकुळ]

गहिबरिउ *आरारा. ऋषिरा. नेमिछं. शृंगामं.* गभरायुं, [व्याकुळ थयुं]

गहिर *प्राचीफा.* ऊंडुं (सं.गभीर); *ऐतिका.* घेरुं

गहिलउ, गहिल्लउ *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपमा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. रूपच. वीसरा. शीलक. सिंहा(म).* घेलो, गांडो, मूर्ख, [उन्मत्त] (सं.ग्रह+इल्ल)

गहीय *गुर्जरा.* ग्रही

गहूं *उक्तिर.* घउं (सं.गोधूम)

गहूंली *ऐतिका.* घउंनी ढगली, [गुरुना स्वागतार्थे करवामां आवती घउं आदिनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकृतिओ]

गहेली *वसंफा. वीसरा.* गांडी, घेली [सं. ग्रह+इल्ल]; जुओ गहइली

गंग्जमन *अभिऊ.* गंगाजमनी प्रकारनुं वस्त्र, पछेडी, [बेरंगी वस्त्र, आगळ-पाछळ जुदा रंगनुं वस्त्र]

गंगरे *उषाह.* गांगरे, [ऊंट अवाज करे] [दे.गग्गर]

गंगलि *नेमिछं.* आनन्द

गंगवणे *गुर्जरा.* गंगातटना वनमां

गंगाजलु *प्राचीफा. हम्मीप्र.* घोडानी एक जात

गंगाधार *कामा(त्रि).* शिव

गंगानंदणु *गुर्जरा.* गंगानो दीकरो

गंगेटी *उक्तिर.* एक वनस्पति, जीतेली (सं. गंगेष्टिका)

गंगेर *आरारा(व).* एक औषधीय वनस्पति, गंगेडु (रा.गंगेरण; सं.गांगेरुकी); गंगेटी, बाजोलियुं, नागबला ?

गंछी, गांछी *पंचवा.* वांसफोडानी पली; जुओ वंशफोड

गंजण *तेरका.* कलंक (सं.गंजन); *ऐतिका.* मर्दन करनार, हरावनार; जुओ गंजन

गंजणहार *गुर्जरा.* पराभव करनार

गंजन **ऋषिरा.* [मर्दन करनार, चूरो करनार] (सं.); जुओ गंजण

गंजिउ *प्रद्युचु.* गर्ज्यो

गंजिउ *आनंस्त.* जीत्यो [सं.गंजित]

गंज्जिउ जुओ गंय्यिउ

गंठ, गंठि *अखाका. तेरका. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* गांठ (सं.ग्रन्थि)

गंठाला *आरारा(व).* गंठोडा, पीपरीमूळ ?

गंठि जुओ गंठ

गंठोडा *जिनरा.* काननुं आभरण

गंडस्थल *प्रेमाका.* लमणुं (सं.)

गंडूआ जुओ सेजगंडूआ

गंडोल *षडाबा.* एक प्रकारनुं जंतु [जे पेटमां उत्पन्न थाय छे] (सं.गंडुल)

गंत्री *आरारा.* पेटी (सं.)

गंधकारी जुओ गंधारी

गंधमायण *गुर्जरा.* गंधमादन पर्वत

गंधरव जुओ गंधृव

गंधर्व (गंधर्व गोरी) **सिंहा(म).* [गंधर्व स्त्री, गानारी]

गंधलेण *विक्रच.* गंध लेवी ते, [थोडोक स्वाद लेवो ते, चाखवुं ते]

गंधव (गंधव गोरी) **प्राचीफा.* [गंधर्व स्त्री, गानारी]

गंधाअइ, गंधाइ *उक्तिर. षडाबा.* गंधाय, -नी गंध आवे, वास आवे

गंधारि *गुर्जरा.* राणी गांधारी

गंधारी, गंधकारी *गुर्जरा. विराप.* स्वामीनी पाछळ सुगंधी द्रव्यो लईने चालनारी दासी (सं.गंधहारिका, गंधकारी)

गंधृव (गंधृवविवा), गंधरव (गंधरवविवा) *चंद्रवा.* गंधर्वविवाह, [स्त्रीपुरुषनी] इच्छाथी थतो, उत्सवरहित विवाह

गंध्रप *जिनरा.* गंधर्व, गवैया

गंध्रव *लावल.* गंधर्व, [देवगायक]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंभारउ जुओ गभार

गंभीर **वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* ऊंडुं; *वीसरा.* गाढ, भारे; *हरिख्या.* प्रौढ, मोटुं [सं.]

गंभीरिम *ऋषिरा. नलरा.* गंभीरता, ऊंडाण (सं.गंभीरिमा)

गंथ्यिउ [गंज्ञिउ], गांथ्यिउ [गांज्ञिउ] *प्रबोप्र.* गांज्यो, हराव्यो [सं.गंजित]

गाइ *वीसरा.* गाय (सं.गावी)

गाइण *विक्ररा.* गायन

गाउ *चतुचा.* गाणुं

गागरी *उक्तिर.* गागर (सं.गर्गरी)

गाजंण *मदमो.* गाजतो

गाठडी *वीसरा.* गांठडी (सं.ग्रन्थि)

गाठउ जुओ गाढउ

गाठा **नरका. *नरप. प्रेमाका.* छेतराया, जिताया

गठुओ *अखाछ. प्रेमाका.* गठियो, [छेतरनार]

गाडर, गाडरि *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा.* घेंटी (दे.गड्डरी)

गाडलउं *उपबा.* गाडुं (दे.गड्ड)

गाडवा *प्रेमाका.* घडा जेवा वासण [दे. गडुक, गडुअय]

गाडवुं *प्रेमाका. वीसरा. वैताप.* दाटवुं (दे.गड्ड परथी); *अखाका.* रोपवुं, [खोडवुं]

गाडीत *चंद्रवा.* गाडावाळो

गाडूडा *उषाह.* गागर, गाडवा [दे.गडुक]

***गाढउ [*गाठउ]** *लावल.* *बळवान, *मोटो, [*छेतरायो; *वंचित थयो]

गाढउं *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* खूब मोटुं, भारे, सबळ, दृढ; *आरारा.* आग्रहपूर्वक, भारपूर्वक (रा.)

गाढिम **विमप्र.* [गौरव, गौरवपूर्वक]

गात *कामा(त्रि).* गात्र, [जात], मन; *नरका.* गात्र, अंग, [शरीर]

गातडी *प्रेमाका.* छाती अने बरडो ढंकाय एम गांठ वाळी वस्त्र ओढवुं ते [सं. गात्रिका]

गात्री *उक्तिर.* गातडी, गांठ मारी लपेटेलुं वस्त्र (सं.गात्रिका)

गादह *षडाबा.* गधेडा (सं.गर्दभ)

***गादी (गादी हाट)** *कामा(त्रि).* गांधीनी दुकान

गाने **जिनरा.* [गणनामां, संख्यामां] [प्रा. गण्ण]; जुओ किणगानइ

गाबडी *उक्तिर.* ग्रीवा, गरदन

गाभरू *उक्तिर.* [*बच्चुं, *गभरु] (सं.गर्भरूप)

गाभरो *प्रेमाका.* गभरायेलो, त्रस्त

गामट, गामटि *लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* गामडानी, गामडियण (सं.ग्रामटिका परथी ?)

गामंतरउ *वीसरा.* परगाम जवुं ते (सं.ग्राम+अन्तर)

गामां *कामा(त्रि). कामा(शा).* गाम, गामडां [सं.ग्राम]

गामांतर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* बीजे गाम

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जवानी क्रिया, गामतरुं

गामी *लावल.* [विषय] दूर करी

गामी **लावल.* [(सिद्धिए) पहोंचनार]

गामीत्रा *रूपच.* परगाम [जवुं ते]

गामेचउ *उक्तिर.* गामडानुं, गामडियुं (सं. ग्रामेयः)

गायण **गुर्जरा. प्राचीसं.* गायक [सं. गायन]; *गुर्जरा.* गायन, गान

गायतउ *षडाबा.* गातो

गायत्री, गायत्रीय *गुर्जरा. विराप.* गायो (म.; सं.गायत्री साथे भेळसेळ)

गार *अखाछ.* गारो, गेरो, वहेर; *प्रेमाका.* लींपण, [माटीनो केल]

गारउ *प्राचीसं.* अभिमान (सं.गौरव); जुओ गारव, गारो

गार काढे *अखाछ.* नाश करे ?

गारडी *अखेगी. अंबरा. आरारा. प्राचीफा.* गारुडी, मदारी, साप उतारवानो मंत्र जाणनार (सं.गारुडिक)

गारव, गारवउ, गारवो *उक्तिर. उपबा. वेताप.* अभिमान, अहंकार [सं.गौरव]; जुओ गारउ

गारुडविद्या *आरारा.* सर्पवशीकरणनी मंत्र-विद्या [सं.]

गारुडिक, गारुडी *नरका. प्रेमाका. वीसरा. षडाबा.* मदारी, सर्पने रमाडनार [सं.]

गारो *चतुचा.* गौरव, अभिमान; जुओ गारउ

गाल, गाळ, *अखाछ.* महेणुं, [कलंक, दूषण]; *०कामा(त्रि).* दोष [सं.गालि]

गालडा *विमप्र.* गाल [सं.गल्ल]

गाल मारे *अखाछ.* बडाश हांके

गाला *अभिऊ. नेमिछं.* गाळा, (गळानुं) बंधन

गालि *उपबा.* गाळ [सं.]

गालिमसूरा *तेरका. प्राचीसं.* गालमसूरिया, [गाल तळे राखवानां मशरूनां के अन्य ओशीकां] (सं.गल्ल+मसूरक)

गाह *उक्तिर. नलरा. ०षडाबा. षष्टिप्र. स्थूलिफा.* गाथा, गीत

गाह **गुर्जरा.* [विध्वंस, नाश] [रा.]

गाह- *उक्तिर. गुर्जरा. प्रद्युचु.* अवगाहन करवुं, प्रवेशवुं (सं.)

गाह *वीसरा.* पकडमां लेवुं (सं.ग्राह्)

गाहाडुं *प्रेमाका.* गाद्धुं, ऊंडुं

गाहां *षडाबा.* गाथाए, गाथा वडे

गाहिंइ *उपबा.* गाथामां

गाहो *मदमो.* छंदविशेष (सं.गाथः); *वेताप.* गाथा, छंद

गांग *प्राचीसं.* गंगा

गांगडु *प्रेमाका.* चड्या वगरनो, करडु

गांगेउ *विराप.* गांगेय, भीष्म

गांगेव *दशस्कं(२).* गांगेय, भीष्म

गांछउ *नलरा.* वांसफोडो; जुओ वंशफोड

गांछी जुओ गंछी

गांजवुं *प्रेमाका.* हरावबुं, [पराजय पामवुं] (सं.गंज्)

गांजे *नरका-२.* [जीतीने, हरावीने]

गांञिउ जुओ गांय्यिउ

गांठइ *उक्तिर. कादं(शा).* गंठे, गूंथे (सं.ग्रंथयति)

गांठि *उक्तिर.* ग्रंथि, गांठ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गांठीउ *नलरा.* स्त्रीनुं एक घरेणुं (सं.ग्रंथिक)

गांध्रव *कामा(त्रि).* गंधर्व, ए नामना देव; *मोसाच.* गायक

गांध्रवी *प्रेमाका.* गंधर्वनी

गांय्यिउ जुओ गंय्यिउ

गिउ जुओ गउ

गिडगिडी *ऐतिका.* वाद्यविशेष

गिणइ *उक्तिर. गुर्जरा. वसंवि. वीसरा. नलाख्या.* गणे (सं.गणयति)

गिण्ह- *तेरका.* ग्रहण करवुं (सं.गृण्ह्)

गिर *उक्तिर.* गर, अंदरनो मावो (दे.)

गिर *तेरका.* गिरि

गिरइ *उक्तिर. कादं(शा).* पडे, झरे, टपके (सं.गिरति)

गिरट्ठ *प्राचीफा.* महान (सं.गरिष्ठ)

गिरठि *उक्तिर.* एक वार वियायेली गाय (सं.गृष्टिः)

गिरिमालुं *आरारा(व).* गरमाळो (सं.कृत-मालक)

गिरिसंधि *गुर्जरा.* गिरनार पासे

गिरी पडवुं *दशस्कं(१). प्रद्युचु.* दडी पडवुं, पडी जवुं; जुओ गरी पडे

गिरुउ *अभिऊ. उषाह. ऐतिका. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. हम्मीप्र.* गरवुं, गौरववंतुं, महान, मोटुं (सं.गुरुक)

गिरुयु, गिरूयु *आरारा. प्रद्युचु. शृंगामं.* गरवो, गौरववंतो, मोटो, [महान] (सं.गुरु)

गिरे *तेरका.* गिरि

गिलइ, गिळइ *उक्तिर. वीसरा.* गळे, टपके; *नलाख्या. वाग्भबा. षडाबा.* गळे, गळे उतारे, ग्रास करे (सं.गलति, गिलति)

गिलगिली *उक्तिर.* गलगलियां, गलीपची

गिलानि *षडाबा.* ग्लानि

गिलो *उक्तिर.* गळो, एक वनस्पति (सं. गुडूची)

गिलोई *उक्तिर. षडाबा.* गरोळी, घिलोडी (दे.गिरोलिया, गिलोइ)

गिल्यां *आरारा.* गळ्यां, मीठां [सं.गुल्य]

गिवरी *कर्पूमं.* पार्वती (सं.गौरी)

गिहिन *कादं(शा).* ऊंडा, [गाढ] (सं.गहन)

गिहिलुं *आरारा. नलाख्या.* घेलुं (सं.ग्रथ्+इल्ल के ग्रह+इल्ल)

गीणी *दशस्कं(२). प्रेमाका.* ठींगणी

गीतारथ, गीतार्थ *आरारा.* विद्वान, ज्ञानी, धर्मतत्त्व जाणनार

गीय *शृंगामं.* गीत

गीस्त *वेताप. सिंहा(शा).* निष्फळ, फोगट (फा.जिस्त)

गुख, गूख *आरारा. उषाह. कादं(शा). नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा). विक्रा. विमप्र.* गोख, झरूखो (सं.गवाक्ष)

गुज, गुज्य, गूज, गूज्य *कामा(त्रि). कामा(शा). नरप(द). प्राचीका. प्राचीफा. सिंहा(शा).* छानी वात (सं. गुह्य); *दशस्कं(१).* गुह्य, [मार्मिक, ऊंडुं]; *शीलक.* गुप्त, [एकांतमां]

गुजर, गूजर *नलाख्या.* गुजरोने लगतुं, गुजराती; *उक्तिर.* गूर्जर, एक जाति

गुजरी, गूजरी *नरप(द). *नरका.* गोवालणी;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्ति. गूर्जर जातिनी स्त्री

गुजरी *ऐतिका.* रागनुं नाम

गुजर (देश) *तेरका.* गुर्जर (देश), [गुजरात]

गुज्झवा *षडाबा.* यक्ष, एक अर्धदेवजाति (सं.गुह्यक)

गुज्यग्राम जुओ गुंज्यग्राम

गुज्यर भाख *मदमो.* गुर्जर भाषाए

गुज्यराति *रूस्तस.* गुजराती

गुझ, गुझ्य, गूझ *अखाका. ऐतिरा. नरका. प्राचीफा. मदमो. विक्रच. विक्ररा. सिंह्य(शा).* छूपुं, छानी वात, मर्म, रहस्य (सं.गुह्य)

गुझबी *प्राचीफा.* [गजब करनार], जुलमगार, [त्रासदायक] [अ.गदबी]

गुठ *चंद्रवा.* गोठडी [सं.गोष्ठि]

गुड *गुर्जरा. विराप.* हाथीनो बख्तर वगेरे साज (सं.)

गुड *उक्ति.* गोळ (सं.)

गुडइ **नलरा.* [भांगी नाखे]

गुडइ *आरारा. *हम्मीप्र.* झूमे, झूमता चाले (रा.)

गुडइ *प्रद्युचु.* (हाथीने) कवच वगेरेथी सज्ज करे [सं.गुड्]

गुडउ *नलरा.* गुडो, पग [दे.गोड्ड]; जुओ गूडा

गुडली *षडाबा.* घडो, गाडवो [दे.गडुक]

गुडा ऊंधा घाल *अखाका.* ऊंधा पग घालीने जलदी ऊभा थवानी तैयारी राखीने, [उभडक, निरांत विना, कष्टपूर्वक]

गुडि *गुर्जरा.* हाथीनो साज (सं.गुडा)

गुडि *उषाह.* धजा

गुडिउ, गुडियउ, गुडीय *उक्तिर. गुर्जरा. स्थूलिफा.* कवच वगेरेथी सज्ज करेला (सं.गुडितः)

गुडी, गूडी *आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. कादं(ध्रु). *जिनरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. नलरा. ललिरा. विक्ररा. विमप्र. वीसरा. हम्मीप्र. हरिख्या.* नानी धजा, पताका

गुडीय जुओ गुडिउ

गुडु *षडाबा.* गोळ (सं.गुड)

गुडु *शृंगामं.* रहस्य [रा.गुढौ; सं.गूढ]

गुडुउ, गोडउ *प्राचीसं.* गूडो, पग [दे.गोड्ड]

गुडिया *प्राचीसं.* गूडी, धजा

गुड्या **विराप.* [कवच वगेरेथी सज्ज कर्या] [सं.गुडिताः]

गुढउं *उक्तिर.* [?] (सं.गुदगूढम्)

गुण *गुर्जरा. नरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* (धनुष्यनी) दोरी, पणछ (सं.)

गुण *सिंह्य(शा).* गण (शंकरनो); *मदमो. हरिवि.* समूह (सं.गण)

गुण *वसंफा.* छिद्र (सं.)

गुण (गुणवनाएक) *प्राचीका.* गणनायक, गणपति

गुणअन *प्राचीका.* गुणवान व्यक्ति (सं.गुणिजन)

गुणइ *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. *नलरा. षडाबा. षष्टिप्र.* पुनरावर्तन करे, अभ्यास करे (सं.गुणयति)

गुणउ (कोडि गुणउ) *उपबा.* (करोड) गणो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणउसंकल *ऐतिरा.* गुणनी भरपाई, [गुण – उपकारनो बदलो]

गुणका, गुंणका *मदमो.* गणिका

गुणगेह *ऋषिरा.* गुणोनुं घर, [गुणोनुं निवास-स्थान] (सं.गुणगृह)

गुणठाण *आनंस्त. जिनरा. षडाबा.* गुण-स्थानक, आत्मानी आध्यात्मिक उन्नति-नी उत्तरोत्तर अवस्थाओ [जै.]

गुणणी *उक्तिर.* पुनरावर्तन, अध्ययन (*सं. गुणनिका)

गुणत्तम *आरारा.* गुणोत्तम, उत्तम गुणवाळा

गुणनाएक *मदमो.* गणनायक, [गणपति]

गुणनिलउ *आरारा. ऐतिका. नलरा.* गुणोनुं स्थान, [गुणोना आवास समान], गुणवान (सं.गुणनिलय)

गुणनिहाण *ऐतिका.* गुणनिधान, [गुणोनो भंडार]

गुणपंचासि *प्राचीफा.* ओगणपचास (सं. एकोनपंचाशत्)

गुणभूरि *आरारा.* घणा गुणवाळा (सं.)

गुणवेध **शृंगामं.* [गुणचतुर, गुणरसिक] [सं.गुणविदग्ध]; *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* गुणचतुर, गुणरसिक (सं.गुणविदग्ध)

गुणवेध *वसंफा.* काणुं पाडनार [सं.गुण+ वेधक]

गुणसिल *आरारा.* गुणशिलक नामनुं जिनमंदिर

गुणह *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पणछ (सं.गुण)

गुणाकरो *ऋषिरा.* गुणनो आकर – खाण [– भंडार]

गुणागर *वसंफा. वसंवि.* गुणोनो भंडार (सं. गुणाकर)

गुणिअन *कादं(ध्रु). कादं(शा).* गुणिजनो, [प्रशस्तिगायको], भाट, चारण वगेरे

गुणिउ *उक्तिर.* पुनरावर्तन कर्युं, अभ्यास कर्यो (सं.गुणितम्)

गुद *प्रेमाका.* गुदा [सं.]

गुदराणी **ऐतिका.* [निवेदित करी, निवेदित थई, जाणी] [फा.गुजर]

गुदरावबुं *सिंहा(शा).* मोकलावबुं (हिं. गुदराना) [फा.गुजार परथी]

गुदरे *मदमो.* दरगुजर थाय, [माफ थाय]

गुदारे जुओ हसीय गुदारे

गुपति *आरारा. ऐतिका. चारफा.* मन, वचन, कायानी अशुभ वृत्ति-प्रवृत्ति टाळवी ते [जै.]; *वीसरा.* खानगी (सं.गुप्त)

गुप्ती *प्रेमाका.* लाकडीना पोलाणमां छुपावी शकाय तेवुं एक प्रकारनुं शस्त्र

गुप्ते **उपबा.* [मन, वचन, कायानी अशुभ वृत्ति टाळवारूप गुप्ति वडे] [जै.]

गुबडुं *सिंहा(शा).* गुमडुं [सं.गुल्मः]

***गुभाजणी [उभाजणी]** **गुर्जरा.* [उद्वेग, उत्साहभंग]; जुओ उभगइ

गुमार, गुंमार *मदमो.* गमार [दे.गवार]

गुर *आरारा. कर्पूमं. कादं(शा). प्राचीफा. षडाबा.* गुरु

गुरज, गुरुज, गुर्ज *प्रेमाका. हम्मीप्र.* [गदा जेवुं] एक शस्त्र (फा.गुर्ज़); जुओ गरुज

गुरजर-धर *तेरका.* गुर्जरधरा, गुर्जरभूमि, [गुजरात]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरव *प्रद्युचु. प्राचीफा.* गौरव, [वरना सत्कार रूपे अपातुं भोजन]

गुरां *षष्टिप्र.* गुरुओने

गूरि *कृष्णबा.* गोर, गणगोर, गौरी

गुरी **उषाह.* [पार्वती, पार्वतीनां अन्य देवी-रूपो] (सं.गौरी)

गुरुअडि **विमप्र. शृंगामं.* मोटाई, [महत्ता] (सं.गुरु परथी)

गुरुज जुओ गुरज

गुरुड *अंबरा. गुर्जरा.* गरुड

गुरुडासण *गुर्जरा.* गरुडासन

गुरुनंदणु *गुर्जरा.* गुरुनो पुत्र

गुरुपसाये *ऐतिका.* गुरुनी कृपाथी; जुओ पसाय

गुरुभाग **अखाका.* [गुरु पासेथी मळतो हिस्सो, गुरुनुं ऐश्वर्य के एनी शक्ति]

गुरुया *गुर्जरा. मोसाच.* महान, गरवा, सुंदर (सं.गुरुक)

***गुरुलहुपणउ [अगुरुलहुपणउ]** **जिनरा.* [अगुरु लघुपर्याय, शरीरनी अगुरु (स्थूळ के भारे नहीं) तथा अलघु (कृश के हळवी नहीं) स्थिति, समप्रमाणता] [जै.]; जुओ अगुरुलहु

गुरुव *प्राचीसं.* गोरव, विवाहभोजन [सं. गौरव]

गुरू **वाग्भबा.* [मोटुं, लांबुं, प्रशस्त]

गुरूआपणइ *उपबा.* अभिमानथी, [मोटाई-ना भावथी]

गुर्ज जुओ गुरज

गुल *अभिऊ. आरारा. उक्तिर. नलरा. नेमिछं. विक्रच. षडाबा.* गोळ (सं.गुड, गुल)

गुलगुल- **प्राचीसं.* [हर्षनो अवाज करे]; जुओ गूगलीउ

गुलगुलायइ *उक्तिर.* (हाथी) गर्जना करे [दे.]

गुलणी *उक्तिर.* लतागृह [दे.गुलिणी]

गुलधाणी *उक्तिर.* गोळ-धाणी (सं.गुडधानाः)

गुलपापडी *उक्तिर.* गोळपापडी (सं.गुड-पर्पटिका)

गुलमंडा *उक्तिर.* गोळमांडा, मीठा मांडा (सं.गुडमण्डकाः); जुओ मांडा

गुलर *दशस्कं(२).* ऊमरो (वृक्ष) [हिं.गूलर]

गुलाल *आरार(व). *कृष्णबा.* गुलाला – गुलाल्ला, लाल फूलनो छोड (रा.) [फा. गुले लाल] ?

गुलांठ *दशस्कं(२).* गुलांट

गुलियउ *उक्तिर. प्राचीसं.* गळ्युं, मधुर (सं. गुल्यः)

गुली *नेमिछं.* गळी, [मीठी]

गुली (गुली कांठिलउ) *ऐतिका.* नजर न लागे एटला माटे बांधवामां आवे छे [ते गळानो कांठलो]

गुल्म *प्रेमाका.* [वृक्ष]घटा, [झाडी] (सं.)

गुवालरी *मदमो.* रागिणीविशेष

गुसाइउ *प्राचीका.* स्वामी, पति (सं. गोस्वामिन्)

गुसाही *पंचवा.* [गोसांई] धर्मगुरु, साधु (सं.गोस्वामिन्)

गुह *तेरका.* ?, [*हृदय] [सं.]

गुहवर *सिंहा(म).* गुफा (सं.गह्वर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुहरी *हम्मीप्र.* घेरी [सं.गभीर]

गुहिर, गुहिरउ *आनंत. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. प्राचीफा. ललिरा. लावल. वीसरा. हम्मीप्र.* गंभीर, ऊंडुं, घेरुं, गाढ, गूढ

गुहिर सादि *स्थूलिफा.* गंभीर अवाजे

गुह्यक **शृंगामं.* [यक्ष]

गुंजा *नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* चणोठी [सं.]

गुंजारतु *लावल.* गर्जना करतो

गुंजे घाली ०*प्रेमाका.* गुप्त रीते

गुंज्यग्राम [गुज्यग्राम] **चंद्रवा.* [गुह्येन्द्रियो]

गुंण जुओ गउण

गुंणका जुओ गुणका

गुंणधार *देवरा.* [साधुना छत्रीस] गुणोने धारण करनार

गुंमार जुओ गुमार

गुंहुं *विमप्र.* घउं [सं.गोधूम]

गूख जुओ गुख

गूगलि *आरारा(व).* गूगळ (सं.गुग्गुलु)

गूगळी *प्रेमाका.* ब्राह्मणनी एक जात (खास करीने द्वारकाना तीर्थगोर)

गूगलीउ **नलरा.* [हर्षथी अवाज करता] [सं.गुलगुल्]; जुओ गुलगुल-

गूगूलिया *प्राचीसं.* गूगळी, ब्राह्मण-जाति-विशेष

गूज जुओ गुज

गूजर *उक्तिर.* गूर्जर, एक जाति; जुओ गुजर

गूजरडी *प्राचीफा.* गुजरातनी स्त्री, गुजरातण (सं.गुर्जर)

गूजर-देस *प्राचीसं.* गुर्जरदेश

गूजर-वाइ *शृंगामं.* गतिमान वायरथी ?

गूजरी *उक्तिर.* गूर्जर जातिनी स्त्री; जुओ गुजरी

गूज्झ *नलरा.* छानी वात (सं.गुह्य)

गूज्य जुओ गुज

गूझ, गूझ्य *अखाका. अभिऊ. अंबरा. उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. नरप. प्रेमाका. सिंहा(म). हम्मीप्र.* छानुं, छानी वात, रहस्य (सं.गुह्य); जुओ गुझ

गूडा *उक्तिर.* गोठण; जुओ गुडउ

गूडिय *ऐतिका.* पताका, [धजा]

गूडिय *गुर्जरा.* सज्ज कर्या, पाखर्या, पलाण्या (सं.गुडित)

गूडी जुओ गुडी

गूढ *गुर्जरा.* घेरुं, ऊंडुं (सं.)

गूढी *नरका.* गाढी, घेरी, घेरा रंगनी

गूणी *उक्तिर.* गूण, कोथळो (सं.गोणी)

गूतउ **अखाका. *नलाख्या. *प्राचीसं.* [फसायो, गूंचायो] (सं.गुप्त)

गूध **प्रेमाका.* [लोभी, लालचु] [सं.गृध्र]

गूयाडलनगर *सिंहा(म).* गोंडलनगर

गूरज *दशस्कं(२).* शस्त्रविशेष [फा.गुर्झ]

गूह *उक्तिर.* गू, विष्टा (सं.गूथम्)

गूहड *विमप्र.* घूवड

गूंडां **अखाका.* [धरोनां थूमडां, नकामा घासनां मूळ]

गूंफइ *उक्तिर.* गूंथे (सं.गुम्फति)

गूंहली *उक्तिर.* [*गरोळी] (सं.गोमुखा)

गृथल, ग्रथल *अखाछ. आरारा. चित्तसं.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वळगाड लाग्यो होय तेवुं, गांडुं, घेलुं [सं.ग्रथ+इल्ल, ग्रह+इल्ल]

गृहदीर्घिका *कादं(शा).* घर पासेनी पगथियांवाळी वाव, कुंड के होज (सं.)

गेरो *प्रेमाका.* खेरो, भूको, रज

गेलि *कादं(ध्रु). चारफा. नलरा.* आनंद, आनंदभरी क्रीडा (सं.केलि); **गुर्जरा. *विमप्र.* [आनंदथी]; जुओ गेल्हि

गेलि *लावल.* आनंद कर, [क्रीडा कर]

गेली जुओ गजगेली

गेलो *लावल.* आनंद, आनंदभरी क्रीडा [सं.गेलि] [प्रासमां 'गेलि'नुं 'गेलो']

गेल्हि *ऐतिरा.* गेल, गम्मत, [आनंद] [सं. केलि]; जुओ गेलि

गेसु (घेसु) *प्रेमाका.* धूळ

गेह *आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. शीलक.* घर (सं.)

गेहणे *पंचवा.* घरेणे, [गीरवे] (दे.गहण) [सं.ग्रहणी]; जुओ ग्रहण

गेहली *चतुचा.* घेली [सं.ग्रथ् के ग्रह्+इल्ल]

गेहिणि *षडाबा.* गृहिणी

गेहिरु *कृष्णबा.* घेरुं [सं.गभीर]

गेहेन *अखाका. अखेगी.* घेन

गेहेर बेसो *चित्तसं.* घेर बेसो, शांतिथी बेसो

गेहेल *नरका.* घेलुं [सं.ग्रह+इल्ल]

गेहेलडी *प्रेमाका.* घेलडी, घेली

गैला *नरका.* गयो (म.)

गोअम *गुर्जरा.* गौतम, [महावीरना गणधर]

गोअंगे *प्रेमाका.* [गगनांगणे], आकाशना चोकमां [सं.गो]

गोआडइ *उक्तिर.* गायोना वाडामां (सं. गोवाटक)

गोइ *पंचवा.* सुंदर स्त्री (सं.गोपी ?)

गोइक *ऐतिका.* गाय अने आकडो

गोई गोसली *उक्तिर.* [?] (सं.गोप्यशिलाका)

गोउल *उक्तिर.* गोकुल, [गायोनो समूह]

गोकल *प्राचीफा.* गोकुल, ए प्रदेश

गोकलि *हरिव-अनु.* गोकुळे

गोकुल *लावल.* गायोनां कुळ, धण (सं.)

गोकुलिस्थान *कादं(शा).* गायोनुं गोठडुं [– वाडो] (सं.गोकुलस्थान)

गोख *रूपच. प्रेमाका.* गवाक्ष, गोखलो, झरूखो

गोखर *अखाछ.* गोरखर, जंगली गधेडानी एक जात [फा.गोरखर]

गोगवेश *विक्ररा.* गोग नामनी वेश्या

गोगिडउ, गोगीडउ *उक्तिर. *षडाबा.* गींगोडो, गाय वगेरेने वळगतुं जन्तु (*सं.गोकीटः)

गोग्रास *हरिख्या.* रांधेली रसोईमांथी गायने माटे काढेलो भाग (सं.)

गोघर *अभिऊ.* गोग्रहण, [विराटपर्वमांनो गायने पकडवानो प्रसंग] [सं.गोग्रह]

गोचर होय *चित्तसं.* अनुभवगम्य बनशे, समजाशे [सं.गोचर]

गोचरि *देवरा.* साधुनी भिक्षा (सं.गौचरी)

गोछउ *उक्तिर.* पात्र वगेरे साफ करवानो वस्त्रनो टुकडो (सं.गोच्छकम्)

गोटको, गोटिको *अखाका. अखेगी. चंद्रया.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचवा. *गुटको, गोटी, गोळी (सं. गुटिका)

गोटी *अखाछ.* गोटीलां जेवां स्तन?, [*गोठी, *पूजारी, *भक्त]; जुओ गोठिय

गोट्यका *चित्तसं.* गोटी, गोळी

गोठ **प्रेमाका.* [पहेरामणी करवा माटे ज्ञाति-समुदायने एकठो करवो ते, मिजलस, मिजबानी]

गोठ, गोठि *नरका. नलरा. विक्रच. विक्ररा. *वीसरा. शृंगाम.* गोष्ठि, गोठडी, वात-चीत

गोठिय *प्राचीसं.* गोठी, [पूजारी] (सं. गोष्ठिक)

गोठिसे **जिनरा.* [भाव धरशे]

गोडउ जुओ गुडउ

गोडा *षडाबा.* गुडा, घूंटण, [पग] (दे.गोड्ड)

गोडिहिलियां *षडाबा.* घूंटण जमीनने अडके एवी रीते वंदन करवुं

गोडी **नरप.* [*मूकी]

गोति *हरिवि.* कारागार (सं.गुप्ति)

गोतिहर, गोतिहिरउ **उपबा. *विमप्र.* [केदखानुं] [सं.गुप्तिगृह]

गोती *प्राचीसं.* कुटुंबी, स्वजन (सं.गोत्री)

गोतीहर *आरारा.* केदखानुं (सं.गुप्तिगृह)

गोत्र *आनंस्त.* गोत्रकर्म, जीवनुं उच्च के नीच गोत्र नक्की करनार कर्मबंधन [जै.]

गोत्रज *प्रेमाका.* कुळदेवी

गोत्रिय *षडाबा.* सगां, कुटुंबीओ (सं.गोत्रिक)

गोदी *नरका. नरप.* गोदा मारी

गोदोहण *आरारा.* गाय दोहवी ते

गोधउ *उक्तिर.* आखलो [सं.गोधवः]

गोधलु *नलाख्या.* आखलो

गोधीका *मदमो.* घो (सं.गोधिका)

गोनुं *अखाका.* पृथ्वीनुं, [जगतनुं] [सं.गो]

गोपाविवा (पग गोपाविवा) *षडाबा.* [पगेरुं] छुपाववा

गोपिविउ *उक्तिर.* गोपव्यो, गुप्त राख्यो

गोप्य *नरका. मदमो.* गुप्त, छूपुं (सं.)

गोफण *अखाका.* पथ्थर भरावीने एनो घा करवानुं एक साधन [दे.गोफण्ण]

गोफण, गोफणउ, गोफणियो *अभिऊ. उषाह. ऋषिरा. दशस्कं(१), नरका. नलरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. विक्ररा. विमप्र.* वेणी साथे गूंथवामां आवतुं के अंबोडे लटकाववामां आवतुं एक घूघरियाळुं आभूषण (सं.गुंफन)

गोफणि *उक्तिर.* पथ्थर फेंकवानुं साधन (दे.गोफणा)

गोफणियो जुओ गोफण

गोबरे *विमप्र.* गंदा (दे.)

गोमट *कर्पूमं.* घूमट; **अभिऊ.* [घूमटवाळी देवडीओ, चोकीओ]

गोमती *नलरा.* स्त्रीओनुं एक घरेणुं [*सं. गोमूत्रिका]

गोमय *प्रेमाका.* गायनुं छाण (सं.)

गोमुख *प्रेमाका.* फूंकीने वगाडवानुं एक वाद्य [सं.]

गोमूत्री *उक्तिर.* एक प्रकारनुं घास (सं. गोमूत्रिका)

गोयम *आरारा. प्राचीसं.* गौतम, महावीरना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणधर

गोयरउ *उक्तिर.* गोचरनी जमीन

गोयल *प्राचीसं.* ?, [*सिपाईडा] [दे.गोह+इल्ल]

गोयुत *आरारा.* गाय साथे (सं.)

गोर *आरारा.* गौर, उज्ज्वल

गोर *अखाछ.* गुरु

गोरडुं *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* गोरुं [सं.गौर+ट]

गोरड *आरारा(व).* गोरडियो बावळ, खेर

गोरड *प्राचीसं.* गौरी, [पार्वती]

गोरडी *ऋषिरा. गुर्जरा. लावल. वीसरा.* सुंदर स्त्री, स्त्री (सं.गौर-)

गोरधु *प्राचीफा.* वरनुं संमान करवा कन्या तरफथी अपातुं भोजन; जुओ गउरउ

गोरस गोली *लावल.* [दूध]दहीं भरवानी गोळी

गोरंभउ *गुर्जरा.* गूंचवण, [मुश्केली, आपत्ति]

गोरूचंदन **प्रेमाका.* [गोरोचन, गायना पित्तमांथी मळतो सुगंधी पदार्थ]; जुओ गोसीर्ष

गोरू *आरारा. गुर्जरा. नलरा. वेताप.* ढोर, गायो (सं.गोरूप)

गोरे **प्रेमाका.* [पासे] [म.गोडे]

गोलउ *षडाबा.* आंखनो डोळो (सं.गोलक)

गोलउ *उक्तिर.* गोलो, विधवानो जारज पुत्र (सं.गोलकः)

गोलओ जुओ पर गोलओ

गोलणी *कृष्णबा. प्राचीका. ललिरा.* गोवालणी, गोपी (सं.गोपाल परथी)

गोलांटां *प्रेमाका.* गलोटियां, गुलांट [दे. गलत्थिअ]

गोलि *नरप(द).* (महीनी) गोळी; जुओ गोरस गोली

***गोली, गोहली** *पंचवा.* गूहली, एक प्रकारनी तान्त्रिक आकृति

गोलीडां, गोळीडां *दशस्कं(२). प्रेमाका.* रवैया, वलोणां

गोल्ह *आरारा.* टिंडोरुं (दे.)

गोल्ही *आरारा(व).* गिलोडां, टिंडोळानो वेलो (दे.गोल्हा)

गोव- **प्राचीफा.* [व्याकुल करे, कृश करे] [दे.गुव्व; रा.गोवणौ]

गोवळ *वीसरा.* गोकुळ गाम

गोवांदरे *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गोंदरे, पादर-मां, भागोळे [सं.गोवृंद]

गोव्यंद *प्राचीका.* गोविंद

गोशपेच *प्रेमाका.* कानने ढांकी दे तेवुं (पाघडी के फेंटो) (फा.)

गोष्ट *प्रेमप.* गोष्ठि, वार्तालाप

गोष्ठ *दशस्कं(१). प्रेमाका.* वात (सं.गोष्ठि)

गोष्ठा *षडाबा.* गायोनो वाडो (सं.गोष्ठ)

गोसामी *वीसरा.* स्वामी, प्रियतम (सं. गोस्वामिन्)

गोसीर्ष *आरारा(व).* गोरुचंदन, चंदननो एक प्रकार (सं.गोशीर्ष); जुओ गोरुचंदन

गोह, घोह *आरारा. उक्तिर. प्रेमाका. मदमो.* घो (सं.गोधा)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोहडिय *प्राचीसं.* घो (सं.गोधा)
गोहर्य *रूत्तस.* घोर, कबर (फा.गुर के गोर)
गोहली जुओ गोली
गोहीरउ *उक्तिर.* घो (सं.गोधेरः)
गोहुं, गोहू *आरारा. उक्तिर.* घउं (सं.गोधूम)
गौधेन *दशस्कं(१).* गोधन, गायोनुं धण
गौपद **अखाका.* [गायना पगला जेवडुं, नानकडुं] [सं.गोष्पद]
गौरी, गवरी *अखाका. सिंहा(शा).* गाय
गौव *आरारा.* गाय (सं.गौः)
ग्यउ *षष्टिप्र.* गयेलो (सं.गतः)
ग्यरूआपंण *मदमो.* गरवापणुं
ग्यरूवो *कस्तुवा.* गरवो [सं.गुरुक]
ग्रत *नंदब. मदमो.* घृत, [घी]
ग्रथ *मोसाच.* गर्थ, संपत्ति, धन
ग्रथल जुओ गृथल
ग्रधवी *मदमो.* गर्दभी, [गधेडी]
ग्रभ *चंद्रवा.* गर्भ
ग्रभवेदना *चतुचा.* गर्भवेदना, [गर्भमां आववानी, जन्म लेवानी वेदना]
***ग्रव, ग्रभ** *प्राचीका.* गर्भ
ग्रशामांहि *नलाख्या.* ग्रस्यो [– गळी गयो] तेटलामां
ग्रहण *विक्ररा. षष्टिप्र.* घराणुं, गीरो (सं.); जुओ गरेणे, गेहण
ग्रहणा *आरारा.* आभूषण (दे.गहणय; हिं. गहना) [सं.ग्रहण] [रा.]; जुओ ग्रहिणु
ग्रहिणु *सिंहा(म).* घरेणुं, दागीनो (दे. गहणय); जुओ ग्रहणा
ग्रहिस्त *प्रेमाका.* गृहस्थ
ग्रहेश *प्रेमाका.* सूर्य
ग्रंथ *आरारा.* बांधेलुं, बांधीने [सं.]
ग्राम *आरारा.* समूह (सं.)
ग्रास *गुर्जरा. विमप्र.* गरास, जमीन वगेरेनो भोगवटो, भाग, हिस्सो (सं.); *नरका.* कोळियो
ग्रासवुं *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* ग्रसवुं, [गळवुं]; ०*प्रेमाका.* खावुं
ग्रासीआ *विमप्र.* गराशिया, जागीरदार
ग्राह *प्रेमाका.* मगर [सं.]
ग्रिहिवानि *नलाख्या.* ग्रहवाने, पकडवाने
ग्रेह *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गृह, घर; *अखाका.* घर, (घरबार)
ग्रैवेक *प्राचीफा.* ए नामनुं देवविमान (सं. ग्रैवेयक)
ग्वाल *गुर्जरा. विराप.* गोवाळ (हिं.; सं. गोपाल)
ग्वालणी *प्रेमप.* गोवालणी
ग्वालेर *उक्तिर. वीसरा.* ग्वालियर (सं. गोपालगिरि)

घइरि *विक्ररा.* घरे [सं.गृह]
घइसइं *अंबरा.* घेंसथी
घउंला *प्रेमाका.* एक जातनो सुगंधी पदार्थ
घग्घरि *प्राचीफा.* घूघरी (सं.घर्घरी)
घघरणुं *प्रेमाका.* नातरुं, [अन्यत्रथी छूटी थयेली स्त्री साथेनुं लग्न]
घट *अखाका. चित्तसं. दशस्कं(१). दशस्कं(२). वीसरा.* शरीर; *चित्तसं.* पात्र; *प्रेमप.* घडो (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घटइ *उक्ति॰ वीसरा.* बने (सं.घटयति); *गुर्जरा.* शक्य – संभवित होय

घट-जुअल *शृंगामं.* घटयुगल, [बे घडा]

घटपट *गुर्जरा.* खडखडाट, (रवानुकारी शब्द)

घट पडी *चित्तसं.* बंधाई ?

घट-पुत्र *शृंगामं.* अगस्त्य

घणेरडउ *नलरा.* वधारे (सं.घनतर)

घटमट, घटमट्य *कादं(शा).* गडमथल; *चित्तसं.* चित्तमां चालता विचारो, विकल्पो

घटमठ, घटमढ * *अखाका.* [घडो अने ओरडो वगेरे, (लक्षणाथी) भौतिक जगत]

घटमान *आनंस्त.* घटित, योग्य

घटमां विचारवुं *दशस्कं(१).* पंडे विचारवुं, पोते विचारवुं

घटिका, घडी *प्रेमाका.* चोवीस मिनिटनो समय [सं.]

घटोरा *आरारा(व).* गट-बोरडी, घटबोरडी (सं.घुट्टा, घोट्टा) ?

***घट्टि (थट्टि)** *ऐतिका.* ठाठ, [समूह]

घड *कस्तुवा. नलरा. नंदब. सिंहा(शा).* गढ, किल्लो

घड **गुर्जरा.* [टोळी, समुदाय] [सं.घटा]

घडणुं *षडाबा.* घडवुं ते (सं.घटनम्)

घडनाल *शृंगामं.* गरनाळा

घडला *आरारा.* घडा [सं.घट]

घडवी *सिंहा(शा).* गढवी

घडांमंची, घडामांची *उक्ति॰.* पाणीनो घडो राखवानी घोडी (सं.घटमंचिका)

घडियइ *षडाबा.* घडी – समयनुं माप – ते दरम्यान (सं.घटिका)

घडिया (घडिया जोयणी) *षडाबा.* एक घडीमां एक जोजन [– तेर किलोमिटर] कापती

घडियालउ, घडियाळुं *अखाका. उक्ति॰. चंद्रवा. प्रेमाका.* समय सूचववा अमुक अंतरे वागती झालर, सपाट घंट

घडी *आरारा.* घडी वार, [थोडी वार]; जुओ घटिका

घडीआल *लावल.* घडियाळुं, [समय दर्शाववा वगाडवामां आवती झालर; जुओ आल]

घडीयाल *सिंहा(शा).* कांसानो गोळ सपाट घंट, झालर

घडुउ *गुर्जरा.* भीमपुत्र घडोत्कच

घण **नलरा. षडाबा.* मोटो हथोडो; *गुर्जरा. तेरका.* वादळ (सं.घन); *आनंस्त. आरारा. उक्ति॰. तेरका. नेमिछं. लावल.* घणुं, गाढुं (सं.घन)

घण *अखेगी.* काष्ठनो कीडो (सं.घुण)

घणतूर *ऐतिका.* घणां *वाजां, [घणी शरणाईओ, गाढी वागती शरणाई]

घणदीहुं *उक्ति॰.* घणा दिवसनुं, पुराणुं

घणनामी *अखाका.* घणां नामवाळो

घण-मुली *कस्तुवा.* घणो मूल्यवान

घणवास *विक्ररा.* घणां सुगंधीदार

घणहठी *विमप्र.* घणे हठे, हठपूर्वक

घणाला *नेमिछं.* घणा, पुष्कळ

घणी (पंनर घणी) *मदमो.* [पंदर] गणी

घणी परि *गुर्जरा.* घणी रीते

घद्धा *उपबा.* गधेडा, [मूर्ख] (सं.गर्दभ)

घन *आरारा.* वादळ; *कादं(धु). कादं(शा).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घणुं (सं.)

घनसार *अखेगी. आरारा(व). शृंगामं.* कपूर, कपूरनुं झाड (सं.)

***घनंतर [*अनंतर]** *अभिऊ.* *वधारे घन, *घणुं भयंकर, [*तरत ज]

घबक- *प्राचीसं.* गंध फेलाववी ? [*दे. घवघव]

घय *आरारा. प्राचीसं.* घी (सं.घृत)

घरक- *नलरा.* घूरकवुं (दे.घुरुक्क)

घरकज *आरारा.* घरनां कामकाज

घर-घरणी *अभिऊ. प्राचीसं. विमप्र.* घर-धणियाणी (सं.गृह+गृहिणी)

घर घाल्युं *प्रेमाका.* घर पायमाल कर्युं, नाश कर्यो; जुओ घातइ

घर घाल्युं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* घर पायमाल कर्युं, नुकसान कर्युं

घरट *उक्तिर.* घंटलो (सं.घरट्टः)

घरटी *उक्तिर. षडाबा.* घंटी (सं.घरट्ट)

घरट्ट, घरट्टु *अंबरा. उक्तिर. प्राचीसं.* घंटी (सं.)

घरडे **अखाका.* [घसे, वलूरे]

घरणि, घरणी *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. नलरा. प्रद्युचु. लावल.* गृहिणी, पत्नी

घरत जुओ गरत

घरबारि, घरबारी *गुर्जरा. लावल.* घरना द्वारे [सं.गृहद्वारि]

घर बेसवुं *प्रेमाका.* [घर] पायमाल थवुं

घरमइ *आरारा.* गरमी, घाम [सं.घर्म]

घरमाटी *विमप्र.* [घरनो मर्द – पुरुष], पति

घर-रातुं *नरका.* घरमां रक्त – डूबेलुं, [घरना अनुरागवाळुं]

घर वसइ *आरारा.* घर वसाय, नुकसान थाय

घर-सारू *आरारा.* घरने अनुसार, अनुरूप, शोभतुं; जुओ सारू

घरसुत्र, घरसूत, घरसूत्र *चंद्रवा. दशस्कं(१). प्राचीफा. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा).* घरनो वहेवार, घरसंसार (सं.गृहसूत्र)

घरंण *मदमो.* ग्रहण, [एक ग्रह बीजाथी गळाय ते]

घरांणुं *वेताप.* घरेणुं [सं.ग्रहणक]

घरि *आनंस्त.* घर

घरिसूत्तु (घरि सूत्तु) **गुर्जरा.* [(राजाने) घेर सारथि]

घरिसूत्र *गुर्जरा.* घरनी व्यवस्था (सं.गृहसूत्र)

घरुणी, घरूणी *दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका. मदमो.* गृहिणी, पत्नी

घरेणे *कामा(शा).* गीरवे [सं.ग्रहणक; दे. गहण]

घर्मबाधा *आरारा.* गरमीथी पडती मुश्केली [सं.]

घल्ल *प्राचीसं.* प्रभूत, पुष्कळ

घल्लवइ *उक्तिर.* फेंकावे, नखावे

घल्लइ *गुर्जरा.* घाले, नाखे [दे.घल्ल]

घल्ली *लावल.* [घलायेली], डूबेली

घस- *वीसरा.* घसावुं, नष्ट थवुं (सं.घृष्)

घस्त *प्राचीफा.* गृहस्थ

घंघोलियां *अखेगी.* नानां घर [दे.घंघ+उल्ल]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घंटवल्य **नरप.* [घांटरवाल, जंतर]; जुओ घांटलवाल

घंटोरणि *आरारा(व).* घूघरो (सं.घंटारवा) ?

घाइ *गुर्जरा. प्राचीफा. हरिख्या.* उतावळ [दि.घत्ति]; जुओ घायिंसउं

घाइ *जिनरा. विराप.* घा (सं.घात)

घाइ (*पणघाइ) [पराघाइ] **जिनरा.* [पराघात, नामकर्मनो एक प्रकार जेना उदयथी सामा पर विजय मळे] [जै.]

घाइत **विमप्र.* [मोको, लाग] [रा.घात]; जुओ घात घाले

घाउ *वीसरा.* घा; *गुर्जरा.* हत्या (सं.घात)

घाघर नदी *उक्तिर.* घर्घरिका, गोग्रा नदी

घाघरि, घाघरिय, घाघरी *उक्तिर. तेरका. प्राचीसं.* घूघरी (सं.घर्घरिका)

घाघली *नरप.* विह्वळ [दे.घंघलिय]; जुओ घांघली

घाट *जिनरा.* न्यून, [ओछी] [हिं.]

घाट *प्रेमाका.* हालत, स्थिति; योजना, युक्ति

घाट *उषाह. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. विक्ररा.* घाटडी, स्त्री-ओनुं रेशमी वस्त्र; रातुं वस्त्र; *चारफा.* *घाटडी, *लाल रंगनी बांधणीनी भातनी चूंदडी, [*चणियो] (दे.घट्ट)

घाट *अखाछ.* [घडेली वस्तु], घरेणुं

घाट *नलरा. नलाख्या. वीसरा.* पहाडी मार्ग, खीणनो मार्ग (सं.घट्ट); *चतुचा.* स्थळ, स्थान; *नेमिछं.* *रस्ता, *सीमाडा, [*प्रदेश]

घाट (घाट घाली) **नरका-२.* [लागमां लई]; जुओ घाली

घाट चाले *चित्तसं.* नीवडे

घाटडी *गुर्जरा. लावल.* लाल बांधणीनी ओढणी [दि.घट्ट]

घाट बेसे *अखाका. चित्तसं.* मनमां घड बेसे, समजाय, मेळ बेसे

घाटरवाल्य **नरप.* [जंतर]; जुओ घांटलवाल

***घाटा [घाठा]** **गुर्जरा.* [छेतराया, जिताया, हार्या]; **अखाछ.* [धूर्त, शठ]; जुओ घाठउ, गाठा

घाटी *मोसाच.* गाढी, वधारे

घाटु जुओ घाहु

घाटे घाल्य *चित्तसं.* समजणमां नाख, समजाव

घाटे घाले, घाट्ये घाले *अखाका.* बराबर समजी शके, स्वीकारे; *चित्तसं.* समजमां नाख, समजाव; समजमां नाख, समज

घाठउ *प्राचीसं. *विराप.* छेतरायो, [जितायो, हार्यो]; *नेमिछं.* *नुकसान पाम्यो, [छेतरायो]; *नरका.* घसाई गयो (सं.घृष्ट)

घाठऊउ *नलरा.* गठियो, [छेतरनार]

घाठा जुओ घाटा

घाठुओ *प्रेमाका.* गठियो, छेतरनारो

घाढुं *नरका.* गाढुं, गाढ संबंध; *प्रेमाका.* [गाढुं], मुश्केल, कठण

घाड *अभिऊ.* गाढ, [दुर्गम]

घाडि सईनी [घाडि सईनी] **ऋषिरा.* [दरजीओनी धाड, आक्रमण (जे निष्फळ होय छे)]

घाडी *नरप(द).* गाढ, घनिष्ठ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घाणु *षडाबा.* घाणो, तळवा माटे एक साथे नाखवामां आवतो जथ्थो; *नेमिछं. षडाबा.* घाणी

घात *प्रेमाका.* घा; *अखाका. वेताप. शीलक.* मोत, हत्या (सं.घाति)

घात *प्रेमाका. *शृंगामं.* रीत

घातइ *उक्तिर. उपबा. कादं(ध्रु). जिनरा. दशस्कं(२). नेमिछं. प्रेमाका. षडाबा. षष्टिप्र.* घाले, नाखे (दे.घत्त); जुओ घर घात्युं

घातकू *उक्तिर.* घातकी, हत्यारो (सं.घातुकः)

घात घाले **अखाका.* [कार्यसिद्धिनो मोको मेळवे, लाग ले] [रा.; हिं.]; जुओ घाइत

घातण *ऐतिका.* नाखवुं ते

घाति-करम *देवरा.* आत्माना स्वाभाविक गुणोनो घात करनारां कर्मो [जै.]

घाती *प्रेमाका.* घातक, हिंसक, कपटी [सं. घातिन्]

घाती *आरारा. नेमिछं.* घाली, नाखी (दे.घत्त)

घातीकर्म *आनंस्त. ऋषिरा.* आत्माना गुणोनो नाश करनार कर्म[बंधन] [जै.]

घात्य *चित्तसं.* घाल, नाख [दे.घत्त]

घाय **उपबा. गुर्जरा. तेरका.* घा, प्रहार (सं.घात)

घायक *अखाछ. चित्तसं.* घातक, [नुकसान करनार]

घायड, घाहड *वेताप. सिंहा(शा).* बलिष्ठ, शूरवीर; [प्रबळ, भारे, विकट]; शूरत्व; जोस

घायिंसउं *उक्तिर.* उतावळे; जुओ घाइ, घांइसिंऊं

घायो *अखाका.* घायल थयेलो, [-थी टेवायेलो, रसियो]

घार *सिंहा(शा).* घारण, [घोरवुं ते]

घारडां *षडाबा.* एक मीठाई, घारी (दे.घारंट, घारिया)

घारण **प्रेमाका.* [घेन]

घारिउ, घार्यउ *अंबरा. आनंस्त. ऋषिरा. नलरा. प्राचीसं.* -नुं घारण – घेन चडेलुं होय एवो, -थी घेरायेलो, मस्त; *गुर्जरा.* मदमस्त, मदीलो (सं.घारित) [दे. घारिअ]; जुओ विषघारिय

घार्यां जुओ धार्यां

घाल *प्रेमाका.* जमवा बेठेलाओनी पंगत

घालइ (विसारी घालइ) *जिनरा.* [विसारी] नाखे

घालि *अभिऊ.* घालीने, [परोवीने] (दे.घल्ल)

घालिउ *उक्तिर.* फेंक्युं, नाख्युं, राख्युं (दे.घल्ल)

घाली (घाट घाली) **नरका-२.* [लागमां लई]; जुओ घाट

घासइ *जिनरा.* घसाय; *नेमिछं.* घसाय, [घसारो – नुकसान वेठे] (सं.घृष्)

घाहड *सिंहा(शा).* जुओ घायड

घाहाढे *चतुचा.* गाढे, [अत्यंत]

घाहु [घादु] *गुर्जरा.* [दळ], सैन्य [रा.]

घाहो *कस्तुवा. चतुचा.* गाथा

घांइसिऊं *विक्ररा.* उतावळे; जुओ घायिसउं

घांघ *चित्तसं.* गभरामण; *अखाका.* गभराट; [(आकाशनुं) घनघोरपणुं] [दे.घंघल]

घांघली *नरका.* गभरायेली, विह्वळ [दे. घंघलिअ]; जुओ घाघली

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घांचण **गुर्जरा.* [घसडवुं, कचडवुं ते] [दे. घच्चण]

घांट *उक्तिर. उपबा.* घंट (सं.घंटा)

घांटलवाल **नरका.* [जंतर]; जुओ घंटवल्य, घाटरवाल्य

घांटली *उपबा.* घंटडी

घांटी *अखाका.* पर्वत वच्चेनो सांकडो रस्तो

घांटी *उक्तिर.* पडजीभ (सं.घंटिका)

घिर *कादं(शा). नलाख्या.* घर (सं.गृह)

घिरई *जिनरा.* पाछा फरे [रा.]

घिर्य *प्राचीका.* घरमां (सं.गृहे)

घिसि *उक्तिर.* [*घीस, *खांचो] (सं.घृष्टि)

घिंदिणि *प्राचीसं.* रास-नृत्य-विशेष

घीई *उषाह.* घी (सं.घृत)

घीउ *उक्तिर.* घी (सं.घृत)

घीरत *कामा(शा).* घी [सं.घृत]

घीवेलि *उक्तिर.* घिमेल, कीडीमंकोडाना प्रकारनुं लाल जंतु

घीसरुं *प्रेमाका.* वजन खेंचवा माटेनुं बळदथी चालतुं पैडां वगरनुं एक साधन

घीहटी *विमप्र.* घीनी दुकानो, घीनां हाट, [घीबजार]

घुग्घर, घूग्घर *नेमिछं.* घूघरी, [नानी घंटडीओ] (सं.घुर्घुरी)

घुग्घुर *गुर्जरा.* घूघरा (सं.घर्घर)

घुघरावुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गुस्साथी मोढुं फुलाववुं

घुटण *दशस्कं(२).* घोडानी एक जात

घुडुक्कइ *प्राचीसं.* गर्जे (दे.)

***घुमारण [घुमरण]** **प्रेमाका.* [धूळनी आंधी]

घुरइ *आरारा. ऐतिका.* घमघमे, वागे

घुराया *ऐतिका.* वगाड्या, [घमघमाव्या]

घुलर *वेताप.* गूलर, ऊमरो

घुलरउं *ऐतिरा.* हारडो, [बाळकोनुं एक कंठ-आभूषण]

घुसण, घुसिण *प्राचीसं.* केसर, कुंकुम ए सुगंधित द्रव्य (सं.घुसृण)

घुंगा *गुर्जरा.* रवसूचक शब्द

घुंटीइ **गुर्जरा. विराप.* घूंटीए, [घसीए, चोपडीए] (सं.घृष्ट)

घूक *ऋषिरा.* घूवड (सं.)

घूग्घर जुओ घुग्घर

घूघटिउ *उक्तिर.* घूंघटो, घूमटो

घूघरी *अखाछ.* बाफेली जारबाजरी[नी वानगी]

घूघुरउ *उक्तिर.* घूघरो (सं.घुर्घुरकः)

घूघुरी *उक्तिर.* घूघरी (सं.घुर्घुरिका)

घूघू *उक्तिर.* घुवड (सं.घूकः)

घूघूइ *ऋषिरा.* घूघवे, [घोर अवाज करे]

घूट, घूंट *प्रेमाका.* *घूंटायेला, *कसायेला, [घोडानो एक प्रकार]

घूतकार *नलरा.* घुवडनो अवाज

घूनकार *दशस्कं(२).* घमकार

घूमइं *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* *घोरे, [झोकां खाय] [दे.घुम्म]

घूमण घाले *नरका.* हींचोळे

घूमणी *प्रेमाका.* घुमरडी, फुदरडी [दे.घुम्म]

घूलर *प्रेमाका.* ऊमरानुं वृक्ष, [गूलर]

घूंट जुओ घूट

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घूंट *आरारा(व).* वृक्षविशेष (हिं.; सं.घोंटा); गटबोरडी ?

घूंटउ *उक्ति.* रगडो (*सं.घट्टक)

घृतपूर *आरारा.* घेबर [सं.]

घेउर *प्राचीसं.* घेबर (दे.) [सं.घृतपूर]

घेघाट *मदमो.* आनंद (अप.गहगह+आट)

घेयंवर *सिंहा(शा).* हाथी; जुओ घेंमर

घेर *कामा(त्रि). प्रेमाका.* घेरुं (सं.गभीर)

घेर *सिंहा(शा).* घेरीने

घेरण *अखाका.* [घारण, ऊंघ, घेन]

घेर्य रहे *चित्तसं.* समजणनी स्थितिमां रहे

घेहली *चतुचा.* घेली [सं.ग्रह+इल्ल]

घेंमर *सिंहा(शा).* हाथी (सं.गजवर)

घोडाहडि *उक्ति.* घोडार, अश्वशाळा

घोडिलउ *वीसरा.* अश्विनी नक्षत्र (सं.घोट+इल्ल)

घोरोपसर्ग *ऋषिरा.* देव, दानव के मानवकृत कठोर विघ्न, आपदा [सं.]

घोल *ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. देवरा. नेमिछं. प्राचीसं. लावल.* दहींनुं घोळवुं, [वलोवेलुं दही]; *वसंफा. वसंवि(ब्रा). विमप्र. षडाबा.* [कोई पण प्रकारनुं] घोळवुं, [रगडो, घट्ट प्रवाही] (सं.)

घोलण *गुर्जरा.* घूमडवुं ते, [मर्दन करवुं, रगडवुं ते]

घोलिर *शृंगामं.* चकळवकळ [दे.]

घोळी *नरका.* [ओळघोळ करी, ओवारी] [सं.घोल्]

घोळी जाउं *नरका.* वारी जाउं

घोलीडां *नरका.* वलोणां, रवैया; जुओ गोलीडां

घोळीश *नरका.* घुमावीश

घोश, घोष *दशस्कं(१). प्रेमाका.* (घोडानो) वाडो, घोडार (सं.घोष्)

घोष *कादं(शा).* अवाज; नेसडो, [गायोनो वाडो] (सं.)

घोषविउ *उपबा.* जाहेर कर्युं (सं.घोष्)

घोसइ *उक्ति.* जाहेर करे (सं.घोषति)

घोह जुओ गोह

घ्राइउ *उक्ति.* सूंघ्युं (सं.घ्रा-)

-च,-चइ,-चउ,-ची,-चु *प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* -नुं, संबंध विभक्तिनो प्रत्यय (सं.त्यक, प्रा.च्चअ); जुओ हृदय-चइ

चउ *जिनरा. तेरका.* चार (सं.चतुर्)

चउक *गुर्जरा. प्राचीफा.* साथियो (सं. चतुष्क); जुओ चुक्क

चउकडी *लावल.* लोक, [भुवन] [तुच्छ-कारमां] (सं.चतुष्क)

चउकीवटु *उक्ति.* बाजोठ, बेसवानी पाट (सं.चतुष्कपट्टः)

चउखंडी *नेमिछं. लावल.* चोखंडी, [चार बाजुवाळी) (सं.चतुष्खंड); [*चार बाजुवाळी देवडी प्रकारनी रचना]; *वीसरा.* एक स्थापत्यरचना, [दिवडी प्रकारनी]

चउगट्ठि *उक्ति.* चोकठुं, [बारीबारणानो के बीजो कोई, लाकडां सालवी करेलो चोखंडो घाट] (सं.चतुष्ककाष्ठिका)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउगति *आनंत.* नरक, तिर्यंच, मनुष्य अने देव ए चार गति, [जीवयोनि] [सं.चतुः+गति]

चउगुणउ *उक्ति.* चोगणुं (सं.चतुर्गुणम्)

चउग्गइ *षष्टिप्र.* देव, मानव, नरक अने तिर्यंच ए प्रमाणे चार प्रकारनी गति, [जीवयोनि] (सं.चतुर्गति)

चउघडिउ *उक्ति.* चोघडियुं (सं.चतुर्घटिकम्)

चउडचपट *प्रद्युच्.* सफाचट [दे.चप्पडय]

चउडोत्तरसउ *उक्ति.* एकसो चार (सं. चतुरुत्तरं शतम्)

चउतरइ *जिनरा.* चोतरे

चउतालिस *षडाबा.* चुमालीस (सं.चतुः +चत्वारिंशत्)

चउत्थ, चउथ *उपबा. नलरा.* (चोथे टंके जमाय तेवो, त्रण टंकनो एटले) एक दिवसनो उपवास (सं.चतुर्थी)

चउत्रीस *उक्ति. षडाबा.* चोत्रीस (सं. चतुस्त्रिंशत्)

चउथ जुओ चउत्थ

चउथउ, चूथउ *उक्ति. उपबा. गुर्जरा. नलरा. षडाबा.* चोथुं (सं.चतुर्थकः)

चउथि *उक्ति. वीसरा.* चोथ (सं.चतुर्थी)

चउद *उक्ति.* चौद (सं.चतुर्दश)

चउदइ *गुर्जरा.* चौदेय

चउदसि *उक्ति. उपबा. गुर्जरा.* चौदश (सं.चतुर्दशी)

चउनाणी *आरारा. जिनरा.* चार प्रकारना ज्ञानवाळा (सं.चतुर्ज्ञानी)

चउपउ *उक्ति.* चोपगुं (सं.चतुष्पदम्)

चउपखेर *विक्ररा.* चारे बाजु [सं.चतुः+ पक्ष]; जुओ चुपखेर

चउपट *प्रद्युच्.* चोगान [जेवुं साफ], [खेदानमेदान, विनष्ट]; *चारफा.* *चारे बाजुथी, [संपूर्ण नाश पामे एवी रीते]; *लावल.* मोटुं; [संपूर्ण; संपूर्णपणे]; [रव-सूचक शब्द]; जुओ चुपट

चउपद *उपबा.* चोपगुं (सं.चतुष्पद)

चउपन *उक्ति.* चोपन (सं.चतुष्पंचाशत्)

चउपनमइ *ऐतिरा.* चोपनमे

चउपन्नह *नेमिछं.* चोपन

चउपर्वी *ऐतिका.* चार पर्वतिथी

चउबारउ **वीसरा.* [अगाशी परनी चारे बाजु खुल्ली स्थापत्यरचना, *ग्रीष्मभवन] (सं. चतुर्द्वार-); *ऋषिरा.* चार बाजु बारणांवाळो; जुओ चौवार

चउमालीस *उक्ति.* चुमालीस (सं.चतुश्चत्वारिंशत्)

चउमासउ *उक्ति. उपबा. तेरका. नेमिछं. प्राचीका. प्राचीसं. लावल. षडाबा.* चोमासुं, [जैन मुनिओने एक स्थळे रहेवानो समय] (सं.चतुर्मासकम्)

चउमुख *प्राचीफा.* चारे बाजु मुखवाळुं, चारे बाजु दरवाजावाळुं (सं.चतुर्मुख)

चउमुखतारूपु *षडाबा.* चार मुखवाळुं रूप

चउ-मुहि *नेमिछं.* चार मुखे

चउरउ **वीसरा.* [चोरो, खुल्लो चोतरो, सभास्थान] (सं.चतुर-) [दे.चउरय]

चउरसउ *उक्ति.* [*पथ्थरनो चोरस टुकडो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.चतुरस्रः)

चउराणू *उक्ति.* चोराणुं (सं.चतुर्नवति)

चउरासी *उक्ति. उपबा. गुर्जरा. रूपच. षडाबा.* चोर्यासी (सं.चतुरशीति)

चउरासी चउवीसी *लावल.* [तीर्थंकरोनी] चोरासी चोवीसी [थाय एटलो समय], [अत्यंत दीर्घ काळ]

चउरासीयउ *वीसरा.* *प्रादेशिक [चोरासी गामना] अधिपति; [*चोरासी नातनो ब्राह्मणसमुदाय]

चउरिय *तेरका.* [लग्नमंडपनी] चोरी (सं. *चतुरिका) [सं.चत्वरिका]

चउरिंदि, चउरिंदी *आनंस्त. जिनरा.* स्पर्श, रसना, घ्राण अने चक्षु ए चार इंद्रियवाळा जीवो [सं.चतुरिन्द्रिय]

चउरी, चउंरी *आरारा. उक्ति. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. वीसरा.* चोरी, लग्नमंडपमां चार खूणे थती वासणोनी उतरेडनी गोठवणीवाळुं लग्नस्थान (दे.)

चउलइ *आरारा.* चोळाथी

चउवट्ट *विक्ररा.* चौटुं, [चार रस्ता भेगा थाय ते स्थळ] [सं.चर्तुहट्टक]

***चउवडी (चडवडी)** **विमप्र.* [झडपथी]

चउवाह *प्राचीसं.* चोपास, [प्रचुरपणे, अत्यंत] (*सं.चतुःपार्श्वम्)

चउविह, चउविहि *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं.* चतुर्विध, चार प्रकारनो

चउविहार **उपबा.* [चोविहार, चार प्रकारना आहारनो त्याग] [सं.चतुर्व्याहार]

चउविहि जुओ चउविह

चउवीस *उक्ति. गुर्जरा. षडाबा.* चोवीस (सं.चतुर्विंशति)

चउवीसीइं **उपबा.* [चोवीस तीर्थंकरना काळ दरम्यान] [सं.चतुर्विंशतिका]

चउसट्ठि, चउसठि *आरारा. उक्ति. ऐतिका. लावल. षडाबा.* चोसठ (सं. चतुःषष्टि)

चउसाल *आरारा.* **ऐतिका. *जिनरा. नेमिछं. *विमप्र.* विशाळ, विस्तृत, मोटुं, [खूब] (सं.चतुःशाला); जुओ चओसाल, चुसाल

चउसालउ *उक्ति.* चारे बाजु खुल्ली परसाळवाळुं मकान (सं.चतुःशालम्)

चउहटुं *रूपच. लावल. विमप्र.* चौटुं, बजार (सं.चतुर्हट्टक); जुओ चुहटुं

चउहत्तरि *उक्ति.* चुंमोतेर (सं.चतुःसप्ततिः)

चउहुं दिसि *षडाबा.* चारे दिशामां (सं.चतुः+दिशा)

चउंप **जिनरा.* [चोंप, खंत, चीवट]

चउंरी जुओ चउरी

चऊकी *ऋषिरा.* चार खूणावाळी चोकी, [नानो चोक – सभा-स्थाननो] (सं. चतुष्की)

चऊद *गुर्जरा.* चौद

चऊद-दहोत्तर *गुर्जरा.* चौदसो दश

चओसाल *प्राचीफा.* विशाळ (सं.चतुःशाला); जुओ चउसाल

चक *प्रेमाका.* पडदो

चकचूर *आरारा. प्रेमाका.* चूरेचूरा

चकचूंध *अखाछ.* अंजावुं ते, [-मां आंधळा थई जवुं ते, अंधता, जडता]

चकचोला *नरका.* मस्ती, आनंद, [क्रीडा]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[रा.]

चकडोल *प्राचीफा.* संकल्प-विकल्प, [मननी अस्थिरता, व्याकुळता] (सं.चक्रदोला)

चकसि *अभिऊ.* लडशे, [सामसामे आवशे]

चकिछिक *कादं(शा).* वैद्य (सं.चिकित्सक)

चकित *आरारा.* भयकंपित, गभरायेली (सं.)

चकीछा *वेताप.* चिकित्सा

चक्कधरो *ऐतिका.* चक्रधर, चक्रवर्ती राजा

चक्कवइ *अंबरा.* चक्रवर्ती, [सम्राट] [सं.चक्रपति]

चक्कवट्टि *गुर्जरा.* चक्रवर्ती

चक्कवृत्ति *गुर्जरा.* चक्रवर्ती

चक्कु जुओ वक्कु

चक्खु *आनंस्त.* चक्षु

चक्यउ *उक्तिर.* चकित

चक्रगत **चतुचा.* [चक्रगतिए, आजुबाजु बधे]

चक्रचाल *उषाह.* चिन्ता, [व्याकुळता]

चक्ष *अखाका. चित्तसं. प्रेमाका.* चक्षु

चक्षु भरवां *प्रेमाका.* आंसुथी आंख भरवी, रुदन करवुं

चखार *प्रेमाका. विमप्र.* धुतारा; जुओ चोरचिखार

चगचगतां *कादं(धु). कादं(शा).* चकचक करतां, चीं चीं करतां

चचपट, चचपट्ट *गुर्जरा. *लावल.* तालध्वनि माटेनो रवानुकारी शब्द

चचूकडइ *आरारा.* चांच बोळवा जतां

चच्चर *विक्ररा.* चाचर, चोगान [सं.चत्वर]

चट *प्रेमाका.* श्राद्धमां देवने स्थाने मुकाती गांठ वाळेली दर्भनी सळी

चट *प्रेमाका.* हठ, जीद, [आदत]

चटक *षडाबा.* चकली (सं.)

चटक *प्रेमाका.* उश्केराटनी लागणी, [चानक]; *अखाका.* लालसा, झंखना

चटकनी भटक *प्रेमाका.* चटकानी [डंख लागवानी] भडक, बीक

चटको *नरका.* *आंखमां वसी जाय एवी शोभा, [लगनी, मोह]

चटडा *जिनरा. प्राचीफा.* विद्यार्थीओ [दे. चट्ट]

चटपट *अखाका. प्रेमाका.* झटपट, जलदी, [एकाएक]

चट्ट *गुर्जरा.* विद्यार्थी (दे.)

चडकली *दशस्कं(२).* चरकली, चकली [सं.चटक]

चडकी *कर्पूमं.* [चडवुं ते], सवारी [हिं. चड्ढी]

चडचड **नेमिछं.* [चडचड एवो अवाज करतुं, करकरुं]

चडबडावउ *षडाबा.* ठपको आपो (सं. चटपटति) [दे.चडप्फड]

चडवड, चडवडी *लावल.* [चटपटीथी], उत्साहथी, [आतुरताथी], झडपथी (दे. चडपट); जुओ चउवडी

चडवाईजिनी *षष्टिप्र.* चढवानी

चडावलि *प्राचीसं.* चन्द्रावती

चडि-उत्तरिय *तेरका. प्राचीसं.* वडचड, उक्ति-प्रत्युक्ति (दे.चड+सं.उत्तर)

चडी *आरारा.* चिडी, पक्षी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चणउ *उक्ति.* चणो (सं.चणक)

चणक *षडाबा.* चणा (सं.)

चण काजि *ऐतिरा.* [चणवा], वीणी खावा

चणहडीउ *उक्ति.* [*कोई प्राणीनाम] (सं. चणकवर्तकः)

चणियारां *प्रेमाका.* जे खाडामां टेकावाथी बारणुं फरे छे ते

चणारो **प्रेमाका.* [चण]

चणिसुत *प्राचीका.* चणिकनो पुत्र, चाणक्य

चतुरवंति *नलरा.* चतुर [सं.चातुर्यवंती]

चतुरसुजांण *कामा(शा).* चतुर अने समजु – ज्ञानी

चतुरंग *ऋषिरा.* चार अंगवाळी (सेना)

चतुरंगिणी *प्रेमाका.* चार अंगवाळी (सेना)

चतुरंगी **वीसरा.* [सुंदर अंगोवाळी] [प्रा. चउर/चतुर+अंग]

चतुरात *प्राचीका. प्रेमप.* चतुराई

चतुरिम, चतुरिमा *प्राचीफा. शृंगामं.* चतुराई (सं.)

चतुष्ट (दुष्ट चतुष्ट) *प्रेमाका.* चारनो समूह, [चंडाळ] चोकडी

चत्तारिसईं *षडाबा.* चारसो (सं.चत्वारि शतानि)

चत्ति *गुर्जरा.* चित्तमां

चत्तुचपाट *दशस्कं(१).* चत्तुपाट

चत्रक *कामा(शा).* चातक

चत्रुभुज *दशस्कं(१).* चतुर्भुज

चत्रुवाक *नंदब.* चक्रवाक

चन्द्रोदय *जिनरा.* चंदरवो [सं.]

चपलक *षडाबा.* चोळा

चपला *मदमो.* वीजळी (सं.)

चपेट *गुर्जरा.* तमाचो (सं.)

चबक *प्रेमाका.* [चप करीने], झडपथी

चबका **उषाह.* [काप, घा]; जुओ चमक्कउ

चबोला *कामा(त्रि).* ठपकानां वचन, [महेणां, चाबखा]; जुओ चोबोला

चमक *चित्तसं.* प्रकाश; **प्रेमाका.* [चोंक, धासको] [सं.चमत्कृ- परथी]

चमकउ *लावल.* [चमकवुं ते, चोंकवुं ते], आश्चर्य [सं.चमत्कृ-]

चमकीअलि *विमप्र.* चमक्या, [भय पाम्या] [सं.चमत्कृत]

चमक्कउ *प्राचीसं.* डंख, [चबको]; जुओ चबका

चमन *अखाका.* बगीचो (फा.)

चमर *आनंस्त. तेरका. नलरा. लावल.* चामर

चमरात *नलरा.* चामरो

चय- *प्राचीसं.* छोडवुं, त्याग करवो (दे.)

चर **आरारा.* [दूत, सेवक]; *गुर्जरा. विराप.* (सं.); *मोसाच. हरिख्या.* [अनुचर], सेवक

चरउ *उक्ति.* चरवुं ते (सं.चर्)

चरकलुं *नरका. प्रेमाका.* चकलुं (पक्षी)

चरचे *उक्ति. नरका. प्रेमाका. वीसरा. शृंगामं.* लेप करे, लगाडे, चोपडे (सं.चर्च्)

चरड *गुर्जरा. जिनरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. शीलक. शृंगामं.* चोर, लूंटारो (सं.चर+ट) (दे.चरड); जुओ चोरचरड

चरडाहुंति *उषाह.* चिढाती, [अकळाती, दुःखी थती]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरण *हरिख्या.* डगलुं (सं.)

चरण *आरारा.* संयम, चारित्र (सं.)

चरणकज *आनंस्त.* चरणपंकज, चरणकमळ (सं.)

चरण-करण *आरारा. ऋषिरा.* आचार अने क्रियाकांडनो परामर्श, संयमधर्मनी पुंष्टि माटेनां नियमो, संयमना मूल अने उत्तरगुणो [जै.]

चरण-त्राण *नलाख्या. शृंगामं.* मोजडी, पगरखुं (सं.)

चरणो *चंद्रवा. दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो. लावल.* चणियो, घाघरो

चरबोटउ *नेमिछं.* एक प्राकृत छंद (प्रा.चरपट)

चरंट *मदमो.* छंदविशेष

चरंणा *मदमो.* चणिया

चरि *आरारा.* कथनी (सं.चरित)

चरिअ *नेमिछं.* चरित्र [सं.चरित]

चरिय *गुर्जरा.* चरित्र, जीवनकथा (सं. चरित)

चरी *अंबरा. आरारा. गुर्जरा.* चरित, जीवन-कथनी

चरी *अखाका.* परहेजी [सं.चर्या]

चरीअइ **वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* चराय छे, भोगवाय छे (सं.चर्यते)

चरीइ *गुर्जरा.* चरित, जीवनकथा

चरीउ *आरारा. गुर्जरा.* चरित्र, जीवनकथनी (सं.चरित)

चरीत्र *मदमो. पंचवा.* कूट युक्ति; ठगारी वातो; कपट[भर्युं वर्तन] (सं.चरित्र)

चरु *गुर्जरा.* धननां पात्र (सं.)

चरु *हरिख्या.* अग्निमां बलिदान आपवा रांधेलो भात (सं.)

चरे *चित्तसं.* भक्षण करे

चर्म *अखाछ. चित्तसं.* [चामडानुं] शरीर; *प्रेमाका.* चामडानी बनावेली ढाल

चर्वडी *प्रेमाका.* चडभडी, [गुस्से थईने]

चलचींत *गुर्जरा.* चंचळ चित्तवाळो

चलण *कर्पूमं. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंवि.* पग (सं.चरण)

चलणडे *लावल.* चरणमां, पगमां

चलणवलण *अखाछ. अखेगी.* चालवुंवळवुं ते, हलनचलन, [प्रवर्तन]

चलणी *उक्तिर.* कटिवस्त्र (सं.चलनी)

चलवउं *लावल.* चालवुं [सं.चालवुं]

चळवळे *अखाछ. अखेगी.* हालेचाले, [प्रवर्ते]

चलाणउ *आरारा.* चालवुं ते, प्रयाण (रा.)

चलाणां, चलाणी *अभिऊ.* वाटकी, वाटका

चलाविसु *आरारा.* रवाना करीशुं, मोकलीशुं

चली *नेमिछं.* चलित थई, [हलमली]

चलू *उक्तिर. षष्टिप्र.* चळु, हथेळीभर पाणी; *आरारा. नरप. लावल. विमप्र.* चळु, जम्या पछी हथेळीमां पाणी लई मों चोख्खुं करवुं ते (सं.चुलुक)

चले *चित्तसं.* चळे, चलित थाय; *वीसरा.* चाले [सं.चल्]

चलेवळे *अखाछ.* चालेहाले, हिलचाल करे, [प्रवर्ते] [सं.चल्+वल्]

चल्लइ *गुर्जरा.* चाले; *लावल.* चाले, चलित थाय (सं.चल्यते)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चवदइ *उक्ति.* चौद (सं.चतुर्दश)

चवला *आरारा. उक्ति.* चोळा

चववुं, च्यववुं **अखाका. प्राचीका.* च्युत थवुं, भ्रष्ट थवुं; *आरारा. देवरा. प्राचीफा. षडाबा.* देवमांथी मनुष्य के तिर्यक् अवतारमां जवुं, स्वर्गमांथी पडवुं (सं. च्यवते)

चववुं *अखाका. अखाछ. प्राचीसं.* कहेवुं, वर्णववुं (दे.चव-)

चवीयला *गुर्जरा.* स्वर्गमांथी पडेला (सं.च्यु परथी)

चवेड *प्राचीसं.* थप्पड, तमाचो (सं.चपेटा)

चहइ *नलरा.* इच्छे (दे.चाह्)

चहट **उषाह.* [चोंटेला] (दे.चहुट्ट)

चहि *कर्पूमं. जिनरा.* चेह, चिता, अग्नि

चहुटउं, चुवटउं *आरारा. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. विक्ररा.* चौटुं, बजार (सं.चतुर्+हट्ट)

चहुटइ *नेमिचं.* चौटामां, बजारमां

चहुटा **शीलक.* [चोंट्या] [दे.चहुट्ट]

चहुडी, (चुहुडी) *उषाह.* चोडी, पहोळी, [विस्तृत]

चहुढीउ *लावल.* चोड्यो

चहु पाखलि जुओ पाखलि

चहुंटी *उक्ति.* चूंटी, चीमटी [दे.चहुंतिया]

चहेन *अखेगी.* चिह्न

चहेरो *चतुचा.* बदनामी

चहोडी *आरारा.* चडावी; *वीसरा.* [पूजा] चडावी, अर्पी (रा.)

चंग *दशस्कं(१) दशस्कं(२). प्रेमाका. मोसाच.* एक प्रकारनुं वाद्य [फा.]

चंग *अखाका. आरारा. ऐतिका. तेरका. नरका. नलरा. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा.* सुंदर, सरस (दे.)

चंगा *गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* सुन्दर, सरस

चंगिम, चंगिमा *प्राचीसं. शृंगामं.* सुन्दरता

चंगी *लावल.* सुंदर

चंचल *लावल.* अश्व [सं.]

चंचंतु *वाग्भबा.* देदीप्यमान, प्रकाशमान [सं.चंच्]

चंड *आरारा.* खूब (सं.)

चंत *अखेगी. चतुचा. चंद्रवा. प्रेमाका.* चित्त

चंत *मदमो.* आशक, [स्वामी]

चंतनी *चतुचा. चंद्रवा. दशस्कं(२). मदमो.* चित्रिणी, सुंदरी, नारी; जुओ चिंतनी

चंतवे *देवरा.* चिंतवे, [विचारे]

चंता *देवरा.* चिंता

चंतामण *चंद्रवा.* चिंतामणि, [चिंतवेलुं आपे तेवो मणि]

चंद *गुर्जरा. तेरका. नरका. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* चन्द्र

चंदण, चंदणु *गुर्जरा. तेरका.* चंदन

चंदन गोह *शीलक.* *पाटला घो, [चंदन घो]

चंदन वाळवुं *दशस्कं(१).* जडमूळथी उखेडवुं, [घाण वाळवो, रगडो करी नाखवो]

चंदनसीपा *लावल.* चंदनथी भरेली छीपो

चंदनि (चंदनि देहु) *गुर्जरा.* चांदनी (जेवो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुभ्र देह)

चंदलडउ *लावल.* चांल्लो

चंदलावयणी *लावल.* चंद्रना जेवा वदनवाळी

चंदसूर *नेमिछं. लावल.* चन्द्र अने सूर्य

चंदाइच्च *प्राचीसं.* चन्द्रादित्य

चंदाननी *चारफा.* चंद्रमुखी (सं.चंद्रानना)

चंदिम *प्राचीसं.* चन्द्रिका

चंदु *शृंगामं.* चंद्र

चंदूआ *ऋषिरा.* चंदरवो [सं.चन्द्रोदय]

चंदौउ *उक्तिर.* चंदरवो (सं.चंद्रोदय)

चंद्रवा *प्रेमाका.* चंदरवा

चंद्रावण *मदमो.* चांद्रायण [व्रत]

चंद्रावली **नेमिछं. लावल.* चंद्रावली, कृष्णनी एक राणी

चंद्रुवा *लावल.* चंदरवा

चंद्रूउ *कादं(शा). नरका. नलरा. विमप्र.* चंदरवो [सं.चन्द्रोदय]

चंद्रूयउ *उक्तिर.* चंदरवो (सं.चन्द्रोदय)

चंद्रोदय जुओ चंद्रोदय

चंद्रोय *तेरका.* चंदरवो (सं.चन्द्रातप, जै.सं. चन्द्रोपक) [सं.चन्द्रोदय]

चंपइ *लावल. वीसरा.* चांपे, दबावे [दे.]

चंपइविल्लि *तेरका.* चमेली (सं.चंपक+वल्ली)

चंपकवन्नी *गुर्जरा.* चंपकवर्णी

चंपय *प्राचीसं.* चंपक, चंपो

चंपलु *प्राचीफा.* चंपानो छोड (सं.चंपक)

चंपावन्नी *तेरका.* चंपावरणी (सं.चंपक-वर्णिका)

चंब *विमप्र.* चामडी [सं.चर्म]

चंबक *ऋषिरा.* लोहचुंबक (सं.चुम्बक)

चंबुकगिरि *चित्तसं.* लोहचुंबक धरावतो पर्वत

चंमकपांहांण *मदमो.* लोहचुंबक

चाउ *प्रद्युचु.* चाप, धनुष्य

चाउआ **चतुचा.* [चोवा, विविध गंध-द्रव्योथी बनावेलुं सुगंधित द्रव्य]

चाउचियाविउ *विमप्र.* *उश्केरायेलो, [*आवेशमां आव्यो] [*रा.चूंचावणो]

चाउरि, चाउरी *अंगवि. आरारा. *गुर्जरा. *नंदब. *नेमिछं. *विमप्र.* गादी (दे.)

चाउल *विमप्र.* चोखा (दे.)

चाउंडा *उक्तिर.* चामुंडा

चाक *अभिऊ. उक्तिर. प्रेमाका.* [चाकडो], चक्रावो, गोळ भ्रमण (सं.चक्र)

चाक *नलरा.* अंबोडामां खोसवानुं स्त्रीनुं एक चक्राकार घरेणुं (सं.चक्र)

चाकल *लावल.* चाकळा, [नानी गादी] [दे.चक्कल]

चाकवो **पंचवा.* [जोवो] [सं.चक्ष्-]

चाकुलउ *अंबरा. गुर्जरा. नेमिछं.* चाकळो, [गोळ नानी गादी] (सं.चक्र+उल्ल) [दे. चक्कल]

चाख *आरारा. जिनरा.* नजर, दृष्टिदोष (सं. चक्षु)

चाखिवउ *जिनरा.* चाखवोक

चाखी **गुर्जरा. विराप.* चाखी, भोगवी (दे. चक्खिआ)

चाचर *उक्तिर. नलरा. नेमिछं. शृंगामं.* चोगान, चोक (सं.चत्वर)

चाचरि *उक्तिर. प्राचीसं.* चर्चरी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[गीतविशेष]

चाट *नेमिछं.* खुशामत करनार (सं.चाटु)

चाटको *नरका.* चटको, आघात

चाटवो *प्रेमाका.* लाकडानो कडछो [दे. चट्टुअ]

चाटिकु *विमप्र.* चटाको, [चटको, झीणो घा]

चाटू *अंबरा.* चाटवो, [लाकडानो कडछो] [दे.चट्टुअ]

चाटुकारिया वचन *उक्तिर.* मीठां वचन (सं.चाटुकारिकानि वचनानि)

चाड *षष्टिप्र.* दुर्जन, कपटी (दे.चाड)

चाड,चाडि *आरारा.* प्रयोजन, जरूर (रा.); *उषाह. प्राचीसं. *शीलक.* सेवा, *भक्ति, [सहायता, मदद]

चाडूउ *नलरा.* एकनी वात बीजाने कही देनार चाडियो [दे.चाडय]

चाढीनइ *आरारा.* चडावीने

चाणउरि *प्राचीसं.* चाणूर, [एक मल्ल]

चातरइ *लावल.* चलित थाय, [खसे]

चातारिणी *आरारा.* मीठाई वगेरेनी भेट (रा.)

चातुक *नरका.* चातक पक्षी

चातुर *मदमो.* चतुर

चातुरिम *नलरा.* चतुराई (सं.चतुरिमा)

चात्र *सिंहा(शा).* चातरीने, गुप्त, संयत

चात्रुक *दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका.* चातक पक्षी

चाथरि *उक्तिर.* हास्य [दे.चत्थरि]

चाप *प्रेमाका. लावल.* धनुष (सं.)

***चापइ** [चांपइ] *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* चंपाना फूलमां (सं.चम्पक)

चापकि *कादं(शा).* चाबुकथी

चाबख *प्रेमाका.* चाबुक

चापकि *प्रेमाका.* चाबुक

चाबण *उक्तिर.* चावीने खावानो शेकेलो खाद्य पदार्थ, चवाणुं (सं.चर्बण) [रा.]

चाम *अखाछ.* [चामडानुं] शरीर; *जिनरा.* चामडी

चामडुं *अखाछ.* [चामडानुं] शरीर; जुओ चांमड

चामर **विमप्र.* [चमार जेवा हलका लोक]

चामरहारी *प्राचीफा.* चामरधारिणी स्त्री

चामाचेड *उक्तिर.* चामाचीडियुं [दे.चम्मचिडअ]

चामीकर *नलाख्या.* सुंदर (सं.)

चाय *देवरा.* चाह, इच्छा

चारण **गुर्जरा.* [आकाशगमन करी शकता साधुनो प्रकार]

चारण *आरारा.* (गाय) चारवी ते

चारणी *आरारा.* हालतीचालती (रा.चारिणी)

चारवी *आरारा.* चरावीने

चारंणी *मदमो.* चाळणी

चारि *गुर्जरा.* घास, [चारो]

चारि **प्रबोप्र.* [उपाय, लाग] [दे.]

चारि *उक्तिर.* चार (सं.चत्वारि)

चारित *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा.* व्रतमय जीवन, संयम, दीक्षा (सं.चारित्र)

चारित्तु *षडाबा.* संयमधर्म (सं.चारित्र)

चारित्र *आनंस्त. देवरा. नलरा. लावल.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयमधर्म, त्यागधर्म, दीक्षा [सं.]

चारित्री *आनंस्त.* संयमी, [संयमधर्मी]

चारित्रीआ *उपबा.* चारित्र – जैन दीक्षाव्रत पाळनारा

चारिहिं *गुर्जरा. विराप.* चालवाथी, चालथी (सं.चार)

चारीय *हरिवि.* नृत्यना गतिविशेषमां (सं. चारी)

चारुवाक *अखेगी.* चार्वाक[दर्शन]

चारो **अखाका. चतुचा. प्रेमप.* उपाय

चाल, चालो *चित्तसं.* प्रवर्तन

चाळ *प्रेमाका.* चादर

चालइ **लावल.* [चाले, काम थाय]

चालइ *वसंवि.* चळे, [चलित थाय] (सं. चल्यते)

चाळ ओढवी *प्रेमाका.* देवाळुं काढवुं

चालणी *उक्तिर.* चाळणी (सं.चालनी)

चालवि *कादं(शा).* चालवाथी

चालवे *चित्तसं.* चलित करे; *नरका.* चळावे, चलित करे; चलावे, हलावे [सं.चाल्]

चाला *आरारा.* चेष्टा; *नेमिछं.* *गति, [चेष्टा, प्रवृत्ति]

चालि *प्राचीफा.* चाल, रूढि

चाले *नरका.* चलावे, चलित करे

चालेव्या *चंद्रवा.* चालवा[मां]

चालो जुओ चाल

चाळो *अखाका.* चेष्टा

चाल्युं जाइ *चित्तसं.* प्रवर्त्युं जाय

चावइ **जिनरा.* [स्वेच्छाए]

चावडी *प्रेमाका.* [चोकी], पोलीसथाणुं

चावळ *वीसरा.* चोखा

चावी **नरका.* [बदनाम] [हिं.]

चावे *अखाछ.* कहे (दे.चव)

चास *उक्तिर. प्रेमाका. मदमो.* कुंजडुं, एक पक्षी (सं.चाषः)

चासणी **विमप्र.* [घोडाने आपवामां आवतुं जोगाण, चंदी]

चासंध *अखाछ.* जाहेर, उघाडे छोगे

चाहइ *उषाह. नरका. नेमिछं.* **प्राचीफा. प्राचीसं. विक्ररा.* **विमप्र.* जुए, नीरखे, [प्रेमभरी दृष्टिथी जुए] (अप. चाह) [दे.चाह]; **अंबरा.* [राह जुए, प्रतीक्षा करे]; *उषाह. प्रबोप्र.* इच्छे, [याचे]

चाहन *वेताप.* उघाडुं, जाहेर

चाहीजइ जुओ कही चाहीजइ

चाहेक *चंद्रवा.* मनगमतां

चांचूड *षडाबा.* चांचड [दे.चंचट]

चांदरणी *दशस्कं(२). प्राचीफा.* चंद्रनो प्रकाश, चांदनी

चांदलु *गुर्जरा.* चंद्र

चांदुलउ *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि.* चंद्र

चांदुलडउ *गुर्जरा.* चंद्र

चांदुला *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* चंद्र

चांद्र *प्राचीफा.* चन्द्र

चांद्रणउ *प्राचीसं.* चन्द्रिका, [चंद्रप्रकाश]

चांद्रणी *कादं(शा). विमप्र.* चांदरणी, तारामंडळ; *दशस्कं(२).* चांदनी, [चंद्रप्रकाश]; *नरका.* चांदनी, [*तारामंडळ]

चांद्रिणी *प्राचीफा.* चांदनी, चंद्रप्रकाश-[युक्त]; *लावल.* चांदनी, [चंद्रप्रकाश]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चांद्रिणु *उक्ति.* चंद्रप्रकाश

चांप *उक्ति.* चंपानगरी

चांपइ *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* चंपामां (सं.चंपक); जुओ चापइ

चांपइ *अखाछ. उक्ति. जिनरा. वसंफा. वसंफा(ल). विराप. वीसरा. षडाबा.* चांपे, दबावे [दे.चंप]

चांपउ *उक्ति.* चंपक, [चंपो]

चांपला-तरुअर *वसंवि(ब्रा).* चंपक वृक्ष

चांपी **नरका.* [चांपीने, दबावीने, कडकाई-थी]

चांपुला *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* चंपो (सं.चंपक)

चांपेल *लावल. विमप्र.* चंपानुं तेल [सं.चंपक-तैल्य]

चांपे-शुं *प्रेमाका.* [काळजीथी, खंतथी]

चांबडउ *उक्ति.* चामडुं (सं.चर्म-)

चांबलि *हम्मीप्र.* चंबल नदी

चांबिल *वीसरा.* चंबल नदी

चांमड *चंद्रवा.* ?, [*चामडानुं शरीर]; जुओ चामडुं

चांहीन *अखेगी.* चिह्न

चिऊआलीस *नलरा.* चूंवाळीस (सं.चतु-श्चत्वारिंशत्)

चिगचिगतउ *उपबा.* चकचकतुं

चिचि **प्रद्युचु.* [त्याज्य] [दे.चिच्च]

चिटक *प्रेमाका.* वळगाड, [मेली विद्या]

चिडउ *उक्ति. नलरा.* चकलो (सं.चटकः)

चिडी *अंबरा. उक्ति.* चकली (सं.चटका); *वीसरा.* पक्षी, [चकली] (सं.*चिटक)

चिणइ *उक्ति.* वीणे, एकत्रित करे (सं. चिनोति)

चिणय *तेरका.* चणो (सं.चणक), (*चीणो, एक धान्य) [दे.चीण]; जुओ चीणउ

चिणिउ *उक्ति.* वीणेलुं, एकत्रित करेलुं

चिणी *षष्टिप्र.* चणेली, [चणतर थयेली] (सं. चिनोति परथी)

चिणोठी *उक्ति.* चणोठी (दे.चिणोट्ठी)

चितवी *देवरा.* चिंतवी, विचारी

चित लाई *आरारा.* चित्त लगाडीने, ध्यान-थी; जुओ लाइ

चित्त चोरी *नरका-२.* कसर राखी, झांखो पडी, [संकोच पामी]

चित्तप्रसत्ति *आनंस्त.* चित्तने जोडवुं ते [सं.चित्तप्रसक्ति]

चित्तमास *प्राचीसं.* चैत्र मास

चित्रउ *षडाबा.* चित्तो (सं.चित्रक)

चित्रकारीऊं *वाग्भबा.* आश्चर्यकारक

चित्र-लखिया *प्रेमाका.* चित्रमां चीतर्या होय तेवा, स्थिर, मूढ [सं.चित्रलिखित]

चित्र-लंक *प्रेमाका.* चित्ताना जेवो केडनो वळांक; जुओ लंक

चित्रशाली, चित्रशाळी, चित्रसाली **गुर्जरा. *प्रेमाका. *विराप.* [सुंदरी]

चित्रसालि, चित्रसाली **उषाह. तेरका. लावल. पंचवा. प्राचीफा.* ज्यां चित्रो गोठव्यां होय एवुं दीवानखानुं, रंगभवन (सं.चित्रशाला)

चित्रसाली जुओ चित्रशाली

चित्राम *कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. नलरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विमप्र. चितरामण, चित्रो

चित्रालंकी *नरका.* चित्ताना जेवी पातळी केडवाळी; जुओ लंक

चित्रावेलि, चीत्रावेल ऐतिरा. उक्तिर. इच्छित फळ आपनारी वेली, [अक्षय-निधिनी सिद्धिवाळी वेली] [सं.चित्रक-वल्ली]; जुओ चित्रावेल

चित्रांम *प्राचीफा.* चितरामण

चिपुट *ऋषिरा.* चपटुं, बेसी गयेलुं (सं. चिपिट)

चिबुक *अखाका. प्रेमाका.* हडपची (सं.)

चिमिचिमि *ऋषिरा.* चमचम अवाज

चिय *प्राचीसं.* चिता

चिय *गुर्जरा.* भारवाचक अव्यय (सं.चैव)

चियवास *ऐतिका.* चैत्यवास

चियारि *षडाबा.* चार (सं.चत्वारि)

चियालीस *षडाबा.* चालीस (सं.चत्वारिंशत्)

चिरास **शृंगामं.* [चिरकालीन, चिरंजीव] [सं.चिरस्य, प्रा.चिरस्स]

चिवियां *शृंगामं.* कह्यां [दे.चव]

चिह *गुर्जरा. विराप. सिंहा(म).* चिता, चेह

चिहउं *विराप.* चार [सं.चतुर्+खलु]

चिहारइं *शृंगामं.* चारेय

चिहिंन *प्रेमाका.* चिह्न, लक्षण

चिहु *लावल.* चार (सं.चतुर्+खलु)

चिहुपखी *विमप्र.* चारे बाजु

चिहुर *शृंगामं.* केश, वाळ (सं.चिकुर)

चिहुं *आरारा. गुर्जरा. नरका. नेमिछं. लावल. वीसरा.* चार, चारेय (सं.चतुर्+खलु)

चिहुंघडियउ *वीसरा.* चोघडियुं, मुमुहूर्त (चिहुं+सं.घटि)

चिहुं दिसि *ऋषिरा.* चारे दिशामां

चिहुं परि *उक्तिर.* चार प्रकारे

चिंचूड *षडाबा.* चांचड [दे.चंचट]

चिंत, चींत *उषाह. नलरा. लावल.* चित्त; *गुर्जरा. वीसरा.* चिंता, विचार

चिंतइ *नेमिछं. लावल.* विचारे

चिंतनी, चींतनी **अखाका. मदमो. सिंहा(शा).* चित्रिणी, सुंदरी; जुओ चंतनी

चिंतवइ *देवरा. जिनरा.* चिंतवे, विचारे

चिंति *नेमिछं.* चित्त

चिंतु *गुर्जरा.* चित्त

चिंत्य *कादं(शा).* चित्तमां

चिंध *गुर्जरा. प्राचीफा.* निशानी, धजा (सं. चिह्न)

-ची *नलरा. प्राचीफा.* षष्ठीनो प्रत्यय, [-नी] (सं.-त्य); जुओ -च

चीकण *वेताप.* एक जातनी काकडी

चीखल *उक्तिर. ऐतिरा. नलरा. प्राचीफा.* कादव (दे.चिक्खल्ल)

चीखलालुं *उक्तिर.* कादवियुं

चीखली *शृंगामं.* चीकणी, कादवयुक्त (दे. चिक्खल्ल)

चीगट *नंदब.* चीकाश

चीगराई *आरारा(व).* चिकाखाई ?

चीचूअइ *उक्तिर.* चींचीं अवाज करे, चीस पाडे

चीणउ *उक्तिर.* चीणो, एक धान्य [दे.चीण]; जुओ चिणय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चीणीकबावा *आरारा(व).* चण-कबाब, एक वनस्पति (फा.चिनिकबाला)

चीत *प्राचीसं.* चैत्र

चीतनी *मदमो.* सुंदरी (सं.चित्रिणी); जुओ चींतनी

चीतरा *प्रेमाका.* चित्ता

चीतराव्यउ *जिनरा.* याद कराव्या

चीतवइ, चींतवइ *अखेगी. उपबा. नलाख्या. *प्रेमप. षडाबा.* चिंतन करे, विचारे (सं.चिन्तयति)

चीती *विमप्र.* चिंतव्या मुजब, इच्छा मुजब

चीतु *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* चित्त

चीत्रइ *उक्तिर.* चीतरे (सं.चित्रयति)

चीत्रउ *उक्तिर.* चित्तो (सं.चित्रकः)

चीत्राम *कामा(त्रि). कामा(शा).* चितरामण

चीत्रावेल जुओ चित्रावेलि

चीनउं *गुर्जरा-टि. *विराप.* चीरेलुं, विदारेलुं (सं.चीर्णम्)

चीनी *नरका.* ओळखी [सं.चिह्न परथी]

चीन्यो *नरका.* ओळख्यो, जाण्यो [सं. चिह्नितम्]

चीपडी *विमप्र.* [चीबी, बूची, चपटा नाकवाळी]

चीपडीउ, चीपिडउ *उक्तिर.* एक झेरी जीवडुं (सं.चिपिटक)

चीफाड *उक्तिर.* [?] (सं.चित्तस्फोटक)

चीर *कादं(ध्रु).* जथ्थो, जूंडो

चीर *गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. पंचवा. प्रेमाका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* वस्त्र, उत्तम के रेशमी वस्त्र (सं.)

चीरी *प्रद्युचु. वीसरा.* चिट्ठी

चील्ह *उक्तिर.* समडी (सं.चिल्लः)

चील्हडां *शृंगामं.* समडी (दे.चिल्ल)

चील्हसाग *उक्तिर.* चील, एक पांदडावाळी वनस्पति जेनुं शाक बने छे (दे.चिल्ली+ सं.शाक)

चीवर *आरारा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वस्त्र (सं.)

चींचूए *प्रेमाका.* चूं चूं एवो अवाज करे

चींत *आरारा. गुर्जरा.* चित्त; जुओ चिंत

चींत- *गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* विचार करवो (सं.चिन्तय्)

चींतनी जुओ चिंतनी, चीतनी

चींतवइ जुओ चीतवइ

चींतारउ *नलरा.* चित्रकार, चीतारो

चींनविउ *कृष्णच.* ओळखाव्यो

चुआ *नरका.* [विविध गंधद्रव्योना मिश्रणवाळुं एक गंधद्रव्य]; जुओ चुवा चंदन, चूआ, चूया, चोआ, चोवउ

चुक *विक्ररा.* चोक [सं.चतुष्क]

चुकडई *विमप्र.* चारचार; जुओ चोकड

चुकडउ *नलरा.* काननुं एक घरेणुं, चोकडा

चुकडुं *कादं(शा). विमप्र.* चोकडुं (घोडानुं)

चुकसि *रूपच.* चूकीश, [खोईश]

चुक्क *अभिऊ.* चोक, [साथियानी आकृति] (सं.चतुष्क); जुओ चउक

चुक्क- *तेरका.* चूकवुं (सं.च्यु+क्क)

चुक्कवि *गुर्जरा.* चूकी जईने

चुटां *कर्पूमं.* चौटां [सं.चतुर+हट्ट]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुणणि *गुर्जरा.* चणवा माटे (सं.चिनोति)

चुणिवानइ *सिंहा(म).* चणवा वखते

चुथउ *आरारा. नलरा. नलाख्या.* चोथुं (सं. चतुर्थक)

चुपखेर *हम्मीप्र.* चारे बाजु; जुओ चउपखेर, चुपाखर

चुपट **नलरा.* [चारे बाजु खुल्ला]; *उषाह.* चारे तरफथी, [*विनाशक] (सं.चतुः +पट्ट) [हिं.चौपटा]; जुओ चउपट

चुपट्ट **विमप्र.* [खुल्ली रीते, मुक्तपणे]

चुपाखर *नलरा.* चारे बाजु (सं.चतुः+पक्ष); जुओ चुपखेर

चुफला *उषाह.* कदावर, [पुष्ट]

चुमासुं *नलरा. विमप्र.* चोमासुं, [जैन साधुनुं चातुर्मास]

चुयो *वेताप.* कोई वस्तु बाळी उकाळीने काढेलो सत्त्वरूप रस

चुरइ *विक्ररा.* चोरामां

चुरंग *अभिऊ.* चारे अंगनी, [गाढ]

चुरी *लावल. नलख्या.* चोरी, लग्नमंडपना चार खूणे करवामां आवती माटलीनी रचना

चुलसी *प्राचीफा. प्राचीसं.* चोराशी (सं. चतुरशीति)

चुले *आरारा.* चोळाथी [दे.चवलय]

चुवटउं जुओ चहुटउं

चुवटि, चूवटि *कादं(ध्रु). कादं(शा).* चोवाटमां, चकलामां, [चार रस्ता भेगा थाय त्यां] (सं. चतुर्वर्त्मी); जुओ चहुटउं

चुवण *अखाका.* चूवेलुं द्रव्य

चुवा चंदन **मदमो.* [चुवा – एक मिश्रण-युक्त गंधद्रव्य अने चंदन]; जुओ चुआ, चोवा

चुविह *आरारा.* चार प्रकारना (सं.चतुर्विध)

चुसठि *नलरा. लावल.* चोसठ (सं.चतुःषष्टि)

चुसाल *नलरा. *प्रद्युचु.* *पहोळी, [विशाळ] (सं.चतुःशाला); जुओ चउसाल

चुहुटुं *प्राचीफा. विक्ररा.* चौटुं, बजार (सं. चतुर्+हट्ट); जुओ चउहटुं

चुहडियां *लावल.* चोड्यां [दे.चुहुट्ट]

चुहि *नलख्या.* चारे, चारेय (सं. चतुर्+खलु)

चुहु *कादं(शा).* चार (सं.चतुर्+खलु)

चुहुटइ *विक्ररा.* चौटे, [बजारमां] [सं. चतुर्+हट्ट]

चुहुडी जुओ चहुडी

चुहुवटां *अभिऊ.* चौटां, बजार (सं.चतुर्+ हट्ट) [सं.चतुर्वर्त्म]

चुं *प्रद्युचु.* चार [सं.चतुर्]

चुंकलइ *उक्तिर.* धारदार वस्तु घोंचवी [*दे. चंछ]

चुंकार *प्राचीका.* आश्चर्य[कारक] (सं. चमत्कार)

चुंचुता **नरप(द).* [चमचमता, फळफळता, गरम, ताजा]

चुंटिवुं *उक्तिर.* चूंटवुं, वीणवुं [सं.चंट्]

चुंबइ *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* चुंबन करे (सं.चुम्बति)

चूआ **अभिऊ. *प्रेमाका.* [विविध गंध-द्रव्योना मिश्रणवाळुं एक गंधद्रव्य]; जुओ चुआ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूक *उक्ति.* आमली (सं.चुक्रम्)

चूटिवा वांछइ *उक्ति.* चूंटवा इच्छे

चूड *प्रेमाका.* [वींटळाईने करवामां आवती] पक्कड, भींस [दे.]

चूडकरण *कादं(शा).* बाळमोवाळा उतरावनो विधि (सं.चूडाकरण)

चूडाली *कादं(शा).* चूडावाळी, सौभाग्यवती स्त्री

चूडावयंसु *ऐतिका.* चूडावतंस, [शिरमोर]

चूढीयिइ *कादं(शा).* चोढवामां आवे (दे. चउट्ट)

चूणि *उक्ति.* चूरो (सं.चूर्णि)

चूतांकर जुओ नूतांकुर

चूति *उक्ति.* स्त्रीयोनि; गुदा (सं.च्युति)

चूथउ जुओ चउथउ

चून *उक्ति.* लोट (सं.चूर्णम्) [हिं.]

चूनउ *गुर्जरा.* चूरो (सं.चूर्ण+क); *उक्ति.* चूरो, भूसुं

चूनडि, चूनडी *ऐतिका. वीसरा. स्थूलिफा.* वस्त्रविशेष, चूंदडी

चूनडीअ *स्थूलिफा.* चूंदडी, स्त्रीनुं एक जातनुं भातीगर रेशमी वस्त्र

चूनलडी *नरका.* चूंदडी

चूनी *नरका. प्रेमाका.* हीरानो के रत्ननो नानो टुकडो, स्त्रीओने नाकमां पहेरवानी टीपकी

चूब **गुर्जरा.* [भोंकवुं ते] [हिं.चुभना]

चूया **लावल.* [विविध गंधद्रव्यना मिश्रणवाळुं एक गंधद्रव्य]; जुओ चुआ

चूर *नेमिछं.* चूरो

चूरइ *गुर्जरा. प्रेमाका.* चूरो करे (सं. चूरयति)

चूरी *नेमिछं.* चूरो, भूको

चूरीइ, चूरीयइ *उपबा. नेमिछं.* चूरो कराय

चूरी पूरी **नरका.* [चूरमुं अने पूरी]

चूरीयइ जुओ चूरीइ

चूर्यु *आरारा. ऋषिरा.* दळी नाख्युं, चूरेचूरा करी नाख्युं

चूल्हउ *आरारा. प्रद्युचु.* चूलो (सं.चुल्लिः)

चूल्हि, चूल्ही *उक्ति. षडाबा.* चूल (सं. चुल्लिः)

चूवटि जुओ चुवटि

चूंथा *नरका. प्रेमाका.* चींथरा

चूंबणी *वीसरा.* चुंबन करवां ते

चेजं **विमप्र.* [चणतर] [दे.चेच्च]

चेजुं **विमप्र. *लावल.* [चणतर] [दे.चेच्च]

चेट *ऋषिरा.* दास (सं.)

चेटक *कस्तुवा. चित्तसं. प्रेमाका.* जादु, मेली विद्या

चेटक (चेटक लाग्युं) *नरका.* घेलुं [लाग्युं]

चेटी *अखाका. आरारा.* दासी (सं.)

चेडी *नेमिछं. षडाबा.* दासी (सं.चेटिका)

चेत *आरारा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* चित्त (सं.चेतस्); *आरारा. ऋषिरा. नेमिछं.* भान [सं.चेतस्] *चंद्रवा.* सावचेती राखीने, काळजीपूर्वक, [विचारीने]

चेत *उक्ति.* चैत्र मास

चेतिउ *अखाका. उपबा.* चेत्यो, जागृत थयो, सभान बन्यो (सं.चेतयति)

चेत्र *वीसरा.* चैत्र मास

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेत्रड *मदमो.* गांडी, दाधारंगी स्त्री

चेन जुओ अंगचेन

चेरी *दशस्कं(२). प्रेमाका.* दासी (सं.चेटी)

चेलुकां *प्राचीसं.* बाळको [दि.चेल्लय]

चेलुखेप *प्राचीफा.* आकाशमांथी वस्त्रोनी वृष्टि थवी ते (सं.चेलोत्क्षेप)

चेहेन *अखाका. अखेगी. चंद्रवा. चित्तसं. मदमो.* चिह्न, लक्षण

चेहेबचो *प्रेमाका.* शेवाळ अने वनस्पतिवालो होज [फा.चहबच्चह्]

चेंन *सिंहा(शा).* चिह्न

चैतन्यमे *चित्तसं.* चैतन्यमय

चैत्य *आरारा.* जिनमंदिर (सं.)

चैत्यपरवाडि *प्राचीफा.* क्रमपूर्वक मन्दिरोनी यात्रा (सं.चैत्यपरिपाटी)

चैत्यमाला *ऋषिरा.* जैन देरासरोनी हार

चैद *दशस्कं(२).* चेदि देश; *नलाख्या.* चेदि देशने लगतुं

-चो *ऐतिका.* -नो; जुओ -च

चोआ *विमप्र. हम्मीप्र.* [विविध गंधद्रव्यो-वाळो] एक सुगंधीदार पदार्थ; जुओ चुआ

चोक *नरका. नरप.* स्त्रीओनुं मस्तकनुं एक घरेणुं (सं.चतुष्क)

चोकड **नरका.* [चार सेरनी]; जुओ चुकडइ

चोकडी *प्रेमाका.* चारनी संख्या; [*चोकडी-नी भातवाळा]

चोकी *नरका.* स्त्रीओनुं माथानुं एक घरेणुं

चोकु *आनंस्त.* चारगणुं

चोको *प्रेमाका.* रसोई वगेरे माटे जमीन उपर थतुं लींपण, अबोट

चोखभंडि **विमप्र.* [साव हलकी, असती, कुलटा][दि.चोक्ख+भंडी]

चोखरो *मदमो.* छंदविशेष

चोखालणि *नेमिछं.* चोख्खुं करवा माटे [दि. चोक्ख]

चोखाला *लावल.* चोख्खा, स्वच्छ [दि. चोक्ख]

चोखी *आरारा.* सरस, सरस रीते (रा.); *नेमिछं.* चोख्खी, [स्वच्छ, निर्मळ]

चोखुट, चोखुंट *चंद्रवा. मदमो.* चारे दिशा, चारे सीमा, सर्वत्र [सं.चतुर्+दे.खुंट]

चोगमा *चंद्रवा.* चारे बाजु

चोज *अखाका. अखाछ. *अखेगी. उक्तिर.* आश्चर्य, चमत्कार, [चमत्कारपूर्ण अनुभव]; *अखेगी. *शृंगामं.* व्यंग्य[भरी उक्ति], [चमत्कारपूर्ण उक्ति] (सं.चोद्य)

चोट *प्रेमाका.* चीवट, [काळजी; झडप]

चोड (चोड वाळ्युं) *प्रेमाका.* नाश [कर्यो]

चोडो *प्रेमाका.* पहोळो

चोनाणी *शृंगामं.* चार प्रकारना ज्ञानवाळा [सं.चतुर्ज्ञानी]

चोप, चोंप *प्रेमाका.* झडप, उतावळ, उत्साह, चपळता, [चानक]

चोपडणु *षडाबा.* चोपडवानी क्रिया (दे. चोप्पड)

चोपडा वरांसे एठुं *नरका.* चोपडेलाने भरोसे एठुं (उच्छिष्ट), [कंईक लाभ माटे हलकी वस्तुनो स्वीकार करवो ते]

चोपां *वेताप. सिंहा(शा).* ढोर (सं.चतुष्पद)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोफेर *प्रेमाका.* चारे बाजु

चोबदार *प्रेमाका.* छडीदार [फा.]

चोबोला *कामा(शा).* टोणा, [चाबखा]; जुओ चबोला

चोमाल *कस्तुवा.* चोथे माळे

चोरचरड *ललिरा.* चोरलूंटारा [सं.चौर+चरट]; जुओ चरड

चोरचिखार *दशस्कं(२).* चोर-धुतारा; जुओ चखार

चोरडउ *उक्तिर.* चोरटो [सं.चौर परथी]

चोरारि *लावल.* चोर अने अरि – शत्रु

चोरासी *अखाका. नरका.* जीवना चोरासी लाख अवतार

चोरासी खाण *प्रेमाका.* चोरासी लाख जन्म-योनि

चोरी *अखाछ.* ?, [कोईक धार्मिक आचार]

चोल *ऐतिका. नरका. नलरा. नलाख्या. शीलक.* मजीठ, घेरा लाल रंगनी वनस्पति; घेरो रातो रंग; **शृंगामं.* [वस्त्र-विशेष, लाल रंगनुं वस्त्र]

चोलक *ऐतिरा.* चौलुक्य वंश

चोलणा *जिनरा.* वेश, [झभ्भा] [हिं.चोलना]

चोलपट्टउ *षडाबा.* कटिवस्त्र (सं.चोलपट्ट)

चोलमजीठा *प्राचीफा. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मजीठ जेवा लाल; जुओ चोल

चोलवटउ *उक्तिर.* कटिवस्त्र (सं.चोलपट्टः)

चोलीय *वसंवि.* चोळी (सं.चोलिका)

चोळो *प्रेमाका.* मूंझवण, [गभराट, भय, चिंता]

चोवउ *आरारा. वीसरा.* विविध गंधद्रव्योना मिश्रणवाळुं एक गंधद्रव्य; जुओ चुआ, चुवा, चोवा

चोवट वाळ्युं *दशस्कं(२).* ध्वस्त कर्या, [नष्ट कर्या]

चोवटि *अखाछ. कादं(शा).* चौटामां, चकलामां

चोवा *आरारा. ऐतिका.* विविध गंधद्रव्योथी बनावेलुं एक सुगंधी द्रव्य; जुओ चोवउ

चोविहार *आनंस्त.* खान-पान आदि चार प्रकारना आहारनो त्याग [सं.चतुर्+व्याहार]

चोसर *देवरा. प्रेमाका.* चार सेरनी (माळा)

चोहटे *पंचवा.* बजारमां, चौटे (सं.चतुर्हट्ट)

चोहो *चंद्रवा. दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो.* चार (सं.चतुर्+खलु)

चोहोवटे *मदमो.* चौटे, [चार रस्ता भेगा थाय ते स्थळे] (सं.चतुर्वर्त्मन्)

चोंप जुओ चोप

चौदुं *अखाका. अखाछ.* चौदवलुं, सोळ भागमांथी चौद भाग सोनाना होय एवुं, चोख्खुं सोनुं

चौनाणी *जिनरा.* चार प्रकारना ज्ञानवाळा [सं.चतुर्ज्ञानी]

चौरज्य *चित्तसं.* चौर्य

चौवट *नरप(द).* चौटुं, [चार रस्ता भेगा थाय ते स्थळ, जाहेर स्थान] [सं.चतुर्वर्त्मन्]

चौवार **जिनरा.* [अगाशी परनी चार बाजु खुल्ली स्थापत्यरचना]; जुओ चउबारउ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च्यतुरंगी *रूत्तस.* चतुरंगी [चार अंगवाळी] (सेना)

च्यवइं *उपबा.* नीचला अवतारमां पडे [सं.च्यु]; जुओ चववुं

च्यहु परि *उक्तिर.* चार प्रकारे

च्यंत *अखाका. अखेगी.* चित्त

च्यंता *उषाह.* चिंता

च्यार *कादं(शा).* दूत, [सेवक] (सं.चार)

च्यारसयां *ऐतिरा.* चार सो [सं.चत्वारि शतानि]

च्यारि *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. वीसरा.* चार (सं.चत्वारि)

च्यालि (च्यारि) *नेमिछं.* चालीस, [सं.चत्वारिंशत्]

च्युहु *उक्तिर.* चार [सं.चतुर्+खलु]

च्येहेन *मदमो.* लक्षण, चेन (सं.चिह्न)

छ *नलरा.* छे

छइ *उक्तिर. गुर्जरा. नलरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* छे (सं.आक्षेति)

छइ *षडाबा.* देखाव, आकृति (सं.छवि)

छइतालीस *षडाबा.* छेतालीस (सं.षट्चत्वारिंशत्)

छइल, छइल्ल *नलरा. नेमिछं. लावल. वसंवि.* छेल, रसिक, [चतुर] (सं.छवि+इल्ल; दे.छइल्ल); जुओ छयल

छउगाला *जिनरा.* छोगावाळा, [छेलछबीला]

छउमत्थ *नेमिछं.* छद्मस्थ, केवलज्ञान प्राप्त कर्या पहेलांनी अवस्था, [असर्वज्ञ अवस्था]; जुओ छद्मस्थ

छए *ऐतिरा.* छे

छकाइ *नरप(द).* बहेकी गई, [उन्मत्त थई]

छग *जिनरा.* छ

छगणक *षडाबा.* छाणुं [दि.छगण]

छगल्यानो *आनंस्त.* चगळयानो

छगवीस *जिनरा.* छवीस

छछउंदिरी *ऋषिरा.* छछूंदर [दे.छच्छुंदर]

***छछेरा [छछोरा]** *प्रेमाका.* छीछरा, [आछकला]

छछोरी *प्रेमाका.* छीछरी, [छोकरमतवाळी]

छछोंहा *जिनरा.* [स्फूर्तिवाळुं, उत्साहयुक्त; जलदीथी]

छटकी *ऋषिरा.* छांटी [गु.छडकवुं; हिं. छिडकना]

छडइ *गुर्जरा.* छड्डे [वरसे]

छडउ *गुर्जरा.* छंटकावतो [हिं.छडना]

छडउ पयाणउ *प्राचीसं.* एकाकी प्रयाण; जुओ छडे पीआणे

छडपडु जुओ छुडिपुडि

छडा *ऐतिका. नरका.* छंटा, छंटकाव, थापा

छडा (छडा छाबडा) *लावल.* छंटकाव (अने थापा)

छडी *पंचवा.* राजचिह्न तरीके राजा आगळ रखातो दंड (सं.छत्रिका)

छडी(छडी ता) **जिनरा.* [छडतां]

छडीदार **प्रेमाका.* [राजादि आगळ एमनां स्तुतिवचन बोली मार्ग करनार]

छडे पीआणे *विमप्र.* चडी सवारीए, [रसाला वगरनी ने तेथी झडपी सवारीए]; जुओ छडउपयाणउ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छडोत्तरइ [**सोल छडोत्तरइ**] *ऐतिरा.* [सोळसो] उपर छ

छतराल *मदमो.* छतरायुं, जाणीतुं

छति, छते *कर्पूमं. विराप.* होतां, होवा छतां (सं.सति)

छतु, (रहितु) *उक्तिर.* रहेतो, होतो

छतुं *अखाका.* सत्, सत्यसनातन, [पारमार्थिक अस्तित्व धरावतुं]; *चित्तसं.* उपस्थित; अस्तित्व धरावतुं, *कामा(शा).* जीवतुं

छते जुओ छति

छत्ती *कर्पूमं.* छत, [होवुं ते, हयाती] (सं. स्थिति)

छत्तु *षडाबा.* छत्र

छत्य *मदमो.* [होवुं ते], अस्तित्व; *चंद्रवा.* छत, *पूर्ण, [होशियारी, कौशल]

छत्ये थई *मदमो.* पारंगत [आवडतवाळी] थई

छत्रसिल *तेरका.* छत्रशिला, [गिरनारनी एक टुंक]

छदम *आरारा.* कपट (सं.छद्म)

छद्मस्थ *आनंस्त. षष्टिप्र.* अ-सर्वज्ञ, सावरण ज्ञानवाळुं; जुओ छउमत्थ

छ नोकषाय *आनंस्त.* छ मंद कषाय – हास्य, रति वगेरे

छन्नवइ *प्राचीसं. षडाबा.* छन्नुं (सं.षण्णवति)

छपदा *ऐतिका.* षट्पद, छप्पा

छप्पुं *अंबरा. दशस्कं(१).* छुपावुं

छपती *नरका.* छूपी

छपाइ *आरारा.* छुपाव

छप्पई *उक्तिर.* चोपाई छंद (सं.षट्पदी)

छप्पन उपर भेर [**वागवी**] *प्रेमाका.* खूब श्रीमंत होवुं (जूना समयमां छप्पन लाख के करोडनी मिलकतवाळाने आंगणे भेर वागती)

छप्पय *शृंगामं.* भमरो (सं.षट्पद)

छब *नरका.* सुंदरता (सं.छवि)

छब *प्रेमाका.* [पृथ्वीस्पर्शनो] अवाज

छबक्कइ *प्राचीफा.* *धारण करे, [शोभे] [रा.]

छब्बुं *अखाछ.* अटकवुं, पहोंचवुं; *अंबरा.* [पहोंचवुं]; *अभिऊ. गुर्जरा. नलाख्या. ललिरा. विक्ररा. सिंहा(शा).* स्पर्श करवो (दे.छिव)

छमकलडो *नरका.* अटकचाळो

छमकलां *नरका.* अडपलां

छमकलो *नरका.* अटकचाळो, अडपलां करनारो

छमछर *अभिऊ.* वर्ष (सं.संवत्सर)

छम्मास *गुर्जरा. षडाबा.* छ महिना (सं. षण्मास)

छय *अंबरा.* छे

***छयकारु** [**बयकारु**] *उक्तिर.* गानार (*सं. गेयकारु) [सं.वाग्+गेयकार, प्रा. वइकार]; जुओ वेकार

छयल **विमप्र.* [*वरणागी, *चतुर], [*छल, *बहानुं]

छयल, छयल्ल *ऐतिका. ऐतिरा. प्राचीफा. शीलक.* शृंगामं. वरणागी, दक्ष, रसिक; जुओ छइल्ल

छयलपणइ *गुर्जरा. वसंफा.* कुशळताथी, चतुराईथी, [रसिकताथी]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छल्ल जुओ छल

छयालीस *उक्ति.* छेतालीस (सं.षट्चत्वारिंशत्)

छर *प्रेमाका.* अस्त्रा (सं.क्षुर)

छरालउ *प्राचीफा.* मस्त, [मदीलो]

छरु **विमप्र.* [*हाथ, *पंजो] [सं.त्सर]

छर्वां **पंचवा.* [तूट्यां, भंगायां] [हिं.; सं. क्षुर]

छलछलीउ *नलरा.* आछकलो, [सहेलाईथी छलकाई जतो]

छलभेइ *रूपच.* छळकपट (सं.छलभेद)

छळशे *प्रेमाका.* छळी ऊठशे, भयथी चमकी ऊठशे

छसि **लावल.* [बहाने, रूपे]

छसि **विराप.* [-नो द्रोह करीने], [*रक्षाप्रसंगे] [रा.]

छसिग्रह *ऐतिका.* छळी शकाय, [परास्त करी शकाय]

छली *प्रेमाका.* ऊछळी

छली *आरारा. गुर्जरा.* छेतरी, कपट करी (सं.छल्)

छलीआ, छलीया **लावल.* [छेतराया, पराभव पाम्या]; *शृंगामं.* छेतराया

छलीरु *आरारा(व).* एक करियाणुं, छडीलो, शिलापुष्प ?

छलुं *अभिऊ.* छेतरुं

छलो *मदमो.* *घूघरीवाळी वींटी, [सोनानी चीपवाळो चूडो]

छवनउं (छानुं छवनउं) *विमप्र.* [छानुं]छपनुं

छवपण्इ *चतुचा.* निर्दोषतामां, बालभावथी

छवरंगी *प्रेमाका.* *वस्त्रविशेष, [*वेपारवणजनुं कोई साधन]

छविह *ऐतिका.* छ प्रकार

छवी *प्रेमाका.* छाईने, ढांकीने

छ सि *नलाख्या.* छ सो (सं.षट्शतानि); जुओ सइ

छह *आरारा. तेरका. प्राचीसं.* छ (सं.षष्)

छहत्तर, छहतरि *उक्तिर. षडाबा.* छोंतेर (सं.षट्सप्ततिः)

छह विगइ *स्थूलिफा.* छ प्रकारनी विकृति – विकारकारक आहार

छं *वाग्भवा.* छे

छंछेरो *मदमो.* छंछेड्यो

छंडइ *अखाका. आरारा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. लावल. वीसरा.* छांडे, छोडे (सं. छर्द्)

छंद *चतुचा.* चाळा, [स्वच्छंद वर्तन]

छंदा **विमप्र.* [खुशामत]; जुओ छांदो

छंदिहिं *चारफा.* इच्छा के अभिलाषाथी, [मननी रुचिथी]

छाइ *आरारा.* छांयामां

छाइउ, छाईउ *गुर्जरा. विराप.* छाई दीधो (सं.छादित)

छाइयइ *षडाबा.* छायेलामां, ढांकेलामां

छाक **नरका. नरप(द).* गंध, वास; *जिनरा.* नशो, [केफ]

छाका [छाकाछोल] **जिनरा.* [छाकमछोळ]

छाकिउ *षडाबा.* जेणे नशो करेल छे ते, मदीलो

छाज, छाजउ *उक्तिर. प्रेमाका. विमप्र.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[छापरामां] घास, पाटियां के वांसनुं आच्छादन; छापरुं [सं.छाद्यकम्]

छाजावलि *षडाबा.* छजांनी हार (सं.छाद्य+ आवलि)

छाणावलि *उक्तिर.* छाणांनी हार [दे.छगण+ सं.आवलि]

छातिया *ऐतिका.* छाती, वक्षस्थल

छात्र *प्राचीसं.* छत्र

छाना छल **विमप्र.* [छानांछपनां स्थानो]

छानुंछवनउं जुओ छवनउं

छान्यनुं *मोसाच.* छाणनुं

छाबडा जुओ छडा छाबडा

छामखेडुं *अखाछ. चित्तसं.* चामखेडुं, चामडानी आकृतिओ, [एनाथी थतो] पूतळीखेल

छायइ *उक्तिर. गुर्जरा.* छाय, ढांके (सं. छादयति)

छार *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. देवरा. प्रद्युचु. प्रेमाका. रूपच. वीसरा. शृंगामं.* राख, धूळ (सं.क्षार)

छारड *प्राचीसं.* भस्म,[राख] (सं.क्षार+ड)

छार्य *मदमो.* राख

छालउ *उक्तिर.* छाल (*सं.छल्ली) [दे.छल्ली]

छाली *अंबरा. उक्तिर., उपबा. गुर्जरा. षडाबा.* बकरी (सं.छागल)

छालुं *अखाका.* [छाल]; [छालवाळुं] वृक्ष [दे.छल्ली]

छावउ *प्राचीफा.* युवान (सं.शावक)

छावडउ *उक्तिर. कृष्णबा.* बच्चुं, बाळक, छोकरडुं (सं.शावक)

छावति *उक्तिर.* घरनी छत के छापरुं (सं. छदिः)

छावपणुं *प्राचीका. प्रेमप.* बालपण (सं. शावत्वन)

छावी *प्राचीफा.* युवती (सं.शाव+ई)

छावीस *उक्तिर.* छवीस (सं.षड्विंशतिः)

छासठि *उक्तिर.* छासठ (सं.षट्षष्टिः)

छासि, छासी *अभिऊ. षडाबा.* छास [दे.]

छाह *आरारा.* छाया, शोभा; *ऋषिरा.* छाया [रंग]; *रूपच.* छाया, [छांयडो]

छाहडी *गुर्जरा.* छांयडो; *वीसरा.* छांयो, पडछायो (सं.छाया)

छाहा *सिंहा(शा).* पडछायो (सं.छाया)

छाहार *ऋषिरा.* छार, राख [सं.क्षार]

छाहि *आरारा.* छांयो [सं.छाया]

छाहिउ, छाहिय *आरारा. तेरका. प्रद्युचु.* छवायेलो, छायेलो, ढांकेलो (सं.छाहित-)

छाही *नरका.* छाई, ढांकी

छाहु *विमप्र.* छायो, ढांक्यो, [ढंकायो]

छां *प्राचीका. प्रेमाका.* (तुं) छे

***छांछलपांछल [*खांखलपांखल]** *अखाका. अखाछ.* *जेवोतेवो, *काचोपोचो, [*तुच्छ, *सारहीन]; जुओ खांखल

छांडिजे *कादं(शा).* छांडी देजे (दे.छड्ड)

छांदुआं *प्राचीका. प्रेमप.* अळवीतरां, अडपलां

छांदु राखइ *शृंगामं.* खुशामतथी राजी राखे

छांदो *पंचवा.* खुशामत; जुओ छंदा

छांह *आरारा. उक्तिर.* छांयो, पडछायो (सं. छाया)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छांहडी *आनंस्त. आरारा. मदमो. वीसरा.* छाया, छांयो, पडछायो

छांहा *आरारा.* छांयो, पडछायो [सं.छाया]

छांहिया *आरारा.* छांयो, पडछायो [सं.छाया]

छि, छिइ *कादं(शा). नलाख्या.* छे (पा. अच्छति) [सं.आक्षेति]

छिकारडां *प्रेमाका.* [नानी जातनुं] हरण

छिछइ, छिपइ *उक्तिर.* स्पर्शे [सं.स्पृशति]

छिडु *नलाख्या.* छेडो, [वस्त्रनो भाग] (सं. छेद)

छिदमर (छि दमर सुकी) *प्राचीफा.* ?, [दोरडी जेवी सुकायेली]

छिदूं *नलाख्या.* छेद्युं (सं.छिद्)

छिद्र *तेरका.* छिद्र, लाग

छिन्नु *उक्तिर.* छन्नु (सं.षण्णवति)

छिपइ जुओ छिछइ, छीपइ

छिपायउ *वीसरा.* छुपाव्यो

छिरिका *प्राचीसं.* ?, [कोई शस्त्रविशेष]

छिल्लरुं *गुर्जरा.* [नानुं] सरोवर, [छीछरा पाणीनुं तळाव] [दे.छिल्लर]

छिवइ *उक्तिर. षडाबा.* स्पर्शे (सं.स्पृशति)

छिंडीपंथ **सम्यचो.* [केडीमार्ग, सांकडो मार्ग]

छी *चतुचा.* छे

छीकउं *उक्तिर. षडाबा.* शीकुं (सं.शिक्यम्)

छीकणी *उक्तिर.* छींक, छींक खावी ते (सं.छिक्किका)

छीछि *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* निर्भर्त्सना करे, तिरस्कार करे (दे.छिछि = धिकधिक् परथी ?)

छीडणि, छींडणि *उक्तिर.* छींडी, वाडनुं छींडुं (*सं.छिद्राटिनी)

छीतर *उक्तिर.* सूपडुं [दे.छित्तरय]

छीति *आरारा.* क्षति, कलंक

छीपइ *गुर्जरा. जिनरा.* स्पर्शाय, स्पर्श करे; जुओ छिपइ

छीपउ *उक्तिर.* कपडां रंगनारो, छीपो [दे. छिंपय]; जुओ छींपउ

छीपवुं *सिंहा(शा).* लांगरवुं

छीपां *मदमो.* लांगर्या

छीपुं (छीपुं हुं) *कृष्णच.* *मने स्पर्श थाय, [मारे संतावुं पडे छे] [हिं.छीपना]

छीलर *नरका. प्राचीफा. शृंगामं. स्थूलिफा.* खाबोचियुं, [छीछरा पाणीनुं तलाव] (दे.छिल्लर)

छीलोजी **नंदब.* [पलाश, खाखरो]

छींडणि जुओ छीडणि

छींडी *नरका.* सांकडी गली, [छींडुं, वाड-मांथी करेलो रस्तो]; *उक्तिर. प्राचीसं.* छींडुं

छींपउ *नलरा.* कपडां छापनार, छीपो (दे. छिंपय); जुओ छीपउ

छुड *आरारा(व).* छड – एक करियाणुं, छुर, गोखरु ?

छुडि *विक्रच.* छोडियां

छुडिपुडि, छुडुपुडु, छडपडु *तेरका. प्राचीसं.* झटपट [दे.छुड्ड परथी]

छुरउ *उक्तिर.* छरो [सं.क्षुरकः]

छुरी *गुर्जरा. षडाबा.* छरी (सं.क्षुरिका)

छुहिय *तेरका. प्राचीसं.* भूख्यो (सं.क्षुधित)

छूटे दोरयं *प्रेमाका.* छूटे दोर, पुष्कळ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छेए *मदमो.* छये

छेक *अभिऊ. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* छेडो, अंत; *अखाका. चित्तसं.* अंत, छेडो; साव, [जराय] [सं.छेद+क]

छेकडि *उक्तिर.* [*छेकवानुं साधन के *छिद्र पाडवानुं साधन] (*सं.छिद्रकरी)

छेकि *आरारा.* छेक सुधी, पुष्कळ, पूरेपूरुं

छेड *नरका.* छेडती

छेदि ०*षडाबा.* छेडो, हद

छेबकै *जिनरा.* [छिद्र वाटे], छुपाईने

छेय *प्राचीसं.* अंत, छेडो [सं.छेद]

छेल *अखाका. चतुचा. पंचवा.* रसिक, चतुर

छेवट्टि *जिनरा.* छेवट्टा संस्थान, [पाटा, खीली वगेरे विना हाडकां अरसपरस एम ज वळगेलां होय तेवो शरीरबंध] [जै.] [सं.छेद+पट्ट]

छेवेट (लीधा छे वेट) **प्रेमाका.* [वींटी लीधा छे]

छेह *आराम.* छेद, भंग; *अंबरा. षष्टिप्र.* खोट, [हानि]; *अभिऊ. आरारा. ऋषिरा. उपबा. कादं(शा). कामा(शा). गुर्जरा. दशस्कं(१). प्राचीसं. विमप्र. वीसरा. सिंहा(शा). षडाबा.* छेडो; अंत; *उषाह.* कपडानो छेडो, *आरारा. उषाह. तेरका. नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. हरिख्या.* विश्वासभंग, दगो, छोडी देवुं ते, त्याग; *हरिख्या.* घा, दुःख (सं.छेद)

छेह **शृंगामं.* [धूळ] [रा.]

छेहडइ *आनंस्त. उपबा.* छेडे, अंते

छेहडउ *प्रद्युचु.* वस्त्रनो छेडो; *आरारा. विक्ररा.* छेडो, अंत (सं.छेद+ड)

छेहल्यो *आनंस्त.* छेल्लो

छेहा *विमप्र.* दगो, [त्याग]

छेहि *उक्तिर.* छेडे, अंते

छेहिलुं *उक्तिर. उपबा.* छेल्लुं

छेहु *नेमिछं.* छेह, दगो

छेहे *मदमो.* छ

छोई *चतुचा.* स्पर्शी

छोकलडां *प्रेमाका.* छोगां, वस्त्रना टुकडा, [अंगूछा]

छोछ *प्रेमाका.* अशुद्धि, अपवित्रता

छोछुं *सिंहा(शा).* ओछुं; *चंद्रवा.* हलकुं; *प्रेमाक़ा.* *नमालुं, असहाय, एकलुं (सं. तुच्छ, प्रा.छुच्छ)

छोड-भलाई *दशस्कं(१). प्रेमाका.* छोडाववानीं भलाई, एनो जश

छोति *उक्तिर.* छोत, अस्पृश्यनो स्पर्श, स्पर्शदोष, मलिनता [दे.छुत्ति]

छोबन *प्राचीका.* छोबंध, छोवाळां (सं. सुधा+बद्ध)

छोयो **नरका.* स्पर्श्यो

छोवरावियां *प्रेमाका.* चूनाथी धोळाव्यां

छोवाय *प्रेमाका.* अभडाय, अपवित्र थाय

छोह *प्राचीसं.* क्षोभ, [रोष]; *अभिऊ.* क्षोभ, [आघात, दुःख]; *हम्मीप्र.* प्रक्षोभ, शूरातन

छोह *उक्तिर. षडाबा. षष्टिप्र.* चूनानी छो (सं.सुधा)

छोहरी *उषाह.* छोकरी, छोरी [दे.]

छोहलउ [? सोहलउ] *प्राचीसं.* उत्सव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छ्याया *कादं(शा).* छांयडो (सं.छाया)

ज *तेरका. षडाबा.* जे (सं.यद्)

जइ *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा, षडाबा.* जो (सं.यदि)

जइ (कांइजइ) *उषाह.* लगाम[नी दोरीमां] [अ.कायजा]

जइ किमइ *उक्तिर. *उपबा.* जो केमे, कोई रीते (सं.यदि किमपि)

जइणा *ऐतिका.* यतना, [जीवहिंसा न थाय तेनी काळजी]

जइतवाद *नलरा.* विजय

जइतवादी *नलरा.* जय मेळवनार

जइ पुण *उपबा.* *पण जो, [जो वळी] (सं.यदि पुनः)

जइलच्छि, जइ-लच्छी *गुर्जरा. *नेमिछं.* जय-लक्ष्मी, [विजयरूपी लक्ष्मी]

जईतउं, जईतुं *उक्तिर.* जवातुं

जईसर *ऐतिका.* यतीश्वर

जईसु *ऐतिका.* यतीश, [मोटा यति]

जउ *गुर्जरा.* जे (सं.यः)

जउ *उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. षडाबा.* जो (यतः); *उपबा. तेरका. षडाबा.* ज्यारे (सं.यतः); *वीसरा.* एम के, ए रीते के, केमके (सं.यतः)

जउख *ऐतिका.* आनंद, विश्राम; जुओ जोख

जउणा *उक्तिर.* यमुना

जउराणउ *उक्तिर.* यमराज

जऊया *षडाबा.* [त्रण इन्द्रियवाळुं] एक जीवडुं, [*आगियो] [*दे.जोईय]

जकर **कस्तुवा.* [नर, पुरुष] [अ.]

जकला *कामा(त्रि).* जकीला, *हठीला [बुद्धिमान, कुशळ] [उ.जकी]

ज के *विमप्र.* जे कोई, [जे कंई]

जक्ख *तेरका.* यक्ष

जक्त *चित्तसं. मदमो. वेताप.* जगत

जक्ष *चित्तसं.* यक्ष

जक्षणि *चंद्रवा.* फसावनारी, लोभावनारी, अर्धदेव जातिनी स्त्री, [भूतडी]

जगडइ *गुर्जरा.* पीडे (दे.जगड-)

जगत्र *आनंस्त. ऐतिका. नेमिछं. लावल.* [त्रण] जगत [सं.]

जगत्र-वदीतु *हरिवि.* त्रण जगतमां प्रख्यात; जुओ वदीतउ

जगदीसरू *आरारा.* जगदीश्वर, भगवान

जगनाह *गुर्जरा.* जगन्नाथ (सं.जगत्+नाथ)

जगनि *चंद्रवा.* ? [बाज पक्षी], [उ.जगन]

जगवंच *गुर्जरा.* जगतने छेतरनार, [भ्रामक, खोटी]

जगाति *हम्मीप्र.* जकात, दाण

जगाती *पंचवा.* जकात लेनार

जगीश, जगीस **अभिऊ. आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. ऋषिरा. कृष्णच. जिनरा. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. वीसरा. शृंगामं. हम्मीप्र.* इच्छा, अभिलाषा, होंश (सं.जिगीषा); *विमप्र.* *प्रसन्नता, [अभिलाषा(पूर्ति)]; जुओ सुजगीश

जग्न *दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो.* यज्ञ

जघन, जघनु *आरारा. वसंफा(ल).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसंवि(ब्रा). थापानो भाग

जज्ञ-पुरुष *नरका.* भगवान विष्णु [सं. यज्ञपुरुष]

जट *प्रेमाका.* जड, [मंदबुद्धि], जुओ जट्ट

जटा *प्रेमाका.* वेदना मंत्रोना पाठनो एक प्रकार

जटाजूटा *ऋषिरा.* जटा रूपे बांधेला (सं. जटाजूट)

जट्ट *उक्तिर.* जतदिशनो वासी, [जाट, अनाडी माणस]; जुओ जट, जाट

जट्टपणइ *उपबा.* जडपणे, [हठपूर्वक, अनाडीपणाथी]

जड **नेमिछं.* [नाकनुं घरेणुं, चूनी]

जड **अखाका. उक्तिर.* मूळ, मूळियुं [सं. जटा]

जडइ *गुर्जरा. विराप.* जोडाई जाय, [साथे थाय] (दे.जड-)

जडाया *लावल.* जडेला

जडाव *चतुचा. प्रेमाका.* पट्टीथी – चीपथी जडेलो [चूडलो]

जडिति *शृंगामं.* झट, झडपथी [सं.झटिति]

जडी *उक्तिर.* एक वृक्ष, [पींपळो, गूलर के पाकड] (सं.जटी)

जडी *आरारा. उक्तिर. प्रेमाका.* रूपच. जडीबुट्टी, औषधिना गुणवाळुं मूळियुं

जडी लावल. जडाईने

जडीउ *नलरा.* दागीनामां हीरामाणेक जडवानुं काम करनार, जडियो (सं.जडितः) [*सं.जटिकः]

जडीत्र *मदमो. सिंहा(शा).* जडित, [जडेलुं]

जडीमूळी *प्रेमाका.* [औषधिना गुणवाळुं चमत्कारिक] वनस्पतिनुं मूळियुं

जडीया *पंचवा.* हीरामाणेक वगेरे जडवानुं काम करनार

जडुं *लावल.* जड्युं

-जण *तेरका.* बहुत्ववाचक प्रत्यय (सं.जन)

जणणि, जणणी *आरारा. गुर्जरा. तेरका. विराप. षडाबा.* जननी

जणमेलुं *गुर्जरा. विराप.* जनसमुदाय (सं. जन+मेल)

जणवइ *गुर्जरा.* राजा (सं.जनपति)

जणसाल *विक्ररा.* [उत्तम प्रकारनुं] एक प्रकारनुं बख्तर (फा.जीन); जुओ जीण

जणाविवइं *उपबा.* जणाववाथी

जणु *नलाख्या.* जण्यो (सं.जनितः)

जणु *तेरका.* जाणे के

जतन, जतंन, जत्न *अखाका. अखाछ. आरारा. प्रेमाका. *वीसरा.* रक्षण, काळजी, [संभाळ] (सं.यत्न); *अखाका. अखाछ. आरारा. नरका. प्रबोप्र. प्रेमाका.* प्रयत्न, महेनत, आचरण, [पुरुषार्थ]; जुओ यतन

जतना जुओ यतना

जतां-आजतां *सम्यचौ.* जतां-आवतां

जतियांरउ *उक्तिर.* यतिओनुं

जत्न जुओ जतन

जत्थ *ऐतिका. तेरका.* ज्यां (सं.यत्र)

जथाबध *अखेगी.* अकबंध, [एकठा]; जुओ जथे

जथारथ *अखेगी. दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. मदमो.* यथार्थ, जेवुं होय तेवुं,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साचुं; *दशस्कं(१).* जेवी रीते

जथे *अखेगी.* *अकबंध, [*एकरूप, *एकठां], [*यथा, *यथास्थाने, *यथारूपे]; जुओ जथाबध

जदपि *वडबा.* जो के (सं.यद् अपि)

जदाकालि *वडबा.* ज्यारे (सं.यदाकाल)

जदीप *चतुचा.* जो (सं.यद्यपि)

जन *अखाछ.* हरिजन, संत

जन *वीसरा.* जान (सं.जन्या)

जनिता, जनीता *उषाह. प्रेमाका.* जनेता, माता (सं.जनयित्री)

जनुनी *दशस्कं(२). प्रेमाका. मदमो.* जननी

जनूआ *अखेगी.* जन, मनुष्य

जन्नत *प्राचीसं.* जान (सं.जन्या-यात्रा)

जन्मंतरि *शृंगामं.* जन्मांतरमां, बीजा जन्ममां

जन्य *प्राचीसं.* यज्ञ

जपमाली *उक्तिर. वीसरा.* जप करवानी माळा (सं.जपमालिका)

जप्य- *वीसरा.* जपवुं

जबाप *अखाका.* जवाब

जबाबि, जबाबि *वेताप. हरिवि.* एक सुगंधी द्रव्य

जम *चतुचा.* ज्यम, जेम; जुओ यम

जमग-समग *सप्यचो.* एकसाथे, [सामटां] [दे.]

जम-जाचना *प्रेमाका.* यमनी याचना, जमनुं तेडुं

जमडाढ *वीसरा.* कटार (सं.यमदंष्ट्रा) [रा.]

जमण *गुर्जरा.* यमुना नदी

जमणतरंग *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* यमुनानो तरंग

जमर *दशस्कं(२).* वाद्यविशेष; जुओ झमरु

जमल, जमलउ *अखाका. अखाछ. अभिऊ. अंबरा. आरारा. उपबा. उषाह. कामा(शा). कृष्णबा. नरका. प्रबोप्र. प्राचीफा. प्रेमाका. विमप्र. लावल. षष्टिप्र. सिंहा(म).* जोडमां, संगाथे, साथे; समान; पासे (सं.यमल); जुओ जवल

जमला-अर्जुन *दशस्कं(१).* यमलार्जुन

जमलासी *आरारा(व).* एक वनस्पति, जटामासी ?

जमल्य, ज्यमलो *प्राचीका.* पासे, साथे (सं. यमल)

जमवारउ *उक्तिर.* जन्मारो, जीवनकाल (सं. जन्मवारकः)

जमहर *हम्मीप्र.* यमगृह, जौहर, [युद्धमां पराजय निश्चित थतां रजपूत स्त्रीओनो चिताप्रवेश]

जमावुं *अखाछ.* जामवुं

जमाणो *अखाका.* जमावेलो, घन, [स्थूल रूप]

जमार, जमारउ *उपबा. जिनरा. षष्टिप्र.* जन्मारो, भव (सं.जन्म+कार)

जमावुं *अखाछ.* जामवुं

जमिवउं जुओ यमिवउं

जमीतउं जुओ यमीतउं

जमुण *प्राचीफा.* यमुना नदी

जम्पइ *ऐतिका.* कहे छे

जम्बुय *ऐतिका.* शियाळ [सं.जंबुक]

जम्म *आरारा.* जन्म, अवतार

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्मक्खण *ऐतिका.* जन्मक्षण

जम्मण *तेरका.* जन्म (सं.जन्मन्)

जम्मंती *आरारा.* जन्मती

जम्मे *आरारा.* जमे

जम्मु *ऐतिका.* जन्म

जय- *तेरका.* जय थवो

जयकरियां *प्रेमाका.* जय सूचवतां [जयकार थतां]

जय-ढक *नलरा.* विजयसूचक पडघम (सं. जयढक्का)

जयणा *उक्तिर. *उपबा. देवरा. विमप्र.* रक्षण, [जीवरक्षा], जीवहिंसा न थाय तेनी काळजी (सं.यतना)

जयणारहित *षष्टिप्र.* हिंसा टाळवाना प्रयत्नथी रहित (सं.यतनारहित)

जयतवाद *नलरा.* विजय

जयतसिरी *ऐतिका.* [जयतिश्री], रागनुं नाम

जयपत्तु *ऐतिका.* जयपत्र, [विजयलेख]

जयलछी विक्ररा. जयलक्ष्मी, [विजयरूपी लक्ष्मी]

जयवरलो, जवरलो, जवलो *सिंहा(शा).* जवल्लो, विरलो, विरल (सं.जगति विरलकः, प्रा.जए विरलओ); जुओ जेवरलो, ज्यवरलो

जरकशी, जरकसी *नरका. प्रेमाका.* सोना-रूपाना – जरीना तार भरेली, कसबी [फा.]

जरगो *आरारा(व).* एक प्रकारनुं घास (हिं. जरगा)

जरगोजी *आरारा(व).* जरगोजां – एक मेवो ?

जरजरी *प्रेमाका.* जर्जरित

जरजडण *सिंहा(शा).* द्रव्यप्राप्ति ?

जरठ *कादं(शा).* घरडो (सं.)

जरण जुओ अजरण-जरण

जरती *ऋषिरा.* डोशी, वृद्धा, [वडील स्त्री] (सं.)

जरद *गुर्जरा. विक्ररा.* एक प्रकारनां बख्तर [उ.जर्द]

जरदबंध *विमप्र.* जेरबंद, घोडाने [पेटे] बांधवानो सामान – [पटो] [फा.झेरबंद]

जरदोजी *सिंहा(शा).* कसबी भरतकामवाळुं (फा.); जुओ जरदोरनी

***जरदोरनी [जरदोजी]** **नरका.* [भरतकाम – कसबीकामवाळी]

जरबाफ *जिनरा.* वस्त्रविशेष, [जरी अने रेशमना वणाटवाळुं वस्त्र] (फा.)

जरह *ललिरा. विक्ररा. हम्मीप्र.* एक जातनुं बख्तर(फा.)

जरह जिण **अंगवि.* [बख्तरना प्रकारो]

जरहि **विक्ररा.* [एक प्रकारनुं बखतर]

जराजूरण *कादं(धु).* खळीखळी गयेलो, [खखडी गयेलो] (सं.जरा+जूर्ण)

जरायुज *अखेगी.* ओरमांथी जन्मेलुं, [प्राणी-ओनो एक प्रकार] [सं.]

जरासिंध, जरासिंधु *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* जरासंध, [एक राजा]

जरि *वसंवि.* जो (सं.यदि+रि के यहि)

जरिउ *उक्तिर.* जीर्ण थयुं [सं.जरित]

जरे *अखाका. नलाख्या.* पचे (सं.जृ)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जल- *तेरका.* बाळवुं (सं.ज्वल्)
जळजळां *प्रेमाका.* पाणी झमतां
जलजलियउं *प्राचीसं.* भीनुं थयुं
जलजंत *प्रेमाका.* जळनां जंतु
जलण *आरारा. तेरका. देवरा. लावल.* अग्नि (सं.ज्वलन)
जलतरी *विमप्र.* तरवानी विद्या
जलथळ **वीसरा.* [जलस्थान, जळाशय] (सं. जल+स्थल)
जलद *अखाका. तेरका.* वादळुं [सं.]
जलदहि *देवरा.* जलसमुद्र (सं.जल+उदधि)
जलद्धि *विमप्र.* पाणीनी ऋद्धि [– प्रचुरता]
जलप- *नलाख्या. हरिवि.* बोलवुं, रटवुं (सं. जल्प्)
जलपूरी *आरारा.* आंसुभरी
जळ मथी *प्रेमाका.* पाणी वलोवी, मिथ्या प्रयास करी
जळशायी *प्रेमाका.* जळमां शयन करवानी क्रिया, [जळमां डूबी जवुं ते]
जलशिंगी **प्रेमाका.* [एक जातनी माछली, मादा मगरमच्छ] [सं.जल+शृंगी]
जलसइं, जलसयउ **वसंफा. वसंवि.* **वसंवि(ब्रा).* कमळ (सं.जलशय के जलेशय)
जलसप *अंबरा.* जलसर्प
जलसयउ जुओ जलसइं
जलहर *अभिऊ.* **लावल. हरिवि.* वादळ (सं.जलधर)
जळाखउ (जाळजळांखी) **वीसरा.* [*जळ-जळ आंखोवाळी]
जल्पना *अखेगी.* बडबडाट [सं.]
जव *आरारा. ऐतिरा. कामा(त्रि). नेमिछं. लावल.* ज्यारे
जवखार *उक्तिर.* जवनो खार (सं.यवक्षार)
जवणि *प्राचीफा.* यमुना नदी
जवन *अखेगी.* यवन, खाटकी
जवमात्र *चतुचा.* जराक
जवरलो *अखाका.नरका.* विरलो, कोईक ज; जुओ जयवरलो
जवराइ *अंबरा.* जवाय
जवल, जवलि *प्राचीफा. प्राचीसं.* सदृस [जेवुं] (सं.यमल); जुओ जमल
जवलो *सिंहा(शा).* पासे [सं.यमल]
जवहरी *नलरा. विमप्र.* झवेरातनो वेपार करनार, झवेरी [फा.जौहरी]
जवारें जुओ यवारें
जवासा *अखाका. अखेगी.* उनाळामां थतो कांटाळो छोड [सं.यवास]
जशुं *प्रेमाका. मदमो.* जेवुं [सं.यादृश]; जुओ यशूं
जस *आरारा. नरप. नंदब. नेमिछं. लावल.* जेवुं [सं.यस्य]
जसउ जुओ यसउ
जस-जीत *मदमो.* जशने जीतनारो, यशस्वी
जसनि **लावल.* [उत्सव, सुख] [फा.जश्न]
जसवाउ *गुर्जरा. विमप्र.* यशोवाद, कीर्ति-गाथा
जसवाय *लावल.* कीर्तिगाथा (सं.यशोवाद)
जसवास *आरारा.* यशोवाद, यश बोलावो ते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसिइं *आरारा.* ज्यां, ज्यारे

जसु *आरारा. ऐतिका. तेरका.* जेनी (सं. यस्य)

जसु *गुर्जरा.* यश

जसु, जसुं *कामा(शा). गुर्जर. नरका. नेमिछं. मदमो. लावल.* जेवुं (सं.यादृशक)

जस्यउं *आरारा. प्रेमाका. लावल.* जेवुं (सं. यादृशकम्).

जस्यउं *ऋषिरा.* जईशुं

जहर *आरारा.* झेर [फा.]

जहिइ *उषाह.* ज्यारे

जहियइ *उक्तिर.* ज्यारे

जहिं *०षडाबा.* ज्यां (सं.यस्मिन्)

जही *तेरका.* ज्यां (सं.यस्मिन्)

जहींइ, जहींय *उक्तिर.* ज्यारे

जहे *उषाह.* ज्यारे

जं *उक्तिर. *उपबा. तेरका. नेमिछं. लावल. वाग्भबा.* जे (सं.यद्)

जं *उपबा.* जो (सं.यतः)

जंखजाल, जंखजाळ *कामा(त्रि). कामा(शा). प्रेमाका.* झांखरांनी जाळ, झाडी [दे. झंखर+सं.जाल]

जंखर *शृंगामं.* झांखरा जेवुं, [सुकायेलुं] [दे.झंखर]

जंखंणी *मदमो.* जक्षणी, [खराब स्त्री] (सं. यक्षिणी)

जंग *नेमिछं. प्राचीफा. विमप्र.* समारंभ, आनंदोत्सव (फा.)

जंगाली **कामा(त्रि).* [काटना जेवा राता रंगनुं] [फा.]

जंगोटो *दशस्कं(१). प्रेमाका.* जांघ ढांकतो लंगोट

जंघ *आरारा. *वीसरा.* साथळ (सं.जंघा)

जंघा-जुंअली, जंघाजूअली *लावल.* जांघ [साथळ]नी जोड

जंत *अखाका. अभिऊ. आरारा. चित्तसं. प्रेमाका.* जंतु, जीव, प्राणी

जंति *आरारा. ऋषिरा.* जाय छे

जंति(?) [*संति] *तेरका-अनु.* शांति

***जंत्थे** *चंद्रवा.* जाते

जंत्र *अखाछ.* यंत्र; *चतुचा.* ?, [ओजार]; *कामा(शा). प्रेमाका.* एक तंतुवाद्य, [जंतर]; *चित्तसं. प्रेमाका.* यंत्र, तांत्रिक आकृति, अक्षर ने आंकडावाळी आकृति जेमां देवताओनो वास मानवामां आवे छे; *चित्तसं.* व्यवस्था, युक्ति, पद्धति

जंत्रभेद *चित्तसं.* रचनानो भेद एटलेके रचायेला पदार्थनी क्रिया

जंत्र-मध्याह्न *दशस्कं(१). प्रेमाका.* भर-बपोर, छायायंत्र प्रमाणेनो भरमध्याह्न

जंत्री *अखाका.* जंत्र (वाजिंत्र) वगाडनार

जंथ *अखाछ.* जंत्र, तूत(?), [प्रपंच, तरखड]

जंन *अखाछ.* हरिजन, [भक्तजन]

जंप *नेमिछं.* शांति

जंपइ *अभिऊ. आरारा. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. नेमिछं. प्रद्युचु. लावल. विक्ररा. हरिवि.* बोले, कहे (सं. जल्पति)

जंपउ *गुर्जरा.* अशांति, अजंपो, [क्षुब्धता,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आघात] (प्रा.दे.झंप)

जंपाववुं *दशस्कं(१).* जंपापात करवो, कूदी पडवुं

जंब *आरारा(व).* *तेरका.* जांबु (सं.जंबू)

जंबीर, जंबीरि *आरारा(व).* *नरका.* **नरप.* जंबीरी, लींबुडी; लीबुं जेवुं एक फळ (सं.)

जंबु, जंबू *आरारा(व).* *ऋषिरा.* जंबुनुं वृक्ष (सं.)

जंबुक *अखाका.* शियाळ [सं.]

जंबू जुओ जंबु

जंबूक *नरका.* *प्रेमाका.* शियाळ [सं.जंबुक]

जंभा *कादं(ध्रु).* *कादं(शा).* *शृंगामं.* बगासुं (सं.जृम्भा)

जंभाआइ *उक्तिर.* बगासुं खाय (सं.जृम्भते)

जंम *गुर्जरा.* जन्म

जंम *नरप(द).* यम

जंमण *गुर्जरा.* जन्म (सं.जन्मन्)

जंवारडु *शृंगामं.* जन्म, अवतार [सं.जन्म+कार के वार]

जंवारि *अभिऊ.* ज्यारे [सं.यत्+वारे]

जा *वीसरा.* जे; जुओ या

जा *तेरका.* ज्यां सुधी (सं.यावत्)

जाइ *प्रबोप्र.* *जेवी, [जे]

जाइग,जाइगा *ऐतिका.* *ऐतिरा.* जगा, स्थान

जाइव *तेरका.* यादव

जाइवउं *अभिऊ.* *उक्तिर.* *कर्पूमं.* जवुं (सं. यातव्यम्)

जाइवा-गति *हरिवि.* जादवानी गति, कृष्णनी गति

जाइसर, जाईसर *प्राचीसं.* *शृंगामं.* पूर्वभवस्मरण (सं.जातिस्मर)

जाई *उक्तिर.* जईने

जाई *आरारा.* जन्मी

जाई *गुर्जरा.* *विराप.* पत्नी (सं.जाया)

जाईसर जुओ जाइसर

जाउ *गुर्जरा.* जन्मेलो (सं.जात)

जाउ **गुर्जरा.* [ज्यारे]

जाउलि *कृष्णच.* जव [के अन्य हलका अनाज]नी राब, [कांजी] [सं.यवागु+ली]

जाओ **षडाबा.* [उत्पन्न थयुं, थयुं] (सं.जातः)

जाकी(?) **नलाख्या.* [जोवुं ते] [हिं. झांकी]

जाख *प्राचीसं.* यक्ष

जाखल *आरारा.* *षष्टिप्र.* यक्ष

जाग *अखाछ.* *पंचवा.* जग्या, स्थळ, ठेकाणुं (फा.जायगाह)

जाग *गुर्जरा.* *प्रेमाका.* यज्ञ (सं.याग)

जागर *ऐतिका.* जागरण

जागरता *आनंस्त.* जाग्रति

जागवइ *नेमिछं.* जगाडाय, उत्पन्न कराय

जागणो *अखाका.* जागृति, [जागता होवुं ते]

जागीइ *उक्तिर.* जगाय

जाग्य *अखाका.* *चंद्रवा.* *चित्तसं.* जग्या

***जाघडी [जांघडी]** *वसंफा(ल).* *वसंवि(ब्रा).* जांघ (सं.जंघा)

जाचना *प्रेमाका.* याचना, मागणी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाचंध *प्राचीसं. ललिरा.* जन्मांध (सं. जात्यन्ध)

जाचा *नेमिछं.* जातवाळा, ऊंची जातना, [साचा] (सं.जात्य, प्रा.जच्च)

जाचियं जुओ जावियं

जाची *अभिऊ.* याचेली

जाचीक *मदमो. सिंहा(शा).* याचक

जाजर *दशस्कं(२).* वाद्यविशेष

जाजरउं *अखाछ. अंबरा. आनंस्त. उक्तिर. *उपबा. कादं(शा). गुर्जरा. वाग्भबा.* जर्जरित, जीर्ण, क्षीण, [दुर्बळ]

जाजि *आरारा.* झाझुं, घणुं

जाजीवा *उपबा.* जीवनभर, आजीवन (सं. यावज्जीवम्)

जाजुल *प्रेमाका.* जाज्वल्यमान, प्रतापी, [उग्र]

जाजुलता *दशस्कं(२).* जाज्वल्यमानता, दीप्ति

जाजुल्यमान *अखेगी. प्रेमाका.* जाज्वल्यमान, प्रकाशथी झळहळतो

जाट *चतुचा. *नेमिछं.* अजड, [अनाडी]; जुओ जट्ट

जाडेरो *अखेगी.* वधु जाडो, हृष्टपुष्ट

जाडो देह *चित्तसं.* पुष्ट शरीर, पुष्टता

जाड्य *अखाका. चित्तसं.* जडता, अज्ञान [सं.]

जाण *अखाका. अखाछ. उपबा. गुर्जरा. चतुचा. चंद्रवा. प्राचीसं. ललिरा. षष्टिप्र.* ज्ञानी, जाणकार (सं.जानन्)

जाण *अखाका. अखाछ. अखेगी. नलाख्या. लावल.* ज्ञान, जाणकारी, खबर

जाण *वाग्भबा.* यावत्, सुधी; जुओ याण

जाणउं *गुर्जरा.* जवुं ते [रा.]

जाणणा *आनंस्त.* जाणवुं ते

जाणणहार, जाणनहारो *उक्तिर. अखेगी. वाग्भबा. षडाबा.* जाणनारो

जाणहारु *उक्तिर.* जनारो

जाणं *षष्टिप्र.* (तुं) जाणे छे

जाणां छां *चतुचा.* समजे छे, माने छे

जाणि *वसंवि.* जाणे, [जाणे के] (सं.जाने)

जाणि कि *वीसरा.* जाणे के

जाणिवउ *षष्टिप्र.* जाणवो

जाणी *आरारा.* ज्ञानी, जाणकार

जाणीइ *कादं(शा). वाग्भबा.* जाणे के

जाणीतउं *उक्तिर.* जणातुं (सं.ज्ञायमानम्)

जाणो-वाणो *नरका. प्रेमाका.* फजेतो, फजेती

जाण्य *चित्तसं.* ज्ञान, इन्द्रियज्ञान

जात *प्राचीसं.* यात्रा

जात *कामा(त्रि).* [जन्मेलुं, संतान,] दीकरो, दीकरी [सं.]

जातइ हुतइं (क्षय जातइ हुतइं) **आनंस्त.* [क्षय पामे छे]

जातक *आरारा.* जन्मेलो (पुत्र) [सं.]; *गुर्जरा.* जन्मफळविषयक ज्योतिष (सं.)

जात नीवडी *प्रेमाका.* हलकी जात नक्की थई

जातमात्र *आरारा. गुर्जरा.* जन्मतां ज (सं.)

जातायात *अखेगी.* अवरजवर [सं. यातायात]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाति **आनंस्त.* [वर्ग, प्रकार, श्रेणी, रूप]

जातिसर *विक्ररा.* जातिस्मरण, [पूर्वजन्मनुं स्मरण] [सं.जातिस्मर]

जातिस्मरण *आरारा.* पूर्वजन्मनुं स्मरण [सं.]

जाती *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* जाईनो फूलछोड (सं.जाति)

जातीइं *उपबा.* जन्मथी, [कुलथी]

जातीफल *आरारा(व).* जायफळ (सं.)

जातीसमरण *विक्ररा.* जातिस्मरण, पूर्व-जन्मनुं स्मरण

जातीस्मर *गुर्जरा.* पूर्वजन्मनुं स्मरण (सं. जातिस्मर)

जातु **नेमिछं.* [निंदावाचक उद्‌गार], [*खरेखर, *नक्की] [सं.]

जात्य **आनंस्त.* [उत्पन्न थाय छे, थाय छे, नीवडे छे] [सं.जायते]

जात्र *प्रेमाका. विक्ररा.* तीर्थयात्रा; **गुर्जरा. प्राचीफा.* देवपूजानो उत्सव (सं.यात्रा)

जात्र *हरिख्या.* *उत्सव (सं.यात्रा), [*जात – प्रास अर्थे जात्र]

जात्र *विमप्र.* धांधल, धमाल, [तमासो]; जुओ जोयणजात्र

जात्रणि *प्राचीफा.* यात्रिक स्त्री (सं.यात्रिणी)

जात्रि *विक्ररा.* *सभामां, [उत्सवार्थे, भेगा थईने]

जात्रिगु *प्राचीफा.* यात्रिक

जादर **ऐतिरा. गुर्जरा. चारफा. प्राचीफा. प्राचीसं.* एक प्रकारनुं सफेद रेशमी कापड [दे.जद्दर]

जाद्रणी *विमप्र.* जानरणी, जानडी; जुओ जांद्रणी

जान *अखाका. अखेगी. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* नुकसान (फा.झियान)

जान *षष्टिप्र.* वाहन (सं.यान)

जानउत्र *ऐतिका. प्राचीसं.* जान (सं. जन्यायात्रा) [दे.जन्नत्ता]

जानणीइ *प्रद्युचु.* जांदरणी, जानरणी

जानत्र **चारफा. प्राचीफा.* जान [सं. जन्यायात्रा] [दे.जन्नत्ता]

जानावासउ *उक्तिर.* जानीवासो [दे. जन्नावास]

जानी *उक्तिर.* जान (सं.जन्या) [दे.जन्ना]

जानीवासउ *उक्तिर.* जाननो उतारो (सं. जन्यावासकः)

जानु *आरारा. कामा(शं). प्रेमाका.* गोठण, घूंटण, ढींचण [सं.]

जानुत्र *उक्तिर.* जान [दे.जन्नत्ता] [रा.]

जाबतउ *जिनैरा.* *यत्न, [जाप्तो, रक्षा, संभाळ]

जाम *आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. चारफा. तेरका. नलरा. नेमिछं. विक्ररा.* ज्यारे, ज्यां सुधी, जेटलामां (सं.यावत्)

जाम *चतुचा. नरका. प्रेमाका.* प्रहर, त्रण कलाकनो समय, रात्रिनो प्रहर (सं.याम)

जामइ **षडाबा.* [ज्यारे] [सं.यावत्, प्रा. जाव]

जामइ *उक्तिर.* जन्मे [सं.जन्मते]

***जामइ (धरणउ) [जावइ धरणउ]** **तेरका. *प्राचीसं.* [पकडी शकाय]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जामण *अखाछ.* मेळवण; जुओ ज्यामण

जामण *जिनरा. प्रबोप्र.* जन्म (सं.जन्मन्)

जामण *ऐतिका.* यामिनी, रात्रि

जामण-जाया *जिनरा.* [एक मातानुं संतान], भाई

जामणि *जिनरा.* माता; जुओ जांमण

जामणु जुओ कजामणु

जामनी *चतुचा. प्रेमाका.* रात्रि (सं.यामिनी)

जामलि *गुर्जरा. नलरा. प्राचीसं. ललिरा. लावल. विमप्र.* जोडमां; जेवुं, समान, पासे; साथे, एकठा (सं.यमल)

जामा *प्रेमाका.* घेरवाळा मोटा अंगरखा, [झभ्भा] [फा.जामः]

जामिनी *चित्तसं. नरका. प्रेमाका.* रात्रि (सं.यामिनी)

जामिनी-जीवन *अखाका.* यामिनी(रात्रि)नो पति, चंद्र

जामी *आरारा.* जन्मी

जामु *चतुचा.* जामेलुं

जामुक *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* बेलडी, जोडी (सं.यामक); जुओ यामुक

जाय *आरारा. आरारा(व). प्रेमाका.* जाईनो फूलछोड (सं.जाति)

जाय *अभिऊ.* जायो, पुत्र [सं.जातः]; *तेरका.* जाया, दीकरी (सं.जाता)

जायउ *उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा.* जन्म्यो, जन्म आप्यो

जायगाइं *आनंस्त.* जग्याए

जायणहार *षडाबा.* जनार

जायव *तेरका.* यादव

जायवउ *ऋषिरा. देवरा.* जावुं, जवानुं

जायो *अखाका. अभिऊ. गुर्जरा. देवरा. प्रेमाका.* जन्म्यो, जन्म आप्यो (सं. जातः); *नरका.* जन्म्यो, [पुत्र]; *प्रेमाका.* पुत्र

जायो (जस जायो) *लावल.* [(यश) उत्पन्न थयो, (यश) थयो] [सं.जातः]

जार *प्रेमाका.* यार, परस्त्री साथे प्रीति करनार [सं.]

जारी-वजारी **प्रेमाका.* [जारकौशल्य, व्यभिचार करी संताडवो ते]

जारे **शृंगामं.* [जार – उपपति – परपुरुष प्रेमीओ]

जाल *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* जाळी, माथा पर पहेरवानुं घरेणुं (सं.जालक); *प्रेमाका.* *झाल, *स्त्रीओनुं काननुं एक घरेणुं, [माथा पर पहेरवानुं घरेणुं]; जुओ सिरि जाल

जाल **विमप्र.* [झाडी] [सं.]

जालउर *उक्तिर. प्राचीसं.* जाबालिपुर, जालोर

जालरउ *प्राचीसं.* जालोरनो वासी

जालक *शृंगामं.* जाळुं, झूंड [सं.]; तथा जुओ कोलिका जालक

जालगवक्ख *चारफा.* जाळीवाळो गोख, झरूखो (सं.जालक-गवाक्ष)

जाळजळांखी जुओ जळाखउ

जाल ने माल *अखेगी.* जाळुं [जाळियुं, गोख] अने घरनो माळ (?)

जालमजोर *प्रेमाका.* जोरदार जालीम, भारे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुल्म करनार

जालवइ *ऐतिका.* जलावे, बाळे (रा.); *आरारा.* जलावे, दुःखमां काढे

जालां *षडाबा.* छिद्र, [भींतमांनी जाळी] (सं.जालक)

जालि *अभिऊ.* भेदप्रपंच, [दगो] (सं.जाल)

***जालिजा, [आलिजा]** *गुर्जरा.* [मोटा दरज्जावाळा, महामान्य] [अ. आलीजाह], [अलबेलो, रसिक] [रा. आलिजौ]

जालिय *गुर्जरा.* *गळामां पहेरवानुं घरेणुं (सं.जालिकः), [*जालक – माथा पर पहेरवानुं घरेणुं]

जालिवी *विमप्र.* जाळवीने, [संभाळी लईने, बचावीने]

जाली *लावल.* सळगावी (सं.ज्वल्)

जालीय-गुख *वसंवि(ब्रा).* जाळीवाळो गोख – बारी (सं.जालिकगवाक्ष)

जाव *तेरका.* त्यां सुधी (सं.यावत्)

जावक *मदमो.* अळतो (सं.याचक)

जावजिव, जावजीव *देवरा.* आजीवन, जीव छे त्यां सुधी (सं.यावज्जीव)

***जावियं [*जाचियं]** *तेरका.* ?, [*श्रेष्ठ] [सं.जात्यम्]

जावुं लहइ *आरारा.* जवानुं छे

जावेल *उक्तिर.* जाईनुं तेल (सं.जात्यतैलम्)

जास *आरारा. कृष्णच. प्राचीका. लावल.* जेनुं (सं. यस्य)

जासक *गुर्जरा. *नेमिछं. प्रेमाका. लावल.* पुष्कळ, सारी पेठे, खूब; जुओ झासक

जासु *तेरका. वसंफा. वसंवि.* जेनुं (सं. यस्य); *आरारा. लावल.* जेने (सं.यस्य)

जासूल *आरारा(व). नेमिछं.* जासूद, जासूदनां फूल

जासो *लावल.* जेनो [सं.यस्य]

जाह *ऐतिका.* जेनुं

जाहउ *उक्तिर.* शाहूडी (सं.जाहकः)

जाहरे *मदमो.* जाहेर

जाहारी *चंद्रवा.* जाहेर, प्रगट

जाहो *पंचवा.* [जाओ]

जाद्रि जुओ याद्रि

जां *उक्तिर. उपबा. उषाह. गुर्जरा. नेमिछं. प्रबोप्र. षडाबा.* ज्यां, ज्यां सुधी, ज्यारे (सं.यावत्)

जांगडीआं *मदमो.* जांगिया ढोल, [मोटा लश्करी ढोल]

जांगि *विमप्र.* ढोलनो एक प्रकार [मोटा, लश्करी ढोल]

जांगी ढोल *हम्मीप्र.* युद्धनां पडघम

जांगी वाय *नरका.* जांगियो ढोल वगाडे, जोरथी चेतवणी आपे

जांघडी *वसंवि.* जंघा, [जांघ]; जुओ जाघडी

जांण *देवरा.* जाणनार [सं.जानन्]

जांणह *ऋषिरा.* [ज्ञान]

जांणिकि *वीसरा.* जाणे के

जांणीतल *वेताप.* जाणीती

जांदरणी *प्रेमाका.* जानरडी, वरनी जानमां आवेली स्त्री

जांद्रणी *दशस्कं(२). प्रेमाका. लावल.* जानमां आवेली स्त्रीओ, जानरडी; जुओ जाद्रणी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जांबुआ *नरका.* जांबु – एक फळ [सं.जंबू]
जांबुक *कामा(त्रि).* जंबूक, शियाळ
जांमण *देवरा.* जणनार, जन्म आपनार, [माता] (सं.जन्मन्); जुओ जामणि
जांमलि *आरारा.* जोडमां, समान; जोडमां, बन्ने; *कर्पूमं.* साथे, पासे (सं.यमल)
जांमीइ *शृंगामं.* (डूमो) जामे
जां लगइ *उपबा.* ज्यां सुधी
जांह जुओ यांह
जांहरि *अभिऊ.* ज्यारे
जांहां *मदमो.* ज्यां (सं.यस्मात्)
जांहे **चंद्रवा.* [बरबाद, नष्ट] [फा.झांहे]
जि *उपबा. तेरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वाग्भबा. षडाबा.* ज (सं. चैव)
जि *उसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. षडाबा.* जे (सं.ये); जुओ यि
जिइकार *कादं(शा).* जयजयकार (सं.जय-कार)
जिउ *प्राचीसं.* जीव
जिउं, जिऊं *आरारा. वीसरा.* जेम
जिके *आरारा. प्राचीसं.* जे (रा.; सं.ये के)
जिको *गुर्जरा. विमप्र. विराप.* जे कोई (सं. यः+कोऽपि)
जिगिमिगए *स्थूलिफा.* झगमगे
जिट्ठ *तेरका.* जेठ मास (सं.ज्येष्ठ)
जिण जुओ जरह जिण, जीण
जिण *आरारा. देवरा. वीसरा.* जे
जिण *तेरका.* जिन भगवान; जुओ जिणु
जिण *तेरका.* जाणे के; जुओ जिणु
जिणइ *उक्तिर.* जय पामे, हरावे [सं.जि-, प्रा.जिण]
जिणइं करी *आनंस्त.* जेने कारणे, जेना वडे
जिण कारणि *आरारा.* कारणके
जिणवय *ऐतिका.* जिनपति
जिणसाली(?) *विमप्र.* चामडानुं बख्तर [सजेला]
जिणहर *आरारा. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल.* जिनमंदिर (सं.जिनगृह)
जिणंद *आरारा. तेरका. देवरा. लावल.* जिनेन्द्र, रागद्वेष आदिने जीतेला तीर्थंकर
जिणि *तेरका. नेमिछं. षडाबा.* जेणे (सं. येन)
जिणिउ *गुर्जरा. षडाबा. षष्टिप्र.* जीत्यो (सं. जि-, प्रा.जिण)
जिणिंदु *ऐतिका.* जिनेश्वर देव
जिणु *गुर्जरा.* जिन भगवान; जुओ जिण
जिणु *तेरका.* जाणे के; जुओ जिण
जिणेसर *आनंस्त. तेरका. लावल.* जिनेश्वर, तीर्थंकर
जिण्यउ *उक्तिर.* जीत्यो, हराव्यो (सं.जि-, प्रा.जिण)
जित्त *नेमिछं.* जितायेला, [जीत्या]
जिन *देवरा.* जे
जिनउं *षडाबा.* जेनुं
जिनकल्पी *नलरा.* जैन मुनिओ माटेना आचारोवाळो (सं.)
जिनता *उषाह.* जनेता (सं.जनयित्री)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिपही *आरारा.* जीत, [जय मेळव]

जिब्भेय *शृंगामं.* [बगासां खाय], *आळस खाय (सं.जृम्भते)

जिभ्या *दशस्कं(१).* जिह्वा, जीभ

जिम *गुर्जरा. लावल.* यम

जिम *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* जेम, जेवुं (अप.जेवं); जुओ यिम

जिमइ *आरारा. उपबा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. षष्टिप्र.* जमे (दे.जिम्म-)

जिमइ *ऋषिरा.* [जेवा, जे वखते]

जिमघर *ऋषिरा.* यमनुं घर (सं.यमगृह)

जिमण *उषाह.* जमण [सं.जेमन]

जिमणउ *आरारा. उक्तिर. उपबा. वीसरा.* जमणो

जिमणवार *नलरा.* जमणवार

जिम ते *उपबा.* दाखला तरीके, जेमके

जिमवार *देवरा.* ज्यारे

जिमाडइ *उक्तिर. वीसरा.* जमाडे

जिमिवुं *उक्तिर.* जमवुं [दे.जिम्म-]

जिमी *आरारा.* जमीन

जिमी *उक्तिर. नेमिछं. वाग्भवा.* जमीने

जिमीतूं *उक्तिर.* जमातुं

जिमु *गुर्जरा.* जेम

जिवारइं *अभिऊ. आनंस्त. उपबा.* ज्यारे [सं.यद्वारे]

जिशउं, जिश्यउं जुओ यिशउं, यिश्यउं

जिसइ *आरारा.* जे वखते, ज्यां

जिसउ *उक्तिर. वसंफा(ल). वीसरा. षडाबा.* जेवुं (सं.यादृशकम्)

जिसिइ *नेमिछं.* जेवा, [ज्यां,ज्यारे]; *गुर्जरा. विराप.* जेथी

जिसिउं *आरारा. उपबा. नेमिछं. लावल.* जेवुं (सं.यादृशकम्)

जिसे *देवरा.* [ज्यां, ज्यारे]

जिस्यउ *ऋषिरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि.* जेवो (सं.यादृशक)

जिहवारि *अंबरा.* जे वारे, ज्यारे

जिहाज *देवरा.* जहाज

जिहां *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. लावल. वसंवि. वीसरा. षडाबा.* ज्यां (सं.यस्मिन्); जुओ यिहां

जिहां कणि जुओ यिहां कणि

जिहां किणि *ऐतिरा.* ज्यां, जे ठेकाणे

जिह्वारइ *आनंस्त.* ज्यारे

जी *वसंफा. वसंवि.* जे (सं.ये); *तेरका.* जे स्त्री (सं.या)

जी- (जीयइ) *वीसरा.* जीवे (सं.जीवति)

जीउ *गुर्जरा.* जीवन

जीजंब *आरारा(व).* जींजवो – एक घास-छोड ?

जीण *उक्तिर.* जे

जीण, जीणि, जींण *गुर्जरा. *विक्ररा. *विराप.* [चामडानुं बख्तर] [फा.जीन]; *आरारा.* घोडानो साज, पलाण; जुओ जरह जिण, जिण

जीण *आरारा.* घोडानो साज, पलाण [फा. झीण)

जीणइं *उपबा. नेमिछं.* जेणे (सं.येन)

जीणं *उक्तिर.* जे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीणंग *शृंगामं.* जीर्ण अंगवाळुं, कृशांग

जीण्यउ *उक्तिर.* जीत्यो, हराव्यो (सं.जि-, प्रा.जिण)

जीतूं-फलूं **अभिऊ.* [जीतेलुं अने फळेलुं – सिद्ध थयेलुं]

जीन *प्रेमाका.* पलाण [फा.झीण]

जीनस *पंचवा.* [जणस], **वस्तु, चीज, माल** (अ.जिन्स)

जीपइ *अंबरा. आरारा. उक्तिर. उपबा. उषाह. ऋषिरा. ऐतिका, गुर्जरा. चारफा. नंदब. प्राचीका. प्राचीफा. प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. शृंगामं. षडाबा.* जीते (सं.जि-, प्रा.जित्त, जिप्प); जुओ यीपइ

जीपक *आनंस्त.* जीतनार

जीपण *अंबरा.* जीत

जीपणहार *अंबरा. उपबा.* जीतनार

जीपिवुं *ऐतिरा. ऋषिरा.* जीतवुं

जीभ जुओ जीम

जीभाहा *प्रेमप.* जीभ वडे

जीम *वीसरा.* जेम

***जीम, [जीभ]** **अभिऊ.* [मंगल समाचार लावनारने अपाती सोनानी जीभ]

जीमइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* जमे [दे.जिम].

जीमणउ *जिनरा. षडाबा.* जमणो

जीमणवार *प्राचीसं.* जमणवार

जीमाडइ *आरारा.* जमाडे

जीमूत *ऋषिरा.* मेघ [सं.]

जीयइ जुओ जी-

जीयूं *देवरा.* जेम, जे रीते (हिं.ज्यूं)

जीलतां *शृंगामं.* जळक्रीडा करतां (दे.झिल्ल)

जीव *सिंहा(शा).* जीभ

जीव खूतवो *प्रेमाका.* चित्त चोंटवुं

जीवत *मदमो.* जीवित, [जीवन]

जीवरखी *प्रेमाका. विक्ररा.* एक प्रकारनुं बख्तर

जीवापोता *उक्तिर.* एरंडाना वर्गनुं एक वृक्ष [जेनां फळनी माळा पहेरावथी पुत्र जीवे छे एवी मान्यता छे] [सं.पुत्र-जीवकः]

जीवारे *देवरा.* ज्यारे

जीवांतक *प्रेमाका.* जीवोनो अंत लावनार, पारधी [सं.]

जीवित्व *दशस्कं(१).* जीवितव्य, जीवित, [जीवन]

जीविय *गुर्जरा. तेरका.* जीवित, जिंदगी

जीवी *अभिऊ. आरारा. उषाह. नलरा. नेमिछं. लावल. वीसरा.* जीवन (सं. जीवित); जुओ यीवी

जीवी *विमप्र.* जिवाई, भरणपोषण [सं. जीविका]

जीवीदान *प्रद्युचु.* जीवितदान, [जीवनदान]

जीवू *आरारा.* जीवन

जीसे *देवरा.* जेने (हिं.जिसे)

जीह *गुर्जरा.* ज्यां

जीह *ऐतिका. जिनरा. नेमिछं. प्राचीसं.* जीभ (सं.जिह्वा)

जीहडी *लावल.* जीभ (सं.जिह्वा)

जीहा *लावल.* जीभ (सं.जिह्वा)

जीहां *उपबा.* ज्यां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जु *उक्तिर. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. *प्रद्युचु. षडाबा.* जे (सं.यः)

जु *गुर्जरा. तेरका. षडाबा.* ज; जुओ जि

जु *आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. वाग्भबा. षडाबा.* जो (सं.यतः)

जु *नलाख्या.* जुओ (सं.द्योतयत)

जुअलइं *गुर्जरा.* जोडीमां, [साथे] (सं. युगल); जुओ जूंली

जुआ *उक्तिर. दशस्कं(१). प्रबोप्र. प्रेमाका.* जुदा

जुआरि *उक्तिर.* बळद (सं.युगन्धरी)

जुइ *कादं(शा). तेरका.* जुए (सं.द्योतते)

जुइ *प्रद्युचु.* जुगार (सं.द्यूत)

जुक्त *अखाका. प्रेमाका.* युक्त, योग्य; *चित्तसं.* विचारपूर्वक

जुक्ति *चित्तसं.* विचारणा, तर्क, दलील, विचारप्रक्रिया, युक्ति, योजना

जुक्तु *षडाबा.* युक्त, जोडायेलुं

जुक्त्य *चित्तसं.* मर्म, विचारणा, विचार-सरणी [सं.युक्ति]

जुग *आरारा.* जोड, बे (सं.युग)

जुग *चंद्रवा.* जगत, जग; जुओ युग

जुगत, जुगुतु *षडाबा.* योग्य [संबद्ध, संगत, बंधबेसतुं] (सं.युक्त)

जुगत, जुगति *नरका.* रचना, [गोठवण] (सं.युक्ति)

जुगतउ *अखाका. आरारा. गुर्जरा. नरका. ललिरा.* योग्य (सं.युक्त); *नरका.* योग्य, सरखुं, [बंधबेसतुं]

जुगता *नरका.* युक्ति, करामत, रीत

जुगताइ *मदमो.* मेळ

जुगताजुगति *आरारा.* योग्यता अनुसार

जुगता ते जुगति *प्रेमाका.* योग्य करामत [– युक्ति, चातुर्य]

जुगति *लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* योजना, युक्ति, बुद्धिचातुर्य; जुओ जुगत

जुगती *नरका.* योग्य, सरखी

जुगतुं *नरका.* युक्त – योग्य [स्थिति], [लाग, मोको]; जुओ युगतुं

जुगते *अखेगी. नरका. प्रेमाका.* युक्तिपूर्वक, औचित्यथी, [सुंदर रीते]

जुगत्य *अखाका.* युक्ति, [योजना, मर्म]

जुगदाधार *दशस्कं(१).* जगदाधार

जुगदीश *दशस्कं(१). मदमो.* जगदीश

जुगदीश्वरी जुओ युगदीश्वरी

जुगपवरु *ऐतिका.* युगप्रवर

जुगपहाणु *ऐतिका.* युगप्रधान

जुगम *अखेगी. कामा(शा). दशस्कं(१). मदमो.* जोडकुं, जोड (सं.युग्म)

जुगल *वीसरा.* जोड (सं.युगल)

जुगलाधरम **गुर्जरा.* [युगल रूपे जन्मेलां स्त्रीपुरुष पतिपत्नी बने ते जातनो आचार]; जुओ जुगलाधर्म्म

जुगवर *ऐतिका.* युगमां श्रेष्ठ, उत्तम

जुगिजुगता जुओ युगियुगता

जुगांण, जूंगाण *रूस्तस.* ?, [धुमाडो] [उ. दुखान]

जुगुतु जुओ जुगत

जुग्गविओ *षडाबा.* (व्यायामना) अभ्यास-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाळो (सं.योग्य परथी प्रा.)

जुग्म *अखाका. दशस्कं(१). प्रेमाका.* जोड, बे (सं.युग्म)

जुग्म तुरि *प्रेमाका.* अश्वनी जोडी, अश्विनी-कुमार; जुओ तुरी

जुजवा *देवरा.* जुदा

जुजाल्य *मदमो.* –, [योद्धा] [हिं.जुझार; रा. झुज्झमल]

जुजुआ, जुजुया, जुजुवा *चंद्रवा. चित्तसं. नरप(द). सिंहा(शा).* जुदाजुदा

जुठ *चंद्रवा.* एठुं [सं.जुष्ट]

जुडइ *वीसरा.* जोडाय [दे.]

जुडता *उपबा.* यथायोग्य, बंधबेसता

जुडियां *गुर्जरा.* [लडवा माटे] सामसामे आव्यां [दे.जुडिअ]

जुत्त *आरारा.* युक्त, -वाळुं

जुध *कामा(शा).* युद्ध

जुन्ह *प्राचीसं.* ज्योत्स्ना, [चांदनी]

जुमना *मदमो.* यमुना

जुय *तेरका.* युगल (सं.युग-)

जुयउं *जिनरा. नंदब. षडाबा.* जुदुं (सं.युतः)

जुयल *तेरका.* युगल

जुयारी *षडाबा.* जुगारी (सं.द्युतकारी)

जुलहो *अखाका.* वणकर (हिं.)

***जुलि [दुलि]** *अंबरा.* [काचबो] [दे.]

जुवटुं *मदमो. रूपच.* जुगार (सं.द्युत परथी)

जुवट्ट *विक्ररा.* जुगार, जुगटुं

जुवा *अखाछ.* जुदा

जुवारी *वीसरा.* जुगारी (सं.द्युतकारिन्)

जुवां *पंचवा.* जुगार, द्युत

जुव्वण *गुर्जरा. तेरका.* यौवन

जुहर *हम्मीप्र.* जौहर, [पराजय निश्चित थतां रजपूत स्त्रीओनो अग्निप्रवेश] (सं. यमगृह)

जुहार *आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. जिनरा. नरका. *प्रबोप्र. प्राचीसं. प्रेमाका. विक्ररा. *विमप्र. वीसरा.* नमस्कार, प्रणाम [दे.जोहार]

जुहारइ *अंगवि. लावल. वीसरा.* प्रणाम करे

जुहारडु *शृंगामं.* जुहार, नमस्कार (दे.जोहार)

जुहारि *उषाह.* नमस्कार

जुहिय *गुर्जरा.* जूई (सं.यूथिका)

जुं *आरारा.* जेम, जेवां (हिं.ज्यूं)

जुंजनकरण *आनंस्त.* युंजनकरण, संयोगी-करण, जेने लईने कर्मनो आत्मा साथे संबंध थाय ते युंजनकरण [सं.]

जू *नलरा. ललिरा. लावल.* जुगार (सं.द्युत)

जूअ *नलरा.* जुगार (सं.द्युत)

जूअली *विमप्र.* बे [सं.युगल]

जूआ *विमप्र.* जुदा [सं.युत]

जूआ *प्रेमाका.* ढोरना शरीर पर चोंटतुं एक जीवडुं

जूआरउ *उक्तिर.* जुगारी (सं.द्यूतकारकः)

जूआरी *नलरा.* जुगारी (सं.द्युतकारिन्)

जूइ *कादं(शा). जुए; नलाख्या.* जोई; जुओ जुइ

जूई *आरारा. वाग्भबा.* जुदी

जूउ *उक्तिर. कादं(शा).* द्युत, जुगार

जूउ, जूउं *उक्तिर. कर्पूमं. प्रबोप्र. सिंहा(म).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुदुं (सं.युत)

जूऊउ *उपबा.* जुदुं (सं.युतः)

जूका *षडाबा.* जू (सं.यूका)

जूक्त्य *अखेगी.* जुक्ति, [मर्म] (सं.युक्ति)

जूगांण जुओ जुगांण

जूजवुं *दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* जुदुंजुदुं, जातजातनुं

जूजूउं *अखेगी. आरारा. उपबा. उषाह. गुर्जरा. जिनरा. नलाख्या. प्रद्युचु. प्रबोप्र. विमप्र. वाग्भबा.* जुदुंजुदुं, जातजातनुं (सं.युतयुत)

जूठिलु *गुर्जरा.* युधिष्ठिर

जूडी *नरका.* नानो झूडो, [लट] [सं.जूट-]

जूतउ *अखाका. अखाछ. प्राचीसं.* जोडायो, जोडेलो (सं.युक्त)

जूत्तीय *आरारा.* युक्त, -वाळी

जूपइ *उक्तिर.* जोडे [सं.युक्त, प्रा.जुत्त, जुप्प]

जूरी *नलरा.* *सतामणी, *जोराई (फा.जोर), [खिन्न, दुःखी] [दे.जुरिय]

जूवउ *आरारा.* जुदो

जूवटउ *गुर्जरा. ललिरा.* जुगार (सं.द्युत)

जूवणु *गुर्जरा.* यौवन

जूवनु *षडाबा.* यौवन

जूवां *प्रेमाका.* जुदां

जूसर *षडाबा.* झूंसरुं, धूंसरुं (सं.युगशर)

जूह *विमप्र.* द्युत, जुगार

जूही *आरारा(व). प्राचीफा.* जूईनो छोड (सं.यूथिका)

जूंली *ऋषिरा.* जोडी (सं.युगल); जुओ जुअलइं

जूंसरुं *उक्तिर. प्रेमाका.* झूंसरुं, धूंसरुं

जे *वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* जो (सं. यदि)

जे कसि *ऋषिरा.* जे कोई

जेठ, जेठउ *आरारा. प्राचीसं.* मोटुं (सं. जयेष्ठ)

जेठी *कृष्णच. प्राचीफा.* मोटा मल्ल, जेठीमल्ल (सं.ज्येष्ठिन्)

जेठीमल *चंद्रवा.* ज्येष्ठमल्ल, जोद्धो

जेड **सिंहा(शा.)* [जेवुं, समान] [रा.; कच्छी]

जेड, जेडि, जेड्य *नेमिछं. प्राचीका. लावल. विक्ररा. वेताप.* विलंब; आरारा. विलंबपूर्वक, छेवटे

जेडवुं, जेडिवुं *अंबरा. प्राचीफा.* विलंब करवो

जेण *तेरका.* जाणे के

जेण-तेण *कृष्णबा.* –, [जेनाथी-तेनाथी, जेणे- तेणे]

जेणं *वाग्भबा.* जेमां

जेणि *कादं(ध्रु).* *केमके, [जेथी, जे कारणे]

जेणी *दशस्कं(२).* जे स्त्री

जेतइ *आरारा.* ज्यारे

जेतउ *आरारा. गुर्जरा. प्राचीसं. लावल.* जेटलुं (सं.यावत्, प्रा.जेत्त)

जेतल *आरारा.* जेटलुं

जेतलइ *अभिऊ. गुर्जरा.* जेटले, ज्यारे (प्रा. जेत्तुल)

जेतलउं *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. जिनरा. षडाबा.* जेटलुं (प्रा.जेत्तुल)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेती वार *षडाबा.* जेटली वार, [ज्यारे]

जेतुं-तेतुं *कृष्णबा.* जेटलुं-तेटलुं

जेत्र *ऐतिका.* जयसूचक [सं.जैत्र]

जेथि *आरारा.* ज्यां

जेमणवार *षडाबा.* जमणवार

जेव *तेरका.* जेम (अप.)

जेवड *तेरका.* जेवडुं (अप.)

जेवडइ *जिनरा.* रस्सीथी, दोरडाथी

जेवरलो *मदमो.* विरलो (सं.जगति+ विरलकः, प्रा.जए विरलओ परथी ?); जुओ जयवरलो

जेष्टिका *कामा(त्रि). प्रेमाका.* लाकडी, दंड [सं.यष्टिका]

जेष्टिकादार *प्रेमाका.* छडीदार

जेह *उक्तिर. ऋषिरा. *विमप्र. वीसरा.* जे, जेने; जुओ येह

जेहउं *गुर्जरा.* जेवुं

जेह कही *उपबा.* जे कंई; जुओ कही

जेह भणी *आरारा. उपबा.* कारणके

जेहरफल *पंचवा.* झेरी फळ (फा.झहर+ सं.फल)

जेहवइ *आरारा.* ज्यारे

जेहारि जुओ येहारि

जो *उक्तिर. तेरका. वीसरा.* जे (सं.यः, यो)

जोअण *ऐतिरा. उक्तिर. कृष्णबा. गुर्जरा. नलरा. लावल.* चार गाउ, आठ माइल [तेर किलोमिटर] जेटलुं अंतर (सं. योजन)

जोइ **अभिऊ.* [जो, मान]

जोइउ *उक्तिर.* जोयुं

जोइणि *ऐतिका.* योगिनी

जोइलि *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि.* कोयल- नो अवाज, कलरव

जोइवुं *उक्तिर. रूपच. वाग्भबा.* जोवुं

जोइस *आरारा.* ज्योतिष, जोश

जोइसिइं *नेमिछं.* जोशे, [अनुभव – आस्वाद लेशे]

जोइसी *वीसरा. षडाबा.* जोशी, जोश जोनार (सं.ज्यौतिषिक); *षडाबा.* [सूर्य, चन्द्र वगेरे] ज्योतिष्क देव (सं. ज्यौतिषिक)

जोइजइ *आरारा.* जोईये

जोउ *नेमिछं. लावल.* जुओ

जोओ *आनंस्त.* जुओ

जोक्षम *प्रबोप्र.* जोखम [सं.योगक्षेम]

जोख *मदमो. सिंहा(शा).* सुख, आनंद (सं.जोष); जुओ जउख

जोखमां **चंद्रवा.* [जोखवानी क्रियामां]

जोखिम *षडाबा.* जोखम (सं.योगक्षेम)

जोग *चित्तसं.* योग, संयोग; योग, स्थिति; *वीसरा.* ग्रहयोग; *षडाबा.* योग [मन, वचन, कायानो], जैन पारिभाषिक संज्ञा

जोग, जोगउ *उपबा.* योग्य, लायक

जोगइ *आनंस्त. आरारा.* योगथी, संपर्कथी, संबंधथी, साधनथी

जोगउ जुओ जोग

जोगखेम *चित्तसं.* योगक्षेम, पालनपोषण, कल्याण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोगवइ *आरारा. चंद्रवा.* व्यवस्था करे, [संभाळे], साचवे; *अखेगी.* [योग करे], मेळवे, चलावे, [-मां नाखे]

जोगवटउ *उक्तिर.* भावसमाधि वखते संन्यासीओ द्वारा पहेरातो लांबो झभ्भो (सं.योगपट्टः)

जोगा *लावल.* योग, [संबंध]; योग, [वैराग्य]

जोगिणि *वीसरा.* योगिनी, संन्यासिनी

जोगिणी **षडाबा.* [जोगणी, एक चीकणो पदार्थ, लाख] [*सं.योगिनी]

जोगिनी **वीसरा.* [ज्योतिषनो कोई योग]

जोगिनउ *वीसरा.* योगी

जोगियउ *नरका. वीसरा.* योगी

जोगी जंगम **प्रेमाका.* [हरताफरता संन्यासी, रखडता साधुबावा]

जोगीसरा *लावल.* योगीश्वर, श्रेष्ठ योगी

जोग्य *आरारा.* योग्य, लायक

जोग्ये *चित्तसं.* योगे, अनुसार

जोजन *प्रेमाका.* चार गाउ [तेर किलो-मिटर]नुं अंतर [सं.योजन]

जोजि **विमप्र.* [पत्नीए, स्त्रीए] (रा.जोजे; अ.जोज)

जोड *अखाछ.* संबंध; जोटो, जोडी; जोडवुं ते, यमक(पद्य)नी रचना करवी ते; *मदमो. *विमप्र.* जेवुं, [समान]

जोडउ *उक्तिर.* जोटो, बे समान वस्तु (सं. यौटकम्) [दे.जोड]

जोडावाडइ *नेमिछं.* सरखेसरखी, जोडी, [बराबरीमां]

जोडि *लावल.* *जोड, *बेनो समूह, [समूह] [रा.]; जोड, समानता

जोडिवउं *षडाबा.* जोडवुं (सं.जुटति परथी)

जोडुआं *मदमो.* जोडकां, एक जोडनां

जोडो *चंद्रवा.* जोडीनो, जोडनो, [बरो-बरियो]; *मोसाच.* जोटो, बे

जोत *देवरा.* जोतरुं, बळदने धूंसरीए जोडवानो पटो [सं.योक्त्र]

जोतर *अखाका.* बळदने धूंसरी साथे जोडवानो पटो [सं.योक्त्र]

जोतरइ *अखाका. प्रेमाका. शृंगामं.* जोडे; *नलाख्या.* (घोडा) जोतरे, बांधे, जोडे (सं.योक्तृ परथी)

जोतरुं *प्रेमाका.* धूंसरीनी साथे बळदने जोडवानो बे छेडे दोरीवाळो पटो [सं. योक्त्र]

जोति *आरारा.* प्रकाश (सं.ज्योति)

जोतिक, जोतीक *दशस्कं(२). मदमो.* ज्योतिष (सं.ज्यौतिष-)

जोतिकजाण जुओ योतिकजाण

जोतीय *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि.* जोतां, दृष्टिपात वडे, [दृष्टिथी, आंखथी]

जोत्य *चित्तसं.* ज्योति

जोत्र, जोत्रु *उक्तिर.* जोतरुं (सं.योत्र, योक्त्र)

जोत्र्या *गुर्जरा.* जोतर्या, जोड्या (सं.योत्र, योक्त्र)

जोनि *प्राचीसं. *षडाबा.* अवतार, [जीव-योनि]

जोबनमंद *प्रेमाका.* जोबनवाळी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयइ *उक्ति. षडाबा.* जुए (सं.द्योतते)
जोयण *अभिऊ. आरारा. गुर्जरा. शृंगामं. षडाबा.* जोजन, आठ माइल [तेर किलो-मिटर]नुं अंतर (सं.योजन)
जोयणजात्र *सिंहा(शा).* जोवा जेवी बाबत [जोवा जेवो तमासो]; जुओ जात्र
जोरावर *मदमो.* जोरावरी, बळजोरी
जोरी *ऋषिरा.* जोरजुलम
जोरो *प्राचीफा.* दोर, जुलम (फा.जोर)
जोवण *तेरका.* यौवन
जोवणभरि *गुर्जरा.* यौवननो भार [यौवननो जथ्थो]
जोवतां *देवरा.* जोतां (सं.द्योत्)
जोवन *उक्तिर. गुर्जरा. लावल. वीसरा.* यौवन
जोव्वण *तेरका.* यौवन
जोशीता *चतुचा.* नारी (सं.योषिता)
जोसी *आरारा.* ब्राह्मण (रा.)
जोसीयउ *वीसरा.* जोशी (सं.ज्यौतिषिकः)
जोहरी *पंचवा.* झवेरी, झवेरातनो वेपारी (फा.जौहरी)
जोहार *उक्तिर. प्राचीसं.* नमस्कार [दे.]
ज्ञाइ *षष्टिप्र.* न्याय वडे (सं.न्यायेन)
ज्ञात *प्रेमप.* ज्ञान
ज्ञानखल *चित्तसं.* खलज्ञानी
ज्ञान *विक्ररा.* [ज्ञानयुक्त] पुस्तक
ज्ञानहेत *प्रेमाका.* *ज्ञान अने हेत, [ज्ञान माटे हेत – उमळको]
ज्ञापित *विक्ररा.* नापित, [हजाम]
ज्ञायक *आनंस्त.* जाणनार [सं.]
ज्ञ (एज्ञ्य) *तेरका.* ?, [पूजा] [सं.इज्य]
ज्य *रूस्तस.* ज
ज्यउं *वीसरा.* जेम
ज्यथारथ *चित्तसं.* यथार्थ
ज्यदा *चित्तसं.* यदा, ज्यारे
ज्यदिप *नरप.* जोके (सं.यद्यपि)
ज्यदी *प्रेमप.* जो [सं.यदि]
ज्यम छे त्यम *चित्तसं.* वस्तुतः, वस्तुस्थितिमां
ज्यमणी *रूस्तस.* जमणी
ज्यमलो *प्रेमप.* नजीक; जुओ जमल्य
ज्यवरलो *वेताप. सिंहा(शा).* जवल्लो, विरलो, कोईक ज; जुओ जयवरलो
ज्यंत्र *मदमो.* वाजिंत्र (सं.यंत्र)
ज्याच्यु *नलाख्या.* जाच्यो, माग्यो, [-नी पासे याचना करी]
ज्यान *चित्तसं. दशस्कं(१). विमप्र.* नुकसान [फा.जान]
ज्याम *कादं(शा).* पहोर (सं.याम)
ज्यामण *प्राचीका. प्रेमप.* दूध जमाववा माटेनुं मेळवण; जुओ जामण
ज्यारताइ *पंचवा.* ज्यां सुधी (सं.यद्+वार)
ज्यांहांकण *प्रेमप.* ज्यां
ज्युइ *नलाख्या.* जुए
ज्युध्य *रूस्तस.* युद्ध
ज्यूं *वीसरा.* जेम
ज्योष्टिका *कामा(शा). दशस्कं(१).* लाकडी [सं.यष्टिका]
ज्योग *चित्तसं.* जोग, योग
ज्योग्य *मदमो.* योग्य
ज्योछना *कादं(शा).* ज्योत्स्ना, चांदनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्योतिक *प्रेमाका.* ज्योतिष

ज्योवन-नाडा *नरप.* जुवानीना चाळा – खेल (सं.यौवन-नाटक)

ज्वलइ *उक्ति.विराप. षडाबा.* सळगे, प्रकाशे

ज्वाजुलमान *दशस्कं(१).* जाज्वल्यमान

झकझोळ *दशस्कं(१).* रेलंछेल; *नरका.* रेलंछेल, [रंगरेल]

झकर *कामा(शा).* वातचीत, [चर्चा] (फा. जिकर)

झकोल, झकोळ **कस्तुवा. प्रेमाका.* आनंद, [आनंदनो ऊभरो, मोज]

झकोलवुं, झकोळवुं *प्राचीसं.* झबोळवुं, नाहवुं, डूबवुं; जुओ झंकोल-

झखइ **कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. *विराप.* प्रलाप करे, बबडाट करे, [बोलबोल करे]; *उक्ति.* संताप पामे (दे.झंख); जुओ झंख, झंखइ

***झखत [*अखत]** *नरप(द).* *मंत्रतंत्रनो जाणकार, [*मंत्रेला दाणा]

झखोलिय *प्राचीसं.* [पाणीथी] छलकाया, भराया

झगर *कामा(शा). चंद्रवा. वेताप.* उज्जड, खेदानमेदान

झगारै जाय ०*नरका.* प्रकाशित देखाय

झझणण *गुर्जरा.* झणझण अवाज

झझणणी *आरारा(व).* झिंझिणी – एक प्रकारनी लता के वृक्ष ? (दे.झिंझिणी)

झटकइ *उक्ति.* झडपथी (सं.झटिति)

झटे *अखाछ.* झूंटवे

झड *आरारा.* झोड, पिशाच

झड *नरका.* लगनी, [झडी, लगातार थवुं ते]; *प्राचीसं.* झडी, ज़ोरदार वृष्टि [दे. झडी]

झडहडइ *ऐतिका.* पडे, नासे

झण *नरका.* झणकार, [झणझण ध्वनि]

झति *नलरा.* झट, जलदी (सं.झटिति)

झबके *नरका.* चमकी जवाय ए रीते, ओचिंता, [झब दईने, झडपथी]; जुओ झाबक

झमर **प्रेमाका.* [कोलाहल, विक्षोभ]; जुओ झंमर

झमरु *प्रेमाका.* एक वाद्य; जुओ जमर

झमाल *गुर्जरा. विराप.* डंख मारनारुं जीवडुं, घिमेल, [राती कीडी]

झमाला *गुर्जरा. लावल.* झाकझमाळ, प्रकाश

झरमर *नरका.* *डोकनुं – गळानुं एक आभूषण, [झीणी]

झरलाणी *अखाछ.* [झळळाणी], झळकी, ज्वलित थई (?)

झरवाळियुं *नरका.* लूछवानुं कपडुं, [जीर्ण वस्त्र]

झरहठी *हम्मीप्र.* चढाण [*झाडी, *जंगल]

झरेळी *प्रेमाका.* [तावनी] धुजारी, कंपारी, असर

झल *प्राचीसं.* ज्वाला, [बळवुं ते]

झलकण *चित्तसं.* ज्योति, झबकार, प्रकाश; *अखाका.* *चळकाट, *प्रकाश, [*आभास, *झांखी]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झलझल- **देवरा.* [क्षुब्ध थवुं]; *प्राचीसं.* ऊछळवुं, [खळभळवुं, छलकवुं]

झलझलि **देवरा.* [झळझळियां आव्यां]

झलझांखसउ *उक्तिर.* भळभांखळुं, मळसकुं (*सं.चलद्ध्वांक्षम्)

झलम-टोप *सिंहा(शा).* एक प्रकारनुं शिरस्त्राण

झळमळइ *वीसरा.* प्रकाशे

झलमलानंद *सिंहा(शा).* खूब आनंद

झलमलीय *गुर्जरा.* *प्रकाशथी चमकती, [*परिपूर्ण, *छवायेली] [दि.झलमल]

झलहालिय *तेरका.* झळहळतुं करेलुं

झलइ *नेमिछं.* झीले, सहन करी शके

झलरि, झलरी *ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं.* एक वाद्य, झालर (सं.)

झवार *कामा(शा).* जुहार, नमस्कार

झंक *नलरा.* संताप (दे.झंख); जुओ झखइ

झंकोल- *प्राचीसं.* झबोळावुं, डूबवुं; जुओ झकोलवुं

झंखइ **वीसरा. हम्मीप्र.* बोले, [बोलबोल करे, बकवाद करे] [दे.]; जुओ झखइ

झंखजाळ *प्रेमाका.* झाडी

झंखर *शृंगामं.* झांखरा जेवुं [दे.]

झंखिउ *गुर्जरा.* झांखुं थयुं

झंघडीआं *मदमो.* जंघडिया, चोघडियांवाळा, ढोली

झंजीर *प्राचीफा.* बेडी (फा.जंजीर)

झंझ *तेरका. *प्राचीसं.* व्याकुळ? (दे.झंझा=व्याकुळता)

झंझ *उपबा.* कजियो (दे.)

झंझेडी *प्रेमाका.* खंखेरी

झंटी, झांटि, झूंटा *प्रबुचु.* [झटिया], नाना ऊभा वाळ (दे.झंटी)

झंप, झांप *अभिऊ.* कूदको (सं.झम्पा)

झंप- **कादं(ध्रु). कादं(शा).* कूदवुं, [ठेक मारवी]

झंपापात *प्रेमाका.* कूदको, [कूदी पडवुं ते]

झंपावइ *उक्तिर. गुर्जरा. दशस्कं(१). नलाख्या.* कूदी पडे

झंफ- *वीसरा.* कूदी पडवुं [सं.झम्पा]

झंभा *कादं(शा). चतुचा.* बगासुं (सं.जृम्भ)

झंम *रूस्तस.* ज्यम, जेम

झंमर *चंद्रवा.?*, [*डोळ, *आडंबर]; जुओ झमर

झाउ *दशस्कं(२).* झांखप

झाक *हरिवि.* खिन्न, [करमावुं – सुकावुं ते] [रा.झाकणौ]

झाकइ *उक्तिर.* झगमगे, प्रकाश करे

झाकझमाली *चारफा.* देदीप्यमान

झाकमझोळ *प्रेमाका.* रेलंछेल; *अखाछ. नरका. प्रेमाका.* लहेर, आनंद

झाकळ उतारीश *प्रेमाका.* सीधा करीश, *अभिमान उतारीश, [खोखरा करीश, खबर लई नाखीश]

झाड्खो *ऐतिका.* झांखी, आभास, [प्रकाशित थवुं ते]; जुओ झांख

झागड *गुर्जरा.* ध्वनिसूचक शब्द

झाटक *गुर्जरा.* प्रहार, झाटको

झाडाया (झाडायाला) *ऐतिका.* छोडाव्या

झाडी *नरका.* झपटाणी, झपटमां आवी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[झपटमां लीधी]

झाण *ऐतिका. जिनरा. तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं.* ध्यान (प्रा.)

झातकार *अखेगी. कादं(शा). चित्तसं. दशस्कं(१). प्रेमाका.* झबकार, प्रकाश; प्रकाशमान, झळांहळां

झाबउ *जिनरा.* पहेरण, झब्बो [फा.जामः]

झाबक *विमप्र.* जलदी, [एकाएक] [रा.]; जुओ झबके

झाबल *विमप्र.* खाबडुं, खाबोचियुं

झामरझोळे *अखाछ.* आडंबरथी ?, [डोळ अने चंचळता, अस्थिरता, डामाडोळ वृत्तिथी]

झाम्र माटि *चारफा.* *झामरी अने माठी – आभूषण-विशेषो, [*माथे झामर ए आभूषण]

झामल *प्राचीसं.* निस्तेज [दे.]

झामलउ *उक्तिर.* निस्तेज दृष्टिवाळुं (सं. ध्यामलम्)

झायइ *ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीसं.* विचार करे, ध्यान करे (सं.ध्यायति)

झार *मदमो.* जार, [व्यभिचारी]

झारिउ *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* रेड्युं, छांट्युं

झारी *मदमो.* जारी, [व्यभिचार]

झाल *अभिऊ. नरका. प्राचीफा.* कानमां पहेरवानुं एक आभूषण; जुओ झालि

झाल *ऋषिरा.* अंतरनी बळतरा; *गुर्जरा.* झाळ; (सं.ज्वाला) क्रोध; *देवरा. प्राचीसं. लावल.* झाळ (सं.ज्वाला)

झालइ *नेमिछं.* (विरहनी) ज्वाळा जेवी, [ज्वाळा तरीके]

झालइ *आरारा.* हाथमां ले, उपाडी ले (दे. झिल-)

झालर, झालरि *उक्तिर.* *ऐतिका. एक वाद्य, गोळ सपाट घंट (सं.झल्लरिका)

झालरी *षडाबा.* एक वाद्य, [गोळ सपाट घंट] (सं.झल्लरी)

झाला, झाल्य *अभिऊ.* [क्रोधनी] ज्वाळा; जुओ अगनि-झाला

झालि *चारफा. नेमिछं. लावल. विमप्र. हरिवि.* काननुं आभूषण; जुओ झाल

झालिहि *ऐतिका.* संभाळो, [ग्रहण करो, स्वीकारो]

झाल्य *अभिऊ.* जुओ झाला

झाळ्युं *प्रेमाका.* झार्युं, सांध्युं

झासक *दशस्कं(१).* पुष्कळ; जुओ जासक

झासा *प्रेमाका.* काकलूदी, आजीजी, [झावां, व्यर्थ प्रयत्नो]

झांउ *प्रेमाका.* झांखप

झांउआ *प्रेमप.* झांखरां

झांख *अखाछ.* *झांखी, [दृष्टि, नजर]; जुओ झाड्खो

झांझ *नरका. प्रेमाका.* एक प्रकारनुं वाद्य, कांसीजोड

झांझ *अखाका.* [क्लेश, व्याकुळता] [दे. झंझा]

झांझवां *प्रेमाका.* आंखमां पाणी आववाथी पडती झांखप

झांटा *ऋषिरा.* डाभनी अणीओ, [बारीक

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सळीओ] [दे.झंटी]

झांटि *उषाह.* झटियां, वाळ (दे.झंटी); जुओ झंटी

झांप *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* कूदको (सं. झम्पा); जुओ झंप

झांपइ **गुर्जरा. *विराप.* [आच्छादित करे, आवृत्त करे] [दे.झंप]

झांपडो *हरिख्या.* चंडाळ, भंगियो

झांपे **प्रेमाका.* [ढांके, आवरी ले, ग्रसे]

झिगमिग *वीसरा.* झगमगवुं

झिज्ज-, झिज्झ- *तेरका. प्राचीसं.* क्षीण थवुं

झिझिउ *तेरका.* क्षीण [दे.झिज्झ]

झिझिम *गुर्जरा.* ध्वनिसूचक शब्द

झिरइ *प्रबोप्र.* झरे [सं.क्षरति, झरति]

झिरिमिरि *तेरका. प्राचीसं.* झरमर

झीणउ *उक्तिर.* दुर्बल, कृश (सं.क्षीणम्)

झीलण *नेमिछं. षडाबा.* स्नान, नहावण [दे.झिल्ल]

झीलवुं *अखाका. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(शा). नरका. नेमिछं. प्रेमाका. मदमो. ०वसंवि(ब्रा). हरिवि.* नहावुं (दे.झिल्ल)

झींझ *आरारा(व).* एक वनस्पति, झींझी, आसोंदरो

झींटी *नरका. प्रेमाका.* वळगी, वींटळाई, भराई

झींटाय *प्रेमाका.* भराय, [वळगे]

झुझ, झूझ *अभिऊ. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं. लावल. विक्रच. विराप. षडाबा.* युद्ध (सं.युध्य- परथी)

झुझकारवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* युद्ध माटे पडकारवुं

झुण, झुना, झूना **मोसाच. हरिख्या.* एक प्रकारनी साडी, [एक वस्त्रप्रकार]; *वीसरा.* मलमल, [बारीक कापड]

झुणि *ऐतिका.* ध्वनि

झुणि *प्राचीफा.* अवाज करे, [बोले] (सं. ध्वनि परथी)

झुणित *नरका.* झणझण एवो अवाज करतां [सं.ध्वनित]

झुंझारा *विक्ररा.* योद्धा; जुओ झूझार

झुंबख *ऋषिरा.* झूमखो (सं.युग्मक, प्रा. जुम्मय) [दे.झुंबक]

झुंबवुं *नरका.* झूमवुं, झूकवुं (दे.)

झूकड **प्रेमाका.* [मेदनी, समुदाय] [फा. झूक]

झूज्झ *नलरा.* युद्ध (सं.युध्य- परथी)

झूझ जुओ झुझ

झूझणि *विमप्र.* युद्ध करवा माटे

झूझार *गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्रेमाका. रूस्तस. विमप्र. विराप.* झूझनार, युद्ध करनार योद्धो (सं.युद्धकार); जुओ झुंझार

झूझारि *प्रबोप्र.* योद्धो

झूझाला **विमप्र.* [शूरवीर, बहादुर]

झूझि *कादं(शा.)* कंपे (सं.युध्यते)

झूना जुओ झुणा

झूबकडे *आरारा.* झूमखे [दे.झुंबक]

झूबक्कु *नलरा.* लूमखुं, झूमखुं, [दे.झुंबक]

झूमणुं *दशस्कं(१). नरका. प्राचीफा. प्रेमाका. लावल.* काननुं एक झूलतुं घरेणुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झूरइ *उपबा. ऋषिरा.* पस्तावो करे, खेद करे (दे.)

***झूलरइ [झूलरउ]** *जिनरा.* झूंड, समूह

झूंटइ *गुर्जरा.* एकाएक आक्रमण करे [आंचको मारी पकडे]; *नरका.* पडावे, आंचके

झूंटा जुओ झंटी

झूंना जुओ झुणा

झूंबइं *गुर्जरा.* लटके, लबडे, संघर्ष करे, सकंजामां ले, [माथे पडे, लपटमां ले]

झूंबखां *लावल.* झूमखां, समूह [दे.झुंबक]

झूंसर, झूंसरा *उपबा. प्रेमाका.* झूंसरी, धूंसरी

झेण *प्रेमाका.* झीणी धार, [झरमर]

झेर *कस्तुवा. वेताप.* झेवर, घरेणुं

झेली *दशस्कं(२).* हेली ?, [तरंग, धारा] [दे.झिल्ली]

झोट *वेताप.* चोट, झपट

झोटडी *विमप्र.* *[जुवान] भेंश

झोटावियु *अभिऊ.* झूंटाव्यो

झोटी (मोटीझोटी) **विमप्र.* [मामूली, तुच्छ] [हिं.]

झोडवायो *प्रेमाका.* भूतप्रेतनी अडफेटमां आवेलो, वळगाड पामेलो

झोल *विक्ररा.* खीण

झोलउ *ऐतिका.* झोळी, [थेलो]

झोटे *अखाका. नरका. प्रेमाका.* झूंटवे, पडावी ले

टकोल *चारफा. विमप्र.* मर्मोक्ति, मर्मप्रहार, टोळ, विनोद (सर.टक्कोर) *अंबरा.* [टोळ, मश्करीनो प्रसंग], तमासो

टग टग जोती *प्रेमाका.* आश्चर्यथी मूढ बनीने जोई रहेती, [टगरटगर जोती]

टचकउ *लावल.* टचको, [टचाको, टपाको] [दे.टच्चक]

टचांगुली *कृष्णबा. विमप्र.* टचली आंगळी

टबक *विमप्र.* नगारांनो अवाज

टबकइं *लावल.* टपके

टबामात्र **विक्ररा.* [टिप्पण – नोंध रूपे मात्र]

टमक *उषाह.* टमको, [टम एवो अवाज]

टमटमी *प्रेमाका.* आतुर थई

टमटमी रह्युं जुओ रह्युं टमटमी

टमंक *उषाह.* टमको, [टम एवो अवाज]

टळ *अखाछ.* टळे (नाश पामे) एवी [नश्वर] वस्तु, संसार

टलके, टळके *कादं(धु). नरका. प्रेमाका.* चलित थाय, [मोहित थाय]; *कादं(शा).* *आनंद पामे

टलक्कइ **गुर्जरा.* [कंपे, डगमगे]

टलटलइ *गुर्जरा. प्राचीसं.* **विराप.* धूजे, [डगेमगे]

टलती *विमप्र.* विनानी, [सिवाय]; जुओ टाली

टलबलीच *नेमिछं.* *टळवळया, [क्षुभित थया, वेरविखेर थया]

टलवलं *नलरा.* टळवळवुं (दे.टलवल)

टलहटी *उषाह.* तळेटी [दे.तलहट्टिया]

टलिअ *लावल.* टाळी, दूर करी

टलीउ *नेमिछं.* टळयो, [आघो रह्यो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टसर *उक्ति.* वणकरनो कांठलो (सं.तसर)

टहकय *तेरका.* टहुको (दे.*टहक्क)

टंक *प्रेमाका. वीसरा.* एक सिक्को (सं.) *प्रेमाका.* टांक, कलमनी अणी

टंकउ *अखाका. उक्ति. कामा(त्रि). कामा(शा). नलरा. पंचवा.* टंको, एक सिक्को – रूपियाना प्रकारनो (सं.टंक)

टंकाउलि *प्राचीफा.* एक प्रकारनो हार (सं. टंका+आवलि)

टंकिय *तेरका.* टांकेलुं, चिह्नित करेलुं (सं. टंकित)

टंपावइ *गुर्जरा. विराप.* कुदावे, [दोडावे] (प्रा.टप्पइ)

टंबक्क *प्राचीसं.* वाद्यविशेष (दे.तंबुक्क)

टाक *नलरा.* टक्क देश, सिन्धु अने बियास नदीओ वच्चेनो प्रदेश (सं.टक्क)

टाकर **अखाछ.* [टेकरो] [रा.टाकरौ]

टाकर *विक्रच. शीलक.* टपली, [प्रहार] (दे.टक्कर)

टाट *प्रेमाका.* शणनुं जाडुं कपडुं

टाटर *दशस्कं(१). प्रद्युचु. प्रेमाका.* गरदननुं रक्षण करतो धातुनो टोप

टाटुयां *प्रेमाका.* टायडां, [नाना हलकी जातना घोडा]

टार *उक्ति.* हलकी जातनो घोडो, टायडो घोडो (सं.) [दे.]

टालउ *नलरा.* टाळो, [जुदाई राखवी ते]

टालक *आनंस्त.* टाळनारो

टालणहार *उपबा.* टाळनार

टाला *चित्तसं.* भेद, जुदाई, वाडा

टाली, टाळी *उक्ति.* छोडीने, विना; *नरका. प्रेमाका.* सिवाय, विना; *लावल.* पसंद करीने, [चूंटीने]; जुओ टलती

टाहाडुं *प्रेमाका.* टाढुं, ठंडुं

टांक *अखाका. अखाछ. उक्ति. चतुचा. नरका. नरप(द).* नवटांकनुं वजनियुं, (ए उपरथी) थोडुंक, तलमात्र, सहेज पण (सं.टंकः)

टांकुलउ *उक्ति.* छीणी, टांकणुं (सं.टंकः)

टांडी *नलरा.* शोभायुक्त, सौभाग्ययुक्त (सं. तुण्डकम् परथी ?)

टांडो *प्रेमाका.* वणझारानी पोठ, [पोठनो मुकाम] (हिं.टांडा)

टिचांगली *प्राचीफा.* टचली आंगळी, सौथी नानी आंगळी

टिटुडी *प्रेमाका.* टिटोडी [सं.टिट्टिभ]

टिंट *प्राचीसं.* द्युतस्थान [दे.]

टिंटउ *प्राचीसं.* टेंटुं, निःसत्त्व, [निर्माल्य]

टीके *चतुचा.* बिन्दी, चांदलो ? [*(साज) सज]

टींको काढी *प्रेमाका.* तिलक करी

टीप **षडाबा.* [चूनानी पूरणी, थाबडी, टीपणी]; *वीसरा.* दबाववुं ते, [भींस, आलिंगन]

टीपारे *पंचवा.* जीवता साप पूरी राखवा वपरातो वांसनो करंडियो

टीबी *जिनरा.* टीकी, [टबकुं]

टीम *दशस्कं(१).* टींबो

टीलां **षडाबा.* [कपाळे टीलां]

टींसी *जिनरा.* नाकनी दांडी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टींटोहडी *उक्ति.* टिटोडी (सं.टिट्टिभः)

टींडूरी *आरारा(व).* टींडोरानो वेलो (सं. तुण्डीकेरी)

टुक *मदमो.* टुकडा

टूटी *प्रेमप.* तूटेलां, वांकां अंगवाळी कुब्जा

टूंक्डुं *दशस्कं(१).* टूंकुं

टूंटि *कृष्णच.* टांटियेथी

टूंटुउ *प्राचीसं.* ठूंठो [दे.टुंट]

टूंपावी *प्रेमाका.* चूंटावी, खेंचावी

टेक- **वीसरा.* [टेकववुं, टेको लेवो]

टेक *अखाछ.* कोई वस्तुने पकडी बेसवुं ते, जीद, अभिनिवेश, [नियम]

टेक मेळीने **प्रेमाका.* [प्रतिज्ञा – निश्चय करीने]

टेढा *प्रेमाका.* वांका

टेरो *चतुचा.* अंतरपट

टेव *आरारा.* अभिलाषा; *गुर्जरा.* *आदत, [*अभिलाषा]

टेहेलियो *प्रेमाका.* टहेलियो, सुभाषित बोली भिक्षा मागनार, [वारंवार बोली फरनार]

टोटम *आरारा(व).* महूडो (दे.टोलंब) ?

टोडर *अभिऊ. उषाह. *प्रेमाका. लावल. शृंगामं.* [डमरो], (डमरानी) [के अन्य] मंजरी, कलगी, छोगुं (दे.तोडर)

टोडे *लावल.* बारणाना टोडला पासे

टोडो *नरप(द).* [तोडो], पगनुं घरेणुं

टोप *नलरा. विक्ररा.* युद्धमां पहेरवानुं शिरस्त्राण (फा.)

टोयो *प्रेमाका.* पाकनुं रक्षण करवा खेतरमां पंखी उडाडनारो

टोल *गुर्जरा. नलरा.* मकान, घर

टोल *चित्तसं.* टोळुं, समुदाय

टोलइ थाय *आरारा.* टोळे वळे छे

टोलां *प्रेमप.* मकान, घर

टोह्वुं *सिंहा(म).* टोवुं, बूम पाडीने खेतरमांथी पक्षी उडाडवां

टोहण *तेरका. प्राचीसं.* टोयो करवो, हाकलो करी पक्षी उडाडवा (दे.टोह+अण)

टोहिआ *ऐतिरा.* चोकीदार, रक्षक

टोहो *दशस्कं(१).* टोयो, खेतरनां पंखी उडाडनारो

ट्ठिय जुओ भवणि ट्ठिय

ट्ठियउ *ऐतिका.* स्थित, रह्यो

ठउडवा *षष्टिप्र.* अपमान करवा माटे

ठकरालो *मदमो.* ठाकोर, [गामधणी]

ठकुराई *उपबा.* ठाकोरपणुं, [सत्ता ने वैभवनी मोटाई]

ठकुराला *जिनरा.* मोटाईना रोफवाळा

ठग *अखाका. अखाछ.* ठगाई, छेतरपिंडी

ठणक *नरका.* रणको, अवाज

ठणहारी *विमप्र.* पुस्तक के बीजो पदार्थ, जेमां गुरुनो संकेत करवामां आव्यो होय [सं.स्थापनाचार्य]; जुओ ठवणारी

ठपकावे *नरका.* ठपको आपे

ठबकु *उषाह.* ठपको, [दोष, कलंक]; **विमप्र.* [दोष] [रा.]

ठमकाळी *नरका.* ठमको – लटको करती

ठमठमती *नरका.* भपकावाळी

ठरावीक *चंद्रवा.* ठरावेल, [निश्चित, चोक्कस]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठवइ *अखाछ. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. देवरा. नलरा. प्राचीसं. *लावल. विमप्र. वीसरा. शीलक. शृंगामं. षडाबा. स्थूलिफा.* स्थापे, मूके, राखे, रहे (सं.स्थापयति, *स्थपयति)

ठवणादिक *ऐतिका.* स्थापनादि चार निक्षेप [प्रतिमा आदिमां देवनुं आरोपण]

ठवणारी *उक्तिर.* स्थापनाचार्य, जेमां आचार्यनो संकेत करवामां आव्यो होय एवी वस्तु [सं.स्थापनाचार्य]; जुओ ठणहारी

ठवणी *उक्तिर.* पुस्तक मूकवानी नानी घोडी (सं.स्थापनिका)

ठवणुछव (पय ठवणुछव) *ऐतिका.* पदस्थापनोत्सव

ठवल *प्राचीसं.* जुगारमां होडमां मूकवुं ते

ठविउ *ऐतिका.* स्थापित कर्युं

ठसकउ *वीसरा.* ठमको, लटको, नखरुं

ठठेर जुओ ठेर

ठहेराणे *अखाका.* स्थिर थये

ठंठार *वीसरा.* ठंडी

ठंठोळी *प्रेमाका.* मश्करी

ठंभीजइ *उक्तिर.* रोकाय, स्थिर थाय (सं. स्तभ्यते)

ठाइ, ठाई *आरारा. उक्तिर. तेरका. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा.) विमप्र. शृंगामं.* ठाम, स्थान, ठेकाणुं; स्थाने, ठेकाणे (सं.स्थाम)

ठाइ *देवरा.* स्थापी, [रची], -मां स्थिर थई

ठाउ *कृष्णच. गुर्जरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. रूपच. विक्रच.* स्थान, ठाम, जग्या (सं.स्थाम)

ठाकुर *उपवा. गुर्जरा. नलरा.* मालिक, अधिपति, राजा; *वीसरा.* मालिक, नाथ; *उषाह.* *महाराजा, [गामधणी] (सं. ठक्कुर)

ठागो *कामा(त्रि). कामा(शा). नरका.* कपट, ठगाई

ठाठ *नरका.* शोभा, भपको; **अखाका. अखाछ.* साज, [रचना, प्रपंच]; *चित्तसं.* वैभव, विस्तार, साज

ठाठमी *वेताप.* ठाठमय, ठाठवाळी

ठाण *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं.* स्थान, ठेकाणुं

ठाणउ *उक्तिर.* स्थानक

ठाणा *आरारा.* ठाणांग [स्थानांग] नामे जैन ग्रंथ

ठाणांग *उक्तिर.* स्थानाङ्ग नामे जैन शास्त्रग्रंथ

ठाम ढालूं जुओ ढालूं

ठाम फेडवो *प्रेमाका.* समूळगो नाश करवो; जुओ ठाय फेडी

ठाय *अभिऊ. ऋषिरा. नेमिछं. वसंवि(ब्रा). विक्रच. विमप्र.* स्थान, ठेकाणुं, जग्या

ठाय फेडी *विमप्र.* मारी नाखी; जुओ ठाम फेडवो

ठार *चतुचा. देवरा. नलाख्या. प्रेमाका.* ठेकाणुं, जग्या (*सं.स्तार); *चित्तसं.* स्थान, स्थिति, अवकाश

ठारण *प्रेमाका.* शांति, दिलासो

ठारणघाट *प्रेमप.* विसामो

ठारणहार *ऋषिरा.* ठरनार, [शांति पमाडनार]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठारवण *शृंगामं.* [ठारवुं ते; ठारनार], आश्वासनस्थान
ठार्य बेसशे *चित्तसं.* ठेकाणे आवशे, समाधान थशे
ठाव *प्राचीसं.* स्थान, ठाम
ठाव- *नलरा.* मुकाम करवो (सं.स्थापयति)
ठावउ **जिनरा.* [मुख्य, अग्रणी] [रा.]
ठाह *आरारा. नलरा. नेमिछं.* स्थान, ठाम (सं.स्थामन्)
ठाहउ *षडाबा.* नीचे बेठेलो कचरो, रगडो
ठाहारि **ऋषिरा.* [स्थळे]
ठाहि *अभिऊ. उषाह. विमप्र.* ठेकाणुं, स्थान (दे.थाह)
ठां, ठांइ *अभिऊ. वीसरा.* स्थान, स्थाने, त्यां (सं.स्थामन्)
ठांणई *ऋषिरा.* स्थाने, ठेकाणे
ठांमेली (उठां मेली) **नेमिछं.* [दृष्टांतो जोडीने]
ठांह *वीसरा.* स्थान (सं.स्थामन्)
ठिय *तेरका.* थयुं (सं.स्थित)
ठींठोळी *प्रेमाका.* मश्करी
ठूंबर *नरका.* जारनुं भरडकुं
ठेऊइ *विमप्र.* ठेबेथी
ठेक्वुं *प्रद्युचु.* लाठीनो आधार लेवो, [लाकडीनो टेको लेवो] [हिं.ठेकना]
ठेठ *अखाछ.* अंत, मुकाम, [अंतिम मंजिल]
ठेठु *सिंहा(शा).* चोरनो मळतियो, वाटपाडु
ठेबरुं *उषाह.* चीबुं
***ठेर [*ठठेर]** *मदमो.* (=ठार ?) सुतार, [धातुना वासण बनावनार कारीगर, वसवायो] [हिं.ठठेरा]
ठेराव *अखाछ.* निश्चय
ठेरावुं *अखाछ.* नक्की थवुं
ठेरावुं *अखाछ.* निश्चय करवो, नक्की करवुं
ठेलइ *आनंस्त.* हीणा करे, [हीणा पाडे]
ठेस्या *दश्स्कं(२). प्रेमाका.* पगनी ठेस – ठोकर मारी, ठेल्या
ठेहेराव्या *अखाका. चित्तसं.* ठराव्या, नक्की कर्या
ठोठ *प्रेमाका.* थप्पड, लपडाक
ठोठि *हरिवि.* ?, [आग्रह]
ठोर *अखाका. नरका. मदमो. सिंहा(शा).* स्थान, जग्या, ठेकाणुं
***ठोवुं [ढोवुं]** **विमप्र.* [मांगलिक प्रसंगे धरवामां आवती वस्तु, भेट] [हिं.]

डउंब *विराप.* चांडाल (दे.डुंब)
डकावइ *वीसरा.* कुदावे [रा.]
डगर **नरका.* [मार्ग, रस्तो]
डगां *प्रेमाका.* डगलां
डटियो *प्रेमाका.* दाट्यो
डबोल- *प्राचीसं.* झबकोळवुं
डमकीअल *विमप्र.* डमक्या, डमडम अवाज थयो; जुओ ढमकीअल
डमडोलइ *ऐतिका.* चंचल बने
डमर *ऐतिका.* उपद्रव [सं.]; जुओ डंबर
डरपांणी *ऋषिरा.* डरी गई
डली *षष्टिप्र.* लचको (दे.)
डसकां *अखाका.* डूसकां
डसण *उषाह. प्राचीफा.* दांत (सं.दशन)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डसण-डंक *नरका.* दांतना डंख (सं.दशन-दंश) [दि.डंक]

डसिवा *उपबा.* डसवा (सं.दश्)

डहइकइं *हरिवि.* डहेके, डचकां खाय

डहर *उक्तिर.* पाणी भराई रहेतुं होय एवी भूमि, खाबोचियुं (सं.दहरः)

डहरउ *उक्तिर.* बच्चुं (सं.दहरः)

डहेकाय *अखाका.* छेतराय, भ्रममां पडे; जुओ डेहेकाणा

डहोळाई *प्रेमाका.* खूब चोळाई

डंक *नरका. मदमो. वीसरा. षडाबा.* डंख [दि.]

डंक *प्रेमाका.* डंका

डंकणु *अभिऊ.* डंख (सं.दश् परथी) [दि.डंक]

डंके *अखाका. अभिऊ.* डंखे, दंश दे

डंगुरउ *प्राचीसं.* डंगोरो, [ढंढेरो]

डंड *उषाह.* मेरुदंड (सं.दंड)

डंड्डु *शृंगामं.* दंड, शिक्षा

डंडवृत्त *सिंहा(शा).* दंडवत् (प्रणाम)

डंडव्रत *मदमो. वेताप.* दंडवत् (प्रणाम)

डंडेरो *चंद्रवा. वेताप.* ढंढेरो

डंडो *आरारा.* दंड (भरवानो – करियावर रूपे)

डंभ ०*उषाह.* बाळक (सं.डिम्भ)

डंबर, डंमर *अभिऊ.* धूळनी आंधी (सं.); *चंद्रवा.* आडंबर, [फटाटोप, विस्तार]; *शृंगामं.* आडंबर, बाह्य भपको, [दिखाव]; जुओ डमर, डामर

डंश *दशस्कं(१).* मननो डंख [सं.दंश]

डंस *आरारा. ऋषिरा.* दंश

डाक *प्रेमाका.* एक प्रकारनुं चर्मवाद्य, डाकलुं

डाकडमाल **आरारा. ऐतिका. विमप्र.* धमाल, आडंबर, [ठाठमाठ, तमासा]

डाकर *उक्तिर.* गर्जना, जोशीलो अवाज (सं.डाल्कार)

डाढि *कादं(शा).* डाढमां, [दाढमां] (सं.दंष्ट्रा)

डाभ *आरारा. उक्तिर. ऋषिरा.* दर्भ, एक प्रकारनुं घास

डाभडो *मदमो.* दाबडो

डाभा *मदमो. रूस्तस.* डाबा

डामर *गुर्जरा.* शोभा, ठाठमाठ (सं.डम्बर); जुओ डंबर

डारइ *गुर्जरा.* डरावे, [पाछा पाडे]; *विमप्र.* डरावे

डारइ **गुर्जरा.* [चीरे] [हिं.दारना]

डालां *नरका.* पहोळा मोढाना टोपला

डालि *शृंगामं.* सूंडली, [टोपली]

डाव *देवरा.* दाभ, डाभ (सं.दर्भ)

डावउ *उक्तिर. जिनरा. लावल. विक्ररा. विमप्र. वीसरा.* डाबो [दि.]

डावडी *आरारा. वीसरा.* दीकरी, कन्या (रा.)

डाविय *गुर्जरा-टि.* डाबे

डाहउ *उपबा. गुर्जरा. वाग्भबा. विमप्र. षष्टिप्र.* डाह्यो (सं.दक्ष/दक्षिण)

डाहरो *मदमो. सिंहा(शा).* वधारे डाह्यो

डाहा *गुर्जरा.* डाह्या

डाहाकण *नंदब.* डाकण

डाहापण, डाहापणपणुं *नलरा.* डहापण (सं. दक्षत्वन)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डाहिम *आरारा. लावल. विमप्र.* डहापण
डाही *ऋषिरा.* डाबी तरफ
डाहीयार *विक्ररा. षष्टिप्र.* डाह्या (सं.दक्ष+कार)
डाहु *नलरा.* डाह्यो, समजु (सं.दक्ष)
डांग *आरारा(व).* डाग (दे.डाग) – एक भाजी ?
डांगरुं *रूपच.* ढंढेरो, [दांडी]
डांण *ऐतिका.* तेज, [गर्व, मान] [रा.]
डांभइ *उक्तिर. ऋषिरा.* डाम दे, दझाडे (सं.दभ्नाति)
डांलवइ (दादरडां लवइ) *प्राचीफा.* देडकां अवाज करे
डांश, डांस *उक्तिर. षडाबा.* मच्छर (सं.दंशः)
डांहगरडां *आरारा(व).* डांगर
डिगइ *आरारा. जिनरा.* डगे, विचलित थाय
डिंब *प्राचीसं.* विप्लव, [तोफान]
डीबु *शृंगामं.* डूमो; जुओ डींबउ
डीलरखी *आरारा.* शरीरने साचवनारी
डीलि *षष्टिप्र.* जात वडे (दे.डिल्ल)
डींगल *वेताप.* गपाटो, डिंग
डींबउ *उपबा.* डूमो; जुओ डीबु
डुडी *कामा(त्रि). ०कामा(शा).* दांडी, ढंढेरो; जुओ डुंडी फेरवी, डोडी
डुढ *विमप्र.* दोढ [सं.द्व्यर्ध]
डुढ *प्राचीका.* मजबूत (सं.दृढ)
डुलए *लावल.* डोले
डुहलपणउं **उपबा.* [लालसायुक्त होवुं ते, रागवशता] [सं.दोहद, प्रा.डोहल]
डुहलूं *नलरा.* कचरावाळुं, डहोळुं (प्रा.डोह)
डुहुलउं **उपबा.* [डोळुं, मेलुं]
डुंडी फेरवी *मदमो.* दांडी पिटावी; जुओ डुडी
डुंब *प्रद्युचु. प्राचीसं.* चांडाल (दे.)
डुंबाल **लावल.* [चांडाल, तुच्छ व्यक्ति]
डूंब *अंबरा. गुर्जरा.* अंत्यज
डेरो *नरका.* तोफानी ढोरने गळे बांधवामां आवतुं लाकडुं; पडाव, [पडाव माटेनी बिस्तर वगेरे सामग्री]
डेहरे *मदमो.* दहेरे [सं.देवगृह]
डेहली *उक्तिर.* डेली (सं.देहली)
डेहेकाणा *अखाछ.* ठगायेला
डोइलउ *उक्तिर.* डोयो, लाकडानी कडछी [दे.डोअ]
डोकर, डोकरउ *उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा.* वृद्ध, घरडो माणस [दे.डोक्कर]
डोकरपणि *ऐतिका.* वृद्धावस्थामां
डोकरि, डोकरी *गुर्जरा. पंचवा. प्राचीसं. विक्ररा. षडाबा.* वृद्धा, घरडी स्त्री (दे.डोक्करी)
डोझां *प्रेमाका.* बखोल
डोट *प्रेमाका.* दोट, दोड
डोटी *आरारा.* एक प्रकारनुं जाडुं वस्त्र; जुओ दोटी
डोड *नरका.* गुमान
डोडी *नलरा.* एक अलंकार, हाथे पहेरवानुं मादळियुं
डोडी *उक्तिर.* नानुं डूंडु; एक वनस्पति (सं.दोडी)
डोडी *कामा(त्रि).* दांडी, ढंढेरो; जुओ डुडी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डोलायउ *जिनरा.* डोलाव्यो

डोलिय **गुर्जरा.* [डोळी, पालखी] (सं. दोलिका)

डोळिया *अखाका.* बळद

डोली *नलरा.* झूलती झोळी, मांदा के अशक्तने उपाडीने लई जवानी मांची (सं.दोला)

डोहइ *अभिऊ. उषाह.* मिश्रण करे, डहोळे, [हलावे]; *प्राचीसं.* डहोळे, [क्षुब्ध करे]; *ऐतिका.* *ढोळे, [डहोळे]

डोहलउ *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा.* दोहद, गर्भवतीनी इच्छा; *उषाह.* इच्छा

ढक्क *गुर्जरा.* ढोल (सं.ढक्का); जुओ ढाक

ढक्कबुक्क *ऐतिका.* वाद्यविशेषो; जुओ ढाकबूक

ढक्कारविण *ऐतिका.* ढोलना अवाजथी

ढणकउ *अंबरा.* ऊंघनुं झोकुं

ढणहण *ऐतिका. प्राचीसं.* झरझर, ध्वनि-सूचक शब्द, [धसाराबंध]

ढमकीअल *विमप्र.* [ढमक्या], ढम ढम अवाज थयो; जुओ डमकीअल

ढल *उक्तिर.* लाकडुं (सं.दलिः)

ढळकणो *नरका.* ढळतो, नमतो, [नमन-शील]

ढळकतुं *नरका.* [ढळतुं], नम्र, [रीझतुं]

ढलावइ *लावल.* ढळावे, ढोळे

ढळियो *नरका. प्रेमाका.* रीझ्यो

ढसकडुं *प्रेमाका.* ढसडवानी – घसडवानी क्रिया, [लंबाववुं ते]

ढंढार **शृंगामं.* [हाडपिंजर] [रा.ढंढेर]

ढंढोलइ *उक्तिर.* खोळे, शोधे

ढंढोळी *नरका-२.* शोधी, [तपासी]

ढाउ *गुर्जरा.* तीव्र इच्छा, आग्रह (दे.ढाव)

ढाक *गुर्जरा. विराप.* ढोलक (सं.ढक्का); जुओ ढक्क

ढाकबूक *चारफा.* डंकानिशान (सं.ढक्का+ दे.बुक्क); जुओ ढक्कबुक्क

ढाडइ (पउढाडइ) **गुर्जरा.* [पोढाडे, सुवाडे]

ढाढसी **विक्ररा.* [आक्रंद करशे, रडशे] [हिं.ढाडना; रा.डाडणौ]

ढापला *प्रेमप.* वहालनी चेष्टाओ

ढाळ *अखाछ.* ढोळाव, रीत, [मार्ग]

ढाळ- *वीसरा.* नाखवुं

ढालूं (ठाम ढालूं) **प्रबोप्र.* [ठेकाणे पाडुं, नाश करुं]; जुओ ठाम फेडवो

ढांढणि *आरारा(व).* एक घास; कौंचानो वेलो (दे.ढंढणी)

ढांढी *जिनरा.* भमती, घूमती, [भ्रमित थती] [दे.ढंढल्लिअ]

ढिग *उपबा. षष्टिप्र.* ढग, ढगलो (दे.)

ढिगा **कृष्णच.* [*पासे, *रस्ताना किनारा] [रा.; हिं.]

ढिंक, ढींक *ऋषिरा. शृंगामं. षडाबा.* ढेंक बगलो, एक पक्षी (दे.ढंक) [सं.ढेंक]

ढीक *विमप्र.* हथेळीथी वागतुं वाद्य, [थापो, मुष्टिप्रहार – एक वाद्यरीति]

ढीक (रांकढीक) *ऐतिका.* गरीब[गुरबां]

ढीकडी *षडाबा.* ?, [मोढेथी अवाज करी कोईने बोलाववुं ते]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढीकली *हम्मीप्र.* पथ्थर फेंकवानुं यंत्र
ढीठ *कादं(शा).* धीट, निर्लज्ज (सं.धृष्ट)
ढीम **नरका.* [चोसलां]
ढीमां *प्रेमाका.* लोहीनुं जामी जवुं अने एथी आवता सोजा, [ढीमचां]
ढीलउ सनाह *विमप्र.* ढीलुं बख्तर
ढीलिणि *प्राचीफा.* दिल्हीनी रहेवासी स्त्री
ढीली *विमप्र.* दिल्ही
ढींक जुओ ढिंक
ढींकूओ *विक्ररा.* ढींकवो, खेतीने पाणी पावानी विशेष व्यवस्थानुं साधन, [कूवा-मांथी पाणी काढवानी व्यवस्था]
ढींबडुं *आरारा(व).* ढींबडो – एक भाजी
ढुकडी *प्राचीसं.* ढूंकवुं ते, नजीक आववुं ते
ढुलइ, ढुळइ *आरारा. वीसरा.* ढळे, ढोळाय
ढूकइ *जिनरा. नलरा. प्राचीसं. षडाबा.* नजीक जाय, पहोंचे
ढूक्या *प्रेमाका.* नजीक
ढूंकडाथा *शृंगामं.* ढूंकडां – नजीक होवा छतां (सं.ढौक्)
ढुंढणवडइ **षडाबा.* [खोळीने, बीजेथी मागी लावीने]
ढेइ *आरारा(व).* हिंग (रा.ढे) ? ढेकी, वरखली, कृष्णतमाल ?
ढेग *प्रेमाका.* ढग, ढगला
ढेढि **विमप्र.* [ढेड जेवी, हलकी स्त्री]
ढोइ *आरारा. प्राचीफा. शृंगामं.* लई जाय, धरे, भेट धरे, अर्पण करे (सं.ढौक्)
ढोइली *षडाबा.* लोटी
ढोकइ *उक्तिर.* धरे, पासे मूके (सं.ढौकयति)
ढोय- *प्राचीसं.* अर्पण करे [सं.ढौक्]
ढोल *लावल.* *ढोळाव, [ओप]
ढोली *आरारा.* नीचे नाखी, फेंकी
ढोळे *नरका. प्रेमाका.* गबडावे
ढोवुं जुओ ठोवुं
ढोस *उषाह.* [धोंस], हुमलो
ढोहि *उषाह.* धूए

ण *गुर्जरा.* न, नहीं
णटोल *आरारा.* निटोल, उद्दंड, घमंडी, बेशरम (रा.); जुओ निटोल
णत्थदंड *प्राचीसं.* अनर्थदण्ड, [निष्कारण हिंसा]
णाह *गुर्जरा.* नाथ, मालिक

त *आरारा. तेरका.* तो (सं.ततः); *आरारा.* तेथी (सं.ततः)
त *पंचवा.* त्यां
त- *तेरका.* ते (सं.तद्)
तइ, तइं *आरारा.* तारे; तुं; *उक्तिर. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा.* तें, ताराथी (सं.त्वया)
तउ, तऊ *षष्ठिप्र.* -थी, -मांथी; *उपबा.* तोपण; *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. वीसरा. षडाबा.* तो, तेथी (सं.ततः)
तउ *तेरका.* तुं (अप.तुहुं)
तउ तारुं (सं.तव)
तउ *उक्तिर.* ते (सं.तत्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तउणी *गुर्जरा.* कडाई, लोढी (सं.तपनी) [दे.तवणी]
तउहइ *उपबा.* तोपण [सं.ततः+हि]
तउं *उपबा. गुर्जरा. तेरका. षडाबा.* तुं (सं. त्वम्, अप.तुहुं)
तऊ जुओ तउ
तक, (तको) *उक्तिर.* ते [रा.]
तक *प्रेमाका.* *अभिलाषा, [टक, ताकी रहेवुं ते, एकीटश]
तकर *नरप(द).* छास (सं.तक्र)
तका *उक्तिर.* ते (स्त्रीलिंगमां) [रा.]
तकारि *आरारा(व).* अरणीनी एक जात (सं.तर्कारी)
तकीआ *अखेगी.* आश्रयस्थान, विसामो [फा.तकिया]
तको जुओ तक
तक्क *ऐतिका.* तर्क[विद्या]
तक्खण, तक्खणि *तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं.* तत्काळ, ते ज समये, त्यारे (सं.तत्क्षणे)
तक्रा *अखाछ.* तक्र, छाश
तक्षण *गुर्जरा.* ते वखते ज (सं.तत्क्षणम्)
तखणि *प्राचीसं.* त्यारे (सं.तत्क्षणे)
तखर *विमप्र.* [*विनाश, *बरबादी] [*अ. तख्रीब]
तगतागु *चारफा. प्राचीफा.* शोभा, सुन्दरता, [कांति, तेज]
तगन *अखाछ.* तज्ज्ञ, निष्णात
तगर *आरारा(व). ऋषिरा. प्रेमाका.* वृक्ष-विशेष (सं.)
तच्छाविय *प्राचीसं.* छोलवामां आवेलो (सं. तक्ष्)
तज्जय *प्रबोप्र.* छोडी दे (सं.तर्जय)
तज्ञ *अखाछ.* तज्ज्ञ, निष्णात
तटिनी *आनंस्त.* नदी [सं.]
तठइ *वीसरा.* त्यां (सं.त-+स्थामन्)
तड *तेरका.* ढोळाव ? (सं.तट), [चडाण, चडाव] [दे.तठ परथी]
तडइं *हम्मीप्र.* झूझे, लडे [सं.तड्]
तडकस *प्राचीफा.* तंग, [कसीने बांधेल]
तडक्क- *प्राचीफा.* चमकवुं (प्रा.)
तडतडुं *आरारा.* तडतड अवाज
तडतडवुं *लावल.* तडतड अवाज करवो; *प्रेमाका. [फाटफाट थवुं]
तडा *गुर्जरा.* तट, कांठा
तडाग *आरारा.* तळाव (सं.)
तडि *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* पासे, बाजुमां (सं.तटे)
तडिच्छड *प्राचीसं.* वीजळीनो चमकारो [सं. तडित्+छटा]
तडित *अखाका.* वीजळी (सं.तडित्)
तडिंग *ऋषिरा.* पखाली; जुओ तणंग
तडूकुं *प्राचीफा.* स्त्रीना काननुं आभूषण (सं.ताटंक ?)
तडोतड *प्रेमाका.* उपराउपरी
तणइ, तणि, तणी *आरारा.* ते, तेणे
तणय- *तेरका.* तणुं, -नुं (सं.तनय-)
तणंग *अखाछ.* पखाली; जुओ तडिंग
तणायता *आरारा.* तणाता
तणि, तणी जुओ तणइ
तणी *षडाबा.* [दोरीनुं बंधन] [हिं.तनी]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तनु *आरारा. तेरका. प्राचीसं.* तनु, शरीर
ततकाल *आरारा.* त्यारे, ते वखते
ततखण, ततखिण, ततखिणि, ततखण *आरारा. गुर्जरा. देवरा. नलरा. नलाख्या. प्रेमाकृ. वीसरा.* ते ज समये, तरत ज, थोडा वखतमां ज (सं.तत्क्षण)
ततखेव *अखाकृ. ऋषिरा. कामा(त्रि). दशरकं(१). नरका. नलाख्या. हरिख्या.* तत्काल, तरत ज (सं.तत्क्षिप्र)
ततक्षण जुओ ततखण
ततपर *चंद्रवा. मदमो. सिंह(शा).* तत्पर, तैयार
ततत्तउ *तेरका. प्राचीसं.* तेटलुं (सं.तद्+तुल्य)
ततार *हम्मीप्र.* तातार देशना (घोडा), उत्तम घोडानी एक जात
तति जुओ हंस-तति
तत्खेव *प्रेमाकृ.* तुरत ज [सं.तत्क्षिप्र]
तत्तवंतु *ऐतिका.* तत्त्वज्ञान, [तत्त्वना जाणकार]
तत्तुल्य *प्रेमाकृ.* तेना जेवो
तत्त्वाबोध *अखाछ.* तत्त्वबोध
तत्र *आरारा. ऐतिका. तेरका.* त्यां (सं.तत्र)
तत्सद *देवरा.* बराबर, सरखुं (सं.तद्वत्)
तत्संत *अखाकृ.* त्यार पछी, त्यारे
तनक *सिंह(शा).* साव नानुं
तनि *आरारा.* शरीरमांथी
तनु-हानि *शृंगामं.* शरीरनी हानि, नुकसान
तनैआ *मदमो.* तनया, [पुत्री]
तन्तुअउ *उक्तिर.* तन्तु, तांतणो
तपण *आरारा.* सूर्य, ताप (सं.तपन)
तपनतेज *प्रेमाका.* सूर्यनुं तेज
तपला *ऐतिका.* तपागच्छीय [जै.]
तपसंजम *उपबा.* तप अने संयम
तपसा *देवरा.* तपस्या
तपासी *प्रेमाका.* तपस्वी, [दीन, दयनीय]
तपी *वीसरा.* तपस्वी (सं.तपिन्)
तप्पइ *वीसरा.* तपे, [प्रकाशे]
तबक *कामा(त्रि). कामा(शा).* तासक [अ. तबाक्]
तबक *ऋषिरा.* गुच्छ (सं.स्तबक)
तम *चतुचा.* त्यम, तेम
तमक *उक्तिर.* आवेश, क्रोध (सं.)
तमके *चतुचा.* तमारी पासे; जुओ के
तमचर *अखाका.* अंधारामां (अज्ञानमां) फरनारा
तमरा *पंचवा.* तमारा
तमाल *आरारा(व). नरका.* एक वृक्ष (सं.)
तमाहि **वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* दुःख पामशे (सं.ताप्यसि)
तमी *गुर्जरा. विराप.* रात्रि (सं.)
तय *तेरका.* त्रय
तयणंतरु *ऐतिका. तेरका.* ते पछी (सं. तदनन्तरम्)
तयणु *ऐतिका.* ते पछी [सं.तदनु]
तर *तेरका.* तरु
तर *नंदब.* तरवा पडेलो, [तरनारो]
तरउ *आरारा.* तरु, वृक्ष
तरकस *प्रेमाका. मदमो. *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. वीसरा.* (तीर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरवानुं) भाथुं (फा.तर्कस)

तरजात *नरका.* हलकी (बदतर) जात

तरण *प्राचीका.* *तरुण, [तारनार]

तरण-तारण *देवरा.* होडीरूप बनीने तारनारुं

तरणागार *अखाका.* घासनो ढगलो, [*उकरडो] [सं.तृणागार]

तरणि *अखाका. ऐतिका. गुर्जरा. नरका.* सूर्य (सं.)

तरणि-तनया *नरका. प्रेमाका.* सूर्यनी पुत्री, यमुना नदी

तरणी *अखेगी.* सूर्य [सं.तरणि]

तरतर *गुर्जरा.* तडतड अवाज साथे

तरतीब *चंद्रवा. मदमो. वेताप. सिंहा(शा).* रीत; रीतभात; व्यवस्था; संभाळ; गोठवणीनी खूबी (अ.)

तरतीबतर *मदमो.* पूरेपूरी रीतभातवाळुं, [युक्तिपूर्ण]; पूरेपूरी व्यवस्था

तरतीबवंत *चंद्रवा. मदमो.* रीतवाळुं, पूरती रीतभातवाळुं, [कौशलपूर्ण]

तरफोडां *दशस्कं(१). प्रेमाका.* तरफडियां

तरभाणी *प्रेमाका.* संध्या वगेरे धर्मविधिमां वपराती तांबानी तासक – थाळी

तरलय *तेरका.* आछुं

तरवर *अभिऊ. आरारा.* वृक्ष (सं.तरुवर)

तरवरवुं *प्रेमाका. सिंहा(शा).* टोळे मळवुं, ऊभरावुं

तरवर्युं *दशस्कं(१).* तरवरियुं

तरवारि *आनंस्त.* तरवार

तरवुं *अखाछ.* धोळा रंगनी हळवी धातु, [टीन, कलाई]; जुओ तरूआं

तरसवुं *आनंस्त. प्रेमाका.* तलसवुं [सं.तृष्]

तरसालूआं *शृंगामं.* तरस्यां, तृषालु

तरंगिणी *अखाका.* नदी [सं.]

तरंड *ऐतिका.* नौका [सं.]

तरांश *प्रेमाका.* त्राजवां

तरि *षडाबा.* तर (सं.तरी)

तरियां तोरण *नरका. प्रेमाका.* पांदडां, जरीना तार के वरख अने कापडना टुकडा वपरायां होय तेवुं तोरण

तरियो *प्रेमाका.* त्रण दिवसे आवतो

तरिवा *नेमिछं.* तरवा

तरी *उक्तिर.* तर (सं.तरिका)

तरी *हम्मीप्र.* स्त्री

तरुअर *वसंफा.* वृक्ष [सं.तरुवर]

तरुआर, तरुआरि *चंद्रवा. नलरा. प्रबोप्र.* तरवार

तरुण, तरुणावंत, तृणावंत *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* तृणावर्त, [एक राक्षस]

तरुवर *गुर्जरा.* तरुवर, वृक्ष

तरूअर *आरारा. वसंवि. वरंवि(ब्रा).* तरुवर

तरूआं *उपबा.* *सीसुं, [कलाई, टीन] (सं. त्रपुक); जुओ तरवुं

तरूण *मदमो.* सूर्य (सं.तरणि, 'अरुण'ना सादृश्ये)

तरेरो *प्रेमाका.* आवेशभर्यो, क्रोधाविष्ट, [धुजारीवाळो] (अ.तर्रार)

तरेवो *अखाका. लावल.* तरवो

तरोवड *अखाछ.* सरखाई

तर्जइ *उक्तिर.* *षडाबा. धमकावे, बिवडावे, तिरस्कार करे (सं.तर्जति)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तर्प *दशस्कं(२).* तर्पीने, तृप्त करीने

तर्पत *प्रेमाका.* तृप्त

तल *प्रेमप.* लेशमात्र

तलखवुं *अखाका. दशस्कं(१). *प्रेमाका.* व्याकुळ थवुं; *प्रेमाका.* तलसवुं, झंखवुं

तलपे *प्रेमाका.* तराप के छलांग मारे, [हल्लो करे]

तलमल *दशस्कं(१). प्रेमाका.* टळवळता, व्याकुळ, तालावेलीभर्या [दे.तल्लोविल्लि]; जुओ तालावेली

तलवट *प्राचीसं.* तळेटी [दे.तलहट्टिया]

तलवाखुं *वेताप.* घसाराथी तळियांनुं आळुं थवुं

तळवां *प्रेमाका.* पगनां तळियां

तलहटी *उषाह.* तळेटी [दे.तलहट्टिया]

तलाउ *उक्तिर.* तळाव (सं.तटाकः)

तलाउलिय *प्राचीसं.* तळावडी (सं.तडाग-)

तलागु *उक्तिर.* तळाव (सं.तडाग)

तलार *अंबरा. उक्तिर. उषाह. ऋषिरा. चारफा. नलरा. विक्ररा. विमप्र. षडाबा.* नगररक्षक, कोटवाल (दे.तलवर)

तलारउं *लावल. प्राचीसं.* नगररक्षण, कोटवाळपणुं

तलावली *प्राचीफा.* नानुं तळाव, तळावडी (सं.तडाग)

तळावा *प्रेमाका.* गाडानी धरीने मजबूत टेकवी राखनार अने बेठकनी किनारीमां लगाडेल लाकडाना ककडा

तळासवुं, तलांसवुं, तळांसवुं *कादं(शा). कामा(शा). चतुचा. नरका. प्रेमाका. वीसरा.* (पग) दबाववा, चोळवा (सं. तलघर्ष्)

तलि (तलि कीध) जुओ क्षोणि तलि

तलिआं, तलीआ (तलिआं/तलीआ तोरण) *ऋषिरा. *गुर्जरा.* तोरणनो एक प्रकार; जुओ तलिया तोरण

तलिण *प्राचीसं.* बारीक [सं.तलिन]

तलिया तोरण, तलीआ तोरण, तलीया तोरण *आरारा. नलरा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). विक्ररा. विमप्र.* बारणे लटकाववानां खास प्रकारनां तोरण, पांदडां के फूल साथे कसबी तार, जरियान कापडना टुकडा के वरख वपराया होय तेवुं तोरण; जुओ तालीआ तोरण

तलीआ (त्तलीआ तोरण) जुओ तलिआं

तलीआ तोरण जुओ तलिया तोरण, तालीआ तोरण

तलीआं *उपबा.* [जोडा] [दे.तलिया]

तलीया (तलीया तोरण) *ऐतिका.* [एक प्रकारनां तोरण]; जुओ तलिया तोरण

तळुए *दशस्कं(१). प्रेमाका.* तळिये [सं. तल-]

तळुवां *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पगनां तळियां [सं.तल-]

तलेंटी *कस्तुवा.* तळे, नीचे

तल्लिच्छय *प्राचीसं.* इच्छुक (सं.तल्लिप्स)

तलो *अखाका.* [मुखी, अग्रणी] [दे.तल]; *अखाछ.* तळियुं ?, [*मोटाई, *गुरुता]

तव *आरारा. कादं(शा). गुर्जरा.* देवरा. *नलाख्या. वीसरा.* त्यारे (सं.ततः)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तव *ऐतिका.* तप

तव- *उषाह. सिंहा(म).* स्तुति करवी, स्तवन करवुं (सं.स्तव्)

तव- *वीसरा.* तपवुं

तवगच्छ *चारफा.* तपागच्छ नामनी जैन मुनिओनी एक शाखा के गण (सं.तपस् +गच्छ)

तवगणवर (तवगणवरकाननि) *चारफा.* तपागच्छ[रूपी उत्तम वनमां] (सं. तपस्+गण)

तवण, तवणु *तेरका. प्राचीफा.* सूर्य (सं. तपन)

तवन *अंबरा. आनंत.* स्तवन

तवन्न *उषाह.* स्तुति (सं.स्तवन)

तवसज्झाई *चारफा.* तपश्चर्या अने शास्त्राध्ययन वडे (सं.तपस्+स्वाध्याय)

तविल *अभिऊ.* एक प्रकारनुं मुखवाद्य

तस *वसंवि.* तेना (सं.तस्य); *देवरा.* तेने (सं.तस्य)

तस पटे *ऐतिका.* तेनी पाटे

तसिइं *आरारा.* त्यां, त्यारे

तसु *आरारा. तेरका. लावल.* तेनुं (सं. तस्य); *लावल.* तेने (सं.तस्य); *आरारा.* ते, तेथी

तसीआ, तसीया, तसैहा **रूस्तस.* [(घोडेसवारनी) हाजरी] [अ.तसहीहा]

तस्करइ *उक्तिर.* चोरी करे (सं.तस्करयति)

तस्यु *आरारा.* तेवो (सं.तादृशकम्)

तह *ऐतिका. तेरका.* तथा

तहति, तहत्ति *आरारा. ऐतिका. जिनरा.* तेम ज, बराबर (सं.तथा+इति)

तहवि *तेरका.* तोय (सं.तथापि)

तहाविह *जिनरा.* तथाविध, [ते प्रमाणे]

तहि *गुर्जरा. तेरका.* त्यां (सं.तस्मिन्)

तहियइ *उक्तिर.* त्यारे

तहिं *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* तेनां (सं.तस्याः)

तहिं *तेरका.* त्यां (सं.तस्मिन्)

तहींनो *प्रेमाका.* त्यारनो

तहींय *उक्तिर.* त्यारे [सं.उस्मिन्]

तहु *ऐतिका.* तेना

तहुणा साह *चारफा.* त्रिभुवन शाह, [एक श्रेष्ठीनुं नाम]

तं *उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. वाग्भवा.* ते (सं. तद्)

तंगोटी *उक्तिर.* नानो तंबू [रा.]

तंट *सिंहा(शा).* ?, [*मोटो अवाज] [दे. तंड]

तंत *अखाछ.* तंत्र; [शास्त्र; मूळ]; तांतणो; [खरेखर, खरी वात]; *अखाका. अखेगी. दशस्कं(१). नरका.* तंतु, तांतणो; *आरारा. चित्तसं.* खरी वात

तंत (मंततंत) *जिनरा.* तंत्र, [मंत्रतंत्र, जादुटोणा]

तंतवेणा *अखाका.* तंतुवीणा – एक वाजिंत्र

तंतु-ते *प्रेमप.* तंतु वडे

तंन *कामा(त्रि).* संतान, दीकरी, दीकरो (सं.तन)

तंन *कामा(त्रि). मदमो.* शरीर (सं.तनु)

तंनक *मदमो.* तनीक, जराक

तंबालू **वीसरा.* [जलपात्र] [दे.तंबालुय]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंबोल *ऋषिरा. नेमिछं. लावल. षडाबा.* खावानुं नागरवेलनुं पान (सं.तांबूल)

तंबोलरी थई *उक्तिर.* पानदानी (सं. ताम्बूलस्य स्थगी)

तंबोलिया *षडाबा.* नागरवेलना पानमां थतो एक कीडो

ता *चंद्रवा.* ते

ता *अखाछ.* ताप

ताइ *आरारा.* तात, पिता

ताइ *प्रबोप्र.* ते [ज]

ताई *नलरा.* वणकर

ताएलां *नरका-२.* तारां

ताक *अखाछ.* [ताकवुं ते, ध्यान राखवुं ते], लाग

ताकइ *आरारा. नेमिछं.* ताके, [लक्षित करे], विचारे (सं.तर्क्)

ताखणि *गुर्जरा. प्राचीसं.* त्यारे (सं.तत्क्षणे)

ताखिणि *प्राचीसं.* त्यारे (सं.तत्क्षणे)

ताग *अखाका.* पार; *अखाछ.* छेडो, [पार]

ताग काढवो *चित्तसं.* रस्तो काढवो, उपाय करवो

ताग (ताग लीजिये) *प्रेमाका.* छेडो, [पार लो, परीक्षा करो]

तागीर *रूस्तस.* बरतरफ, [सजा, दंड करवो] [अ.ताजीर]

ताग्य *ऐतिरा.* त्याग, दान

ताच *सिंहा(शा).* साथ आपनारी मंडळी [उ.ताश]

ताच *मदमो.* ताछ, शोभा, [ठाठ]; शोभतुं, [ठाठभर्युं]

ताचा **नरका. *नरप.* [तारा (उपर)]

ताछइ *उपबा. प्राचीसं.* कापे, छोले (सं. तक्षति)

ताजइ *आरारा.* ताजा, नवा

ताजइ *गुर्जरा. *विराप.* अवगणना करे, [उपहास करे, धमकी आपे] (सं. तर्जयति); जुओ ताजिउ

ताजण, ताजणउ **उपबा. *नंदब. पंचवा. वीसरा. वेताप.* चाबुक (फा.ताजियान)

ताजा *चारफा. प्राचीफा.* तुरत, [हमणां] (फा.ताजह्)

ताजिउ **गुर्जरा. *नेमिछं.* [धमकाव्यो, ठपको आप्यो] [सं.तर्ज्]; जुओ ताजइ

ताजिम *प्राचीफा.* मान आपवानी क्रिया, अदब, [कुर्निश] (अ.तअजीम)

ताजी *कर्पूमं. हम्मीप्र.* अरबी घोडो, उत्तम प्रकारनो घोडो (फा.)

ताज्य *मदमो.* त्याज्य

ताज्य करवाने *मदमो.* तजवा

ताठउ *उक्तिर.* त्रस्त, [त्रासेलो]

ताडइ *प्राचीफा. प्राचीसं.* प्रसारे, पहेरे [दि. तड्]

ताडइ *आरारा. उक्तिर. उपबा. षडाबा.* मारे, पीटे (सं.ताडयति)

ताडंक *प्राचीफा. शृंगामं.* काननुं आभूषण, कुंडळ (सं.ताटंक)

ताडीइ **नेमिछं.* [नाखवामां आवे छे] [दि. तड्]; जुओ ताडइ

ताडु, ताडो *प्रेमाका.* हठ, [आग्रह]; [*ताडूको]; *शृंगामं.* ताण, आग्रह

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताडो *चंद्रवा.* ततडाट, [खेंचाण]

ताढि *आरारा. उपबा.* टाढ (*सं.स्तब्धिः)

ताढुं *आरारा. लावल.* टाढुं

ताण *उक्ति.* त्यारे

ताणउ *आरारा.* खेंची लावो

ताणती *नरका.* तरफेण करती, [अनुराग बतावती]

ताणही *आरारा.* ताणे, आग्रह करे

तात *आरारा. चित्तसं.* **बाळक,** संतानने 'बापा' जेवुं संबोधन

तात *जिनरा.* निन्दा [दि.तत्ति]; जुओ तातडी, ताति, परताति

तातउं *उपबा. गुर्जरा. प्रेमाका.* गरम; *मदमो.* लालचोळ; तीक्ष्ण, धारदार; आकरुं, उग्र; *चंद्रवा.* तेज़ीलुं, तीखुं (सं.तप्त)

तातडी *प्राचीसं.* *चिन्ता, [निंदा]; जुओ तात

तातपरज *प्रेमप.* तात्पर्य

ताति **विमप्र.* [निंदा]; जुओ तात

ताथे *सिंहा(शा).* साचे (सं.तथ्य?)

तान *चंद्रवा.* रटण, रढ

तानें तान (तानें तान मिलइ) *आनंस्त.* तानथी तान [मळे], [संपूर्ण मेळ थाय]

तानो *प्रेमाका.* तान, लगनी, आतुरता

तापजो *प्रेमाका.* तप करजो

तपिस्यइ *आरारा.* तपावशे, बाळशे

ताएं *प्रेमाका.* तप करुं

तापेस *प्राचीका. प्रेमप.* तपस्वी (सं.तापस)

ताम *आरारा. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. देवरा. नलरा. नेमिछं. लावल. विक्ररा.* त्यारे, तो, एटले, पछी (सं. तावत्)

तामइ *आरारा.* त्यां

ताम-रस *शृंगामं.* कमल (सं.)

तामस *प्रेमाका.* तामसी, रोषवाळुं

ताय *आरारा. गुर्जरा. शृंगामं.* पिता, तात

ताय *आरारा.* ताप, संताप

तायक *नलरा.* एक देश, ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

तार *आरारा. *वसंफा(ल). वसंवि.* देदीप्यमान, उत्तम, मनोहर

तार *गुर्जरा. चित्तसं.* आकाशनो तारो (सं. तारकः)

तार आव्यां *अखाका.* योग्य के तैयार थयां, [उत्कर्ष पाम्यां, फळ्यां]

तारणउं *आनंस्त. षडाबा.* तारनार

तारण-तरण *देवरा.* तारनारी होडीरूप

तारतखानुं *सिंहा(शा).* पायखानुं, [शौचकूप] [अ.तहारतखाना]

तारा *प्रेमाका.* आंखनी कीकी [सं.]

तारायण *स्थूलिफा.* तारागण

तारु *अखाका.* तरनारा

तारुण *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* तारुण्य

तारुणी *नरका. मदमो. प्रेमाका.* तरुणी, युवान स्त्री

तारे *देवरा.* त्यारे, ते वखते

तारोतार *प्रेमाका.* छिन्नभिन्न, अस्तव्यस्त

ताल *उक्ति.* खाबोचियुं (सं.तल्लः)

ताल हरिख्या. काननुं घरेणुं (सं.) [प्रा. तालक; हिं.तार]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताल *शीलक.* ताळुं (सं.तालक)

ताल *आरारा.* समय, वेळा (रा.); जुओ इण ताल, तिणि ताल

ताल *आरारा(व).* ताडनुं वृक्ष (सं.)

ताल, ताळ *आरारा. नरका. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल.* एक प्रकारनुं वाद्य, करताल, कांसीजोड

ताल- *प्राचीसं.* ताळाथी बंध करवुं (सं. तालक परथी)

तालउ *उक्तिर.* ताळुं (सं.तालकम्)

तालक *शृंगामं.* ताडनुं झाड (सं.)

ताल-कांसी *प्रेमाका.* कांसानी धातुनुं बनावेल वाद्य, झांझ

तालपट, तालपट्ट, तालपुट *आरारा.* एक तीव्र विष

तालमेल *नेमिछं. प्रेमाका.* संगीतना ताल अने मेळ

ताला *लावल.* एक प्रकारनुं वाद्य, [ताळ]

तालाचर *नलरा.* *नृत्यनो व्यवसाय करनार एक जाति, [ताल वगाडनार] (सं. तालचर)

तालावेली *प्रबोप्र.* धालावेली, आतुरता, [व्याकुळता] [दे.तल्लोविल्ल]; जुओ तलमल, तालोवीली

तालिमखानुं *हम्मीप्र.* नृत्यशाला

तालिय *तेरका.* ताडित, [प्रहार पामेल]

***तालीआ तोरण (तलीआ तोरण)** *विमप्र.* बारणे लटकाववानां खास प्रकारनां तोरण; जुओ तलिया तोरण

ताळी पडशे *प्रेमाका.* मश्करी थशे, [फजेती थशे]

तालीय *वसंवि.* ताळी दईने, ताल साथे (सं.तालिका)

ताली लागवी *नरका. प्रेमाका.* लगनी लागवी

तालु *गुर्जरा.* ताळ, कांसीजोड

तालुयउ *उक्तिर.* ताळवुं (सं.तालुकम्)

तालोवीली *प्राचीफा.* व्याकुळता, (दे.तल्लो-विल्ल); जुओ तालावेली

ताव *तेरका.* त्यां सुधी (सं.तावत्)

ताव *गुर्जरा.* ताप

ताव(?) *वीसरा.* *चादर, [*कोई वस्त्र-प्रकार]

तावड, तावडउ *अंबरा. आरारा. जिनरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलरा. प्रेमाका. वीसरा. वेताप. सिंहा(शा).* ताप, तडको (सं.ताप+क)

तावडी *प्रेमाका.* नानो तावडो, कढाई, पेणी [सं.तापक]

तावी *षडाबा.* कढाई, पेणी (सं.तापक)

तावीने **नरका.* [कसीने, पारखीने]

तावोगल *अभिऊ.* *वैद्य

तास *आरारा. कृष्णच. चंद्रवा. तेरका. नेमिछं.* तेनुं (सं.तस्य); *आरारा. देवरा.* तेने (सं.तस्य); *आरारा.* ते

तास *प्रेमाका.* [रेशमी] कसबी कापड [फा.]

तास (तेणे तास) *कामा(शा).* *कलाक, [*ते स्थळे, *त्यां]

तासतु *प्राचीफा.* एक प्रकारनुं चकचकित

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रेशमी कापड (फा.ताफ्तह)

तासी **नरप.* [तेनाथी, तेणे]

तासु *नेमिछं. लावल. स्थूलिफा.* तेनुं (सं. तस्य)

ताहारा *अखाका.* त्यारे

ताहारि *नलाख्या.* त्यारे

ताहारे *चंद्रवा.* त्यारे

ताहि *आरारा. तेरका.* त्यां (सं.तस्मिन्); *वीसरा.* ते

तां *अखाछ. अभिउ. उक्तिर. उपबा. कादं(शा). नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* त्यां, त्यां सुधी, तो, एटलामां (सं.तावत्)

तांइ *उक्तिर. *कृष्णच.* [तो], तोपण

तांगणी *उक्तिर.* मळविसर्जन करवुं ते (*सं. तनुगमनिका)

तांडऊ *गुर्जरा.* माथुं (सं.तुण्डकम्)

तांणोतांणि *लावल.* ताणाताणी, खेंचाखेंची, वादविवाद

तांत *अखाछ.* तार, तांतणो [सं.तंतु]

तांतण *प्राचीसं.* तांतणो (सं.तंतु)

तांदुल *अखाका. नरका.* [छडेला] चोखा, [फोतरां काढी नाखतां रहेता अनाजना दाणा]

तांम *आरारा.* त्यारे

तां लगइ *उपबा.* त्यां सुधी; जुओ लग

तांह *नलाख्या.* त्यां (सं.तस्मात्)

तांहाकण *चतुचा.* त्यां, तो

तांहि *प्रबोप्र.* त्यां

ति *नलाख्या. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. विमप्र. षडाबा.* ते (सं.ते)

ति *अभिऊ. नलाख्या.* तें, तारा वडे (सं. त्वया)

तिइ, तिइं *कादं(शा). लावल.* तें [सं.त्वया]

तिउणउ *उक्तिर.* तमणुं (सं.त्रिगुणम्)

तिउली *प्राचीसं.* वाद्यविशेष; जुओ तिवलि

तिऊं *वीसरा.* तेम, तेवुं [प्रा.तेम्व]

तिके *आरारा.* तेने

तिग *जिनरा.* त्रण [सं.त्रिक]

तिज *प्राचीका.* तेज

तिजइ, तिजइं *उक्तिर. नलरा. वीसरा.* तजे, छोडी दे (सं.त्यजति)

तिजक *प्राचीका.* पशुपक्षी, तिर्यंच (सं. तिर्यक्)

तिजहि *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* छोडी दे (सं.त्यजति)

तिजीइ *गुर्जरा.* तजाय, छोडी देवाय (सं. त्यज्यते)

तिडकउ *उक्तिर.* तडको

तिडावे *ऐतिका.* बोलावे, आमंत्रित करे, [तेडावे]

तिडोत्तर सउ *उक्तिर.* एकसो त्रण (सं.त्र्युत्तरं शतम्)

तिण *देवरा. वीसरा.* ते (सं.तेन)

तिणइं *आनंस्त.* तेणे

तिणउ *तेरका.* तेनुं

तिणं *प्रबोप्र.* तेणे

तिणि *आरारा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. षडाबा.* ते, तेणे, तेनाथी (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेन); *आरारा.* तेमां; तेथी

तिणि तालइ *आरारा.* ते वेळा, त्यारे; जुओ ताल

तित्थ *ऐतिका. गुर्जरा. तेरका.* तीर्थ

तित्थयर *प्राचीफा.* तीर्थंकर

तित्थेसर *तेरका.* तीर्थेश्वर

तिथ *प्राचीसं.* त्यां ज (सं.तत्र)

तिथ *वीसरा.* तिथि

तिनि *गुर्जरा. विराप.* त्रणे (सं.त्रीणि)

तिन्नि *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं.* त्रणे (सं. त्रीणि)

तिबल *प्रबोप्र.* वाद्यविशेष; जुओ तिविल

तिम *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. षडाबा.* तेम (अप.तेम्व)

तिमइ *उक्तिर.* तरत ज

तिम जि *उपबा.* तेम ज

तिमर *गुर्जरा.* अंधकार (सं.तिमिर)

तिमि *उपबा.* तेम ज, ते ज रीते

तिय *ऐतिका.* त्रिया, स्त्री

तियस *ऐतिका.* त्रिदश, देव

तियाग जुओ प्राण-तियाग

तिरषा *अखाका.* तृषा, तरस

तिरसीयउ *आरारा.* तरस्यो [स.तृषित]

तिरिअ *प्राचीका. प्राचीफा.* पशुपक्षी वगेरे प्राणीओ (सं.तिर्यक्); जुओ तिरिय

तिरिछउ *उक्तिर. षडाबा.* तीरछुं (सं.तिरश्च)

तिरिय *आरारा.* मर्त्यलोक (सं.तिर्यक्); जुओ तिरिअ

तिरिस *आरारा.* तृषा, तरस

तिरी *वीसरा.* स्त्री

तिरेह *प्राचीफा.* त्रण रेखावाळो (सं.त्रिरेख)

तिर्यलोक *गुर्जरा.* तिर्यक्लोक, मृत्युलोक

तिल *अखाका. उक्तिर. प्रेमाका. षडाबा.* तल (सं.); *नलाख्या.* तलमात्र

तिलउ, तिलो *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीफा.* तिलक, टीलुं; जुओ सिरतिलौ

तिळउ **वीसरा.* [आंखनी कीकी] (सं. तिलक)

तिलकुशम *ऋषिरा.* तलना छोडनुं फूल (सं. तिलकुसुम)

तिलकुसुमोपम *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* तलना छोडना फूल जेवुं

तिलग *आरारा(व).* तिलकवृक्ष, रतावला

तिलतार *प्राचीसं.* स्नेह

तिल-तुस जुओ तुस

तिल-तुस-मित्त *शृंगामं.* तलना फोतरा जेटलुं, स्वल्प [सं.तिलतुषमित]

तिलय *तेरका.* तिलक

तिलवटि *षडाबा.* तलवट

तिलिमा *प्राचीसं.* वाद्यविशेष [दे.]

तिली *उक्तिर.* तिलक

तिलो जुओ तिलउ

तिवरारि *चारफा. प्राचीफा.* त्रिपुरारि, शंकर

तिवल *प्राचीफा.* पेट उपर पडती त्रण रेखा; जुओ त्रिवलि

तिवल *प्रद्युचु. प्राचीफा. लावल.* वाद्यविशेष, संभवतः ढोलक (अ.तब्ल के तब्लह्); जुओ तिविल, त्रिवली

तिवार, तिवारइ *आनंस्त. आरारा. ऐतिरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवरा. नरका. नलाख्या. लावल. त्यारे

तिवाहरइं *वाग्भवा.* त्यारे

तिविर *अभिऊ.* तीव्र, [कठोर]

तिविल *नेमिछं. विक्ररा.* एक वाद्य, संभवतः तबलुं, ढोल; जुओ तिवल

तिसइ *आरारा.* त्यारे, त्यां

तिसउ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा.* तेवुं (सं.तादृशकम्)

तिसर *देवरा.* त्रिसेरो, त्रण सेरवाळो (हार)

तिसंझ *ऐतिका.* त्रिसंध्या, [त्रण संध्याकाळ]

तिसिउ *नेमिछं.* तेवो

तिसेर *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

तिस्युं *आरारा.* तेवुं (सं.तादृशकम्)

तिह *आरारा.* त्यां

तिह *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* तेनो (तस्य)

तिहा किणइ *आरारा.* त्यां [सं.तस्मिन्+कर्णे]; जुओ कणि

तिहारइ, तिहारि *अभिऊ.* त्यारे

तिहां *अभिऊ. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. कादं(शा.) नलाख्या. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* त्यां (सं. तस्मात्/तस्मिन्)

तिहि *वीसरा.* ते(मां)

तिहुअण *ऐतिका. गुर्जरा. शृंगामं.* त्रिभुवन

तिहुयण *ऐतिका. जिनरा. तेरका. प्राचीसं.* त्रिभुवन, त्रण लोक

तिहूण *तेरका.* त्रिभुवन

तिहूयण *आरारा.* त्रिभुवन

तिह्वार, तिह्वारइ *आनंस्त. कादं(शा).* त्यारे, त्यार पछी

तिं *ऐतिरा.* तें

ती *आरारा.* तेना

ती *वसंफा. वसंवि.* ते (सं.ते)

तीखालि, तीखाली *नेमिछं. लावल.* तीक्ष्ण, अणीदार

तीडू *आरारा(व).* तिमिर वृक्ष (दे.तिरिड) ?

तीणइं *वसंवि.* ते(थी) (सं.तेन)

तीतर *प्रेमाका.* तेतर, एक जातनुं पक्षी

तीतिर *उक्तिर.* तेतर (सं.तित्तिरि)

तीथ *गुर्जरा. प्राचीसं.* तीर्थ

तीथंकर *गुर्जरा.* तीर्थंकर

तीने *ऋषिरा.* तेणीए

तीन्हउं *उक्तिर.* तीक्ष्ण

तीमइ *उक्तिर.* खाद्य पदार्थने उकाळीने प्रवाही रूप आपवुं, कढी करवी [दे. तिम्म]

तीमण *उक्तिर.* ओसामण, कढी [दे. तिम्मण]

तीमन *शृंगामं.* एक प्रवाही भोजन वानगी, ओसामण (दे.तिम्मण)

तीमर *चित्तसं.* तिमिर, अंधकार

तीयं *षडाबा.* ते

तीयारी *देवरा.* तैयारी

तीर, तीरइं, तीरि *अभिऊ. गुर्जरा.* नजीक, पासे; [*ते समये ज, *त्यां ज]

तीरइ *शृंगामं.* शके, [शक्तिमान थाय] (दे. तीरइ)

तीरइं, तीरि जुओ तीर

तीसि *नेमिछं.* ए, [एवा]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीहचु *वसंवि.* तेमनो

तीहं *वसंवि.* तेनां

तीहां *उपबा.* तेओ

तींछे *गुर्जरा.* त्यां, त्यारे (सं.*तत्था)

तींहं *षडबा.* तेओ (सं.तेषाम्)

तु *अभिऊ. उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वाग्भबा.* तो, वळी (सं.ततः)

तु *तेरका.* तुं ? (अप.तुहुं)

तु *उक्तिर.* ते

-तु *आरारा. गुर्जरा. नलरा. वाग्भबा.* -थी, -मांथी, करतां (सं.तः)

तुख *प्राचीका.* फोतरां (सं.तुष)

तुखार *कादंम(शा). प्रेमाका. वीसरा. हम्मीप्र.* तोखारिस्तानना घोडा, तोखार, घोडा

तुखारा *ऋषिरा.* तुखार देशनो वेगीलो घोडो, [घोडो]

तुट्ठ, तुट्ठउ *तेरका.* तुष्ट

तुठो *ऐतिरा.* संतुष्ट थयो [सं.तुष्ट]

तुडि *ऐतिरा. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. विक्ररा.* स्पर्धा, बराबरी, जोटो; जुओ तोडि

तुडि-वसिण *प्राचीसं.* अकस्मात्

तुडीय *देवरा.* (पगनो) तोडो, [एक आभूषण]

तुणि *नेमिछं.* झडपथी (सं.तूर्णम्)

तुत जुओ तुंत

तुबल *विरात.* तबलां (अ.तब्ल/तब्लह्)

तुमन *पंचवा.* तमने

तुम्ह *लावल.* तमारा; तने; *वीसरा.* तमे

तुम्हचु *जिनरा. नेमिछं.* तमारो

तुम्हारउ *आनंस्त. लावल. वीसरा.* तमारो

तुम्हासित *उक्तिर.* तमारा जेवो

तुम्हे *आनंस्त. उपबा. लावल. वीसरा.* तमे

तुम्हो *आनंस्त.* तमे

तुर *शृंगामं.* ?, [जलदी, उतावळ करीने] [सं.]

तुर *कादं(शा).* घोडो (सं.तुरग)

तुरक *गुर्जरा.* घोडो (सं.तुरग)

तुरजता *अखाका.* ऊंचाई (सं.तुर्यता)

तुरणी *प्राचीफा.* तरुणी

तुरयरी *विरात.* तूरी, एक वाद्य (सं.तूर्य)

तुररी *गुर्जरा.* रणशिंगानो एक प्रकार (सं. तूर्य)

तुरंग *प्राचीफा. हरिवि.* तरंग, लहेर

तुरंगम *नेमिछं.* घोडो [सं.]

तुरिउ *नलरा.* घोडो (सं.तुरग)

तुरिय, तुरिया *ऐतिरा. कृष्णच. गुर्जरा. जिनरा. विरात.* घोडाओ (सं.तुरग)

तुरिया *शृंगामं.* त्वरित

तुरी *कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. लावल. वीसरा.* घोडो (सं.तुरग)

तुरी *रूपच.* *वाजुं, *एक संगीतमय ध्वनि-वाळुं वाजिंत्र, [शरणाईना जेवुं वाद्य] [सं.तूरी]

तुरीय *प्रद्युचु. ललिरा. विमप्र.* घोडो

तुरीया *अखाका. नरका.* [जागृति, स्वप्न, सुषुप्तिथी उपरनी चोथी अवस्था], बधा भेद दूर थतां आत्मा अने परमात्मानी एकतानी व्यवस्था, [अखाजीनी दृष्टिए ब्रह्म तुरीयातीत]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरुणी *ऋषिरा.* तरुणी, युवती

तुर्यलोक **विराप.* [पृथ्वीलोक] (सं.तिर्यक्+ लोक)

तुलइ *गुर्जरा. विराप.* तोळी शकाय, समान थाय (सं.तुलयति)

तुळची *वीसरा.* तुलसीनो छोड

तुलडी *प्रद्युचु.* [तोलडी], दोणी, [नानी हांडली]

तुलाई *उक्तिर.* तळाई, गादलुं (सं.तूलिका)

तुल्ल *आरारा. तेरका.* तुल्य, -ने योग्य

तुल्लइ *नेमिछं.* *तुलनामां, [तोले, समान] (सं.तौल्यके)

तुष *अखाछ. नरका.* फोतरां [सं.]

तुस (तिलतुस) *जिनरा.* [तलना फोतरा जेटलुं], लेशमात्र, (जराय) [रा.]

तुसार *तेरका.* झाकळ (सं.तुषार)

तुह *नलाख्या.* तो (सं.ततः खलु)

तुह *तेरका.* तारुं (सं.तव)

तुहइ *उक्तिर. नेमिछं. लावल. विमप्र. शृंगामं.* तोपण (सं.ततः परथी)

तुहारइ *जिनरा.* तमारा

तुहि *कादं(शा).* तोपण, तोय (सं.ततः परथी)

तुहि *गुर्जरा.* तुं पण

तुहितउ **गुर्जरा.* [तो तो, तो पछी]

तुहीन *शृंगामं.* झाकळ (सं.)

तुहुने *प्रेमाका.* तने

तुहुंजि *गुर्जरा.* त्यारे ज, तो ज

तुह्मची *शृंगामं.* तमारी

तुह्मासित **विमप्र.* [तमारा जेवो]; जुओ तुम्हासित

तुंग *ऐतिरा.* मोटी [सं.]

तुंगत्तणि *ऐतिका.* ऊंचाई [सं.तुंगत्वन]

तुंगा *लावल.* उच्च, उत्तम प्रकारना, [मोटा]

तुंगी *ऐतिका.* रात्रि (सं.)

तुंठे *देवरा.* प्रसन्न थाय (सं.तुष्ट)

तुंत (तुत ?) *आरारा(व).* फळझाड शेतूर (फा.तूत; सं.तूद) ?

तुंब भड थाट *हम्मीप्र.* योद्धाओनी एवी ठठ के तुंबडुं मूक्युं होय तो भोंय पडे नहीं; जुओ थाट भड तुंब

तुंबर *लावल.* ए नामनो गंधर्व

तुंबर, तुंबरु *प्रेमाका.* तंबूर, एक तंतुवाद्य

तुंबरु *प्रेमाका.* ए नामनो एक गंधर्व

तुंबलि *देवरा.* माथुं (सं.तुम्ब)

तुंबीफल *कामा(त्रि). कामा(शा).* तुंबडुं [सं.]

तूटउ *आरारा.* तूट्यो, ओछो थयो

तूठइ *अभिऊ. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. शृंगामं. षडाबा.* तुष्ट थाय, प्रसन्न थाय

तूण जुओ पाडल-तूण

तूणि *विमप्र.* तारुं

तूणियउ *उक्तिर.* तूणेलुं – रफू करेलुं (सं. तुणितम्)

तूप *अखेगी. प्रेमाका.* घी [सं.]

तूर *अभीऊ. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(ध्व). गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्रेमाका.* एक वाद्य, शरणाई, रणशिंगु (सं.तूर्य)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तूर *अखाका.* रू [सं.तूल]

तूरि *ऐतिरा.* [बुद्धिना] चारे प्रकारे

तूरि *उक्तिर.* *षडाबा. एक प्रकारनी माटी; गोपीचंदन [दे.; हिं.तुवरिका]

तूली *उक्तिर.* पींछी (सं.तूलिः)

तूसइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. विक्रारा. षडाबा.* तुष्ट थाय, संतोष पामे, प्रसन्न थाय (सं.तुष्यति)

तूंअरि *उक्तिर.* एक धान्य, [*तुवरी – सरसवनी एक जात, *तुवेर] (सं.तुंबरी)

तूंछीइ *गुर्जरा.* तरस्यो थाय (सं.तृष्यति)

तूंबु *गुर्जरा.* तूंबडुं, एक वनस्पति (सं.तुम्ब, तुम्बक)

तूंहरइं *वाग्भबा.* तारे, तारी पासे

तृणकर्म *ऋषिरा.* तरणा समान हळवां कर्म

तृणवारि *षडाबा.* सावरणी (सं.)

तृणावंत जुओ तरुण

तृपति *आनंस्त.* तृप्ति

तृशूल *गुर्जरा.* त्रिशूल

तृस *षडाबा.* तरस (स.तृषा)

तृसिउ *षडाबा.* तरस्यो (सं.तृषित)

तृहु परि *उक्तिर.* त्रणे रीते

ते जुओ तंतु-ते

तेउ *लावल.* तेओ

तेउ *उपबा. गुर्जरा.* तेज, प्रकाश

तेऊकाय *आनंस्त.* तेजस्काय, अग्निकाय, अग्निरूप जीव

तेख *नरका. प्रेमाका. शृंगामं.* रोष, क्रोध; *विमप्र.* तीखाश, [उग्रता]

तेखतु *हरिवि.* खोटो गर्व करतो

तेग *मदमो.* कटार

तेगदार *ऐतिका.* तलवारवाळो

तेजग्गलि **विमप्र.* [तेजीला – तेजगतिए चालनारा अश्व उपर]

तेजपणुं *चित्तसं.* ताप

तेजिउं *उक्तिर.* उत्तेजित

तेजी *अभिऊ. नरका. प्रेमाका. वीसरा.* पाणीदार घोडो, घोडो [फा.तेझी/ताजी]

तेजे *चित्तसं.* तापने कारणे

तेण *चंद्रवा.* तेना वडे

तेतइ *आरारा.* त्यारे, तेटलामां, त्यां

तेतउ *आरारा. गुर्जरा. प्राचीसं.* तेटलुं (अप.तेत्तीउ)

तेतलउं *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलरा. षडाबा.* तेटलुं (अप. तेत्तुल) [सं.तद्+तुल्य]

तेतीवार *षडाबा.* तेटलामां, त्यारे

तेथि *आरारा.* त्यां

ते भणी *आनंस्त.* ते माटे; जुओ भणी

तेय *ऐतिका. जिनरा. प्राचीफा.* तेज

तेय **जिनरा.* [तैजस शरीर – जे गरमी अने पाचनशक्तिनुं कारण होय छे, आवुं शरीर प्राप्त करावनार नामकर्मभेद] [जै.]

तेरइ *उक्तिर.* तेर (सं.त्रयोदश)

तेरसि *उक्तिर.* तेरस (सं.त्रयोदशी)

तेरिमूं *गुर्जरा.* तेरमुं

तेलंगिया *प्रेमाका.* तैलंग देशना

तेवडवुं, त्रेवडवुं *दशस्कं(२).* त्रेवड करवी, गणवुं, [लेखवुं]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेवडेतेवडी *आरारा.* सरखेसरखी
तेवली *विमप्र.* वनस्पतिविशेष, [कंदविशेष]
तेसट्ठि *प्राचीसं.* तेसठ (सं.त्रिषष्टि)
तेह भणी *उपबा. *ऋषिरा.* [ते कारणे], तेथी; जुओ भणी
तेहव, तेहवइ, तेहवि *आरारा. नलाख्या.* त्यारे, ते समये
तेहविइ *आरारा.* तेथी, तेनाथी
तेहे *आरारा.* तेणे
तेहें *आनंस्त.* ते
तेंदी *आनंस्त.* त्रीन्द्रिय – स्पर्श, रसना अने घ्राण ए त्रण इंद्रियवाळा जीव
तेंद्रिय *उपबा.* त्रण इंद्रियवाळा जीव (सं.त्रय+ इंद्रिय)
तैब *पंचवा.* त्यारे (हिं.तब)
तो *आरारा. देवरा. पंचवा.* तारी (सं.तव)
तो *आरारा. देवरा. वीसरा.* तुं
तोइ *चित्तसं.* तोय, पाणी
तोखार *अभिऊ. दशस्कं(१). प्रद्युचु. प्रेमाका.* तोखारिस्तानना पाणीदार घोडा, घोडा
तोडा *प्रेमाका.* टोडला
तोडि *विक्ररा.* स्पर्धा; जुओ तुडि
तोडे *लावल.* बारणाना टोडला नजीक
तोतर *प्राचीसं.* एक देवी, तोतला देवी
तोतलु *प्राचीसं.* तोतळो
तोबर *विमप्र.* तोबरो, [घोडाने चंदी खवडाववानी चामडानी कोथळी] [फा. तोबरो]
तोमर *नरका. प्रेमाका.* भाला जेवुं एक शस्त्र [सं.]
तोय *प्रेमप.* पाणी
तोय *देवरा.* तने
तोयज *प्रेमाका.* कमळ [सं.]
तोर *आरारा.* वाद्यध्वनि (सं.तौर्य)
तोरडइ *शृंगामं.* तारे
तोरंग *दशस्कं(१).* तरंग
तोरां *कृष्णच.* तारां
तोरिय *वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* तारी
तोरी *चंद्रवा.* घोडी [सं.तुरग]
तोरीय *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* तारी
तोरो **नरका. नरप(द). प्रेमाका.* कलगी, छोगुं, [फेंटो] [अ.तुर्रा]
तोलओ **चारफा.* [तोळेलो, तुलनामां मुकाय एटलो, समान] (सं.तोलित)
तोलीआ *मदमो.* तोळनारा
तोळी *नरका.* तोली, सरखावी, [मूल्य आंकी]
तोले *चित्तसं.* तोळे, उडाडे
तोहि *आरारा.* तोपण
तोहि *आरारा.* तारा
तोहि ज *आनंस्त.* तो ज
तोहे, तोहें *आनंस्त.* तो; *अखाका. चित्तसं. प्रेमाका.* तोपण
त्ति *तेरका.* एम (सं.इति)
त्यक्तभूरि *आरारा.* घणो त्याग कर्यो होय एवा साधु (सं.)
त्यजन *आनंस्त.* त्याग
त्याग *कादं(ध्रु).* स्वाहा आदि बलिदान आपवाना बोल

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्याग माड्यो *पंचवा.* दान कर्युं, धर्मादा अन्नवस्त्र आप्यां, सदाव्रत मांड्युं

त्याज *नरका. प्रेमाका.* त्याज्य, तजेलुं

त्यारताइ *पंचवा.* त्यां सुधी

त्यांहांथुं *नरका.* त्यांथी

त्येम *चंद्रवा.* तेम, तेवी रीते

तइसठइ *विमप्र.* त्रेसठेय [सं.त्रिषष्टि]

त्रउअउ *उक्तिर.* सीसुं (सं.त्रपुक)

त्रठि *विक्ररा.* ज्यां त्रण रस्ता भेगा थता होय एवे स्थळे (सं.त्रिक)

त्रट *कृष्णबा. कामा(त्रि). दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्राचीका. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा).* तट, कांठो

त्रटकइ, त्रटकी *ऐतिका. देवरा. विमप्र.* तटाक दईने; जुओ त्राटक

त्रटके *गुर्जरा.* नखरांथी, [चमकधमक, तडक- भडकथी]

त्रठ *कामा(त्रि). चंद्रवा. नरप(द).* तट, किनारो

त्रदुके *रूस्तस.* तडूके

त्रण्णि *अंबरा.* त्रणेय [सं.त्रीणि]

त्रतालीस *उक्तिर.* तेंताळीस (सं.त्रिचत्वारिंशत्)

त्रपत *कस्तुवा. नरका. प्रेमाका.* तृप्त; *कामा(शा). चतुचा. नरका. प्रेमाका.* तृप्ति, संतोष

त्रपति *नरका.* तृप्ति

त्रभोइइ *कृष्णबा.* *तरभोये, *छजे, [त्रीजे माळे]; जुओ त्रिभोयुं

त्रम्बा *प्रबोप्र.* तांबुं (सं.ताम्र)

त्रय-यामा *कादं(शा).* रात्रि (सं.त्रियामा)

त्रवली *कादं(शा).* नाभि नजीकनी त्रण रेखा (सं.त्रिवली)

त्रवेली *विमप्र.* त्रण वार [सं.त्रि+वेला]

त्रस *अंबरा.* तरस [सं.तृषा]

त्रस (त्रस जीव) *आनंस्त. आरारा. प्राचीफा.* हलनचलनवाळां, एकेन्द्रिय सिवायनां जीवो ते त्रस जीवो [जै.]

त्रसई *विमप्र.* त्रिशती गणितपाटी (ग्रंथ)

त्रसको त्रोडियो *प्रेमाका.* निसासो नाख्यो

त्रसरी *प्राचीफा.* त्रण सेर – रेखावाळी

त्रसाडिया *षडाबा.* त्रास आप्यो (सं.त्रासयति)

त्रहकंति *चारफा.* लचकावती

त्रहत्रही *अखाका.* संपूर्ण, गाढ, [फाटुंफाटुं थई, गाढ थई]

त्रहेकता *प्रेमाका.* धसमसता, थनगनता

त्रंण *चित्तसं. मदमो.* तृण, सूकुं घास

त्रंबक, त्रंबक्क *अभिऊ. गुर्जरा. प्राचीसं.* एक वाद्य (दे.तंबक्क)

त्रंबाळु *प्रेमाका.* एक जातनुं [त्रांबानुं] नगारा जेवुं वाद्य

त्रंबासुत *शृंगामं.* गायनो पुत्र, वृषभ [दे. तंबा+सं.सुत]

त्रंवालु *सिंहा(शा).* त्रांबानो ढोल

त्राकडी *कादं(शा).* तकली [सं.तर्कुः]

त्राकडीवेलउ *उक्तिर.* त्राजवुं (*सं.तुलावेलक)

त्राकलउ *उक्तिर.* ताक, तकली (सं.तर्कुः)

त्रागउ, त्रागलउं *आरारा.* त्रागुं, मागणी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माटे आत्मघातनी तैयारी

त्राग *विक्रच.* तांतणो, [त्रागडो, दोरो] [दे. तग्ग]

त्राजवुं, त्राजुडुं *नरका.* छूंदणुं

त्राजूई *विमप्र.* त्राजवुं

त्राट *गुर्जरा.* त्रांस, थाळी

त्राट **नेमिछं.* [पडदो – वांसनी पट्टीओनो] [दे.तट्टी]; जुओ त्राटी

त्राटक **नेमिछं.* [तडाक दईने, एकदम]; जुओ त्रटकइ

त्राटी *नलरा. शृंगारं.* कामडा (वांसनी चीप)नी भींत के पडदो (दे.तट्टी=वाड, आवरण); जुओ त्राट

त्राटीहर *नलरा.* कामडानुं घर [दे.तट्टी+ सं.गृह]

त्राठउ *आरारा. उक्तिर. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. षडाबा.* त्रास पाम्यो, हेरान थयो, भयभीत थयो (सं.त्रस्त)

त्राडणी *अभिऊ.* त्राड पाडवी ते, भयथी अवाज करवो ते

त्राडवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ताडवुं, मारवुं; *नेमिछं.* त्राड पाडवी, मोटो अवाज करवो

त्राडूकइ *ऐतिका.* ताडूके, मोटे अवाजे बोले

त्राडूके *रूक्मस.* ताडूके

त्रापउ *उक्तिर.* तरापो [दे.तप्पक]

त्रापड *अखाछ.* तापडुं, [गूणपाट]

त्रापड्या *आरारा.* ढसडाया ? गभराया (सं.त्रप्) ?

त्रासइ *उक्तिर. गुर्जरा.* त्रास पामे (सं. त्रस्यति)

त्रासकडो **नरका.* [त्रास, परेशानी – प्रेम-भरेली]

त्रासवइ *उक्तिर. उपबा.* त्रास आपे, बिवडावे (सं.त्रासयति)

त्राहि *नलाख्या.* रक्षण कर (सं.)

त्राहु *वाग्भबा.* त्रस्त, दुःखी

त्राहे त्राहे *प्रेमाका.* बचावो बचावो, तोबा तोबा (सं.त्राहि त्राहि)

त्रिऊ *षडाबा.* त्रणनो समूह (सं.त्रिक)

त्रिकरण **ऐतिका.* [मन, वचन, काया ए त्रण करण]

त्रिकरणशुद्धि, त्रिकरणसुद्धि *ऋषिरा. नलरा.* मन, वचन अने काया ए त्रणे करणनी शुद्धि

त्रिकशां तोरण *विमप्र.* त्रण फळवाळां [त्रण प्रकारनां पान वगेरे गूंथेलां] तोरण

त्रिख *कृष्णबा.* तृषा

त्रिखलां तोरण *विमप्र.* *त्रण धारवाळां तोरण, [त्रण प्रकारनां पान वगेरे गूंथेलां तोरण]

त्रिखा *जिनरा.* तरस (सं.तृषा)

त्रिगडू *उक्तिर.* त्रिकटु, [एक औषध, सूंठ, मरी अने पीपरनुं मिश्रण]

त्रिगवि *गुर्जरा.* त्रण फळांवाळुं (बाण) [*सं. त्रि+गो]

त्रिगुणु *उक्तिर.* तमणुं (सं.त्रिगुणम्)

त्रिजंच *गुर्जरा.* नानां जीवडां (सं.तिर्यच्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिणउ *आरारा. उक्तिर.* तृण, तरणुं

त्रिणि *अभिऊ. उक्तिर.* त्रण, त्रण वडे [सं. त्रीणि]

त्रिण्णि *उपबा. गुर्जरा.* त्रण (सं.त्रीणि)

त्रिण्य *आनंस्त.* त्रण

त्रिण्ह *उक्तिर.* त्रण (सं.त्रीणि)

त्रिदिसि *आनंस्त.* त्रण दिशाए

त्रिन्नि *आरारा.* त्रण (सं.त्रीणि)

त्रिन्हि *षडाबा.* त्रण (सं.त्रीणि)

त्रिन्हिसइं *षडाबा.* त्रण सो

त्रिपउं *षडाबा.* कलाई, सीसुं (सं.त्रपु)

त्रिपणउ *उक्तिर.* जैन मुनिनुं पात्रविशेष, तरपणी (सं.तर्पणकम्) [दे.तप्पणग]; जुओ त्रेपणउं

त्रिपत *नरका.* तृप्त

त्रिपन *उक्तिर.* त्रेपन (सं.त्रिपंचाशत्)

त्रिप्त *ऋषिरा.* धरायेल (सं.तृप्त)

त्रिभंगी *ऋषिरा.* देहना त्रण मरोड (सं.)

त्रिभुवनचीतु *वसंवि(ब्रा).* त्रणे भुवननुं हृदय [– चित्त]

त्रिभुवनातिसायियां *षडाबा.* त्रणे जगतमां असाधारण (सं.त्रिभुवन+अतिशयिन्)

त्रिभोयुं *प्रेमाका.* त्रीजो माळ, मजलो; जुओ त्रभोइइ

त्रिमणइ *उक्तिर. उपबा.* तमणुं, त्रण गणुं (सं.त्रिगुण)

त्रिय *प्राचीफा.* स्त्री

त्रिया *अखाका. प्रेमाका.* स्त्री

त्रियाकांड *अखाका.* स्त्रीनुं प्रकरण, वृत्तांत, [प्रसंग]

त्रियामा *कादं(शा).* रात्रि (सं.)

त्रियोग **आनंस्त.* [(मननो) त्रण प्रकारनो योग – स्थिति]

त्रिवलि, त्रिवली *ऋषिरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* शरीरनी सुन्दरतासूचक पेट पर पडती त्रण वळी (सं.)

त्रिवली *ऐतिका.* वाद्यविशेष; जुओ तिवल

त्रिवायउ *उक्तिर.* [*चित्रक, *सिन्दूर, *हिंगळो] [सं.त्रिपाद]

त्रिवेलीयां *लावल.* त्रणे वेळाए

त्रिस *आरारा. वीसरा.* तरस (सं.तृषा)

त्रिसट्ठ, त्रिसठि *लावल. षडाबा.* त्रेसठ (सं.त्रिषष्टिः)

त्रिसिउ *गुर्जरा.* तरस्यो (सं.तृषित)

त्रिसियउ *आरारा. उक्तिर.* तरस्यो (सं.तृषित)

त्रिसेंथियां *प्रेमाका.* त्रण लटना सेंथानी गूंथणीमां पहेरवानुं एक घरेणुं – दामणी

त्रिह *जिनरा.* त्रण

त्रिहउं *गुर्जरा.* त्रण

त्रिहत्तरि *उक्तिर.* तोंतेर (सं.त्रिसप्ततिः)

त्रिहु, त्रिहुं *उपबा. तेरका. शृंगामं.* त्रणे (सं.त्रि+खलु)

त्रिहुं परि *उक्तिर.* त्रण रीते

त्री *वीसरा.* स्त्री

त्रीखउ *प्राचीसं.* तीक्ष्ण, [धारदार]

त्रीछि *अभिऊ.* तीरछे (सं.तिरश्चकम्)

त्रीठ *नरका.* पीडा, दुःख

त्रीय *आरारा.* स्त्री

त्रीया *वीसरा.* स्त्री

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रीहो *सिंहा(शा).* त्रणे

त्रुटवि *नेमिछं.* तूटी जईने

त्रुटी *उक्तिर.* [*कोई तहेवार] (सं.त्रिपुटी)

त्रुठो *कामा(त्रि).* प्रसन्न थयो [सं.तुष्ट]

त्रुह *कादं(ध्रु).* त्रण

त्रुहे *कादं(शा).* त्रण

त्रूट *अखाछ.* तोटो

त्रूटी *उपबा. देवरा.* तूटी [सं.त्रुटित]

त्रूठो *चंद्रवा. नरका. प्रेमाका.* तुष्ट थयो, प्रसन्न थयो

त्रेगति (त्रेगडि) *उक्तिर.* हाथीने पगे बांधवानी लाकडानी बेडी (सं. त्रिकाष्ठिका)

त्रेडउं *नेमिछं.* [आडुं]तेडुं, वांकुं (सं.तिर्यक्)

त्रेडवुं (त्रेडवी दृष्टि) **कृष्णबा.* [*नजर चुकावी, *नजर त्रेवडी – गोठवी]

त्रेपणउं **षडाबा.* [जैन मुनिनुं पात्रविशेष] (दे.तप्पणग); जुओ त्रिपणउ

त्रेपनमो *अखाछ.* शब्दातीत परमात्मा

त्रेलियुं *प्रेमाका.* तरीलुं, [खेंचनार वधारे पशु होय त्यारे] वाहनने वधारानुं नखातुं धूंसरुं

त्रेवड *आरारा. नरका. नेमिछं. प्रेमाका.* तेवड, शक्ति, पहोंच; *आरारा. प्रेमाका.* तजवीज, गोठवण

त्रेवडइ *आरारा.* संभाळ राखे; *जिनरा. प्रेमाका.* गणनामां – लेखामां ले, माने; जुओ तेवडवुं

त्रेवडी **विमप्र.* [शक्तिमान थई, जोगवाई करी]; *गुर्जरा.* *योग्य गोठवणीथी, [*गोठवे छे, *जोगवे छे]

त्रेसठि *उक्तिर.* त्रेसठ (सं.त्रिषष्टिः)

त्रेह **अखाका. *जिनरा. नलरा. शृंगामं.* भेज, भीनाश

त्रेहेके *प्रेमाका.* थनगने, [धसमसे]

त्रोटउ *जिनरा. देवरा.* तोटो

त्रोटउ *आरारा.* खूट्युं, गयुं [सं.त्रुटित]

त्रोटडी *लावल.* स्त्रीओना कानमां पहेरवानुं एक आभूषण [सं.त्रपुपुटिका]

त्रोटि **गुर्जरा.* [संख्याविशेष] [दे.तुडिय] [जै.]

त्रोटी *कृष्णबा. *नलरा.* काननुं एक घरेणुं [रा.]

त्रोडइ *गुर्जरा. देवरा. नलरा. नेमिछं.* तोडे (सं.त्रोटयति)

त्रोडियइं *षडाबा.* तोड्ये (सं.त्रुटति परथी)

त्रोडी **गुर्जरा.* [तोडीने]

त्रोहवीध *मदमो.* त्रिविध

त्रोहो *चंद्रवा.* त्रणे

त्र्याणू *उक्तिर.* त्राणु (सं.त्रिनवतिः)

त्हुमचउ *अंबरा.* तमारो

थई जुओ तंबोलरी थई

थईधर *नलरा.* राजानो तांबूलवाहक (सं. स्थगीधर)

थईयर *अंबरा.* राजाने तांबूल आपनारो (सं.स्थगीधर)

थईयातु *हम्मीप्र.* एक राज्यसेवक, [ताम्बूल-वाहक] (सं.स्थगीवत्)

थउ *गुर्जरा.* थयो (सं.स्थित)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थक- *वीसरा.* होवुं (सं.*स्थक्क्) [दे.थक्क]

थकउ *आनंस्त. आरारा. उपबा. चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. वसंफा(ल). वीसरा.* थईने, होईने, होतां, होवाथी; -थी, -मांथी (सं.*स्थक्क्) (दे.थक्क)

थके *चित्तसं.* थाके [सं.*स्थक्क्]

थक्क- *प्राचीसं. *शृंगामं.* होवुं, थवुं (प्रा. थक्क-, सं.स्थग्)

थटी *उषाह.* रहेठाण (सं.स्थिति) [दे.थत्ति]

थट्ट **जिनरा. प्राचीफा. प्राचीसं. *विमप्र.* ठठ, समुदाय [दे.]; जुओ थाट

थट्टि जुओ घट्टि

थडइ *षष्टिप्र.* थडा उपर, दुकानना अग्रभाग उपर (दे.थुड)

थडइ *उक्तिर.* झाडनुं थड [*दे.थुड]

थडि, थडी *जिनरा. *देवरा.* ऊभा रहेवुं ते

थडुं *कर्पूमं.* स्थान [दे.थुड]

थण *उक्तिर. उपबा. ऋषिरा.* स्तन

थणहर *कर्पूमं. प्राचीसं.* स्तन (सं.स्तनभर)

थपोली *प्रेमाका.* थेपली

थप्पिउ *गुर्जरा. तेरका.* स्थाप्युं, मूक्युं

थमणी *दशस्कं(१).* थापण [सं.स्थापनिका]; जुओ थवणी

थम्भ *प्रबोप्र.* थांभलो (सं.स्तम्भ)

थरके *नरका-२.* थरथरे

थरमा *नरका. प्रेमाका.* एक जातनुं कापड

थरहर *तेरका. प्राचीसं.* थरथर [दे.]

थरिहरि **विमप्र.* [थरथर] [दे.थरहर]

थल *नरका-२.* स्थळ

थलकमल *तेरका.* स्थलकमल, [जमीनमां ऊगतुं कमळ]

थलचर *गुर्जरा.* स्थलचर, जमीन परनां प्राणी

थलवट *ऐतिरा.* [निर्जल भूमि], रणप्रदेश

थलाश्रय *आरारा.* स्थलाश्रय, [गामनुं नाम]

थलि *आरारा. ऋषिरा.* स्थळमां, जमीनमां

थली *उक्तिर.* मरुस्थल, निर्जल प्रदेश [रा.] (सं.स्थली)

थवइ *उक्तिर.* होय, छे (सं.स्थगयति)

थवक्क *तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं.* झूमखुं, जथ्थो (सं.स्तबक)

थवणी *प्रेमाका.* थापण, [बीजाने त्यां मूकवामां आवेली वस्तु]; *गुर्जरा.* [थापण], स्मृति रूपे मूकेली वस्तु; जुओ थमणी, थाणुं

थवना *ऐतिरा.* स्तवना, स्तुति

थविर *आरारा.* स्थविर, साधु

थविसु *षडाबा.* स्तवीश

थंडिल ठाम *जिनरा.* शुद्ध भूमि.(सं.स्थंडिल)

थंदिल **उषाह.* [यज्ञनी वेदी] (सं.स्थंडिल)

थंभ *आरारा. गुर्जरा. तेरका. विक्ररा. षडाबा.* स्तंभ, थांभलो; *आरारा.* स्तंभ जेवी मजबूत

थंभण *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* थंभवुं ते, [टकी रहेवुं ते] (सं.स्तम्भन)

थंभाणा *जिनरा.* स्तब्ध – चकित थया; स्थिर थई गया [सं.स्तम्भ्]

थाइवा *उक्तिर.* थवा, स्थितिमां रहेवा

थाइ सिउं *उपबा.* कोई रीते, [गमे ते थाय]

थाकइ *उक्तिर.* स्थित थाय, स्थान करे, रहे [सं.*स्थक्क; दे.थक्क]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थाकइ *अंबरा.* बाकी [दे.थक्कय]

थाकउं *उक्तिर.* स्थित, रहेलुं

थाकतउ *उपबा. जिनरा. वाग्भबा. षडाबा. षष्टिप्र.* बाकीनुं, बचेलुं, [बाकी रहेलुं] (सं.*स्थक्कित) [दे.थक्कय]

थाकणे *ऐतिका.* अटकवुं ते, रोकाण

थाकि **गुर्जरा.* [थकी, वती] (सं.*स्थक्कित) [दे.थक्कय]

थाकिवा *उक्तिर.* स्थित थवा, रहेवा

थाकी *षष्टिप्र.* रही, [बाकी रही, अटकी, नष्ट थई] (सं.*स्थक्किता) [दे.थक्कय]

थाकीरीणी *आरारा.* थाकीपाकी (रा.); जुओ रीणउ

थाग *ऋषिरा. वीसरा.* ताग, तळियुं, ऊंडाण (सं.स्ताघ)

थाट *आरारा.* **गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. विक्ररा.* समुदाय, ठठ (दे.थट्ट); जुओ गजथाट, थट्ट

थाट भड तुंब *हम्मीप्र.* योद्धाओनी एवी ठठ के तुंबडुं मूक्युं होय तो भोंय पडे नहीं; जुओ तुं भड थाट

थाण *उपबा.* धावण (सं.स्तन्य)

थाण *आनंस्त. लावल.* स्थान

थाणुं **नरका.* [बहाना रूपे वस्तु] [सं. सत्यापन, प्रा.थावण]; जुओ थवणी

थाथरि *विमप्र.* थथरे, [बीए]

थान *प्रेमाका.* ताका

थान *अभिऊ.* स्तन

थान *आरारा. नलाख्या. षडाबा.* स्थान, ठेकाणुं

थान *उपबा.* दूध, धावण (सं.स्तन्य)

थानक *आरारा. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. रूपच. लावल. षडाबा.* स्थानक, स्थान, ठेकाणुं

थाप *आरारा.* स्थपावुं ते, रोकाईने रहेवुं ते; *अखाका. अखाछ. चतुचा. चित्तसं. *प्रेमाका.* स्थापना, ठराव, निर्णय

थाप *अखाछ.* भूलथाप

थाप *प्रेमाका.* थपाट, पंजानो प्रहार

थाप-उथाप *अखाका.* स्थापना अने खंडन

थापणि, थापिणि *प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(त्रि). वसंवि.* थापण, अनामत (सं.स्थापनिका)

थापणिमोसु *शृंगामं.* थापण ओळवी ते (सं. स्थापनिका+मोष)

थापन अध्यात्म *आनंस्त.* स्थापन अध्यात्म, [मूर्त पदार्थ – प्रतीकनो आश्रय करनार अध्यात्म]

थापना *ऐतिका.* स्थापना

थापिणि *नलाख्या.* थापण, न्यास; लावल. थापणमां, मालमिलकतमां; जुओ थापणि

थारउ *वीसरा.* तारुं [रा.]

थारणहार *चतुचा.* ठारणहार, ठारनार

थाळ *प्रेमाका.* देवने नैवेद्य धरावती वखते गवातुं गीत के पद

थाली **कामा(त्रि).* [*विषयो, *विषय विभागो] [सं.स्थल], [*समूह] [दे.]

थावर *आनंस्त. उपबा. शृंगामं.* स्थावर, जेने हलनचलन नथी तेवा एकेन्द्रिय जीवो

थाह *अखाका. प्रेमाका.* ताग, पार, छेडो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सं.स्ताघ]

थाहर **अंबरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं. *विक्ररा. षडाबा.* स्थान (सं.स्थावर) (दे.थाह); *लावल.* स्थिर, स्थावर, हलन-चलन वगरनुं

थाहरइ *उक्तिर.* होय, थाय, रहे, स्थान करे

थाहरावी *षडाबा.* रोकी (सं.स्थावर परथी)

थाहरी *गुर्जरा. षडाबा.* तारी [रा.]

-थां *प्राचीका.* पंचमीनो प्रत्यय, -थी, -मांथी; जुओ अे-थां

थांण *वीसरा.* मंदिर, देवस्थान [सं.स्थान]

थांन *वेताप.* स्तन्य, दूध

थांपणि *उक्तिर. उपबा. षडाबा.* थापण (सं.स्थापनिका)

थांभ *आरारा. विक्ररा.* थांभलो [सं.स्तम्भ]

थांभइ *उक्तिर.* स्थिर करे, स्तब्ध करे (सं. स्तभ्नाति)

थांभउ *उक्तिर. उपबा. नलरा.* थांभलो (सं. स्तम्भः)

थिउ *अभिऊ. गुर्जरा. लावल. विराप.* थयुं (सं.स्थित); *नेमिछं.* -थी (सं.स्थित)

थिकउ *गुर्जरा. *वसंफा(ल). *वसंवि. षडाबा.* थतां, रहेतां, थईने, रहीने (सं.स्था परथी) [दे.थक्क]

थिकउ *अभिऊ. उपबा. नेमिछं. लावल. शृंगामं. षष्टिप्र.* -थी, -थकी, वडे, -मांथी (दे.थक्कअ) (सं.*स्थक्कित)

थिति *आनंस्त. आरारा.* स्थिति, नियम, रूढि

थिनिगिनी *लावल.* थनगनी

थिपि *देवरा.* स्थापी, थापी

थिय *वसंवि.* रहेनार (सं.स्थित); *तेरका.* थयुं (सं.स्थित)

थिर *आनंस्त. आरारा. तेरका. लावल. षडाबा.* स्थिर

थिरत *आनंस्त.* स्थिरता

थिरता *लावल.* स्थिरता

थिवर *ऐतिका. जिनरा.* स्थविर, वृद्ध साधु

थी *आरारा.* हती

थीअह जुओ धीअह

थीआं *नलाख्या.* *-थी, [-मां रहेलां] (सं. स्थित)

थीणधी *जिनरा.* [एक प्रकारनी] निद्रा [जेमां दिवसे चिंतवेलुं काम रात्रे थई जाय] [सं.स्त्यानगृद्धि] [जै.]

थीर *अखाका.* स्थिर

थीरथावर *चंद्रवा.* स्थिरस्थावर, [दृढ, अचल, नित्य]

थीवलि *प्राचीफा.* पेट उपर पडती त्रण रेखा (सं.त्रिवलि)

थुइ *ऐतिका. षष्टिप्र.* स्तुति

थुड *उक्तिर. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). हरिवि.* थड (दे.)

थुण- *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीफा. प्राचीसं.* स्तुति करवी, स्तवन करवुं (सं.स्तुनोति)

थुणवि *ऐतिका.* स्तुति करी

थुणस्सामि *ऐतिका.* स्तुति करीश

थुणहि *ऐतिका.* स्तुति करे छे

थुति *आनंस्त.* स्तुति

थुहर *वेताप.* थुवेर, [थोर] [दे.थोहर]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-थुं *गुर्जरा.* -थी

थुंभ *ऐतिका.* स्तूप, [स्मृति-स्तंभ]

थूणी *उक्तिर.* थांभली – ज्यां वलोवचा माटेनी राश बांधवामां आवे छे (सं. स्थूणी)

थूथउ *उक्तिर.* [*कचरो, *रूंछुं] (सं.तुच्छम्)

थूप *विक्ररा.* स्तूप, [स्मृति-स्तम्भ]

थूभ *उक्तिर. ऐतिका.* स्तूप, [स्मृति-स्तम्भ]

थूंकविउं *उपबा.* थूंकवुं (सं.थुक्कृ)

थे *चतुचा.* थये

थे *वीसरा.* तमे [रा.]

थेग *आरारा(व).* थेगी, एक भाजी के कंद (दे.)

थेट *आरारा.* छेक (रा.)

-थो *प्राचीका.* पंचमीनो प्रत्यय, [-थी, -मांथी]; जुओ अेम-थो

थो *पंचवा.* हतो

थोक *आरारा.* *ऐतिका. वैभव [रा.]; *ऋषिरा. नरका. प्रेमाका.* थोकडो, समूह; *विमप्र.* थोकेथोक, खूब [सं.स्तबक] [दे.थवक्क]

थोडिलउ *प्राचीसं.* थोडुं (सं.स्तोकम्)

थोथुं *आनंस्त.* पोलुं, बोखुं; *नरका.* [फोफुं], फोतरुं, [पोलो सडेलो दाणो] [सं.तूस्त]

थोभ *आरारा.* प्रशंसा (सं.स्तोभ); *नलाख्या. लावल.* थोभवुं ए, स्थिति (सं.स्तोभ); *विमप्र.* अटकायत, [रुकावट]

थोभण *प्रेमाका.* टेको

थोभवांदणां *षडाबा.* वंदननो एक प्रकार, [जेमां मात्र हाथ जोडवामां आवता होय तेवो वंदननो लघु प्रकार] [जै.]

थोर *उषाह.* गोळ, [सुडोळ]; *तेरका.* स्थूल (सं.स्थौर) (दे.)

थोरो *नरप(द).* ढंग, रीत

थोल *उषाह.* थोडुं (सं.स्तोक)

थोहर *आरारा(व).* थोर (दे.)

थोहरी *ललिरा.* ए नामनी पछात कोमनो पुरुष

दइडा *उपबा.* दडा (*सं.दृतिः)

दई *वीसरा.* दैव (*सं.दैविय-)

दउड सउ *षडाबा.* दोढसो (सं.द्व्यर्ध+शत)

दउढ *उक्तिर.* दोढ (सं.द्व्यर्धः)

दक्ख *प्राचीफा.* दुःख

दक्खिण *उक्तिर.* दक्षिण दिशा

दक्षण *नलरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* दक्षिण दिशा(नुं); **गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. लावल.* जमणुं (सं.दक्षिण); *गुर्जरा.* होशियार, चतुर; जुओ आदक्षण

दक्षणा *लावल.* दक्षिणा, दान

दक्षणावंत *मदमो.* दक्षिणावर्त, [जमणी बाजु वळतुं]

दक्षणावंत *अखाछ.* दक्षिण (जमणी) बाजु वळेल, [शंखनो एक विशिष्ट प्रकार]

दक्षिण *लावल.* जमणुं

दक्षिणावरतिइं *ऐतिरा.* दक्षिणावर्त, जमणा वळवाळा

दक्षीणावंत *मदमो.* दांक्षणावर्त (शंख)

दख *नेमिछं.* दुःख

दखणावंत *नंदब.* दक्षिणावर्त

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दखणी ०*नंदब.* दुखणी

दखी *गुर्जरा.* देखी (सं.दृक्ष्)

दख्यण *लावल.* जमणो [सं.दक्षिण]; *चित्तसं.* जमणो; साचो, योग्य

दग-रय *प्राचीसं.* जल-कण (सं.उदक-रजस्)

दट्टूण *ऐतिका.* जोईने

दडकरमणु *षडाबा.* दडा साथे रमवुं ते

दडवडी *गुर्जरा.* एक प्रकारनुं ढोलक; जुओ दडवडी, दुडुदुडी

दडबडाइउ *उक्तिर.* दडवड्यो, दोड्यो [दे. दडवड]

***दडवडी [*दडदडी]** **चारफा.* [*एक वाद्य]

दडवडु *प्राचीसं.* शीघ्रताथी [दे.]; जुओ दुडवडी

दड्ढीय, दढी *गुर्जरा.* बळीने, दाझीने (सं.*दग्धित)

दणयरू *ऐतिरा.* दिनकर, सूर्य

ददामा, ददांमा *अभिऊ. ऐतिरा. कामा(शा). नरका. नंदब. ललिरा.* नगारुं [फा. दमामः]

ददामी *प्रेमाका.* युद्धमां ददामुं – मोटुं नगारुं वगाडनार

दद्ध *प्रबोप्र.* दाझेलुं (सं.दग्ध)

दधा *अखाछ. चित्तसं.* दुग्धा, पीडा

दधि-ओदन *कादं(शा).* दहींभात (सं.)

दधि ओलिउ *षडाबा.* दहीं साथे मेळवेल (सं.दधि+अव+ली)

दधिसुत *नरका.* सागरनो पुत्र चंद्र [सं.उदधि-सुत]

दधिसुता *नरका.* सागरनी पुत्री लक्ष्मी

दन प्रते *चतुचा.* प्रतिदिन

दनंतर *अभिऊ.* [बीजा दिवसो], वधु दिवस (सं.दिन+अंतर)

दनी *प्राचीफा.* दुनिया [फा.दुन्या]

दन्य *प्रेमाका.* दिन, दिवस

दप्पण *प्राचीफा. शृंगामं.* दर्पण, अरीसो

दभ्र *प्रेमाका.* दर्भ, दाभडो, एक घास

दमणु *ऐतिका. चारफा. नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* एक वनस्पति, डमरो (सं.दमनक)

दमणो *नरका.* दमन करनारो, दुःख देनारो

दमनक *गुर्जरा.* डमरो (सं.)

दमर जुओ छिदमर, दवर

दमामो *प्रद्युचु. प्राचीफा. विक्ररा.* एक रणवाद्य, नोबत (फा.दमामह्)

दमे *अखाका. चित्तसं.* दुःख दे, हेरान करे; *उपबा.* दमन करे, नियंत्रे

दय *तेरका.* दया

दयदयकार *जिनरा.* (दान) दीधा करवुं ते

दयी *गुर्जरा.* दया करीने

दरख *वेताप.* झाड (फा.दिरख्त)

दरगील *कामा(त्रि).* दिलगीर

दरब *वीसरा.* द्रव्य, संपत्ति

***दरवडे** *कामा(त्रि).* दोड [दे.दडवड]

दरवेश *ऋषिरा.* इस्लामी फकीर [फा.]

दरशवुं *अखाछ.* जोवुं; देखावुं [सं.दृश्]

दरशंन *मदमो.* स्वरूप

दरसणियां *ऐतिका.* दर्शनी, दर्शनशास्त्री

दरसिन *विमप्र.* दर्शन

दरिद्र *आरारा. गुर्जरा.* दारिद्र्य; गरीबी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दरियाई *जिनरा. प्रेमाका.* एक प्रकारनुं कीमती कापड
दरिसण *आरारा.* दर्शन
दरीदरीज *वेताप.* दारिद्र्य
दरीद्र *मदमो.* दारिद्र्य, दळदर
दर्शनी *ऋषिरा.* तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक
दल जुओ कुरुदल
दल *चित्तसं.* दिल
दलगिर *देवरा.* दिलगीर, उदास
दलधीर जुओ दलधीर
दलणि *नेमिछं.* दळवामां, नाश करवामां (सं. दलन)
***दलधीर [दलधीर]** *ऐतिरा.* दिलगीर
दलवइ *गुर्जरा.* सेनापति (सं.दलपति)
दलवादल *कामा(त्रि).* *शत्रु पर चढी जवाने सज्ज, [घणी मोटी] (सेना)
दलावल (कमलदलावल) *ऐतिका.* (कमल)-दलनी पंक्ति – हार
दलिक *आनंस्त.* दळ, समूह
दलीद्र *आरारा.* दारिद्र्य
दवदवाए *उपबा.* उतावळथी (सं.*द्रवद्रवक)
दवर *षडाबा.* दोरी; जुओ दमर
दवाजो **प्राचीफा.* [शोभा]; जुओ दिवाजउ
दवाडे *प्रेमाका.* दवाग्निमां
दवालीबंध *सिंहा(शा).* तलवार लटकाववा-नो आडो पट्टो जेणे पहेर्यो छे तेवो सिपाई [फा.दुवालबंद]
दविण *शृंगाम.* पैसा, धन (सं.द्रविण) [प्रा.]
दव्व *आरारा. ऐतिका.* द्रव्य [प्रा.]
दव्वच्चण *आरारा.* द्रव्यार्चन, द्रव्यपूजा; जुओ देवच्चण [प्रा.]
दशधा *नरका.* दशमो प्रकार
दशन *नरका. प्रेमाका.* दांत [सं.]
दशमुं द्वार *प्रेमाका.* [शरीरनां नव द्वार उपरातनुं] ताळवानुं द्वार
दशारण *नलाख्या.* दशार्ण देश
दशैयां *प्रेमाका.* लग्न पछी नवदंपतीने पितृ-पक्ष तरफथी अपातां दश जमण; जुओ दसाइआ
दशो *अखाका.* दिशावाळो, दिशामां
दशो दिशे *अखाका.* दशे दिशामां
***दशोरो** *चंद्रवा.* दशेरो, दश शेरनुं मापियुं
***दश्व** *वेताप.* दिशा
दसग *जिनरा.* दश[नो समुदाय] [सं.दशक]
दस गुणउ *उपबा.* दश गणो
दसन *ऋषिरा.* दांत (सं.दशन)
दसाइआ *नलरा.* लग्न पछी वरवहुने श्वसुर पक्ष तरफथी अपातां दस जमण, दसैयां (सं.दश+अहानि); जुओ दशैयां, दसाहीइं
दसार *गुर्जरा. चारफा. तेरका. देवरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल.* एक कुळ, यादवकुळ (सं.दशार्ह)
दसाहीइं *अंबरा.* दसैयामां, लग्न पछी जमाईने सासरे जमवा तेडे तेमां; जुओ दसाइआ
दसि *आरारा.* दिशाए, मळत्याग माटे
दसी *उक्तिर.* दीवानी वाट (सं.दशा)
दसुंदी, दसूंदी *कस्तुवा. वेताप.* दसमो भाग उघरावनार भाट के बारोट [सं.दशबंध]
दसूट्ठण, दसूठण *ऐतिका. जिनरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसोटण, जन्मथी दसमा दिवसनो उत्सव

दसूंदी जुओ दसुंदी

दसो *पंचवा.* देशवटो

दस्त *चंद्रवा.* सारुं, [चमत्कारक, अद्‌भुत] [सं.दस्त्र]; जुओ दस्त्र

दस्तूर **प्राचीफा.* [वहाणमां सढ माटेना लाकडानो एक भाग]

दस्त्र *वेताप. *सिंहा(शा).* सुंदर, [अद्‌भुत, भारे] [सं.]; जुओ दस्त

दह *गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि.* दश

दहदिसि *वसंवि(ब्रा).* दशे दिशाओ

दहाडला लीजे *प्रेमाका.* दिवस लईए, दिवस वितावीए, पसार करीए

दहि, दही *वीसरा. षडाबा.* दहीं (सं.दधि)

दहिवा *उक्तिर.* बाळवा (सं.दह्)

दही जुओ दहि

दहुर *उषाह.* दहेरुं, [मंदिर, भवन] (सं.देव-गृह)

दहैवट जवुं *वेताप. सिंहा(शा).* फनाफातिया थवुं, जडमूळथी नाश थवो; जुओ देहेवट वालो

दंगडउ *प्राचीसं.* गाम (सं.द्रङ्गः)

दंगणु *ऐतिका.* बाळवुं

दंडवर्त जुओ डंडवृत्त

दंडाउंछणउ *उक्तिर. षडाबा.* जैन मुनिओनुं रजोहरण (सं.दंडक+प्रोंछन)

दंडासणउं *उपबा.* दंड अने आसनियुं

दंडाहिव *तेरका.* दंडनायक (सं.दंडाधिप)

दंत देखाडे जुओ देखाडे दंत

दंतधावन *प्रेमाका.* दांत साफ करवानी क्रिया

दंतवणु *षडाबा.* दातण (सं.दंतपवन)

दंतसूकट *उक्तिर.* [?] (सं.दन्तशकट)

दंति *नेमिछं.* प्रकाशे छे, [प्रकाशमां]

दंती *गुर्जरा.* हाथी (सं.)

दंतूसल *उक्तिर.* हाथीनो दांत (सं.दंतमुसल)

दंद *ऋषिरा.* उपाधि, क्लेश (सं.द्वन्द्व); *आनंस्त.* द्वंद्व, [समुदाय]

दंदडियउ *प्राचीसं.* *पलायन करी गया, [दोड्या, घूमी वळया]

दंदोल *ऋषिरा.* तोफान, धांधल, [उपद्रव]; *हम्मीप्र.* कोलाहल, [उत्पात]; *विमप्र.* संशय, [मूंझवण, द्विधा]

दंभइ *उक्तिर.* पाखंड, आडंबर, ढोंग करे (सं.दम्भोति)

दंसण *आरारा. ऐतिका.* दर्शन; *तेरका.* दर्शन करनार

दंसण *आरारा.* दंश, डंख (सं.दशन)

दंसण आवरणी *जिनरा.* दर्शनावरणीय कर्म [वस्तुना सामान्यबोधने कुंठित करनार कर्म] [जै.]

दाइ, दाय *आरारा.* लाग, उपाय; मरजी, मन, ध्यान

दाइजउ *प्राचीफा.* लग्न वखते वरकन्याने अपातुं द्रव्य (प्रा.दइज्जय) [सं.दायाद्य]

दाउ *स्थूलिफा.* लाग, [मोको]; जुओ दाव

दाउ (दाउ देवो) *गुर्जरा. [लाग जोवो, मोको मेळववो]; जुओ दाव

दाओ *मदमो.* लाग[नो], [पात्र]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाक्षायणी *प्रेमाका.* दक्षनी पुत्री, चंद्रनी पत्नी [सं.]

दाक्षिणि *कादं(शा).* चतुराई (सं.दाक्षिण्य)

दाक्षिनि *लावल.* विचार करवामां, स्त्री प्रत्येनी सहानुभूतिमां [-दाक्षिण्यमां] (सं. दाक्षिण्य)

दाखइ *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(शा). गुर्जरा. नलाख्या. प्रेमाका. विमप्र.* बतावे, कहे (सं.*द्रक्षयति); *नरका.* जुए

दाखव्युं *प्रेमाका.* दर्शावायुं, [प्रगट थयुं]

दाखिजे *नेमिछं.* दाखवजे, [बतावजे]

दाखियउ *नेमिछं.* बताव्यो

दाखीणी *सिंहा(शा).* दाक्षिण्य ?, [चतुराई]

दाख्य **चंद्रवा. मदमो.* देखाय; *चंद्रवा. चित्तसं.* जाण, बताव

दाख्युं *प्रेमाका.* जोयुं

दाघ *अंबरा. गुर्जरा. नलरा.* दाह, बळतरा; *हम्मीप्र.* अग्निदाह

दाझ *चतुचा.* झंखना, इच्छा; *प्रेमप.* दुःख, गुस्सो

दाझणो *अखाका.* दझाडे एवो

दाट *आरारा.* दाटो, अंकुश

दाडिम *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* दाडम (सं.)

दाडिमकुली *लावल.* दाडमनी कळी

दाडिमहूला *प्राचीफा. स्थूलिफा.* एक प्रकारनुं कीमती वस्त्र

दादु *विमप्र.* दादा, आदीश्वर, ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर)

दादुर *शृंगामं.* देडको [सं.दर्दुर]

दाढ *षडाबा.* पर्वतशिखर (सं.दंष्ट्रा)

दाढी *सिंहा(शा).* दहाडी, दररोज

दाढो *मदमो. रूस्तस. वेताप.* दहाडो

दाण *उपबा. शृंगामं. षडाबा.* कर, वेरो, जकात (सं.दान); *तेरका.* दान

दाणउ *उक्तिर.* दाणो [फा.दानह्]

दाणमंडही *उक्तिर.* अनाजनी मंडी, बजार [फा.दानह्+सं.मंडपिका]

दाणी (घंणी) (दाणीगणि) *ऋषिरा.* देवादार, [करजदार]

दाति *षडाबा.* अर्पण [करातो भाग], [एक वारनो जथ्थो]; *आरारा.* दहेज, करियावर [सं.दत्ति]

दातुर्य *दशस्कं(२). प्रेमाका.* दातार [सं.दातृ]

दात्रउ *उक्तिर.* दातरडुं (सं.दात्रम्)

दादइ *ऐतिका.* दादा[पार्श्वनाथ]ए

दादर *उक्तिर.* [*घणुं; *प्रहार] [दे.दद्दर]

दादर (दादरडां) *प्राचीफा.* देडकां (सं. दादुर); जुओ डांलवइ

दादुर *अखाका. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा).* देडको (सं.दर्दुर)

दादुरडी *लावल.* देडकी

दादूरा *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

दाधउ *उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. दशस्कं(१). नरका. नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. विक्रच. वीसरा. शृंगामं.* दाझ्युं, बळ्युं (सं.दग्ध)

दानरस *नरका.* (दहींनां) दाण मागवानो रस

दापु *प्राचीसं.* दापुं, [दक्षिणा] [सं.दाप्य]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दावडउं *उक्ति.* दावडुं, पाणी खेंचवानो रेंट

दाभ *प्रेमाका.* दर्भ, अणीदार धारवाळुं एक घास

दाम *उक्ति. पंचवा.* पैसा, नाणुं (सं.द्रम्म)

दामण, दामणउं *अभिऊ. उक्ति. उपवा. दशस्कं(१). प्रेमाका.* दोरडुं [ढोरने बांधवानुं] (सं.दामन्)

दामणी *नरका.* स्त्रीओना कपाळनुं एक घरेणुं

दामणो *दशस्कं(२). प्रेमाका. मदमो.* दयामणो

दामी *लावल.* दमन करीने, दबावीने

दाय *ऋषिरा.* दाव, [लाग] (सं.); जुओ दाइ

दायो *नंदब. सिंहा(शा).* दाव, लाग (सं. दाय)

दारि *विक्ररा.* बारणे [सं.द्वारे]

दारिका *कादं(शा).* छोकरी (सं.)

दारिद *आरारा.* दारिद्र्य

दारिद्र *गुर्जरा.* गरीबी (सं.दारिद्र्य)

दारिद्रिउ *षडावा.* दरिद्र

दारीवाडउ *उक्ति.* वेश्याओनुं निवासस्थान (सं.दारिकावाटकः)

दारु, दारुक *अखाका.* लाकडुं [सं.]

दारुकर्म *कादं(शा).* लाकड-काम, सुतार-काम (सं.)

दालि *गुर्जरा. लावल.* दाळ (*सं.दलति परथी) [*सं.दाल]

दालिद *ऐतिरा. शृंगामं.* दारिद्र्य, निर्धनता

दालिद *तेरका. प्राचीसं.* दारिद्र्य

दालिद्र, दालिद्र *दशस्कं(१). नलरा. सिंहा(म).* दरिद्रता, गरीबाई (सं. दारिद्र्य)

दालिद्रीया *शीलक.* दरिद्र, गरीब

दालिंद *अंबरा.* दारिद्र्य

दाळीदर *प्रेमाका.* दारिद्र्य, दळदर

दाव- *तेरका.* देखाडवुं (प्रा.)

दाव *आनंस्त. नरका.* अवसर, तक, मोको, लाग; *नरका.* उपाय; जुओ दाउ

दाव (दाव देवो) **गुर्जरा.* [अवसर मेळववो, मोको मेळववो]; जुओ दाउ

दावडीए *मदमो.* लाग [वारो] आवतां (?)

दावादल *मदमो. वेताप. सिंहा(शा).* दावानल

दावो *अखाका.* ममत, आग्रह, [वाद, मताग्रह]; *नरका.* हक्क, [आग्रहपूर्वकनी मागणी, विनंती] [फा.दावा]

दावो करे *मदमो.* लाग साधे

दाशेर *कादं(शा).* ऊंट (सं.)

दाहा *नलरा.* रमतमां पडता दाणा, दा (फा. दाव)

दाहाढी *चतुचा.* दररोज

दाहिण, दाहिणउं *तेरका.* दक्षिण (दिशा); *उक्ति. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* जमणुं (सं. दक्षिणकम्)

दाही *चंद्रवा.* दाई, दायण

दांडइ *षडावा.* रस्ते, [पगदंडीए] (सं.दंड)

दांतिलउ *उक्ति.* मोटा दांतवाळुं, आगळ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीकळता दांतवाळुं (सं.दन्तुरः)

दांते दश आगळी लेवी *लावल.* शरणागत स्वीकारवी

दांमि **कस्तुवा.* [दमन करे, संयत करे, ढांके]

दि *उक्तिर.* दे, आपे; *नलाख्या.* दे, आप (सं.देहि)

दिइ *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* दे, आपे (सं.ददति, प्रा.दे-)

दिक्ख, दिक्खा *ऐतिका. तेरका.* दीक्षा

दिक्खाड- *तेरका.* देखाडवुं (सं.दृक्ष्+प्रेक्ष्)

दिक्खिया *षडाबा.* दीक्षित थया

दिक्षणडी *प्राचीफा.* दक्षिणनी स्त्री

दिख *देवरा.* दीक्षा

दिखसा *देवरा.* दीक्षा

दिखाडइ *गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* बतावे (सं.*दृक्षति)

दिखाल- *प्राचीसं.* देखाडवुं (हिं.दिखलाना)

दिगिदिगि *गुर्जरा.* ढोलकनो धिगधिग अवाज

दिजराज *आरारा.* द्विजराज, ब्राह्मण

दिट्ठउं *गुर्जरा.* दीठुं (सं.दृष्ट)

दिट्ठंत, दिठंत *आरारा. गुर्जरा.* दृष्टांत

दिढ *तेरका.* दृढ

दिण *आरारा. ऐतिका.* दिन, दिवस

दिणनाह *शृंगामं.* सूर्य (सं.दिननाथ)

दिणयर *अभिऊ. उषाह. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. नेमिछं. लावल.* शृंगामं. सूर्य (सं. दिनकर)

दिणंद *आरारा. नलरा. लावल. शृंगामं.* दिनेन्द्र, सूर्य

दिणाहिव *शृंगामं.* सूर्य (सं.दिनाधिप)

दिणियर *प्राचीसं.* दिनकर, सूर्य

दिणिहारि *ऋषिरा.* देनारी

दिणू *गुर्जरा.* दिवस (सं.दिन)

दिदार *प्राचीफा.* चहेरो, स्वरूप (फा.)

दिन दिन प्रत्ये *चंद्रवा.* दिनप्रतिदिन

दिननाह *ऐतिरा.* सूर्य [सं.दिननाथ]

दिनरेणी *चतुचा.* दिवसरात; जुओ रेणी

दिनिदिनि *उपबा.* दररोज

दिमसु *प्राचीफा.* दिवस

दियइ *उक्तिर. वसंफा(ब). षडाबा.* दे, आपे

दियउ *वीसरा.* दीधुं (सं.*दित-)

दिव *प्राचीफा.* चमत्कार, [चमत्कारभरी दिव्य घटना] (सं.दिव्य); जुओ दिव्य, दिव्व

दिव *वीसरा.* दिव्य, दीवो (सं.दीप)

दिवरावइ *उक्तिर.* देवडावे

दिवस नाखवा *प्रेमाका.* दिवस विताववा

दिवसंतरि *आरारा.* अन्य दिवसे [सं. दिवसान्तर]

दिवा *प्रेमाका.* दिवसे [सं.]

दिवाजउ *ऐतिका. नेमिछं.* शोभा; जुओ दवाजो

दिवाड- *वीसरा.* देवडाववुं

दिवानडी *आरारा.* दीवानी, गांडी

दिवायर *ऐतिका. नेमिछं.* सूर्य (सं.दिवाकर)

दिवारइ *आरारा. गुर्जरा.* देवडावे; *विक्ररा.* बंध करावे

दिवांन *ऐतिका.* दरबार

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिवि *गुर्जरा. तेरका. *वीसरा.* देवी

दिविय *गुर्जरा.* दीवी (सं.दीपिका)

दिविस(?) *तेरका.* दिवस ?

दिवेश *अखाका.* सूर्य

दिवोसही *तेरका.* दिव्य वनस्पति (सं. दिव्यौषधि)

दिव्य जुओ पंच दिव्य

दिव्व *ऋषिरा.* अग्निमां पडवुं वगेरे एक प्रकारनी कसोटी (सं.दिव्य); जुओ दिव, दीव्य

दिशपति *नलाख्या.* दिक्पति, देव

दिशा *नलाख्या.* दशा, हालत, स्थिति

दिशाचर-काम *प्रेमाका.* दिवसे फरनारा – सज्जन लोकोनुं काम

दिशाकर्ण *दशस्कं(१).* दिशानो दर्शक

दिशि *वसंवि.* दिशा

दिसउ *वीसरा.* दिशा

दिसा *गुर्जरा.* दीक्षा

दिसि *उपबा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वीसरा.* दिशा

दिसि-अंत *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* दिशाओना छेडा, दिगन्त

दिसोदिसि *आरारा.* बधी दिशाओमां

दिह *प्राचीसं.* दिशा

दिह *नलाख्या.* देह, शरीर

दिह *सिंहा(शा).* दिवस

दिहाडउ *उक्तिर. देवरा. नलरा. नेमिछं. वीसरा.* दिवस

दीआं *लावल.* दीधां

दीइ *लावल.* दे, आपे

दीकिरउ *षडाबा.* दीकरो [दे.दिक्करअ]

दीकिरी *कादं(शा). षडाबा.* दीकरी [दे. दिक्करअ]

दीकोडी *प्राचीफा.* दासी

दीकोला **विमप्र.* [चाकर]

दीक्षिउ *उपबा.* दीक्षा लीधेल (सं.दीक्षित)

दीख *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा.* दीक्षा

दीखइ *उक्तिर.* दीक्षा ले (सं.दीक्षते)

दीख्या **नेमिछं.* [दीक्षा]

दीजइ *उक्तिर.* देवाय (सं.दीयते)

दीजउ *उक्तिर.* देवायुं

दीजतउं, दीजतूं *उक्तिर.* देवातुं (सं.दीयते परथी)

दीजिसिइ *उक्तिर.* देवाशे

दीठ *अखाका.* *देखाव, [*कथन, *दृष्टांत]; [*दीठा]

दीठी *वीसरा.* दृष्टि

दीण *आरारा. गुर्जरा. लावल.* दीन, गरीबडुं

दीदार **ऐतिका.* [रूप]; *आनंस्त.* दर्शन [फा.]

दीधति *गुर्जरा. विराप.* किरणो (सं.दीधिति)

दीधलु *कृष्णच.* दीधो

दीन *आरारा.* धर्म (फा.)

दीनार *उपबा. पंचवा. प्राचीफा. सिंहा(म).* एक प्राचीन चलणी सिक्को (सं.)

दीनीश *मदमो.* दिनेश, सूर्य

दीन्हउ *प्राचीसं. वीसरा.* दीधुं (रा.)

दीपति **वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* प्रताप (सं.दीप्ति)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीपधाम *चित्तसं.* दीवानो प्रकाश [सं.]

दीपविसाम *ऐतिरा.* दीवादांडी (सं.दीप-विश्राम)

दीयडी ०*षडाबा.* [कपडा के चामडानी] पाणी भरवानी थेली (सं.दृति)

दीर्घनउं *उक्तिर.* लांबुं

दीर्घिका *नलाख्या.* पगथियांवाळी वाव (सं.); जुओ गृहदीर्घिका

दीव *गुर्जरा.* द्वीप

दीवटीउ *उक्तिर. नलरा.* मशालची (सं. दीपवर्त्तिक)

दीवटी (दीवटीआ) **विमप्र.* [मशालचीओ]

दीवमंदिर *उक्तिर.* दीपमंदिर, [*दीवादांडी]

दीवलोटी **षडाबा.* *नाह्या पछीनुं अंगमेलनुं पाणी

दीवंमि *ऐतिका.* दीपक [सातमी विभक्ति] [प्रा.दीवम्मि=दीपे]

दीवसिखा *आरारा.* दीपशिखा

दीवाण *वीसरा.* दरबार, राजसभा (फा. दीवान)

दीवाकाणउ *उक्तिर.* काणो, एक आंखवाळो- [दे.]

दीवीदार *प्रेमाका.* मशालची

दीव्य *चतुचा.* माणस अपराधी छे के नहीं ते नक्की करवा माटे योजाती पाणी, अग्नि वगेरेनी कसोटी [सं.दिव्य]; जुओ दिव्व, धीज्य

दीवो थाशे *प्रेमाका.* देवाळुं काढवुं पडशे

दीश *प्रेमाका.* दिवस

दीस *आरारा. ऐतिका. उपबा. तेरका. दशस्कं(१). नलरा. प्राचीफा. प्राचीसं. विमप्र.* दिवस

दीस *गुर्जरा.* दिशा

दीस *ऐतिरा.* देश

दीह *अभिऊ. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. जिनरा. नलरा. प्रबोप्र. प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. षडाबा.* दिवस

दीह *प्राचीसं.* दीर्घ

दीहडउ *कृष्णच. नेमिछं. प्राचीसं.* दिवस

दीहर *गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि.* दीर्घ

दीहर-मंडप-माल *वसंवि(ब्रा).* दीर्घ मंडप-माला

दीहराति *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* दिवस-रात

दीहा *आनंस्त. लावल. शृंगामं.* दिवसो

दीहाडा *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा.* दिवसो

दीहु *गुर्जरा.* दिवस

दुअंगम, दूअंगम *विमप्र. शृंगामं.* दुर्गम, मुश्केल

दुआर, दूआर *उषाह. वीसरा.* द्वार

दुआरी *गुर्जरा.* द्वार

दुकर, दूकर *देवरा.* कपरुं, अघरुं (सं. दुष्कर)

दुकुर *स्थूलिफा.* दुष्कर, मुश्केल

दुकृत *अखाका.* दुष्कृत्य

दुक्कर *आरारा. ऐतिका. तेरका. जिनरा. लावल. षष्टिप्र.* दुष्कर, कठिन

दुक्करकार *ऐतिका.* दुष्कर, कठिन (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुष्करकारक)

दुक्ख *आनंस्त. गुर्जरा. तेरका.* दुःख

दुक्रित, दुक्रीत *अखाका. नरका.* दुष्कृत्य, पाप

दुखाउ *नरका.* दुःख पामुं

दुखायु *नलाख्या.* दुःखित (सं.दुःख परथी)

दुग *आनंस्त. जिनरा.* बे

दुगणुं *प्रेमाका.* बे गणुं, बमणुं

दुगदुगी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* स्त्रीओना काननुं के गळानुं एक घरेणुं

दुगंछा *जिनरा.* घृणा, जुगुप्सा [दि.दुगुंछा]

दुगुंछइ *उक्तिर.* घृणा करे (सं.जुगुप्सते)

दुग्ग *तेरका.* दुर्ग

दुग्गय *ऐतिका.* दुर्गति

दुग्धा *नरका.* आपदा, जंजाळ

दुचती *पंचवा.* बे चित्तवाळी, गभरायेली, [खिन्न, उदास, चिंतित] (सं.द्वि+चित्ता)

दुच्छिय *आरारा.* जुगुप्सित (अप.दुउच्छिअ)

दुज्जण *तेरका.* दुर्जन

दुज्जोहण *गुर्जरा.* दुर्योधन

दुट्ठ *गुर्जरा.* दुष्ट

दुट्ठुत्तण *गुर्जरा.* दुष्टत्व (सं.दुष्टत्वन)

दुट्ठदल *ऐतिका.* दुष्ट दल, [दुर्जनोनो समूह]

दुट्ठमणु *गुर्जरा.* दुष्ट मनवाळुं

दुडवडी *ऐतिका.* जलदी; जुओ दडवडु

दुडबडी *वीसरा.* वाद्यविशेष; जुओ दुडुदुडी

दुडी *आरारा.* बीजी

दुडी *वेताप.* डूंडी

दुडुदुडी *विराप.* एक प्रकारनुं वाद्य; जुओ दडदडी, दुडदुडी, दुडवडी, दुंडवडी

दुणउ, दूणउ *पंचवा. वीसरा. सिंहा(शा).* बे गणुं, बेवडुं (सं.द्विगुण)

दुणी *नरप(द).* [दोणी], दूध दोहवानुं पात्र [सं.दोहिनी]

दुतर, दूतर *प्रद्युच्. शृंगामं.* तरवाने मुश्केल (सं.दुस्तर)

दुत्थ *प्राचीसं.* दुःख [सं.दौःस्थ्य]; *नलरा.* दुःखी (सं.दुःस्थ)

दुत्तरि *ऐतिका.* दुस्तार, [तरवो मुश्केल]

दुत्तारो *ऐतिका.* दुस्तार, [तरवो मुश्केल]

दुदर *शृंगामं.* देडको (सं.दर्दुर)

दुद्ध *आरारा.* दूध [सं.दुग्ध]

दुधर *लावल.* जेमनो सामनो करवो मुश्केल होय एवा (सं.दुर्धर)

दुनी *आरारा. चित्तसं. जिनरा. हम्मीप्र.* दुनिया, लोक, संसार (हिं.)

दुनी *चतुचा.* ?

दुनीठउ *वसंफा(ल) वसंवि. वसंवि(ब्रा).* केमेय नीठे नहीं – अंत आवे नहीं तेवुं (सं. दुर्निष्ठितकम्)

दुन्नि *गुर्जरा.* बे (सं.*द्वीनि)

दुप्पसउ *विमप्र.* दुःप्रसह नामे आचार्य

दुप्पापु *षडाबा.* दुष्प्राप्य

दुभग *जिनरा.* दुर्भाग्य, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीव काम करे तोपण हडहड थाय, अवगुण न कर्यो होय तोपण अपमान पामे] [जै.]

दुभण *मदमो.* दुभववुं, दुखाववुं ?, [दुःख]

दुभर *अभिऊ.* दुर्भर, [मुश्केलीथी पोषण थाय एवुं, गरीब]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुमणो *आरारा(व).* दमणो, एक वृक्ष (सं. दमनक)

दुमनी **शीलक.* [उदास] [सं.दुर्मनस्]

दुमाम, दुमांम *हम्मीप्र.* दमाम, दबदबो, भपको

दुमास *अखाछ.* दमास्कसनुं कापड

दुमेलो *मदमो.* छंदविशेष (सं.दुर्मिला)

दुयार *तेरका.* द्वार

दुरग *वीसरा.* दुर्ग, गढ

दुरगा *आरारा.* दुर्गा, देवी, देवचकली

दुरनीवारी *चतुचा.* दुर्निवार्य, निवारी न शकाय तेवी

दुरन्त **प्रबोप्र.* [भारे, दुष्परिमाणी] [सं.]

***दुरबुद्धि** *आरारा.* दुर्बुद्धि, दुष्ट

दुरभव *आनंस्त.* खराब भव – अवतार-वाळो, [भारे संसारभाववाळो] (सं. दुर्भव्य)

दुरमतियां *नरका.* दुर्मति धरावनारां

दुरंग **ऐतिका.* [दुर्गम, कठिन]; *गुर्जरा.* खराब, [कठण, अप्रिय, कडवुं]; **लावल.* [कठिन, भारे]

दुरिजन *नरका. प्रेमाका.* दुर्जन

दुरियण *आरारा.* दुर्जन

दुरिया **ऋषिरा.* [पापमय] (सं.दुरिता)

दुरी *हम्मीप्र.* दुरित, पाप

दुरीउ *गुर्जरा.* पाप (सं.दुरित)

दुरीय *गुर्जरा.* पापी (सं.दुरित)

दुरोदर *कादं(शा). नलाख्या.* जुगार (सं.)

दुर्भगत्वं *आरारा.* दुर्भाग्य [सं.]

दुर्भर *प्रेमाका.* महामुसीबते भरी के पोषी शकाय एवुं [सं.]

दुर्वा *प्रेमाका.* एक घास, धरो

दुर्वाइक *अभिऊ.* दुर्वाक्य

दुर्वासना *दशस्कं(१). प्रेमाका.* दुर्गंध

दुर्लंभ *आरारा.* दुर्लभ

दुलारा *नरप.* मनगमतां, वहालां

दुलि जुओ जुलि

दुल्लभ *गुर्जरा.* दुर्लभ

दुल्लह *ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीका.* दुर्लभ

दुवार *वीसरा.* द्वार

दुवारांमति जुओ वारांमति

दुवि *तेरका.* बेय (सं.द्वौ+अपि)

दुविस्सह **ऐतिका.* [कठिन, अशक्य]

दुषमाअरउ *उक्तिर.* दुषम आरो, [जैन कालगणनामां एक दुःखमय युग] (सं. दुषम+आरकः)

दुषमा समइ *ऐतिरा.* माठा वखतमां

दुष्ट चतुष्ट जुओ चतुष्ट

दुसम *ऐतिका.* कठिन, खराब

दुसर *जिनरा.* दुःस्वर, [नामकर्मनो एक प्रकार जेना उदयथी जीवने खराब अवाज मळे] [जै.]

दुसार *वीसरा.* बेधारी तलवार

दुह *आरारा.* बे

दुह *तेरका.* –, [दुःख]

दुहरासि *ऐतिरा.* दुःखराशि

दुहवण, दूहवण *उपका. उषाह. षडावा.* दूभववुं ते, दुभवणी, पीडा (सं.दुःख परथी)

दुहवावुं *चतुचा. नरका.* दुभावुं, दुःखी थवुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहवियउ *आरारा. कामा(शा). दशस्कं(१). षडाबा.* दूभव्यो (सं.दुःख परथी)

दुहाइ, दुहाई *नरका. *पंचवा. प्रेमाका.* आण, सत्ता, मनाई

दुहातुं *कामा(त्रि).* दूभवतुं

दुहिलि *कादं(शा).* मुश्केलीथी [सं.दुःख परथी]

दुहु *अभिऊ.* बे (सं.द्वि+खलु)

दुहुलू *नलाख्या.* दुःखी अवस्था (सं.दुःख+इल्ल)

दुहुं *वीसरा.* बन्ने

दुहुवो *कामा(त्रि).* दुभवो [सं.दुःखापय्]

दुहुवावुं *नरका. प्रेमाका.* दुभायुं, दुःख पाम्युं

दुहे रे पाडा *अखाका.* पाडाने दोहे, मिथ्या प्रयास करे

दुहेलउं *आरारा. ऐतिका. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. षडाबा.* दुष्कर, दोह्यलुं; आपत्ति (सं.दुःख परथी)

दुंडदुडी *गुर्जरा.* एक प्रकारनी ढोलकी; जुओ दुड्डुडी

दुंडी *मदमो.* दांडी, ढंढेरो

दुंदुभि *अखाका. नरका. प्रेमाका.* मोटुं नगारुं

दुंदुहि *गुर्जरा. नेमिछं.* मोटुं नगारुं (सं. दुंदुभि)

दूअ *गुर्जरा.* दूत

दूअउ *आरारा.* बीजा – पछीना

दूअडी *लावल.* दूती, नोकरडी, दासी

दूअंगम जुओ दुअंगम

दूआ *विमप्र.* [दूत, संदेशो लई जनार]

दूआइति *उषाह.* आण, दुहाई

दूआड *उषाह.* ?, [*तोफानी, *वकर्यो] [*प्रा. दुआलि]

दूआर जुओ दुआर

दुइ, दुई *तेरका. प्राचीसं. वीसरा.* बे (सं.द्व-); द्वैत

दूउ *गुर्जरा.* संदेशो, [तेडुं] (सं.दौत्य)

दूउ *आरारा.* बन्ने

दूउ *विमप्र.* [*दूत]

दूकर जुओ दुकर

दूखणि *देवरा.* दुःखी स्त्री (सं.दुःखिनी)

दूखल पास *हरिवि.* खांडणिया साथेनां बंधन (सं.उदूखलपाश)

दूघडउ *उक्तिर.* मुश्केल (सं.दुर्घटम्)

दूजइं *विराप.* दूझे छे (सं.दुह्यति)

दूजउ *दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका. वीसरा. शृंगामं.* बीजो [सं.द्वितीय; हिं.]

दूजण *गुर्जरा. जिनरा.* दुर्जन

***दूजी** *कादं(शा).* दूती

दूणउ जुओ दुणउ

दूत *अखाछ.* द्यूत, जूगटुं

दूतपालक *नलरा.* एक राज्याधिकारी

दूतर जुओ दुतर

दूदु *नलरा.* दडियो, पडियो

दूद्धर *विमप्र.* दुर्धर, [दुर्जेय]

दूध ने दहीं *प्रेमाका.* जे गणो ते, [सर्व कंई, सर्वस्व]

दूधे वरस्या मेह *प्रेमाका.* खूब आनंद फेलायो

दूभता *प्रेमप्र.* नाराज करता

दूमइ *उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं.* दुभवे (सं. दूयते)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूमण *नरका.* उदासीनता (सं.दुर्मनस्)
दूमणी *प्राचीसं.* दुःखी, सचिंत (सं.दुर्मनस्)
दूयभावि *गुर्जरा.* दूत तरीके (सं.दूतभाव)
दूयारिका *अभिऊ.* द्वारिका
दूरी *अखाछ.* आघो
दूलहा *देवरा.* दुर्लभ
दूव्वय *प्राचीफा.* द्रौपदी, पांडवोनी पत्नी
दूषइ *उक्तिर.* दोष लगाडे, खराब करे (सं. दूषयति)
दूसम *उपबा.* खराब समय; *गुर्जरा. तेरका.* [जैन कालगणनामां] पांचमो आरो, [कठिन आरो] (सं.दुःषम)
दूहउ *कर्पूमं.* आज्ञा, दुहाई
दूहती *ऋषिरा.* दूभती [सं.दुःख परथी]
दूहवइ *उक्तिर. कादं(शा). जिनरा. दशस्कं(१). नलरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. लावल.* दुःख आपे (सं.दुःखापयति)
दूहविइ *गुर्जरा.* दुभवे (सं.दुःखापयति)
दूहवण जुओ दुहवण
दूहवाइ *ललिरा.* दुभाय, दुःखी थाय
दूहवाणउ *विमप्र.* दुभायो
दूहविउ, दूहव्यु *आरारा. उपबा.* [दुभायेलो], दुःख पामेलो
दूहाइ *आरारा.* दोहे
दुहिलु *उषाह.* दोह्यलुं, [मुश्केल] [सं.दुःख परथी]
दूहुववुं *अखाछ.* दूभववुं
दृढाव *प्रेमाका.* दृढता, स्थिरता
दृष्ट *नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* दृष्टि, नजर
दृष्टि त्रेडवी जुओ त्रेडववुं
दृष्टि न खंचइ. धार जुओ खंचइ
दृष्टि पदारथ *दशस्कं(१). प्रेमाका.* दृष्ट पदार्थ, नजरे पडता पदार्थ
दृष्टि-रक्षण *प्रेमाका.* नजरनी चोकी
दृष्टि-रक्षा *दशस्कं(१).* नजरकेद
दृष्टिवेध *शृंगामं.* दृष्टिथी वींधायेलुं
-दे *गुर्जरा.* देव, [आदरवाचक]
देअंत *शृंगामं.* [दितां], आपतां
देई (आपे देई) **चित्तसं.* [वगेरे]
देई *उक्तिर. नलाख्या.* दई, आपी
देउ *गुर्जरा.* देव
देउ *गुर्जरा.* देवानी वस्तु (सं.देयम्)
देउर *गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीफा.* दियर (सं.देवर)
देउल *आरारा. उषाह. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्रबोप्र. विमप्र. सिंहा(शा). शीलक.* देवळ (सं.देवकुल)
देउली *उक्तिर.* नानुं देवळ (सं.देवकुलिका)
देखईतुं *दशस्कं(१).* देखीतुं
देखणहार *उपबा. षडाबा.* देखनार
देखणुं *चित्तसं.* दृश्य, [तमाशो, खेल]
देखाडे दंत *अखाका.* दांतिया करे, मश्करी करे, [गुस्सो करे, चिडाय]
देखाविखि *उक्तिर.* देखादेखी [दे.प्रा.देक्ख +पेक्ख]
देखि-न *आरारा.* देख ने
देखिवउं *उक्तिर.* देखवुं
देखी *आरारा.* द्वेषी
देखैतुं *दशस्कं(१).* देखीतुं
देठि *आरारा. शीलक.* दृष्टि
देठे *चतुचा.* दीठे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देडी *वेताप.* देवडी, [चोकीदारनुं चोकीनुं स्थळ]

देण *आरारा.* देवाने

देणहार *आनंस्त. षडाबा.* देनार, देवा इच्छुक

देणाहरु *उक्तिर.* देवा इच्छनार

देमइ *कृष्णच.* देवकी

देयु *नंदब.* दउं

देरीय *विक्ररा.* विलंब (फा.देरी)

देव *आरारा.* देवलोक; दैव, भाग्य

देवकपट्टण *अंबरा.* प्रभासपाटण

देवकउं नाम पतन *अंबरा.* देवनुं पाटण, प्रभासपाटण

देवकापट्टण *अंबरा.* प्रभासपाटण

देवकां *षडाबा.* देवो ज्यां क्रीडा करे ते [पर्वत] [सं.देवक]

देवच्चण** [दव्वच्चण**] *आरारा.* द्रव्य-अर्चन, द्रव्यपूजा

देवत *चंद्रवा.* देवता

देवति *विमप्र.* देवता, देवी

देवप्रकार *आरारा.* दैवी, अद्‌भुत घटना

देवर *गुर्जरा.* दियर (सं.)

देवलवाडउ *प्राचीसं.* देलवाडा (सं.देवकुल-पाटक)

देवसिउ *षडाबा.* दिवसने लगतुं (सं. दैवसिक)

देवसी **उषाह.* [*देवेशे – रामे]; जुओ सी

देवहर *प्राचीफा.* देवमन्दिर (सं.देवगृह)

देवंगह *आरारा.* देवोनां अंगने

देवाणुप्रिय *ऐतिका.* देवोने प्रिय (सं.देवानां प्रिय)

देवादेवी *गुर्जरा.* देवदेवीओ

देवानुप्रिओ *आनंस्त.* देवोने प्रिय

देवारी *अंबरा.* देवरावी

देवालइ *उपबा.* देवालयमां

देवालि *उक्तिर.* एक वेल, देवताडी, देव-दाली, कूकडवेल (सं.देवताडक, देव-तालक)

देवि *विमप्र.* चीबरी, भेरव पक्षी

देविइं *आरारा.* देवे

देवुलोइ जुओ लोइ

देव्या *प्रेमाका. मदमो. वेताप.* देवी, देवता

देश *चतुचा.* दिशा

देशघाती *आनंस्त.* आंशिक घात करनार (कर्म) [जै.] [सं.]

देशन, देशना *ऐतिका. प्राचीफा.* उपदेश, [उपदेशात्मक] व्याख्यान [सं.]

देशांतरी *उक्तिर.* विदेशी (सं.देशान्तरिक); जुओ देसंतरी

देशोटो *वेताप.* देशवटो

देशोत *वेताप.* देशपति, [राजा]; **नरप(द).* [गरासियो, जागीरदार] [*सं.देशपुत्र]

देस *जिनरा.* देशविरति, [सम्यक्‌त्वना स्वीकारपूर्वक मर्यादित त्याग, जैन परंपरानी एक आत्मावस्था]

देसईबंध **जिनरा.* [देशविरति नामना गुण-स्थानकमां थता कर्मबंध] [जै.]

देसडु *शृंगामं.* देश

देसण *नेमिछं. षष्टिप्र.* उपदेश, उपदेशात्मक व्याख्यान (सं.देशना)

देसणभारी *चारफा.* उपदेशादिथी गौरवयुक्त

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.देशना+भारित)

देसन *ऐतिरा.* देशना, उपदेश

देसना *देवरा. षडाबा.* उपदेश [सं.देशना]

देसपट *आरारा.* देशवटो

देसवदीतु *चारफा.* देशभरमां प्रख्यात [सं. देशविदित]

देसवरति *प्राचीफा.* श्रावकनां व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदिनो आंशिक त्याग (सं.देश-विरति)

देसंतर *आरारा. तेरका.* देशांतर, [अन्य देश], देशवटो

देसंतरी *चारफा.* विदेशी (सं.देशान्तरिक); जुओ देशांतरी

देसाउर *नेमिछं. सिंहा(शा).* देशावर, अन्य देश, परदेश

देसाउरी *आरारा. शृंगामं.* अन्य देशमां फरनार, परदेशी (सं.देशावरी)

देसानी *उक्तिर.* छायाकर, [*छांयो करनार साधन, *छत्र लईने चालनार]

देसोटुं *नलरा.* देशवटो, देशनिकाल

देह *वसंफा.* *शरीर; *वसंवि.* *दर्शन (सं. दृश्यते, प्रा.देहइ?); *वसंवि(ब्रा).* तक?

देहचिंता *प्राचीफा.* कुदरती हाजत (सं.)

देहरउं *उक्तिर. नलरा.* देहेरुं (सं.देवगृह)

देहरासरु *उक्तिर.* देरासर (सं.देवतावसरः)

देहली *आरारा. तेरका.* उंबर (सं.)

देह-सुचिंत *आरारा.* देहचिंता, मळत्याग

देहारामी *चित्तसं.* देहनुं सुख माणे छे ते, देहमां विश्रांत छे ते

देहांतर *कामा(शा).* मृत्यु [सं.]

देही *चित्तसं. नरका-२.* देह जेने छे ते, आत्मा [सं.]

देही *प्रेमाका.* देह, शरीर

देहीना चोर *प्रेमाका.* देहना चोर, अदृश्य देहवाळा

देहु *आरारा.* दो, आपो

देहुं *पंचवा.* आपीश [सं.दा, प्रा.देय]

देहेन *प्रेमाका.* बाळवानी क्रिया, अग्नि-संस्कार [सं.दहन]

देहेवट *चंद्रवा.* जडमूळथी नाश

देहेवट वालो *रूस्तस.* खेदानमेदान करी नाख्युं; जुओ दहेंवट जवुं

दैवजोग *षडाबा.* दैवयोग, भाग्ययोग

दैवडा *प्रेमाका.* दैव, भाग्य, नसीब

दैवत *गुर्जरा.* देवताओ

दो *गुर्जरा. लावल.* बे (सं.द्वौ)

दोअंगमो *उषाह.* दुर्गम

दोइ *ऋषिरा. प्रबोप्र. लावल. वीसरा.* बे, बन्ने [सं.द्वौ+अपि]

दोख *दशस्कं(१). नलाख्या. प्रेमाका.* दोष

दोखी *आरारा.. मदमो. वेताप.* अपराधी, पापी (सं.दोषी); *आरारा.* दोष – दूषण उत्पन्न करनारो; जुओ दोषी

दोखीसोखी *आरारा.* दुःखी अने *शोक-वाळो, [*सुखीदुःखी]

दोखे *अखाका.* दुःख आपे

दोगंदक *ऐतिका.* एक देवजाति [सं. दोगुंदक] [जै.]

दोगंधिक *देवरा.* एक विशिष्ट देवलोकनुं नाम [सं.दोगुंदक] [जै.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोगुण *देवरा.* बेवड (सं.द्विगुण)
दो(गुं)छइ *उक्तिर.* घृणा करे
दोटावे *अखाका.* दोडावे, गबडावे
दोटी *उक्तिर. ऐतिरा.* पहेरवानुं वस्त्र, [एक कापड] (सं.द्विपटी); जुओ डोटी
दोठ *आरारा.* प्रहार, चोट (रा.दोट)
दोत *प्रेमाका.* शाहीनो खडियो (अ.दवात)
दोतडि *उक्तिर.* नदी, दुर्गम किनारावाळी नदी (सं.दुस्तटी)
दोभागपणउं *नलरा.* दुर्भाग्य (सं.दौर्भाग्य-त्वनं)
दोभागिणि *जिनरा.* दुर्भागिनी
दोभागीया *आरारा.* दुर्भागी
दोरक *अखाका.* दोरो (सं.)
दोरियां *प्रेमाका.* [दोरानी भात ऊपसती देखाय तेवुं] एक जातनुं कापड
दोरियो *नरका.* गळामां पहेरवानुं घरेणुं
दोल *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* हिंडोळा (सं.दोला)
दोवट **नरप.* [रफेदफे, विनाश]; जुओ दोहोवट
दोवड *वीसरा.* बमणुं, बेवडुं, [खूब] (सं. *दुपुटक/दुवृत्त)
दोवारिक *विक्ररा.* दरवान [सं.दौवारिक]
दोषी *दशस्कं(१).* अपराधी; जुओ दोखी, दोसी
दोशी *प्रेमाका.* कापडियो [सं.दौष्यिक]
दोसी *उक्तिर. नलरा. विमप्र.* कापडनो वेपारी (सं.दौष्यिक)
दोसी *आनंस्त.* दोषवाळो [सं.दोषी]; जुओ दोषी
दोहग *आरारा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). षष्टिप्र.* दुर्भाग्य (सं.दौर्भाग्य)
दोहगपणु *शृंगामं.* दुर्भाग्य
दोहग्गु *ऐतिका.* दुर्भाग्य (सं.दौर्भाग्य)
दोहडउ *उक्तिर.* [*कोई जीवडुं] (सं.द्रोहाटः)
दोहणी *उक्तिर.* दोणी (सं.दोहिनी)
दोहलउं *आनंस्त. चतुचा.* मुश्केल
दोहला *ऐतिरा. प्राचीसं. षडाबा.* दोहद, गर्भिणीना मनोरथ
दोहवट *प्रेमाका.* दश वाटे, दशे दिशामां
दोहिलउं *आरारा. उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. शीलक.* दोह्यलुं, दुःख आपनारुं, कपरुं, मुश्केलीभर्युं, मुश्केली, संकट (सं.दुःख+इल्ल) *आरारा. जिनरा. प्रेमाका.* दुर्लभ, मेळववुं मुश्केल
दोहिलम *आरारा.* दोह्यलापणुं, मुश्केली
दोहिल्लय *तेरका.* दोह्यलुं, कठिन
दोहिल्या *विमप्र.* मुश्केलीथी
दोहिवा *उक्तिर.* दोहवा
दोही *पंचवा.* बन्नेय (सं.द्वौ)
दोहीत्रउ *उक्तिर.* दौहित्र, [दीकरीनो दीकरो]
दोहेलुं *नरका.* दुःखदायक; [मुसीबत]; *देवरा.* दोह्यलुं, कपरुं
दोहो *प्रेमाका.* दश
दोहो दस *कामा(त्रि).* दशे दिशामां
दोहोल *अखाछ.* दोह्यलुं होवुं ते, मुश्केली
दोहोली *अखाका.* दुर्लभ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहोवट **अखाका.* [खेदानमेदान, विनाश]; जुओ दोवट

दोंकार *ऐतिका.* तबलानो अवाज

दौ *सिंहा(शा).* बे [सं.द्वौ]

दौगंधक *शृंगामं.* जैन शास्त्र प्रमाणेनी एक देवजाति (सं.दोगुंदक)

द्यल *मदमो.* दिले, हृदयमां

द्याढि *कादं(शा). नलाख्या.* दहाडे (सं. दिवस-)

द्यामणुं *नलाख्या. प्रेमाका.* दयामणुं

द्याहाडी *रूस्तस.* दहाडी, दररोज

द्याहाडो *रूस्तस.* दहाडो

द्योती *प्रेमाका.* प्रकाशी

द्यौ *अखाका.* आकाश [सं.]

द्रउडइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा.* दोडे (सं. द्रवति, द्राति)

द्रम *गुर्जरा.* वृक्ष (सं.द्रुम)

द्रमक *उपबा.* चलणनुं नाम (सं.)

द्रमकी *गुर्जरा. विराप.* [धमधम] अवाज करी

द्रमद्रमइ *उक्तिर. गुर्जरा.* धमधमे

द्रम्मामु *उक्तिर.* दमाम; जुओ द्रुमाम

द्रव *अभिऊ.* द्रव्य

द्रवडिउ *षडाबा.* दोड्यो (सं.द्रवते)

द्रव्य(?) (कैंद्रव्य) *मदमो.* –, [*निर्धन]

द्रव्य अध्यातम **आनंस्त.* [द्रव्याश्रयी – द्रव्य एटले पदार्थ, मूर्त के अमूर्त, तेनो आश्रय करनार अध्यात्म] [जै.]

द्रव्व *आरारा.* द्रव्य

द्रष्ट *नरप(द).* [दृष्टि], आंख

द्रष्ट्यमुष्ट्य *चित्तसं.* दृष्टिथी अने मुष्टिथी ग्रही शकाय एवा अनुभववाळुं, प्रत्यक्ष अनुभववाळुं

द्रष्ट्ये पड्युं *चित्तसं.* समजमां आव्युं, ख्यालमां आव्युं

द्रसुका *विमप्र.* *धासका, [युद्धना मोटा अवाज]

द्रह *वाग्भवा.* धरो [सं.ह्रद]; *लावल.* तळाव, सरोवर

द्रहद्रहवार *उक्तिर.* संध्यासमय

द्रहद्रहीय *गुर्जरा.* [धमधमी], अवाज करी

द्रहो *अखाछ.* धरो [सं.ह्रद]

द्रंग *ऐतिका.* दुर्ग, [नगर] [सं.]

द्राख *आरारा(व). उक्तिर. गुर्जरा. लावल. वीसरा. षडाबा.* द्राक्ष (सं.द्राक्षा)

द्राम *अंबरा. उक्तिर. प्राचीका. प्रेमाका. मोसाच.* दाम, पैसा (सं.द्रम्म)

द्राहि *नरप.* दृष्टि, नजर

द्रु **लावल.* [ध्रुवनो तारो]

द्रुउ *प्राचीका.* ध्रुवनो तारो

द्रुडि *कादं(शा).* दोडे

द्रुमचोला (विद्रुमचोला) **लावल.* [परवाळा जेवा राता]

द्रुमंडल *प्राचीका.* ध्रुवमंडल, [ध्रुवप्रदेश]

द्रुमाम *हम्मीप्र.* दमाम, दबदबो; जुओ द्रम्मामु

द्रू *कृष्णबा. हरिवि.* ध्रुव [हिरण्यकशिपुनो पुत्र]; *हरिवि.* ध्रुव, [अचल, स्थिर]

द्रूपद *नलरा. प्राचीफा.* ध्रुवपद, पद्यमां दरेक कडीने अंते पुनरुक्त थती पंक्ति, टेक

द्रूमंडल *कृष्णच.* ध्रुवमंडल, [ध्रुवनो तारो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्रुव **नेमिछं. *लावल.* [ध्रुवनो तारो]
ध्रुवमणि **ऐतिका.* [ध्रुवनो तारो]
ध्रेठि *आरारा. उषाह. गुर्जरा. नलरा. प्राचींफा. प्राचीसं. विराप. वीसरा. हम्मीप्र.* दृष्टि, नजर
ध्रेष्ठी *विक्रच.* दृष्टि, नजर
ध्रेहे *चित्तसं.* धरो, जलाशय (सं.ह्रद्)
ध्रो *वेताप.* दरो, दुर्वा
ध्रोई *दशस्कं(१).* दरो, दुर्वा
ध्रोडइ *आनंस्त. कादं(शा). दशस्कं(१).* दोडे (सं.द्रु परथी)
ध्रोण *प्रेमाका.* एक माप; *हरिख्या.* हांडो (सं.)
ध्रोह *आरारा.* अपराध
द्वादश वाटे. *प्रेमाका.* बारे वाटे, बधी रीते
द्वारा *चित्तसं.* साधन, मार्ग
द्विगुण *प्रेमाका.* बमणुं, बे गणुं [सं.]
द्विज *प्रेमाका.* बे वखत जन्मनारा, दांत [सं.]
द्वीपायन *अखेगी.* द्वैपायन, व्यास
द्वीब *आरारा.* द्वीप

धउल- *वीसरा.* धोळवुं (सं.धवल-)
धउलउ *आरारा. उपबा. गुर्जरा. वीसरा.* धोळुं (सं.धवल)
धखी *आरारा.* गुस्से थई [सं.धिक्ष्]
धगड *हम्मीप्र.* मुस्लिम योद्धो
धगडमल *नरका.* जोरावर के खडतल पुरुष
धज *वीसरा.* धजा (सं.ध्वज)
धजबंध *मदमो.* खुल्लेखुल्लुं

धडहड *गुर्जरा.* धडधड
धडहडइ *उक्तिर. गुर्जरा.* धडधडे (प्रा. धडधडिय)
धडु (धडु प्रीछउ) **विमप्र.* [अंदाज जाण्यो, केटलामां छे ते जाण्युं, परीक्षा करी लीधी]
धडू धरि *अंगवि.* *स्थिर टकी रहे, [तोले आवे]
धढु *विराप.* धड, शरीर
धढूक्या *ललिरा.* [धडूक्या], धडधडाट करता आव्या
धण *अभिऊ. आरारा. गुर्जरा. देवरा.* धन, पैसो
धण *आरारा.* धन्य
धण *चतुचा. जिनरा. प्राचीसं. वीसरा.* स्त्री, प्रिया (सं.धनिका) [सं.धन्या]
धणउ *विक्रच.* धनुष्य, कामठुं
धणकणकंचणिइं *ऐतिरा.* धनधान्यसुवर्ण वडे
धणचर *नेमिछं.* पशु, धणमां फरनार
धणवइ *प्रद्युचु.* कुबेर (सं.धनपति)
धणि *प्राचीफा.* पति (सं.धनिन्); *प्राचीसं.* प्रिया; जुओ धण
धणहर **कृष्णच.* [बाणावळी] [सं.धनुर्धर]
धणिउ *उक्तिर.* धणधण्युं
धणिउ *गुर्जरा.* धन्य, भाग्यशाळी
धणिया *उक्तिर.* [*धाणाभाजी, *कोथमरी] (सं.धनिका)
धणीप *षष्टिप्र.* स्वामित्व, स्वामीपणुं (सं. धनित्व)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणीवउ *उक्ति.* [?] (सं.धन्यवयाः)

धणु *तेरका. नेमिछं.* धनुष

धणुह *अंगवि. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्रच. षडाबा.* धनुष्य (सं.धनुष्)

धणुहर, धणुहरु *ऐतिका. *विक्रच.* धनुर्धर

धणुहीय *वसंफा. वसंवि.* धनुष्य (सं.धनुष्)

धणुं *प्राचीका.* धनुष्य (सं.धनुष्)

धतूरियउ *उक्ति.* जेणे धतूरानो नशो कर्यो छे एवो (सं.धत्तूरित)

धत्तुर, धत्तुरउ *आनंत. उक्ति.* धतूरो (सं. धत्तूरक)

धन *गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछं. लावल. वीसरा.* धन्य

धनद *आरारा. गुर्जरा. चंद्रवा.* कुबेर [सं.]

धनदाण *ऐतिका.* धनसंपत्ति आपनार

धन धन *वसंवि.* धन्य धन्य

धनागरउ *उक्ति.* [?] (सं.धान्यनागरम्)

धनि *वीसरा.* धन्य

धनुहडी *प्राचीफा.* धनुष्य (सं.धनुष्)

धन्न *आरारा. तेरका. लावल.* धन्य

धफोई *प्रेमाका.* खूब मारी, धोई नाखी

धबक *गुर्जरा.* प्रहार, [थाप]

धबल *प्रेमाका.* *बेवकूफ, [*मंदिर]; जुओ धमल- घर, धवल

धभधभ *विमप्र.* धबधब

धमइ *उक्ति.* तपावे (सं.धमति)

धमल-धर *हम्मीप्र.* धवलगृह, महालय

धमील *प्रेमाका.* धम्मिल, चोटलो

धम्म *गुर्जरा. तेरका.* धर्म

धम्ममइ *ऐतिका.* धर्ममति, [धर्मबुद्धिवाळो]

धम्मलाभु *तेरका.* धर्मलाभ

धम्मिय *तेरका.* धर्मिष्ठ जन, समान धर्म पाळनार (सं.धार्मिक)

धम्युं *प्रेमाका.* धमणथी तपावेलुं

धम्युंधूप्युं *अखाका.* धमणथी धमावेलुं अने तपावेलुं

धम्युंधूप्युं वाए खूए *चित्तसं.* श्रमथी मेळवेलुं सहेजमां गुमावे

धम्युंधूप्युं वाये जाय, धम्युंधूप्युं वाये वटे *अखाका.* धम्युंधूप्युं फोगट जाय, [तपावेलुं वायुथी ठरी जाय, श्रम एळे जाय]; जुओ वाये जाय, वाये वटे

धय *ऐतिका. तेरका.* ध्वज

धयरठू *गुर्जरा.* धृतराष्ट्र

धयराठ *गुर्जरा.* धृतराष्ट्र

धयवड *ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीफा.* धजा, पताका (सं.ध्वजपट)

धर *गुर्जरा. विराप. वीसरा.* पृथ्वी, धरती (सं.धरा); *तेरका.* भूमि, जमीन-जायदाद

धर *प्रेमाका.* पर्वत [सं.]

धर *अखाका. ललिरा. *हरिख्या.* मूळ, आदि [तत्त्व], आरंभ [सं.धुर्]

धरइ *आरारा.* स्थापित करे; *आरारा. तेरका. वीसरा.* राखे, मूके; *उपबा. उषाह. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* धारण करे, राखे (सं.धरति)

धर-चरमनी *नरका.* [पहेलेथी छेल्ले सुधीनी, संपूर्ण], उत्तम कोटिनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धरणइ *उक्ति.* गीरवी (सं.धरणके) [रा. धरणुं]

धरणउ जावइ जुओ जामइ

धरणहार *आनंत. उपबा.* धरनार, धारण करनार

धरणीधर *नेमिछं.* पृथ्वीने धारण करनारा, पर्वतो [सं.]

धर थकी *कादं(शा).* मूळथी, प्रथमथी (सं.धुरा परथी)

धरथी धुर लगे *अखाका.* *आदिथी धुरा – अंत सुधी, [मूळथी आगळना भाग सुधी, संपूर्णपणे]

धरधीश *मदमो.* पृथ्वीपति (सं.धरा+ अधीश)

धरम-पडो *दशस्कं(२).* धरमनो ढोल (सं. धर्मपटह)

धरमंडलि *गुर्जरा.* पृथ्वीमंडल (सं.धरा+ मंडल)

धरहडी *गुर्जरा.* [धणधणी], धूजी

धराधर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पृथ्वीने धारण करनार शेषनाग [सं.]

धरि *प्राचीफा.* प्रारंभमां (सं.धुर्)

धरि *विक्ररा.* पकडी, [स्वीकारी]; *नलाख्या.* धरे, धारण करे, विचारे (सं.धरति)

धरिवुं *उक्ति.* धरवुं, पकडवुं, धारण करवुं

धरी *कामा(शा).* (बदलामां) आपी, [गीरवे मूकी]

धरेवि *आरारा.* धीरज बंधावे छे, हिंमत आपे छे

धरेवि *ऐतिरा.* धरीने

धर्म-खंडे *प्रेमाका.* धर्मना खंडनथी

धर्मधोरिंधर *प्रेमाका.* धर्मधुरंधर, धर्मनी धुरा धारण करनार

धर्य *उषाह.* [मूळथी, मांडीने]

धलहर *उषाह. सिंहा(म). हम्मीप्र.* हवेली, महालय (सं.धवलगृह)

धव *आरारा(व). नलाख्या.* धावडो, एक झाड (सं.)

धवन जुओ गवन-धवन

धवल *अंगवि.* महेल [सं.]

धवल *अभिऊ. आरारा. गुर्जरा. नलरा. विमप्र.* धोळ, एक प्रकारनुं मंगलगीत (सं.)

धवलइ *उक्ति. तेरका.* धोळे (सं.धवल-यति)

धवलक *तेरका.* धोळकुं [गाम] (सं.)

धवलग्रह *पंचवा.* महेल (सं.धवलगृह)

धवलमंगल *ऐतिका. चारफा. विक्ररा.* मंगलगीत, धोळ

धवलहर *गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीसं. सिंहा(म).* हवेली, महेल (सं.धवलगृह)

धवाल *आरारा(व).* ?, [कोई वनस्पति]

धसक्कइ *गुर्जरा.* धूजी ऊठे; *विमप्र.* धासको – भय अनुभवे [दे.]

धंखना *प्रेमाका.* झंखना, तालावेली

धंग(?) *मदमो.* दिंग करे तेवा, छक करे तेवा, [अद्‌भुत] [*हिं.दंगह]

धंध *अखाका. अखाछ. चित्तसं.* धांधल, जंजाळ, उपाधि, आपत्ति; *प्रेमाका.* धांधल, घमसाण; *मदमो.* धांधल,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घमसाण; [गरबड, उपाधि]; *सिंहा(शा). [जंजाळ, गूंचवण]; चंद्रवा. सम्यचो. मिथ्या प्रवृत्ति [– मान्यता, विचार]; *गुर्जरा. [जंजाळ]; आरारा. कामकाज

धंध (अंध-धंध) *अखेगी. [अंधाधूंधी, अंधेर]

धंधउ, धंधु *प्राचीसं. [जंजाळ, मिथ्या प्रवृत्ति]

धंध-धुवारी (अंध ने धंध-धुवारी) *अखाका.* *धांधल अने धुमाडी, [अंधाधूंधी – अंधेर अने धुमाडाभरी स्थिति]

धंधह *नरप(द).* *द्वंद्वनी उपाधि, [द्वन्द्वनी स्थिति], [मिथ्या स्थिति]

धंधु जुओ धंधउ

धंधोड *नरका.* ढंढोळ, हलाव

धंधोडी *अभिऊ.* रमवानुं कोई साधन, [*दंडूको]

धंधोळवुं, धंधोलवुं *कादं(शा). गुर्जरा. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंहा(शा).* ढंढोळवुं, हलबलावबुं, धुजावबुं, व्यग्र करबुं, हानि करबी (दे.धंधोलिय)

धंधोलियय *तेरका.* जंजाळमां सपडायेलुं [क्षुभित, व्यग्र] (अप.धंध+ओल्ल+य)

धंनु *गुर्जरा.* धन्य

धा *अखाका. अखाछ.* दोडादोड, धांधल, प्रवृत्ति, [हायवोय, तालावेली, लालसा]

धाइ *आरारा.* धाव, आया [सं.धात्री]

धाई *नरप(द).* दोडी [सं.धावति]

धाईक *मदमो.* [धारण करनार]

धाओडी *नलाख्या.* धव नामनुं झाड, एनी नानी जात

धाड- *जिनरा. प्राचीसं.* आक्रमण करवुं, विनाश करवो [दे.]

धाडि *उक्तिर. ऐतिका. प्राचीफा. षडाबा.* आक्रमण, धाड (सं.धाटी) [दे.]

धाडि सईनी जुओ घाडि सईनी

धाणक *विराप.* धनुष्य चलावनार, धनुर्धारी (सं.धानुष्क)

धाणि *अभिऊ.* धावण

धाणुक *गुर्जरा.* बाणावळी (सं.धानुष्क)

धात *आरारा.* प्रकृति, अवस्था, दशा (सं. धातु); *नलरा. प्रेमप.* प्रकृति, स्वभाव; *आरारा. चित्तसं. नलरा. हरिख्या.* धातु, पदार्थ; *अखाका. *अखाछ.* मूळ, आत्मस्वरूप; *अखाका. अखाछ. नलरा. हरिख्या.* प्रकार, [भेद], रीत [सं.धातु]

धातइ *उक्तिर.* रागथी (सं.धातुना)

धात मेलइ *आरारा.* प्रकृतिनो मेळ करे, संबंध जोडे

धातवुं *अखाछ.* फावबुं, अनुकूळ आववुं

धातस्वायु *उक्तिर.* [?] [सं.धातुस्वादकः]

धाता *चतुचा.* विधाता, ब्रह्मा [सं.]

धातु *अखाका.* वीर्य [सं.]

धातुकर *प्रेमाका.* [*पर्वत] [सं.]

धातुवादी *चंद्रवा.* सुवर्णसिद्धिनो प्रयोग करनार [सं.]

धात्री *आरारा.* धावमाता, आया [सं.]

धात्रीफल *कादं(शा).* आंबळुं (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धाधूप **प्रेमाका.* [(शोधवा माटेनी) दोडादोड, दोडधाम]

धाम *चित्तसं.* वैभव, प्रताप; स्थिति, स्वरूप [सं.धामन्]

धामण *आरारा(व). उक्तिर.* धामण, एक वनस्पति (दे.धम्मण्ण)

धा-मार्युं **अखाका.* [दोट, हायवोय, लालसाथी]

धामिय *गुर्जरा.* धर्मी (सं.धार्मिक)

धामी *लावल.* *धार्मिक, *धर्मिष्ठ; [*स्वर्गमां रहेनार, *देव]; [*पराक्रमी]

धाय *आरारा.* धावमाता [सं.धात्री]

धायइ *ऋषिरा.* धराइ जाय (सं.ध्रै)

धायउ *उक्तिर.* धरायो (सं.ध्रातः); जुओ आपणी धायउ

धायेधूपे जुओ धूपे, धावुंधूपवुं

धार *नलरा.* मध्य भारतमां आवेल धारप्रदेश

धार अणी अटके नहीं *अखाका.* तलवार के भालानी धार अडे नहीं, [कशी हानि न थई शके]

धारइं *आनंस्त.* धारण करे, [राखे]

धार खंचइ जुओ खंचइ

धारण *प्रेमाका.* धरी राखनार, टेको, [थांभलो]

धारण *अखाका. प्रेमाका.* धीरज, [*हिंमत]; *हरिख्या.* *मननी दृढता, [हिंमत]; [*धारण करवुं – राखवुं ते] (सं.धारणा)

धारण **गुर्जरा.* [ग्रहण, स्वीकार]

धारणा *आनंस्त.* ग्रहणपटुता

धारवुं *कादं(ध्रु). चतुचा.* पकडवुं, ग्रहण करवुं

धारह *नेमिछं.* धारण करनार(नुं)

धारावउं (पाउ धारावउं) *षडाबा.* [पग] धरावुं, रखावडावुं, [पधरामणी करावुं] (सं.धारयति)

***धार्यां [धार्यां]** **नरका.* [धारण – घेनंवाळां]

धाव *प्रेमाका.* धवडावनारी दाया [सं.धात्री]

धावइ *उक्तिर. दशस्कं(१).* दोडे (सं.धावति)

धावुं-धूपवुं *अखाछ.* दोडवुं, [दोडादोड करवी, दोडधाम करवी, (तीर्थोमां) भटकवुं]

धास्यइ *आरारा.* चडी आवशे ? उत्पन्न थशे ?

धाह *आरारा. कृष्णच. वीसरा.* (मदद माटेनी) धा, पोकार, रुदन, क्रंदन [दे. धाहा]

धाहडी *आरारा(व). उक्तिर.* धावडी, एक वनस्पति (सं.धातकी)

धाहुडी *षडाबा.* कोईक प्रकारनो पथ्थर [के माटी]

धांख *अखाका. उक्तिर. कादं(शा). नलाख्या.* धखना, झंखना, आतुरता

धांमधुमाडे धाय **चंद्रवा.* [धामधूमथी, धमधमतुं, धसमसतुं दोडे]

धिकावुं *नरका.* धिखावुं, खूब गरम करुं

धिग *गुर्जरा.* धिक्

धिगु धिगु *तेरका.* धिक् धिक्

धिधिकट, धिधिकट्टि *गुर्जरा. लावल.* मृदंगना अवाजसूचक शब्दो, – बोल

धिन, धिन्न *नलरा. प्राचीफा.* शाबाश, धन्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धिष्ट *आरारा.* धृष्ट, निर्लज्ज

धिंगडमाल *जिनरा.* जबरदस्त, [समर्थ वीर]

धी जुओ आघी, सारधी

धीअ *कृष्णच. विक्ररा.* पुत्री [सं.दुहिता]

***धीअह** [**थीअह**] *विक्ररा.* [स्त्री]

धीइं *शृंगामं.* बुद्धिथी, [स्वेच्छाथी, मरजी मुजब]

धीकइं *प्रेमाका. शृंगामं.* धगधगे, सळगे

धीकांइ *पंचवा.* चिता, धीकणी (सं.धिक्ष्)

धीज *जिनरा. नरका. प्रेमाका. लावल. विमप्र.* पाप माटेनी दिव्य [चमत्कार-भरेली] परीक्षा, कसोटी [अग्निमां हाथ नाखवो वगेरे] (सं.दिव्य); जुओ धीज्य

धीज *आरारा.* द्विज, ब्राह्मण

धीजी *आरारा.* ब्राह्मणी (सं.द्विज+ई); जुओ दीव्य, धेजी

धीज्य *नरप(द).* [दिव्य] आकरी कसोटी; जुओ दीव्य, धीज

धीट *दशस्कं(१). प्रेमाका.* हिंमतवाळुं, दृढ

धीठ *अखाका. आरारा.* पक्कुं, नफ्फट, लुच्चुं (सं.धृष्ट)

धीठाइ *आनंस्त.* धीठताथी, [दृढताथी, हठ-पूर्वक]

धीठी *प्राचीफा.* कपटी (सं.धृष्टा); *ऋषिरा.* निर्लज्ज, बेशरम

धीमर *प्रेमाका.* माछीमार [सं.धीवर]

धीय *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* पुत्री (सं. दुहिता)

धीयडी *नरका. नरप.* दीकरी (सं.दुहिता)

धीया *उक्तिर.* पुत्री [सं.दुहिता]

धीर *प्रेमाका.* धीरज, धैर्य

धीरट्ठ *नलरा.* धैर्य; धैर्यवान (सं.धृष्ट); *षष्टिप्र.* धीट, निर्लज्ज

धीरठपणउ *सिंहा(म).* धैर्य (स.धृष्टत्वन)

धीरणा *ऋषिरा.* धीरज [आपवी ते], [सांत्वना]

धीरय *नलाख्या.* धीरज (सं.धैर्य)

धीरवइ *उक्तिर.* आश्वासन आपवुं, हिंमत आपवी (सं.धीरयति)

धीरखुं *चतुचा. *दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* विश्वास मूकवो

धीरिम *आरारा. तेरका. प्राचीफा.* धैर्य, धीरज (सं.)

धीर्ज *दशस्कं(२).* धीरज, धैर्य

धीवर *ऐतिरा. गुर्जरा.* माछीमार (सं.)

धीश *दशस्कं(१). दशस्कं(२). मदमो. वेताप. हरिख्या.* अधीश, राजा

धीस *कामा(शा).* राजा, अधिपति [सं. अधीश]

धींग *आनंस्त.* धींगो, समर्थ

धींगड *ऐतिका.* मोटो, जबरदस्त, मजबूत, पुष्ट

धींगडमल *नंदब.* धींगा मल्ल जेवो

धींगा *ऐतिका.* मोटो, जबरदस्त, मजबूत, पुष्ट

धुणह *गुर्जरा.* धनुष

धुतारे *नरका.* धूती ले, [छेतरीने लई ले]

धुत *मदमो.* धूर्त

धुनइ *आरारा.* ध्वनिथी

धुनि *हरिख्या.* घोष, अवाज (सं.ध्वनि)

धुमाय *प्रेमाका.* धुमाडो करे [सं.धूम-]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धुय *प्राचीसं.* ध्रुवनो तारो

धुयरय *ऐतिका.* निष्पाप, दोषरहित, कर्मदोषहीन (सं.धूतरजस्)

धुर *आरारा. ऋषिरा. ऐतिरा. विमप्र. वीसरा. *षडाबा.* आरंभ, पहेलुं, मूळ (सं.धुर्); *ऋषिरा. तेरका.* अग्र स्थान, मुख्यता (सं.धुरा); **अखाका.* [आगळ-नो भाग]; जुओ धरथी धुर लगे

धुरहि *ऐतिका.* आरंभमां, प्रथम स्थाने

धुरि *आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. *नेमिछं. प्राचीसं. *लावल. *विराप. शृंगामं.* मूळ, पहेलुं, पहेलां, आरंभमां, पहेलेथी, मूळमांथी (सं.धुर्); *कर्पूमं. गुर्जरा. प्रबोप्र. लावल.* आगळ, अग्रभागमां, मोखरे; *लावल.* धुरामां, धूंसरीमां

धुरिधर *प्रबोप्र.* मोवडी, अग्रणी

धुरी *आरारा.* बळद (सं.धुरिन्)

धुरीन *जिनरा.* धुरंधर

धुलहडी *उक्तिर. प्राचीफा.* फागण मासनी शुक्ल प्रतिपदा, धुळेटी [सं.धूलि परथी]

धुलही *विमप्र.* धोळ गानारी

धुली *वाग्भबा.* धोळी [सं.धवल]

धुव *प्राचीफा.* स्थिर, निश्चल (सं.ध्रुव)

धुवारी जुओ धंध-धुवारी

धुवुल जुओ धवल

धुवेष *देवरा.* द्वेष

धुसइ *गुर्जरा.* धसे

धुसट, धुंसट *विमप्र.* साडलानो छेडो ओढाडवानी [प्रसारवानी] क्रिया; *नेमिछं. *विमप्र.* [पाथरणुं]; जुओ धुंसर

धुसळ *प्रेमाका.* (लग्न वखते वरने पोंखवा माटे वपराती सांठीकडानी) धूंसरी

धुंबड, धूंबड *प्रद्युचु.* मोटा मल्ल; *गुर्जरा. विराप.* जंगली, उग्र, [जुलमी, अनाडी पुरुष]; जुओ धूबडि, धूमड

धुंसट जुओ धुसट, धुंसर

***धुंसर (धुंसट)** **लावल.* [पाथरणुं]

धू *उषाह. प्राचीसं.* पुत्री (सं.दुहित्)

धूअ *गुर्जरा. प्राचीफा. प्राचीसं.* पुत्री (सं. दुहिता)

धूअउ *उक्तिर.* धुमाडो (सं.धूम)

धूअडइ *शृंगामं.* धुमाडाथी

धूअरि *उक्तिर.* झाकळ (दि.धूमरी); जुओ धूयरि

धूआ *अंबरा. उषाह.* पुत्री (सं.दुहिता)

धूआ *उक्तिर.* ध्रुवा, [*पद्यनी टेकनी पंक्ति, *यज्ञनुं घृतपात्र]

धूआडु *वाग्भबा.* धुमाडो

धूजइ *ऋषिरा. गुर्जरा. नलाख्या. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* धूजे (सं. धूयते)

धूटस धात *आरारा.* धूसट धात ? नश्वर – तुच्छ पदार्थ ?

धूता *अखाछ.* *धूर्त, *धुतारा, [*धूत्या, *छेतर्या]

धूतारिवउं *उपबा.* धूतवुं, छेतरवुं (सं.धूर्त-कार-)

धूधूइ *प्रद्युचु.* (धुमाडाथी) धूंधवाय [सं. धूमान्ध]

धून *नरका.* ध्वनि, अवाज

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धूनि, धूनी *अंबरा.* ध्वनि; जुओ शंखधूनी
धूप *आरारा.* तडको [हिं.] [*सं.]
धूपइ *उक्तिर.* धूप करे (सं.धूपयति)
धूपघटी *नलरा.* धूपदानी (सं.)
धूपधाणउं *उक्तिर. विमप्र.* धूपदानी
धूपायण *विक्ररा.* धूपदानी
धू पे [धाये धू पे] (ध्याये अूखेको. *तप करे, [दोडादोड करे, (तीर्थोमां) भटके]
धूबडि (धूंबडि) *विमप्र.* [अनाडी, जंगली स्त्री]
धूम *वसंफा. वसंफा(ल).* धुमाडो
धूमविराल *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* धूमवराळ (काढतां अस्त्रो)
धूमड **नरप.* [अनाडी, जंगली पुरुष]; जुओ धुंबड
धूम्रपान *अखाका. नरका. प्रेमाका.* हठयोग-नी क्रिया, हाथ ऊंचा राखी, चारे दिशामां अग्नि अने उपर सूर्य एम पंचाग्नि सेववानी एक उग्र तपश्चर्या, [धूणी पर ऊंधे माथे रही करातुं तप]
धूम्रमारग *अखाका.* यज्ञनो, क्रियाकांडनो मार्ग
धूय, धूया *आरारा. तेरका. प्राचीसं.* पुत्री (सं.दुहिता); जुओ मद्रधूय
धूयरि *षडाबा.* अफायनो एक प्रकार, झाकळ [दे.धुमरी]; जुओ धूअरि
धूरइं *गुर्जरा.* उद्विग्न थाय, [*पहोंचे], [*पहेलां ज]
धूळकट *प्रेमाका.* धूळनो कोट, वंटोळियो
धूळकोट *प्रेमाका.* धूळनो कोट, वंटोळियो
धूलहडी *नलरा.* धूळेटी (सं.धूलि परथी)
धूले धलहरे *विमप्र.* धोळां धवलगृहे
धूव *प्राचीसं.* दुहिता, कन्या
धूसर *ऋषिरा.* भूखरा रंगनुं (सं.)
धूहलइ *शृंगामं.* धूंधळो, [अंधकारभर्यो, घनघोर]
धूंखल, धूंखलुं *अखेगी. चित्तसं. वाग्भबा.* धुंवाडियुं, धूसर, धूंधळुं
धूंधूंकार *चित्तसं.* अंधकार
धूंधूतो *अखेगी.* धूंधवातो [सं.धूमान्ध-]
धूंबड जुओ धुंबड
धूंबडि जुओ धूबडि
धूंसइ *उक्तिर.* नाश पामे (सं.ध्वंसते)
धृड, धृढ *सिंहा(शा).* दृढ
धे जुओ मानेश धे, शधे
धेडी *नरप.* धेनु, गाय
धेण *प्रेमाका.* धेनु, गाय
धेणू *उक्तिर.* धेनु, गाय
धेण्य *प्राचीका.* सीमंतवाळी स्त्री (सं.धन्या)
धेजी *आरारा.* ब्राह्मणी (सं.द्विज+इ); जुओ धीजी
धेन *आरारा. प्रेमाका.* धेनु, गाय
धेय *सिंहा(शा).* दीकरी
धेर *अखाका. अखाछ.* धरमूळ, मूळ
धेर्य *चित्तसं.* धरमूळ, मूळ, मूळथी, मूळ-मांथी, संपूर्णपणे
धेंण *सिंहा(शा).* नायिका, प्रियतमा [सं. धन्या]
धैनड *जिनरा.* पुत्र [रा.]
धोअइ *उक्तिर.* धूए (सं.धावति) [सं.धौवति]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धोक *ऐतिका.* साष्टांग प्रणाम

धोख *जिनरा.* *नमस्कार, [*वंदनीय, *प्रशस्त]

धोखो *प्रेमाका.* दुःख, शोक; **अखाका.* [आपदा, क्लेश]

धोटा *जिनरा.* पुत्र [रा.]

धोती *चित्तसं.* शरीरनां आंतरडां वगेरे स्वच्छ करवा माटेनी हठयोगनी षट्कर्मविधि पैकीनी एक [सं.धौल]

धोप, धोपा *रूस्तस.* एक जातनी बंदुक

धोयण *उक्ति्र.* धोवुं ते, धोण (सं.धावनम्) [सं.धौत परथी]

धोयती *षडाबा.* धोती, धोतियुं

धोरणि, धोरणी *गुर्जरा.* *विमप्र. विराप. श्रेणी (सं.)

धोरंधर *चंद्रवा. मदमो.* धुरंधर, अग्रणी, आगळ पडतो

धोरिउ *गुर्जरा.* बळद (सं.धौरेय)

धोरी *अभिऊ. विमप्र.* धुरा धारण करनार, मुख्य, मोटो, मोखरे रहेनार; *आरारा. उक्ति्र. प्रेमाका. लावल.* धुराने धारण करनार, बळद (सं.धौरेय)

धोलो *प्रेमाका.* थप्पड, लपडाक

धोवणी *उक्ति्र.* एक वनस्पति, [*भोंरींगणी] (सं.धावनिका)

धोवति *प्राचीसं.* धोती, [धोतियुं]

धोंकार *विक्ररा.* [धों एवो] अवाज

धोंसा *रूस्तस.* नगारा [रा.; हिं.]

ध्याडि *विमप्र.* धाड, [आक्रमण, हल्लो]

ध्यात *अंबरा.* प्रकृति, [स्वभाव, जात] (सं. धातु)

ध्याता *नरका.* ध्यान करनार

ध्यातु *अंबरा.* धातु, [खनिज पदार्थ]

ध्यायइ *उपबा.* देखाय, जणाय; [(ध्यान) धराय]; *कादं(ध्रु).* [एकाग्रताथी] निहाळे, जुए

ध्यावुं *आनंस्त. नरका. प्रेमाका. लावल.* ध्यान धरवुं

ध्ये *चित्तसं.* ध्येय

ध्रड *रूस्तस.* धड

ध्रडता *मदमो.* दृढता

ध्रढ *मदमो.* दृढ

ध्रम *प्राचीफा.* धर्म

ध्रसकइ *जिनरा. प्राचीसं.* भयथी छळे, ध्रासको खाय

ध्रसकाइ *जिनरा.* भयथी छळावे, ध्रासको पडावे

ध्रसक्कइ, ध्रसूकइ *गुर्जरा.* भयथी छळे, ध्रासको खाय (प्रा.ध्रसक्किय)

ध्रसुड- *नलरा.* हांकी काढवुं, [खसेडवुं, दूर करवुं]

ध्रसूकइ जुओ ध्रसक्कइ

ध्रा- *उक्ति्र. कादं(शा). तेरका. नलाख्या. प्रद्युचु. प्राचीसं.* धरावुं, तृप्त थवुं (सं.ध्रायते)

ध्राय *अखाछ.* अधरके, जमावे

ध्रावड *मदमो.* द्राविड

ध्रास *अभिऊ.* ध्रासको

ध्रुवउ *उक्ति्र.* स्तंभ, खूंटो (सं.ध्रुवकः)

ध्रू *उक्ति्र.* ध्रुव, [*स्थाणु, *स्तंभ, *खूंटो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्रेठउ *उक्ति.* धृष्ट
ध्रोई *प्रेमाका.* धरो, दूर्वा, एक घास
ध्रोब *उक्ति.* दूर्वा
ध्रौव्य *आनंस्त.* वस्तुनी स्थिरता, जैन दर्शनी त्रिभंगीमांनो एक भंग [सं.]
ध्वजवड *हम्मीप्र.* ध्वजपट, धजानुं वस्त्र
ध्विज *नलाख्या.* ध्वज, वावटो

न *अभिऊ. उषाह. गुर्जरा. तेरका. नलरा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंहा(म). षडाबा. षष्टिप्र.* ने (भारवाचक) (सं.ननु के नु) (प्रा.णाइ)
नअंणे *मदमो.* नयणे
-नइ *आरारा. गुर्जरा. नलरा.* माटे
नइ *वीसरा.* ने (भारवाचक)
नइ *उक्ति. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. हम्मीप्र.* नदी
नइडउ *वीसरा.* नजीक (सं.निकट)
नइण *वीसरा.* नयन, आंख
नइतरु **शृंगामं.* [नदी तथा वृक्ष]
नइहर *प्राचीसं.* पियर (सं.ज्ञातिगृह; हिं.नैहर)
नई *नलरा.* नदी
नउकार *आरारा.* नवकार, नमस्कारमंत्र
नउतन *चतुचा.* [नूतन], सुंदर
नउद *उक्ति.* पींज्या विनाना ऊनथी बनावेलुं एक प्रकारनुं पाथरणुं [दे.णवतय]
नउल *आरारा. उक्ति.* नोळियो (सं.नकुल)
नक-वेसर *नरका.* नाकनी वाळी
नकाळजो *नरका. प्रेमाका.* काळजी [दरकार] वगरनो, चीवट वगरनो
नक्र *कादं(शा).* मगर (सं.)
नक्षत्रपति *प्रेमाका.* चंद्र [सं.]
न-क्षात *प्रेमाका.* क्षत्रियहीन, [योद्धा वगरनुं]
नखपात *प्रेमाका.* नखना घा [सं.]
नख्यैत्र *ऐतिरा.* नक्षत्र
नग *चित्तसं. नरका-२.* पर्वत [सं.]
नगयुग *हरिवि.* वृक्षयुगल [सं.]
नगरगोयर *पंचवा.* नगरनो दरवाजो (सं.नगर +गोपुर)
नगरनायिका *कादं(ध्रु).* गणिका
नगरां *आरारा.* रहेठाण, दर (दे.णगर); जुओ कीडी-नगरां
नगशृंग *हरिवि.* पर्वतशृंग [सं.]
नगीनो *ऐतिका. प्रेमाका.* रत्न, झवेरात
नगुरो *अखाका.* गुरु वगरनो, [गुरुभावथी पर थयेलो, केवल आत्मनिष्ठ]
नगोदर *नरका. प्राचीफा.* कंठनुं एक आभूषण; जुओ हार नगोदर
नघट नफेरी *कृष्णबा.* वाजिंत्रना प्रकार
नघरो *मदमो.* नघरोळ, बेफिकरो
नघात *अखाछ.* घात न थाय ए रीतनी
नघूष *अंबरा.* नहुषराजा
नचित *नरप(द).* निश्चित, चोक्कस, नक्की
नच्चइ *गुर्जरा. तेरका.* नाचे (सं.नृत्यति)
नजिम *शृंगामं.* ?, [*जोशी] [*फा.नजुमी]
नजिरिं *आनंस्त.* नजरे
नटन *आनंस्त.* नृत्य (पूजा)
नट माझि *अंबरा.* नटोनी वचमां
नटवो *नरप(द).* उत्तम नट, [नाचनार] (सं. नट+वर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नटावउ *अंबरा.* उपबा. नटवो, नृत्य करनार
नटावी *अंबरा.* नर्तिका
नटीए (नाटक नटीए) *नरका.* वेश भजवीए, [दिखाव करीए]
नटुई *सम्यचो.* नटडी, नर्तकी
नटुओ *प्रेमाका.* नट, नर्तक
नटे *नलरा.* दुःख पामे (दे.णड); **प्रेमाका.* [पीडे]; जुओ नडइ
नट्टरसि *स्थूलिफा.* नृत्यना रसमां
नट्टारंभ *गुर्जरा.* नृत्य करवुं ते (सं.नाट्य+ आरंभ)
नट्ठ(नट्ठ सल्ल) *शृंगामं.* शरीरमां घूसी गयेलो [ने भांगीने एमां रही गयेलो कांटो] (सं.नष्टशल्य)
नट्ठा *नेमिछं.* [नाठा], नासी गया [सं.नष्ट]
नड *गुर्जरा.* नट, [नर्तक]
नडइ *उपबा. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. प्राचीसं. मदमो. लावल.* व्याकुळ थाय, हेरान थाय, कष्ट पामे; व्याकुळ करे, दुःखी करे (प्रा.णडिअ) [सं.नटति]; जुओ नटे
नड-पिक्खणउं *प्राचीसं.* नटखेल (सं. नटप्रेक्षणकम्)
नडाया *लावल.* *झांखा पाड्या, [नडतर कराया, व्याकुळ कराया]
नडिया जुओ सहु नडिया
नणदर *थिमप्र.* नणंद [सं.ननान्दृ]
नणंदर *नलरा.* नणंद [सं.ननान्दृ]
नति *अंबरा.* नित्य
नत्थी *तेरका. ललिरा.* नथी (सं.नास्ति)
नथ *नरप(द). प्रेमाका.* नाकमां पहेरवानी कडी, वाळी [सं.नस्ता]
न-दोसी *अभिऊ.* दोष विनानी
नद्द *गुर्जरा. लावल.* नाद (सं.नद)
नधि *आरारा. नलरा.* निधि, भंडार, समृद्धि
ननु *नलाख्या.* नन्नो, नकार (सं.न-न)
नन्दइ *प्रबोप्र.* निन्दा करे
नन्दी *प्रबोप्र.* नाटकना आरंभनुं मंगल, नान्दी
नपुंस *अंबरा.* नपुंसक
नपुंसक *चित्तसं.* पुरुषत्व विनानुं, सामर्थ्यहीन
नफर *आरारा. *जिनरा. पंचवा.* चाकर, गुलाम (फा.)
नफेट *प्रेमाका.* नफ्फट, निर्लज्ज
नफेरी *आरारा. कामा(शा). रूस्तस. शीलक. शृंगामं.* नानो ढोल; *नरका. नेमिछं. प्रेमाका.* शरणाईना प्रकारनुं मुखवाद्य (फा.नफीरी)
नबाप *रूस्तस.* नवाब
नभव- *नलरा.* निभाववुं (सं.निर्वह्)
नमण *अखाका.* नमन, वंदन
नमणइ, नमणीय *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* नमतुं, नमणुं, सुंदर (सं. नमन-क)
नमणि *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* नमन, नमवुं ते, [झूकवुं ते]
नमणीय जुओ नमणइ
नमस्करइ *उक्तिर. षडाबा.* नमस्कार करे (सं.नमस्करोति)
नमंस- *तेरका.* नमस्कार करवा (सं.नमस्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमाया *लावल.* नमाव्या
नमि *तेरका.* नेमिनाथ
नमीचा *चतुचा.* नम्र
नमेरो *मदमो.* निर्दय
नमेवी *ऐतिका.* नमीने, नमस्कार करीने
नमेंरी *सिंहा(शा).* निर्दय
नम्य *कादं(शा).* नमीने
नम्रीभूत *अखाका.* नम्र थयेलो
नय *जिनरा. नलरा. प्राचीफा.* नदी; जुओ नइ
नयडउ *उक्तिर.* नजीक, पासे (सं.निकटम्)
नयण *गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* नयन
नयणकडक्खे *चारफा.* [नयन]कटाक्ष
नयणकुरंग *नरका.* हरण जेवी आंखो
नयणलां *विराप.* नयनो, आंखो
नयणां चोरवां *नरकां.* नजर चुकाववी, न देखे तेम करवुं
नयणुले *चारफा.* नयन
नयणसुरंगु *वसंवि(ब्रा).* नयनने आनंद-जनक
नयनिमल *ऐतिका.* नीतिमां [– न्यायमां – तर्कमां] निर्मल [सं.]
नयर *आरारा. कृष्णबा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा. विराप.* नगर
नयरलोय *विक्रच.* नगरलोक
नयरि, नयरी *ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं.* नगरी
नरउत्त *सिंहा(शा).* नरपुत्र
नरकातीत *प्रेमाका.* नरकने वटी गयेला, नरकनी शिक्षा जेने भोगववानी नथी एवा [सं.]
नरखइ *आरारा. प्राचीफा.* जुए, नीरखे (सं. निरीक्षते)
नरखक *चंद्रवा.* निरीक्षक
नरखाय *चित्तसं.* नीरखाय
नरग *गुर्जरा. जिनरा. विक्ररा.* नरक
नरत *अखाका. प्रेमाका.* नृत्य
नरत *प्रेमाका.* निवृत्ति, अंत, [छेडो]
नरत **पंचवा.* [खबर]; **अखाछ.* [तपास; स्पष्टता]; जुओ नर्त्य, निरत, निरति, नीरति, नृत
नरत पडें *वेताप.* खबर पडे
नरति *आरारा. ऐतिरा. नलाख्या.* तपास, भाळ, खबर (रा.) (सं.निरुक्ति); जुओ निरति
नरतुं *अखाका. चंद्रवा. प्रेमाका. सिंहा(शा).* नरसुं, खराब
नरते *चंद्रवा.* नक्की, निश्चित करीने, [स्पष्ट करीने]
नरनरइ *उक्तिर. गुर्जरा. नरका.* गर्जना करे, [गाजे]
नरनाह *आरारा. गुर्जरा.* नरनाथ, राजा
नरपवरु *गुर्जरा.* नरोमां उत्तम (सं.नरप्रवर)
नरबद *चित्तसं.* ?, [*गर्भनी प्राथमिक स्थिति] [*सं.नर्दबुद]
नरम *नरका.* नर्म, विनोदलीला
नरय *आरारा. गुर्जरा. प्राचीका. लावल.* नरक
नरवइ *आरारा. गुर्जरा.* नरपति, राजा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरवय *ऐतिका.* नरपति

नरवर-विंदा *नेमिछं.* राजाओ [सं.नरवरेन्द्र]

नरवाणि *आरारा.* चोक्कस (सं.निर्वाण)

नरविंदो *प्राचीफा.* राजा (सं.नर+इन्द्रः)

नरहिणि *शृंगामं.* नेरणी, नख कापवानुं ओजार (दे.णहरणी); जुओ नहरणी

नरंद *आरारा.* नरेन्द्र

नरालां *कादं(शा).* निराळां, जुदा ज प्रकारनां (सं.निरालय परथी)

नराहिवु *गुर्जरा.* राजा (सं.नराधिप)

नरियां *सिंहा(शा).* नारीओ

नरिंद *गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा.* नरेन्द्र, राजा

नरेडाट *प्रेमाका.* खेदानमेदान

नरेणी **अखाका.* [?]

नरेसर *गुर्जरा. देवरा. नेमिछं. लावल.* नरेश्वर, राजा

नर्तकी *सम्यचो.* नाटिकणी, [नटी]

नर्ति, नर्त्त *प्राचीका.* नृत्य

नर्त्य **अखाछ.* [भाळ, पत्तो]; जुओ नरत

नर्प *दशस्कं(२).* नृप

नलवट *उषाह. कादं(शा). प्राचीफा.* कपाळ [सं.निटलपट्ट]

नलाट *उषाह.* कपाळ

नलाड *अखाका. अखाछ. अभिऊ.* कपाळ

नलिआर, नलीआर *हम्मीप्र.* नलिकाकार, तोपची

नव- *तेरका.* नमवुं (सं.नम्) [जै.]

नवकारवाली *उक्तिर.* नवकार जपवानी माळा (सं.नमस्कारमालिका)

नवकारसही *उक्तिर.* सूर्योदय थया पछी बे घडीए एटले ४८ मिनिटे नवकार गणी पारणुं करवानुं जैन व्रत (सं.नमस्कार-सहित)

नवगर, नवघर *अभिऊ.* नव ग्रहनां रत्नोवाळुं आभूषण (सं.नवग्रह)

नवगीय *ऐतिका.* नव ग्रैवेयक [नामनुं विमान – स्वर्ग]

नवघड *नरका-२.* *नवा अने गडीबद्ध, *नवांनक्कोर, [*नवीन प्रकारनां]

नवण *वीसरा.* नमन, [नमवुं ते]

नवतेरी (नगरी) *सिंहा(शा).* नवतर [नगरी]

नव नइ दो (गणवुं) *हम्मीप्र.* नव ने बे एटले अगियारा गणवा, नासी जवुं

नवनवउं *गुर्जरा.* साव नवुं; *उपबा.* हमेश नवुं

नवनिध *प्रेमाका.* नवनिधि, धनना देव कुबेरना नव भंडार

नव-नीमालीय *वसंवि(ब्रा).* नवी – ताजी – कूंणी नवमालिका

नव-नेह *वसंवि(ब्रा).* नवा – ताजा स्नेहवाळी

नवपद *आरारा.* अरिहंत आदि ध्याननां नव स्थान [जै.]

नवभंगिहि *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* नवी-नवी रीते, वैचित्र्यपूर्वक

नवमइ *गुर्जरा.* नवमो, [नवमो रस – शम, निर्वेद]

नवमइं (न वमइं) **गुर्जरा.* [न छोडे, न तजे]

नवयनिहाण *आरारा.* नव प्रकारना निधि,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंडार [सं.नव+निधान]

नवरंग **वसंवि(ब्रा).* [नूतन छटाथी] (सं.)

नवलखउ *लावल. वीसरा. हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात, अति कीमती घोडा (सं.नव+लक्ष)

नवल्लिय *प्राचीफा.* नवी, नवली, नवेली (सं. नव+ल्ली)

नवविछित्ति *आरारा.* नूतन शोभायुक्त (सं. नवविच्छित्ति)

नवसइं *षडाबा.* नव सो (सं.नवशत)

नव-सत्त *नरका. प्रेमाका.* नव अने सात, सोळ

नवसर *गुर्जरा. नलरा. प्रेमाका. लावल.* नव सेरनो (हार)

नवाण *चित्तसं. प्रेमाका.* बहोळा पाणीवाळां स्थान, जळाशय [सं.निपान]

नवाणवइ *षडाबा.* नवाणुं (सं.नवनवति)

नवारसउ *उक्तिर.* लोहना नव भाग धरावतुं एक औषध (सं.नवायसम्)

न-वि *अभिऊ. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा). वीसरा. लावल.* नहीं (सं.न+अपि)

नविलि *लावल.* नवल, ताजा

नवी *प्राचीका.* स्त्रीना अधोवस्त्रनी गांठ, [नाडी] (सं.नीवि)

नवीनउ *षडाबा.* निर्वेदप्राप्त, खिन्न (सं. निर्विण्ण)

नवीसंदो *सिंहा(शा).* कारकुन, लहियो [फा. नवीसंदः]

नवुंसक *अंबरा.* नपुंसक

नवेण *प्रेमाका.* नाह्याधोया विना ज्यां जई न शकाय तेवी जगा, जेमके रसोडुं

नवेण चोको *अखाका.* रसोईनी जग्याने लींपीने शुद्ध करवी

नवेरउं *नेमिछं.* नवुं, नवुं आवेलुं [माणस] (सं.नवतर); *नेमिछं. प्राचीफा.* नवतर, [नवीन जातनुं, अद्‌भुत]

नव्याणु *ऐतिका.* नवाणु

नशावे *अखाका.* नसाडे

नशि *विमप्र.* [निशाए], रात्रे

नशिहर *उषाह.* राक्षस (सं.निशाचर)

नष्टचर्या **प्रेमाका.* [निशाचर्या, गुप्तचर्या, छूपी रीते रहेवुं ते]; जुओ नाटचर्या

नष्टपणे *मोसाच.* नठारापणे

नसले **विमप्र.* [?]

नसंक *अखाछ.* निःशंकपणे, चोक्कस

नसा-जाळ *प्रेमाका.* नसोनी जाळ [सं.स्नसाजाल]

नसावइ *उक्तिर.* नसाडे (सं.नश् परथी)

नसावणहार *उपबा.* नसाडनार

नसि *प्राचीफा.* रात्रि (सं.निशा)

नसें, नशे *प्राचीका.* निश्चय, [नक्की]

नस्तर- *नलरा.* खूटवुं, [पसार थवुं] (सं. √ तरति)

नह *तेरका. प्राचीफा. वीसरा.* नख

नह *षष्टिप्र.* नहीं

नहपलव जुओ नीहपलव

नहरणी *उक्तिर.* नेरणी, नख कापवानुं ओजार (सं.नखहरणी); जुओ नरहिणि

नही *उक्तिर.* [?] (सं.नखिका)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नहींत *उक्तिर.* नहीं तो, नहींतर
नहु *आरारा. गुर्जरा. विराप. वीसरा.* नहीं ज (सं.न+खलु)
नहुतरवुं, नहुंतरवुं *उक्तिर. प्रद्युचु. विराप. शृंगामं.* नोतरवुं, निमंत्रण आपवुं
नहुरा *कृष्णबा.* कालावाला
नहू *ऐतिरा.* नहीं
नहेरी *प्रेमाका.* माथामां नाखवानुं तेल
नंग **विमप्र.* [चीज, बाबत]
नंदण *गुर्जरा. तेरका.* पुत्र (सं.नन्दन)
नंदणी *गुर्जरा.* पुत्री (सं.नन्दिनी)
नंदन *वीसरा.* पुत्र (सं.)
नंदवुं *तेरका.* आनंद पामवुं
नंदवुं *अखाका.* निंदवुं, निंदा करवी
नंदिक *नरका.* आनंद[मंगल]
नंदीसर *तेरका.* नंदीश्वर द्वीप [जै.]
नंदेवी *नेमिछं.* निंदा करीने
नंमण्य *मदमो.* नम्रता
ना *नंदब. वेताप.* न्याय
न्नअता **विमप्र.* [नायता – सामुद्रिक वेपारी जाति] [दे.णाईत्त]
नाइ सक्या *ऐतिका.* न आवी शक्या
नाई *कामा(त्रि). वीसरा.* हजाम (सं.नापित)
नाउं *तेरका.* नाम (अप.)
नाकनमणि *जिनरा.* शिर नमाववुं ते, [वंदन करवा ते]
नाकसोरां *अंगवि.* नसकोरां
नाकोटडे *मोसाच.* चडावेला नाके
नाग *आरारा(व).* नागकेसर, नागचंपो (सं.)
नाग *नरका. लावल.* स्त्रीओनुं काननुं घरेणुं
नागउर *ऐतिरा.* नागपुर, [राजस्थाननुं नागोर गाम]
नागड *सिंहा(शा).* चारण, भाटविशेष (दे. नग्गुडि)
नागड *गुर्जरा.* एक वाद्य
नागदमनि **आरारा.* [सर्पने वश करनार एक वनस्पति] [सं.नागदमनी]
नागफूली *नलरा.* स्त्रीनो एक अलंकार, [नाकफूली, नाकफळी]
नागलडो *नरका.* स्त्रीओनुं काननुं एक घरेणुं
नागलु *विमप्र. हरिवि.* स्त्रीओनुं काननुं एक आभूषण
नागवेलि *आरारा(व).* नागरवेल (सं.नागवल्ली)
नागहथ *नलरा.* स्त्रीनो एक अलंकार
नागिंद *विक्ररा.* नागेन्द्र, शेषनाग
नागेंद *नेमिछं.* नागेन्द्र, [शेषनाग]
नागोदर *स्थूलिफा.* कंठनुं एक आभूषण
नाच *सभ्यचो.* नाटक
नाचणि *प्राचीफा.* नर्तिका (सं.नृत्य परथी)
नाट *अखाका. *अखाछ. चित्तसं. प्रेमाका. विमप्र.* नेट, नक्की, चोक्कस, खरेखर
नाट *प्रेमाका.* एक प्रकारनी सुतराउ साडी [के वस्त्र]
नाटईउं *नलरा.* रेशमना वाणानुं वस्त्र
नाटक *अंबरा. नलरा. विक्ररा.* नृत्य, नृत्यसमारंभ, नाटक, [नटखेल]; *चंद्रवा.* आख्यान, [साहित्यरचना, काव्य]
नाटकरस *अंबरा.* नृत्यरस
नाटकि *अंबरा.* नाटक करनार, नट, [नर्तक]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाटकिणी *अंबरा.* नटी, [नर्तकी]

नाटचर्या *पंचवा.* [गुप्तवेशे फरवुं], *छूपी रीते युक्तिथी नगरलोकनी चर्चा जोवी; जुओ नष्टचर्या, नेष्टचरज्या

नाटारंग *चंद्रवा.* नृत्यनो रंगराग के उत्सव

नाठी (हिआनी नाठी) *नेमिछं.* नष्ट थयेली, [हैयाफूटी]

नाठीइं *उपबा.* नष्ट थतां, गुमावतां (सं.नष्टः)

नाठु *कादं(ध्रु).* *संतायो, [दोडी गयो, नासी गयो]

नाडा जुओ ज्योवन-नाडा

नाड्य *ऐतिका.* नाट्य, नाटक

नाण *आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. नलरा. प्राचीफा. प्राचीसं. शृंगामं.* ज्ञान

नाणइ *आनंस्त. कादं(शा). जिनरा. नरका.* न आणे, न लावे

नाणउ *उक्तिर.* नाणुं (सं.नाणकम्)

नाण दंसण *शृंगामं.* ज्ञान अने दर्शन

नाणधारा *लावल.* ज्ञाननी धारा

नाणवंत *ऐतिका.* ज्ञानी

नाणिव्रउ *उक्तिर.* नणंदनो दीकरो [सं. नानान्द्र; रा.नांणदौ]

नाणिहिं (नाणिहिं जलि) *ऐतिका.* ज्ञानरूपी (जळथी)

नाणी *आरारा.* ज्ञानी

नाणी **आनंस्त. नेमिछं.* न आणी, न लावी

नाणुट्ट *विक्ररा.* नाणावटी

नाणुं *आनंस्त.* न आणुं, लावुं नहीं

नातणउ *उक्तिर.* रूमाल, गमछो (*सं. नकूतकः) [दि.;रा.]

नातरउं *जिनरा.* [सगा तरीकेनो] संबंध; *नेमिछं.* लग्नसंबंध; जुओ नात्र

नाति *विक्ररा.* ज्ञाति

नातुं *अखाका.* सगपण, [संबंध]

नात्र *प्रबोप्र.* अत्र नहीं, अहीं नहीं (सं.)

नात्र *गुर्जरा.* लग्नसंबंध (सं.*ज्ञात्रक); जुओ नातरउं

नात्रा *षष्टिप्र.* संबंध, [ज्ञातिसंबंध] (सं. ज्ञात्र); *उक्तिर.* ज्ञातिओ

नात्रा-संबंधि *आरारा.* सगपण बांधवा माटे

नाथ *अखाका. नरका.* नाकमां परोवेली दोरी [सं.नस्ता]

नाथणा *ऐतिका.* नाथवुं, वश करवुं

नादउद्रि *गुर्जरा.* नांदोद (गाम)

नाद-बिंदु **प्रेमाका.* [योगानुभवनां बे तत्त्वो – कुंडलिनी जाग्रत थतां संभळातो अनाहत नाद अने ए नादनुं प्रकाशमय व्यक्त रूप]

नादभेद *लावल.* संगीतना प्रकार

नादर- **नलरा.* [न आदरवुं, न करवुं]

नादु **गुर्जरा.* [गर्व] [*सं.नाद]

***नादेय [अनादेय]** *जिनरा.* [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीवनुं हितकारक वचन पण] अनादरणीय [बने छे] [जै.]

नाना *अखाका. चतुचा. चित्तसं. नरका. प्रेमाका. हरिख्या.* अनेक, विविध, तरेह-तरेहनुं (सं.)

नानावासी *नेमिछं.* विविध प्रकारनी सुगन्धथी भरेली

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नानाविध *चित्तसं. प्रेमप. प्रेमाका.* जुदाजुदा प्रकारना, अनेक प्रकारना [सं.]

नानाविधि *नलाख्या.* नानाविध, अनेक प्रकारनुं

नानाविह *गुर्जरा.* विविध प्रकारनुं (सं. नानाविध)

नापइ *अभिऊ. आरारा. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. मोसाच. षष्टिप्र.* न आपे

नापजे *चंद्रवा.* मापजे

नापिक *अखाका. प्रेमाका.* हजाम, वाळंद (सं.नापित)

नापी *विक्ररा.* वाळंद

नापीक *मदमो. सिंहा(शा).* नावी, हजाम, वाळंद (सं.नापित)

नापीणी *सिंहा(शा).* हजामडी

नाम अध्यात्म **आनंस्त.* [नामाश्रयी अध्यात्म] [जै.]

नामइ *उक्तिर. ऐतिरा. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. लावल.* नमावे (सं.नामयति); **आरारा. कादं(शा).* रेडे

नाम सारे *चतुचा.* ?, (ना सारे = ना कहे ?)

नामउ *ऐतिका.* नाम

नामकम्म *जिनरा.* नामकर्म, [कर्मनो एक प्रकार, जे जीवनी गति, जाति, देखाव वगेरेने निर्णीत करे छे] [जै.]

नामणउ (नामणउ) *जिनरा.* नम्युं जाय, [नमन थाय]

नामी *आनंस्त.* नमावनारा

नामीनइ जुओ शिर नामीनइ

नायल *प्राचीसं.* ?, [*गर्विष्ठ] [दे.णाय]

नायल *तेरका.* नागेन्द्र (जैन साधुओनो एक गच्छ) (सं.नाग+इल्ल)

नायो *चंद्रवा.* न्याय

नारकिइं *उपबा.* नरकमां

नारकी *उपबा. षडाबा.* नरकवासी (सं.)

नारगी *गुर्जरा.* नरकवासी (सं.नारकिन्)

नारंग *गुर्जरा.* नारंगीनुं वृक्ष

नारंगडुं **नरका.* [स्तन]

नारंगफळ *नरका.* [नारंगीना जेवां] स्तन

नाराधइ *षष्टिप्र.* न आराधे

नारिग *ऐतिका.* नारिंग, नारंगी

नारिय-कुंजरु, नारीकुंजर *प्राचीसं.* नारीमय कुंजर, [नारीमां विहरतो कुंजर, नारीविलासी], कामदेव-बिरुदविशेष

नारिंग *आरारा(व). उक्तिर.* नारंगीनुं वृक्ष (सं.नारंग)

नारीकुंजर *नरका. प्रेमाका.* हाथीनी आकृतिमां सर्वत्र स्त्रीओनी आकृति होय तेवी भात

नारीकुंजर जुओ नारियकुंजरु

नारु *विक्ररा. विमप्र.* कंदोई, काछिया वगेरे नव कारीगर वर्ण

नाल *देवरा.* गर्भनाळ; *अखाका.* कमळनी दांडी; *देवरा. हम्मीप्र.* तोप

नालकेर *आरारा(व).* नाळियेर (सं.नालिकेर)

नालगोला, नाळगोळा *कस्तुवा. *प्रेमाका.* तोपगोळा

नाला *लावल.* नाळ, दांडली

नालि *हम्मीप्र.* तोप

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नालिय *प्राचीसं.* मूढ [दे.]

नाली *हम्मीप्र.* तोप

नालीअर *आरारा(व).* नाळियेर (सं. नालिकेर)

नालेर, नाळेर *उक्तिर. वीसरा.* नाळियेर (सं.नारिकेल)

नालेरी *आरारा(व).* नाळियेरी (सं.नालिकेर)

नावइ *आरारा. उपबा. कादं(शा). जिनरा. नरका. नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. लावल. षष्टिप्र.* न आवे (सं.न+आयाति)

नावट *चंद्रवा.* न्यायवट, न्यायवृत्ति; जुओ न्यावट

नावडियो *चंद्रवा.* नाविक

नावा *चतुचा.* न आव्या

नावी *उक्तिर. ललिरा. विक्ररा. षडाबा.* हजाम (सं.नापित)

नाशा *विमप्र. लावल.* नाक [सं.नासा]

नाशादंड *आरारा.* नाकनी दांडी (सं. नासादंड)

नाशिका, नाशीका *सिंहा(शा). षडाबा.* नाक (सं.नासिका)

नास *तेरका.* नाक (सं.नासा)

नासरडुं *दशस्कं(२). प्रेमाका.* नासी जवुं ते; नासीने लीधेलो आश्रय के गुप्तवास

नासिक *वसंवि(ब्रा).* नासिका, नाक

नासिवउं *उक्तिर. उपबा.* नासवुं ते (सं. नश्यति)

नास्त, नास्त्य *अखाछ. अखेगी.* नास्ति (नथी) एवो भाव, न होवुं ते; जुओ आस्त्य-नास्त्य

नाह *आरारा. उषाह. कृष्णबा. गुर्जरा. चारफा. जिनरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा. विराप. वीसरा.* नाथ, स्वामी, पति

नाहर *उक्तिर. वीसरा.* वाघ (*सं.नाखर)

नाहर **विमप्र.* [पथ्थर खेंचवाना दोरडा] [रा.]

नाहलउ *आरारा. नलरा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* पति (सं.नाथ+ल)

नाहलीयौ *जिनरा.* नाथ

नाहवी *विक्ररा.* हजाम; जुओ नावी

नाहाठां *रूस्तस.* नाठां

नाहारुं *आरारा.* न आहारुं, न खाउं

नाहालवा *नंदब.* न्याळवा, निहाळवा

नाहासे *रूस्तस.* नासे

नाहि *प्राचीफा. षडाबा.* दूंटी (सं.नाभि)

नाहि *लावल.* नाथे, [नाथ – स्वामी – मालिक होवाथी, बनवाथी]

नाहिय *तेरका.* सुंदर नाभि (सं.नाभिका)

नाहिवुं *उक्तिर.* नाहवुं (सं.स्नातव्यम्)

नाहुलउ *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* नाथ

नाहोलीओ *नरप(द).* पति

नाहोलो *अखाका. मदमो.* नावलियो, प्रेमी, नाथ (सं.नाथ+प्रा.उल्लय)

नांखवा (दहाडा नांखवा) *हरिख्या.* [दिवस] गाळवा

नांगर *उक्तिर.* वहाणनुं लंगर [दे.णंगर]

नांखणहार *उपबा.* नाखनार

नांणेश *चंद्रवा.* न आणीश

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नांदिया *षडाबा.* आनंदित थया, राजी थया (सं.नन्दिताः)

नांदी-कर्म *प्रेमाका.* कुटुंबना कल्याण माटे देवना आशीर्वाद मेळववानो एक धार्मिक विधि [सं.]

नांदीवृक्ष *आरारा(व).* नांदरूखी वड (सं. नन्दिवृक्ष)

नांधडियो, नांधडीओ *नरका. नरप(द). प्राचीका. प्रेमप.* नानडियो, नानो (सं. श्लक्ष्ण)

नांभ *कामा(शा).* नाभि

नांहांनंहीओ *मदमो.* नानैयो, नानडियो

नि *अभिऊ.* (भारवाचक) ने (सं.नु)

नि *अभिऊ.* अने (सं.अन्यदपि)

नि *वीसरा.* नहीं

निअ *गुर्जरा.* निज, पोतानुं

निअडउ *नेमिछं.* नजीकनो, [नजीक रहीने] (सं.निकट)

निइ *लावल. विमप्र.* अने [सं.अन्यदपि]

निऊ *उक्तिर.* नेवुं (संख्या) [सं.नवति]

निउंजइ *उक्तिर.* नियोजे, जोडे, काममां ले (सं.नियोजयति)

निउंत्रीउ *गुर्जरा.* निमंत्रण आप्युं

निकट्टि *विक्ररा.* नकटी, नाक वगरनी

निकर, निकरउ *उक्तिर. *नरका. वसंवि(ब्रा).* राशि, जथ्थो [सं.]

निकरु *नलरा.* कर विनानो, [करमुक्त] (सं. निष्कर)

निकर्मण *विक्रच.* काम वगरनो, [नवरो]

निकंद करवुं *दशस्कं(१).* निकंदन करवुं

निकाचित कर्म *षष्टिप्र.* अत्यंत निबिड कर्म, [चोंटीने वज्रूप बनी गयेलां, छूटी न शके तेवां कर्म] [जै.] [सं.]

निकाचिय *ऐतिका.* निबिड – गाढपणे बंधायेल [सं.निकाचित]

निकाम *कादं(शा).* खूब

निकाय **ऋषिरा.* [समूह] [सं.]

निकालिजा **गुर्जरा. *विरापु.* [*लागणी वगरनो, *निर्दय, *साहसिक]

निकांमु *गुर्जरा.* खूब (सं.निकामम्)

निकोलिवा *उक्तिर.* फोलवा [सं.निष्कुल; दे.णिक्कोर]; जुओ नीकोलइ

निक्कारण *विमप्र.* निष्कारण

निक्षिपाविसु *षडाबा.* फेंकावीश, नखावी दईश (सं.निक्षिप्)

निखरा *आरारा.* खराब (रा.); जुओ राछ-निखर

निखूंती **नलरा.* निमग्न [थईने], [*कुशळता]

निखेपा *आनंस्त.* निक्षेप, नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एवा चार भेदथी वस्तुने ओळखवानो व्यवहार (जै.)

निखेवा *अभिऊ.* निक्षिप्त, नाखेला, [स्थापना, न्यास] (सं.निक्षेप)

निगड *हरिख्या.* बेडी (सं.)

निगड-कटक **कादं(शा).* [बेडी]

निगडबंधन **कादं(शा).* [बेडीनुं बंधन]

निगध *नलरा.* निषध राजा

निगम **अखाका.* [वेदना परवर्ती शास्त्र-ग्रंथो] *नरका. प्रेमाका.* वेदग्रंथो,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[शास्त्रो]; जुओ नीगम

निगमवुं *अखाछ.* काढवुं; *जिनरा.* गुमाववुं; *देवरा. प्रेमाका.* पसार करवुं, वितावुं

निगळ- **वीसरा.* [गळी जवुं]

निगहिय *गुर्जरा.* संयमित करी (सं.निगृहीत)

निगुडी *आरारा(व).* नगोड, एक वनस्पति (सं.निर्गुंडी)

निगुण *आरारा. वीसरा.* नगुणा (सं.निर्गुण)

निगोद *ऐतिका. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा.* अनंत जीवोनुं एक साधारण शरीर-विशेष, साधारण वनस्पति (सं.) [जै.]

निगोदर **गुर्जरा. प्राचीफा.* कंठनुं एक आभूषण

निग्रहाविउ *षडाबा.* पकडाव्यो (सं.निग्रह)

निग्रंथ *ऐतिका.* परिग्रहरहित, [साधु] [सं. निर्ग्रंथ]

निघणु *गुर्जरा.* दयाहीन (सं.निर्घृण)

निघुख *नलाख्या.* नहुष राजा

निचंतउ *शीलक.* निश्चिंत, चिंता वगर

निचितु *लावल.* नक्की (सं.निश्चित)

निचु *प्राचीसं.* नित्य

निचोई *नलाख्या.* निचोवी (दे.णिच्चुड; सं. *निश्चावयति) [सं.*निश्चोतयति]

निच्चल *तेरका.* निश्चल

निच्चलु *तेरका.* निश्चे, [चोक्कस] (सं. निश्चलम्)

निच्चं *आरारा.* नित्य

निच्चु *ऐतिका.* नित्य

निच्छणु *तेरका.* ?

निछमाली *गुर्जरा.* पांपणना पलकारावाळी (सं.निमिष+आली)

निछींछि *वसंफा. वसंवि. वंसवि(ब्रा).* निर्भर्त्सना करे, तुच्छकारे (सं. निस्तुच्छयति; दे.छिछि ?)

निजज्ञान *प्रेमाका.* आत्मज्ञान

निजघन *अखाका.* ब्रह्म[आत्मा]रूपी घन [वादळ]

निजर, निजरि *आनंस्त. प्राचीफा.* नजर, दृष्टि

निजंत्रइ *उक्तिर.* नियंत्रण करे (सं. नियन्त्रयति)

निज्जणवि *ऐतिका.* जीतीने, [नष्ट करीने]

निज्जिणिउ *ऐतिका.* जीत्या, [नष्ट कर्या] [सं. निर्जित, प्रा.निज्जण]; जुओ निर्जिणइ

निज्झर *तेरका.* निर्झर, [झरणुं]

निटोल **अभिऊ.* [नठोर]; *आरारा. सम्यचो.* उद्दंड, घमंडी, निर्लज्ज, नठोर (रा.); जुओ हाटोल

निटोल *अंबरा. आरारा. उपबा.* **ऐतिका. *ऐतिरा. नेमिछं. लावल. विक्ररा. विमप्र. षडाबा.* नक्की, अवश्यपणे, संपूर्णपणे, साव (सं.निस्तुल्य) [दे.णित्तुलिय]

निट्ठुरपणय *तेरका.* निष्ठुरपणुं

निठुर *अखाका. आरारा. उपबा. नेमिछं. लावल.* निष्ठुर, निर्दय

निठोर *नरका.* निष्ठुर, दयाहीन

नित प्रत्ये *नरका.* रोजेरोज, हंमेशां

नितर *अभिऊ.* नेत्र, आंख

नितंबन **नरका.* [नितंब, कूलो, थापो]

नितंबिनी *आरारा.* स्त्री

निति *उषाह.* नित्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नितु *गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* नित्य, हंमेशां

नित्तुल- *प्राचीसं.* उठाववुं, [मूकवुं, छोड़वुं] [सं.निस+तुल्]

नित्य *नलाख्या.* नित्यकर्म

नित्य प्रत्ये *दशस्कं(१).* नित्य क्रमे, [रोजेरोज]

निद *देवरा.* निद्रा, ऊंघ

निदान *चित्तसं.* कारण, मूळ कारणरूप तत्त्व; परिणाम; अंतिम लक्ष्य; चिकित्सा, परीक्षा; छेवटे, चोक्कस, ज; *अखाका.* आदि कारण, मूळ तत्त्व; *अखाछ.* चिकित्सा, [परीक्षा, निर्णय]; छेवट, अवश्य; *नलरा.* अंत, परिणाम, [छेवट]; *अखाका. कादं(शा). नलाख्या. प्रेमाका.* नक्की; जुओ इंदु निदान

निदानी *शृंगामं.* चोक्कस

निदेश *नलाख्या.* आज्ञा, सूचन, [*सामीप्य, *पासे होवुं ते] (सं.)

निद्दलउं *गुर्जरा.* दळुं, चूरो करुं (सं. निर्दलयति)

निद्दा *जिनरा.* [सुखे सहेलाईथी जागी शके तेवी] निद्रा, [दर्शनावरणीय कर्मनो एक प्रभेद] [जै.]

निद्धडइ *ऐतिका.* परास्त करे; जुओ निर्धाटइ

निद्धंधस *उक्तिर.* अकृत्य करनार, निर्दय, निर्लज्ज [दे.]

निद्रालखउ *उक्तिर.* निद्राळु (सं.निद्रालक्षः)

निध *अखाछ.* निधि, भंडार(रूप परमात्मा); *नरका.* निधि, भंडार

निधत्त कर्म *षष्टिप्र.* एक प्रकारनुं बंधायेलुं कर्म, [कालांतरे गाढ प्रयत्नथी फीटे तेवां कर्म] [सं.] [जै.]

निधणा *आरारा.* निर्धन स्थितिमां

निधाड- *तेरका. प्राचीफा.* ध्वंस करवो, परास्त करवुं (सं.निर्+धाट्)

निधान *अखाका. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका.* निधि, भंडार; *अखाछ.* निधिरूप परमात्मा; **प्रेमाका.* [भंडाररूप, आश्रय-रूप व्यक्ति]; *अखाका.* मूळ, [आश्रय-रूप] (सं.)

निधि *दशस्कं(२).* समुद्र [सं.]

निधि संख्या *दशस्कं(२). प्रेमाका.* समुद्र जेटली संख्यामां एटलेके सात

निधुवन *वसंफा.* सुरतक्रीडा, संभोग (सं.)

निधुवनकेलिकलामीय *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सुरतकेलिथी क्लान्त बनेलां (सं.निधुवन +केलि+क्लामित)

निध्य *अखाका.* निधि, भंडार

निपट *नरका. प्रेमाका.* तद्दन, घणो (दे. णिपट)

निपाई *नरका. वीसरा.* निपजावी, उत्पन्न करी, तैयार करी (सं.निष्पादित)

निपात *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पाडवुं ते, नाश [सं.]

निपातन थवुं *दशस्कं(१).* नष्ट थवुं

निपातु *प्रबोप्र.* पाड्यो, [जीत्यो, नाश कर्यो] (सं.निपातित)

निपायुं *उपबा. प्रेमाका.* निपजाव्युं (सं. निष्पादित)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निष्फल *तेरका.* निष्फल

निबलउं *आरारा.* नबळुं, ऊतरतुं, काचुं, खामीवाळुं, नठारुं [सं.निर्बल]

निबंध **वसंफा. *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* नियम, [धारो] (सं.); *गुर्जरा.* स्थिति, [संयोग] (सं.)

निबीजइ *उक्तिर.* निर्वेद पामे, विरक्त थाय [सं.निर्विद्यते]

निब्भर *तेरका.* निर्भर, [भरेलुं]

निब्भंत *ऐतिका.* निर्भ्रान्त

निभ *ऋषिरा.* सरखा, [-ना जेवा] (सं.)

निभालइ *ऋषिरा.* निहाळे छे (सं. निभालयति)

निभ्रंछइ *अंबरा. कादं(शा). प्रेमाका.* निंदा करे, तिरस्कारे (सं.निर्भर्त्स्)

निभ्रंत *आरारा.* निर्भ्रान्ति, निःशंकता

निमख *नरप.* पळ, क्षण, आंखनुं मटकुं मारवा जेटलो समय (सं.निमिष)

निमजां *आरारा(व).* एक मेवो; चिलगोजा (फा.); सनोबर के चीड

निमाजइ जुओ निमोजइ

निमालीय *वसंवि.* नवमालिका

निमि *तेरका.* नेमिनाथ

निमित्ती *उक्तिर.* ज्योतिषी (सं.नैमित्तिकः)

निमिष *नरका.* आंखनो पलकारो [सं.]

निमील *अखाका.* पळवारमां (सं.निमीलनम्)

निमूल **वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* अमूल्य (सं.निर्मूल्य)

निमेख, निमेष *दशस्कं(२).* पांपण (सं. निमेष); *दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* निमेष, [पांपणनी] पलक, [मटकुं]; मटकुं मारवा जेटलो समय, पळ, क्षण

***निमोजइ [निमाजइ]** *हम्मीप्र.* नमाज माटे

निम्मल *गुर्जरा. तेरका.* निर्मल

निम्मविय *तेरका.* निर्मित कराव्युं; रचेलुं (सं.निर्मापित)

निम्माण *जिनरा.* निर्माण, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी सर्व अवयवो यथायोग्य स्थाने अने सारा आकारे थाय छे] [जै.]

निम्मिय *तेरका.* निर्मित कर्युं

निय *ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. वसंफा(ल). वसंवि.* निज, पोतानुं

नियगुण *वसंवि(ब्रा).* पोताना गुण

नियट *जिनरा.* निवृत्ति, [जीवो वच्चे विशुद्धिनुं तारतम्य होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

नियडा *आरारा. उषाह.* निकट, नजीक

निय मणि *ऐतिका.* पोताना मनमां

निय मन *ऐतिका.* निज मन

नियय *गुर्जरा.* पोतानुं (सं.निजक)

नियर *नलरा.* नगर

नियरु *ऐतिका.* निकर, समूह

नियाणउं *गुर्जरा. षडाबा.* मृत्यु पहेलां तपनुं इच्छित फळ मागवुं ते (सं.निदान)

नियुंज्या *गुर्जरा. विराप.* गोठव्या (सं. नियुनक्ति)

नियोजिवुं *उक्तिर.* नियोजवुं (सं.नियोजितव्यम्)

निरक्षिय *गुर्जरा.* निरीक्षण करीने, जोईने

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.निरीक्षते)

निरघोष *नरका.* मोटा अवाज [सं.निर्घोष]

निरजणी **ऐतिरा.* [जीती, परास्त करी]; जुओ निर्जणइ, रजणी

निरजल, निरजळ *आरारा. वीसरा.* निर्जळ, पाणी वगर

निरत **विमप्र.* [निश्चित, साव]; जुओ नरत

निरत **अखाका.* [निवृत्ति – बाह्य प्रवृत्ति-मांथी]

निरतइ **विमप्र.* [*लगावे, *लटकावे]

निरतइं **सिंहा(म).* [मग्न थईने]; जुओ निरतु

निरति, निरती, निरतीय **विमप्र.* [निश्चित-पणे]; **अखाका. नेमिछं. प्राचीफा. *वसंवि(ब्रा). विक्रच.* स्पष्ट, निश्चित, नक्की, [चोख्खुं, साव, पूरुं] (सं.निरुक्ति); जुओनरत, निरतु, निरत्त, निरुतउ, नीरती

निरति *ऋषिरा.* पत्तो, [भाळ]; जुओ नरति

निरतिचार, निरतीचार **उपबा. चारफा. जिनरा. देवरा* अतिचार विना, दूषण के दोष विना (जै.) [सं.]

निरती जुओ निरति

निरतीचार जुओ निरतिचार

निरतीय जुओ निरति

निरतु *नलरा.* आसक्त, [मग्न] (सं.निरत); जुओ निरतइं

निरतु **नलरा.* [चोख्खुं, निश्चित]; जुओ निरति

निरत्त *कृष्णच.* निश्चित, [चोख्खुं]; जुओ निरति

निरदलुं *अभिऊ. गुर्जरा.* दळी नाख्युं, नष्ट कर्युं (सं.निर्दलित)

निरदावो, निर्दावो *अखाछ. अखेगी.* दावानो अभाव, [मताग्रहनो अभाव]

निरदूषण *आनंस्त.* दूषण विनानुं

निरदे *प्रेमाका.* निर्दय, हृदय वगरनो

निरधार *आरारा. तेरका.* निराधार, असहाय

निरधार *चित्तसं.* निश्चय, निश्चित करेल मत; नक्की कर; निश्चित; खरी; *गुर्जरा. चित्तसं. नरका. प्रेमाका.* नक्की, ज (सं.निर्धार)

निरधारा *अखाका.* नक्की

निरधारी *लावल.* आधार विनानी, [असहाय]

निरधारुं *आरारा.* आधार विना, अध्धर

निरधुंम *ऐतिरा.* धुमाडा वगरनो

निरनामा *आरारा.* नाम वगरनी

निरनुबंध *आनंस्त.* अनुबंध विनानुं, राग विनानुं, [आकांक्षा विनानुं]

निरपाय *आरारा.* निर्विघ्न, मुश्केली वगरनुं (सं.)

निरबह- *वीसरा.* सेवा करवी (सं.निर्वह)

निरभरछइ *उक्तिर.* निंदा करे, तिरस्कार करे (सं.निर्भर्त्सयति)

निरभी **प्रेमाका.* [नभावडावी, सहेवडावी, भोगवावी]

निरभे *अखाका. नरका. प्रेमाका.* निर्भय

निरममउ *वीसरा.* क्रूर, हृदयहीन (सं.निर्मम)

निरमल *चित्तसं.* नीरोगी

निर-माय *देवरा.* मायारहित; जुओ निर्मायी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरमुख, नीरमुख *सिंहा(शा).* विमुख, [पाछा फरेला]; जुओ निर्मुख

निरय *प्राचीका.* नरक

निरवहवुं *नेमिछं. लावल.* निभाववुं; *अखाका.* करवानी जवाबदारी लेवी; *आरारा.* निभाव थवो; *चित्तसं.* निर्वाह करवो, उकेल आणवो; समजाववुं

निरवाट *प्रेमाका.* निर्वाट, मार्गनी निशानी विनानुं

निरवाण, निरवाण्य, निर्वाण *कादं(शा). चित्तसं.* नक्की, खरेखर (सं.); **अखाका. गुर्जरा.* निर्वाणपद, मोक्ष

निरवाणि *अभिऊ.* **ऋषिरा. नलाख्या. ललिरा. विमप्र.* नक्की (सं.निर्वाण)

निरवाणी **अखाका.* [निर्वाणदशाने – मुक्तिने पामेला]

निरवाण्य जुओ निरवाण

निरवाहइ *आनंस्त. गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा.* नभावे, [पालन करे] (सं.निर्वाहय्)

निरवाह कर्यो *चित्तसं.* चलाव्युं, समजाव्युं

निरवाहिवउं *उपबा.* नभाववुं, राखवुं, प्रवर्तावववुं

निरवाहु *गुर्जरा.* निभाव, पालन

निरवू *गुर्जरा.* प्रसन्न, नरवो [सं.नीरुज]

निरव्यंजन *ऋषिरा.* निर्जन [सं.निर्+विजन]

निरंजन *अखेगी.* निर्लेप, दोषरहित, निर्गुण ब्रह्म [सं.]

निरंतर *तेरका.* गीचोगीच; [सदंतर, साव]

निरंध *नरका.* वधु आंधळा, [साव आंधळा] [सं.निः+अंध]

निराकरइ *आनंस्त. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. वाग्भबा. षडाबा.* निराकरण करे, निवारण करे, दूर करे, निषेध करे (सं. निराकरोति)

निराट *अखाका.* केवळ, मात्र, [एकमात्र, शुद्ध]; *चित्तसं.* एकलो ? स्वतंत्रपणे ? सीधेसीधो ? निश्चितपणे ?

निराल, निराळ *अखाका.* निराळुं, न्यारुं, अलग, अलिप्त [सं.निरालय]

निराळो *चित्तसं.* नवो, मौलिक

निराशंस *आनंस्त.* निष्काम, [कामना – अपेक्षा विनानुं] [सं.]

निराशि, निराशी *अखाका. अखाछ. आनंस्त.* आशा के इच्छा वगर

निरास *चित्तसं.* निरसन, दूर करवुं ते [सं.]

निरीक्षण (निरीक्षण) **गुर्जरा.* [जोवा माटे]

निरीहो *ऐतिका.* अनासक्त, [इच्छारहित] [सं.नरीह]

निरुच्छव **कादं(ध्रु).* [उत्सव – आनंद-प्रमोद वगरनुं]

निरुत्तउ, निरूत्तउ *ऐतिका. गुर्जरा. विराप.* चोक्कस, निश्चित (सं.निरुक्त); जुओ निरति

निरुपमी, निरूपमी *गुर्जरा. विराप.* उपमा आपी न शकाय तेवुं (सं.निरुपम परथी)

निरूप *कृष्णबा.* आदेश; जुओ निरोप

निरूंधइ *षडाबा.* रोके (सं.निरुणद्धि)

निरेहणा *गुर्जरा. विराप.* इच्छातृप्ति विना, [इच्छा विना ज] (सं.निरेषण)

निरोप *अंगवि. कृष्णबा. प्राचीसं.* आदेश;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ निरूप

निरोपई *वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* फरमावे, आज्ञा करे (सं.निरूपयति, निरोपयति); *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* ठरावे, -ना जेवुं गणे, माने (सं.निरोपयति)

निरोपम *गुर्जरा.* निरुपम

निरोल **गुर्जरा. *नेमिछं. *विमप्र.* [*तैयारी]

निर्गमे *अखाका.* दूर करे; *प्रेमाका.* वितावे, पसार करे

निर्गुणगारु *नरका. नलरा.* अवगुण करनार, नगुणो (सं.निर्गुण+कारक)

निर्घोख *नलाख्या.* निर्घोष, अवाज

निर्घोष *नरका.* अतिशय घोषवाळा, मोटा (सं.)

निर्जणइ *गुर्जरा. *प्रबोप्र.* जीते, परास्त करे, विनाश करे [सं.निर्जित, प्रा. निज्जिण]; जुओ निरजणी, निर्जिणइ

निर्जर *प्रेमाका.* वृद्धत्व विनाना, देव [सं.]

निर्जरा *आनंस्त. प्राचीका.* तप वगेरेथी कर्मनो क्षय करवो ते [जै.]

निर्जिणइ *विराप. षडाबा.* जीते, परास्त करे [सं.निर्जित, प्रा.निज्जण]; जुओ निज्जिणिउ, निर्जणइ

निर्दावो जुओ निरदावो

निर्दूषण *शृंगामं.* दूषण वगरनुं [सं.]

निर्दे *प्रेमाका.* निर्दय

निर्धाटइ *उक्तिर. षडाबा.* हांकी काढे (सं. निर्धाटयति) [दे.णिद्धाड]; जुओ निद्धाडइ, निधाड-

निर्धार *प्रेमाका.* नक्की, अवश्य [सं.]

निर्ध्धार *आनंस्त.* निर्धार, [नक्की]

निर्ब्बंध *आरारा.* संबंधविच्छेद

निर्भर्छिवउं *उपबा.* तिरस्कार करवो, ठपको आपवो (सं.निर्भर्त्सयति)

निर्मछर *कादं(शा).* अदेखाई विनानुं (सं. निर्मत्सर)

निर्मदा *नलरा.* नर्मदा नदी

निर्माण *दशस्कं(२). प्रेमाका.* माप, प्रमाण

निर्मायी *आनंस्त.* माया विनानुं, [राग विनानुं]; जुओ निरमाय

निर्मुख *दशस्कं(१). प्रेमाका.* विमुख, मों फेरवीने, खाली हाथे पाछा; जुओ निरमुख, नीरमुख

निर्मोक *कादं(शा).* सर्पनी कांचळी (सं.)

निर्यास *आनंस्त.* निश्चय

निर्लोभपणउं *उपबा.* निर्लोभीपणुं

निर्वत्य *प्रेमाका.* निर्वृति, आनंद, संतोष

निर्वहइ **लावल. हरिख्या.* पार पाडे, [उपाय करे]; *उपबा.* परिपालन करे, -ने प्रमाणे चाले (सं.निर्वहति)

निर्वाण *अखाछ. दशस्कं. नरका. प्रेमाका.* अवश्य, नक्की; जुओ निरवाण

निर्वाप *उक्तिर.* पितृने अनुलक्षीने करेलुं दान (सं.)

निर्वृत्ति *कादं(शा).* आनंद, [निरांत] (सं.)

निर्वेद *अखेगी.* वैराग्य [सं.]

निर्वेदी *अखाछ.* निरवयवी, अवयव विनानुं

निलउ **आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. जिनरा.* स्थान, वासस्थान, घर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.निलय)

निलखणउ *उक्ति.* लक्षणहीन, गुणहीन (सं.निर्लक्षणः)

निलग *अखाछ.* अलग, [असंगपणे, मुक्तपणे]

निलवट *ऐतिका. नरका. प्राचीफा. लावल. हरिख्या.* ललाट, कपाळ [सं.निटलपट्ट]

निलाटपट्टि *कृष्णच.* ललाटपट्टे

निलाड *आरारा. उक्ति. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नरका. वीसरा.* कपाळ [सं.निटलपट्ट]

निलुक्क *प्राचीसं.* गुप्त, तिरोहित [दे.]

निव *गुर्जरा.* राजा (सं.नृप)

निवड *ऐतिका. नलरा.* सज्जड, [मजबूत], घनिष्ठ; *षडाबा.* दृढ, [भरपूर] (सं.निबिड)

निवडियउ *उक्ति.* नीवड्युं, पार पड्युं [सं. निवर्तितम्]

निवत्तइ *षडाबा.* पाछो फरे (सं.नि+वृत्)

निवरुं *अंबरा.* [उपयोग वगरनुं], खाली (घर); कामकाज वगरनुं, नवरुं

निवर्ते *प्रेमाका.* निवृत्त थाय, दूर थाय

निवर्त्तन *आनंस्त.* निषेध, [-मांथी हठवुं ते] [सं.]

निवल *प्राचीसं.* बेडी (सं.निगड) [दे.णिअल]

निवसइ *ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका.* निवास करे, रहे (सं.निवसति)

निवही *आरारा.* निर्वहण करी, उपाडी

निवाण *आरारा.* नवाण, जळाशय (सं. निपान)

निवात *आरारा. वीसरा.* खांड, साकर (रा.) (अ.नबात)

निवायउ *उक्ति.* वायु वगरनो (सं.निर्वातः)

निवार्यउ *आरारा.* आघो कर्यो [सं.निवारित]

निवालिय *प्राचीसं.* नवमालिका

निवासी *नेमिछं.* वसावी; -मां राखी

निवांण *ऋषिरा.* नवाण, [जळाशय]

निविरइ *गुर्जरा.* प्रसन्नताथी, [विश्रान्तिपूर्वक, सहजताथी] (सं.निर्वृत)

निवी *उक्ति.* गोळ, घी वगेरे विकार उत्पन्न करनार पदार्थोना त्यागपूर्वकनुं एक जैन व्रत (सं.निर्विकृतिक); जुओ नीवी

निवेडो *अखाका.* निकाल, अंत

निवेदन (नित्य निवेदन) *अखाछ.* रोज निवेदित (रजू) थतुं आत्मतत्त्व

निवेदिवुं *उक्ति.* जणाववुं (सं.निवेदयित्वम्)

निवेद्यु *कादं(शा).* निवेदन कर्युं, जाण करी (सं.निवेदितः)

निवेस *आरारा.* आवास; *ऐतिका. गुर्जरा.* स्थान (सं.निवेश)

निवेसइं *गुर्जरा.* मूके छे (सं.निवेशयति)

निव्वइ *प्राचीसं.* निर्वृति, [परम आनंदनी शांत दशा]

निव्वाण *हम्मीप्र.* नवाण, तळाव, [जळाशय] [सं.निपान]

निव्वाण *तेरका.* निर्वाण, [मोक्षदशा]

निशाचरी *प्रेमाका.* रात्रे फरनारा, चोरडाकु

निशाण *मोसाच. प्रेमाका.* नोबत, सैन्य के सवारीनी आगळ फरकती धजानी साथे वागतुं मोटुं नगारुं [सं.निःस्वान]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निशाण (निशाण दीधां) *प्रेमाका. [नोबत वगडावी, जवानी तैयारी करी]

निशाणी *चित्तसं.* निशानी, लक्षण

निशान *नरका.* धजा, [झंडो, वावटो] [फा.]

निशाने चडीए *अखाका.* [युद्धनो] वावटो फरकावीए, *विजय मेळवीए

निशानो *दशस्कं(२).* निशान, लक्ष्य

निशि *नलाख्या. हरिख्या.* निश्चयपूर्वक, नक्की

निशि *प्रबोप. हरिख्या.* निशामां, रात्रिमां

निशे *चित्तसं.* निश्चे, निश्चितपणे, चोक्कस; निश्चयपूर्वकनो, खरो

निश्चइ *आनंस्त. उपबा. षडाबा.* चोक्कस, निश्चित रीते, नक्की

निश्चय भणि *आरारा.* निश्चयपूर्वक

निश्चे *अखाका. नरका.* निश्चय

निषधिपणइ, निषिधिपणइ *वसंफा(त).* *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* [सर्व उपमानोना] निषेधपूर्वक

निषेधइ *उक्तिर. उपबा. षडाबा.* निषेध करे (सं.निषेधयति)

निष्टे, नीष्टे *दशस्कं(१).* निश्चे, [चोक्कस]

निस *आरारा.* निशा, रात्रि

निसचइ *आरारा.* निश्चय, खातरी

निसणेइ *नलरा.* सांभळे (सं.नि+श्रुणोति)

निसन *नरका.* खिन्न (सं.निषण्ण), [अचेतन, सानभान विनानुं] [सं. निःसंज्ञ]

निसनेह *आरारा.* निःस्नेह, स्नेह वगरनुं

निसपति *अभिऊ.* निष्पत्ति, [उत्पत्ति, पेदाश]

निसप्रेह जुओ प्रेहनिसप्रेह

निसम्ये *ऐतिका.* सांभळ [सं.नि+समय्]

निसरावउ *उक्तिर.* ओसामण (सं.निश्राव)

निसर्ग *सभ्यचो.* स्वभाव [सं.]

निसही *विमप्र.* अन्य व्यापारनो निषेध सूचवतो, जैन मंदिरमां प्रवेशतां त्रण वार उच्चारातो शब्द; जुओ निसीही

निःसंपन्नता *आनंस्त.* [निसबत, संबंध जोडवो ते]

निसंबला *गुर्जरा.* खोराक (भाता) विनाना (सं.निस्+शंबल)

निसाण *नरका. पंचवा. वीसरा.* नोबत, डंको (सं.निःस्वान)

निसाण *प्रेमाका.* सवारीनी आगळ फरकतो वावटो [फा.निशान]

निसालगरणां *नंदब.* निशाळे बेसाडवुं ते [सं.लेखशाला+*करण]

निसांण *देवरा.* डंको (सं.निःस्वान)

निसांणी *आरारा(व).* निसाणी, मसाडी, एक वनस्पति

निसि *अभिऊ. वीसरा.* रात्रि (सं.निशा)

निसिदीस *ऐतिरा. गुर्जरा. विमप्र.* रातदिवस

***निसि परति [निसि परनि]** *कादं(शा).* [चोक्कस बीजाने]

निसिभरी *गुर्जरा.* आखी रात (सं.*निशाभरे)

निसियरु *ऐतिका.* निशाचर, राक्षस

निसिहरि *उषाह.* [भर निशाए], मध्यरात्रे

निसिंद *ऐतिरा.* झरो [सं.निस्यंद]

निसीही *आनंस्त.* '[अन्य व्यापारोनो] निषेध थाब' तेम कहेवुं ते (सं.नैषेधिका); जुओ निसही

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निसुणइ *आरारा. ऋषिरा. ऐतिरा. कृष्णच. लावल. विराप.* सांभळे (सं.निश्रुणोति)
निसुणवि *ऐतिका.* सांभळीने
निसुणेवि *ऐतिका.* सांभळीने
निसूग *उक्तिर.* निर्दय (सं.निःशूक)
निसे *चतुचा.* निश्चे, चोक्कस
निसेज निसेजा *उक्तिर. षडाबा.* [कपडानुं] आसन (सं. निषद्या). [कपडानुं] आसन (सं. निषद्या)
निसोत *उक्तिर.* एक वनस्पति, नसोतर [सं.निसृता]
निस्तर्यउ *उक्तिर.* तर्यो (सं.निस्+तृ)
निस्तारो *अखाका. अखाछ.* पार ऊतरवुं ते, उद्धार, मुक्ति [सं.निस्तार]
निस्प्रेह *अखाछ.* निःस्पृह
निस्प्रेही *अखाका.* निस्पृही, स्पृहा वगरनो
निस्यि, निस्ये *अंगवि. दशस्कं(२).* निश्चे, नक्की
निस्संगा *ऋषिरा.* संग – राग वगरनी (सं.)
निहणीय *गुर्जरा.* हणीने (सं.निहन्)
निहतरइ *ऐतिका.* नोतरे, आमंत्रित करे [सं.निमंत्र्]
निहाइं *गुर्जरा.* प्रहार (सं.निघात)
निहाण *आरारा.* खजानो (सं.निधान)
निहार *चंद्रवा.* बहार काढवुं ते, [मलोत्सर्ग] (सं.); जुओ नीहार
निहि *प्राचीका.* समुद्र (सं.निधि)
निहुंतरीउ *आरारा.* नोतर्यो [सं.निमंत्रित]
निहुंत्रीता **उपबा.* [निमंत्रित]
निंदुव *प्राचीसं.* जेनां बाळक जीवी शकतां न होय एवी स्त्री (सं.निन्दु)
निंब *लावल.* लीमडो [सं.]
निंबू *आरारा(व).* कागदी लींबु (सं.)
नीअंता *चित्तसं.* नियंता, स्रष्टा
नीआवि **जिनरा.* [नियमन करे, नियम करे]
नीक *उक्तिर.* पाणी जवानो मार्ग (सं.)
नीक *उक्तिर.* हाथपग दुखवानो के खंजवाळ आववानो रोग (सं.नीरक्ता)
नीकउ *ऐतिका. प्राचीफा. वीसरा.* सुंदर, मजानो, सरस (सं.निक्त) (दे.णिक्क)
नीकउ *उक्तिर.* [*एक सिक्को, *सुवर्ण, *सुवर्णपात्र] (सं.निष्कः)
नीका *नेमिछं.* नीक, प्रवाह
नीका *नेमिछं.* चोखखी, [सरस]
नीकोलइ, नींकोलइ *उक्तिर.* फोले [सं. निष्कुल; दे.णिक्कोर]; जुओ निकोलिवा
नीखणियामउ *उक्तिर.* *लणणी करनार] [सं.निःक्षणकर्मा]
नीखणी *प्रेमप.* गरीबडी (प्रा.णिक्कण)
नीगम *चतुचा.* वेदशास्त्र, [शास्त्रो]; जुओ निगम
नीगमइ *आरारा. कांद(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. जिनरा. नरका. प्रबोप्र. प्रेमप. प्रेमाका. शृंगामं. षडाबा.* पसार करे, गाळे, वितावे (सं.निर्गमयति); *उपबा. ऐतिका.* गुमावे, वेडफे; *चित्तसं. नरका.* निर्गमे, [दूर करे], न राखे
नीगमणहार *उपबा.* गुमावनार (सं.निर्गमन)
नीगवूं *नलाख्या.* निर्गमुं, पसार करुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीगुण *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* गुणहीन (सं.निर्गुण)

नीचोयु *कादं(शा).* निचोव्यो (सं.निश्चय-वितकः)

नीछोडिउ **विमप्र.* [बहार काढ्यो] [दे. णिच्छोड]

नीजर *देवरा.* नजर, दृष्टिपात

नीजांमा *शृंगामं.* सुकानी, [मुख्य खलासी] (सं.निर्यामक)

नीझणी *गुर्जरा.* अवाज वगरनुं (सं.निर्ध्वनि)

नीझर *गुर्जरा.* झरणुं (सं.निर्झर)

नीझरण *तेरका. वसंवि(ब्रा).* निर्झरण, झरणुं

नीझामता **ऐतिका.* [चिंतन करता] [सं.नि+ध्यायत]

नीठ *उक्तिर. जिनरा.* मुश्केलीए (सं. निष्ठ्या); *प्रद्युचु.* नक्की

नीठइ *आरारा. उक्तिर. कामा(त्रि). चारफा. नेमिछं. प्रेमाका. हरिवि.* समाप्त थाय, नष्ट थाय, खूटी जाय (सं.निष्ठा-)

नीठर *ऐतिरा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. विक्ररा. स्थूलिफा.* निष्ठुर, दयाहीन, [नठोर]

नीठि *उक्तिर.* निष्ठा, [*मुश्केली]

नीठियउ *उक्तिर.* पूरुं करेलुं (सं.निष्ठितम्)

नीठुर *उक्तिर. उपबा. तेरका.* निष्ठुर, नठोर

नीत, नीत्य *अखाका. अखेगी.* नीति, [रीति, रूढि]

नीति *कादं(शा).* नित्य, दररोज

नीत्य जुओ नीत

नीद *वीसरा.* निद्रा

नीदाणकरण *षडाबा.* खेतरमांथी नकामुं घास काढी नाखवुं [सं.निर्+दायति]

नीद्र *गुर्जरा.* निद्रा

निद्रभरि *गुर्जरा.* ऊंघना भारथी, [भर-ऊंघमां]

नीद्रलडी *गुर्जरा. विराप.* नींदलडी

नीद्रालूखउ *उक्तिर.* निद्रा वगरनो (सं.निद्रा-रुक्षक)

नीध *मदमो.* निधि, (रूप)निधि

नीधांन *कामा(शा).* भंडार [सं.निधान]

नीध्य *मदमो.* समृद्ध, [भर्योभर्यो]

नीपट *दशस्कं(२). प्रेमाका.* घणां, अत्यंत (दे.निप्पट)

नीपनउं, नीपन्यउं *कामा(त्रि). कामा(शा).* पेदा थयुं, जन्म्युं; *गुर्जरा. चित्तसं. दशस्कं(१). प्रेमाका. षडाबा.* नीपज्युं, उत्पन्न थयुं (सं.निष्पन्न)

नीपात *कामा(त्रि). कामा(शा).* निपात, विनाश

नीपायउं *अभिऊ. उपबा. ऋषिरा. कादं(ध्रु). कादं(शा). नरका. नलाख्या. नेमिछं. मोसाच. लावल. शृंगामं. षडाबा.* निपजावेलुं, निपजाव्युं, तैयार कर्युं, उत्पन्न कर्युं (सं.निष्पादित)

नीपावउं *आरारा. नेमिछं.* नीपजावुं, उत्पन्न करुं, बनावुं (सं.निष्पादय्)

नीभर *प्राचीफा.* गाढ (सं.निर्भर)

***नीमेडी [*नीमेडी]** *ऋषिरा.* ?, [*निवेडी, *उकेली] [हिं.निबेडना]; जुओ निमेडि

नीम *जिनरा.* नियम, त्याग[नुं व्रत]; *चतुचा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरका. नलाख्या. प्रेमाका. नियम, प्रतिज्ञा, [व्रत]; *नेमिछं.* नक्की

नीमडइ *अखाका. अखाछ. अखेगी. अंबरा. चित्तसं. प्रेमाका.* नीवडे, पाकी बने; **अखेगी.* [समाप्त थाय, नष्ट थाय] [रा.नीमडणौ]; जुओ नीमेडि, नीवडइ

नीमाला *विमप्र.* मोवाळा, [वाळ]

नीमालिय, नीमालीय *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* नवमालिका

नीमी *आरारा. उक्तिर.* मूलधन, मूडी (सं.नीवी); *उक्तिर.* नाडुं, अधोवस्त्रनी गांठ (सं.नीवी)

नीमेखमां *मदमो.* निमेषमां, पलकमां

नीमेडि **विमप्र.* [नष्ट करी]; *शृंगामं.* ?, [*छूटा करी] [रा.] [हिं.निबेडना]; जुओ निवेडो, नीभेडी, नीमडइ

नीय *आरारा. गुर्जरा.* निज, पोतानुं

नीय गोय *जिनरा.* नीच गोत्र, [नामकर्मनो एक प्रकार जेना उदयथी प्राणी हलका कुळमां जन्मे] [जै.]

नीयांण *आरारा.* निदान, चोक्कस

नीर *आरारा.* कांति, दीप्ति (रा.)

नीरघोख *मदमो.* निर्घोष, [अवाज]

नीरज *गुर्जरा. प्रेमाका.* नीरमां जन्मेलुं, कमळ (सं.)

नीरज *गुर्जरा.* रजोगुण – आवेग विनानुं, [राग विनानुं] (सं.निस्+रजस्)

नीरती **जिनरा.* [चोख्खी, स्पष्ट] [सं. निरुक्ति]; जुओ निरति

नीरत्य **अखाका.* [चोख्खुं]

नीरद *गुर्जरा. नरका. विराप.* वादळ (सं.)

नीरदोषण *चंद्रवा.* निर्दोष ?, [दूषण विनानुं]

नीरधार *कामा(त्रि).* निर्धार, नक्की

नीरफळ *दशस्कं(२).* निष्फळ

नीरमाल *कामा(शा).* निर्माल्य, [त्याज्य]

नीरमुख *चंद्रवा. मदमो.* विमुख, पाछी (सं.निर्मुख); जुओ निर्मुख

नीरलालची *वेताप.* लालचु नहीं तेवो

नीरवाण, नीरवांण *कामा(त्रि). कामा(शा).* नक्की, जरूर [सं.निर्वाण]

नीरंगु *गुर्जरा.* रंग के आसक्ति वगरनुं (सं.नीरंग)

नीलउ *आरारा.* लीलुं [सं.नील]

नीलक *जिनरा.* वस्त्रविशेष

नीलचास *आरारा.* चास पंखी जेवुं लीलुंछम

नीलज *आरारा. कादं(शा). कामा(शा). गुर्जरा. जिनरा. दशस्कं(१). नलाख्या.* निर्लज्ज

नीलडउ *प्राचीफा. हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

नीलवट *कामा(शा). प्रेमाका. मदमो.* कपाळ, ललाट (प्रा.निडल-+-वट्ट-)

नीलवण, नीलवणि *ऐतिका. प्राचीफा.* लीलुं शाक, लीलोतरी

नीलुं *उपबा.* लीलुं, आर्द्र, [आळुं (चामडुं)] (सं.नील); *गुर्जरा.* लीलुं, ताजुं

नीलाट *अभिऊ.* कपाळ [सं.निटलपट्ट]

नीलाड *आरारा.* ललाट [सं.निटलपट्ट]

नीलेरी *विक्रच.* वादळी रंगनी

नीवडइ *उक्तिर.* स्पष्ट थाय [सं.निवर्तयति];

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ निमडइ

नीवाणो **ऐतिका.* [नवाण, जळाशय] [सं.निपान]

***नीवारि** **लावल.* [नवडावे]

नीवी *तेरका.* तपविशेष; जुओ निवी

नीवेल(?) *तेरका.* ?

नीशाण *नलाख्या.* निशान, सवारीने मोखरे वागतुं वाद्य, [नोबत] (सं.निःस्वानम्)

नीशां, नीसां *मदमो.* निश्चय

नीशांण *मदमो.* वावटा [फा.निशान]

नीशांण *कामा(शा).* नोबत

नीशे *कामा(त्रि). चंद्रवा. दशस्कं(१). मदमो.* निश्चे, नक्की

नीष्टर *विक्ररा.* निष्ठुर, नीच

नीष्टे जुओ निष्टे

नीस *कामा(त्रि).* निशा, रात्रि

नीसत ०*ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. लावल. विमप्र. शृंगामं.* निःसत्त्व, निर्बळ, कायर

नीसतपणउं *उपबा.* निर्बळपणुं

नीससइ *उक्तिर.* निश्वास नाखे (सं.निःश्वसिति)

नीसंक *गुर्जरा.* निःशंक, [निर्भय]

नीसा *उक्तिर.* वाटवानो पथ्थर [दे.णीसा]; जुओ नीहा

नीसाण *आरारा. उक्तिर. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. विमप्र. विराप.* नोबत, नगारुं (सं.निःस्वान)

नीसास *उपबा. षडाबा.* निःश्वास

नीसां जुओ नीशां

नीस्चत *कामा(त्रि).* निश्चित

नीस्यां *सिंहा(शा).* खातरी ? (सं. निश्चितम् ?)

***नीहपलव [*नहपलव]** **चंद्रवा.* [नवपल्लव, पल्लवित]

नीहा *चंद्रवा.* वाटवानी निशा, [वाटवानो पथ्थर] [दे.णीसा]; जुओ नीसा

नीहार *शीलक.* मलत्याग [सं.]; जुओ निहार

नींक *लावल.* धार, प्रवाह, [पाणी जवानो रस्तो] [सं.नीक]

नींकोलइ जुओ नीकोलइ

नींख- *नलरा.* नाखी देवुं (सं.निक्षिप्) [रा.]

नींगमइ *उपबा. ऋषिरा.* दूर करे, खुए (सं. निर्गमयति); *उक्तिर. ऋषिरा.* वितावे

नींगलि *कादं(शा).* टपके (सं.निर्गलति)

नींगुण *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* निर्गुण

नींठर जुओ नीठर

नींद्र *षडाबा.* ऊंघ (सं.निद्रा)

नींब *आरारा(व).* लीमडो (सं.निम्ब)

नींबू *आरारा. उक्तिर.* कागदी लींबु (सं. निंबू)

नींमीउ *गुर्जरा.* निर्मित थयुं

नींशाण *नलरा.* निशानडंका (सं.निःस्वान)

नींसाण *ऋषिरा.* निशान, [नोबत]

नुखसान *आनंस्त.* नुकसान, [दोष, एब, कलंक]

नुतरुं *पंचवा.* नोतरुं (सं.निमंत्रणम्)

नुमाह जुओ सीतनुमाह

नुमु *नलरा.* नवमो (सं.नवम)

नुल *उषाह. सिंहा(म).* नोळियो (सं.नकुल)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नुहइ *ऐतिरा. कादं(शा). नलरा. नलाख्या. विमप्र.* न होय (सं.न+भवति)

नुहत्रणइ *अंबरा.* नोतरामां, नोतरुं देवा माटे

नुहरा *आरारा. हम्मीप्र.* आजीजी, कालावाला

नूगि *अभिऊ.* न ऊगे

***नूतांकुर [चूतांकुर]** *कादं(शा).* आंबाना अंकुर [सं.]

नून *नलाख्या.* ओछुं, ऊणुं (सं.न्यून)

नून्य *अखाका.* न्यून, खामी, ऊणप

नूंजडी *हरिवि.* नोंजणुं, नोंझणुं, [दोहती वखते गायभेंसने पगे बांधवानुं दोरडुं] [सं.निबध्यते परथी]

नूंपर *गुर्जरा.* नूपुर, झांझर

नृत *अखाका.* खबर, जाण; जुओ नरत

नृत *मदमो.* नाच (सं.नृत्य)

नृति *कादं(शा).* नृत्य करे (सं.नृत्यति)

नृत्त *अखाका.* नृत्य, [खेल]

नृत्ति *कादं(शा).* नाचे (सं.नृत्त परथी) [सं. नृत्यति]

नृत्यकारी *विराप.* नर्तिका

नृपतइं *गुर्जरा.* राजाए (सं.नृपति)

नृम *चंद्रवा.* नरम

ने- *तेरका.* दोरवुं, लई जवुं (सं.नय्)

नेअर *प्राचीफा.* नूपुर, झांझर

नेउर *उषाह. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंहा(शा).* नूपुर, झांझर

नेउरी *ऋषिरा. लावल. विक्करा. विमप्र. शृंगामं.* नूपुर, झांझर

नेक, नेकी *चंद्रवा.* सारुं, उत्तम, श्रेष्ठ, [पवित्र] [फा.]

नेके **चंद्रवा.* [नक्की]

नेग *प्रेमाका.* नेह, स्नेहसंबंध

नेजउं *अखाका. ऐतिका. प्रेमाका. वीसरा.* वावटो, वावटावाळी लाठी के भालो, भालो (फा.नेझ)

नेट *अखाका. अखाछ. अखेगी. कामा(त्रि). कामा(शा). चंद्रवा. *जिनरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. नंदब. प्रेमाका. मदमो. हरिख्या.* नक्की, जरूर

नेट्य *चित्तसं.* नक्की, निश्चितपणे, ज

नेठ *मदमो.* नक्की

नेठाउ *गुर्जरा-टि.* निर्णय [सं.निष्ठा]

नेठो *अखाका. चित्तसं.* छेडो, अंत

नेडउ *जिनरा. वीसरा.* नजीक (सं.निकटम्)

नेडे *अखाका. चित्तसं. जिनरा.* नजीक, निकट; *अखाका.* अंते, छेडे

नेडो **अखाका.* [?]

नेडो आणजे *चित्तसं.* परीक्षा करजे ? विवेक करजे ?

नेतनेत *चतुचा.* नेतिनेति, [अवर्णनीय]

नेती *मदमो.* अवर्णनीय (सं.न इति)

नेत्र *प्रेमाका.* बरु, [नेतर]

नेत्र *हरिवि.* झीणुं रेशमी वस्त्र [सं.]

नेत्रउ *उक्तिर.* [*नेतरुं] (सं.नेत्रम्)

नेत्रवेली *आरारा(व).* नेतर (सं.वेत्रलता)

नेफेरी जुओ नफेरी

नेम *अखाका. कामा(त्रि). प्रेमाका.* नियम, प्रतिज्ञा, [व्रत]; *अखाका.* निश्चय;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तसं. नियम, नियमपूर्वक

नेमाल *अखाका.* *लक्ष्य, *निशान (*सं. नियम>नेम), [*जाळ]

नेमि *गुर्जरा. विराप.* नेम, लक्ष्य (सं.नियम)

नेमिसर *विक्ररा.* नेमीश्वर

नेरयण *सिंहा(म).* निर्णय

नेरांति *आरारा.* निरांत

नेव *जिनरा. प्रेमाका.* नेवां, छापरा उपरनां नीचेनी किनारी उपरनां नळियां; *जिनरा.* नळियां [सं.नीव्र]

नेवज *जिनरा. विमप्र.* नैवेद्य

नेवत्थ *प्राचीसं.* नेपथ्य, [वेशभूषा]

नेविज्ज *शृंगामं.* नैवेद्य

नेवेला जुओ वेला

नेशाल *विक्ररा.* निशाळ [सं.लेखशाला]

नेष्ट *नरका. प्रेमाका.* नठारा, खराब, हलका (सं.न+इष्ट)

नेष्टचरज्या *प्रेमाका.* [गुप्तचर्या, छूपा वेशे रहेवुं ते] [सं. निशाचर्या]; जुओ नष्टचर्या

नेष्टा *चित्तसं.* निष्ठा

नेष्टिक *चित्तसं.* नैष्ठिक, निष्ठावंत, साचा

नेसडू *नलरा.* भरवाडोनुं जंगलमां आवेलुं निवासस्थान, नेसडो (सं.निवेश+डू)

नेसाल *अंबरा. गुर्जरा. नलरा.* निशाळ, पाठशाळा (सं.लेखशाला)

नेसाली *कादं(शा).* निशाळ (सं.लेखशालिका)

नेसालीआ, नेसालीया *उपबा. गुर्जरा.* निशाळिया

नेसालीयउ जुओ वडो नेसालीयउ

नेसेक *सिंहा(शा).* निःशंक, नक्की

नेस्ती *प्रेमाका. ललिरा.* मोदी, [खोराकनी वस्तु वेचनार] (दे.णेसत्थि)

नेह *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. मदमो. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* स्नेह

नेहगहेलउ *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* प्रेमघेलुं (सं. स्नेह+दे.गहिल्ल) [सं.स्नेह+ग्रह+इल्ल]

नेह चुको *पंचवा.* *निशान चूक्यो (दे.णेम परथी), [*रस्तो चूक्यो, *आखड्यो]

नेहझड *नरका.* स्नेहनी झडी

नेहडइ *आरारा.* स्नेहथी

नेहलु *नलरा.* स्नेह, नेह

नेहपराणउ, नेहपरायण *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* स्नेहपरायण

नेहा *नेमिछं.* स्नेह

नेहाला *नेमिछं.* स्नेहयुक्त

नेहिय *गुर्जरा.* स्नेह करीने

नेहुर *सिंहा(शा).* नूपुर

नेहेमेरो *मदमो.* नमेरो, निर्दय

नैअर *कृष्णबा.* [नगर, गाम]; जुओ नैयर

नैअरलोक *कृष्णबा.* [नगरनां – गामनां लोको]

नैअर-पुर *कृष्णबा.* [नगर, गाम]

नैअंणे *मदमो.* नयणे

नैयर *प्राचीका.* नगर; जुओ नैअर

नैयायक *चित्तसं.* नैयायिक दर्शन, न्याय-दर्शन

नैरत *विमप्र.* नैर्ऋत्य खूणो

नैरस *चतुचा.* नीरस

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नैराशी *अखाका. चित्तसं.* आशा – आसक्ति-थी रहित

नैव *गुर्जरा. चंद्रवा.* नहीं ज

नैवेद *चित्तसं.* निवेदन, समर्पण

नैवेदन *अखाछ.* निवेदन, [प्रार्थना, समर्पण-भाव]

नैंणे *मदमो.* नयणे

नोइंद्रिय *आनंस्त.* [इन्द्रिय जेवुं] मन [जै.]

नोउत्तम, नौउत्तम *चंद्रवा.* नवुं, नवतम, [सुंदर]

नोकषाय जुओ छ नोकषाय

नोछावरी *अखाका.* न्योच्छावरी, आत्म-समर्पण

नोडि *अभिऊ.* न ओडे, न लंबावे

नोमाली *उक्तिर.* नवमालिका

नोलखीइं *गुर्जरा.* ओळखाय नहीं

नोलमुंही *अभिऊ.* नोळिया जेवा मुखवाळी (सं.नकुलमुखी)

नोली *चित्तसं.* नौली, पेट हलाववानी विधि, हठयोगनी षट्कर्मविधि पैकीनी एक

नोळीकर्म *प्रेमाका.* पेटनां नळ – आंतरडां हलाववानी योगनी एक क्रिया

नोहरा *नरका.* नहोरा, कालावाला, आजीजी

नोहली *उक्तिर.* ताजी फळी (सं.नव-फलिका)

नोहोरानुं *मदमो.* ?, [उपकारनुं] [हिं. निहोरा]

नोहे *अखाका. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* न होय

नोहे घन ने चाप *अखाका.* वरसाद अने इन्द्रधनुष्य बन्ने न होय, [ए बन्नेथी पर एवी, केवल आकाशरूप स्थिति]

नोहोतरां *नंदब.* नोतरां [सं.निमंत्रण]

न्यरवह्युं *चित्तसं.* निरवह्युं, चलाव्युं

न्यर्त्य *चित्तसं.* निवृत्ति, परिणाम

न्यवहुं *नरप.* छुं, [थाउं, करुं] (सं.नि-वह्)

न्यहालि *नलाख्या.* निहाळे, नीरखे (सं. निभाल्)

न्याइ *प्रबोप्र.* न्याययुक्त, [विवेकयुक्त, ज्ञान-युक्त] (सं.न्याय्य)

न्याइ *प्राचीसं.* न्यायमां, [खराखोटानी परीक्षामां]

न्यान *आरारा. प्राचीफा.* ज्ञान

न्यानी *आरारा.* ज्ञानी

न्यास *आनंस्त.* स्थापना [सं.]

न्यापित *ऋषिरा.* हजाम (सं.नापित)

न्यावट *मदमो.* न्यायवट, न्यायवृत्ति; जुओ नावट

न्यावांण *मदमो.* नवाण, [जळाशय] [सं. निपान]

न्युंछणउं *उक्तिर.* लूछणुं, ओवारणुं (सं. न्युञ्छनकम्)

न्युंजणउं *उक्तिर.* दोहती वखते गायभेंसने पाछले पगे बांधवामां आवतुं दोरडुं, नोंजणुं [सं.निबध्यते परथी]

न्यून *नरका.* अधूरप, खामी [सं.]

न्यून्य *प्रेमाका.* खामी, खोट

न्येट *कादं(शा).* नक्की (सं.निवृत्ति परथी शक्यता); जुओ नेट

न्रतकी *मदमो.* नर्तकी

न्हवण *आनंस्त. तेरका. प्राचीफा.* नवडाववुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते, स्नान (सं.स्नपन)
न्हवारइ *उक्ति.* नवडावे (सं.स्नपयति)
न्हाउ *उक्ति.* नाहेलुं (सं.स्नात)
न्हाण *आरारा. वीसरा.* स्नान

पअ *मदमो.* दूध (सं.पयस्)
पइ **उषाह. प्राचीफा. वसंफा(ल).* पग (सं. पद)
पइआल *अभिऊ. नेमिछं. प्राचीका.* पाताळ
पइठ जुओ पयट्ठ
पइठउ *उक्ति. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि.* पेठो, प्रवेश कर्यो (सं.प्रविष्ट)
पइदिणि *गुर्जरा.* रोज (सं.प्रतिदिने)
पइर *नलरा. विक्ररा.* पेर, [स्थिति, दशा; वात] (सं.प्रकार)
पइलउ *उक्ति.* पेलो
पइसइ *उक्ति. उपबा. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप. षडाबा.* पेसे, प्रवेशे (सं.प्रविशति)
पइसठि *ऐतिरा.* पांसठ [सं.पंचषष्टिः]
पइसण *जिनरा.* प्रवेश करवो ते
पइसणहार *षडाबा.* पेसनार, प्रवेशनार
पइसरइ *ऐतिका.* प्रवेशना समये
पइसार *अंबरा. उषाह. प्राचीसं.* प्रवेश
पइसारउ **गुर्जरा.* [प्रवेश थवो ते]
पइसिवा *उक्ति.* पेसवा, प्रवेशवा
पइं *षडाबा.* पैडां (सं.प्रधिः)
पइं **उषाह.* [पद – शब्द वडे]
पइं *षष्टिप्र.* -ना करतां (सं.प्रति)
पइंत्रीस *उक्ति.* पांत्रीस (सं.पंचत्रिंशत्)
पइंपइ *प्रद्युचु.* बोले [सं.प्रजल्पति]
पइंसठि *उक्ति.* पांसठ (सं.पंचषष्टिः)
पई *अखाछ.* महेमान [सं.पथिक]
पईट्ठ, पईठ *वसंफा. वसंवि.* पेठो (सं. प्रविष्टः)
पईडा *अंबरा.* पड्या
पईमईं *अंबरा.* प्रेमथी
पईव *तेरका.* प्रदीप
पउढउ *लावल.* पोढो, सूओ
पउढाडइ जुओ ढाडइ
पउढी *नेमिछं.* मोटी (सं.प्रौढ)
पउण *षडाबा.* पोणुं (सं.पादोन)
पउतीयां *गुर्जरा.* पोतियां, धोतियां (सं.प्रोत) [दे.पोत-]
पउम *ऐतिका.* पद्म
पउमएवि *ऐतिका.* पद्मादेवी
पउमप्पह *ऐतिका.* पद्मप्रभ जिन
पउलि *वीसरा.* दरवाजो (सं.प्रतोलि)
पउहउचावीयउ *आरारा.* पहोंचाड्यो
पउंजणी *उक्ति.* पोंजणी, सूतर के भींडीनी नानी सावरणी (सं.प्रमार्जनिका)
पउंजी *षडाबा.* साफ करीने, लूछीने [सं. प्रमार्ज्]
पउंतार *षडाबा.* नियमन करनार, [महावत] (सं.प्रयोक्तृ)
पक्खर *गुर्जरा.* पाखर, घोडानो साज (दे. पक्खरा)
पक्खाउज *गुर्जरा.* पखवाज (सं.पक्षातोद्य)
पक्खाल- *तेरका.* पखाळवुं, धोवुं (सं.प्र+

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षाल्)

पक्खि *गुर्जरा.* पक्षे, पक्षमां

पक्खिया *गुर्जरा.* पंखी (सं.*पक्षिका)

पक्वान्नु *षडाबा.* तेल-घीमां तळेली विशिष्ट वानगी (सं.)

पक्ष *दशस्कं(१).* *प्रेमाका. पांख, छत्रछाया

पक्षीया *गुर्जरा.* पंखी (सं.पक्षिन्+क)

पख *गुर्जरा.* पक्ष, बाजु; *नरका.* पक्ष, पखवाडियुं

पखइ *उपबा.* *गुर्जरा. *जिनरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीसं. विराप. सिंहा(म).* विना (सं.पक्षस्मिन्)

पखइ *लावल.* पक्षे, बाजुए

पखरिय *ऐतिका.* पाखरेल, साज चडावेल (सं.प्रक्षरितः)

पखवाडुं *उपबा. नरका. नेमिछं.* पखवाडियुं (सं.पक्ष+पाट)

पखाज जुओ पखाल

***पखाल [पखाज]** *आरारा.* पखवाज

पखाल, पखाळ *चंद्रवा. प्रेमाका. षडाबा.* प्रक्षालन, धोवानी क्रिया (सं.प्रक्षाल्)

पखालण *आरारा.* धोनार (सं.प्रक्षाल्)

पखालण करवुं *दशस्कं(१).* पखाळवुं, प्रक्षालन करवुं, [धोवुं]

पखां जुए *चित्तसं.* पडखां जुए, जातने तपासे

पखि *उषाह.* सिवाय (सं.पक्षके); *नेमिछं. प्राचीसं. लावल.* पक्षे, बाजुए, [तरफ]; *अभिऊ.* पक्षे, [कुले]

पखी *आनंस्त.* बाजुनी, [तरफनी]

पखीइ *नलरा.* विना (सं.*पक्षस्मिन्)

पखुं *उषाह.* कुल (सं.पक्ष); *अखाछ.* पडखुं, [बाजु]; पक्ष, [वाडो]

पखे *अखाका. चंद्रवा. चित्तसं. मदमो. लावल.* विना

पखे *अखाछ.* पक्षमां, बाबतमां

पखें *सिंहा(शा).* विना

पखै *जिनरा.* विना

पखोडणि *षडाबा.* खोडवुं, चोंटाडवुं, लगाववुं ते (दे .पक्खो ड)

पखोडी *कादं(धु). कादं(शा).* खंखेरीने [दे. पक्खोड]

पख्य *चित्तसं.* पखे, विना

पग गोपाविवा जुओ गोपाविवा

पग घालुं गळा मांह्य *प्रेमाका.* मुश्केल स्थितिमां मूकुं

पगठ *विमप्र.* पग नीचे राखवानो बाजोठियो

पगपान *प्रेमाका.* स्त्रीओनुं पगना पोंचानुं एक आभूषण [हिं.]

पगपडण *नलरा.* पहेली वार सासरे आव्या पछी वहु वडीलोने पगे लागे ए क्रिया

पगर *आरारा. ऋषिरा. नेमिछं. वीसरा.* समूह, गुच्छ (सं.प्रकर); जुओ फूलपगर

पगरण *नरका.* (शुभ) प्रसंग, [तेनुं मंडाण] (सं.प्रकरण); जुओ वीवाहपगरण

पगवट *उषाह.* पगवाट (सं.पदवर्त्म) [सं. पदाग्र+वर्त्म]

पगार *अंबरा. आरारा. *उषाह. गुर्जरा. प्राचीफा. रूपच. *लावल. विक्ररा.* कोट, किल्लो (सं.प्राकार)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगिपगइ *आरारा.* पगलेपगले, पाछळ-पाछळ; *प्राचीसं.* पदेपदे, [डगले ने पगले, बधे ज समये]; *गुर्जरा.* पगलं-पगले, दरेक पगले

पघवाह *प्रबुचु.* पांगोठुं, पेंगडुं

पचइ *उक्तिर. षडाबा.* रंधाय (सं.पच्यते); *अखाका. अखाछ.* मग्न थाय, रच्या-पच्या रहे

पचखाण *आरारा. उक्तिर. ऐतिका. नलरा.* कोई वस्तुनो त्याग करवानी प्रतिज्ञा (सं. प्रत्याख्यान)

पचखुं *आरारा. ऐतिका.* त्यागनो नियम करुं

पचतालीस *उक्तिर.* पिस्ताळीस (सं.पञ्च-चत्वारिंशत्)

पचवी *चतुचा.* दळेली ?, [*परिपक्व]

पचव्यूं *नलाख्या.* पकवेलुं, रांधेलुं (सं.पच्)

पचारइ *उक्तिर. नेमिछं. प्रबुचु.* महेणुं मारे, [उपालंभ आपे, टोणा रूपे कही बतावे] (अप.पच्चार); *अंगवि.* महेणां देतां आह्वान आपे

पचिवउं *उपबा.* ऊकळवुं, [शेकावुं] (सं. पच्यते); *उक्तिर.* रांधवुं

पच्चक्खाण *जिनरा.* त्याग(नुं व्रत) (सं. प्रत्याख्यान)

पच्चक्खु *ऐतिका.* प्रत्यक्ष

पच्चल *प्राचीसं.* समर्थ [दे.]

पच्छलु *तेरका.* पाछळ [सं.पश्च+ल]

पच्छिम *उक्तिर.* पाछळ; *तेरका.* पश्चिम दिशा

पच्छिमहरए *प्राचीसं.* घरना पाछळना भागे [सं.पश्चिमगृहे]

पच्छेवडी *षडाबा.* पछेडी [सं.प्रच्छदपट]

पच्छेवाणु *गुर्जरा.* पाछलो भाग, [पाछळ रहेवुं ते] (*सं. पश्चादनीक)

पच्छोकडु *उक्तिर.* पाछळनो भाग (सं.पश्च परथी); जुओ पछोकडउ

पछतावि य *प्राचीसं.* पस्ताईने, [पस्तावो पामीने] (सं.पश्चात्तापिता)

पछिता- *वीसरा.* पस्तावो करवो (सं. पश्चात्ताप)

पछिम *आरारा.* पश्चिम, पाछलो

पछेवडउ *अंबरा. उक्तिर. ऐतिरा.* पछेडो (सं. प्रच्छदपट)

पछोकडउ *उक्तिर.* पाछळनो भाग (सं.पश्च परथी); जुओ पच्छोकडु

पजावो *प्रेमाका.* भट्ठी, [निंभाडो]

पजुन्न *तेरका. प्राचीसं.* प्रद्युम्न

पजून *प्रबुचु.* प्रद्युम्न

पजूसण *उक्तिर. उपबा. ऐतिका.* पर्युषण पर्व [जै.] [सं.पर्युपवसन]

पजोडी (पंजेठी) *मदमो.* पंजेटी, खंपाळी

पञ्चंगि *ऐतिका.* पांच अंगनुं

पट *कामा(त्रि). चित्तसं.* चित्रनो कागळ के पडदो; *अखाका. नरका-२. प्रेमप.* वस्त्र

पटउ *उक्तिर.* राजगादी (सं.पट्टः)

पटउलउं *गुर्जरा. नलरा. विराप.* उत्तम रेशमी वस्त्र, पटोळुं (सं.पट्टदुकूल)

पटउलडी *प्राचीफा.* उत्तम रेशमी वस्त्र, पटोळी, पटोळुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटउलां *विराप.* पटोळां

पटउली *गुर्जरा. प्राचीसं. लावल.* पटोळी, रेशमी साडी

पटकूल *नंदब. विक्ररा.* पटोळुं, रेशमी वस्त्र

पटको *प्रेमाका.* [कमरे बांधवानो] कपडानो टुकडो

पट पाथरी *प्रेमप.* खोळो पाथरी

पटभूषण *कामा(शा).* वस्त्र अने आभूषण

पटरांगीणी *वेताप.* पटराणी [सं.पटराज्ञी]

पटल *मोसाच.* पटेल

पटल **गुर्जरा. *विराप.* [(तेजनो) समूह, वर्तुळ] (सं.)

पटह *कादं(शा).* मोटो ढोल (सं.)

पटंतर *नरका. विक्ररा. सिंहा(शा).* पडदो; छूपुं रहस्य, भेद

पटंतरे *अखाका.* पडदा पाछळ; *नंदब. मदमो.* गुप्त रीते, [संकेतथी, समस्याथी]

पटंतरो *चतुचा.* अंतराय, पडदो; *सिंहा(शा).* अंतर, [भेद]

पटंबर *वीसरा.* रेशमी वस्त्र (सं.पट्ट+अंबर)

पटा *हम्मीप्र.* एक प्रकारनी तलवार

पटाट *विमप्र.* पटो, [घोडानो तंग]

पटायुध *विक्ररा.* तलवारथी खेलातुं युद्ध

पटांतरुं *उक्तिर.* पडदो, अंतराय, भेद

पटुलडी *विमप्र.* पट्टकुळ, पटोळुं, [रेशमी वस्त्र] [सं.पट्टदुकूळ]

पटूलउं *विमप्र.* पटोळुं, [रेशमी वस्त्र]

पटेरो जुओ परेरो

पटोधर *प्रेमाका.* पाटवी, युवराज; *विमप्र.* गादीनशीन; *ऐतिका.* पाट – गुरुगादीना वारस

पटोळी *नरका.* भातीगळ कीमती साडी के ओढणी, [रेशमी वस्त्र]

पट्ट *आरारा.* मुख्य; पाट, गादी (सं.)

पट्टकूल *अंबरा.* उत्तम [रेशमी] वस्त्र

पट्टण *षष्टिप्र.* नगर [सं.पत्तन]

पट्टी *प्रेमाका.* एक शस्त्र, [*धनुर्यष्टि]

पट्टंतरु **ऐतिका.* भेद

पठणहार, पठणहारु *उक्तिर.* वांचनार

पठतु *उक्तिर.* वांचतो

पठवी *नलाख्या.* पाठवी, मोकली (सं. प्रस्थापिता)

पठाणी *विमप्र.* पीठ पर बांधवामां आवता (पटा); [*प्रतिष्ठानपुरना मशहूर (पटा)]; *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

पठायउ *आरारा. ऋषिरा. वीसरा.* मोकल्युं (सं.प्रस्थापित)

पठावियउ *उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिरा.* मोकल्यो (सं.प्रस्थापित)

पड *चित्तसं.* शरीर

पड (पड पितराई) **प्रेमाका.* [पितराईना पितराई, वधु एक पेढी दूरना पितराई]; जुओ पड-पितराई

पडउत्तर *ऐतिरा. नरका.* प्रतिउत्तर, सामो जवाब

पडखइ *उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. जिनरा. नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. विराप. शृंगामं.* राह जुए, थोभे (सं.प्रतीक्षते); **अखाका.* [थोभे, विचारे]; जुओ पडिखइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडखीजइ *ऐतिका.* प्रतीक्षा करवामां आवे, राह जोवामां आवे

पडगमि **कादं(धु). कादं(शा).* -ना तरफ जाय, [-ने पहोंचे] (सं.प्रतिगम्)

पडघउ *उक्ति.* दान लेवा माटेनुं के थूंकवानुं पात्र (सं.पतद्ग्रहम्) [सं.प्रतिग्रह]

पडघी *प्रेमाका.* प्रतिघोष, [जमीन पर वाहन वगेरे चालवानो अवाज]

पडघाइ **कादं(शा).* [आघातथी, -ना लागवाथी] (सं.प्रतिघात)

पडघात *कादं(धु). कादं(शा).* आघात, [अथडावुं ते] (सं.प्रतिघात)

पडच्च *प्राचीसं.* धनुष्यनी पणछ (सं.प्रत्यंचा)

पडजीभी *उक्ति.* पडजीभ, गळानो काकडो (सं.प्रतिजिह्वा)

पडछंदा *अखाका. कामा(त्रि). चित्तसं. प्रेमाका.* पडघा [सं.प्रतिच्छन्दस्]

पडताळ्या *प्रेमाका.* पछाड्या, [पीट्या]

पडतुं *अखाछ.* घडी न शकाय एवुं, [बरड, हलकुं] (सोनुं), जुओ पड्युं

पडपंच *अखाका.* संसार, संसारनी जंजाळ [सं.प्रपंच]

पड-पितराई **नरका.* [दूरना पितराई]; जुओ पड

पडपूछ *प्रेमाका.* वधारे पडती पूछपरछ [सं.प्रतिपृच्छा]

पडमा *देवरा.* प्रतिमा

पडल *उक्ति.* टोपली, पोटली (सं.पटल)

पडलउ *उक्ति.* जैन साधु वहोरवा जाय त्यारे पात्रने ढांकवा वपरातुं वस्त्र (सं.पटलकम्)

पडली जुओ पुप्फपडली

पडलो *अभिऊ.* पल्लुं, लग्न वखते कन्याने वरपक्ष तरफथी आपवामां आवती पहेरामणी [सं.पट+ल]

पडवजिउं *अंबरा.* स्वीकारेलुं, [कबूल करेलुं] [सं.प्रतिपद्]; जुओ पडिवजिउं

पडवडइ *गुर्जरा.* **षडाबा.* जाणे, समजे, (सं. प्रतिपद्य-)

पडवडु *अंबरा. लावल.* सज्ज, [उद्यत]; *नलरा.* **विमप्र.* स्पष्ट, उचित; *ऐतिरा.* प्रसिद्ध, जाहेर [सं.प्रतिपद्]

पडवंड *प्राचीफा.* सज्ज, [उद्यत] (सं.प्रतिपद्)

पडवाडे *दशश्कं(२).* पलवाडे, वाडमां, [पाछली वाडे]; जुओ पडाळे

पडवास *उक्ति.* कंकु वगेरेनुं सुगंधी चूर्ण (सं.पटवासक)

पडसद्दे *कृष्णच.* प्रतिशब्दथी, पडघाथी

पडह *आरारा. उपबा. ऐतिका. कादं(धु). कादं(शा). गुर्जरा. विक्रच. विक्ररा. सिंहा(शा).* पडो, ढोल (सं.पटह)

पडहउ *उक्ति. उषाह.* पडो, ढोल (सं.पटह)

पडहू *उक्ति.* जामीन, जामीनदार (सं. प्रतिभू:); जुओ पढू

पडाई *उक्ति. चंद्रवा.* नानी पतंग (सं. पताकिका)

पडाग *ऐतिका.* पताका, धजा

पडाया *लावल.* पाडी देवामां आव्या

पडाळे *नरका.* परसाळे, ओसरीमां; जुओ पडवाडे, परालें [सं.पटलालि]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिइ *कादं(शा).* पडियामां (सं.पुटक)

पडिक्कमइ *उपबा.* प्रतिक्रमण [जैन धर्म-क्रिया] करे (सं.प्रतिक्रमति)

पडिकमणउं, पडिक्कमणउं *उक्तिर. ऐतिका. षडाबा.* दोषोना प्रायश्चित्त अर्थे थती जैन धार्मिक क्रिया, प्रार्थना (सं.प्रति-क्रमणम्)

पडिकार *ऐतिका.* प्रतिकार

पडिक्कमइ *षडाबा* -नुं प्रायश्चित्त करे, -थी निवृत्त थाय (सं.प्रतिक्रमति)

पडिक्कमणउं जुओ पडिकमणउं

पडिखइ *तेरका. प्राचीसं. स्थूलिफा.* प्रतीक्षा करे, वाट जुए; जुओ पडखइ

पडिगारिउ *उक्तिर.* इलाज करायेल, सचेत करायेल [सं.प्रतिकारित]

पडिगाहि **स्थूलिफा.* [अनुग्रह अर्थे] (सं. प्रति+ग्रह्)

पडिछंदा *प्राचीसं.* पडघा (सं.प्रतिच्छन्दस्)

पडिपुन्न *ऐतिका.* पूरा थया [सं.प्रतिपूर्ण]

पडिबिम्ब *ऐतिका.* प्रतिबिम्ब

पडिबोह- *तेरका.* प्रतिबोध करवो, [उपदेश आपवो]

पडिबोह *ऐतिका.* प्रतिबोध, [उपदेश]

पडिबोहग *जिनरा.* प्रतिबोधक, [उपदेश आपनार]

पडिबोहणओ *ऐतिरा.* प्रतिबोधक

पडियार *सम्यचो.* म्यान [सं.प्रत्याकार]; जुओ पडीआर

पडिरवण *ऐतिका.* प्रतिरव, प्रतिध्वनि, पडघो

पडिलाभी *आरारा. जिनरा.* वहोरावी, दान आपी (सं.प्रतिलाभ्)

पडिलेहइ *उपबा. जिनरा.* सूक्ष्म निरीक्षण करे, तपासे (जै.) (सं.प्रतिलेखयति)

पडिलेहण *उक्तिर.* सूक्ष्म निरीक्षण, तपास (सं.प्रतिलेखना)

पडिवजिउं *गुर्जरा. *नेमिछं. शृंगामं.* स्वीकार्युं [सं.प्रतिपद्]; जुओ पडवजिउं

पडिवन्नउं *आरारा. तेरका. प्राचीसं.* स्वीकृत, अंगीकृत, स्वीकृत वचन (सं.प्रतिपन्नम्)

पडिवा *उक्तिर.* पडवो (सं.प्रतिपदा)

पडिवूं *उक्तिर.* पडवुं (सं.पतितव्यम्)

पडिसूधा *आरारा.* मेंदो (*सं.परिशुद्ध) [*सं.प्रतिशुद्ध]

पडिहाइ *गुर्जरा.* शोभे (सं.प्रतिभाति)

पडिहार *गुर्जरा. प्रद्युचु. षडाबा.* दरवान, द्वारपाल (सं.प्रतिहार)

पडिहारि *अंबरा.* प्रतिहारी, [द्वारपाळ स्त्री]

पडीआर *उक्तिर.* म्यान (सं.प्रत्याकारः); जुओ पडियार

***पडीगइ [पडीगरइ]** *उक्तिर.* सारवार करे (सं.प्रतीकरोति)

पडीगणउं [*पडीगरणउं] *उपबा.* सारवार (सं.प्रतीकरण)

पडीगरइ *उक्तिर.* सारवार करे [सं.प्रती-करोति]; जुओ पडीगइ

पडीगरणउं जुओ पडीगणउं

पडीघ *प्रेमाका.* पडो वगाडनार, ढोल वगाडीने जाहेरात करनार [सं.प्रतिघा-]

पडीमा *ऐतिका.* प्रतिमा

पडीसारउ *उक्तिर.* [*सजावट] (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतीसारक) [प्रा.पडिसार]

पडूछइ *उक्ति.* सामुं पूछे, वारंवार पूछे, पूछीने चाले (सं.प्रतिपृच्छति)

पडूर *आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. जिनरा.* प्रचुर, खूब (रा.)

पडूंचउ *उक्ति.* जामीनगीरीमां मूकेली वस्तु; जुओ पढूचउं

पडोचा **उषाह.* [*पूछपूछ]; जुओ पडूछइ

पड्डुं *अखाछ.* हताश थयेलुं, [भांगी गयेलुं (मन)]; जुओ पडतुं

पड्चे पिंड्चे *चित्तसं.* शरीरनो नाश थतां

पढइ *षडाबा.* भणे (सं.पठति)

पढणहारु *उक्ति.* भणनार

पढम *गुर्जरा. जिनरा. तेरका.* प्रथम

पढमाली *उक्ति.* सवारनो नास्तो [दे. पढमालिआ]

पढिवुं *उक्ति.* भणवुं (सं.पठितव्यम्)

पढीतउं *उक्ति.* ५ढातुं, भणातुं (सं.पठ्य-)

पढू *उक्ति.* जामीनगीरी आपनार (सं. प्रतिभू:); जुओ पडहू

पढूचउं, पढूचूं *उक्ति.* जामीनगीरीमां मूकेली वस्तु; जुओ पडूंचउ

पण *जिनरा. प्राचीसं.* पांच (सं.पञ्च)

पण *उपबा. नलाख्या.* होड, दाव (सं.)

पणच *प्राचीफा.* धनुषनी दोरी, [पणछ] [सं. प्रत्यंचा]

पणनाणी *जिनरा.* [केवळज्ञान सुधीनां पांचे ज्ञान धरावनार], केवळी [सं.पंचज्ञानी]

पणमइ *गुर्जरा. तेरका. नलरा. विक्ररा.* प्रणाम करे (सं.प्रणमति)

पणवीस *जिनरा. प्राचीसं.* पचीस (सं. पञ्चविंशति)

पणास *शीलक.* नाश [सं.प्र+नाश]

पणासइ *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. शृंगामं.* नाश पामे, नाश करे (सं.प्रनश्यते) [सं. प्रनाशयति]

पणासणु *ऐतिका.* नाश करनार [सं. प्रनाशन]

पणांगना *षडाबा.* वारांगना (सं.)

पणि *आनंस्त. उपबा. गुर्जरा. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. षष्टिप्र.* पण, वळी, तो, [ये] (सं.पुनः अपि)

पणि *कादं(शा).* दुकानमां (सं.पण्य)

पणिंदिय *जिनरा.* पंचेन्द्रिय, [जेने पांच इन्द्रिय छे तेवी]

पणीहार, पणीहारि *उक्ति.* पनिहारी, पाणी भरनारी (सं.पानीय+हारी)

पण्ण **कादं(ध्रु).* [दुकान] [सं.पण्य]

पत *नरका. प्रेमाका.* टेक, आबरू

पतगरइ *उषाह. सिंहा(म).* स्वीकार करे [सं.प्रतिकरोति]

पतडउ *जिनरा. वीसरा.* पंचांग, टीपणुं, [तिथिपत्र] (सं.पत्र)

पतत्य *चंद्रवा.* पडतां

पतन्य *चित्तसं.* पतन

पतलइ *नेमिछं.* ढीला पडे, [स्खलित थाय]

पतंग *उक्ति. कामा(त्रि). चित्तसं. षडाबा.* पतंगियुं (सं.)

पतंग *आरारा(व).* पतंगनुं झाड; चंदननी एक जात (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पति(?) *तेरका.* प्रति

पतियावुं *अखाका. अखाछ.* प्रतीति करवी, विश्वास करवो, मानवुं [सं.प्रत्ययति]

पतियाववुं *अखाछ.* प्रतीति करावी [सं. प्रत्याययति]

पतिसाह *आरारा.* पातशाह, बादशाह, अग्रणी

पतीज *नरका. नलरा.* विश्वास (सं.प्रत्यय)

पतीजइ *उक्तिर. तेरका. नरका. प्राचीसं. लावल. वीसरा. शृंगामं.* विश्वास राखे (सं.प्रत्याययते)

पतीजउ *प्राचीसं.* प्रतीति, [खातरी] [सं. प्रत्यय]

पतीठिय *प्राचीसं.* मूर्तिस्थापना करी (सं. प्रतिष्ठित)

पतीठी *ऐतिका.* प्रतिष्ठित करी, [स्थापित करी]

पतीनउं *ऐतिका.* प्रतीति थई

पत्त *आरारा.* पहोंच्यो, पाछो गयो; *ऐतिका.* पहोंच्यो [सं.प्राप्त]

पत्तन *नलरा.* नगर (सं.)

पत्तलि *अभिऊ.* पत्ती, वनस्पतिनी पातरी, [पांदडी] [सं.पत्र+ल]

पत्ति *ऐतिका.* पांदडे [सं.पत्र]

पत्ति *षडाबा.* पगपाळो सैनिक, [सेनाना सौथी नाना विभागनो अधिकारी] (सं.)

पत्तु *ऐतिका.* पहोंच्या [सं.प्राप्त]

पत्थरुं *नेमिछं.* पाथरुं (सं.प्रस्तर्)

पत्थु *गुर्जरा.* पार्थ, अर्जुन

पत्रछेद, पत्रछेद्य *कादं(ध्रु). कादं(शा).* स्त्रीओना कपाळमां चोडवाने माटेनुं भोजपत्र वगेरेनुं कोतरामण (सं. पत्रच्छेद्य)

पत्रछेद्य जुओ पत्रछेद

पत्री *अखाछ.* वृक्ष; पंखी [सं.पत्रिन्]

पत्री *प्रेमाका.* पत्र, चिट्ठी [सं.पत्रिका]

पथक *ऐतिरा.* तालुको, [पंथक, विस्तार]

पथरणउं *उक्तिर.* पाथरणुं (सं.प्रस्तरणम्)

पथिकपराण *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पथिकनां प्राण

पदगर *कर्पूमं.* स्वीकारेलुं, वचन; जुओ पतगरइ

पदठवण *जिनरा.* पदस्थापना

पदम *ऐतिका. वीसरा.* कमळ [सं.पद्म]; **कामा(त्रि).* [पद्मनुं सामुद्रिक चिह्न]

पदमख *आरारा(व).* कमळकाकडी (सं. पद्माक्ष)

पदमी *कामा(त्रि). चंद्रवा. प्रेमाका. मदमो.* पदवी

पदिमनी *नलाख्या.* पद्मिनी, चार प्रकारनी स्त्रीओमां प्रथम प्रकारनी सुलक्षण स्त्री

पदुं *चित्तसं.* आचरुं

पद्म *प्रेमाका.* सो करोडनी संख्या [सं.]

पद्मनी *गुर्जरा.* पद्मिनी, एक उत्तम स्त्रीजाति

पद्य *चित्तसं.* पद, स्थान, स्थिति

पधरावीउ *आरारा.* लाव्यो, प्रवेश कराव्यो [सं.पादौ+धार्]

पधोर **अखाका.* [पाधरुं, सीधुं, अनुकूळ]

पनई *नरका.* **नरप.* मोजडी (सं.उपानह्)

पनउता *लावल.* [पनोता], पवित्र, भाग्य-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाळी [सं.पुण्यवंत]

पनर *उक्ति. उपबा. प्राचीसं. षडाबा.* पंदर (सं.पंचदश) [अप.पन्नरह]

पनरमा *आनंस्त.* पंदरमा

पनरस *षडाबा.* पंदर (प्रा.पण्णरस) [सं. पंचदश]

पनरह *षडाबा.* पंदर (अप.पन्नरह)

पनरागति *कर्पूमं.* *गोटाळो [*पुनरागति, *पुनरा- वर्तन]

पनही *हरिख्या.* मोजडी (सं.उपानह)

पनुतुं *प्रेमाका. विमप्र.* शुकन देनारुं, भाग्यशाळी, पुण्यवंतु, [शुभ, मंगल, पवित्र]

पनुहुतु *नलाख्या.* पनोतो, [पुण्यवंत]

पन्न *तेरका.* पांदडुं (सं.पर्ण)

पन्नग *अखाका. आरारा. प्रेमाका. लावल.* नाग, साप (सं.)

पन्नाग *आरारा(व).* ऊंडी, रक्तकेसर (सं.पुं- नाग)

पन्नाला **विमप्र.* [पर्णकुटि]

पपील *अखाका.* पीपिलिका, कीडी

पपोटा *उपबा.* परपोटा (सं.प्रस्फोटक); जुओ पंपोटा

पभणइ *आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. चारफा. जिनरा. तेरका. नलरा. स्थूलिफा.* बोले, कहे (सं.प्रभणति)

पमज्जणा *जिनरा.* प्रमार्जन, [झाडु काढवुं ते]

पमार *उक्तिर.* परमार

पमारी *वीसरा.* परमार स्त्री

पमावइ *उक्तिर. जिनरा.* [पोमाय], गर्व करे, [फुलाय] (सं.प्रमापयति)

पमासन *सिंहा(म).* पद्मासन

पमुह *ऐतिका. गुर्जरा. तेरका.* प्रमुख, आदि, वगेरे

पमुहाणं *ऐतिका.* वगेरेनां (सं.प्रमुखानां)

पमोउ *ऐतिका.* प्रमोद

पमोडी *उक्तिर.* पद्मबीज, कमळकाकडी (सं. पद्मकर्कटी)

पय *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. वीसरा.* पग (सं.पद); *नेमिछं.* स्थान; *वसंवि(ब्रा).* पद, [काव्यनुं चरण], [शब्द]

पयउहर *वीसरा.* स्तन (सं.पयोधर)

पयकमल *ऐतिरा.* पदकमल, पग

पयठउ *गुर्जरा. विराप.* पेठो (सं.प्रविष्ट)

पयठाण *प्रद्युचु.* नगरविशेष (सं.प्रतिष्ठान)

पयट्ठ, पइट्ठ *प्राचीसं.* प्रतिष्ठा, [मूर्ति-स्थापना]

पयड *शृंगामं.* प्रकट, [खुल्लुं, अनावृत्त]; *ऐतिका. गुर्जरा.* प्रकट, प्रगट; *प्राचीफा.* प्रसिद्ध

पयड *वसंफा(ल). वसंवि.* प्राकृत

पयड-पय-बंध *वसंवि(ब्रा).* *स्पष्ट पदबंध (सं.प्रकट+पदबंध), [प्राकृत पदबंध]

पयडि *उषाह.* प्रकटे

पयडि *जिनरा.* प्रकृति, [स्वभाव, स्वरूप, प्रकार]

पयडिय **ऐतिका.* [प्रगट थयेल] [सं. प्रकटित]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयतलि *ऐतिका.* पग तळे, पगमां

पयन्ना दस *ऐतिका.* प्रकरण [नामना] दश [शास्त्रग्रंथ]

पयबंधिहिं *वसंफा(ल).* *वसंवि.* पदबंधमां

पयमाल *प्राचीफा.* खुवार (फा.पायमाल)

पयला *जिनरा.* प्रचला, [निद्रानो प्रकार जेमां बेठांबेठां ऊंघ आवे, दर्शनावरणीय कर्मनो एक प्रभेद] [जै.]

पयलु *उक्ति.* पेलुं

पयसारउ *जिनरा.* प्रवेशोत्सव; जुओ पेसारो, पैसारे

पयसारु *विमप्र.* प्रवेश

पयंडिहि **ऐतिका.* [प्रखरताथी] [सं.प्रचंड]

पयंडु *ऐतिका.* *गुर्जरा.* प्रचंड

पयंतरउ *उक्ति.* पटंतर, पडदो (सं. प्रत्यन्तरम्)

पयंपइ *आरारा.* *प्राचीफा.* कहे, बोले (सं. प्रजल्पति)

पयाणउ *आरारा.* प्रयाण; *वीसरा.* प्रवास

पयार *ऐतिका.* प्रकार

पयाल *आरारा.* *गुर्जरा.* पाताल

पयावि **ऐतिका.* [प्रतापथी]

पयासइ *ऐतिका.* प्रकाशित करे छे

पयासणु *ऐतिका.* प्रकाशित करनार

पयासिउ *गुर्जरा.* *तेरका.* प्रकाशित कर्युं

पयोदु *गुर्जरा.* *विराप.* वादळ (सं.पयोद)

पयोधरी *प्रेमाका.* नदी [सं.]

पयोहकी *नलाख्या.* पयोष्णी नामनी नदी

पयोहर *गुर्जरा.* *तेरका.* *लावल.* *वसंफा.* *वसंवि.* *वसंवि(ब्रा).* *वीसरा.* *शीलक.* स्तन (सं.पयोधर)

पर *तेरका.* परम

पर *प्रबोप्र.* *विक्ररा.* पेर, प्रकार, [रीत]; जुओ पेर

पर *अखाछ.* पींछुं, (पांख) [फा.]; *दशस्कं(१).* *प्रेमाका.* पींछुं

परइ *नेमिछं.* उपर

परइ *आनंस्त.* *आरारा.* *ऋषिरा.* *प्रबोप्र.* पेरे, रीते, पेठे, जेम (सं.प्रकार)

पर-उपगार *दशस्कं(१).* परोपकार

परऊत *नलाख्या.* ?, [*परायत्त, *पराधीन, *परवश]

परकर **कादं(ध्रु).* [ढगला] [सं.प्रकर]

परकल *चतुचा.* कंदोरो [सं.परिकर]

परखक *चंद्रवा.* परीक्षक

परगडउ *आरारा.* **ऐतिका.* *ऐतिरा.* *प्राचीफा.* प्रकट, प्रसिद्ध

परगति *कादं(शा).* स्वभाव (सं.प्रकृति)

परगास- *वीसरा.* जाहेर करवुं, प्रगट करवुं (प्रा.) [सं.प्रकाश्]

पर गोलओ *चारफा.* उपर घोळी दीधो, ओवारी नाख्यो (सं.परि+घूर्णित)

परघ *सिंहा(म).* घेरावो (सं.परिघ); जुओ परिघउ

परघउ **आरारा.* [राज्याधिकारी] (सं. परिग्रह); जुओ परघु, परिघउ, परिघा

परघल *अभिऊ.* *ऐतिका.* *कृष्णच.* *नेमिछं.* *विमप्र.* पुष्कळ, अतिशय, भरपूर; जुओ अरघल

परघलतउ *जिनरा.* पीगळतो, [नीतरतो] [सं.प्र+गल्]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परघलि मनि *आरारा.* मोकळे मने, पूरा मनथी (रा.)

परघालि *आरारा.* सवारे (रा.परगाळ; सं. प्रहकाल)

परघु *प्राचीका.* राजकर्मचारी, (सं.(राज)-परिग्रह); जुओ परघउ

परचक्र *आरारा.* पारकानुं शासन (सं.)

परचरी *नरप.* प्रचरी, प्रसरी, फेलाई

परचावइ **जिनरा.* [परिचय – प्रतीति करावे]

परचावुं **जिनरा.* [उपयोगमां लावुं]

परचि, परचो *कादं(शा).* परिचय, ओळखाण; *अखाका.* परिचय, [ओळखाण], [प्रताप]

परचूरणि *उक्तिर.* परचूरण (सं.प्रचूर्णि)

परचो जुओ परचि

परछंडा *कामा(शा).* पडघा [सं.प्रतिच्छन्दस्]

परछांये *मदमो.* पडछायामां (सं.प्रतिच्छाया)

परजलइ, परजळइ *आरारा. जिनरा. वीसरा.* प्रजळे, बळे

परजंग *प्रेमाका.* पर्यंक, पलंग

परजंत *चित्तसं. मदमो.* पर्यंत, सुधी

परजंन *प्रेमाका.* पर्जन्य, वरसाद

परजालि *जिनरा.* प्रजाळीने, बाळीने

परजियो *नरका.* *परजियो सोनी, [*कोई अलंकार]

परजीओ *मदमो.* रागविशेष

परठ, परठि *दशस्कं(१). नलाख्या. प्रेमाका.* शरत; **जिनरा.* [ठराव, निश्चय, नक्की करेलुं] [सं.परि+स्थाप्]

परठवुं *अखाका. अखाछ. अखेगी. कादं(शा). गुर्जरा. चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. सिंहा(शा).* स्थापित करवुं, ठरावबुं, नक्की करवुं, निश्चित करवुं (सं.परिस्थाप्); *अभिऊ. चंद्रवा. रूपच. लावल.* स्थापवुं, मूकवुं; **लावल.* [स्थिति करवी]; *चंद्रवा. मदमो.* मूकवुं, मोकलवुं; *चंद्रवा.* राखवुं, [धारण करवुं]; स्थापवुं, [बनावीने मूकवुं]

परठि जुओ परठ

परठवइ *उपबा.* नाखे, फेंके (सं.प्रति-स्थापयति)

परठणहार *अखेगी.* नक्की करनार

परड *मदमो.* सापोलियुं

परणण, परणन *आरारा.* परणवुं ते (सं. परिणयन)

परणाल *प्राचीफा.* नेवानुं पाणी झीलवा माटेनी नीक, परनाळ (सं.प्रणाल)

परणालियां *ऐतिका.* परनाळ, [नेवांनुं पाणी झीलवा माटेनी नीक]

परणेवइ *नेमिछं.* परणवामां (सं.परि+नय्)

परत (रक्खी) *ऐतिका.* पडती [राखी]

परत *प्राचीसं.* परत्र, परलोक

परत जुओ अरतपरत

परत *हरिख्या.* प्रत्ये, तरफ (सं.प्रति)

परतइ *उक्तिर.* परिवर्तन पामे, बदलाय (सं.परिवर्तयति)

परतइ **वसंफा(ल). *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* [समान] [सं.प्रति]

परतउ *जिनरा. नेमिछं.* परचो, परिचय;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ परता, परतो

परतक्ष *कादं(शा).* *नलाख्या.* नजरोनजर, साक्षात् (सं.प्रत्यक्ष)

परतख, परतखि *ऐतिरा.* *ऋषिरा.* *नेमिछं.* *प्रबोप्र.* *लावल.* प्रत्यक्ष, आंख सामे

***परतग (परतप)** *प्रद्युचु.* *परचो, [प्रताप]

परता *नेमिछं.* *सामे (सं.प्रति), [चारे बाजु] [सं.परितः]

परता *प्राचीसं.* ?, [*परचा]; जुओ परतउ

परताजि *विमप्र.* परित्यागीने, छोडीने

परताति *उक्तिर.* *जिनरा.* परनिंदा; जुओ ताति

परतापीक *मदमो.* *सिंहा(शा).* प्रतापी

परतालु *चंद्रवा.* पत्राळुं

परति *अभिऊ.* *कादं(शा).* तरफ (सं.प्रति)

परतिखि *उषाह.* *जिनरा.* प्रत्यक्ष

परतिख्य *वीसरा.* प्रत्यक्ष

परतीठ *जिनरा.* प्रतिष्ठा, [मूर्तिस्थापना]

परतीत *अखाका.* *अखाछ.* *नरका.* प्रतीति, खातरी

परतीय *हरिवि.* लसोटीने लगाडी (सर. म.परतणे)

परतो *नंदब.* परचो; जुओ परता

परत्थी *ऐतिका.* परस्त्री

परत्र *ऐतिका.* परलोकमां [सं.]

परथवी *विक्ररा.* पृथ्वी

परदखणा *देवरा.* प्रदक्षिणा

परदळ *वीसरा.* समूह

परधि *आरारा.* परिधि, विस्तार

परनाल *आरारा.* *नलरा.* नेवांनुं पाणी झीलवा माटेनी नीक, परनाळ (सं. प्रणाल)

परनालि, परनाली *उक्तिर.* *ऋषिरा.* परनाळ, पाणी जवानो मार्ग (सं.प्रणाली)

परनालीउ *विमप्र.* परनाळ, [पाणीनी नीक]

परपंच *अखाका.* संसार, संसारनी जंजाळ; *कादं(ध्रु).* वाणीनो विस्तार, [माथाकूट]

पर-पाग *अखाका.* पींछा अने पग (फा.पर) [सं.पदाग्र]

परपूठ *जिनरा.* पीठ पाछळ, [पछवाडे, गेरहाजरीमां]

परबत *वीसरा.* पर्वत

परबंध *आरारा.* प्रबंध, काव्यरचना

परभव *गुर्जरा.* अपमान, परेशानी (सं. परिभव); जुओ परिभव, परीभव

परभवइ *अखाका.* *अखाछ.* *नरका.* *प्रेमाका.* कष्ट दे, हेरान करे, दुःखी करे (सं.परिभू); *गुर्जरा.* *विराप.* अपमानित करे, [पजवे]; *प्रेमाका.* पराभव करे, [पजवे]; जुओ परिभवे

परभव्या *चंद्रवा.* संबंध राख्यो, [संग कर्यो] [सं.परि+भू]

परभा *अखाका.* प्रकाश, [आभा, आभास] [सं.प्रभा]

परभाय *अखाछ.* प्रवाह; जुओ प्रभा

परभार्युं *प्रेमाका.* बारोबार

परभावइ *आरारा.* *गुर्जरा.* प्रभावथी

परभुइं *वीसरा.* पारकी भूमि (सं.परभूमि)

परम *दशस्कं(१).* पर्व

परम *उक्तिर.* परम दिवस, त्रीजो दिवस

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.परधवि)

परमप्पय *प्राचीसं.* परमात्मा

परमल *प्राचीफा.* सुगंध (सं.परिमल)

परमत्थ *विक्रच.* परम अर्थ[वाळुं], [साचुं]

परमाण *अखाका.* प्रमाण, *माप, [निश्चय, खातरी]; *देवरा.* [चरितार्थ, सिद्ध]; *नरका.* समान; *चित्तसं.* प्रमाण, हेतु-साधक, सार्थक, उपयोगी

परमाण राखे *चित्तसं.* प्रमाणभूत गणे, खरुं माने, स्वीकारे

परमाणुं *प्रेमाका.* प्रमाण, माप

परमाणे *चित्तसं.* मापे, [-ना मापमां]

परमाण्य *चित्तसं.* स्वीकार

परमाण्यो *नरका.* प्रमाण्यो, [प्रतीत कर्यो, मान्यो]

परमाधामी *गुर्जरा. नेमिछं.* जैन धर्म अनुसार, नरकवासीओने शिक्षा करनार देवयोनि (सं.परम+अधार्मिक)

परमारथ *आरारा.* परमार्थपणे, खरेखर, साचेसाच; *अखाका.* परम अर्थ, परम ध्येय, [सारतत्त्व]

परमावधि *प्रेमाका.* जेनी अवधि – हद नथी तेटलुं बधुं, [खूब]

परमुहा *देवरा.* पराङ्मुख

परमूणउ *उक्तिर.* परम दिवसनुं (सं.परम-दिवसीयम्)

परमेठि *गुर्जरा.* परमेष्ठी

परमेसरु *गुर्जरा.* परमेश्वर

परमोधे *अखेगी.* प्रबोधे, उपदेश आपे

परभाग *कादं(शा).* शेषभाग (सं.); जुओ परिभाग

परयचि *सिंहा(म).* पडदो [*सं.परिकक्षी, प्रा. परियच्छी; *सं.परिच्छद]; जुओ परिअच

परयाणइ *आरारा.* प्रयाणे

परलउ *उक्तिर.* पेलुं

परलोइ *आरारा.* परलोके

परव *उक्तिर. तेरका. हरिख्या.* परब (सं.प्रपा)

परवडतुं *नरका-२.* अनुकूळ, फावतुं [सं. परिपत्]

परवरिउ *आरारा. ऋषिरा. कादं(ध्रु). कादं(शा).* वींटळायेलो, घेरायेलो (सं. परिवृत); *लावल.* पारंगत थयो, [आवृत थयो, -थी युक्त थयो] *आरारा. दशस्कं(१). नलाख्या.* गयो

परवरी *ऐतिरा.* प्रवर, महान्

परवरे *चित्तसं.* जाय, आवे, फरे, रहे, परिणमे

परवाडे *प्रेमाका.* वाडना पाछला भागमां

परवार *ऋषिरा. चंद्रवा. नलरा.* परिवार, कुटुंब, रसालो

परवार *कृष्णच. नरका.* फुरसद, नवराश

परवारइ *उक्तिर.* पार पाडे, आटोपे, आटोपी नवरो थाय (सं.प्रपारयति); जुओ परिवारइ

परवाल, परवालउं, परवाली *उक्तिर. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* परवाळुं (सं.प्रवाल)

परवाह *आरारा.* दरकार, गरज (फा.)

परवाहिक *चित्तसं.* प्रवाहिक, प्रवाह रूपे वहेनार, अवशपणे तणानारा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परवी *हरिख्या.* परबियो, [परबवाळो]

परवृत्ति **प्रेमाका.* [बीजानी आजीविका] [सं.]

परवे *नरका. नरप.* परवश, पराधीन, विवश

परवेस *आरारा.* प्रवेश; *मदमो.* प्रवास, [संक्रमण, जवुं ते]; जुओ प्रवेश

परशीनि *उषाह.* स्पर्श करीने

परशेवी *कादं(शा).* परसेवो पामी (सं.प्रस्वेद परथी)

परषद *ऐतिका. ऐतिरा. नेमिछं.* परिषद, सभा

पर समय *जिनरा.* पारकुं शास्त्र, [अन्य धर्मीना सिद्धांत] [सं.]

परसरइ **जिनरा.* [नजीकमां, तरफ] [सं. परिसर]

परसशे *नरका.* स्पर्शशे

परसवतां *चित्तसं.* प्रसवतां, जन्मतां

परसंग *चित्तसं.* प्रसंग, संदर्भ

परसाखि *षडाबा.* बीजानी साक्षीए (सं.पर+साक्ष्य)

परसादि *आरारा.* कृपाथी (सं.प्रसाद)

परसिरि *आरारा.* परिसरमां, पासे

परसी *चित्तसं.* स्पर्शी, स्वीकारी

परसीधो *आरारा.* प्रसिद्ध

परसु *उक्तिर.* परम दिवसे (सं.परश्वः)

परसे *अखाका. चित्तसं.* स्पर्शे

परसेवी *कादं(ध्रु)-टि.* परसेवो छूटेलो होय एवी

परस्पेरे *दशस्कं(२).* परस्पर

परहउ *उक्तिर. षडाबा. षष्टिप्र.* दूर (सं. परस्मिन्)

परहंसिउ **षडाबा.* [दुःखना आवेगमां आवी गयो]; जुओ परहुसीउ, परहुंस

परहां [उरहांपरहां] **उपबा.* [आमतेम]

परही *कृष्णच.* पाछी

परहु *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. विमप्र. विराप.* दूर (सं.परस्मिन्); *आरारा.* पछी (रा.)

परहु *आरारा.* चोक्कस (रा.परौ)

परहुसीउ **विमप्र.* [दुःखनी लागणीना आवेगवाळो थयो]; जुओ परहंसिउ, परहुंस

परहुंस **विमप्र.* [दुःखनी लागणीना आवेगवाळा]; जुओ परहंसिउ, परहुसीउ, प्रहुसु

परहूणि *प्रबोप्र.* स्त्री-महेमान (सं.प्राघूर्णिका)

परहूणउ *अभिऊ. ललिरा. विक्ररा. विमप्र.* परोणो, महेमान (सं.प्राघूर्णक)

परहो *मोसाच.* आघो, वेगळो [सं.परस्मिन्]

परहोडि *विमप्र.* परोढमां

परा *आरारा. पंचवा.* दूर (सं.) [सं.पर]

पराए *गुर्जरा.* दूर (सं.*परकस्मिन्)

पराइय *तेरका.* पहोंच्युं (सं.प्राप्+इत)

पराकाष्टा *चित्तसं.* छेक सुधीनी

पराघउ **गुर्जरा. *विराप.* [मोंघुं] [सं.पराघ]

पराघाइ जुओ घाइ

पराण *गुर्जरा. प्रबोप्र. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* प्राण, जीव; *विक्ररा. *विमप्र.* बळ, बळजबरी

पराणउ *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* -मां डूबेलो, परायण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पराणी *उक्ति.* बळदने हांकवा माटेनी लाकडी (सं.प्राजनिका)

पराणो *प्रेमाका.* परोणो, जाडी लाकडी [सं. प्राजनकः]

परात्पर *प्रेमाका.* सर्वश्रेष्ठ [सं.]

पराभव *गुर्जरा.* अपमान, [तिरस्कार] (सं.); *लावल.* *पराजय, [तिरस्कार, अनादर]; *चित्तसं.* नाश

पराभवइ *आरारा. उपबा. जिनरा. षडाबा.* पराभव, तिरस्कार, अनादर पामे, हारे

पराभव्या *आनंस्त.* पराभव पामेला, हारेला

परायण *प्रेमाका.* परम गतिरूप, [परम लक्ष्य]

परालु *उक्ति.* पराळ, डांगर वगेरेना खरसलां, घास (सं.पलालम्)

***परालें [पडाळे]** *नरप.* *राते, [परसाळे]; जुओ पडाळे

परां *प्रेमाका.* दूर, अलग

परांण *वीसरा.* जीव; बळ (सं.प्राण)

परांमुख *प्रेमाका.* विमुख

परांहां *विमप्र.* परां, दूर

परि *आरारा.* परंतु (सं.परम्); *तेरका-अनु.* पण, [-ये]

परि *अभिऊ. आरारा. उक्ति. उषाह. ऐतिका. कर्पूमं. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. वीसरा. षडाबा.* प्रकार, रीत; प्रकारे, रीते, पेठे; जुओ पर

परि *आरारा. गुर्जरा. मोसाच.* उपर (सं.उपरि)

परिअच *अभिऊ.* पडदो (सं.परिच्छद); जुओ परीअच

परिइं *उपबा. नेमिछं. वाग्भबा.* प्रकारे, रीते, जेम

परिकर *आनंस्त. ऐतिका.* परिवार, [परिजन, साथीगण] [सं.]

परिकर *कादं(शा).* ढगलो (सं.प्रकर)

परिकसी *आरारा.* परीक्षा, कसोटी

परिक्रम **प्राचीफा.* [परिक्रमण, प्रसरण] (सं.परिक्रम); **प्राचीसं.* परिक्रमण, प्रदक्षिणा

परिक्खइ *गुर्जरा.* तपासे (सं.परीक्षते)

परिक्खिवि **ऐतिका.* [परीक्षा करीने, पारखीने]

परिखइ *आनंस्त. नलरा.* परीक्षा करे, पारखे (सं.परीक्षते)

परिगर *प्राचीफा.* मूर्तिनी आसपासनो कोतरणीवाळो परिवेश (सं.परिकर)

परिघ *प्रेमाका.* भोगळ जेवुं एक शस्त्र [सं.]

परिघउ *अंबरा. हम्मीप्र.* राजसेवक, राज्याधिकारी [सं.परिग्रह]; जुओ परघउ

परिघल *ऐतिका. ऐतिरा. नेमिछं. विमप्र.* पुष्कळ, अतिशय

परिधा **अभिऊ.* [राजसेवक, राज्याधिकारी] [सं.परिग्रह]; जुओ परिघउ

परिचउ *उक्ति.* परिचय

परिचत्त *प्राचीफा.* त्यजायेल (सं.परित्यक्त)

***परिचय (परियच)** *अखाछ.* पडदो; जुओ परिअच

परिचय- *तेरका. प्राचीसं.* तजवुं (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परित्यज्)

परिछइ *षडाबा.* तपासे, परखे (सं.परीक्षते)

परिजलइ *गुर्जरा.* प्रजळे (सं.परिज्वलति)

परिट्ट *विक्रारा.* धोबी [दे.परिअट्ट]

परिठवइ **षडाबा.* [पदार्थोनो परित्याग करे, मूके, नाखी दे] (सं.परिस्थापयति)

परिठिउं *ऐतिरा.* धर्युं, [मूक्युं] [सं.परि+स्था]

परिणइ *उक्तिर. गुर्जरा. चारफा. तेरका. षडाबा.* परणे (सं.परिणयति)

परिणमावीइं *आनंस्त.* परिणाम पमाडीए, [निष्पन्न करीए]

परिणय जुओ परियण

परिणयण *तेरका. प्राचीफा.* परणवुं ते, लग्न (सं.परिणयन)

परिणावइ *उक्तिर. लावल. वीसरा.* परणावे (सं.परिणापयति)

परिणिउ *षडाबा.* परण्यो (सं.परिणीत)

परिणिति **ऐतिका.* [परिणमन, परिणाम, फळ] [सं.परिणति]

परितिषि *विक्रारा.* प्रत्यक्ष, हाजराहजूर

परिथल *विमप्र.* पुष्कळ [सं.पृथुल; रा.]

परिदलि *गुर्जरा.* शत्रुसैन्यमां (सं.परदले)

परिदेवन *ऋषिरा.* दुःख, शोक (सं.)

परिदेस *वीसरा.* परदेश

परि परि *अभिऊ. उषाह. ऋषिरा.* प्रकारे-प्रकारे, जुदीजुदी रीते, फरीफरी

परिपलव- *तेरका.* फरी पल्लववुं, [पल्लवित करवुं] (सं.प्रतिपल्लव्)

परिपंथीय *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मार्गरोधक, शत्रु (सं.परिपंथिन्)

परिबंध *आरारा.* प्रबंध, [काव्यरचना]

परिब्रह्म *दशस्कं(१).* परब्रह्म

परिभव *गुर्जरा. हरिख्या.* सतावणी, अपमान (सं.); जुओ परभव, परीभव

परिभवे **गुर्जरा.* [संताप पामे] (सं.परि+भू); **नरका.* [सतावे]; जुओ परभवइ

परिभाग *कादं(शा).* शेषभाग; जुओ परभाग

परिमांण *देवरा.* प्रमाणे

परिभ्रमी *षडाबा.* परिभ्रमण करीने, फरीने

परियच जुओ परिचय

परियट *उषाह. प्रेमाका. विक्रारा.* धोबी [दे. परिअट्ट]; जुओ परीअट

परियण** [परिणय**] ***गुर्जरा.* [विवाह, लग्न]

परियंक *नरका.* पलंग, (सं.पर्यंक)

परिया *कस्तुवा.* वंशज [सं.पर्याय]

परियागति *जिनरा.* परंपरागत, [वंशगत] [सं.पर्यायागत]; जुओ परीआगत

परियां *चंद्रवा.* वंशजो, पेढी [सं.पर्याय]

परिरंभण *नरका.* आलिंगन [सं.]

परिवरइ *उपबा. ऋषिरा. ऐतिका.* वींटळाय (सं.परिवृ-, प्रा.परिवरइ)

परिवर्जकि *षडाबा.* त्याग करनार (सं.परिवर्जक)

परिवाडी *गुर्जरा.* परिपाटी, रीत, शैली

परिवारइ *आरारा. उक्तिर.* परवारे, पूरां करे (सं.प्रपारयति); जुओ परवारइ

परिवारइ *गुर्जरा.* वींटळाय (सं.परिवारयति)

परिवारि स्युं *चारफा.* परिवार साथे

परिवेषण *गुर्जरा.* पीरसण (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशोध *दशस्कं(१).* वावड, समाचार, [पत्तो]; *प्रेमाका.* चारे बाजु तपास, [खूब शोध]

परिसरि *ऐतिरा.* *नेमिछं. पादरे, [नजीकमां] [सं.परिसर]

परिसर्प्पण *आनंस्त.* खसवुं ते, जवुं ते, [दूर थवुं ते] [सं.परिसर्पण]

परिसह *आनंस्त.* *देवरा. परीषह, कर्मनी निर्जरा अर्थे स्वेच्छाथी भोगववानां कष्टो [जै.]; जुओ परीसह

परिसाट *आनंस्त.* क्षय करवो ते, [अलग करवुं ते] [सं.परिशाट]

परिसाडि *षडाबा. [नीचे पडवुं ते] [सं. परिशाट]

परिसीजइ *उक्तिर.* परसेवो थाय (स. परिस्विद्यति)

परिसीनउ *उक्तिर.* परसेवो थयेल (सं. परिस्विन्नः)

परिस्तरण, परिस्तर्ण *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पाथरवुं ते [सं.]

परिहरइ *लावल. षडाबा.* परहरे, तजे

परिहरवि *ऐतिका.* छोडीने, तजीने

परिहरउ *गुर्जरा.* लो, धारण करो, राखो, [पकडो, स्वीकारो] [सं.परि+ह]

परिहारी *लावल.* तजीने

परिं *आनंस्त. ऐतिरा.* पेठे, जेम [सं.प्रकारे]

परी *आरारा. ऋषिरा. नरका. प्रेमाका.* दूर; जुओ पहरी

परीअच, परीअचि, *चतुचा. नलरा. ललिरा.* पडदो (सं.परिच्छद); जुओ परिअच, परियच, परीअंचि, परीयचि, प्रीअछि

परीअट *कृष्णबा. दशस्कं(२).* धोबी [दि. परिअट्ट]; जुओ परियट, परीयटु, परीहट

परीअंचि *ऋषिरा.* पडदो; जुओ परीअच

परीआगत *प्राचीका.* वंश, [वंशपरंपरा] [सं. पर्यायागत]; जुओ परियागति

परीकरी *प्रेमप.* वींटाळी ?

परीखइ *उक्तिर. ऋषिरा. षडाबा. षष्टिप्र.* पारखे, परीक्षा करे (सं.परीक्षते)

परीखा *अखाका. [परीक्षा, समज]

परीछइ *उक्तिर. विक्ररा. षडाबा. षष्टिप्र.* प्रीछे, जाणे, समजे [सं.परिप्सते]

परीठ *जिनरा.* वृत्तांत; जुओ परेठ

परीठवीउ *गुर्जरा.* आश्वासन आप्युं [सं.परि+ स्थापित]

परीभव *कामा(त्रि).* हार, अपमान ? [कष्ट, पीडा]; जुओ परभव

परीयचि *अंबरा.* पडदो [सं.परिच्छद]; जुओ परिअच

परीयच्छि *उक्तिर.* पडदो [सं.परिच्छद]

परीयटु *उक्तिर.* धोबी [दि.परिअट्ट]; जुओ परीअट

परीयण, परीयणि *आरारा. गुर्जरा.* परिवार, सेवकगण (सं.परिजन)

परीसइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. षडाबा.* पीरसे (सं.परिवेषति)

परीसह *ऋषिरा. *देवरा. नलरा.* [कर्मक्षय माटे] श्रमणोए सहवानां टाढ, तडको वगेरे कष्टो [जै.]; जुओ परिसह

परीसिव्युं *उक्तिर.* पीरसवुं (सं.परिवेष-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यितव्यम्)

परीस्वेद *मदमो.* प्रस्वेद

परीहट *दशस्कं(२).* धोबी [दे.परिअट्ट]; जुओ परीअट

परीं *प्रबोप्र.* प्रकारे, [पेठे, जेम]

परु *नंदब.* दूर; जुओ पद्दउ

परु *षडाबा.* अन्य, बीजी व्यक्ति (सं.परः)

परुणा जुओ खुरुणा

परुप्पर, परुप्परु *ऐतिका. शृंगामं.* परस्पर

परुं *प्रेमाका.* आडुं, [बीजी बाजु]; *अखाछ. प्रद्युचु.* दूर, अळगुं

परुंस- *नलरा.* *क्रोध करवो (सं.प्र+रुष्), [*दुःखनी लागणी अनुभववी]; जुओ प्रहुसु

परूवइ *उक्तिर.* प्रतिपादन करे (सं.प्ररूपयति)

परूहणुं *उषाह.* परोणो (सं.प्राघूर्णक)

परे *ऐतिका. देवरा. नेमिछं.* प्रकारे, पेरे, रीते

परेठ *प्रेमाका.* रीत, [व्यवहार, रूढि]; जुओ परीठ

परेरी *अखाका.* प्रेरी, प्रेरेली; [वधु दूर, वधु आगळ]; जुओ पहरेरी

परेरे *अखाछ.* प्रेरे

परेरो *अखाछ.* दूर

परेरो (पारेवो/पटेरो) *मदमो.* अश्वनुं विशेषण, [एक अश्वजाति]; जुओ पाटर

परो *अखाका. प्रेमाका. मदमो.* दूर, अलग

परोणाचार *प्रेमाका.* महेमानगत, आतिथ्य [सं.प्राघूर्णक+आचार]

परोणो *अखाका. प्रेमाका.* बळदने हांकवा माटेनी लाकडी [सं.प्रतोदन]

परोणो-रास *प्रेमाका.* लाकडी अने लगाम

परोहित *विक्ररा. सिंहा(म).* पुरोहित, गोर

पर्जन्य *प्रेमाका.* वरसाद, मेघ [सं.]

पर्पट *विराप.* पापड [सं.]

पर्यंक *अखाका.* पलंग (सं.)

पर्याण *कादं(शा).* घोडानुं पलाण, जीन (सं.)

पर्व *ऐतिरा.* [(आंगळीनां) वेढां]

पर्व *प्रेमाका.* परब [पाणीनी]

पर्वणी *प्रेमाका.* [पर्वनो दिवस, पवित्र दिवस]; आठम, चौदश, पूनम अने अमास – एमांनी कोई एक तिथि

पर्षद *आरारा.* सभा (सं.)

पल *प्रबोप्र.* मास (सं.)

पळ *प्रेमाका.* पलक, पांपण [फा.पल्क]

पलइ *आरारा. षडाबा.* पळाय, पालन थाय [सं.पाल् परथी]

पलक शुं पलक *प्रेमाका.* आंखनी पांपण साथे पांपण, [नजरेनजर]

पळका *प्रेमाका.* झंखना[वाळा], [लालसु]

पळको *नरका.* छटकी जाओ, [चाल्या जाओ]

पलक्ये *चित्तसं.* पलकमां, पलकारामां [फा.पल्क]

पलखंड *विक्ररा.* मांस [सं.]

पलणावो *अभिऊ.* -ना उपर पलाण मूको, [सज्ज करो] (सं.पर्याण परथी)

पळता *नरका.* (पगमां) पडता, [जता] [सं.पलायते]

पलवट *कामा(शा).* *चतुचा. नरका.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरप(द). भेट, दुपट्टाथी केड बांधवी ते

पलवटि *उक्ति्र. कादं(शा).* पलवट, खेस, केड उपर खेस बांधवी ते (सं.पल्लवावृत्ति)

पलवट वाळवी *दशस्कं(१). रूस्तस.* भेट बांधवी

पलवाड *सिंहा(शा).* वाड

पलंतु *अभिऊ.* पळतो, दोडतो (सं.पलायत्)

पलाय, पळाय *कामा(त्रि). कामा(शा). देवरा. प्रेमाका. हरिख्या.* जाय, भागे (सं. पलाय्)

पलाति *गुर्जरा.* पलायन (सं.*पलायिति)

पलाव *प्राचीफा.* आक्रंद (सं.प्रलाप); जुओ करुणपलाव

पलाश, पलास, पळास *प्रेमाका. वसंवि. शृंगामं.* खाखरो, केसूडानुं वृक्ष

पलासि *गुर्जरा.* मांसभक्षी, राक्षस (सं.पल+अशिन्)

पलि *नलाख्या.* पळे, जाय (सं.पलायते)

पलित *कादं(शा). नरका.* पळियां आव्यां छे तेवो माणस, वृद्ध [सं.]

पलित्त *प्राचीसं.* प्रदीप्त

पलिया *नेमिछं.* पळया, गया [सं.पलाय्]

पलिंग *वीसरा.* पलंग (सं.पल्यंक) [<सं. पर्यंक]

पली *लावल. विमप्र.* पळी (माप)

पली, पळी *उक्ति्र. प्रेमाका.* पळियां, धोळा वाळ [सं.पलित]

पलीवणउं *उक्ति्र. प्राचीसं.* पलेवणुं, [अग्निनुं बळवुं ते] (सं.प्रदीपनकम्)

पलेवणूं **अभिऊ.* [अग्नि, बळतरा] [सं. प्रदीपनकम्]

पलेवलउं *उक्ति्र.* अग्निनुं बळवुं ते (सं. प्रदीपनकम्)

पलोइ *गुर्जरा. तेरका.* जुए (सं.प्रलोकयति)

पल्यंग *आरारा.* पलंग (सं.पर्यंक)

पल्यु *नलरा.* सफेद वाळ, पळियुं (सं.पलित)

पळ्युं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पळियां – धोळा वाळवाळुं थयुं

पल्योपम *ऐतिका. गुर्जरा.* एक काळगणना [जै.]

पल्हणाय *विमप्र.* पलाणाय, [सज्ज करवामां आवे] [सं.पर्याण परथी]

पल्हाणो *अभिऊ.* -ना उपर पलाण मूको, [सज्ज करो]

पल्हालइ *उक्ति्र. *उपबा.* पलाळे, आर्द्र करे (*सं.पर्यार्द्रयति) [सं.प्रह्लाध्यति]

पव *तेरका.* परब (सं.प्रपा)

पवज्जंति *ऐतिका.* प्रवृत्त थाय छे, [गति – गमन करे छे] [सं.प्रव्रजति]

पवट्ठरत्ति **ऐतिका.* [वर्षाऋतुमां] [सं. प्रावृषऋतु]

पवण *गुर्जरा. तेरका. विराप.* पवन

पवतणि *ऐतिका.* प्रवर्त्तिनी (जैन साध्वीओनुं पद)

पवन *अखाका.* श्वास, प्राण; *प्रेमाका.* *मिजाज, [*शरीरनो वायु, *श्वास]

पवन बांधी जुओ बांधी पवन

पवनाश *कादं(शा).* सर्प (सं.)

पवर *ऐतिका. तेरका. नेमिछं.* प्रवर, उत्तम,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेष्ठ, [प्रधान]

पवरपुरि *ऐतिका.* प्रवर [उत्तम] नगरीमां

पवरिख *प्रद्युचु.* पौरुष

पवाई *अखाका.* पावैयो, नपुंसक

पवाडइ *जिनरा.* *पमाडे, *अपावे, [*प्रताप – दैवी चमत्कार वडे]

पवाडउ *अभिऊ.* *उषाह. *प्रद्युचु. हम्मीप्र.* पराक्रम; *हम्मीप्र.* पराक्रमवर्णननुं काव्य [सं.प्रवोद]

पवालउ *प्राचीफा.* परवाळुं, एक रत्न (सं. प्रवाल)

पवित्तिण *ऐतिका.* पवित्र (नामग्रहण) वडे

पवित्तीय *स्थूलिफा.* दर्भनी वींटी [सं.पवित्रिका] (प्रा.पवित्तय)

पवित्तु *षडाबा.* पवित्र

पवित्रिइ, पवीत्रइ *उक्तिर.* पवित्र करे (सं. पवित्रयति)

पवित्री *उक्तिर. प्रेमाका.* दर्भनी वींटी (सं. पवित्रकम्)

पवेडो *दशस्कं(१). प्रेमाका.* लाकडी, डंगोरो, एनो छूटो घा

पव्वय *ऐतिका. तेरका.* पर्वत

पशाअ, पसाय *मदमो.* बक्षिस (सं.प्रसाद)

पशु-अरि *प्रेमाका.* सिंह [सं.]

पशुवां *दशस्कं(२).* ढोरां

पश्चिमीउ *उक्तिर.* पश्चिम दिशानुं

पश्यम *कादं(शा).* पश्चिम दिशानुं; जुओ पस्यमु

पस *लावल.* खोबो (सं.प्रसृति)

पसइ *प्राचीफा.* खोबो, पोश, पसली (सं. प्रसृति)

पसर *गुर्जरा.* प्रसर, फेलावो

पसरइ *उपबा. गुर्जरा. चित्तसं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप. षडाबा.* प्रसरे, फेलाय

पसवइ *उक्तिर.* जन्म आपे (सं.प्रसवति)

पसंस- *तेरका.* प्रशंसा करवी (सं.प्रशंस्)

पसंसिजइ *ऐतिका.* प्रशंसा थाय छे

पसाइ *आरारा.* -ने लीधे (सं.प्रसाद); *आरारा. उषाह. कृष्णच. जिनरा. प्रबोप्र. रूपच. विक्ररा. विराप.* कृपा, कृपाथी; *अभिऊ. आरारा.* बक्षिस

पसाउ *ऐतिका. चारफा. शीलक. *षडाबा. स्थूलिफा.* प्रसाद, कृपा

पसाउलइ *कर्पूमं. गुर्जरा. विक्ररा. शृंगामं.* कृपाथी (सं.प्रसाद)

पसाय *आरारा. ऐतिका. नलरा. *शृंगामं.* कृपादान, बक्षिस; *अखेगी. ऐतिरा. दशस्कं(१). तेरका. नरका. प्रेमाका. विक्ररा.* प्रसाद, कृपा; *अखाछ.* प्रसाद-रूप, प्रसन्न, [कृपावंत]; जुओ पशाअ

पसायलु *ऐतिका.* प्रसाद, [कृपा]

पसायो *चंद्रवा.* भेटसोगाद

पसार *कादं(शा).* फेलावो (सं.प्रसार)

पसारिय *गुर्जरा.* प्रसारीने, फेलावीने

पसाव *आरारा.* कृपा, प्रसाद

पसिद्ध *ऐतिका.* प्रसिद्ध

पसी *ऐतिरा.* पछी

पसीअइ *उक्तिर.* प्रसन्न थाय (सं.प्रसीदति)

पसीजइ *उक्तिर.* परसेवो थाय (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्विद्यते)

पसु *कामा(त्रि).* बच्चां, बाळक

पसूआडे *अखेगी.* पडखे, पासा पर

पसूय *शृंगामं.* पशु

पस्ता *शीलक.* पिस्ता – एक मेवो

पस्यमु *विमप्र.* पश्चिमनो देश; जुओ पश्यम

पह *उक्तिर.* मार्ग (सं.पथः)

पहइडिउ **लावल.* [दूर हट्यो, धोखो दीधो, विश्वासभंग कर्यो] [रा.पहिडणौ]

पहइलउ *लावल.* पहेलो, प्रथम [सं.प्रथिल्ल]

पहइं *कृष्णच.* करतां

पहचइ *गुर्जरा.* पहोंचे, जाय; जुओ पहुतइ

पहडइ **जिनरा.* [दूर हटे, धोखो दे, विश्वास-भंग करे] [रा.पहिडणौ]

पहती *गुर्जरा.* पहोंची; जुओ पहुतइ

पहर *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. षडाबा.* प्रहर

पहरणि *गुर्जरा.* पहेरवेशमां; जुओ पहिरण

पहराउत *प्राचीफा.* पहेरो भरनार, चोकीदार (सं.प्राहरिक)

पहरी **ऋषिरा.* [दूर, अळगी]; जुओ परी

पहरेरी *चित्तसं.* दूरनी, पारनी स्थिति; जुओ परेरी

पहरो *अखाका.* दूर, अलग; *दशस्कं(२).* आघो

पहल *आरारा.* पहेलो [सं.प्रथिल्ल]

पहलाण *ऋषिरा. कादं(शा).* पलाण, घोडा-नी पीठ परनुं जीन (सं.पर्याण)

पहवइ *आरारा.* थाय, करी शके (सं.प्रभव्)

पहाण *अखाछ.* पथ्थर [सं.पाषाण]

पहाण, पहाणु *ऐतिका. जिनरा. तेरका. प्राचीफा.* प्रधान, मुख्य

पहाणको *दशस्कं(१).* पहाणो

पहारिं *गुर्जरा.* प्रहारथी

पहि *विमप्र.* पथिक, मुसाफर

पहि *प्रद्युचु.* पासे; *शृंगामं.* -ना करतां; **हम्मीप्र.* [पण] [रा.]

पहिचाणि *प्राचीफा.* ओळखाण, परिचय (सं. प्रत्यभिज्ञान)

पहिट- *नलरा.* पलटवुं, [बदलावुं] [रा.]

पहिति *लावल.* रांधेली दाळ [हिं.]; जुओ पिहिति

पहिय *प्राचीफा.* प्रवासी (सं.पथिक)

पहिरइ *उक्तिर. उपबा. तेरका. लावल. षडाबा.* पहेरे (सं.परिधा-)

पहिरण, पहिरणउं *उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* पहेरवुं ते, पहेरवेश (सं.परिधा+अन)

पहिरावइ *उक्तिर. लावल.* पहेरावे (सं. परिधापयति)

पहिरावउं *ऐतिरा.* पहेरामणी आपुं

पहिरावणी *वीसरा.* पहेरामणी (सं. परिधापन)

पहिलउं *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* पहेलुं, पहेलां (सं.प्रथ+इल्ल)

पहिलेरउं *षडाबा.* -नी पहेलां; *गुर्जरा.* पहेला, आगला (सं.प्रथिल्ल+तर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहिल्ली *तेरका. प्राचीफा.* पहेली (सं.प्रथ+इल्ल+इका)

पही *उक्ति.* पथिक

पही परहणु *विमप्र.* पइ-परोणो, पथिक अने परोणो

पहु *ऐतिका.* प्रभु

पहुआ *प्रेमाका.* पौंआ [सं.पृथुकाः]

पहुच्चइ *गुर्जरा.* पहोंचे, जाय (सं.प्रभूत, प्रा.पहुत्त)

पहुडसि *उषाह.* पोढशे [सं.प्रवर्ध्]

पहुतइ *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* पहोंचे, आवी पहोंचे, जाय (सं.प्रभूतः)

पहुतणी *ऐतिका.* प्रवर्तिनी, जैन साध्वीओनुं एक पद

पहुत्त, पहुत्तउ *उपबा. ऐतिका.* पहोंच्युं, जई पहोंच्युं (सं.प्रभूत-)

पहुत्तणी *आरारा.* प्रवर्तिनी, जैन साध्वीओने अपातुं पद

पहुनुहता *नेमिछं.* पनोता, पुण्यशाळी [सं. पुण्यवंताः]

पहुरइ *उक्ति.* प्रहरे

पहुरु (पहुरु पाडता) **शृंगामं.* [पहेरो – चोकी राखता] [सं.प्रहर]

पहुल **वसंवि(ब्रा).* [पहोळुं] [सं.पृथुल]

पहुली **वसंवि(ब्रा).* [पहोळी]

पहुवइ **ऐतिका.* [पृथ्वीमां]

पहुवीनाह *नलरा.* पृथ्वीनो अधिपति (सं. पृथ्वीनाथ)

पहूआ *उक्ति.* पौंआ (सं.पृथुकाः)

पहूतउ *ऐतिका. ऐतिरा. प्रबोप्र. वीसरा.* पहोंच्यो (सं.प्रभूत)

पहेधी *मदमो.* पेधी

पहेरण *प्रेमाका.* पोशाक [सं.परिधान]

पहेली *उक्ति.* समस्या, कोयडो (सं. प्रहेलिका)

पहोतवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पहोंचवुं [सं. प्रभूत]

पहुउ *अंबरा. गुर्जरा.* दूर (सं.परस्मिन्); जुओ परु

पहाण *कादं(शा).* पलाण, घोडानी पीठ परनुं जीन (सं.पर्याण)

पंकय *ऐतिका. तेरका.* पंकज, [कमळ]

पंख *गुर्जरा.* पंखी (सं.पक्षी)

पंख *गुर्जरा.* पांख (सं.पक्ष)

पंख *वेताप.* रजकण, केसर

पंखना *प्रेमाका.* पांखवाळां, [पंखी]

पंखुडिय *प्राचीसं.* पांखडी [सं.पक्ष]

पंखीउ *उपबा.* पंखी (सं.पक्षी)

पंखुडीय *स्थूलिफा.* पांखडी

पंग *प्राचीफा.* ढोलक जेवुं एक वाजिंत्र (सं.उपांग)

पंगरखुं *कृष्णबा.* पहेरवुं, [ओढवुं] [सं.प्र+अंकुर-, प्रा.पंगुर-]; जुओ पांगुरइ

पंगुर- *तेरका. प्राचीसं.* पांगरवुं (सं.प्र+अंकुर-)

पंच ईटाली *चंद्रवा. विमप्र.* शिक्षा करवा माटे पंच भेगुं थई ईंट मारे ते, ईंट मारीने मारी नाखवानी सजा

पंचगव्य *प्रेमाका.* गायनां दूध, दहीं, घी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूत्र अने छाण [सं.]

पंचग्गलउं *गुर्जरा.* पांचने आगळ करीने, (सं.पंच+अग्रिलकम्)

पंच दिव्य *सिंहा(म).* जैन परंपरा मुजब तीर्थंकरादिना महत्त्वपूर्ण प्रसंगोए थता पांच चमत्कार; जुओ दिव

पंचद्रीपणु *शृंगामं.* पांच इंद्रियो धरावनानो गुण

पंच पद *नलरा.* पंच नमस्कार[नां पद], नवकारमंत्र [जै.]

पंचपरवा *अखेगी.* पांच पर्व(पेर)वाळी, पांच सांधावाळी, [पांच भाग – अविद्या, अहंकार, राग, द्वेष अने मरणभय – वाळी (माया)]

पंचबाण *प्रेमाका.* [कामदेवनां पांच बाण], अरविंद, अशोक, नवमालिका, आम्र-मंजरी अने नीलोत्पल; *गुर्जरा.* पांच बाणवाळो देव, कामदेव (सं.)

पंचभद्र *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

पंचम *नरका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पंचम सूर

पंचमगति *गुर्जरा.* पांचमी गति, मोक्ष

पंचमासी *प्रेमाका. मोसाच.* सगर्भावस्थाना पांचमा महिने थती राखडी बांधवानी विधि

पंचमु *वसंफा. वसंवि.* पंचम सूर

पंच मेर *स्थूलिफा.* पांच मेरु, पांच मर्यादा-[व्रत]रूपी मेरु

पंचवीस *उक्ति.* पचीस (सं.पंचविंशति)

पंचशबद, पंचशब्द, पंचसबद *आरारा. *कामा(शा). नरका. नलरा. प्राचीफा. प्रेमाका.* पांच वाद्यनो मंगलसूचक ध्वनि; जुओ सबद

पंचसयां *आरारा.* पांचसो (सं.पंचशत)

पंचहत्तरि *उक्ति.* पंचोतेर (सं.पंचसप्तति)

पंचहुतर, पंचहुतरी *ऐतिरा. लावल. षडाबा.* पंचोतेर (सं.पंचसप्ततिः)

पंचाइण *लावल.* सिंह (सं.पंचानन)

पंचाक्षरियां *प्रेमाका.* *मेली विद्या द्वारा भूत-प्रेतने काढनार, [मंत्रविद्]

पंचाणणु *ऐतिका.* पंचानन, सिंह

पंचातीत *अखाका.* पंचभूतथी पर एवुं

पंचानन *नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सिंह (सं.)

पंचाभिगम *आरारा.* चैत्यादिकमां प्रवेश करवाना पांच नियम [जै.]

पंचायण *दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका.* सिंह (सं.पंचानन)

पंचाली *जिनरा. प्राचीसं.* पूतळी (सं. पांचालिका)

पंचाश्रव *आरारा.* कर्मनां पांच प्रवेशद्वार [जै.]

पंचास *नलाख्या. वीसरा. षडाबा.* पचास (सं.पंचाशत्)

पंचासम *ऐतिका.* पचासमुं

पंचां अंग प्रसाद *विक्ररा.* पांचे अंगे पहेरवाना पोषाकनी बक्षिस

पंचुत्तर *ऐतिका.* पांच अनुत्तर विमान [देवलोक] [जै.]

पंचुंबरि *षडाबा.* उंबरो वगेरे पांच अखाद्य फळ (सं.पंच+उदुम्बर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचेटौ *जिनरा.* [पांच लखोटीओथी रमाती] बाळकोनी एक रमत [रा.पचेटौ]

पंचेतालीस *षडाबा.* पिस्ताळीस (सं.पंचचत्वारिंशत्)

पंचेंद्री *गुर्जरा.* पंचेन्द्रिय, पांच इन्द्रिय

पंजर *आरारा. वीसरा. शृंगामं.* हाडपिंजर (सं.); *गुर्जरा.* पांजरुं (सं.)

पंजेटी जुओ पजोडी

पंड *अखेगी.* पिंड, देह-पुद्गल

पंडत *चतुचा.* पंडित, डाह्या

पंडिय *ऐतिका.* पंडित

पंडियउ *जिनरा. वीसरा.* पंडित

पंडु *षडाबा.* फिक्कुं, [लोहीनी ओछपवाळुं] (सं.पांडु)

पंडुरउ *वीसरा.* धोळो, फिक्को (सं.पांडुर)

पंड्य *चित्तसं.* पिंड, शरीर, पदार्थ

पंड्यउ *वीसरा.* पंडित

पंड्यांस *उक्तिर.* पंडितवर (सं.पण्डितमिश्रः)

पंति *ऋषिरा. जिनरा. प्राचीफा. लावल.* श्रेणी; पंगत (सं.पंक्ति)

पंथकशाला *ऋषिरा.* मार्गमांनी धर्मशाळा, [पथिकशाळा] (सं.)

पंनरपि *प्राचीफा.* फरी वार (सं.पुनरपि)

पंपाल *आरारा.* खोटुं, व्यर्थ, मिथ्या (रा.); प्रपंच, कपट (रा.)

पंपोटा **उपबा.* [बहुबीजवाळी एक वनस्पति]

पंपोटा *उषाह. सम्यचो.* परपोटा; जुओ पपोटा

पा *नरका.* तरफ

पा *उषाह.* पग (सं.पाद)

पाअती *अखाका.* पाती, पिवडावती

पाइ *प्रबोप्र. वसंफा. वसंवि. वीसरा.* पग (सं.पाद)

पाइ *आरारा. वीसरा.* पामे

पाइउ *लावल.* पायेलो, पिवडावेलो

पाइक *आरारा. उक्तिर. नलरा. षडाबा.* पगे चालनार सैनिक (सं.पादातिक)

पाइकी *अंगवि.* सुभटता, वीरता

पाइणि *उक्तिर.* पोयणी (सं.पद्मिनी)

पाइदलां *प्रबोप्र.* प्यादां, [पायदळ, पदाति सैनिको] (सं.पाददल)

पाइली *उक्तिर.* पाली, अनाज मापवा माटेनुं वासण (सं.पल्ली)

पाइसि *आरारा.* पामशे

पाइं *कादं(शा).* -ना करतां (सं.पक्षे)

पाइंइ *लावल.* पायामां

पाउ *चंद्रवा.* पाम्यो

पाउ *गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* पग (सं.पादु)

पाउधारउ *गुर्जरा. प्राचीका. षडाबा.* पधारो (सं.पाद+धृ)

पाउध्यारु *अंबरा.* पधारो

पाउल *उक्तिर.* पाटल पुष्पछोड (सं.पाटला)

पाउल *नरका.* पग; *प्रद्युचु. *सिंहा(म).* नर्तक

पाउंछणउं *उक्तिर. प्राचीसं. षडाबा.* पायलूछणुं, जैन मुनिओ भोंय साफ करवा वापरे छे ते पोंछणुं (सं.पादप्रोंछनक)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाक अन्न *कादं(ध्रु).* पकवान, [घी-तेलमां तळेली स्वादिष्ठ वानगी] [सं.पक्व]

पाकउ *षडाबा.* पकवेलुं, चूले चडावी मीठाई-रूप बनावेलुं (सं.पाक)

पाखइ *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. लावल. वाग्भवा. षष्टिप्र.* विना (सं.पक्षे, पक्षस्मिन्); *उक्तिर. लावल.* पासे, आजुबाजु; *लावल.* पखवाडियामां

पाखखमण *उक्तिर.* पंदर दिवसना उपवास (सं.पक्षक्षपणम्)

पाखतियां *षडाबा.* पाछळ रहेला, [आजुबाजु रहेला] (सं.पक्ष परथी)

पाखती **ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. *विराप. हम्मीप्र.* आजुबाजु, बाजुमां, पासे (सं. पक्षती)

पाखर *आरारा. उक्तिर. ऐतिका. कस्तुवा. कृष्णबा. नरका. प्रेमाका. लावल. वीसरा.* हाथीघोडानो साज, जीन, बख्तर, पलाण (*सं.पक्षर) [सं. उपस्कर]; *प्रद्युचु.* घोडानी एक जात

पाखरिया *अंगवि. ऐतिका. गुर्जरा. चारफा. नरका. प्रद्युचु. प्रेमाका. *विराप. वीसरा.* जीन, बख्तर, आदिथी सज्ज कर्या (*सं. प्रक्षर; दे.पक्खर) [सं.उपस्कर]; *प्रेमप.* घोडा

पाखरीआ *ऋषिरा. *विमप्र.* पाखर – बख्तर वगेरेथी सज्ज थयेला (दे.पक्खरिअ)

पाखल *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पडखुं (सं.पक्ष)

पाखलइ, पाखलि *अंबरा. आरारा. उक्तिर. उषाह. कादं(ध्रु). कादं(शा). *जिनरा. नरका. नरप(द). नलाख्या. नेमिछं. प्राचीसं. ललिरा. शृंगामं. हरिवि.* आसपास, चारे तरफ, फरता (सं.पक्ष-)

पाखलि (चहु पाखलि) *कृष्णबा.* चोपास

पाखलीआ *कृष्णच.* फरता, आसपास

पाखाण *उपबा. दशस्कं(१). षडाबा.* पाषाण

पाखि *अंगवि. कादं(शा). प्राचीका. प्रेमप. रूस्तस.* विना (सं.पक्षे)

पाखियउ *प्राचीसं.* पक्षी

पाखी *अखाका. चंद्रवा. नंदब. प्रेमाका. मदमो. वेताप. सिंहा(शा).* विना (सं.पक्ष)

पाखी *उपबा. षडाबा.* पखवाडिक दिवस, [चौदश] (सं.पाक्षिक)

पाखे *अखाका. कामा(शा). चतुचा. चित्तसं. दशस्कं(१). दशस्कं(२). देवरा. नरका. प्रबोप्र. *प्राचीसं. मदमो. मोसाच. षडाबा. हरिख्या.* विना (सं.पक्ष)

पाग *तेरका.* पाज, सोपानपंक्ति

पाग *अखाछ. कर्पूमं. कादं(शा). गुर्जरा. चंद्रवा. दशस्कं(१). नलरा. नलाख्या. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमप. प्रेमाका. मदमो. लावल.* पग (सं.पादाग्र)

पाग *जिनरा.* पाघडी

पाग छबे *अखाका.* पग स्पर्शे, [पग मूके], सुधी पहोंचे

पागडि *अभिऊ.* पेंगडामां (सं.पादाग्र> पाग+ड); जुओ पाघडे

पागरण *अभिऊ. चंद्रवा. हरिख्या.* ओढणुं [दि.पंगुरण]; जुओ पागरण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पागरुण *कस्तुवा.* *पाघडुं, [ओढणुं]; जुओ पागरण

पागोहरी *उषाह.* पगी, [पगपाळो सिपाई, चोकीदार]

पाग्य *मदमो.* पग [सं.पादाग्र]

पाघडलां *लावल.* स्त्रीओना पगना कांडा उपर पहेरवानां घरेणां [दे.पागडा]

पाघडे *रूस्तस.* पेंगडे; जुओ पागडि

पाचइ *प्राचीफा.* परिपक्व थाय, पाके; *उक्तिर. कादं(ध्रु). कादं(शा). प्राचीसं.* रंधाय, शेकाय (सं.पच्यते)

पाछइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा.* पाछळ, पाछुं; *प्राचीसं.* पछी (सं.पश्चात्)

पाछणो *सिंहा(शा).* सजायो [रा.; दे.]

पाछपीलि *गुर्जरा.* पाछळथी (सं.पश्चात्त्व)

पाछिलउ *षडाबा.* [पाछलुं, पछीनुं], छेवटनुं; *उक्तिर. उपबा.* पाछलुं, पाछळनुं, अगाउनुं (सं.पश्च परथी)

पाछलि *उक्तिर. उपबा. कादं(शा). गुर्जरा.* पाछळ

पाछिलुं *उक्तिर. उपबा. षडाबा.* पाछलुं (सं. पश्च परथी)

पाछुं कर्युं *चित्तसं.* छोड्युं

पाछुं रह्युं *चित्तसं.* बाकी रह्युं

पाछूं *नलाख्या.* [-थी, पाछळ, पूर्वे], सुधी (सं.पश्चात्)

पाछूं कहाव्यानी शंका *कादं(ध्रु).* तिरस्कार-नी बीक

पाछेरउं *षडाबा.* पाछोतरुं, पछीथी थतुं

पाछेवाणु, पाछेवाणूं *उक्तिर.* पाछळ तरफनुं (सं.पश्चादनीकम्)

पाछोपउ *प्राचीसं.* ?, [(वंशना) पाछला क्रमे]

पाज *अंगवि. आनंस्त.* *नरका. *प्रेमाका. *लावल.* पगदंडी, सेतु (सं.पद्या); *अखाका. जिनरा. तेरका.* सोपानपंक्ति, सीडी

पाजणी *उक्तिर.* पीणुं, पेयपदार्थ, कांजी (*सं.पर्यायणिका)

पाट *उषाह. दशस्कं(१). प्रेमाका. वीसरा.* कीमती वस्त्र, रेशमी वस्त्र (सं.पट्ट)

पाट *वीसरा. मदमो.* [राज]गादी, सिंहासन; बाजोठ (सं.पट्ट); *वीसरा.* [पाटवी, मुख्य]

पाटउ *उक्तिर.* पाटो (सं.पट्ट); *वीसरा.* पाटियुं (सं.पट्ट)

पाटघायो *सिंहा(शा).* राजवी उपर घा [सं. पट्ट+घात]

पाटण *नलरा. पंचवा. प्राचीफा. षष्टिप्र.* नगर (सं.पत्तन); *वीसरा.* पाटण नामनुं नगर

पाटणपोळ *अखाका.* मुख्य पोळ, [नगरनो दरवाजो]

पाटर *प्रद्युचु.* ?, [*घोडानी कोई जात]; जुओ पटेरो

पाटल *नलरा.* एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

पाटलउ *उक्तिर.* [*पाटले बेसाडी करातो सत्कार] (सं.पाटाचारः)

पाटलीउतार *हम्मीप्र.* पाटियाउतार, उत्तम घोडानुं एक विशेषण

पाटवट *मदमो.* गादीनो अधिकार

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाटा *गुर्जरा.* पाटला; राजगादी (सं.पट्ट)

पाटा चहे **अखाका.* [घा करवा मागे]

पाटि *उपबा.* पाट (सं.पट्ट)

पाटियाळो **प्रेमाका.* [घणी सेरनी गूंथणी-वाळो]

पाटू *ऐतिका.* पट्ट, सुन्दर वस्त्र, [रेशमी वस्त्र]

पाटूआली *उक्तिर.* पादप्रहारिणी, पाटु मारती

पाटोतरी *चंद्रवा.* पाटवी

पाटोधर *प्रेमाका.* पाटवी; *ऐतिका.* पदधारक, [पाट – गुरुगादीना अधिकारी]

पाठग *प्राचीका.* ब्राह्मणनी अटक (सं.पाठक)

पाठविउ *आरारा. षडाबा. गुर्जरा. वीसरा.* मोकल्यो (सं.प्रस्थाप्)

पाठी *प्रेमाका.* पाठ करनारा

पाठी *अभिऊ.* [निशाळियानी] पाटी, स्लेट

पाठीन *ऋषिरा.* ते नामनुं जलचर प्राणी, [एक जातनुं माछलुं]

पाठे आवडे *प्रेमाका.* मोढे आवडे

पाड *प्रेमाका. शृंगामं.* उपकार

पाड *सिंहा(शा).* समीपमां, [पासे]; *वीसरा.* पडोशनी

पाड *गुर्जरा.* पडो, नगारुं (सं.पटह)

पाडइ (लेखे पाडइ) *जिनरा.* हिसाबमां नाखे, [खाते मांडे, उधारी नाखे]

पाडउ *उक्तिर. चंद्रवा. कामा(त्रि). जिनरा. देवरा. प्रेमाका.* पाडो, महोल्लो (सं. पाटकः); जुओ पाडि

पाडल *आरारा(व). ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). शृंगामं.* राता रंगनुं एक फूल के फूलझाड (सं.पाटल)

पाडल *लावल.* पाटलिपुत्र नगर

पाडल-तूण *हरिवि.* पाटलपुष्परूपी भाथो

पाडलपुर *आरारा.* पाटलिपुर नगर

पाडलिय, पाडलीय *आरारा. तेरका. प्राचीफा.* पाटलिपुत्र, मगधनुं प्राचीन पाटनगर

पाडा दुहे जुओ दुहे रे पाडा

पाडि *षडाबा.* विस्तार, अधिकारक्षेत्र (सं. पाट, पाटक); जुओ पाडउ

पाडिहारू *उक्तिर.* साधुथी अमुक समय राखी गृहस्थने पाछी आपी शकाय तेवी वस्तु (सं.प्रातिहारिकम्) [जै.]

पाडुउं, पाडूउं *दशस्कं(१). *प्रेमाका.* खराब, कडवुं; *उपबा. *उषाह. कादं(शा). नलरा. शृंगामं.* खराब, हलकुं, नठारुं; **ऋषिरा. कर्पूमं. षष्टिप्र.* खराब, अशुभ, अनिष्ट (सं.*पातुक)

पाढ **प्रेमाका. वेताप.* पहाड

पाढ *उक्तिर.* मांचडो

पाण *अखाका. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. हरिख्या.* हाथ (सं.पाणि); जुओ पान

पाण *आरारा.* पाणी [सं.पानीयम्]

पाण *उक्तिर.* पीणुं (सं.पानम्)

पा'ण *अखाछ.* शिला, पथ्थर [सं.पाषाण]

पाणहि, पाणही *वीसरा.* जोडा (सं.उपानह्)

पाणिवेत्र *कादं(शा).* वेत्रपाणि, हाथमां वांस-नी छडीवाळुं [सं.]

पाणिहारि *विमप्र.* पनिहारी [सं.पानीयहारी]

पाणीरसउ *उपबा.* एक प्रकारनो रोग (सं. पानीय+रस)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणीवल **जिनरा.* [क्षणेक, टूंको समय]

पाण्य, पांण *चतुचा. चंद्रवा. चित्तसं. प्रेमप.* पाणि, हाथ

पात *आरारा.* निष्फळता (सं.); *हरिख्या.* नाश; पडवुं ते

पातगी *प्राचीसं.* पातकी, [पापी]

पातरां, पांतरां *देवरा.* [जैन साधु वापरे छे ते] लाकडानां वासण (सं.पात्र)

पातरिसि *आरारा.* छेतरीश (सं.प्रतार्)

पातरी *नरका. हरिख्या.* पांदडामां वाळेलो फूलनो बीडो (सं.पत्री)

पातलि *प्राचीसं.* पातळ

पातळिया *प्रेमाका.* सुंदर, देखावडा

पातंजली *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पातंजल योगसूत्र

पातांजली *चित्तसं.* पतंजलिनुं, पतंजलिए रचेलुं शास्त्र

पातिक, पातीक *दशस्कं(१). देवरा. नरका. मदमो. सिंहा(शा).* पातक, पाप

पात्र *अभिऊ. अंबरा. *आरारा. *ऋषिरा. नलरा. प्राचीका. प्राचीसं. विक्ररा. सिंहा(म). हम्मीप्र.* नर्तकी

पात्रउ *उक्तिर.* पात्र

पात्रां *उपबा.* पात्र, वासण

पात्रांरउ काप *उक्तिर.* पात्र – वासणनुं प्रक्षालन (सं.पात्राणां कल्पः)

पाथउ *उक्तिर.* एक माप, परिमाण (सं.प्रस्थः)

पाथर *उक्तिर. ऋषिरा. प्राचीफा. लावल.* पथ्थर (सं.प्रस्तर)

पाथरी *वीसरा.* *(कीमती) पथ्थर (सं.प्रस्तर), [*(हीरानी) कोथळी]

पाथू *ऐतिका.* पथिक

पादरियउ *उक्तिर.* गामडियो (सं.पाद्रिकः)

पादु *अखाका. चित्तसं.* पग [सं.]

पादुपाणि *अखेगी.* पग अने हाथ [सं.]

पाद्य *प्रेमाका. हरिख्या.* सत्कार रूपे पग धोवा ए [सं.]

पाद्र *उक्तिर.* गामडुं (सं.पद्र)

पाधर *चतुचा.* सीधो, [सरल]; **गुर्जरा.* [*खुल्लंखुल्ला, *पादर] (दे.पद्धर) [सं. प्राध्वर]

पाधर *नरका.* [पादर], भागोळ, गामनी नजीकनी सीमा [सं.पद्र]

पाधर (पाधरसीह) *गुर्जरा.* सीधोसट, भलो-भोळो; जुओ पाधरसी

पाधरपट *प्रेमाका.* उज्जड मेदान

पाधरसी **जिनरा.* [सीधोसट, सरल, भलो-भोळो]

पाधरसीह जुओ पाधर

पाधरि *उषाह.* खुल्ला मेदानमां; [सीधेसीधुं] (दे.पद्धर) [सं.प्राध्वर]

पाधरुं *अखाका. उक्तिर. उपबा. कादं(शा). नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. षडाबा.* सीधुं, सरल (दे.पद्धर) [सं. प्राध्वर]; *षष्टिप्र.* सामान्य कोटिनुं; सीधुं, (अवळुं नहीं ते); सीधुं, [शुद्ध]

पाधारउ *गुर्जरा.* पधारो; जुओ पाउधारो

***पान (पाण)** **हरिख्या.* [हाथमां] (सं.पाणि)

पानडां *उपबा.* पांदडां [सं.पर्ण]

पानडी *अभिऊ.* पांदडी, वनस्पतिनी पातरी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.पर्णिका); *नरका.* पाननी भातवाळी

पाननो बीडलो गळवो *अखाका.* चाव्या विना पान खावुं, [सार विनानी क्रिया करवी]; जुओ बीड्यां पान ज गळवां

पान-बीड *प्राचीसं.* पानबीडुं [सं.पर्ण+वीटिः]

पानही *आरारा.* पगरखां (सं.उपानह्)

पानेत्र, पानेत्रो *लावल. विमप्र.* पानेतर, लग्नविधि वखते पहेरवामां आवती ओढणी [सं.पारिणेत्र]

पानोठ *अखाछ.* जारबाजरीनां लांबां पांदडां, पानठ

पान्हउ *आरारा. उक्तिर. विमप्र.* पानो, छातीमां धावण भरावुं ते (सं.प्रस्नव)

पान्ही *उक्तिर. षडाबा.* पगनी पानी (सं. पार्ष्णि)

पापइजिनइ *षष्टिप्र.* पापने ज (विशे)

पापण *चतुचा.* पापिणी, तिरस्कारवाचक शब्द

पापपणास *विक्ररा.* पापनो नाश (सं.पाप+ प्रणाश)

पापांतिक *नलरा.* एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

पामणहार *आनंस्त.* पामनारा

पामणहारो *अखेगी.* पामनारो

पामरी *नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* बारीक रंगबेरंगी वस्त्र, दुपट्टा के खेस तरीके वपरातुं वस्त्र, ऊननुं वस्त्र

पामिवुं *उक्तिर.* पामवुं (सं.प्राप्तव्यम्)

पाम्विउ *प्राचीसं.* पाम्यो (सं.प्राप्)

पाय *गुर्जरा. तेरका. देवरा. नलाख्या. विक्ररा. वीसरा.* पग (सं.पाद)

पायउ *ऋषिरा. देवरा.* प्राप्त कर्युं

पायक *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. लावल. विमप्र. विराप.* पगपाळा सैनिक (सं.पादातिक)

पायकी *गुर्जरा.* पातकी, पापी

पायकेसरी *उक्तिर.* वासण लूछवानो कपडा-नो टुकडो (सं.पात्रकेशरिका) [जै.]

पायठवणउ *उक्तिर.* पात्र मूकवानुं ऊननुं वस्त्र (सं.पात्रस्थापनकम्) [जै.]

पायडीउ *गुर्जरा.* *प्रकट कर्युं (सं.प्रकटित), [*कोई वाद्य]

पायसान *दशस्कं(१).* पायसान्न, खीर

पायसान्न *प्रेमाका.* दूधमां रांधेलुं अन्न, खीर [सं.]

पाया *आरारा. वाग्भबा.* पाय, पग [सं.पाद]

पायाल *अंबरा. आरारा. गुर्जरा.* पाताळ

पाये *चंद्रवा.* पामतां [सं.प्राप्]

पायो *लावल.* पाम्यो, मेळव्यो

पार *आरारा.* उपर, आगळ, चडियातुं [सं.]

पार काढ्य *चित्तसं.* अंत आण, छेडो आण

पारखि *नेमिछं. विक्ररा.* पारखनार, पारेख (सं.परीक्षक)

पारखो *मदमो.* परखनारो (सं.पारीक्षक; प्रा. पारिक्खय)

पारख्या *अखाछ.* परख, परीक्षा

पारजातीक *नंदब.* पारिजातक

पारणेत्र *उषाह.* *परणेतर, [लग्न]

पारता *षडाबा.* पूर्ण करता (सं.पारयति)

पारती *चारफा.* अे नामनां फूलो (दे.पारत्ति)

पारथिया *जिनरा.* प्रार्थना करवावाळा,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[मागवावाळा]

पारद *चित्तसं.* पारो [सं.]

पारधि *वसंफा. *वसंफा(ब्रा).* एक फूलनुं नाम

पारधि *नलरा.* शिकार, मृगया (सं.पापर्द्धि)

पारधि-रंगु **वसंवि(ब्रा).* [पारधि नामना फूल साथे आनंदक्रीडा]

पारधिवसणु *गुर्जरा.* शिकारनुं व्यसन (सं. पापर्द्धिव्यसन)

पारधिसंगु *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* पारधिपुष्पनो संग

पारधी *गुर्जरा.* शिकार (सं.पापर्द्धि)

पारधीउ *गुर्जरा.* शिकारी (सं.पापर्द्धीक)

पारशी *चंद्रवा.* गुप्त बोली

पारशीकर *कादं(शा).* ईरान(देश), पारसी-ओनो प्रदेश (सं.पारसीक+र)

पारशी-भेद *कादं(शा).* पारसी, चोक्कस करेला खानगी अर्थवाळा शब्दोना प्रयोगवाळी बोली

पारश्ववर्ती *कादं(शा).* नजीक रहेलुं (सं. पार्श्ववर्ती)

पारस *प्रेमाका.* पारसमणि; स्पर्शथी लोढाने सुवर्ण बनावनार मणि

पारस पाखाण *आनंस्त.* पारसमणि

पारस पाहाण *उक्तिर.* पारसमणि (सं. स्पर्शपाषाण)

पारसी *प्रेमाका.* न समजाय तेवी, सांकेतिक भाषा

पारासुर *मदमो.* पराशर [ऋषि]

पारांगत *अखाका.* संसारनी पार [जवुं ते]

पारि *उक्तिर. षडाबा.* पार, पेली बाजु, पछी (सं.पारे)

पारिखइ *आनंस्त.* पारखे [सं.परीक्षते]

पारिखउ *आरारा. ऋषिरा.* पारखुं (सं.परीक्ष)

पारिखा *विमप्र.* परीक्षक

पारेख *नरका.* पारखुं – परीक्षा करी जाणनार

पारेवो जुओ परेरो

पार्यउ *आरारा.* पूरो कर्यो, समाप्त कर्यो [सं.पारितः]

पालइ *प्रबोप्र.* पाळा [सैनिक] साथे

पालउ, पाळउ *उक्तिर. नलरा. प्राचीसं. ललिरा. वीसरा.* पगे चालतो, पाळो [*सं.पाद+चल]

पालउ *अखाका. अखाळ. अखेगी. उक्तिर.* बरफ, करो (सं.प्रालेयम्)

पालक *नलरा.* एक देवविमान, [दिवलोक] (सं.)

पालकी *प्राचीसं.* पालखी (सं.पर्यंकिका)

पालटइ *उक्तिर. प्रबोप्र. प्रेमाका. वीसरा. शृंगामं.* बदलाय, पलटाय, [-मां परिवर्तन पामे]; पलटावे, बदलावे [दे. पल्लट्ट; सं.पर्यस्त]

पालटउ *अखेगी. उक्तिर. वाग्भबा.* पलटो, परिवर्तन

पालटणां *प्रबोप्र.* बदलाववानां

पालटिआ *उपबा.* वारंवार बदलावनार (दे. पल्लट्ट) [सं.पर्यस्त]

पालठी **विमप्र.* [पलांठी] [सं.पर्यस्तिका]

पालठीकरणु *षडाबा.* ऊभडक पगे के साथळ पर पग चडावी बेसवुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.पर्यस्तिका, प्रा.पल्हत्थिय)

पालथी *उक्ति.* पाथरणुं (सं.पर्यस्तिका)

पालवइ *आरारा. उक्ति. ऋषिरा.* पल्लवित थाय, पल्लवित करे

पालवियां *प्रेमाका.* साडीना पालव, छेडा [सं.पल्लव]

पाला, पाळा *कादं(शा). *गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. विमप्र.* पगे चालनार, पगपाळा सैनिको [*सं.पाद+चल]

पालाट- *तेरका.* प्रसरवुं (सं.पर्यस्, प्रा.पल्लट्ट)

पालि *आरारा.* पंक्ति, हार (सं.;रा.)

पालि *उक्ति.* नानुं गाम; झूंपडुं (सं.पल्लिः)

पालि *लावल. षडाबा.* पाळ [सं.]

पालिडी *शृंगामं.* पाळी, [पाळ] (सं.पालि)

पालित-सूरि *प्राचीसं.* पादलिप्त-सूरि

पालिवुं *उक्ति.* पाळवुं (सं.पालयितव्यम्)

पालिस्यइ *आरारा.* पळाशे

पाली, पाळी *आरारा. *ऋषिरा. प्रेमाका.* छरी (*दे.पालिआ)

पाली *मदमो.* *पांदडां, [*गरोळी] [सं.पल्लि]

पालुइ *उक्ति. वाग्भवा.* पल्लवित थाय (सं. पल्लवयति)

पालूं *नलाख्या.* पगपाळुं, [पगपाळा सैनिक] [*सं.पाद+चल]

पाल्यक *मदमो.* पालक

पाल्यां लाड *प्रेमप.* लाड कर्यां, [लाड पूरां कर्यां]; जुओ लाड पालवा

पाल्ह्युं *आरारा.* पल्लवित थयुं

पाव *लावल. वीसरा.* पग (सं.पादु)

पाव *ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. चारफा.* पापकर्म, अशुभ कर्म

पावइ *अखाका. आरारा. उक्ति. ऐतिरा. गुर्जरा. देवरा. नरका.* पामे (सं.प्राप्)

पावइ *अभिऊ.* पावैयो, हीजडो

पावटउ *उक्ति.* जलाशयनो घाट, आरो (सं.पादावर्त) [सं.पादवर्त्मा]

पावडिए *जिनरा.* पगथिये [सं.पाद परथी]

पावठ *प्रेमाका.* [पगथियां(वाळुं)]

पावडी *प्रबोप्र.* चाखडी (सं.पादुका)

पावडीआरां *उपबा. ऋषिरा.* पगथियां (सं. पाद+पटिक+कार)

पावति *ऋषिरा.* पामे

पाव रोर *ऐतिका.* भयानक पाप, [भारे पाप] [सं.रौरव पाप]

पावलि *गुर्जरा.* *पगथियामां, [*पगमां]

पावलियो *दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका-२. प्रेमाका.* पग [सं.पादु]

पावले *नरका. रूस्तस.* पगे, पगमां

पावस *अखाका. अंबरा. तेरका. दशस्कं(१). प्राचीफा. प्रेमाका. लावल.* वरसाद, वर्षाऋतु (सं.प्रावृष्)

पावसकाल *प्राचीसं.* वर्षाऋतु

पावसि-कालि *शृंगामं.* चोमासाना समयमां

***पाव-सिरसि (पावसि रिति)** *लावल.* [वर्षाऋतुमां] [सं.प्रावृष् ऋतु]

पाविसु *विक्ररा.* पीवडावीशुं [सं.पायय्]

पाश *नलाख्या.* पासे (सं.पार्श्वे)

पाश *अखाका. प्रेमाका. हरिख्या.* फांसो, बंधन (सं.)

पाषाणभेद *कादं(शा).* पथ्थरफोडी नामनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वनस्पति, शंखावलीनी भाजी (सं.)

पास *चित्तसं.* स्पर्श

पास *गुर्जरा. नेमिछं. *विमप्र.* पाश, बन्धन, फांसो

पासा(?) *तेरका.* [पासे, समक्ष, -नी तुलनामां], करतां (सं.पार्श्व); जुओ पासे

पासइ *लावल.* बाजुए (सं.पार्श्व); [पडखे, बाजुमां]; पासे, नजीक

पासइ *षष्टिप्र.* बंधनमां (सं.पाश)

पासउ *उक्तिर. गुर्जरा.* बंधन, फांसो (सं. पाशकः)

पासउ *उक्तिर. प्रेमाका.* पडखुं (सं.पार्श्वम्)

पासउ *अभिऊ.* पासो [सं.पाशक]

पासछउ *उक्तिर.* शिथिलाचारी साधु (जै.) [सं.पार्श्वस्थ, प्रा. पासत्थ]

पासनाह *विक्ररा.* पार्श्वनाथ

पासहरा *गुर्जरा.* पाशवाळा, बांधवाना दोरडावाळा (सं.पाशधर)

पासंग *वेताप.* प्रपंच, कपट

पासाइय *तेरका.* प्रासाद, दहेरुं (सं.प्रासाद +क)

पासाकेवली *उक्तिर.* पासा फेंकी ज्योतिष जोवानुं शास्त्र (सं.पाशककेवली)

पासाथी *पंचवा.* पासेथी, [तरफथी, बाजुएथी] (सं.पार्श्व)

पासि *देवरा.* पामशे

पासि *तेरका.* -नी करतां (सं.पार्श्वे); जुओ पास, पाहइ

पासिक *तेरका.* पासे रहेलो, [साथी, पक्षपाती] (सं.पार्श्विक)

पासिथु *अंबरा.* पासेथी

पासी *उक्तिर.* बांधवानी रस्सी (सं.पाशिका)

पासी *मदमो.* पासे

पासु *ऐतिका.* [पाश, बंधन]

पासुं *नरका.* पक्ष, [तरफेण]; *नलाख्या. प्रेमाका.* पडखुं, सहाय, हूंफ (सं. पार्श्वकम्)

पासेस *ऐतिका.* पार्श्वनाथ [सं.पार्श्वेश]

पासो *अभिऊ.* पासुं, पडखुं, मदद (सं. पार्श्वक)

पास्तुं *अखाका.* पस्तुं, उपराणुं, पक्ष (फा.) [फा.पुश्त]

***पास्यां (वास्यां)** **लावल.* [वासित कर्यां]

पाह *तेरका.* पाश, [बंधन, फांसो]

पाहइ *षडाबा.* पासे, द्वारा; *षष्टिप्र.* -ना करतां; **उपबा.* [-ना करतां; द्वारा, वडे] (सं.पार्श्वेन); जुओ पासे

पाहण *गुर्जरा. षडाबा.* पाषाण, पथ्थर; *उक्तिर.* घंटीनो पथ्थर

पाहणिया *उषाह.* पथ्थरियां (सं.पाषाण उपरथी)

पाहरी *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* रक्षक; [चोकीदार, पहेरेगीर] (सं.प्राहरिकः)

पाहरीं *उक्तिर.* पहोरे [सं.प्रहर]

पाहरू *उक्तिर.* चोकीदार, पहेरेगीर (सं. प्राहरिकः)

पाहंति *षष्टिप्र.* [-थी, वडे]; पासे; द्वारा; [-ना करतां] (सं.पक्षतः)

पाहाण *उक्तिर. उपबा.* पाषाण, पथ्थर

पाहि, पाहिं *गुर्जरा.* द्वारा, पासेथी; ०*उषाह.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमिछं. विक्ररा. पें, -थी, -ना करतां (सं.पार्श्वे); जुओ लोक पाहिं, शिष्य पाहिं

पाहिइ *नलरा.* -ना करतां; पासे [सं.पार्श्वे]

पाहिं जुओ पाहि

पाहुणा *शृंगामं. हम्मीप्र.* परोणा (सं. प्राघूर्णक)

पाहुणी *ऋषिरा.* महेमान (स्त्री) (सं. प्राघूर्णिकी)

पाहे *पंचवा.* पासे (सं.पार्श्वस्मिन्)

पां *प्रेमाका.* -पें, -ना करतां

पांइ *प्रबोप्र.* [पास, द्वारा]; -ना करतां (सं. पार्श्वे)

पांउ *प्रेमाका.* पग [सं.पादु]

पांके *अखाका.* *अखाछ. पंकाय, वखणाय; *अखाका.* *पहोंचे, [प्रसिद्ध थाय, प्रगट थाय]

पांखिया *षडाबा.* पक्षी

पांखु *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पासेनुं, पडखेनुं

पांखुडी *वसंवि.* पांख (सं.पक्ष)

पांखोटुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पांगोठुं, बावडुं

पांगरउ *ऐतिका.* विहार करवो, [जवुं]

पांगरण *प्राचीसं.* [पागरण, ओढणुं, पछेडी] [दे.पंगुरण]; जुओ पागरण

पांगरो *प्रेमाका.* [चोटलानी सेर, लट]

पांगुरइ *उक्तिर.* ओढणुं ओढे [दे.पंगुर]

पांगुरणउ *उक्तिर.* ओढणुं, पछेडी [दे.पंगुरण]

पांगुरावइ *उक्तिर.* ओढाडे

पांचयज्ञ *प्राचीफा.* श्रीकृष्णना शंखनुं नाम (सं.पाञ्चजन्य)

पांचली *प्राचीफा.* पूतळी (सं.पांचाली)

पांच शब्द *सिंहा(म).* पांच वाद्योनो मंगल-सूचक ध्वनि (सं.पंचशब्द)

पांचाली *कादं(शा).* ढींगली, [पूतळी] (सं.)

पांजरी *प्राचीफा.* [पींजरिया, वहाणना खूवा उपर बेसी तपास करनार] (सं.पञ्जर परथी)

पांडर *प्राचीसं.* ?, [*फिक्कुं]

पांडरउ *उक्तिर. कादं(ध्रु).* धोळुं, फिक्कुं (सं. पांडुर)

पांडव *उषाह.* अश्वपाल

पांडुरा *नरका.* धोळा, फिक्का

पांडुरोग *नरका.* कमळो [सं.]

पांण *मदमो.* हाथ (सं.पाणि); जुओ पाण्य

पांणही *वेताप.* पाणवी, पथरी, (अहीं) पेटमां बंधातो गठ्ठो [सं.पाषाण]

पांतरइ *जिनरा.* ठगाय, छेतराय; ठगे, छेतरे; [छेतरामणीथी, भूलथी] [सं.प्रतार्]

पांतरउ *जिनरा.* प्रमाद, भूल, [छेतरामणी]

पांतरा जुओ पातरा

पांति *उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* पंक्ति, हार, पंगत; *लावल.* पंक्ति, लीटी

पांति, पांती *नरका. नरप(द).* प्रकार, बाजु (सं.पंक्ति)

पांते *प्रेमाका.* बाजुए, [समुदायमां]

पांनहियां *जिनरा.* पगरखां [सं.उपानह्]

पांभडी *उक्तिर.* पामरी, उपरणो

पांभरी *ऐतिका.* वस्त्रविशेष, [पामरी, उपरणो]

पांलंणे *चंद्रवा.* पालणामां, [झूलामां] [सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पालन]

पांशु *कादं(शा).* धूळ (सं.)

पांसउ *वीसरा.* पासो (सं.पाश-)

पांसुली *उक्तिर.* पांसळी [दे.पंसुलिया; पार्श्व]

पांहण *ऋषिरा.* पाषाण, पथ्थर

पांहनी *ऋषिरा.* पगनी पानी (सं.पार्ष्णि)

पांहि, पांहिइ *आरारा. ऋषिरा. प्रद्युचु.* -ना करतां, -थी [सं.पार्श्वे]; *अखाका. ऐतिरा.* पासे

पिअबंध *उषाह.* पद्यबंध

पिअ-हर *प्राचीसं.* पियर (सं.पितृगृह)

पिआल *अभिऊ. प्राचीका.* पाताळ

पिउ *प्राचीसं.* पिता

पिकवयणी *कादं(शा).* कोयलनां जेवां मीठा वचनवाळी, (सं.पिकवचना)

पिका *वसंफा. वसंवि.* कोयल (सं.पिक)

पिकारव *वसंवि(ब्रा).* कोयलनो अवाज

पिक्क *प्राचीसं.* थूंकवुं ते, पिचकारी; जुओ पीक

पिक्खइ *तेरका. नेमिछं. प्राचीफा.* पेखे, जुए (सं.प्रेक्ष्)

पिक्खहु *ऐतिका.* [पिखो], जुओ, देखो

पिक्खिवि, पिक्खेवि *ऐतिका. कृष्णबा.* जोईने

पिखणय *ऐतिका.* दृश्य, [तमाशो] [सं. प्रेक्षणक]

पिखेवि *ऐतिका.* जोईने

पिछोडी *प्रेमाका.* पछेडी, ओढवानुं वस्त्र

पिठउ *कादं(शा). नलाख्या.* पेठो, दाखल थयो (सं.प्रविष्टकः)

पिडार *वीसरा.* गोवाळ (सं.पिंडार)

पिडाविसिइ *षडाबा.* पीडा आपशे

पिण, पिणि *आरारा. ऐतिका. प्राचीफा. वीसरा.* पण (सं.पुनः, पुनः अपि)

पिण्डखजूर *उक्तिर.* एक जातनी मीठी खजूर (सं.पिण्डीखर्जूरम्)

पिण्डत *प्रबोप्र.* विद्वान (सं.पंडित)

पितर *उक्तिर.* माबाप (सं.पितरः)

पित्राण *दशस्कं(१).* पितराई

पित्री *प्रेमाका.* पितृ

पित्रेण *प्रेमाका.* पितराई

पिपील *अखाका.* कीडी (सं.पिपीलिका)

पिपीलिका *प्रेमाका.* कीडी [सं.]

पिम्म *ऐतिका. शृंगामं.* प्रेम

पिय *गुर्जरा.* प्रिय; पिता

पियर *प्राचीसं.* पिता [सं.पितृ]

पियरपनोती *प्रेमाका.* भाग्यशाळी पियरवाळी

पिया *आरारा.* पिता (प्रा.)

पियाण *कर्पूमं. *चारफा. प्राचीसं.* प्रयाण, कूच

पियामह *गुर्जरा.* पितामह

पियारउ *वीसरा.* प्यारुं [सं.प्रियतर]

पियारी *अखाछ. नरका. प्रेमाका.* पराई

पियुला *नरका.* पीधा (म.)

पिर *प्राचीका.* पेर, [पेठे] (सं.प्रकार)

पिराणउ *उक्तिर. षडाबा.* ढोरने हांकवा माटेनो परोणो (सं.प्राजन)

पिरायु *उपबा. प्राचीसं.* परायो, पारको

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिरि *आरारा. नलाख्या. प्राचीका.* प्रकारे, पेरे, रीते

पिरिथिम *प्राचीसं.* पृथ्वी

पिरु *षडाबा.* परु

पिरोजा *प्रेमप.* एक प्रकारनुं तेजस्वी रत्न [फा.पीरोजः]

पिल्ल- *प्राचीसं.* नाखी देवुं (सं.प्रेर्) [दे.पल्ल]

पिशी *प्रबोप्र.* प्रवेश करी (सं.प्र+विश्)

पिशु *प्राचीफा.* पशु, प्राणी

पिशुनता **प्रेमाका.* [निंदा, चुगली, द्रोह, दुष्टता] (सं.)

पिष्ट *हरिख्या.* लोट (सं.)

पिसी *अभिऊ.* पेसी (सं.प्रविश्य)

पिसुन *ऐतिका.* दुष्ट [सं.पिशुन]

पिहाण *प्राचीसं.* आच्छादन, ढांकण (सं. पिधान)

पिहिति *आरारा.* ?, [रांधेली दाळ, लचको]; जुओ पहिति

पिहिरइ *नलाख्या.* पहेरे (सं.परिधा-)

पिहिरण *कादं(धु). *कादं(शा). *नलाख्या.* पोशाक, पहेरवेश (सं.परिधान)

पिहिरामणी *नलाख्या.* पहेरामणी, [भेट] (सं.परिधापन)

पिहिरावीया *आरारा.* पहेरामणी – भेट आपी

पिहिलूं *नलाख्या.* पहेलुं, प्रथम (सं. प्रथ+ इल्ल)

पिहिल्युं *आरारा.* पहेलां (सं.प्रथिल्ल)

पिहुलउं *उक्तिर. षडाबा.* पहोळुं (सं.पृथुल)

पिहुलपणि *षडाबा.* पहोळाईमां

पिहेर, पीहर *प्रेमाका.* पियर (सं.पितृगृह)

पिंगल *प्रेमाका.* पीळा रंगनी, भूखरी [सं.]

पिंगाणी *उक्तिर. प्रेमाका.* कंकावटी (सं. पिंगाणिका)

पिंजरिय *तेरका.* रातुं बनावेलुं (सं.पिञ्जरित)

पिंडखजूर जुओ पिण्डखजूर

पिंडत जुओ पिण्डत

पिंडल *कादं(शा).* पिंडाकार, फींडलुं, वींटो

पिंडार *प्रेमाका.* गोवाळ [सं.]

पिंडारणी *प्रेमाका.* गोवाळण

पिंडारुं *नरका.* गोवाळियो, भरवाड

पिंडित *आरारा.* पंडित

पिंड्य *चित्तसं.* पिंड, शरीर, रूप

पिंड्यांणी *आरारा.* पंड्याणी, ब्राह्मणी

पीअली *लावल.* पीयळ, कपाळमां लगाडवामां आवती अर्चा [सं.पीत परथी]

पीआणउं *नलरा. विमप्र.* प्रयाण, कूच

पीआरडी *नलरा.* बीजानी, पराई (सं. पराक ?)

पीआरुं *कादं(शा). चतुचा. नरका. मदमो. विमप्र.* पारकुं, परायुं

पीआंण *ऋषिरा.* प्रयाण

पीउ *मदमो.* प्रियतम (सं.प्रिय)

पीउला *नरका.* पीधुं (म.)

पीक *नरका-२.* कोयल [सं.पिक]

पीक *वीसरा.* पान – तांबूलनो रस, [पिचकारी]; जुओ पिक्क

***पीखल (पीलख)** *उपबा.* वृक्षविशेषनुं नाम

पीछोकडि *आरारा.* पछवाडे, पाछळने भागे

पीजहलउ *उक्तिर.* पेय, पीणुं (सं.पेयफलम्)

पीटणउ *उक्तिर.* पीटवुं ते (सं.पिट्टनम्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीठ *प्राचीसं.* बजार [सं.]

पीठमर्दक **नलरा.* [राजाने प्रसन्न राखनार सहायक मित्र] (सं.)

पीड *कामा(त्रि).* पिंड, शरीर

पीडि *उपबा. चतुचा.* कचडे, दबावे, दुःख आपे, [रिबावे, सतावे] (सं.पीडयति)

पीढी *उक्ति्र.* पीढियुं, मेडाना टेकानुं आडुं लाकडुं (सं.पीठिका)

पीण *गुर्जरा.* पुष्ट (सं.पीन)

पीतकार *विक्ररा.* सोनी [सं.]

पीतपटोली *ऋषिरा.* पीळा रंगनुं नानुं पटोळुं (सं.पीतपटदुकूली)

पीतरांण *वेताप.* पितराई

पीतरियउ, पीतरीउ *उक्ति्र. लावल.* पितराई (सं.पितृव्य)

पीत्राणी *उक्ति्र.* पितराईनी पत्नी (सं.पितृव्यपत्नी)

पीत्री *मदमो.* पितृ

पीत्रीयउ *उक्ति्र. गुर्जरा.* पितराई (सं.पितृव्यक)

पीन *आरारा. नरका.* पुष्ट, भरावदार (सं.)

पीपलरी पीपी *उक्ति्र.* पीपळाना पाननी भूंगळी, पिपूडी

पीपलि *उक्ति्र.* पीपर, औषधि तरीके वपराती वनस्पति (सं.पिप्पली)

पीपलीमूल *उक्ति्र.* पीपरीमूळ (सं. पिप्पलीमूल)

पीपी जुओ पीपलरी पीपी

पीमळ *प्रेमाका.* परिमल, सुगंध

पीमळे *नरका.* सुगंध फेलावे (सं.परिमल्)

पीय *गुर्जरा. प्रद्युचु.* पिता

पीयगण *हम्मीप्र.* प्रियना गुण

पीयल *प्राचीसं.* पीळुं; *नरका. स्थूलिफा.* कपाळमां करवामां आवती अर्चा (सं. पीत)

पीयाण, पीयाणउं *अंबरा. कृष्णच. गुर्जरा. ललिरा. विक्ररा. विराप. षडाबा.* प्रयाण, कूच

पीयामहु *गुर्जरा.* पितामह

पीयारुं *अखाका. लावल.* पारकुं

पीयावो *नंदब.* पाणी पावानो कर

पीराआ *मदमो.* परायां

पीरीयख *गुर्जरा.* परीक्षित

पीरोजी *हम्मीप्र.* पिरोजशाहे पडावेली (महोर)

पीळक *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पीळाश, फिकाश, पांडुता

पीलख जुओ पीखल

पीलुक *षडाबा.* पीलुनुं झाड

पीळ्यां *प्रेमाका.* पियलनी – कंकुनी अर्चावाळां कर्यां

पीव *अखाका.* प्रिय, स्वामी

पीवर *ऐतिरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पुष्ट (सं.)

पीष्ट *मदमो.* [लोटनुं] पीठुं [सं.पिष्ट]

पीहर *आरारा. उक्ति्र. गुर्जरा. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. पंचवा. प्राचीफा. प्राचीसं. विक्ररा. वीसरा. षडाबा.* पियर (सं.पितृगृह); *सिंहा(शा).* पियर, आश्रयस्थान

पीहल *मोसाच.* कंकु – चंदननी अर्चा;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ पीयल

पीहो *वेताप.* पीयो, जळोदर

पींगाणउ *उक्तिर.* हरताल, गोरोचन के कंकु (सं.पिंगाणम्)

पींछ *उक्तिर.* पींछुं (सं.पिच्छम्)

पींजणउ *उक्तिर.* पींजवानुं यंत्र (सं. पिञ्जनम्)

पींजणी *प्रेमाका.* गाडाना पैडा उपरनुं ढांकण

पींडार *उक्तिर. दशस्कं(१). नरका.* गोवाळ, भरवाड (सं.पिंडार)

पींडारडा *गुर्जरा. विराप.* गोवाळिया [सं. पिंडार]

पुकार *विक्ररा.* ढंढेरो, [जाहेरात]

पुख *कस्तुवा.* पोंक [सं.पुथुक]

पुख *वीसरा.* पुष्य नक्षत्र

पुखणां *विक्ररा.* पोंखवुं ते [सं.प्रोक्षन]

पुखराग *सिंहा(शा).* पुष्कराज, पोखराज, एक किंमती पथ्थर, रत्न

पुखाधन **सिंहा(शा).* [मळ ज्यां भेगो थाय ते खाडो] [तु.पुख=मल]

पुगा *आरारा.* पहोंच्या, पूरा थया

पुग्गल *जिनरा.* पुद्गल, [रूपादिविशिष्ट द्रव्य, भौतिक पदार्थ] [जै.]

पुग्या *अंबरा.* पहोंच्या [सं.पूर्यते]

पुछदंड *गुर्जरा.* दंड जेवा पूंछडा साथे, [ऊभी पूंछडीए] (सं.पुच्छदंड)

पुजनीक *दशस्कं(२).* पूजनीय

पुट्टलिका *षडाबा.* पोटली (सं.पुट परथी)

पुठ बोले *मदमो.* पीठ पाछळ निंदा करे

पुडइनि *प्राचीसं.* कमलिनी (सं.पुटकिनी)

पुडउ *उक्तिर.* पडो (सं.पुटकः)

पुढ *कादं(ध्रु).* मोटुं [सं.प्रौढ]

पुढइ *नलरा. नलाख्या.* पोढे, सूए (सं.प्रवर्धते; दे.पवड्ढ)

पुण *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं.* पुण्य

पुण *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वाग्भबा. विमप्र. षष्टिप्र.* पण, परंतु, वळी, [तो] (सं.पुनः)

पुणइ, पूणइ **गुर्जरा. *विराप.* [फूलेफाले; अनिष्ट करे] [रा.पूणणौ; सं.पृणाति]

पुणति *ऐतिका.* पवित्र करे छे [सं.पुनाति]

पुण पुण *उक्तिर.* वारंवार [सं.पुनः पुनः]

पुणा *उपबा.* पण (सं.पुनः)

पुणि *आरारा.* पण; वळी (सं.पुनः); *षडाबा.* वळी

पुणु *तेरका.* वळी, (सं.पुनः)

पुण्य पर्वणी *प्रेमाका.* पवित्र, पर्वनो – तहेवारनो दिवस

पुण्यसिलोक *सिंहा(म).* उत्तम कीर्तिवाळो (सं.पुण्यश्लोक)

पुतलिका *अखाका.* पूतळी [सं.पुत्र]

पुतार *नलरा. सिंहा(म).* हाथीनो महावत; जुओ पुहुतार

पुत्त *गुर्जरा. देवरा. तेरका. षडाबा.* पुत्र

पुत्तपुत्तेहिं *लावल.* पुत्र अने पौत्रो वडे

पुत्तलिअ *तेरका.* पूतळी (सं.पुत्र+ल+इका)

पुद *मदमो.* कूला [सं.पुत, पूत]; जुओ पूंद

पुदगल **गुर्जरा. देवरा.* शरीर (सं.पुद्गल)

पुद्गल **ऐतिका.* [शरीर]

पुनरपि *अखाका. अखाछ.* फरीफरी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जन्ममरणना फेरा

पुनरपे *प्रेमाका.* पुनरपि, फरी वार

पुनिम *षडाबा.* पूनम (सं.पूर्णिमा)

पुन्न *आरारा. गुर्जरा.* पुण्य

पुन्न *गुर्जरा.* पूर्ण, परिपूर्ण

पुन्नवंत *तेरका.* पुण्यवंत

पुन्नाग *आरारा.(व).* ऊंडी, रक्तकेसर (सं.पुंनाग)

पुन्निम, पुन्निमा *तेरका. लावल.* पूनम (सं. पूर्णिमा)

पुन्य-पसाय *दशस्कं(२).* पुण्यनी कृपाथी, पुण्यने प्रतापे [सं.पुण्यप्रसाद]

पुप्फ *आरारा. कर्पूमं. विक्ररा.* पुष्प

पुप्फपडली *उक्तिर.* पुष्पसमूह, फूलनो नानो करंडियो (सं.पुष्पपटली)

पुप्फरास *आनंस्त.* पुष्पराशि

पुफ *प्राचीफा.* फूल (सं.पुष्प)

पुमान *अखाका.* पुरुष, नर [सं.पुमान्]

पुर *मदमो.* पूरो

पुरअहे *उक्तिर.* पर्वने दिवसे

पुरख *कामा(त्रि). दशस्कं(२). देवरा. वीसरा.* पुरुष

पुरजन्म *चंद्रवा.* पूर्वजन्म

पुरण *मदमो.* पूर्णिमा?

पुरमांण *रूस्तस.* फरमान

पुरराउ *गुर्जरा.* नगरना अधिपति, राजा (सं.पुरराज)

पुरवछाओ *मदमो.* [पूर्वछाया], छंदविशेष

पुरस *उक्तिर.* एक पुरुष जेटलुं [ऊंडाई के ऊंचाईनुं] माप (सं.पौरुषम्)

पुरस *अभिऊ. कामा(त्रि).* पुरुष

पुरसरि *आरारा.* परिसरमां, पासे, [पादरे]

पुरहूत *ऋषिरा.* इन्द्र (सं.पुरुहूत)

पुरंजन *अखाका. अखेगी.* जीव [सं.]

पुरंद्री *विराप.* परणेली स्त्री, [पत्नी] (सं. पुरन्ध्री)

पुरंधिय *ऐतिका.* स्त्रीओ (सं.पुरन्ध्री)

पुराय (शंख पुराय) *प्रेमाका.* [शंख फूंकाय], वागे; जुओ पूर्यो शंख

पुरिस *तेरका.* पुरुष

पुरिसादानी *जिनरा.* *पुरुषोमां प्रधान, [आदरणीय पुरुष]

पुरीसादाणी *ऐतिका.* *पुरुषोमां प्रधान, प्रसिद्ध, [उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष] [सं.पुरुषादानी]

पुरिसु हेम *सिंहा(म).* हेमपुरुष, सुवर्णपुरुष

पुरु *उक्तिर.* पोर, आगलुं के पछीनुं वर्ष (सं.परुत्)

पुरुषपण *आनंस्त.* पुरुषपणुं, पुरुषातन

पुरुषरयण *ऐतिरा.* पुरुषरत्न

पुरुषाक्रम *प्रद्युचु.* पुरुषार्थ अने पराक्रम

पुरुसलउ *प्राचीसं.* पुरुष

पुरुहुणा *अभिऊ.* महेमान, अतिथि (सं. प्राघूर्णक)

पुरेंद्री *गुर्जरा.* वडील परिणीत स्त्री (सं.पुरन्ध्री)

पुरोकउं *उक्तिर.* पुराणुं, पहेलांना समयनुं

पुर्ख *अखाछ. दशस्कं(१).* पुरुष

पुल- *प्रद्युचु. प्राचीफा.* जवुं, पळवुं [सं.पलाय्]

पुलकी *नेमिछं.* आनन्द पामी [सं.पुलक्]

पुलाइ *आरारा. गुर्जरा. प्राचीसं.* पळे, जाय,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूर थाय, नासी जाय (सं.पलायते)

पुलाण *हम्मीप्र.* पलाण [सं.पर्याण]

पुळाणउ *वीसरा.* पलायन थयेलो (सं. पलायते)

पुलाय *आनंस्त.* पलायन करे, [नासी जाय]

पुलिन *नरका. हरिख्या.* किनारो, भीनो रेताळ कांठो (सं.)

पुलिया *ऐतिका.* पळया, चाल्या

पुवभवि *गुर्जरा.* पूर्वभवमां

पुव्वुक्किउ *ऐतिका.* पूर्वकृत

पुशप *चतुचा.* पुष्प

पुष्टुं *विमप्र.* पुष्ट

पुष्ट्य *चित्तसं.* पुष्टि, पोषण,जामवुं ते, पुष्ट थवुं ते

पुष्यित *अखाछ.* शणगारेली, उपरथी मीठी. मलावी-मलावीने रजू थती [सं.]

पुसागो *मदमो.* पोशाक

पुस्तग *चंद्रवा.* पुस्तक

पुस्तककर्म *कादं(शा).* पुस्तक लखवानी कळा के पूतळां बनाववानी कळा (सं.)

पुहचइ *ऋषिरा. विराप.* पहोंचे [सं.प्रभूत] (प्रा.पहुत्त); *आरारा.* परिपूर्ण थाय

पुहचतु *नलरा.* मोटो, शक्तिशाळी, पहोंचतो

पुहचि *उषाह.* पोंचा उपर

पुहतउ *उपबा. गुर्जरा. नेमिछं.* पहोंच्यो; *ऋषिरा.* परिपूर्ण थयो [सं.प्रभूत, प्रा. पहुत्त]

पुहर, पुहरा *उषाह. वीसरा.* पहेरा (सं.प्रहर उपरथी)

पुहवि, पुहवी *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. हम्मीप्र.* पृथ्वी

पुहवीसर *तेरका.* पृथ्वीश्वर

पुहुचाडी *नेमिछं.* पहोंचाडी, पूरी करी

पुहुतु *आरारा. कृष्णबा. नलरा. प्रबोप्र. शीलक.* पहोंच्यो [सं.प्रभूत]

पुहुतार, पुतार **प्रबोप्र.* [हाथीनो महावत]

पुहुर *अभिऊ. उक्तिर.* पहोर (सं.प्रहर)

पुहुलउं *उक्तिर. लावल.* पहोळुं [सं.पृथुल]

पुहुवि, पुहुवी *अभिऊ. नेमिछं. प्रबोप्र.* पृथ्वी

पुहुंक *उक्तिर. षडाबा.* पोंक (सं.पृथुक)

पुंआड *उक्तिर.* चक्रमर्द, कुवाडियानो छोड (सं.प्रपुन्नाटः)

पुंछ *सिंहा(शा).* झडपी ?, [*पहोंच, *गति]

पुंजी *षडाबा.* साफ करी, लूछी [सं.प्रोंछ्]

पुंतार *अंबरा. कृष्णबा. विमप्र. हम्मीप्र.* हाथीनो महावत [सं.प्रयोक्तृ]

पुंयरा *षडाबा.* पोरा, पाणीमां थता बारीक जीव [सं.पूतर]

पुंश्चली, पुंश्चळी *चंद्रवा. प्रेमाका.* छिनाळ, वंठेल स्त्री [सं.]

पुंहक *अंबरा.* पोंक [सं.पृथुक]

पूअरउ *उक्तिर.* पोरो, पाणीनुं जंतु (सं.पूतरकः)

पूग *कादं(शा).* सोपारी (सं.)

पूगइ *अखाका. गुर्जरा.* सुधी पहोंचे, [प्राप्ति थाय], [पार ऊतरे]; *गुर्जरा. प्रेमाका.* आवी पहोंचे, जई पहोंचे; *अंबरा. आरारा. कर्पूमं. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा. लावल. *षडाबा. सिंहा(म).* पहोंचे, पूरुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थाय, परिपूर्ण थाय, संतोषाय (सं.पूर्यते)

पूगीफल *कादं(शा).* सोपारी (सं.)

पूगीफाड *उक्ति.* सोपारीनो कटको (सं. पूगी+फालित)

पूगै *आनंत.* सोपारीथी

पूछ *नरका.* [ज्योतिषविषयक] प्रश्न, [जोश] [सं.पृच्छा]; जुओ प्रश्न

पूछिवउं *उक्ति.* पूछवुं

पूछीतउं *उक्ति.* पूछातुं (सं.पृच्छ्)

पूज *अखाछ.* पूज्य; *आरारा. वीसरा.* पूजा

पूजइ *प्रद्युच्.* [सुधी] पहोंचे, [-नी तोले आवे]; *षष्टिप्र.* पहोंचे, शक्तिमान थाय; *आरारा. गुर्जरा. जिनरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पूरुं थाय, परिपूर्ण थाय (सं.पूर्यते)

पूजनिक *प्रेमाका.* पूजनीय

पूजनी *कादं(ध्रु).* पूज्य

पूजनीक *दशस्कं(१).* पूजनीय

पूजारउ *षडाबा.* पूजारी (सं.पूजाकर)

पूजावइं *आरारा.* पूजा करे छे

पूजिवा *उक्ति.* पूजवा

पूट्ठि *लावल.* पीठ उपर [सं.पृष्ठि]

पूठउ *उक्ति.* पीठ, पूंठ, शरीरनो पाछळनो भाग (सं.पृष्ठम्)

पूठि, पूठी *आरारा. लावल. वीसरा.* पीठ; *उक्ति. उपबा. *नलाख्या.* पाछळ; *उपबा. प्रेमप.* पछी (सं.पृष्टि)

पूणइ (?पूगइ) *प्राचीसं.* जीते, पहोंचे, [नष्ट करे] [रा.पूणणौ]; जुओ पुणइ

पूठ्य *चित्तसं.* पेठे, जेम; पूठ, पाछळ

पूण्या *नरका-२.* फळया [सं.पूर्ण]

पूतना *हरिवि-अनु.* गात्रवाळी

पूतरी *प्रेमाका.* पुत्री

पूतली, पूतळी *पंचवा.* बत्रीश पूतळीनी वार्ता; *प्रेमाका.* आंखनी कीकी [सं.पुत्र]

पूत्त *गुर्जरा.* पुत्र

पूत्रेलउ *उक्ति.* पूतळुं (सं.पुत्रकः)

पूनिम *उक्ति. वीसरा.* पूर्णिमा, पूनम

पूय *ऐतिका. प्राचीसं.* पूजा

पूयडा *षडाबा.* पूडा (सं.पूप)

पूर *आरारा. वीसरा.* पूर्ण, पूरुं, पूरेपूरुं (सं. पूर); *आरारा.* पूर्ति, पुरावुं ते, भरावुं ते

पूरइ अहम पूंठि *लावल.* अमारुं समर्थन करे छे, [अमारी मददमां रहे छे]

पूरणी *ऋषिरा.* [दीवालना रक्षण के आधार माटेनुं बांधकाम] [रा.]

पूरब *वीसरा.* पूर्व दिशानुं

पूरव *लावल.* जैन मान्यता अनुसार एक काळपरिमाण [सं.पूर्व]

पूरवइ *आरारा. लावल.* पूरुं करे, परिपूर्ण करे, [संतोषे]; *अखाका.* परवडे, [पूरुं पडे, परिपूर्ण थाय, यथेष्ठ थाय]

पूरवलउ *आरारा. लावल.* पहेलांनो, पाछलो (सं.पूर्व)

पूरविलउं *गुर्जरा. नेमिछं.* पहेलांनुं, आगलुं (सं.पूर्व+इल्ल)

पूरिय *गुर्जरा.* नगर (सं.पुरिक)

पूरी (आसन पूरी) *जिनरा.* (आसन) जमावी

पूरी (सभा पूरी) *षडाबा.* [सभा] भरी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.पूरयति)

पूरीउ (अल पूरिउ) **वाग्भबा.* [हवे बस एवो भाव पूर्यो]

पूरो पाड्यो *चित्तसं.* पहोंचाड्यो, लई गयो

पूर्यो शंख *प्रेमाका.* शंख वगाड्यो, [शंख फूंक्यो]; जुओ पुराय

पूर्व *नलरा. षष्टिप्र.* जैन शास्त्रोनो एक विभाग [सं.]

पूर्वभवंतरिइं *शृंगामं.* पूर्वभवमां

पूर्विलउ **षडाबा.* [पूर्वेनो, आगलो] (सं.पूर्व)

पूर्वीयु *उक्तिर.* पूर्व दिशानुं

पूलउ *उक्तिर.* पूळो (सं.पूलकः)

पूंख *प्रेमाका.* तीरनो आगलो पींछावाळो भाग [सं.पुंख]

पूंख *नलरा.* वरकन्याने वधाववां ते, पोंखवुं ते (सं.प्रोक्ष्)

पूंछ- *वीसरा.* पूछवुं (सं.पृच्छ्)

पूंछली *अखाछ.* पूछियल, थाकीने बेसी पडेली

पूंछे *आरारा.* पूंठे, [पूंछडे, पाछळ]

पूंजइ *उक्तिर. षडाबा.* कचरो वाळे, साफ करे [सं.प्रोंछ्]

पूंठि **नलाख्या. विमप्र.* पाछळ (सं.पृष्टिः)

पूंठि पूरइ जुओ पूरइ अह्न पूंठि

पूंद *उक्तिर.* कूला (सं.पुतौ); जुओ पुद

पे, पें *नेमिछं.* उपर; *हरिख्या.* पासे, पासेथी; *नरका. प्रेमाका. हरिख्या.* -नी सरखामणीमां, -ना करतां [सं.प्रति]

पेअ *कामा(त्रि).* दूध [सं.पेय]

पेई *अभिऊ.* पेटी

पेखइ *तेरका. नरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* जुए (सं.प्रेक्षते)

पेखणउं *अंबरा. चित्तसं.* पेखणुं, तमासो, [जलसो, उत्सव] [सं.प्रेक्षनक]

पेच *अखाका.* युक्ति, जोडाण, [प्रपंच]

पेचेतालीस *षडाबा.* पिस्ताळीस (सं.पंचचत्वारिंशत्)

पेचे पेचे *प्रेमाका.* कपटथी, दावपेचथी

पेड **अखाका.* [*पीड; *परड; *लप]

पेड *अखाका.* वृक्ष, [छोड, वेल] [हिं.]

पेणामां *प्रेमाका.* कडायामां, मोटी कडाईमां

पेदड **पंचवा.* [पग, मूळियां] (सं.पद+दल)

पेध्यारु *अंबरा.* पधारो [सं.पाद+धार्]

पेम *तेरका.* प्रेम

पेमासव *शृंगामं.* प्रेमनो अर्क [सं.प्रेमासव]

पेर *अखाका. अखाछ. प्रेमाका.* प्रकार, रीत; *कामा(त्रि). कामा(शा).* प्रकार, रीत गोठवण; *मोसाच.* रीत, रिवाज; *नरका.* रीत, प्रकार, युक्ति, उपाय, [*आवडत]

पेरपेर *प्रेमप.* जुदीजुदी रीते

पेराईउ *कामा(शा).* सांठानी गांठ वच्चेनो भाग

पेरेपेरना *चतुचा.* भिन्नभिन्न प्रकारना

पेर्य *चित्तसं.* प्रकार, रीत, मार्ग, गोठवण, जोगवाई

पेर्ये *चित्तसं.* प्रकारे, रीते, पेठे

पेलइ *गुर्जरा. दशस्कं(२).* प्रेरे, धक्केले

पेलाडि *प्राचीफा. *शृंगामं.* पीडा, वेदना

पेलावेलि, पेलावेली *उक्तिर.* खेंचाखेंची,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धक्कामुक्की; *गुर्जरा.* तालावेली (सं. *प्रेराप्रेरि)

पेशकसी *मदमो.* खंडणी [फा.पीश-कशी]

पेशल *कादं(ध्रु).* सुंदर (सं.); **वसंफा(ब्रा).* [कोमळ]

पेस *आरारा.* उद्योग, श्रम (फा.)

पेसकशी *चंद्रवा.* खंडणी [फा.पीश-कशी]

पेसरां *हम्मीप्र.* युवान सैनिको, युवको (फा. पिसर=पुत्र)

पेसारो *ऐतिका.* प्रवेश[नो उत्सव]; जुओ पइसारउ

पेहे *नंदब.* पहो, सवार [सं.प्रभात]

पेहेली *मदमो.* प्रहेलिका, [समस्या]

पें जुओ पे

पेंड *सिंहा(शा).* पिंड, पंड, शरीर

पेंडार *मोसाच.* भरवाड [सं.पिंडार]

पैआल, पैआळ, पैयाल *अंगवि. उषाह. कृष्णबा. दशस्कं(१). प्रबोप्र. प्रेमाका.* पाताळ

पैब्रह्म *प्राचीका.* परिब्रह्म (सं.परब्रह्म)

पैयाल जुओ पैआल

पैयुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* रमतमां नक्की करेलुं अमुक अंतर [सं.पदिक]

पैशुन **ऐतिका.* [चाडी, चुगली] [सं.]

पैसण *जिनरा.* प्रवेश करवो ते

पैसारे *ऐतिका.* प्रवेश[ना उत्सवपूर्वक]; जुओ पइसारउ

पो- *वीसरा.* परोववुं (सं.प्रवयति) [सं.प्रोत-]

पोईस *उक्तिर.* [*वाटमांथी खसो एम जणावतो उद्गार] [सं.पूतिकेशः]

पोखइ *दशस्कं(२). प्रेमाका.* **नेमिछं.* पोषे, [संतोषे, संवर्धे, जतन करे]

पोखी **नेमिछं.* [पोषेली, -थी भरेली]

पोगर *अखाछ.* पुद्गल, [परमाणुपिंड, भौतिक पिंड]; *चित्तसं.* परमाणु

पोटलिया *उक्तिर.* पोटली (दे.पोट्टलिय)

पोठी *नलाख्या. प्रेमाका.* पोठियो, बळद (सं. पृष्ठिः परथी)

पोठीउ, पोठियउ *उक्तिर.* पोठियो (सं.पृष्ठि परथी)

पोढउं *अभिऊ.* **ऋषिरा. चतुचा. चंद्रवा. नलरा. रूपच. लावल. वीसरा.* प्रौढ, मोटुं, महान; विशाळ; बळवान

पोढेरो *चित्तसं.* प्रौढ, मोटो, विस्तृत

पोण *कामा(त्रि). कामा(शा). दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* पण, प्रतिज्ञा; *प्रेमाका.* शरत, दाव; जुओ वर्णनपोण

पोत *कादं(शा).* बच्चुं (सं.)

पोत *अखाका.* मूळ रूप, [पोतापणुं]

पोतइ *आरारा.* **उपबा.* भंडारमां, सिलकमां

पोतउ *आरारा.* भंडार [*सं.पोत]

पोतन *उषाह.* पूतना राक्षसी

पोतापणुं *चित्तसं.* आत्मस्वरूप

पोतावट *हरिख्या.* पोतापणुं, अत्यंत घरवट

पोति *आरारा.* पोतुं करे, लींपे

पोति *कामा(त्रि). देवरा. नरप(द). नलाख्या.* पहोंचे, आवी मळे (सं.प्रभूत)

पोती **नरका.* [पोतियां, वस्त्र]

पोतूं *लावल.* भंबार

पोते *अखेगी.* पोतथी, [आत्मस्वरूपथी];

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तसं. पोतापणुं, अहंभाव; पोतापणुं, आत्मस्वरूप

पोत्रउ *उक्तिर. उषाह.* पौत्र, पोतरो

पोथउ *प्राचीसं.* पुस्तक, पोथुं

पोर *कामा(शा). नरप(द).* प्रहर

पोरसि, पोरसी, पोरिसि *उक्तिर. जिनरा. षडाबा.* एक प्रकारनुं जैन तप, [एक पहोर दिवस चडे त्यां सुधी भोजन वगेरेनो त्याग] (सं.पौरुषी)

पोरुयाड *तेरका.* पोरवाड वंश (सं.पौर+वाट ?)

पोलइआ *प्राचीसं* पोळिया, [दरवान] (सं. प्रतोलि परथी)

पोळ, पोल *देवरा. प्रेमाका. शीलक. हरिख्या.* दरवाजो, द्वार (सं.प्रतोलि)

पोलि *आरारा. उषाह. *ऋषिरा. कादं(धु). कादं(शा). गुर्जरा. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. प्राचीसं. रूपच. लावल. विक्ररा. विमप्र.* दरवाजो (सं.प्रतोलि)

पोलिका *षडाबा.* पोळी (सं.)

पोलिदुयार *आरारा.* तोरणद्वार (रा.)

पोलियउ, पोळियउ *आरारा. उषाह. चंद्रवा. जिनरा. नरका-२. प्रेमाका.* दरवान, द्वारपाळ

पोली *उक्तिर.* पोळ, दरवाजो (सं.प्रतोली)

पोली *नरप(द).* [पोळी], रोटली

पोलीई *विक्ररा.* पोळियाए, [दरवाने]

पोलीया *विक्ररा.* दरवान

पोवइ *षडाबा.* परोवे (सं.प्रवयति) [सं.प्रोत-]

पोशाअ **मदमो.* [पलंगनी चादर, बिछानुं] [फा.पोश]

पोशो *प्रेमाका.* खोबो [सं.प्रसृति]

पोष *आनंस्त. ऐतिरा.* पुष्टि, पोषण

पोषक *चित्तसं.* पोषनार, पुष्ट करनार, अस्तित्वना आधाररूप [सं.]

पोषण *चित्तसं.* अस्तित्वनो आधार [सं.]

पोषणो *आनंस्त.* पोषण [करनार], [पुष्ट करनार]

पोषधसाल *देवरा.* सामायिक, पौषध आदि करवानुं स्थळ [सं.उपवसथ+शाला; जै.; सं.पौषधशाला]

पोषाइ *चित्तसं.* पोषण आपे छे

पोस *उक्तिर.* पोष महिनो (सं.पौष)

पोस *प्रेमाका.* खोबो [सं.प्रसृति]

पोसउ *ऐतिका.* पौषध, [श्रावकोए उपाश्रयमां साधुनी जेम रहेवानुं एक जैन व्रत]

पोसहथउ *उक्तिर.* पौषधमां बेठेलो (सं. पौषधस्थः)

पोसहसाल *लावल.* पौषधशाळा

पोसहा *ऐतिका.* पौषध, [श्रावकोए उपाश्रयमां रही साधुनी जेम रहेवानुं जैन व्रत]

पोसहु *षडाबा.* एक जैन तपप्रकार, [पौषध, चोवीस कलाक माटे उपाश्रयमां रही उपवासपूर्वक धार्मिक क्रियाओ करवी ते] (सं.उपोसथ) [सं.उपवसथ]

पोसाल *उक्तिर. जिनरा. विमप्र. शीलक.* पौषधशाला

पोसीजइ *आरारा.* पोषाय, कंईकंई आपवामां आवे

पोस्त *आरारा(व).* अफीण-खसखसनो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डोडो, [पोसनो डोडो] (फा.)

पोहचावइ *आनंत.* पहोंचाडे [सं.प्रभूत-]

पोहाल *पंचवा.* परसाळ (सं.पृथु+शाला)

पोहोतुं *अखाछ. ऐतिका. कामा(त्रि). देवरा. नरका. प्रेमप. प्रेमाका. मदमो. मोसाच.* पहोंच्युं (सं.प्रभूत); *दशस्कं(१). सिंहा(शा).* पहोंच्युं, पूरुं थयुं, [परिपूर्ण थयुं] [सं.प्रभूत-]

पोहोर *कामा(शा).* प्रहर

पोहोलु *कामा(त्रि).* विशाळ, मोटुं [सं. पृथुल]

पोंकी *प्रेमाका.* पोंखी, वधावी [सं.प्रोक्ष्]

पौर्णमासी *प्रेमाका.* पूर्णिमा, पूनम [सं.]

प्पहु *ऐतिका.* प्रभु

प्यादा **प्रेमाका.* [शतरंजनां पैदल सिपाहीनां महोरां] [फा.पियाद]

प्रकार *मोसाच.* गढ (सं.प्राकार)

प्रखोडी *उषाह.* पखोडीने, [फेलावीने, लंबावीने] [प्रा.पक्खोड]

प्रग *प्राचीका.* प्रभात (सं.)

प्रगत्य *चतुचा.* ?

प्रगन्यावंत *चित्तसं.* प्रज्ञावंत, ज्ञानी

प्रगल (प्रगलचित्त) **नरका.* [मोकळे मने]

प्रघल *ऐतिका. नरका. नरप(द).* पुष्कळ, अत्यंत

प्रछन्न *आरारा.* प्रछन्न, छानी

प्रछा *कादं(शा).* पृच्छा, पडपूछ

प्रज *गुर्जरा.* प्रजा

प्रजंत *दशस्कं(२). मदमो. सिंहा(शा).* पर्यंत, [सुधी]

प्रजुंजइ *आरारा. उक्तिर.* प्रयुक्त करे, योजे

प्रजूंजन *जिनरा.* योजवुं ते [सं.प्रयुंजन]

प्रठवुं *अखेगी.* परठवुं, नक्की करवुं [सं.प्रस्था-]

प्रणिपत *नरका. हरिख्या.* प्रणाम, नमन; *प्रेमाका.* विनंती, आजीजी (सं.प्रणिपत्ति)

प्रणीता *कादं(ध्रु)-टि.* यज्ञमां वपरातुं एक पात्र

प्रत *कामा(त्रि).* लखाण, टीपणुं [सं.प्रति]

प्रतइ, प्रतइं *ऋषिरा. ऐतिका.* प्रत्ये, तरफ (सं.प्रति)

प्रतख जुओ परतख

प्रतपु *गुर्जरा.* प्रकाशो (सं.प्रतप्)

प्रति *अखाछ.* जोड, सरखुं, समोवडियुं [सं.]; जुओ प्रत्ये

प्रतिकार **अखाछ.* [उपाय] [सं.]

प्रतिकूलि *आरारा.* अवळुं

प्रतिक्ष *आरारा.* प्रत्यक्ष

प्रतिख *प्रबोप्र.* रूबरू (सं.प्रत्यक्ष)

प्रतिखि *अंबरा.* प्रतीक्षा

प्रतिग्रह *प्रेमाका.* दाननो स्वीकार [सं.]

प्रतिघाउ *षडाबा.* रुकावट, अंतराय (सं. प्रतिघात)

प्रतिचारिका *आरारा.* दासी, सेविका (सं.)

प्रतिज्ञउं *नेमिछं.* प्रतिज्ञा करेलुं, [स्वीकारेलुं]; जुओ पडिवन्नयउं

प्रतीपाल *मदमो.* संभाळ, रक्षण, [पालन, आचरण]

प्रतिपाल, प्रतिपाळ *ऋषिरा. नरका-२.* [पालनपोषण करनार], पाळनार, रक्षक [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिपालइ *षडाबा.* पालन करे, आचरे (सं. प्रतिपाल्)

प्रतिपालना *प्रेमाका. हरिख्या.* पालनपोषण, रक्षण (सं.)

प्रतिपु **विमप्र.* [प्रकाशो] [सं.प्र+तप्]

प्रतिबाध *दशस्कं(१). प्रेमाका.* वांधो, हरकत

प्रतिबुझइ *षडाबा.* परमज्ञान – आत्मज्ञान प्राप्त करे (सं.प्रति+बुध्यते)

प्रतिबोध *चित्तसं.* प्रत्युत्तर, समजूती [सं.]

प्रतिबोधीयो *ऐतिका.* ज्ञान आप्युं, [उपदेश आप्यो] [सं.प्रतिबोधित]

प्रतिमल्ल *गुर्जरा. विराप.* प्रतिस्पर्धी, योद्धो (सं.)

प्रतिमा *नलरा.* ध्यान माटे शरीरने निश्चल राखवुं ते, कायोत्सर्ग (सं.)

प्रतिलाभइ *आरारा. देवरा. प्राचीफा.* साधु आदिने दान आपे, भिक्षा वहोरावे (सं.प्रतिलाभयति)

प्रतिवाय *प्रेमाका.* प्रत्यवाय, [अंतराय, दोष]

प्रतिवास *आरारा.* सुगंधी (सं.)

प्रतीकार *चित्तसं.* उपाय [सं.]

प्रतीठ *उक्तिर.* प्रतिष्ठा, [मूर्तिस्थापना]

प्रतीठिउ *गुर्जरा.* स्थाप्युं (सं.प्रतिष्ठित)

प्रतीत *अखाका. नरका. प्रेमाका.* खातरी, विश्वास (सं.प्रतीति)

प्रतुसकाल *कामा(त्रि).* प्रातःकाळ

प्रते *चतुचा.* प्रति, तरफ

प्रतेकिइ *नेमिछं.* प्रत्येकने, दरेकने

प्रतें *देवरा.* प्रत्ये

प्रत्यन्या *उषाह.* प्रतिज्ञा, पण

प्रत्यमा *अखाका.* प्रतिमा, मूर्ति

प्रत्यय *आरारा. शृंगामं.* विश्वास, खातरी (सं.)

प्रत्ये *नरका.* *सामे, [मुकाबलामां, जोडमां, साथे]; जुओ प्रति

प्रत्येकबुद्ध *प्राचीका.* अनित्यादि भावनानी कारणभूत कोई वस्तुथी जेने परमार्थनुं ज्ञान प्राप्त थयुं छे एवो पुरुष (सं.) [जै.]

प्रदक्षण *नलरा. वसंफा(ब्रा).* प्रदक्षिणा

प्रदेश *प्राचीफा.* परदेश, बीजो देश

प्रधान *आरारा.* मुख्य, महत्त्वनो माणस; उत्तम, प्रसिद्ध (रा.)

प्रध्यान *अंबरा.* प्रधान

प्रपंच **अखाका. चित्तसं.* विस्तार; *कादं(शा). *नरका. प्रेमप.* मायाप्रपंच, जगतप्रपंच; *कादं(ध्रु).* तजवीज, [खटपट, युक्ति, उपाय]

प्रपंचभेद *चित्तसं.* संसारनो विविध प्रकारनो विस्तार [सं.]

प्रबळ *दशस्कं(१).* प्रकृष्ट बळ, प्राबल्य

प्रबाल *वसंवि(ब्रा).* परवाळां [सं.प्रवाल]

प्रभ *गुर्जरा. षष्टिप्र.* प्रभु, स्वामी

प्रभववुं *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* हेरान करवुं, दूभववुं; (सं.पराभव के परिभव)

प्रभवबुं *प्रेमाका.* उत्पन्न थतुं (सं.प्रभव्); **षडाबा.* [प्रभावकर्ता थवुं, -नी असर थवी] (सं.प्रभव्)

प्रभा *वेताप.* परवा

प्रभा *अखाका. अखाछ. मदमो.* प्रवाह;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ परभाय

प्रभा-जळ *प्रेमाका.* प्रवाहजळ, जळनो प्रवाह

प्रभावना *आरारा. ऐतिका.* माहात्म्य, गौरव; एने अर्थे करवामां आवती लहाणी वगेरे क्रिया [जै.]

प्रमा *अखाका.* *माप, [प्रमाण, यथार्थ ज्ञान] [सं.]

प्रमाण *आरारा. गुर्जरा.* प्रतीति, खातरी, पुरावो (सं.); *आरारा. हरिख्या.* सिद्ध, खरुं, मान्य, नक्की; *आरारा.* *ऋषिरा. -ने लीधे

प्रमाणि [प्रमाणि चडिउं] *लावल.* प्रमाणे, सत्ये [चड्युं], [सिद्ध थयुं, साचुं पड्युं]

प्रमार *प्राचीसं.* परमार

प्रमीला *लावल.* मोहनिद्रा [सं.]

प्रमुख *आरारा. षडाबा.* आदि, वगेरे (सं.)

प्रयंड *विक्रच.* प्रचंड

प्रयुंजइ *उक्तिर. गुर्जरा.* प्रयोजे, प्रयोग करे (सं.प्र+युज्)

प्ररूपणा *ऐतिका.* कथन, वक्तव्य, [निरूपण, प्रतिपादन] [सं.]

प्ररूपीयो *ऐतिका.* कह्यो, [प्रतिपादित कर्यो, निरूप्यो] [सं.प्ररूपित]

प्रलउ *गुर्जरा.* प्रलय

प्रलणुं *सिंहा(शा).* खंडणी ?, [*ऊपजनो हिस्सो] [सं.प्रलवण]

प्रले *अखाका. प्रेमाका.* प्रलय

प्रवत्तिनी *आरारा.* प्रवर्तिनी, जैन साध्वी-ओनुं एक पद

प्रवरु *ऐतिका.* प्रवर, [श्रेष्ठ]

प्रवर्द्धइ *षडाबा.* वधे (सं.प्रवर्ध्)

प्रवहण *ऐतिरा. गुर्जरा.* वहाण (सं.)

प्रवाद *कादं(ध्रु).* वजावणी, [वगाडवुं ते]

प्रवादी *आनंस्त.* जैनथी अन्य वाद[– मत]वाळा

प्रवाल *ऋषिरा. कामा(शा). वसंवि.* परवाळुं (सं.)

प्रवाली, प्रवाळी *उक्तिर. वीसरा.* परवाळां (सं.प्रवाल)

प्रवासाविउ *षडाबा.* [देशनिकाल कर्यो] [सं.प्रवास् परथी]

प्रवाहिउ *गुर्जरा.* वहेवडाव्युं (सं.प्रवाहित)

प्रवेश *मदमो.* प्रवास, [संक्रमण, जवुं ते]; जुओ परवेश

प्रशंस *मदमो.* जाहेरात ? (सं.प्रशंसा)

प्रश्ण *चित्तसं.* प्रश्न, कोयडो

प्रश्न *प्रेमाका.* *भेद, *रहस्य, [ज्योतिष – भाविविषयक पृच्छा]; *हरिख्या.* प्रस्ताव, बाबत, [जिज्ञासानो मुद्दो]; जुओ पूछ

प्रश्न करवुं *प्रेमाका.* भविष्य – ज्योतिष जोवुं

प्रसव्यो *ऐतिका.* जन्म आप्यो

प्रसंग *आनंस्त.* भेट, मिलन [सं.]

प्रसंगी *आनंस्त.* प्रसंग पाडनारो, [प्रगाढ मिलन करनारो] [सं.]

प्रसाउ *गुर्जरा.* प्रसाद, कृपा

प्रसाद *आरारा. कादं(ध्रु).* प्रासाद, मंदिर

प्रसिद्ध *चित्तसं.* अगुप्त, बाह्य

प्रसुत *आरारा.* बाळक, दीकरो (सं.)

प्रस्तानुं *मदमो.* प्रयाणे नीकळवुं ते (सं. प्रस्थानकम्)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्ताव *आरारा. गुर्जरा. *नेमिछं.* प्रसंग, कथाप्रसंग (सं.)

प्रस्थानुं *विक्ररा.* मंगलप्रयाण

प्रस्थाव *पंचवा.* प्रसंग, तक, लाग, [बाबत] (सं.प्रस्ताव)

प्रस्नव *कादं(शा).* स्तनोमांथी दूधनुं झरवुं (सं.)

प्रह *अभिऊ. आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं. विमप्र. वेताप. स्थूलिफा. हम्मीप्र.* प्हो, सवार, प्रभात

प्रह फाटी *ऐतिका.* प्हो फाटी, [प्रभात थयुं]

प्रहवइ **प्राचीसं.* [आधिपत्य मेळवे] (सं. प्रभवति)

प्रहसमि *ऐतिका.* प्रभात समये

प्रहुणु *सिंहा(शा).* परोणो (सं.प्राघूर्णक)

प्रहुसु **नलरा.* [दुःखनी लागणीनो आवेग] (सं.प्रहर्ष); जुओ परहुंस

प्रहोणा *दशस्कं(२). प्रेमाका.* परोणा, महेमान [सं.प्राघूर्णक]

प्रहोणाचार *दशस्कं(२).* परोणागत

प्राइ जुओ प्राये

प्राइहिं *षडाबा.* सामान्य रीते (सं.प्रायेण)

प्राए जुओ प्राये

प्राकार *हरिख्या. शृंगामं.* गढ, कोट (सं.)

प्राक्रम *चित्तसं.* पराक्रम

प्राग *कामा(शा). प्रेमाका. मदमो.* प्रयाग

प्रागुण, प्राघुण *मदमो.* परोणो (सं.प्राघूर्णक)

प्राघुर्णकु *षडाबा.* महेमान (सं.प्राघूर्णक)

प्राछीत *मदमो.* जेने कारणे प्रायश्चित्त करवुं पडे ते, पाप

प्राजि *कादं(शा). प्रेमाका.* पराजय

प्राजे करी *मदमो.* पराजय करी, पराजित करी, विसर्जित करी, नष्ट करी

प्राण *अंगवि. उषाह. ऐतिरा. कामा(त्रि). नलरा. लावल.* बळ, जबराई (सं.)

प्राणइ *नेमिछं.* पराणे, मांडमांड, आग्रह करीने

प्राण-तियाग *प्राचीसं.* प्राणत्याग

प्राणथी *नरका.* पराणे, बळपूर्वक, आग्रह करीने

प्राणपीड *प्रेमप.* अंतरनी व्यथा

प्राणि *उषाह. कादं(शा). गुर्जरा. नरका. नेमिछं. प्राचीसं. विराप.* पराणे, जोरथी, बळजबरीथी

प्राणिइं *उपबा.* पराणे, बळपूर्वक

प्राणिपत *दशस्कं(१).* आसनावासना, [आजीजी] (सं.प्रणिपत्ति)

प्राणी *अखाका. चतुचा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलाख्या. प्रेमप. प्रेमाका. हरिख्या.* प्राण, जीव, आत्मा

प्राणीपत *दशस्कं(२).* प्रणिपात, प्रणाम, [आजीजी, कालावाला] [सं.प्रणिपत्ति]

प्राणीयल *अंबरा.* प्राणिकुल, प्राणीओनो समूह

प्राणे-प्राणे *नरका.* पराणे-पराणे, आग्रह करी-करीने

प्रातुकाळ *प्रेमाका.* प्रातःकाळ, परोढ

प्रातिक, प्रातीक *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* पातक, पाप

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रातुस्काल *मदमो.* प्रातःकाल

प्रादोषिक *आरारा.* सांजनुं (सं.)

प्रापक *आनंस्त.* प्राप्त करावनारा [सं.]

प्रापति **कृष्णबा.* [भाग्य] [सं.प्राप्ति]

प्रापत्ति *चित्तसं.* प्राप्ति

प्रापत्य, प्राप्तय *अखाका. चित्तसं.* प्राप्ति

प्रापिवा *षडाबा.* प्राप्त करवा (सं.प्राप्)

प्राप्तय जुओ प्रापत्य

प्राभव *अखाका. अखेगी.* पराभव, [हानि, पीडा]

प्रामइ *गुर्जरा. षडाबा.* पामे (सं.प्राप्नोति)

प्रायछत *आरारा.* प्रायश्चित्त

प्रायिहिं *षडाबा.* सामान्य रीते (सं.प्रायेण)

प्राये *अखाका. चित्तसं.* प्रायः, खरेखर, साचे ज, निश्चितपणे, चोक्कस; *प्रेमाका.* प्रायः, घणुं करीने, [*खरेखर]

प्रारथिउ *आरारा.* इच्छेलुं (सं.प्रार्थित)

प्रावृट *कादं(शा).* वर्षाऋतु (सं.प्रावृट्)

प्राशन *प्रेमाका.* खावुं ए [सं.]

प्राशुक *जिनरा.* पुत्र [*सं.प्राशक=खानार]

प्राशे *अखाका. नरका.* खाय, आरोगे

प्राश्यां *नरका.* आरोग्यां, खाधां [सं.प्राशित]

प्रासंति *लावल.* भक्षी जाय

प्रासुकेषणिउ *षडाबा.* अचित्त – जीवरहित होवाथी जैन मुनिओए लेवा लायक (खाद्य) (सं.प्रासुक+एषणीय)

प्राहइं *षष्टिप्र.* घणुं करीने, मोटे भागे (सं. प्रायः)

प्राहणकु *षडाबा.* महेमान (सं.प्राघूर्णक)

प्राहार *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* प्रहार

प्राहिं *ऐतिका.* प्रायः, [सामान्य रीते, बहुधा]

प्राहुण, प्राहुणउ *उक्तिर. दशस्कं(२). प्रेमाका. रूपच. विक्रच. षडाबा.* परोणो, महेमान (सं.प्राघूर्णक)

प्रांजळ *प्रेमाका.* ऋजु, सरळ [सं.प्रांजल]

प्रांण *कामा(शा).* मरजी विरुद्ध, पराणे

प्रिउ *षडाबा.* प्रिय

प्रियमेलउ *गुर्जरा.* प्रियमिलन (सं.प्रिय-मेलक)

प्रिया *हम्मीप्र.* परियां, वंशज [सं.पर्याय]

प्रियागत *षष्टिप्र.* वंशपरंपरागत [सं.पर्याया-गत]

प्रियाण *प्रेमाका.* प्रयाण

प्रियाल *ऋषिरा.* रायणनुं वृक्ष [सं.]

प्री *उषाह. वीसरा.* प्रिय; प्रेमी

प्रीअछि *विमप्र.* पडदो [सं.परिच्छद]; जुओ परीअच

प्रीअंगु *ऋषिरा.* घउंलानुं झाड, कांगनो छोड (सं.प्रियंगु)

प्रीउ *नलाख्या. वीसरा.* प्रिय, पति, प्रेमी

प्रीउ स्यउं *ऋषिरा.* प्रियतम साथे

प्रीक्षा *प्राचीका.* परीक्षा

प्रीछ *अखेगी. प्रेमाका.* ओळख, जाण, ज्ञान

प्रीछइ *उपबा. चित्तसं. नरका. *नलाख्या. प्रेमाका. हरिख्या.* जाणे, ओळखे, समजे [सं.परीप्सति]

प्रीछवइ *अखाका. आनंस्त. ऋषिरा. कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. नेमिछं. प्रेमाका. हरिख्या.* ओळखावे, समजावे, जणावे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रीछवण *अखाका.* ओळख, ज्ञान, समज
प्रीणइ *उक्ति.* तुष्ट करे, (सं.प्रीणयति)
प्रीणी *नेमिछं.* प्रसन्न, [तुष्ट] (सं.प्रीणित)
प्रीतदान *आरारा.* राजी थईने आपेलुं दान
प्रीभुत *नंदब.* प्रभूत, पुष्कळ
प्रीमळ *दशस्कं(१). प्रेमाका.* परिमल, सुगंध
प्रीमि *गुर्जरा.* प्रेमथी (सं.प्रेमन्)
प्रीयमेलक *ऋषिरा.* प्रियने मेळवी आपनार
प्रीयाण *दशस्कं(१).* प्रयाण
प्रीयंग *आरारा(व).* घउंलो (सं.प्रियंगु)
प्रीयाणूं *अभिऊ.* प्रयाण
प्रीयां *आरारा.* परियां, पेढी, वंश [सं.पर्याय]
प्रीसइ *जिनरा. नलरा. नेमिछं. प्रेमाक्र. लावल.* पीरसे (सं.परिविष्)
प्रूढ *कादं(ध्रु). चित्तसं. नलाख्या.* प्रौढ, मोटुं, भव्य, विशाळ
प्रेत *हरिख्या.* मडदुं (सं.)
प्रेतम *प्राचीफा.* प्रीतम (सं.प्रेयतम)
प्रेतस्वामी *आरारा.* यमदेव (सं.)
प्रेमभाग *कादं(ध्रु).* स्नेहकृत्य, [स्नेहनो हिस्सो, प्रदेश, पक्ष] [सं.]
प्रेमल, प्रेमळ *दशस्कं(१). नरका. नरप. नंदब. प्राचीका. मदमो. वेताप. सिंहा(शा).* परिमल, सुगंध
प्रेम-सुंहातिउ, प्रेम-सुहांतीय *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* प्रेमे शोभती (सं.प्रेम+ शोभमाना)
प्रेरियउ *आरारा.* मोकल्यो [सं.प्रेरित]
प्रेलेकाल *मदमो.* प्रलयकाळ
प्रेह निसप्रेह *अखेगी.* स्पृहावाळो अने निस्पृह
प्रोअइ *उक्ति.* परोवे (सं.प्रवयति) [सं.प्रोत-]
प्रोखित *शृंगामं.* प्रोषितभर्तृका, जेनो पति प्रवासे गयेलो छे तेवी स्त्री
प्रोजना **अखाका.* [प्रयोजन, हेतु, उपयोग, प्रसंग]
प्रोजी *प्रेमप.* परोवी [सं.प्रोत-]
प्रोढाशन *प्रेमाका.* प्रौढ अशन, सारी रीते खावुं ते
प्रोयुं *प्रेमाका. वीसरा.* परोव्युं (सं.प्रवयति)
प्रोल *ऐतिका.* दरवाजो (सं.प्रतोली)
प्रोलि, प्रोळि *अभिऊ. वीसरा.* दरवाजो (सं.प्रतोलि)
प्रोहण *पंचवा.* वहाण (सं.प्रवहणम्)
प्रोहोणो *नरका. प्रेमाका.* परो णो , महे मान [सं.प्राघूर्णक]
प्रौगड-अवस्था *दशस्कं(१).* बाळवय (सं. पौगंडावस्था)
प्रौगंड *प्रेमाका.* बाळकनी किशोर अवस्था
प्रौढ *दशस्कं(१).* जबर
प्लीह *उक्ति.* बरोळ (सं.प्लीहा)
प्हो *नरका.* प्रभात

फगर *नरका. *नरप(द).* पगर, ढगलो [सं. प्रकर]
फगवुं *अखाका.* आडाअवळा थवुं, [सीधा न जवुं, आडुं फंटावुं]; *प्रेमाका.* [आडा थवुं, वांका थवुं, नियंत्रणमां न रहेवुं], छकवुं
फटक *प्राचीका. प्रेमप.* काच (सं.स्फटिक)
फटके *प्रेमाका.* उश्केराय; फटक एवो अवाज करीने [*सं.स्फट्]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फटार्युं *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* फाट्युं, पहोळुं थयेलुं, साव उघाडुं

फटाळ्यां *प्रेमाका.* फाटेलां, तद्दन उघाडां

फटिक *ऋषिरा.* स्फटिक रत्न; [काच]

फडसूआं *अखेगी.* फाडियां [सं.स्फट्]

फडीया *ललिरा.* कणिया, [अनाजना वेपारी]

फण *गुर्जरा.* फेण (सं.फणा)

फणगट (फणगट दीइ) **विमप्र.* [फूदरडी फरे, आमतेम घूमे, वांकुं चाले]; जुओ फरंगट

फणगर *नलरा. लावल.* साप, फणिधर (सं. फणाकर)

फणपति *ऋषिरा.* नाग [सं.]

फणमंडप *गुर्जरा. विराप.* फेणनो मंडप (सं.फणामंडप)

फण-शरि *हरिवि.* फणाने माथे, फणा उपर

फणि *वसंफा. वसंफा(ल).* सर्प (सं.फणिन्)

फणिमणि *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* नागमणि (सं.)

फणी *आरारा.* सूतरफेणी (रा.)

फणी *ऋषिरा.* साप [सं.]

फणीदु *विराप.* फेणवाळो साप (सं.फणीन्द्र)

फर *प्राचीसं.* ढाल (सं.फल, फलक) [दे.]

फर *मदमो.* फरी

फरक *प्रेमाका.* फडक, बीक [सं.स्फुर्]

फरजा *कामा(त्रि).* सुख, [शांति] [अ.फरज]

फरद *अंगवि.* कोईक खाद्यपदार्थ ?, [उत्तम] [अ.फरीद]

फरलउ *उक्तिर.* काणो (दे.फरल)

फरशुराम *उपबा.* परशुराम

फरस *षडाबा. सिंहा(म).* स्पर्श

फरसइ *आनंस्त. उक्तिर. ऋषिरा. देवरा. नलरा. षडाबा.* स्पर्शे

फरसण *प्राचीफा.* स्पर्श, [स्पर्शवुं ते] (सं. स्पर्शन)

फरसणा *आरारा(व).* फालसां (सं. परुषक) ?

फरसन *षडाबा.* स्पर्शेन्द्रिय (सं.स्पर्शन)

फरसनरूप **षडाबा.* [स्पर्शेन्द्रियवाळुं] (सं. स्पर्शन+रूप)

फरसुरामु *विराप.* परशुराम

फरसो *वेताप.* [पुरुष], पुरुषाकार ढाळो

फरहर **ऐतिका.* [फरफर, फरकवानो अवाज]

फरहर- *वीसरा.* फरकरवुं [सं.स्फुर् परथी]

फरंगट (फरंगट दिइ) *लावल.* फूदरडी [फरे], [आमतेम घूमे, वांकुं चाले]; जुओ फणगट

फरिसइ *उक्तिर. उपबा.* स्पर्शे

फरुकइ *ऋषिरा. प्राचीसं.* फरके (सं.स्फुरति)

फळ *प्रेमाका.* फळुं, अणीवाळो के धारवाळो भाग, पानुं [सं.फल]

फलदायन *षष्टिप्र.* फलदायक [सं.]

फलहउ *उक्तिर.* फलक, पाटियुं (सं. फलिहकः) [दे.फलिह]

फलहलि, फलहूलि *आरारा. *गुर्जरा. प्रद्युचु.* [लीलांसूकां] फळमेवादि

***फलहुरि** *प्रेमाका.* भोजनमां पीरसातां फळ [मेवा]; जुओ फलहुलि

फलहुलि, फलहूलि *आरारा. नेमिछं. लावल.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोजनमां पीरसातां [लीलांसूकां] फळ-मेवा; जुओ फलहलि

फलावइं छइं *उपबा.* *दलील विस्तारे छे, [तात्पर्य प्रगट करे छे] [*सं.फलाय्]

फलित *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* फलवती, विकसित, विकास पामेली (सं.)

फली *उक्तिर. लावल.* शिंग (*सं.फल्यः)

फलीआ *विक्ररा.* फडिया, [कणिया, अनाज-ना वेपारी]

फहरेरे *चित्तसं.* फरफरे

फंद *अखाका.* *प्रेमाका.* जाळ, बंधन; *प्रेमाका.* ढोंग, [कपट, छळ] (फा.)

फंदइ *उक्तिर.* फंदामां पडे, फसाय

फंदी ०*नरका-२.* फसायेली

फंदीउ *आनंत.* फसायेलो, [बंधनग्रस्त]

फंदो *आरारा.* जाळ; जुओ फांडो

***फाक** *नरप(द).* [फोक], व्यर्थ

फाग *चारफा. नलरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* फागु, वसंतमां गावानुं गीत, काव्यरचनानो एक प्रकार (सं.फल्गु)

फागु *तेरका. प्राचीसं.* ए नामनो काव्यप्रकार

फागुण *उक्तिर. तेरका. वीसरा.* फागणमास (सं.फाल्गुन)

फाटउ *उक्तिर.* फाडो, चीरो (सं.स्फाटितम्)

फाटी *प्रेमाका.* चोंकी ऊठी, हेबताई गई

फाटुं *चित्तसं.* छकेलुं, उद्धत, असभ्य [सं.स्फाटित]

फाड *गुर्जरा.* फाळियुं; जुओ फाली

फाड- (संथउ फाड-) *तेरका. प्राचीफा.* सेंथाना बे भाग करवा, सेंथो पाडवो (सं.स्फाट्)

फाडिवा *उक्तिर.* फाडवा

फाडी *उक्तिर.* विस्तरेला शिंगडावाळी

फाडो **कामा(त्रि).* [फाडियां, भाग]

फार *अंबरा. आरारा. ऋषिरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. विमप्र.* घणुं, खूब, पुष्कळ, विशाळ, [मोटुं] (सं.स्फार); जुओ फाल

फारक *अखाका.* फारेग, मुक्त

फारक *गुर्जरा.* स्फारक शस्त्र धरावनार सैनिक (*सं.स्फारक) [दे.फारक्क]

फारकी *उषाह.* *पथ्थर फेंकवानुं यंत्र [स्फारक अस्त्र फेंकवा माटेनी जग्या]

फारक्क *प्राचीसं.* फलकधारी, ढालधारी, [शस्त्रधारी सैनिक] [दे.]

फाल, फाळ *आरारा. उक्तिर. प्रेमाका. लावल.* छलांग, फलंग, कूदको (सं. स्फाल)

फाल **अखाका.* [*शुभ]

फाल [फार] **गुर्जरा.* [पुष्कळ]

फालडी *गुर्जरा.* साडी, [ओढणी] [दे. फालिय]

फालरउ परिधान *उक्तिर.* ओढणुं ओढवुं ते

फाला *नेमिछं.* फाळ, [छलांग]

फालि *शृंगामं.* साडी (*सं.फालिक) [दे. फालिअ]

फाली, फाळी, फालीय *गुर्जरा.* *चतुचा. चारफा. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. मोसाच. वसंफा. वसंवि.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थूलिफा. हरिवि. उपरनुं वस्त्र, ओढणी, साडी (दे.फालिय); **नलरा.* [सादुं वस्त्र, सामान्य ओढणुं]

फालु *प्रेमाका.* लोंकडी, एक वनपशु, [एक जातनुं शियाळ]

फावइ *चारफा. नलरा.* लाभ मेळवे, [प्राप्त करे, सिद्ध करे] [दे.फव्व]

फासू *प्राचीफा. *विमप्र. षडाबा.* निर्जीव, अचित्त पदार्थ (सं.प्रासुक) [जै.]

फासूय *ऐतिका.* अचित्त, जीवरहित (सं. प्रासुक)

फांकडा **अखाछ.* [फांकडी रीते, सरस रीते]

फांडउ *गुर्जरा. प्राचीसं. विमप्र.* पाश, बंधन, फांदो, सकंजो [फा.फंद]; जुओ फंदो

फांदि *नेमिछं.* फांद

फांसी **नरका.* [फांस, खटको]

फांसु *अखाका. नरका. प्रेमाका.* फोगट, व्यर्थ, मिथ्या [प्रा.फंस-]

फिटि *आरारा.* फिटकार

फिटिकडी *षडाबा.* फटकडी

फिरइ *आनंस्त. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. प्राचीसं. लावल. षडाबा.* फरे (सं.*स्फिर्) [*स्फुर्, स्फर्]; *वीसरा.* फरे, घूमे, [भटके, चाले]

फिरक *उक्तिर.* फिरकी (*सं.स्फुरित चक्रिका)

फिरकडी *जिनरा.* लाकडानी चकरी, एक रमकडुं

फिरणु *षडाबा.* फरवुं ते, भ्रमण

फिरति *गुर्जरा.* फेरो, चक्कर

फिरती *उषाह.* फरती, [आजुबाजु]

फिराद *हम्मीप्र.* फरियाद

फिरिओ *कादं(शा).* फरतो आवेलो

फिरिका *प्राचीसं. ?*, [शस्त्रविशेष]

फिरिवा *उक्तिर.* फरवा

फिरी, फिरीनइं *आनंस्त. आरारा. कादं(शा).* फरी, फरीने; फरी वार

फिरीफिरी *ऋषिरा.* फरीफरी, वारंवार

फीटणकाळ *दशस्कं(१). प्रेमाका.* विनाश काळ [सं.स्फिट्-+काल]

फीणली, फीणी, फीनी *आरारा.* सूतरफेणी [दे.फेणक] (रा.); जुओ फीण्यां

फीणोटा *कादं(शा).* फीणनां गूंचळां – गोटा, [फीणनो समूह] (सं.फेनावती)

फीण्यां **प्रेमाका.* [एक मीठाई] [दे. फीणिया]; जुओ फीणली

फीतउ **प्राचीफा.* [समृद्ध, भरपूर, प्राचुर्य-युक्त] (सं.स्फीत)

फीनी जुओ फीणली

फुईहाई *उक्तिर.* फोईयाई, फोईयात [दे.पुप्फी परथी]

फुट्ट- *तेरका.* फूटवुं, फाटवुं (सं.स्फुट्)

फुड *गुर्जरा.* स्फुट, स्पष्ट, [विस्तृत]

फुडवि *ऐतिका.* स्पष्ट, व्यक्त, विशद [रीते]

फुणंग *अखेगी.* फेणवाळो साप

फुणिंदु *गुर्जरा.* मोटो सर्प (सं.फणीन्द्र)

फुरइ *उक्तिर. तेरका.* स्फुरे

फुरकइ *गुर्जरा. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* फरके (सं.स्फुर्)

फुरसराम, फुरिसराम *गुर्जरा.* परशुराम

फुलिंग *उक्तिर.* स्फुलिंग, तणखो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फुल्ल *तेरका.* फूल

फुल्ली *तेरका. लावल.* फूलेली, खीलेली (सं. फुल्लित)

फूटउ *उक्तिर.* परिहसित, परिहास पामेल (सं.स्फुटित); *लावल.* [स्पष्ट, चोख्खो] (सं.स्फुट-)

फूटरउ *उक्तिर.* फूटडो, सुंदर (सं.स्फुटतरः)

फूटरुं *उषाह.* ?, [*चोख्खेचोख्खुं]

फूढ **प्रद्युचु.* [*फूवड, *गंदो, *अभद्र]

फूरकिय *गुर्जरा.* फरकी; जुओ फुरकीय

फूल *अखाछ.* फुलाश, पतराजी

फूल *चित्तसं.* तणखा (अग्निना) [सं.फुल्ल]

फूलपगर *ऋषिरा.* फूलोनो जथ्थो, ढगलो; जुओ पगर

फूलबडू *अंबरा.* फूल चूंटनार बटुक; जुओ बूडउ

फूलविसेखि *आरारा.* फूलविशेषवाळी, फूल-भरी

फूली *नरका.* सेंथानुं घरेणुं; *नरप. नरप(द).* नाकनुं घरेणुं, फूलना आकारनी चूनी

फूलेलुं (फूलेल) **नरका-२.* [सुगंधीदार तेल] [सं.फुल्लतैल्य]

फूसण *षडाबा.* स्पर्श थवो ते (सं.स्पृश् परथी)

फूंकी जाय जुओ फूंफी

फूंडउ *वीसरा.* गुच्छो, छोगुं [हिं.फूंद]

फूंफवे *प्रेमाका.* फूंफाडा मारे

***फूंफी (जाय) [फूंकी जाय]** **प्रेमाका.* [शाता पामे] [सं.फूत्करोति]

फेक्कार जुओ फेफार

फेक्कारइ *ऋषिरा.* (शियाळ) अवाज करे [सं.फेत्कार]

फेक्कारी *विक्ररा.* शियाळ

फेट **गुर्जरा.* [*मेळाप (माटे)] [रा.]

फेटि (फेटि पाडिउ) *प्रद्युचु.* ?, [*मेळाप थयो, *मळ्यो, *लागमां आव्यो]

फेडइ *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. जिनरा. मोसाच. विराप. वीसरा.* दूर करे, नष्ट करे, छोडे (सं.स्फेटयति)

फेडइ (फेडि) **विमप्र.* [हानि, नाश]

फेण *दशस्कं(१).* फीण (सं.फेन)

फेणा *आरारा.* सूतरफेणी (रा.) [दे.फेणक]

फेणाधर-राय *दशस्कं(१).* फणाधरोनो राजा, नागराज

फेतुरि *षडाबा.* छाशमिश्रित दूध

***फेफार (फेकार)** *प्रद्युचु.* शियाळ

फेर *अखाका.* चक्कर, भ्रान्ति, [*फेरा]; *विमप्र.* भिन्नभाव, [फरक, भेदभाव]; *गुर्जरा.* चक्कर, फेरा

फेरइ *नरका. नरका-२. वीसरा. षडाबा. हरिख्या.* फेरवे [दे.]

फेरिउं *गुर्जरा. विराप.* फर्युं

फेरी **गुर्जरा. *विराप.* फेरवी; *आनंस्त.* फेरवी, [चलावी]

फेरु *ऋषिरा. शृंगामं.* शियाळ (सं.फेरव)

फेरे *चित्तसं.* फेरफारथी, [जुदी रीते]

फेल *अखाका.* *खोटो देखाव, [खटपट, खोटी महेनत]; *नरका. नरप(द).* *ढोंग, चेनचाळा, [तोफानमस्ती]

फेली *नरका.* फेलाई

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फेसंडिय *प्राचीसं.* फेनपिंड, [फीणनो फिसोटो]

फेसांणु *चतुचा.* छिन्नभिन्न थयुं, [रोळायुं]

फोक *अखाछ. कामा(त्रि). विमप्र.* फोगट [दे.फुक्का]; जुओ फाक

फोकई *सम्यचो.* फोगट

फोडउ *उक्तिर. उपबा.* फोल्लो (सं.स्फोटकः)

फोडणु *षडाबा.* फोडवुं ते, तोडवुं ते (सं. स्फोटन)

फोडी *उक्तिर.* फोल्ली (सं.स्फोटिका)

फोफल, फोफळ *आरारा(व). उक्तिर. *ऐतिका. कामा(शा). नरका. प्रेमाका. मदमो. लावल. विमप्र.* सोपारी (सं. पूगफल)

फोफलपान *जिनरा. लावल.* पानसोपारी

फोफलीआ *विक्ररा.* सोपारीना वेपारी

फोम *अखाकां.* समज, सान [अ.फहम]

फोरण *प्राचीसं.* ?, [निरंतर प्रवर्तन] [प्रा.; सं.स्फोरण]

फोरवता हुंता *आनंस्त.* स्फुरावतां, [प्रगट करतां]

फोसरी *पंचवा.* ढीली, नबळी

बइ *विक्ररा.* बे [सं.द्वि]

बइट्ठउ, बइठउ *उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* बेठो (सं.उपविष्ट)

बइतालीस *उपबा. गुर्जरा. षडाबा.* बेताळीस (सं.द्वि-चत्वारिंशत्)

बइरी *उक्तिर.* वैरी

बइसइ *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. विराप. वीसरा. षडाबा.* बेसे (सं.उपविशति)

बइसण *ललिरा.* बेसवा माटे, [बेठक, आसन]

बइसणउं *विमप्र.* आसन; *लावल. वीसरा.* बेसणुं, राजगादी

बइसणडां *आरारा.* बेसणां, बेसवुं ते; आसन

बइसार- *वीसरा.* बेसाडवुं

बउल *तेरका. वसंफा. वसंवि.* बकुलवृक्ष, जुओ वउल

बउलसिरी *वसंवि.* बोरसली (सं.बकुलश्री); जुओ वउलसिरि

बकवा *मदमो.* बकवाद

बकसि, बकसु *आरारा.* माफ करो (फा. बक्ष)

बकाण *नलरा.* एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

बकारु **अंबरा.* [बकवाद, बकवाद करनार] [दे.बुक्कार, बक्कर]

बकांणि *आरारा(व).* बकानलीमडो, एक वृक्ष (सं.वृक्क)

बकी *दशस्कं(१).* पूतना

बके *कादं(ध्रु). चित्तसं.* कहे, बोले; *लावल.* स्पर्धा करे, [शरत – होड करे]

बकोर *उक्तिर.* [*शोर, *हांसी] (सं. बर्करिका) [दे.बक्कर]

बगतर, बगतरी *हम्मीप्र.* बख्तर, [बख्तरिया]

बगस्यउ *आरारा.* बक्ष्यो, आप्यो (फा.बक्ष)

बगाई *उक्तिर. कादं(ध्रु). कादं(शा).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशस्कं(१). प्रेमाका. बगासुं

बगाईकरणु *षडाबा.* बगासुं खावुं ते

बचको *कामा(त्रि). कामा(शा).* पोटलुं

बजडाव्या *ऐतिका.* वगडाव्या

बजरइ *उक्तिर.* कहे [दे.वज्जर-]

बजाज *प्रेमाका.* कापडियो [अ.बज्जाज]

बटींग *षष्टिप्र.* मूर्ख

बड आरु *ऐतिका.* *वडनुं फळ

बडइल *षष्टिप्र.* गाडानी धरीनी अंदरनो खीलो; जुओ बडहिल

बडवखती *ऐतिरा.* भाग्यशाळी [हिं.बडा +फा.बख्त]; जुओ वडवखती

बडाला *जिनरा.* महान, [मोटा]

बडु जुओ फूलबडु

बडुया *गुर्जरा.* बडवा, ब्राह्मण छोकरा (सं.बटुक)

बडुं *जिनरा. विमप्र.* वडुं (खाद्य पदार्थ) [सं.वटक]

बडूउ *नलरा.* बडवो, ब्राह्मण (सं.बटुक)

बणाबंध **अभिऊ.* [सुगंधी चूर्ण, एनो अंगराग] [दे.बण्णय+बंध]

बणाया *आरारा.* बनाव्या [सं.वनित]

बणावि *देवरा.* बनावीने, [सजीने]

बत्रीशी **प्रेमाका.* [बत्रीस जातनी स्वादिष्ठ वानगीनो समूह] [सं.द्वात्रिंशिका]

बथोडां *अखाका.* बाथ, आलिंगन, [बथ्थं-बथ्था, धिंगाणां] [सं.*द्वाहस्त-]

बदगो *मदमो.* बदबो

बदरा, बदिरा **हम्मीप्र.* [एक प्रकारनुं सोनानाणुं]; जुओ बदिरा

बदरी *नरका. प्रेमाका.* बोर, बोरडी [सं.]

बदिरा *विमप्र.* एक प्रकारनुं नाणुं; जुओ बदरा

बदें *वेताप.* गांठे

बद्ध *प्रेमाका.* बधी, [आखी]

बनया **प्रेमाका.* [सज्जित] [हिं.] [सं.]; जुओ वनियां

बनी *नरका.* सज्ज थई, [शोभित, शृंगारयुक्त]

बन्नउला *ऐतिका.* शुभ प्रसंगे करावावामां आवतुं भोजन; जुओ वरनोला

बन्यो *प्राचीका.* बन्ने

बपूकार *विक्ररा.* बापोकार, [उत्साहपूर्ण अवाज]

बप्प *प्राचीसं.* बाप [दे.]

बप्पीहउ *गुर्जरा.* चातक पक्षी, बपैयो (दे. बप्पीह); *हम्मीप्र.* घोडानी एक जात

बप्पीहडा *शृंगामं.* बपैया

बप्पुडउ, बापुडउ *प्राचीसं.* बापडो [दे.बप्प-]

बब्बर *आरारा.* बाबर, [मोगल शहेनशाह]

बयकारु जुओ छयकारु

बयठउ *गुर्जरा.* बेठो; जुओ बइट्ठउ

बयसियइ, बयसीयइ *गुर्जरा. विराप.* बेसाय

बयालीस *उक्तिर.* बेतालीस (सं.द्विचत्वा रिंशत्)

बरक- *नलरा.* गर्जना करवी (दे.बुक्कर; म. बरकणें)

बरकां *प्रेमाका.* बूमो

बरगुं *आरारा. हम्मीप्र.* बणगुं, रणशिंगुं; जुओ वरगां

बरघू *वीसरा.* बणगुं, रणशिंगुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बरज *हम्मीप्र.* बुरज, [किल्ला उपर तोप वगेरे राखवा माटेनुं चणतर] [अ.बुर्ज]

बरटी *नलरा.* एक हलकुं धान्य, बंटी (दे. बरट्ट)

बरड **मदमो.* [*डांड माणस]

बरद *चतुचा.* टेक; *मदमो.* बिरुद, [टेक; नाम, ख्याति] [सं.विरुद]

बरदार *मदमो.* [भार] ऊंचकनार ?, [समर्थ] (फा.)

बरले *अखाछ.* बबडे

बरवइ, बरवी **विमप्र. लावल.* अभिमानथी [गु.बरो]

बरास *अखाका. ऐतिका.* कपूर[नी एक जात]

बरासकपूर *चित्तसं.* एक प्रकारनुं कपूर

बरीस *ऐतिका.* वर्ष; जुओ वरीस

बरेलीया *वेताप.* फीण, [पाणीना परपोटा] [हिं.बलूला; दे.बुलंबुला]

बल *मदमो.* बलिराजा

बलगाइ *जिनरा.* वळगाडीने [सं.विलग्]

***बलचंड (बलबंड)** *विराप.* बळवान, [पराक्रमी]; जुओ बलबंड

बल जाय *नरका.* वारी जाय

बल छोड्यउ *आरारा.* ?, [*कमजोर बनेलो]

बलइ *प्राचीसं.* बळद (सं.बलिवर्द)

बलबलीउ *उक्तिर.* बडबडियो, वधु पडतुं बोलनार [दे.बडबड]; जुओ वलवलइ

बलबंड, बलवंड *कृष्णच. गुर्जरा.* **प्राचीसं. हम्मीप्र.* बळवान, [पराक्रमी, प्रतापी] [रा.]; जुओ बलचंड

बलबंधु **गुर्जरा.* [कृष्ण] [सं.बलिबंधन]

बल-बाकल, बल-बाकुल *वेताप.* बलि ने बाकळां, [बलिरूपे बाकळां, बाकळांनो बलि]

बलबांकी *प्रेमाका.* बळबंका, बहादुर अने साहसिक [कृष्ण] [सं.बल+वक्र]

बलबंड जुओ बलबंड

बलराउ *कस्तुवा.* *बळवान राजा, [बलि राजा]

बलहार रह्या *अखाका.* वारी गया, [न्योछावर करी गया]

बलहि *उक्तिर.* बळी, वियाया पछीना तरतना दूधनी बनावट (*सं.बालदधि, बालहिता)

बलाणा *विमप्र.* मंडपनो एक प्रकार; जुओ वलाणय

बला लेउं *प्रेमप.* दुःखडां लउं

बलाहक **शृंगामं.* [एक प्रकारनो बगलो]

बलि *हम्मीप्र.* बिलमां, दरमां

बलि किज्ञ-, बलि कीज- *प्राचीसं.* वारी जवुं

बलि छडि *नेमिछं.* बळवान स्त्रीए छडेला

बलि जाय *नरका.* वारी जाय

बलियां *जिनरा. देवरा.* बलैया, चूडी (सं. वलय)

बलिवा *उक्तिर.* बळवा (सं.ज्वल्)

बसवसइ *उक्तिर.* [जमीन] खूब पाणी स्रवे, पाणीथी लथपथ होय

बहकइ *प्राचीसं. वसंवि.* बहेके, प्रसरी रहे

बहत्तरि *गुर्जरा.* बोंतेर (सं.द्विसप्तति)

बहन *प्रबोप्र.* बहेन (सं.भगिनी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहरखा *ऐतिका.* बाहुनुं घरेणुं, [बेरखां] [सं.बाहुरक्षकाः]

बहारवटे **नरका.* [बहार चाल्या जवुं, प्रदेश छोडवो]

बहिकइ *नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* बहेके, विस्तरे (अप.बहिक्कइ)

बहिडां *आरारा(व).* बहेडां (सं.बिभीतक)

बहिणि, बहिणी *उक्तिर. प्राचीफा.* भगिनी, बहेन

बहिन *उक्तिर. गुर्जरा. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* बहेन (सं.भगिनी)

बहिनडी, बहिनडीय *गुर्जरा. लावल. वीसरा.* बहेन (सं.भगिनी)

बहिनर *अंबरा. नलरा. प्राचीफा. लावल. विमप्र.* बहेन (सं.भगिनी)

बहिनी *वीसरा.* बहेन (सं.भगिनी)

बहिरउ *उक्तिर.* बहेरो (सं.बधिरः)

बहिरखादिक *उपंबा.* बहेरखां वगेरे (सं. बाहु+रक्षक+आदिक)

बहिरखु *नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल.* कांडानुं एक घरेणुं, [बाजुबंध] (सं. बाहुरक्ष)

बहुअर *जिनरा.* वहुवर [सं.वधूवर]

***बहुकइ** *विमप्र.* बहेके

बहु ढंग *प्रेमाका.* घणा प्रकारे

बहुत्तरि *आरारा. नेमिछं. षडाबा.* बोंतेर (सं. द्वासप्ततिः)

बहुमानता *आनंस्त.* बहुमान होवापणुं [आदर होवापणुं]

बहुभंग, बहुभंगि *वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* विधविध प्रकारे

बहुयर *वसंफा.* घणीबधी (सं.बहुतर)

बहुयर-भंग, बहुयर-भंगि *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* विधविध पेरे (सं.बहुतर+ भंगि)

बहुरखउ *उक्तिर.* बहेरखो, बाजुबंध (सं.बाहु-रक्षकः)

बहुरा *षडाबा.* मोटुं झाडु, मोटी सावरणी (*सं.व्यवहारिन्); जुओ बुहारइ

बहुलपणि *नेमिछं.* अधिकताथी, घणी

बहुलु *आरारा. नेमिछं.* बहोळुं, घणुं

बहुवल्लभ *चतुचा.* बहु स्त्रीने जे प्रिय छे ते [पुरुष] [सं.]

बहूत *विमप्र.* बहु [हिं.]

बहूंतेर *देवरा.* बोंतेर [सं.द्विसप्ततिः]

बहेनड, बहेनर *दशस्कं(२). प्रेमाका.* बहेनडी [सं.भगिनी]

बंग *उक्तिर.* बंगाळ देश (सं.बंगाः)

बंग *हम्मीप्र.* बांग, नमाजनो समय सूचववा मुल्लाए करेलो पोकार

बंगला *कामा(त्रि).* [सौथी उपरना माळनी हवादार] नानी ओरडीओ

बंद *आनंस्त.* *बंधन, [*मद – रागवशता]

बंद *प्राचीका.* टीपुं (सं.बिन्दु)

बंद *हम्मीप्र.* बंदी, केदी

***बंदई (बंदी)** *ऋषिरा.* भाटचारण [सं. बन्दिन्]

बंदणी *प्रेमाका.* प्रशस्ति गानारी स्त्रीओ [सं.बंदिन् परथी]

बंदिखाणो *प्राचीका.* केदखानुं (सं.बंदि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

+फा.खाना)

बंदिण *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्रच.* बंदीजन, भाटचारण (सं.बंदिन्)

बंदी जुओ बंदई

बंदीजन *आरारा. कामा(त्रि).* स्तुतिगान करनारा (सं.बंदिजन)

बंदीजन *आरारा.* केदीओ (सं./फा.बंदी +सं.जन)

बंदीयण *गुर्जरा.* प्रशस्ति गानार भाटचारण (सं.बन्दिजन)

बंदोर *षष्टिप्र.* बंदीवान, केदी (सं.बन्दी+ कार ?)

बंध *आरारा.* संबंधनी गांठ, [मेळ]; *कादं(शा). तेरका.* बांधणी, रचना-प्रकार; **कामा(त्रि). *कामा(शा).* [बाध, अंतराय]

बंध *तेरका.* बंधु, [भाई]

बंध- *वीसरा.* बांधवुं (सं.बंध्)

बंधकर *कादं(शा).* गर्भने बांधनारो (उपाय)

बंधण जुओ बांधण

बंधव *गुर्जरा. तेरका. देवरा. लावल.* बांधव, भाई; *गुर्जरा.* स्वजन

बंध साधे *चित्तसं.* नियमन करे

बंधाण *ऋषिरा. चित्तसं.* बंधन, बंधावुं ते, रचना, ग्रथन, [जोडाण, संबंध]

बंधानइं **आनंस्त.* [बंध, बंधावुं ते, जोडाण, संबंध – तेने]

बंधालग *प्राचीफा.* एक कीमती वस्त्र

बंधी *प्रेमाका.* स्त्रीओनुं कपाळ पर पहेरवानुं एक आभूषण

बंधुर *ऋषिरा. गुर्जरा.* सुंदर (सं.)

बंधूक *शृंगामं.* बपोरियानो छोड (सं.)

बंधेगीरी *प्रेमाका.* बंधननी स्थिति, [बंदी-वाननी स्थिति]

बंन्यो *प्रेमाका.* बंने

बंबारव *अभिऊ.* बूमना अवाज, बूमबराडा, [कोलाहल] [दे.बुंबा+सं.रव]

बंबाल **गुर्जरा. हम्मीप्र.* प्रचंड, विशाळ [रा.] (दे.वमाल)

बंबालिय, बंबाली *तेरका. षडाबा.* व्याप्त (दे.वमाल परथी)

बंभ *नलरा. प्राचीका. प्रेमाका. विक्रच. विक्करा.* ब्राह्मण (सं.ब्रह्म)

बंभ *ऐतिका. शृंगामं.* ब्रह्मा

बंभण *आरारा. गुर्जरा. लावल. विरापं. वीसरा.* ब्राह्मण

बंभणी *गुर्जरा.* ब्राह्मणी

बंभसूया *शृंगामं.* ब्रह्मानी पुत्री सरस्वती (सं.ब्रह्मसूता)

बंभंड *गुर्जरा.* ब्रह्मांड

बंभी *लावल.* ब्राह्मी, ऋषभदेवनी ए नामनी पुत्री

बाउची *उक्तिर.* बावची, तकमरियांनो छोड (सं.बाकुची)

बाउल *प्राचीफा. प्राचीसं.* रमणी [दे. बाउल्लिय]; जुओ वाउलि

बाउल, बाउलि *आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. कादं(शा). नलरा.* बावळनुं झाड (दे. बब्बूल)

बाउलउ (वाउलउ) *उक्तिर.* वातोडियो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.वार्त्तालियः); [*वातरोगी, *पागल] [सं.वातूल]

बाउलीआ *नलरा.* बावळ, बावळी (दे. बब्बुल)

बाओलियु *नलाख्या.* बावळनुं झाड [दे. बब्बूल]

बाकरउ *उक्ति.* बकरो (सं.बर्कर) [दे. बक्करय]

बाकरि, बाकरी *चंद्रवा. मदमो.* ममत पर चडी सामे थवुं, ममतभर्युं वेर

बाकरी (बाकरी वाई) *अंगवि. कृष्णबा.* होड [होडे चड्या], [चडसे चड्या]

बाकरी बांधवी *प्रेमाका.* चडसे भरावुं, [वेर बांधवुं]

बाकरी वाई जुओ बाकरी, वाई बाकरी

बाकळा *प्रेमाका.* बाफेलां कठोळ, आसुरी अथवा मेलां देव-देवीओने अपातां हुत-द्रव्य

बाकुल *षडबा.* बाफेलां कठोळ

बाकुला *ऐतिका.* बाकळा, [आखां बाफेलां कठोळ]

बाखडी *दशस्कं(२). प्रेमाका.* पारेठ, वाछरडुं मोटुं थई ओछुं धावतुं होवाथी घट दूध आपती गाय (सं.बष्कयिणी)

बाग *रूत्तस.* वाग, लगाम [सं.वल्गा]

***बागड** *विमप्र.* तोछडुं, [असभ्य]; जुओ बांगड

बाचका *अखाका.* पोटला

बाचडां *कादं(शा).* नानां बच्चां (सं.अपत्य-कानि)

बाछरडुं *देवरा.* वाछरडुं (सं.वत्सकक)

बाज *अखाछ.* बाह्य करणी; *दशस्कं(२). प्रेमाका.* बाह्य, बहार, मर्यादानी बहार, खुल्लेखुल्ली (सं.बाह्य)

बाज *प्रेमाका.* (जमवानां) पतराळां

बाजवट *उपबा.* बाजोठ; जुओ बाजुट

बाजी *प्राचीफा.* रमत, खेल [फा.]

बाजीगर महोर जुओ महोर

बाजुट *कादं(शा).* बाजोठ (सं.*पाद्यपृष्ठ)

बाजुबंध, बाजूबंध *अभिऊ. नरका. प्रेमाका.* बावडामां पहेरवानुं आभूषण [फा. बाझूबंद]

बाजूबंधन *ऐतिका.* अलंकारविशेष, [बाजु-बंध, बावडानुं आभूषण]

बाझ *प्रेमप.* संबंध, मेळ

बाझइ *कादं(ध्रु). नरका.* मन फावे, [मेळ जामे]; *नरका.* वळगे

बाझ्य *प्रेमाका.* मर्यादा बहारनुं, अणघटतुं (सं.बाध्य)

बाटडी *ऐतिका.* वाट, राह, प्रतीक्षा [सं. वर्त्मा]

***बाठ [बांठ]** *नंदब.* ?, [ठगाईभर्युं, जूठुं] [दे.वंठ]

***बाडिमा [बाढिमा]** *चारफा.* वृद्धि, [समृद्धि] [सं.वृद्धिमन्]

बाडुआं, बाडुवां, बाडूआ *कृष्णबा. दशस्कं(१). प्रेमाका.* भलांभोळां (बाळक)

बाढवा, बाढुआं *दशस्कं(१). प्राचीका. प्रेमप.* [भलांभोळां, निर्दोष] बाळक (*सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बटुक)

बाढिमा जुओ बाडिमा

बाढुआं जुओ बाढवा

बाण *अखाका.* वाजिंत्र वगाडवानो गज

बाण भेदवुं *दशस्कं(१).* बाण वागवुं, बाण वडे भेदावुं, [दुःख थवुं]

बाणवइ जुओ वाणवइ

बाती *प्रेमाका.* बत्ती, दीप, [वाटवाळो दीवो] (सं.वर्तिका)

बादर *गुर्जरा. शृंगामं.* स्थूल, [आंखे देखाय तेवा जीव]

बादरनिगोद *आनंस्त.* साधारण वनस्पतिकाय नामनी जीवराशि [जै.]; जुओ निगोद

बाध *प्रेमाका.* दोष; *दशस्कं(१). प्रेमाका.* बाधित, दोषित

बाधउं *गुर्जरा. षडाबा.* बांध्युं, बंधायेलुं (सं. बद्ध)

बाधि *कादं(शा).* बाधा करे, अडचण करे, [उपद्रव करे] (सं.बाध्यते)

बाधी *चित्तसं. नरका.* आखी, अखंड, *बधी

बाधुर *चंद्रवा. रूस्तस. सिंहा(शा).* बहादुर

बांधुं *अखाका. अखाछ. चंद्रवा. नरका. प्रेमाका. मदमो.* बधुं, [आखुं, समग्र]

बाधे *नरका.* बधे, बधामां, [आखामां]

बाध्यो *अखाका.* बाझ्यो, वळग्यो (सं.बद्ध)

बानु *अखाछ.* वचन, बांयधरी

बापीअडउ, बापीडु, बापीयडु *ऐतिका. नेमिछं. शृंगामं.* बपैयो, [चातक] [दे. बप्पीह]

बापीया *ऐतिरा.* बपैया (पक्षी)

बापीहउ *नलरा.* बपैयो (दे.बप्पीह)

बापुडउ जुओ बप्पुडउ

बापूकारया *जिनरा.* पडकार थतां

बापैयो *नरका.* बपैयो पक्षी

बाफ (श्रीबाफ) **विमप्र.* [ऊंची जातनुं मलमल]

बाबत, बाबत्य *मदमो.* प्रस्तुत, [जात-जातनुं, वीगते] [फा.]

बाबत-बाबतना *चंद्रवा.* जुदा-जुदा विषयना

बाबर *गुर्जरा. वाग्भबा.* बर्बर, जंगली जाति

बाबरु *वाग्भबा.* बाबरो, बर्बरक नामे राक्षस

बाबहियउ *वीसरा.* बपैयो, चातक पक्षी

बाबीहउ *उक्तिर. ऐतिका.* बपैयो, (दे.बप्पीह)

बार *आरारा. उक्तिर. कामा(त्रि). गुर्जरा. जिनरा. वीसरा. षडाबा.* बारणुं (सं. द्वार)

बार *देवरा. नरप(द).* बहार (सं.बहिर्)

बार *जिनरा.* वार, [वखत, आवृत्ति]

बारकस *कस्तुवा.* मालवाहक जहाज [फा. बार-कश]

बारे वाट *प्रेमाका.* बधी दिशामां, छिन्न-भिन्न, [अस्तव्यस्त थईने] [सं.द्वादश+वर्त्म]

बारगह, बारगहइं, बारगहै *हम्मीप्र.* एक प्रकारनो तंबु, [जाहेर मुलाकात माटेनी जगा, कचेरी, दरबार] [फा.बारगाह]

बारगरी *हम्मीप्र.* [पगार पर काम करता अने मालिक पासेथी घोडा वगेरे मेळवता] घोडेसवार सैनिक [फा.बारगीर]

बारवई *प्राचीसं.* द्वारका (सं.द्वारावती)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारवट *उक्ति.* बारणानुं कमाड के पडदो (सं.द्वारपट्टः)

बारसि *उक्ति.* बारश (सं.द्वादशी)

बारह *गुर्जरा. तेरका. वीसरा. षडाबा.* बार (सं.द्वादश)

बारह मास *प्राचीसं.* बारमासा [काव्यप्रकार]

बारां *वीसरा.* बार (सं.द्वादश)

बाळ *अखाछ.* बाळबुद्धि, अबूझ

बाल *तेरका. विक्ररा. उषाह.* बाला

बाल *उषाह.* वाळ [हिं.]

बालउ *उक्ति.* सुगंधी वाळो, खस (सं.बालक /वालक)

बालचन्द्र *चतुचा.* नखनां अर्धचन्द्रकार चिह्न

बाळ परुं **नरका.* [(तिरस्कारपूर्वक) दूर कर, फेंकी दे]; जुओ परुं

बालरंडि *सिंहा(म).* बालविधवा

बालही *आरारा.* बालकी

बाला **नेमिछं.* [पशुबच्चां]

बालाणए *ऐतिका.* बालपणमां

बालापण *प्राचीसं.* यौवन, [युवान स्त्रीपणुं] (सं.बालात्वन)

बालिय, बालीय *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* बाळा (सं.बालिका)

बाली *आरारा. गुर्जरा. चतुचा. नरका. नलाख्या. प्रेमाका. लावल.* बाला, मुग्धा, तरुणी

बालीवेस *आरारा.* बाळवयवाळी (सं.बाल-वयस्); जुओ वेस

बाळे वेशे *चंद्रवा.* तरुण अवस्थाए, [नानी उंमरमां]

बाल्हेसर *ऐतिका.* वालेसर, प्यारा [सं. वल्लभ+ईश्वर]; जुओ वाल्हेसर

बावन *अखाछ.* बावन मूळाक्षरनी शब्दलीला [सं.रापंचाशत्]

बावनचंदन, बावनउ चंदन *उक्ति. प्राचीफा. लावल. विमप्र.* एक प्रकारनुं चंदन (क. बावन+सं.चंदन)

बावन बाहेरो *अखाका.* बावन अक्षरोनी बनेली वाणीथी पर

बावनवीर *प्राचीफा.* पराक्रमी; *चतुर; [समर्थ]

बावना चंदन, बावनां चंदन *प्रेमाका.* सुखड; *अखेगी. मदमो.* ऊंची जातनुं चंदन

बावनां *आरारा.* एक जातनुं सुखड, [चंदन]

बावन्नचंदन *लावल.* बावनाचंदन, एक प्रकारनुं चंदन [क.बावन+सं.चंदन

बावन्ना सिरखंड *स्थूलिफा.* उत्तम प्रकारनुं चंदन [क.बावना+सं.श्रीखंड]

बावला *आरारा.* व्याकुळ, बहावरा

बासठि *उक्ति.* बासठ (सं.द्विषष्टि)

बासत्था *विमप्र.* बास्ता नामनुं [मुलायम वणाटनुं सफेद] कापड [फा.बाफ्तह्]

बासथे *प्रेमप.* वासथी

बाह *अभिऊ.* बांय; (लक्ष्यार्थे) चूडी; *आरारा. गुर्जरा. देवरा. लावल.* बाहु, हाथ, बावडुं

बाह *प्राचीसं.* बाष्प, [आंसु]

***बाह (बाहु) [वांहु]** **गुर्जरा.* [घोडो] [सं. वाह]

बाहर *जिनरा.* सहाय, [वहार]; जुओ बूंब

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न बाहिर, वाहर

बाहरि *गुर्जरा. देवरा. नलाख्या.* बहार (सं. बहिर्)

बाहरी *प्रेमाका.* बहार

बाहाज्य *चित्तसं.* बाह्य

बाहिर, बाहिरि *आनंस्त. तेरका. षडाबा.* बहार (सं.बहिः)

बाहिरल्युं *उक्तिर.* बहारनुं [सं.बहिर् परथी]

बाहिरि *उक्तिर. उपबा.* बहार (सं.बहिर्)

बाहिरंग *आनंस्त.* बहिरंग

बाही *वाग्भबा.* बाधित, [रोकायेल, ग्रस्त, नियंत्रण पामेल]

बाहु जुओ बाह

बाहुड- *वीसरा.* पाछा फरवुं (सं.*व्याघुटति) [रा.; सं.व्यावृत्त; दे.वाहुड]

बाहुंडली *लावल.* बांह्य, [हाथ]

बाहेर *अखाका. प्रेमाका.* बहार

बाहोडी *नरका.* बाहु, हाथ

बाह्यरुं *अखाका.* *बहारनुं, [बाह्यपणुं, परायापणुं, अळगापणुं]

बांई *नरप(द).* [बांय], हाथ

***बांकउ (फाडइ) [बांकउ फाटइ]** **नेमिछं.* [वांको फाटे, आडो फाटे, ना पाडे]

बांगड **नेमिछं. विमप्र.* तोछडुं; *लावल.* वक्र, कटाक्षयुक्त, [तोछडुं]; जुओ बागड, वांगड

बांझडी *जिनरा.* वांझणी [सं.वंध्या]

बांझणि *जिनरा.* वांझणी

बांठ *चंद्रवा.* चतुर ?, [चतुराईनी, कपटनी] [दि.वंठ]; *मदमो.* वरवी ?, [ठगाईभरी, जूठी]; जुओ बाठ

बांदि *षष्टिप्र.* केदमां [फा.बंद]

बांदी *वीसरा.* दासी

बांधइ *वाग्भबा.* रचना करे, [योजे, वर्णवे]

बांधण [बंधण] *उपबा.* बंधन

बांधणी *उपबा.* गूंथणी, [रचना]; [बंधन, नियम]

बांधी *प्रेमाका.* बद्ध थई, सिद्ध थई

बांधीतुं *वाग्भबा.* बंधातुं, रोकातुं

बांधी पवन *प्रेमाका.* प्राणायाम करी, [श्वास रूंधी]

बांधीवउ *उक्तिर.* बांधवो

बांध्योरूंध्यो *अखाछ.* आखो, समग्र, [हस्तगत अने आत्मवश]

बांनणउं *षडबा.* वंदवुं ते, वांदणुं (सं.वंदन)

बांभण *आरारा. उक्तिर. वीसरा.* ब्राह्मण

बांभणायतुं *उक्तिर.* ब्राह्मणने आपी दीधेलुं [सं.ब्राह्मणायत्त]

बांभणी *उक्तिर.* ब्राह्मणी

बांह *अभिऊ. आरारा. उपबा. मदमो. लावल. वीसरा.* बाहु, बांह्य, हाथ

बांहड *लावल.* सहाय

बांहडियाइं, बांहडीआइं *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि.* बाहुओ उपर

बांहबलि *ऐतिरा.* बाहुना बळथी

बांह ग्रहावी *नरका.* बांय पकडवी, मदद करवी

बांहि *सिंहा(शा).* बावडुं (प्रा.बाहा)

बांहे *नरका.* सहाये, मददथी

बांहेधर *प्रेमाका.* जामीन, बांहेधरी आपनार

बांहोडी *प्रेमप. प्रेमाका.* बांय, बावडुं, हाथ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बि *आनंत. आरारा. उक्तिर. उपबा. उषाह. गुर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वसंवि. वाग्भबा. विक्ररा. षडाबा.* बे (सं.द्वे)

बिइसइ *कादं(ध्रु).* *लावल.* बेसे (सं.उपविशति)

बिउणउं *उक्तिर.* बमणुं (सं.द्विगुणम्)

बिगुणउं *षडाबा.* बमणुं (सं.द्वे+गुण)

बिचार, बिच्यार, बिच्यारि *आरारा. लावल. वंसंफा. वसंवि(ब्रा).* बेचार (सं.द्विचत्वारि)

बिजोरउ *वीसरा.* बिजोरुं (सं.बीजपुर)

बिजोरडी *वीसरा.* बिजोरानां फळ

बिठी मूंठि *लावल.* *बेठी मूठीए, *मूठी वाळीवाळीने, *उश्केराईने

बिठु *कादं(शा).* *नलाख्या.* बेठो (सं.उपविष्टकः)

बिडोत्तर सउ *उक्तिर.* *षडाबा.* एकसो बे (सं.द्वि+उत्तर+शत)

बिदूं *नलाख्या.* बहेडानुं झाड (सं.बिभीतकम्)

बिणी (बिमणी) *कादं(शा.)* बमणी [सं.द्विगुणी]

बि-ति *जिनरा.* बेत्रण

बिनास *हम्मीप्र.* बनास नदी

बिन्हइ *रूपच. शीलक.* बन्ने

बिन्हें जुओ विन्हें

बिपहुर *शृंगामं.* बे पहोर [सं.द्विप्रहर]

बिपुहुर *आरारा. रूपच.* बपोर

बिमणउं *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. वाग्भबा.* बमणुं (सं.द्विगुण)

बिमणी जुओ बिणी

बियासी *षडाबा.* ब्यासी (सं.द्वयशीतिः)

बिरखि *अभिऊ.* बेरखामां [सं.बाहुरक्ष]

बिरद *अखाका. *अखाछ. *अखेगी. नरका. *प्रेमाका. हरिख्या.* बिरुद, प्रतिष्ठा, ख्याति, [नाम, आबरू, महत्ता]

बिर्द *अखाका.* बिरुद, पद [सं.विरुद]

बिल *आरारा. प्रेमाका.* दर (सं.)

बिलं बिल्ला *प्राचीसं. ?*

बिवहर *सिंहा(म).* बपोर [सं.द्विप्रहर]

बिवुहर *ललिरा.* बे पहोर

बिशइ *कादं(शा). नलाख्या.* बेसे (सं. उपविशति)

बिश-माल *कादं(शा).* कमळनां तंतुओनी माला (सं.बिस-माला)

बिशलय *शृंगामं.* कमळनो छोड (सं. बिसलता)

बिसइ *नलाख्या. लावल.* बेसे [सं.उपविशति]

बिसरा त्रसरा *विमप्र.* बे हार[सेर]ना त्रण हार[सेर]ना

बिहइ *उपबा.* बेय

बिहत्तरि *उक्तिर.* बोंतेर (सं.द्विसप्ततिः)

बिहनेवी *रूपच.* बनेवी [सं.भगिनीपति]

बिहं गमा जुओ बिहु गमा

बिहाव्या *प्रेमाका.* डराव्या [सं.बिभी-]

बिहि, बिहु, बिहुं *वाग्भबा.* बेय [सं.द्विखलु]

बिहिडु *नलाख्या.* बहेडानुं झाड (सं. बिभीतकम्)

बिहितु *नलाख्या.* बीतो (सं.बिभीते)

बिहिन *नलाख्या.* बहेन (सं.भगिनी)

बिहिनी *प्रबोप्र.* बहेन (सं.भगिनी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिहिरखा *अभिऊ.* [बेरखां], कांडा उपर पहेरवानां आभूषण [सं.बाहुरक्षकाः]

बिहु, बिहुं *अभिऊ. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वीसरा.* बे, बेउ (सं.द्वे+खलु); जुओ बिहि

बिहु गमां, बिहं गमां *उक्तिर. कादं(शा).* बेउ बाजु

बिहु परि, बिहुं परि *उक्तिर.* बन्ने रीते

बिहुं *नेमिछं.* बीजुं (सं.द्वे+खलु); जुओ बिहि, बिहु

बिहू, बिहूं *लावल.* बंने

बिंद *अखाका. नलरा.* बिंदु, टीपुं

बिंदुने नाद [बिंदु ने नाद] *अखाका.* *नादबिंदु (=नादब्रह्मनुं अनुसंधान करवानुं बिंदु) वडे, [नाद अने बिंदु वडे, योगसाधना वडे]; जुओ नादबिंदु

बिंब *आरारा(व).* टींडोरानो वेलो (सं.बिंबी); *तेरका. प्रेमाका.* पाकुं टींडोरुं (सं.)

बिंब *तेरका.* प्रतिमा (सं.)

बीउ *आरारा(व).* बीयो, असन के विजयसार वृक्ष (सं.बीजक); जुओ बीजू

बीकाण *ऐतिका.* बीकानेर

बीछाई *देवरा.* बिछावी, (सं.वि+छादय्)

बीज *अखाका.* बीजनी तिथि; [श्लेषथी] जुदापणुं, [द्वैतभावना] [सं.द्वितीया]

बीज *जिनरा.* वीजळी [सं.विद्युत्]

बीजउरा *षडाबा.* बिजोरां (सं.बीजपूरक-)

बीजपूरादि *आनंस्त.* बिजोरुं वगेरे

बीजल *प्राचीफा.* वीजळी (सं.विद्युत् परथी)

बीजाबोल *उक्तिर.* [*बीजबल के बलबीज, एक करियाणुं] (*सं.बीजक बोल)

बीजू *आरारा(व).* बीयो, असन के विजयसार वृक्ष (सं.बीजक); जुओ बीउ

बीजेरां *कृष्णच.* अन्यतर, बीजां [सं. द्वितीयतर]

बीजोर, बीजोरउ, बीजोरी *आरारा(व). उक्तिर.* बिजोरुं (सं.बीजपूरक)

बीझउं *गुर्जरा.* बीउं, भय पामुं (सं.*बिभ्यामि)

बीझ्या *ऐतिका.* वींझ्या, हवा नाखी

बीट *पंचवा.* बेट, द्वीप

बीडली *शीलक.* बीडुं, पाननुं बीडुं

बीडी *चतुचा. नरप(द).* पाननुं बीडुं

बीडुं *विमप्र.* पानबीडुं [सं.वीटिः]

बीडो (बीडो लियो) *जिनरा.* [बीडुं स्वीकार्युं], जवाबदारी लीधी

बीड्यां पान ज गळवां *अखाका.* चाव्या विना पान खावुं, [आखो बीडो गळी जवो]; जुओ पाननो बीडलो गळवो

बीड्लाई *पंचवा.* बिलाडी (सं.बिडालिका)

बीधा *प्रेमाका.* डर्या, भय पाम्या

बीन्या *प्रेमाका.* डर्या

बीबां *चित्तसं.* आकृति ढाळवानां चोकठां [*सं.बिम्ब]

बीय *आरारा.* बीजी (सं.द्वितीय)

बीय-चंद *शृंगामं.* बीजनो चंद्र

बील *उक्तिर.* बीलीनुं झाड (सं.बिल्वः)

बीह *उक्तिर. तेरका.* बीक (सं.भिष् परथी)

बीहइ *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. प्रबोप्र. विराप. शृंगामं. षडाबा.* बीए (सं.बिभेति)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीहकण *उपबा.* बीकण

बीहाने *अखाछ.* बीधेलाने

बीहावइ *उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या.* बिवडावे (सं.बिभीते परथी)

बीहिवा *उक्तिर.* बीवा

बीहीजीसइ *शृंगामं.* बीशे

बीहीवी *प्रेमाका.* बिवडावेली, डरावेली

बींट *ऋषिरा.* फूलनां दींट, [डांखळां] [सं. वृन्त]; जुओ वींट

बींटानी *ऐतिका.* वींटळाई गयुं [सं.वेष्ट्]

बुक्क, बूक *ऐतिका. प्राचीसं.* वाद्यविशेष; जुओ ढक्कबुक्क, बूक, वुक्क

बुगचइ *जिनरा.* कपडानुं पोटलुं [रा.]

बुज्झ *षडाबा.* जाण, जागृत था (सं.बुध्य-)

बुझइ *उक्तिर. चतुचा. देवरा. शीलक.* समजे, बोध पामे (सं.बुध्यते)

बुदबुदा *चित्तसं.* परपोटा [सं.बुद्बुद]

बुद्धिमान *नलाख्या.* बुद्धिनुं माप (सं.)

बुद्धियाल *आरारा.* बुद्धिवान

बुद्धे *प्रेमाका.* बुद्धिए

बुध *प्रेमाका.* बुद्धि

बुधने मान *प्रेमाका.* बुद्धिने मापे, बुद्धि प्रमाणे

बुधि *आरारा. नलाख्या. नेमिछं.* बुद्धि, विचार

बुधिडी *लावल.* बुद्धि

बुध्य *अखाका. अखेगी.* बुद्धि

बुध्यवणठो जुओ वणठो

बुलसिरी *आरारा(व).* बोरसली (सं. बकुलश्री); जुओ वुलसरी

बुला- *वीसरा.* बोलाववुं [सं.ब्रू परथी]

बुल्लइ *गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* बोले (सं.ब्रू, प्रा.बोल्ल) [दे.बोल्ल]

बुल्लंति *ऐतिका.* बोले छे

बुल्लावइ *गुर्जरा.* बोलावे

बुसटियो *प्रेमाका.* सीमंतनी विधि वखते सीमंतिनीना गाले कंकुवाळा हाथ मारनार

बुहारइ *आरारा. उक्तिर. उषाह. पंचवा. प्राचीसं. प्रेमाका. वीसरा.* वाळे, साफ करे [दि.बोहारी परथी]; जुओ बहुरा, *वुहारी

बुहि, बुहे *नलाख्या.* बेउथी (सं.द्वे+खलु)

बुंगण *उषाह.* अनाज बांधवा माटेनो मोटो चोफाळ

बुंब *उषाह. गुर्जरा. नलाख्या. प्रेमाका. मदमो.* बूम, पोकार, बुंबारव, शोरबकोर (दे.बुंबा)

बुंब *सिंहा(शा).* बंब, पोली चीज ?, [मोटुं, भारे]

बुंबाण *दशस्कं(२). प्रेमाका.* बुमराण

बुंबारव *कादं(शा). कृष्णच. प्राचीसं.* बुमराण, पोकार (दे.बुंबा+सं.रव)

बुंहतेरा *विमप्र.* बहु, घणुं [सं.बहुतर]

बूअ *आरारा(व).* मोगरानी एक जात (सं. बूक) ?

बूक *गुर्जरा.* एक वाद्य (दे.बुक्का); जुओ बुक्क

बूकी *नरका.* नानो फाकडो – बूकडो

बूचा *प्रेमाकी.* बेठेला के कपाई गयेला

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाकवाळा; टूंका कानवाळा

बूजर *नलरा.* एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

बूझ *अखाका. अखेगी.* ओळख, समज

बूझइ *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं. विराप.* जाणे, समजे, ज्ञान पामे (सं.बुध्यति)

बूझवइ *अभिऊ. ऋषिरा. चारफा. षडाबा. *स्थूलिफा.* समजावे, ज्ञान करावे जागृत करे (सं.बुध्य् परथी)

बूठा *ऐतिका. जिनरा.* वरस्या; जुओ वूठइ

बूडण *प्रद्युचु.* बूडवुं ते [दे.बुड्ड-]

बूढ *अंबरा.* *मूर्ख, [*वही जाय छे, *लई जाय छे]; जुओ वूढुं

बूधुं *प्रेमाका.* दंडो

बूसट *उषाह. विक्रच.* तमाचो

बूही *जिनरा.* चाली [रा.]

बूंब *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या.* बूम (दे.बुंबा)

बूंब न बाहिर *जिनरा.* न पोकार, न सहायता; जुओ बाहर

बूंबारव *विक्ररा.* बूमराण [दे.बुंबा+सं.रव]

बृहन्नडा *गुर्जरा.* विराटने त्यां गुप्त वेशे रहेला अर्जुननुं नाम (सं.बृहन्नला)

बृहन्नला *प्रेमाका.* व्यंडळ, पावैयो, विराटराजाने त्यां अर्जुने लीधेलो वेश

बेइसणां *शीलक.* आसनो

बेउल *वसंवि.* विचकिल, एक पुष्पवृक्ष; जुओ वेउल

बेक *दशस्कं(१).* जराक, थोडुंक

बेकाम *आरारा.* निरर्थक

बेखास (वेखास) *जिनरा.* विचार; [प्रयत्न]; जुओ वेखास

बेट *कादं(ध्रु). *कादं(शा).* नानुं

बेडली *जिनरा.* नौका

बेडी, बेडुलडी *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं.* नौका (सं.बेडा)

बेडी *आरारा(व). ?*

बेडीवाहा *गुर्जरा.* नाविक (दे.बेडा+सं.वाहक)

बेडुलडी जुओ बेडी

बेडो *कामा(त्रि). कामा(शा).* होडी, वहाण

बेबाकुळी *प्रेमाका.* बेबाकळी [सं.भय व्याकुल]

बेमना *अखाछ.* *द्विधा, *संकल्पविकल्प, [*उदासी]

बेर * *चंद्रवा.* [नाव] [हिं.बेरी]

बेरडो *दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. *रूस्तस.* अनाडी, उद्धत, हठीलो

बेरखा *नरका. प्रेमाका.* बावडानुं आभूषण [सं.बाहुरक्षकाः]

बेल *उषाह. दशस्कं(१). प्रेमाका.* जोडी, बेलडी [सं.द्वे परथी]

बेल *उक्तिर.* [*मोगरो] [हिं.बेला]; [*बीली] [सं.बिल्व]; [*वावडिंग] [सं.वेल्लक]

बेलइ *आरारा.* जोड, समान

बेल बेल * *नरका.* [वेळाएवेळाए, वारेवारे] [हिं.बेरबेर]

बेला *देवरा.* बे उपवासनुं व्रत

बेलाउल *आरारा.* बिलावल (राग)

बेलाडु *ऐतिका.* बिलाडा गाम

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बेलि *आरारा.* मददगार
बेलि *कादं(शा).* बेलडी, बेनो समूह (सं.द्वै)
बेवि *आरारा. ऐतिका.* बन्ने (सं.द्वे+अपि)
बेवे *जिनरा.* बन्ने
बेश *कादं(शा).* उत्तम, सुंदर [फा.]
बेसण *प्रेमाका.* बेसवाने माटे
बेह *नलाख्या. प्रेमाका.* बेउ (सं.द्वे+खलु)
बेहडउं *आरारा.* बेडुं
बेहनर *दशस्कं(१).* बहेनडी [सं.भगिनी]
बेहि *नलाख्या.* बेउ (सं.द्वे+खलु)
बेह, बेहु, बेहू *आनंस्त. गुर्जरा. नरप(द). नलाख्या. नेमिछं.* बन्ने (सं.द्वे+खलु)
बेहेक *मदमो.* बहेकतुं, सुगंधी
बेंदी *आनंस्त.* स्पर्श अने रसना ए बे इंद्रियवाळा
बेंद्रिय *उपबा.* बे इंद्रियवाळा जीव
बैताल जुओ वैताल
बैसाणी *जिनरा.* बेसाडी
बोक *अखाछ.* [बोख], [पाणी काढवानी चामडा के शणियानी] डोल, [कोस]
बोकड *गुर्जरा.* बोकडो (दे.बोक्कड)
बोडलां *प्रेमाका.* बोडां, वाळ वगरनां
बोध *आरारा.* ज्ञान [सं.]
बोध *कादं(शा).* बौद्ध धर्मना संस्थापक बुद्ध, [बौद्ध संप्रदाय] (सं.बुद्ध)
बोधि *आरारा.* शुद्ध धर्मप्रकाशनी आध्यात्मिक स्थिति, [आत्मज्ञान, सम्यग्दर्शन] (सं.)
बोधि बीज *आरारा.* शुद्ध धर्मप्रकाशनुं बीजरूप तत्त्व, सम्यक्त्व [जै.]
बोधिलाभ *गुर्जरा.* ज्ञानप्राप्ति (सं.)
बोधीउ *गुर्जरा.* उपदेश आप्यो, [समजाव्यो] (सं.बोधित)
बोमांनी *कस्तुवा.* बहुमानी, [आदरणीयता]
बोर *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात
बोरफूल *दशस्कं(१).* एक घरेणुं
बोरि *उक्तिर.* बोरडी (सं.बदरी)
बोरियावडि *तेरका. प्राचीफा.* बोरनी भातनुं [बूटीनी भातनुं] एक कीमती वस्त्र (सं.बदरिका+पटी?)
बोल *उपबा.* बाबतो (दे.बोल्ल)
बोलइ *गुर्जरा. विराप.* बोळे, डुबाडे, [कलंक लगाडे; नाश करे] [दे.]
बोलणहार *उक्तिर.* बोलनार
बोलण *लावल.* बोल, वचन, [बोलवुं ते, वाणी] [सं.ब्रू, प्रा.बोल्ल]
बोलबंध *आरारा. प्रेमाका.* वचनथी बंधावुं ते, कोलकरार, [प्रतिज्ञा]
बोलिवउं *उक्तिर.* बोलवुं
बोलीतउं *उक्तिर.* बोलातुं
बोवो *अखाका.* पेटाववो
बोहइ *ऐतिका. प्राचीफा. स्थूलिफा.* बोध करे
बोहयंतो *ऐतिका.* बोध देता [सं.बहुल]
बोहो *मदमो.* बहु
बोहोर *अखाका.* फरीथी, [पाछुं] [हिं. बहोर]
बोहोला *चित्तसं.* [बहोळा], अनेक जातना
बोहोलांशी *प्राचीका.* *बडाश
बोंकार *नलरा.* गर्जना (रवानुकारी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्य *प्राचीका.* बे (सं.द्वि)

ब्यहु परि जुओ व्यहु परि

ब्यासणउ *उक्ति.* बेसणुं (सं.द्व्यासनकम्); जुओ व्यासणउ

ब्रखारते *मदमो.* वर्षाऋतुए; जुओ ब्रखारत

ब्रच्छ *चित्तसं.* वृक्ष

ब्रह्मपुरी *हरिख्या.* ब्राह्मणोने वासमां आपेलो भर्या घरनो समूह [सं.]

ब्रह्मस्व *प्रेमाका.* ब्राह्मणोनी मालमिलकत [सं.]

ब्रह्माउध *स्थूलिफा.* ब्रह्मचर्यरूपी आयुध

ब्रह्माणी *मोसाच.* ब्रह्मानी पुत्री, सरस्वती

ब्रह्मांड *दशस्कं(१).* ब्रह्मरंध्र, ताळवानुं मर्मस्थान

ब्हो *ऐतिका.* बहु, खूब

भइ *गुर्जरा. लावल.* भय, डर

भइरव *प्राचीफा. वीसरा.* एक कीमती वस्त्र (सं.भैरव)

भइरव *उक्ति.* शंकर (सं.भैरवः)

भइरव *उक्ति.* चीबरी (सं.भैरवी); जुओ भैरव

भइरवी *ऐतिका.* भैरवी, [*देवी, *पार्वती]

भइरवी *आरारा.* भैरवी, चीबरी

भइसाइत *नलरा.* भेंसो राखनार (सं.महिष परथी)

भइसि *उक्ति.* भेंस (सं.महिषी)

भइसु *ऋषिरा.* पाडो [सं.महिषः]

भइं *प्रबोप्र.* भयथी

भइंस, भइंसि *गुर्जरा. नेमिछं. विराप. वीसरा. षडाबा.* भेंस (सं.महिषी)

भई *ऋषिरा. नंदब.* थई [सं.भू-]

भउजाइ, भउजाई *उक्ति. लावल.* भोजाई, भाभी (सं.भ्रातृजाया)

भउंभू- *वीसरा.* *व्याकुळ थवुं, [रुदन करवुं] [दे.भंब्भभूय परथी]

भए *ऋषिरा.* थया [सं.भू-]

भक्त *आरारा.* सज्ञ, धरावनार (सं.)

भक्ष *आरारा. गुर्जरा.* भक्ष्य, खाद्य; *दशस्कं(१).* भक्षण

भक्षि *नलाख्या.* भक्ष्य, खोराकरूप

भखइ *आनंस्त. आरारा. उक्ति. चंद्रवा. चित्तसं. वीसरा. षडाबा.* खाय (सं. भक्षयति); *चित्तसं.* भोग करे, पामे

भखर(?) *विमप्र.* *सूको पहाड, [*पहाड] [रा.भक्खर]

भखळ *प्रेमाका.* भ्रष्ट, [अपवित्र]

भखली *उषाह.* *भयंकर, *सख्त, [*अपवित्र, *छूटा मोंनी]

भख्य *चित्तसं.* भक्ष

भग *हरिख्या.* छिद्र (सं.); *चित्तसं.* स्त्रीयोनि

भगतइ *ऋषिरा.* भक्तिथी

भगतडी *शृंगामं.* भक्ति, सेवा

भगतवछल *दशस्कं(१).* भक्तवत्सल

भगताविउं *आरारा. गुर्जरा.* खवडाव्युं (सं. *भुक्तापयति)

भगति *आरारा. गुर्जरा.* भक्ति, सेवा; *नेमिछं. लावल.* भक्ति

भगति-युगति *आरारा.* भक्ति/आदरपूर्वक

भगत्य *मदमो.* भक्ति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगनी *आरारा.* भगिनी, बहेन

भगळ *अखाछ.* *भोपाळां, [दंभ, कपट]

भगळविद्या *अखाका.* दंभ, ठगाइ, [कपट-विद्या]

भगवी *पंचवा.* भगवती, देवी, [विधात्री]

भगंन *प्रेमाका.* भग्न, भांगेला

भगां जुओ कृष्ण-भगां

भग्ग *विमप्र.* [स्त्री]योनि, [सं.भग]

भग्गय *तेरका.* भाग्युं, [नासी गयुं] (सं. भग्न+क)

भग्गडउ *प्राचीसं.* नासी गयेलो (सं.भग्नः)

भचरडायां *प्रेमाका.* कचडायां, दबायां

भजइ **नलाख्या.* आश्रय करे; *चित्तसं.* आश्रय ले, स्वीकारे, पामे, धरे; *आनंस्त.* पामे; *प्रेमाका. हरिख्या.* धारण करे; *प्रेमाका.* *झंखे, [भक्ति करे, आदर बतावे] [सं.भजते]

भजइ *ऋषिरा. प्रेमाका.* शोभे (सं.भ्राज्)

भजना *आनंस्त.* अंश, [विभाग], विकल्प [सं.]

भज्जा *ऐतिका.* भार्या, पत्नी

भज्जीइ *शृंगामं.* भांगी जाय [सं.भज् परथी]

भज्य *चित्तसं.* [भज], स्वीकार, आश्रय ले

भट *अखाछ.* कथा कहेनार

भटके *प्रेमाका.* भटकाय, अथडाय

भटित *नेमिछं.* उत्साहप्रेरक [वचनो], [भट-वाद, प्रशस्ति] (सं.)

भट्ट *ऐतिरा. गुर्जरा. प्राचीफा. विक्ररा. षष्टिप्र.* भाट, स्तुतिपाठक (सं.)

भठ *मदमो.* धिक्

भठ्ये (भठ्ये पाडे) **अखाछ.* [तिरस्कारे]

भड *कामा(त्रि). गुर्जरा. चंद्रवा. तेरका. हरिख्या.* सुभट, योद्धो, समर्थ पुरुष (सं.भट)

भडइ *अखाका. गुर्जरा. लावल. विराप.* झूझे, लडे, मुकाबलो करे; *आरारा.* **प्रेमाका.* सामे आवे, [लागु थाय, जोडाय]

भडिय *गुर्जरा.* उखेडी (सं.*भ्रष्टिता)

भडत्थ *गुर्जरा.* भडथुं (*सं.भृष्ट) [सं.भटित्र]

भडवाउ, भडवाय *कर्पूमं. प्राचीफा. हम्मीप्र.* भटवाद, पराक्रमनी ख्याति

भडवाउ, भडवाय *ऐतिरा.* **प्रद्युचु.* **विक्रच. विमप्र.* **हम्मीप्र.* [सुकीर्तित पराक्रमी, वीर], बहादुर योद्धा (सं.भटवाद परथी); जुओ भडिवाउ

भडहडइ *उक्तिर.* भडभडे

भडावली *विराप.* भडपणुं, शूरातन

भडांबली **गुर्जरा.* [शूरातन]

भडिथ *उक्तिर.* भडथुं (सं.भटित्रम्)

भडिवाउ **गुर्जरा.* [सुकीर्तित वीर पुरुष] (सं.भट+वाद); जुओ भडवाउ

भणइ *अखाका. आरारा. ऐतिरा. उक्तिर. उपबा. कादं(शा). गुर्जरा. चंद्रवा. तेरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रबोप्र. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. षष्टिप्र.* कहे, बोले, वर्णवे (सं.भणति)

भणणहार *आनंस्त.* भणनार

भणतला *विमप्र.* बोलता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणि, भणी *आरारा. उक्तिर. कादं(ध्रु). *कादं(शा). चारफा. जिनरा. देवरा. नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. षष्टिप्र. सिंहा(म). हरिख्या.* प्रति, -ने; -ने अनुलक्षीने, माटे; तरफ; लीधे, -थी; [गणीने, जाणीने], -ने बदले, -ने स्थाने, तरीके; जुओ ते भणी, तेह भणी, सापु भणी

भणिवुं *उक्तिर.* भणवुं; कहेवुं (सं.भणते)

भणीनि *कृष्णबा.* गणीने, मानीने

भण्डारउ *ऐतिका.* भंडार

भतार, भत्तारो, भत्तार *गुर्जरा. तेरका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विरापु.* भरथार, पति (सं.भर्ता)

भत्ति *आरारा. कर्पूमं. नेमिछं. प्राचीफा.* भक्ति, आदर

भत्तिवंतु *ऐतिका.* भक्तिवन्त

भत्य *प्राचीका.* भक्ति

भथायितु *उक्तिर.* भाथाधारी (सं.भस्त्रा परथी)

भद्र *दशस्कं(१). प्रेमाका.* भद्र जातिनो हाथी

भद्रक *आरारा.* भलो, भोळो [सं.]

भद्रा *वीसरा.* अशुभ काळयोग (सं.)

भद्रु **गुर्जरा.* [?] (सं.भद्र)

भद्रे *आरारा.* भली बाई (संबोधन)

भधर *रूस्तस.* भदर, [भद्र, मोटा कोटनी अंदरनो नानो कोट]

भमड- *प्राचीसं.* भमवुं, आथडवुं [सं.भ्रम्]

भमण *तेरका.* भ्रमण

भमण *प्राचीफा.* भवन, मन्दिर

भमती *उक्तिर. उषाह.* मंदिरमां चक्राकारे फरवानो मार्ग (सं.भ्रम् परथी)

भमर *प्रेमाका.* [भमरी], स्त्रीओनुं सेंथामां, [माथामां, अंबोडामां] खोसवानुं एक घरेणुं; *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* भमरो (सं.भ्रमर)

भमरडउ *गुर्जरा. प्राचीसं. विरापु.* भमरो (सं.भ्रमर); *उक्तिर.* जलावर्त, पाणीनो खाडो (सं.भ्रमरकः)

भमरला *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* भमरो (सं.भ्रमर+ला)

भमरी **प्रेमाका.* [गाडानो एक भाग]; *नरका.* फुदरडी; *नलरा.* स्त्रीओनुं एक घरेणुं (सं.भ्रमरी)

भमलि *उक्तिर.* चक्कर आववाना रोगवाळो, बेहोशीना रोगवाळो (सं.भ्रमलः)

भमह *ऐतिरा.* भ्रमर, [भवुं] [सं.भ्रूमुख]

भमहडी, भुमहिय, भुंयडियह, भूमहीय *प्राचीफा. हरिवि.* भ्रू, भम्मर, [भवां] (सं.भ्रूमुख)

भमहि, भमही *अभिऊ. अंबरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाग्भबा* भम्मर, भवुं

भमहि-भंगइं *लावल.* भ्रूभंग वडे, भम्मरना वळांक वडे

भमही जुओ भमहि

भमंडल *पंचवा.* आखी पृथ्वी (सं.भूमण्डल)

भमाडइ *ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. विरापु.* भमावे, फेरवे, घुमावे, रखडावे (सं.भ्रम् परथी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भमाया *लावल.* भमाव्या, [घुमाव्या]

भमि *कादं(शा).* भवां (सं.भ्रू) [सं.भ्रूमुख]

भमिऊण *ऐतिका.* भमीने, फरीने

भमुह *प्राचीफा.* भम्मर, [भवुं]; [सं.भ्रूमुख]

भमुहि, भमुहिं *अभिऊ. ऋषिरा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* भवां [सं.भ्रूमुख]

भयडि *प्राचीफा.* भमर, भवुं (सं.भृकुटि)

भयणा *जिनरा.* भजना, [विकल्प, होवुं या न होवुं ते] [जै.]

भयणि *गुर्जरा. प्राचीसं.* भगिनी, बहेन

भयं *नेमिछं.* वीत्युं, थयुं (सं.भूत)

भयु *अभिऊ.* थयो (सं.भूत)

भर *आरारा. गुर्जरा. तेरका. वसंवि(ब्रा).* भार, जथ्थो, पूर्णता, प्रचुरता, अतिशय (सं.); *अखाका.* पूर्णता; *उपबा. तेरका.* भरेलुं, [पूरेपूरुं]

भरड, भरडक, भरडू, भरडो *अभिऊ. *उषाह. प्रद्युचु. मदमो. विमप्र.* शिवनो पुजारी, हलको ब्राह्मण; ब्राह्मण

भरणी *ऋषिरा.* भरणी नक्षत्र (सं.)

भरणी *उक्तिर.* बरणी, भरवानुं पात्र (सं. भरणिका)

भरध *आरारा.* भरतक्षेत्र; *प्राचीसं.* भरत चक्रवर्ती

भरधेश्वर *प्राचीफा.* भरत चक्रवर्ती, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथना पुत्र (सं.भरतेश्वर)

भरधेसर *प्राचीसं.* भरतेश्वर

भरपूर *चित्तसं.* बधे भरेलो, व्याप्त

भरम-धी *अखाका.* भ्रमित बुद्धिवाळो, [अज्ञान-बुद्धिवाळो]

भरमे *चित्तसं.* भरमाय [सं.भ्रम्]

भरह *गुर्जरा. प्राचीफा.* नाट्य-नृत्य-संगीत आदि (सं.भरत)

भरहखंड *गुर्जरा.* भरतखंड

भरहभावि *प्रद्युचु.* भरतनाट्यना भाव अनुसार

भरह-भुंगल *लावल.* एक जातनी भूंगळ

भरहभेद *विमप्र.* भरतना नाट्यशास्त्रमां आपेला [नाट्य-]नृत्यना प्रकार

भरहरी *उषाह. गुर्जरा. विराप.* भरभर अवाज कर्यो

भरहेसर *प्राचीसं.* भरतेश्वर

भराई *आरारा.* भरावुं ते [सं.भृ-]

भरि (नीर भरि) *नलाख्या.* [नीर]भेर, [नीर]मात्रथी

भरियउ (भरियउ मास) *आरारा.* (महिना) रह्या, [गर्भ रह्यो] [सं.भरित]

भरिवुं *उक्तिर.* भरवुं

भरुअच्छ *उक्तिर.* भरूच (सं.भृगुकच्छ)

भरुआडि *अभिऊ.* [भाराडी], माथाभारे

भरुयछ *प्राचीसं.* भरूच (सं.भृगुकच्छ)

भरूअच *वेताप.* भरूच

भरूआडी *प्राचीफा.* भरवाडी, भरवाडनी स्त्री, गोपी

भरूंसे *चित्तसं.* विश्वासपूर्वक

भर्तु *प्रेमाका.* भर्तृ, भर्ता, पति

भर्म *आरारा. कादं(शा). नरका. नलाख्या. प्रेमाका.* भ्रम, भ्रांति, अज्ञान

भर्म-मेगळ *अखाका.* भ्रम[अज्ञान]रूपी हाथी; जुओ मेगल

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भल, भलु *अखाका. अखाछ. *उषाह. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* भलुं, सारुं, [श्रेष्ठ] (सं.भद्र)

भलउ *ऋषिरा. चित्तसं. लावल. सम्यचो.* भलो, सारो, उत्तम (सं.भद्र); *आरारा.* सारो, सुखी

भलके *ऐतिका.* चमके, [झळके]

भलको *अखाका. प्रेमाका. मदमो.* भालो

भलको वाग्यो भालडे *प्रेमाका.* *एकाएक गुस्सो आव्यो, [आघात लाग्यो]

भलखंड *गुर्जरा.* भालानो टुकडो (सं. भल्ल+खंड)

भलती भेलि *ललिरा.* परस्पर आखडती

भलपण *अखाछ. नरका.* भलाई, मोटाई [सारापणुं, श्रेष्ठता] [सं.भद्रत्वन्]

भल-भूली *अखाका.* *भली अने भान-भूलेली, *भली-भोळी, [पूरेपूरी भूलथाप खाधी]

भलहलीयो *ऐतिका.* चमक्यो, [झळक्यो]

भलाई *आरारा.* भळावी

भलि *प्राचीसं.* हठ, दुराग्रह [दे.]

भलु जुओ भल

भले *जिनरा.* [विद्यार्थीने आरंभमां शिखवाडातो शुभ] अक्षर, स्वरव्यंजन

भलेरउं *प्राचीसं.* सुन्दरतर, भलेरुं (सं. भद्रतर)

भल्ल *चित्तसं. दशस्कं(२). प्रेमाका.* भलुं, सारुं; *प्रेमाका.* सारी रीते [सं.भद्र]

भल्ली *गुर्जरा.* भालो, [बरछी] [सं.]

भल्ली *लावल.* उत्तम, श्रेष्ठ (सं.भद्रिका)

भव *गुर्जरा. तेरका. नरका-२. प्रेमाका. *लावल. वीसरा.* जन्मारो, अवतार (सं.); *चित्तसं. लावल.* संसार (सं.); *नरका. *प्रेमाका.* शंकर, महादेव (सं.)

भवण *तेरका.* भवन, देहेरासर

भवणि ट्ठिय (जिण भवणि ट्ठिय) *ऐतिका.* जिनभवनमां [जिनमंदिरमां] रहीने

भवदोहग *आनंस्त.* भवनां [संसारनां, जन्मारानां] दुर्भाग्य

भवविपाकी *आनंस्त.* जे कर्मनो विपाक [परिणाम] आ भवमां मळे ते

भवसउ *गुर्जरा.* जन्मशत, सेंकडो जन्मारा (सं.भव+शत)

भवंतर *तेरका. शृंगामं.* जन्मांतर, अन्य भव (सं.भवान्तर)

भवाडवुं *नरका. नरप. षष्टिप्र.* बनाववुं, बतावबुं, (शोभा) देखाडवी

भवि *तेरका. प्राचीका.* भव्य, मुक्तियोग्य जीव [जै.]

भवि *कादं(शा).* भवां (*सं.भ्रू) [सं.भ्रूमुख]

भविक *गुर्जरा. देवरा. नलरा. प्राचीका. लावल. षडाबा.* मोक्षने योग्य जीव (सं.) [जै.]

भविय *गुर्जरा. तेरका. नलरा.* भव्य, मोक्षने योग्य जीव (सं.भविक, भव्य)

भवियण *आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा.* मोक्षने योग्य जीव (सं.भव्यजन, भविकजन)

भवी *आनंस्त. आरारा.* भव्य, मुक्तिनी योग्यतावाळा जीव

भवीय *नलरा.* मोक्षने योग्य जीव (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविक)

भवीयण *शृंगामं.* भव्यजन, [मुक्तिनी योग्यतावाळा जीव]

भव्य **उपबा. देवरा. नलरा.* मोक्षने योग्य जीव (सं.)

भशंण *मदमो.* भसतो

भषइ *उक्तिर.* भसे (सं.भषति)

भस **विमप्र.* [*मोटुं, *विशाळ]

भसम *आरारा. उक्तिर. वीसरा.* भस्म, राख

भसलु *वसंफा. वसंवि.* भ्रमर, [भमरो] [दे.]

भस्मसूत *उक्तिर.* पारानी भस्म (सं. भस्मसूतकम्)

भंग *आरारा.* भेद, प्रकार, वर्ग (सं.); *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* प्रकार, रीत

भंगि *गुर्जरा. तेरका. लावल.* प्रकार, रीत, ढंग

भंगि *ऋषिरा.* भांग [सं.भंगा]

भंग्यांतर (भंग्यंतर) *आनंस्त.* बीजो प्रकार (सं.भंगी-अंतर)

भंजइ *गुर्जरा. नेमिछं. प्रबोप्र.* भांगे (सं.भंज्)

भंजणहार *शृंगामं.* भांगनार

भंजवाड *उक्तिर.* नुकसान, विनाश (सं. भंज्+पात)

भंज्जिउ जुओ भंग्यिउ

भंड *सिंहा(शा).* ?, [*भांड, *निर्लज्ज, *विदूषक]; *षडाबा.* [भांडभवायानी] कुचेष्टा (सं.)

भंडरूआं *उषाह.* भांडरां, [भाईभांडु] [सं.भांडरूप]

भंडसाल *प्राचीसं.* कोठार, भंडार (सं.भाण्ड-शाला)

भंडारउ जुओ भण्डारउ

भंडाली *प्राचीसं.* पात्रसमूह (सं.भाण्डावलि)

भंति *ऐतिरा.* भाते, [प्रकारे] [सं.भक्ति]

भंभर-भोलिया जुओ भुंभर-भोली

भंभरभोली, भंभलभोलिय, भामरभोली, भांभरभोलवी *प्राचीफा.* साव भोळी, मुग्ध (सं.विह्वल+*भ्रमुल्लक) [दे.भुंभुर-भोलिया]; जुओ भंमरभोलिय

भंभल **विमप्र.* [विह्वळ, मत्त]

भंभलभोलिय जुओ भंभरभोली

भंभली *विक्ररा.* विह्वल, हांफळीफांफळी

भंभी *ऐतिका.* वाद्यविशेष

भंभोला *प्रेमाका.* फोल्ला

भंमरभोलिय *गुर्जरा.* साव भोळी (सं.विह्वल+*भ्रमुल्लक); जुओ भंभरभोली

भंय्यिउ [भंज्जिउ] *प्रबोप्र.* भांगी गयो [सं.भंजति]

भाअग, भाग *कामा(त्रि).* भाग्य

भाइ *आरारा.* भावीने, विचारीने; भावे, गमे [सं.भावयति]

भाइगु *गुर्जरा.* भाग्य

भाउ *गुर्जरा.* भाई (सं.भ्रातृ)

भाउ-बीज *उक्तिर.* भाईबीज (सं.भ्रातृ-द्वितीया)

भाउलइ *आरारा.* भावथी

भाऊ *तेरका. प्राचीसं.* भाई (सं.भ्रातृ)

भाऊ *गुर्जरा.* भाव, लागणी

भाकसी *अखाका.* केदखानुं; जुओ भाखसी

भाक्ष *मदमो.* भाख, कहे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाख *आरारा. ऐतिरा. उषाह. गुर्जरा.* भाषा, वाणी, वचन

भाखइ *आरारा. उपबा. जिनरा. देवरा. नलाख्या. प्रेमाका. लावल.* भाखे, बोले, कहे (सं.भाषति)

भाखडी *नलरा.* वाणी (सं.भाषा)

भाखणा *आनंस्त.* कहेवुं ते, [कथन]

भाखाबंध *कादं(ध्रु).* पोतानी भाषामां उतारो

भाखसी *ऐतिका.* केदखानुं; जुओ भाकसी

भाख्या *मदमो.* भाषा

भाग *आरारा. ऋषिरा.* भाग्य; जुओ भाअग

भाग *चित्तसं.* अंश, भेद, प्रकार; जुओ भांगउ

भागइ *आनंस्त.* भांगे, विकल्पे, [प्रकारभेदे]

भागइ *नलाख्या.* भाग पडे, टुकडा थाय (सं.भग्न); भागे, दूर थाय

भागडउ *षडाबा. *लावल.* [निराश], विक्षुब्ध, भोळियो

भागळ *प्रेमाका.* भागोळ, पादर

भागलउ *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* भांग्यो, नाश पाम्यो, चाल्यो गयो (सं.भग्न+ल)

भागाथी *चित्तसं.* भाग्याथी

भागि *नलाख्या.* भाग्य, नसीब

भागी *आरारा.* भांगी (सं.भग्न); *चित्तसं.* भांगी, नष्ट थई

भाजइ *अखाछ. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. चंद्रवा. लावल. विराप. शृंगामं. षडाबा.* भागे, तूटी जाय, नष्ट थाय, दूर थाय; तोडे, नष्ट करे, दूर करे (सं.भज्); *प्रेमाका.* नासे

भाजन *उपबा. प्रेमाका.* पात्र, वासग (सं.)

भाजनहार *देवरा.* भांगनार (सं.भंजनकार)

भाटी *षडाबा.* रोजी [– खास करीने वेश्यानी] (सं.)

भाठ *उक्तिर.* शेकवा-उकाळवा-तळवा माटेनुं पात्र, कडाई (सं.भ्राष्ट्रा)

भाठी **प्रद्युचु.* [कडाई] (सं.भ्राष्ट्रा)

भाडु *षडाबा.* कडाई (सं.भ्राष्ट्र)

भाडउं *उक्तिर. षडाबा.* भाडुं, [वस्तु वापरवा माटे अपातुं नाणुं, माणस पासे काम करावववा माटे अपातुं नाणुं – पारिश्रमिक] (सं.भाटकम्)

भाडूल *आरारा.* ?

भाण *अखाका. अखेगी. आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. चित्तसं. प्रेमाका. विमप्र. वीसरा.* भानु, सूर्य

भाणिजी *वीसरा.* भाणेज (सं.भागिनेय)

भाणु *तेरका.* भानु, [सूर्य]

भात *आरारा.* थाय छे (सं.भाति)

भात *उक्तिर. उपबा. नलाख्या. प्रेमाका.* भातुं, खोराक, अन्न (सं.भक्तम्)

भाति *आरारा. ऋषिरा.* रीत, भांति, प्रकार; *आरारा.* भात, आकृति [सं.भक्ति]

भाति भाति *प्रेमाका.* भातभातनां, जुदा-जुदा प्रकारनां

भात्रीजउ *उक्तिर.* भत्रीजो (सं.भ्रात्रीयः)

भाथडी *उक्तिर.* धमण (सं.भस्त्रा)

भाथी *अखाछ. चंद्रवा. प्रेमाका.* भाथावाळो, योद्धो, बहादुर लडवैयो [सं.भस्त्रा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परथी]; जुओ काळभाथी

भादव *प्राचीफा.* भादरवो महिनो (सं. भाद्रपद)

भादवउ *प्राचीसं.* भाद्रपद, [भादरवो]

भाद्रव *तेरका.* भादरवो (सं.भाद्रपद)

भाद्रवउ *उक्तिर. वीसरा.* भादरवो महिनो (सं.भाद्रपद)

भानुसुता *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सूर्यपुत्री यमुना

भामणइ *जिनरा.* ओवारणांथी

भामणउं *अखाका. अभिऊ. अंबरा. नलरा. विमप्र.* ओवारणां (सं.भ्रामण)

भामणडइ *आरारा.* भामणां करीने, भमाडीने

भामणडां, भामणा *नरका.* ओवारणां

भामणि *जिनरा.* भामिनी

भामणे जवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ओवारी जवुं, न्योच्छावर करवुं

भामरभोली *चतुचा.* घेली, साव भोळी; जुओ भंभरभोली

भामंडल *आरारा.* तेजवर्तुळ (सं.)

भामा *अखाका. प्रेमाका.* भामिनी, सुंदर युवती

भामा *प्रेमाका.* *फांफा, [*पाखंड; *देखाडा; खेल; तोफानी चेष्टाओ]

भामिणि *गुर्जरा.* भामिनी, स्त्री

भामे *अखाका. अखेगी. प्रेमाका.* भ्रममां, भ्रमणामां

भामो *अखाका.* भ्रम, [भ्रमणा]

भाय *गुर्जरा. तेरका.* भाई (सं.भ्रातृ)

भायेग *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* भाग्य

भार *प्रेमाका.* [सोनानो एक मोटो तोल], वीस तोला के बार मणनुं वजन

भार *दशस्कं(१).* उपकारनो के ऋणनो भार; *प्रेमाका.* प्रभाव, सत्ता; आबरू; मान, [गौरव]; *चित्तसं.* महत्त्व [सं.]

भार अढार *अखाका. प्रेमाका.* बधा ज प्रकारनी, [अढार वर्गनी]; जुओ अढार भार

भारइं *चारफा. लावल.* भार भरावे, [भार लादे], बोजाथी भरे (सं.भारयति)

भारउट *उक्तिर.* मोभ, पाटडो, आडसर (सं.भारपट्टः); जुओ भारोट

भारट *सिंहा(म).* मोभ, पाटडो, [आडसर]

भारणि *आरारा.* भारणरूप, भाररूप

भारथ *चंद्रवा.* भारत – महाभारत

भारथी *दशस्कं(२). प्राचीफा. *मदमो.* भारती, सरस्वती

भार भागवो, भार भांगवो ०*नरका.* *संशय दूर थवो; *प्रेमाका.* *अभिमान दूर थवुं [प्रतिष्ठा जवी, लाजशरम जवी]

भारमाली *गुर्जरा.* भार उपाडनार (सं.भार+ मालिन्)

भार राखवो *नरका.* मान राखवुं, शरम राखवी, [शाख राखवी, मोभो जाळववो]

भारवट्ट जुओ भारोट

भारिउ *विमप्र.* *भारमां राख्यो, [भार कर्यो छे, वजन वधार्युं छे]

भारिज्या *आरारा.* भार्या, पत्नी

भारिंग *आरारा(व).* भारंगी, एक वनस्पति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.भार्गी)

भारेवत (भारेवन) *चंद्रवा.* महत्तावाळो, मोटो

भारो *अखाछ.* भारवाळो, भारेखम

भारोट, भारवट्ट *विक्रम.* पाटडो, मोभ [सं. भारपट्ट]; जुओ भारउट

भार्यां *नरका.* [भारथी] भरेलां, [लादेलां]

भाल *ऋषिरा. चित्तसं.* भाळ, शोध, समाचार, पत्तो [सं.भाल्]

भालडी **गुर्जरा. *विराप.* बाण, तीर (सं. भल्ली+ड)

भालडे *प्रेमाका.* भालमां, कपाळमां

भाळववुं *ऋषिरा. नरका. प्रेमाका.* भळाववुं, सोंपवुं, -ने माथे नाखवुं [सं.भालय्]

भालि *उक्तिर.* बरछी, बाण, तीर (सं. भल्लिः)

भाळी *नरका.* [भळावीने], बतावीने

भालोडे *विमप्र. लावल.* बाणथी, तीरथी [सं.*भल्लकूट

भावइ जिसी *आरारा.* गमे तेवी

भावइ तिम करी *कृष्णच.* गमे तेम करी

भावद्यण *आरारा.* भावार्चन, भावपूजा

भावज *वीसरा.* भाभी (सं.भ्रातुर्जाया)

भावट *नरका. प्रेमाका.* उपाधि, जंजाळ, दुःख

भावठ *चंद्रवा. नरप(द). प्रेमाका. मदमो.* उपाधि, पीडा, भीड, मुश्केली

भावठि *अंबरा. ऋषिरा. ऐतिका. नलरा. नेमिछं. *विमप्र.* मानसिक दुःख, उपाधि, मुसीबत, जंजाळ (*सं.भाव+अर्थिन्)

भावठी *आरारा.* दरिद्र

भावन *प्रेमाका.* स्तुति, [गुणगान]; भावे – गमे तेवो, सुंदर [सं.]

भावांतर *अखाका.* बीजो भाव [सं.]

भाविक *प्रेमाका.* भविष्यमां थनारी [सं.]

भाषइ *उक्तिर.* बोले, कहे (सं.भाषति)

भास *आरारा.* भाषा; *गुर्जरा. *नलरा. प्राचीफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* पद्यखंड, काव्यनो एक भाग, [काव्यप्रकार] (सं.भाषा)

भासइ *आरारा. गुर्जरा. जिनरा.* बोले, कहे (सं.भाषते)

भासकशक्ति *चित्तसं.* प्रकाशित करवानी शक्ति, प्रतिबिंब पाडवानी शक्ति

भासडी *देवरा.* वाणी, शब्दो (सं.भाषा)

भासरु *प्राचीफा.* प्रकाशमान, तेजस्वी (सं.भास्वर)

भासुर *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* तेजस्वी (सं.)

भासुरह *ऐतिका.* चमकतुं, प्रकाशमान

भांकार *नलरा.* भेरनो अवाज, (रवानु-करी), [भां-भां एवो अवाज]

भांखडी *उक्तिर.* भांकडी, गोखरुने मळती एक वनस्पति, (सं.भक्षटः)

भांगउ *उपबा. षडाबा.* भेद, विभाग, प्रकार (सं.भंग); जुओ भाग

भांगर *अभिऊ.* *एक जातना घोडा, [एक जातनी सांढणी]

भांगरउ *उक्तिर. आरारा(व).* भांगरो (सं. भृंगराज)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भांजइ *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. चित्तसं. हरिख्या.* भांगे, भांगी नाखे; भांगी जाय (सं.भंज्)

भांजिवुं *उक्तिर.* भांगवुं

भांड *अखाका.* पात्र, वासण [सं.]

भांड *उक्तिर. आनंस्त.* भवैया जेवी एक जाति (सं.भंड)

भांडइ *उक्तिर.* [*गाळ दे; *संग्रह करे] (सं.भण्डयति)

भांडशाला *षडाबा.* कोठार, भंडार (सं.)

भांडी *षडाबा.* हजामनी अस्तरा-पेटी (सं. भाण्डि) [दे.भंड परथी]

भांण *आरारा.* भानु, सूर्य; *मदमो.* (सूर्य=) राजा

भांत, भांत्य *चित्तसं.* भात, प्रकार

भांति *आरारा.* प्रकारे; *ऋषिरा.* साडला वगेरेनी भात (सं.भक्ति)

भांत्य जुओ भांत

भांपणि *षडाबा.* पांपण

भांभरभोलवी जुओ भंभरभोली

भांभरभोळी *नरका. प्रेमाका.* घणी भोळी, मुग्ध [सं.विह्वल+*भ्रमिल्लक]

भांभल (भांभलभोली) *ऐतिका.* [घणी] भोळी

भांमणां *चंद्रवा.* ओवारणां, दुखणां [सं. भ्रामण]

भि *कादं(शा).* भय, बीक

भिइसि *आरारा.* भेंस (सं.महिषी)

भिउड *गुर्जरा.* भ्रमर, भवां (सं.भृकुटि)

भिउडी *उक्तिर. विरापं.* भृकुटि, भवां

भिख्खया *प्रबोप्र.* बौद्ध साधु (सं.भिक्षु+क)

भिख्या *प्रबोप्र.* भीख (सं.भिक्षा)

भिग्गह *प्राचीफा.* प्रतिज्ञा, धार्मिक नियम (सं.अभिग्रह)

भिछ *ऐतिका.* भिक्षा

भिज्ज- *तेरका. प्राचीसं.* भींजावुं (सं.भिद्य-)

भिडइ *गुर्जरा.* निकट आवे, लडे, [भीडे, मुकाबलो करे] (सं.*भिटति) [दे.]

भिडइ *विरापं.* उखेडे (सं.भ्रष्ट परथी)

भित्ति *कादं(शा).* भींत, दीवाल (सं.)

भिदि *नलाख्या.* भेदथी, [रहस्यप्रकटन-पूर्वक]

भिया *दशस्कं(१).* भाई – अजाण्या पुरुष-नो निर्देश करवा वपराती संज्ञा

भिराडी *गुर्जरा. विरापं.* भाराडी, हिंमतवान

भिलइ *अंबरा. जिनरा.* भळे, मळे, हळेमळे; *अंबरा. आरारा. गुर्जरा.* भळे, मिश्रित थाय, [जोडाय] (दे.)

भिलु, भीलु *प्रेमाका.* भेरु, साथी; जुओ भीरु

भिंइसु *लावल.* भेंसो, पाडो [सं.महिषः]

भिंगार *उक्तिर. तेरका.* झारी (सं.भृंगार)

भिंडिमाळ, भिंडीमाळ *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गोफण के तेना जेवुं पथ्थर फेंकवानुं यंत्र

भिंतर *प्रबोप्र. प्राचीफा.* अंदर (सं. अभ्यंतर)

भिंभल, भिंभलउ *कृष्णबा. प्राचीसं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा.) शृंगामं.* विह्वळ, मदमत्त; जुओ भीमर, भींभल

भीकर *प्रबोप्र.* भयंकर (सं.भयकर)

भीखसा *देवरा.* भिक्षा

भीखु *देवरा.* भिक्षु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भीजइ *गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. लावल. वीसरा.* भींजाय, [आर्द्र थाय] [सं. अभ्यज्यते]

भीडइ *गुर्जरा.* भीडे, [सकंजामां ले] [सं. अभ्यटति]

***भीडी [भींडी]** *प्रेमाका.* *बीडेली, *चोंटेली, [शणिया रेसा] [सं.भिंडा]

भीति *अभिऊ. उक्तिर. उपबा. षडाबा.* भींत (सं.भित्ति)

भीमर *अभिऊ.* [मदथी] विह्वल; जुओ भिंभल

भीर *वेताप.* ?, [भयंकर, भारे मोटो]

भीरु *दशस्कं(१).* भेरु, भीलु, [साथी]; जुओ भिलु

भीलिम *आरारा(व).* भिलामो (सं.भल्लातक)

भीलु जुओ भिलु

भींडी जुओ भीडी

भींतर *प्राचीका.* भीतर (सं.अभ्यंतर)

भींभल *वसंवि(ब्रा).* प्रेमघेलुं (सं.विह्वल); जुओ भिंभल

भींभली *प्राचीफा.* मुग्धा, [प्रेमघेली] (सं. विह्वला)

भींमली *गुर्जरा. विराप.* [मदथी] विह्वळ, [प्रेमघेली] [सं.विह्वल-]

भुअण, भुयण *उषाह.* भुवन, [लोक]

भुअंग *रूपच. वसंफा(ल). विक्ररा.* भुजंग, साप

भुअंगम *लावल.* नाग (सं.भुजंगम)

भुइ, भुइं *आरारा. उपबा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. वीसरा. षडाबा.* पृथ्वी, जमीन; जमीन पर (सं.भूमि); *षडाबा.* जमीन परनुं अंतर

भुइफोड *उक्तिर.* भोंयफोडा, एक वनस्पति (सं.भूमिस्फोट)

भुइं जुओ भुइ

भुए, भुये *प्रबोप्र.* भयथी

भुगत *देवरा.* भोगववा निर्णीत भोग

भुगतारि *सिंहा(शा).* भोक्ता [सं.भोक्तार]

भुजन *प्राचीका.* भोजन

भुजंग *विक्ररा.* विलासी पुरुष [सं.]; *नरका.* [नाग], शेषनाग [सं.]

भुजाइ *उक्तिर. वाग्भबा.* भोजाई (सं.भातुर्जाया)

भुदर *दशस्कं(१).* भूधर, कृष्ण

भुधणी *शृंगामं.* राजा

भुमहिया जुओ भमहडी

भुय *गुर्जरा.* भुज, हाथ

भुयण *गुर्जरा.* भुवन, [लोक]; *तेरका.* [भुवन, लोक]; दहेरासर; जुओ भुअण

भुयंग, भुयंगु *आरारा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). शृंगामं.* भुजंग, नाग

भुयंगम *ऋषिरा. नरका. प्रेमाका. हरिवि.* साप (सं.भुजंगम)

भुये जुओ भुए

भुर *वेताप.* गमार

भुरशी, भुरसी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* विवाह-प्रसंगनी बांधेली दक्षिणा [सं.भूयसी]

भुलउ *गुर्जरा.* भूलभरेलो (प्रा.भुल्लइ)

भुल्लइ *उक्तिर.* भ्रष्ट थाय, च्युत थाय, भूले [दे.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुवण *तेरका. वीसरा.* भुवन, लोक, जगत
भुवि *शृंगामं.* पृथ्वीमां
भुहरा *पंचवा.* जमीनमां करेलुं घर (सं.भूमि +गृह)
भुहि *गुर्जरा.* भूमि
भुंइ *जिनरा.* भूमि
भुंखर *विमप्र.* *गांडानी माफक उश्केरायेलो, [*करडो][*दे.भुक्ख]
भुंगलभेर जुओ मुगलभेर
भुंज- *तेरका.* भोगववुं (सं.)
भुंड-निलाडि *प्राचीसं.* अशुभ ललाटवाळी, [निर्भागी]
भुंद *वेताप.* ?
भुंभर-भोली, भंभर-भोलिया *प्राचीसं.* अतिशय मुग्धा
भुंहडियह जुओ भुमहडी
भुंहरा *आरारा.* भोंयरा (सं.भूमिगृह)
भूअबलिहि *कृष्णच.* भुजाबळे
भूअंग *कृष्णच.* भुजंग, [सर्प]
भूअंगम *कृष्णबा.* भुजंगम, नाग
भूअंगु *वसंफा.* भुजंग, सर्प
भूइ *उक्तिर.* जमीन, पृथ्वी (सं.भूः)
भूआळ *वीसरा.* राजा (सं.भूपाल)
भूइं *विराप.* भूमि
भूखालू *षडाबा.* भूखाळवो (सं.बुभुक्षा परथी)
भूचर *चित्तसं.* पृथ्वी पर चालनारा; *गुर्जरा.* पृथ्वी पर रहेनार, माणस (सं.)
भूजपत्र *कादं(ध्रु).* भूर्जवृक्षनी छाल, जेना पर लखवामां आवतुं हतुं (सं.भूर्जपत्र)
भूजाल *जिनरा.* मोटी भुजाओवाळो वीर
भूजि *आरारा(व).* भोजपत्रनुं झाड (सं.भूर्ज)
भूत *चित्तसं.* पंचमहाभूत, भौतिक तत्त्व
भूतिक *चित्तसं.* भौतिक
भूतो *अखाका.* थया
भूतोलिउ *षडाबा.* एक प्रकारनो वंटोळ
भूधर, भूधरो *दशस्कं(१).* भूधर, कृष्ण
भूप थवा हींडो *चित्तसं.* ऊंचुं स्थान मेळववानी इच्छा राखो
भूभंग *अखाका.* पृथ्वीनो नाश
भूभाग *आरारा.* जमीन पर चालवा मांड ?
भू-भूतो *अखाका.* [पर्वत] [सं.भूभृत]
भूमहइ *प्राचीसं.* भवां
भूमहीय जुओ भमहडी
भूमंड *अखाछ.* *भूमंडल, *पृथ्वी, [*ब्रह्मांड]
भूमिहर *ऋषिरा. षडाबा.* भोंयरुं (सं. भूमिगृह)
भूयण *अंबरा. गुर्जरा.* भुवन, जगत; *गुर्जरा. तेरका.* महालय, दहेरुं (सं.भुवन)
भूयपाल *आरारा.* भूपाल, राजा
भूयबल *गुर्जरा.* भुजबळ
भूयाल *ऋषिरा.* पृथ्वीपालक, राजा (सं. भूपाल)
भूर *अखाका. अखाछ. अखेगी. कृष्णच. कृष्णबा. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* गमार, गांडो, मूरख, अबुध
भूर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अतिशय, घणुं (सं.भूरि)
भूरइ *गुर्जरा.* [खूब मोटी संख्यामां] [सं. भूरि]
भूरचां *नरका.* *मूर्ख, *अणसमजु, [*पृथ्वी-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोकनां] [सं.भुर्]

भूरसी जुओ भुरशी

भूरि *आरारा. कादं(शा). लावल.* खूब, घणा (सं.)

भूलउ *लावल.* भूली गयेलो, [गुमावेलुं होय एवो], भूलो पडेलो; *विराप-अनु.* भूलभरेलो

भूलवण *अखेगी.* भूल

भूलवाई *चंद्रवा.* भोळवाई

भूवलए *ऐतिका.* पृथ्वीमंडळमां

भूशेणां *चंद्रवा.* शोभीतां

भूसा(?) *शृंगामं.* इच्छा

भूहडी *आरारा.* भमर, भवां (सं.भृकुटि)

भूहिरउ *उक्ति.* भोंयरुं (सं.भूमिगृहम्)

भूंइ *अंबरा. विराप. शृंगामं.* पृथ्वी, जमीन; भूमिमां, भूमि उपर

भूंछ *विमप्र.* *मूर्ख, *भोट, *गांडो, [*रण-प्रदेश] [रा.]

भूंथल *उषाह.* जगा, [भूमिपट] (सं. भूमि-स्थल)

भूंय *जिनरा.* *भूमि, [*माळ, *मजलो]

भूंयरइ *आरारा.* भोंयरामां (सं.भूमिगृह)

भूंहडी *शृंगामं.* भूमि, जमीन

भूंहिरइ *अंबरा.* भोंयरामां

***भृख्य** *सिंहा(शा).* वृष, बळद

भृष्ट *आरारा.* भ्रष्ट, बगडी गयेलुं; भ्रष्ट, छूटुं पडेलुं

भृंगली *ऐतिका.* वाद्यविशेष

भृंगार *अभिऊ. कादं(शा).* कळश (सं.)

भृंगालिनी *आरारा.* भमराओनी हार जेवा वाळवाळी (सं.)

भे, भेए *अखाका. अखाळ. कामा(त्रि). नरका. प्रेमाका.* भय

भेइणी जुओ भेउणी

भेउ *गुर्जरा. प्रबुचु. प्राचीफा. विक्ररा. हम्मीप्र.* भेद, रहस्य; *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* भेद, भिन्नता

भेउणी (=भेइणी ?) *तेरका.* भेदायेली, मिश्रित, [भींजायेली, तरबतर थयेली] [रा.भेवणौ]

भेए जुओ भे

भेक *ऐतिका.* देडको

भेख *अखाका. प्रेमाका.* वेश

भेट *गुर्जरा.* भेटो, मेळाप

भेटण *आरारा. विमप्र.* भेट, [बक्षिस]

भेटमलणुं *प्रेमाका.* मळतां वखते आपवानी भेट

भेटि *गुर्जरा. विमप्र.* भेट, बक्षिस; **आनंस्त. वीसरा.* भेटवुं ते, भेट, मिलन (सं*भेट्ट)

भेडउ *गुर्जरा.* भेटो, मेळाप, [मुकाबलो]

भेड्यउ *आरारा.* मळ्यो; *गुर्जरा.* भेट्यो, [मुकाबलो थयो]

भेडवइ *अखेगी. गुर्जरा.* भीडवे, जोडे, टकरावे

भेडि **गुर्जरा.* [मुकाबलो]

भेदाणी **जिनरा.* [भेदाई, वींधाई; आर्द्र बनी]

भेदाभेद *चित्तसं.* भेद अने भेद, विविध प्रकारना भेद

भेदियउ *चारफा.* भेदायो, [भींजायो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.भेदित)

भेय *आरारा. ऐतिका. ऐतिरा.* भेद, रहस्य, मर्म; *चित्तसं. जिनरा.* भेद, [प्रकार], [तफावत]

भेर *प्रेमाका. लावल.* भेरी, शरणाईना जेवुं मुखवाद्य

भेरवझंप *कामा(शा).* मनवांछितनी प्राप्ति अर्थे जप करतांकरतां पर्वतनी कोई ऊंची टूक उपरथी पडतुं मूकवुं ते [सं. भैरवझम्पा]

भेरि, भेरी **गुर्जरा. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. विराप.* **वीसरा.* शरणाईना प्रकारनुं एक मुखवाद्य (सं.)

भेल *सिंहा(शा).* भेद, शंका

भेळ *नरका.* भंगाण

भेलइ, भेळइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नरका. नेमिछं.* **लावल.* भेगुं करे, भेळवे [दे.]; *गुर्जरा. प्रेमाका. विराप.* भांगे, भंगाण पाडे, छिन्नभिन्न करे

भेळाभेळ *हरिख्या.* अत्यंत विनाश, वणसाड

भेली *आनंस्त. नलाख्या.* भेळी, भेगी, साथे मळेली

भेली *आरारा.* (गोळनो) रवो (रा.)

भेव *अखाका. अखाछ. अखेगी. जिनरा. नलाख्या. मदमो.* भेद, रहस्य, [मर्म]; *अखाछ.* भेद, [भिन्नता]

भेष *प्राचीफा.* वेश, पहेरवेश

भैरव *प्रेमाका.* चीबरी; जुओ भइरव

भो *प्रेमाका.* भय

भोअण *विक्रच.* भोजन

भोअणनंदन *गुर्जरा.* पृथ्वीपुत्र मंगळ (सं.भुवननंदन)

भोअला **उषाह.* [भोळा]

भोअंगम *उषाह. प्राचीका.* सर्प (सं.भुजंगम)

भोगतारीक *वेताप.* भोगवनार [सं.भोक्तार]

भोगल, भोगळ *उक्तिर. गुर्जरा. नरका-२. प्रेमाका.* आगळो; *अखाका.* [आगळो; आड, अंतराय], बंधन (सं.भुजार्गला)

भोगवउ *आरारा.* भोगवटो

भोगवणी *चित्तसं.* अनुभव

भोगिक **शृंगामं.* [सर्प] [सं.]

भोगिनि *ऋषिरा.* सर्पिणी [सं.भोगिनी]

भोगीसरा *लावल.* भोगीश्वर, श्रेष्ठ भोगी

भोजक् *षडाबा.* उपभोग करनार [सं.]

भोजपतर, भोजपत्र *कामा(त्रि). कामा(शा).* भूर्ज वृक्षनुं पत्र

भोजिग *ऐतिका. विमप्र.* भोजक (त्रागाळा), [प्रशस्ति गानार]

भोपागाला *वेताप.* बोपागाळा, दुख पड्यानो ढोंग ने रोदणां

भोपालु *उषाह.* महान, [अधिपति] (सं. भूपाल)

भोम *अखाका. प्रेमाका.* भूमि, [पृथ्वी, जमीन]; *प्रेमाका.* माळ, मजला

भोमी *अखाका.* भूमि, [जग्या]

भोय *तेरका.* भोग

भोयण *ऐतिका. शीलक.* भोजन

भोयंग *अखाका. दशस्कं(१). नरका.* भुजंग, नाग

भोयंगम *दशस्कं(१).* भुजंगम, शेषनाग

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोर *ऋषिरा. नरका. प्रेमाका.* प्रभात, परोढियुं

भोल *ऐतिरा.* भूल

भोलउ *प्राचीसं.* भोळो [दे.]

भोळउ *वीसरा.* भूल, भ्रम, [भोळपण]

भोलविउ, भोलिउ *प्राचीसं.* भोळव्यो

भोलाटी *गुर्जरा.* *छेतराई, *भोळवाई, [भूली पडी]

भोलावा *लावल.* भोळववा

भोलिउ जुओ भोलविउ

भोलिम *ऐतिका.* भोळपण, अज्ञान

भोलुव- *नलरा.* भोळववुं (सं.*भ्रमुल्लक) [दे.]

भोलुयारी *प्राचीसं.* साव भोळी

भोवन *दशस्कं(१).* भवन, [आवास]

भ्रमरोग *चित्तसं.* गांडपण, चित्तभ्रमनो रोग

भ्रमस्त *सिंहा(शा).* ब्रह्मस्व, ब्राह्मणनुं धन, ब्रह्मार्पण करेलुं द्रव्य

भ्रमहइ *प्राचीसं.* भ्रू, भवां [सं.भ्रूमुख]

भ्रमि-आकार *प्रेमाका.* गोळ, चकरडाना आकारनां, [*आवर्त-वमळ जेवां, *चंचल]

भ्रष्ट *षडाबा.* रांधेला (सं.भृष्ट)

भ्रंग *नलाख्या.* भमरो (सं.भृंग)

भ्रंति *गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं.* भ्रान्ति, भ्रमणा; *आरारा.* भ्रान्ति, मूंझवण; शंका, शंकाभर्यो विचार

भ्रंम *मदमो.* ब्राह्मण (सं.ब्रह्मन्)

भ्रंमचरज *कामा(त्रि).* ब्रह्मचर्य

भ्रंमचारज वरत *कामा(शा).* ब्रह्मचर्यनुं व्रत

भ्राजि *कादं(शा).* शोभे (सं.भ्राज्)

भ्रांत, भ्रांत्य *प्रेमाका.* भ्रांति, भ्रमणा; *मोसाच.* अंदेशो; *मदमो.* भ्रान्ति, मोह, [मूंझवण, शंका]

भ्रिखभान *दशस्कं(१).* वृषभानु, [राधाना पिता]

भ्रूअ *नलाख्या.* भवां (सं.भ्रू)

भ्रूसो *अभिऊ.* भरोसो

म *उपबा. उषाह. तेरका. नरप(द). नलरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. हरिख्या.* ना, नहीं (सं.मा)

मइ *गुर्जरा. तेरका. जिनरा. वीसरा.* में (अप.मइं, प्रा.मया); *गुर्जरा. तेरका.* मने

मइगल *वीसरा. षष्टिप्र.* हाथी (सं.मदकल); जुओ महिगल

मइडी *ऐतिका.* [मेडी]

मइण *गुर्जरा.* मदन, कामदेव; *वीसरा.* मीण (सं.मदन); जुओ मयण

मइता (करमइता) *विमप्र.* [कार्यकुशळ]; जुओ करमइता

मइदु *आरारा.* मेंदो

मइमत *वीसरा.* मदमत्त

मइलउ *आरारा.* मेलुं, दुष्ट; *उक्तिर. उपबा. वीसरा.* मेलुं, गंदुं (सं.मलिल-)

मइलप *उषाह.* मेलप, [मेलापणुं] [सं.मलिल्ल +त्व]

मइलु *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* रोष; जुओ मयलु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मइलापणउं *उपबा.* मेलापणुं

मइवट्ट जुओ महिवटु

मइं *वीसरा.* -मां

मइं *आनंस्त. उक्तिर. उपबा.* में (सं.मया); *उक्तिर.* मने (सं.माम्)

मइंगल *आरारा.* हाथी (सं.मदकल)

मई *उक्तिर.* पटेलो, खेडेला खेतरने सपाट करवानुं साधन (सं.मत्य/मदि) [दे. मतिय, मइय]

मउठ *उक्तिर.* मठ (सं.मकुष्ठ)

मउड *उक्तिर. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. चारफा. जिनरा. प्राचीफा. वीसरा. षडाबा.* मुकुट, मोड

मउडउ *जिनरा. वीसरा.* मोडुं [सं.मृदु]; *आरारा. उक्तिर.* धीमुं; जुओ मोडे मोडे

मउडउधा *गुर्जरा.* मुकुटधारी, [सामंतो] (सं.मुकुटबद्धा); जुओ मुडुधा

मउडबद्ध, मउडबधा *प्राचीसं.* सामंत (सं.मुकुटबद्ध)

मउडेरउं *षडाबा.* वधारे मोडुं [सं.मृदु-]

***मउणि [*मणिउ]** *उक्तिर.* घडो, माटलुं (सं.मणिकः)

मउर *उक्तिर.* अरीसो (सं.मुकुरम्)

मउरा *उक्तिर.* (आंबानो) मोर [सं.मुकुल]

मउरियउ, मुरियउ *प्राचीसं.* महोर्यो (सं. मुकुलित)

मउरी *गुर्जरा.* महोरी (सं.मुकुलिता)

मउलउं *प्रांचीसं.* धीमुं [सं.मृदु परथी]

मउसाल *जिनरा.* मोसाळ [सं.मातुःशाल]

मऊ, मौ *उक्तिर.* रखडती, गरीबडी (गाय)

(सं.मार्गोका; मुक्तौका)

मओलीआं *गुर्जरा.* मोळियां, मुकुट (सं. मौलिकानि)

मकनउ *उक्तिर. प्रेमाका.* दंतूशळ वगरनो, ठींगणो, भरावदार, तोफानी (हाथी) (सं.मत्कुण)

मकर *अखाका. अखेगी.* माछलुं; मगरमच्छ (सं.)

मकर *अखेगी.* मुकुर, दर्पण

मकरनिकेतन *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मकरध्वज, कामदेव (सं.मकरकेतन परथी)

मकर-मीट *नरका.* माछलीनी आंखना जेवा आकारनी

मकराकृत *प्रेमाका.* माछलाना आकारनां

मकरंद **नरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* पुष्पमधु (सं.)

मकलाय *अखाछ.* मलकाय, हरखाय

मकायंत **विमप्र.* [इजारे] [अ.मकातिअ]

मखवट्टउ *विमप्र.* मुखपट, मोढुं, [चहेरो]; जुओ मुखवटउ

मखांतर *अखाका.* बहानुं, निमित्त; *दशस्कं(२). प्रेमाका.* बहानुं [सं. मिषांतर]

मखि *प्राचीका.* मुखमां

मखियारडो *प्रेमाका.* [माखीओथी रक्षण करवा] घोडाना मुख उपर बांधवामां आवती पट्टी [सं.*मक्षिका+आवरण]

मग **जिनरा.* [मार्ग]

***मग [*नग]** *चंद्रवा.* *मार्ग, [पर्वत]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मगति-निधांन *हरिवि.* मुक्तिनिधान

मगडी *विक्ररा.* रणक्षेत्रमां वगाडवानो राग-विशेष

मगमद *आरारा.* कस्तुरी (सं.मृगमद)

***मगरप(चारी) [मगरपचीसे]** **नंदब.* [भरपूर जुवानीमां] [रा.]

मगरी *मोसाच.* मगमांथी बनावेली मीठाई ?

मगरो *नरप.* डुंगर (भी.)

मगसा **षडाबा.* [माखी] (फा.मगस)

मगसिर *तेरका.* मागशर (सं.मार्गशिरस्)

मगसिरनखत्र *उक्तिर.* मृगशीर्ष नक्षत्र

मगसिरियउ *वीसरा.* मागशर (सं.मार्ग-शिरस्)

मगह *आरारा.* मग [सं.मुद्ग]

मगियां *प्रेमाका.* मगना जेवी छांटवाळां वस्त्रो, [रंगीन दोरियानां वस्त्र]

मग्ग *गुर्जरा. तेरका.* मार्ग

मग्गइ *गुर्जरा.* मागे (सं.मार्गयति)

***मघ [*मेघ]** **वसंवि(ब्रा).* [वादळ]

मचकउ *लावल.* मचको, आंखनो मिचकारो, [चाळो]; *नरका.* लटको, लहेको, [चाळो]; गर्व

मचकंद *आरारा. चारफा.* मुचुकुन्द नामनां पुष्पवृक्ष

मचका- *वीसरा.* मारवुं, प्रहार करवो (*प्रा. मच्च)

मचकुंद *आरारा.* मुचुकुंद नामनुं पुष्पवृक्ष

मचरडी *प्रेमाका.* आमळी, मरडी

मचरालि *नरप(द).* मत्सरवाळी, गुमानी

मच्चइं *गुर्जरा.* मत्त थाय (सं.माद्यति)

मच्चु *ऐतिका.* मृत्यु

मच्छइ *गुर्जरा.* माछली प्रत्ये (सं.मत्स्य)

मच्छर *षडाबा.* *ईर्षा, [अभिमान]; * *ऋषिरा.* [डंख, गुमान]; *नरका. प्रेमाका.* गर्व, अभिमान (सं.मत्सर)

मच्छेंदराय *ऋषिरा.* मत्स्यदेशनो राजेश्वर

मछण *नरप(द).* चळु, जम्या पछी मों साफ करवुं; जुओ माछन लेवुं, मुहछण

मछर *नरका. नरप(द). *विमप्र.* मत्सर, गर्व; *चित्तसं.* ईर्ष्या

मछरा *सिंहा(शा).* मदभरी (सं.मत्सर)

मछराल, मछराळ *कस्तुवा. नरका.* मत्सरवाळा, गुमानी; *जिनरा. विक्ररा.* मत्सरवाळा, गुमानी, जोरावर, [बहादुर, रोषीला]; *कृष्णबा.* *द्वेषीला, [गुमानी, जोरावर]; *प्रेमाका.* ईर्ष्यावाळा, [रोषीला, गुमानी]

मछाकार *मदमो.* मत्स्याकार

मछ्छर *नेमिछं.* मत्सर, [ईर्ष्या, रोष]

मज *प्रेमप.* मुज

मज *मदमो.* –, [*नक्की] [*अ.मज़्रुन]

मजिल *वीसरा.* मजल, मुसाफरीनो [एक साथे के एक दिवसमां] कपातो हिस्सो (फा.मंजिल)

मजीठ *उक्तिर. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* जेमांथी लाल रंग नीकळे छे ते वनस्पति (सं. मंजिष्ठा)

मजीठियां *प्रेमाका.* मजीठना राता रंगनां

मजीठुं *अभिऊ. जिनरा.* मजीठ जेवुं रातुं (सं.मंजिष्ठा)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मजीण *प्राचीसं.* ?, [कोई वस्त्रप्रकार]

मज्झ *गुर्जरा.* मने; *तेरका.* मारुं, मुज (सं. मह्यम्)

मज्झ *आरारा.* मध्ये, -मां

मज्झन *प्राचीसं.* मध्याह्न

मज्झारि *गुर्जरा.* मध्ये, -मां (सं.*मध्यकार्ये)

मज्झि *गुर्जरा.* मध्ये, -मां

मझ *आरारा. गुर्जरा. कर्पूमं.* मुज, मारुं; *गुर्जरा. नलरा. प्रबोप्र.* मने (सं.मह्यम्)

मझइ *आरारा.* मध्ये, -मां

मझार, मझारि *आरारा. देवरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीसं. रूपच. विक्ररा.* मध्ये, -मां, अंदर (सं.*मध्यकार्ये, मध्य+कार); *उषाह.* मध्यमां, [वच्चे]

मझार, माध, मुझार, मोझार *कामा(त्रि).* मध्ये, -मां

मटकउ **ऋषिरा. प्रेमाका.* हावभाव, चेष्टा, [चाळो, नखरुं]

मटि *नलाख्या.* माटे, काजे

मट्टी *प्राचीसं.* माटी (सं.मृत्तिका)

मठ *प्रेमप.* ओरडो [सं.]

मठ- *प्राचीफा.* दबाववुं, [भांगवुं, मारवुं] (सं.मथ्), [*चूर्ण करवुं, *कचडवुं] [*सं.मृष्ट]

मठवासणि *विक्ररा.* मठवासिनी, साध्वी

मडप्फर *तेरका. *प्राचीफा. प्राचीसं.* दर्प (दे.)

मडि *उक्तिर.* [*आघात पामेली – घवायेली स्त्री] (सं.मड्डिका) [दि.मड्डिआ]

मडिउ *प्रद्युचु.* मडदुं [सं.मृतक]

मढ *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नलरा. नेमिछं. विक्ररा.* मठ, मकान, निवासस्थान; *वेताप.* मठ, [संन्यासीनुं निवासस्थान]

मढ *दशस्कं(२).* सती थवा माटे खडकेली चिता, [चितारूपी घर]

मढपति *ऐतिका.* मठाधीश

मण *आरारा. तेरका.* मन; जुओ मणि

मणची *सिंहा(शा).* एक खडधान

मणछिउ *ऐतिका.* मनवांछित

मणमणउ *उक्तिर.* अस्फुट उद्गार, गूसपूस ध्वनि (सं.मन्मनः)

मणमणा *ऐतिका.* बालकनी भाषा, [कालाघेला अस्फुट (उद्गार)]

मणमय *प्राचीफा.* मणिनां (सं.मणिमय)

मणयतु *ऐतिका.* मनुष्यत्व

मणशिलशिला *कादं(शा).* मनसील नामक धातुनां चोसलां [पथ्थर] (सं. मनः-शिला-शिला))

मणसमाधि *गुर्जरा.* मनसमाधि, मननुं सांत्वन, मननी शांति

मणसिल *उक्तिर.* ए नामनो खनिज पदार्थ (सं.मनःशिला)

मणहर *तेरका.* मनहर

मणि *गुर्जरा.* मनमां (सं.मनस्); जुओ मण

मणिउ जुओ मउणि

मणिबिंब *तेरका.* मणिमय प्रतिमा

मणिमइ *गुर्जरा.* मणिमय

मणिमथ *ऐतिका.* शिरोमणि

मणियउ *उक्तिर.* मणको (सं.मणिकः)

मणीडां *प्रेमाका.* माळाना मणका

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणु *ऐतिका.* मन

मणुय *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा.* मनुष्य (सं.मनुज)

मणूअ *गुर्जरा.* मनुष्य (सं.मनुज)

मणूय *विराप.* माणस (सं.मनुज)

मणूय-भवि *शृंगामं.* माणसना भवमां

मणूं *गुर्जरा.* मनुष्य

मणोर *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मनोरथ

मणोरथ *गुर्जरा.* मनोरथ

मणोरहु *गुर्जरा.* मनोरथ

मणोहर *गुर्जरा. तेरका. वसंफा.* मनोहर

मत *अखाका.* *मति, [मान्यता, धार्मिक सिद्धान्त, पंथ]; *मोसाच.* मति

मतवारणउ *उक्तिर.* *विक्करा. झरुखो, अटारी (सं.मत्तवारण)

मतवाळउ *वीसरा.* नशाखोर (सं.*मत्तपाल)

मतिजीवी *उक्तिर.* बुद्धिजीवी (प्राणी), मनुष्य (सं.मतिजीविनः)

मतु *प्राचीफा.* मत (निषेधार्थ), [मा, नहीं]

मतुं *विमप्र.* अभिप्राय, मत

मतो *अखेगी.* मत, [विचार, समजण]; *अखाछ.* मतमतांतर, सिद्धान्त, [मताग्रह, मतप्रभाव, विचारनी पकड]; *प्रेमाका.* *कबूलात, *करार, [अरसपरस समजण, ठराव]

मत्कुण *ऋषिरा.* मांकड [सं.]

मत्थइ भागी कुहाडि जुओ कुहाडि

मत्थइं, मत्थिइं *नेमिछं.* माथे (सं.मस्तक)

मत्य *नलाख्या.* मति, बुद्धि

मत्सराल *विक्करा.* मत्सरवाळा, [शूरवीर, रोसीला]

मत्स्य *प्रेमाका.* [माछलानी आकृति]

मथ- *अखाका.* घसवुं; *अखाका. नरका-२. प्रेमाका.* वलोववुं, मंथन करवुं; *वसंफा. वसंवि.* वलोववुं, व्याकुळ करवुं

मथ जुओ मणिमथ

मथ (मोटउ मथ) *अंबरा.* [बहु मोटो]

मथाला *नेमिछं.* माथां

मथिला *नलरा.* मिथिला नगरी

मथोमथ *नरका.* माथा सुधी, पूरेपूरी

मथ्यामति *आरारा.* मिथ्यामति, अन्य मिथ्या दर्शनमां माननार, जैन धर्ममां अश्रद्धावान

मद *उक्तिर.* मद्य, शराब [रा.]

मदगळ *प्रेमाका.* (मद गळता) हाथी

मद-नमाया *लावल.* मद मातो नथी एवा

मदनभेर *प्रेमाका. हम्मीप्र.* एक प्रकारनुं मुखवाद्य, रणशिंगुं

मदनमेषला *प्राचीफा.* एक प्रकारनी हीराजडित मेखला (सं.)

मदनशाल *ऋषिरा.* मेना [दि.मयणसाल; सं.]

मदफू *विमप्र.* किंमती कापड, [*छापेल कापड] [*अ.मत्बुअ]

मदभिंभल *नलरा.* मदविह्वल, [मदमस्त]

मदभींभल *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आसक्तिथी व्याकुल बनेलो (सं.मदविह्वल)

मदमिगल *अभिऊ.* मदथी मत्त हाथी (सं.मद +मदकल)

मदल *आरारा.* ढोलना प्रकारनुं वाद्य,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[मृदंग] (सं.मर्दल)

मदार *आरारा(व).* मंदार, आकडो (सं.)

मदालस *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* यौवनमदथी आळसभरेलां (सं.)

मदि मातउ *वसंफा. वसंवि.* मदमत्त बनेलो (सं.मदेन+मत्तक)

मदूउ *आरारा.* मदीलो, नशामां छे ते

मद्दल *ऐतिका. तेरका. लावल.* मृदंग (सं. मर्दल), वाद्यविशेष

मद्धि *कादं(शा). नलाख्या. लावल.* मध्यमां, वच्चे, [-मां, अंदर]

मद्रधूय *गुर्जरा.* मद्रदेशना राजानी कुंवरी (सं.मद्र+दुहिता)

मध *प्राकासं.* चैत्र मास (सं.मधु)

मध (मधमाधव) *नरप(द).* [चैत्र-वैशाख, वसंत ऋतु] [सं.मधुमाधव]; जुओ मधु-माधवइ

मधर *प्राचीफा.* मीठुं, कर्णप्रिय (सं.मधुर)

मधु *वसंफा(ल).* वसंत (सं.)

मधुकर वेद *प्रेमाका.* चार भमरा [वेद=चार]

मधुप *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* भमरो (सं.)

मधुमाधवइ *ऐतिका.* [चैत्र-वैशाखमां, वसंतऋतुमां]; जुओ मध

मधुरां *हरिवि.* मीठुं दहीं

मधुवनरंगु *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* वसंतना वननी शोभा (सं.)

मध्यत्रीया *चतुचा.* मध्यस्थी स्त्री, दूती

मध्यनायका *चतुचा.* मुग्धा, मध्या अने प्रगल्भा – आ त्रण प्रकारनी नायिका-ओमां मध्यनायिका

मध्यमान *प्रेमाका.* मध्यनुं [वच्चेनुं] माप [सं.]

मध्यानि *आरारा.* मध्याह्ने

म-न *कृष्णबा. गुर्जरा. तेरका. नंदब. प्राचीफा. प्राचीसं.* मा, नहीं (सं.मा+न)

मनइ *षडाबा.* माने (सं.मन्यते)

मन करवा भेद *कादं(ध्रु).* [मननो] पार जाणवा

मनखो *अखाका.* मनुष्यनो अवतार; जन्मारो

मनछा *अभिऊ.* मननी वात, इच्छा [सं. मनीषा]

मन-था *प्रेमाका.* [मनमांथी]

मन बहोळुं करवुं *प्रेमाका.* मन मोटुं करवुं, उदार थवुं

मनभितरि *ऐतिका.* मननी अंदर

मनमथ-धणुहिय *वसंवि(ब्रा).* कामदेवनुं धनुष्य

मनरखती *अखाछ.* मन साचवती, [मनने फोसलावती, भ्रामक]

मनरली *आरारा. ऐतिका.* मनना आनंद साथे, मनना उमंगथी

मन रहेवुं *प्रेमाका.* मन स्थिर रहेवुं, धीरज रहेवी

मनरंगि *गुर्जरा. लावल.* मनना आनंदथी, मनना उमंगथी

मन लेवा *प्रेमाका.* *मनने जीती लेवा, [मनने जाणी लेवा]

मनशा *कामा(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२).* मनीषा, इच्छा; मननी कल्पना

मनशा सुध *कामा(शा).* मननी [शुद्ध,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खरी] इच्छाए

मनसा **उपबा. कामा(शा). दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* मनीषा, इच्छा

मनसिधि *कृष्णबा.* मनगमतुं, [मनने परिपूर्ण करनारुं]

मनसुधि *आरारा.* मननी शुद्धिथी

मनाया *लावल.* मनाव्या, तैयार कर्या, [स्वीकार कराव्यो]

मनावइ *उक्तिर.* मनावे, राजी करे; **लावल.* [माने – स्वीकारे एवुं करे]

मनाविवुं *उक्तिर.* मनाववुं, राजी करवुं

मनां *चंद्रवा.* मनमां

म-नि *प्राचीफा.* नहीं (सं.मा+न)

मनिख *प्रेमाका.* मनुष्य

मनिशउ *गुर्जरा.* मनीषा, मननो विचार, तर्क

मनिसी *विराप.* मनीषा, इच्छा, [मननो विचार]

मनीश *चित्तसं.* मनुष्य

मनीष *अखाछ.* मनुष्य

मनीषित *ऋषिरा.* मनमां इच्छेलुं (सं.)

मनुक्ष *गुर्जरा.* मनुष्य

मनुहार *प्राचीफा.* *मननुं हरण करवुं ते, [मनोहर]; जुओ मनोहार

मनुहार, मनुहार्य *दशस्कं(१). नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* परोणागत, [खातरबरदास्त, आदरसत्कार, आग्रह]; **प्राचीका.* [प्रार्थना; आदरसत्कार]

मनुहारि, मनुहारी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* आजीजी, प्रार्थना; *प्राचीका.* [प्रेमभर्यो] आग्रह *[आर्जव, प्रार्थना]*

मनुहार्य *प्राचीका.* आग्रह, [मनामणी, आजीजी, कालावाला]; जुओ मनुहार

मनुंवार *नरप(द).* विनंती; प्रेमाग्रह

मने *आरारा.* माने

मनोज्ञ *वाग्भबा.* मनोज्ञ, मनोहर

मनोहार *ऐतिरा. प्रेमाका.* परोणागत; खातरबरदास्त; जुओ मनुहार

मनोहार *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* मनोहर (सं. मनोहारिन्); जुओ मनुहार

मन्नइ (विमन्नइ) *गुर्जरा.* माने, गणे, लेखे [सं.विमन्यते]

मन्मथ-चरिचन *कादं(शा).* [कामोद्दीपक लेप] (सं.मन्मथ-चर्चन)

मपधुनि *गुर्जरा.* ढोलना अवाजसूचक शब्दो

मम *विराप.* नहीं (सं.म+म)

ममकार *आनंस्त.* ममता, अहंकार

ममांणी *कर्पूमं.* आरसनी जात, [राजस्थानना मकरान-प्रदेशनी खाणना]

***मयगयल [मयगल]** *सिंहा(म).* हाथी (सं.मदकल)

मयगल, मयगलु *उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिका. ऐतिरा. कृष्णच. गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. प्राचीसं. लावल. विक्ररा.* जेना माथामांथी मद झरतो होय ते, हाथी (सं.मदकल)

मयगल-जित्त *नेमिछं.* हाथीने जीती लेती

मयच्छिय *प्राचीसं.* मृगाक्षी, [मृगनयनी]

मयण *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा). हरिवि.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मदन, कामदेव; *प्राचीसं.* मीण [सं. मदन]; जुओ मइण

मयणसागर *लावल.* मदन[कामभाव]नो सागर

मयणफल *उक्तिर.* मींढळ (सं.मदनफल)

मयणातुर *गुर्जरा.* कामातुर (सं.मदनातुर)

मयमता *नेमिछं. विमप्र.* मदमत्त

मयमत्त *कृष्णच.* हाथी [सं.मदमत्त]; जुओ मियमत्त

मयरहर *ऐतिका. प्राचीसं.* सागर (सं.मकर-गृह)

मयरंद *तेरका.* मकरंद, [पुष्पमधु]

मयलउ *तेरका. विमप्र.* मेलुं, मेलुं बनेलुं (सं.मल+इल्ल)

मयलु *वसंवि.* क्रोध, [रोष]; जुओ मइलु

मयवट जुओ महिवटु

मयंक, मयंका, मयंकु *उषाह. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* चंद्र (सं.मृगांक)

मयंद *दशस्कं(१). प्रेमाका.* मृगेंद्र, सिंह

मया *आरारा.* माया, कपट; *अखाछ. अभिऊ. आरारा. *ऋषिरा.. कामा(त्रि). चंद्रवा. दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका. विमप्र.* दया, कृपा

मयाला *लावल.* कृपाळु; *नेमिछं.* मायाळु, प्रेमाळ

मयूरसिखा *आरारा(व).* मयूरशिखा, एक वनस्पति

मर *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मरे, हेरान थाय (सं.मृ-)

मरकलडुं *ऋषिरा. प्रेमाका. शृंगामं.* मरकाट, स्मित, मलकाट, आछुं हास्य

मरकलडे मुख *नरका-२.* हसता मोंए

मरकलडो *चतुचा. नरप(द).* मरकवुं ते, मंद हास्य

मरकलुं *अखाका. नरका. शृंगामं.* स्मित, आछुं हास्य

मरकलावुं *दशस्कं(१).* मरकवुं

मरकले *अखाका.* आछुं हसे

मरकलो *सिंहा(शा).* मरकलुं, [आछुं हास्य]

मरकी *आरारा.* एक मिष्टान्न, धोळी जलेबी [दे.मुरुक्कि]

मरगय *तेरका.* मरकत, [एक रत्न, नीलम]

मरगयजादर *प्राचीफा.* मरकत जेवा लीला रंगनुं जादर वस्त्र (सं.मरकत+दे.जद्दर)

मरगी *उषाह.* मरकी

मरजन, मरजंन *चतुचा. दशस्कं(१). *प्रेमाका.* मर्जन, स्नान

मरजाद *प्राचीसं.* मर्यादा, [सीमा]

मरट्ट *प्राचीसं.* गर्व, [मरड] [दे.]

मरड **अखाछ.* [गर्व]; *नरका-२.* रीस, [गर्व]

मरण लगि *आरारा.* प्राणान्तक प्रयत्नथी

मरणीक *दशस्कं(२). प्रेमाका.* मरणियो

मरत, म्रत *प्रेमाका. मदमो. कामा(त्रि).* मृत्यु

मरतक *अखाछ. अखेगी. देवरा.* मृत्यु पामेल, मरेलुं (सं.मृत+क)

मरतकवत *चित्तसं.* मृतकवत, मृत्यु पामेला जेवो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरत-वछा *देवरा.* जेने मरेलां छोकरां अवतरे छे तेवी (सं.मृत-वत्सा)
मरत्ये *अखाछ.* मृत्युए
मरमरसबद *उक्तिर.* मर्मरशब्द
मरषा *आरारा.* मृषा, खोटुं
मरहठ *उक्तिर. लावल.* महाराष्ट्र
मरहठी *प्राचीफा.* महाराष्ट्रनी स्त्री
मरहुंडीया **विक्रया.* [तल वगेरेना लाडु वेचनार] [दे.मोरंडक]
मराली *शृंगामं.* हंसी [सं.]
मरिच *षडाबा.* मरी (सं.)
मरिवा वांछइ *उक्तिर.* मरवा इच्छे
मरीइ *उक्तिर.* मरी जवाय
मरुअउ, मरुउ *आरारा(व). प्राचीसं.* मरवो (सं.मरुबक)
मरू *चंद्रवा.* मरवो
मरूअउ *उक्तिर.* मरवो (सं.मरुबक)
मरूउ **गुर्जरा. आरारा(व). नलरा. नेमिछं.* मरवो, डमरो (सं.मरुवक)
मरूउओ *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मरवो (सं.मरुबक)
मरूबक *शृंगामं.* डमरो, मरवो (सं.मरुबक)
मरेहेठा *रूस्तस.* मरेठा, [मराठा]
मरोडी **नरका.* [फेरवी, बदली]
मरोत *चंद्रवा.* मरत, [मृत्यु पामत]
मर्जन *अखाका. कृष्णबा. दशस्कं(१). प्रेमाका.* मज्जन, स्नान [सं.]
मर्दइ *उक्तिर. प्रेमाका.* चोळी नाखे, [मसळी नाखे] [सं.मृद्]
मर्ही *षडाबा.* घसी माखी, चोळी नाखी
मर्म *कादं(ध्रु).* गुह्य विधि, उपाय [सं.]
मल *लावल.* मल्ल, योद्धो; [वीर]
मलइ *उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. प्रद्युचु. वीसरा.* मर्दन करे, [मसळी नाखे] (दे.मल-)
मल-जेठी *नरका.* जेठीमल, मोटो मल्ल [सं. ज्येष्ठ+मल्ल]
मलण *तेरका.* मर्दन करवुं ते (दे.)
मलण *नरका.* मिलन
मलतयं **प्रेमाका.* [महाले छे]; जुओ मल्ह-
मळतो *दशस्कं(२).* मळतियो; जुओ असुर-मळतो
मलपिया *ऐतिका.* [उमंगमां, गौरवपूर्वक, धीमेधीमे] चाल्या
मलयगिरी *आरारा(व).* मलयागिरुं; पीळुं चंदन – तेनुं वृक्ष
मलयागर *हरिख्या.* मलय पर्वत उपर थतुं चंदनवृक्ष
मळस्नान *प्रेमाका.* शरीर खूब चोळीने करवामां आवतुं स्नान
मलहपतउ **ऐतिका.* [उमंग, ठाठ, गर्विष्ठ छटावाळो]
मलाखी *नलरा.* *अज्ञान, [*रमवाना, *रमकडाना] [*अ.मलाही]
मलाणा *हम्मीप्र.* मौलाना, मोलवी
मलार *प्राचीफा.* आनंद करावनार (दे. मल्ह-); जुओ मल्लार, मल्हार
मलियागर *प्रेमाका.* चंदन, सुखड
मलीअल *चतुचा.* मसळेलुं, लगाडेलुं [चोळेलुं]
मलीआगिरी *विक्रया.* चंदन[वृक्ष]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मलीदा *हम्मीप्र.* मलीदो, खाद्यविशेष, [चूरमुं]

मले *चित्तसं.* मळतुं आवे, बेसतुं आवे, बेसी जाय, निवेडो आवे

मळो *अखाछ.* मेल, [कचरो] [सं.मल]

मल्लाणा *हम्मीप्र.* मौलाना, मौलवी

मल्लार *प्राचीसं.* आनन्दजनक [दे.मल्ह-]; जुओ मलार, मल्हार

मल्लि *आरारा(व).* मोगरो (सं.मल्लिका)

मल्ली *आनंस्त.* *मल्लयुद्ध करनार, [मर्दन करनार]

मल्ह- *प्राचीफा.* महालवुं, [आनंद करवो] [दे.]

मल्हार, मल्हारु *ऐतिका. प्राचीफा.* आनंद करावनार (दे.मल्ह-); जुओ मलार

मल्हावइ *जिनरा.* लाड लडावे; *चारफा.* शोभावे, [दीपावे]

मवइ *अखाछ. उक्तिर.* मापे (सं.मा-, मि-)

मवावि *ऋषिरा.* मपावे, गणे

मशक *प्रेमाका.* मच्छर [सं.]

मशकलो *अखाछ.* पालीस करवानुं साधन, [ओपणी] [अ.मिसकल]

मशारां *रूस्तस.* सुलेह [अ.मश्वुर]

मशे *दशस्कं(२). नरका. प्रेमप.* मिषे, बहाने, [निमित्ते]

मश्रू *विमप्र.* एक प्रकारनुं कापड, मशरू [अ.मश्रूअ]

मषी *ऋषिरा.* मेश (सं.)

मस *अखाछ. कादं(शा). नरका. प्रेमाका.* बहानुं; *आरारा.* कारण (सं.मिष)

मसउ *उक्तिर.* मच्छर (सं.मशकः, मषः)

मसकीन *आरारा.* गरीब (फा.मिस्कीन)

मसग (मसगति) **प्राचीफा.* [महेनत, श्रम] [अ.मशक्कत]; जुओ मसाकति

मसजर *जिनरा.* वस्त्रविशेष

मसतग *देवरा.* मस्तक, माथुं

मसमसता **नरका.* [होंशपूर्वक लचकाती चाले चालता]

मसलइं *आरारा.* मसळे [सं.मष्]

मसवाडउ *आरारा. उक्तिर. कस्तुवा. नेमिछं. मदमो. रूस्तस. वाग्भवा.* मास, महिनो; *गुर्जरा.* मासिक वेतन (*सं.मासवृत्तक) [सं.मास+पाटक/वाटक]

मसवासी *अंबरा. *कृष्णच. *प्रबोप्र.* एक प्रकारनी तापसी [*एक स्थळे एक महिनो रहेनारी]

मसवासिणी *अंबरा.* एक प्रकारनी तापसी, [*एक स्थळे एक महिनो रहेनारी तापसी]

मसा *गुर्जरा. विराप.* मच्छर (सं.मशक)

मसाकति *जिनरा.* परिश्रम, [कष्ट, तपस्या] [अ.मशक्कत]; जुओ मसगति

मसाहणी *उक्तिर. प्रेमाका.* सेनापति (सं.महा-साधनिक)

मसि *उक्तिर. गुर्जरा.* मेश, [काजळ] (सं. मषी)

मसि *आरारा. विक्ररा.* मिषे, बहाने, रूपे

मसी *प्रेमाका.* मेश

मसीजणउ (मसीभाजणउ) *उक्तिर.* शाहीनो खडियो (सं.मषीभाजनम्)

मसीत *हम्मीप्र.* मस्जिद

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मसीभाजणउ जुओ मसीजणउ

मसीयारो *कस्तुवा. वेताप.* मुसारो, मासिक पगार

मसु *नलरा.* मच्छर (सं.मशक)

मसे मसे *प्रेमाका.* जुदीजुदी रीते, वारंवार, [*लालित्यपूर्वक, *धीमेधीमे]

मह *गुर्जरा. तेरका.* मारुं (अप.; सं.मम)

महइला *लावंल.* महिला

महइषी *लावल.* भेंस (प्रा.महिषी)

महउ *लावल.* महा

महऋषि *षडाबा.* महा ऋषि

महतउ *उक्तिर. *प्राचीसं. *षडाबा.* महामात्य, मंत्री, महेतो (सं.महांत)

महतउ, महितु, महुतउ *गुर्जरा.* मंत्री (सं.महत् परथी)

महतार *प्राचीसं.* पिता (म.महतारा)

महती *गुर्जरा.* मंत्रीनी पत्नी

महमयण *प्रद्युचु.* कृष्ण (सं.मधुमथन)

महमहइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मघमघे, महेके (दे.)

महराब *हम्मीप्र.* महेराब, (मस्जिदमां) कमानना आकारनुं चणतर

महलावइए *ऐतिका.* [आनंद पमाडे, रंजन करे]; जुओ मल्हावइ

महलां *आरारा.* महेल

महलुउ, मुहलु *प्रद्युचु.* मोवडी, [मोटेरा] [दि.महल्लय]

महव्वय *ऐतिका.* महाव्रत

महंत *आरारा. हरिख्या.* उत्तम, श्रेष्ठ, मोटुं; *तेरका.* शोभतुं (प्रा., सं.महान्त)

महंतपणुं *अखाका.* मोटाई, [महत्ता]

महाकारण *अखाछ.* ब्रह्म [सं.]

महाणसि, महाणसी *ऐतिका. षडाबा.* रसोडुं, [रांधवानां वासणो], तेने लगती (सं.महानस)

महातम *अखेगी.* माहात्म्य, महिमा

महादिक *अखाका.* मादक [द्रव्य]; जुओ मादक

महादिशा *दशस्कं(१).* महादशा

महादे *वीसरा.* राणी (सं.महादेवी)

महानिधि, महानिध्य *अखाका. अखाछ. चित्तसं.* महाभंडाररूप परब्रह्म [सं.]

महाभाग *प्रेमाका.* महाभाग्यशाळी [सं.]

महामुंडा *प्राचीसं.* ?, [देवालयना स्थापत्यनुं कोई अंग]

महारंभ *प्रेमाका.* *महान आरंभ, [*मोटुं युद्ध]

महारिखि *विराप.* महाऋषि

महारिसि *गुर्जरा.* महाऋषि

महारुंख *आरारा(व).* थोर (सं.महावृक्ष)

महालणा (महालणादे) **मोसाच.* [एक स्त्रीनाम]

महाव *अखेगी.* माधव

महासईय *गुर्जरा.* महासती

महासति *वीसरा.* [जेनुं शकुन लेवामां आवे छे तेवुं] एक पक्षी, [भैरवी के रूपारेल]

महासत्तु *षडाबा.* महात्मा (सं.महासत्त्व)

महाहव *गुर्जरा.* मोटुं युद्ध (सं.)

महांत *नरका. वाग्भबा.* महान, उत्कृष्ट [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महिकार *आरारा.* महेकवुं ते

महिखी *शीलक.* भेंस [सं.महिषी]

महिगल हाथी (सं.मदकल); जुओ मइगल

महिण *उषाह.* समुद्र [सं.महार्णव; हिं.]; जुओ महिणारंभ

महिणउ *जिनरा.* महेणुं, [कलंक]

महिणारंभ *उषाह.* समुद्रमंथन; जुओ महिण

महितउ *आरारा. उषाह. विक्ररा. विमप्र. सिंहा(म).* महेतो, मंत्री, प्रधान (सं.महत् परथी), जुओ महतउ

महिम *गुर्जरा.* महिमा

महिमहि *आरारा.* मघमघे

महिमानिलउ *ऐतिरा.* महिमावंत [सं. महिमानिलय]

महिमूर *ऐतिरा.* अतिशय [*दे.महप्पुर]

महियल *ऐतिका. तेरका. प्राचीफा. वीसरा.* पृथ्वीतल, पृथ्वी, भूमि (सं.महीतल)

महियारां *दशस्कं(१).* गोवाळां

महियां *गुर्जरा.* मही, दहीं (सं.मथित)

महिर *आनंस्त. आरारा. ऐतिका. प्राचीफा. शृंगामं.* महेर, दया, कृपा

महिराण *ऐतिका.* समुद्र; जुओ महिरांण, महेरांण

महिरामण *कादं(शा).* महासागर (सं. महार्णव)

महिरां *अभिऊ.* माह्यरामां (सं.मातृगृह)

महिरांण *प्राचीफा.* महासागर; जुओ महिराण

महिला *विमप्र.* मांह्यला, अंदरना

महिलि *उषाह.* [महिला], दासी

महिलि *नलाख्या.* मूके (प्रा.मिल्ल-, मेल्ल-)

महिली *गुर्जरा.* महिला

महिवट्टु, महिवट्ट, मयवट, मइवट्ट *प्राचीफा. *प्राचीसं. *स्थूलिफा.* सुगंधी पदार्थ वडे कपाळ उपर कराती आड; जुओ मावटी

महिषी *अखाका. नरका. प्रेमाका.* भेंस [सं.]

महिषीना कुंवरनुं *नरका.* पाडानुं

महिषु *उक्तिर.* पाडो (सं.महिषः)

महिसि *षडाबा.* भेंस (सं.महिषी)

मही *अभिऊ. अखाका.* पृथ्वी [सं.]

मही *अखाका. *वसंफा(ल). वसंवि.* दहीं (सं.मथित)

महीअल, महीयल *ऐतिरा. गुर्जरा. विक्ररा.* पृथ्वीपट, पृथ्वी [सं.महीतल]

महीचा *नरका.* दहींनुं

महीडारो *नरका.* महीनुं, दहींनुं

महीमंथन *मदमो.* माखण (सं.मथित+ मथन)

महीय *वसंफा.* दहीं (सं.मथित)

महीयल *आरारा. ऐतिका. नेमिछं. लावल. सिंहा(म). स्थूलिफा.* महीतल, पृथ्वी, धरती; जुओ महीअल

महीयां *विमप्र.* [मूर्ख, अज्ञानी] [रा.]

महुअर *दशस्कं(१). वसंवि.* मधुकर, भमरो

महुअर, महुअरि, महुवर, महूअरि *अखेगी. कृष्णच. कृष्णबा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. नलरा. प्रेमाका.* वांसळी, मोरली, मौवर

महुआल *उक्तिर.* मधपूडो (सं.मधुजाल);

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ महूआल

महुकम *नलरा.* समर्थ (अ.मुहकम)

महुत *नलरा. विमप्र.* मोटाई (सं.महत्त्व)

महुतउ जुओ महतउ

महुय *षडाबा.* महूडो [सं.मधुक]

महुयर *तेरका. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* मधुकर, भमरो

महुर *ऐतिका. गुर्जरा. तेरका.* मधुर

महुरउ *आरारा.* झेर (सं.मधुर); *उक्ति.* मधुरुं

महुरप्पणु *शृंगामं.* मधुरपणुं

महुलु जुओ महलुउ

महुलेठी *उक्ति.* जेठीमध (सं.मधुयष्टिः)

महुवर जुओ महुअर

महूअ, महूयडा *आरारा(व).* महूडो (सं. मधूक)

महूअउ *उक्ति.* महूडो (सं.मधूकः)

महूअर *ऐतिका. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मधुकर, भमरो

महूअरि जुओ महुअर

महूआल *अंबरा.* मधपूडो [सं.मधुजाल]; जुओ महुआल

महूछव, महोछव *आरारा.* महोत्सव

महूय *ऐतिका.* मधूक, महूडो

महूयडा जुओ महूअ

महूयर, महूयरि *प्रद्युचु. प्राचीफा. हरिवि.* वांसळी, महुवर

महूरत *विमप्र. शृंगामं.* मुहूर्त

महेरांण, मेहेरांण *मदमो.* महेरामण, सागर; जुओ महिराण

महूंता *षष्टिप्र.* मंत्री, महेता

महेला *प्रेमाका.* महिला; जुओ महेली

महेलि *प्राचीफा.* स्त्री (सं.महिला)

महेली, मेहेला *प्राचीका.* स्त्री (सं.महिला)

महेलीय *गुर्जरा.* महिला

महेलीयां *ऋषिरा.* महिलाओ, स्त्रीओ

महेंद्र *वेताप.* [महेन्द्र पर्वत जेटलो] अतिशय, प्रचंड; जुओ मेंद्र

महोच्छव *आरारा. गुर्जरा.* महोत्सव; *कादं(ध्रु).* [महोत्सव], नाट्य

महोछव जुओ महूछव

महोट्म *दशस्कं(१).* मोटम, मोटाई

महोर (बाजीगर महोर) **अखाछ.* [शेतरंजना पासा चलावनार (खेलाडी)], [कपटी, धूर्त]

मह्म *पंचवा.* मने (सं.मह्यम्)

मं *उषाह.* मने (सं.माम्)

मंख *ऐतिका.* [राजदरबारी भाट], एक भिक्षुक जाति [सं.]

मंग- *तेरका.* मागवुं (सं.मार्ग)

मंगल *लावल. वीसरा.* मंगल गीतो

मंगलचार, मंगलच्यारि *प्राचीसं. विमप्र.* मंगलाचार, मांगलिक क्रिया

मंगलाच्यार *वीसरा.* [मांगलिक क्रिया], मांगलिक गीत (सं.मंगलाचार)

मंगलेवउ *उक्ति.* मांगलिक दीवो – ७ वाटनी आरती पछी १ वाटना दीवानी आरती (सं.मंगलदीपक) [जै.]

मंच *गुर्जरा.* मांचडो, ऊंचे ऊभुं करेलुं आसन (सं.); *विक्ररा.* खाटलो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंचक *प्रेमाका. विक्ररा.* खाटलो, पलंग

मंजन *प्रेमाका.* स्नान [सं.मज्जन]

मंजार *उक्तिर.* बिलाडो (सं.मार्जार)

मंजारि, मंजारी *आरारा. कामा(त्रि).* बिलाडी (सं.मार्जार)

मंजीठ *नलरा.* मजीठ, [लाल रंग आपती वनस्पति]; लाल रंग (सं.मंजिष्ठा)

मंजीर *प्राचीफा.* झांझर (सं.)

मंजूस *उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा.* पेटी (सं.मंजूषा)

मंजूसडी *शृंगामं.* पटारो (सं.मंजूषा)

मंझार, मंझारि *अखाका. आरारा. वीसरा.* मध्ये, -मां, अंदर [*सं.मध्य+कार]

मंड *अखाका. अखाछ. अखेगी.* मांडणी, रचना

मंडइ *अभिऊ. उषाह. ऋषिरा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा.* मांडे, आरंभे, करे, मूके; *उक्तिर. गुर्जरा.* शणगारे, शोभावे (सं.मंडयति)

मंडक *लावल. *षडाबा.* एक प्रकारनी रोटली, [मांडा, पूडा] (सं.)

मंडण *आरारा. गुर्जरा. तेरका. विराप.* मंडन, शणगार सजवा ते, [शोभा]

मंडणउ *तेरका. प्राचीफा.* अलंकार, शोभा [करनार], विभूषक (सं.मंडनक)

मंडणि, मंडणी *ऐतिरा. नेमिछं.* शोभा (सं.मंडन-)

मंडल *तेरका.* मंडळ, समूह; [प्रदेश]

मंडली, मंडलीक *उषाह. विक्ररा.* मांडलिक, खंडियो राजा, [प्रादेशिक अधिपति]

मंडव *गुर्जरा. प्रेमाका.* मंडप

मंडा जुओ गुलमंडा

मंडाण *आरारा.* साजसरंजाम; *आरारा. चारफा. नेमिछं.* तैयारी, योजना, व्यवस्था; *नेमिछं.* रचना, [घटना], *ऋषिरा.* *आरंभ, [मांडवुं ते, करवुं ते]; *प्रेमाका.* आरंभ; *गुर्जरा. देवरा. विमप्र.* मांडणी, रचना, [फेलावो]; *हरिख्या.* पायो, [रचनानो मूळ आधार]

मंडावइ *गुर्जरा. नेमिछं.* करावे; *प्रेमप.* लखावे

मंडावी *आरारा(व).* मांडवी, मगफळी ?

मंडि *तेरका.* मांड, पराणे (अप.; सं.*मर्देन)

मंडी *कादं(शा).* *शोभित, [थई] (सं. मंडित)

मंड्य *अखाका. चित्तसं.* मांडणी, रचना, सृष्टि

मंणीपुर *मदमो.* मणिबंध, कांडुं

मंत *जिनरा.* मंत्र

मंति *तेरका.* मंत्री

मंत्र *हरिख्या.* खानगी मसलत (सं.)

मंत्रइ *उक्तिर.* मंत्रणा करे, परामर्श करे (सं.मन्त्रयते)

मंत्रवी *आरारा.* प्रधानमंत्री (सं.मंत्रिपति)

मंत्रासरु *उक्तिर.* मंत्रणाखंड (सं.मंत्रावसरः)

मंत्रींदु *षडाबा.* मुख्य मंत्री (सं.मंत्रीन्द्र)

मंत्रीसर *गुर्जरा. लावल.* मंत्रीश्वर

मंत्रीस्वर *आरारा.* मंत्रीश्वर

मंत्रेइ *आरारा.* ओरमान (ग्राता) (रा.); जुओ मात्रेई

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंथाणउ *उक्ति.* रवैयो (सं.मन्थानक)

मंदधी *अखाका.* मंद बुद्धिवाळा

मंदर *कामा(त्रि).* *चतुचा.* *देवरा.* घर, मकान (सं.मंदिर)

मंदरसा *हम्मीप्र.* मदरेसा, निशाळ

मंदिर *प्रेमप.* घर

मंदोवरी *मदमो.* मंदोदरी

मंन-धारण *प्रेमाका.* दिलासो, आश्वासन

मंमाणी *प्राचीफा.* एक [राजस्थानना मकरान प्रदेशनी] खाण, ज्यांथी उत्तम आरसना पथ्थर नीकळता हता

माइ *चित्तसं.* माया

माइ, माई *उक्ति.* *गुर्जरा.* *चित्तसं.* *तेरका.* *लावल.* *वसंफा.* *वसंवि.* *वसंवि(ब्रा).* *वीसरा.* माता

माइघरिहि *आरारा.* माह्यरामां (सं.मातृगृह)

माइणी *आरारा(व).* इंद्रामणी (सं. मृगादनी) ?, आंबळानुं वृक्ष (दे. माइंदा) ?

माई **उपबा, विमप्र.* 'अ'कारादि वर्णमाळा (सं.मातृका)

माई जुओ माइ

माईय (माईयहायी) *उक्ति.* मासियाई (सं.मातृष्वस्रीय); जुओ मासिहाई

माउणो *पंचवा.* मनुष्य (सं.मानुष)

***माउल** *उषाह.* माळा (सं.माला)

माउलउ *उक्ति.* *गुर्जरा.* *विमप्र.* *षडाबा.* मामो (सं.मातुल)

माउलाणि जुओ मुलाणि

माउसाल *प्राचीसं.* मोसाळ, मातुलगृह [सं. मातृशाला]

माउलाणि जुओ मुलाणि

मा(उ)लाही *उक्ति.* मोळाई, मामानुं (सं.मातुल परथी)

माकडी *दशस्कं(२).* मांकडाना वाननी, [भूरा रंगनी]

माकण *उक्ति.* मांकड, एक जंतु (सं. मत्कुणः)

माकंद **ऐतिका.* [आम्रवृक्ष] [सं.]

माग *आरारा.* मार्ग, रीति, प्रणालिका; *लावल.* **वसंफा.* *वसंवि.* *वसंवि(ब्रा).* मार्ग

माग, माघ *प्राचीफा.* *हरिवि.* सेंधो (सं.मार्ग)

माग तुं मान *प्रेमाका.* विनंती कर; जुओ मान मागवुं

मागध *ऋषिरा.* स्तुतिपाठक, भाटचारणो [सं.]

मागी लावि *आरारा.* मागी ले

माघ *मदमो.* माघकाव्य, शिशुपालवध

माघ जुओ माग

माचइ *आनंस्त.* *उक्ति.* *नरका.* *नलरा.* *नेमिछं.* *राचे, *आनंदित थाय, [गर्व धरे, फुलाय, मत्त बने]; *गुर्जरा.* *तेरका.* *देवरा.* माते, गर्व धरे, [फुलाय] (सं.माद्यति)

माछ, माछा *उक्ति.* *उपबा.* *वीसरा.* माछली (सं.मत्स्य)

माछन लेवुं *दशस्कं(१).* मछन लेवुं, आचमन लेवुं; जुओ मछण

माछा जुओ माछ

माछिली *गुर्जरा.* *नलरा.* माछली (सं.मत्स्य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परथी)

माछी *आरारा. लावल.* माछली

माजणउ *उक्तिर.* स्नान (सं.मज्जन)

माजन *कृष्णबा.* अंदाज, अटकळ; जुओ माझ

माजम *सिंहा(शा).* भांगना सत्त्वमां बीजां वसाणां नाखी बनावेलो केफी पदार्थ (अ.मअजून; म.माजूम)

माजा *मदमो.* प्रमाण, [माप] (सं.मर्यादा)

माज्झिह्रे *गुर्जरा.* मध्ये, -मां (सं.मध्यमे)

माझ *उक्तिर. चतुचा.* मध्य

माझ (माझन) *नलरा.* अंदाज, [माप, सीमा] [अ.मवाजीन]; जुओ माजन

माझारी *गुर्जरा.* -मां (सं.मध्य परथी)

माझि *अंबरा. तेरका. प्राचीसं.* मध्ये, -मां, मांहि, अंदर, वच्चे

माझिला *गुर्जरा.* अंदरना (सं.मध्य+इल्ल)

माझीम रात्य *सिंहा(शा).* मधरात

माट *नरप(द). प्रेमाका. लावल.* माटलुं

माटडी *लावल.* माटली (सं.मृत्तिका)

माटी *अखाका. चतुचा. नरका. *विमप्र.* मरद, पुरुष, बहादुर

माटीडा *प्रेमाका.* बहादुर, मरद

माटीपणउं *विक्ररा.* मर्दाई

माटो *लावल.* माटलां [प्रास माटे 'माट'नुं माटो]

माठउं *प्रद्युचु. विमप्र. षडाबा.* ढीलुं, [सुस्त], ओछुं

माठी *सिंहा(शा).* माठेलुं, घडेलुं (सं.मृष्ट), [*घडेलो पथ्थर के ईंट]

माडुं हींडवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* खोटुं आचरण करवुं

माड *विक्ररा.* माळ; *उषाह.* मेडी[वाळुं घर] (दे.माडिअ)

माडइ *गुर्जरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि-(ब्रा).* आरंभे, मांडे, [करे] (सं.मंडयति)

माडली *पंचवा.* पोची, [शिथिल, सडी गयेली] [सं.मर्दित]

माडिय *प्राचीसं.* माता, माडी

माडी **अखाछ.* [मांडीने, स्थापीने]; जुओ माडइ

***माडो** *पंचवा.* मोटो, [जबरदस्त, भयंकर] [रा.माठौ]

माण *कादं(ध्रु). कादं(शा).* थोडुं, जराक (सं.मनाक्)

माण *अभिऊ. गुर्जरा. चारफा. तेरका. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* मान, गर्व, अभिमान; *आरारा.* मान, [आदर]

माणइ *नलरा. नलाख्या.* म आणे, न लावे (सं.मा+आनयति)

माणइ *वीसरा.* माने, स्वीकारे (सं.मानयति)

माणणि *तेरका.* मानिनी

माणस वहोणो *प्रेमप.* मानवसहज विवेक विनानो

माणसामउ *उक्तिर.* [?] (सं.मनुष्यात्मकः)

माणिक *गुर्जरा. पंचवा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* माणेक (सं. माणिक्य)

माणिण *ऐतिका.* गर्वथी

माणिणि *वसंफा(ल).* मानिनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणिणी-माण *वसंवि(ब्रा).* मानिनीनो दर्प (सं.मानिनीमान)

माणिस *नलाख्या.* माणस (सं.मानुष)

माणी *उक्तिर. पंचवा.* बार मणनुं तोल, [एटलुं समावे एवुं पात्र] (सं.माणिका); जुओ मांणीक

माणुस *गुर्जरा. षडाबा.* माणस (सं.मानुष)

माणुसहाणि *गुर्जरा.* माणसनी गंध (सं. मानुषघ्राणिका)

माण्य *अखाका.* माण, गागर

मातपण *उपबा.* मदीलापणुं [सं.मत्तत्वन]

मातम *अखाछ.* माहात्म्य, मोटाई

मातर सात *लावल.* सात मातृका [शक्तिदेवी] – ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, वाराही, आझेयी अने इन्द्राणी

मातरा *चंद्रवा.* सामग्री, [मालमत्ता, धन] [सं.मात्रा]

मातउं *आनंस्त. प्रेमाका.* हृष्टपुष्ट; *प्रेमाका.* उदार, मोटुं; *अखाका. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नरका. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप.* मत्त, [घेलुं बनेलुं], [सघन बनेलुं]

मातंग *अखाका. नरका. प्रेमाका.* हाथी [सं.]

मातुल *प्रेमाका.* मामा [सं.]

मात्रा विना *उक्तिर.* पात्र – वासण विना (सं.मात्रकं विना)

मात्रेई *आरारा.* ओरमान (माता) (रा.) [सं.मातृका]; जुओ मंत्रेइ

माथासरुं *चित्तसं.* मथाळुं, माथेनो आधार

माथे थवुं **प्रेमाका.* [चडी आववुं]

मादक, मादिक *अखाछ. चित्तसं.* मद – केफ चडावनार; मद – केफ चड्यो होय एवी व्यक्ति; *चित्तसं.* मदीलापणुं; जुओ महादिक

मादकवान *चित्तसं.* मदीली [नशीली] व्यक्ति

मादल *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. नरका. प्रद्युचु. प्राचीफा. सिंहा(शा).* एक वाद्य, मृदंग (सं.मर्दल)

मादळियुं, मादलीउं *नलरा. प्रेमाका. लावल.* [डोकनुं] एक घरेणुं (सं.मर्दल)

मादिक जुओ मादक

माध जुओ मझार

माधुगरी *प्राचीका.* भिक्षा (सं.माधुकरी)

मान *अखाका. ऐतिरा. *गुर्जरा. लावल.* प्रमाण, माप [सं.]; *चित्तसं.* माप, धोरण, मोभो, स्थान, परिमाण, जथ्थो; जुओ मोहन मांन

मान *प्रेमाका.* ताल[नो एक विराम] [सं.]

मान *अखाका. गुर्जरा. प्रेमाका. लावल.* अभिमान; *नरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अभिमान, रीस, प्रणयप्रकोप (सं.)

मानअं *षष्टिप्र.* (तुं) माने छे

मानइ *आरारा. उक्तिर. लावल. वीसरा.* मान आपे (सं.मन्यते)

मान मागवुं *दशस्कं(१). नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* विनंती, आजीजी के कालावाला करवा; जुओ माग तुं मान

मानमुहुत जुओ मुहुत

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानरस *नरका.* *मानिनी – गोपीओनां अभिमान तजाववानो रस, [गोपीओनी प्रणयरीसना प्रसंगनो रस]

मानवी *गुर्जरा.* [मानव]स्त्री

मान-शुकन *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अपशुकन; जुओ मुहुत

मानसी *प्रेमाका.* मनना, [हृदयना]

मानी *प्रेमाका.* मानीती, [मान आपेली]

मानीनता *अखाका. अखाछ.* मानीपणुं, अहंभाव

मानुख *दशस्कं(१).* मनुष्य

मानुस *कामा(त्रि).* मनुष्य

मानेश धे जुओ शधे

माप *नंदब. रूस्तस.* माफ

माम *अखाका. आरारा. उषाह. चतुचा. प्रद्युचु. प्रेमप. प्रेमाकां. मोसाच. ललिरा. लावल. विमप्र. वीसरा.* मोटाई, गौरव, स्वमान, प्रतिष्ठा, मोभो, *टेक, *ममत (सं.माहात्म्य) (सं.ममत्व)

मामणा वचन *जिनरा.* बाळकोनी काली-घेली, तोतडी वाणी [दे.मम्मण]

मामहिरु *विमप्र.* मामेरुं [गु.मामा+सं.गृह]

माय *अखाका.* माया

माय *गुर्जरा. षडाबा.* मा (सं.माता); *विक्ररा.* स्त्रीने संबोधन, मा

मायताय *ऐतिरा. ऋषिरा. लावल.* मातापिता [सं.माततात]

मायडि *देवरा.* माडी (सं.माता+डी)

मायंड, मायंडू *ऐतिका. प्राचीसं.* मार्तंड, सूर्य

मायंद *प्राचीसं.* आम्रवृक्ष (सं.माकन्द)

माया *नेमिछं. लावल. शृंगामं.* माता

माया *आरारा.* कपट; चमत्कार; जुओ माया मांडे

मायामउ *षडाबा.* मायावी, बनावटी (सं. मायामय)

माया मांडे ०*प्रेमाका.* कावतरां करे, [कपट करे]; जुओ माया

मायावी **हरिख्या.* [कपटवेश धारण करनार]

मायावीआ *उपबा.* कपटी (सं.मायावी)

मायी *आनंस्त.* मायावाळुं, [रागवाळुं]

मायुंगोयुं *उपबा.* वाकुंचूकूं, [आडुंअवळुं, छळकपटभर्युं] (सं.मायित+गोपित)

मार *उषाह.* सख्त मारनी घांटी, [अडचण]

मार *तेरका. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कामदेव (सं.)

मारगु *प्रेमाका. वेताप.* वटेमार्गु, मुसाफर

मारणहार *उक्तिर. प्राचीसं.* मारनार

मारणी *आरारा.* हत्या

मारमारगउदीपक *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कामना मार्गने प्रकाशित करती (सं. मार+मार्ग+उद्दीपक)

मारविकार *लावल.* मार(काम)ना विकार, विषयवासना

मारिवउ *उक्तिर.* मारवुं

मारीतउं *उक्तिर.* मरातुं, हणातुं

मारुआड *अखाछ.* मारवाड

मारुआडि *नलाख्या.* मारवाड, मरुभूमि; सूको प्रदेश

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मारुणि *ऐतिका.* मारवाडनी
मारुत *चित्तसं.* मरुत, पवन
मारुवी *ऋषिरा.* मारवाड देशनी स्त्री
मारू *उक्तिर. वीसरा.* मारवाड
मारो *गुर्जरा.* कामदेव (सं.मार)
मारोमारि *प्राचीसं.* मारामारी
मार्ग्गण *गुर्जरा. विराप.* तीर (सं.मार्गण)
मार्जन *प्रेमाका.* साफ करवानी क्रिया [सं.]
माल *अखाका.* *विसात, [आनंद]; जुओ मालणो, म्हाल
माल *तेरका.* माळियुं, मांचडो (दे.)
माल *गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा.* पहेलवान (सं.मल्ल)
माळ *वीसरा.* वनप्रदेश
माळ *वीसरा.* एक पक्षी
मालणो *नरका.* महालनार; जुओ माल
मालवराउ *गुर्जरा.* मालवदेशनो राजा
मालविणी *ऋषिरा.* मालवदेशनी स्त्री
मालविद्या *उषाह.* मल्लविद्या
मालाखाड *उषाह. दशस्कं(२). नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल.* मल्लोनो अखाडो, व्यायामशाळा (सं.मल्ल+अक्षवाट)
मालिया *ऐतिका.* [माळवाळा] महेल
मालीउं *अभिऊ. नलाख्या.* माळ, मजलो; *लावल. [माळवाळां मकान] [दे. माल]
मालुकार *मदमो.* वणकर, ढेड
मालोवम *ऐतिका.* मालोपम
माल्हइ *गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. प्राचीफा.* महाले, आनंद करे, आनंदमस्तीथी घूमे
माबटी *प्राचीफा.* *स्त्रीनी सेंथी उपरनो एक अलंकार, [*कपाळ पर कराती सुगंधी पदार्थनी आड]; जुओ महिवटु
मावीत *जिनरा.* मातापिता, मावतर
मावीत्र *षडावा.* मातापिता (सं.मातृपितृ)
मावीत्रह *गुर्जरा.* मावतर (सं.मातृ+पितृ)
मासउ *उक्तिर.* आठ रतीनुं वजन (सं. माषकः)
मासकल्प *उपवा.* एक स्थाने एक मास रहेवानो जैन साधुनो आचार (सं.)
मासमउ *उक्तिर.* महिनानो गाळो पूरो करतो (दिवस)
मासिक कर्म *प्रेमाका.* जन्म पछी एक महिने करवानो संस्कार – धार्मिक विधि
मासिहाई *उक्तिर.* मासियाई (सं.मातृष्वस्रीयः); जुओ माईय
मासीध जुओ अष्ट मासीध
मास्याही *उक्तिर.* मासियाई (सं.मातृ ष्वस्रीय)
माह (सीत-जुमाह) *लावल.* [*सीताने जोवा आवनार, *सीतानी भाळ लेवा आवनार] [सं.सीता+फा.नुमा]
माहइं *आनंत.* -मां
माहण *आरारा. जिनरा.* ब्राह्मण (सं.माहन)
माहणी *आरारा.* ब्राह्मणी
माहरि *विमप्र.* माह्यरामां
माहव *कृष्णवा. दशस्कं(२). नेमिछं.* माधव, कृष्ण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माहंत *अखाछ. अखेगी. कादं(शा).* महंत, महापुरुष, महात्मा [सं.]

माहा *नलाख्या. रूस्तस.* महा, मोटुं

माहाअग्नि *चित्तसं.* विश्वाग्नि, विश्वमां व्याप्त अग्नि

माहाजंम *मदमो.* माझम, [मध्य]

माहानिध्य *चित्तसं.* महानिधि, [महाभंडार-रूप] ब्रह्म

माहाले *नलाख्या.* महाले, माणे, [आनंदथी फरे]

माहाव *अभिऊ. दशस्कं(२).* माधव, कृष्ण

माहावके *चतुचा.* माधव पासेथी

माहावर * *नरप.* [लाखनो रंग, जेनाथी स्त्रीओ पानी रंगे छे] [हिं.महावर]

माहि, माहिं *उपबा. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* अंदर, -मां (सं.मध्य)

माहि थिकी *उपबा.* -मांथी

माहिलउ *उपबा. नलरा. वीसरा. षडाबा.* अंदरनुं (सं.मध्य+ल)

माहिल्युं *उक्तिर.* मांहिलुं, अंदरनुं

माहिं जुओ माहि

माहे, माहें *वीसरा.* -मां (सं.मध्य)

माहेरुं *प्रेमाका.* [माह्यरुं], लग्ननी विधि करवानो मंडप

माह्रि *नलाख्या.* मारे

मांकड *नलरा. रूपच.* मांकडुं, वानर [सं.मर्कट]

मांकडी *षडाबा.* घंटीनुं लोढा के लाकडानुं चोकठुं [जेमां घंटीनो खीलो रहे छे] (सं.मर्कटी)

मांकुण *उक्तिर. षडाबा.* मांकड (सं.मत्कुणः)

मांग *नरका. मदमो. सिंहा(शा).* सेंथो (सं. मार्ग)

मांचउ *उक्तिर.* खाटलो (सं.मंचकः); *नलाख्या.* मांचडो, ऊंची बेठकोनी मांडणी

मांची *आरारा. उक्तिर. नरका. प्रेमाका.* खाटली (सं.मंचिका)

मांजर *आरारा. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि.* मंजरी

मांजरि *उक्तिर.* मंजरी

मांजार *दशस्कं(२).* मांजर, मंजरी

मांजार, मांझार *प्रेमाका.* बिलाडो [सं.मार्जार]

मांझ *प्रेमाका.* मांहे, मध्ये

मांझार जुओ मांजार

मांटिय *प्राचीसं.* सुभट, [मर्द]

मांटी *आरारा.* मर्द, पति; *ललिरा.* मरद, पुरुष; *उषाह.* मरद, [बहादुर पुरुष]

मांड *उक्तिर. वीसरा.* चोखानुं ओसामण (सं.मंड)

मांड *अखाका. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं. मदमो. विराप.* बळपूर्वक, पराणे (दे. मड्ढा); *प्राचीफा.* *मुश्केलीए, *मांडमांड, [पराणे]

मांडइ *गुर्जरा.* आरंभे, शणगारे, [रचे, करे]; *तेरका.* मांडे, [शरू करे]; *हरिवि.* मंडित करे; *अभिऊ.* मांडे, मूके; *आरारा.* गोठवे; *उपबा.* लखे, [मूके] (सं.मंड्)

मांडइ *गुर्जरा.* बळपूर्वक, [पराणे]

मांडण *चतुचा. नलरा.* शणगार (सं.मंडन)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांडणउ *उक्ति.* शृंगार, सजावट; *जिनरा.* [मांगलिक प्रसंगे घर-आंगणे करवामां आवतां] चित्रांकन

मांडलउं **षडाबा.* [चोक्कस परिस्थितिमां करवामां आवती हाथ हलावीने थती जैन क्रिया]; *उपबा. हरिवि.* मंडळ, समूह

मांडवीआ *विमप्र.* जकातना नाकेदारो

मांडहउ *वीसरा.* मांडवो (सं.मंडप)

मांडहिय *उक्ति.* बळपूर्वक, पराणे

मांडा *अभिऊ. उक्ति.* पूरणपोळी जेवी एक प्रकारनी रोटली, [पूडा] [दे.मंडक]

मांडी *आरारा. उक्ति. गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* पूरणपोळी जेवी रोटली, [पूडा]

मांडो *मोसाच.* एक गायक जाति, [चारण जाति]

मांडो *नरका.* ?

मांणउ *ऋषिरा.* न लावशो (सं.मा+आनय)

मांणीक *चंद्रवा.* बार मणनी माणी; जुओ माणी

मांणे *चंद्रवा.* माने

मांतरा *सिंहा(शा).* महामात्र, महेताजी

मांन *लावल.* अभिमान

मांनुनी *मदमो.* मानिनी

मांम *आनंस्त. ऋषिरा. कामा(शा). गुर्जरा. विराप. वीसरा.* [महत्त्व], गौरव, टेक (सं.माहात्म्य) **वीसरा.* [गौरवपूर्वक, आदरपूर्वक]

मांहलु *नलाख्या.* मांह्यलो, अंदरनो (सं.मध्य परथी)

मांहां *नलाख्या.* -मां, अंदर

मांहारू *मदमो.* माह्यरुं, [लग्नमंडप]

मि *अभिऊ. कादं(शा). नलाख्या.* में (सं. मया)

मिइं *लावल.* में

मिगल जुओ मदमिगल

मिच्छत्त *जिनरा.* मिथ्यात्व (गुणस्थान) [ज्यां सत्य तत्त्व पर मुख्यत्वे अश्रद्धा छे एवी आत्मावस्था] [जै.]

मिच्छात *जिनरा.* मिथ्यात्व, [सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा] [जै.]

मिच्छादुक्कडं *ऋषिरा.* मारुं दुष्कृत्य मिथ्या थाओ [जै.]

मिछत *ऐतिका.* मिथ्यात्व, [सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा] [जै.]

मिछी **विमप्र.* [*मिथ्यात्वी, * अन्यमती; *म्लेच्छ] [जै,]

मिटाई *आरारा.* मीठाई

मिणा *देवरा.* मीण [जेवा कोमळ] (सं. मदन)

मिणाय *दशस्कं(१). प्रेमाका.* वटके, पानो चोरे, दूध चोरे

मित *अखाका.* माप[वाळुं], [सीमित]

मिताक्षरा **प्रेमाका.* [याज्ञवल्क्य-स्मृति उपरनी विज्ञानेश्वरनी टीका, जे एक मान्य धर्मशास्त्र छे]

मिताचार *प्राचीसं.* मित्राचार, मैत्री

मित्त **अभिऊ.* [मैत्री, स्नेहसंबंध]; *गुर्जरा. तेरका. षडाबा.* मित्र

मित्तडी *शृंगामं.* मित्रता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्तुवि *ऐतिका.* मित्र पण (सं.मित्र+अपि)

मित्राई *उक्तिर.* मैत्री

मित्रेइ *आरारा.* ओरमान (माता) (रा.) [सं.मातृका]

मिथ्या *नलाख्या.* मिथ्या, फोगट

मिथ्यात *आनंस्त.* मिथ्यात्व नामनुं प्रथम गुणस्थान, आत्मानी निकृष्ट अवस्था [जै.]

मिथ्यात्वशल्य *ऐतिका.* मिथ्यात्व [सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा] रूपी शल्य [जै.]

मिदाणव *अभिऊ.* मयदानव, एक असूर, दानवोनो स्थपति

मिमासण *अंबरा.* विमासण

मिय-कुंड *प्राचीसं.* अमृतकुंड

मियमत्त [**मयमत्त**] *प्रद्युचु.* मदमत्त

मियमय **शृंगामं.* [मृगयुक्त]

मिरगानेंणी *आरारा.* मृगनयनी

मिरांत *प्रेमाका.* दोलत [अ.मिरास, अमीरात]

मिरिय *तेरका. प्राचीसं.* मरी (सं.मिरिच)

मिरी *जिनरा. नेमिछं.* मरी, तीखां (सं.मिरिच)

मिल *नलाख्या.* मेल, शरीर पर जामतो आछो गंदो थर

मिलइ *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. देवरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* मळे, एकठा थाय, संग करे (सं.मिल्)

मिलडी, मिहिलडी *अभिऊ.* मेलडी माता

मिलयाचल *सिंहा(शा).* मलय पर्वत (सं. मलयाचल)

मिळा- *वीसरा.* मेळवावुं, मेळाप करावुं

मिलातु **आनंस्त.* [मळातुं, भेगा थवातुं]

मिलायइ *उक्तिर.* म्लान थाय, निस्तेज थाय (सं.म्लायति)

मिलियागिरि *प्राचीफा.* मलयगिरि, दक्षिणमां आवेलो एक पर्वत

मिली *आरारा.* भेगुं, साथे

मिलीआनील *प्राचीफा.* मलयगिरि उपरथी आवतो पवन, दक्षिणानिल (सं.मलयानिल)

मिल्हइ *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* मेले, मूके, छोडे (दे.मेल्ल-)

मिशइ *कादं(शा).* बहाने (सं.मिष); *प्रबोप्र.* बहाने, [रूपे]

मिश्र *कादं(ध्रु).* द्विअर्थी

मिष्टाण *देवरा.* मिष्टान्न

मिस *ऐतिका.* मिश्र, युक्त

मिस *उपबा. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. विराप.* बहानुं (सं.मिष)

मिसरी *आनंस्त.* साकर [अ.मिस्री]

मिसरु *ऐतिका.* [मशरू], वस्त्रविशेष [अ. मश्रूअ]

मिसि *विराप.* मेश, राख; *शृंगामं.* शाही (सं.मषी)

मिसि *वसंफा(ल).* बहाने, [रूपे] (सं.मिष)

मिसिवान *अंबरा.* मषीवर्ण, मेशना रंगनुं काळुं

मिसेण **शृंगामं.* [-ना बहाने] [सं.मिषेन]

मिहर *गुर्जरा.* सूर्य (सं.मिहिर)

मिहरि *आरारा.* महेर, कृपा

मिहिणुं *प्रेमाका.* महेणुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिहितो जुओ मुहितो

मिहिलडी जुओ मिलडी

मिहिली, मेहिली, मेहेली *नलाख्या.* मेली, मूकी, छोडी दीधी (प्रा.मिल्ल-, मेल्ल-)

मीच *पंचवा.* मृत्यु

मीजी *जिनरा.* मज्जा, [मर्मभाग]

मीटमेळावो *नरका-२.* दृष्टिनुं मिलन

मीटि *नलाख्या.* मीट, मांडेली नजर

मीठडां *नरका. नरप(द).* ओवारणां

मीडाक, मेंडक *चंद्रवा.* देडको

मीढतां *जिनरा.* तुलना करतां [रा.]

मीढा *रूपस.* मेंढा, [घेटां]

मीढी *उक्तिर.* वांकां शिंगडांवाळी; जुओ मींढी

मीढीआउलि *आरारा(व).* मींढियावळ

मीत *जिनरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मित्र; *वीसरा.* मित्र, प्रेमी; *नरका. प्रेमाका.* मैत्री, प्रीति

मीतर, मीत्र, मीत्री, मींत्री *कामा(त्रि).* मंत्री, वजीर, प्रधान

मीनति *अंबरा. जिनरा. प्राचीफा. विमप्र. शृंगामं.* विनंति (सं.विज्ञप्ति; हिं.मिन्नत)

मीयांइ *शृंगामं.* मृगने

मीलाण *पंचवा.* मेलाण, मुकाम, पडाव

मीलीअं **कादं(शा).* [बंध करी, बीडी] [सं.मिल्]

मीस मोहनि *जिनरा.* मिश्र मोहनीय [शुद्ध दर्शन तरफ रुचि पण न थाय अने अरुचि पण न थाय एवी कर्मदशा] [जै.]

मीसरी *नरप(द).* खांड

मीसा *जिनरा.* मिश्र, [सम्यक्त्व अने मिथ्यात्वना मिश्रणवाळी आत्मावस्था] [जै.]

मीहनति *ऋषिरा.* महेनत वडे

मींजी *उक्तिर.* मज्जा, हाडमांसनो मावो

मींडां *प्रेमाका.* वांकडी शींगडीओवाळां

मींडी *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* वांकडियां शींगडांवाळी; जुओ मींढी

मींडुहुल *विक्ररा.* मींढळ [सं.मदनफल]

मींढउ *अखेगी. उक्तिर.* मेंढो, घेटो (सं. मेंढक)

मींढइ *उक्तिर.* मींडे, मींडुं होवानी स्थितिमां

मींढल *आरारा(व).* मींढळनुं झाड (सं. मदनफल)

मींढी *उक्तिर.* वांकां शींगडांवाळी; जुओ मीढी, मींडी

मींत्री *कामा(शा).* मंत्री; जुओ मीतर

मु *चतुचा.* मारुं, मारे

मु *कादं(शा). प्रबोप्र.* मोढुं, [मों] (सं.मुख)

मुआला *रूपस.* मोवाळो, [वाळ]

मुकतुं *अखाछ.* मोकळुं, छूटुं, निरंकुश [सं.मुक्त]

मुकरी *कस्तुवा.* नामुक्कर जवुं, कहीने फरी जवुं

मुकलावइ, मोकलावइ **गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* रजा मांगे, विदाय ले (सं.मुक्त परथी)

मुक्क- *तेरका.* मूक्युं (सं.मुक्त)

मुक्खहलि *ऐतिका.* मोक्षस्थले

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुक्ता *अखाका.* मुक्त [जीवो]

मुक्ताफळ *अखाका.* मोती

मुक्तावलि *गुर्जरा.* [चोक्कस प्रकारनी चडती उपवास-श्रेणीवाळो] एक तपप्रकार (सं.) [जै.]

मुक्ताशिला *कादं(ध्रु).* धोळो आरस

मुक्त्य *अखेगी.* मुक्ति

मुक्ष *चित्तसं.* मुख; जुओ मुज मुक्ष

मुख *चंद्रवा.* मुख्य

मुख ऊडी जवुं *प्रेमाका.* फिक्का पडी जवुं, ढीला थई जवुं

मुखक *विक्ररा.* मूषक, [उंदर]

मुखकोसु *षडाबा.* कपडाथी मोंने ढांकवुं ते (सं.मुखकोश)

मुखटाळो *प्रेमाका.* मुख जोवानुं टाळवुं ते, [-थी दूर रहेवुं ते]

मुखमल *जिनरा.* मखमल [अ.]

मुखरेखा *आरारा.* मोंफाड, होठ ?

मुखवटउ *विमप्र.* मोंनो विस्तार, [मुखप्रदेश] [सं.मुखपट]; जुओ मखवट्टउ मुहवटा

मुखामुखि *उक्तिर.* [*मुखोमुख होवुं ते] (सं.मुखामुख्यता)

मुखास *उक्तिर.* जडबां (सं.मुखास्याः)

मुखी *मदमो.* मुख्य

मुखे दश आंगळी **प्रेमाका.* [शरणागतिना भावथी]

मुख्य *आरारा.* आदि, वगेरे

मुख्य *चित्तसं.* मुख

मुग *उक्तिर.* मग (सं.मुद्गाः)

मुगटा *प्रेमाका.* अबोटियां, जमती के पूजा करती वखते पहेरवानां [रेशमी] वस्त्र

मुगतइं *आरारा.* मुक्तिमां, मोक्षमां

मुगताफल *लावल.* मोती (सं.मुक्ताफल)

मुगतां **अभिऊ. ऐतिरा.* उघाडां, (मरजीमां आवे ते लई लेवा माटे खुल्लां)

मुगतांवलि *देवरा.* मोतीनो हार (सं. मुक्तावलि)

मुगतिशिला *प्राचीफा.* सर्वार्थसिद्ध स्वर्गनी उपर बार जोजने आवेलुं मुक्त जीवोनुं स्थान (सं.मुक्तिशिला) (जै.)

मुगधा *आरारा.* भोळी; **ऋषिरा.* मुग्धा, भोळी, सरल स्त्री

मुगनी (मुगनी फली) *लावल.* मगनी [सींग]; जुओ मूंगफली

मुगरबी यंत्र, मुगरवी यंत्र *हम्मीप्र.* मगरबी यंत्र, गोळा फेंकवानुं यंत्र

***मुगलभेर [भुंगलभेर]** *चंद्रवा.* एक प्रकारनुं वाद्य, [भूंगळ अने भेरी]

मुग्ध *आरारा.* भोळो

मुचकोडी *गुर्जरा.* मचकोडी (सं.*मुचत्कृतति)

मुच्छांइ *शृंगामं.* *मूर्छाथी, [मूर्छा पामे]

मुज *चित्तसं.* मने [सं.मह्यम्]

मुज मुक्ष *चित्तसं.* मारे मोढे, मने

मुजरो *प्रेमाका.* प्रणाम

मुजल *उक्तिर.* [?] (सं.मुखजलम्)

मुज्झ *षडाबा.* मूंझा, भ्रमित था (सं.मुह्य-)

मुझ *नेमिछं.* मारुं, मने; *लावल.* मने [सं. मह्यम्]

मुझार, मोझार *कामा(शा).* *देवरा.* मध्ये, [-मां]; जुओ मझार

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुझारि *कादं(शा).* *नलाख्या.* *प्राचीका.* -मां, अंदर (सं.मध्य परथी)

मुझु *तेरका.* मारुं (सं.मह्यम्)

मुडइ *उक्तिर.* धीमेधीमे; जुओ मोडे-मोडे

मुडाधा *हम्मीप्र.* मुकुटबद्ध (राजा), सामंत (राजाओ); जुओ मुडुधा

मुडामां *कस्तुवा.* मोढामां

मुडुधा, मुडुध्या *नलरा.* *विक्ररा.* सामंत राजा (सं.मुकुटबद्ध); जुओ मउडउध, मुडाधा

मुणइ *आरारा.* *ऐतिका.* *गुर्जरा.* जाणे (प्रा.)

मुणंद *देवरा.* महान मुनि (सं.मुनींद्र)

मुणि *तेरका.* मुनि

मुणिवइ *तेरका.* मुनिराज (सं.मुनिपति)

मुणिवर *गुर्जरा.* *लावल.* मुनिवर

मुणिंद *ऐतिका.* *गुर्जरा.* *लावल.* मुनीन्द्र, श्रेष्ठ मुनि

मुणिवि **ऐतिका.* [जाणीने]

मुणीस *तेरका.* मुनिराज (सं.मुनीश)

मुणीसर *तेरका.* *लावल.* मुनीश्वर; श्रेष्ठ मुनि

मुतार **सिंहा(शा).* [दंडूको]

मुत्ताहल *आरारा.* मोती (सं.मुक्ताफल)

मुत्ताहलमाल, मुत्ताहलमाल *वसंवि.* *वसंवि(ब्रा).* मोतीनी माळा (सं.मुक्ताफल-माला)

मुत्ताहलहार *वसंफा.* मोतीनो हार (सं.मुक्ता-फलहार)

मुद्गुर *ललिरा.* गदाना प्रकारनुं हथियार (सं.मुद्गर)

मुदा *अखाका.* *प्रेमाका.* आनंद [सं.]

मुद्ग *षडाबा.* मग (सं.)

मुद्गळ *प्रेमाका.* एक प्रकारनुं [गदाना जेवुं] शस्त्र [सं.मुद्गर]

मुद्दा *तेरका.* मुद्रा, छाप

मुद्धि *तेरका.* हे मुग्धा

मुद्रडउ *वीसरा.* वींटी (सं.मुद्रा)

मुद्रडी *चारफा.* *दशस्कं(१).* *प्रेमाका.* *विक्रच.* मुद्रिका, वींटी

मुद्रा *आरारा.* सील, बंधन (सं.); *गुर्जरा.* महोर[वाळी वींटी]; *लावल.* वींटी; **अखाका.* [योगमुद्रा, योगविहित अंगविन्यास]; *प्रेमाका.* [शंखचक्रादिनी वैष्णवी] छाप

मुद्राव्यापार *विक्ररा.* शराफी

मुद्रिश्वर *प्राचीका.* मद्र देशनो राजा, शल्य (सं.मद्रेश्वर)

मुधरु *प्राचीफा.* मधुर

मुध्या *अंबरा.* फोकट (सं.मुधा)

मुन *देवरा.* मूगा (सं.मौन)

मुनियपय *ऐतिका.* मुनिनुं पद

मुनिसर *देवरा.* मुनीश्वर

मुनुस *सिंहा(शा).* मनुष्य

मुन्य **अखाका.* *प्रेमाका.* मौन

मुन्य करवुं, मुन्य धरवुं *दशस्कं(१).* मौन धरवुं, मूगा रहेवुं

मुमत *मदमो.* ममत

मुयालो *वेताप.* मोवाळो, [वाळ] [सं.मुख+वाल]

मुर *कादं(शा).* (आंबानो) मोर (सं.मुकुर)

मुरकतउ *जिनरा.* मरकतो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुरकलइं *वसंफा.* मरके

मुरकलडइ *लावल.* मंद हास्य वडे, मलकाटथी

मुरकिउं *हरिवि.* मरक्युं, मरकलुं कर्युं

मुरकी, मुरकीय *गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* जलेबी घाटनी मीठाई (दे.मुरुक्कि)

मुरकुलइं *वसंवि.* मंद स्मितमां

मुरखणि *देवरा.* मूर्खी

मुरजाद *नंदब.* मर्यादा, [अदब]; *मदमो.* मर्यादा, [सीमा]

मुरजादा *चंद्रवा.* मर्यादा, [सीमा]

मुरडइ *जिनरा. वीसरा.* मरडे

***मुरति (मुरडि)** *विमप्र.* मरडीने

मुरमंडल *ऐतिका.* मरुमंडल, [मारवाड]

***मुरंगी [*सुरंगी]** **ऐतिका.* [रंगमां – आनंदमां आवेल]

मुरियउ जुओ मउरियउ

मुरीआं *लावल.* महोर्यां, खील्यां

मुरुकुलइ *वसंफा(ल).* मरके

मुर्मुरू *षडाबा.* *बळतो कोलसो, [भूसीनो अग्नि] (सं.मुर्मुर)

मुलक- *वीसरा.* मलकवुं

मुलताणी *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

मुलाजइं *सम्यचो.* वशमां, मर्यादामां, [अंकुशमां]

मुलाणा *हम्मीप्र.* मौलाना, मौलवी

मुलाणि [माउलाणि ?] *उक्तिर.* मामी (सं.मातुल परथी)

मुली *विक्ररा.* मूळ, जडीबुट्टी

मुवाल *पंचवा.* [मोवाळा], वाळ (सं.मुख+वाल)

मुशल, *मुशळ प्रेमाका. षडाबा.* सांबेलुं (सं.)

मुष्ट *अखाका. प्रेमाका.* मूठी [सं.मुष्टि]

मुष्टि *आरारा.* चूप, खामोश (रा.मुस्ट; सं. मुष्ट)

मुसइ *उक्तिर. विक्रच. षडाबा.* चोरी ले (सं.मूष्)

मुसकउ *वीसरा.* स्मित

मुसमूरण *प्राचीफा.* नाश करनार (दे. मुसुमूरण)

मुसल-स्नान *प्रेमाका.* जेवुंतेवुं स्नान, [विधिरहित, निरर्थक स्नान]

मुसाल *चंद्रवा.* मोसाळ [सं.मातृशाला]

मुसिया *आरारा.* छेतरायेल, लूंटायेल (सं. मुषित)

मु सुं *पंचवा.* मने, मारी साथे

मुस्तक *चंद्रवा. मदमो.* मस्तक, माथुं

मुस्तग *चंद्रवा. वेताप.* मस्तक

मुस्यउ *उक्तिर.* लूंटायेल; *पंचवा.* लूंट्यो (सं.मुषित)

मुह *उपबा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वीसरा.* मुख; *आरारा.* घडानुं मोढुं; सोईनां नाकां (सं.मुख)

मुह *गुर्जरा.* मारी (सं.*मह्य)

मुहकाणि **गुर्जरा.* [शरम, लज्जा, दुःख, वसवसो]; जुओ काणि

मुहछण *उक्तिर.* आचमन (*सं.मुखक्षण) [रा.मूछण]; जुओ मछण

मुहडउं *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसरा. मोढुं (सं.मुख+ड)

मुहत *प्राचीफा.* मंत्री; महेतो (सं.महत्)

मुहत *विमप्र.* महत्त्व, [गौरव]

मुहतउ *गुर्जरा. प्राचीफा.* मंत्री, महेतो (सं. महत् परथी)

मुहतानंदन *गुर्जरा.* मंत्रीपुत्र

मुहपती *उक्तिर.* जैनोमां मुखे बांधवामां आवतो लूगडानो ककडो (सं.मुखपत्री)

मुहबारि *षडाबा.* मोढे (सं.मुखद्वारे)

मुहरइं *गुर्जरा.* मोर, आगळना भागे (सं.मुख परथी)

मुहरां *गुर्जरा.* महोरां, [आकृति, रूप] [फा. मुद्रः]

मुहरिया *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* गुंजारव करे (सं.मुखरिताः)

मुहरी *प्राचीसं.* मधुरी

मुहलु जुओ महलउ

मुहवटा **विमप्र.* [एक प्रकारनुं वस्त्र]; जुओ मुखवटउ

मुहवडि *प्राचीफा. लावल. विमप्र.* मोवडे, आगळ, मोखरे (सं.मुखपट); जुओ मुंहुंवडि

मुहवि *अभिऊ.* *महुडानां वृक्ष (सं.मधूक)

मुहंडाइं (मुहुंडाइं) *उपबा.* मुख वडे

मुहंतउ *उपबा.* मंत्री (सं.महान्, प्रा.महंत)

मुहा *गुर्जरा.* खोटेखोटे, मिथ्याभावे (सं. मुधा); *देवरा.* व्यर्थ, फोकट

मुहाडि *तेरका. प्राचीसं.* साम्मुख्य, मुखोमुख, रूबरू होवुं ते

मुहियां *उक्तिर. नेमिछं. षष्टिप्र.* निरर्थक, व्यर्थ (सं.मुधा)

मुहितो, मिहितो, मेंहितो *प्राचीका.* महेतो (सं.महत् परथी)

मुहिया, मुहीयां *उक्तिर.* व्यर्थ, निरर्थक (सं.मुधा)

मुहु *विमप्र.* खोटी रीते, [मिथ्याभावे] (सं. मुधा)

मुहुखाई, मुहुखायी *उक्तिर.* परोक्षवादी, [*पाछळथी बोलनार, *निंदक]

मुहुडइ *शृंगामं.* मोढे [सं.मुख परथी]

मुहुत (मानमुहुत) *शृंगामं.* मुहूर्त, [शुकन], [अपशुकन]; जुओ मान-शुकन

मुहुतु *नलरा. विमप्र.* मंत्री, महेतो

मुहुभरियां *कादं(शा).* मों-भेर (सं.मुख+ भरित)

मुहुर *प्राचीफा. शृंगामं.* मीठी (सं.मधुर)

मुहुसरि **कादं(शा).* [मूछ] (सं.मुखश्री)

मुहुंडइ *प्रद्युचु.* मुखे

मुहुंडाइं जुओ मुहंडाइं

मुहुंती *षडाबा.* मुहपत्ती, जैनोमां मों पर राखवामां आवतो कपडानो टुकडो (सं. मुखपत्री)

मुंआल *आरारा.* मोवाळा, वाळ [सं.मुख+ वाल]

मुंक *आनंस्त.* मूके, छोडे, तजे [सं.मुक्त-]

मुंच- *तेरका.* मुकावुं, [छूटवुं] (सं.मुच्य-)

मुंजवयण *वसंफा. वसंवि(ब्रा.)* मीठां वचन (सं.मंजुवचन); *वसंवि.* मंजु (के मुंज-नां) वचनो (सं.मंजु के मुंज+वचन)

मुंझि *जिनरा.* मुग्ध थईने, मोह पामीने [सं. मुह्य-]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुंठि *वसंवि(ब्रा).* मूठी (सं.मुष्टि)

मुंड ०*नलरा.* धान्यनुं एक मोटुं माप, मूडो [दे.मूड]; जुओ मूडा

मुंढी *प्राचीसं.* मुखे, मोढे

मुंवडी *उक्तिर.* वींटी (सं.मुद्रिका)

***मुंद्र [सुंद्र]** *गुर्जरा.* समुद्र; जुओ सुद्रह

मुंद्रडी *लावल.* वींटी [सं.मुद्रिका]

मुंद्रडीयउ *स्थूलिफा.* मुद्रिका, वींटी

मुंध *आरारा.* मुग्धा, स्त्री (अप.); *वीसरा.* मूर्ख (सं.मुग्ध)

मुंधि *ऋषिरा. प्राचीफा.* भोळी स्त्री, मुग्धा, मुग्ध कन्या; *वीसरा.* मूर्ख स्त्री (सं.मुग्ध)

मुंमत *सिंहा(शा).* ममत

मुं सी *नरका-२.* मारा जेवी

मुंहतउ *आरारा.* महेतो, मंत्री

मुंहपत्ति ०*ऐतिका.* मुखवस्त्रिका, [मों आगळ राखवामां आवती वस्त्रपट्टी]

मुंहुंना मांग्या *आरारा.* मोंमाग्या, इच्छा मुजब

मुंहुंवडि *प्रद्युचु.* मोखरे; जुओ मुहवडि

मू, मूं *आरारा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* मारुं, मने

मूकइ *आरारा. जिनरा.* मोकले [सं.मुक्त-]

मूकिवुं *उक्तिर.* मूकवुं, छोडवुं (सं.मोक्त-व्यम्)

मूक्युं *वाग्भबा.* मुक्त, [विनानुं, रहित]

मूछ *तेरका. प्राचीसं.* मूर्छा

मूछकूछ *प्रेमाका.* मूछ अने दाढी [सं.श्मश्रु+कूर्च]; जुओ कुंच

मूछी *तेरका. प्राचीसं.* मूर्छित, मूर्छा पामेली

मूझइ *अभिऊ. उक्तिर. *गुर्जरा. देवरा. प्राचीसं. विराप.* मूंझाय (सं.मुह्यति)

मूटक *षडाबा.* टोपली, [पोटलुं] (सं.मुटक)

मूठ *अखाका.* *पकड, [*एक तांत्रिक प्रयोग]

मूठउ *उक्तिर.* नाश पाम्युं (सं.मुष्टः) [हिं. मूठना]

मूठ्य *अखाका.* मूठी [जेटलुं], थोडुंक

मूडउ *लावल.* मूडो, नेतर के बरुनी बेठक, [ओठींगण माटेनुं कोई साधन]

मूडा, मूहडा *अभिऊ.* [अन्ननुं एक परिमाण], *सोळ के वीस मणनुं वजन [सं.मूटक; दे.मूड]

मूधि *शृंगामं.* मुग्धा

मून *प्राचीसं.* मौन

मूने-मूने *प्रेमाका.* मौने-मौने, [मूंगामूंगा]

मूरखचइ *गुर्जरा.* मूर्ख शिष्य

मूरछाइ *चित्तसं.* मूर्छित थाय, निष्क्रिय थाय

मूरत, मूरत्य *अखाका. नरका.* मूर्ति

मूर्छाणी *ऋषिरा.* मूर्छित थई गई, बेभान थई गई

मूल *चित्तसं.* तळियुं

मूळको *प्रेमाका.* मूळनो, पहेलांनो

मूळगुं *अखाछ. अखेगी. उपबा. चित्तसं. प्रेमाका.* मूळनुं, मूळ, [मूळ हतुं ते, असल]; *उपबा. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा. षष्टिप्र.* मुख्य (सं.मूलगत)

मूलि *आरारा.* मूळमांथी, जरा पण

मूलि *षडाबा.* [मूल्यथी], वेचातुं

मूलिगउ *षडाबा.* मुख्य (सं.मूलगत)

मूली *उक्तिर.* मूळो (सं.मूलिका)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूली **गुर्जरा.* [मूळ साथे, मूळमांथी]
मूल्ये *चित्तसं.* मूळे, मूळमां
मूषकगामी *दशस्कं(१).* मूषकवाहन, [गणेश]
मूस *उक्ति्र.* कुलडी (सं.मूषा)
मूसउ *आरारा. उक्ति्र.* उंदर (सं.मूषक)
मूसल *उक्ति्र.* सांबेलुं (सं.मुशल)
मूह **अभिऊ.* [मुख]
मूहडा जुओ मूडा
मूहनि, मूहूने, मूंहनि *अभिऊ. नलाख्या.* मने (अप.महु)
मूं *प्रबोप्र. *लावल. हुं; ऐतिका. तेरका.* मने; जुओ मू
मूंकइ *आरारा.* मोकले; *उपबा. गुर्जरा.* मूके, छोडे, राखे (सं.मुंचति) [सं.मुक्त-]
मूंकावणहार *उपबा.* छोडावनार (सं.मुंच् परथी) [सं.मुक्त परथी]
मूंग *उक्ति्र. षडाबा.* मग (सं.मुद्गः)
मूंगफली **वीसरा.* [मगनी सींग] (सं.मुद्ग +फली); जुओ मुगनी
मूंघी *नरका.* मोंघी, कीमती [सं.महार्घ]
मूंछीयइं *गुर्जरा.* मूर्छा पामे (सं.मूर्च्छति)
मूंजडी *हरिवि.* मोढे काळी अने शरीरे धोळी गाय
मूंजी *विमप्र.* कृपण
मूंझइ *आरारा.* मूंझाय, भूली पडे, मूढ थाय; **गुर्जरा.* [मूंझाय, मूढ थाय] (सं.मुह्यति)
मूंठि *वसंवि.* मूठीमां (सं.मुष्टि); *षडाबा.* मूठी (सं.मुष्टिः)
मूंढ *गुर्जरा.* मूढ, मूर्ख
मूंद *वीसरा.* सील, महोरबंध (सं.मुद्रा)
मूंदडउ *वीसरा.* वींटी (सं.मुद्रा)
मूंदडी *उक्ति्र.* वींटी (सं.मुद्रिका)
मुंद्रप्रभावि *गुर्जरा.* मुद्रा(वींटी)ना प्रभावथी
मूंहनइ *लावल.* मने; जुओ मुहनि
मूं हरइ *गुर्जरा.* मारे, माटे
मूं ह्रइ *उक्ति्र.* मने
मृगडउ *प्राचीसं.* मृग
मृगनाभि *गुर्जरा. नेमिछं.* कस्तूरी (सं.)
मृगनाभिज *चारफा.* कस्तूरी
मृगमद *अखाका. कामा(त्रि). चतुचा. दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. वसंफा. हरिवि.* कस्तूरी (सं.)
मृगमदपूर *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कस्तूरीनुं पूर (सं.)
मृगलोअणि *गुर्जरा.* मृगलोचनी
मृगलोयणी *आरारा. वीसरा.* मृगलोचनी
मृग वसावुं *प्रेमाका.* हरण वसे के चरे एवुं जंगल बनावुं, खेदानमेंदान करुं
मृणाल **वसंफा. वसंवि(ब्रा).* कमळदंड (सं.)
मृत *अखाछ. चंद्रवा. सिंहा(शा).* मृत्यु
मृतक *अखाका. प्रेमाका.* शब, मडदुं
मृतग *कादं(शा).* मृतक, शब, मडदुं
मृत्य *नलाख्या.* मृत्यु
मृत्यक *पंचवा.* मडदुं, मृतदेह (सं.मृतक)
मृत्यका *कादं(शा).* माटी (सं.मृत्तिका)
मृत्यु-तुल्य *दशस्कं(२).* मृत समो
मृत्यु-समतुल्य *दशस्कं(२).* मृतवत्, मरण-तोल

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मृद *अखाका.* माटी [सं.मृद्]

मृदुर *प्रेमप.* मृदुल, [कोमळ]

मृषा **अखाका.* [असत्य, मिथ्या] (सं.)

मेउणी (=मेइणी) *तेरका.* भूमि (सं.मेदनी)

मेकडा (रमेकडा) *विमप्र.* ?, [रमकडां, क्रीडानां साधनो]

मेख *मदमो.* मेष राशि

मेखल, मेखला, मेखली *ऋषिरा. कामा(शा). लावल.* (घूघरीवाळो) कंदोरो [सं.मेखला]

मेखां (मेखां कीधां) *सिंहा(शा).* मेख जेवा, खीला जेवा सजड [कर्या] ?, [*जडी दीधा, *मेखला – सांकळ रची]

मेखांतर *अखाका. दशस्कं(१). दशस्कं(२).* बहानुं (सं.मिषांतर)

मेखे *प्राचीका.* बहाने (सं.मिष)

मेखोन्मेख *शृंगामं.* आंख उघाड-बंध करवी (सं.मेषोन्मेष)

मेगल *अखाका. उषाह. कृष्णबा. गुर्जरा. दशस्कं(२). नरका. प्रबोप्र. प्रेमाका.* हाथी (सं.मदकल)

मेघनाद *विमप्र.* मंडपनो एक प्रकार

मेघनिशा *चित्तसं.* वादळ घेरायेलां होय एवी घनघोर रात्रि

मेघवनी *प्राचीफा.* मेघवर्णा नामे कीमती वस्त्रनी बनावेली

मेघवाल *मदमो.* ढेड

मेघाडंबर **गुर्जरा. तेरका. *प्राचीका. वीसरा.* एक प्रकारनुं [उत्तम] छत्र [सं.]

मेचक *कादं(शा).* घेरा वादळी रंगनुं (सं.)

***मेचु [*मेदु]** **गुर्जरा.* [*वादळ], [सं. मेचक], [*बळ], [सं.मेद]

मेट (मेटजे) **अखेगी.* [मिटावजे, दूर करजे]

मेटइ *अखाका. अखाछ. आरारा.* देवरा. मिटावे, फिटाडे, नाबूद करे (दे.मिट)

मेटजे जुओ मेट

मेट-मेलावो *नरका.* मीटनो मेळाप, दृष्टिनुं मिलन

मेडक *प्रेमाका.* देडका

मेठी *उक्तिर.* खळामां अनाजने झूडवा माटे बळदने जेनी साथे बांधी गोळ फेरववामां आवे छे ते स्तंभ (सं.मेथि)

मेण *नरका.* मीण [जेवुं नरम] [सं.मदन]

मेणालुं *नरका.* महेणुं

मेद *मदमो.* मजबूत, नक्कर ?, [*चरबीयुक्त, *मांसमज्जायुक्त, *जीव्रतीजागतो]

मेदनी, मेदिनी *अखाका. वीसरा.* पृथ्वी

मेदपाट *ऐतिरा.* मेवाड

मेदिनी जुओ मेदनी

मेदु जुओ मेचु

मेर *अखाका. आरारा. कृष्णबा. प्राचीफा. प्रेमाका. विमप्र.* मेरु पर्वत; *मदमो. *लावल.* श्रेष्ठ, [चडियातो]

मेर अलगी *मोसाच.* आधो मर, आधी जा

मेरउ *ऐतिरा.* मारो

मेरडा *लावल.* मारा

मेराईउ *उक्तिर.* हाथमां झालवाना डोया-वाळो दीवो

मेरायीयुं *उक्तिर.* हाथमां झालवाना डोया-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाळो दीवो

मे'राण *चंद्रवा.* महेरामण, [समुद्र]

मेरु *मदमो.* श्रेष्ठ

मेरु सनंदणो *चारफा.* नंदनवनयुक्त मेरु पर्वत (सं.मेरुः सनंदनः)

मेल *मदमो.* नक्की, निश्चे

मेळ *वीसरा.* *जान जवा पूर्वे वरपक्षतरफथी अपातुं जमण, [स्वजनसमुदायनुं भेगा थवुं ते] (सं.मेल-)

मेलइ *आनंस्त.* मेळे, जाते

मेलइ *आरारा.* मोकले [प्रा.मेल्ल]

मेलइ, मेळइ *उपबा.* जोडे; *आरारा.* *लावल. मेळवे, नक्की करे, [योजे]; *दशस्कं(१).* जोडे, बंध करे; *प्रेमाका.* मेळवे, [योजे], *अखाका.* मेळवे, [मेळतुं करे]; *अखाछ. आरारा.* मेळाप करे; *आरारा. ऐतिरा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. चारफा. तेरका. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. *लावल. विरप. हरिख्या.* मेळवे, भेगुं करे [सं.मिल्]

मेलउ *आनंस्त. जिनरा.* मेळो, मेळाप

मेलउ *आरारा.* मळयो, मेळाप थयो

मेलाण, मेहलाण *अखाका. अखाछ. अभिऊ. उषाह.* पडाव, मुकाम (प्रा.मेल्ल परथी)

मेळापक *नरका. प्रेमाका.* मेळाप, मिलन

मेलापी *नरका.* [जेनी साथे मेळ होय तेवुं माणस, मित्र]

मेलावउ *अखाका. उपबा. उषाह. गुर्जरा. प्राचीस. विमप्र. षडाबा.* मेळाप, मिलन, समूहगान (सं.मेलापक)

मेलावडो *जिनरा.* मेळाप

मेळावे *नरका.* मिलावे

मेलि *नेमिछं.* मेळ (सं.मिल् परथी)

मेलिइ *नेमिछं.* मेळपूर्वक, मेळ जोईने

मेलिय *ऐतिका.* मळीने, [भेगा थईने]

मेली, मेळीने जुओ उठां मेली, टेक मेळीने

मेळो *अखाका.* मेळाप

मेल्हाण *नलरा. विमप्र. वीसरा.* मुकाम, छावणी (प्रा.मेल्ल-)

मेल्हावणइ *गुर्जरा.* मेळाप प्रसंगे

मेल्हइ *चारफा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. विराप. वीसरा. षडाबा.* मूके, छोडे, तजे (प्रा.मेल्ल)

मेल्हणी (मेल्हणी जाय) *जिनरा.* छोडी [शकाय]

मेल्हविय *तेरका.* मेलावी, मुकावी

मेल्हाविउ *गुर्जरा.* मुकाव्यो, छोडाव्यो

मेल्हि *हरिवि-अनु.* -ना विना, [छोडीने]

मेल्हिवा *उक्तिर.* मेलवा, मूकवा, छोडवा

मेवडा *ऐतिका.* दूत [रा.]

मेवार *नरका. नरप(द).* मेवास – महीवास प्रदेशनो रहेवासी, चोर-लूंटारु, शिरजोरी करनार

मेवास *अखाछ.* [महीकांठानो प्रदेश], धाडपाडुवाळो जंगली प्रदेश, [भयग्रस्त अंतरायरूप प्रदेश]

मेवासी *जिनरा. प्रेमाका.* महीवासी – मही नदीना किनाराना प्रदेशनो; (जूना वखतमां त्यांना लूंटारु प्रख्यात होवाथी) चोर लूंटारु, डाकु

मेषोनमेष *ऐतिरा.* [आंखनो] पलकारो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सं.मेषोन्मेष]

मेस *कामा(त्रि).* मसी, शाही [सं.मषी]

मेह *आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछं. वीसरा. षडाबा.* मेघ, वादळ, वरसाद

मेहरू *उक्तिर.* मुखी, नायक; भंगी (सं. महत्तरः) [दे.; फा.मिहतर]

मेहल *गुर्जरा.* मेखला, कंदोरो

मेहलइ *आरारा. ऋषिरा. नेमिछं. लावल.* मूके, छोडे (प्रा.मेल्ह); *विक्ररा.* मोकले

मेहलाण जुओ मेलाण

मेहलीब *सिंहा(शा).* ?

मेहलु *नलरा.* मेघ

मेहिली जुओ मिहिली

मेहेर *कामा(त्रि). *कामा(शा).* सद्‌भाव, कृपा, दयामाया, [प्रेम] [फा.महेर]

मेहेर *चंद्रवा.* स्त्री [दे.मेहरिया]

मेहेरांण जुओ महेरांण

मेहेरांण *मदमो.* महाराणो

मेहेरि, मेहेरियो *चंद्रवा.* स्त्री; [दे.मेहरिया]

मेहेरी *मदमो.* स्त्री [दे.मेहरिया]

मेहेलइ *आनंत. नलाख्या. प्रेमाका.* मूके, छोडे (प्रा.मेल्ल)

मेहेला, मेहेलां *मदमो.* महिला; जुओ महेली

मेहेली *प्रेमाका.* महिला

मेंडक जुओ मीडाक

मेंद्र *सिंहा(शा).* महेंद्र ?, [*मोटा]; जुओ महेन्द्र

मेंशे मेंशे *वेताप.* [जुदाजुदा बहाने], कळेकळे, वातवातमां, वात करवाने मिषे [सं.मिषेन मिषेन]

मेंहितो जुओ मुहीतो

मेंहेंवास *वेताप.* *मेवास; जुओ मेवास

मैथल *दशस्कं(२).* मिथिला

मैल्य वेस *आरारा.* मेंलो साधुवेश

मैहीमाये *चंद्रवा.* महिमाए, महिमा वडे

मो *आरारा.* मने; *देवरा.* मारुं; *वीसरा.* हुं; मने; मारुं

मो *प्राचीका.* निषेधार्थ अव्यय (सं.मा)

मोकलइ *गुर्जरा.* मोकले; *नलरा.* विदाय आपे, रजा आपे

मोकलउं *उक्तिर. लावल.* मोकळाशवाळुं, खुल्लुं, विस्तृत; *नलरा.* शिथिल, ढीलुं; *अभिऊ. उपबा. जिनरा. षडाबा.* मोकळुं, छूटुं (सं.मुक्त) [दे.मोक्कल]

मोकलकरणु *षडाबा.* मोकळुं, छूटुं करवुं ते

मोकलावइ **अंबरा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. *शृंगामं.* विदाय ले (सं.मुक्त परथी); जुओ मुकलावइ

मोकुलमोकलु *नलरा.* तद्दन मोकळुं, खुल्लुं

मोख *अखाका.* *मुक्ति (*सं.मोक्ष), [मोको, अवसर, प्रसंग]; *नरका. नलाख्या.* अनुकूळता, मोको, [अवसर] [अ. मौका]

मोगर *अभिऊ.* *मोटुं, *बळवान (सं.मुद्‌गर परथी); [*मुद्‌गर नामना शस्त्रथी सज्ज]

मोगर, मोगरउ *उक्तिर. नलरा.* हथोडाना जेवुं नानुं ओजार, मोगरी (सं.मुद्‌गर)

मोगरी *अभिऊ.* वृक्षविशेष (सं.मुद्‌गर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोगा *लावल.* व्यंतरविशेष (दे.मोग्गड)

मोचना *नरका-२.* मुक्ति [अपावनार]

मोछव *देवरा. प्राचीफा.* महोत्सव

मोजां *प्रेमाका.* मोजडी, पगरखां

मोजां *सिंहा(शा).* *इच्छित वस्तु, [आनंद, सुख] [अ.मौज]

मोझार *दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका.* मध्ये, मांहे (सं.मध्य+कार); जुओ मझार, मुझार

मोट *मदमो. वेताप.* गांसडी [सं.]

मोट (मोट बांधवा) **नदब.* [पोटलुं बांधवा, दोलत भेगी करवा]

मोटउ मथ जुओ मथ

मोटकउं *आरारा.* मोटुं

मोटण **उषाह.* [दबाववुं, घसवुं ते] [सं. मोटन]

मोटम, मोटम्य *अखेगी. चंद्रवा. चित्तसं. प्रेमाका.* मोटप, मोटाई

मोटं *मोसाच.* मोटप, महत्ता

मोटंम *मदमो.* मोटुं

मोटिम, मोटिम्म *ऐतिका. सिंहा(शा).* मोटाई, गौरव

मोटी-झोटी जुओ झोटी

मोटुं मुख *चतुचा.* चढावेलुं, रीसभरेलुं मुख

मोटेम *नरप(द).* मोटप

मोट्य *अखाका.* *मोटाई, [मोटा होवापणुं]

मोठउ *नलरा.* मोटो (सं.महत् परथी)

मोठी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ज्याफत, उजाणी

मोड **अखाका.* [मरडावुं, तूटवुं ते, नाश]; *अखाछ. अखेगी. मदमो. *लावल.* मरड, मरडाट, गर्व; *प्रेमाका.* मचकोड, वळांक

मोड *नरका. प्रेमाका.* मोडियो, [मोळियो] (सं.मुकुट)

मोडइ *उक्तिर.. कादं(शा). कृष्णबा. गुर्जरा. चतुचा. दशस्कं(१). नरका. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* मचकोडे, मरडे, वाळे, लचकावे, तोडे, चूरे (सं.मोटयति)

मोडबंध *नरका.* मुकुटबद्ध, [छोगाळाओ]

मोडामोड *प्रेमाका.* मरडाट, [अंग लचकाववां ते]

मोडमोडि *ऋषिरा. कादं(शा).* आम मरडवुं तेम मरडवुं ते, लटका करवा ते, [अंग लचकाववां ते]

मोडे **प्रेमाका.* [मरड, लचक के छटा उपर]

मोडे-मोडे *दशस्कं(१). प्रेमाका.* धीमेधीमे [सं.मृदु]; जुओ मउडउ, मुडइ

मोणे-मोणे *प्रेमाका.* धीमेधीमे

मोतीन *ऋषिरा.* मोती (सं.मौक्तिक) [हिं.]

मोतीलग *षडाबा.* मोतीभरेलुं (आभरण) (सं.मौक्तिक+लग्यति)

मोतीसरी, मोतीसिरी *नरका. नलरा. लावल.* मोतीनी सेर, [मोतीनी माळा]

मोथ *उक्तिर.* नागरमोथ, एक प्रकारनुं घास, एनो कंद (सं.मुस्ता)

मोद *सिंहा(शा).* ?, [*पेशाब, *मूत्र] [*दे. मोअ; सं.]

मोदकचूरकादिकु *षडाबा.* मोदक, चूरमुं वगेरे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोदिक, मोदीक *गुर्जरा. मदमो.* मोदक, लाडु

मोदिक-थाल *देवरा.* लाडुनो थाळ (सं. मोदक-स्थाल)

मोदीक जुओ मोदक

मोन्इ *आरारा.* मने

मोभी **गुर्जरा.* [ज्येष्ठ, अग्रणी] (दे.मुब्भ परथी)

मोम्ण *जिनरा.* मोटी, ज्येष्ठ

मोय *देवरा.* मने

मोर *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

मोर *अखाका.* आगळ, संमुख

मोरउ *ऋषिरा. ऐतिका. देवरा. नलरा. मदमो.* मारो (अप.महु+रउ)

मोर-चंद्रनो *प्रेमाका.* मोरनां पींछांनी टीलडी-ओनो – चांदलियानो

मोरडो *प्रेमाका.* पशुने मोढे बांधवानुं गांठो पाडेलुं दोरडुं

मोरथी *अखाछ. चित्तसं.* तरफथी, द्वारा, ने कारणे

मोरनां *अखाका.* तरफनां

मोरल *प्रेमप.* मोरली

मोरवी *प्रेमाका.* मोरनी छापवाळी

मोरसिखा *उक्तिर.* मयूरशिखा, एक वनस्पति

मोरंगी *उपबा.* मोरपींछनो बनावेलो पट्टो (सं.मयुरांगिका)

मोरा *नेमिछं.* मोर (सं.मयूर)

मोरियो *नरका.* महोर्यो, खील्यो

मोरी **प्रेमाका.* [हाथनुं कडली जेवुं आभूषण]

मोरे *अखेगी.* पूर्वे, आगळ

मोर्ये *चित्तसं.* तरफ, बाजु

मोल *अखाका. आरारा. पंचवा.* मूल्य

मोल, मोळ *नरका. *प्रेमाका.* मोळियुं, माथे बांधवानुं कपडुं, [फेंटो] [सं.मौलि]

मोलइ *उक्तिर.* मोळे, कातरे, समारे

मोलि *आरारा.* ?

मोलि, मोलीयडउं *नलरा.* फेंटो (सं. मौलिक)

मोलियां *गुर्जरा. प्रेमाका.* साफा, फेंटा (सं. मौलिक)

मोलीउं *उक्तिर.* साफो, फेंटो

मोलीकं *नरका.* मोळियुं, [फेंटो]

मोलीयडउं जुओ मोलि

मोलीयां *विराप.* फेंटाओ (सं.मौलिकानि)

मोवड *नरका.* आगळ, संमुख; जुओ मोहोवटे

मोसंधीयुं *उक्तिर.* फेंटो, साफो

मोस *ऐतिका.* मृषा, [मिथ्या]; *विमप्र.* खोटुं, [असत्य]

मोसउ *शृंगामं.* असत्य; [सं.मृषा, प्रा.मुसा]

मोसउ *लावल. सिंहा(म).* चोरी, [ओळववुं ते] (सं.मोषः)

मो-सु *देवरा.* माराथी

मोह, मोहु *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मूढता, भ्रांति (सं.)

मोहइ *उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* मोहित करे, मोह पामे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोहकम *सिंहा(शा).* खूब, सखत (अ. मुह्कम; म.मोहोकम); जुओ मोहोकम

मोहण *लावल.* मोहवश करवुं ते, [वशीकरण]

मोहणवेलि *ऋषिरा. ऐतिका.* मोह पमाडे एवी वेल, मनोहर वेल

मोहनमंत्र *चतुचा.* मोहित करवा माटेनो मंत्र, [वशीकरणमंत्र]

मोहनसारा *ऋषिरा.* मोह पमाडनारी, [श्रेष्ठ]

मोहनी *गुर्जरा.* मोहनीय, कर्मनो प्रकार जेमां योग्यायोग्यतानो विवेक रहेतो नथी (सं.मोहनीय) [जै.]

मोह-माग्या *देवरा.* मों-माग्या

मोहंन मांन *मदमो.* अत्यंत मोहक; जुओ मान

मोहि *आरारा.* मने; मारुं

मो हूंती *आरारा.* माराथी

मोहो *चित्तसं. नलाख्या.* मोह

मोहोकम, मोहोकंम *अखाछ. चंद्रवा. मदमो.* दृढ, सखत, [भारे]; जुओ मोहकम

मोहोटंम *मदमो.* मोटाई

मोहोटा *रूत्तस.* मोटा

मोहोतां *अखाका.* मोहतां, मोह पामतां

मोहोथी *चतुचा.* मोंथी, मोढे

मोहोर *पंचवा.* सोनानो सिक्को, सोनामहोर

मोहोरवी *सिंहा(शा).* मोखरानुं, आगळ पडतुं

मोहो-राखती *प्रेमाका.* भ्रममां नाखे तेवी, [छेतरामणी, फोसलामणी]; जुओ मोंहो-रखती

मोहोल *कामा(त्रि).* महेल

मोहोवटे *मदमो.* मोवडे, अग्र भागे, [आगळना भागमां]; जुओ मोवड

मोह्य रैयाजी *ऐतिका.* मोही रह्या छे, [मोह पमाडी रह्या छे]

मोंधुं-दव *प्रेमाका.* मनमां आग (दव) उत्पन्न थाय एटलुं मोंधुं, मोधुंदाट

मों-बोली *प्रेमाका.* मोढेथी कहेवाती

मोंमां घाले हाथ *अखाका.* आजीजी करे, [दीनता दर्शावे]

मोंरखा *अखाछ.* मों साचववा पूरता, [जूठा]; जुओ मोंहो-रखती

मोंहो-टाळो *प्रेमाका.* मों बतावावानुं टाळवुं ए, मळवानो इनकार

मोंहोरखती *अखाका.* मात्र कहेवा पूरती, [फोसलामणी]; जुओ मोहो-राखती; मोंरखा

मौ *उक्ति.* जुओ मऊ

मौन करु *आरारा.* शांत थाओ

मौहर्य **नरप.* [मोळियो, फेंटो]

म्यलि *नलाख्या.* मळे, [भेगुं थाय]

म्यलिउ *कादं(ध्रु).* घेरायेलो, [-नी साथे रहेलो]

म्रगमद *कामा(त्रि).* कस्तूरी (सं.मृगमद)

म्रघडो *मदमो.* मृगलो

म्रत *सिंहा(शा).* मृत्यु; जुओ मरत

म्हा, म्हां *वीसरा.* हुं, मारुं

म्हाकउ, म्हांकउ *वीसरा.* मारुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म्हाल **अखाका.* [आनंद]; जुओ माल
म्हां जुओ म्हा
म्हांकउ जुओ म्हाकउ
म्हे *वीसरा.* में

य *तेरका.* वळी (सं.च)
यउ जुओ इउ
यका *प्रबोप्र.* जू (सं.यूका)
यक्षकर्दम *प्रेमाका.* केसर, कस्तूरी, चंदन, कपूर अने अगरुनो सुगंधी लेप [सं.]
***यच** *चतुचा.* ?
यज *लावल.* रेशमी वस्त्र
यजन *अखाका.* सेवा, [पूजा] [सं.]
यणियु [**जणियु**] *कादं(शा).* *नलाख्या.* जण्यो, जन्म आप्यो (सं.जनितकः)
यतन *आरारा.* जतन, काळजी [सं.]; जुओ जतन
यतना [**जतना**] *आनंस्त.* अप्रमाद [सं.]
यतन्नो *आरारा.* प्रबंध, व्यवस्था (रा.)
यतंन *अखाछ.* यत्न
***यतिसय** (**अतिसय**) *देवरा.* प्रभाव, [महिमा] [सं.अतिशय]
यतिपती *ऋषिरा.* यतिओना पति, स्वामी, आचार्य (सं.यतिपति)
यत्न *कादं(शा).* साचवण, जतन (सं.यतन)
यथाबद्ध *अखाछ.* जेवो बंधनमां छे तेवो, [जे-ते अवस्थामां बंधायेल]
यम [**जम**] *कादं(शा).* **गुर्जरा.* *नलाख्या.* जेम
यमइ [**जमइ**] *उक्तिर.* *नलाख्या.* जमे [दि.जिम]
यमणुं [**जमणुं**] *उक्तिर.* जमणुं
यमिवउ [**जमिवउ**] *उक्तिर.* जमवुं
यमीतउं [**जमीतउं**] *उक्तिर.* जमातुं
यव [**जव**] *कादं(शा).* ज्यारे (सं.यतः)
यवारें [**जवारें**] *प्राचीका.* जे समये (सं. यद्वारे)
यशनामिक *ऐतिका.* यशस्वी
यशवा *प्राचीसं.* यशनी वायका, [यश बोलावो ते]
यशूं [**जशूं**] *नलाख्या.* जेवुं (सं.यादृशकम्)
यसउ [**जसउ**] *उक्तिर.* जेवुं
यसिइं *ऐतिरा.* यश वडे
यसु [**जसु**] *तेरका.* [जेनुं]
यसूं *उषाह.* एवुं (सं.इदृश; हिं.ऐसा)
यहां [**जहां**] *उक्तिर.* ज्यां
यहु *प्राचीसं.* ए (सं.एषः; हिं.यह)
यं *प्राचीसं.* तृतीयानो प्रत्यय [-थी, वडे, ए]
यंत्र मुगरबी *हम्मीप्र.* मगरबी यंत्र, गोळा फेंकवानुं यंत्र; जुओ मुगरबी यंत्र
यंत्री *कादं(शा).* तंतुवाद्य, वीणा
या [***जा**] *आरारा.* जेने ? आने ?
या *पंचवा.* ए (सं.एषा); जुओ यउ
याग *प्रेमाका.* यज्ञ
याण [**जाण**] *उक्तिर.* ज्यां सुधी (सं. यावत्)
यातायात *अखाका.* आवागमन, जन्ममरण
यात्र *अंबरा.* *प्राचीका.* नाटारंभ, नृत्य; जुओ जात्र

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यात्राहारु *विक्रा.* यात्राळु
यामिनीकर *ऋषिरा.* चंद्र (सं.)
यामुक *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* जोडीमां, बेलडीए (सं.यमक परथी); जुओ जामुक
यारी *प्राचीफा.* मैत्री (फा.)
याद्रि [जाद्रि] *कादं(शा).* ज्यारे
यां *आरारा.* अहीं
यांह [जांह] *नलाख्या.* ज्यां (सं.यस्मात्)
यि [जि] *नलाख्या.* जे
यिम [जिम] *उक्तिर. नलाख्या.* जेम
यिशउं, यिश्यउ [जिशउं, जिश्यउ] *प्रबोप्र.* जेवुं (सं.यादृश)
यिहां [जिहां] *नलाख्या.* ज्यां
यिहांकणि [जिहांकणि] *कादं(शा).* ज्यां
यीतु [जीतु] *प्रबोप्र.* जीत्यो (सं.जित+कः)
यीपइ [जीपइ] *प्रबोप्र.* जीते (सं.जि-)
यीव [जीव] *प्रबोप्र.* जीवात्मा
यीवतां [जीवतां] *प्रबोप्र.* जीवतां
यीवन [जीवन] *प्रबोप्र.* जीवतर
यीवित [जीवित] *प्रबोप्र.* जीवतर
यीवी [जीवी] *प्रबोप्र.* जीवी (सं.जीविता)
युग [जुग] *नलाख्या.* जग (सं.जगत्)
युगतुं *कादं(शा). नलाख्या. विमप्र.* युक्त, बंधबेसतुं, योग्य; जुओ जुगतुं
युगति *नेमिछं.* युक्ति
युगदीश्वरी [जुगदीश्वरी] *प्रबोप्र.* जगदम्बा (सं.जगदीश्वरी)
युगला धर्म्म *लावल.* जोडियां भाईबहेन युगल (पति अने पत्नी) तरीके जीवन वितावतां एवो धर्म [– जूनी रूढि] [जै.]; जुओ जुगला धरम
युगलिया, युगलीआ *नलरा. षडाबा.* जोडियां भाईबहेन, जे प्राचीन काळमां पतिपत्नी बनतां (जै.); जुओ जुगलिया
युगवर *ऐतिका.* युगमां प्रधान, [मुख्य, श्रेष्ठ]
युगियुगता [जुगिजुगता] *नेमिछं.* झगमगता
युद्धशत्र, युद्धसत्र *गुर्जरा. विरापं.* युद्धरूपी यज्ञ (सं.युद्धसत्र)
युवई *आरारा.* युवती (प्रा.)
युवति-मनोर *वसंवि(ब्रा).* युवतीना मनोरथ
ये [जे] *उक्तिर. उषाह. नलाख्या.* जे (सं.)
येक *चंद्रवा.* एक
येटलि [जेटलि] *नलाख्या.* जेटले (सं. यत्तुल्य)
येन, येंन [एन] *चंद्रवा.* [खरेखरुं], खरेखर [अ.ऐन]
येम [जेम] *कादं(शा).* जेम
येलफेल [एलफेल] *नरप(द).* अविचारी, गांडुंघेलुं
येह [जेह] *प्रबोप्र.* जे (सं.यः)
येहारि [जेहारि] *कादं(शा).* ज्यारे
यो *उक्तिर.* जे (सं.यः)
यो *पंचवा.* ए (सं.एषः)
योगपादुका *सिंहा(म).* एवी पादुका जे पहेरीने योगी आकाशमां ऊडी शके (सं.)
योगपावडी *सिंहा(म).* एवी पादुका जे पहेरीने योगी आकाशमां ऊडी शके (सं.योग+पाद)
योगि *आरारा.* योग्य, लायक

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योजित *आरारा.* जोडेला [सं.]

योतिक-जाण [**जोतिकजाण**] *प्रबोप्र.* ज्योतिषी (सं.ज्योतिष्+गु.जाण)

योध *लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* योद्धा (सं.)

योधर *वसंवि.* योद्धाओ (सं.योद्धारः)

योवन-मदि *लावल.* यौवनना मदे

यौवनमि **कादं(शा).* [जुवानीथी भरेलुं] (सं.यौवनमय)

य्या *पंचवा.* अहीं (सं.अत्र)

रइ *गुर्जरा.* रति, कामदेवनी पत्नी; *उपबा. तेरका.* रति, प्रीति, प्रेम

रइ *वाग्भबा.* चतुर्थी अने षष्ठीनो प्रत्यय, [माटे]; जुओ रइं, रहइ, हरइं, ह्रइं, ह्रइं

रइय *तेरका.* रच्युं; *गुर्जरा.* रचित

रइवल्लह *तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं.* कामदेव (सं.रतिवल्लभ)

रइहीणु *गुर्जरा.* रति वगरनो, रतिवियोगी (सं.रतिहीन)

रइं *वाग्भबा. षष्टिप्र.* चतुर्थी अने षष्ठीनो प्रत्यय, [-ने, माटे]; जुओ रइ

-रउ *वीसरा.* -नो [रा.]

रक्ख- *तेरका.* रक्षण करवुं (सं.रक्ष)

रक्खसि *तेरका.* राक्षसी

रक्तहेम *प्रेमाका.* राता रंगनुं सोनुं [सं.]

रक्षागृह *कादं(ध्रु).* पांजरुं, केदखानुं [सं.]

रखत **विमप्र.* [मालमिलकत] [रा.]

रखवाल, रखवाळ *गुर्जरा. नलाख्या. प्राचीसं.* रखेवाळ, चोकीदार (सं.रक्षापाल); *प्रेमाका.* *रखेवाळी, *रक्षा, [*रखेवाळ]

रखवालउ *उक्तिर. प्रेमाका. लावल.* रखेवाळ (सं.रक्षापालः)

रखवालुं *गुर्जरा.* रक्षण करवुं ते

रखि *आरारा.* नक्षत्र (सं.ऋक्ष)

रखि **गुर्जरा.* [राखे] [सं.रक्ष्]

रखि, रखी *कादं(शा). नलाख्या.* ऋषि, मुनि

रख्या *आरारा.* रक्षा, रक्षण

रख्यो *प्रेमप्र.* रक्ष्यो

रगइ *अखाका. नेमिछं.* करगरे, आजीजी करे; जुओ रगे

रगझग *सिंहा(शा).* रकझक

रगत *वीसरा.* लाल (सं.रक्त)

रगतनेत्र *चतुरा.* लाल आंखो[वाळो]

रगत-लोचन *नलाख्या.* रातां लोचन [करीने]

रगरगे *नरका.* कालावाला करे

रगाउलि, रंगाउलि, रंगावलि *नलरा. हम्मीप्र.* बख्तरनो एक प्रकार (सं.रंग+आवलि ?)

रगिया *प्रेमाका.* जक्की, हठीला

रगे *अखाछ.* [रग्ये], रगवा(कालावाला करवा)थी; रग(हठ)ने लीधे; जुओ रगइ

रघवघो *अखाका.* रघवायो, उतावळो, गभरायेलो

रचाणुं **अखाछ.* [रचायुं, रचना रूपे परिणम्युं, विस्तर्युं]

रच्चंति *ऐतिका.* अनुराग करे छे [दि.]; जुओ रंच्यति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रज *चित्तसं.* (स्त्रीनुं) आर्तव [सं.रजस्]
रजक *प्रेमाका.* धोबी [सं.]
रजणी (निरजणी) **नेमिछं.* [क्षीण करीने]
रजमति(?) *तेरका.* राजिमती
रजिनी *आरारा.* रजनी
रज्ज *उषाह. ऐतिका.* राज्य
रडयड *गुर्जरा.* रडवड अवाज करतो
रडवडइ *ऋषिरा. गुर्जरा. विरापं.* रवडे, अथडाय, रखडे
रडविडियउ *प्राचीसं.* रडवड्यो, [अथडायो-कुटायो]
रढ *उषाह.* *हठ, [लगनी]; *चंद्रवा. प्रेमाका.* रटण, लगनी; *नरका.* हठ, जिद्द; जुओ रंढ मांडि
रढइं **गुर्जरा.* [ढळे, डोले] [दे.रड्ड]
रढि *अभिऊ.* रढ, [लगनी]
रण *प्रेमप.* ऋण
रण, रांन *सिंहा(शा).* अरण्य
रणइ *ऐतिका.* वागे छे, [रणके छे]
रणकाहल *अंगवि.* रणदुंदुभि [के रणभेरी]
रणझणे *ऐतिरा.* [झणझणाट थाय], सचेत थई जाय, उश्केराय [सं.रणत्+ध्वनि]
रणतूर *लावल.* युद्धना मेदानमां वगाडातां मुखवाद्य, [रणशिंगुं] [सं.]
रणदेव्या *प्रेमाका.* रणदेवीओ, युद्धनी देवीओ
रणभाष *हम्मीप्र.* रणभाषा, *तोपनो अवाज
रणमाल *अभिऊ.* रणमाळा, युद्धमां जनारने पहेरावावामां आवती विजयमाळा
रणरण- *तेरका. प्राचीसं.* रणझणवुं, रणकवुं
रणरण *तेरका.* रणझण एवो ध्वनि
रणरंग *आनंस्त.* युद्धनो रंग, युद्धनो उत्साह
रणवट **अभिऊ.* [क्षात्रधर्म, युद्धनी टेक]; *प्रेमाका.* रणक्षेत्र[नो मार्ग]
रणवणीयां *गुर्जरा.* रणवण अवाज कर्यो
रणवाइं (कोरण वाई) **गुर्जरा.* [आंधी फेलाय]
रणवावला *जिनरा.* युद्धातुर [सं.रण-व्याकुला]
रणसंड *हम्मीप्र.* रणमां सांढ जेवो, महा-पराक्रमी [सं.रणषंढ]
रणस्थंभ रोप्यो *प्रेमाका.* युद्ध शरू कर्युं, [युद्धना मंडाण रूपे स्तंभ रोप्यो]
रणिझडि **विमप्र.* [रेणु – धूळनी झडीथी]
रणियु *अखाका. नलाख्या.* ऋणी, देवादार (सं.ऋणिकः)
रणीउ *ऋषिरा.* ऋणवाळो, देवादार (सं. ऋणिन्)
रणे *प्रेमाका.* ऋणमां
रत *नरका. नरप(द). नलरा. प्रेमाका.* ऋतु
रतनखंभ *प्रेमाका.* रत्नथी जडेलो थांभलो
रतनदोषी *आरारा.* रत्नमां दोष मूकनार; जुओ रत्नदोषी
रतनाळी **वीसरा.* [रत्नमय]
रत-मावठुं *नरका.* *कसमये वरसतो वरसाद, [मावठानी ऋतु, मावठानो समय]
रतांजणी *आरारा(व). उक्तिर.* रक्तचंदन, एक वृक्ष
रति, रिति *आरारा. प्राचीफा. लावल. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* ऋतु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रति, रत्य *अखाका. प्रेमाका. लावल.* अनुराग, आसक्ति; *प्रेमाका. वसंवि(ब्रा).* प्रेम, प्रेमक्रीडा, कामक्रीडा; *आरारा. नेमिछं.* आनंद

रतिपति-सूर *वसंवि(ब्रा).* शूरवीर कामदेव

रतिवर *चारफा.* कामदेव

रतिवाउ **गुर्जरा.* [रात्रे करेलो हुमलो]

रती *उक्तिर.* चणोठी (सं.रक्तिका); *अखाका. आरारा. प्रेमाका. नरका.* रतीभार, तद्दन थोडुं

रतु *मदमो.* रत, ऋतु; ऋतुस्राव

रतुदान *प्राचीका.* ऋतुदान, [ऋतुकाळे संभोग]

रत्तउं *आरारा. तेरका.* अनुरक्त, अनुरक्त थयुं [सं.रक्त]

रत्नकंबल *अखाका.* ऊननी रत्नजडित कीमती कामळी [सं.]

रत्नजटित *नलरा.* रत्नजडित [सं.]

रत्नत्रय *प्रद्युचु.* सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, सम्यग् चारित्र [जै.] [सं.]

रत्नदोषी *आरारा.* रत्नोमां दोष – दूषण मूकनार; जुओ रतनदोषी

रत्नपारक्ष *नलरा.* रत्ननी परख करनार

रत्य *अखाका.* ऋतु

रत्य जुओ रति

रत्येबो *रूस्तस.* ?, [*पद, *होद्दो; *इज्जत, *कदर] [अ.रुत्ब]

रथ-अंग, रथंग *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* चक्र, रथनुं पैडुं (सं.)

रथा (? रथ्या) *शृंगामं.* शेरी

रथी ति **विराप.* [रथीओ – रथारूढ योद्धाओ ते]

रथ्या जुओ रथा

रदि *नलाख्या.* हृदये

रदुं *चित्तसं.* हृदय, हृदयनी वृत्ति, वलण

रदे *चित्तसं. मदमो.* हृदय; हृदये, हृदयमां

रधि *आरारा.* रिद्धि

रन्न *प्राचीसं.* अरण्य, रान

रबाब *नरका.* एक तंतुवाद्य [फा.]

रभस *नेमिछं.* वेग, उत्साह (सं.रभस्)

रमझोल **ऐतिका.* [रमझट]

रमण *तेरका.* –, [प्रियतम] [सं.]; *नरका.* प्रेमक्रीडा [सं.]

रमणशाळा *अखाका.* कामक्रीडानुं स्थळ

रमणिक *प्रेमाका.* रमणीय, सुंदर

रमति, रमत्य *अखाका. ऐतिका.* रमत

रमलि *आरारा. ०कृष्णच. गुर्जरा. चारफा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. स्थूलिफा.* रमत, क्रीडा (सं.रम् परथी)

रमाउल, रमालउ *प्राचीसं.* सुन्दर, रमणीय, [समृद्ध, व्याप्त] (सं.रमा+आकुल); जुओ रम्माउल

रमिज्जइ *ऐतिका.* रमण [-क्रीडा] करीए

रमिझिमि *ऋषिरा.* रूमझूम अवाजथी

रमिवुं *उक्तिर.* रमवुं

रमेकडा जुओ मेकडा, रामेकडउ

रम्म *ऐतिका.* रम्य

रम्माउल *तेरका.* सुंदर, रमणीय, समृद्ध, व्याप्त; जुओ रमाउल

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयण *आरारा. गुर्जरा. तेरका. *देवरा. नेमिछं. लावल.* रत्न

रयण, रयणी *चतुचा. प्रेमाका. सिंहा(शा).* रजनी, रात्रि

रयणउर *गुर्जरा.* रत्नपुर, गामनुं नाम

रयणप्पह *आरारा.* रत्नप्रभ (ए नाम)

रयणमए *गुर्जरा.* रत्नमय

रयणमणि *नेमिछं.* रत्नमणि

रयणागरा ०*ऐतिका.* रत्नाकर

रयणायर *अंबरा. ऐतिका. कृष्णच. गुर्जरा. नेमिछं. स्थूलिफा.* रत्नाकर, सागर

रयणावली *गुर्जरा.* [चोक्कस प्रकारनी उपवासनी चडती श्रेणीवाळुं] एक प्रकारनुं तप (सं.रत्नावली) [जै.]

रयणाह *ऐतिका.* रत्नोमां

रयणां *आरारा.* रत्नो

रयणि *उषाह. कर्पूमं. जिनरा. तेरका. रूपच. वीसरा. हरिवि.* रात्रि (सं.रजनी)

रयणी *अखेगी. कृष्णबा. दशस्कं(२). नरका. विक्ररा. हरिख्या.* रजनी, रात; जुओ रयण

रयणीय *गुर्जरा.* रात्रि (सं.रजनी)

रयणीदंन *अखेगी.* रजनीदिन, [रातदिवस]

रयणीयर *प्राचीसं.* चंद्र (सं.रजनीकर)

रयहरण *देवरा.* [रजोहरण], धूळ खसेडवानी ऊननी मोटी पींछी, ओघो [जै.]

रयताणउ *उक्तिर.* रजोहरण, जैन मुनिनुं एक साधन (सं.रजस्त्राणम्)

रयवाडिय जुओ वाडिय

रल *गुर्जरा.* *तुच्छ वस्तु, [*सघळुं लूंटाई गयुं होय एवुं, *दरिद्र]

रलइ, रळइ *अखाका. आनंस्त. ऋषिरा. *कादं(शा). गुर्जरा. देवरा. नेमिछं. शृंगामं.* रडवडे, भमे, भटके, आजुबाजु फरे, अटवाय, [घसडाय] (दे.रुल); जुओ रुलइ

रलि *नलाख्या. लावल.* खुशी, आनंद [*दे.रल्लि] [*सं.रति+ल]; जुओ रुलि

रलिआतो *ऐतिका.* आनन्द[युक्त], [रळियात, प्रसन्न]

रलिआयत, रलिआयति, रलियाति *कादं(शा). विमप्र.* रळियात, प्रसन्न, खुश

रलिय *ऐतिका. प्राचीफा.* आनंद, उमंग (सं.रति+ल)

रलियहि *चारफा.* आनंदथी

रलियाति जुओ रलिआयत

रलियायतु *षडाबा.* रळियात, प्रसन्न

रलियावणउ *ऐतिका.* रळियामणुं; *चारफा. प्राचीफा.* रळियामणुं, आनंददायक; जुओ रुलियामणउ

रली, रळी *आरारा. ऐतिका. कामा(त्रि). *कामा(शा). गुर्जरा. तेरका. नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका. विक्रच. विराप. सिंहा(शा).* आनंद, प्रसन्नता, होंश (दे.; सं.रति परथी/लल् परथी); जुओ रुली

रलीआइति *प्रबोप्र.* आनंदयुक्त

रलीआत *कामा(शा).* राजी, खुश

रलीआति *शृंगामं.* आनंदित

रलीआयत *ऋषिरा.* आनंदित

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रलीयात्य *चंद्रवा.* रळियात, [खुश]
रलीयायत *नलरा. प्रद्युचु.* आनंदित
रलीयाली *प्राचीसं.* सुन्दर
रळी रसे *प्रेमाका.* आनंदथी अने रसथी
रव *अखाका.* तान, उमंग, [उत्साह]
रवाडी, रव्वाडी, रिवाडी *अंबरा. *ऋषिरा. नलरा. प्राचीफा. *विमप्र.* राजसवारी (सं.राजपाटिका); जुओ राइवाडी
रविनंदन *गुर्जरा.* सूर्यपुत्र बुध, [डाह्यो] (सं.)
रविसुत *नरका.* यमराज, मृत्युनो देव; *प्रेमाका.* अश्विनी-कुमारो [सं.]
रवीरजो *प्राचीका.* रवैयो
रवेउ *प्रेमाका.* रविवार
रवैयो *नरका. प्रेमाका.* दहीं वलोववानुं लाकडानुं साधन, वलोणुं
रव्य *मदमो.* रवि
रव्वाडी जुओ रवाडी
रशी *प्रेमप.* रसिक
रशे *चित्तसं.* *दूर करशे (*सं.रह् परथी) [*सं.रिश् परथी]; जुओ रिहिश
रश्म *कादं(शा).* किरण (सं.रश्मि)
रस *चित्तसं.* आथो लाववा माटे मेळवण तरीके नखातुं द्रव्य
रस *चित्तसं.* पारानुं सौथी असरकारक स्वरूप; एकरस, एकरूप
रसक (रसकसवेध) *प्राचीफा.* [रस, कस (परीक्षा) अने वेध (चातुर्य)]; जुओ वेध
रसडा *पंचवा.* रस्सो, दोरडुं (सं.रश्मि)
रसणीया *विक्ररा.* रस – प्रवाही चीजोनो वेपार करनार
रसना *अखाका. ऋषिरा. कामा(त्रि). गुर्जरा. चित्तसं. विराप.* जीभ (सं.)
रसना डंसी *प्रेमाका.* जीभ कचरी, वचन आप्युं
रसनिंदिउ *षडाबा.* रसनेंद्रिय, जिह्वेन्द्रिय
रसपात *नरका.* रसना धोध, [रसना प्रवाह] [सं.]
रसरंग *वसंवि(ब्रा).* भोगानंद, [रसानंद, आस्वादानंद] [सं.]
रसवती *ऐतिरा. गुर्जरा. विराप.* रसोई (सं.)
रसवेद *नेमिछं.* रस छ, वेद चार एटले ४६-नी संख्या
रसंत *गुर्जरा.* अवाज करतुं, चीस पाडतुं (सं.रसति); जुओ रसिर
रसाइण *वीसरा.* [रसभरी के रसायण जेवी नवजीवन बक्षती रचना]
रसाउलु *गुर्जरा.* रसपूर्ण, रसाळ (सं.रसाकुल)
रसाल *आरारा.* रसाळपणे, रसपूर्वक, आनंदपूर्वक; *शृंगामं.* आंबो (सं.)
रसिर *तेरका.* किकियारी करतुं (सं.रस्); जुओ रसंत
रसो *कर्पूमं. नलरा.* रसोई (सं.रसवती)
रसोई *दशस्कं(२).* रसोडुं
रसोयि *उक्तिर.* रसोडुं (सं.रसवती)
रह *ऐतिका. गुर्जरा.* रथ
रहइ *गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अटके (सं.रहति) [दे.]; *चित्तसं.* अटके, मटे
रहइ, रहई *अंबरा. उपबा. गुर्जरा. नलरा. वाग्भबा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षडाबा. षष्टिप्र. चतुर्थी अने षष्ठीनो अनुग, -ने, -ने माटे, -नुं (सं.अपरस्मिन्); जुओ रइ, रहि, ह्रइ

रहण *गुर्जरा.* रहेवुं ते; **प्रबोप्र.* [रहेणी, रीत, व्यवहार]

रहणहार *उपबा.* रहेनार

रहतउ *उक्तिर.* रहेतो

रहवइ *गुर्जरा.* रथपति, [रथी, रथारूढ योद्धो]

रहावइ *उक्तिर. गुर्जरा.* राखे, स्थापे (सं.*रक्षापयति) [सं./दे.रह्]

रहि, रहिं *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* चतुर्थी अने षष्ठी विभक्तिनो अनुग, -ने, माटे, -नुं; जुओ रहइ

रहितउ *उक्तिर.* रहेतुं

रहितु जुओ छतु

रहिवउं *उक्तिर.* रहेवुं

रहीइ *उक्तिर.* रहेवाय

रहीतूं *उक्तिर.* रहेवातुं, रखातुं

रहीवा *उक्तिर.* रहेवा

रहेण *प्रेमाका.* [रिण], धातुने सांधवानुं झारण

रहेण *चित्तसं.* रहेवुं ते

रह्युं टमटमी *प्रेमाका.* घणुं उत्सुक थयुं

रंकण *प्रेमाका.* रणकतो, रणकार करतो

रंग *चित्तसं.* अनुभव; स्नेह, प्रीति, आसक्ति; *आरारा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* आनंद, उल्लास; *लावल.* [लगाव], प्रेम; *वसंवि(ब्रा).* विलास, विभ्रम, सौन्दर्यछटा

रंगराड **नरप(द).* [आनंदभरी तकरार, प्रेमकलह] [सं.रंग+राटि]

रंगभूमि, रंगभूमी *अंबरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* रंगमंच, क्रीडाभूमि (सं.)

रंगंगणि *गुर्जरा.* रंगभूमिमां (सं.रंग+अंगन)

रंगाउलइ, रंगाउलि, रंगावलि *विमप्र. हम्मीप्र.* बख्तरनो एक प्रकार; जुओ रगाउलि

रंच *अखाका.* **अखेगी. चित्तसं. नरका. मोसाच.* सहेज, थोडुं, लगार

रंच्यति (?रच्चंति) *शृंगामं.* राचे छे; जुओ रच्चंति

रंजण *गुर्जरा. तेरका.* रंजन करनार

रंजवइ *उपबा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* रंजन करे (सं.रंजयति)

रंजवणहार *उपबा.* राजी करनार

रंजि *गुर्जरा.* आनंद आपे

रंजिउ *आरारा. षडाबा.* राजी थयो (सं.रंजित)

रंजवियउ *ऐतिका.* प्रसन्न कर्या

रंज्या *ऐतिका.* प्रसन्न कर्या

रंड, रंडा *वेताप.* स्त्री [सं.रंडा]

रंडमाल **विक्रच.* [रुंडमाळा, खोपरीओनी माळा]

रंडा *शृंगामं.* विधवा स्त्री (सं.रण्डा); जुओ रंड

रंडुओ *मदमो.* रांडवो, रांडेलो, विधुर

रंढ मांडि *जिनरा.* जीद पकडीने; जुओ रढ

रंढाला *जिनरा.* रणवीर, [टेकीला वीर]

रंभ, रंभा *गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* ए नामनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्सरा [सं.रंभा]

रंभ-खंभ *मदमो.* कदलीस्तंभ, [केळनो थांभलो] (सं.रंभा+स्कंभ)

रंभण *प्रेमाका.* आलिंगन, भेटवुं ए [सं.]

रंभा *आरारा.* स्त्री; स्वर्गनी अप्सरानुं नाम [सं.]; जुओ रंभ

रंभा *ऋषिरा. प्रेमाका.* केळ [सं.]

रंमण *मदमो.* रमणी

रंह *वाग्भबा.* वेग [सं.रभस्]

रा *अभिऊ. कांद(ध्रु). नलरा. पंचवा. लावल.* राजा

राइ, राय, रायि *नलाख्या. लावल. वीसरा.* राजा (सं.राजन्)

राइ *षडाबा.* रात्रि

राइउ *षडाबा.* रात्रिने लगतुं

राइको *वेताप.* रबारी; जुओ रायको

राइण, राइणि *आरारा(व). उक्तिर.* रायणनुं झाड (सं.राजादनी)

राइतउ *उक्तिर.* रायतुं (सं.राजिका परथी)

राइमइ *तेरका.* राजिमती

राइवाडी *शृंगाम.* राजसवारी (सं.राज पाटिक); जुओ रयवाडिय, रवाडी

राई (राई पडी) **जिनरा.* [रीसे – रोषे भरायुं]

राउ *आरारा. उक्तिर. उषाह. कस्तुवा. गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* राजा

राउत *उक्तिर. उषाह. गुर्जरा. प्रद्युचु. प्रबोप्र. प्राचीफा. विराप.* राजा [राजकुमार], रजपूत, योद्धो (सं.राजपुत्र)

राउताई *उक्तिर.* राजपूतपणुं, वीरत्व (सं. राजपुत्र परथी)

राउल *अंबरा. आरारा. नेमिछं. प्रद्युचु. लावल. वीसरा. स्थूलिफा.* [राजगृह], राजमंदिर, राजदरबार (सं.राजकुल)

राउलउ *उक्तिर.* राजगृह (सं.राजकुलम्) [रा.]

राउलु *प्रद्युचु.* राजानुं, [रजवाडी] (सं.राजकुल)

राउली *नेमिछं.* राजकुटुंबनी; *हरिवि.* राजकुळने लगती, राजानी

राका *आरारा.* पूर्णिमा (सं.)

राक्षिसि *गुर्जरा.* राक्षसे

राखइ *आरारा. उक्तिर. उपबा. तेरका. नरका. प्रेमाका. लावल. वाग्भबा. वीसरा.* रक्षण करे, संभाळे (सं.रक्षति); *गुर्जरा.* राखे, मूके, [स्वीकारे, अटकावे, बचावे]; *आरारा. उषाह. नेमिछं. प्रेमाका.* राखे, अटके, बंध राखे, अटकावे

राख *प्राचीसं.* रक्षा, [रक्षण]

राखडी, राखलडी *अभिऊ. उक्तिर. *गुर्जरा. नरका. *नेमिछं. प्रेमाका. ललिरा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). *वीसरा.* स्त्रीओना माथा उपर पहेरवानुं एक घरेणुं

राखडी *उपबा.* राख

राखण *उषाह.* रखेवाळ (सं.रक्ष् परथी)

राखणहारु *उपबा.* रक्षण करनार; [राखनार, साचवनार]; *वसंफा. *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रक्षणहार

राखसपुरी *गुर्जरा.* राक्षसोनी नगरी

राखसि *गुर्जरा.* राक्षसी

राखसु *गुर्जरा.* राक्षस

राखिवुं *उक्तिर.* राखवुं, रक्षण करवुं

राखिस *लावल.* राक्षस

राखे *प्राचीसं.* रखे [सं.रक्षते]

राख्यस *चित्तसं.* राक्षस

राग *तेरका.* *आनंद, [भक्ति] [सं.]

रागवसिइं *ऐतिरा.* रागवशे, प्रेमथी

रागिनी *आरारा.* राज्ञी, [राणी]

राचवें *वेताप.* रीझवे [सं.रज्यते]

राछ *विमप्र.* राचरचीलुं, [गृहसामग्री]

राछनिखर (राछ निखर निरखीइ) **विमप्र.* [साधनसामग्री हलकी – खराब देखाय छे]; जुओ निखरा

राछपींछ *विमप्र.* राचरचीलुं, [गृहसामग्री]

राज *सिंहा(शा).* आप [मानार्थे]; जुओ राज्य

राज *आरारा. वीसरा.* राजा

राजइ जुओ रिजइ

राजकुली *दशस्कं(१). प्रेमाका. हरिख्या.* राजकुळ, राजवंश

राजकुंअरि *गुर्जरा.* राजकुंवरी

राजगुरिइं *विक्ररा.* राजगुरुए

राजगुल *उक्तिर.* [?] (सं.राजत्कुलम्)

राजगुह्य **अखाका.* [श्रेष्ठ ज्ञान, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मज्ञान] [सं.]

राजदुआर *वीसरा.* राजमहेलनुं द्वार

राजधान, राजध्यान *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* *राजधानी, राज्य, राज्यशासन

राजबीज *अखाका.* राजानुं संतान [सं.]

राजविया *आनंस्त.* राजवीओ

राजवेठि *आनंस्त.* राजवेठ, [राज्यनी वेठ, दरबारी वेठ]

राजस *अखाका.* रजोगुणी [सं.]; **चंद्रवा.* [रजवाडी, वैभवी, दमामयुक्त]; *मदमो.* रजवाडी

राजस-रूप *मदमो.* राजाना जेवा रूपवाळो

राजसिरी *आरारा.* राज्यश्री, राज्यलक्ष्मी

राजसीआं *मदमो.* रजवाडी माणसो

राजान *उक्तिर.* वनस्पतिविशेष (*सं. राजानक)

राजि *कादं(शा). नलाख्या.* राज्य

राजियो *देवरा.* राजा

राजीइं *आनंस्त.* राजी थईए [सं.रज्यते]

राजीउ *आरारा.* राजा

राजीव *प्रेमाका.* भूरा – वादळी रंगनुं कमळ [सं.]

राजीवलोचन *अखाका.* कमळ जेवी आंखो-वाळी [सं.]

राज्य *मदमो.* आप [मानार्थे]; जुओ राज

राटी *नलरा.* हलकी स्त्री, [कजियाळी स्त्री] [सं.राटि परथी]

राठउड *उक्तिर.* राठोड, एक क्षत्रिय जाति (सं.राष्ट्रकूट)

राठी *प्राचीसं.* ब्राह्मण-जाति-विशेष [सं. राष्ट्रिक]

राड **अखाका. *चंद्रवा. दशस्कं(२). प्रेमाका.* लडाई, तकरार, संघर्ष [सं.राटि; दे.राडि]; जुओ रंगराड, राढ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राडि *नेमिछं.* फरियाद; *उक्ति.* *गुर्जरा. जिनरा. *विराप.* लडाई, झघडो, तकरार (दे.) [सं.राटि]; जुओ राढ, राढि

राडो *चंद्रवा.* ?

राढ *कस्तुवा. प्रेमाका. मदमो. वेताप. सिंहा(शा).* कजियो, तकरार [सं.राटि; दे.राडि]; *नरका.* *रढ, *जिद्द; [*तोफानमस्ती]; आसक्ति, [रढ, लगनी]; जुओ राड

राढि *विमप्र.* राड, तकरार; *नलाख्या.* राड, झगडो, [*खोटी वात] (दे.राडि) [सं. राटि]; जुओ राडि, राहाडि

राणिम *आरारा. गुर्जरा.* *विमप्र.* राजत्व, राजपद

राणोराण *आरारा.* समस्त (रा.)

राणोराणि *अभिऊ.* राजाओनो [मोटा योद्धाओनो] समूह (सं.राजन्नो विकास) [प्रा.राण, सं.राजानक]

रातउ *ऐतिरा.* *राजी, [आसक्त]; *गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. नरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आसक्त, अनुरक्त (सं.रक्त)

रातडि *उपबा. कादं(धु). कादं(शा).* रताश, लालाश (सं.रक्त)

रातवासे *नरका-२.* [रातवासा माटे, रात रहेवा माटे]

रातांबर *अखेगी.* सूर्य [सं.रक्तांबर]

राति *उक्ति. गुर्जरा. तेरका. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* रात (सं.रात्रि)

रातीजगा *ऐतिरा.* [उत्सव प्रसंगे मांगलिक गीतो साथेनुं सामूहिक] रात्रे जागरण

रातु *नलरा.* आसक्त (सं.रक्त)

रातुउ *विराप.* रागी, [आसक्त] (सं.रक्त)

रातूंबर *प्रबोप्र.* लाल वस्त्र, लाल वस्त्रवाळी स्त्री (सं.रक्तांबर)

राथ *प्रेमाका.* रथ (प्रास खातर 'राथ')

राधा *षडाबा.* रांध्यां (सं.रध्यति)

राधाजीके *चतुचा.* राधाजी पासे

राधावेध *अभिऊ. गुर्जरा.* [ऊंचे घूमती] पूतळी[नी आंख]ने वींधवी ते [सं.]

रान *अखाका. उक्ति. कामा(त्रि). नरका. प्रेमाका. रूपच. लावल. वीसरा.* अरण्य, जंगल; जुओ रांन

राबड *अखाछ.* राबडी जेवुं, रगडो

रामधरणि *लावल.* रामनी गृहिणी, सीता

रामति, रामत्य *अभिऊ. अखेगी. आरारा. उपबा. उषाह. कृष्णबा. गुर्जरा. जिनरा. नरका. नलरा. प्राचीफा. प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. षडाबा. षष्टिप्र. सिंहा(शा).* रमत, क्रीडा (सं.रम् परथी)

राम थया *नरका.* पूर्ण थया

रामदासियां *प्रेमाका.* गरीब, कंगाल, दीनदुःखी

रामलि *गुर्जरा.* रमत, क्रीडा (सं.*रम्य+लि)

रामिणी *अंबरा.* रमणी

रामेकडउ *जिनरा.* रमकडुं, [आनंदनुं साधन]; जुओ रमेकडा

राय *उपबा. गुर्जरा. तेरका. वीसरा.* राजा; जुओ राइ

रायउ *वीसरा.* [रात्रि] [सं.रात्र, प्रा.राय]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायकूंयर *गुर्जरा.* राजकुंवर (सं.राजकुमार)

रायको *चंद्रवा. प्रेमाका.* गोवाळ, रबारी; जुओ राईको, राया

रायणि *गुर्जरा.* रायणनुं झाड (सं.राजादनी)

रायपुत्ति *नेमिछं.* राजकुंवरी (सं.राजपुत्री)

रायविहार *विक्ररा.* राजविहार, मोटां मंदिर

राया **अभिऊ.* [रायका, रबारी]; जुओ रायका

रायि जुओ राइ

रास *आरारा(व).* राळ, सालवृक्षनो रस (सं.)

रालइ **लावल. वीसरा.* फेंके, नाखी दे, दूर करे (सं.*रल्ल ?) [रा.]

राळे होठ *अखाका.* होठ भीडे, गुस्से थाय, झघडो के वादविवाद करे, [*बकवाद करे]

राव *वीसरा.* राजा (सं.राजन्)

राव, रावडली *अभिउ. उषाह. *गुर्जरा. नरका. प्राचीसं. प्रेमाका. ललिरा. विमप्र. विराप. शृंगामं.* फरियाद (सं.)

रावटउ *उक्तिर.* कोई करियाणुं (*सं. राजावर्तः)

रावटी *कामा(शा). प्रेमाका.* गोळ छज्जुं, अगाशी

रावडली जुओ राव

रावडी *नलरा.* फरियाद (सं.राव+डी)

रावत *प्रेमाका.* मदमो. राजपुत्र, रजपूत, [वीर पुरुष]

रावल, रावळ, रावल्य *अभिऊ. नरका. *नरप. मदमो. वीसरा.* [राजगृह], राजमंदिर, राजदरबार (सं.राजकुल)

रावली *मदमो.* रजवाडी (सं.राजकुल)

रावल्य *चंद्रवा.* राजदरबार; जुओ रावल

राश *प्राचीसं.* रास, गोळाकारे नृत्य करतां गीत गावुं ते

राश *चतुचा. हरिख्या.* राशि, ढगलो

राश *प्रेमाका.* लगाम, दोरडुं [सं.रश्मि]

राशि *कादं(शा). नलाख्या.* [राश], घोडा-बळदनुं दोरडुं, [लगाम] (सं.रश्मि)

राष्ट [*रुष्ट, *रिष्ट] *प्रेमाका.* *कष्टरूप, [*उग्र], [*अरिष्ट, *अनिष्ट, *उत्पात करनार]; जुओ रिष्ट

रास *अखाछ.* मेळ

रास *अखाछ.* राशि, भंडार

रास *गुर्जरा. तेरका. नलरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* गोळाकारे नृत्य करतां गीत गावुं ते (सं.); ए हेतुथी थयेली साहित्यरचना

रासह *तेरका.* गधेडो (सं.रासभ)

रासि *आरारा. तेरका.* राशि, मोटुं प्रमाण, समूह

रासिया *प्रेमाका.* रास – लगाम पकडनारा, [रथारोही योद्धा के सारथि]

रासुलउ, रासुलडउ *प्राचीसं.* रास, [नृत्य-प्रकार, साहित्यप्रकार]

राह *उक्तिर. नलरा. वीसरा.* राहु

राहवउ *प्राचीसं.* राघव, [राम]

राहवउ *गुर्जरा.* रक्षण करो, [साचवो, संभाळो] (सं.*रक्षापयति) [*सं.रह्]

राहाडि *कृष्णबा.* रढ, हठ; जुओ राढ, राढि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राहावी *उषाह.* अटकावी

राहावेहु *गुर्जरा.* राधावेध, गोळ घूमती पूतळीनी डाबी आंख वींधवी ते

राहि *अभिऊ.* मार्गमां

राहि *अभिऊ.* राहु – नव ग्रहमांनो एक ग्रह, राहुथी

राही **प्रेमाका.* [राधाए मोकलेली एक गोपीनुं नाम]

राही, राहीय *कर्पूमं. नेमिछं. लावल. हरिवि.* राधिका

राहीवरा *नरका.* राधिकावर, कृष्ण

राहु *अभिऊ.* राहदारी, वटेमार्गु

राहे *चित्तसं.* राहुए

रांकढीक जुओ ढीक

रांघलुं *सिंहा(शा).* रांगुं, नबळुं (सं.रंग-) [सं.रंघ-]

रांटा *प्रेमाका.* त्रांसा, [वांका, वळेला]

रांडी *गुर्जरा.* विधवा (सं.रंडा)

रांढू *षडाबा.* रांढवुं, दोरडुं

रांण *नंदब.* अरण्य

रांधणउ *उक्तिर.* रसोई. रांधवुं ते (सं.रंधनम्)

रांधिवउं *उक्तिर.* रांधवुं

रांन *ऋषिरा.* अरण्य; जुओ रण, रान

रांपी *उक्तिर.* चामडुं छोलवानुं मोचीनुं ओजार [दे.रंप परथी]

रांमा *कामा(त्रि).* स्त्री

रि *गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* रे (अप.)

रिउ *गुर्जरा. तेरका.* रिपु, दुश्मन

रिक्षा *ऐतिका.* रक्षा

रिखसा देवरा. [रक्षा], रक्षण

रिच *कादं(शा).* ऋग्वेद (सं.ऋच्)

***रिजइ [राजइ]** *उक्तिर.* शोभे (सं.राजते)

रिज्रइ (रोवइ रिज्रइ) *प्राचीफा.* *काकलूदी करे, [*रुए-विलपे]

***रिडि [रिधि]** *उषाह.* समृद्धि, विभूति

रिण *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* रण, युद्ध

रिण *वीसरा.* ऋण, देवुं

रिणउ *उक्तिर.* ऋण, देवुं

रिणतूर *प्राचीसं.* रणतूर, [रणशिंगुं]

रिणवास *वीसरा.* रणवास, राणीवास (सं. राज्ञीवास)

रिति जुओ रति

रिति *उषाह.* ऋतुमां

रितु *आरारा. तेरका. नलरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* ऋतु

रितुपति *गुर्जरा. वसंफा(ल).* ऋतुपति, वसंत

रितुपति-राउ *वसंवि(ब्रा).* ऋतुपतिराज

रिदय *आरारा.* हृदयमां

रिदि *कादं(शा).* हैयुं; *नलाख्या.* हृदये

रिधि जुओ रिडि

रिध्य *अखाका.* रिद्धि, समृद्धि

रिमिझिमि *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* रूमझूम

रिवाडी जुओ रवाडी

रिषि *गुर्जरा. लावल.* ऋषि

रिष्ट *प्रेमाका.* [अनिष्ट योग], अमंगळ संकट [सं.]; जुओ राष्ट

रिसह *गुर्जरा. प्राचीसं.* ऋषभदेव

रिसहेसर, रिसहेसरो *गुर्जरा. तेरका.* ऋषभदेव (सं.ऋषभेश्वर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिसावइ *प्रेमाका.* रिसाय, रिसाई [सं.रिष्]

रिसि *उपबा.* तेरका. ऋषि

रिहिशि कादं(शा). रहेंसे, क्रूरताथी खूब पीडा करे [सं.रिश्]; जुओ रशे

रीखतु *कादं(ध्रु).* भांखडिये चालतो (सं. रिंख्)

रीछ *उक्ति.* रींछ (सं.ऋक्ष)

रीझ *चंद्रवा. प्रेमाका.* राजीपो, प्रसन्नता, आनंद [सं.ऋध्यति]

रीझवट *चंद्रवा.* राजीपो, प्रसन्नता

रीडिया काढवा *दशस्कं(१).* हडी काढवी, दोडादोड करवी

रीणउ *आरारा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* थाकेलो, पीडित (दे.रीण); जुओ थाकी-रीणी

रीत *नरका. प्रेमाका.* रिवाज मुजबनो कर

रीतभात *प्रेमाका.* रिवाज प्रमाणे पहेरामणी, [करकरियावर]

रीति *आरारा.* स्थिति, अवस्था (रा.)

रीतुसंग *कामा(त्रि).* [ऋतुकाळे] संभोग

रीते *चित्तसं.* मार्गे

रीद *चित्तसं.* रिद्धि

रीदि *कादं(शा).* हैयुं

रीध, रीध्य *कामा(त्रि). कामा(शा). प्रेमाका. मदमो.* सिद्धि, समृद्धि, ठाठ (सं.ऋद्धि)

रीध्यवीध्य *सिंहा(शा).* ऋद्धिवृद्धि, [समृद्धि अने वृद्धि]

रीयए **उपबा.* [जाय] [प्रा.रीयइ]

रीर *अभिऊ. दशस्कं(२). प्रेमाका.* चीस

रीरी *गुर्जरा.* पित्तळ (सं.रिरी)

रीव *जिनरा.* **नलरा. नेमिछं. विमप्र. विक्रच.* चीस, पोकार

रीस *उपबा. गुर्जरा. नलाख्या. प्राचीसं. षडाबा.* रोष, गुस्सो (सं.रुष्) [सं.रिष्]

रीसइं *गुर्जरा.* गुस्से थाय (सं.रुष्)

रीसाल *उपबा.* रोषीलो; *उक्ति.* ईर्ष्याळु

रीसालाभुं *आनंस्त.* रसालानी भूमि, घोडासार

रीसावइ *आनंस्त. उपबा.* रीस करे, गुस्से थाय [सं.रुष् परथी]

रींखइ *आरारा.* रुए, विलाप करे (रा.रींकणौ)

रींझ *आरारा.* रीझ, खुशी

रुअडो *मदमो.* रूडो (सं.रूप परथी)

रुक्खडउ जुओ रुंख

रुख *अभिऊ. आरारा.* वृक्ष; जुओ रुंख, रूख

रुखी *कामा(त्रि).* ऋषि, ब्राह्मण; *दशस्कं(१).* ऋषि

रुचित *दशस्कं(१).* रुचिकर

रुचे *प्रेमाका.* रुचिए, मरजीथी

रुच्च- *तेरका.* रुचवुं (सं.रुच्)

रुच्च *अखेगी.* रुचि

रुडेइ *गुर्जरा.* दडदडे [दे.रड्ड]

रुढ *प्राचीका.* रढ, हठ

रुणऊणइ [रुणझुणइ] **ऐतिका.* [रणझणे, गुंजारव करे]

रुणझणिरि [रुणझुणिर] *तेरका.* रण-झणती, रूमझूमती

रुणझुणइ *गुर्जरा. तेरका. स्थूलिफा.* रणझणे; गणगणे, गुंजे; जुओ रुणऊणइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुणझुणकार *वीसरा.* रणझणकार

रुणझुणिर जुओ रुणझणिरि

रुदया *दशस्कं(१).* हृदय

रुदे *अखाका.* हृदय; *प्रेमाका.* हृदयमां

***रुद्दु [रुद्ध]** *गुर्जरा.* रूंध्यो, [*मसळी नाख्यो]

रुद्धि *ऐतिका.* ऋद्धि, धन, [संपत्ति]

रुयडु *आरारा. शृंगामं.* रूडुं, सुंदर (सं.रूप)

रुयरि *प्राचीफा.* वहाणनो कोई भाग

रुलइ **आरारा. उपबा.* **ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीसं. षष्टिप्र.* भटके, आथडे, रगदोळाय [दे.]; जुओ रलइ

रुलि *सिंहा(म).* आनंद (सं.रति+ली) [दे. रली]; जुओ रलि

रुलिआउति *गुर्जरा.* रळियात, आनंदित

रुलिआयत *हम्मीप्र.* रळियात, आनंदित

रुलियउ *उक्तिर.* आनंदित थयो (*सं. रुलितः) [दे.रली परथी]

रुलियामणउ, रलियावणउ *प्राचीसं.* रळियामणुं, सुन्दर, आनन्दोत्साहजनक

रुलियायितु *षडाबा.* आनंदित

रुली, रली *नलरा. प्राचीसं. लावल. विक्ररा. विमप्र.* आनंद, आनंदपूर्वक (सं.रति+ली) [दे.रली]

रुलीआयुत *विमप्र.* रळियात

रुलीयाइति *अंबरा.* हर्षित

रुलीयात *सिंहा(म).* आनंदित

रुलीयामणउं *उक्तिर.* आनंदजनक (सं.रति परथी) [दे.रली परथी]

रुलीयायित *उक्तिर.* प्रसन्न करायेल

रुववंत *तेरका.* रूपवंत

रुष्ट जुओ राष्ट

रुसल्य *चित्तसं.* भ्रांतिभर्युं; जुओ रूसल

रुसी *नरका. षडाबा.* रिसाइ, गुस्से थई (सं.रुष्)

रुहाडि *आरारा. प्राचीफा. लावल. *शृंगामं.* इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना [रा.] (दे.रुहरुहय); जुओ रूहाडि

रुहिरिइ *विक्ररा.* रुधिर वडे

***रुंआंछ्यु [*रुंसाड्यु]** *उषाह.* क्रुद्ध थयो; जुओ रुंसाडइ

रुंख, रुक्खडउ *प्राचीसं. लावल. विक्रच.* वृक्ष; जुओ रुख, रूख

रुंखडउ *आरारा. नलरा.* वृक्ष

रुंढमाळ *प्रेमाका.* खोपरीनी माळा

रुंबता *अभिऊ.* कुस्ती करता

रुंसाडइ *गुर्जरा.* गुस्से करे

रुंसाड्यु जुओ रुंआंछ्यु

रूअ *ऐतिका.* रूप

रूअडउ *नलरा. लावल. सिंहा(शा).* रूडो, सुंदर (सं.रूप)

रूआ *उपबा.* रूपिया (सं.रूपक)

रूउ *नलरा.* चांदीनो एक सिक्को (सं.रूपक)

रूउ *गुर्जरा.* गायनुं धण (सं.रूप)

रूइ *नलाख्या.* [रुए], रडे (सं.रोदिति)

रूख *आरारा. जिनरा. वीसरा.* वृक्ष; जुओ रुख

रूखउ *उक्तिर.* लूखुं (सं.रुक्षम्) [रा.]

रूगयजुसाम *चतुचा.* ऋग्वेद, यजुर्वेद अने सामवेद

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूढे *अखाका. अखाछ.* रूढिए, रढिने वश थईने

रूणझुणि *गुर्जरा.* रणझण अवाज (सं.रणत् +ध्वनि)

रूतउ *उक्तिर.* क्षुभित, पीडित (सं.रुग्नः)

रूदआ *मदमो.* हृदय

रूदराणी *कामा(त्रि).* रुद्राणी, पार्वती

रूदीआ *कामा(त्रि).* हृदये, छाती पर

रूदे *कामा(त्रि).* हृदयमां

***रूधि[रूंधि]** *कादं(शा).* रोकवामां आवी (सं.रुद्ध-)

रूनउ *वीसरा.* रड्युं

रूपक चढे *अखाका.* देखादेखी करे, [दाखलो ले, अनुकरण करे]

रूपके *अखाका.* *खेलमां, (*कामक्रीडामां)

रूपणि *प्रद्युचु.* रुक्मिणी (प्रा.रुप्पिणी)

रूपम **वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* रूपानी (सं.रौप्यमय)

रूपरेह *गुर्जरा.* रूपरेखा, [आकृतिसौंदर्य]

रूपारेल *अखाका.* रूपानी रेल जेवुं, रेलंछेल, अति समृद्ध

रूपिणि *प्राचीफा. हरिवि.* रुक्मिणी (प्रा. रुप्पिणी)

रूय *गुर्जरा. प्राचीसं.* रूप

रूयउ *प्राचीसं.* रूपियो (सं.रूपक)

रूयवंत *गुर्जरा.* रूपवंत

रूलिआमणां *लावल.* रळियामणां, सुंदर

रूव *ऐतिका.* रूप

रूवडउं *प्राचीसं.* रूडुं

रूवय *ऐतिका.* रूपक

रूविण *ऐतिका.* रूपथी

रूसइ *उक्तिर. गुर्जरा.* गुस्से थाय (सं. रुष्यति)

रूसण *ऐतिका.* [रिसावुं ते, रूठवुं ते], गुस्से थवुं ते

रूसणियुं *नरका.* रिसावानी क्रिया, [रूसणुं]

रूसल *अखाछ.* रोष, रिसायेलापणुं ?, [*अज्ञानयुक्त – रागयुक्त भ्रान्त मनोदशा]; *अखाका.* *रोष, *अभिमान [*अज्ञान, *अज्ञानपूर्वक]; जुओ रुसल्य, रूंस

रूहाडि *जिनरा.* अभिलाषा; जुओ रुहाडि

रूं *उक्तिर.* रूवुं, रोम

रूंख *उक्तिर. गुर्जरा.* वृक्ष (सं.*रुक्ष); जुओ रूख

रूंखडुं *नलरा.* प्रेमाका. वृक्ष

रूंगुं *अभिऊ. *नलाख्या.* रुदन, [रोवुं ते]

रूंध *अखाका. अखाछ.* रूंधामण, बंधन

रूंस *चित्तसं.* रागयुक्त भ्रमित मनोदशा; जुओ रूसल

रेख, रेखा *अखाका. गुर्जरा. चतुचा.* रेखामात्र, लेशमात्र, थोडुं; *चतुचा. नलरा.* परिसीमा, हद (सं.रेखा)

रेखीय *हरिवि.* रेखांकित करीने, [लिसोटो करीने]

रेटइ *प्राचीफा. *वसंवि(ब्रा).* पहेरे [रा.]

रेड *लावल.* [घन]पवाह, [*घन – मूर्त स्थिति, *अतिशयतानी स्थिति]

रेण *गुर्जरा. नरका.* धूळ, रज (सं.रेणु)

रेण *अखाका.* सांधवानो पदार्थ के ते माटेनो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रिया, सांधेलां, एक थयेलां, [जोडाण, आश्लेष]

रेण *अखाका. नरका.* रात्री (सं.रजनी)

रेणी *अखाका. कामा(त्रि). दशस्कं(र). नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* रजनी, रात; जुओ रेंयणी

रेत *दशस्कं(१). प्रेमाका.* वीर्य [सं.रेतस्]

रेल, रेलि *विमप्र.* प्रवाह, [छोळ]; **लावल. विमप्र.* *बहेक, *सौरभ, [शीतल वायु-प्रवाह] [रा.रेली]

रेवइयागिरि *चारफा.* गिरनार पर्वत [सं. रैवतगिरि]

रेवणी *ऋषिरा. प्रद्युचु. विमप्र.* रेवडी दाणादाण, खेदानमेदान, अस्तव्यस्त, हेरान करवुं ते, [खंडखंड करवुं ते, फजेती, दुर्दशा]

रेवति *गुर्जरा.* गिरनार (सं.रैवतक)

रेवय *आरारा.* रेवती, एक प्रसिद्ध श्राविका

रेवय *प्राचीसं.* रैवतक, [गिरनार]

रेवंत *कृष्णबा. नरका. प्रेमाका. हरिख्या.* अश्व, घोडो

रेवंत *तेरका.* गिरनार (सं.रैवत)

रेश *अखाछ.* रहीश, रहेशे

रेशि *उषाह. प्रबोप्र.* चतुर्थीनो प्रत्यय, माटे (अप.रेसि)

रेसि *अंबरा. आरारा. उषाह. कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र.* चतुर्थीनो प्रत्यय, -ने, -ने माटे, प्रत्ये (अप.)

रेसि *उषाह.* शोभे (*प्रा.रेह)

रेह *आरारा. ऐतिरा. वीसरा.* रेखा, लीटी; *नलरा.* परिसीमा (सं.रेखा); **गुर्जरा. प्राचीसं.* कीर्तिरेखा, [प्रतिष्ठा]

रेहइ *उषाह. तेरका. प्राचीफा.* शोभे (दे.)

रेहा *ऋषिरा.* रेखा, लीटी, [हद, सीमा]

रेहिणी **ऐतिका.* [शोभती] [दे.]

रेहेकले *रूत्तस.* रेंकडामां [*सं.रथकल]

रेहेणी *प्रेमप.* वर्तन, व्यवहार

रेंयणी, रेणी *प्राचीका.* रात्रि (सं.रजनी)

रैणी-रमण *अखाका.* रजनीपति, चंद्र

रैवत *गुर्जरा.* गिरनार (सं.रैवतक)

रो *चतुचा.* रह्यो; *नंदब.* रहो; रह्यो

रोअती *गुर्जरा. विराप.* रोती (सं.रोदिति)

रोइवउं *उपबा.* रोवुं ते (सं.रोदिति)

रोक *आरारा. *चंद्रवा. नरका. प्रेमाका.* रोकडुं, नगद [दे.रोक्क]

रोकंत *प्रेमाका.* रोक, [रोकड]

रोकारोक *अखाका.* रोकडेरोकडुं; [हाजरा-हजूर]; *अखाछ.* रोकडुं,[नगद]

रोक्क *प्राचीसं.* रोकडुं [दे.]

रोख *चंद्रवा. शीलक.* दमाम, रोफ, [गौरव], [स्थान-माननो ख्याल]

रोख **चंद्रवा.* [रोकडुं, साचेसाच, प्रत्यक्ष]

रोखमां *मदमो.* वटमां, [गौरवभेर, वास्तव-मां, प्रत्यक्ष]

रोचना **अखाछ.* [राजी करवापणुं] [सं.]

रोज *आरारा.* एक दिवस (फा.)

रोझ, रोझडी *उक्तिर. गुर्जरा. प्रेमाका. वीसरा.* ए नामनुं प्राणी, नील गाय [दे.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोडउं *गुर्जरा.* गबडावुं, [अवरुद्ध करुं, हेरान करुं] [दे.;रा.]

रोडी *प्रेमाका.* हडी, दोट; जुओ रोढा

रोडुं *चतुचा.* ईंटनो टुकडो, तुच्छ वस्तु

रोढा *दशस्कं(१). प्रेमाका.* दोट; जुओ रोडी

रोदना *आनंस्त.* रुदन [सं.]

रोध *चित्तसं.* अवरोध, अंतराय [सं.]

रोध्युं *चित्तसं.* रूंधायेलुं [सं.रोधित]

रोपणा *आनंस्त.* [रोपणुं ते], स्थापना [सं.]

रोमकूप *प्रेमाका.* रूंवाडांनां छिद्र [सं.]

रोमराइ *हरिवि.* रोमराजी, [रूंवाडां]

रोमंच्यउ *ऋषिरा. गुर्जरा.* रोमांचित थयो

रोमाउली *वसंवि(ब्रा).* रोमावलि, [रूंवाडां]

रोयइ *उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. षडाबा.* रुए (सं.रोदिति)

रोयिवा *उक्तिर.* रोवा

रोर *वाग्भबा.* दरिद्रता; *ऋषिरा. शृंगामं.* रांक, गरीब (दे.)

रोर जुओ पाव रोर

रोल, *प्राचीसं.* कोलाहल [दे.]; जुओ रोलि

रोळ *प्रेमाका.* विनाश [दे.रुल परथी]

रोल, रोळ *नेमिछं. प्रेमाका. वीसरा.* प्रवाही मिश्रण, लेप; **नरका.* [आनंदमस्ती; मस्ती, छोळ]; जुओ रोला

रोल *स्थूलिफा.* कंकु (हिं.रोरी, रोली); *विमप्र.* [कंकु जेवुं] रातुं

रोलइ, रोळइ *अभिऊ. विमप्र.* रगदोळे, [नष्ट करे] (दे.रुल परथी); *गुर्जरा.* गबडावे, [रगदोळे, नष्ट करे; आच्छादित करे]; *नरका-२.* रोळवानी क्रिया करे, [लपेडे]

रोलवइ *आरारा. लावल.* रोळे, भांगी नाखे, [नष्ट करे]

रोलंब *शृंगामं.* भमरो (सं.)

रोला, रोळा **लावल.* [लेप, घट्ट प्रवाही]; *नरका.* रेलंछेल; जुओ रोल

रोलि **गुर्जरा.* [कोलाहल, विवाद] (दे. रोल); जुओ रोल

रोवइ *ऋषिरा. गुर्जरा. देवरा.* रुए [सं.रोदिति]

रोवइ रिज्झइ जुओ रिज्झइ

रोश *मदमो.* खोड

रोशि *प्रबोप्र.* रोषे, [क्रोधथी]

रोशि **विमप्र.* [आवेशमां आवे, मारेकापे] [रा.रोसणौ]

रोस *गुर्जरा. तेरका. वीसरा.* रोष, गुस्सो

रोसारुणु *गुर्जरा.* क्रोधथी रातुं (सं.रोषारुण)

रोह *अखाका.* *रोष, *अभिमान, [*रोध, *बंधन]; *गुर्जरा. विराप.* घेरो (सं.रोध)

रोहिणी गाज *अखाका.* रोहिणी नक्षत्रमां वरसादनी गाजवीज (ते थाय तो वरस मोळुं आवे – पाक बराबर न थाय)

रोहीडउ *उक्तिर.* रोहीडो, एक वनस्पति (सं.रोहीतकः)

रोहीस *उक्तिर.* एक प्रकारनुं सुगंधी घास, रोयडो, रोस, रोहीडो (सं.रोहिषः)

रोंसा *रूस्तस.* ?

रौरव *मदमो.* भयंकर [सं.]

लइय *तेरका.* लीधुं (सं.'नय्' तथा 'ला')

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लउडउ *उक्तिर. षष्टिप्र.* लाकडी (सं.लकुट)
लउंकडी *उक्तिर.* लोंकडी [दे.लुंकडी]
लउंग *उक्तिर.* लविंग (सं.लवंग)
लक्ख *तेरका. नेमिछं.* लाखनी संख्या (सं.लक्ष)
लक्खणिण *ऐतिका.* लक्षणोना ज्ञाता [सं. लक्षणिन्]
लक्ष *चित्तसं.* लक्ष्य, दृष्टिबिंदु
लक्षण *आरारा.* शुभ चिह्नो (सं.); *चित्तसं.* गुणधर्म
लक्षे *चित्तसं.* लक्ष्ये, छेवटे, अंते
लक्षेलक्ष *प्रेमाका.* लाखो, [लाखंलाख]
लक्ष्मी *वाग्भवा.* शोभा [सं.]
लख *वसंफा.* लक्ष्य
लख *नेमिछं. मोसाच. लावल. वीसरा. शृंगामं.* लाखनी संख्या (सं.लक्ष)
लखइ *अखाका. अखाछ. आरारा. उक्तिर.* जुए, पामे, ओळखे, पारखे, समजे (सं. लक्ष्)
लखइ *कामा(शा). प्रेमाका.* आलेखे, चीतरे [सं.लिखति]
लखण *ऐतिका.* लक्षण
लखणवन्तो *ऐतिका.* लक्षणवंत
लख प्रकारे *मोसाच.* लाख रीते
लखलख करती *प्रेमप.* बोलबोल करती
लखलखती *प्रेमाका.* बबडाट करती
लखलाघवी *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लक्ष्यवेधनुं कौशल (सं.लक्ष+लाघव); जुओ लघु-लाघवी
लख वार *शृंगामं.* लक्ष वार, लाख वखत
लखा *विमप्र.* लाख (संख्या) (सं.लक्ष)
लखाणी, लखी *चित्तसं.* आलेखी, वर्णवाई [सं.लिख्]
लखि (लखि परि) *विमप्र.* लाख [प्रकारे]
लखी जुओ लखाणी
लखु *गुर्जरा.* लक्ष्य
लखे *चंद्रवा.* ?, [जणाय, ओळखाय]; *चित्तसं.* लक्षे, ध्यानमां ले, जुए
लखेण *कामा(त्रि).* लक्षण
लख्य *प्रबोप्र. मदमो.* लाख (संख्या) (सं. लक्ष)
लख्य *मदमो.* लक्ष्मी
लख्यणहीण *लावल.* लक्षणहीन, गुण विनानो
लग, लगइ, लगि, लगिइ, लगी, लगे, लगें *अखाका. उपबा. उषाह. गुर्जरा. नरका. नरप. लावल.* लगी, सुधी; *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. प्राचीका. *लावल. *षडाबा.* -थी, -थी मांडीने; *अखाछ. उपबा. *उषाह. गुर्जरा. चित्तसं. नलरा. प्राचीफा. षडाबा.* -थी, -ने कारणे, तेथी, [पूर्वक]
लगउं *गुर्जरा.* भेगुं थयुं, जोडायुं (सं.लग्न)
लगण *प्रेमाका.* सुधी
लगतो *प्रेमाका.* नजीक
लगन *लावल.* ज्योतिषविद्या प्रमाणे मुहूर्तनी कुंडळी, [मुहूर्त] (सं.लग्न); जुओ लग्न
लगंडु *षडाबा.* वांकुं लाकडुं [दे.]
लगाडणि *षडाबा.* लगाडवामां
लगाडी देवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* आग लगाडी बाळी देवुं; जुओ लागी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लगामी *वीसरा.* लगाम

लगि, लगिइ, लगी, लगे, लगें जुओ लग

लग्गइ *गुर्जरा. तेरका. नेमिछं.* लागे (सं. लग्यति)

लग्न *प्रेमाका.* पृथ्वी एक राशिमां रहे तेटलो समय [सं.]; मुहूर्त; जुओ लगन

लघवइ *अभिऊ.* लघुवय[वाळो]

लघु *आरारा.* धीमा

लघुकरमी *ऋषिरा.* जेनां कर्मो हळवां छे ते, [थोडां कर्म रह्यां छे तेवो, तरत मुक्ति पामनारो] [जै.]

लघुनीत *दशस्कं(१). प्रेमाका.* लघुशंका, मूत्रनो परित्याग

लघुलाघवी *अखाका.* चतुराई, [लक्ष्यवेध करवानी कुशळता]; जुओ लखलाघवी, लाघव

लघुलाघवी विद्या **प्रेमाका.* [लक्ष्यवेध करवानी कुशळता]

लघु-वि *कृष्णबा.* लघु वय

लघु-वे *दशस्कं(१).* लघु वय

लच्छि, लच्छी, लछि, लछी, लंछी, लाछि *आरारा. ऐतिरा. प्राचीका. प्राचीसं. सिंहा(म).* लक्ष्मी, [धन]; *गुर्जरा. प्राचीसं.* लक्ष्मी [देवी]

लछ *प्राचीका. वेताप. सिंहा(शा).* लक्ष्मी, [धनवैभव]

लछमछ **नेमिछं.* [*सुंदर, *लटकाळी]

लछि *ऐतिका.* लक्ष्मी, [धनसंपत्ति]; [वैभव, महिमा]; *विराप.* लक्ष्मी[देवी]; जुओ लच्छि

लछी जुओ लच्छि

लछूछी *लावल.* लक्ष्मी, [समृद्धि]

लंछी जुओ लच्छि

लज्या *दशस्कं(१). मदमो.* लज्जा, लाज

लटका करे *चित्तसं.* व्यवहार करे, रमण करे

लटके *प्रेमाका.* सहेलाईथी, [रमतमां]

लटपट *प्रेमाका.* खुशामत, *चालाकी; जुओ लाटेपाटे

लटपटी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* लपेटी, वींटीं, घेरी

लट्टा *षडाबा.* कसुंबो, करडीनो छोड (दे.; सं.लट्वा)

लट्टू *उक्तिर.* कसुंबो, करडी (सं.लट्वा) [दे.लट्टा]

लडथडइ, *नलाख्या. नेमिछं. जिनरा.* लथडे

लडसडइ *नरका. प्राचीफा.* लहेरमां के मदमां चाले

लडहि *प्राचीफा.* सुन्दर (सं.लटभ) [दे. लटह]

लडहियतण *प्राचीफा.* सुन्दरता (सं.*लटभिकत्वन)

लडा *विमप्र.* शोभीता [दे.लडह]

लडाक *दशस्कं(१). प्रेमाका.* लडकणो

लडावइ *गुर्जरा. नेमिछं.* लाड लडावे, [स्नेह करे] [दे.लड्डिय]

लहाविय *प्राचीसं.* प्रशंसित

लद्धउ *गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं.* लीधुं, प्राप्त कर्युं (सं.लब्ध)

लद्धिवर *ऐतिका.* *उत्तम लब्धि, [योगादिथी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राप्त शक्तिविशेषनुं वरदान धरावनार]

लध *आरारा.* मळी (सं.लब्ध)

लपनश्री *षडाबा.* लापसी (सं.लप्सिका) [दे. लप्पसिया]

लपि *नलरा.* लिपि, लेखनविद्या

लबधि *ऐतिरा.* लब्धि, सिद्धि

लबधिवन्त *ऐतिका.* लब्धि(शक्तिविशेष)-संपन्न

लबधी *आरारा.* आसक्त रही (सं.लुब्ध)

लबरका **उषाह.* [लपकारा]

लबांनीयो *कस्तुवा.* वणजारो

लबशी पडे *प्रेमप.* लपसी पडे

लबे *अखाछ.* होठे [फा.]

लब्धि *लावल.* योगथी प्राप्त थती विशिष्ट शक्ति, [सिद्धि]

लयलीण *आरारा.* रच्योपच्यो

लयउ *उषाह. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लीधो (सं.ला-)

लया *आरारा.* लता

लयेत *उक्तिर.* लई लेत, हरी लेत

ललचे *प्रेमाका.* ललचाय ०

ललत *प्राचीफा.* रम्य (सं.ललित)

ललवटे *कामा(त्रि).* ललाटे, कपाळमां

ललवल **वसंफा. *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लचकपूर्वक, लटकमटक (सं.ललत्+वलत्)

ललवलउ *प्राचीफा.* [लटकाळुं], सुंदर

ललवलती *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लळती, लचकाती

ललाट लोही *अखाका.* कपाळ लूछी, आशा तजी

ललिय *तेरका.* ललित – सुंदर रीते

ललि, ललि *देवरा.* लळीलळी, नीचा वळी [सं.लल्]

ललीता *मदमो.* सुंदरी [सं.ललिता]

ललीय *गुर्जरा.* ऊडी, ऊछळी, [घूमराईने, चकराईने] (सं.लल-)

लव *कामा(त्रि).* रटण, [धून] [हिं.लौ]; *नरका. प्रेमाका.* लवरी, बकवाद [सं.लप्]

लवइ *आरारा. शृंगामं.* बोले [सं.लपति]; जुओ डांलवइ

लवइ *नलाख्या.* फरके

लवणि *आरारा.* लावण्य

लवणिम, लवणिमा *गुर्जरा. जिनरा. तेरका. प्राचीफा. शृंगामं.* लावण्य, सौंदर्य (सं. लवण+इमन्)

लवधुलउ *प्राचीफा.* लुब्ध, आसक्त

लवलि *तेरका.* लवली, एक पुष्पलता

लवंड *ऐतिका.* दीवालनी पोपडी

लवासी **आनंस्त.* [बकवाद करनार] [हिं.]

लवि जुओ लिव

लवि लागी *हरिवि.* लववा लागी

लस- *तेरका.* प्रकाशवुं (सं.)

लहइ *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. उषाह. ऋषिरा. ऐतिरा. गुर्जरा. चित्तसं. तेरका. देवरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप. वीसरा. षडाबा.* मेळवे, पामे, प्राप्त करे (सं. लभते); *प्रेमाका. लावल.* धारण करे; *अखाका. आनंस्त. कादं(शा).*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामा(त्रि). कामा(शा). चित्तसं. नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमप. प्रेमाका. लावल. ओळखे, समजे, जाणे; जुओ जावुं लहइ

लहकइ *ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लहेके, लळे (सं. लसत्+कृत) (दे.लहक्क); *प्रेमप.* झूले, शोभे

लहकइ *नेमिछं.* [लळीने], लहेकाथी, सहेलाईथी

लहकुडलउ *प्राचीफा.* लहेको, [लटक], कटाक्ष (सं.लसत्+कृत)

लहरीयउ *स्थूलिफा.* [स्त्रीओना कंठनुं] एक आभूषण; जुओ लहेरियुं

लहलह- *तेरका. प्राचीसं.* हलवुं, धीमेथी ओंदोलित थवुं, लसलसवुं

लहलह *तेरका.* सळवळाट करतुं

लहवह्यउ *जिनरा.* अस्वस्थ थयुं, [लेवाई गयुं]

लहिका (लहिका देइ) *विमप्र.* लटको [करे], [आनंद बतावे]

लहिणु *प्रबुचु.* लहेणुं

लहिवुं *उक्तिर.* मेळववुं

लहिवासइ *शृंगामं.* लेवाशे

लही *चित्तसं.* समजाई, ओळखाई

लहु *गुर्जरा.* लघु

लहुअ (लहुअ लगइ) *लावल.* लघु वय[थी], बाळपण[थी]

लहुअपण, लहुपण *प्राचीका.* लघुता, नानापणुं (सं.लघुकत्वन)

लहुडउं *उक्तिर. उपबा. कृष्णच. रूपच. वीसरा. शीलक. षडाबा. हम्मीप्र.* लघुक, नानुं; जुओ लहूउं

लहुपण जुओ लहुअपण

लहुयडउं *आरारा.* नानुं, नाजुक (सं.लघु); *विक्ररा.* नानुं

लहु वयि *ऐतिरा.* लघु वये

लहूअडउं *चारफा.* नानुं, मनोहर; *नलरा. प्राचीफा.* नानुं (सं.लघुक)

लहूउं *कृष्णबा. देवरा. नलरा.* नानुं (सं. लघुक)

लहूयडउ *प्रबुचु.* नानो, लघुवयस्क (सं. लघुक)

लहेकावतां (लींबु लहेकावतां) *नरका.* [लींबु] उछाळतां, (सहेलाईथी)

लहेर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* मूर्छा

लहेरियुं *प्रेमाका.* गळानुं एक घरेणुं; जुओ लहरीयउ

लहेरी *नरका.* फुदरडी

लहेवाशे *प्रेमाका.* जणाशे, समजाशे, [खबर पडशे]

लहेवुं *नरका. प्रेमाका.* ग्रहण करवुं, समजवुं; *वसंफा.* प्राप्त करवुं

लंक *विमप्र.* (अक्षरोना) वळांक, मरोड

लंक *सिंहा(शा).* ?, [अत्यंत, साव]; **मदमो.* [अत्यंत]

लंक *लावल.* लंकानगरी

लंक, लंका *अभिऊ. कृष्णबा. नरका. मदमो. लावल. वीसरा. शृंगामं.* कमर, कमरनो वळांक, मरोड; जुओ कंडिलंक, चित्रलंक, शहीलंकी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लंक-केसरी *अखाका.* सिंहना जेवा कमरना वळांकवाळी; जुओ हरिलंकी

लंक लूंट्युं जुओ लूंट्युं लंक

लंका जुओ लंक

लंकाल *दशस्कं(२).* वळांकवाळा (सर्प)

लंकालि, लंकाली *आरारा. शृंगामं.* लांक – वळांकवाळी

लंकित *विमप्र.* लांक – वळांकवाळी

लंकीली *ऋषिरा.* [लांकवाळी], मरोडवाळी

लंख *ऐतिका.* *मोटा वांस पर खेलनारी नट-जाति [सं.], [*गायक] [दि.लंखक]

लंखइ *कर्पूमं. प्राचीसं.* नाखे

लंखण *प्राचीसं.* प्रक्षेप, नाखवुं ते

लंखनु *षडाबा.* नाखवुं ते

लंग *प्राचीका.* लिंग, [मृत्यु पछी पण फळनो भोग करवा रहेतुं] जीवात्मानुं सूक्ष्म शरीर

लंगर **प्रेमाका.* [हाथीना पगनी जंजीर] [फा.]

लंगर *कस्तुवा.* सदाव्रत [फा.]

लंघइ *गुर्जरा. तेरका. शृंगामं.* ओळंगे (सं. लंघति)

लंघाविय *प्राचीसं.* लांघण करावी

लंचा *कस्तुवा.* लांच (सं.)

लंची **लावल.* [लांचियुं]

लंछण *वीसरा. शृंगामं.* लांछन

लंठ *नरका. प्रेमाका.* लुच्चो, [धूर्त, लांठ, दांड]; जुओ लांठ

लंड *चंद्रवा. मदमो. वेताप. शृंगामं.* लुच्चो, लांठ, [धूर्त]

लंडीयो *चंद्रवा.* लुच्चो, [लांठ, धूर्त]

लंतक *षडाबा.* एक देवलोकनुं नाम (जै.) [स.लांतक]

लंपटपणुं **षडाबा.* [लोलुपता] (सं.लंपट-)

लंब *चित्तसं.* लांबुं, दूर सुधी पहोंचतुं, विशाळ

लंबिय *तेरका.* फेलायेला, व्याप्त (सं.लंबित)

लाइ *आरारा. नेमिछं. वीसरा.* लगाडे (सं.लागयति); *नलाख्या.* लगाडे, जगावे (सं.ला-); **गुर्जरा.* [लगाडे, अर्पे]; *नरका.* लागी

लाइ *अभिऊ.* लावे (सं.ला-)

लाइ *चित्तसं.* ल्हाय, अग्नि

लाइक *ऐतिका.* लायक

लाई जुओ चित्त लाई

लाई *उक्तिर.* [*बिचारा, *गरीब] (सं. लम्पकः) [रा.]

लाउ *आरारा. प्रद्युचु.* लगाडो (प्रा.लाय) [सं.लागयु]

लाएइ **शृंगामं.* [लागे]

लाख गमें *आनंस्त.* लाख प्रकारे

लाखगुणउ *उपबा.* लाख गणुं (सं. लक्षगुण-)

लाखपसाव *ऐतिका.* एक दानविशेष, [कीमती भेट, मोटो सरपाव] [सं.लक्ष-प्रसाद]

लाखहरु *गुर्जरा.* लाक्षागृह, लाखनुं बनावेलुं घर

लाखाग्रेह *प्रेमाका.* लाक्षागृह

लाखाराम *गुर्जरा. तेरका.* लाक्षाराम (ए नामनो उद्यान)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाखां-करोडी *प्रेमाका.* लाखो अने करोडो

लाखिवा *उक्ति.* नाखवा [सं.नंक्ष]

लाखी *प्रेमाका.* लाख[पदार्थ] [सं.लाक्षा]

लाखीणउ *अंबरा.* लाख रूपियाना मालिक; *चंद्रवा. जिनरा. लावल. *विमप्र.* लाखेणो, कीमती, महामूलो [सं.लक्ष-]

लाखेणा दीपक *प्रेमाका.* लक्षाधिपतिनी निशानी तरीके एने त्यां सळगावाता दीवा

लाखेणी *नरका-२. प्रेमाका.* कीमती

लाखे लेखां थाय *अखाका.* अतिशय समृद्धि मळे

लाग *कादं(शा).* [संबंध], कारण, [औचित्य]; **नलाख्या.* [अवसर, तक; युक्ति] [सं.लग्न]

लाग, लागु *आरारा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* संबंध, स्नेह, अनुराग (सं.लग्न)

लाग- *वीसरा.* शरू थवुं (सं.लग्न)

लागठउ *प्राचीसं.* ?, [संबंध होवो ते]

लागणा **प्रद्युचु.* [आघात आपे एवुं]

लागि *उषाह.* लागो, [कर], खर्च

लागि *आरारा.* माटे

लागी *प्रेमाका.* सळगी, [नष्ट थई]; जुओ लगाडी देवुं

लागु जुओ लाग

लागू *आरारा.* पाछळ लागेला

लाघ- *वीसरा.* ओळंगवुं (सं.लंघ्)

लाघव, लाघवि *अखाका.* *सार, [सरळता, सहेलापणुं]; *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* कौशल (सं.); जुओ लघुलाघवी

लाछल *लावल.* लक्ष्मी [नाम]

लाछवर *नरका.* लक्ष्मीनो पति, कृष्ण

लाछा उतारवा *वेताप.* चिकित्सा तरीके गरम तवेथा के लोढा पर लींबडो ने छाश छांटी दरदीनां तळां शेकवां के डामवां

लाछि *अंबरा. प्राचीका.* लक्ष्मी, [धननी देवी]; *नेमिछं. लावल.* लक्ष्मी [नाम]; *गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* धन; जुओ लच्छि

लाछ्य *मदमो.* लक्ष्मी, [धनसंपत्ति]

लाजइडी *लावल.* लाज, शरम (सं.लज्जा)

लाज काढी *प्रेमाका.* आबरू गुमावी

लाज लागे *अखाका.* [शरमावा जेवुं थाय], लांछन लागे, प्रतिष्ठा जाय

लाजवी *जिनरा.* लजाईने [सं.लज्जति]

लाजा *कादं(शा).* शाळ, आखा फोतरावाळा चोखा, [भूंजेली डांगर] [सं.]

लाजिवा *उक्ति.* शरमावा

लाजी *नलरा.* एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

लाजीइ *उक्ति.* लजवाय, शरमाय

लाटे *अखाका.* झांखुं पडे [सं.लज्जति]

लाटेपाटे *प्रेमप.* कोई पण प्रकारना उपाये ?, [लटूडापटूडाथी, खुशामदथी]; जुओ लटपट

लाठी *षडाबा.* रेवडी (सं.लष्टि) [दे. लट्ठिय परथी]

लाडइ *उक्ति.* लडावे, प्यार करे [दे.लड्डिय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परथी]

लाडगहिली *ऋषिरा.* लाडघेली

लाडण *गुर्जरा.* [लाडीली] कन्या

लाडण, लाडणु *गुर्जरा. नलरा. प्राचीसं.* वर, प्रियतम

लाड पालवा *मोसाच.* *राजी राखवा, [लाड पूरा करवा]; जुओ पाल्यां लाड

लाडिकूं *नलाख्या.* लाडीलुं, [लाडकुं]

लाडिय, लाडी *गुर्जरा.* कन्या, नववधू; *प्राचीफा.* सुन्दर नायिका (प्रा.लड्डिय)

लाडुकलहडिय *तेरका.* ए नामनी ओरडी, [लाडुनो नास्तो जेमां रखाय छे ते ओरडी]

लाडूआ *आरारा.* लाडवा

लाडो *ऐतिका.* [लाऽको, प्यारो]

लाण (लाणे लेवाशे) *प्रेमाका.* लहाण, लाभ, लहावो, [*भार वेठवानो आवशे, *मुसीबतमां मुकाशे]

लादा *विक्ररा.* गांसडीओ, [पोटलां] [रा.]

लाध *गुर्जरा.* लाभ, प्राप्ति (सं.लब्धि)

लाधउं *अभिऊ. आरारा. उक्तिर. उपवा. ऋषिरा. गुर्जरा. चित्तसं. जिनरा. नलाख्या. प्रेमाका. लावल. विराप. वीसरा.* मळ्युं, प्राप्त थयुं; मेळव्युं, कर्युं (सं.लब्ध)

लान्हउ *प्राचीसं.* नानो [सं.श्लक्षणं]

लापसिय *प्राचीसं.* लापसी [दि.लप्पसिया]

लाफालोल *नरप(द).* [पैसा उडाववानी मजा]

लाबर *नरका.* ढीलुं, नरम, [शिथिल]

लाबर *विराप.* लावरां, वडचकां, तिरस्कार-युक्त कटु वचनो (सं.लवित्र); जुओ लावर

लाबरुं *नरका. नरप.* [शिथिल], अत्यंत ढीली, लोथपोथ

लाभइ *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नरका. षडाबा.* मळे, प्राप्त थाय; मेळवे, पामे (सं.लभ्यते)

लाम *चतुचा.* [श्रेष्ठ] (सं.ललाम)

लामा *ललिरा.* खराब

लामी *प्राचीफा. प्राचीसं.* हलकी, नरसी, अभद्रा, प्रतिकूला, विषम

लाय *अखाका.* आग, अग्नि

लायइ *ऋषिरा.* लागे; *गुर्जरा.* [लगाडे]; *देवरा.* लावे

लायण्ण *तेरका.* लावण्य

लार *अखाका. आरारा.* संबंध, साथ (रा.); *आरारा.* *(आपणी) साथे, [साथ, संग]; *अखाका.* [हार, परंपरा]; *देवरा.* [पाछळ]; जुओ लाहार

लाल *उक्तिर. गुर्जरा.* लाळ (सं.लाला); *नलाख्या.* लालसा

लाळ *वीसरा.* घंटनी अंदरनुं धातुनुं लोलक

लालइ *उक्तिर. लावल.* लालन करे, लडावे, स्नेहपूर्वक पाळे (सं.लालयति)

लाळच *वीसरा.* लालच

लालडा *विमप्र.* लाल, रातां

लालडीआ *विमप्र.* नानुं वहालुं बाळक

लालरी *गुर्जरा.* [करचली]

लालास *कादं(शा).* लालचु (सं.लालस)

लालि जुओ सुहलालि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लालि *उक्तिर.* [*लाळी, *शियाळ आदिनो अवाज] (सं.लल्लि)

लाली **विक्ररा. विमप्र.* शियाळ

लालीय *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लळीने, ललित रीते, लीलापूर्वक (सं. लालयित्वा)

लालू *नलरा.* छंदमां पादपूरक तरीके, [लाल – ध्रुवा तरीके]

लावइ *आरारा.* **लावल.* लगाडे; *गुर्जरा.* (बूम) मारे

लावि जुओ मागी लावि

लावणि *आरारा.* लावण्य

लावणो *सिंहा(शा).* सुंदर (सं.लावण्य)

लावन *आरारा. जिनरा.* लावण्य; *वसंवि-(ब्रा).* सुंदर (सं.लावण्य)

लावनि *वसंफा.* लावण्य[युक्त]

लावनिसयरि *वसंवि.* लावण्ययुक्त शरीरे

लावर *गुर्जरा.* वडचकां, तिरस्कारयुक्त कटु शब्दो; जुओ लाबर

लावंन *मदमो.* लावण्य

लास, लासि *अभिऊ. प्रेमाका.* **विमप्र.* (घोडाओनो) समूह

लाह *अंबरा. ऐतिरा. चारफा. प्राचीका. लावल.* **विमप्र.* लाभ, लहावो

लाहइ *आरारा. जिनरा.* वहेंचे, लहाणी करे (रा.); *प्रेमाका. मदमो.* मेळवे, पामे (सं.लाभ-)

लाहउर *उक्तिर.* लाहोर (सं.लाभपुरम्)

लाहणउ *उक्तिर.* उत्सवादि प्रसंगे थतुं लहाणुं

लाहार *मदमो. रूस्तस.* हार, लांबी हार; जुओ लार, ल्हार

लाहिण *ऐतिका.* लहाणी (सं.लंभनिका)

लाहु *आरारा. नलरा. ललिरा. विक्रच.* लहावो, आनंदनो उपभोग (सं.लाभ)

लाहूर *अभिऊ.* कोई लांबा दांतवाळुं पशु, [एक प्रकारनुं शिकारी कूतरुं] [रा. लाहोरी]

लाहो *मदमो. वेताप.* लगाडो (सं.लागय्)

लाहो *नरका. मदमो.* लहावो (सं.लाभ)

लाहोले (लाहो ले) **नरप.* [लहावो ले]

लांक *दशस्कं(१). नेमिछं. प्राचीसं.* (कमर-नो) वळांक

लांकु *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कमर

लांखइ *उपबा. गुर्जरा. कृष्णबा. नेमिछं. वाग्भबा. षडाबा. षष्टिप्र.* नाखे (सं. नंक्षति)

लांगर्या *प्रेमाका.* (सांकळथी खीले) बंधारेला

लांघइ *आरारा. उक्तिर. षडाबा.* उल्लंघे, ओळंगे, पसार करे (सं.लंघयति)

लांघी *आरारा.* लंघनवाळो, उपवासी, भूख्यो

लांछु *नेमिछं.* लांछन

लांठ *चंद्रवा. प्रेमाका.* लोंठकुं, गांठे नहीं तेवुं, तोफानी; जुओ लंठ

लांठीआ *कामा(त्रि).* शठ, [धूर्त]

लांप *उक्तिर.* आसक्ति, इच्छा (सं.लिप्सा)

लांपडुं **अखाका.* [लूलुं, दम विनानुं]

लांपा *हरिवि.* लंपट ?, [*लालसा, *आसक्ति]

लांबपणि *षडाबा.* लंबाईमां (सं.लंब-)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लांभुयां *वेताप.* लांभवां के लांभां, भाग वहेंचवा नाखवामां आवती चिट्ठीओ

लि, लिअइ, लिइ *अभिऊ. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नरका. नलाख्या. लावल. वसंफा. वसंवि. वीसरा.* ले, [ग्रहण करे], लई जाय

लिक्क- *प्राचीसं.* संतावुं [दे.]

लिखइ *आनंस्त. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. लावल. विराप. षडाबा.* लखे (सं. लिखति)

लिखाइ **वीसरा.* [लखाय, लखवामां आवे]

लिखे **विमप्र.* [लक्ष – ध्यान राखे, काळजी राखे]

लिखावइ *उक्तिर.* लखावे [सं.लिखापयति]

लिखिवा *उक्तिर.* लखवा

लिखेइ *शृंगामं.* आलेखीने

लिख्मी *आरारा.* लक्ष्मी, [लक्ष्मीदेवी; धन-संपत्ति]

लिख्यउ **वीसरा.* [लख्यो]

लिगार *ऋषिरा. ऐतिका. देवरा.* लगार, थोडुं

लिट्ठु *प्राचीस.* ईंट के पथ्थरनो टुकडो, रोडुं (सं.लेष्टुक)

लिद्ध *ऐतिका. गुर्जरा.* लीधुं, मेळव्युं

लिपसणउं *उक्तिर.* [*लपसणुं] (सं. लिप्सायनम्)

लियइ *उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. देवरा. वीसरा. षडाबा.* ले, स्वीकारे (सं. ला,नी-)

लियाय *देवरा.* लयावी, [लावी]

लियावइ *शृंगामं.* लई आवे

लिलवट *नरप(द).* ललाट; जुओ लीलवट

लिल्लर, लिल्लिर *प्राचीसं.* लीरो, चीवर, [साधुवेश] [दे.]

***लिव [*लवि]** **नेमिछं.* [बोले]

लिवरावइ *उक्तिर.* लेवडावे

लिवंग *नेमिछं. प्राचीफा.* लविंग (सं.लवङ्ग)

लिविउं *गुर्जरा.* चीतरेलुं (सं.*लिपित, लिप्त)

लिहालु *नलरा.* कोलसो, लहाळो

लिहावइ *तेरका. विराप.* लखावे (सं.लिख् परथी)

लिहीजइ *गुर्जरा.* लखावीए (सं.लिख् परथी)

लिहीती *षडाबा.* चटातां, चाटवामां आवतां (सं.लिह्)

लिंग चतुष्टय *अखाका.* [वेदांतमत मुजब चैतन्यनी जुदीजुदी अवस्था दर्शावता] चार प्रकारना देह : स्थूळ, सूक्ष्म, कारण अने महाकारण

लिंगभंग *अखाका. अखेगी.* [चारे प्रकारना लिंगथी पर थवुं ते], देहभावनो नाश, ब्रह्मभावनी प्राप्ति

लिंहगटउं *षडाबा.* एक प्रकारनी मीठाई, [ढीली लापसी, चाटण लापसी, शीरा लापसी]

लीइ, लेइ *गुर्जरा. वसंफा(ल).* ले (सं.ला-)

लीक *वेताप.* लीटी, मर्यादारेखा, [गणना]

लीछ *आरारा(व).* लीची, पूर्व हिंदनुं फळ-झाड ?

लीजइ *उक्तिर. तेरका. *लावल. वसंफा.* लेवाय (सं.ला-); *लावल.* लेजो, लो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लीजतउं *उक्ति.* लेवातुं (सं.लीयमानम्)

लीजीइं *आनंत.* लईए

लीट वळी जुओ वळी आडी लीट

लीण, लीणउ *आनंत. आरारा. चारफा. नेमिछं. प्रबोप्र. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लीन, मग्न, डूबेलुं

लीणउ *तेरका.* लीन थयुं (सं.लीन+क)

लीण्यो *आनंत.* लीन थयेलो

लीधउं *अखाका. *नरका.* पकडेलुं, [झलायेलुं, वशमां लेवायेलुं]

लीब *षष्टिप्र.* लींबु (सं.निम्बु)

लीयउ *गुर्जरा. वीसरा.* लीधुं

लील *लावल.* सुंदर, [आनंदभरी, मंगल]

लीलज *नरप.* निर्लज्ज, बेशरम

लीलवट *मदमो.* ललाट (सं.*निललवट्ट, प्रा.निडल+वट्ट); जुओ लिलवट

लीलाट, लेलाट *चंद्रवा.* ललाट

लीलावती *विमप्र.* ए नामनो गणितग्रंथ

लीलावपु *अखेगी.* लीला माटे धारण करेलुं शरीर [सं.]

लीलां *कादं(शा). नेमिछं. वाग्भबा.* लीलापूर्वक, रमतमां, शोभापूर्वक, [सुंदर रीते]

लीलां लिहिर *कादं(शा).* लीलालहेरथी, [रमतमां अने लहेरथी] (सं.लीलया+लहरी)

लीह *आरारा. ऊक्ति. शृंगामं.* रेखा, [लीटी, लकीर]; *कृष्णबा.* रेखा, मर्यादा; *प्राचीसं. हरिख्यो.* मर्यादा, [मलाजो]; **गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. *लावल. विमप्र. *विराप.* आडो आंक, हद, पराकाष्ठा [सं.लेखा]

लीह कढावुं जुओ कढावुं लीह

लीहडी *ऋषिरा.* रेखा, लीटी

लीह वळी *नरका.* हद आवी, अंतिम कक्षाए पहोंच्युं [पराकाष्ठा आवी]; जुओ वळी आडी लीट

लीहा *शृंगामं.* लीटी (सं.लेखा)

लीहाला **उपबा.* [संयमधर्मनी मर्यादा]

लीही *अखाका. नंदब. दशस्कं(१).* रेखा, लीटी; हद, मर्यादा

लीही वळवी *दशस्कं(१).* हद थवी, पराकाष्ठा आववी

लींबु लहेकावतां जुओ लहेकावतां

लींबूई *आरारा(व).* लींबुडी (सं.निंबूक)

लुकइ *अंबरा. उक्ति.* छुपाय; *वीसरा.* छुपाय, ढंकाय; **प्राचीफा.* [अदृश्य थाय, शमी जाय] (दे.लुक्क) [रा.]; जुओ लूकी

लुकी *आरारा.* सूतेली (दे.लुंक)

लुखस *अखाका.* खजवाळ आवे एवो चामडीनो एक रोग

लुखुं *चित्तसं.* निस्तेज; सार विनानुं [सं.रूक्ष]

लुठइ *उक्ति.* आळोटे, झूले, ढळे (सं. लुठति)

लुणइ *अंखरा. उक्ति.* कापे (सं.लुनाति); *जिनरा. वीसरा.* कापे, लणे

लुणाइ *उक्ति. गुर्जरा. विराप.* फपाय, लणाय, लणवामां आवे (सं.लुनाति)

लुणावइ *उक्ति.* कपावे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लुबधउ *आरारा. ऋषिरा.* लुब्ध, ललचायेलो, लोभायेलो

लुललुल *ऐतिका.* झूकीझूकीने, [लळीलळीने]

लुंकडि *उक्तिर.* लोंकडी [दे.लुंकडी]

लुंकडी (लुंडी) *शृंगामं.* *लोंकडी

लुंचइ *उक्तिर. पंचवा.* तोडे, चूंटे (सं. लुंचति); जुओ लोच

लुंचन *नरका.* तोडवानी के चूंटवानी क्रिया

लुंछण **लावल.* [ओवारवानी क्रिया] [रा.]

लुंछणडइ *गुर्जरा.* माथे उतारीने नाखवुं ते, न्योछावर करवुं ते (सं.न्युच्छनकं)

लुंडिणी *वाग्भबा.* कूतरी

लुंडी जुओ लुंकडी

लुंडीमुहा *विमप्र.* *दासीना मोढा जेवा मोढावाळा

लुंविय *प्राचीसं.* लूम, [झूमखुं] [सं.लुम्ब]

लूअडी *लावल.* [लू, गरम हवा], *वराळ, गरमी

लूकी *प्रद्युचु.* छुपाईने (दे.लुक्क); जुओ लुकइ

लूगड *गुर्जरा. विक्ररा.* लूगडां

लूणकयरा *उक्तिर.* मीठायुक्त केरडां (सं. लवण-करीराणि)

लूणिवा *उक्तिर.* लणवा, कापवा [सं. लुनाति]

लूध *अंबरा.* लुब्ध

लूधडी *प्राचीसं.* लुब्ध, आसक्त

लूधी *जिनरा.* लुब्ध, आसक्त

लूमे ने झूमे **नरका.* [लालित्यपूर्वक झळूंबता रहे, छवायेला रहे]

लूय *प्राचीसं.* गरम हवा, लू

लूलता *प्रेमाका.* ललुता, लोलुपता

लूसइ *गुर्जरा. नलरा. विक्ररा.* **षडाबा. हम्मीप्र.* लूंटे (सं.लूषयति)

लूसड *प्राचीसं.* लूंटारु

लूहइ *कादं(शा). गुर्जरा. जिनरा. लावल.* लूछे (दे.)

लूहनु *षडाबा.* लूछवुं ते (दे.लुह)

लूंछणडा **विमप्र.* [ओवारणां] [रा.] [सं. न्युच्छन]

लूंछणा *ऐतिका.* न्योछावर थवुं ते, [ओवारणां]

लूंट्युं लंक *अखाका.* लंका लूंटी, घणो फायदो मेळव्यो

लूंठ *अभिऊ.* नकामी, मोटी, [अतिशय] [रा.लूंठौ]

लूंठाइ *प्रेमाका.* जबरदस्ती

लूंसइ *गुर्जरा.* लूंटे (सं.लूषयति)

लूंसाविया *कृष्णबा.* लूंटाव्यां

ले **अखाका. अखाछ.* लय, [विलय]

ले *नरका. प्रेमाका.* लेह, लगनी

लेइ जुओ लीइ

लेइ *आनंस्त. उक्तिर. देवरा. नलाख्या.* लईने

लेउं बलिहारडी *नरका.* बलिहारी जाउं, वारी जाउं

लेख *अखाका. अखाछ.* लेखुं, गणतरी

लेखइ *ऐतिका.* हिसाबमां

लेखण, लेखणि *उक्तिर. जिनरा. लावल.* लखवानी कलम (सं.लेखिनी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेखवइ *आरारा.* लखे, लखी आपे; *उपबा.* लेखवे, गणे (सं.लेख्य- परथी)
लेखसाला *प्राचीफा.* निशाळ (सं.लेखशाला)
लेखा मांहे *चित्तसं.* लक्षमां, लक्ष्य रूपे
लेखा वनुं *मदमो.* लेखा विनानुं, असंख्य
लेखुं *नरका.* लेखामां लउं, सफळ मानुं
लेखुं द्यै *चित्तसं.* समजाय
लेखे पाडइ जुओ पाडइ
लेखे लह्या *अखाका.* गणतरीमां लीधा, [गणनायोग्य – मर्यादायुक्त जणाया]
लेख्यउ **वीसरा.* [लखेलुं]
लेणहार, लेणहारु *उक्तिर. उपबा. नलरा.* लेनार
लेढ **प्राचीफा.* [लगाडेला, पहेरेला] [सं. लीढ]
लेयइ *कादं(शा). गुर्जरा.* ले (सं.ला-)
लेलाट *दशस्कं(२). प्रेमाका.* ललाट, कपाळ; जुओ लीलाट
लेलीन *अखाका. अखेगी.* लयलीन, एकाग्र
लेव *उक्तिर.* लेप; *प्राचीफा.* स्पर्श, [लेप, लागवुं ते; डाघ]
लेवइदेवइ *विमप्र.* लेवडदेवडमां
लेवमय *तेरका.* लेप्यमय, [माटी आदिथी ढाळेली (मूर्ति)]
लेवि *आरारा.* लईने [सं.ला-]
लेशाल, लेसाल *अंबरा. उक्तिर. जिनरा. प्राचीसं. षडाबा.* निशाळ (सं.लेखशाला)
लेसालीउ, लेसालीयउ *प्राचीफा. प्राचीसं.* निशाळियो
लेसूडउ *उक्तिर.* गूंदानुं झाड (सं.लेखशाटक) [रा.]
लेह *अखाका.* लगनी
लेहइ *आरारा.* देवरा. ले, मेळवे, प्राप्त करे; *आरारा.* लई जाय
लेहउ *उक्तिर.* लेखक, [लहियो]
लेहां *उषाह.* गणतरी, [गजुं] (सं.लिख् परथी)
लेहेर *कामा(शा).* लहेरो (समुद्रनी)
लेंची *मोसाच.* बेवडा पडवाळी रोटली
लोअणां *ऋषिरा.* आंख (सं.लोचन)
लोइ *आरारा. नलरा. प्रद्युचु.* लोक, [लोको]
लोइ *जिनरा.* लोही
लोइ (देवुलोइ) **ऐतिका.* [देवलोकमां]
लोई *उषाह. ऋषिरा.* लोकमां, [भुवनमां, जगतमां]
लोई *प्रेमाका.* लुओ, पींडो
लोक-उजाडो *प्रेमाका.* लोकोनी पायमाली
लोकट *लावल.* *लोको
लोकडां *प्रेमाका.* लोको
लोकणरओ **ऐतिका.* [जोवानो] [सं. लोकन]; जुओ हीयालोकणी
लोक पाहिं *उक्तिर.* लोको पासे
लोकसंज्ञा *आनंस्त.* विचार्या विना लोकाचारनुं अंध अनुसरण
लोकिक *उपबा.* सामान्य (सं.लौकिक)
लोग *वीसरा.* लोक
लोच *उपबा. गुर्जरा.* वाळ खेंची काढवा ते (सं.लुंच); जुओ लुंचइ
लोचउं **षडाबा.* [प्रकट करुं] [सं.लोच्]
लोट *आरारा.* लोटवुं ते, आळोटवुं ते;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशस्कं(१). लावल. आळोटता, लोट-पोट, लोथपोथ

लोटइ *उक्ति.* लेटे, सूवे; आळोटे; *नेमिछं. लावल.* आमतेम फरे; *गुर्जरा.* आळोटे (सं.लोटति)

लोट कीधो *प्रेमाका.* [लोटपोट कर्यो], जमीनदोस्त कर्यो, [विनाश कर्यो]

लोटण *विमप्र.* लोडण नामनुं स्थळ

लोडइ *लावल. *वसंफा. *वसंफा(ल). *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आमतेम घूमे, फरे (सं.लुट्); **उषाह.* [नमे, नमन करे]; *कादं(शा).* हलावे (सं.लोटयति); **लावल.* प्राप्त करे [रा.]

लोडाभाई *पंचवा.* नानो भाई (सं.लघुक); जुओ लोढीओ

लोडावइ *शृंगामं. हम्मीप्र.* हलावे

लोढ *अखाका. लावल.* दरियानी भरती[नां मोजां]

लोढउ *उक्ति.* वाटवानो पथ्थर, लोढणियो (सं.लोष्टकः)

लोढतउ *षडाबा.* लोढतो, कपासिया अने रू जुदां पाडतो (सं.लोष्टते)

लोढी *वेताप.* नानी [सं.लघुक+ङी]

लोढीओ, लोढीयो *मदमो.* लोटियो, बोडो ?, [कृश, ठींगुजी]; *वेताप.* नानो; जुओ लोडाभाई

लोथ *प्रेमाका.* शब

***लोद** *नरप(द).* लोंदो, लचको

लोधीइं *अंबरा.* पारधिए (सं.लुब्धक)

लोपइ *चारफा.* विनाश करे, [मिटावे]; *हरिख्या.* ओळंगे [सं.लोपयति]

लोबरडी *नरका.* लोबडी, बारीक ऊननी ओढणी (सं.लोमपट्टी)

लोबरी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* लोबडी, कामळी (सं.लोमपटी); जुओ लोवडी

लोभे *नरका.* लोभ पामे, [लोभाय, आकर्षाय]

लोमस *पंचवा.* एक ऋषि, पुष्कळ मोटा लोम(वाळ)वाळा (सं.लोमश)

लोमंश *अखाका.* एक ऋषि [सं.लोमश]

लोय **अखाका. तेरका.* लोक

लोयण *आरारा. तेरका. जिनरा. नरका. प्राचीफा.* लोचन, आंख

लोयेण *चंद्रवा.* लोचन, आंख

लोलक-लोल *मदमो.* लोलकनी जेम लटकता – [झूलता]

लोला *कादं(शा).* लोचा; *षष्टिप्र.* समज विनाना, अज्ञानी (सं.लोल)

लोवडी *उक्ति. वीसरा.* एक वस्त्र, कामळी (सं.लोमपटी); जुओ लोबरी

लोह *जिनरा.* लोभ

लोह *हम्मीप्र.* तलवार [के अन्य लोढानुं हथियार]

लोह (लोहरक्षा) *दशस्कं(१).* लोढानुं हथियार; [लोढाना हथियारथी रक्षनार मादळियुं]

लोहकट *सिंहा(शा).* लोढानो सामान

लोहकार *विक्ररा.* लुहार [सं.]

लोहडउं *उपबा. जिनरा.* लोढुं (सं.लोह-)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोह न *ऐतिका.* लोभ नहीं
लोहिमू *उक्ति.* लोढानुं (सं.लोहमयम्)
लोहरक्षा **प्रेमाका.* [लोढाना हथियारथी रक्षनारुं मादळियुं]; जुओ लोह
लोहसांगल *शृंगामं.* लोढानी सांकळ
लोहार *उक्ति.* लुहार (सं.लोहकारः)
लोहो **अखाका. चित्तसं.* लोढुं
लौहडां *उषाह.* नानां (सं.लघुक)
ल्यख्याव्यो *रूत्तस.* लखाव्यो
ल्यावइ *कादं(शा). नलरा. नल.ाख्या. नेमिछं. रूत्तस.* लावे, लई आवे [सं.लाति]
ल्ये *चतुचा.* लईने
ल्हसण *उक्ति.* लसण (सं.लशुनः)
ल्हार *नरका.* लार, हार, पंक्ति; जुओ लाहार

व *आरारा.* अने
वइ जुओ लघु-वइ
वइ (वइ गया) **वीसरा.* [चाल्या गया]
वइगरणा *अंबरा. नलरा.* व्यय उपर देखरेख राखनार राज्यनो अधिकारी (सं. व्ययकरण); जुओ वयगरणउ
वइघालि *नेमिछं.* *वधारीने
वइद *विक्ररा.* वाळंद, नापित
वइण *वीसरा.* वचन, वेण
वइर *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वेर (सं. वैर)
वइरागे *देवरा.* वैराग्ये
वइरागर, वयरागर **प्राचीफा.* [हीरानी खाण] (सं.वज्राकर); **अंबरा. प्राचीफा. *विमप्र.* रत्नविशेष, हीरो
वइरि, वइरी *उक्ति. उपबा. षडाबा.* वेरी (सं.वैरी); जुओ बइरी
वइरीया, वइरीअडा *लावल.* वेरी, दुश्मन
वइसदेउ *प्राचीसं.* वैश्वदेव, [विश्वदेवने बलि अर्पवो ते]
वइसाख *उक्ति.* वैशाख
वइसाह *तेरका.* वैशाख
वइसाही *तेरका.* वैशाखी, [वैशाख मासनी]
वइंगण *उक्ति. उपबा. षडाबा.* **वेंगण**, रींगण (दे.)
वउल *गुर्जरा. वसंवि(ब्रा).* बकुल वृक्ष, बोरसली; जुओ बउल
वउलइ *जिनरा.* वीते, पसार थाय
वउलसिरि **वसंवि(ब्रा). हरिवि.* बोरसली (सं.बकुलश्री); जुओ बउलसिरी
वउलाऊ *जिनरा.* [सुरक्षित रीते] पहोंचाडनार, [वोळावो]
वउला- (वउलाव-) *वीसरा.* विदाय आपवी
वउलावइ *आरारा. गुर्जरा. नलरा.* वळावे, विदाय आपे (दे.वोलाव)
वउलीया *आरारा.* वळ्या, पसार थया
वकार **प्रेमाका.* [विकार, विकृति, व्याधि]
वकारे *अखाका. प्रेमाका. मदमो.* उश्केरे, पडकारे; जुओ वीकारे
वकृत्ति *नलरा.* विकार (सं.विकृति)
वक्कतण *षष्टिप्र.* वक्रता, वांकापणुं (सं. वक्रत्वन)
***वछु [चछु]** *ऐतिका.* चक्र, मंडल, [शासन-प्रदेश]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वक्खाण- *प्राचीसं.* वर्णन करवुं, विवरण करवुं

वक्खाण *प्राचीसं.* व्याख्यान, [धार्मिक प्रवचन]

वक्त *मदमो.* वक्त्र, मुख

वक्ती *प्रेमाका.* वखत दर्शाववा माटे वागती, [समयसमयनी] [अ.]

वखतवन्त *ऐतिका.* भाग्यवान [फा.बख्त]; जुओ वडवखती

वखाण *आरारा. उक्तिर. कामा(त्रि). वीसरा.* व्याख्यान, वर्णन, कथन; *नलरा.* धार्मिक प्रवचन; *षडाबा.* विवरण, समजूती; *गुर्जरा.* प्रशंसा; [धार्मिक प्रवचन; सविस्तर वर्णन; विवरण]

वखाणइ *आरारा. चारफा. षडाबा.* विवरण करे, समजावे (सं.व्याख्यान परथी); *उपबा. गुर्जरा.* प्रशंसा करे; [वर्णवे, विस्तारथी कहे, विवरण करे]; *अखाका. आरारा. उक्तिर. प्रेमाका.* कहे, वर्णवे

वखारीआ *विमप्र.* वखार राखनारा वेपारीओ [दे.वक्खार परथी]

वखेरा जुओ वछेरा

वगतो *अखाका.* जुदो; जुओ वगूतो

वगत्य-वगुंचण **अखाका.* [भिन्नत्वथी उत्पन्न थती गूंच]

वगियो *प्रेमाका.* [पक्षपाती], हितेच्छु

वगूचे *अखाका.* गूंचवाय, [हैरान थाय] [सं.विगुप्त परथी]; जुओ विगूचइ

वगुता **नरप(द).* [दुःखी थया]; जुओ वगूतुं, विगुता

वगूए *अखाका.* दुःखी करे; **प्रेमाका.* [वगोवे, अपमानित करे]; जुओ विगुआणा

वगूतुं **नलाख्या.* [दुःखी थयुं]; *नरका.* दुःखभर्युं [थयुं]; जुओ वगुता

वगूतो (वगतो, व्यगतो) **अखेगी.* [जुदो, अळगो]

वगूत्यो **नरका.* [*वगोवायो, *गूंचवायो, *लपटायो]; जुओ विगूतो

वगे *चित्तसं.* ठेकाणे

वगोयुं *प्रेमाका.* दुःखी कर्युं; वगोव्युं, बदनाम कर्युं; वगोवायुं, बदनाम थयुं

वगोरइ **गुर्जरा. *विराप.* बगाडे, हानि पहोंचाडे, नष्ट करे (सं.विकुर्वति)

वघ *विमप्र.* वाघ

वघरडुं *सिंहा(शा).* वांधो, विघ्न

वघरां *प्रेमाका.* विघ्न, वांधा

वघेला *प्राचीसं.* वाघेला

वचखण *विमप्र.* विचक्षण

वचनगस्त (वचन गस्त जाशे नही) *मदमो.* –, [वचन फरशे नहीं] [फा.गश्त=फरवुं ते, भ्रमण]

वचनगोचरें *आनंस्त.* वचनप्रत्यक्ष रीते, वचन द्वारा

वचाइ *गुर्जरा.* वंचाय (सं.वाचयति)

वचीक्षण *कामा(शा).* विचक्षण

वचीत्र *कमा(शा).* विचित्र

वज्रइ *गुर्जरा. प्राचीसं.* जाय (सं.व्रजति)

वच्छ *जिनरा. तेरका. देवरा. षडाबा.* वत्स, पुत्र, बेटो; *प्रेमाका.* वाछरडुं (सं.वत्स)

वच्छनाग *उक्तिर.* ए नामनो एक झेरी छोड

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.वत्सनाग)

वच्छर *आरारा. गुर्जरा. तेरका.* वर्ष, संवत्सर (सं.वत्सर)

वच्छरूव *प्राचीसं.* वाछरू (सं.वत्सरूप)

वच्छल *आरारा. तेरका. षडाबा.* वत्सल, स्नेह राखनार

वच्छे, वछि, वछे *आरारा.* वत्से, दीकरी (संबोधन)

वछ *ऐतिका. ऐतिरा. प्रद्युचु. विक्ररा.* वत्स, दीकरो

वछ, वाछ *प्राचीसं.* वाछडो (सं.वत्स)

वछडउ *वीसरा.* वाछडो (सं.वत्स-)

वछर *ऐतिका. जिनरा.* वत्सर, वर्ष

वछि *अंबरा. उषाह. गुर्जरा. विक्ररा.* वत्से, दीकरी, बेटी (संबोधन); जुओ वच्छे

वछीआत *विमप्र.* बहारगामथी खरीदवा आवनार खातेदार, [आडतियो]

वछीयायित *उक्तिर.* वछियात, आडतियो (*सं.वस्तुवित्तः)

वछे जुओ वच्छे

वछेदि *गुर्जरा. *विमप्र.* उतावळे, जलदीथी; जुओ विछेदि

वछेरा (वखेरा) **प्रेमाका.* [बखेडा, धांधल-धमाल]

वछेडे **कामा(शा). *प्रेमाका.* [छोडावे]

वछोडइ *गुर्जरा.* छोडे, छूटां करे [सं.वि+छर्द्]

वछोयां *प्रेमाका.* वछोड्यां, अळगां कर्यां

वछोह **कामा(शा). सिंहा(शा).* वियोग [दे. विच्छोह]

वछोहुं *गुर्जरा. प्रेमाका.* छुटुं पडेलुं, विखूटुं पडेलुं [दे.विच्छोह]

वछ्छि *नेमिछं.* वहाली, [लाडकी] [सं.वत्स]

वज *उक्तिर.* ए नामनी एक औषधीय वनस्पति (सं.वचा)

वज *वीसरा.* वज्र

वजरमे *कामा(शा).* वज्रमय, [वज्र जेवो, कठोर]

वजा **अखाछ.* [रीति; दशा]; *मदमो.* व्यवस्था, [गोठवण, रचना] [अ.वजअ]

वजाडइ *जिनरा. लावल.* वगाडे, बजावे

वजे *अखाछ.* मळतर, [लाभ, वळतर] [अ. वजअ]

वज्जइ *गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल.* वागे, अवाज करे (सं.वाद्यते)

वज्जमओ *गुर्जरा.* वज्रमय

वज्जरइ *तेरका. प्राचीसं.* कहे, वर्णवे (दे.)

वज्जि (?) *तेरका.* ?

वज्जमइ *विक्ररा.* वज्रमय

वज्जसरीरु *गुर्जरा.* वज्र जेवुं शरीर

वज्झडइ *प्रद्युचु.* ?

वटउ *विमप्र.* वट्यो, -ना करतां वधी गयो

वटक मा *नरका.* रीस करीश नहीं, [छेडाईश नहीं]

वटकवुं *अखाका.* छटकवुं, [दूर थवुं, प्रतिकूळ थवुं]

वटलोय *उपबा.* एक धातुपात्र, [तांबडी] (*सं.वर्तलोह)

वटवालनुं *उक्तिर.* [*वोळावियापणुं] (सं. वर्त्मपालन]; जुओ वाटवालणुं

वटवुं *अखाछ.* ओळंगवुं, [आगळ जवुं]; [जवुं, जतुं रहेवुं]; *प्रेमाका.* जवुं, चाल्या

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जवुं; *अखाका.* ओळंगी जवुं, [जवुं, आगळ जवुं]

वटंबे *अखाका.* विडंबे, संतापे

वटाह (एकवटाह) **जिनरा.* [टेक, व्रत, नियम]

वटेवाहू *गुर्जरा.* वटेमार्गु, प्रवासी (सं. वर्त्मकवाहकः)

वटेसारु *प्रेमाका.* वटेमार्गु, मुसाफर

वट्ट *ऐतिरा. प्राचीसं. विमप्र.* वाट, मार्ग (सं.वर्त्म)

वट्टंतउ *जिनरा.* वर्ततो, रहेतो

वट्यो *चित्तसं.* नीकळी गयो, [चाल्यो]

वड *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* मोटुं; *हरिख्या.* मोटुं, वृद्ध (दे.वड्ड)

वडइ *वीसरा.* -नी बराबर; -थी, वडे [-ना बदलामां]

वडउ नेसालीयउ *प्राचीसं.* वडो निशाळियो

वडभागी *देवरा.* मोटा भाग्यवाळो (हिं. बडभागी)

वडवखती *ऐतिरा.* विख्यात, [महाभाग्यशाळी]; जुओ बडवखती, वखतवन्त

वड वेगि *गुर्जरा. विराप.* मोटा वेगे

वडहथ *सिंहा(शा).* आजानुबाहु, [मोटा हाथवाळो]

वडाउ *चंद्रवा.* दादो

वडाउओ *वेताप.* वडील, वडवो, [दादो], [मोटो]

वडार्युं *दशस्कं(१).* शेखीखोर, झघडाळु

वडी *उक्तिर.* दडी (सं.वटिका, वटी)

वडी आई *विमप्र.* मानी मा

वडीआं *लावल.* खाद्यविशेष, वडी

वडी वार *चतुचा. विक्रच.* घणी वार

वडी वारनी *प्रेमाका.* क्यारनी, घणा वखतथी

वड्डु *लावल.* वडो, मोटो [दे.वड्ड]

वड्डुउ *वीसरा.* वडो, मोटो [दे.वड्ड]

वड्ढिया जुओ वुट्टिया

वढारा *प्रेमाका.* वढकणा, झघडाळु

वढी *गुर्जरा.* झघडो करी, लडी (*प्रा.विढइ)

वण *जिनरा.* [शरीरनो] वर्ण, [एने नक्की करतो नामकर्मनो एक प्रभेद] [जै.]

वण *आरारा. गुर्जरा. तेरका.* वन

वण *तेरका.* एक वनस्पति, [कपास] (प्रा.वुण); जुओ वुंण

वणखंडु *आरारा.* वनखंड, वनप्रदेश

वणचर *गुर्जरा.* वनवासी (सं.वनचर)

वणज *नरका. प्रेमाका.* वेपार (सं.वाणिज्य)

वणजारडी, वणजारी, वणिजारी *प्राचीफा.* वणिकनी – वेपारीनी स्त्री (सं. वाणिज्यकारक)

वणनिर्म्यां *चित्तसं.* वणनिर्मेलां, [मिथ्या]

वणफल *षडाबा.* वनफल

वणमेल्युं *चित्तसं.* वणमेळव्युं, मेळववानो प्रयत्न न करवो पड्यो होय ऐवुं

वणराइ *गुर्जरा. तेरका.* वनराजि

वणठो (बुध्यवणठो) *अखाका.* [बुद्धि] नाश पामी छे एवो [सं.विनष्ट]

वणराय *आरारा.* वनराजि

वणवउ *उक्तिर.* वणवुं ते, वणाटकाम [दे. वुण परथी]

वणवासु *गुर्जरा.* वनवास

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणसइ *तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* वनस्पति

वणसमारी *अखाका.* साफ कर्या वगरनी

वणसे *अखाका. चित्तसं. नरका.* नाश पामे [सं.विनश्]

वणसाड्युं *प्रेमाका.* नाश पमाड्युं

वणस्सइ *गुर्जरा.* वनस्पति

वणहडीउ [चणहडीउ] *उक्तिर.* [*कोई प्राणीनाम] [सं.चणकवर्तकः]

वणारिस *उक्तिर. प्रद्युचु.* वाचनाचार्य, [जैन साधुनी एक पदवी]

वणांतरि *षडाबा.* अन्य वनमां (सं.वनांतरे)

वणिउत्त *प्राचीसं.* वणिक-पुत्र

वणिग *आरारा.* वणिक (सं.वणिज्)

वणिज *आरारा. उक्तिर.* वाणिज्य, वेपार

वणिज- *प्राचीसं.* वेपार करवो

वणिजारउ *गुर्जरा. प्राचीसं.* वणजारो (सं. वाणिज्यकारक)

वणिजारी जुओ वणजारडी

वणियर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* एक वनचर प्राणी

वणी *उक्तिर.* नानुं वन, वाटिका (सं.वनी)

वणीमग *उक्तिर.* मागण, भिखारी (सं. वनीपक)

वत *आरारा.* वात

वतपति *विमप्र.* व्युत्पत्ति, [कलाकौशल]

वतपतीआला *विमप्र.* [कलाकौशलयुक्त]; जुओ वितपतिआला

वतंस *प्राचीसं.* अवतंस, [आभूषण]

वतागरो *अखाछ. अंगवि.* वैतरो, [वतीथी काम करनार, सेवक], मजूरियो

वतांगरां *प्राचीसं.* काम करनारां (*सं.वस्तु)

वती *आरारा.* -ने लीधे, -थी

वतीत *आरारा.* व्यतीत

वतुं *कर्पूमं. कामा(त्रि). नरका. नरप. प्रेमाका. विक्ररा. हरिख्या.* चींधेलां काम, सेवा

वत्त *आरारा. उषाह.* वात (सं.वार्ता)

वत्तंति *आरारा.* वृत्तांत

वत्ता *आरारा.* वात (सं.वार्ता)

वत्थु *ऐतिका.* वस्तु

वत्सलभगतइ *आरारा.* स्नेहभक्तिथी

वत्रेक *प्रेमाका.* श्रेष्ठ; विरुद्ध [सं. व्यतिरेक]; जुओ वित्रेक

वथूअउ *उक्तिर.* चील, टांका के बथवानी भाजी (सं.वास्तुकम्)

वदीत *ऐतिका.* प्रसिद्ध [सं.वदित]

वदीतउ *गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल.* प्रसिद्ध, प्रख्यात (सं.विदितक)

वद्दहिं *लावल.* [अवाज, ध्वनि – कोई वाद्यना – वडे] [सं.वाद]

वद्धऐ *ऐतिका.* वृद्धि पामे

वद्धावणउ *प्राचीफा.* वधामणुं, [वधाई, अभिनंदन] (सं.वर्द्धापन)

वद्धावइ *गुर्जरा.* वधावे, स्वागत करे (सं. वर्धापयति)

वद्धावउ *चारफा.* वधाइ लावनार, बधैयो (सं.वर्धापक)

वधाअइ *उक्तिर.* वधाववामां आवे, स्वागत

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करवामां आवे (सं.वर्ध्यते)

वधामणउं **गुर्जरा.* [आनंद – खुशीना समाचार] (सं.वर्धापन)

वधारइ, वध्यारइ *आरारा.* वधामणी आपे (अप.वद्धार); *प्राचीफा.* अभ्युदय करे (सं.वर्ध+कार); *नलाख्या.* कापे (सं.वर्ध् उपरथी)

वधावी *तेरका.* वधावनारी, वधामणी आपनारी (अप.वद्धविय, प्रा.वद्धविया, सं.वर्ध्+आप्+इका)

वधावु *नेमिछं. लावल.* वधामणी – शुभ समाचार आपनार, वधामणियो

वधि *आरारा.* विधि, प्रकारे

वधेसिइं *नेमिछं.* वध करशे

वध्यारइ जुओ वधारइ

वनकल *कादं(शा).* वल्कल (*सं.वनकुल) [सं.वन+दुकूल]

वनकुळ, वनकूळ *दशस्कं(१). प्रेमाका. सिंहा(शा).* वल्कल, वनमां पहेरवानां वृक्षनी छालनां वस्त्र [सं.वनदुकूल]

वनखंड *आरारा. वीसरा.* वनप्रदेश [सं.]

वनचर *गुर्जरा.* वनवासी, [शिकारी] (सं.)

वनदेव्या *प्रेमाका.* वननी देवी

वनपाल *आरारा.* वननो रक्षक [सं.]

वनरवालि, वंदरवाल *गुर्जरा.* [मंगल प्रसंगे घरना बारणे लटकावातुं] पांदडांनुं तोरण (सं.वन्दनमालिका); जुओ वन्नरमाल

वनराज *आरारा.* वनराजि, वनराई

वनवीथी *प्रेमप.* वननो मार्ग [सं.]

वनसंपइ *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वनसमृद्धि (सं.वन+संपद्)

वनंतरि, वनांतरि **गुर्जरा.* [वनमां] [सं. वनान्तरे]; जुओ वनांति

वना जुओ वनो

वनास *वीसरा.* बनास नदी

वनांति (वनांतरि) **विराप.* [वनमां] [सं. वनान्ते]; जुओ वनंतरि

वनि *आरारा.* वर्णे, रंगे

वनियां *ऐतिका.* *आभूषणविशेष, [*बन्यां, *शोभ्यां, *सज्यां] [सं.वन्]; जुओ बनया

वनी *गुर्जरा.* नानुं वन (सं.)

वनीता *प्रबोप्र.* लई जवाई (सं.अपनीता) [सं.विनीता]

वने *चतुचा.* विनय

वनो *अखाछ.* वर्ण, [रंग]

वनो *नंदब.* विनय; *प्रेमाका.* विनंती, [अनुनय, आदरभक्ति]

वन्न *उषाह. तेरका.* वान, वर्ण, रंग

वन्न *आरारा.* वन

वन्नरमाल, वन्नरवाल, वन्नरवालि *अंबरा. आरारा. शृंगामं.* द्वार पर लगाडातां पांदडांनां मंगलसूचक तोरण (सं.वंदनमाला, वंदनमालिका); जुओ वनरवालि

वन्निज्जइ *ऐतिका.* वर्णन कराय छे

वन्नी *आरारा.* वर्णी, वर्णवाळी

वन्नीयए *गुर्जरा.* वर्णवाय छे (सं.वर्ण्यते)

वपन *नरका. प्रेमाका.* हजामत, [मुंडन] [सं.]

वप्परीत *चंद्रवा.* विपरीत

वमइ *अखाछ. उक्तिर.* काढी नाखे (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वमति)

वमाल *तेरका.* कोलाहल, खळभळाट (दे.)

वम्मह *प्राचीसं.* मन्मथ, [कामदेव]

वय- *प्राचीसं.* जवुं [सं.व्रज्]

वय *तेरका.* समूह (सं.व्रज)

वय *प्राचीसं.* व्रत

वयगरणउ *उक्तिर.* खर्च खातुं संभाळनार राज्याधिकारी (सं.व्ययकरणक); जुओ वइगरणा

वयण *अखाका. उषाह. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. नरका. प्रबोप्र. प्रेमाका. हरिवि.* वचन, वेण; *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वचन, आदेश

वयण *आरारा. उषाह. कृष्णबा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रबोप्र. लावल. हरिवि.* वदन, मुख

वयणरयणखाणी *लावल.* वचनरूपी रत्नोनी खाण जेवी

वयणलां *नेमिछं. लावल.* वचनो

वयणि, वयणी *आरारा.* वचनवाळी

वयणी *आरारा.* वदनी, वदनवाळी

वयणी *चतुचा.* चोटलो (सं.वेणी)

वयर *उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. लावल. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). विराप.* वेर (सं.वैर)

वयरणी *आरारा.* वैरिणी

वयरागइ *आरारा.* वैराग्यथी

वयरागर जुओ वइरागर

वयरि, वयरी *उक्तिर. उपबा.* वेरी (सं.वैरी)

वयरी *आरारा. गुर्जरा. लावल.* वेरी, दुश्मन (सं.वैरिन्)

वयस *शृंगामं.* पंखी (सं.वयस्)

वयसारि *जिनरा.* बेसाडी [सं.उपविश्]

वयेण *दशस्कं(२.)* वेण, वचन

वर *प्रेमाका. वीसरा. हरिख्या.* वरदान (सं.)

वर *तेरका. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* उत्तम, सुंदर, श्रेष्ठ

वरअंगि *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* सुंदर शरीरवाळी स्त्री (सं.वरांगी)

वरइ (वरइ पडइ) **आनंस्त. *लावल.* [सफळ थाय, पार पडे]

वरइ पडइ *जिनरा.* सफळ थाय; जुओ वरय न पडस्ये

वरउ **वीसरा.* [वरो, जमणवार, खर्चनो प्रसंग]

वरख, व्रख *कामा(त्रि).* वृक्ष

वरखति *प्रबोध.* वरसते

वरखा *अखाका. प्रेमाका.* वर्षा, [वरसाद]

वरग *आरारा.* वर्ग, समूह

वरगडु *उक्तिर.* [*सिंह के चित्तो] (सं. वराकर्षक) [रा.बरगडौ]

वरगां *विक्ररा.* एक प्रकारनुं वाजिंत्र, बणगां; जुओ बरगुं

वरचीउं *गुर्जरा.* विरच्युं, रचना करी (सं.विरचित)

वरजात्रा *दशस्कं(२).* बरात, जान

वरटा-पति *नलाख्या.* हंस [सं.]

वरठ्या *दशस्कं(२).* वरस्या [सं.वृष्ट]

वरढ (वरढ वणउ) *विक्ररा.* वरेडुं, [वरत, दोरडुं], [*वात गूंथो, *योजना करो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरण *तेरका.* एक वनस्पति, [वरणो, वायवरणो] [सं.वरुण]

वरणइ *नेमिछं. प्रेमाका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(बा).* वर्णवे (सं. वर्णयति)

वरणक *आरारा.* वर्णन

वरणी **नरका. *प्रेमाका.* [स्त्री] [सं.वर्णिनी; रा.]

वरत **मदमो.* [व्रत]

वरत **मदमो.* [वरते, थाय]

वरत *चंद्रवा.* [कोस खेंचवानुं] दोरडुं [सं. वरत्रा]

वरतइ *आनंस्त. ऐतिका. गुर्जरा.* प्रवर्ते, होय, रहे (सं.वर्त्)

वरतण *अखाका. *अखाछ. चित्तसं.* [वरतवुं ते], वर्तन, प्रवृत्ति, [आचरण, व्यवहार]

वरतणां *ऐतिरा.* लेखण, [कलम, वतरणां]

वरतणु, वरतनु *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सुंदर शरीरवाळी स्त्री [सं.वरतनु]

वरतर काटिवउ *उक्तिर.* वरत – दोरडुं कापवुं ते (सं.वरत्राकर्तनम्)

वरता *उक्तिर.* दोरडुं, रांढवुं (सं.वरत्रा)

वरतारा **विमप्र.* [कार्य करवुं ते, प्रयोग-कर्म] [रा.]

वरतांत *आरारा.* वृत्तांत

वरति *अखाका.* वृत्ति, [उद्यम, आचार, व्यापार]

वरति (निवरति) **देवरा.* [निवृत्ति, विरक्ति]

वरतीओ *मदमो.* जैन यति; जुओ वर्त्तियो

वरतीक, वर्तिक *वेताप.* वरतियो, [जोगी, साधु] [सं.व्रती]

वरतीयि *कादं(शा).* वरताय, थाय (सं.वृत्)

वरते *अखाका.* रहे, [होय, अस्तित्व धरावे]

वरत्ये *अखाका.* वृत्तिए [व्यापारे, उद्यमे]

वरदलि **गुर्जरा.* [वर, पति] (सं.वरदल; रा.)

वरधारु *आरारा(व).* वरधारो, समदरशोष (सं.वृद्धदारु)

वननोला *ऐतिका. जिनरा.* विवाहार्थी के दीक्षार्थीनुं भोजनादि द्वारा थतुं स्वागत [ते माटेनो वरघोडो, फूलेकुं]; जुओ बन्नउला

वरमाल *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मनोहर माळा (सं.वर+माला)

वरमित्त *ऐतिरा.* उत्तम मित्र

वरय *गुर्जरा.* वरद, कल्याणकारी, [अनुकूळ, योग्य] [रा.वरे]

वरय न पडस्ये *जिनरा.* सफळ नहीं थाय; जुओ वरइ पडइ

वरलु *नलरा.* विरलो

वरवर्णिनी **आरारा.* [सुंदर स्त्री] (सं.)

वरव्येष *चंद्रवा.* सुंदर वेश

वरशात *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* वरसाद [सं.वर्षारात्र]

वरशोध्य *दशस्कं(१).* वार्षिक लागो, [वरसूंद]

वरशोंत *प्रेमाका.* वार्षिक लागो, [वरसूंद]

वरसवियारणि *उक्तिर.* दर वर्षे वियानारी

वरसंति *गुर्जरा.* वरसने अंते (सं.वर्षान्ते)

वरसात *उक्तिर. उपबा. नलरा. नलाख्या.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विमप्र. सिंहा(शा). वरसाद (सं.*वर्षाद्री) (सं.वर्षारात्र)

वरसाल *नलरा.* वरसाद (सं.वर्षाकाल)

वरसालउ *अभिऊ. उक्तिर. ऐतिरा. प्राचीफा. षडाबा.* वर्षाऋतु (सं.वर्षाकाल)

वरसाळो *नरका. प्रेमाका.* वर्षकाळ, वरस जेटलो समय

वरसिउ *प्राचीफा.* वर्षपर्यंतनुं (सं.*वर्षिक)

वरसोलां *उक्तिर.* वरसादनी साथे पडतां हिमखंड, करा (सं.वर्षोपल)

वरसोलां *नेमिछं. लावल.* खाद्यविशेष, [साकरनी मीठाई]

वरसोळी *दशस्कं(२).* रसोळी [खूंध]

वरह *नलरा.* वियोग (सं.विरह)

वरहलि *ऊक्तिर.* वसूकी गयेली; जुओ वहलि

वरह वरो *आनंस्त.* इच्छित लो, यथेच्छ लो

वराक *प्रबोप्र.* बापडो, बिचारो [सं.]

वराकी *कादं(शा).* बापडी, बिचारी (सं.)

वराटिका *कादं(शा).* कोडी (सं.)

वरासइ, वरांसइ, विरांसइ *अखाका. अभिऊ. उक्तिर. *ऋषिरा. प्रेमाका. *हरिख्या.* भ्रांतिमां पडे, भूल करे (सं. विपर्यस्यति); *नरका.* [खोटा] भरोसे रहे, भ्रांतिमां रहे

वरासउ, वरांसउ, विरांसउं, वीरांसउ *आरारा. उक्तिर. कादं(शा). चतुचा. दशस्कं(१). प्रेमाका. वसंवि. वसंवि(ब्रा). *विमप्र.* भ्रांति, भूल; *नरका.* [खोटो] भरोसो, भ्रान्ति; **प्राचीसं.* [भ्रान्ति, मिथ्या] [सं. विपर्यास]

वरासीयइ *उक्तिर.* भ्रांतिमां पडे, भूल करे (सं.विपर्यस्यते)

वरां *चंद्रवा. मदमो. सिंहा(शा).* वार, [आवृत्ति]

वरांसइ जुओ वरासइ

वरांसउ, वीरांसउ *कामा(त्रि). कामा(शा).* *व्याकुळता, विमासण; जुओ वरासउ

वरांसडु **शृंगामं.* [भ्रान्ति, भूल]

वरि *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* उपर (सं.उपरि)

वरि *तेरका.* भले (सं.वरम्)

वरिट्ठ *आरारा.* वरिष्ठ, उत्तम

वरियाम **जिनरा.* [श्रेष्ठ, *खरेखरुं]

वरिस- *तेरका.* वरसवुं (सं.वर्ष्)

वरिस *आरारा. तेरका. वीसरा.* वर्ष

वरिसालय *तेरका.* वर्षाकाल, चोमासुं

वरीजइ *लावल.* वरीए, मेळवीए, मेळवो

वरीय *ऐतिका.* अंगीकार – स्वीकार करी

वरीस *विक्ररा.* वरस; जुओ बरीस

वरु *गुर्जरा. षडाबा.* वरदान (सं.वरः)

वरु *विमप्र.* वरो, भोजननो उत्सव, [एनुं खर्च]

वरुआयती *उक्तिर.* प्रणयी – विवाहार्थी द्वारा (सं.वरित्रा)

वरुठी *विमप्र.* लग्न बाद वर तरफथी आपवामां आवतुं जमण, [वरोठी] [*सं.वरजुष्टि]

वरुणाअशी *प्रबोप्र.* ?, [(काशी पासे गंगाने मळती) वरुणा नदीथी]

वरुणि *प्रेमाका.* *क्रियाकर्म करावका माटे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसंदगी, [क्रियाकर्म करावववा माटे पुरोहितोनुं संमान] [सं.वरणी]; जुओ वरूण

वरुयो *चंद्रवा.* विरूप, वरवो

वरुवो *प्रेमाका.* वरवो, बेडोळ

वरू, वरूउ, वरूउं *गुर्जरा. चतुचा. षडाबा.* वरवुं, कदरूपुं, वांकुं (सं.विरूप)

वरूण *मदमो.* पाणी [सं.वरुण]

वरूण *नलाख्या.* वरोणी, [वरुणी, ब्राह्मणोनुं संमान, एमने भेट] (सं.वरणी); जुओ वरुणि

वरेण *चंद्रवा.* वरेण्य, वरवा योग्य

वर्ख *प्राचीका.* वर्ष

वर्ख, वृख, व्रख *चंद्रवा.* वृक्ष

वर्णन-पोण *प्रेमाका.* वर्णन करवानी प्रतिज्ञा

वर्णव *चंद्रवा.* वर्णन

वर्णावर्ण *आरारा.*जातजातनावर्ण[नालोको]

वर्णिका *विमप्र.* रंग [सं.]

वर्त *चंद्रवा.* व्रत

वर्तइ *उपबा. चित्तसं.* छे, होय छे, अस्तित्व धरावे छे [सं.वर्तते]

वर्तिक जुओ वरतीक

वर्तिवउ *उक्तिर.* वर्तवुं

वर्त्तइ *षडाबा.* छे, रहे छे (सं.वर्तते)

वर्त्तिए (पाछइ वर्त्तिए) *षडाबा.* [पाछां] वळतां, [पाछां होतां]

वर्त्तियो *चंद्रवा.* जैन यति [सं.व्रती]; जुओ वरतीओ

वर्त्ती *आनंस्त.* -मां रहेनारो

वर्त्य *अखाछ.* वृत्ति, [वृत्तिमां रहेवुं ते]

वर्षण *आनंस्त.* वरसाद

वर्षभारुंढ *चंद्रवा.* वृषभ – आखला उपर आरूढ

वलई *लावल.* वलय, गोळाकार, [*कांडुं]

वलउ *उक्तिर.* छापराना टेका माटेनो आडो स्तंभ (सं.वलक); जुओ वला

वलखी *आरारा. विमप्र.* गभरायेली (सं. विलक्षित)

वलग्गि *ऐतिका.* वळगीने, पकडीने [सं. विलग्न]

वळण **अखाका. अखाछ.* रस्तो, [दिशा, बाजु] [सं.वलग्न]

वलण *अभिऊ.* पाछां वळवुं ते

वळण करे *नरका.* पाछो फरे

वलतउ *अखाका. चित्तसं. जिनरा. नलाख्या. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वळतो, सामो, जवाबमां, -ना बदलामां (सं.वलयत्); *प्रेमप. *षडाबा.* फरीने, [पाछो, पछीथी]

वलतुं फेरी *आरारा.* बीजी वार, [फरी वार]

वलवलइ *प्राचीसं.* अवाज करे; बकबक करे; *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. विराप.* वलोपात करे, विलाप करे; जुओ बलबलीउ

वला *उक्तिर.* छापराना टेकारूप आडां लाकडां [सं.वलक]; जुओ वलउ

वला *लावल.* बाजु, तरफ

वलाई *नरका.* वळगी

वलाणय *तेरका.* देवालयमांनुं स्थानविशेष, [एक प्रकारनो मंडप] [दे.बलाणय]; जुओ बलाणा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वलायु *विमप्र.* वळाव्यो

वलाल्ये *अखाछ.* लालन करे, रमाडे

वळावा *अखाका.* वळाविया, मुसाफरीमां साथे जता रक्षको के चोकियात

वलि *उक्तिर.* चामडी पर पडतो वळ, तेनी रेखा (सं.)

वलि वलि *प्राचीसं.* वारंवार, वळीवळी

वलि नीसांणे घाय *कृष्णबा.* नगारा पर दांडीना प्रहारो थाय छे

वलीआ, वलीआं *नेमिछं. लावल.* एक आभूषण, बंगडी, [बलोयां]

वळी आडी लीट *प्रेमाका.* पराकाष्ठा आवी गई, [हद वळी गई]; जुओ लीह वळी

वलुधी *देवरा.* लुब्ध, [मग्न] [सं.विलुब्ध]

वलुरी *आरारा.* खणी, खोदी काढी; जुओ वलूरे

वलुंधइ, वळुंधइ *मदमो.* हळे, [आसक्त थाय] (सं.विलुब्ध); *अखाका.* वळगे; *अखाछ.* वळगे, [मग्न थाय]

वलूति *चंद्रवा.* वळती, पछी

वलूरे *प्रेमाका.* उतरडे, उझरडे; जुओ वलुरी

वळूंधी *नरका.* वळगी, [चोंटी] (सं. विलुब्ध); *नरका-२.* घेरायेली, [-मां मग्न, डूबेली]; जुओ विरहवळूंधी

वले *नरका-२. प्रेमाका.* हालत, दशा, स्थिति; उपाय

वलो *अखाछ.* माखण न बंधावुं ते, [छास-मांथी माखण वीखराई जवुं ते]

वलोटउ **उपबा.* [केड कपर वींटाळातुं वस्त्र]

वलोतां *नरका.* वलोवतां

वल्गुली *षडाबा.* एक रोग (सं.)

वल्लउ *प्राचीका.* वहालो (सं.वल्लभ)

वल्लकी *हरिवि.* वीणाविशेष [सं.]

वल्लभ, वल्लभु *गुर्जरा. विराप.* [वल्लव], विराट नगरीमां भीमनुं नाम (सं.बल्लव)

वल्लभी *प्राचीका.* गोवालणी, (सं.बल्लवी)

वल्लव *प्रेमाका.* वल्लभ, पति

वल्लव *हरिवि.* गोप (सं.बल्लव)

वल्लवी *हरिवि.* गोपी [सं.बल्लवी]

वल्लहउ *गुर्जरा.* वल्लभ, स्वामी, [प्रिय]; *नरका.* वहालो

वल्लही *गुर्जरा. नरका.* वहाली (सं.वल्लभा)

ववराणी **कादं(शा).* [वपराणी, नष्ट थयेली] (सं.व्यापार परथी)

ववहर- *प्राचीसं.* वहोरवुं, खरीदवुं (सं. व्यवहर्)

ववहाररासि *गुर्जरा.* जीवोनो एक प्रकार [जे जगतना व्यवहारमां आवे छे] [जै.]

ववेक *आरारा.* विवेक, विचार

वव्येक, व्यवेक *चंद्रवा.* विवेक, [विनय; परीक्षा; विवरण, समजूती]

वव्येत्र, वावेत्र *चंद्रवा.* वावेतर

वशइतउ *षडाबा.* -ने लीधे (सं.वशतः)

वशीहर *कृष्णबा. प्राचीका.* नाग, वशियर (सं.विषधर)

वशेके *अखाका.* *विशेषे, *वधुमां; [*मुख्य-पणे, *तत्त्वतः]

वश्य *विराप.* *बच्ची, *बेटी, [*आज्ञाधीन स्त्री, *दासी] (*सं.वत्सा) [*सं.वश्या]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वश्य *गुर्जरा.* -ने वश थईने

वस *विमप्र.* वसा, [(ग्रहयोगना) अंश, भाग]

वस *तेरका.* वश

वसणाहर *गुर्जरा. विराप.* वसनार

वसणु *गुर्जरा.* व्यसन

वसत *प्रेमाका.* वस्तु, चीज

वसन *अखाका. आनंस्त. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. विराप.* वस्त्र (सं.)

वसह *कृष्णच.* वृषभ

वसहि *ऐतिका.* वसती

वसंतिइं *लावल.* चमेलीथी, [जूईथी] [सं. वासंती]

वसा *षडाबा.* चरबी, मेद (सं.वसा)

वसा सोइ *चित्तसं.* सो वसा, सो टका, संपूर्ण; जुओ विश्वा, वीस वसा, व्यसा

वसि *आरारा.* वशमां

वसिहर *विमप्र.* विषधर, नाग

वसीआंन *कामा(त्रि).* वसवाट

वसीट्ठी *ऐतिका.* *दूर, [*अळगा, *भिन्न, *विसर्जित]

वसीठ *हम्मीप्र.* संदेशवाहक, राजदूत (सं. विशिष्ट)

वसुधा दे वहेर, वसुधा दे वेर *प्रेमाका.* पृथ्वीमां चिराड पडे, [पृथ्वी मार्ग आपे, पृथ्वी फाटी पडे, न बनवा जेवुं बने]; जुओ वहेर

वसुधारा *प्राचीफा.* आकाशमांथी देवकृत सुवर्णवृष्टि, [जिनदेवना पांच दिव्योनुं एक] (सं.) [जै.]

वसुहा *ऐतिरा. विमप्र. सिंहा(म).* वसुधा, पृथिवी

वसुं *चित्तसं.* वस्युं

वसू (इहिविसूहिवि) *ऋषिरा.* [सौभाग्यवती स्त्री] [सं.अविधवा-सुधवा]; जुओ अहवसुहव

वसेक *सिंहा(शा).* विशेष

वस्त *अखेगी.* वस्तु, [वस्तुब्रह्म]; *अभिऊ. पंचवा. प्रेमाका. रूपच.* वस्तु, चीज

वस्तरी *आरारा.* विस्तरी

वस्तु *चित्तसं. नरका-२.* [मूल तत्त्व], ब्रह्म [सं.]

वस्तुगते *अखाका.* वस्तुतः, खरेखर तो

वस्तुपणइं *आनंस्त.* वस्तुपणे, यथार्थ रीते

वस्ते *अखाका.* वस्तुमां (ब्रह्ममां); वस्तु (चीज) वडे

वह **उपबा.* [मार्ग] [दे.विह]

वहइ *आरारा. गुर्जरा.* वहन करे, लई जाय, उपाडे, उठावे; **कामा(त्रि). नलाख्या. वीसरा. *षडाबा.* चाले, गति करे, चाल्युं जाय; *चतुचा.* जाय, खेंचाय; *उपबा. ऐतिरा. गुर्जरा. चतुचा. षडाबा.* वहन करे, धारण करे, [धरावे], राखे; *षडाबा.* वहन करे, [चलावे, करे]; *हरिख्या.* निर्वाह करे, पार पाडे; *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* वहन करे, [भोगवे, अनुभवे] (सं.वह)

वहडी गई *प्रबोप्र.* चाली गई, [नष्ट थई]

वहन्ति **ऐतिका.* [धारण करे छे, उपाडे छे]

वहल (?) *तेरका.* ?, [*बहुल, *खूब]

वहलि *उक्तिर.* वसूकी गयेली; जुओ वरहलि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहली जुओ वहिली

वहल्ली *शीलक.* जलदी

वहवावुं *प्रेमाका.* छेतरावुं

वहंग *हम्मीप्र.* विहंग, उत्तम घोडानी एक जात

वहाडि *जिनरा.* वहन करावी, [करावी]

वहाणीअ *शृंगामं.* मोजडी (सं.उपानह्)

वहावुं *नरका. प्रेमाका.* वावुं, वगाडवुं

वहावुं *अखाका. नरका.* *छेतरवुं, [फोसलाववुं, मन मनाववुं]; *नरका.* छेतरवुं, [भ्रमणामां नाखवुं]; *प्रेमाका.* पटाववुं [सं.वाहयति]

वहावो **प्रेमाका.* [वहाव्यो, छेतरायो]

वहि *आरारा.* वहीमां, विधाताना चोपडामां

वहिकती *हरिवि.* बहेकती

वहिचइ **विमप्र.* [वच्चे]

वहिच्ची *विमप्र.* वहेंची, भाग पाडी [सं. विभज्यते]

वहिडइ ०*शृंगामं.* विघटित थयां, अलग थयां

वहिरमाण *ऐतिका.* महाविदेह क्षेत्रना विहरमान तीर्थंकर

वहिरउ *ऐतिका.* बहेरुं [सं.बधिर]

वहिराव- *नलरा.* जैन साधुने कोई वस्तु दानमां आपवी, वहोरावुं [सं.व्यवहृ]

वहिरोडी *उषाह.* समाधान ?

वहिली, वहली *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा.* वहेली, जलदी

वहिल्ल *शीलक.* जलदी

वहिवूं *उक्तिर.* वहेवुं, [उपाडवुं] [सं.वह्]

वहिसी **ऋषिरा.* [(सवार) प्रगट थई] [सं.विकस्-]; जुओ विहसइ

वहिसीय *हरिवि.* विकसित (प्रा.विहसिय)

वही, विहि *अभिऊ.* विधि, (विधात्री)

वही *प्रेमाका. लावल.* हिसाबनो – नामानो चोपडो; *उक्तिर.* रोजिंदी नोंधनी चोपडी (सं.वहिका)

वहीनी *कामा(त्रि).* वह्नि, अग्नि

वहु *आरारा.* वहुं, [चाल्युं]

वहुआरी *प्राचीसं.* वधू, वहुवारु

वहुडि *प्राचीसं.* वधू, वहु

वहुराव्यो *ऐतिका.* वहोराव्या, साधुने प्रदान कर्युं [जै.] [सं.व्यवहृ-]

वहुरिवा *ऐतिका.* जैन साधुए दान [रूपे] लेवा

वहुव *प्राचीसं.* वधू, वहु

वहूअर, वहूयर *नेमिछं. प्रद्युचु.* वहु (सं. वधूक)

वहेर *प्रेमाका.* [पृथ्वीमांनी] चिराड, मार्ग; जुओ वसुधा दे वहेर

वहेरो *प्रेमाका.* भेदभाव, [जुदो भाव]; *मदमो.* अंतरटाळो; *अखाका.* भेद, जुदाई; *नरका. प्रेमप.* तफावत, [फरक]

वहेल *नरका. प्रेमाका.* उपरथी ढांकेलुं, शणगारेलुं गाडुं

वहेंकळो *अखेगी.* नानो वहेळो

वहोरवुं *नरका.* खरीदवुं [सं.व्यवहृ-]

वंक *आरारा.* खोट, कसर (रा.); *मदमो.* खोड, [वांक, दोष] [सं.वक्र]

वंकनी *सिंहा(शा).* [गर्विली, छेलछबीली] स्त्री

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंका *कादं(शा).* वांकां, [मर्मभरेलां] (सं. वक्र)

वंकडुं *आरारा.* बांको, अद्‌भुत; *प्राचीफा.* वांकुं (सं.वक्र)

वंकिम *शृंगामं.* वक्रता, [मर्मयुक्तता]

वंकुड *प्राचीसं.* वांकुं (सं.वक्र)

वंग *तेरका.* एक वनस्पति [सं.]

वंचइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* छेतरे (सं.वंचयति)

वंचिवउं *उपबा.* छेतरवुं

वंचक *अखाछ.* वाचक, कथा वांचनार

वंचक *प्रेमाका.* धूर्त, शठ, [छेतरनार] [सं.]

वंचाइ *आनंस्त.* ठगाय, छेतराय

वंचित *अंबरा.* वांछित

वंचित (वंचित जाय) *प्रेमाका.* विमुख [जाय], [अवळुं पडे, निष्फळ जाय]

वंछ *तेरका.* वांछा (प्रा.वंछा)

वंछइ *अभिऊ. उक्तिर. ऋषिरा. तेरका. लावल.* वांछे, इच्छे

वंछित *आनंस्त. तेरका. लावल.* वांछित, इच्छित; वांछा

वंजल *तेरका.* वंजुल, एक वनस्पति

वंझा, वंझि *अखाका. गुर्जरा. दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो.* संतान थयां न होय तेवी स्त्री, वांझणी (सं.वंध्या)

वंठ, वंठु *शीलक.* वंठेली, [भ्रष्ट, पतित]; *षडाबा.* सेवक, चाकर [दे.]; *शृंगामं.* वंठेल, बगडेल, [खराब, दुष्ट] [सं. विनष्ट]

वंठी भोमि *कृष्णबा.* अभागणी [भ्रष्ट थयेली, खराब दशाने पामेली भोमका]

वंदु जुओ वंठ

वंठ्यो *मदमो.* वकर्यो, [हद बहार गयो] (सं.विनष्ट)

वंणारशी *मदमो.* वाराणसी नगरी

वंतर *आरारा. नरका.* व्यंतर, हलकी कोटिना देव, भूत-प्रेत; जुओ वांतर

वंतरां *प्रेमप.* [व्यंतर], भूतप्रेतादि

वंतोल *अखेगी. अभिऊ. चित्तसं.* वंटोळ

वंदणय-मालिया *प्राचीसं.* वंदनमालिका, [द्वार पर लटकावातां तोरण]; जुओ वनरवालि

वंदनीक *अखेगी.* वंदनीय, पूज्य

वंदर, वंदुर (वंदरवाल, वंदुरवालि) *वसंवि(ब्रा).* [द्वार पर लटकाववामां आवती] मानार्थ, सत्कारार्थ, [मंगल-सूचक] [माळा] (सं.वंद् परथी)

वंदरवाल, वंदरवालि, वंदुरवाल *कृष्णच. वसंवि.* वंदनमाला, [द्वार परनुं] आसोपालव आदिनुं तोरण; जुओ वनरवालि, वंदर, वाल

वंदु *चारफा.* समूह (सं.वृन्द)

वंदुर जुओ वंदर

वंदुरवाल, वंदुरवालि *प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल).* द्वार परनां आसोपालव आदिनां तोरण (सं.वंदनमालिका); जुओ वंदरवाल

वंनरमाला *नेमिछं.* [द्वार परनां] आसोपालव आदिनां लीलां तोरण [सं.वंदनमाला]

वंनरवाल *प्रद्युचु. हम्मीप्र.* आसोपालव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदिनां लीलां तोरण (सं.वंदनमाला); जुओ वनरवालि

वंबाल *तेरका.* *व्याप्त, [समूह] (दे.वमाल)

वंश, वंस *कृष्णबा. चतुचा. नरका. लावल. स्थूलिफा.* वांसळी; *आरारा.* वांसळीना प्रकारनुं वाद्य

वंशफोड *पंचवा.* वांसमांथी टोपली आदि जुदीजुदी वस्तुओ बनावनार

वंशली *अंबरा.* वांसळी

वंशी *प्रेमप.* वांसळी [सं.]

वंस *प्रेमप.* [वांसळी], पावो; जुओ वंश, वंसी

वंस *आरारा(व). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वांस (सं.वंश)

वंसमंडण *ऐतिरा.* वंशने शोभावनार [सं.वंशमंडन]

वंसियालि *तेरका.* वांस-जाळ, [वांसनी झाडी] (सं.वंशजाली)

वंसी *आरारा.* बंसी, वांसळी

वाअ *नरप(द).* [वाय], वगाडे

वाअइ *अखाका. उक्तिर.* वगाडे (सं. वादयति)

वाइ *उक्तिर. गुर्जरा. चारफा. नरका. प्रेमाका. लावल.* वगाडे (सं.वादयति)

वाइ *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* वाय छे, वहे छे (सं.वाति)

वाइ *लावल.* [लई] जाय छे

वाइ *ऐतिका.* वादी, [वाद करनार प्रतिस्पर्धी]

वाइ *नलाख्या. वीसरा.* वायु (सं.वात, वायु)

वाइ (वाइ लागी) *वीसरा.* वायु [भरायो], [गांडपण आव्युं, घेलछा लागी]

वाइक *ऐतिका.* कथन, प्रशंसात्मक काव्य [के उक्ति] [सं.वाक्य]

वाइणि *षडाबा.* पठन, सूत्रपाठ (सं.वाचना)

वाइमल्ल *ऐतिका.* वादीओमां मल्ल

वाइलउ *उक्तिर.* वायडो, वायु करनार (सं. वातलः)

वाइवुं *उक्तिर.* वगाडवुं (सं.वादयितव्यम्)

वाई बाकरी *विमप्र.* होड बकी, [वेर बांध्युं]; जुओ बाकरी

वाउ *उक्तिर. उपबा. उषाह. कामा(शा). गुर्जरा. चारफा. तेरका. लावल.* वायु, पवन

वाउकाई *गुर्जरा.* वायुनी काया धरावनार जीव (सं.वायुकाय)

वाउल *उक्तिर.* वातरोगी, उन्मत्त (सं. वातूलः)

वाउलउ *उपबा. *गुर्जरा. *विराप.* [उन्मत्त] (सं.वातूलः) [रा.]; *वीसरा.* मूर्ख; *हरिवि.* व्याकुळ, बावरुं; जुओ बाउलउ

वाउला *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वायु, वायुलहरीओ

वाउलि *उक्तिर. प्राचीफा. स्थूलिफा. हरिवि.* वंटोळ, वायुलहरी

वाउलि *प्राचीफा.* सुन्दर स्त्री; जुओ बाउल

वाए *चित्तसं.* वायु

वाएसरि *प्राचीसं.* वागीश्वरी

वाक *प्रेमाका. मदमो.* वाक्य

वाकलां *उपबा.* वल्कल

वाके *अखाका.* *तेना, [*वाचामां,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*वाणीमां]

वाक्यरहित *चित्तसं.* वाक – सत्त्व – कस विनानुं

वाग *अभिऊ. उक्तिर. प्रद्युचु. प्रेमाका.* लगाम (सं.वल्गा)

वाग *गुर्जरा.* वाणी, बोलवुं ते (सं.वाच्)

वागइ *जिनरा.* वाघो, मोटो डगलो, पोशाक – तेनी साथे

वागउ *जिनरा. दशस्कं(१). नरका.* वाघो, डगलो, पोशाक

वागतीता *अखाका.* वाणीथी पर [सं.]

वागदोर **विमप्र.* [लगाम] [रा., हिं.बाग-डोर; सं.वल्गा+दोर]

वागरइ *आरारा.* गारुडिकोथी, [शिकारीथी] (सं.वागुरिक)

वागरी *जिनरा. प्रेमाका.* शिकारी, वाघरी, [प्राणीओने पकडवानुं काम करनार जंगली जाति]

वागरीआ ०*विमप्र.* जाळ नाखनारा, वाघरी

वागलां *प्रेमाका.* फांफां

वागविच्छोह जुओ विच्छोह

वागा *प्रेमप.* वाघा, वस्त्रो

वागि *अभिऊ.* वाघाथी, [पोशाकथी]

वागुर *उक्तिर. कादं(शा).* पक्षी वगेरे पकडवानी जाळ (सं.वागुरा)

वागुरी, वागुरीय *उक्तिर. गुर्जरा.* जाळ नाखीने पशुपंखीने पकडनार जाति (सं. वागुरिक)

वागुलि *उक्तिर.* वागोळ, एक रात्रिचर पंखी (सं.वल्गुलिका)

वाघलउ *प्राचीफा.* वाघ (सं.व्याघ्र)

वाघा *प्रेमाका.* डगला, अंगरखां

वाघिणि *गुर्जरा. विराप.* वाघण (सं. व्याघ्रिणी)

वाच *लावल.* जीभ (सं.वाचा); वाणी, [कहेवुं]

वाच-काछ *नरका.* वाणी अने काछ [कछोटो] – चारित्र्य [सं.वाचा+कच्छ]

वाचणहारु *उक्तिर.* वांचनार

वाच राखी *नरका.* वचन पाळयुं

वाचा *वीसरा.* वचन, [वायदो, कोल] (सं. वाच्य)

वाचाट *नेमिछं.* वाचाळ [सं.]

वाचारंभण **अखाका.* [मात्र वाणीमां ज रहेलुं, वाणी ज जेनुं अवलंबन छे ते] [सं.]

वाचाला *ऋषिरा.* वाचाळ, [वाक्पटु, मीठुं बोलनार] [सं.वाचाल]

वाचिवुं *उक्तिर.* वांचवुं

वाची *आरारा.* कह्युं [सं.वच्]

वाच्छल *प्रेमाका.* वात्सल्य, हेत

वाच्छल्यु *षडाबा.* [खानपानवस्त्रद्रव्यादिनुं] दान (सं.वात्सल्य); जुओ वाछल्य, साहमीअ-वच्छल

वाछ जुओ वछ

वाछरू *उक्तिर. षडाबा.* वाछरडां (सं. वत्सरूप)

वाछल *दशस्कं(२).* वात्सल्य

वाछल्य *आरारा.* वात्सल्य, भक्ति

वाछा *आरारा.* वाछरडां (सं.वत्स)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाजइ *अखाछ. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. प्रेमाका. लावल. विराप. वीसरा. शृंगामं.* वागे, [बजे] (सं. वाद्यते)

वाज (वाज करशुं) *कामा(शा).* त्रास आपीशुं, [थकवीशुं]

वाज आव्यो *नरका. प्रेमाका.* तद्दन त्रासी गयो

वाजउ *उक्तिर. गुर्जरा.* वाद्य, वाजुं

वाजणां *नरका.* वागनारां, वागतां

वाजित्र *उक्तिर. गुर्जरा.* वाजिंत्र (सं.वादित्र)

वाजिन *प्रेमाका.* अश्व, घोडो (सं.वाजिन्)

वाजि-विद्या *प्रेमाका.* अश्वविद्या [सं.]

वाजी *प्रेमाका.* अश्व, घोडो [सं.]

वाजे घणा *अखाका.* बडाई मारे

वाट *चित्तसं.* रस्तो [सं.वर्त्मा]

वाट *मदमो.* व्यर्थ, हलकुं, [हानि, दोष] [हिं.बट्टा; दे.वट्ट]

वाट उठाडी *अखाका.* व्यर्थ बनावी, [वणसाड्युं]

वाट ऊठी *चित्तसं.* निरर्थक गयुं, एळे गयुं

वाटकढापणउं *उपबा.* भोमियापणुं

वाट नाखी जवुं *प्रेमाका.* रस्तो छोडी दईने जता रहेवुं

वाट पडवी *अखाछ.* लूंटावुं

वाटपाड जुओ वाटपाल

वाट पाडवी *अखाका. आरारा. चित्तसं. नरका.* लूंटी लेवुं, खातर पाडवी

वाटपाडा *अखाका.* लूंटारा

वाटपाडी *प्रेमाका.* मार्गमां लूंटी लेनार

वाटपाल** [वाटपाड**] *नरप(द).* *मोहमां फसावनार, [लूंटारा, डाकु]

वाट मुकाववी *प्रेमाका.* पराजित करवा, पाछा हठाववा

वाटल, वाटलां *नेमिछं. लावल. विमप्र.* वाटका [दे.वट्टय+ल; सं.वर्त, वर्तु]

वाटली *उक्तिर. *नेमिछं. *लावल.* वाटकी [दे.वट्ट, वट्टय; सं.वर्त, वर्तु] [रा.]

वाट वहे छे घणी **प्रेमाका.* [राह जुए छे]

वाटवालणूं *उक्तिर.* [*वोळावियापणुं] (सं. वर्त्मपालन); वटवालनुं

वाटि *उक्तिर.* (दीवानी) वाट (सं.वर्तिः)

वाटेवाहु *उपबा.* वटेमार्गु (सं.वर्त्मवाहक)

वाटो **लावल.* [कोई खाद्य के पेय पदार्थ, *कंसार]

वाड *तेरका. नेमिछं. षडाबा.* वाडो (सं.वाट, पाट); *अखाका.* अंतराय, [आडश]; हद, [मर्यादा]

वाडव *अखाका. प्रेमाका. हरिख्या.* ब्राह्मण (सं.)

वाडि *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. षडाबा.* वाड (सं.वृत्ति, वाटि)

वाडिय (*रथवाडिय) [रयवाडिय]* *गुर्जरा.* [सवारीमां फरवुं ते]; जुओ रवाडी

वाढ्या *मोसाच.* ?, [*कपाता, *पराजित थता, *पाछा पडता] [सं.वध्]

वाण *नरका.* वाणी

वाण *प्रद्युचु.* काथी, दोरडुं

वाणउत्र *अंबरा. षडाबा.* वाणोतर, गुमास्ता (सं.वाणिजपुत्र)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाणवइ [बाणवइ] **षडाबा.* [बाणुं] [सं. द्यानवति]

वाणही *अभिऊ. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. लावल.* वाणी, मोजडी (सं. उपानह); जुओ वांणही

वाणारसी *उक्तिर.* वाराणसी, [बनारस]

वाणारिस, वाणारीस *ऐतिका.* वाचक, वाचनाचार्य, [जैन साधुओनी एक पदवी]

वाणां **नेमिछं.* [*प्याला] [सं.पान]

वाणि *उक्तिर.* [*वणवानी क्रिया] (सं. वाणिः)

वाणिक *नलाख्या.* वाणियो (सं.वाणिजक)

वाणी *आरारा.* बांधी, रची ? (रा.बावणौ, वा'णौ)

वाणीखाणी जुओ खाणी

वाणुत्र *अंबरा. विमप्र.* वाणोतर, [गुमास्ता] [सं.वाणिजपुत्र]

वाणोतर *नरका. प्रेमाका.* गुमास्तो (सं. वाणिजपुत्र)

वाण्यो *पंचवा.* वाणियो, वेपारी (सं. वाणिजक)

वात *कामा(त्रि). गुर्जरा. षडाबा.* खबर, समाचार (सं.वार्ता)

वातिकर *सिंहा(म).* प्रसंग, [आपत्तिनो प्रसंग] (सं.व्यतिकर)

वातां *अभिऊ. नरका.* वगाडतां, बजावतां (सं.वादयत् परथी)

वाद *प्रेमाका.* झघडो, [युद्ध] [सं.]

वादलउ *उक्तिर.* वादळ [दे.वद्दल]

वादाई *नरका.* वायदो [आपवो ते], [मुदत पाडवी ते] [अ.वादः]

वादी *ऐतिका. प्रेमाका.* वाद करनार [सं.]; *आरारा.* मंत्रतंत्रना उपाय करनार; **अखाका.* [कीमियागर, शास्त्रज्ञ]

वादीसर *प्राचीफा.* वाद करनाराओमां मुख्य (सं.वादीश्वर)

वाधइ *अखाका. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. षडाबा.* वधे, वृद्धि पामे (सं.वर्धते)

वाधरी *प्रेमाका.* चामडानी दोरी के पट्टी [लगाम माटे] [सं.वर्ध्र]

वाध्र *उपबा. कादं(शा).* चामडानी पट्टी, दोरी (सं.वर्ध्र)

वान *जिनरा. *विमप्र.* मान, इज्जत [रा.]; जुओ वांन

वान **प्रेमाका.* [गौरव, आदर, खातर-बरदास्त]; [वर्ण, आकृति, बांधो]

वान (वानउ) **ऐतिरा.* [मान, इज्जत] [रा.; सं.वर्ण]; जुओ वानउ

वान, वानो *अखाका.* वर्ण, रंग, शोभा

वानउ **लावल.* [मान, प्रतिष्ठा] [रा.]; जुओ वान, वांनउ

वान वाधइ *आरारा.* जश वधे [रा.]

वानां *अभिऊ.* वस्तु, [वानगी]; प्रयत्न, [कार्य] (सं.वर्णक); *प्रेमाका.* विवेक, [खातरबरदास्त]

वानु *नेमिछं.* प्रयत्न, [चाल, चेष्टा]; [प्रतिष्ठा]

वानुं *प्रेमाका.* वस्तु, [बाबत]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वानी *अखाछ.* प्रकार; *लावल.* वानगी [सं. वर्णिका]

वानो जुओ वान

वापरइ *गुर्जरा.* *उपभोग करे; [फेलाय, प्रचलित रहे]; *षडाबा.* योजे, योजाय (सं.व्यापारयति)

वाम *अखाका. उक्तिर.* वांभ, पहोळा करेला बे हाथ वच्चेनुं अंतर (सं.व्याम)

वाम *आरारा. चतुचा.* प्रतिकूळ, विरुद्ध, भिन्न, वांकुं, अवळुं (सं.); *नेमिछं. लावल.* डाबुं; *प्रेमाका.* वामा, स्त्री

वाम (वाम अंगे) *चित्तसं.* [डाबे अंगे], खोटे मार्गे

वामइ *अखाका. उपबा. कादं(शा). चतुचा. नरका. नलाख्या. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* दूर करे, टाळे, काढी नाखे, पार करे (सं.वामयति)

वामउ *वीसरा.* डाबी बाजु (सं.वाम)

वामज्ञानी *चित्तसं.* जेने डाबे अंगे ज्ञान आवे छे तेवो, ऊलटुं, प्रतिकूळ, अधम ज्ञान धरावनार [सं.]

वामणडी *लावल.* नीची, ठींगणी (सं.वामन)

वामा *अखाका. कादं(शा). कामा(त्रि).* स्त्री, सुंदर स्त्री (सं.)

वामां-टामां *प्रेमाका.* गल्लांतल्लां, [अनिश्चय के आळसमां काम टाळवुं ते]

वाय *अखाका. तेरका.* वायु, वा (सं.वात)

वाय *देवरा.* वाणी, [वचन] [रा.; सं.वाच]

वाय *अखाछ.* वगाडे, [बजावे] [सं.वाद्]

वायइ *उक्तिर. तेरका.* (पवन) वाय, वहे (सं.वा-)

वायइ *नरका-२. षडाबा.* वगाडे, [बजावे] (सं.वादयति); *नरका-२.* वागे, [स्वर करे] [सं.वादति]

वायक *नरका. प्रेमाका. शीलक.* वाक्य, वचन

***वाय जाय ("धम्युं धूप्युं वाय जाय) [धम्युंधूप्युं वाये जाय]** *अखाका.* [करेलो श्रम] फोगट जाय; जुओ धम्युंधूप्युं वाये जाय

वायण *विमप्र.* वायणुं, स्वस्तिवाचन, [आशीर्वादात्मक उद्गारो] [सं.उपायन]

वायम *आरारा(व).* कोईक फळमेवो

वायस *अभिऊ. कामा(त्रि). नरका-२. प्रेमाका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कागडो (सं.)

वायस *कस्तुवा.* *वायु, [*कागडो]

वायसात्र *हरिख्या.* रांधेली रसोईमांथी कागडाने माटे जुदो काढेलो भाग (सं.)

वायंभ *तेरका.* ?, [स्थापत्यनुं कोई अंग]

वायिवा *उक्तिर.* वावा, पवन फूंकवा, पवन नाखवा [सं.वा-]

वाये **अखाका.* [वियाय, जन्म आपे]; जुओ व्या-

वाये वटे (धम्युंधूप्युं वाये वटे) *अखाका.* [करेलो श्रम] फोगट जाय; धम्युंधूप्युं वाये वटे

वायो *अखाका.* वाह्यो, छेतरायो, [जितायो]

वार *अखाछ. आरारा. कामा(शा). प्रेमाका. वेताप.* वारि, पाणी

वारइ *अंबरा.* समयमां, वारामां [सं.वार]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वारकी **प्रेमाका.* [प्रतीकार करनार दुश्मन, द्रोही] [सं.]

वारकुं *नरका.* वार, समये, फेरा; *प्रेमाका.* समयनुं, वखतनुं, [वेळाए]

वारगहे *हम्मीप्र.* एक प्रकारनो तंबु; जुओ बारगइ

वारण *गुर्जरा.* हाथी (सं.)

वारणां *अखाका. दशस्कं(२). नरका.* ओवारणां [सं.अपवारण]

वारणे कीजे (सोनानो मेरु कीजे वारणे) *प्रेमाका.* *ओवारणां लईए, [ओवारी नाखवा माटे सोनानो मेरु करीए]

वारणे जवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ओवारणां लेवां; *नरका.* [वारी जवुं], कुरबान थवुं

वार-योषा *कादं(शा).* वारांगना, गणिका (सं.)

वारवधू *गुर्जरा.* वेश्या (सं.)

वारही (वारही नाखे) **नरप.* [*वारी जाय, *ओवारी नाखे, *न्यौछावर करी दे]

वाराइति, वाराति, वारायत, वारायति *विक्ररा. सिंहा(शा).* [गीतनृत्यादिमां कुशळ] दासी, [गणिका]

वारासोरी *नरका.* वाराफरती

वारांमति (दुवारांमति) *देवरा.* द्वारिका [सं. द्वारामती]

वारि *आरारा.* वारे, दिवसे

वारिका *कादं(ध्रु).* आड, [सीमा दर्शावती]

वारिज *अखाका.* कमळ [सं.]

वारिजा *प्रेमाका.* वारि – समुद्रमांथी नीकळेली, लक्ष्मी [सं.]

वारिलग्ग *कृष्णबा.* वाराफरती

वारिवूं *उक्तिर.* वारवुं, रोकवुं

वारिहारि *ऋषिरा.* समय बतावनारुं सछिद्र घटिकायंत्र

वारीजिती *जिनरा.* [वारवामां आवी हती], मनाई करायेली

वारी वरे *नरका.* अटकावी अटके

वारु *चतुचा. मोसाच.* वार्युं, ना कही

वारु, वारू *अखाका. नलाख्या. प्रेमाका. लावल. विक्ररा. हरिख्या.* ठीक, योग्य, सारुं, सुंदर, उत्तम; सारी रीते (सं. वारुक)

वारुणी *प्रेमाका.* मद्य, दारू [सं.]

वारुं *शृंगामं.* सारुं, उत्तम (सं.वारुक)

वारू *उपबा. जिनरा. नेमिछं. प्रेमप. मदमो. विमप्र.* सारुं, सुंदर, उत्तम; सारी रीते [सं.वारुक]; जुओ वारू

वारूआ *ऐतिरा.* उत्तम

वारूगा (वारू गारूडीकला) **नलरा.* [गारुडीनी सुंदर कला]

वारू परिं *ऐतिरा.* सारी पेठे

वारूं *कामा(शा).* उत्तम [सं.वारुक]

वारोध *चतुचा.* अवरोध, विरोध, वांधो

वारोवारि *ऋषिरा. नलाख्या.* वारंवार

वार्युं करे *अखाका.* [ना पाडवामां आवी होय ते माने], रोक्युं रोकाय

वार्योस *ललिरा.* वारीश, अटकावीश

वाल *नरप(द).* वहाल [सं.वल्लभ परथी

वाल, वालि, (वंदरवाल, वंदरवालि)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसंवि(ब्रा). [द्वार पर लटकावाती सत्कारार्थ मंगलसूचक] माळा; जुओ वंदरवाल

वालउ *आरारा(व). *ऋषिरा. नेमिछं. ०शृंगामं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सुगंधी वाळो, एनां फूल (सं.वालक)

वालउ *षडाबा.* वाळो, तंतु जेवुं एक जंतु (सं.वालक)

वालण *आरारा.* पाछुं वाळवुं ते; *नेमिछं.* वाळवुं ते, [मरडवुं ते] (सं.वालय्)

वाळणी *प्रेमाका.* पाछां वाळवानी क्रिया, [रोकवुं ते, प्रतीकार]

वालर काकडी *उक्तिर.* काकडीनो एक प्रकार (सं.वल्लरकर्कटी)

वालहउ *वीसरा.* वहालो (सं.वल्लभ-)

वालहली *उक्तिर.* वालनी सींग (सं.वल्ल-फलिका)

वालहि, वालही *आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. विराप.* वहाली

वालंभ *आरारा. गुर्जरा. जिनरा. प्राचीसं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वहालम, प्रियतम (सं.वल्लभ)

वाला *लावल.* सुगंधी वाळो [सं.वालक]

***वालाकुली (वालाकूची)** *विमप्र.* वाळा-कूंची, [साफसूफी करवा माटेनी पींछी]

वालामोई **नरका.* [जेनां वहालां मरी गयां होय ते, अभागणी]

वालि जुओ वाल

वालिभ *नलरा.* एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

वालिभ *प्राचीफा.* प्रियतम, वहालम (सं. वल्लभ)

वालिय *गुर्जरा.* वाळी, [मस्तके पहेरवानी कडी] (सं.वालिका)

वालिंभ *नलरा. नेमिछं.* प्रियतम (सं.वल्लभ)

वालिंम *आनंस्त.* प्रीतम

वाळी वाळी *अखाका. नरका. प्रेमाका.* वळीवळी, फरीफरी

वालुहो *आरारा.* वहालो

वालू *आरारा.* वाळु, सांजनुं भोजन [सं. विकाल-]

वाल्हउ *उपबा.* वहालो (सं.वल्लभ)

वाल्हेसर *आरारा.* खूब वहाला; जुओ बाल्हेसर

वावड़ो *नरका.* वायु, पवन

वावण *जिनरा.* वाववुं ते, [उगाडवुं ते] [सं. वापना]

वावरइ *उपबा. प्रेमाका.* वापरे, उपयोगमां ले; *आरारा. ऐतिका. जिनरा.* वापरे, खर्चे, व्यय करे; *आरारा. उपबा. प्राचीफा.* वापरे, [खावाना उपयोगमां ले], खाय (सं.व्यापारयति)

वावि *उक्तिर. गुर्जरा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वाव (सं.वापी)

वाविय *ऐतिका.* वापी, वाव

वावुं *प्रेमाका.* वागवुं ते, [बजवुं ते]

वावुं *ऐतिका.* व्यय करुं, [वापरुं]

वावेत्र जुओ वव्येत्र

वाशी *नरका.* बोली [सं.वाश्]

वाशे *प्रेमप.* वगाडशे

वाशे (वाहाशे) **प्रेमप.* [*छेतरशे, *वंचना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करशे]

वास *जिनरा. नेमिछं.* वासक्षेप, जैन साधुओ वंदवा आवनारना मस्तके सुगंधी अर्पे छे ते [सं.]

वास *आरारा.* वस्त्र (रा.; सं.वासक)

वास जुओ जसवास

वासइ *उक्तिर. ऐतिरा. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* बोले, अवाज करे (सं. वाश्); *लावल.* कहे

वासइ *आरारा. नरका.* वास करे, वसे; *प्रेमाका.* वसावे, [-मां वास करे]; *आनंस्त.* वसावे, राखे, [धारण करे]

वासइ *अभिऊ. आनंस्त. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्रेमाका. लावल.* गंधयुक्त – सुवासित – सुगंधित करे (सं.वासयति); *प्रेमाका.* सुवासित थाय

वासइ *उपबा.* स्थिर थाय, दृढताथी जामे (सं.वस् परथी) [रा.]

वासउ *उक्तिर.* वासो, निवासस्थान, पडाव (सं.वासकः); जुओ वासा, वासु

वासक *प्राचीका.* वासुकि, नाग

वासग, वासिक, वासिग *आरारा. नेमिछं. लावल.* वासुकि, सर्प, नाग

वासण *चतुचा.* वस्त्र [रा.] (सं.वासन)

वासणि **गुर्जरा.* [*एक प्रकारनुं आसन – बेसवानी रीत] [*दे.वस्सासण]

वासणीया *अभिऊ.* बोल्या (सं.वाश्)

वासना *दशस्कं(१). प्रेमाका.* वास, सुगंध

वासनिकेतन *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वासगृह, निवासभवन (सं.)

वासपूरण *अखाका.* [वास करी रहेला], सर्वावास, सर्वव्यापी

वासर *गुर्जरा. तेरका.* दिवस (सं.)

वासव *चित्तसं.* इन्द्र [सं.]

वासंग *नरका.* वासुकि(नाग), [ए नामनो नाग]

वासंति *चारफा.* टहुकता हता त्यारे (सं. वाश्)

वासंती *तेरका.* एक वनस्पति, [जूई, माधवी वगेरे आ नामथी ओळखाय छे] [सं.]

वासा *अभिऊ.* **कादं(शा).* वच्चेवच्चे आवतां विश्रांतिस्थान, [पडाव, मजल]; जुओ वासउ

वासाज *पंचवा.* वाजिंत्र (सं.वाद्यसाज)

वासि *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कागवास, कागडाने अपातो पिंड (सं.वायसिका)

वासिइं, वासीइं *सिंहा(शा).* वासमां [*वसतीमां, *गाममां]; *लावल.* वासमां, निवासमां

वासिक जुओ वासग, वेण-वासिक

वासिग *अंबरा. लावल.* वासुकि, सर्प, नाग; जुओ वासग

वासित *हारेख्या.* वासवाळुं, खुशबोदार (सं.)

वासीइं जुओ वासिइं

वासीघउ *आरारा.* वासीदुं

वासु *विमप्र.* वास, वासो, [मुकाम, रहेवुं ते]; जुओ वासउ

वासुग *आरारा.* वासुकि, नाग

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासे ०*नरका*-२. दिवसमां (सं.वासर)

वास्तव्य *षडाबा.* रहेवासी (सं.)

वास्तुविद्या *कादं(शा).* स्थापत्यविद्या (सं.)

वास्यां जुओ पास्यां

वाह *नलरा.* सवारी (सं.)

वाह *नलरा.* प्रवाह (सं.)

वाहइ *उषाह. प्रबोप्र.* वहन करे, वहे, चाले; *गुर्जरा.* वहेवडावे; *नेमिछं. लावल.* वहे, धारण करे; *अभिऊ. ऋषिरा. विमप्र. लादल.* उपाडे, चलावे, ताणे, खेंचे; *गुर्जरा. नेमिछं. *विराप.* लई जाय, [चलावे], दोडावे (सं.वाहयति)

वाहइ *अखाका. उषाह. *ऋषिरा. कादं(शा). *गुर्जरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलाख्या. मदमो. विक्ररा. वेताप. सिंह्र(शा).* छेतरे; *नरका. प्रेमाका. लावल.* छेतरे, [फोसलावे] (सं.वाहयति)

वाहइ *कामा(शा). नरका. प्रेमाका. मदमो.* वगाडे, [बजावे]

वाहण *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वाहन

वाहर *आरारा.* बोलाववुं ते (सं.व्याह)

वाहर *अंबरा. उक्तिर. आरारा. जिनरा.* वहार, मदद, सहाय; *षडाबा.* सहायक दळ; जुओ वाहार, बाहर

वाहरइ *लावल.* वाळे छे, साफ करे छे (हिं. बुहारन)

वाहरू *उक्तिर.* सहायक, रक्षक (सं. व्याहारक)

वाहलउ *तेरका. षडाबा.* वहेळो (दे.; सं. वाह+ल?)

वाहलउं *नलरा.* वहालुं, प्रिय (सं.वल्लभ)

वाहवइ *षडाबा.* बूम पाडे, बोलावे

वाहाडी *उषाह.* घीनी वाढी, [नाळचावाळुं पात्र]

वाहाणकुमार, वाहाणपुत्र *कामा(त्रि).* वाणियो

वाहार, वाहर *नलाख्या. पंचवा.* वहार, मदद, सहाय (सं.व्याह-)

वाहाला *नलाख्या.* वहाला, प्रिय (सं. वल्लभकः)

वाहावी *चतुचा.* वगाडवी

वाहाशे *अखाका.* *छेतरशे, [*वळगी रहेशे]; जुओ वाशे

वाहांग *चंद्रवा.* ?

***वाहि [*चाहि]** *अभिऊ.* जुए

वाहिउ *अखाका. नरका. प्रेमाका.* छेतरायो; **उपबा. ऋषिरा.* तणायो, खेंचायो [सं. वाहित]

वाहिणि *विमप्र. षडाबा.* वाहिनी, रथ, वेलडुं

वाहिय गिउ *हरिवि.* छेतरी गयो

वाहु *गुर्जरा.* घोडो (सं.वाह); जुओ बाह

वाह्या वीना *चतुचा.* [धर्या विना], मूक्या वगर

वाह्यो जाशे *चतुचा.* छेतराई जशे

वांक *आरारा.* खोट, कसर (रा.)

वांकडउ *लावल.* वांको, [बंकडो, वीर, गर्वीलो] (सं.वक्र); *चित्तसं.* वांकुं, वांधो, मुश्केली

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वांकडी **लावल.* [वांकी, आडाई करती]

वांकुं *कामा(त्रि).* अटपटुं, [दुर्गम]; *चित्तसं.* मुश्केली, मुश्केलीभर्युं

वांकुडी *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* वांकी (सं.वक्र)

वांके लाकडे वेह *अखाका.* [वांका लाकडा-मां वींध], मुश्केलीथी भरेलुं [काम]

वांगड **ऐतिरा.* [वीर, बहादुर] [रा.]; जुओ बांगड

वांचवुं *दशस्कं(१).* बचवुं [सं.वंच्यते]

वांचवुं *नरका.* वांछवुं, इच्छवुं

वांछणहार *उपबा.* वांछनार, इच्छनार

वांछा *उपबा.* इच्छा (सं.)

वांछिवुं *उक्तिर.* वांछवुं, इच्छवुं

वांझ *उक्तिर. प्रेमप. वीसरा.* वंध्या, वांझणी

वांटइ *उक्तिर.* भाग पाडे, वहेंचे (सं. वण्टयति) [रा.; हिं.बांटना]

वांण *देवरा.* वाणी

वांणही *कृष्णबा. प्राचीफा.* मोजडी (सं. उपानह्); जुओ वाणही

वांणोतर *मदमो.* चाकर (सं.वाणिज+पुत्र)

वांतर, वांतरु *गुर्जरा. विराप.* व्यन्तर, [भूत, भूत जेवो]; जुओ वंतर

वांदइ *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. देवरा. प्रेमाका. वाग्भबा. षडाबा.* वंदे, वंदन करे

वांदणउं *उक्तिर. उपबा. षडाबा.* वंदन करवुं ते, पूज्यभाव दर्शाववो ते (सं.वंदनक)

वांदिवुं *उक्तिर.* वंदवुं

वांदी (महूरत वांदी) *प्रेमाका.* वंदी, [मुहूर्त] वधावी

वांन **देवरा.* [उत्साह, उमंग] [रा.]; जुओ वान

वांनउ **ऐतिरा.* [मान, प्रतिष्ठा] [रा.]; जुओ वानउ

वांनी *वेताप.* राख

वांम, वांमा *कामा(शा). गुर्जरा. लावल.* डाबुं (सं.वाम)

वांस *नरप(द).* वांसळी [सं.वंश]

वांसलउ *उपबा. प्रेमाका.* लाकडां छोलवानुं एक आडा पानानुं ओजार [सं.वारत]

वांसळी *नरका.* रूपिया भरवानी लांबी सांकडी कोथळी

वांसोली *उक्तिर.* वांसलो (सं.दासी)

वि *गुर्जरा. तेरका.* य, पण (प्रा.; सं.अपि)

वि *कादं(शा).* वय, उंमर; जुओ लघु-वि

विअक्खण *गुर्जरा.* विचक्षण, चतुर

विआरइ *उक्तिर.* छेतरे (सं.विप्रतारयति)

विइ *कादं(शा).* वय, उंमर

विउड *गुर्जरा. विराप.* विकट, भयंकर

विउल *तेरका. शृंगामं.* विपुल

विउलसिरी *चारफा. प्रद्युचु. वसंफा(ल). *वसंवि(ब्रा).* बकुल वृक्ष, बोरसली (सं. बकुलश्री)

विओग *तेरका.* वियोग

विकथा *उपबा.* [स्त्री आदिनी] गंदी वातो, [शास्त्रविरुद्ध वातो] (सं.)

विकरवुं **अखाछ.* [विकार पामवो] [सं. विकृ-]

विकराल *आरारा.* विक्षुब्ध, व्याकुल (रा.); विक्षुब्ध, क्रोधित (रा.); *गुर्जरा.* भयंकर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सं.]

विकर्म, विकर्म्म *लावल. हरिख्या.* खोटुं काम, खराब कर्म (सं.)

विकल, विकळ *आनंस्त.* रहित; *गुर्जरा.* व्याकुळ, दुःखी; *वीसरा.* अस्वस्थ (सं.)

विकलेंद्रिय *आनंस्त.* [ओछी इन्द्रियवाळा], एकेन्द्रियथी चतुरिन्द्रिय सुधीना जीवो [सं.]

विकासिइं *उपबा.* उघाडे (सं.विकासति)

विकुर्वइ, विकुव्वइ *उक्तिर. षडावा.* दिव्य सामर्थ्यथी उत्पन्न करे (सं.विकुर्वति) [जै.]; जुओ वेउव्विय, वेखर्युं

विक्ख *शृंगामं.* ?

विक्खंभ *तेरका.* आडसर, [मोभ] (सं. विष्कंभ)

विक्ति (विक्ति करी) *प्रेमाका.* [जगा करी], खास गोठवण [करी]

विक्रम *अखाछ.* विकर्म, [हलकुं काम]

विख *आरारा. दशस्कं(१).* विष

विख, वेख *प्राचीका.* पहेरवेश (सं.वेश)

विखइ *अखाछ. आरारा. कादं(शा). दशस्कं(१). प्रेमाका.* विशे, अंदर, [-मां] (सं.विषये)

विखम *रूपच.* दारुण (सं.विषम)

विखवाद *आरारा.* दुःख, अफसोस (रा.); जुओ विषवाद

विखंड (खंडविखंड) *गुर्जरा.* खंडित, टुकडे-टुकडा (सं.)

विखंडिउ *गुर्जरा.* खंडित कर्युं, तोड्युं (सं.विखंडित)

विखाणइ *दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलाख्या. प्रेमाका. रूस्तस.* वखाणे (सं. व्याख्यान परथी)

विखास **गुर्जरा. *विराप. शृंगामं.* ?, [*विरूप – अवळी दशा, *मूंझवण, *विचार] [*दे.विक्खास]; जुओ वेखास

विखांण *रूस्तस.* वखाण [सं.व्याख्यान]

विखिइ *नलाख्या.* विशे (सं.विषये)

विखे *अखाछ.* विषय

विखोडइ *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* वखोडे, निंदा करे, हलकुं पाडे (प्रा.विक्खोड)

विख्यात *आरारा.* **कादं(ध्रु).* प्रगट, प्रसिद्ध रूपे; जाहेर, जाणीतुं; विख्याति, प्रसिद्धि

विगइ **उपबा. *जिनरा.* [विकारजनक घी वगेरे खाद्य पदार्थ] (सं.विकृति); जुओ वेगै

विगत *अखाका.* व्यक्त, [प्रकाशित]; **गुर्जरा.* [भिन्नता]

विगत, विगति *आरारा.* वीगत, स्पष्टता

विगति *कादं(शा).* वीगते, जुदुंजुदुं, [स्पष्ट] (सं.व्यक्ति); **नरका.* [विस्तार, विवरण, समजण]; *नेमिछं.* वीगत, [विस्तार]

विगती **वीसरा.* [स्पष्ट]

विगतुं *अखेगी.* व्यक्त, [स्पष्ट, विस्तृत]

विगत्य *अखाका.* भेद, [जुदाजुदापणुं]

विगन्यान *आरारा.* विज्ञान, आवडत

विगर *आनंस्त. देवरा.* वगर, विना

विगुआणा *ऐतिका.* वगोवाया; जुओ वगूए

विगुता **शीलक.* [दुःखी कर्या] [सं.विगुप्त]; जुओ वगुता, वीगुता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विगुत्तउ *प्राचीसं.* व्याकुळ थयो

विगुवाये *प्रेमाका.* दुःखी थाय

विगूचइ *प्रबुचु.* व्याकुळ थाय, [दुःखी थाय] (प्रा.विगुत्त) [सं.विगुप्त]; जुओ वगुचे, विगूंचु

विगूत्तउ **अखाछ. *गुर्जरा. नलाख्या. प्राचीफा. *विराप.* व्याकुल थयो, संकटमां आव्यो, [दुःखी थयो] (सं.विगुप्त)

विगूतु *प्रबोप्र.* *व्यभिचार कर्यो, [*लपटायो, *वगोवायो]; जुओ वगूत्यो

विगूयइ *उक्तिर.* वगोवाय, दुःखी थाय (सं. विगुप्यति)

विगूंचु *नलाख्या.* दुःख भोगवो (सं.विगुप्त)

विगोइ *अंगवि. अंबरा. *उपबा. *गुर्जरा. नरका. प्रबुचु. विराप. शृंगामं.* पीडा करे, व्याकुळ करे, दुःखी करे (सं. विगोपयति)

विगोई *प्राचीसं.* वगोवी

विगोणउं **अंबरा.* [वीतक, पीडा]

विगोणहार *उपबा.* वगोवनार (सं.विगोपन)

विगोयां *प्रेमाका.* वगोवायां

विगोवइ *उक्तिर.* व्याकुल करे, तिरस्कृत करे (सं.विगोपयति); *चित्तसं. लावल.* दुःखी करे, व्याकुल करे (दे.विग्गोव)

विग्धत्त (विग्ध तु) *ऐतिका.* विघ्नोने तो

विग्रे *प्रेमाका. हरिख्या.* व्यग्र, व्याकुळ

विघटइ *आरारा.* संबंध तोडे; *ऋषिरा.* नाश करे; *ऐतिरा.* नष्ट थाय; *जिनरा. षडाबा.* विघटित थाय, खोटुं पडे (सं.विघटते)

विचइ *आनंस्त. ऋषिरा. नरका.* वच्चे [दे.विच्च]

विचमां *आनंस्त.* वचमां

विचरेवउ *ऐतिका.* [विचरवुं], विहार करवो, चालवुं

विचारिवुं *उक्तिर.* विचारवुं

विचालउं *उक्तिर. उपबा.* वच्चेनुं (दे.विच्च-परथी)

विचालि, विचाली *गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* वच्चे, वचाळे (सं.वर्त्म; दे.विच्च); *विक्ररा.* वचगाळे, वच्चे थईने

विचालिलउ *वीसरा.* वचलो (प्रा.विच्च)

विचाली जुओ विचालि

विचि, विचिइ, विचिइं *उक्तिर. उपबा. उषाह. कादं(शा). षडाबा.* वच्चे (सं.वर्त्म; दे. विच्च)

विचित्र *चित्तसं.* जातजातना, जुदाजुदा [सं.]

विचिलउं *उपबा. उषाह. विमप्र.* वचलुं

विचिहिं *ऐतिरा.* वच्चे

विच्च- *प्राचीसं.* वेचवुं [सं.व्यय्]

विच्छड्ड *प्राचीसं.* आडम्बर, [ठाठमाठ] [दे.]

विच्छाय *आरारा.* निस्तेज, झांखुं (सं.)

विच्छेदे **उषाह.* [जलदी]; जुओ विछेदि

विच्छोह (वागविच्छोह) *गुर्जरा.* [वाणीनो] अभाव, भंग, [अबोला]; जुओ विच्छोह

विछर्युं *अखेगी.* विमुक्त थयुं, [अळगुं थयुं] (हिं.बिछुडा, बिछुरा)

विछाइउ *विराप.* तेजहीन, [फीक्कुं] (सं. विच्छाय)

विछाइयो *आरारा.* विस्तरीने, छवाईने रह्यो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विछाई जुओ हांच विछाई

विछाहइ *नेमिछं.* छाय, ढांके; *विमप्र.* बिछावे, [पाथरे]

विछाहिउ *गुर्जरा.* तेजहीन, झांखुं (सं. विच्छाय)

विछिति *जिनरा.* शोभा

विछुवा *दशस्कं(१).* पगनुं एक घरेणुं

विछेदि, विछेदिं *नेमिछं. *विक्ररा.* सत्वर, जलदी; जुओ वछेदि, विच्छेदे

विछोयउं *आरारा. दशस्कं(२). देवरा.* अलग कर्युं, वियोग कराव्यो (दे.विच्छोय)

विछोह *आरारा. कर्पूमं. प्राचीसं.* वियोग, विरह (दे.विच्छोह)

विछोहउ *आरारा.* वियुक्त, वियोगी, छोडनार (दे.विच्छोह); *नरका. नलाख्या.* वियोगी, विनानी; *विमप्र.* विनानुं, छूटुं करेलुं, [वियोग कराव्यो]

विछोहि *शृंगामं.* वियोग, जुदाई, [भंग]

विछोहिउं **अभिऊ. प्रद्युचु. लावल.* वछोड्युं, विखूटुं कर्युं, विरहित कर्युं (सं.विक्षोभित) [दे.विच्छोह]

विछोहीउ *गुर्जरा.* छूटुं पडेलुं, वियोगी

विजयखंभ *तेरका.* विजयस्तंभ, विजयसूचक खांभो, कीर्तिस्तंभ (सं.विजय+स्कंभ)

विजाणइ *आरारा.* न जाणे, भूली जाय; जुओ विनाण

विजावलीय *ऐतिका.* विद्याओनो समूह [सं. विद्यावलि]

विजे *अखाका. अखाछा. चित्तसं.* विजय

विज्जा *ऐतिका.* विद्या

विज्जाहर *गुर्जरा. तेरका.* विद्याधर, एक अर्धदेव जाति

विज्जाहरी *उक्तिर.* गढ पर योद्धाओने रक्षण आपती कोटडी (*सं.विजयगृही)

विज्जु *तेरका.* विद्युत्, वीज

विज्ञान *आरारा.* आवडत [सं.]

विट *ऐतिका. कादं(शा).* भांड, व्यभिचारी पुरुष, [लंपट] (सं.)

विटल *वेताप.* वटलेलुं [सं.विट+ल]

विटलता *अखाछ.* भ्रष्टता

विटंड जुओ वेदविटंड

विटंब *आरारा.* विटंबणा, दुःख [सं.विडंब]

विटंबन *आरारा.* विडंबन, छेतरामणी, तिरस्कार

विटंबी *प्रद्युचु.* हेरान करी, [दुःख दीधुं] (सं.विडंब्)

विट्टालइ *उक्तिर.* वटाळे, वटलावे, भ्रष्ट करे [दे.]

विट्ठि *प्राचीसं.* वेठ, [सेवा] (सं.विष्टि)

विडलूण *उक्तिर.* एक प्रकारनुं मीठुं, काळुं मीठुं (सं.विडलवण)

विडंग *आरारा(व). तेरका.* एक वनस्पति, वावडिंग (सं.)

विडंबइ *कादं(शा).* शरमावे, उपहास करे; [-नी समान होय]; *गुर्जरा.* *छुपावे, [(वेश) बदलावे] (सं.विडम्बयति)

विडारइ *अखाका. गुर्जरा. दशस्कं(१). प्रेमाका. लावल. विराप.* विदारे, कापे, नाश करे [सं.विदारयति]

विडारी *नरका.* ईजा पामेली, [(नख वगेरेना) क्षत पामेली] [सं.विदारित]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विडारण **प्रेमाका.* [हणनार, विनाशक] [सं.विदारण]

विडु *अंबरा.* वडुं, मोटुं

विडूला *उषाह.* ?

विढइ *उक्तिर. गुर्जरा.* वढे, लडे; *षडाबा.* वढे, ठपको आपे, [लडे, झघडो करे] [दे.वड्ढ]

विढत्तउ *प्राचीसं.* प्राप्त कर्युं [दे.]

विढवइ *उक्तिर.* उपार्जन करे, पेदा करे [दे.]

विण *गुर्जरा. लावल. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* विना, सिवाय

विणओ *आनंस्त.* विनय, [भक्ति]

विण-कह्यो *देवरा.* वणकह्युं, कह्या वगर

विणग *विमप्र.* वणिक

विणज *आरारा. नलाख्या. शृंगामं.* वाणिज्य, वेपार

विणज- *वीसरा.* वेपार करे

विणजार, विणजारा *जिनरा. नलाख्या.* वणजारो, [पोठ लईने फरतो] वेपारी (सं.वाणिज्यकारः)

विणठइ *उपबा. उषाह. जिनरा. तेरका. प्रद्युचु. प्राचीसं.* नष्ट थाय, बगडे [सं. विनष्ट]

विणठउ *षडाबा.* नाश पाम्यो, [मृत्यु पाम्यो] (सं.विनष्ट)

विणय *गुर्जरा.* विनय

विणसइ *अभिऊ. उक्तिर. उपबा. जिनरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). शीलक. शृंगामं.* नष्ट थाय, वणसे (सं. विनश्यति)

विणसइ *वसंफा. वसंवि.* वनस्पति

विणसाडइ *आरारा. जिनरा.* वणसाडे, बगाडे, नष्ट करे (सं.विनश्)

विणा *उक्तिर.* विना

विणास *उपबा. आरारा. गुर्जरा. वीसरा.* विनाश

विणासइ *गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि. षडाबा.* नाश करे (सं.विनाशयति)

विणासगर *कृष्णच.* विनाशकारी [सं. विनाशकर]

विणासणहार *उपबा.* नाश करनार (सं. विनाशन+हार)

विणि *नलाख्या.* विना

विणी-तु *आरारा.* वेणीमांथी, चोटलामांथी

विणु *तेरका. वसंफा.* विना

विणोद *गुर्जरा.* विनोद, आनंद

वित *चित्तसं.* वित्त, संपत्ति

वितनु *चंद्रवा.* अंग वगरनो एवो अनंग, [कामदेव] [सं.]

वितपतिआलां **लावल.* [कलाकौशल-युक्त]; जुओ वतपतिआला, वितिपति

वितपन्न *प्राचीफा.* संपूर्ण ज्ञाता (सं.व्युत्पन्न)

वितरूप *आरारा.* वित – सत्त्व अने रूप

वितंड, वितंडा *अखाछ.* खोटो बकवाद करनार, पोताने पक्ष न होय ने मात्र सामा पक्षनुं खंडन कर्या करनार, [ज्ञानीनो एक प्रकार] [सं.]

वितिकर *ऋषिरा.* वृत्तांत, हकीकत (सं. व्यतिकर)

वितिपति *विमप्र.* व्युत्पत्ति, खिलावट,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[कलाकौशल, कलासौन्दर्य]; जुओ वितपतिआलां

वितीत, वितीता *आरारा.* व्यतीत

वितुं *उषाह.* कार्य, सेवा, [काम]; जुओ वतुं

वित्त *कादं(ध्रु).* खुल्लुं, [प्रसिद्ध] [सं.]

वित्ति *तेरका.* वृत्ति, [मनोवृत्ति, विचार-वलण]

वित्तिकरु *ऐतिका.* वृत्तिकर्ता, [विवरण करनार, भाष्य रचनार]

वित्तु *प्राचीफा.* गोळ, वर्तुलाकार (सं.वृत्त)

वित्थर *ऐतिका. गुर्जरा.* विस्तार

वित्रेक *अखेगी.* व्यतिरेक, [भिन्नता]; *प्रेमाका.* श्रेष्ठ; जुओ वत्रेक

वित्रोडीयां *शृंगामं.* तोड्यां, [भंग थयेलां] [सं.वित्रोटित]

विथळ *दशस्कं(२). प्रेमाका.* विखरायेली, अस्तव्यस्त

विथारउ *ऐतिरा.* विस्तारो

विद, विदि *प्राचीका.* वेदशास्त्र

विदा *आरारा.* विदाय

विदाध *शृंगामं.* बळतरा (सं.)

विदाणउ *उक्तिर.* चंदरवो (सं.वितानक)

विदान *आरारा.* विद्वान

विदारिउ *उक्तिर.* विदार्युं, नष्ट कर्युं

विदाह *गुर्जरा. विराप.* ऊंडी बळतरा, वेदना (सं.)

विदि जुओ विद

विदिस *उक्तिर.* उपदिशा, बे दिशा वच्चेनो खूणो (सं.विदिश्)

विदेह *आरारा.* महाविदेह क्षेत्रमां

विदेही *अखाका.* देह विनानी

विदोषी *प्रेमाका.* दोष वगरनो

विद्य *गुर्जरा.* विद्या

विद्यप्पह *आरारा.* विद्युत्प्रभा, [एक नाम]

विद्योत *प्रेमाका.* विद्युत्, वीजळी

विद्राव *कादं(शा).* दोडधाम, नासानास (सं.)

विद्रुम *ऐतिरा. नरका. रूपच.* परवाळुं, एक जातनुं [लाल रंगनुं] रत्न [सं.]

विद्रुमचोला जुओ द्रुमचोला

विध *हरिख्या.* रीत (सं.विधा)

विधओ, विधु, वीधु *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* विद्ध थयेलो, परवश बनेलो, [विदग्ध, रसियो]

विधविध्ये *अखाका.* विविध रीते

विधात *प्रेमाका.* विधाता, विधात्री, भाग्यनी देवी

विधि *दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* ब्रह्मा, स्रष्टा (सं.)

विधि *नलाख्या.* विधा, प्रकार

विधिना आंक *प्रेमाका.* [विधिए लखेलुं], भाग्यनुं निर्माण

विधि-सउं *षडाबा.* विधिपूर्वक

विधि सजी *आरारा.* गोठवण करी, तैयारी करी

विधु जुओ विधओ

विधुर *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* पीडित, [व्याकुळ] (सं.)

विधुरी *ऋषिरा.* आकुळव्याकुळ, [संतप्त]

विधे *अखाछ. नरका.* प्रकारे, रीते, रीतथी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधोगत, विधोगति, विधोगते *अभिऊ. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका.* विधि प्रमाणे (सं.विधि+गति); जुओ वीधोगत

विध्य *नलाख्या.* विधि, ब्रह्मा

विध्याता *अंबरा. नलाख्या.* विधाता, ब्रह्मा

विध्ये *अखाका.* रीते

विनडइ *ऐतिका. जिनरा.* विडंबना करे, नमावे, पराभव करे, [व्याकुळ करे]; *अंगवि. गुर्जरा. प्राचीसं. *सिंहा(म). षडाबा.* दुःख आपे, अकळावे, हेरान-परेशान करे (सं.विनट्यति)

विनइ *षडाबा.* विनयमां

विनता *अखाका. नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* वनिता, स्त्री

विनर्ड- * *प्राचीफा.* [कष्ट आपवुं] (सं.विनर्त्)

विनाण, विनांण *आरारा. कादं(ध्रु). गुर्जरा. विक्रच.* ज्ञान, आवडत, कौशल, विद्या (सं.विज्ञान); *आरारा. *कर्पूमं. *नेमिछं. *विक्ररा.* *ज्ञान, *विज्ञान, चातुर्य, [पटुता]; **आरारा.* रहस्य, भेद, [*कार्यकारिता]; *अभिऊ.* ज्ञान, समज, [पिछाण]; *ऐतिका.* विज्ञान, [ज्ञान, सद्‌बोध]; *ऐतिरा.* विज्ञान, [कला-कौशल्य]; *आरारा. शृंगामं.* युक्ति; **नलाख्या.* [सरतचूक, भूल, विस्मरण] (सं.वि+ज्ञान); जुओ विजाणइ, वीद्यांण

विनाणइ *प्राचीफा.* छेतरे, धूते (सं.विज्ञान); *शृंगामं.* *जाणे [युक्ति करे, पटावे]; *षडाबा.* जाणे, [आवडत बतावे]; जुओ वीनाणीने

विनाणगार *प्राचीफा.* युक्तिबाज, धूर्त (सं. विज्ञान+कार)

विनाणुं *प्राचीसं.* जाणकारी (सं.विज्ञानम्)

विनांण जुओ विनाण

विनु *प्राचीफा.* विनय

विनेउ *षडाबा.* शिष्य (सं.विनेय)

विनेजुत्त *दशस्कं(१).* विनययुक्त, सविनय

विन्नाण *नेमिछं.* समज, [युक्ति]; *गुर्जरा.* ज्ञान, [कौशल्य] [सं.विज्ञान]

विन्नाणी *ऐतिका.* विज्ञानी, [विशेष ज्ञानी]

विन्नांणी *ऋषिरा.* विशेष जाणकार (सं. विज्ञानी)

विन्निफल *तेरका.* एक वनस्पति

विन्यानी *उक्तिर.* ज्ञानी (सं.विज्ञानी)

विन्हें [बिन्हें] *ऐतिका.* बन्ने [सं.द्वि-]

विपर *अभिऊ.* ब्राह्मण (सं.विप्र)

विपरावियुं *उक्तिर.* वपरावबुं, उपयोगमां लेवडाववुं (सं.व्यापारयितव्यम्)

विपरीत *आरारा.* दूर चाली गई; *हरिख्या.* बदलायेलुं, कारमुं, [बनावटी, जूठुं]; वसमुं, [प्रतिकूळ] (सं.)

विपरीत भावना *चित्तसं.* आत्मा देहादिरूप छे अथवा जगत सत्य छे एम मानवुं ते, मिथ्या ज्ञान

विपाक *आरारा.* परिणाम, फळ (सं.)

विप्प *आरारा.* विप्र, ब्राह्मण

विप्पअ *शृंगामं.* विप्रिय, [अप्रिय, अणगमतुं]

विप्फुरइ *ऐतिका.* स्फुरे, प्रगट थाय; जुओ विस्फुरइ

विप्रणी *आरारा.* ब्राह्मणी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विप्रतारइ *आरारा. षडाबा.* छेतरे (सं. विप्रतारयति)

विप्रीत्य *चित्तसं.* विपरीत भावना; जुओ विपरीत भावना

विब्भमि *शृंगामं.* विभ्रमथी, [विलासथी]

विभचार *कादं(शा).* व्यभिचार

विभाग **कादं(शा).* [प्रकरण, प्रसंग] [सं.]

विभाडवुं *अंगवि. कृष्णबा.* फाडवुं, नाश करवो

विभाडिउं **विक्रच.* [तोड्युं]; *हरिवि.* विनष्ट कर्युं (सं.वि+स्फाट्) [दे.]

विभांति **हम्मीप्र.* [विविध रीते] [रा.; हिं.] [सं.वि+भक्ति]

विभिचारणी *दशस्कं(१).* व्यभिचारिणी

विभूति *आरारा.* साधनसंपत्ति (सं.); *नरका. वीसरा.* भभूती, राखोडी, राख

विभूसीय *ऐतिका.* विभूषित, [शोभीतुं]

विमन *प्राचीफा.* ऊलटी (सं.वमन)

विमन्नइ जुओ मन्नइ

विमर *कृष्णच.* विवर, खाडो

विमरसइ *षडाबा.* विचारे (सं.विमर्शति)

विमाण *आरारा. गुर्जरा.* विमान, [आकाश-यान]; *गुर्जरा.* उच्चलोक, [देवलोक]; महालय (सं.विमान)

विमासइ *आरारा. उक्तिर. उपबा. उषाह. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. रूपच. विक्रच. विराप. शीलक. षडाबा.* विचारे (सं.विमृशति)

विमासउ *उक्तिर.* विचारेलुं (सं.विमृष्टम्)

विमासण *गुर्जरा. शीलक.* विचारणा, विचारवुं ते [सं.विमर्शन]

विमासणीइं **उपबा.* [विचारणाथी, विचारी-ने] (सं.विमर्शन)

विमासरण *प्राचीका.* विमासण, [विचारणा] (सं.विमर्शन)

विमासिवुं *उक्तिर.* विचारवुं (सं.विमृश्)

विमांण *वीसरा.* विमान

विमांशी, विमांसी *नलाख्या.* विचारी (सं. विमृश्)

विम्मास- *तेरका.* विचारवुं (सं.विमृश्)

विम्हिउ *गुर्जरा.* आश्चर्य पाम्यो (सं.विस्मित)

विय *कादं(शा).* वय, उंमर

वियरी *कर्पूमं.* वैरी

वियारणि जुओ वरसवियारणि

वियारियउ *उक्तिर.* ठगायो (सं.विप्रतारितः)

वियाल *प्राचीसं.* सायंकाल (सं.विकाल)

विरउ *षष्टिप्र.* हलको, वरवो, [अनिष्ट] (सं. विरूप)

विरचइ *जिनरा.* विरत थाय, [अटके] [रा.]; *गुर्जरा.* आयोजे [सं.विरचयति]

विरज *प्रेमाका.* रज विनानां

विरतउ *उक्तिर. गुर्जरा.* विरक्त

विरतंत, विरतांत *आरारा. गुर्जरा. देवरा. प्राचीफा.* वृत्तांत, हकीकत

विरति *वाग्भबा.* यति, छंदमां आवतो विराम

विरती *तेरका.* विरक्त थई; **लावल.* [विरमी]

विरती *लावल.* वृत्ति

विरते *अखाका.* वृत्तिथी, [वरत्ये, होवाथी]

विरत्तउ *प्राचीफा.* विरक्त, पराङ्मुख

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरत्ती *आरारा.* विरक्त थई, एना वगरनी थई

विरध *प्राचीसं.* वृद्ध

विरमइ *अखाका. उपबा.* तजी दे, -थी मुक्त रहे [सं.विरमति]

विरह *तेरका.* एक वनस्पति [दे.विरहि]

विरहकरालीय *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* विरहथी त्रस्त (सं.विरह+करालित)

विरहणि *गुर्जरा.* विरहिणी

विरह-वलूंधी *नरका.* विरहमग्न; जुओ विळूंधी

विरहिणीसाथु *वसंवि.* विरहिणीओनो साथ, [समुदाय] [सं.विरहिणी+साथ]

विरंग, विरंगू *गुर्जरा. शृंगामं.* दुःखी, अप्रसन्न [सं.]

विरंचि *अखेगी. नरका.* ब्रह्मा [सं.]

विराडिउ **गुर्जरा. विराप.* उश्केरायो, [आवेशमां आव्यो]

विराधइ *उपबा.* भंग करे; *गुर्जरा.* अटकावे, अवरुद्ध करे; *आरारा. *उपबा. षडाबा.* -नो अपराध करे, कष्ट आपे (सं. विराध्यति)

विराधि *हम्मीप्र.* व्याधि

विराम *आरारा.* कष्ट, उपद्रव, पीडा (रा.)

विराल *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* वराळ

विराव *अखाका.* कलबलाट [सं.]

विरांसइ जुओ वरासइ

विरांसउ जुओ वरासउ

विरी *अभिऊ. कादं(शा). नलाख्या. प्रबोप्र.* शत्रु, दुश्मन (सं.वैरी)

विरुउं **अभिऊ. विराप.* विरूप, [खराब, खोटुं]

विरुवेत *ऐतिका.* बिरुद धरावनार

विरुद्ध *आरारा.* विरोधी भाव

विरुवां *नरका.* वरवां, नठारां, नरसां (सं. विरूप)

विरू *हम्मीप्र.* वरवुं, अनिष्ट, [प्रतिकूळ] (सं.विरूप)

विरूअउ, विरूउ, विरूयउ *उक्तिर. उपबा. उषाह. *कर्पूमं. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. प्रद्युचु. लावल.* वरवुं, भूंडुं, खराब, [अनिष्ट]

विरोध्यो *प्रेमाका.* विरोधी – प्रतिकूळ – दुःखरूप बनाव्यो

विरोलइ *उक्तिर. नरप. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वलोवे (दे.विरोल); *गुर्जरा. विराप.* वलोवे, ढंढोळे, [हलमलावे, पजवे]

विलइ *षडाबा.* विलय

विलउ *गुर्जरा.* नाश (सं.विलय)

विलकताउ *जिनरा.* विलक्ष [व्याकुळ] थतो, [रडतो] [रा.]

विलक्खिय *गुर्जरा.* व्याकुळ थई, दुःखी थई (सं.विलक्षिता)

विलखउ *उक्तिर. ऋषिरा. प्राचीफा.* [उदास, करमाई गयेलुं, फिक्कुं] (सं.विलक्ष)

विलखाणउं *आरारा.* गभरायुं; [खिन्न थयुं]; **प्रद्युचु. *विक्रच.* [करमाई गयुं; झांखुं पडी गयुं] (सं.विलक्ष)

विलखित *आरारा.* गभरायेलुं (सं.विलक्षित)

विलगइ *गुर्जरा. रूपच.* वळगे (सं.विलगति)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विलगाय *देवरा.* वळगाडी (सं.विलग्)
विलगाडी *आरारा. लावल.* वळगाडी
विलधी [विलुधी] **ऋषिरा.* [-मां मग्न, फसायेली, आकृष्ट] [सं.विलुब्ध]
विलय *प्राचीसं.* वनिता [दे.]
विललाइ *आरारा.* उदास थईने (रा.)
विललावइ *आरारा.* विलाप करे (रा.)
विलवइ *आरारा. उक्तिर. कर्पूमं. गुर्जरा. तेरका.* विलाप करे (सं.विलपति)
विलवलतां *देवरा.* विलाप करतां
विलविल *देवरा.* विलाप
विलविलइ *नरका. प्रद्युचु. प्राचीफा. रूपच.* विलाप करे, वलवले
विलंबइ *उक्तिर.* विलंब करे (सं.विलम्बते)
विलंबा- (विलंबाव-) *वीसरा.* मोडुं करावडं
विलाई *नरका-२.* वळगी
विलागी *कादं(ध्रु). कादं(शा). नरका.* वळगी (सं.विलग्न)
विलाति **शृंगामं.* [देश, वतन] [फा. विलायत]
विलाया *लावल.* वींटळाया, [वळग्या], (सं. वि+लग्न)
विलिविलि *आरारा.* वलवल, वलवलाट, [रुदन, क्रंदन]
विलिसियां *षडाबा.* विलास कर्यो, [आनंद माण्यो] (सं.विलस्)
विलुधउ, विलूधउ *अंबरा. जिनरा.* विलुब्ध थयेल, [-मां मग्न]; जुओ विलधी
विलूधडा *शृंगामं.* विलुब्ध, आसक्त
विलूधला *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* विलुब्ध, आसक्त, लोभायेला, वळुंधेला
विलूरइ *जिनरा. प्रद्युचु. प्राचीफा.* उतरडी नाखे, [खणे] (प्रा.)
विलुंधउ *अभिऊ.* वळगेलुं, [-मां मग्न] (सं.विलुब्ध)
विले *अखाका. अखाछ.* विलय
विलेच्छु *गुर्जरा. विराप.* म्लेच्छ, [अनार्य]
विलेपण *आनंस्त. तेरका.* विलेपन
विलोइउ *उक्तिर.* वलोव्युं, हलमलाव्युं (सं. विलोडित)
विलोकीतउं *षडाबा.* विलोकातुं, जोवातुं (सं.विलोक्)
विलोणउं *विमप्र.* वलोणुं
विलोम *प्रेमाका.* ऊलटो, [क्रमविरुद्ध] [सं.]
विलोल **ऋषिरा. गुर्जरा.* अति चंचळ, [क्षुब्ध] (सं.)
विलोलतां *नरका.* *वलोवतां, [*हालतां-झूलतां, *चंचळ] [सं.विलोड्]
विलोवतां **गुर्जरा.* [हलावतां] (प्रा. विलोडइ) [सं.विलोड्]
विवचार्यां *नरप.* व्यभिचार करनारां (सं. व्यभिचरित)
विवध *देवरा.* विविध
विवनउ *गुर्जरा.* मर्यो (सं.विपन्न)
विवर *शृंगामं.* खाडो, छिद्र [सं.]; *आनंस्त. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* छिद्र, प्रवेशद्वार
विवरीय *तेरका.* विपरीत, [प्रतिकूळ]
विवर्जइ *षडाबा.* त्याग करे (सं.विवर्जयति)
विवर्यउ *जिनरा.* विवेचन कर्युं, [विवरण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्युं] [सं.वि+वृ]

विवसाइउ *नलरा.* वेपारी, व्यवसाय करनार, [धंधादारी] (सं.व्यवसायिक)

विवसाय जुओ विवाय

विवह (विहव) *तेरका.* वैभव

विवहपरइ, विवहप्परि *ऐतिका. गुर्जरा. प्रद्युच्.* विविध प्रकारे

विवहार *ऋषिरा. वीसरा.* व्यवहार, [आदान-प्रदान, संबंध]; *गुर्जरा.* व्यवहार, रूढि, रिवाज

विवहारियउ, विवहारी, विवहारीयउ *आरारा. नलरा. प्राचीफा. विक्ररा.* वेपारी (सं.व्यवहारिन्)

विवागइ *ऋषिरा.* (कर्मना) विपाकथी, [परिणामथी]

***विवाय [*विवसाय]** *चंद्रवा.*?, [व्यवसाय]

विवाहलु *ऐतिका. ऐतिरा.* विवाहनुं काव्य, [विवाहलो, प्रशस्तिमूलक चरित्रकाव्य, दीक्षादि उत्सवप्रसंगनुं काव्य]; जुओ वीवाहलउ

विविह *ऐतिका. नेमिछं.* विविध, जुदाजुदा

विवीशाल *उषाह.* वेशवाळ, [वेविशाळ]

विवीहउ *प्राचीसं.* पपीहा, बपैयो

विवेक *आरारा.* विचार, निश्चय (सं.); *लावल.* सारानरसानो भेद, [विचार, भेदज्ञान]

विवेकीउ *उपबा.* सारासारनो भेद करनार, [ज्ञानी] (सं.विवेकी)

विरामे *चित्तसं.* शमे, विरमे

विशा **षडाबा.* [वसा, अंश, भाग]

विशाखी *कादं(शा).* लोखंडनी आंकडीवाळी नानी लाकडी – बावा साधु राखे छे तेवी (सं.विशाखिका)

विशेक *चंद्रवा.* विशेष

विशेख *हरिवि.* विशेष

विश्रमे **प्रेमाका.* [विश्राम पामे छे, -मां विरमे छे, ठरे छे] [सं.विश्रमति]

विश्राम पाम्यो *चित्तसं.* शांति पाम्यो, संतोष पाम्यो

विश्राल *नलरा.* [नष्ट], शांत; *शृंगामं.* नष्ट, विछिन्न, [खंडित]; जुओ विसराल

विश्वा *आरारा.* संभवतः विश्वदेवने संबोधन

विश्वा *ऐतिरा.* वसा, [गुणांक, दोकडा]; जुओ वसा सोइ, विसा विसाही

विश्वाध्यार *अंबरा.* विश्वाधार

विश्वानर *ऐतिका.* वैश्वानर, अग्नि

विश्वानल *दशस्कं(१).* वैश्वानर, अग्नि

विश्वा वीसइ *ऐतिरा.* वीश वसा, [संपूर्णपणे]; जुओ वीस वसा

विष *पंचवा.* विशे, -मां (सं.विषये)

विषइया, विषईआ *उपबा. षडाबा.* विषयक

विषकन्या *पंचवा.* जेना देहमां विष व्यापेलुं छे तेवी कन्या, [अमुक प्रकारनां सामुद्रिक लक्षणो धरावनार कन्या, जेने कारणे एनी साथे संभोग करनार मृत्यु पामे]

विषन्न *ऋषिरा.* खिन्न (सं.विषण्ण)

विषमायुध *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कामदेव (सं.)

विषवाद **ऐतिका.* [अफसोस, दुःख];

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुओ विखवाद

विषयारसि *लावल.* विषयना रसमां – शृंगाररसमां

विषे *चित्तसं.* विषय

विषेभोग *चित्तसं.* विषयोनो उपभोग

विसघारिय *प्राचीफा.* *विषथी बेचेन, [विषनुं घेन चड्युं होय एवी, मदभरी] (सं. विष+घारिय); जुओ घारिउ

विस-दमणि *शृंगामं.* विषनुं दमन करनार, [विषने दूर करनार]

विसन *कादं(शा).* दुःख (सं.व्यसन)

विसनरु, विसनिरु *उक्तिर. गुर्जरा.* अग्नि (सं.वैश्वानर)

विसनी *ऋषिरा. विक्रच.* व्यसनी, [लते चडेलो]

विसम, विसमु *गुर्जरा. नलाख्या. विराप.* आकरुं, [कठोर], वसमुं, भयंकर (सं. विषम)

विसमसि *षष्टिप्र.* [होड, स्पर्धा, वाद]; जुओ विसिमिसि

विसमायुध *वसंफा.* कामदेव (सं.विषमायुध)

विसमिउं *गुर्जरा.* [विस्मय पाम्युं]

विसमु जुओ विसम

विसमे *मोसाच.* विषम, [विपरीत], विचित्र, [अद्‌भुत, अनोखुं]

विसरामीनइ *आनंस्त.* विश्राम आपीने, [स्थापीने, राखीने]

विसराल *ऐतिरा. ऋषिरा. *लावल. *विमप्र.* विसर्जित, [नष्ट]; जुओ विश्राल

***विसराल [*विसाल]** *देवरा.* विशाळ

विसराह- *वीसरा.* उतारी पाडवुं, निंदा करवी (सं.*विश्लाघते)

विसहर *अंबरा. उक्तिर. उषाह. ऐतिका. प्राचीसं. लावल. वीसरा. स्थूलिफा.* विषधर, साप

विसंटुल *उक्तिर.* अस्थिर, विह्वल (सं. विसंस्थुलः)

विसंटुलिय *प्राचीसं.* व्याकुळ, (आवेशभर्युं)

बिसा *विमप्र.* वसा, [अंश, गुणांक]

बिसा (वीस बिसानुं मांणस) *कृष्णच.* वीस वसा[पूरा अंश]नुं माणस, सोनानुं माणस, [मूल्यवान माणस]

विसात *प्रेमाका.* पूंजी, मिल्कत [फा.बिसात]

विसारी घालइ जुओ घालइ

विसाय *शृंगामं.* विषाद, खेद

विसा विसाही *विमप्र.* वीस वसाऐ, [निश्चितपणे]; जुओ विश्वा वीसइ, वीसवा वीसई

विसाहइ *उक्तिर. उपबा.* विनिमय करे, वेचे (सं.विसाधयति)

विसाहणउं *षडाबा.* वसाणुं, [गांधीने त्यांथी मळती] वस्तुओ (सं.विसाधन)

विसाहिवुं *उक्तिर.* विनिमय करवो, वेचवुं (सं.विसाध्)

विसिम (विसमसि) **हरिवि.* [होड, स्पर्धा, वाद]

विसिमिसि *उक्तिर.* होड, स्पर्धा, वाद

विसीदु *प्राचीसं.* विशिष्ट, [मुख्य]

विसु *विमप्र.* *विषम, [*विष]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसूचिका *उपबा.* कोलेरा (सं.विषूचिका)
विसूरइ *उक्ति.* खेद करे [दे.]
विसेकी *अखाका.* विशेष[ता धरावनार], [अन्यथी जुदो पडनार, विशिष्ट]
विसोआ *उक्ति.* कोडीनो वीसमो भाग (सं. विंशोपका)
विसोधि *आरारा.* विशुद्धि
विसोधिकरणु *षडाबा.* विशुद्धीकरण
विस्तरि *षडाबा.* विस्तारथी
विस्फुरइ *षडाबा.* [आवी चडे], *आक्रमण करे, (सं.विस्फुरति); जुओ विप्फुरइ
विस्मउ *षडाबा.* विस्मय
विस्मयउं *विराप.* विस्मय, आश्चर्य [पाम्युं]
विस्मि, विस्मिय *नलाख्या.* विस्मय, आश्चर्य
विस्मे *अखाका.* विस्मय, विस्मित; *प्रेमाका.* विस्मय
विस्र *प्राचीफा.* शब्दायमान, [कोलाहलभर्युं] (सं.विस्वर)
विह *तेरका.* प्रकार (सं.विध)
विहइ *लावल.* वहे छे, धरावे छे [सं.वह्]
विहचण *प्राचीसं.* विभाजन, वहेंचणी
विहची *आरारा. रूपच.* वहेंची (सं.विभक्त)
विहडइ *ऋषिरा.* विनाश पामे (सं.वि+घट्); *अंबरा.* *उपबा. *शृंगामं.* विखूटुं पडे, छूटुं पडे; *ललिरा.* छोडे
विहडाइ *प्रद्युच्.* वियुक्त थाय
विहथि *उक्ति.* वेंत, बार आंगळ जेटलुं माप (सं.वितस्ति)
विहरइ *उपबा.* वहोरे, अन्न स्वीकारे (*सं. विहरति) [सं.व्याहरति]
विहरउ *उक्ति.* *गुर्जरा. *प्राचीफा.* बहेरो, आंतरो, तफावत (*सं.व्यतिकर) [सं. व्यवहार]
विहलउ *आनंस्त. ऐतिका.* वहेलो, जलदी [दे.वहिल्ल]
विहलंघल *प्राचीफा.* विह्वळ [दे.]
विहलिय *प्राचीसं.* दुर्गति पामेला [सं. विकलित]
विहव जुओ विवह
विहसइ *उक्ति. चारफा. तेरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). *षडाबा.* विकसे, खीले (सं.विकसति); *गुर्जरा.* प्रगटे, ऊगे
विहसाव- *तेरका.* विकसावबुं (सं.वि+हस् परथी)
विहंगमी *दशस्कं(२). प्रेमाका.* पंखिणी, कोयल [सं.]
विहंगल *तेरका. प्राचीसं.* विह्वळ (दे. विहलंघल)
विहंच- *प्राचीसं.* वहेंचबुं [सं.विभज्यते]
विहंडण *तेरका.* विनाशक (सं.विखंडन)
विहंसक *गुर्जरा.* विध्वंसक
विहाइ *आरारा.* *तेरका. अंत पामे, पूरी थाय (सं.विघात)
विहाइ *उक्ति.* शोले (सं.विभाति)
विहाड *तेरका.* वियोग (सं.वि+घट्य)
विहाण *जिनरा.* विधान, [रचना, निर्माण, घटना, थबुं ते]
विहाण *आरारा. उपबा. उषाह. गुर्जरा. वीसरा.* वहाणुं, सवार (सं.विभान)
विहाणउ *उक्ति.* सवार (सं.विभानक)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहाणी, विहांणी, वीहांणी *आरारा.* *कृष्णच. नरका. प्रेमाका. *वेताप. सिंहा(शा).* नष्ट थई, वीती (सं.विघात); जुओ वेहांणी

विहाणु (सुविहाणु) *ऐतिका.* [योग्य विधिपूर्वक]

विहाती *आरारा.* वीती (सं.विघात)

विहार *देवरा.* साधुनो प्रवास; *नलरा.* देवमन्दिर (सं.)

विहांणी जुओ विहाणी

विहि *ऐतिका. प्राचीसं. वीसरा.* विधि, विधाता, [स्रष्टा, भाग्यदेवता]; जुओ वही

विहिचिणि *विमप्र.* वहेंचणीमां

विहिची *कादं(शा). नलाख्या.* वहेंची (*प्रा. विहिच्चिअ) [सं.विभज्यते]

विहिमग्ग *ऐतिका.* विधिमार्ग, [आचार-मार्ग]

विहिरु *नलाख्या.* वहेरो, तफावत (*सं. व्यभिचारः) [सं.व्यवहार]

विहिलु *नलाख्या.* वहेलो (दे.वहिल्ल)

विहिवळ *प्रेमाका.* विह्वळ

विहिवा *नरका. नलाख्या. प्रेमाका.* विवाह, लग्न

विहिवार *कादं(शा). प्रबोप्र. नलाख्या.* व्यवहार, [आचरण, चालचलन, काम-काज, वहीवट]

विहिसियां *कृष्णच.* विकस्यां

विहिहत्थडा *नेमिछं.* विधि[विधाता]ना हाथ

विहुण जुओ हुण

विहूणउ *उक्तिर. ऐतिका. वीसरा.* रहित, विनानुं, विहोणुं (सं.*विधून)

विंग *आनंस्त.* व्यंग्य, [सूचित]

विंजनउ *प्राचीसं.* व्यंजन, [रसयुक्त खाद्य पदार्थो]

विंझ *शृंगामं.* विंध्याचळ पर्वत

विंठी *नलाख्या.* नष्ट थई (सं.विनष्ट)

विंतर *आरारा. नलरा.* व्यंतर, हलकी कोटि-ना देव, एक प्रकारनी भूतयोनि

विंद *वीसरा.* वर [रा.]; जुओ वींद

विंद, विंदु *गुर्जरा. प्राचीफा.* वृन्द, समुदाय

विंहचइ *उक्तिर.* वहेंचे (सं.विभक्त परथी)

वीआलि *अभिऊ.* विकाले, कसमये, [मोडेथी]

वीकइ *उक्तिर. नलरा. षडाबा. हरिवि.* वेचे (सं.वि+क्री)

वीकण- *प्राचीसं.* वेचवुं (सं.विक्रीणीते)

वीकाइ *विमप्र.* वेचाय

वीकारे *दशस्कं(२).* पडकारीने उश्केरे; जुओ वकारे

वीकिणिवउं *षडाबा.* वेचवुं (सं.विक्रीणीते)

वीकोदर *चंद्रवा.* वृकोदर, भीम

वीक्षणा *आनंस्त.* जोवुं ते [सं.]

वीक्षात *मदमो.* विख्यात

वीख *वीसरा.* कदम, डगलुं (सं.वीखा)

वीखरइ *उक्तिर.* वेरे, विखेरे (सं.विकिरति) [सं.विष्किरति]

वीखात *कामा(शा).* विख्यात

वीखांण *मदमो. रूस्तसं.* वखाण; वर्णन (सं.व्याख्यान)

वीखांणे *मदमो.* वखाणे

वीखे *मदमो.* विषे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीगताला *जिनरा.* व्यक्तित्व धरावता, [प्रभावशाळी पुरुष] [रा.]

वीगुता *नरका.* दुःखी; जुओ विगुता

वीग्र *कामा(शा).* व्यग्र, [अस्वस्थ]

वीघरा वीना *मदमो.* ओगळ्या विना

वीघरे *अखाछ.* ओगळे [*सं.विग्रह्]

वीघल *कामा(त्रि).* विकल, [अस्वस्थ]

वीच *उक्तिर.* मध्यभाग, गाळो (सं.वर्त्म परथी) [हिं.बीच]

वीचमां *वेताप.* वचमां

वीचे *चंद्रवा.* वचमां

वीचेवीचपणुं *चित्तसं.* वच्चेवच्चपणुं ? ओतप्रोतपणुं ?

वीछड्यो *आरारा. पंचवा. प्रद्युचु.* विछडेलो, जुदो पडेलो, वियोग पामेलो [सं. विच्छर्दित]

वीछवो *कामा(त्रि).* *निस्तेज[रूप], [*जोगीरूप]

वीछू *उक्तिर.* वींछी (सं.वृश्चिकः)

वीछोअ *कामा(त्रि).* विछोह, वियोग

वीजनउ **वसंफा. *वसंवि(ब्रा).* [वींजणो, पंखो] (सं.व्यजनक्-)

वीजावणु *षडाबा.* वींझवुं ते, ढोळवुं ते (सं. वीज्)

वीजुलिय *तेरका.* वीजळी (सं.विद्युत् परथी)

वीझाई *उक्तिर.* बुझाई (सं.विध्यातः)

वीझायइ *उक्तिर.* बुझाय (*सं.विध्यायति) [सं.विध्मायति]

वीझावइ *उक्तिर.* बुझावे (*सं.विध्यापयति) [सं.विध्मापयति]

वीटली *विमप्र.* वींटी, अंगूठी [सं.वेष्टिका]

वीट वीटाइ *विमप्र.* वींटी वळ्या, [घेरो नाख्यो]

वीटंबि *प्राचीका.* विटंबणा करे (सं.विडंब्)

वीटू *प्राचीका.* हलका, [लंपटताभर्या] [सं. विट]

वीठ *उक्तिर.* विष्ठा, मेलुं

वीडारू *चतुचा.* विदार्युं, काप्युं [सं.विदार्]

वीण *आरारा.* वेणी, चोटलो; जुओ सीरवीण

वीण *गुर्जरा. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* वीणा

वीणठां *मोसाच.* वंठेला, दुष्ट [सं.विनष्ट]

वीणि *वसंफा. वसंवि.* वीणा

वीणि *उक्तिर. उषाह. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* वेणी, चोटलो

वीणिवा *उक्तिर.* वीणवा [सं.विचिनोति]

वीणो *दशस्कं(१). प्रेमाका.* वेणु, वांसळी

वीत *चित्तसं.* वित्त, सत्त्व

वीतग *आरारा. मदमो.* वीतक

वीतरागइजिनुं *षष्टिप्र.* वीतरागनुं ज

वीतो *गुर्जरा.* बन्युं (सं.वृत्त)

वीत्रेक *दशस्कं(२).* सौथी विशेष के चडियातुं [सं.व्यतिरेक]; *चित्तसं.* व्यतिरेक, भेद

वीथि, वीथी **कादं(शा).* [सामसामी बे हार, कतार]; *नरका.* [सामसामी हार, कतार], [ते वच्चेनो] मार्ग; *हरिख्या.* शेरी (सं.)

वीद्यांण *सिंहा(शा).* पाखंड, कपट, [चातुर्य, पटुता] [सं.विज्ञान]; जुओ विनाण

वीधु जुओ विधओ

वीधोगत **कांमा(त्रि). कामा(शा).* विधि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमाणे; जुओ विधोगत

वीनता *चतुचा. मदमो.* वनिता

वीनविवुं *उक्तिर.* वीनववुं (सं.विज्ञपयितव्यम्)

वीनाणीने *नरका. नरप.* धंतर-मंतर करीने, जादु करीने, [युक्ति करीने] (सं. विज्ञान); जुओ विनाणइ

वीने *चतुचा.* विनय

वीभल *नंदब. सिंहा(शा).* विह्वळ

वीभलपणूं *कादं(ध्रु).* बावरापणूं, [विह्वळपणुं]

वीभीचार *मदमो.* व्यभिचार

वीमाण *चतुचा.* अपमान (सं.विमान)

वीमासीउ *ललिरा.* विचार्युं [सं.विमर्शित]

वीयखणा *आरारा.* विचक्षण

वीरमदल *हम्मीप्र.* वीरमर्दल, युद्ध प्रसंगे वगाडवानुं मर्दल, मादल, एक प्रकारनुं ढोल

वीरवट्ट *प्राचीसं.* कपाळे पहेरवानुं एक सैनिक वस्त्र (सं.वीरपट्ट)

वीरवलय *प्राचीफा.* पुरुषना हाथनुं एक घरेणुं, [कडुं] (सं.)

वीराचार **गुर्जरा.* [वीरने योग्य आचरण, वीरत्व, पराक्रम] (सं.)

वीरासे *चतुचा.* भूलमां

वीरांसउ जुओ वरासउ

वीरिणि *तेरका.* एक वनस्पति, [खस, वाळो] [सं.वीरण, वीरिण]

वीरुवो *कस्तुवा. सिंहा(शा).* वरवो, खराब, [हलको] (सं.विरूप)

वीर्ज्य *चित्तसं.* (पुरुषनुं) वीर्य, शुक्र

वीले *दशस्कं(१).* वले, [दशा]

वीलो *प्रेमाका.* छूटो, [बेदरकारीथी रहेवा दीधेलो]

वीलोम *कस्तुवा.* विपरीत, ऊलटी, [वक्रताभरी]

वीवधचार *चतुचा.* विविध उपाय ?

वीवाहइ *उक्तिर.* परणे, परणावे (सं.विवाहयति)

वीवाहपगरण *उक्तिर.* विवाहप्रसंग, तेनुं मंडाण (सं.विवाहप्रकरण); जुओ पगरण

वीवाहलउ *ऐतिका.* विवाहलो, [चरित्रात्मक प्रशस्तिकाव्य]; जुओ विवाहलु

वीवीशाळ *दशस्कं(२).* वेविशाळ

वीशंभर *दशस्कं(१).* विश्वंभर, [विश्वनुं पोषण करनार परमात्मा]

वीषअर *मदमो.* विषधर

वीसउ *ऐतिरा.* वीसो, [ए नामनी ज्ञाति]

वीसमी **गुर्जरा.* [विश्राम करीने] [सं. विश्रम्]

वीस वसा *अखाका. प्रेमप. मदमो.* संपूर्णपणे, सो टका, निश्चे; जुओ वसा, विश्वा वीसइ

वीसवा वीसई **ऋषिरा.* [वीस वसा, निश्चितपणे, खरेखर]; जुओ विसा विसाही

वीस विसानुं माणस जुओ विसा

वीससइ *उक्तिर. नलरा.* विश्वास करे (सं. विश्वसिति)

वीसहर *अभिऊ.* साप (सं.विषधर)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसास *उपबा. विक्रच. विक्ररा.* विश्वास

वीसासिणि **शृंगामं.* [विश्वासपात्र (स्त्री)]

वीसासीक *शृंगामं.* विश्वासु

वीसासु *विमप्र.* *वीस; [*वीस जेटलुं]

वीसिसउं *गुर्जरा.* विश्वास राखुं (सं. विश्वस्)

वीहांणी *चंद्रवा.* विहोणी, विनानी

वीहांणी जुओ विहाणी

वीहीवा *मदमो.* विवाह

वींछीआ, वींछुआ *अभिऊ. नरका. प्रेमाका. लावल.* स्त्रीओनुं पगनी आंगळीओए पहेरवानुं आभूषण (सं.वृश्चिक परथी)

वींट *उक्तिर.* दींटु (सं.वृन्त) [प्रा.विंट]; जुओ बींट

वींट *उक्तिर.* वींटो; जुओ ओही वींट

वींटली *लावल.* स्त्रीओनुं हाथ उपर पहेरवानुं घरेणुं, [वींटीना प्रकारनुं]

वींटलो *दशस्कं(१).* स्त्रीओनुं एक घरेणुं

वींद *आरारा.* वर (रा.); जुओ विंद

वींधणां *प्रेमाका.* वींध – काणुं पाडवानुं एक ओजार

वुक्क *ऐतिका.* वाद्य-विशेष; जुओ बुक्क

वुज्जोय (आउवुज्जोय) *जिनरा.* [आतप, नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीव पोते ठंडो होवा छतां सामाने प्रकाश अने गरमी आपे तथा] उद्योत, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीवनुं शरीर शीतल प्रकाश आपे] [जै.]; जुओ उज्जय

वुट्टिया (? वुट्ठिळया) *शृंगामं.* वृद्धि पाम्या

वुट्ठि *तेरका.* वृष्टि

वुट्ठीय *गुर्जरा.* वरसीने (सं.वृष्ट)

वुठा *देवरा. नंदब. मदमो. वेताप.* वरस्या (सं.वृष्ट)

वुट्ठि *प्राचीफा.* वरसाद (सं.वृष्टि)

वुडवुडा रव *षडाबा.* बुडबुड अवाज

वुट्ठिया जुओ वुट्टिया

वुड्ढे *आरारा.* वधे छे (सं.वृध्); जुओ वूढुं

वुल *वसंवि(ब्रा).* बकुल, बोरसली

वुलसरी, वुलसिरी *आरारा(व). नलरा. शृंगामं.* बोरसली (सं.बकुलश्री)

वुलइ *विमप्र. [वटावे]; **अभिऊ. प्रद्युचु.* पसार थाय [दे.वोल्]; जुओ वोलइ

वुलावइ *आरारा. कादं(शा). नलरा. नलाख्या.* वळावे, विदाय आपे

वुहरइ *नलरा. शीलक.* वहोरे, खरीदे [सं. व्यवहरयति]

वुहरति *शृंगामं.* वहोरत, लई जवुं ते, [खरीदी]

वुहरउ *उक्तिर.* धीरधार करनार, वहोरो (सं.व्यवहर्ता) [रा.]

वुहारी *षडाबा.* झाडु, सावरणी (*सं. व्यवहारिन्) [दे.वोहार-]; जुओ बुहारइ

वुहु(?) *तेरका.* बहु ?, [*वहेता] [रा.वुह]

वुंढा **नरप(द).* [वध्या, वह्या, चाल्या]; जुओ वूढुं

वुंण *सिंहा(शा).* वण, [कपास] [दे.बउणी]; जुओ वण, व्यूणा

वूठ जुओ अमिय वूठ

वूठइ *अंगवि. आरारा. उक्तिर. उषाह.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋषिरा. चारफा. नरका. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीसं. शृंगामं. षडाबा. वरसे (सं.वृष्ट परथी); जुओ बूठा

वूडुं *नरका. विमप्र.* वघ्युं, वह्युं, चाल्युं (सं. वृध्); जुओ वुढ्ढे, बूढ

वूसट *उक्तिर.* बूसट, तमाचो

वूहरीइ *अभिऊ.* व्यवहार करीए (सं.व्यवह्)

वूहा *जिनरा.* वह्या, [उपाड्या, कर्या]

वृक **प्रेमाका.* [वरु] [सं.]

वृख जुओ वर्ख

वृख्य *आरारा.* वृक्ष

वृतंतू *गुर्जरा.* वृत्तांत

वृत्त *चंद्रवा.* व्रत; [वरत, कोयडो]

वृत्तिइं *उपजा.* -नी जेम

वृत्तिसंखेप *आरारा.* वृत्तिसंक्षेप, बाह्य तपनो एक प्रकार, खावुं-पीवुं वगेरे भोग ओछा करता जवा ते [जै.]

वृत्य, वृत्य *अखाका. अखेगी. चित्तसं. सिंहा(शा).* वृत्ति, [मनोवृत्ति, चित्त-वृत्ति]; *अखेगी.* वृत्ति, [व्यवहार]; *प्रेमाका.* वृत्ति, आजीविका

वृथा (व्रथा) *सिंहा(शा).* व्यथा

वृद्धतह *कादं(शा).* घडपणनो (सं.वृद्धत्व)

वृद्धि शांतिक *नरका.* कुळनी वृद्धि अने शांति माटे करवामां आवतो धार्मिक विधि

वृद्धि-श्राद्ध *प्रेमाका.* [पुत्रजन्म जेवा मंगळ प्रसंगे] कुळनी वृद्धि माटे करवामां आवतुं श्राद्ध [सं.]

वृध *चंद्रवा.* वृद्धि

वृष **आनंत.* [धर्म] [सं.]

वृन्दारक *ऐतिका.* देवता [सं.]

वृषभान-तनया, वृषभानुतनया *अखाका. नरका.* वृषभानु राजानी पुत्री, राधा

वृह *नंदब. सिंहा(शा).* विरह

वृहन्नड *गुर्जरा. विराप.* बृहन्नला, विराटने त्यां रहेल अर्जुननुं नाम [सं.]

वृहंद *अंबरा.* बृहन्नला, नपुंसक

वृंदल *प्रेमाका.* नपुंसक, व्यंढळ

वृंदा *नरका-२.* तुलसी (वनस्पति) [सं.]

वृंदावाटिका *प्रेमप.* तुलसीनी वाडी [सं.]

वे *अखाका.* ते, तेओ

वे *चतुचा. प्राचीका. प्रेमप.* वय, उंमर; जुओ लघु-वे

वे *आरारा.* वचन, वाणी (सं.वचस्)

वेअण *नेमिछं.* वेदना

वेइ *षडाबा.* अनुभवे, भोगवे; *ऋषिरा. शृंगामं.* जाणे (सं.वेद्)

वेउल *उक्तिर. गुर्जरा. चारफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). हरिवि.* विचकिल लता; जुओ बेउल

वेउव्विय *ऐतिका.* विकुर्वना करी, [दिव्य सामर्थ्यथी उत्पन्न करी]; जुओ विकुर्वइ

वेकार *प्रद्युचु.* संगीतकार, [गायक]; जुओ व्यकारु

वेख *दशस्कं(१). वेष; अखाछ. मदमो.* वेष, भेख; *हरिवि.* वेष, [रूप]; जुओ विख

वेखर्युं *प्रेमाका.* [*चमत्कारिक शक्तिथी रूपरिवर्तन कर्युं], विस्तृत कर्युं; जुओ विकुर्वइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेखास जुओ बेखास, विखास

वेगउ *उक्ति.* *वीसरा.* जलदी (सं.वेग)

वेगड *ऐतिका.* एक बिरुद अने [जैन साधुसमुदायनुं] नाम

वेगड *उक्ति.* सीधा, खुल्ला, मोटा शिंगडावाळो बळद, उत्तम प्रकारनो बळद (सं. विकट परथी)

वेगडि, वेगडी *उक्ति.* सीधा, खुल्ला, मोटा शिंगडावाळी गाय, उत्तम प्रकारनी गाय (सं.विकट परथी)

वेगडो *ऐतिरा.* बेगडो

वेगलउ *उक्ति.* जलदी; **जिनरा.* [दूर]

वेगलांथा *शृंगामं.* दूरथी, [वेगळां – दूर होईने, दूर छतां]

वेगा *मदमो.* वहेलां, [जलदी]

वेगि थइ *आरारा.* जलदीथी

वेगी हुइ *आरारा.* जलदी करो

वेगुलइ *आरारा.* वेगळे, दूर; *चारफा.* वेगपूर्वक, [जलदीथी]

वेगै *प्राचीफा.* घृत आदि विकारजनक वस्तु (सं.विकृति) (जै.); जुओ विगइ

वेचइ *नलरा.* *प्राचीसं.* **षडाबा.* *षष्टिप्र.* व्यय करे, [वापरे, खर्चे] (प्रा.वेच्च)

वेचायुं *मदमो.* *वेताप.* *सिंहा(शा).* वेचातुं, [वेचाणथी, खरीदीने]

***वेचालिक [वेतालिक]** *सिंहा(म).* बंदिजन, [कीर्तिगान करनार] (सं.वैतालिक)

वेचिवुं *उक्ति.* वेचवुं [दे.वेच्च-]

वेज *अखाका.* **तेरका.* **प्राचीसं.* (बाणनुं) निशान (सं.वेध्य)

वेझ *उक्ति.* **तेरका.* **प्राचीसं.* [बाणनुं] निशान, (सं.वेध्य)

वेझा *अखेगी.* वेद्य, ज्ञेय

वेझुं *अखाछ.* *विमप्र.* बाणनुं निशान [सं. वेध्य]

वेठि *उक्ति.* वेठ, फरजियात सेवा (सं. विष्टि); **जिनरा.* [निरर्थक श्रम]; *शीलक.* वैतरुं, [सेवा]

वेडस *आरारा(व).* *तेरका.* वेतस, पाणीमां थतो नेतरना प्रकारनो छोड (प्रा.)

वेडांग, वेडांगण *कस्तुवा.* *मदमो.* *वेताप.* घोडो; *वेताप.* [घोडा जेवो] प्रचंड

वेडि *आरारा.* *वीडी, *बीड, *घासवाळी जमीन, [वगडो]; **उपबा.* *गुर्जरा.* **नेमिछं.* **विराप.* वन, रान [रा.]

वेडि *वीसरा.* बेडी

वेडू धान *विमप्र.* पोतानी मेळे ऊगेलां अनाज, [वगडाउ अनाज]

वेडे *अखाका.* *प्रेमाका.* तोडे, नीचे पाडे

वेढ *अभिऊ.* **ऐतिका.* *जिनरा.* आंगळीए पहेरवानी एक प्रकारनी मोटी वींटी (सं.वेष्टित परथी)

वेढ *षडाबा.* पाश, बंधन (सं.वेष्ट)

वेढला *विमप्र.* काननुं घरेणुं

वेढवुं *कृष्णबा.* घेरवुं [सं.वेष्ट-]

वेढालगु *विमप्र.* लडवा सज्ज थयेल, [युद्ध-प्रिय]

वेढाली *ऋषिरा.* कजियाखोर

वेढि *अंबरा.* **उषाह.* *जिनरा.* **ललिरा.* *विमप्र.* युद्ध, लडाई; लडवाड, [झघडो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेढिउ *षडाबा.* वींटी वळयो, घेरो घाल्यो (सं.वेष्टितः)

वेढिमी *उक्तिर.* वेढमी, पूरणपोळी (सं. वेष्टिमा)

वेण **अखाका. नरका-२.* वचन, [वाणी]

वेण *नरका. प्रेमाका.* वेणु, वांसळी के ऐने मळतुं वाद्य

वेण *नरका. नरप. नेमिछं.* वेणी, [चोटलो]

वेण-वासिक *प्रेमाका.* वासुकि नागना जेवी वेणी, [चोटलो]

वेणा *कामा(शा). चंद्रवा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). *नरप(द). लावल.* वीणा

वेणि *ऋषिरा.* *वचन वडे, [*वेणी – चोटलाथी]

वेणि, वेणी *आरारा. तेरका. लावल. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* चोटलो (सं.)

वेणि, वेणी *उषाह. लावल.* वीणा

वेणी *नरका-२.* वचनवाळी

वेणीदंड *आरारा. विक्रच.* चोटलो (सं.)

वेणु *दशस्कं(२). प्रेमाका.* पावो, वांसळी [सं.]

वेत *जिनरा.* [बेत], विधान, [योजना]

वेद जुओ मधुकर वेद, रसवेद

वेद, व्येद *अखाछ. कादं(शा). चतुचा. चंद्रवा. चित्तसं. मदमो. सिंहा(शा). ऋषिरा.* निश्चित, नक्की, खरेखर, [निश्चित वात, खरी वात] (सं.); **अखाका.* [वेदशास्त्र]

वेदझुणि *चारफा.* वेदमंत्रनो ध्वनि (सं.वेद-ध्वनि)

वेदन *गुर्जरा. नलाख्या. लावल. वीसरा.* वेदना, पीडा

वेदनी *आनंस्त.* वेदनीय (कर्म), जे कर्म आत्माने सुख-दुःख आपे ते [जै.]; *कादं(शा).* वेदनायुक्त, दुःखी

वेदवाणी *नरका. प्रेमाका.* नक्की, चोक्कस

वेद-वायक *नरका. प्रेमाका.* वेदवाक्य, नक्की, चोक्कस हकीकत

वेदविटंड *अखेगी.* वेदनी वितंडा करनारो, [वेदनी ब्रह्मविद्यानुं अणसमजभर्युं खंडन करनार]

वेद्यज्ञान *आनंस्त.* विषयनुं ज्ञान [सं.]

वेध *अंबरा. *गुर्जरा. नलरा. शृंगामं.* आकर्षण, [आसक्ति], मर्म, रस; जुओ सवेध, सुवेध

वेध *गुर्जरा.* छिद्र, [जखम] (सं.वेध)

वेध (वेधउ) *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* चतुर, विदग्ध; वींधायेलो

वेधक **ऐतिरा.* [विदग्ध, चतुर]

वेधवुं *कृष्णबा.* [वींधवुं, घायल करवुं], व्याकुळ करवुं [सं.वेधित]

वेधा *कादं(शा).* ब्रह्मा, प्रजापति (सं.)

वेधां *प्रेमप.* वींधायेलां, [अनुरागवश थयेलां] [सं.वेधित]

वेधीय *प्राचीफा.* [विदग्ध]; रसिक, संस्कारी

वेधीलां *नरका.* वींधायेलां [सं.वेधित]

वेध्यउं *अखेगी. ऋषिरा.* वींधायेलुं; *प्राचीफा.* प्रेमासक्त [सं.वेधित]

वेध्या *नलाख्या.* ब्रह्मा (सं.वेधा)

वेपथ *हरिवि.* वेपथु, धुजारी

वेपार *प्रेमाका.* व्यापार, प्रवृत्ति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेमान *दशस्कं(१).* विमान

वेय (इच्छेवेय) [इत्तिवेय] *जिनरा.* वेद, [स्त्रीवेद, मोहनीय कर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी स्त्रीने पुरुष साथे मैथुननी इच्छा थाय छे] [जै.]; जुओ इच्छेवेय

वेयइ *उक्तिर.* जाणे (सं.वेदय्)

वेयण *जिनरा.* वेदन, वेदनीय कर्म; *गुर्जरा.* वेदना

वेयल *तेरका.* एक वनस्पति, विचकिल (प्रा.वेइल्ल)

वेयावच्च *आरारा.* सेवा, शुश्रूषा (सं.वैयावृत्य)

वेयावच्चसार *ऐतिका.* [उत्तम] सेवा

वेयुं *अखाका.* जाण्युं (सं.विद्)

वेर जुओ वसुधा दे वेहेर

वेरा *उक्तिर.* वीरडो, नानो कूवो (सं. विदारका) [दे.वियरय; रा.]

वेरागर **अखाका. नरका. प्राचीका.* एक प्रकारनुं रत्न, [हीरो] (सं.वज्र+आकर)

वेरीनइ *आरारा.* वलोवीने

वेरो *अखाका.* [वहेरो], भेद, [द्वैत]

वेल, वेळ *अखाका.* वेळा, समय; *नरका.* भरती [सं.वेला]; **प्रेमाका.* [लहेर] (वायुनी)

वेला **नलरा.* [संकट, आपत्ति] (सं.); जुओ वेळा पडी

वेला (*नेवेला) *अखाछ.* कोई मादक पदार्थ ?, [*कोई रोग, *आपत्ति]

वेलाकूल (वेला कूलेरा) **नलरा.* [काकडीना वेला] [सं.वेल्ली+कुलीरा]

वेला गाले *वतुचा.* वेळा गाळे, समय पसार करे

वेळा पडी *प्रेमाका.* मुश्केली आवी; जुओ वेला

वेलि *आरारा(व).* विचकिल (प्रा.वेइल्ल)?; निद्राप्रेरक लता (दे.वेली)?

वेलियां *नरका. प्रेमाका.* हाथनी आंगळीए पहेरवानां एक जातनां आभूषण

वेलु, वेलू *उक्तिर. ऋषिरा. प्रेमाका.* रेती (सं.वालुका)

वेल्यो *लावल.* वेल, वेलीओ

वेवलां **अखाका.* [विव नामनी वेलनां डाळखां, पांदडां]

वेवलां वीणवां *प्रेमाका.* फांफां के वलखां मारवां

वेवा *प्रेमाका.* विवाह

वेवाहिणि *आरारा.* वेवाण

वेवाहिय *गुर्जरा.* वेवाई; [संबंधी] (सं. वैवाहिक)

वेवाही *जिनरा.* सगांसंबंधी (सं.वैवाहिक)

वेविरु *षडाबा.* धूजतुं माणस (सं.वेपितृ)

वेवुं *अखाका.* वेदवुं, जाणवुं (सं.विद्)

वेश जुओ गोगवेश

वेश, वेस *मदमो. वेताप.* वय (सं.वयस्); जुओ वेष

वेशवाळ *प्रेमाका.* सगपण

वेशंती *नरका. नरप.* वेश्या, गणिका

वेशा *विक्ररा.* वेश्या

वेशाखिका (वेशाषिका) *ऐतिका.* वैशेषिक दर्शन[वाळा]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेशि जुओ वेसा

***वेशोक (वा शोक)** * *चंद्रवा.* [अथवा शोक]

वेष *आरारा.* उंमर, युवानी (रा.) (सं. वयस्); जुओ वेश

वेस *तेरका. प्राचीफा. विक्ररा.* वेश्या, गणिका; जुओ वेसा

वेस *वीसरा.* वेश, रूप (सं.वेष)

वेस *आरारा. चतुचा. *वीसरा. सिंहा(शा).* वय, उंमर (सं.वयस्); जुओ बालीवेस, वेश

वेसर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* नाकनी वाळी, नथ

वेसर, वेसरु *अंगवि. उक्तिर. शृंगामं. षडाबा.* खच्चर (सं.); जुओ वेसह

वेसा, वेस, वेशि *गुर्जरा. तेरका.* वेश्या

वेसवार *उक्तिर.* राई, जीरुं वगेरेनां चूर्ण मेळवीने करवामां आवेलो गरम मसालो (सं.)

***वेसह [*वेसर]** * *उषाह.* [खच्चर] (सं. वृषभ)

वेसावाडउ *उक्तिर.* वेश्यावाडो (सं.वेश्या-पाटकः)

वेसास *आरारा. जिनरा. वीसरा.* विश्वास

वेसासी *षडाबा.* विश्वास आपी, विश्वासमां लई (सं.विश्वसयति)

वेह *अखाका. प्रेमाका.* वींध, छिद्र (सं.वेध)

वेहणउ *उक्तिर.* वींधवानुं ओजार, सोयो (सं.वेधनकम्)

वेहलि *ऐतिका.* [वहेली], शीघ्र

वेहांणी *चित्तसं.* वीती गई; जुओ विहाणी

वेही करी *गुर्जरा.* वींधी (*सं.विध्यति) [सं.वेधित]

वेहेणु *नरका.* वहाणुं, प्रभात [सं.विभानक]

वेहेनी *कामा(शा).* अग्नि [सं.वह्नि]

वेहेपार *मदमो.* वेपार

वेहेर *चित्तसं.* जुदापणुं; *नंदब. [चिराड, मार्ग]; जुओ वसुधा दे वहेर, वहेर

वेहेरी *मदमो.* वेरी, [दुश्मन]

वेहेरे *प्रेमाका.* वेरे, साथे, [साथेना प्रसंगे]

वेहेरेशे *चतुचा.* वहेरी नाखशे

वेहेरो *प्राचीका. प्रेमाका.* भेद, तफावत

वेहेवल *कामा(शा).* विह्वळ

वैखरी *अखेगी. प्रेमाका.* वाणी; *कादं(शा).* मानव-वाणी (सं.)

वैगुन्य *चित्तसं.* गुण वगरनी स्थिति, निर्गुण स्थिति [सं.वैगुण्य]

वैताडि *अंबरा.* वैताढ्य पर्वत उपर

वैताल, वैताल *पंचवा.* [वेताळ], वेताली सिद्धिनो जाणकार, [मडदामां प्रवेश करवानी सिद्धि धरावनार एक भूतयोनि]

वैदुर्भी *दशस्कं(२).* वैदर्भी, रुक्मिणी

वैदूर्य *नरका-२.* नील रंगनुं एक रत्न [सं.]

वैदेसिक *आरारा.* परदेशी (सं.वैदेशिक)

वैद्य-वइद (वैद्य विद) *विमप्र.* वैद्यविद्यावाळा, [वैद्य अने विद्वान]

वैद्रभादेश *दशस्कं(२).* विदर्भ देश

वैद्रभी *दशस्कं(२).* वैदर्भी, रुक्मिणी

वैनितेय *शृंगामं.* गरुड (सं.वैनतेय)

वैरोट *नलरा.* एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो, वैराट

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैसंया *नलाख्या.* वैशंपायन ऋषि, महाभारतना वक्ता

वैंस *प्राचीका.* वंश, [कुळ]

वोरण *देवरा.* वहोरवुं ते, भिक्षा लेवी ते [सं.व्यवहर्]

वोरावे *देवरा.* वहोरावे, [भिक्षा आपे]

वोरी *देवरा.* वहोरी, [भिक्षा लई] [सं.व्यवह]

वोलइ, वोळइ *षडावा.* पसार करे, व्यतीत करे [दे.]; *रूपच.* वीते, [व्यतीत थाय]; *अखाका.* वटावे, ओळंगे; **कस्तुवा.* [(रस्तो) वटावे]; जुओ वुलइ

वोलाव्वुं, वोळाववुं *दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. मदमो. हरिख्या.* वळाववुं, विदाय आपवी

वोळावा *अखाका.* मुसाफरीमां साथे रहेता चोकियात

वोळाविया *अखाका.* वोळावा, प्रवासमां साथे जई रक्षण करनार

वोळावी *अखाका.* वोळावा, मुसाफरीमां साथे रहेता चोकियात

वोळे आवे *अखाका.* ठेकाणे आवे, बराबर समजाय, [पार पडे]

वोहोणुं *दशस्कं(१).* विहोणुं, विनानुं

वोहोरतिया *अखाछ.* वहोरनार, [खरीदनार]

वोहोरती *प्रेमाका.* वहोरतियो, वहोरवानुं (खरीदवानुं) काम करनार [सं.व्यवह]

वोहोरावें *देवरा.* वहोरावे, [भिक्षा आपे]

वौढाउर *नलरा.* एक नगर ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

व्यक्त *चित्तसं.* व्यक्ति, प्रगटीकरण

व्यक्तइं *आनंस्त.* व्यक्त थाय

व्यक्तउं *उपबा.* स्पष्ट, समजावीने

व्यक्तभेद *चित्तसं.* व्यक्त सृष्टिना भेद

व्यगति **अखाछ.* [भिन्नत्व, जुदाजुदापणुं]; जुओ विगत्य

व्यगतुं *अखाका.* व्यक्त, स्पष्ट

व्यगतो जुओ वगूतो

व्यजन **प्रेमाका.* [(वायु) ढोळवो ते]

व्यत *अखाछ.* वित्त, धन, माल, [सार]

व्यत्त *चित्तसं.* वित्त, सार, साररूप तत्त्व

व्यध्य *चित्तसं.* विधि, प्रकार

व्यपरीत *मदमो.* विपरीत

व्यर्त्य *चित्तसं.* वृत्ति, वर्तन, स्थिति, व्यवहार

व्यवसाइया *विमप्र.* धंधादारी माणसो, वेपारी [सं.व्यवसायिक]

व्यवहारि *सिंहा(म).* वेपारी (सं.व्यवहारिन्)

व्यवहारीउ *आरारा. नलरा. लावल. विमप्र.* वेपारी (सं.व्यावहारिक)

व्यवेक जुओ वव्येक

व्यवेहारा *पंचवा.* वेपारी (सं.व्यवहारकः)

व्यसनि *लावल.* व्यसन[मां], [आपत्तिमां]

व्यसा *चित्तसं.* वसा, [अंश], टका; जुओ वसा सोइ

व्यहु परि [ब्यहु परि] *उक्तिर.* बेय रीते [सं.द्वि+खलु+प्रकार]

व्यंजन करे *नरका.* पवन नाखे, [वायु ढोळे]

व्यंदूं *नलाख्या.* वंठ्युं, बगड्युं (सं.विनष्ट)

व्यंण *मदमो.* विना

व्यंस *हम्मीप्र.* वंश

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्या- (व्याव-) *वीसरा.* वियाय, जन्म आपे (सं.विजायते)

व्याइ *शृंगामं.* प्रसूताने

व्याऊ *उक्तिर.* वाउ, चामडीमां फाट पडवी ते, वाढिया (सं.विपादिका)

व्याख्यान *चित्तसं.* वर्णन, कोई विषयनुं विस्तारथी करेलुं प्रतिपादन [सं.]

***व्याघ [*व्याध]** *मदमो.* ढेड; जुओ व्याध, व्याधी

व्याध *अखाका. प्रेमाका.* व्याधि, पीडा

व्याध *प्रेमाका.* शिकारी; जुओ व्याघ

व्याधी *प्रेमाका.* व्याध, पारधी

व्याध्य *अखाका.* व्याधि

व्याध्यूं **कादं(शा).* वध्युं, [गाढुं थयुं] (सं.वर्धितम्)

व्याध्यूं **कादं(शा).* [भेद्युं] [सं.व्याधित]

व्याप *ऐतिरा.* फेलावो [सं.]

व्यापति **गुर्जरा.* [व्यापार, व्यवसाय, कर्म, प्रवृत्ति] [सं.व्यापृति]

व्यापार *आरारा.* लावल. कामकाज, प्रवृत्ति, कामगीरी; *विमप्र.* वेपार (सं.)

व्यापारी *कांद(शा). विमप्र.* वेपारी (सं.)

व्यापारण *षडाबा.* वापरवुं ते (सं.)

व्याप्तमान *दशस्कं(१).* व्याप्त

व्यारीउ *उक्तिर.* छेतर्यो (सं.विप्रतारितः)

व्याळ *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सर्प [सं.व्याल]

व्यालउ *प्राचीफा. प्राचीसं.* सांजनुं भोजन, वाळु (सं.विकालिक)

व्याव- जुओ व्या-

व्यावर *जिनरा.* प्रसूति [रा.]

व्यास *विक्ररा.* कथाकार [सं.]

व्यासणउ [व्यासणउ] *उक्तिर.* बेसणुं, बे वखत आसने बेसी जमवानुं व्रत (सं. द्वयासनकम्)

व्याह *वीसरा.* विवाह, लग्न

व्याहणउ *गुर्जरा.* वहाणुं, सवार (सं. विभानकम्)

व्यिंतर *ललिरा.* व्यंतर, भूत

व्युतरे *प्राचीका.* ऊतरे (सं.व्युत्तरति)

व्युत्सृजउं *षडाबा.* छोडुं, विसर्जुं (सं.व्युत्सृज्)

व्यूणा *चंद्रवा.* कपास [दे.वउणी]; जुओ वुंण

व्येद जुओ वेद

व्येष जुओ वरव्येष

व्रख *कामा(शा).* वृक्ष; जुओ वरख, वर्ख

व्रखा *मदमो.* वर्षा

व्रखारत *प्राचीका.* वर्षाऋतु; जुओ व्रखारते

व्रज *आरारा.* समुदाय (सं.)

व्रणव- *सिंहा(म).* वर्णववुं

व्रत *मदमो.* *नक्की, [*स्थिति, *होवुं ते]

व्रत्युं **दशस्कं(२).* [आजीविका] [सं. वृत्ति]

व्रथ *मदमो.* वृथा

व्रथा जुओ वृथा

व्रध *अखाछ. मदमो.* वृद्धि, वधारो

व्रध *प्रेमाका.* वृद्ध, [वडील, मोटेरो]

व्रधा *चंद्रवा.* वृद्ध

व्रय- *प्राचीसं.* वापरवुं, खर्चवुं (सं.व्यय्)

व्रह *नंदब. प्राचीफा. सिंह(शा).* विरह, वियोग

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्रहेणी *मदमो.* विरहिणी

व्रहेनी *चतुचा.* विरहनी

व्राध *अखाका. अखाछ.* व्याधि

व्रासिउ *नलरा.* अयोग्य मार्गे गयो, [भूल करी, खोटुं कर्युं] [सं.विपर्यास परथी]; जुओ वरासइ, व्रांसियउ

व्रासु, व्रांसु *अंगवि. कृष्णबा. *नलाख्या.* भ्रम, [भूल]

व्रांसियउ *प्राचीसं.* विश्वस्त ?, [*भ्रान्ति करी, *गुमाव्युं]; जुओ वरासइ, व्रासिउ

व्रांसु जुओ व्रासु

व्रिष्टय *चित्तसं.* वृष्टि

व्रेह *अखाका. अखेगी. कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. प्रेमाका.* विरह

व्रेहुणी *अखाका.* विरहिणी

व्रेहे *कामा(त्रि). चित्तसं. प्रेमप. मदमो.* विरह

व्रेहेणी *मदमो.* विरहिणी

शकदार *ऐतिरा.* *हुकमदार, [*शक्कादार, *रूआबदार, *प्रभावशाळी] [अ.सिक्कः]

शकट *अखाका. आनंस्त. नरका. प्रेमाका.* गाडुं, गाल्लुं [सं.]

शकल *कादं(शा).* टुकडो (सं.)

शकार *मदमो.* शिकार

शके *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* जाणे के; *मदमो.* संभव छे के; *नलाख्या.* जाणे के, [संभव छे के]

शक्त *नरका.* सशक्त, बळवान, [सक्षम, धनाढ्य] [सं.]

शक्ति *प्रेमाका.* एक शस्त्र

शक्र *नरका.* इन्द्र [सं.]

शग *उषाह.* दीवानी ज्योत (सं.शिखा); *नरका. प्रेमाका.* शंकु आकारनो ढगलो

शगत्य, सगत *सिंहा(शा).* शक्ति [देवी रूपे]

शग्रि *प्राचीका.* उतावळे (सं.शीघ्र)

शज *मदमो.* सज्ज

शज्या *आरारा.* शय्या, सेज

शणगट *नरका.* घूमटो

शणगार *चतुचा.* शृंगार[रस]; *नलाख्या.* शृंगार, शोभा

शतफणा *प्रेमाका.* सो फेणवाळो नाग [सं.]

शत्र *सिंहा(म).* दुश्मन (सं.शत्रु); जुओ शत्रो

शत्रुकार, शत्रूकार *अखाछ. ऐतिरा. नलरा. प्राचीफा. रूपच. विक्ररा.* सदाव्रत, अन्नदानशाला (प्रा.सत्तुक+सं.अगार); जुओ सत्रूकार

शत्रो, शत्र *गुर्जरा.* शत्रु

शथल *नलरा. मदमो.* शिथिल, ढीलुं

शधे (मानेश धे) *अखाछ.* [ध्येयरूप मानीश]

शनि *कादं(शा).* धीमे (सं.शनैः)

शनिशनि, शनीशनी *वेताप. सिंहा(शा).* धीमेधीमे (सं.शनैः शनैः)

शपइ *उक्तिर.* शाप आपे (सं.शपते)

शपरांणू *नरप(द).* जबरुं, [जोरावर] [सं. सप्राण]; जुओ सपराणउ

शबरली *शृंगामं.* शबरी, भीलडी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शबल, शबलुं *कामा(शा).* अत्यंत

शबल स्वभाव *सम्यचो.* मिश्र स्वभाव

शबला *नलाख्या.* *शंबल, *भातुं, *अन्न (सं.शम्बल), [खूब, प्रचुर] [सं.]

शबिका *नलाख्या.* पालखी (सं.शिबिका)

शब्द *चित्तसं.* संज्ञा, नाम

शब्दनी वृत्य *चित्तसं.* शब्दनी वृत्ति – व्यापार

शब्दप्रकाश *चित्तसं.* शब्द – ध्वनि प्रकाशित थवो ते, उत्पन्न थवो ते

शब्दे मारे *चित्तसं.* उपदेशवचन संभळावे

शमशाननी अधिकारिणी *हरिख्या.* शमशानमां सूळीनी सजाने लायक, [मृत्युदंडने पात्र]

शयर *विमप्र.* शरीर; जुओ सयर

शर *चतुचा. वसंफा.* शिर

शरकड *उक्तिर.* शर नामना घासनी सळी, जे बाणना तीर तरीके वपराती (सं.शरः-काण्डः)

शरखंड *प्राचीफा.* साडी माटेनुं एक कीमती वस्त्र (सं.श्रीखण्ड)

शरडी *नरका.* काचिंडा[नी मादा] जेवी – जुदाजुदा रंग बदलती (सं.शरटी)

शरत, शरति *प्राचीका.* *मदमो. संगीतनी एक संज्ञा, [श्रुति]; जुओ शुरतकार, सरत

शरपाव *नरप(द).* [सरपाव], माथाथी पग सुधीनो पोषाक (फा.सरोपा)

शरवन *कादं(शा).* शर नामनी वनस्पति – जेमां फूल आवे, फळ न आवे – तेनुं वन (सं.)

शरशति *विमप्र.* सरस्वती

शरा *दशस्कं(२).* [बाण]; जुओ सरा

शराडुं *चित्तसं.* अंत, छेडो; जुओ सरुं

शरासन *प्रेमाका.* शर – तीरनुं आसन, धनुष [सं.]

शरिखूं *नलाख्या.* सरखुं, जेवुं (सं. सदृक्षकम्)

शरीख *कादं(शा).* शिरीषनुं फूल

शरुया *नंदब.* [सरवा], मोटेथी बोलायेला, [खुल्ला]

शरे (शरे वाते) *मदमो. [चोखखी, खरी (वाते)] [फा.सरह]

शर्त *अखाका.* शरत, करार, [ठराव] [फा.]

शर्णागत जवुं *चंद्रवा.* शरणे जवुं, शरणागत थवुं

शर्म *नलाख्या. प्रेमाका.* श्रम, प्रयत्न; जुओ सरमु

शर्म *नरका.* शरम, लज्जा [फा.]

शर्म *आरारा.* सुख, आनंद (सं.); जुओ सर्म

शर्म्मी *नेमिछं.* [व्यायाम करी, वापरी] [सं.श्रम]; जुओ सरमइ

शर्युं (शर्युं घृत) *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ताजगीनी सुगंधवाळुं [घी]

शर्वरी *अखाका. नरका.* रात्रि [सं.]

शला *अखाछ.* शिला

शलाटु *उक्तिर.* सलाट, शिला घडनारो (सं. शिलाघटकः); जुओ सिलावटउ

शलाय *नरका. *नरप.* शिला, पथ्थरनी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाट, [*अचळ]

शली *प्राचीका.* एक प्रकारनो साल्लो (दे. छल्ली)

शल्य *नरका.* शल्या, शिला, मोटो पथ्थर

शल्या *अखाका. दशस्कं(१). प्रेमाका.* शिला, मोटो पथ्थर

शव *विक्ररा.* शिवना [सं.शैव]

शव *उषाह.* महादेव (सं.शिव)

शवरी *हरिख्या.* कोळण [सं.शबरी]

शशक *प्रेमाका.* ससलुं [सं.]

शशि *गुर्जरा.* ससलुं (सं.शश)

शशिवयणी *आरारा.* चंद्रवदनी

शशिहर, शसिहर *नेमिछं. प्रबोप्र. विमप्र. हरिवि.* शशियर, चंद्र (सं.शशधर)

शशीहर *कृष्णबा.* शशधर, चंद्र

शहियल **नरप.* [*शैल, *पर्वत]; जुओ सैयल

शहीलंकी *कामा(शा).* सिंहना जेवा केडना वळांकवाळा; जुओ लंक

शंकरी *कादं(शा).* कल्याण करनारी (सं.)

शंकवुं *नरका.* शंका करवी, [गभरावुं, लज्जित थवुं]; *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* संशय करवो, [धारवुं, -नो भय राखवो] (सं.शंक्यते); जुओ संकइ

शंकेप *प्राचीका.* संक्षेप

शंखधूनी *प्रेमाका.* शंखनो ध्वनि

शंघ *प्रबोप्र.* सिंह; जुओ शिंघ

शंपत्य *मदमो.* संपत्ति

शंबल *नलरा.* भातुं [सं.]

शंभ, शंभु *अखाका. अखाछ. चित्तसं.* कल्याणकारी [अवस्था], ब्रह्म [सं.शंभु]

शंवछर *कामा(शा).* संवत्सर, [वर्ष]

शंवरामंडप *मदमो.* स्वयंवरमंडप

शंहीआर *प्राचीका.* संहार

शाकट **अखाछ.* [अज्ञानी, अवळे मार्गे गयेला, दुर्जन] [सं.शाक्त]

शाकिनी *अखाका.* एक प्रकारनुं स्त्रीप्रेत, [डाकण]

शाखामृग *प्रेमाका.* वांदरा [सं.]

शात पमाड्या **प्रेमाका.* [नाश पमाड्या] [सं.शात]

शाध्यंणी *मदमो.* संगिनी

शान *उषाह.* सान, समजण (सं.संज्ञा)

शापिणी *कादं(ध्रु).* शापित बनावती

शा भणी *चतुचा.* शाने लीधे, शा माटे

शाम *नलाख्या.* काळुं (सं.श्याम)

शामी जुओ शांम

शायन *प्रबोप्र.* पथारी (सं.शयन)

शारद *अखाका. नरका.* शारदा, सरस्वती

शार्दूल *प्रेमाका.* वाघ [सं.]

***शाल** *गुर्जरा.* शियाळ (सं.शृगाल)

शाळ *प्रेमाका.* चोखा [सं.शालि]

शालक *लावल.* साळा, पत्नीना भाई [सं.श्यालक]

शालि *लावल.* चोखा, [डांगर] [सं.]

शावट *चंद्रवा.* शहावट, शराफीवृत्ति

शाश (शाश काढे) *मदमो.* श्वास [काढे], [बोले]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शासना धरे *चित्तसं.* आश्वासन आपे, प्रोत्साहन आपे, प्रवृत्त थाय ?

शाह **अखाका. अखाछ.* [शाहुकार], प्रामाणिक माणस; जुओ साह

शाहानि *कादं(शा). नलाख्या.* शा माटे

शाहानो *प्रेमाका.* शानो

शाहास्त्र *मदमो.* शास्त्र

शाहि *नलाख्या.* साहे, पकडे (सं.साहयति)

शांझी वेळा *नरका.* सांज – संध्या वखते

शांणा **नेमिछं.* [अनाजनी कोठीमांथी अनाज काढवानुं छिद्र] [रा.]

शांत *प्रेमाका.* संपूर्ण शांत, मृत्युने वश

शांतिक-पुष्टि *प्रेमाका.* ग्रहादिकनुं अमंगल दूर करवा [तथा धनदोलतनी वृद्धि अर्थे] करवामां आवतो धार्मिक विधि

शांत्य *चित्तसं.* शांति

शांत्यमा *चित्तसं.* शांतपणुं

शांत्यो *प्राचीका.* संताड्यो

शांम, शामी, सांमी *कामा(शा).* स्वामी, [पति]

शांमद *मदमो.* सामंत, वीर, सुभट; जुओ सांमद

शांमा *ऋषिरा.* सुंदर स्त्री (सं.श्यामा)

शांशो *मदमो.* संशय; जुओ सांसो

शिक्षा *चंद्रवा.* शिखामण [सं.]

शिक्षापण *दशस्कं(१).* शिखामण

शिक्षारूपपणें *आनंस्त.* उपदेशरूपे

शिख *नरका.* शिखामण [सं.शिक्षा]

शिख *हरिख्या.* माथानी टोच (सं.शिखा)

शिखंड *प्रेमाका.* मोर

शिखि, शिखी *नलाख्या. शृंगामं.* मोर (सं.शिखिन्)

शिणगार *वसंवि(ब्रा).* शणगार, आभूषण (सं.शृंगार)

शित्र *प्रबोप्र.* दुश्मन (सं.शत्रु)

शिथळ *दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका.* शिथिल, ढीली, विखरायेली

शिथिल (गलशिथिल) *नरप.* [गल]स्थल, [गाल]

शिय्या *नलरा.* पथारी (सं.शय्या)

शिर *गुर्जरा. विराप.* शर, तीर

शिर नामीनइं *आनंस्त.* मस्तक नमावीने

शिरावुं *नरका.* सवारमां नास्तो के भोजन करवुं

शिरिइ *कर्पूमं.* सरे, [पार पडे] (सं.सृ उपरथी)

शिरीसु *विमप्र.* साथे; जुओ सरिस

शिरूअ **उषाह.* [धारा] [सं.शिरा]; जुओ शिहिर, सीर

शिलाका *ऋषिरा.* सळियो (सं.शलाका)

शिलावट *विमप्र.* सलाट, [पथ्थर घडनार]; जुओ सिलावटउ

शिवरति *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* शिवरात्रि

शिवरमणी *ऋषिरा.* मुक्तिरूपी रमणी (सं.)

शिवा *विक्रच.* शियाळवी [सं.]

शिषर *अंबरा.* सुषिर, पोलुं – फूंकथी वगाडवानुं वाजिंत्र

शिशुकुमारचक्र **अखाका.* [मगरना प्रकारना शिशुकुमार नामना प्राणीना आकारनुं नक्षत्रमंडार] [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिष्य पाहिं *उक्ति.* शिष्य पासे, शिष्य वडे

शिहिजि *नलाख्या.* सहेजमां (सं.सह्य, प्रा. सहिज्ज)

शिहिर **अखाका.* [सेर, सरवाणी, स्रोत]; जुओ शिरूअ

शिंगी *प्रेमाका.* शिंगडानुं बनावेलुं फूंकीने वगाडवानुं एक वाजिंत्र [सं.शृंगी]

शिंघ *प्रबोप्र.* सिंह; जुओ शंघ, शीघ

शीकारी *प्रेमाका.* स्वीकारी

शीकिरि *अंबरा.* मोटुं छत्र, धजावाळुं छत्र; जुओ सिकिरि

शीकुं **चतुचा. प्रेमाका. षडाबा.* वस्तुओ राखवा माटे अध्धर लटकाववामां आवती छाबडी के झोळी (सं.शिक्य)

शीकोतरी **नलाख्या.* [डाकण, पिशाचिनी]

शीख *अखाका. चतुचा. प्रेमाका.* शिखामण; भेट, [बक्षिस] [सं.शिक्षा]; *कादं(शा). चतुचा. नरका. नलाख्या. मदमो.* विदाय, रजा, [जवानी आज्ञा] (सं.शिक्षा)

शीखडी *शृंगामं.* विदाय

शीखा *कादं(शा).* विदाय (सं.शिक्षा)

शीघ *मदमो.* सिंह; जुओ शिंघ

शीजु(?) **नरप(द).* [*सिद्ध थयेलुं]

शीजे *देवरा.* सीझे, [सिद्ध थाय] [सं. सिध्यति]

शीझतूं *नलाख्या.* सिद्ध थतुं, [फावतुं] (सं. सिध्य-)

शीदाइ *कादं(शा). *नलाख्या. प्रबोप्र.* दुःख पामे, पीडाय (सं.सीद्यते)

शीधु *कादं(शा).* मदिरा (सं.सीधु)

शीप्पे *चित्तसं.* छीप

शीम *नलाख्या.* सीमा, हद

शीमलि *कादं(शा).* शीमळानुं वृक्ष, मोटो रूखडो (सं.शाल्मलि)

शीमाढा *कादं(शा).* सीमा परना खंडिया राजाओ (सं.*सीमावृत); जुओ सीमाढा

शीला *लावल.* शीळा, सौम्य [सं.शीतल]

शीवालखीत (शीवालखीत लग्न) *मदमो.* –, [*घडियां लग्न]

शीश *मदमो.* शिष्या

शीशफूल *दशस्कं(१). प्रेमाका.* माथानुं एक घरेणुं

शीशव, सीसव *वेताप.* सीसम [सं.शिंशपा]

शीश लीधुं *नरका.* [माथे चडाव्युं], स्वीकार्युं

शीस *मदमो.* शिष्या

शींकुं *नरका.* वस्तुओ राखवा माटे अध्धर लटकाववामां आवती छाबडी के टोपली (सं.शिक्य)

शुकलाद *प्रेमप.* पीळुं मखमली वस्त्र (फा. सकलात); जुओ सकलात

शुणु *चतुचा.* सोणुं, स्वप्नुं

शुद्ध *प्रेमाका.* शुद्धि, भान

शुद्धि *हम्मीप्र.* समाचार [सं.]; जुओ सुधि

शुध *चतुचा.* भान [सं.शुद्धि]

शुभवयणी *नलाख्या.* शुभ वचनवाळी

शुभाई *चतुचा.* ?

शुभेरी *चतुचा.* सुंदर, शुभ

शुरतकार *नरप.* स्वर, सूर [सं.श्रुति]; जुओ शरत

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुं *चित्तसं. प्रेमाका.* -मां, प्रत्ये, साथे [सं. सहित]; *प्रेमाका.* जाणे [सं.कीदृशकम्]

शुंब *वेताप.* सूम, कृपण; जुओ शोम, सुंब

शूकर *गुर्जरा. प्रेमाका.* सूवर (सं.)

शूक्त *अखाका.* शुक्ति, छीप

शूध *नरका.* शुद्धि, भान

शून्य *चित्तसं.* छिद्र [सं.]

शूराशूर *नरका.* अति शूरवीर

शूं *कादं(शा). नलाख्या.* साथे, [-मां] (सं. सहितम्)

शूं *कादं(शा).* -ना जेवुं (सं.सदृशकम्)

शृंगारवुं *अखाछ. गुर्जरा.* शणगारवुं

शेख *अखाछ. कादं(शा).* शेष, बाकी, बाकीनो भाग

शेख *दशस्कं(१). नरका.* शेषनाग

शेडि *कादं(शा).* दूधनी सेड, धार [सं.श्रेढि]

शेन *प्रबोप्र.* लश्कर (सं.सैन्य)

शेबास *मदमो.* शाबाश

शेय्या *नलाख्या.* शय्या, पथारी

शेरडी *नरका. प्रेमाका.* शेरी, महोल्लो, मारग

शेरडो *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* मार्ग; जुओ सेरडे

शेलुं *प्रेमाका.* कसबी वणाटनुं वस्त्र – पुरुषो माटे खेस, स्त्रीओ माटे साडी

शेव *नलाख्या.* सेवा

शेवास *चंद्रवा.* सहवास

शेश *प्रेमाका.* वरकन्या अने सीमंतिनी स्त्रीना खोळामां अपातां नाळियेर, पान, सोपारी अने रूपियो

शेहरु *कादं(शा).* फूलनी पाघ (सं. शेखरकः); जुओ सेहरउ

शेहे, सेहे *रूस्तस.* सो [सं.शत]

शोकवुं *उषाह. दशस्कं(१). प्राचीफा.* चूसी लेवुं, शोषी लेवुं (सं.शोष्)

शोगणी *प्रेमप.* शोकयुक्त

शोच *चतुचा.* विमासण, [विचार] [सं.]

शोचइ *उपबा. षडाबा.* शोक करे, दुःखी थाय (सं.शोचति)

शोचना *अखाछ. प्रेमाका.* शोक, दुःख; *नरका.* विचार [सं.]

शो चार *प्रेमप.* चार सो, अनेक

शोण *गुर्जरा.* रातुं (सं.)

शोणुं *प्रेमप.* स्वप्न

शोध्ये *अखाका.* शुद्ध कर्ये, [शोधन कर्ये], तपास करवाथी, विवेक करवाथी]

शोप्पु *षडाबा.* सोजो (सं.शोफ)

शोभ *लावल.* शोभा, सुंदरता; *विमप्र.* मान, [गौरव]

शोभन *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* मनोहर (सं.)

शोम *मदमो.* शुंब, कंजूस; जुओ शुंब, सुम

शोवत *प्रेमप.* सूतां

शोष *आनंस्त.* सूकवी देवां, नाश करवो ते [सं.]

शोषिक *अखाका.* शोषी लेनार, [सूकवी नाखनार] [सं.शोषक]

शौंड *प्रेमाका.* कुशळ, [आसक्त, लगनवाळा] [सं.]

श्यं *उषाह.* सहित, शुं (सं.समम्); जुओ स्यउं

श्यंदन *शृंगामं.* रथ [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्यालक *प्रेमाका.* साळो [सं.]

श्यालाहेली *प्रेमाका.* साळावेली, साळानी पत्नी

श्यांइ *नरप(द).* आलिंगन; जुओ सांई

श्रथल *कादं(शा).* शिथिल, ढीलुं

श्रव *जिनरा.* सर्व

श्रवइ *उपबा.* सांभळे (सं.श्रवति)

श्रवइ *ऐतिका. कादं(शा).* स्रवे, टपके, [झरे]

श्रवणाको वख्य *पंचदा.* पीपळो के तिलकनुं वृक्ष (सं.श्रीमत्), [गोरखमुंडीनुं वृक्ष] [सं.श्रवणवृक्ष]

श्रष्ट *दशस्कं(१). मदमो. सिंहा(शा).* सृष्टि

श्रष्टी जुओ श्रीष्टी

श्राप *दशस्कं(१).* शाप

श्रापवुं *दशस्कं(१).* शाप आपवो

श्रावलूं *शृंगामं.* शकोरुं

श्रावक **अंबरा.* [*श्रावक समा अहिंसक]

श्रावणी *नरका.* बळेव, [श्रावण शुद] पूनम

श्रिय *कादं(शा).* कल्याण (सं.श्रेयस्)

श्रीअनंदन *वसंवि.* लक्ष्मीनो पुत्र, कामदेव (सं.श्रीनन्दन)

श्रीकंत *प्रेमाका.* लक्ष्मीना पति विष्णु, कृष्ण [सं.श्रीकान्त]

श्रीकार *ऐतिका. *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सुंदर, उत्कृष्ट, उत्तम

श्रीकाष्ट *नलरा.* एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

श्रीखंड *नरका.* चंदन [सं.]; जुओ सिरिखंड

श्रीगरण *अंबरा. उक्तिर. नलरा.* खजानानी देखरेख चखनार अधिकारी [सं. श्रीकरण]

श्रीगरणु *उक्तिर.* धनवृद्धि करवी ते, आवकखातुं (सं.श्रीकरणम्)

श्रीजुग *चतुचा.* श्री – लक्ष्मी साथे

श्रीथल *दशस्कं(१).* शिथिल

श्रीनंदन *वसंवि(ब्रा).* श्रीनो पुत्र, कामदेव (सं.)

श्रीपतजी *चतुचा.* लक्ष्मीपति, विष्णु

श्रीपात *चंद्रवा. प्रेमाका. सिंहा(शा).* त्यागी, संन्यासी

श्रीबाफ जुओ बाफ

श्रीमंडळ *दशस्कं(२). प्रेमाका.* सुरमंडळ, एक तंतुवाद्य

श्रीमंत *मदमो.* सीमंत

श्रीमुख *मदमो.* पोते

श्रीमुखइं *आरारा.* पोताने मुखे, [पोते]

श्रीयनंदन *वसंफा.* लक्ष्मीपुत्र प्रद्युम्न, कामदेव [सं.श्रीनंदन]

श्रीवच्छ *उक्तिर.* लक्ष्मीने प्रिय, विष्णु (सं. श्रीवत्सः)

श्रीवंत *चंद्रवा. मदमो.* श्रीमंत, धनिक

श्रीष्टी, श्रष्टी *चंद्रवा.* सृष्टि

श्रुतज्ञान *ऐतिका.* शास्त्रज्ञान [सं.]

श्रुति *चित्तसं.* वेद वगेरे पवित्र शास्त्रो [सं.]

श्रृष्ट *वेताप.* सृष्टि

श्रेण्य *चित्तसं.* श्रेणि

श्रेयोत्र (छउं श्रेयोत्र) *शृंगामं.* अहीं श्रेय छे, [अहीं हुं क्षेमकुशळ छुं]

श्रेष्ट, श्रेष्टि *आरारा.* श्रेष्ठी, शेठ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रोणामां *आरीका. प्रेमप.* स्वप्नमां

श्रोणित *दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* शोणित, लोही

श्रोणित वर्ण *दशस्कं(१).* शोणितवर्ण, लोहीना रंगनुं

श्रोत्र *गुर्जरा.* प्रवाह (सं.स्रोतस्)

श्लाघइ *उक्तिर.* वखाण करे (सं.श्लाघते)

श्लाघिवुं *उक्तिर.* प्रशंसा करवी

श्वपच *अखाका.* चांडाल [सं.]

षट्काया *ऐतिका.* छ [प्रकारना] शरीर, [> प्रकारना जीव]

षडंगइं *अजैसं.* छ अंगे

षडावश्यक *ऐतिका.* सामायकादि छ आवश्यक कार्य [जै.]

षै *पंचवा.* साथे, वडे, [-थी, -ने]

षोडश *आरोंत.* सोळ [सं.]

षोडससिंगार *पंचवा.* स्त्रीए सजवाना सोळ शणगार [सं.षोडशशृंगार]

स *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. षडाबा.* ते (सं.सः)

सइ *आरारा. गुर्जरा. तेरका. विराप. वीसरा. षष्टिप्र.* सो (सं.शत); जुओ सइं, सइ, सि, सें

सइ *गुर्जरा.* बधा (सं.सर्वे)

सइ, सइं *कर्पूमं. प्राचीफा. विक्ररा.* स्वयं, पोते; आपोआप, पोतानी मेळे

सइगू *जिनरा.* साथी [रा.] [*सं.स्वक]

सइजल *उषाह.* पाणी[थी भरपूर]

सइण *आरारा.* स्वजन; जुओ सयण

सइतउ *प्राचीसं.* सहित, साथे

सइतालीस *उक्तिर.* सुडतालीस (सं.सप्तचत्वारिंशत्)

सइथउ, सइंथउ, सयथलउ *प्रद्युचु. प्राचीफा. प्राचीसं. विमप्र. स्थूलिफा.* सेंथो (सं. सीमन्तकः)

सइथु *नलरा.* सेंथा उपर पहेरवानो स्त्रीनो अलंकार (सं.सीमंतकः)

सइफलउं *हम्मीप्र.* *मरणांतिक युद्ध, [युद्ध] [अ.सैफ=तलवार]; जुओ सयफलि

सइमुख *जिनरा.* पोताने मुखे, रूबरू (सं. स्वयं+मुख)

सइयणि *नलरा.* दरजण (सं.सूचिक+णी)

सइर *गुर्जरा. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* शरीर

सइ-हथि *शृंगामं.* पोताना हाथे; जुओ सइंहथ, सय-हाथि

सइं *गुर्जरा. हम्मीप्र.* पोते, पोतानी मेळे (सं.स्वयम्); जुओ सइ

सइं *नेमिछं.* सो [सं.शत]; जुओ सइ

संइत्रीस *उक्तिर.* साडत्रीस (सं.सप्तत्रिंशत्)

संइथउ, सिंथु *तेरका. प्राचीसं. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सेंथो (सं.सीमंतक); जुओ सइथउ

सइंभरिवाळ *वीसरा.* सांभरदेशनो

सइंवर *गुर्जरा.* स्वयंवर

सइंवसि *जिनरा.* स्ववश

सइंहथ *ऐतिका.* पोताना हाथे; जुओ सइ-हथि

सई *आरारा.* सही, खरेखर, जरूर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सई *विमप्र.* दरजी [सं.सूचिक]

सईन *अभिऊ.* सेना (सं.सैन्य)

सईनी धाडि जुओ घाडि सईनी

सईयाणी *अंबरा.* सुयाणी

सउ *तेरका.* ?

सउ *तेरका. नलरा.* बधुं, सौ (सं.सर्व+खलु)

सउ *आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलरा. वीसरा.* सो (सं.शत)

सउकि, सउकी *ऋषिरा.* शोक्य; *आरारा. षडाबा.* सावकी (सं.सपत्नी)

सउगडउ *उक्तिर.* गोळ पेटी (सं.समुद्गकः)

सउड *वीसरा.* रजाई, [दे.सउडि]

सउडउ (ताणि) *प्राचीफा.* मों ढांकीने सूई रहेवुं ते, [सोड ताणीने, रजाई खेंचीने, ओढीने]

सउडि *उक्तिर.* रजाई (*सं.संवृत्तपटी, संवृतिः) [दे.]

सउण *उक्तिर.* पक्षी, [*गीध] (सं.शकुन); *प्राचीसं.* पक्षी (सं.शकुन)

सउण *वीसरा.* शकुन, शुकन

सउणी *उक्तिर.* शकुन जोनार (सं.शकुनिक)

सउन्नउ **ऐतिका.* [पुण्यवंत, पुण्यशाली] [सं.सपुण्य]

सउं *गुर्जरा. प्राचीसं. वीसरा. षडाबा.* साथे, [प्रत्ये] (सं.सहितम्)

सउं **वीसरा.* [जेवुं] [सं.समम्]

सउंपइ *ऐतिरा. वीसरा.* सोंपे (सं.समर्पयति)

सकज, सकजउ *जिनरा.* समर्थ [रा.]

सकति *गुर्जरा.* एक प्रकारनुं शस्त्र (सं. शक्ति)

सकन्ह हर *शृंगामं.* कृष्ण सहित महादेव

सकपण *चतुचा.* सगपण

सकयत्थो *षष्टिप्र.* कृतार्थ, [सफळ] (सं. सकृताथी)

सकलात *नरका.* एक जातनुं ऊननुं कापड, बनात, [जाडा तंतुनुं पण मुलायम कापड, मखमल]; जुओ शुकलाद

सकार *प्राचीफा.* शिकार, मृगया; *शृंगामं.* ?, [शिकार, भक्ष, भोग]

सकाल *गुर्जरा. वेताप. सिंहा(शा).* सवार (सं.सुकाल)

सकुट *नरप.* दुष्टजन, [अधर्मी]; जुओ साकट

सकुनवी *पंचवा.* शकुन जोनार (सं.शकुनवित्)

सकुंअला जुओ कमल-सकुंअला

सकोमल, सकोमळ *दशस्कं(१). वेताप. सिंहा(शा).* सुकोमल

सक्खि *गुर्जरा.* मैत्री (सं.सख्य)

सख *प्राचीका.* सुख

सखर, सखरउ *आरारा. ऐतिका. जिनरा.* **प्राचीसं.* सरस, सुंदर (रा.)

सखाई, सखाईउ, सखाईय *अंबरा. आरारा. ऐतिरा.* **नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल.* सहायक, साथीदार, मित्र; *ऐतिका.* मित्रता, सहायकता

सखावुं **उषाह.* [साक्षी अपावुं]

सखी *चंद्रवा.* सुखी, [आनंदित, प्रसन्न]

सखो *सिंहा(शा).* शालिग्रामनुं नाम (सक्को=

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पथ्थरनी लखोटी)

सग *शृंगामं.* दीवानी ज्योत [सं.शिखा]

सगणी *प्रद्युच्.* आयुधविशेष ?

सगत जुओ शगत्य

सगति *आरारा. देवरा.* शक्ति

सगबग *ऋषिरा.* [शिथिल, ढीलुं], वेरविखेर [रा.]

सगर *गुर्जरा.* खोदकाम करनार जाति

सगरुं *अखाका.* हाथमां अग्नि राखवो वगेरे द्वारा करवामां आवती साचजूठनी परीक्षा, [कसोटी रूपे करवामां आवतो चमत्कार, दिव्य], [*वचननी खातरी] [*सं.संगर]; **सिंहा(शा).* [*वचन, *प्रतिज्ञा]

सगलइ *उक्तिर.* सघळे, बधे [सं.सकल परथी]

सगलउ, सगळउ *आरारा. ऐतिका. वीसरा. षडाबा.* सघळो, बधो (सं.सकल)

सगसणीजु *सिंहा(म).* सगुंवहालुं (सं.स्वक+स्निह्यक); जुओ सणीजां

सगाल *विक्ररा.* सुकाळ

सगासणीजा *विक्रच.* सगांवहालां

सगासिइ *नेमिछं.* पासे (सं.सकाशे)

सगांसणीजा *शीलक.* सगां-स्नेही [सं. स्वक+] (सं.स्निह्-, प्रा.सिणिज्ज्ञ-)

सगुण, सगुणउ *वीसरा.* गुणवान [सं.]

सगुर *आरारा.* सुगुरु

सगुरवां *अभिऊ.* गौरव साथे

सग्ग *ऐतिका. प्राचीफा.* स्वर्ग, देवलोक

सघढां *विमप्र.* घाटां

सघण *गुर्जरा. विराप.* वधारे जाडुं, घट्ट (सं.सुघन)

सघन **ऐतिरा.* [घाटा, गाढ, निबिड] [सं.]

सघाडे *०जिनरा.* समुदायमां (सं.शृंगाटक); जुओ संघाडउ

सचांण **ऐतिका.* [यथार्थ] [रा.]

सचित *आरारा.* सचेत, [सावधान, जाग्रत]; सजीव (वस्तु)

सचित्रला (सचित्तला) *शृंगामं.* चित्रवाळा; [सचेत, सावधान]

सच्च *गुर्जरा.* साचुं (सं.सत्य)

सच्छाइ *आरारा.* छायावाळुं

सछाय *आरारा.* छायावाळुं

सज *अभिऊ. देवरा.* सज्ज

सजकारिउ *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सज्ज कर्युं (सं.सज्ज+कृ)

सजडीयु *आरारा(व).* साजडियो, सादडो, आंजणो, अर्जुनवृक्ष (सं.सर्ज)

सजन *आरारा. गुर्जरा. देवरा.* स्वजन, सगां

सजंन *कामा(त्रि).* स्वजन

सजवाल *चारफा.* मनोहर, [रूपवंत] (सं. सज्जित परथी ? सर. हिं.सजीला) [*हिं. सज+वाल]

सजाई, सजाही, सजी *कांद(शा). गुर्जरा. नंदब. लावल.* सजाई, तैयारी (सं. सज्जता)

सज्जइ *गुर्जरा.* सजे, तैयार करे (सं.सज्ज-)

सज्जन *आरारा.* सजन, स्वजन

सज्झाय *उक्तिर.* स्वाध्याय

सज्य *मदमो.* सजाई, गोठवण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सज्यउर *प्राचीसं.* सत्यपुर, साचोर

सज्या *शीलक.* शय्या, पथारी

सज्ञ *सिंहाशा.* सज्ञ, तैयार ?

सज्झाय *आरारा.* स्वाध्याय, धर्मचिंतन

सटा *लावल.* केशवाळी [सं.]

सटी *अखाछ.* सटकी

सट्ठी *नेमिछं.* साठ [सं.षष्टि]

सट्ठुवि *ऐतिका.* सुष्ठु, श्रेष्ठ, [सुंदर रीते]

सठ *अखाछ.* *सीधो, *सहेलो सट, [*शठ]; *आनंस्त.* शठ, [शाठ्य, धूर्तता]

सठामे *अखाछ.* सारे (साचे) ठेकाणे

सडका *प्रेमाका.* नाकमां वायु खेंचीने करवामां आवता अवाज

सढाणा *गुर्जरा.* बख्तरथी सज्ज (सं.संनद्ध)

सणउ *कर्पूमं.* सुणो [सं.श्रुणोति]

सणकारा *नरका.* सणका, शूळ भोंकाती होय एवी पीडा

सणग *कस्तुवा. शृंगामं.* सुरंग, भोंयरुं

सणगट *प्रेमाका.* घूंघट

सणमणु *नलाख्या.* सूनमून (*सं.शून्यमौनकः) [सं.शून्यमनस्]

सणसर *प्राचीफा.* हीलचाल, [अणसारो, *पगरव]; जुओ सणसार

सणसार *दशस्कं(२). प्रेमाका.* गुप्त सान, इशारो; जुओ सणसर

सणीजां *अंबरा. ऐतिरा. षष्टिप्र.* स्नेहीओ (सं.स्निह्यक); जुओ सगसणीजु, सगासणीजा, सगांसणीजा, सुणीजउ

सत *नेमिछं.* सत्त्व, [दैवत, कौवत]

सत *आरारा.* साचुं [सं.सत्य]

सत कहो *नरका.* सत्य कहो, चोक्कस कहो, [बराबर कहो]

सतपीढिया *जिनरा.* परंपरागत, [सात पेढी-थी वसता] [सं.सप्त+पीठ]

सतरभेदी *ऐतिका.* सत्तर प्रकारनी

सतर सेंस *ऐतिरा.* सत्तर हजार [सं. सप्तदश+सहस्र]

सतसटि, सतसठि *उक्तिर. जिनरा.* सडसठ [सं.सप्तषष्टिः]

सतहत्तरि, सतहुत्तर, सतहुत्तरि *उक्तिर. उपबा. षडाबा.* सत्योतेर (सं.सप्त-सप्ततिः)

सतंतर *अखेगी.* स्वतंत्र

सताब *चंद्रवा.* ?, [उतावळ]; *देवरा.* उतावळ (फा.शिताब)

सति *कादं(शा).* छते, छतां

सतेतालउ जुओ एकु सउ सतेतालउ

सत्त *गुर्जरा. नेमिछं.* सात (सं.सप्त)

सत्तरि *उक्तिर.* सत्तर; सित्तेर (सं.सप्तदशः वा सप्ततिः)

सत्तवंति *शृंगामं.* सत्यवंती

सत्तसइं *नेमिछं.* सात सो [सं.सप्तशत]

सत्ता *अखेगी.* हस्ती; *चित्तसं.* प्रभाव [सं.]

सत्ताणवइ *षडाबा.* सत्ताणुं (सं.सप्तनवतिः)

सत्तु *ऐतिका.* सत्त्व, [*ब्रह्म, *ईश्वर, *देव]

सत्तूकार *गुर्जरा.* सदाव्रत (प्रा.सत्तूक+सं.अगार); जुओ सत्रूकार, शत्रुकार

सत्तोतर सय *षडाबा.* एक सो सात (सं. सप्तोत्तरशत)

सत्थ *ऐतिका.* [शास्त्र] [प्रा.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्थवाह *गुर्जरा.* सार्थवाह, वणझारो

सत्थि *गुर्जरा.* साथे (सं.सार्थ)

सत्थु *गुर्जरा.* समुदाय (सं.सार्थ)

सत्यारथ *प्रेमाका.* साचा अर्थवाळुं, साचेसाचुं

सत्र ०*नंदब.* अन्नसत्र [सं.]

सत्रिहा *षडाबा.* ?

सत्रुकार, सत्रूकार *अंबरा. विक्ररा. सिंहा(म).* सदाव्रत (सं.सकृतुक+अगार); जुओ सत्तूकार

सथल *चतुचा. प्रबोप्र. मदमो.* शिथिल, ढीलुं

सद *वीसरा.* सदा, हमेशां

सदइ *अंबरा.* स्वादथी खवाय, सदे, [अनुकूळ आवे] [सं.स्वदति]

सदभाय *आरारा.* साचेसाच, खरेखर

सदभाव *आरारा.* राग ?, [जगतना पदार्थोने] सत्य मानवा ते ?

सदलुं *नेमिछं. *विमप्र.* दळवाळुं, [पुष्ट]

सदाफल *आरारा(व).* ऊंबरो, नाळियेरी वगेरे केटलांक वृक्ष सदाफल कहेवाय छे, परंतु संभवतः वर्णकोमां फळ तरीके उल्लेखातुं नाळियेर [सं.]

सदासव *प्राचीका.* महादेव (सं.सदाशिव)

सदि *कादं(ध्रु).* *हमेश (सं.सदैव)

सदि *कादं(शा).* जलदी (सं.सद्यस्)

सदीव *आरारा. ऐतिका.* सदैव, हमेशां

सदुतरां, *उषाह.* विशिष्ट समजावट, [त्वरित योग्य उत्तर] [सं.सद्योत्तर]

सदूतरु *नलरा.* तुरत उत्तर आपनार, हाजर-जवाबी (सं.सद्योत्तर)

सदोदित *अखेगी.* हमेशां प्रकाशमय [सं.]

सद्द *गुर्जरा. प्राचीफा. *लावल.* साद, अवाज (सं.शब्द)

सद्दहइ *आनंस्त. उक्तिर. उपबा. नलरा.* श्रद्धा राखे (सं.श्रद्धते)

सद्दहण *ऐतिरा.* श्रद्धा, आस्था

सद्दहणा *आनंस्त. ऐतिका.* श्रद्धा

सद्दहे *ऐतिका.* श्रद्धा राखे [सं.श्रद्धते]

सद्दाविय- *तेरका.* बोलावायेलुं (सं.शब्द परथी)

सद्दि *ऐतिका.* शब्दथी, [संज्ञाथी, नामथी]

सद्ध *प्राचीसं.* श्रद्धावाळो (सं.श्राद्ध)

सद्धार *प्राचीसं.* सहायरूप [सं.संधार]

सधर *कर्पूमं.* सलामत, सध्धर

सधरे *सिंहा(शा).* सुधरे

सधव *आरारा.* पतिवाळी, सौभाग्यवती [सं.]

सधारइ *लावल.* सहाय करे (सं.संधारयति)

सधारइ *आरारा.* नभावे, चलावे, पार पाडे (रा.सधाणौ); *प्रेमप. प्रेमाका.* सिधावे, पधारे

सधारण *प्राचीसं.* सहायरूप, [उद्धाररूप, आश्रयरूप] (सं.संधारण)

सधारी *लावल.* सहाय करनार

सधावइ *आरारा.* सिधावे, जाय; *प्रेमाका.* सिद्ध करावे

सधि *अभिऊ.* फत्तेह (सं.सिद्धि)

सनकारे *कृष्णच. नरका. नेमिछं. *लावल.* सान करे, इशारो करे, संकेत करे

सनबंध *आरारा.* संबंध (रा.)

सनमन्या *प्रेमाका.* शून्य मनवाळा, शून्य-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनस्क

सनमन्यो *प्रेमाका.* शून्य मननो थयो

सनसतपणा **प्रद्युचु.* [कीर्तिथी दीपता] [रा.]

***सनहो (दूत) [सुन हो दूत]** **पंचवा.* [हे दूत, सांभळ]

सनाद्ध **उषाह.* [सज्ज, कटिबद्ध]; *नेमिछं.* छांटेलुं, [-थी भरपूर] (सं.सन्नद्ध)

सनाह *देवरा. ललिरा.* कवच, बख्तर [सं. संनाह]

सनाहीयां *अभिऊ.* सन्नाह – बख्तर धारण कर्यां, [सज्ज थया]

सनि सनि *कादं(शा).* धीरेधीरे (सं.शनैः शनैः)

सनीचर *उक्तिर.* शनिनो ग्रह (सं.शनैश्चर)

सनूर, सनूरउ *आरारा. ऐतिका.* सुंदर, सुरूप (रा.); *आरारा.* जोशभर्युं, उमंग-भर्युं (रा.)

सनेठाहु *षडाबा.* संनिष्ठ

सनेपातक *विमप्र.* संनिपात, सनेपात

सनेवट *नरप.* स्नेहसंबंध (सं.स्नेहवृत्ति)

सनेहल *तेरका.* स्नेहाळ (सं.स्नेहल)

सन्नाणह *ऐतिका.* सद्ज्ञान

सन्नाह *प्रबोप्र. वसंफा. विक्ररा.* बख्तर (सं.)

सन्निया *आनंस्त.* संज्ञी जीवो, मनवाळा जीवो

सन्नी *षडाबा.* मनवाळा जीवो (सं.संज्ञी)

सन्या *देवरा.* संज्ञा, [चिह्न]

सन्यान *ललिरा.* शाणो, चतुर (सं.सज्ञान)

सपइ *उक्तिर.* शाप आपे (सं.शपति)

सपटावता *प्रेमाका.* [लगावी देता], जकडी देता, बंध करता

सपत *चतुचा. प्रबोप्र.* शपथ, प्रतिज्ञा

सपत *अभिऊ.* सात (सं.सप्त)

सपत्नप्रभु जुओ संपतप्रभु

सपद *चारफा.* *स्वपद, [(पोताना) समान पद]

सपदि *गुर्जरा.* तरत ज (सं.)

सप धात *मोसाच.* सात धातु

सपरवार *आरारा.* सपरिवार

सपरस *सिंहा(शा).* स्पर्श

सपराण *प्रबोप्र.* श्रेष्ठ; [सबळ, जबरुं; घणुं-बधुं] [सं.सप्राण]

सपराणउ *आरारा.* सबळ, भारे; *उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. नलरा. नलाख्या. लावल. *विमप्र.* शूरवीर, बळवान, जबरुं (सं.सप्राण); जुओ शपरांणूं, सपरुं

सपरि *आरारा.* सुपेरे, सारी रीते

सपरुं (सपराणुं) *हरिख्या.* जबरुं, जोरावर

सपर्णकुमार *आरारा.* सुपर्णकुमार, गरुड

सपल्हाणु *लावल.* पलाण साथेनो, सवारी माटे सज्ज करेलो [सं.स+पर्याण]

सपसन्न *तेरका.* सुप्रसन्न

सपाखर *मदमो.* छंदविशेष

सपाय *आरारा.* हानिकारक (सं.सापाय)

सपारस *मदमो.* *फरियाद, [माफी, सहाय वगेरे माटे भलामण] (फा.सिफारश)

सपीआरा *ऋषिरा.* *प्यारवाळा, [अत्यंत प्यारा] [सं.सुप्रियतर]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सपुरिस *आरारा.* सुपुरुष

सप्तक्षेत्र *विक्रारा.* धन वापरवा माटेनां सात क्षेत्र, सात बाबतो (जै.)

सप्तभुंमीयां *ऐतिरा.* सात माळना

सप्तभूमि *विक्रारा.* सप्त माळ, [सात माळवाळुं]

सप्फुर *प्राचीसं.* स्फूर्ति सहित

सफार *अखाका.* घणो, [खूब ज] [सं.सु+स्फार]

सबद (पंच सबद) *वीसरा.* ध्वनि, [पांच प्रकारनां वाजिंत्र]; जुओ पंचशबद

सबद *आरारा.* अवाज (सं.शब्द)

सबधी *प्रेमाका.* मजबूत बांधानी, सुबद्ध, बळवान

सबल, सबळ *आरारा. कामा(त्रि). चतुचा. नरका. प्रेमाका.* अत्यंत, घणुं, भारे

सबळउं *अखाछ.* पुष्कळ, [मजबूत, दृढ]; **लावल.* [मोटेथी, जोरथी]

सबूधी *अखाका.* सद्‌बुद्धिवाळो, [मरमी] [सं.सबुद्धि के सुबुद्धि]

सब्दभेदी *पंचवा.* अवाजने आधारे धार्युं बाण मारनार (सं.शब्दभेदो)

सभट *प्रबोप्र.* योद्धो (सं.सुभट)

सभाइ, सभाय *आरारा.* खरेखर, साचेसाच

सभाव *आरारा. गुर्जरा. प्रबोप्र.* स्वभाव, प्रकृति; *विमप्र.* स्वभाव, [सहजपणुं]

सभाशृंगार *विक्रारा.* सभानो शणगार [सं.]

सम *तेरका.* वडे ?, [*सर्वत्र, *संपूर्ण, *बराबर]

सम, समइ *आरारा. लावल. षडाबा.* समे, समये

समउ *आरारा.* साथे (सं.समम्)

समउ *जिनरा. नरका. प्रेमाका.* समय

समकाल *गुर्जरा.* साथेसाथे, ए समये ज (सं.)

समकति *आनंस्त. ऐतिका. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. विमप्र.* सम्यक्‌त्व, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा [जै.]

समक्ष *कादं(ध्रु).* सामे बेठेलुं, [सामे उपस्थित]; उघाडी रीते, [प्रगटपणे]

समग्ग, समग्गउ *आरारा. ऐतिका. तेरका.* समग्र, संपूर्ण

समग्गलय *प्राचीसं.* समग्र, सहित

समछरी *प्रेमाका.* संवत्सरी, मृत सगांओनी मृत्यु-तिथिए करावावामां आवतुं भोजन [के दानादि क्रिया], [वर्षी]

समण *प्राचीफा.* स्वप्न, शमणुं

समणडउं *नलरा.* स्वप्न, शमणुं

समण-पाणी *नरका.* गरम पाणीने माफक आवे एवुं करवा माटे उमेरवामां आवतुं ठंडुं पाणी

समणह *ऐतिका.* श्रमण, [जैन साधु]

समता **नेमिछं.* [समत्व, इष्टानिष्ट परत्वे तटस्थता, रागद्वेषमांथी मुक्ति]

समति-गुपति *ऋषिरा.* उपयोगपूर्वक गमन, भाषण वगेरे पांच प्रकारनी समिति [सम्यक् प्रवृत्ति] अने त्रण प्रकारनी गुप्ति एटले मन, वचन अने कायाने काबूमां राखवा ते [जै.]; जुओ समिति

समतुल्य *दशस्कं(२).* समान

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समतोल *प्रेमाका.* समतुल्य, बरोबर, समान

समथ जुओ सुसमथ

समद- **वीसरा.* [भेट आपवी, उपहार करवो] [हिं.]

समदाए *नरप.* समूहमां (सं.समुदाय)

समदाय *गुर्जरा.* समुदाय

समदृष्ट *प्रेमाका.* समान दृष्टि राखनारा

समधात *उक्तिर.* समान प्रकृतिनुं – प्रकारनुं (सं.समधातुः)

समय *वाग्भवा.* परंपरा, रूढि [सं.]

समयउ *आरारा.* भेळव्युं, नाख्युं (सं.सम्+अय्)

समर *अखाका.* *रतिक्रीडा, [रतिसंग्राम] [सं.]

समरणी *ऐतिका. दशस्कं. प्रेमाका.* स्मरणी, २७ मणकानी जपमाळा

समरति *वसंफा-शु. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* समरात्रि, दिवसरात्रि सरखां होय एवुं

समरपंथी *ऋषिरा.* एक प्रकारना बावाओ [योगीओ]

समरसइ *प्रबोप्र.* बरोबर रीते, [मेळपूर्वक]

समरंगण *गुर्जरा. तेरका.* समरांगण, युद्धभूमि

समरा-मंडप *कृष्णच.* स्वयंवरमंडप

समरावता **षडाबा.* [करावता] (सं.समार-चयति)

समरि समरि थाइ *चारफा.* याद करीने युद्धमां थवा दे, [याद करीने युद्ध लडवा आव]

समर्त्यमुद्रा *विराप.* मृत्युना जेवी [निद्रानी] मुद्रा (सं.समृत्युमुद्रा); जुओ समृत्यमुद्रा

समर्थाई *उपबा.* समर्थता

समल(?) *नरप.* *स्थळ, [*युद्ध] [*सं.संमर्द]

समल *प्राचीसं.* ?, [*पापी, *दुर्जन]

समलंकिय *तेरका.* सुशोभित (सं.समलंकृत)

समलित *अखेगी.* शबलित, -ना रंगे रंगायेलुं, [-थी युक्त]

समली *अभिऊ.* समडी

समवडि **अंबरा. आरारा. ऐतिका. कृष्णबा. विमप्र.* समोवड, सरखुं; समोवडमां, [सरखामणीमां]; *उषाह.* साथे

समवसरण *आरारा. लावल.* तीर्थंकरनी देशना माटेनुं सभास्थान [जै.] [सं.]

समवसर्या *आरारा.* पधार्या (सं.समवसृ-)

समवाय *ऐतिका.* समूह [सं.]

समश्या *दशस्कं(१).* सान, इशारो; जुओ समस्या

समसरिस *प्राचीसं.* समसदृश, जेवुं

समस्या *दशस्कं(२).* सान, गुप्त संज्ञा [सं.]; जुओ समश्या

समहर, समहरि *गुर्जरा. प्राचीसं.* संग्राम, रणमेदान

समहूरति *आरारा.* सुमुहूर्ते, सारे मुहूर्ते

समंध *कादं(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रबोध. प्रेमाका.* संबंध, संपर्क

समंधी *दशस्कं(१). देवरा. सिंहा(१).* संबंधी

समाचरइ *षडाबा.* आचरण करे, करे (सं. समाचरति)

समाचरण *आनंस्त.* सम्यग् आचरण [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाण, समाणउ *नरका. प्रेमाका. लावल. वीसरा.* समान, समान (वयनुं), जेवुं

समाणइ *उक्तिर.* समाप्त करे (*सं.समापयति) [दे.]; **स्थूलिफा.* [भोगवे] [दे.]

समाणही *आरारा.* सरखेसरखी

समाणी *नरका.* [समोवणयुक्त], गरम पाणीने माफक आवे एवुं करवा थता ठंडा पाणीना उमेरणवाळुं

समाधइ *आरारा.* समाधिपूर्वक

समाधि *विक्ररा. विमप्र.* शाता, शांति, दुःखनुं निवारण

समाध्ये *नरका.* समाधिए, समाधिमां, [ध्यान करवामां]

समापइ *आरारा. ऐतिका. जिनरा.* आपे, समर्पित करे (सं.समर्प्)

समापत्ति *आनंस्त.* ध्यान[नो एक प्रकार], [चोक्कस प्रकारनी चित्तस्थिति थवी ते] [सं.]

समारइ *उक्तिर. उपबा.* सरखुं करे, साफ करे, [कापीकूपीने व्यवस्थित करे]; **उपबा.* [समुं करे, आखुं करे]; *नरका-२.* सरखुं करे; **अखाका. चतुचा. नरका. प्रेमाका. वीसरा.* सजे, शणगारे; *नेमिछं.* सुधारे [सं.समारच्]

समारथ **सिंहा(शा).* [शिव, महादेव]

समारथी **सिंहा(शा).* [शिवभक्त]

समारिवुं *उक्तिर.* समारवुं

समावस्था *आनंस्त.* त्रण गुणोनी तर-तम भाव विनानी साम्यावस्था

समास *प्रेमप.* समावेश [सं.संवास]

समाहि **ऐतिरा.* [समाधि, शांति]

समांणउ *ऋषिरा.* सरखो (सं.समान)

समांणसां *कस्तुवा.* सज्जनो [सं.सु+मानुषः]

समि *तेरका.* एक वनस्पति, समडी, खीजडी (सं.शमी)

समि कियउ *उक्तिर.* सरखुं कर्युं

समिणडउं *प्राचीफा.* स्वप्न

समिति *आरारा. चारफा.* सम्यक् प्रवृत्ति, उपयोगपूर्वक गमन-भाषण वगेरे [जै.]; जुओ समति-गुपति

समिद्ध *ऐतिका. ऐतिरा. प्रद्युचु.* समृद्ध

समिध *आरारा.* समृद्धि

समी *आरारा.* साथे [सं.समम्]

समीस *सिंहा(शा).* ?

समुक्ष जुओ समूह

समुज्जल *तेरका.* समुज्ज्वल

समुद्द *गुर्जरा.* समुद्र

समुद्रात *नलरा.* सागरो [सं.समुद्र+अ.आत]

समुधो *अखाका.* संपूर्ण; जुओ समूधी

समुहत्तु **लावल. विमप्र.* समोतुं, महत्त्ववाळुं, [गौरववंत] [सं.समहत्त्व]

समुंद *वीसरा.* समुद्र

समुं पडे *चित्तसं.* सीधुं ऊतरे, समजाय

समूधी **अखाछ.* [समस्त, आखेआखी]; जुओ समुधी

समूलकाष *आनंस्त.* मूळथी लईने [सीमा, परिधि सुधी], [समग्रपणे] [सं.स+मूल +कक्ष]

समूह (समुक्ष) *ललिरा.* समक्ष

समृत्य *दशरकं(१).* स्मृति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समृत्यमुद्रा *गुर्जरा.* मृत्युना जेवी [निद्रानी] मुद्रा (सं.समृत्युमुद्रा); जुओ समर्त्यमुद्रा

समे *अखाका. नरका. नरका-२. प्रेमाका.* समय, समये; *चतुचा.* समय, संकेत

समे-मान *प्रेमाका.* समयनुं माप, आयुष्यनुं प्रमाण

समेय *तेरका.* समेत(शिखर) तीर्थ

समो *नरका.* समय

समोगुण *चित्तसं.* शमगुण, सत्त्वगुण

समोतुं *नरका. प्रेमाका.* महत्तावाळुं, [गौरववंतुं] (सं.स+महत्ता)

समोपम *आरारा.* समान उपमा जेने आपी शकाय तेवुं [सं.]

समोपइ *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं.* समर्पे, आपे; *शृंगामं.* सोंपे (सं.समर्प्)

समोभ्रम *ऐतिका.* *संभ्रम, [*पुत्र, *तुल्य]

समोवण *प्रेमाका.* गरम पाणीने माफकसरनुं करवा माटे नाखवामां आवतुं ठंडुं पाणी

समोसरण *गुर्जरा. नेमिछं.* तीर्थंकर के एवी महान विभूतिना आगमन प्रसंगे रचवामां आवती सभा के परिषद [सं.समवसरण] [जै.]

समोसरे *आरारा. ऐतिका. देवरा. षडाबा.* आगमन थाय, पधारे (सं.समवसृ)

समोह *प्रबोप्र.* समूह

समोहोले *चित्तसं.* संमुखे, हजराहजूर

सम्म *जिनरा.* सम्यक्त्व[मोहनीय], [एक कर्मप्रकार, जेमां मिथ्यात्वनां कर्मदळो दबाई रह्यां होय अने व्यवहारमां सत्यधर्मनो स्वीकार होय] [जै.]

सम्मल *तेरका.* शामळुं (सं.श्यामल)

सम्माण- *प्राचीसं.* उपभोग करवो [सं.सं+मानय्]

सम्यक्त *आनंस्त.* सम्यक्त्व, सम्यग्दर्शन, [सत्यधर्मतत्त्वमां श्रद्धा] [जै.]

सय *गुर्जरा. तेरका. जिनरा. षडाबा.* शत, सो; जुओ सइ

सयगुण, सयगुणउ *उपबा. ऋषिरा.* सो गणुं (सं.शतगुण)

सयण *आरारा.* स्वजन; जुओ सइण

सयणाचार *उक्तिर.* स्वजन-व्यवहार (सं.-स्वजनाचार)

सयथलउ जुओ सइथउ

सयफलि *हम्मीप्र.* *मरणान्तिक युद्धमां, [युद्धमां]; जुओ सइफलउं

सयर *आरारा. उक्तिर. उपबा. *कर्पूमं. गुर्जरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. रूपच. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). विराप. षष्टिप्र.* शरीर; जुओ शयर

सयल, सयळ *अभिऊ. आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. कृष्णच. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. शीलक. स्थूलिफा.* सकल, सर्व

सयवत्ति *तेरका.* शतपत्री, एक वनस्पति, [सेवती, सफेद गुलाब]; जुओ सेवंत

सयवर *प्राचीफा.* स्वयंवर

सय-हाणि *शृंगामं.* पोतानुं नुकशान

सय-हाथि *शृंगामं.* पोताना हाथे; जुओ सइ-हथि

सयंतउ *गुर्जरा-टि.* आनंदित (दे.सयत्त)

सयंबर *गुर्जरा.* श्वेत वस्त्रधारी (सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्वेताम्बर)

सयंवरु *गुर्जरा.* स्वयंवर

सया (सया धरि) *आरारा.* ?, [*विश्रान्त था] [*सं.शय]

सयाण **अखेगी.* [विद्वत्ता, पंडिताई] (सं. सज्ञान उपरथी)

सयाणउं, सियाणउं *अखेगी.* **प्राचीका. प्राचीसं.* शाणुं

सयाणी (सहियाणी) *आनंस्त.* सखी

सयांन *अखेगी.* संज्ञा, [संकेत] (सं.संज्ञान उपरथी)

सर *गुर्जरा. वसंफा. षडाबा.* शर, बाण

सर *आरारा. तेरका. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* स्वर

सर- *आरारा. ऐतिरा. उषाह. गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* शिर, माथुं

सर- *नलरा.* चालवुं, [व्यवहार थवो], [सिद्ध थवुं] [सं.सृ]

सरखडी *आरारा(व).* सरकड, सरखड, मुंज घास (सं.शर)

सरखुं *चित्तसं.* मळतुं, अनुरूप, योग्य

सरग *प्रेमप.* स्वर्ग

सरघा *शृंगामं.* मधमाखी (सं.)

सरघू *अभिऊ.* सरगवानां वृक्ष (सं.शिग्रु)

***सरडउ** [**करडउ**] **विमप्र.* [*कठोर, *करडकणो]

सरण *तेरका.* शरण

सरणाइपंजर, सरणाइपंजर *हम्मीप्र.* शरणागतना रक्षण माटे पिंजर समान

सरणाति *प्राचीका.* शरणे आवेली (सं. शरणागत)

सरणि *गुर्जरा.* शरण आपनार (सं.शरण्य)

सरत, सर्त्ति *प्राचीका.* संगीतनी एक संज्ञा, [श्रुति]; जुओ शरत

सरतरि सार *चारफा.* चंदन[के कल्पवृक्ष]ना सत्त्व के चूर्ण वडे (सं.सुरोत्तर=चंदन उपरथी?) [*सं.सुरतरु]

सरतरी *आरारा(व).* सुरतरु, कल्पवृक्ष (रा. सरतर)?

सरतरू *ऐतिरा.* कल्पवृक्ष

सरदइ [**सरदहइ**] *देवरा.* श्रद्धा राखे (सं. श्रद्+धा)

सरदहइ *आरारा.* माने (सं.श्रद्धते); जुओ सरदइ

सरदहिवउ *आरारा.* श्रद्धा राखो

सरनिकर *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि-(ब्रा).* बाणनो समूह [सं.शरनिकर]

सरपण *नरका. प्रेमाका.* बळतण, लाकडां

सरपा *लावल.* सर्प, साप

सरपाल *आरारा.* सरोवरनी पाळ

सरब *वीसरा.* सर्व, बधुं

सरभ *ऋषिरा.* एक जंगली पशु (सं.शरभ)

सरभरि *ऐतिका.* *बराबरी, [*दंड के सजा करवानो भाव] [रा.]

सरभि *प्राचीफा.* सुगंधी, [सुगंधयुक्त] (सं. सुरभि)

सरमइ **विमप्र.* [(शस्त्र)व्यायाम] करी, वापरी] [सं.श्रम्]; जुओ शर्म्मी

सरमकला *कृष्णच.* शस्त्रकळानो अभ्यास, [शस्त्र चलाववानी विद्या]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरमंडल *आरारा.* एक वाद्य, स्वरमंडल

सरमां *आरारा(व).* एक करियाणुं

सरमुं **गुर्जरा.* [व्यायाम, प्रयोग] (सं.श्रम); जुओ शर्म

सरल *आरारा(व). तेरका.* चीडनुं झाड (दे.)

सरलउ *उक्तिर.* दीर्घ, प्रलंब; *तेरका.* सीधुं (सं.सरल+क)

सरलियां *नरका.* हाथनां कांडांनां आभूषण

सरवइ *उक्तिर. गुर्जरा.* टपके, चूवे, वहे (सं.स्रवति)

सरवण *अभिऊ. कामा(त्रि). कामा(शा). तेरका. प्राचीसं.* श्रवण, कान

सरवबरति *प्राचीसं.* संपूर्ण संयमधर्म, जैन साधुव्रत (सं.सर्वविरति)

सरवस, सरवसु *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सर्वस्व

सरवस्त *दशस्कं(१). मदमो. रूस्तस.* सर्वस्व

सरवी *प्रेमाका.* सरवानी, सिद्ध थवानी, पार पडवानी [सं.सृ]

सरवो-सरविं *अभिऊ.* सौ (सं.सर्व)

सरशी **कादं(शा).* [वावनो तळावडी जेवो कोठो] [सं.सरसी]; जुओ सरसी

सरशी *चतुचा.* साथे [सं.सदृश]

सरस *आरारा(व).* सरसडो (सं.शिरीष) ? सरसछाल – एक करियाणुं

सरसइ *तेरका. प्राचीफा.* सरस्वती

सरसउपाटण *उक्तिर.* सरस्वती पाटण, सिद्धपुर पाटण, अणहिलवाड पाटण

सरसउं *अखाका.* जेवुं; *चित्तसं.* एकरूप; *वीसरा. षडाबा.* साथे (सं.सदृश); *प्रेमाका.* पासे, नजीक, [साथे जोडायेल, लिप्त]

सरसति, सरसती *उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* सरस्वती

सरसद *प्रेमप.* स्वर अने शब्द ?

सरस-मणु *अखाका.* सरस [प्रेमरसयुक्त] मनवाळुं

सरसरी *उषाह.* आकाशगंगा (सं.सुरसरित्); जुओ सरि

सरसवेल *उक्तिर.* सरसवनुं तेल (सं.सर्षप-तैलम्)

सरसा **प्रबोप्र.* [शिर वडे, माथुं नमावीने] [सं.शिरसा]

सरसि *नेमिछं.* सरशे, पार पडशे [सं.सृ]

सरसिउं *नेमिछं.* सरसुं, साथे [सं.सदृश]

सरसिय *वसंफा.* साथे (स.सदृशक); जुओ सरसीय

सरसिय *वसंफा(ल).* सुरसिक, [रसपूर्ण]

सरसिव *गुर्जरा.* सरसव (सं.सर्षप)

सरसी *गुर्जरा.* सरोवर, जळाशय (सं.); जुओ सरशी

सरसी *आरारा. गुर्जरा. तेरका.* **नेमिछं. प्रेमाका.* साथे (सं.सदृशिका); *आरारा.* जेवी; साथे, तरफ

सरसीय, सरसिय *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सरसी, साथे (सं.सदृश)

सरसीय *गुर्जरा.* *कमळ (सं.सरसिज), [*साथे]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरसे (सरसेजं) **गुर्जरा.* [शरशय्यामां]

सरसेलि जुओ सेलि

सरस्युं *आरारा.* साथे [सं.सदृश]

सरहुं *आरारा. गुर्जरा.* सुगंधी, सुगंधयुक्त (रा.); *अभिऊ.* सुगंधी पदार्थ (सं. सुरभि)

सरंगट *अखाछ.* घूमटो, घूमटो वाळेली; *लावल. विमप्र.* घूंघट

सरा **प्रेमाका.* [बाण]; जुओ शरा

सराइ **पंचवा.* [प्रशंसा करी] [सं.श्लाघ्, हिं.सराह-]; *चित्तसं.* सहराय, खुश थाय, आनंद पामे; जुओ शराय, सराय

सराख **नेमिछं.* [*चूर्ण] [*प्रा.सरक्ख]

सराजम **अखाछ.* [प्रबंध, बंदोबस्त, तैयारी] (फा.सरंजाम)

सराडे *अखाका. अखाछ.* सीधा मार्गे

सराध *उक्तिर.* श्राद्ध, [पितृओने पिंडदान वगेरे]

सरापु *गुर्जरा.* शाप

सराय, सरायें **दशक्कं(२). *प्रेमाका.* [आनंद पामे]; जुओ सराइ, सहराये

सरालउ [असरालउ] *गुर्जरा.* पुष्कळ, पूरेपूरुं; जुओ असराल

सरा लगी *नरका.* छेडा सुधी, संपूर्ण

सराविय *प्राचीसं.* श्राविका

सरास **ऋषिरा.* [?]

सरासर *कर्पूमं. *नरका.* पुष्कळ, पूरेपूरुं (फा.)

सराह *आरारा.* प्रशंसा (सं.श्लाघा, प्रा. सलाहा)

सराहे *अखेगी.* *प्रशंसा करे, [आनंद पामे] [सं.श्लाघ्]; जुओ सहराये

सराहो *अखेगी.* *प्रशंसा, *वधामणी, *आनंदोत्सव, [प्रशंसा करो, स्तुति करो] [सं.श्लाघ्]

सरां *प्रेमाका.* सरोवर [सं.सरस्]

सरि *तेरका.* नदी (सं.सरित्); जुओ सरसरी

सरि **गुर्जरा.* [शरथी, बाणथी]

सरि *प्राचीफा.* सेर, माळा (सं.सर); आड, शोभा माटेनी रेखा

सरि *उषाह.* प्रसरे (सं.सृ-)

सरि, सरिइं *ऐतिका. नेमिछं.* स्वरे, स्वरथी

सरिकेश *उषाह.* श्रीकेशव, [लक्ष्मीपति] [सं. श्रीका+इश]

सरिखा *लावल.* सरखा, समान (सं.सदृक्षक)

सरिस, सरिसउ, सरिसिउ *आरारा. कर्पूमं. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्रबोप्र. लावल. वीसरा.* साथे; *ऋषिरा. ऐतिरा. जिनरा.* सरखुं, जेवुं; *उषाह.* वडे (सं.सदृश) [दे.सरिस]; जुओ शिरीसु

सरिसव *उक्तिर.* सरसव (सं.सर्षपः)

सरिसिउ जुओ सरिस

सरीसीय *वसंफा.* साथे [सं.सदृश]

सरीआ, सरीईआ **कामा(त्रि). कामा(शा).* सरैया, सुगंधीदार वस्तुओ वेचनार [सं. सुरभि परथी]

सरीखउ *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं. षडाबा.* जेवुं, सरखुं (सं.सदृक्ष)

सरीरिचिंता *आरारा.* शरीरचिंता, मळत्याग-नी वृत्ति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरीसउ *प्रबोप्र.* साथे (सं.सदृश)

सरु *वसंफा(ल).* स्वर, अवाज

सरुइ *कर्पूमं.* सरवे (सादे), [खुल्ले (सादे)] (*सं.सरुज); जुओ सरुवे

सरुओ, सरुवो *प्रेमाका.* चाटवो, कडछीना जेवुं लाकडानुं एक साधन

सरुदे *प्रेमाका.* सहृदय, हृदयवाळो [लागणीवाळो, दयाळु]

सरुवे *नरका.* सूरीला, मीठा, [खुला, मोटा]; जुओ सरुइ

सरुवो जुओ सरुओ

सरुं *अखाछ.* छेडों, अंत, [छेवट]; जुओ शराडुं

सरू *कस्तुवा.* चरु ('च'नो 'स' उच्चार)

सरूआ **चारफा.* [सरळ, सीधा, तरत असर करे तेवा]

सरूप *आरारा. चित्तसं.* स्वरूप

सरूप *आरारा.* हकीकत, वृत्तांत (रा.)

सरे *अखाका. अखेगी. चित्तसं.* अंते; *अखाका.* सराडे, मार्गे

सरे *ऐतिका.* स्वरथी

सरेण *चंद्रवा.* ?

सरेणीआ *कामा(त्रि).* सराणिया ?

सरेस *उषाह.* साथे [सं.सदृश]

सरोडां *अखाछ. ०दशस्कं(१). प्रेमाका.* राडां, [सूकां, रसकस वगरनां मलोखां]

सर्खप *शृंगामं.* सरसव (सं.सर्षप)

सर्त्ति जुओ सरत

सर्पण *दशस्कं(१).* सरपण, बळतणनां लाकडां

सर्म *आरारा.* आनंद, सुख (सं.शर्म); जुओ शर्म, सुखसर्मा

सर्वघाती *आनंस्त.* आत्माना मूळ गुणनो सर्वांशे घात करनार कर्म (जै.)

सर्वथा, सर्वथी *प्रेमाका. हरिख्या.* हरकोई रीते, [पूर्णतया], जरूर, खचीत (सं.)

सर्वस *गुर्जरा. दशस्कं(१). नरका. प्रबोप्र.* सर्वस्व, बधुं

सर्वस्त *प्रेमाका. सिंहा(शा).* सर्वस्व

सर्वेश *चित्तसं.* सर्वनो ईश, चैतन्य के ब्रह्मस्वरूप

सर्वोसरु *उक्तिर.* सामान्य सभाखंड, दीवाने-आम (सं.सर्वावसरः)

सळ *प्रेमाका.* सोळ, मारनी लीटीओ

सलइ **विमप्र.* [सळवळे]

सळका *प्रेमाका.* प्रबळ इच्छा

सलक्खण *गुर्जरा.* सुलक्षण, सारां लक्षणोवाळी

सलग *चित्तसं.* संलग्न, जोडायेलुं, सळंग, एकरूप

सळग *कृष्णबा.* सणगो, कोंटो

सळ बेसे *अखाका.* मेळ पडे, सरळ बने, [समजण पडे]

सलसलीआ *लावल.* सळवळया, [हलमल्या]

सलहइ *प्राचीसं.* प्रशंसा करे (सं.श्लाघ्; हिं. सराहना)

सलहियइ *ऐतिका.* प्रशंसा करवामां आवे छे

सलहीजइ, सलहीअइ, सलहीयइ *गुर्जरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनरा. वखणाय, प्रशंसा थाय (सं. श्लाघ्यते)

सलाख (सलाख करी) *नरका.* *चलाखो, *गांसडी, [*पोटली बांधी]

सलावइ *शृंगामं.* सालवे, [खूंचाडे] [सं. शल्य-]

सलाह *उक्तिर.* श्लाघा

सलि* *गुर्जरा.* [*बंधनमां, *सकंजामां] [रा.]

सलिउं *प्रद्युच.* ('सल्लिउं'ने स्थाने) साल्युं (सं.शल्य परथी); जुओ सल्लइ

सलिता, सलीता *अखाका. अखाछ. चित्तसं. नंदब. प्रेमाका.* सरिता, नदी

सलील *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* लीलायुक्त, सुंदर (सं.)

सलुणो *नरप(द).* मनोहर, सुंदर [सं.सलवण]

सलूझवुं *अखाछ.* समजवुं, [जाणवुं]

सलूणउं *ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. वीसरा.* सलोणुं, सुंदर (सं.सलवणक)

सलूणडा *ऐतिका.* सुंदर

सले बख्तर **प्रेमाका.* [सले (एक प्रकारनुं बख्तर) तथा बख्तर] [अ.सिलह; रा.]

सल्ल *गुर्जरा. तेरका.* शल्य, साल, पीडारूप

सल्लक्षण *आनंस्त.* सारा लक्षणवाळी [सं.]

सल्लइ *नेमिछं.* साले, [खूंचे] (सं.शल्य); जुओ सलिउं

सल्लुद्धारु *षष्टिप्र.* (अधर्मरूपी) शल्य दूर करवुं ते (सं.शल्योद्धार)

सव *गुर्जरा. नलाख्या. षडाबा.* बधा (सं. सर्वे); जुओ सेव

सव *प्राचीका.* शिव, महादेव

सवइ *विक्ररा.* सर्वे

सवइ वार *उक्तिर.* सर्वदा, सदा; जुओ सवि वार

सवकि *आरारा.* सावकी (सं.सपत्नी)

सवच्छी, सवछी *दशस्कं(१). प्रेमाका. सिंहा(शा).* सवत्सा, वाछरडावाळी, वाछडा साथे

सवट्ठसिद्धि (सब्बट्ठसिद्धि) *ऐतिका.* सर्वार्थसिद्ध (अनुत्तर विमानो), [देवलोकनुं नाम] [जै.]

सवडि *प्राचीसं.* सोड, [रजाई, ओढण] [दे. सउडि]

सवण *गुर्जरा.* कान (सं.श्रवण)

सवत्ती *शृंगामं.* सपत्नी, शोक्य

सवन्न *आरारा(व).* शीवण, सवननुं झाड (सं.श्रीपर्णी)

सवलह- *प्राचीसं.* विलेपन करवुं [दे.]

सवा **विमप्र.* [सवायो लाभ ए अर्थनो उद्गार]

सवाडूउ *उक्तिर.* सानुकूल; जुओ सावडू

सवाणो *अखाछ.* आरामथी, [साजोसमो]

सवार *उक्तिर.* सवेळा, शीघ्र

सवारा, सवारां *नरका. प्रेमाका. लावल.* सवेळा, शीघ्र, वहेलां

सवारी *अखाका. प्रेमाका.* सवेळा, जलदी; जुओ संवारी

सवारुं, सहवारुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सवेळा, वहेलुं, जलदी

सवाली [अवाली] **शृंगामं.* [अवाळु,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दांतनां पेढां] [दे.अवालुआ]

सवां *गुर्जरा.* सोनानुं (सं.सुवर्ण-)

सवि *आरारा. ऐतिका. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* सौ (सं.सर्वे)

सविकहि *ऋषिरा. नलरा.* सौ कोई

सवियारां *शृंगामं.* सविकारा, विकारयुक्त

सविलक्ख *कृष्णच.* झंखवाणो [सं.सविलक्ष]

सवि वार *गुर्जरा. चारफा. तेरका.* हमेशां (सं.सर्वे+वारा); जुओ सवइ वार

सविसविहूं *लावल.* सर्वथी, बधांथी

सविहु *नलरा.* सर्वे

सविहूं गमा *उक्तिर.* बधी बाजु

सवील *जिनरा.* युक्ति, [उपाय, रस्तो] [अ. सबील]

सवे *लावल.* सर्वे

सवेकंहुनू *कृष्णबा.* सौनो, [सौ कोईनो]

सवेध (रसकसवेध) **प्राचीफा.* [रस, कस (परीक्षा) अने विदग्धता]

सवेलीय *हरिवि.* *सवेळा (के सवेली, वेली साथे ?)

सवो जुओ सुवो

सव्व *ऐतिका.* सर्व

सव्वरिय *ऐतिका.* रातमां [सं.शर्वरी]

सव्वट्ठसिद्धि जुओ सवट्ठसिद्धि

सश्रुषा *आरारा.* शुश्रूषा, सेवाचाकरी, सार-संभाळ

सस *उषाह.* *ससणी, [*शोष]

ससइ *उक्तिर.* श्वास ले (सं.श्वसिति)

ससउ *नलरा.* ससलो (सं.शशक)

ससमय *जिनरा.* स्वशास्त्र, [स्वमत] [सं.]

ससहरु *ऐतिका.* शशधर, चंद्र

ससा *गुर्जरा. नेमिछं.* ससलां [सं.शशक]

ससिया *अखाका.* श्वसिया, श्वास लीधो

ससिर *ऋषिरा.* ठंडुं (सं.शिशिर)

ससिवयणि, ससिवयणी *ऐतिरा.* शशि-वदनी, चंद्र जेवा मुखवाळी

ससिहर *प्राचीसं. लावल.* शशियर, चंद्र (सं.शशधर)

ससीअर *कामा(शा).* चंद्र [सं.शशधर]

ससुधा *नेमिछं.* सुधा – अमृत सहित

ससुर *अंगवि. कृष्णबा. प्राचीफा.* सुस्वर, मधुर स्वरवाळुं

ससुर, ससुरउ *प्राचीसं. षडाबा.* ससरो (सं.श्वशुर)

ससूग *उक्तिर.* दयाळु (सं.सशूक); *उपबा.* सूगवाळो

सह *गुर्जरा.* बधा (सं.सहु)

सहइकार *हरिवि.* आंबो (सं.सहकार)

सहकार *गुर्जरा. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आंबो (सं.)

सहगुरु *आरारा. प्राचीफा. लावल.* शुभगुरु

सहजि सलूणओ *चारफा.* सहजसुंदर, स्वाभाविक रीते ज मनोहर (सं.सहज+सलवणकः)

सहजोगी *जिनरा.* सयोगी [केवली], [जेमां शरीरादिना व्यापारो होय छे एवी केवल – शुद्ध ज्ञानी आत्मावस्था] [जै.]

सहड *गुर्जरा.* योद्धो (सं.सुभट)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहण *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सहन करवुं ते

सहमो *चतुचा.* समय, समो

सहराये *अखाका. अखेगी.* प्रशंसा करे, आनंद पामे; जुओ सराय, सराहे

सहलउ **ऐतिका.* [सफळ, सार्थक]

सहवायो *प्रेमाका.* पकडायो

सहवारुं जुओ सवारुं

सहस, सहिस *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वीसरा.* सहस्र, हजार

सहसकूट *ऐतिका.* हजार शिखरवाळुं मन्दिर

सहसकरु *ऐतिका.* सूर्य, हजार किरणवाळो

सहसफूल *नलरा.* स्त्रीनुं एक घरेणुं

सहसरसनि *ऐतिरा.* हजार जीभ वडे

सहसंबवण *चारका. प्राचीफा.* अनेक आंबानां वृक्षोवाळुं (सं.सहस्राम्रवन)

सहसा *चित्तसं.* एकाएक

सहसाराम *तेरका.* सहस्राराम, [अनेक आंबावाळुं उद्यान]

सहस्र-कमळ *प्रेमाका.* कमळ जेवी हजार आंखवाळा इन्द्र

सहस्स *षडाबा.* सहस्र, हजार

सहाई *ऋषिरा.* सहाय, मददगार, [मित्र]

सहाजो *प्रेमाका.* *सहाय करजो, [*छाजो, *शोभजो]

सहाय *आरारा.* साथोसाथ ?

सहाय *अखाका.* साहे, पकडे, ग्रहण करे [सं.साध्]

सहायी **आनंस्त.* [बंधुजन, मित्र] [सं.]

सहायीयांनउ समूहु *उक्तिर.* बंधुजनोनो समुदाय

सहार *प्राचीसं.* आंबो (सं.सहकार)

सहावो *आरारा.* स्वभाववाळो

सहि *तेरका.* सखी; जुओ सही

सहि **वसंवि(ब्रा).* [*साथे, *सखी]

सहि, सहिउ, सहीय *गुर्जरा.* साथे (सं. सहित); [*खरेखर]

सहि ए *ऐतिका.* हे सखी

सहिकार *आरारा.* आंबो (सं.सहकार)

सहिकार *विमप्र.* [जयजयकार] [सं. साधुकार]

सहिगुरु *नलरा. नेमिछं. लावल. विमप्र. हम्मीप्र.* कल्याणकरी गुरु [सं.शुभगुरु]

सहिज *सिंहा(म).* उदारता; जुओ कुसहिज, सेहज

सहिजइ *ऋषिरा.* सहजभावे, स्वाभाविक रीते

सहिथउ, सहिथिउ *उषाह.* सेंथो [सं. सीमंत-]

सहिनाण *गुर्जरा. जिनस. वीसरा.* लक्षण, चिह्न, ओळख (सं.*साभिज्ञान)

सहिय *वसंफा(ल).* *सखी; *वसंवि(ब्रा).* खरेखर

सहिय *तेरका.* सहित

सहियर *ऐतिका.* सखी

सहियाणी जुओ सयाणी

सहियारी *दशस्कं(२).* शाकणनी सहियर डाकण?, [*कोई अधम देवजाति]; *प्रेमाका.* सखी, सहियर

सहिस *विक्रारा.* सहस्र; जुओ सहस

सहिसातकार *सिंहा(म).* एकाएक, [वगर-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विचार्यापणुं]

सहिसिउ *विमप्र.* सहन करशो [सं.सह्]

सहिं *नरप.* सिंह

सही *चित्तसं.* खरी, साची, चोक्कस; ज, भारवाचक अव्यय

सही *कृष्णबा. दशस्कं(१). प्रेमाका.* सिंह

सही *अखाका. आरारा. *कादं(शा). कामा(त्रि). गुर्जरा. दशस्कं(१). नरका. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. विराप.* नक्की, खरेखर, साचुं

सही, सहि *गुर्जरा. नरका. वसंफा. वीसरा.* सखी

सहीअ *ऋषिरा. विमप्र.* सहियर, साहेली, सखी

सहीआरु *ऋषिरा.* मित्रता

सहीइ *वसंवि.* हे सखी

सहीइ *वसंवि.* सहन करी शकाय [सं.सह्]

सहीजन *प्रेमाका.* सखीजन, सहियरो

सहीतुं *अखाका.* साथेनुं, साथे रहेलुं

सहीय *तेरका.* सहित; जुओ सहि

सहीय *आरारा.* सखी, सहियर

सहीयारणी *सिंहा(शा).* संहारणी, [संहार करनार]

सहीलंकी *कामा(त्रि).* सिंहना जेवी पातळी केडवाळी

सहीस्युं *आरारा.* जरूर (रा.)

सहीं *प्रेमाका. मदमो.* सिंह

सहु-कां *अभिऊ.* सहु कोई (सं.सर्व+खलु+कानिचित्)

सहु नडिया *ऐतिका.* बधा नष्ट थया

सहूं *चंद्रवा.* सहु

सहे *प्रेमाका.* सह्य थाय, माफक आवे, [अनुकूळ आवे]

सहेटि *प्रद्युचु.* ?

सहेसां *चित्तसं.* सहसा, एकाएक, आकस्मिक

सहो जुओ सीहो

सहौ *उषाह.* सौ

-सं *पंचवा.* -ने

सं *प्राचीका.* शाथी, केम (सं.किदृशं)

संक *विक्रच.* शरम, लाज [सं.शंका]

संकइ **अभिऊ.* [गभराय, भयभीत थाय]; *उक्तिर. वसंफा(ल). *वसंवि(ब्रा).* संशय करे, [धारे, -नो भय राखे]; *वीसरा.* भयभीत थाय, संशय धरे, [लज्जित थाय] (सं.शंकते); जुओ शंकवुं

संकट **वसंफा. *वसंवि(ब्रा).* [-थी भरेला]; जुओ कंटकसंकट

संकटाव्या **प्रेमाका.* [दबावीने, वच्चे जग्या राख्या वगर गोठव्या]

संकरम्यो *प्रेमाका.* संक्रम्यो, गयो, पेठो

संकल *प्राचीफा.* सांकळ (सं.शृंखला)

संकलेस *आनंस्त.* क्लेशवाळुं, [दुःखरूप] [सं.संक्लेश]

संकष्ट *दशस्कं(१).* संकट

संकंदिण *प्राचीसं.* इन्द्र (सं.संक्रन्दन)

संकाणउ *उपबा.* शंका धरावतो, [भीति धरावतो]

संकातउ *उपबा.* शंका पामतो, [भय पामतो]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकारिय *प्राचीसं.* अंत्येष्टि क्रिया करी [सं.संस्कारिता]

संकाश ०*ऋषिरा.* सरखो [सं.]

संकीर्ण *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सांकडुं [सं.]

संकुचइ *उक्तिर.* संकोचाय, लज्जित थाय (सं.संकुचति)

संकुल *तेरका.* व्याप्त, युक्त (सं.)

संकोडी *नरका.* खेंची, [ओछुं करी, हरी] (सं.संकृष्ट); *षडाबा.* संकोची, ओछुं करी, समेटी

संक्रमइ *आनंस्त.* संक्रमण करे

संक्रमाविया *षडाबा.* खसेड्या, एक स्थानेथी बीजे स्थाने मूक्या (सं.संक्रम् परथी)

संक्रोश *प्रेमाका.* विलाप, [दुःखनो चित्कार]

संक्षा *चित्तसं.* संख्या, (अहीं) वजनियानां माप

संक्षेपइ *उक्तिर.* टूंकावे (सं.संक्षिपति)

संख *अभिऊ. ऐतिरा.* संख्या

संख *गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंफा(ल).* शंख

संखारा (संखारा ऊलटिया) पाणी गाळ्या पछीनो [कपडामांनो] कचरो [गमे त्यां नाख्यो]

संखाहोली *उक्तिर.* शंखावली, एक वनस्पति (सं.शंखपुष्पी)

संखेपइ *शीलक.* संक्षेपमां, टूंकमां

संखेव *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. सिंहा(म).* संक्षेप,, टूंकाण

संगर *गुर्जरा.* युद्ध (सं.)

संगहणइं *आरारा.* ग्रहण, लेवुं ते (रा.)

संग्रइ *आरारा.* ग्रहण करे, ले (रा.)

संग्रही *आरारा.* ग्रहण करीने, लईने, धरीने (रा.) [सं.संग्रह्]

संघ *उषाह. देवरा.* सिंह

संघकेसरा *आरारा.* सिंहकेसरा, लाडुनी एक जात; जुओ सिंघकेसरा

संघयण *जिनरा.* शरीरनुं संगठन, [हाडकांना सांधाओनो मेळ, ए निर्णीत करतुं नामकर्म] [सं.संहनन] [जै.]

संघवइ *ऐतिका.* संघपति, संघनायक

संघवाछल्य *आरारा.* पोताना धर्मना लोको प्रत्ये अनुराग [सं.संघवात्सल्य]

संघाडउ *जिनरा. देवरा. *षडाबा.* (साधुओनो) समुदाय (सं.संघाटक); जुओ साधुसंघाडउ

संघात *ऋषिरा.* समूह (सं.)

संघात, संघाति *अखाका. आरारा. ऐतिका. चतुचा. जिनरा. ललिरा.* संगाथ, साथ; संगाथे, साथे [सं.]

संघाथे *रूस्तस. सिंहा(शा).* संघाते, साथे

संघार *अखाका. कामा(त्रि). कामा(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.* संहार

संघारण *चित्तसं.* संहार

संघारवुं *चंद्रवा. दशस्कं(१).* संहारवुं

संघारो *प्राचीफा.* नाश, हिंसा (सं.संहार)

संघासन *कृष्णबा.* सिंहासन

संघाहिव *तेरका.* संघाधिप, [संघपति]

संच *अखाका. चतुचा. नलाख्या. नंदब. प्रेमाका. मदमो. शीलक. शृंगामं.* युक्ति, उपाय; *अखाछ.* अंदरनी करामत,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[रचना; युक्ति, उपाय]; *कादं(ध्रु)-टि.* जुक्ति, साचवट, [काळजी]; रचना; *चाळो, [युक्ति, उपाय]; *ताल, [युक्ति, करामत]; *चित्तसं.* करामत, युक्ति, रचना, गोठवण, आंटीघूंटी; तंत्र, विधि; *चंद्रवा.* भेद, रहस्य; [युक्ति; व्यवहार]

संच *आरारा.* संचय, संग्रह; *प्रेमाका. मोसाच.* सामग्री, सरसामान

संचइ *उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं. वीसरा.* भेगुं करे, संघरे; *प्रेमाका.* [मनमां गोठवाय, बेसे, गोठे], रुचे (सं.संचि-)

संचकार *उक्ति.* वस्तुनी लेवडदेवडमां अपातुं बानुं, (सं.सत्यङ्कार); *ऋषिरा.* [बानारूप वस्तु], [निश्चित] संकेत[रूप वस्तु]; **गुर्जरा. विराप-अनु.* [बानुं], [आगोतरी] जोगवाई

संचर *विक्रच.* हिलचाल, संचार

संचरे *चित्तसं.* जाय, गति करे, पहोंचे

संचलिते *आरारा.* हलनचलनथी

संचवण्यु *आरारा.* मिश्रित थयेल, तैयार थयेल (रा.)

संचा *देवरा.* संचित करेला

संचारि *आरारा.* नाखे [सं.संचारयति]

संचे **नरका.* [संचमां, लागमां]

संचेत *मदमो.* सचेत, [जाग्रत, काळजीवाळो]

संजत *वीसरा.* तैयारी, सजावट [दे.संजत्ति]

संजम *आरारा. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. देवरा. षडाबा.* संयम; जैन साधुदीक्षा

संजमसिरीय जुओ सिरीय

संजलनउ *जिनरा.* संज्वलनवाळो, कषायनो एक प्रकार, [तद्दन सादा, टूंक समय रहेनारा मनोविकारो] [जै.]

संजा *कामा(त्रि).* संध्या, सांज

संजिम *प्राचीफा.* दीक्षा, संसारत्याग (सं. संयम)

संजुउ *जिनरा.* संयुक्त

संजुत्त *आरारा. ऐतिका.* संयुक्त, मिश्रित, सहित

संजोडि *जिनरा.* साथेसाथे, एकसाथे

संजोव- *प्राचीसं.* एकत्र करवुं, संचित करवुं (सं.संयोज्; हिं.संजोना)

संज्ञा *आरारा.* सभानता, सचेतता (सं.)

संज्यम *चित्तसं.* संयम

संझ *तेरका.* सन्ध्या, सांज; *ऐतिका. षष्टिप्र.* संध्या, [संधिकाळ, दिवसना भाग]

संझेरण **विमप्र.* [साफसूफी, व्यवस्थित करवुं ते]

संझ्याकाल *देवरा.* संध्याकाळ

संठ- *वीसरा.* मूकवुं, जोडवुं (सं.संस्था-)

संठवइ *ऐतिका. शृंगामं.* स्थापे, मूके

संठाविउ *ऐतिका. तेरका.* स्थाप्यो, नीम्यो (सं.संस्थापित)

संठिउ *ऐतिका.* स्थापित थया (सं.संस्थित)

संठिवउ **ऐतिका.* [स्थाप्या] [सं. संस्थापित]

संड **उषाह. नलरा. विक्रच. हम्मीप्र.* सांढ (सं.षण्ड)

संडासा **षडाबा.* [साथळ, पग वगेरेनां संधिस्थानो] [प्रा.संडास, सं.संदंश]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संत *आरारा.* निर्मल, चोख्खां, सारां (रा.)
संता **ऋषिरा.* [संतप्त, दुःखी]
संतान *वसंवि(ब्रा).* श्रेणी (सं.); जुओ किशलसंतान
संतानीअ *षष्टिप्र.* वंशज (सं.संतानिक)
संतापण *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* संताप आपनार [सं.संतापन]
संतावइ *गुर्जरा. तेरका. षडाबा.* संतापे, तपावे, पीडे [सं.संतापयति]
संतावण *गुर्जरा.* संताप आपनार (सं. संतापन)
संतावियउ *आरारा.* संतप्त, थाकेल; *तेरका.* संतापित
संति जुओ जंति
संति *आरारा.* छे
संतिकरउ *गुर्जरा.* शांति आपनार
संतु *गुर्जरा.* शांत, भलो
संतुट्ठ *ऐतिका.* संतुष्ट
संतोक *मदमो.* संतोष
संतोख *नरका.* संतोष
संत्रुष्ट *दशस्कं(२).* संतुष्ट
संथउ *प्राचीफा.* सेंथो (सं.सीमन्तकः); जुओ फाड
संथव *ऐतिरा.* संस्तव, स्तुति
संथारउ *उक्तिर. उपबा. देवरा. षडाबा.* साथरो, साधुओनी शय्या; *ऐतिका.* [माया-ममता, खानपान तजी मरण-पथारी करवी] (सं.संस्तारक)
संथुउ *जिनरा.* स्तुति करी (सं.संस्तुतः)
संथुणइ *ऐतिका. षष्टिप्र.* स्तवे, स्तुति करे (सं.संस्तुनोति)
संद *उक्तिर.* तणछनुं झाड, [*एनो गुंद] (सं.स्यन्दन)
संदरी *प्राचीफा.* सुंदरी
संदिसइ *उक्तिर.* आज्ञा – रजा आपे (सं. सन्दिशति)
संदिसावउं *षडाबा.* अनुज्ञा मागुं
संध *अखाका.* संधुं, बधुं
संधाण *गुर्जरा. प्रेमाका.* बाण पर तीर मूकवुं ते, ताकवानी क्रिया, निशान (सं.संधान)
संधि *ललिरा.* फाट [सं., प्रा.]
संधि *नेमिछं.* सांधा; *प्राचीसं.* –, [काव्यनो रचनाप्रकार] [सं.]
संधि-बंध *प्राचीसं.* –, [संधि नामनो काव्य-नो रचनाप्रकार] [सं.]
संधियउ *उक्तिर.* धनुष्य पर बाण चडाव्युं (सं.सन्धितः)
संधियमक *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आंतर्यमक (सं.)
संधिरेहु *नलरा.* संधिना दस्तावेज लखनार (सं.संधिलेखक)
संधी सोरी *प्रेमाका.* संधी – बधी सोरी – उझरडीने, [संपूर्णपणे]
संधू *अभिऊ.* सिंदुवार, नगोडनां वृक्ष
संधूखइ *उक्तिर.* उत्तेजित करे, प्रज्वलित करे (सं.संधुक्षते)
संधूखण, संधूषण *उक्तिर. षडाबा.* अग्नि पेटाववो ते (सं.संधुक्षण)
संधे *कामा(त्रि). कामा(शा). मदमो.* संदेह

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संनाह *गुर्जरा. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* बख्तर (सं.)

संनिवेस *षडाबा.* घर (सं.संनिवेश)

संनेह *आरारा.* स्नेह

संपइ *आरारा.* संप्रति, हालमां, अत्यारे

संपइ *आरारा.* प्राप्ति थाय (सं.संपद्यते)

संपइ *आरारा.* संपत्ति (सं.संपद्); *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* संपत्ति, शोभा; जुओ वनसंपइ

संपचूड *गुर्जरा.* सर्पचूड नामनुं शस्त्र

संपजइ *उक्तिर.* सांपडे, प्राप्त थाय (सं. संपद्यते); *आनंस्त. *जिनरा. षडाबा.* सांपडे, नीपजे, सिद्ध थाय; *कृष्णच.* छे; थाय

संपड- *प्राचीसं.* सांपडवुं [सं.संपत्]

संपडावीए *प्रेमाका.* प्राप्त करीए

संपतउ (=संपत्तउ) *प्रद्युचु.* आवी पहोंच्यो (सं.संप्राप्त)

***संपत-प्रभु (सपत्नप्रभु)** **प्रेमाका.* [वैरीओ पर प्रभुत्व मेळवनार] [सं.]

संपत्त *आरारा.* संप्राप्त, पहोंच्यो

संपत्तउ जुओ संपतउ

संपत्तु *ऐतिका.* पहोंच्या

संपनउ *आरारा.* मळ्युं, प्राप्त थयुं (सं.संपन्न)

संपन्नउ *उक्तिर. गुर्जरा.* सज्ज

संपय *ऐतिका.* संप्रति, [हालमां]

संपाडी *कादं(ध्रु).* मेळवी [सं.संपात्]

संपादवुं *प्रेमाका.* स्वीकारवुं [सं.संपाद्]

संपुटि *आरारा.* माटीनां कोडियांनी जोड पग मूकी भांगी नाखवानी विधि

संपुत्त *प्राचीफा.* उपस्थित, आवी पहोंच्यो (सं.संप्राप्त)

संपुन्नी *तेरका.* भरेली (सं.संपूर्ण+इका)

संपुष्ट *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* संपुट

संपूरिय *गुर्जरा.* भरेली (सं.संपूरिता)

संपेखि ०*जिनरा.* जोईने [सं.सं.+प्रेक्ष्]

संप्रदा *अखाका.* संप्रदाय

संप्रेडिउ *आरारा. ललिरा. विक्ररा.* वळाव्युं, मोकल्युं

संफोडतउ *उपबा.* वेडफतो, नष्ट करतो (सं. स्फोट) [सं.सं+स्फोट्]

संबर *गुर्जरा.* साबर (सं.शंबर)

संबल, संबलउ *आरारा. ऐतिरा. विमप्र. वीसरा.* भातुं (रा.) [सं.शंबल]

संबंध *आरारा. नलरा. हम्मीप्र.* कथाप्रकरण, वृत्तान्त (सं.)

संबंधिउ *षडाबा.* संबंधी, स्नेही; -ने लगतुं

संबंधिवउ *षडाबा.* जोडवुं

संबाहइ *आरारा. उक्तिर.* निभावे, संभाळे (सं.संवाहयति)

संबि *विमप्र.* श्यामिका, काळाश

संभम *प्राचीफा.* [-थी जन्मेल], संतति (सं. संभव)

संभराणीव्रत *गुर्जरा.* *एक प्रकारनुं व्रत

संभरिउ *गुर्जरा.* सांभर्युं (सं.संस्मरति)

संभलइ *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* सांभळे (सं.सम्+भल्)

संभव *तेरका.* जन्म (सं.)

संभवइ **प्रेमाका. षडाबा.* थई शके, होई शके, थाय, होय [सं.संभवति]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संभाग **नलरा.* [भोजनमांथी हिस्सो आपवो ते] (सं.)

संभार *आरारा. षडाबा.* सामग्री, मसालो (सं.); *आरारा. तेरका.* समुदाय, समूह (सं.)

संभारीयइ *आरारा.* बतावीए (रा.)

संभाल- *प्राचीसं.* सांभळवुं [सं.]

संभावइ *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* -नो भाव धरे, संभावना करे, माने, धारे [सं.संभावयति]; *प्रबोप्र.* माने, [आदर करे]

संभावना *दशस्कं(२).* सार-संभाळ; *प्रेमाका.* खबर-अंतर, [सारसंभाळ] [सं.]

संभावियउ *ऐतिरा.* संभावित, [-थी युक्त]

संभावीइ *उपबा.* गणाय, [थाय, होय]

संभूषी *षडाबा.* शणगारी (सं.संभूष्)

संमच्छर *तेरका.* संवत्सर, [वर्ष]

संमतुल *मदमो.* समतुल्य, [तेना जेवो]

संमदा *ऋषिरा.* हर्ष [सं.]: *कृष्णच.* *तैयारी, [*हर्ष, *सुख]

संमर्द *कादं(शा).* भीड, गिरदी (सं.)

संमंध *अखाका. कृष्णच. चित्तसं.* संबंध

संमार्जनी *प्रेमाका.* सावरणी [सं.]

संमिणी *तेरका.* स्वामिनी, [अधिष्ठात्री]

संमेयशिहर *तेरका.* समेतशिखर

संयमनी *प्रेमाका.* यमपुरी; **गुर्जरा.* [*यमपुरी, *कारावास, *बंधननी स्थिति] (सं.)

संयुगत *रूपच.* संयुक्त, साथे

संलेहण *आरारा.* संलेखना, अनशनव्रतनुं अनुष्ठान [जै.]

संवच्छर *प्राचीसं.* संवत्सर, [वार्षिक कालगणना]

संवच्छरदाणूं *प्राचीफा.* [तीर्थंकर दीक्षा ले ते पूर्वे] एक वर्ष पर्यंत अपातुं दान (सं.संवत्सरदान)

संवच्छरिय *षडाबा.* वार्षिक, [संवत्सरीनुं] (सं.सांवत्सरिक)

संवछर *नंदब.* संवत्सर, [वर्ष]

संवरवुं *अखाका. उक्तिर. दशस्कं(१). प्रेमाका. विक्ररा.* संवरण करवुं, संकेली लेवुं, समेटवुं, बरखास्त करवुं, [नाश करवो] [सं.संवृणोति]

संवरवे **आनंस्त.* [रोकवा वडे]

संवरगुण *गुर्जरा.* *संयमगुण, [कर्मनिरोधनो गुण] [जै.]

संवाद *प्रेमाका.* वादविवाद

संवाय *प्रेमाका.* समूह, समुदाय [सं.समदाय]

संवारी *नरका.* सत्वरे, जलदी; जुओ सवारी

संवास *जिनरा. शृंगामं.* सहवास [सं.]

संवेग *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका.* वैराग्य, मोक्षनी अभिलाषा (सं.)

संवेगिणी *ऋषिरा.* वैरागिणी

संवेगी *आरारा. ऐतिका.* वैरागी, मुमुक्षु

संशे *अखाका. चित्तसं.* संशय

संसइ, संसउ *आरारा.* संशय

संसह्या *स्थूलिफा.* सह्या; जुओ सांसता

संसारीउ *उपबा.* संसारी मनोभाववाळो

संसालणे **गुर्जरा.* [पंपाळये, चंचवाळये]

संसाळ्ये *अखाछ.* चचवाळये

संसृत्य *अखेगी.* संसृति, संसार

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसो *जिनरा.* संशय

संस्कार *हरिख्या.* अग्निसंस्कार

संस्तवउं *षडाबा.* स्तुति करुं, वंदुं, [कहुं]

संस्रत्य *चित्तसं.* संसार (सं.संसृति)

संहट *गुर्जरा.* मळवुं ते (सं.संघट)

संहरी *वाग्भबा.* (धूळ) हेठे बेसाडी, [भेगी करी] [सं.संह्-]; *षडाबा.* दूर करी, नष्ट करी

संहारि *देवरा.* करीने, [लावीने] [सं.संहारय्]

सा *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा.* ते (स्त्री); तेवी (सं.)

साअ *कामा(शा).* सहाय

साअर, साहेर *कामा(त्रि).* सागर

साइ *आरारा.* साही, पकडी

साइउ, सांइ *प्राचीफा.* आलिंगन (सं.स्वंज् अथवा स्वागत)

साइणि *उक्तिर. प्राचीसं.* शाकिनी, [पिशाचिनी]

साइरधर *कृष्णबा.* सागर धरनार, सागरने पीनार

साइं *देवरा.* सांइ, आलिंगन

साउकि *आरारा.* सावकी (सं.सपत्नी)

साएक *मदमो.* सहायक

साकउ **जिनरा. *सिंहा(शा).* [रोफ, दमाम, वट, प्रभाव] [अ.सिक्कः]; जुओ साखो

साकण *आरारा.* चूडेल (सं.शाकिनी)

साकत *आरारा.* बहुमूल्य, सजावटयुक्त (रा.)

साकरनुं नालकेल **अखाका.* [साकर वडे बनावेलुं नाळियेर (जे साकरथी तत्त्वतः भिन्न नथी)]

साकुली *उक्तिर.* एक प्रकारनी पूरी, एक मीठाई (सं.शष्कुली)

साख *नरका. नरका-२. *लावल.* *पाकी केरी, [झाड उपर] पाकेलुं फळ

साख *आरारा.* शाखा, डाळी

साख, साख्य *अखाका. आनंस्त. उपबा. प्रेमाका. नरका.* साक्षी, साक्ष्य, साहेदी

साखइ *आरारा.* साक्ष्यमां, हाजरीमां, समक्ष

साख गळवी *नरका-२.* फळ पाकुं थवुं

साखात *कामा(त्रि).* साक्षात्, [रूबरू]

साखि *आरारा.* साक्ष्य, प्रमाण, पुरावारूप कथन; *प्राचीका. गुर्जरा. षडाबा.* साक्ष्य, साख, साहेदी; *आरारा. षडाबा.* साक्ष्यमां, साक्षीपणामां, जाणपूर्वक, सान्निध्यमां, समक्ष

साखि *अभिऊ.* झाड पर पाक उपर चडेलुं फळ

साखियउ *वीसरा.* साक्षी, साहेद

साखी *उक्तिर. कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. ०प्रेमाका.* साक्षी, [साहेद]

साखीउ *आनंस्त.* *साक्षी, [सहायक]

साखीओ *मदमो.* साक्षी, [साहेद]

साखीया *लावल.* साक्षी, [साहेद]

साखे **चतुचा.* [*संबंध जोडे] [रा.]

साखो **मोसाच.* [रोफ, दमाम, वट, प्रभाव]; जुओ साकउ

साख्य *चित्तसं.* साख, साक्षी; जुओ साख

साख्य *मदमो.* साखी, [ए नामनो पद्यबंध]

साख्यात *चित्तसं.* साक्षात्, साक्षात् स्वरूप,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साक्षात्कार, साक्षात्पणुं

साग *प्राचीसं.* स्वर्ग

सागडी, सागडीत *उक्तिर. नलरा.* रथ हांकनार (सं.शाकटिक)

सागमटे *प्रेमाका.* सहकुटुंब

सागर, सागरोपम *गुर्जरा.* एक काळविभाग (सं.) [जै.]

***सागरि (सांगरि)** **विमप्र.* [शमी वृक्षनी सींग, जेनुं शाक बने छे] [दे.संगरिया; रा.सांगरी]

सागरोपम जुओ सागर

सागवंन *मदमो.* सहगमन, [पतिनी साथे स्त्रीए बळी मरवुं ते]

सागोटियो *हरिख्या.* सागनो वेपारी

साचणां *उषाह.* साचां, [खरेखरां, विधिपूर्वकनां] (सं.सत्य उपरथी)

साज (साह्य) *देवरा.* मदद (सं.साहाय्य)

साज *सिंहा(शा).* साधन [सं.सज्य]

साजइ *तेरका. प्राचीसं. प्रेमाका. मोसाच.* सज्ज करे, तैयार करे; *वीसरा.* सजे, धारण करे [सं.सज्जति]

साजण **ऋषिरा. गुर्जरा.* स्वजन, [प्रिय व्यक्ति]

साजनउं *नेमिछं.* साजणुं, स्वजनोनो समूह

साजि **कादं(शा).* [साह्य, सहाय]

साज्य *चंद्रवा.* सज्ज ?, [*साह्य, *मददगार]

साट **गुर्जरा.* [चामडानो पट्टो, चाबुक]; *विमप्र.* पट्टो

साटइ-पालटइ *विमप्र.* अदलाबदलीथी, [वस्तुविनिमयथी]

साटकडे *नरका. नरप(द).* चाबुक वडे

साटका *प्रेमाका.* सोटीनो मार

साटिका *शृंगामं.* साडी

साटिकु *विमप्र.* साटको, [घा]

साटे *नरका.* साटामां, बदलामां, गणतरीमां, लेखामां

साटौ *जिनरा.* सोदो

साट्ठि *गुर्जरा.* साठ (सं.षष्टि)

साठि *उक्तिर. उपबा. विमप्र. विराप. षडाबा.* साठ (सं.षष्टिः)

साठिसउ *षष्टिप्र.* एकसो साठ (सं.षष्टिशत)

साठी *उक्तिर.* साठ वर्षनी उंमरनो (सं. षष्टिकः); *नरका.* साठनी संख्या[वाळां वर्षो – उंमरनां]

साड *प्रेमाका.* विनाश, [विखंडन, विदारण] [सं.शाट]

साडूल *आरारा.* शार्दूल, सिंह

साढा (पांच/नव) *आरारा. उक्तिर. नेमिछं.* साडा[पांच, नव इत्यादि] (सं.स+अर्ध)

साण **जिनरा.* [गाढ] [सं.श्यान]

सात *अखाछ.* *सत्य, [*सारी पेठे, *घणुं, *खरेखर]

सातइ धात *ऋषिरा.* शरीरमां रहेली सातेय धातु

सातगारव *षडाबा.* सुखनुं अभिमान (सं. सात+गौरव)

सातपरिया *उक्तिर.* [?] (सं.सप्तपर्याया)

सातभूमि *आरारा.* सप्तभूमि, सात माळवाळुं

सातमि *उक्तिर.* सातम (सं.सप्तमी)

साता *आरारा. ऐतिका. देवरा.* शांति, सुख,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनंद, कुशळता [सं.]

सातां *उपबा. कस्तुवा.* सातनो समुदाय (सं.सप्तकानि)

सातिउं **गुर्जरा. विक्रच. विराप. षष्टिप्र.* ढांक्युं, संताड्युं; **षडाबा.* [साचव्युं, संभाळ्युं] [सं.सत्यापित]

सातू *उक्तिर. षडाबा.* साथवो, शेकेलो लोट (सं.सक्तु)

सात्थरीआ *हम्मीप्र.* साथरो – गोदडुं बनावनार कारीगर [सं.स्रस्तर परथी];

साथ *उक्तिर. प्राचीसं.* प्रवास करता वेपारी-ओनो समुदाय; *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* समुदाय (सं.सार्थः)

साथर, साथरउ *आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. नलरा. प्रेमाका. लावल. विराप.* साथरो, पथारी, घासनी पथारी (सं. स्रस्तर)

साथरी *विमप्र.* आसनियुं, [बेसवानी चटाई]

साथलि *उक्तिर.* साथळ (सं.सक्थि)

साथि *आरारा.* साथ [सं.सार्थ]

साथीउ *विमप्र.* स्वस्तिक, साथियो

साधु जुओ विरहिणीसाधु

साथेथो *नरका.* साथ थकी, साथे थई

साद *चारफा. वसंफा.* अवाज (सं.शब्द)

साद करावुं *प्रेमप.* कहेवरावुं

साद दइ *आरारा.* जवाब आपे, स्पर्धा करे

साद (साद देसइ) *प्राचीसं.* जवाब आपशे

सादर **प्रेमाका.* [सगर्भा स्त्रीनी अभिलाषा, दोहद] [सं.श्रद्धा]; जुओ साधर पहोती

सादूल *उक्तिर.* शार्दूल, सिंह

साध *अखाका. उक्तिर. देवरा. नरका. प्रेमाका.* साधु, संत, सज्जन

साध *प्राचीसं.* श्राद्ध

साधइ *आनंस्त. आरारा. उपबा. गुर्जरा. जिनरा.* सिद्ध करे, पार पाडे, जीते (सं.साधयति)

साधन *आरारा.* साधना

साधम्मिय *षष्टिप्र.* समान धर्मना अनुयायी (सं.साधर्मिन्)

साधर पहोती *प्रेमाका.* [गर्भवतीनी] इच्छा पूरी थई [सं.श्रद्धा]; जुओ सादर, साध्र

साधवी *चंद्रवा. नंदब.* [साधुतावाळो], साधु-पुरुष [सं.]

साधारण *जिनरा.* वनस्पतिकाय, जेमां एक शरीरमां अनंत जीव होय, [जेना उदयथी साधारणशरीरी जीवपणुं मळे ते नाम- कर्मनो प्रकार] [जै.]

साधारा *नेमिछं.* आधाररूप, [आश्रय देनार]

साधां *आरारा.* साधुओ

साधी (अगनि साधी) *ऋषिरा.* [अग्निमां] प्रवेश करी; जुओ साधइ

साधुकार **आनंस्त.* [भलो, सद्गुणी]

साधुवाद *आरारा.* प्रशंसा (सं.)

साधुसंघाडउ *उक्तिर.* साधुसमुदाय (सं.साधु-संघाटकः)

साध्र *कादं(ध्रु). कादं(शा).* गर्भिणीना मननी इच्छा, दोहद [सं.श्राद्ध]; जुओ साधर

सान *कादं(शा). गुर्जरा. चतुचा.* संज्ञा, भान, समज; *अखाका. प्राचीफा.* निशानी, संकेत, इशारो; **अखाका.* [संकेत,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तात्पर्य]

सानधि *आरारा. विक्रच. *शृंगामं.* सहाय (सं.सान्निध्य); जुओ सानिध

सानन (सा न-न्न) **शृंगामं.* [ते नहीं नहीं]

सानबाफ *प्राचीफा.* एक कीमती वस्त्र (फा. शाना+बाफ)

सानिध *ऐतिका.* सान्निध्य, [सहाय]; जुओ सानधि

सानिधइ *ऋषिरा.* पासे, [*सहायथी] (सं. सान्निध्य)

सानिधि, सानिद्ध *आरारा. *गुर्जरा. प्राचीसं.* सहाय (सं.सान्निध्य)

साप *आरारा.* शाप

सापतउ *जिनरा.* पूरुं, अखंड, [साजुंसमुं, साबूत] [अ.साबित]

सापु भणी *उक्तिर.* साप तरीके

साबरि *वीसरा.* हरणना चामडा[मांथी बनावेली] (सं.शबर-)

साबल *गुर्जरा.* एक प्रकारनो भालो (सं. सर्वला)

साबलीयो *चंद्रवा.* [साबरियो], दूध वेचनार

साबाण, साबान *विमप्र. हम्मीप्र.* एक प्रकारनो (छजावाळो) तंबु [फा. सायबान]; जुओ सावाण

साभरमती *उक्तिर.* साबरमती नदी

साभिज्ञांन *कृष्णच.* एंधाण [सं.]

साम *आरारा.* श्याम, काळो

साम *ऋषिरा.* श्यामा, सुंदरी

सामउ *उक्तिर.* सामो, एक खडधान, मोरैयो (सं.श्यामाक)

सामटि *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* समेटी ले, पाछुं खेंची ले (सं.*समाहयति) [सं.संवेष्टयति]

सामठउं *जिनरा.* एक साथे, [सामटुं, खूब]

सामणि *आरारा.* स्वामिनी, [मालिकण]; *नलरा.* स्वामिनी, [अधिष्ठात्री]; *वीसरा.* स्वामिनी, [प्रियतमा]

सामद, सामंद *चंद्रवा. मदमो. सिंहा(शा).* सामंत, वीर, सुभट

सामरती *अखाका.* सामर्थ्यवान्, समर्थ

सामरा *नलाख्या.* साबर नामना पशु (सं. शम्बर)

सामर्थ्या *कादं(शा).* समर्थता, [प्रभाव, परिणाम] (सं.सामर्थ्य)

सामल, सामलउ *उक्तिर. गुर्जरा. तेरका.* शामळुं (सं.श्यामल)

सामलवन *नेमिछं. लावल.* श्याम वर्णना

सामलु *प्राचीफा.* घोडानी एक जात (सं. श्यामल)

सामली *गुर्जरा.* शामळी, [घेरा रंगनी] (सं. श्यामल)

सामसाल *सिंहा(म).* अधिपति, मालिक (सं.स्वामिन्+सार); जुओ सामिसाल

सामहउं *उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा.* सामुं (सं.संमुख)

सामहि *उषाह.* सामे (सं.संमुख)

सामहणी *आरारा. विमप्र. शृंगामं.* तैयारी; जुओ सांमहणी

सामहीयुं *आरारा.* सामैयुं

सामह्यउं *गुर्जरा.* तैयारी करी, सज्ज थयुं;

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सज्ज कर्युं (सं.*समाधाति=समाध्याति); *आरारा.* तैयार थयुं, ऊमट्युं (रा.); जुओ सांमहिउं

सामंद *नंदब.* सामंत; जुओ सामद

सामाइक *ऐतिका.* सामायिक, [जैन ध्यान-क्रिया]

सामाई *उक्तिर.* सामायिक, जैन धर्मध्यान-क्रिया

सामाचारी **उपबा.* [साधुनो आचार, क्रियाकांड] [सं.]

सामानि *विमप्र.* सामान्य, साधारण

सामायक *नलरा.* समतापूर्वक एकाग्र बेसवानुं जैन धार्मिक नित्यकर्म (सं. सामायिक)

सामि *ऐतिका. तेरका. नेमिछं. लावल.* स्वामी, [अधिष्ठाता]; प्रियतम

सामिणि, सामिनी *ऐतिरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. लावल. विरप. स्थूलिफा.* स्वामिनी, [अधिष्ठात्री, मालिकण]; जुओ सामीणी

सामिसाल *प्राचीफा.* अधिपति, मालिक (सं.स्वामिन्+सार); जुओ सामसाल

सामिय, सामी, सामीया *गुर्जरा. तेरका. लावल. वीसरा.* स्वामी, [अधिष्ठाता]; प्रियतम

सामीणी, सामिणी *गुर्जरा.* स्वामिनी, [मालिकण]

सामुद्रक *विमप्र.* सामुद्रिक विद्यानो जाणकार; सामुद्रिक विद्या; [शरीरनां चिह्नो परथी शुभाशुभ जाणवानुं शास्त्र, एनो जाणकार]

सामुद्रलख्यण *पंचवा.* देह परनां चिह्न परथी नक्की थतां लक्षण (सं.सामुद्र+लक्षण)

सामुद्रिक *नरका. लावल.* शरीरनां अंगो उपरनां चिह्नो उपरथी भाग्य जोवानुं शास्त्र

सामुहु *उक्तिर.* सामुं (सं.सन्मुखः)

सामृथ्य *चित्तसं.* सामर्थ्य

सामैयां *नरका.* सामे जईने स्वागत करनारां

सामोणुं *प्रेमाका.* सामैयुं, स्वागत के तेनी सामग्री

साम्रथ *अखाका.* सामर्थ्य, बळ

साम्हउ *उक्तिर. उपबा. जिनरा. रूपच. विमप्र. वीसरा.* सामो (सं.संमुख)

साम्हेले *ऐतिका.* सामैयुं करवा

साय *आरारा(व).* ?, [*स्वाद] [प्रा.]

सायक *कादं(शा). गुर्जरा. विराप.* तीर, बाण (सं.)

सायण *शीलक.* साकण, [पिशाचिनी] (सं. शाकिनी)

सायर *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. हरिख्या.* सागर

सायर-सूत *शृंगामं.* सागरनो पुत्र, चंद्र

सायरुं (साद्धरुं) *सिंहा(शा).* ?, [*साथ आपवो ते]

साया *ऐतिरा.* छाया [फा.सायः]

सार *अखाका. अखाछ. अंबरा. आरारा. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. नलरा. प्रेमाका. लावल. विक्रच. विराप. हरिख्या.* सहाय, सारसंभाळ; *गुर्जरा.* भाळ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सार *अखाछ. अभिऊ. आरारा. गुर्जरा. तेरका. *देवरा. नरका-२. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वीसरा.* श्रेष्ठ, सुंदर, सरस, सारुं (सं.); *आरारा.* सत्यरूप, साचुं

सार *अखाका. चतुचा.* माखण

सार *कामा(त्रि).* सोगठांबाजी [सं.सारि]

सार *लावल.* परिणाम

सार *उक्तिर.* [?] (सं.सारा)

सार (सारउद्धार) **अखाछ.* [सार काढवो ते, तात्पर्यग्रहण, संक्षेप]; जुओ सार-उद्धार

सारइ *आरारा. चारफा. लावल.* सिद्ध करे, पार पाडे, करे

सारइ-वारइ *आरारा.* सारसंभाळ राखे

सार-उद्धार *अखाका.* तारवणी, [सारग्रहण, संक्षेप]; जुओ सार, सारोद्धार

सारखि *देवरा.* सरखी, [जेवी] [सं.सदृक्ष]

सारछूं *उषाह.* सरखुं, [जेवुं]

सारणि *अंबरा.* शारडी, [दुःखथी वींधावुं ते]; जुओ हीइ सारणि

सारथ *प्रेमाका.* सार्थ, सार्थक्य

सारद *उक्तिर. वीसरा.* शारदा, सरस्वती; *ऐतिरा.* शरदऋतुना

सारधी **अखाछ.* सार (अंतस्तत्त्व, रहस्य) समजनारी बुद्धिवाळो [सं.]

सारपासु *ललिरा. सिंहा(म).* चोपाट अने पासा (सं.सारि+पाश)

सारवियइ *षडाबा.* पार पाडवामां आवे (सं. सृ परथी)

सारवुं *चारफा.* तारण काढवुं, तारववुं; *नरका.* आंजवुं (सं.सारयति)

सारस **गुर्जरा.* [*रसपूर्वक, *साथे]

सारसापारस *मोसाच.* ?, [कोई वस्त्रप्रकार]

सारसी *अभिऊ. आरारा. उषाह. गुर्जरा. प्रबोप्र. लावल. विराप. हम्मीप्र.* मत्त हाथीनी चीस, हाथीनी गर्जना [सं. संरसिका]

सारसी *आरारा.* साथे [सं.सदृश]

सारंग *कामा(त्रि).* दीवो; *चंद्रवा. प्रेमाका.* मृग; *दशस्कं(१). प्रेमाका.* कमळ; *चंद्रवा.* सारंगी

सारंग, सारिंग *गुर्जरा. प्रेमाका.* धनुष्य [खास करीने विष्णुनुं] (सं.शार्ङ्ग)

सारंगणी *प्रेमाका.* सारंगी – एक तंतुवाद्य

सारंगभख *चंद्रवा.* ?, [*कमळनो चारो करनार हंस]

सारंगी *अखाका.* *हरिणी, *हरिणी जेवी स्त्री

सारा *प्राचीसं.* सार, सहाय

सारि *प्राचीफा. लावल. षडाबा.* सोगठां-बाजी, चोपाटनी रमत; सोगठां (सं.)

सारिखउ *ऋषिरा. वीसरा. षडाबा.* सरखुं, समान [सं.सदृक्ष]

सारिसुं *अभिऊ. गुर्जरा.* सिद्ध करीशुं (सं. सारयिष्यामः)

सारिंग जुओ सारंग

सारिंगलोचना *सिंहा(म).* मृगनयना (सं. सारंगलोचना)

सारी *कादं(ध्रु). कादं(शा).* चोपाटनी रमत (सं.सारि)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारी *उक्ति.* मेना (सं.सारिका)

सारीखउ *उक्ति.* सरखुं, समान (सं. सदृक्षम्)

सारीय *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सारीने, सज्ज करीने, सजीने (सं.सारयि)

सारु *विमप्र.* सारुं, [श्रेष्ठ]; *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सरस, मजानुं, आनंदजनक (सं.सार)

सारू *चित्तसं.* -ने लीधे, -थी; तरफ

सारू *आरारा.* अनुसरतुं, जेवुं; अनुसरतुं, छाजतुं, योग्य; जुओ घर-सारू

सारूं *विमप्र.* बधुं [सं.सार]

सारोद्धार *हरिख्या.* संक्षेप (सं.); जुओ सार, सार-उद्धार

सारोधार *चित्तसं.* सारोद्धार, सार रूपे तारववुं ते

साल *आरारा.* सार, प्रकर्ष, उत्तम (प्रा.)

साल *आरारा.* शाळा, धर्मशाळा; *तेरका.* शाळा, [खंड, गृह]

साल जुओ साहल

साल, साळ *देवरा. प्रेमाका.* चोखा (सं. शालि)

साल *अखाका. उक्ति. नरका-२. लावल. शृंगामं.* शल्य, शूळ, पीडारूप, आड-खीली, विघ्न, संकट

सालइ *वाग्भबा.* सल्लकी, [सालेडी], वृक्ष-विशेष

सालणउं *अभिऊ. *गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. प्रेमप. लावल.* अथाणुं, कचुंबर वगेरे

सालणउ *उक्ति.* [?] (सं.शालनकम्)

सालर, सालरि **आरारा. आरारा(व). *विमप्र.* सल्लकी, सालेडी, [हाथीने प्रिय वृक्ष]

सालवी *उक्ति.* वणकर (सं.शालापतिः)

सालहि, सालही *अंबरा. ऋषिरा. प्राचीफा. विमप्र.* मेना (दे.)

साला *आरारा.* धर्मशाळा

सालि *आरारा. नेमिछं. लावल.* डांगर (सं. शालि)

सालि *आरारा.* शल्य, कांटो, नडतर

सालूरडउ *शृंगामं.* देडको (सं.शालूर)

सावकर्ण *पंचवा.* काळा कानवाळा (सं. श्यामकर्ण)

सावकाश *प्रेमाका.* अवकाश, समय

सावकेत *कर्पूमं.* सावचेत

सावगी *वेताप.* सावकी [सं.सापत्न-]

सावज *मदमो.* छंदविशेष

सावज *गुर्जरा.* पशु (सं.श्वापद); *कृष्णबा.* पंखी

सावजडुं *हरिख्या.* शिकारी [जंगली] प्राणी

सावजां *नरका. *प्रेमाका.* पक्षी

सावजि *विक्ररा.* वनपशु [सं.श्वापद्य]

सावज्ज *नलरा.* पापयुक्त [कर्म] (सं.सावद्य)

सावटु, सावटुयां, सावटू *अभिऊ. अंगवि. प्राचीका. प्राचीफा. मदमो. विमप्र. वीसरा.* रेशमी जरियान वस्त्र

सावडू *शृंगामं.* सवळुं, [अनुकूळ]; जुओ सवाडूउ

सावण *उक्ति.* श्रावण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावत्त *प्रद्युचु.* स्वागत ?

सावद्य *आरारा.* निंद्य कर्मो, पापकर्मो [सं.]

सावध्यान *अंबरा.* सावधान

सावय *ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं.* श्रावक

सावलियुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* झीणा पोतनुं वस्त्र

सावसलखण *चारफा.* सर्व शुभ लक्षणोथी युक्त (सं.सर्व+सुलक्षण)

सावाण *विमप्र.* [एक प्रकारनो, छजावाळो] तंबु [फा.सायबान]; जुओ साबाण

साविज *अभिऊ. कादं(ध्रु). कादं(शा). नरप.* पक्षी [सं.श्वापद]; **कादं(शा).* [पशु]

साविजडां *अंगवि.* पशु

सास *आरारा. उक्तिर. तेरका. नरका. प्रेमप. प्रेमाका. षडाबा.* श्वास

सासइसासइ (सासइ ससइ) **ऋषिरा.* (प्रियतमना) श्वासे श्वास ले छे]

सासडियां *नरका-२.* श्वासोश्वास

सासण *ऐतिका. तेरका. लावल.* धर्मशासन

सासण *जिनरा.* सास्वादन, [जेमां सम्यक्त्वनो थोडो आस्वाद रहेतो होय एवी आत्मावस्था, एक गुणस्थान] [जै.]

सासणदेवि *गुर्जरा.* शासनदेवी, धर्मसंप्रदायनी अधिष्ठात्री देवी.

सासतउ *आरारा. उक्तिर.* शाश्वत, कायमी

सासननायक *आरारा.* जैन शासनना अग्रणी

सासत्र *ऋषिरा.* *आज्ञा, [धर्मशासन]

सासरवेड *दशस्कं(२).* सासरवेल

सासाण *जिनरा.* सास्वादन, [जेमां सम्यक्त्वनो थोडो आस्वाद रहेतो होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

सासु *गुर्जरा. शृंगामं.* श्वास

सासुतउ *प्राचीसं.* शाश्वत

सासुर *आरारा.* श्वसुर

सासुरय *प्राचीसं.* श्वशुरगृह, सासरुं

सासुव *देवरा. प्राचीसं.* सासु (सं.श्वश्रू)

सासे उसासे *अखाका.* श्वासे अने उच्छ्वासे

सासो *देवरा.* संशय

साह, साहा *विक्ररा.* वेपारी, [वणिक]; [प्रतिष्ठित प्रामाणिक व्यक्ति]; *मदमो. विमप्र.* शाह, शेठ, वेपारी, वणिक (सं. साधु); जुओ शाह, साहु

साहइ *अखाका. आरारा. उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. दशस्कं(१). नरका. नेमिछं. प्राचीसं. प्रेमाका. मोसाच. लावल. विराप.* पकडे (सं.साध्)

साहजी *पंचवा.* शाह, वाणियो (सं.साधु)

साहण *आरारा.* साधन, सुखसामग्री; *ऐतिरा. गुर्जरा.* लावलश्कर, वाहनो, [*सैन्य]; *हम्मीप्र.* *सैन्य, [*घोडा] [रा.]

साहणी *वीसरा.* अश्वपाल (सं.साधनिक)

साहपत्य *चंद्रवा.* [मोटा] सोदागर

साहबाला **विमप्र.* सांबेला, वरघोडामां वरनी आगळ घोडा पर बेसाडवामां आवता शणगारायेला छोकरा [फा. शहबाला]

साहमउं *शीलक.* सामैयुं; *आनंस्त. गुर्जरा.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामुं

साहमणि *आरारा.* समान धर्मवाळी (सं. साधर्मिणी)

साहमी *आरारा. ऐतिका. नलरा.* साधर्मिक, एक धर्मना अनुयायी

साहमीअवच्छल, साहमीवत्सल, साहमीवच्छल, साहमीवाछल्य साधर्मिक वात्सल्य, पोताना धर्मना लोको प्रत्ये अनुराग, सेवाभाव; जुओ वाच्छल्यु

साहम्मिय *ऐतिका.* साधर्मिक, एक धर्मना अनुयायी

साहम्मी *षष्टिप्र.* समान धर्मना अनुयायी (सं.साधर्मिन्)

साहरइ *उक्तिर.* ढांके (सं.संवृणोति) [दे.]; *जिनरा.* सहारो आपे; [*रोके, *अटकावे]

साहल (साल) *ऋषिरा.* शालवृक्ष

साहलाद *ऐतिरा.* खुश थईने [सं.साह्लाद]

साहस *आरारा.* साहसिक, [हिंमतवाळुं, धृष्ट]

साहसी *आरारा.* साहसिक, [हिंमतवाळुं, धृष्ट] [सं.]

साहा जुओ साह

साहाअ *कामा(त्रि).* सहायक, मददगार

साहाणा *अखाका.* शाणा [सं.सजान]

साहामुं जुए *चित्तसं.* लक्षमां राखे

साहामो थयो *प्रेमप.* सामे आव्यो

साहार *प्राचीसं.* सहायक

साहार *तेरका.* आंबो (सं.सहकार)

साहास *चित्तसं.* साहस, हिंमत, धैर्य

साहास्त्र *मदमो.* शास्त्र

साहिज *आरारा.* सहाय (सं.साहाय्य)

साहिब *प्राचीफा.* मालिक, परमेश्वर (अ.)

साहिय **ऐतिका.* [सिद्ध करी, पामी] [सं. साध्]

साहीस *विक्ररा.* साहस, [विकट काम हाथमां लेवानी शक्ति]

साहु *गुर्जरा.* भलुं, सारुं; सज्जन, [शाह] (सं.साधु); *प्राचीफा.* वणिक, शाह (सं. साधु); जुओ साह

साहुणि *ऐतिका. गुर्जरा.* साध्वी

साहू *तेरका.* साधु

साहे *दशस्कं(१).* साह्य, मदद; *चित्तसं.* सहाय, मददगार

साहेर *कामा(शा). दशस्कं(१).* सागर; जुओ साअर

साह्य जुओ साज

साह्यरुं जुओ सायरुं

सां (सांक) **गुर्जरा.* [भय, संकोच] [सं.शंका]; जुओ सांक

सां (सांचिलां) **लावल.* [साचां, खरां]

सांई *दशस्कं(२). नलाख्या. प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका. षडाबा.* आलिंगन, भेटवुं ते (सं.स्वंज्); जुओ श्यांइ, साइउ

सांईडुं *नरका. हरिख्या.* आलिंगन

सांक *जिनरा.* शंका, [संकोच]; जुओ सां

सांकलउ *उक्तिर. नलरा.* सांकळुं, एक घरेणुं (सं.शृंखला)

सांकलडी *आरारा.* सांकळी, एक खाद्यपदार्थ

सांकली *नलरा.* एक खाद्यपदार्थ (सं. शष्कुलि)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांकली *उक्तेर. प्राचीफा.* हाथनुं एक घरेणुं, सांकळी (सं.शृंखला)

सांकल्यउ *ऋषिरा.* बंधायेलो (सं.शृंखलित)

सांकुळी *वीसरा.* सांकळ (सं.शृंखला)

सांक्ष्य *चित्तसं.* सांख्य, सांख्यशास्त्र

सांक्ष्यजोग *चित्तसं.* सांख्ययोग, ज्ञानयोग, विवेकज्ञान

सांख **उपबा. जिनरा.* शंख

सांखडि *उक्तिर.* विवाहादि प्रसंगे थतो जमणवार (दे.संखडि)

सांख्य *मदमो.* सांखी, [सहन करी]

सांग *अखाका.* आखुं, संपूर्ण [सं.]

सांग *प्रेमाका.* बरछी जेवुं एक हथियार

सांगरि जुओ सागरि

सांगलतुं *प्राचीका. प्रेमप.* गमतुं

सांगि *अभिऊ.* बरछी जेवुं हथियार

सांगि *कादं(शा).* संगे, संगथी, सोबतथी

सांगी *प्रेमाका.* गाडुं हांकनारनी बेठक, [धरी अने उतारुबेठक वच्चेनो भाग]

सांचइ *उक्तिर. दशस्कं(१). प्रेमाका.* संचित करे, एकठुं करे [सं.सं+ची]

सांचउ *वीसरा.* साचो (सं.सत्य)

सांचरइ *आरारा. गुर्जरा. षडाबा.* संचरे, जाय (सं.संचरति)

सांचळी *चंद्रवा.* *संचरी, [*भरेली]

सांचिलां जुओ सां

सांजउ *उक्तिर.* संयमी, साधु (सं.संयत)

सांझूणउं *उक्तिर.* सांजना समयनुं [सं.संध्या परथी]

सांड *उक्तिर. वीसरा.* सांढ, आखलो (सं.षंड)

सांढि *षडाबा.* सांढणी [दे.संढी]

सांढीउ *शृंगामं.* गोधो, आखलो (सं.षण्ड)

सांण *मदमो.* शान, छटा

सांत *चित्तसं.* अंतवाळुं, विरमी गयेलुं [सं.]

सांतइ **अंबरा. नरका. प्रेमाका. विक्ररा.* संताडे, छुपावे; *विक्रच.* [ढांके], (तरवार) संकेले, म्यान करे; जुओ सांथिउ

सांतक *प्रेमाका.* ग्रहोने शांत करवानी एक धार्मिक विधि

सांतरुं *सिंहा(शा).* तैयार, सज्ज ?; *दशस्कं(१). प्रेमाका.* तैयार, सज्ज; *प्रेमाका.* स्वस्थ

सांतीडुं *अखाका.* हळ

सांत्य *नरका.* साता, सुख, [तृप्ति] (प्रा.सात)

सांथारु *प्रद्युचु.* संथारो, मरण नजीक आवतां ममता तजी मरणपथारी पर सूवुं ते (जै.) [सं.सस्त्रातरक]

सांथिउं *अंबरा.* साचवी राख्युं; जुओ सांतइ

सांधइ *उक्तिर.* सांधे, जोडे; *वसंफा.* बांधे; *षडाबा.* जोडे, निशान ले [सं.सं+धा]

सांधि *प्राचीफा.* समय (सं.सन्धि)

सांधो *चंद्रवा.* [लक्ष्य करी रह्यो], तत्पर थयो

सांनधि *आरारा.* सान्निध्य

सांबर *गुर्जरा.* साबर, एक हरणजाति (सं. शंबर)

सांबलउं *उपबा.* भातुं (सं.शम्बलम्)

सांबेलडा *प्रेमाका.* *शणगारेला जानैया,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[वरनी आगळ घोडा पर बेसाडेला शणगारेला छोकरा]

सांबेला *नरका.* *जानमां घोडा उपर बेठेला जानैया, [वरनी आगळ घोडा पर बेसाडेला शणगारेला छोकरा]

सांभरो *अखाछ.* भेगुं करो [सं.सं+भृ]

सांभलिवा *उक्ति.* सांभळवा [सं.सं+भल्]

सांभलीयि *उक्ति.* सांभळाय, सांभळवा-योग्य

सांभलेव्युं *उक्ति.* सांभळवुं

सांमद *मदमो. रूस्तस.* सामंत, वीर, सुभट; जुओ शांमद, सामद

सांमलमली *आरारा(व).* शीमळो (सं. शाल्मली)?, काळा मरी (सं.श्यामल मरिच के मलिन) ?

सांमहणी *प्रद्युचु.* [जवानी] तैयारी; जुओ सामरणी

सांमहिउ *प्रद्युचु.* [तैयार थयुं]; जुओ सामह्युउं

सां मांहि *लावल.* शा लेखामां ? शी विसात-मां ?

सांमि *देवरा.* स्वामी, [अधिष्ठाता देव]

सांमिणि *आरारा.* स्वामिनी, [अधिष्ठात्री देवी]

सांमी *देवरा.* स्वामी, [पूज्य व्यक्ति]; जुओ शांम

सांमो *मदमो.* विरोधी ?, [*सामो बोल]

सांलणां *आरारा.* मीठामां आथेली वस्तु, अथाणां; जुओ सालणउं

सांस *प्रेमाका.* संशयमां; जुओ सांसो

सांस *वीसरा.* श्वास

सांसता *अंबरा. नरका. *नलाख्या. प्रेमाका.* सहन करवावाळा, सबूरी के धीरज राखता; जुओ संसह्या

सांसहइ *उपबा. *उषाह. ऋषिरा. कृष्णच. गुर्जरा. जिनरा. प्रबोप्र. विक्रच. विराप. शृंगामं.* सहन करे, सांखे (सं.सह्); *ललिरा.* सहन करे, धैर्य राखे; *आरारा. *गुर्जरा. *प्रद्युचु.* स्वीकारी ले

सांसि, सांसे *अखाका. अभिऊ. प्रेमाका.* संशयमां

सांसो *चंद्रवा. दशस्कं(१). देवरा. नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* संशय; जुओ शांशो, सांस

सांसोट *प्रेमाका.* सणसणाटी, [सोंसरो मारो]; सोंसरो, सणसणाट

सि जुओ छ सि

सि *कादं(शा).* साथे (सं.सहित)

सि *षडाबा.* ते

सिअ *ऐतिरा.* शीत, ठंडी

सिंइ *नेमिछं.* शें, शा कारणथी

सिउ जुओ सिउं

सिउं *अभिऊ. आरारा. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* साथे (सं.समम्); *वीसरा.* *साथे, *-थी, [*-नी]

सिउं *उपबा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. विक्ररा.* शुं, केवुं; *नेमिछं. लावल. वसंफा.* शा माटे, शुं (सं.कीदृशकम्)

सिउं *हरिवि.* ('सिउ'ने बदले) सहु

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिउंएक *उपबा.* शुं-शुं

सिकट *विमप्र.* गाडुं [सं.शकट]

सिकलि [सिकरि] **देवरा.* [धजावाळुं छत्र]

सिकिरि *प्राचीफा.* धजावाळुंछत्र (सं.श्रीकरी) [दे.सिक्किरि]; जुओ शीकिरि, सीकरि

सिखराउल *प्राचीफा.* शिखरवाळो, अणीदार, ऊंचो

सिख्या *गुर्जरा.* शिखामण (सं.शिक्षा)

सिगडी *जिनरा.* सगडी [सं.शकटिका]

सिगला *जिनरा.* सघळा [सं.सकल]

सिगु *तेरका.* सरगवो (सं.शिग्रु)

सिग्घ *षष्टिप्र.* जलदी (सं.शीघ्र)

सिघ *उक्तिर.* [तुलसी, वज के जटामासी] (सं.शिखा)

सिघलु *प्रद्युच्.* सघळुं, बधुं [सं.सकल]

सिजवाला *ऐतिका.* पालखी [खास करीने परदावाळी]

सिज्झाहर *कृष्णच.* शय्यागृह, शयनखंड

सिज्झइ *ऐतिका. गुर्जरा. तेरका.* सिद्ध थाय (सं.सिध्यति)

सिज्झाय *आरारा.* स्वाध्याय, धर्मचिंतन

सिज्या *सिंहा(म).* पथारी (सं.शय्या)

सिझंत *ऐतिका.* सिद्ध थाय छे

सिझाय *ऐतिका.* स्वाध्याय

सिढिल *उक्तिर.* शिथिल

सिणगार *उपबा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. प्राचीसं. वसंफा.* शणगार (सं.शृंगार)

सिणगारीय *गुर्जरा. वसंफा.* शणगारी (सं. शृंगारित)

सिणदंड *तेरका.* शणनो छोड (सं.शणदंड)

सिणमिणइ *उक्तिर.* सणसणे, गति करे

सिणिगि-तरउ *आरारा(व).* काकडासिंगीनुं झाड (सं.शृंगी) [+सं.तरु]

सित्र *कर्पूमं.* शत्रु

सिद्धशिला *गुर्जरा.* मुक्तात्माओनुं निवास-स्थान (सं.) (जै.)

सिद्धि *गुर्जरा.* सिद्धि, प्राप्ति; [मोक्ष]; *चारफा. तेरका. षडाबा.* मोक्ष, निर्वाण (सं.); *नलरा.* समाचार, शोध (*सं.)

सिद्धी *तेरका.* सिद्ध थई, सिद्धि पामी

सिद्धिपुरी *आरारा.* मुक्तिपुरी

सिद्धो समान **जिनरा.* [वर्णमाळानो अभ्यास] [सं.सिद्धा+सामान्ना]

सिद्ध्य *अखाका.* सिद्धि

सिधारथ *वीसरा.* जेना हेतुओ सिद्ध थाय छे एवुं, कृतार्थ, सफळ (सं.सिद्धार्थ)

सिधि *अभिऊ.* खबर, [समाचार] [*सं. शुद्धि]

सिधि *लावल.* सिद्धि

सिधे *अखाछ.* सिद्धे, [सिद्ध पुरुषे]

सिध्याइं *षष्टिप्र.* स्वाध्यायपूर्वक

सिबलि *आरारा(व).* शाल्मलि, शीमळो, (दे.सिंबलि); जुओ सिंबलि, सीबलि

सिमकियउ *उक्तिर.* एक जीवडुं (सं. सिमीकः)

सिमथउ *उक्तिर.* सेंथो (सं.सीमंतक)

सिय *प्राचीसं.* सफेद (सं.सित); *ऐतिका.* शुक्ल [पक्ष], [सुद]

सियउं *देवरा.* शुं, कयुं (सं.कीदृश)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सियाणउं जुओ सयाणउं

सिय्या *आरारा.* शय्या

सिर *गुर्जरा.* मस्तक, टोच; *तेरका.* मस्तक, शिर, माथे, उपर; *वसंवि(ब्रा).* *वीसरा.* मस्तक (सं.शिरस्)

सिर (सिरकि) **गुर्जरा.* [शिरस्त्राण, माथाना टोप]

सिर (सिरस) *तेरका.* सरसडो (सं.शिरीष)

सिरखंड *तेरका.* चंदनवृक्ष (सं.श्रीखंड)

सिरखुं *गुर्जरा.* *लावल.* सरखुं (सं.सदृक्ष)

सिरघू *आरारा(व).* *उक्तिर.* सरगवो (सं. शिग्रु)

सिरज- *वीसरा.* सरजवुं (सं.सृज्)

सिरजणहार *गुर्जरा.* *वीसरा.* सर्जनहार

सिरतिलौ *ऐतिका.* शिरमोर [सं.शिरस्+तिलक]

सिरदार *प्राचीफा.* नायक, आगेवान (फा. सरदार)

सिरवीण *आरारा.* शिरनी वेणी, चोटलो

सिरशव *प्राचीफा.* सरसवनो दाणो (सं. सर्षप)

सिरस जुओ सिर

सिरसिज ०*प्राचीफा.* कमळ (सं.सरसिज)

सिरसे (सिरसेजइ) **गुर्जरा.* **विराप.* शरशय्यामां

सिरहाणइं *आरारा.* ओसीके (सं.शिरस्थान)

सिराचा *हम्मीप्र.* एक प्रकारनो तंबु; जुओ सिंराचा

सिराडइ (सिराडइ चडइ) *आरारा.* *विमप्र.* सराडे चडे, [सफळ थाय]

सिरावलइ *शृंगामं.* शकोरामां [सं.शराव]

सिरि *आरारा.* *ऋषिरा.* *लावल.* *वसंफा.* *वसंफा(ल).* *वसंवि.* शिरे, माथा पर, माथे

सिरि *तेरका.* *लावल.* श्री, सुंदर, श्रेष्ठ, [आदरवाचक]; *गुर्जरा.* श्री, शोभायुक्त, [आदरवाचक]; [लक्ष्मीदेवी]; जुओ सिरे

सिरि (सिरिभेरिअ) **गुर्जरा.* [श्रीभेरी – एक वाद्य]

सिरिखउ *आरारा.* सरखो, जेवो (सं. सदृक्षक)

सिरिखंड *चारफा.* चंदन (सं.श्रीखंड)

सिरिजइ *गुर्जरा.* *वीसरा.* सर्जे (सं.सृज्)

सिरि-जाल *वसंवि(ब्रा).* माथा पर पहेरेली जाळी, एक अलंकार (सं.शिरोजाल)

सिरिभेरिअ जुओ सिरि

सिरिमा **प्राचीसं.* [श्रीमाता, एक देवी]

सिरिमाल *तेरका.* श्रीमाल[कुल]

सिरिवछ **नेमिछं.* [जिनदेव वगेरेमां जोवा मळतुं] छाती परनुं एक शुभ चिह्न [सं. श्रीवत्स]

सिरी *तेरका.* श्री [आदरसूचक]

सिरीय (संजमसिरीय) *ऐतिका.* [संयमरूपी लक्ष्मी]

सिरीस *उक्तिर.* शिरीष

सिरे (सिरि) *तेरका.* श्री [आदरसूचक]

सिलवट्ट *तेरका.* शिला (सं.शिलापट्ट)

सिलापट *उक्तिर.* शिला (सं.शिलापट्टः)

सिलावटउ *उक्तिर.* सलाट (सं.शिलावर्तकः); जुओ शलाटु, शिलावट

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिलावट्ट *विमप्र.* सलाट, कडियो

सिली *उक्ति्र. नेमिछं. लावल.* सळी (सं. शलाका) [सं.शल]

सिव *तेरका.* मुक्ति (सं.शिवा)

सिवपंथि *गुर्जरा.* कल्याणमार्गे, [मुक्तिमार्गे]

सिवपुरी *गुर्जरा.* कल्याणनी नगरी, [मुक्ति-नगरी]

सिवरति *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* शिवरात्रि

सिवराति *प्राचीफा.* शिवरात्रि

सिवसासणी *हम्मीप्र.* शिवशासनी, शिवना शासनमां माननार, शैवधर्मी

सिवसुख *आरारा.* आत्मकल्याणनुं सुख, [मुक्तिनुं सुख]

सिवि *कर्पूमं. प्राचीफा. लावल.* सर्वे

सिविय *प्राचीसं.* शिबिका, पालखी

सिविहि *गुर्जरा.* बधा ज

सिष *देवरा.* शिष्य

सिसर *प्राचीफा.* शियाळो (सं.शिशिर)

सिसलउ *उक्ति्र.* ससलो (सं.शशः)

सिसि *आरारा.* माथे (सं.शीर्षे)

सिसि *आरारा.* शशी, चंद्र

सिसिहर *प्राचीफा.* शशियर, चंद्र (सं. शशधर)

सिसी *आरारा.* शीर्षे, नायक तरीके

सिसो *देवरा.* *शीर्ष, [*शशी, *चन्द्र]

सिह *देवरा.* शुं, शुंय

सिहण *प्राचीफा. प्राचीसं.* स्तन (दे.)

सिहर *तेरका. स्थूलिफा.* शिखर; *गुर्जरा.* शिखर, मथाळुं

सिहिकार *प्राचीफा.* आंबो (सं.सहकार)

सिहिज *कादं(शा).* सहेजे, स्वाभाविक रीते ज, [स्वभावथी ज] (सं.सहजेन)

सिहियइ *प्रबोप्र.* सहेजे (सं.सहज)

सिं *ऐतिरा.* छे

सिंख *हम्मीप्र.* शंख

सिंग *तेरका.* शृंग, [शिखर]

सिंगल *नलरा.* एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो (सं.सिंहल)

सिंगा *गुर्जरा.* पिचकारी (सं.शृंगिका); जुओ सिंगासबद, सिंगिय

सिंगार *उक्ति्र. तेरका. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि.* शणगार (सं.शृंगार); *वीसरा.* शणगार; शोभा

सिंगासबद *चारफा.* बंसीनो शब्द, [बंसीनो अवाज] [सं.शृंगिका+शब्द]

सिंगिणि *स्थूलिफा.* धनुष्य (सं.शृंगिणी)

सिंगिय, सिंगीय *चारफा. प्राचीफा.* पिचकारी (सं.शृंगिका); जुओ सिंगा

सिंघ *अखाका. नलरा. वीसरा.* सिंह

सिंघकेसरा *आरारा.* सिंहकेसरा, लाडुनी एक जात; जुओ संघकेसरा

सिंघगत्य *अखाका.* सिंहनी गति, रीत

सिंघा *नरका.* सिंह

सिंघाण *उक्ति्र.* लोढानो काट (सं.सिंहान)

सिंघासण, सिंघासन *आरारा. नरका. प्रेमाका. लावल.* सिंहासन

सिंथु जुओ सइंथउ

सिंदुवार *तेरका.* एक वनस्पति, [नगोड] [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंधव **अखाका. *प्रेमाका.* [मीठुं] [सं. सैंधव]

सिंधा, सिंधु *अभिऊ.* सर्व

सिंधुया *ऐतिका.* *सिन्धु राग, [*सिंधु प्रदेशना लोको]

सिंधुर *गुर्जरा.* हाथी (सं.)

सिंधुवारि *तेरका.* एक वनस्पति, [नगोड] (सं.सिन्धुवार)

सिंधू *हम्मीप्र.* सिन्ध देशना (घोडा), उत्तम घोडानी एक जात; जुओ संधूआ

सिंबल *कर्पूमं.* भातुं (सं.संबल)

सिंबलि *तेरका.* शीमळो (सं.शाल्मलि); जुओ सिबलि

सिंराचा *हम्मीप्र.* एक प्रकारनो तंबु; जुओ सिराचा

सिंहनिकीलिउ *गुर्जरा.* [उपवासनी चोक्कस प्रकारनी श्रेणीवाळुं] एक तप (सं.सिंहनिक्रीडित)

सिंहार *प्राचीसं.* संहार

सिंहिकासुत *प्रेमाका.* सिंहिकानो पुत्र राहु

सी (देवसी) **उषाह.* [देवेशे, रामे]

सीअल *उक्तिर.* पाणीमां थनारो कोई छोड, सफेद कमळ, वाळो के पाटल (सं.शीतलिका)

सीअली *लावल.* शीतळ

सीअह **विक्ररा.* [लक्ष्मी, संपत्ति] [सं.श्री]

सीइंथु *वसंफा.* सेंथो (सं.सीमंत)

सीकरि, सीकरी, सीकिरि **उषाह. गुर्जरा. *विमप्र.* एक प्रकारनुं छत्र, धजावाळुं छत्र; जुओ सिकिरि

सीकारा *उक्तिर.* सीत्कार, सीसकारो

सीकिरि जुओ सीकरि

सीक्कुं *नेमिछं. प्रेमप.* वस्तुओ राखवा माटे अध्धर लटकाववामां आवती छाबडी (सं.शिक्य)

सीकोतरी *ऋषिरा.* ते नामनी [हलकी कोटिनी] देवी

सीख *आरारा. ऋषिरा.* विदाय [सं.शिक्षा]

सीख करी *आरारा.* विदाय लई

सीखाडि *लावल.* शिखामण आप [सं.शिक्ष्]

सीगिणि, सीगिणी *प्रद्युचु. रूपच.* धनुष्य (सं.शृंगिणी)

सीघासण *कामा(त्रि).* सिंहासन

सीचाणू *अभिऊ.* बाज पक्षी (दे.सिंचाण)

सीचिवा *उक्तिर.* सींचवा

सीजइ *नरका. प्रेमाका. शृंगामं.* सिद्ध थाय, पार पडे

सीज्य *चंद्रवा.* *साध्य, *सिद्ध करवा योग्य, [*-ने सिद्ध करनार, *पार पाडनार]

सीझइ *अखाका. अखाछ. अखेगी. अभिऊ. आरारा. उक्तिर. ऐतिका. *कर्पूमं. चित्तसं. जिनरा. दशस्कं(१). नरका. प्राचीसं. प्रेमाका. विक्ररा. शीलक.* सिद्ध थाय, पार पडे; *प्रद्युचु.* सीझे, [रंधाय] (सं.सिध्यते)

सीझवी *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* *जीती लईने; *जिताडीने; *सिद्ध करीने; [शांत करीने]

सीझवी *प्रेमाका.* *धीमे तापे बराबर बाफीने – बीजांने दुःख दईने, [*लाग मेळवीने,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*युक्ति करीने]

सीत *आरारा.* ठंडी, शरदी; *लावल.* ठंडी; *षडाबा.* ठंडुं (सं.शीत)

सीत-काल *लावल.* शियाळो

सीतनुमाह जुओ माह

सीथ **अंबरा.* [(अन्ननां) कण, पिंड] [सं. सिक्थ]; *उक्तिर.* मीण (सं.सिक्थ)

सीथल *मोसाच.* शिथिल

सीदाइ *उक्तिर. षडाबा. हरिख्या.* पीडाय

सीदाती *आरारा.* सुकाती (सं.सद्, सीद्)

सीदुल *सिंहा(शा).* सिंधुल, [भोजराजाना पिता]

सीध *दशस्कं(१).* शीद, शाने

सीधउं *अभिउं. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. चतुचा. प्रेमाका. विराप. षडाबा.* सिद्ध थयुं

सीधवूं *अभिऊ.* सिद्ध करावुं, [पार पाडुं] (सं.सिद्ध परथी)

सीध्य *चंद्रवा.* सिद्धि

सीध्यां *कादं(शा).* सीधां, सीधेसीधां (सं. सिद्धकानि)

सीध्यां आडे *प्रेमाका.* सिद्ध थयुं छे तेने माटे, [सिद्ध थयुं छे तेने आधारे, ओथे]

सीध्युं *अखाका. अखाछ. नरका. प्रेमाका.* सिद्ध थयुं

सीप *आरारा. उक्तिर. वीसरा.* छीप (सं. शुक्ति)

सीबलि *आशरा(व).* शीमळो (सं.शाल्मलि, दे.सिंबलि); जुओ सिबलि

सीम *आरारा.* सीमा, हद, मर्यादा; *अभिऊ. ऋषिरा. गुर्जरा.* सीमा, हद, सीमाडा

सीमति *गुर्जरा.* सुंदर (सं.श्रीमती)

सीमंत *ऋषिरा.* माथानी पांथी, सेंथो [सं.]

सीमाडउ **ऋषिरा. *गुर्जरा. नलरा. विमप्र.* सीमाप्रदेश उपरनो राजा, पडोशी राजा

सीमाढा *कादं(ध्रु).* खंडिया राजा; जुओ शीमाढा

सीमालु *षडाबा.* सीमाडाना राजा

सीमाहडा *विक्ररा.* सीमाडाना राजा, मांडलिको

सीय *तेरका.* ठंडी (सं.शीत)

सीय *प्राचीसं.* सीता (सती)

सीयल *आरारा. गुर्जरा. तेरका. लावल. स्थूलिफा.* शीतल

सीर *उक्तिर. चित्तसं.* जलस्रोत (सं.सिरा), सेर; जुओ शिरूअ, सीहीर

सीरख, सीरष *उक्तिर.* रजाई, गोदडी (सं.शीतरक्षिका) [रा.]

सीरणी *आरारा.* [गोळमिश्रित दहींनी] मीठाई (रा.)

सीरवी *उक्तिर.* [*बलराम, *खेडूत] (सं.सीरपति)

सीरष जुओ सीरख

सीरष *आरारा.* शीर्ष, माथुं

सीरामण *आरारा.* भातुं; *उक्तिर.* सवारनो नास्तो

सील *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वीसरा.* शील, चारित्र्य

सीलउ *उक्तिर. वीसरा.* शीतल

सीलसनाह *ऐतिरा.* शीलरूपी बख्तर [सं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शील+सन्नाह]

सीलावट *पंचवा.* सलाट, [कडियो] [सं. शिलावर्तक]; जुओ सिलावट्ट

सीव *मदमो.* शुभ [सं.शिव]

सीविवउ *उक्ति.* सीववुं [सं.सिव्]

सीस *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. चारफा.* शिष्य

सीसव जुओ शीशव

सीसवि *आरारा(व). प्राचीफा.* सीसमनुं झाड (सं.शिंशपा)

सीसो *प्रेमाका.* काच [फा.शीशः]

सीह *आरारा. उक्ति. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका.* सिंह

सीहदार *उक्ति.* मुख्य द्वार (सं.सिंहद्वार)

सीहला *नेमिछं.* सिंह

सीहीअ *गुर्जरा.* अग्नि (सं.शिखिन्)

सीहीर *अखाछ.* सेर, [सरवाणी, प्रवाह]; जुओ सीर

सीहीलंकी *चंद्रवा.* सिंहना जेवा केडना वळांकवाळी

सीहो (सहो) **ऐतिका.* [समर्थ, शक्तिमान]

सींग *उक्ति.* शिंगडुं (सं.शृंगम्)

सींगउ *उक्ति.* [*शिंगडाना आकारनो दंडो] (सं.शृंगकम्)

सींगडी *उक्ति.* [*वाद्यविशेष, *वनस्पति-विशेष, *पिचकारी] (सं.शृंगिका)

सींगणि, सींगणी *प्राचीफा. विक्ररा. शृंगामं.* धनुष (सं.शृङ्गिणी)

सींगा **प्रद्युचु.* [शिंगडामांथी बनावेलुं वाद्य, तूरी] [सं.शृंग परथी]

सींगा *गुर्जरा.* पिचकारी (सं.शृंग परथी)

सींगिणि *ऋषिरा. गुर्जरा.* धनुष (सं. शृंगिणी)

सींगी *अखाका.* फूंकीने वगाडवानुं शिंगडानुं बनावेलुं एक वाद्य; *उपबा.* एक प्रकारनुं झेर (सं.शृंगिन्); *वीसरा.* शिंगडावाळी

सींघ *पंचवा.* सिंह

सींघासण *आरारा.* सिंहासन

सींचाणुं, सींचाणो *गुर्जरा. प्रेमाका.* बाज (दे.)

सींथा *अभिऊ.* सेंथा (सं.सीमन्तक)

सींदूरीउ *आरारा(व).* सिंदूरी, एक वृक्ष (सं. सिन्दूर)

सींधव *उक्ति. षडाबा.* सिंधालूण (सं. सैन्धव)

सींधु *मदमो.* निर्णयसिंधु ?

सींधूआ *हम्मीप्र.* सिंधदेशना घोडा, घोडानी एक उत्तम जात; जुओ सिंधू

सींभ *उक्ति.* कफ, सळेखम (सं.श्लेष्मा)

सींसमि *तेरका.* सीसम (सं.शिंशपा)

सु *उक्ति. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. षडाबा.* ते (सं.सो)

सु *नरप(द).* साथे [सं.समम्]

सु *नेमिछं. लावल.* सो [सं.शत]

सु *लावल.* सारी रीते [सं.]

सुअर *गुर्जरा.* सूवर, वराह, एक जंगली प्राणी (सं.शूकर)

सुआसणी *उक्ति.* सुवासिनी

***सुइ (सुह)** **ऐतिका.* [सुख]

सुई *उक्ति.* सोय (सं.सूची); जुओ सूइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुई *नलरा.* दरजी, सई (सं.सूचिक)

सुईउ *उक्ति.* सई, दरजी (सं.सौचिकः); जुओ सूईउ

सुकठ *चंद्रवा.* सुखड

सुकड, सुकिड *ऐतिका. पंचवा. मदमो.* सुखड (सं.शुष्क+क)

सुकडि *आरारा. ऐतिका. शृंगामं.* सुखड

सुकतइ *शृंगामं.* सुकातां [सं.शुष्क-]

सुकमाल, सुकुमाल *आरारा. ऋषिरा. देवरा. नेमिछं. प्राचीफा. वसंफा(ल). *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सुकुमार, कोमळ; जुओ सुखमाल

सुकयत्थ *आरारा. ऐतिका. जिनरा.* सफळ (सं.सुकृतार्थ)

सुकल ध्यांन *देवरा.* शुद्ध, पवित्र ध्याननो एक प्रकार, [ध्यान अने ध्येयना विकल्प-रहितपणे शुद्ध आत्मामां एकाग्रता] [जै.]

सुकल लेस्या *देवरा.* जेना वडे जीव शुभ कर्म बांधे छे ते ऊंची मानसिक अवस्था, [कषायो जेमां मंद होय एवुं आत्म-परिणाम, आत्मवृत्ति] (सं.शुक्ल लेश्या) [जै.]

सुकलाणी *आरारा. ऐतिका.* सुकुलीन [स्त्री]

सकल्लाणवल्ली *लावल.* सुंदर कल्याणवेली

सुकुंतई [सुकंति] *ऋषिरा.* उत्तम कांति के शोभावाळुं

सुकि *आरारा.* सावकी (माता) (सं.सपत्नी); *कादं(शा). प्रद्युचु. प्रबोप्र.* शोक्य (सं. सपत्नी)

सुकिड जुओ सुकड

सुकिय *ऐतिका.* सुकृत, [सत्कर्म, पुण्यकर्म]

सुकिल *प्राचीफा.* शुक्ल पक्षनुं, [सुद]

सुकिवा *उक्ति.* सूकववा (सं.शुष् परथी)

सुकुमारिका *षडाबा.* सुंवाळी, एक प्रकारनी पूरी

सुकुमाल *उपबा. गुर्जरा. तेरका. नलरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सुकुमार, कोमळ; *वसंफा(ल).* जुओ सुकमाल; जुओ सुखमाल

सुकुलीणी *ऋषिरा. नेमिछं.* सारा कुळनी, कुळवान (सं.सुकुलीन)

सुकुंअलीय *स्थूलिफा.* सुकोमळ

सुकेड *हरिख्या.* सुखड

सुक्खासण, सुखासण *प्राचीसं.* शिबिका, [पालखी] (सं.सुखासन)

सुक्रित *प्रेमाका.* सुकृत्य

सुखडी *आरारा.* भातुं; *प्रेमप.* मिष्ट वानगी; *चतुचा.* भेट, पुरस्कार; जुओ सुंखडी, सूखडां

सुखण *मोसाच.* सुखिनी ? शंखिनी ? शोक्यण ? [शोक्य – गाळ रूपे] [रा.]; जुओ सुंखिणि, सोखण

सुखदेव *चंद्रवा.* शुकदेव

सुखपाल *कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. प्रेमाका. मदमो.* पालखी

सुखम *जिनरा.* सूक्ष्म, [इंद्रियथी ग्रही न शकाय तेवुं शरीर प्राप्त करावनारुं नामकर्म] [जै.]

सुखमाल [सुकमाल] *देवरा.* सुकुमार

सुखरि *स्थूलिफा.* उत्तम (रा.सखरा)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुखलापी *वाग्भवा.* *सुखपूर्वक आलाप करनार, [सुखदायक, मधूरुं बोलनार]

सुखवट्टउ **विमप्र.* [सुखथी रहेतो, सुखी] [सं.सुखवर्तक]

सुखशिज्जा *नलरा.* सुखशय्या, [सुखाकारी शय्या]

सुखसम्माण *चारफा.* सुख अने सन्मान – गौरव (सं.सौख्य+संमान)

सुखाननी *चतुचा.* सुख आपे एवा मुखवाळी [सं.]

सुखामो *मोसाच.* शोभायमान (सं.सुषम परथी) ? सुखमय ?

सुखालीय **वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सुस्वच्छ (सं.सुक्षालित)

सुखासण जुओ सुक्खासण

सुखासन *प्रेमप.* पालखी; *गुर्जरा.* आरामभर्युं आसन (सं.)

सुख-साता **देवरा.* [सुख अने सुख, खूब सुख] (सं.सुख+सात)

सुखासुण *विमप्र.* [आरामदायक आसन], *नानी पालखी

सुख्य *आरारा.* सुख (सं.सौख्य)

सुगत **कादं(शा).* [बुद्ध भगवान] (सं.)

सुगति *उपबा.* सारी गति [-अवस्था, परिणाम]; [मुक्ति] (सं.)

सुगंधिका *शृंगामं.* सुगंध लई जनारी स्त्री, [एक प्रकारनी राजपरिचारिका]

सुगाल *अंबरा. उपबा. जिनरा. लावल.* सुकाळ, सारो समय, [वरसाद थयो होय तेवो समय]

सुगाळ **प्रेमाका.* [सुगाळवो, जेने सूग आवती होय एवो] [सं.शूक-]

सुगुणी *ऋषिरा.* सो गणी

सुगेह *ऋषिरा.* सारुं घर [सं.]

सुचंग **अखाछ. गुर्जरा. चित्तसं. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. प्रद्युचु.* खूब सुंदर (सं.सु+दे.चंग)

सुचंगि *आरारा.* सुंदर

सुचालणउ *वीसरा.* झडपथी चालनारो

सुचिंत *आरारा.* सचिंत, अस्वस्थ

सुजगीश *ऐतिका.* सुन्दर इच्छा; जुओ जगीश

सुजवणउ *शृंगामं.* शुद्धि, [प्रक्षालन] [सं. शुध् परथी]

सुजाण *गुर्जरा. चतुचा. चंद्रवा. वीसरा. षडाबा.* ज्ञानी, समजदार, डाह्यो (सं.सु+ज्ञान)

सुजीवी (सु जीवी) **विमप्र.* [सो जेवी]

सुझाळो *अखाछ.* सूझवाळो, [ज्ञानी] [सं.शुध्यति परथी]

सुट्ठी *नेमिछं.* *उत्तम, *श्रेष्ठ (सं.सुष्ठु), [*सुस्थित] [प्रा.सुट्ठिअ]

सुढवुं, सुंढवुं *मदमो.* ऊपडवुं, चालवुं; जुओ सुंढवुं

सुण *उक्तिर.* शकुन; *विक्रच.* पशुपक्षीना अवाज ओळखवानी विद्या

सुणउं जुओ सणउं

सुणय *ऐतिका.* नीतिमान, सदाचारी, [सुनीतिवाळी] [सं.सुनय]

सुणवइ **विमंप्र.* [पक्षीना अवाज परथी संकेतो जाणनार] [सं.शकुनविद्]

सुणह, सुणहउ *प्राचीसं. विक्ररा.* कूतरो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.शुनक)

सुणिहर *प्राचीफा.* शयनगृह

सुणीजउ *वीसरा.* स्नेहीजन (सं.स्निह्यति परथी); जुओ सणीजां

सुतर *अखाछ.* [सुतरुं], सहेलुं, समुं

सुतली *सिंहा(शा).* पातळी, सीधी ?

सुत वेलां *आरारा.* सुवावडमां

सुतहार *प्राचीसं.* सूत्रधार, शिल्पी

सुति *आरारा.* पुत्री

सुतिइ *कादं(शा).* पूरुं थतां (सं.समाप्ते); जुओ सूतूं

सुत्र *मदमो.* नियम [सं.सूत्र]

सुदेव *आरारा.* ?

सुद्धि *आरारा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. हम्मीप्र.* समाचार, खबर (सं.शुद्धि)

सुद्धु *कादं(शा).* स्पष्ट, [खरो]

सुद्रह *गुर्जरा.* समुद्र; जुओ सुंद्र

सुध *आरारा.* शुद्ध, निर्मळ; शुद्ध, बराबर, पूरेपूरी

सुध *प्रेमप.* भान; *कामा(त्रि).* समाचार (सं. शुद्धि); जुओ सुधि

सुधउ *ललिरा.* सीधो, [साचो]; **नरप(द).* [पूरेपूरो, साव]; *नरका.* शुद्ध, साचो

सुध वार *नंदब.* शुद्ध पाणीवाळुं

सुधाचार *आरारा.* शुद्ध आचारवाळो

सुधि *आरारा.* खबर, तपास; *शीलक.* क्षेम-कुशळ; *नेमिछं.* शुद्धि; जुओ शुद्धि, सुध

सुधिइं *नेमिछं.* शुद्धिथी

सुधी *चतुचा.* सीधी, सरळ; *देवरा.* साची (सं.शुद्ध)

सुधे मन *चतुचा.* शुद्ध मनथी

सुधो *चित्तसं.* सुधी

सुध्या *अंबरा.* सुधा, अमृत

सुन *कामा(त्रि).* शून्य, [सूनुं]

सुन हो दूत जुओ सनहो

सुनानुं *प्रेमाका.* सोनानुं, सुवर्णनुं

सुनिछउ **ऐतिका.* [सुनिश्चयवाळा, शुभ संकल्पवाळा]

सुनु *विमप्र.* शून्य मननो, [भान वगरनो]

सुनुं *मोसाच.* सोनुं [सं.सुवर्ण]

सुनैये *मोसाच.* सोनाना सिक्का वडे [सं. सौवर्णिक]

सुपइ *आरारा. चतुचा.* सोंपे (सं.समर्प्य)

सुपइ *कादं(शा).* समाप्त थाय

सुपएस *तेरका.* सुंदर प्रदेशवाळां (सं.सुप्रदेश)

सुपच्चल *प्राचीसं.* सुसमर्थ [सं.सु+दे.पच्चल]

सुपन *ऐतिका. नेमिछं.* स्वप्न

सुपनाध्याय *ऐतिका.* स्वप्नाध्याय, [स्वप्ननो अभ्यास के विचार रजू करता ग्रंथ]

सुपरपरि *ऐतिका.* सारी रीते, सुंदर रीते

सुपरि *गुर्जरा. लावल.* सारी पेरे, सारी रीते [सं.सु+प्रकार]

सुपरिकर **नेमिछं.* [पोतानो परिजनवर्ग] [सं.स्व+परिकर]

सुपरिस *विक्ररा. शीलक.* सुपुरुष, सज्जन

सुपवित्तिण *ऐतिका.* सुपवित्र [वडे]

सुपसंसिय *ऐतिका.* सुप्रशंसित, [सारी रीते प्रशंसा पामेल]

सुपसाउ *ऐतिका. गुर्जरा.* सुप्रसाद, कृपा

सुपसाउलु *नलरा.* कृपा (सं.सु+प्रसाद)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुपसाय *आरारा.* कृपा (सं.सुप्रसाद)

सुप्रमाण *आरारा.* प्रतीतिपूर्वक, योग्यतापूर्वक

सुप्रसाद (सुप्रसाद) *ऐतिका.* शोभन कृपा-[वाळा]

सुबस **वीसरा.* [सारी रीते वसेलुं]

सुभक्ष *नलरा.* सुकाळ (सं.सुभिक्ष)

सुभचरी *आरारा.* जेनुं चरित शुभ छे एवो

सुभवती *आरारा.* कल्याणवती

सुभ सर्मा *चंद्रवा.* कल्याण [अने सुखथी भरेल] [सं.शुभशर्मा]; जुओ सर्म

सुभा *आरारा.* सभा

सुभाव, सुभाव्य *ऋषिरा. चित्तसं.* स्वभाव

सुम *कस्तुवा. चंद्रवा.* कृपण; जुओ सुंब

सुमति *ऐतिका.* ईर्यासमिति आदि, [हलन-चलन वगेरे विषयक विवेक] [जै.]

सुमर- *तेरका.* स्मरवुं (सं.स्मृ)

सुमरण *प्रेमप.* स्मरण

सुमरिऊंत *ऐतिका.* स्मरण करवाथी

सुमरेवि *ऐतिका.* याद करीने

सुमाणस *वीसरा.* सारो माणस (सं.सु+मानुष)

सुमिण, सुमिणउ *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीफा.* स्वप्न

सुमीठ *वीसरा.* घणुं मीठुं (सं.सु+मिष्ट)

सुमुहुर *शृंगामं.* सुमधुर

सुम्म- *तेरका.* संभळावुं (प्रा.; सं.श्रूय्) [दे.]

सुयइं *आरारा.* सूए

सुयण *विक्रच.* पशुपक्षीना अवाजना संकेतो [सं.शकुन]

सुयण *गुर्जरा.* सुजन, [*स्वजन]

सुयदेवि *ऐतिका.* श्रुतदेवी, [शास्त्रज्ञानरूप देवी]

सुयार *विराप.* रसोयो (सं.सूपकार)

सुर *वीसरा.* स्वर, अवाज

सुर *अखाछ.* सूरदास, आंधळो

सुरग *वीसरा.* स्वर्ग

सुरगइ *जिनरा.* देवगति, [देव तरीकेनो जन्म] [सं.सुरगति]

सुरगवि *ऐतिका.* कामधेनु [सं.]

सुरगुर *गुर्जरा.* देवोना गुरु, [बृहस्पति] (सं.सुरगुरु)

सुरगुरवि **ऐतिका.* [देवगुरु बृहस्पति पण]

सुरगो *ऐतिरा.* कामधेनु [सं.]

सुरघट *ऐतिरा.* दैवी घडो, मनवांछित आपे तेवो घडो [सं.]

सुरठ *तेरका.* सुराष्ट्र [प्रदेश]

सुरठाण *विक्ररा.* सुरस्थान, स्वर्ग

सुरत, सुरता *अखाका.* कामक्रीडा [सं.]; लगनी, [ध्यान, सरत, एकाग्रता]; *अखेगी.* ध्यान, लगनी; [मनोवृत्ति]; *चतुचा.* देखाव, रूप; *नरका.* कामक्रीडा; लगनी, ध्यान; [*रूप]; *प्रेमाका.* ध्यान, [सरत, भान]; *सिंहा(शा).* सूध, भान, सतेजपणुं, [एकाग्रता, ध्यानमग्नता]; जुओ सुरति, सूरत

सुरत-नूरत **अखाका.* [योगसाधनानी बे अवस्थाओ, लक्ष्यमां लीन थवुं ते (अंतर्मुख वृत्ति)अने बाह्य प्रवृत्तिमांथी निवृत्त थवुं ते (बहिर्मुखी वृत्ति)]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरतर, सुरतरु *आरारा. ऋषिरा.* कल्पवृक्ष

सुरतसंग्राम *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कामक्रीडारूपी संग्राम (सं.)

सुरतसुरंग *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* काम-क्रीडानो आनंद (सं.)

सुरता जुओ सुरत

सुरता-खरा *अखाका.* सुरतामां खरा, पूरेपूरा लीन थयेला, [खरा सुरतावस्थावाळा – लक्ष्यमां लीन थयेला]

सुरतांत *कादं(शा).* सुरतक्रियाना अंत समयनुं (सं.)

सुरति *चित्तसं.* वृत्ति; लगनी; सुरतक्रीडा, कामक्रीडा

सुरति, सुरत्य *अखाका.* लगनी, [ध्यान, एकाग्रता]; [लक्ष्यमां एकाग्र थवारूप वृत्ति]; *नरका.* लगनी, [ध्यान, एकाग्रता]; जुओ सुरत

सुरतुर *प्राचीफा.* कल्पवृक्ष (सं.सुरतरु)

सुरत्य, सुर्त *चित्तसं.* वृत्ति; जुओ सुरति

सुरद्रम *ऐतिका.* सुरद्रुम, कल्पवृक्ष

सुरपति *लावल.* देवोना पति इन्द्र

सुरभ *आरारा.* सुरभि, सुगंध

सुरभि *दशस्कं(१). प्रेमाका. हरिख्या.* गाय (सं.)

सुरभि-सुत *प्रेमाका.* *वाछरडो, [बळदियो]

सुरभि-हिम-लक्षण *वसंवि(ब्रा).* सुगंधित अने शीतल (सं.)

सुरभी *आरारा.* गाय (सं.सुरभि)

सुरमहिल *तेरका.* अप्सरा (सं.सुरमहिला)

सुरलित *आरारा.* आनंदभरी

सुरवइ *गुर्जरा.* देवेन्द्र (सं.सुरपति)

सुरवर *ऐतिका.* उत्तम देव, इन्द्र

सुरसरी *अखेगी. दशस्कं(१).* सुरसरिता, आकाशगंगा

सुरसाल *गुर्जरा.* आंबानुं सरस वृक्ष (सं.सु+ रसाल); *ऐतिका.* *उत्तम, [सुंदर, सरस]

सुरसुत *ऐतिरा.* देवपुत्र

सुरह *वीसरा.* *गाय, [*मनोहर, *उत्तम, *पवित्र] [रा.; सं.सुरभि]

सुरहा, सुरहां *आरारा. ऐतिरा. गुर्जरा.* सुगंधित (सं.सुरभीणि)

सुरहि *आरारा.* गाय (सं.सुरभि); *तेरका. प्राचीफा.* सुगंधयुक्त (सं.सुरभि)

सुरहिय *प्राचीफा.* सुरभित

सुरही *आरारा(व).* रास्ना, तुलसी, चंदन, सरु, सालेडु आदि वृक्षोमांथी कोई (सं.सुरभि); एक करियाणुं

सुरंग *गुर्जरा.* मजानुं, सरस रंगवाळुं; *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* आनंदपूर्ण, मनोहर, सुंदर (सं.)

सुरंग *उक्तिर.* भोंयरुं (सं.)

सुरंगी *ऐतिका.* सुंदर रंगवाळी, [सुंदर]; जुओ मुरंगी

सुरिइं *आरारा.* देवे

सुरिताण *प्राचीसं.* सुलतान

सुरि-नर *देवरा.* देव अने मानव

सुरिंदो *लावल.* सुरेन्द्र, इंद्र

सुरी *प्राचीफा. सिंहा(म).* देवांगना, देवी (सं.सुर परथी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरीसु *उषाह.* सरखो, [जेवो] (सं.सदृश)

सुरूव *ऐतिका.* सुरूप, [सुंदर]

सुर्त जुओ सुरत्य

सुल *कस्तुवा.* मुश्केली के झघडानो निकाल, [बचाव, रक्षा]; *मदमो.* भावनी खेंचताण, [किंमत नक्की करवी ते] (अ.सुल्ह); जुओ सूले

सुलताण *ऐतिका.* सुलतान

सुलप *प्राचीका.* सहेलो (सं.सुलभ)

सुलहलादिक *षडाबा.* सुलहल (एक जंतु) वगेरे, [*शाहूडी वगेरे]; [*सं.शलल]

सुलंभ *षष्टिप्र.* सुलभ

सुल्यु *आरारा.* नीवड्युं (रा.) [*अ.सुल्ह]

सुवन्नरेह *तेरका.* सुवर्णरेखा (नदी)

सुवरणी जुओ सुविणी

सुवर्णजटित *नलरा.* सुवर्णजडित [सं.]

सुवंस *आरारा.* वांसळीना प्रकारनुं वाद्य

सुवान *कादं(शा).* सारा रंगवाळुं (सं.सुवर्ण)

सुवास *कादं(ध्रु).* पोतानुं रहेठाण [सं.स्व+वास]

सुवासणिय *प्राचीफा.* सुवासिनी, सौभाग्यवती स्त्री

सुवि *लावल.* सर्व

सुविणी (सुवरणी) **ऋषिरा.* [विख्यात, यशस्वी]

सुविहाणु जुओ विहाणु

सुविहित **ऋषिरा.* [सुंदर आचारोवाळा साधुओ] [सं.]

सुविहिय *ऐतिका.* सुविहित, [सुंदर आचारणवाळा, सदाचारी]

सुविहुं *विमप्र.* बधांने [सं.सर्वे+खलु]

सुवेध *नलरा.* रसिक, विदग्ध, [चतुर] [सं. सु+विदग्ध]

सुवो, सवो, सुहो *पंचवा.* पोपट (सं.शुक)

सुशंभु *कादं(ध्रु).* बहु सुख आपनार, [परम मंगळकारी] [सं.]

सुशिर *विराप.* काणां (सं.सुषिर); जुओ सुंसिर

सुषमाअरउ *उक्तिर.* जेमां सुख वधारे एवो एक काळविभाग [जै.]

सुषोपती *चित्तसं.* सुषुप्ति, निद्रावस्था

सुसइ *उक्तिर. तेरका. षडाबा.* सुकाय, सोसाय (सं.शुष्यति)

सुसतउ **गुर्जरा. *वीसरा.* [स्वस्थ, शांत]

सुसमथ *आरारा.* सुसमर्थ

सुसर *प्राचीफा.* मीठा स्वरवाळी

सुसरउ *आरारा. उक्तिर.* ससरो (सं.श्वसुर)

सुसुरउ *षडाबा.* ससरो (सं.श्वसुरः)

सुसेर *अखाका.* सोंसरुं, [सीधुं, अविकृत]

सुस्थपणउं *उपबा.* स्वस्थता, स्थिरता

सुह *गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. षडाबा.* सुख; जुओ सुइ

सुहकर, सुहकरो *नेमिछं.* सुख आपनार

सुहगुरु *उक्तिर. चारफा. प्राचीफा.* शुभगुरु, कल्याणकारक प्रशस्त गुरुवर्य, सद्गुरु

सुहड *ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. विक्ररा. विमप्र.* सुभट, योद्धो

सुहण *आरारा.* शकुन

सुहणउं *उपबा. उषाह. जिनरा. नलरा. शीलक. शृंगामं. सम्यचो.* स्वप्न, सोणुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहबोलु *नलरा.* राजानी तहेनातमां रहीने मीठां वचन बोलनार, सुखबोलो

सुहम *जिनरा.* सूक्ष्म [संपराय], [जेमां लोभ- ना सूक्ष्म अंश सिवाय मोहनीय कर्मो उपशान्त के क्षीण थया होय एवी आत्मवास्था] [जै.]

सुहम-स्वामि *शृंगामं.* सुधर्मास्वामी, महावीर भगवानना गणधर

सुहर *नलाख्या.* वराह, [जंगली] डुक्कर (सं. शूकरः)

सुहलालि **प्रद्युचु.* [सुखनी लालसावाळी]

सुहली *पंचवा.* *घी-गोळमां घउंनो लोट शेकी बनावेली खाद्यवानगी, [सुंवाळी, एक जातनी पूरी]; जुओ सुहाली

सुहव, सुहवि *आरारा. विक्ररा.* सधवा, सौभाग्यवती स्त्री [सं.सुधवा]

सुहंम *ऐतिका.* सुधर्मास्वामी, [भगवान महावीरना गणधर]

सुहाइ *उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. वीसरा.* सुख आपे, गमे (सं.सुखापयति); **गुर्जरा. तेरका.* सुख पामे (सं.सुखा-); *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सुख पामे, सुख आपे

सुहाग *आरारा.* शोभा, प्रशंसा, कीर्ति (रा.) (सं.सौभाग्य); *गुर्जरा.* सद्भाग्य[युक्त]; [प्रशस्त]

सुहागी *नरका.* *भाग्यशाळी, [सुंदर]

सुहाणउं *गुर्जरा.* सुख थयुं, गम्युं

सुहाणी **नेमिछं.* [सुख आपनारी थई, गमी]

सुहामणउ *गुर्जरा.* सुखजनक, आनंदजनक, [मनोहर]

सुहाय *नरका.* गमे, सुख आपे (सं. सुखापयति); *नरका. लावल.* शोभे

सुहायइ *उक्तिर.* सुख आपे (सं.सुखायति)

सुहार *मदमो.* रसोइयो (सं.सुपकार)

सुहालडी *आरारा.* सुंवाळी, [मुलायम]

सुहाली *तेरका. प्राचीसं.* सुंवाळी, पूरी (सं. सुकुमारिका); जुओ सुहली

सुहावउ **गुर्जरा.* [शोभावो, सुंदर रीते धरो] [सं.शोभ्]

सुहासणि *ऋषिरा.* सौभाग्यवंती (सं. सुवासिनी)

सुहांतउ *वसंवि(ब्रा).* *उज्ज्वल, *प्रकाशित, [शोभतुं]; जुओ प्रेमसुहांतीय

सुहिणइ *ऐतिका.* स्वप्नमां, [सोणामां]

सुहिणो *जिनरा.* स्वप्न

सुहु (सुहु गुरु) *गुर्जरा.* शुभ[गुरु], [सद्गुरु]

सुहुड *अभिऊ.* सुभट, योद्धो

सुहुणउं *अखाका. प्रबोप्र.* स्वप्न

सुहुम निगोद *आनंस्त.* साधारण वनस्पति-काय नामनी सूक्ष्म जीवराशि [जै.]

सुहुलूं *नलाख्या.* सुलभ, सोहलुं, [सरळ; सुखकारक] [सं.सुख परथी]

सुहुंणइ *ऐतिरा.* स्वप्ने

सुहेज *लावल.* सारुं हेत, घणो स्नेह

***सुहेतलउं [*सुहेलउं]** *षष्टिप्र.* सहेलुं [सं.सुख परथी]

सुहेलउं *नेमिछं. ०षष्टिप्र.* सहेलुं (सं.सुख परथी)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहो जुओ सुवो

सुं *आरारा.* वडे, -थी; *गुर्जरा. हरिख्या.* साथे, सहित (सं.समम्)

सुंआल *प्राचीसं.* सुकुमार, सुंवाळो

सुंक *उक्तिर.* जकात, महेसुल (सं.शुल्कः)

सुंखडी *ऐतिका.* मीठाई; जुओ सुखडी

सुंखिणि *विमप्र.* शंखणी, [कर्कशा, कंकासियण स्त्री] [सं.शंखिनी]; जुओ सुखण

सुंघिवा *उक्तिर.* सूंघवा

सुंचल *उक्तिर.* संचळ, खार, काळुं मीठुं (सं.सौवर्चलम्)

सुंठिणि *विमप्र.* *चूंची, *छूंछी

सुंजु *गुर्जरा.* [*सूझतुं, *देखातुं, *थतुं]

संडल *नेमिछं. विमप्र.* सुंडलो, टोपलो

सुंडादंड *गुर्जरा. चित्तसं.* सूंढ (सं.शुंड+दंड)

सुंढवुं *वेताप. सिंहा(शा).* सज्ज थवुं, ऊपडवुं, जवुं; जुओ सुढवुं, सूडवुं, सूंढिया, सोडाडो, सोंडवुं

सुंदर-वंदर-वालि, सुंदर-वंदुर-वाल *वसंवि(ब्रा).* सुंदर वंदनमाला, [स्वागत माटेनुं एक तोरण]

सुंदादंड *वाग्भवा.* सूंढरूपी दंड [सं.शुंड+दंड]

सुंद्र जुओ मुंद्र

सुंनि *प्राचीका.* सोनामां (सं.सुवर्ण)

सुंपी *अखाका. कादं(शा). लावल.* सोंपी, सुप्रत करी (सं.समर्प्य)

सुंब *सिंहा(शा).* कृपण; जुओ शुंब, सूंब

सुंमला *प्राचीका.* कंजूस, बखील

सुंस *आरारा.* श्वास, सूंघवुं ते (रा.)

सुंसरियां (सुं सरियां) **गुर्जरा.* [-नी साथे चाल्या, धस्या]

सुंसिर *गुर्जरा.* छिद्र (सं.सुषिर); जुओ सुशिर

सुंसेर *अखाछ.* सोंसरो

सुंहालउं *नरका. नेमिछं. विमप्र.* सुंवाळुं, कोमळ (सं.सुकुमार)

सुंहाली *लावल.* सुंवाळी, [एक जातनी पूरी] (सं.सुकुमारिका)

सू (सूअ) *गुर्जरा.* दीकरो (सं.सुत)

सूअ, सूया *प्रद्युचु. प्राचीफा.* पोपट (सं.शुक)

सूअडउ *गुर्जरा.* पोपट (सं.शुक+ड)

सूअण *विमप्र.* *सज्जन, [*स्वजन]; जुओ सूयण

सूअर *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा.* सूवर, [जंगली डुक्कर] (सं.शूकर)

सूआ *आरारा.* सूता, सुवावडी स्त्री

सूआ *उक्तिर.* [?] (सं.सूचकाः)

सूआडि *उक्तिर.* प्रसूतिखंड (सं.सूतिकागृहम्)

सूआर *उक्तिर. गुर्जरा. नलरा.* रसोयो (सं. सूपकार)

सूआरइ *लावल.* सुवाडे [सं.स्वप्]

सूआरोग *आरारा. ऋषिरा.* स्त्रीओने प्रसूति पछी थतो रोग [सं.सूता+रोग]

सूआवडि *विमप्र.* सुवावड; *आरारा.* सुवावड दरम्यान सेवाचाकरी

सूइ, सूई *आरारा. नेमिछं.* सोई (सं.सूचि); जुओ सुई

सूईउ *उक्तिर.* सई, दरजी (सं.सौचिकः); जुओ सुईउ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूक *अखाछ.* शुष्क

सूकइ *उक्तिर.* *गुर्जरा. षडाबा.* सुकाय (सं.शुष्क परथी)

सूकट (सूकट लिया) **वीसरा.* [समेटी लीधा, भीडी लीधा]

सूकड *अभिऊ. वीसरा.* सुखड (सं.शुष्क+ डी)

सूकडि *अभिऊ. उपबा. कृष्णबा. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा. विमप्र.* सुखड (सं. शुष्क परथी)

सूकडी *आरारा(व).* सुखड, चंदन

सूकर *अखाका.* सूवर, [जंगली डुक्कर] [सं. शूकर]

सूकवणु *षडाबा.* सूकववानी क्रिया

सूखडां *विमप्र.* सुखडी, एक प्रकारनी मीठाई; जुओ सुखडी, सूंखडी

सूखडी *कादं(शा). नेमिछं.* पाणी नथी पड्युं तेवी सूकी मीठाई; पछी सर्वसामान्य मीठाई (सं.शुष्कपुटिका)

सूखिम *ऐतिरा.* सूक्ष्म, [लघु]

सूगडांग *उक्तिर.* सूत्रकृतांग नामनो जैन शास्त्रग्रंथ

सूगण *देवरा.* सु-गुणयुक्त

सूगामणउ *उक्तिर. उपबा.* सूग उपजावनारुं, घृणास्पद (सं.शूक परथी)

सूचि *अखाका.* सोय [सं.]

सूचि, सूची **प्रेमाका.* [यज्ञमां घी होमवा माटेनी लाकडानी कडछी] [सं.स्रुच्]

सूचिउ *षडाबा.* सूचव्युं, कह्युं (सं.सूच्यते)

सूची जुओ सूचि

सूजइ *उक्तिर.* सूजी जाय (सं.श्वयति)

सूजवइ *उक्तिर.* सोजो आणे [सं.श्वाययति]

सूझइ *उक्तिर. गुर्जरा. प्राचीसं. षडाबा.* शुद्ध थाय (सं.शुध्यते); *उपबा. विमप्र.* शुद्ध – साधुओने माटे वापरवा योग्य – होय

सूझवइ *उक्तिर.* शुद्ध करे (सं.शुध्य – परथी)

सूझीइ **कर्पूमं.* [शुद्ध थईए, पवित्र थईए] [सं.शुध्य परथी]

सूड *जिनरा.* नाश (सं.सूदन)

सूडउ *उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. प्रेमाका. लावल.* पोपट (सं.शुक)

सूडलो *नरका.* पोपट

सूडवुं *प्रेमाका.* कापवुं, नाश करवो [सं.सूद्]

सूडावुं (सूढाववुं) *चंद्रवा.* मोकलाववुं, [रवाना करवुं, चलाववुं]; जुओ सूंढवुं

सूडाववुं *विमप्र.* साफ करावववुं

सूडो, सूडी *नरका.* पोपट, मेना

सूढाववुं जुओ सूडावुं

सूणहरउं *उक्तिर.* शयनगृह

सूणी *षडाबा.* सूजी गई [सं.शून]

सूतकी **नरका.* [अशुद्ध, अपवित्र]

सूतहार *उपबा.* सुथार (सं.सूत्रधार)

सूतिका *आरारा.* सुवावडी स्त्री [सं.]; सुवावडी स्त्रीनी परिचारिका

सूतिकाभवन *कादं(शा).* सुवावडीनो ओरडो (सं.)

सूतूं *कादं(शा).* पूरुं [थयुं] (सं.समाप्तकम्); जुओ सुतिइ, सोंत-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्तु जुओ घरिसूत्तु

सूत्र *हरिख्या.* तंत्र, [व्यवस्था, शासन] [सं.]

सूत्र *आरारा.* सूत्रग्रंथ, शास्त्र

सूत्रधार, सूत्रध्यार, सूत्रहार *उक्तिर. नलरा. विक्ररा. षडाबा.* सुथार (सं.)

सूत्रहीया *शीलक.* सूतरिया, सूतरना वेपारी [सं.सूत्र परथी]

सूथ **नलरा.* [सुख] [सं.सुस्थ]

सूथल **गुर्जरा.* [शिथिल, श्रान्त]

सूदनकरण *षडाबा.* सूडवुं ते, कापवुं (सं.)

सूध *नरका.* संभाळ [सं.शुद्धि]

सूधउं *अखाका. अखाछ. अखेगी. अभिऊ. अंबरा. आरारा. उपबा. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. चित्तसं. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. विमप्र.* शुद्ध, निर्मळ, चोख्खुं, सारुं, स्पष्ट, सीधुं, पूरुं, साचुं

सूध्य *प्रेमाका.* खबर, [भाळ] (सं.शुद्धि)

सून *अखाका.* शून्य, ब्रह्म

सूनक *चंद्रवा.* सनक ऋषि

सूनु *आरारा.* पुत्र (सं.)

सून्य *गुर्जरा.* सूनो (सं.शून्य)

सूप *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सूपडुं [सं.शूर्प]

सूब *नंदब.* सूम, उदास, [मूजी] [अ.शूम]; जुओ सुम, सुंब

सूमडो *दशस्कं(२). प्रेमाका.* *कंजूस, जड, [मूजी]

***सूमू [सूसमु]** *तेरका.* सुषम [काळ], [जेमां सुख छे एवो काळविभाग] [जै.]

सूयडउ *षडाबा.* सूडो, पोपट (सं.शुक)

सूयण *गुर्जरा.* स्वजन; जुओ सूअण

सूयर *सिंहा(म).* सुवर, [जंगली डुक्कर] (सं.शूकर)

सूया जुओ सूअ

सूयारइ *आरारा.* सुवाडे [सं.स्वापयति]

सूयारपणइ *गुर्जरा.* रसोया तरीके [सं. सूपकारत्वन]

सूयारुख *आरारा(व).* सुवानुं वृक्ष (सं. शताह्वा)

सूयारोग *आरारा.* सुवावडमां थतो रोग

सूयावडि *आरारा.* सुवावड

सूयांणी *आरारा.* सुवावडी स्त्रीनी परिचारिकाओ [सं.*सूतिजानि]

सूयिवा *उक्तिर.* सूवा [सं.स्वप्]

सूर *अखाका. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. नरका. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* सूर्य (सं.)

सूरइं **वसंफा. *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).* शूरवीरे

सूरउ **गुर्जरा.* [शूरो]

सूरत *अखाछ.* *सुरता, *लगनी, [वृत्ति]; जुओ सुरत, सूर्त

सूरता *षडाबा.* शूरपणुं (सं.शूरता)

सूरयोपम *ऐतिका.* सूर्य समान

सूरा *उपबा.* सूवर, डुक्कर (सं.शूकर)

सूरिज *उक्तिर. गुर्जरा. वीसरा.* सूर्य

सूरिम *प्राचीसं.* शौर्य

सूरिमंतु *ऐतिका.* सूरिमन्त्र, [सूरि ए पदवी माटेनो मंत्र]

सूरियांपान *प्रेमाका.* *कसबजरीना तारवाळां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पान, [कोई वनस्पतिनां पांदडां]

सूरीसरा *लावल.* सूरीश्वर, श्रेष्ठ सूरि – आचार्य

सूर्य्य *चित्तसं.* सूरज

सूर्त *अखाका. अखाछ.* *लगनी, [वृत्ति]; जुओ सूरत

सूल *उपबा. *जिनरा.* पीडा (सं.शूल)

सूले *चंद्रवा.* ?, [*किंमत करवामां, *उकेलमां]; जुओ सुल

सूवः *आरारा.* पोपट (सं.शुक)

सूसणां *विमप्र.* *मीठाशभर्युं वर्तन

सूसम *गुर्जरा.* जेमां सुख छे एवो कालविभाग (सं.सूषम) [जै.]; जुओ सूसू

सूसमदूसम *गुर्जरा.* जेमां पहेलां सुख अने पछी दुःख छे एवो कालविभाग (सं. सूषमदुःषम) [जै.]

सूसमसूसम *गुर्जरा.* जेमां सुख ने सुख ज छे एवो कालविभाग [जै.]

सूहणूं *उषाह.* स्वप्न, सोणुं

सूहर *कादं(शा).* [सुवर], डुक्कर (सं.शूकर)

सूहव *प्राचीफा.* सुंदर (सं.सुभग)

सूहव, सूहवि, सूहवी *उक्तिर. ऐतिका. जिनरा. प्रद्युचु. प्राचीसं.* सौभाग्यवती, सधवा स्त्री (सं. सुधवा)

सूहाली *नलरा.* लीसी, सुंवाळी; पूरी जेवो एक खाद्य पदार्थ, सुंवाळी (सं. सुकुमारिका)

सूहांलडी *शृंगामं.* सुंवाळी, [नाजुक]

सूं *गुर्जरा.* जेवुं [सं.समम्]

सूं *वीसरा.* साथे (सं.सहित)

सूंआलउं *उक्तिर. उपबा.* सुकुमार, कूमळुं

सूंखडी *आरारा. उक्तिर.* मीठाई; जुओ सूखडां

सूंगो *विमप्र.* [छत्रनो एक प्रकार] [दे.सुंग]

सूंचलू *षडाबा.* संचळ (दे.संचलू) [सं. सौवर्चल]

सूंठी *षडाबा.* सूंठ (सं.शुंठिः)

सूंड *उक्तिर.* सूंढ (सं.शुण्डा)

सूंढिया *प्रेमाका.* सज्ज, तैयार थया; जुओ सुंढवुं

सूंन *चित्तसं.* शून्य

सूंपाडी *कादं(शा).* संपादित करी, मेळवी (सं.समर्पितक) [सं.संपात् परथी]

सूंप्युं *प्रेमाका.* सोंप्युं [सं.समर्पित]

सूंब *अंबरा.* सूम, कंजूस [अ.शूम]; जुओ शुंब, सुंब, सूब

सूंब *उक्तिर.* दोरी (सं.शुंब)

सूंहाली *उक्तिर.* सुंवाळी, एक प्रकारनी पूरी (सं.सुकुमारिका)

सृग *चंद्रवा.* [स्वर्ग]

सृज *प्राचीफा.* माळा (सं.स्रज)

सृष्टि विना *प्रेमाका.* [उत्पत्ति विना], जन्म विना

सेइंद्री *नलाख्या.* [अंतःपुरनी] दासी (सं. सैरिन्ध्री)

सेई *उक्तिर.* अनाजनुं एक मापियुं (सं. सेतिका); जुओ सेतिका

सेउ [सेय] *तेरका. षडाबा.* परसेवो (सं. स्वेद)

सेएद्री *मदमो.* सैरंध्री, [अंतःपुरनी दासी,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(अहीं) विराटनगरमां ए रूपे रहेली द्रौपदी]

सेकिवा वांछइ *उक्ति.* [*शेकवा इच्छे, *सिंचन करवा इच्छे] (सं.सिसिक्षति)

सेखल *आरारा. षष्टिप्र.* शेषनाग, नागदेवता

सेज *रूपच.* पथारी, शय्या

सेजगंडूआ *उक्ति.* ओशीकां (सं.शय्या-गण्डका:)

सेजा *चतुचा. नरका.* शय्या, पथारी

सेजि *कादं(शा).* *सहेजे, *स्वाभाविक रीते, [पथारीमां]

सेजु *मदमो.* ढबछब, लक्षण

सेज्या *मदमो.* शय्या

सेट *पंचवा.* शेठ (सं.श्रेष्ठिन्)

सेठि *अंबरा. उक्ति. गुर्जरा. षडाबा. सिंहा(म).* शेठ (सं.श्रेष्ठि)

सेण *नरका. नरप(द). स्नेही, स्वजन*

सेत *गुर्जरा. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि.* श्वेत, सफेद

सेतिका *षडाबा.* अनाजनुं एक माप; जुओ सई

सेतुज, सेतुञ्जउ, सेत्तुंजय, सेत्रज *गुर्जरा. प्राचीसं.* शत्रुंजय

***सेत्र [सेत्त]** *गुर्जरा.* श्वेत

सेत्रज जुओ सेतुज

सेधांण *मदमो.* –, [लक्षण] [सं.*साभिज्ञान]; जुओ सहिनाण, सेंधाण

सेन *नरका.* सान, आंखनो इशारो [हिं.सैन]

सेबास *मदमो.* शाबाश

सेय जुओ सेउ

सेर *कामा(त्रि).* शहेर

सेर *मदमो.* ?

सेरडे *दशस्कं(२). प्रेमाका.* रस्ते, मार्गे; जुओ शेरडो

सेराहडा *कृष्णच.* [एक अश्वजाति] [दे. सेराह]

सेर्य *चित्तसं.* सरवाणी

सेल *उक्ति. प्रद्युचु. प्राचीसं. हम्मीप्र.* शल्य, एक प्रकारनो भालो (प्रा.सेल्ल)

सेलडी *विमप्र.* [?]

सेलहुत, सेलुत, सेलुहत, सेलुहुत *विक्ररा.* एक राज्याधिकारी, शेलत [सं.सेलभृत्, शल्यहस्त]

सेलि (सरसेलि) *गुर्जरा.* [बाण चलाववानी] शैली, रीत, कळा, कुशळता

सेली *चंद्रवा.* [सहेली, सखी]

सेली *नरप(द).* सहेली, [सरळ]

सेलु *प्राचीफा.* कसबी उपरणो

सेलुत, सेलुहत, सेलुहुत जुओ सेलहुत

सेलो *प्रेमाका.* दोरडाथी ढोरना पाछला पगने बांधवा ते

सेलो वाळे *दशस्कं(२).* दोहवा वखते पगे दोरडी बांधे

सेव(=सव) *तेरका.* सर्व

सेव *अखाका. आरारा. गुर्जरा. चंद्रवा. देवरा. प्रेमाका. लावल. ०षडाबा.* सेवा, उपासना, पूजन

सेव *चंद्रवा.* सेव्य, सेववा योग्य

सेवइ *आनंस्त.* सेवे, [सेवा करे]; [सान्निध्य करे]; [पालन करे]; *आरारा.* आराधना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करे, अभिलाषा राखे; *उपबा.* आचरे, [सेवा करे, सान्निध्य करे]; *ऋषिरा.* सेवे, [आश्रय ले]; *तेरका.* सेवे, [सेवा करे], [आश्रय ले, सान्निध्य करे]; **प्रेमाका.* [उपभोग करे, लगाडे]; *लावल.* सेवे, सेवा करे, [आश्रय ले]; *वीसरा.* सेवा करे; वसे; *षडाबा.* सेवे, आचरे

सेवडो *वेताप.* जैन यति (सं.श्वेतपट)

सेवना *आनंस्त.* सेवा, [उपासना]

सेवंत, सेवंती, सेवंत्री *आरारा(व). उक्तिर.* एक फूलझाड, [सफेद गुलाब] (सं.शत-पत्रिका); जुओ सयवत्ति

सेवंत्रा **चंद्रवा. नरका. प्रेमाका. *मदमो.* एक फूलवेलनां फूल, [सफेद गुलाब]

सेवंत्री जुओ सेवंत

सेस *उक्तिर.* देवने चडाव्या पछीनो प्रसाद (सं.शेषा)

सेस *गुर्जरा.* शेषनाग

सेसफूल *चतुचा.* शीशफूल, एक आभूषण

सेह *प्रेमाका.* *मदद, *सहाय, [शिक्षा, उपदेश] [प्रा.]

सेहज *चतुचा.* ?, [*श्रेष्ठता, *उत्तमता]; जुओ सहिज

सेहर *तेरका.* शिखर

सेहर *आरारा.* मुगट (सं.शेखर); *तेरका.* शेखर, अवतंस, [मुगट, शिरमोर]; *प्राचीफा.* माथा उपरनो पुष्पनो अलंकार, शेखर

सेहरउ *उक्तिर. जिनरा.* मुकुट (सं.शेखर); *देवरा.* *जरीनो पटको, [फूलनी कलगी]; जुओ शेहरु

सेहला **उषाह.* [सलाह, शिखामण] [उ. सिलाह]

सेहे *मदमो.* सो; जुओ शेहे

सेहेज *चित्तसं.* सहज, सहजपणे, मूलभूत रीते

सेहेस *देवरा.* हजार (सं.सहस्र)

सेहेसा *मदमो.* सहसा, [वगरविचार्ये]

सें, सेंहे *दशस्कं(१). प्रेमाका.* एक सो

सेंगीया *कस्तुवा.* गुटिका ? [शिंग]

सेंथो *प्रेमाका.* स्त्रीओनुं सेंथामां पहेरवानुं एक घरेणुं

सेंधाण *वेताप.* चिह्न [सं.*साभिज्ञान]; जुओ सहिनाण, सेधांण

सेंवास *कस्तुवा.* सहवास

सेंस जुओ सतरसेंस

सेंहे जुओ सें

सैघपणउं *नलरा.* शीघ्रपणुं, उतावळ

सैयल *अखाका.* शैल, पर्वत; जुओ सहीअल

सैरंध्री *प्रेमाका.* [अंतःपुरनी] दासी

सैवसि *जिनरा.* पोताने वश

सो *गुर्जरा. तेरका. मदमो. वीसरा.* ते (सं. सः, सो)

सोइ *अभिऊ. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* ते ज (सं. सः अपि)

सोइ *आरारा.* सुखसगवड

सोइ **शृंगामं.* [ते]

सोई *उक्तिर.* [*सांभळेली वात, *किंवदंती] (सं.श्रुतिर्वार्ता)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोई *कामा(त्रि). दशस्कं(२). प्रेमाका.* सई, दरजी [सं.सौचिकः]

सोईकार *दशस्कं(२). प्रेमाका.* सई

सोउ *गुर्जरा.* ते (सं.सः खलु)

सोउं *आरारा.* सूउं [सं.स्वप्]

सोकलडी *नरप(द).* शोक्य

सोकं *नरप.* शोक्यो (सं.सपत्नी)

सोकि *आरारा.* सावकी, [ओरमान] (सं. सपत्नी)

सोखण *चतुचा.* शोक्यण, सपत्नी (गाळ रूपे); जुओ सुखण

सोखी *आरारा.* *शोकवाळो, [*सुखी]

सोखे जुओ हरख-सोखे

सोग *नेमिछं.* शोक, [पीडा]

सोगत *ऐतिका.* सुगत, बौद्ध

सोच *चित्तसं.* विचार [सं.शोच]

सोजां *प्रेमाका.* उत्तम [सं.शोध्य]

सोझावीउ *आरारा.* शोधाव्यो, खबर कढावी (सं.शुध्य-)

सोझाल्या *विमप्र.* *रंग्या, [*चीतर्या]

सोटा *प्रेमाका.* [गाडाना बेठकभागना लाकडाना] दांडा

सोडनो धा (सोडनो धा थयो सहोदर) **प्रेमाका.* [एक कूखमां जन्मेलाने – भाईने हणनार भाई ज थयो]

सोडपालखी *पंचवा.* *क्रीडा माटेनी शय्या [*सोडमां भेटवुं – वळगवुंते] [गु.सोड+ सं.पर्यङ्]

सोडाडो (सोढाडो) *नंदब.* सोंढाडो, [सज्ज करी लई जाव]; जुओ सूंढवुं

सोडि *ऐतिरा.* छोडी

सोडो *मदमो.* साडलो ?

सोढाडो जुओ सोडाडो

सोढो *मोसाच.* तैयार थईने आवो

सोढी **नरप(द).* [तैयार थई]

सोण गांठ बांधी **नरका-२.* [शकुन चाल्युं न जाय ते माटे वस्त्रने छेडे गांठ बांधी]

सोध *कामा(त्रि).* शुद्धि, खबर

सोधइ *विक्रच.* शोधे, *खोळे, [जुएतपासे]; *उपबा.* शुद्ध करे; [जुएतपासे]

सोधण *आरारा.* शोधवुं ते

सोधर्म्मी *सिंहा(म).* सौधर्म देवलोकनी

सोधावीउ *आरारा.* शोधाव्युं, जोवडाव्युं

सोनइउ *नलरा. विमप्र. वीसरा.* सोनैयो, सोनामहोर (सं.सौवर्णिक)

सोनडी जाई *आरारा(व).* पीळा फूलवाळी जाई (सं.सौवर्णजाति)

सोनमखी *अखाछ.* सुवर्णमाक्षिक (एक धातु), [मोटे भागे गंधकमिश्रित लोखंड]

सोना-पुरिसु, सोना-पुरुसु *सिंहा(म).* सुवर्ण-पुरुष; जुओ पुरिसु हेम

सोना-पोरिस *प्राचीसं.* सुवर्ण-पुरुष

सोनार *अखाका. उक्तिर.* सोनी (सं.सुवर्ण-कार)

सोनीया *देवरा.* सोनैया, [सोनामहोर]

सोनैयो *प्रेमाका. शीलक.* सोनामहोर, सोनानो सिक्को [सं.सौवर्णिक]

सोपा *देवरा.* सोंप्या (सं.समर्प्)

सोभाग *आरारा.* शोभा, कीर्ति (रा.) (सं.सौभाग्य); *लावल.* भाग्यशाळी-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[पणुं]; *उपबा.* सुंदरता (सं.सौभाग्य)

सोभाग्य *चित्तसं.* सौभाग्य, शोभा

सोभागी *प्रेमाका.* *सौभाग्यवती, [शोभती, सुंदर]

सोम *आरारा.* सौम्य

सोम (सोमसिद्धान्त) **प्रबोप्र.* [एक तांत्रिक दर्शन के ग्रंथ]

सोय *अखाका. आरारा. कादं(शा). नरका. प्रेमाका.* ते [ज] (सं.सोऽपि)

सोयर *शृंगामं.* सहोदर, भाई

सोर *नरका.* सोळ, शरीर उपरनो आंको

सोर *विमप्र.* *पडकार, [अवाज] [फा.शोर]; *ऋषिरा. कादं(शा).* शोर, अवाज

सोर **नरका.* [शूर]

सोरंगी *मदमो. *सिंहा(शा).* ए नामनी वनस्पतिनां मूळ जेवां गूंछळांवाळा [वाळ]

सोरी *नेमिछं.* सोरीपुर (गाम)

सोवन (सोवन शालि) *नेमिछं.* *सारा वर्णना – रंगना, *ऊजळा, [चोखानी एक जात]

सोळहउ **वीसरा.* [सोळवलुं, शुद्ध (सोनुं)] (सं.षोडशक)

सोळां *प्रेमाका.* एक प्रकारनां अबोटियां

सोवण्ण *तेरका.* सुवर्ण (सं.सौवर्ण)

सोवन, सोविन *जिनरा.* सोनुं; **उषाह. नेमिछं.* सोनामहोर; *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. रूपच. लावल. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* सोनानुं; *आरारा. नेमिछं. *वसंफा(ल). *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* सोनेरी (सं.सौवर्ण)

सोवनवान *वसंवि(ब्रा).* सोनेरी रंग (सं. सौवर्णवर्ण)

सोवन्न,सोव्रन *तेरका. लावल. वसंफा.* सुवर्ण, सुवर्णनुं (सं.सौवर्ण)

सोवन्नमइ *तेरका.* सुवर्णमयी (सं.सौवर्ण-मयी)

सोवन्नीकांबज *गुर्जरा.* सोनानुं कमळ (सं. सौवर्णिकांबुज)

सोवर्णागर *अखाछ.* सोनीने खप लागतो एक जाणीतो पथ्थर, [सोनागेरुनो पथ्थर]

सोवा *उक्ति.* सुवा (सं.शतपुष्पा)

सोवासण *प्रेमाका.* सौभाग्यवती स्त्री [सं. सुवासिनी]

सोविन *ऋषिरा. कर्पूमं.* सोनानुं (सं.सौवर्ण); जुओ सोवन

सोव्रण *अखाका. प्रेमाका.* सोनुं; *नरका.* सोनानी; *कामा(शा).* सुंदर रंगनुं, [सोनेरी]; *प्रेमाका.* सोनेरी

सोव्रन **वसंवि.* [सोनेरी]; *वसंवि(ब्रा).* सोनुं (सं.सौवर्ण); *वसंफा.* जुओ सोवन्न

सोव्रनवान *वसंफा. वसंवि(ब्रा).* सोनेरी रंग (सं.सौवर्णवर्ण)

सोस *ऐतिका.* अफसोस, खेद; ०*जिनरा.* *चिंता, [अफसोस, खेद]

सोसइ *गुर्जरा.* सूकवे, कृश करे (सं. शोषयति)

सोसियकाय *षडाबा.* सोसी – सूकवी नाखेली कायावाळा (सं.शोषित+काय)

सोह *आरारा. जिनरा. नेमिछं. लावल.* शोभा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोहइ *ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंवि.* शोभे [सं.शोभते]

सोहकरी *ऋषिरा.* शोभा करनारी

सोहग, सोहग्ग *आरारा. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका.* सौभाग्य, [भाग्यशाळीपणुं], [मांगलिकता]; *जिनरा.* सौभाग्य[रूप]

सोहगी *आरारा.* टंकणखार

सोहग्ग जुओ सोहग

सोहजी *अभिऊ.* सोजी, *निरुपद्रवी, [उत्तम]; जुओ सोजां

सोहणइ *प्रबोप्र.* स्वप्नमां

सोहम्माइव इंद *ऐतिका.* देवलोक सौधर्मना अधिपति इन्द्र

सोहलउ जुओ छोहलउ

सोहवातुं *प्रेमाका.* सुख आपतुं, [गमतुं]

सोहंग *अखाका.* सोहम्, (ते – परमात्मा हुं छुं तेवो भाव)

सोहा *कृष्णच.* शोभा

सोहाकर *ऋषिरा.* शोभानी खाण (सं.शोभाकर)

सोहामी *गुर्जरा.* शोभामयी, सुंदर

सोहाय *नरका.* सुख आपे, गमे; [शोभे]; *प्रेमाका.* सुख आपे; शोभे

सोहावइ *आरारा.* *प्रेमाका. सुख आपे, [गमे] (सं.सुखापय्)

सोहावइ *लावल.* शोभावे

सोहावु *आरारा.* सोहामणुं, [मनगमतुं] (सं. शोभा) [सं.सुखापय् परथी]

सोहासण, सोहासणि *नरका. विमप्र.* [सुवासिनी], सौभाग्यवती

सोहिलउं *आनंत. आरारा. उक्तिर. उपबा. षष्टिप्र.* सहेलुं, सरळ, सुगम [सं.सुख परथी]; *गुर्जरा.* सुंदर, [सुखभर्युं]; [सहेलुं]

सोहेलां *प्रेमाका.* सुखदायक, [सुखभरी स्थितिओ]

सोहोणुं *अखाका. प्रबोप्र.* स्वप्न

सोहोतो *प्रेमाका.* *शोभीतो, *सुंदर, [सोंतो – समाप्त थयेलो]; जुओ सोंत-

सोंडवुं *दशस्कं(१).* सज्ज थईने जवुं; जुओ सुंढवुं

सोंढियुं *प्रेमाका.* सोंढ्युं, तैयार थयुं, [तैयार थई चाल्युं]

सोंत- *हरिख्या.* पूरुं थवुं, समाप्त थवुं; जुओ सोहोतो, सूंतूं

सोंतुं *प्रेमाका.* साथे, सहित

सोंधो *दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका.* सुगंधी पदार्थ

सौक्ष *आरारा.* सुख (सं.सौख्य)

सौगत *प्रबोप्र.* [बौद्ध] (सं.)

सौध *ऐतिका. कादं(शा).* महेल, प्रासाद [सं.]

सौधरम, सौधर्म *आरारा.* सौधर्म नामनो देवलोक

सौरसेन *नलरा.* शूरसेन प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो, मथुरानी आसपासनो प्रदेश (सं.)

सौवर्ण *अखेगी.* सुवर्ण [सं.]

सौवीर *नलरा.* एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सौवीर *अभिऊ.* *कलाई, [सुरमो, एक खनिजद्रव्य]

सौहू, सौहु *चंद्रवा.* सहु

स्कल- *नलरा.* खसी पडवुं, पडी जवुं (सं. स्खल्)

स्कंद *आनंस्त.* स्कंध, [समुदाय, वर्ग]

स्कंधावार *कादं(शा).* *नलाख्या.* छावणी (सं.)

स्खलित थई *प्रेमाका.* [कामावेगजन्य स्खलन थयुं]

स्तकी *प्राचीका.* थकी, [-थी] (प्रा.थक्किअ परथी)

स्तविवा *उक्तिर.* स्तववा, स्तुति करवा

स्तंभ-पूतळी न्याय *अखाका.* थांभलो एक होय पण पूतळी अनेक, एवी रीते अनेकतामां एकता

स्तुप *ऐतिका.* स्तूप, थूभ, [स्मरणस्तंभ]

स्त्रीण *गुर्जरा.* स्त्रैण, बायलो

स्त्रीमि *कादं(शा).* *स्त्रीओथी भरेलुं, [स्त्री-ओ वडे रचायुं होय एवुं] (सं.स्त्रीमय)

स्त्रीरजि *विक्रच.* स्त्रीराज्यमां

स्त्रीराज्य *नलरा.* एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो (सं.)

स्थकी *दशस्कं(१).* -थी, [वडे]

स्थविर *आरारा.* वृद्ध (सं.)

स्थित्य *अखाका.* स्थिति

स्थिर *चित्तसं.* स्थावर, [अगतिशील पदार्थ]

स्थूलंपणुं *चित्तसं.* मोटापणुं, प्रौढत्व

स्नात *कादं(ध्रु).* स्नान

स्नेह *चित्तसं.* तेल [सं.]

स्फटिक *अखाका.* [स्फटिकमणि]; *प्रेमप.* काच [सं.]

स्मर *अखाका.* कामदेव [सं.]

स्मरणी *मोसाच.* माळा [सं.]

स्मरिवा *उक्तिर.* स्मरवा, स्मरण करवा

स्मृति *प्रबोप्र.* संमति, [समर्थन]

स्यउं *आनंस्त.* *गुर्जरा.* *नेमिछं.* *वसंफा(ल).* शुं (सं.कीदृशकम्); *वसंवि(ब्रा).* शा माटे

स्यउं *आरारा.* *गुर्जरा.* *लावल.* *वसंफा.* *वसंवि(ब्रा).* साथे (सं.समम्); *वीसरा.* साथे, वडे, [प्रत्ये]; जुओ श्यं

स्यंघ *कृष्णच.* सिंह

स्याथो *चित्तसं.* शामांथी

स्याद्वाद *आनंस्त.* अनेकांतवाद, वस्तुनां अनेकविध पासां – धर्मोना स्वीकारनो वाद

स्यामी *नलरा.* प्रभु, स्वामी

स्याल *उक्तिर.* *पंचवा.* शियाळ (सं.शृगाल)

स्युं *ऐतिका.* [शुं, केवुं] [सं.कीदृशकम्]

स्लोक *मदमो.* शलोको, गौरवगाथा (सं. श्लोक)

स्वअंबर *मदमो.* स्वयंवर

स्वदइ *वसंवि.* *वसंवि(ब्रा).* स्वाद आवे, रुचे (सं.स्वदति)

स्वयंवर *कादं(ध्रु).* गांधर्वविवाह, [स्वजनो-नी संमति के सहायनी अपेक्षा वगर केवळ वरकन्यानी परस्परनी प्रीतिथी थतां लग्न] [सं.]

स्वरमंडल *नेमिछं.* एक प्रकारनी वीणा [सं.]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वसमय *आनंस्त.* पोतानो सिद्धांत [सं.]
स्वस्तानि *उषाह.* पोताना स्थानमां
स्वा *पंचवा.* सौ (सं.सर्व)
स्वाटिक *मदमो.* स्फाटिकमणि
स्वाटीकमणि *मदमो.* स्काटिकमणि
स्वातबुंद *अखाछ.* स्वातिबिंदु, [स्वाति नक्षत्रमां पडतुं वरसादनुं टीपुं]
स्वाति-बिंदु *प्रेमाका.* [स्वाति नक्षत्रमां पडता जलबिंदुथी जन्मतुं] मोती
स्वाध्याउ *षडाबा.* स्वाध्याय, धर्मचिंतन
स्वामि *लावल.* कार्तिकस्वामी, कार्तिकेय
स्वांम, स्वांम्य *मदमो.* स्वामी
स्विइ *कादं(शा).* पोतानी मेळे (सं.स्वयं)
स्वे *अखाका.* स्वयं, पोते
स्वेपद *अखाका.* स्वयंपद, आत्मपद, ब्रह्मपद
स्वेद-लव *कादं(शा).* परसेवानां टीपां (सं.)
स्हावो *नरका.* पकडवो [सं.साध्]
स्होतो *नरका.* सोतो, साथे [सं.सहित]

ह *कादं(ध्रु).* नक्की [ज] [सं.हि]
-ह *उषाह. प्रबोप्र. प्राचीका.* संबंधार्थ प्रत्यय, [-नुं] (सं.स्य)
हइ *गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा.* छे (सं.भवति)
हइ *नलाख्या.* हैयुं, हृदय
हइइ, हईइ *आरारा. कादं(शा). गुर्जरा.* हृदयमां
हइमयण (हुइ हइ मयण) *ऐतिका.* मदन [कामदेव] हणाय छे [सं.हतः मदनः]
हइशे *नरका.* होईश, [हशे]
हईइ जुओ हइइ
हउ *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा).* हुं (सं.अहं)
हउओ, हुओ, हूओ *कादं(शा). नलाख्या.* थयो (सं.भूतकः)
हउणहार *आरारा. उपबा.* होनार
हए, हे *कामा(त्रि).* हय, घोडो
हकलावतां *नरका.* धमकावतां
हकारइ *उक्तिर. उषाह. नरका. प्राचीफा. षडाबा.* बोलावे, निमंत्रे (सं./दे.हक्कार); **ललिरा.* [कहे,जणावे]; *अखाका. प्रद्युचु. प्रेमाका.* हाकल करी उश्केरे, पडकारे, ललकारे
हकीगत्य *चंद्रवा.* हकीकत
हकोम *चतुचा.* हुकम
हक्कि **विमप्र.* [हाकथी, पडकारथी] [दे.; रा.]
हगइ *उक्तिर.* मळत्याग करे (सं.हदते)
हचरके जाय जुओ हीचरके
हच्चेर *आरारा(व).* एक वनस्पति, कई ते अस्पष्ट
हजीरा *हम्मीप्र.* मिनारावाळो रोजो [अ. हझीरः]
हजूर *अखाका. आरारा.* प्रत्यक्ष, सामे हाजर (फा.)
हटकइ *जिनरा. प्रेमाका.* धमकावे, भय उपजावे; जुओ हटकी
हटकण *जिनरा.* धमकाववुं ते
हटकी **जिनरा.* [-ने छोडीने, सिवाय, विना]; **ऋषिरा.* [अळगी रही]; जुओ हटकइ
हटी *विमप्र.* हाट, दुकानो, [बजार, पीठ]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सं./दे.हट्टी]; जुओ घी हटी

हटे *प्रेमाका.* हठे, हठथी

हट्ट *विक्ररा.* हाट [दे.]

हट्ट-उलि *शृंगामं.* दुकाननी हार (दे.हट्ट+ सं.आवलि)

हट्टश्रेणि *विक्ररा.* हाटनी हार, बजार

हठाइं *आनंस्त.* हठपूर्वक

हठिउ *गुर्जरा. विराप.* हठे चड्यो, [अडगपणे तत्पर थयो] (सं.हठ परथी)

हठियो *प्रेमाका.* हठीलो, जीदवाळो

हठी *आरारा.* हठपूर्वक, पराणे

हठ्य *चित्तसं.* हठे, बळपूर्वक

हडकोलाववुं *नरप(द).* तिरस्कार करवो, हडबडाववुं

हडबची *दशस्कं(२).* हडपची

हडबडइ *अखाका. ऋषिरा.* गभराय, कमकमी ऊठे; जुओ हरबर

हडबडावी *प्रेमाका.* गभरावी; जुओ हरबडाववुं

हडबाइ *उषाह.* पकडाय, हडफाय

हडहड *उपबा.* मोटेथी हसवानो ध्वनि (दे.)

हडहडइ *उक्तिर.* जोरथी हसे [दे.]

हडि *विक्ररा. षडाबा.* हेड, पगे बांधवामां आवती लाकडानी बेडी (सं.)

हडी *प्रेमाका.* दोट

हडी *चित्तसं.* अडी, मुश्केली

हडीयाटी *प्रेमाका.* हडी [दईने], दोट [दईने]

हडोले *मदमो. रूस्तस.* हरोळे, [सेनाना अग्र भागे] [तु.हरावल]

हणणहार *उपबा.* हणनार

हणवइ *आनंस्त.* हणवे, हणवाथी, [हणवामां] [सं.हन्]

हणिवुं *उक्तिर.* हणवुं, हत्या करवी (सं.हन्)

हतउ *गुर्जरा. *विराप.* बिचारो (सं.हतकः)

हत-उछाह *प्रेमाका.* जेनो उत्साह नाश पाम्यो छे एवो

-हता *विमप्र.* -थी , [-मांथी, द्वारा]

-हतु *विमप्र.* -थी (अनुग)

हत्थ *आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. शृंगामं.* हाथ (सं.हस्त)

हत्थि *तेरका.* हाथी (सं.हस्ती)

हत्थियार *प्राचीसं.* हथियार [दे.]

हथनालि *हम्मीप्र.* हस्तनालि, हाथमां राखीने फोडवानी नानकडी तोप

हथलेवउ, हथळेवउ *ऐतिका. प्रद्युचु. वीसरा.* पाणिग्रहण संस्कार, हस्तमेळाप, [हथेवाळो] (सं.हस्त परथी)

हथवासी *प्रेमाका.* *हाथमां वसेलुं, आवेलुं, [*हाथमां राखीने], [*हथवासाथी – (ढालना) हाथाथी]

हथसाल *उक्तिर.* हस्तिशाला

हथि *गुर्जरा.* हाथथी (सं.हस्त); जुओ सइ-हथि

हथिणाउर *उक्तिर. गुर्जरा.* हस्तिनापुर

हथूंडू *षडाबा.* हथोडो (सं.हस्त परथी)

हद चूकी *चित्तसं.* सीमा – भेदरेखा लुप्त थई

हद्द *प्रेमाका.* हद (प्रासार्थे 'हद्द')

हनवटी *कादं(शा).* दाढीनी हडपची (सं.हनुपट्टिका)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हफ्तह *आरारा.* सप्ताहमां (फा.)

हबक *प्रेमाका.* बीक, फाळ

हबकी *गुर्जरा.* हबक, फाळ (अ.हयबत्?)

हबूके *नरका.* फाळ अनुभवे, [ध्रासको खाय]; जुओ अबूके

हम *लावल.* अमने

हमची *नरका. लावल.* क्रीडा के नृत्य साथे गावानो काव्यप्रकार

हमची *नरका.* अमारी (म.)

हमाल *जिनरा.* मजदूर [अ.हम्माल]

हमेलो *प्रेमाका.* पट्टो, [गळामां पहेरवानुं एक आभूषण] [अ.हमाईल]

हय *आरारा. ऋषिरा. प्रेमाका. देवरा.* घोडा (सं.)

हयगयरहवर *चारफा.* अश्व, हाथी अने सुंदर रथो (सं.हयगजरथवर)

हयडुं *देवरा.* हैडुं (सं.हृदयकम्)

हयवर *लावल.* श्रेष्ठ अश्व [सं.]

हयास *शृंगामं.* हताशा

हयासु *ऐतिका.* हताश

हयासुं **ऐतिका.* [हृदयथी]

-हर *वसंवि.* घर (सं.गृह)

हरइ *वाग्भवा.* चतुर्थी अने षष्ठीनो अनुग, [-ने]; जुओ रइं, रहइं, ह्इं

हरख-सोखे **अखाका.* [हर्ष अने सुखथी] [सं.हर्ष+सौख्य]

हरखीयला *प्राचीफा.* हरख्या

हरडूआं *आरारा(व).* हरडां, मोटी हरडे ?

हरण *तेरका. नरका.* हरनार (सं.)

हरणकमेषि, हरणगमेषि *देवरा.* गर्भादिनुं हरण करनारा एक देव, [इन्द्रना पदाति-सैन्यना एक अधिपति] (सं.हरिनैग-मेषि) [जै.]

हरणी *नरका.* मृगशीर्ष नक्षत्र

हरणी *दशस्कं(२).* हरण जेवा वाननी

हरदे *मदमो.* हृदय

हरनिश *दशस्कं(२).* अहर्निश, रातदहाडो

हरबडाववुं *दशस्कं(१).* गभरावबुं; जुओ हडबडावी

हरबर *सिंहा(शा).* *गभराट, [उतावळ]; जुओ हडबडइ

हरम *चंद्रवा.* हर्म्य, महेल

हरवइ *वाग्भवा.* हरवानी क्रियामां, [हरवा-थी] [सं.ह्]

हरस *तेरका.* हर्ष

हरस-वस *तेरका.* हर्षवश

हरसीय *वसंवि(ब्रा).* हर्ष पामीने

हर-हार *शृंगामं.* महादेवनो हार, नाग [सं.]

हराण *ऐतिरा. कर्पूमं. विक्ररा. विमप्र.* आश्चर्यचकित, [स्तब्ध] [अ.हैरान]

हरालउ **गुर्जरा.* [प्रबळ आकांक्षावाळो]

हरावतउ **गुर्जरा. विराप.* हरी लावतो

हरि **कादं(ध्रु). कादं(शा).* घोडो [सं.]; *लावल.* सिंह [सं.]; *ऐतिका.* सूर्य [सं.]; *नेमिछं.* वांदरो [सं.]

हरि-आननी *प्रेमाका.* चंद्र जेवा मुखवाळी [सं.]

हरिख *नलाख्या.* हर्ष

हरिखा [हरिखी] *लावल.* हर्षित थई, आनंदित थई

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिपर्वणी *प्रेमाका.* बारसनी तिथि [सं.]
हरियाल *उक्ति. षडाबा.* हरताल, एक उपधातु (सं.हरिताल); जुओ हरीयाल
हरिलंकी *ऋषिरा.* सिंहना जेवी पातळी कमरवाळी; जुओ लंक-केसरी
हरिलोचनी *चतुचा.* कमललोचनी [सं.]
हरिवदनी *मोसाच.* चन्द्रमुखी [सं.]
हरिवासर *कृष्णबा.* एकादशी [सं.]
हरिस *ऐतिका. तेरका.* हर्ष
हरिसीय *वसंफा.* हरखीने (सं.हर्ष)
हरी *उक्ति.* लीलुं घास, भाजी (सं. हरितकम्)
हरीअडा **विमप्र.* [एक अश्वजाति – लीलाश पडता रंगनी]; जुओ हरीयडु
हरीआली *विमप्र.* अनेक अर्थवाळो पद्य-प्रकार
हरीयडु *प्राचीफा.* घोडानी एक जात – [लीलाश पडता रंगनी]; जुओ हरीअडा
हरीयाल *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* हरताल, एक उपधातु (सं.हरिताल); जुओ हरियाल
हरी राखइ *आरारा.* लई जईने राखे
हरीला *नरका.* हरी लीधेला [म.] [सं.ह]
हरीवदनी *चतुचा.* चन्द्रवदनी
हरीसूत *चतुचा.* कामदेव [सं.हरिसूत]
हरीहरी *चित्तसं.* लीलीछम [सं.हरित्]
हर्षइ *आनंस्त. उक्ति.* खुश थाय (सं.हर्ष)
हल *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अली, सखीने संबोधन (सं.हला)
हलकार **नरप(द).* [*हलक, *हळवापणुं, *चंचळता]
हलकारो *प्रेमाका.* खेपियो, संदेशवाहक
हलकार्या *प्रेमाका.* हंकार्या, प्रस्थान कराव्युं
हलके *प्रेमाका.* ऊमटे, [आनंदथी डोले]
हलके-हलके *दशस्कं(१).* हळवेहळवे, [हलक – लचकपूर्वक]
हलद *आरारा. आरारा(व). उक्ति.* हळदर (सं.हरिद्रा)
हलद्रूआं वडां *उक्ति.* हळदरयुक्त वडां (सं.हरिद्राणि वटकानि)
हलफलुं *हरिख्या.* हांफतुं, हांफळुंफांफळुं
हलभल *प्रेमाका.* हलचल, [बूमाबूम, ताकीद]
हलयउ [हलुयउ] *षडाबा.* हळवो (सं. लघुक)
हलरी ईष *उक्ति.* हळनो दांडो (सं.हलस्य ईषा)
हलवई *प्रेमाका.* मीठाई वेचनार, कंदोई
हलवाई *आरारा.* हलकापणुं, अगौरव, [*कंदोई]; जुओ हलूंआइ
***हल साइ, हल साहि** **तेरका. प्राचीसं.* हले सखि, [अली सखी]
हलहर *प्राचीसं.* हलधर, [बलराम]
हलहल *अभिऊ. कर्पूमं.* उतावळ [दे.]
हला *नरप(द).* पुरुषवाचक संबोधन, [अल्या]
हलाहल *चित्तसं.* हळाहळ विष [सं.]
हलांण *नरप(द).* *देदार, [चालचलगत]
हलांहल *मदमो.* उतावळ
हलुअउ *उक्ति.* हळवुं (सं.लघुक)
हलुआपणुं *नलाख्या.* हळवापणुं, लघुता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सं.लघुक+त्वन)

हलुइ *नलरा.* हळवे, धीरे (सं.लघुकेन)

हलुइ *नलरा.* हळवी, हलकी, [अगौरव पामेली] (सं.लघुका)

हलुए *चतुचा.* हळवे [सं.लघुकेन]

हलुए-हलुए *प्रेमाका.* हळवेहळवे, धीमेधीमे

हलुओ *मदमो.* हळवो (सं.लघुक+क)

हलुयउ *कस्तुवा.* हळवो, [धीमो]; जुओ हलयउ

हलुअकर्मउ *षष्टिप्र.* जेनां अल्प कर्म अवशिष्ट रह्यां होय एवो, शीघ्र मुक्तिगामी (सं.लघु+कर्मी)

हलूआइ *उपबा.* हलकापणुं, [अगौरव] (सं. लघु परथी); जुओ हलवाई

हलूआपणउं *नलरा.* हळवापणुं, हलकाई, [लघुता, अगौरव] (सं.लघुक+त्वन)

हलूइ *कादं(शा). प्रबोप्र. शृंगामं.* हळवे, [धीमे] (सं.लघुकेन); *उपबा.* हळवापणाथी, ओछा होवापणाथी

हलूउ *सिंहा(म).* हळवुं, हलकुं, [भार विनानुं] (सं.लघुक)

हलूकर्मा *उपबा.* हळवा [– ओछा] कर्मोवाळुं, [शीघ्र मुक्तिगामी]

हलूपण *षष्टिप्र.* हळवापणुं, [अगौरव] (सं. लघुत्वन)

हलूया *विमप्र.* हळवा

हलूर *अभिऊ.* हालरुं, [हार], टोळुं

हल्लइ *गुर्जरा. प्राचीसं. लावल.* हले, हाले, [डगे, सळवळे, धूजे] [दे.]

हल्लकलोल *प्राचीसं.* प्रक्षोभ, हालकडोलक

हल्लाव- *प्राचीसं.* हलाववुं

हल्ली *लावल.* हे सखी

हल्लुप्फल *प्राचीसं.* हांफळा, [उतावळा]

हव, हवं, हवि *उषाह. गुर्जरा. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* हवे (सं.अथ+वा) [अप.अहवइ]

हवइ *उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा.* थाय, छे (सं.भवति)

हवडा, हवडां *आरारा. उक्तिर. कादं(शा). नलरा. नलाख्या. प्रद्युचु. प्रेमाका. मदमो. षडाबा.* हमणां (सं.अधुना, प्रा.हउणा)

हवणां *आनंस्त. पंचवा.* हमणां (सं.अधुना)

हवं *उक्तिर.* हवे (आरंभवाचक) (सं.अथ); जुओ हव

हवाल *प्रेमाका.* हालत [अ.अहवाल]

हवालइ *ऐतिका.* हवाले, सुपरत

हवासी **जिनरा.* [*टिप्पण, *(गुण)चर्चा]

हवां *दशस्कं(१).* हमणां; *प्रेमाका.* हवे

हवि *दशस्कं(२).* अग्नि [सं.हविष्]

हवि, हविइ *अभिऊ. कादं(शा). नलाख्या.* हवे (सं.अथवा); जुओ हव, हिव

हवुं *अखाका. ऋषिरा. चित्तसं. नरका. प्रेमाका.* थयुं (सं.भू – भव् परथी)

हशारथ *मदमो.* हसवुं, हांसी, जुओ हसारथ

हसइ *गुर्जरा. वसंफा. वसंवि.* हसे (सं. हसवि); हसी काढे, मश्करी करे; जुओ हंस-

हसमस *प्राचीफा.* *हालवुं ते, [धसवुं ते, उत्साहथी आगळ पडवुं ते]; **प्रद्युचु.* [जुस्सो, जोश]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसमसता *गुर्जरा.* धसमसता

हसारथ *अंगवि. *ऋषिरा. प्रेमाका. नरका. शृंगारं.* हास्यास्पद स्थिति, हांसी, मश्करी; जुओ हशारथ, हीसारथ

हसारथि *विमप्र.* हास्यजनक स्थिति, [उपहास]

हसिउ, हसीउ *लावल.* हास्य के मश्करीने पात्र कर्यो [सं.हसित]

हसिय *तेरका.* हसी रहेलुं (सं.हसित)

हसिवा *उक्तिर.* हसवा

हसीउ जुओ हसिउ

हसीय गुदारे *जिनरा.* हसीने टाळी दे, [जतुं करे, माफ करे] [सं.हस्+फा.गुजर]

हसु, हसुं *ऋषिरा. नरका. मोसाच.* हसवुं, हांसी, मश्करी

हसू, हसूं *आरारा.* मश्करी; *कादं(शा). नंदब.* हास्य, मलकाट

हसे *पंचवा.* थशे (सं.भविष्यति)

हस्तभूत *आनंस्त.* [हस्तरूप, हस्त समा]

हस्तमुखी ०*नलरा.* हसता मुखवाळी (सं. हसितमुखा)

हस्तमेलापक *प्रेमाका.* हस्तमेलाप, लग्न [करावनार]

हस्तामलकर्त्य *चित्तसं.* हस्तामलकवत्, स्पष्ट

हंकार *दशस्कं(१).* अहंकार

हंकारी *दशस्कं(१).* अहंकारी

हंबोडा *सिंहा(शा).* ?, ['हंबो' ए उच्चार साथेनो ताल]

हंश ज हरूं *कामा(शा).* जीव – प्राण लउं

हंस *कामा(त्रि). कृष्णच. प्रेमाका. मदमो. हरिवि.* जीव, प्राण [सं.]

हंस- *वीसरा.* हसवुं, मजाक करवी (सं. हस्); जुओ हसइ

हंसक *हरिवि.* पगनुं आभूषणविशेष

हंसगमण *गुर्जरा.* हंसना जेवी चालवाळी (सं.हंसगमना)

हंसगमणि *वीसरा.* हंसना जेवी चालवाळी (सं.हंसगामिनी)

हंसगामिणि *वसंफा(ल). वसंवि.* हंस जेवी गतिवाळी (सं.हंसगामिनी)

हंस-तति *कादं(शा).* हंसोनी पंक्ति (सं.)

हंसलागमणी *लावल.* हंसना जेवी चालवाळी

हंसलो *कामा(त्रि).* घोडो

हा *तेरका.* –, [अरेरे] (सं.)

हाउ *प्राचीसं.* हा [संमतिसूचक] (सं.आमम्)

हाकइ *उक्तिर. *वसंफा. *वसंफा(ल). *वसंवि. *वसंवि(ब्रा).* निवारे, दूर करे; *गुर्जरा. मदमो. विक्ररा.* हाक मारे, पोकारे, आह्वान दे; *षडाबा.* काढी मूके, [*पडकारे] (दे.); *प्रेमाका.* धमकावे

हाकलणुं *उषाह.* हांकीने, उश्केरीने लाववामां आवेलुं टोळुं, कटक, [हाकलापडकारा करतो मोरचो के एवुं टोळुं]

हाकलशो *प्रेमाका.* धमकावशो

हाकी ऊठ्यो *प्रेमाका.* हाक – मोटो अवाज करीने ऊठ्यो, सामनो करवा तैयार थयो, [पडकार कर्यो]

हाकेटवुं, हांकेटवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* हाक मारी धमकाववुं

हाकोट्यो *प्रेमाका.* हाक मारीने धमकाव्यो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाटक *गुर्जरा.* दुकान [सं.हट्ट]

हाटक *आनंस्त. गुर्जरा-टि. प्रेमाका.* सुवर्ण [सं.]

हाटक-रूप *प्रेमाका.* *सोनेरी रूप, [सुवर्णमय रूप], [सोनानां अंग] [सं.]

हाड *उपबा.* हाडकां; *नलाख्या.* शरीर (दे. हड्ड); *दशस्कं(१). *प्रेमाका.* [घणुं ज]

हाड-छेड *नरका.* तिरस्कार

हाड जवुं, हाडे जवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* छेल्ली हद सुधी जवुं

हाडफूटि *उक्तिर.* हाडकामां थती पीडा, दर्द (दे.हड्ड+सं.स्फोटि) [रा.]

हाडा खाय जुओ खाय हाडा

हाडिया *प्रेमाका.* कागडा

हाडु *नरप(द).* ?, [*हाडो, *शूर]

हाडु *षडाबा.* हाडकुं (दे.हड्ड)

हाडे जवुं जुओ हाड जवुं

हाण *अखेगी.* हानि, लय, [नाश]

हाणि *उपबा. नलरा. वीसरा. शीलक. शृंगामं.* हानि, नुकसान

हाथ करडे *अखाका.* उतावळ करे

हाथकसीदो *कामा(त्रि).* [हाथथी करेलुं] जरीनुं भरतकाम [सं.हस्त+अ.कशीदः]

हाथ कंकण तर्त *अखाका.* हाथना कंकणनी जेम तरत ज प्रत्यक्ष

हाथ घसे *अखाका. प्रेमाका.* निरुपाय – निराश थाय, [हारी जाय]; *नरका.* पस्तावो करे

हाथ भोंय पडवा *प्रेमाका.* निरुपाय बनवुं

हाथमेल्हामणि *ललिरा.* हस्तमेळापमां

हाथल *हरिवि.* हाथनुं आभूषणविशेष

हाथ साहे *अखाका.* सहाय करे; जुओ साहइ

हाथा *दशस्कं(१). प्रेमाका.* कंकुवाळा हाथनां छापां

हाथा-तोरण जुओ हाथीतोरण

हाथाल *जिनरा.* शक्तिशाळी, लांबा हाथवाळा, [आजानबाहु]

हाथियो *उक्तिर. गुर्जरा. नरका. षडाबा. विराप.* हाथी (सं.हस्ति)

हाथीउ *उपबा.* हाथी (सं.हस्ती)

***हाथीतोरण [हाथा-तोरण]** *प्रेमाका.* कंकुवाळा थापा अने तोरण

हाथुलि *प्राचीफा.* हाथे पहेरवानो एक अलंकार

हाथेवाळो *प्रेमाका.* वरकन्यानो हस्तमेळाप, लग्न

हाम *जिनरा. हरिख्या.* इच्छा, उमेद

हाम धाले *चतुचा.* हिंमत राखे, [धीरज राखे]

हामण *उषाह.* *चिन्ता, [*हाम, *हिंमत]

हार *नंदब.* [हारमां, समान]

हारद *अखाका. चित्तसं.* हार्द, रहस्य, मर्म, तात्पर्य; *अखेगी.* हार्द, [मर्म, ऊंडो अभिप्राय]; *प्रेमाका.* हार्द, रहस्य, [मननी वात]

हार नगोदर *चारफा.* एक प्रकारनो हार

हारि *नलाख्या.* हार, पंक्ति (*सं.धारिका)

हारी *ऋषिरा.* पकडीने, ऊंचकीने, [लई जईने] [सं.हारय्]

हार्य *चित्तसं.* प्राप्तव्य [सं.]

हालकहोल *रूस्तस.* हालकहुलक, [धमाल,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हलचल]

हालकहोलक *प्रेमाका.* धमाल, [हलचल]

हालर *सिंहा(शा).* ?, [*हार, *हरोळ]

हालरियउ *जिनरा. देवरा.* हालरडुं

हालरु *प्रेमाका.* हालरडुं

हालरुं *सिंहा(शा).* कण छूटा पाडवा खळामां बळद फेरववा ते

हालरो *जिनरा. देवरा.* हालरडुं, [बाळकने सुवडावती वखते गवातुं गीत]

हालिरउ **जिनरा.* [हालरडुं, बाळकने सुवडावती वखते गवातुं गीत]

हाली *नलरा.* असंस्कारी, जड, गामडियो (सं.हालिक)

हावउं **गुर्जरा.* [होउं, थाउं]

हावज्यो *नरप.* होजो (सं.भूयास्त)

हा वलि *उक्ति्र.* बल्के, तोपण

हावां *नरका-२. प्रेमाका.* हवे

हावे *प्रेमाका.* हवे

हावुं *नरका.* हवे

हाश, हासूं *नलाख्या.* हास्य, मश्करी

हास **कामा(शा).* [हास्य]

हासना *मोसाच.* मश्करी

हासइ *लावल.* हास्य वडे, हसतांहसतां, [सहजमां]

हासउं *गुर्जरा. षडाबा.* हास्य; *गुर्जरा.* उपहास

हासा, हासां *उपबा. लावल.* हास्य, मजाक

हासि, हासुं *आरारा.* मश्करी, उपहास

हासी *उक्ति्र.* हांसी, मजाक

हासुं, हासूं *अभिऊ. ऋषिरा. नरका.* उपहास, हांसी; जुओ हाश, हासि

हासे *अखाका.* हसे, मश्करी करे; हास्यमां

हा हा *तेरका.* अरेरे (सं.)

हांकेटवुं जुओ हाकेटवुं

हांच विछाई *जिनरा.* पालव पाथरीने

हांडी *षडाबा.* हांडली (सं.हंडिका)

हांडुली *षडाबा.* हांडली

हांथी *कामा(त्रि).* अहींथी

हांफल्या *प्रेमाका.* हांफळा

हांम-कांम, हांम-कांम्य **मदमो.* [कामना आवेग के अभिलाषवाळी] [रा.]

हांस *कामा(त्रि).* उत्साह, आशा

हांस *देवरा.* हांसी

हांस *नलरा.* गळामां पहेरवानुं एक घरेणुं, हांसडी (सं.अंस)

हांस *अभिऊ.* हंस

हांसला *लावल.* हंस जेवा, [एक अश्व-जाति]

हांसली *लावल.* हंसली

हांसलु *वसंफा.* हंसलो

हांसी *प्राचीफा.* हंसनी मादा (सं.हंसी)

हांसु *नरका.* हांसी

हि *नलाख्या.* हय, घोडो

-हि *विमप्र.* -मां, त्रीजी अने सातमी विभक्तिनो प्रत्यय

हिअइ *वसंफा.* हैये (सं.हृदय)

हिअडइ खोटउ *ऐतिरा.* खोटा मननो, मेला हृदयनो

हिअडुं *लावल.* हैयुं, हृदय

हिइ *कादं(शा).* घोडो (सं.हय); जुओ हिय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिखार *कादं(शा).* हणहणाट (सं.हेषारव)

हिट्ठि *प्राचीसं.* हेठे [दे.] [सं.अधस्तात्]

हिडकी *उक्ति.* हेडकी (सं.हिक्का)

हित *आरारा.* हेत, प्रेम

हितकार **देवरा.* [हित करनार]

हितूउ, हितूउं *उपबा.* हितस्वी; कल्याण करनार; [अर्थी, इच्छनार; अर्थे, माटे; अर्थेनुं, माटेनुं] (सं.हित); *उक्ति.* अर्थेनुं, माटेनुं

हित्वाभास *आनंस्त.* हेत्वाभास, असद् हेतु अर्थात् मिथ्या हेतु, जेथी साध्य सिद्ध थाय नहीं ते

***हिम [हिव]** *जिनरा.* हवे; जुओ हिव

हिम *तेरका.* हिम, झाकळ; **वसंफा. वसंवि(ब्रा).* ठंडक (सं.)

हिमलक्षण *वसंवि.* शीतल (सं.)

हिमवंत, हिमवंति *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* हेमंतऋतु (सं.हिमवत्)

हिमात्य *अखाछ.* हिमायत, तरफदारी

हिमालउ *उक्ति.* हिमालय

हिय *कादं(शा).* घोडो (सं.हय); जुओ हिइ

हियउ *आरारा. लावल. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* हैयुं (सं.हृदय)

हियडउ *आरारा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछ. वसंफा. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* हैडुं (सं.हृदय+ड)

हियडला *गुर्जरा.* हैडुं (सं.हृदय)

हियय *तेरका.* हृदय, हैयुं

हियवरणि *गुर्जरा.* *गमता वर्णनी (सं.हित-वर्णिका)

हिया *षडाबा.* हृदय

हियाविउं *उक्ति.* लगाववाळुं, हिंमतवाळुं (सं.हृदयार्पितम्) [रा.; हिं.]

हियुं *गुर्जरा.* हैयुं (सं.हृदय)

हिरणी *वीसरा.* हरिणी

हिरदे *अखाका.* हृदय

हिलियइ *ऐतिका.* निन्दा करे छे

हिली *नेमिछं.* (हे) सखी (सं.हला, अप. हेल्लि)

हिल्लि *तेरका. प्राचीसं.* हे सखी, एली (अप. हेल्लि)

हिव *आरारा. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा.* हवे (सं.एवं, प्रा.हेवं); जुओ हव, हिम

हिवइ *आनंस्त. जिनरा. नेमिछं. हरिवि.* हवे (सं.अथवा)

हिवइणा *आरारा.* हवे

हिवडां *आरारा. उक्ति. उपबा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. षडाबा.* हमणां (सं. अधुना)

हिवणा *जिनरा.* हमणां

हिवि *रूपच.* हवे

हिविडां *उक्ति.* हमणां (सं.अधुना)

हिसारा करे *प्रेमाका.* भांभरे; जुओ हिंसारो

हिं *षडाबा.* भारवाचक अव्यय, [ज] (सं.हि)

हिंडोलय *तेरका.* हींडोळो (सं.हिन्दोल+क)

हिंसा-रव *प्राचीसं.* हेषारव, हणहणाटी

हिंसारो *दशस्कं(२).* गायनुं भांभरवुं; जुओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिसारा करे

ही *वीसरा.* ज (सं.हि)

हीअउ *उक्ति्र. वसंवि.* हृदयम्

हीअडइ *लावल.* हैया उपर, छाती उपर, [हिये]

हीआदुबलउ *उपबा.* हैयादूबळो (सं.हृदय-दुर्बल)

हीआलि *आसरा(व).* ताडनी एक जात (सं.हिन्ताल) ?

हीइ *आसरा. लावल.* हृदयमां, हैया उपर, [छाती उपर]

हीई-सारणि *शृंगामं.* हैया-शारडी, [हैयाने सारनारी, पेदी नाखनारी]; जुओ सारणि

हीउं *उपल.* हैयुं (सं.हृदय)

हीक *दशस्क(१). प्रेमाका.* हेडकी, डचकां (सं.हिक्का)

हीकइ *उक्ति्र.* हेडकी आवे, डचकां खाय (सं.हिक्कति); *अखाछ.* खोंखारे, दम धीडे

हीकां *प्रेमाका.* हीबकां, डचकां

हीकां आववां *दशस्क(१).* डचकां आववां

***हींगलाट** *पंचवा.* हींचको, हींडोळो (सं. हिंदोला+ट)

हीचइ **ऐतिका.* [हींचे]

हीचस्के (हचरके जाई) *शृंगामं.* खचरको, [आंचको खाय, आघात पामे]

हीचोलाखाट *मदमो.* हिंडोळाखाट

हीजइ *तेरका.* ?, [*त्याज्य – हीन गणाय]

हीजाडी **नेमिछं.* [*उपाडी, *लई] [प्रा. हिज्ज]

हीडइ, हींडइ *आनंस्त. गुर्जरा.* हेंडे, चाले, [जाय, -ने माटे प्रवृत्त थाय] (दे.हिंड)

हीडोलाट *प्राचीफा.* हींचोळो (सं.हिन्दोला+ट)

हीडोलिय *गुर्जरा.* हींचोळी, झुलावी (सं. हिंदोल्)

हीण *गुर्जरा.* हीन, हलको

हीणपणउं *उपबा.* अगौरव, अपयश

हीणेरइ *उपबा.* वधारे हलका (जन्म)मां (सं. हीनतर)

हीत, हेत *कामा(त्रि).* माटे

हीम *उक्ति्र.* हिम, झाकळ

हीय *तेरका. वसंफा.* हैयुं (सं.हृदय)

हीयइ *विराप.* हैयामां

हीयइं *गुर्जरा.* *हृदयथी, *सहेलाईथी, [*छाती वडे]

हीयउ *वसंवि(ब्रा). वीसरा.* हैयुं (सं.हृदय)

हीयडउ *गुर्जरा. लावल. वसंवि(ब्रा).* हैडुं (सं.हृदय)

हीयरइ *प्रबुचु.* ?

हीयालि, हीयाली *नलरा.* कोयडो, उखाणुं (सं.हृदय परथी?); **गुर्जरा. विराप.* प्रयुक्ति, [प्रयत्न, कुचेष्टा, हिंमत] [रा.]; जुओ हैयाली

हीयालोकणी *प्रबुचु.* अन्यना मननी वात जाणनारी विद्या [सं.हृदय+लोकन]

हीयां *गुर्जरा.* हैयां

हीयुडउ *रूपच.* हैयुं (सं.हृदयकं)

हीर *नेमिछं.* रेशम; **विमप्र.* (सत्त्व, साररूप अंश, मूल्यवान अंश]

हीरक *गुर्जरा.* हीरो (सं.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हीरडु *प्राचीफा.* हैयुं (सं.हृदय; हिं.हिरद)

हीरखुंणि *आरारा(व).* हिरवणी नामनी कपासनी जात

हीरागळ *प्रेमाका.* रेशमी, [एक वस्त्रप्रकार]

हीरालग *षडाबा.* हीराखचित (आभूषण) (सं.हीरक+लग्यति)

हीलइ *उक्ति.* अवज्ञा – अनादर करे (सं. हेलय्, प्रा.हील)

हीला *ऐतिका.* अवहेला, [अनादर, तिरस्कार]

हीला *प्रेमाका.* *धक्का, *ठेला, [*ढार] [रा.]

हीलितु *षडाबा.* अनादर करतो (सं.हेला परथी, प्रा.हीलइ)

हीवइ *नेमिछं.* हवे (सं.अथवा)

हीस *प्रद्युचु.* घोडानी हणहणाटी (सं.हेषारव)

हीसइ *आरारा. उक्ति.* हेसारव करे, हणहणे; *दशस्कं(१). प्रेमाका.* भांभरे

हीसइ *अखाका. कादं(ध्रु). चतुचा. चंद्रवा. दशस्कं(१). नरका. नंदब. प्रेमाका.* हर्ष पामे, आनंद पामे

हीसला *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात

हीसार *कादं(ध्रु).* हणहणाट [सं.हेषारव]

हीसारथ *ललिरा.* हांसी; जुओ हसारथ

हीसारव *प्रेमाका. सिंहा(म).* घोडानो हणहणाट (सं.हेषारव); *कादं(ध्रु). दशस्कं(१).* बांघाटवुं, भांभरवानो अवाज

हीसोरा *प्रेमाका.* भांभरवानी क्रिया

हीस्ती *वाग्भबा.* हस्ती, हाथी

हींगवणि *उक्ति.* इंगुदीनुं वृक्ष (सं.हिंगुपर्णी)

हींगूआणि *आरारा(व).* इंगुदीनुं वृक्ष (रा. हिंगूण) [सं.हिंगुपर्णी]

हींडइ *अखाछ.* *इच्छे, [जाय, -ने माटे प्रवृत्त थाय]; *अखेगी. उपबा. षडाबा.* चाले, प्रवृत्त थाय (दे.हिंडइ); जुओ हीडइ

हींडतो आखडे *चित्तसं.* चालतां पडी जाय, गति न करी शके

हींडि *उक्ति.* परिभ्रमण, पर्यटन (सं.हिण्डि)

हींडिया *उक्ति.* [?] (सं.हिण्डिका)

हींडोलइ *उक्ति. लावल.* हींडोळे, झुलावे (सं.हिंदोलयति)

हींसइ *अखाछ. आरारा.* हर्ष पामे; *प्रेमाका. लावल.* हणहणे [सं.हेषति]

हींसलणा *उषाह.* हेषारव करता (घोडा)

हींसार *दशस्कं(१).* हेषारव, भांभरवुं ते

हु *उक्ति.* हुं (सं.अहम्)

हुइ *उक्ति. उपबा. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. देवरा. नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वीसरा.* होय, थाय (सं.भवति)

हुइगउ *ऐतिका.* थशे [हिं.होगा]

हुइवा *उक्ति.* होवा

हुईइ *उक्ति.* थवाय, थाय (सं.भूयते)

हुओ जुओ हउओ

हुकलइ *जिनरा.* [वागे, ध्वनि करे]; जुओ हूकळी

हुकळावी *प्रेमाका.* *उश्केरीने कोलाहल करता, [प्रेरी, हांकी]

हुज्र *शृंगामं.* होत

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुटुहुटाड **गुर्जरा.* [कोलाहल]

हुडकी **गुर्जरा. *विराप.* [वाद्यविशेष, एक प्रकारनुं ढोल] [दे.हुडुक्की]

हुडुक, हुडुक्क *उक्तिर. प्राचीसं.* वाद्यविशेष (दे.)

***हुण [विहुण]** **जिनरा.* [विना]

हुणहार *आरारा.* होनार

हुणार *कादं(शा).* होनार (सं.भू परथी)

हुतइ *आनंस्त.* थतां, [होतां]

-हुती *विमप्र.* -थी, [-मांथी]

हुतुं *अखाका. आनंस्त. नरका-२. प्रेमाका.* थतुं, हतुं; *चित्तसं.* होतां

हुयउ *आनंस्त. प्रेमाका. लावल. वीसरा.* थयो

हुयणहार *षडाबा.* होनार, थनार

हुरे हुरे *विक्ररा.* हूरियो, [फजेती]

हुलरावे *जिनरा. नरका.* हींचोळे, झुलावे; [लाड लडावे]

हुलावे *नरका. प्रेमाका. विमप्र.* लाड लडावे

हुल्लरमाळा *प्रेमाका.* गळानुं एक आभूषण

हुवइ *आरारा. नरका-२. पंचवा. प्रेमाका. वीसरा.* होय, थाय (सं.भवति)

हुवह *प्राचीसं.* अग्नि (सं.हुतवह)

हुस *मदमो. सिंहा(शा).* होंश, [उमळको], रुचि, [अभिलाष]; जुओ हुंस

हुसिइ *नेमिछं.* थशे, थवानी

हुसेनी *ऐतिका.* रागविशेष

-हुं *कर्पूमं.* संबंधार्थ प्रत्यय, [-नुं]

हुंकारो *नरका-२.* अहंकार, [हुंपणुं]

हुंछउ *उक्तिर.* खेतरमां पडेला दाणा भेगा करवा ते (सं.उच्छः)

हुंडा *जिनरा.* हुंडिक संस्थान, [अंगो लक्षण वगरनां, वांकांचूंकां अने आडांअवळां होय तेवो शरीरबंध] [जै.]

हुंडा अवसप्पणि *ऐतिका.* हुंडावसर्पिणी, वर्तमान हीन समय [जै.]

हुंडीपत्री *मोसाच.* हूंडीनो कागळ

हुंणी *आरारा.* थनार

हुंतइ *आनंस्त. ऐतिरा.* थतां, [होतां]

हुंतउ **आनंस्त. आरारा. उक्तिर. ऐतिका.* -थी, -मांथी, [होतां]

हुंति *ऐतिका.* -नी अपेक्षाए, -ना करतां, [-थी]

हुंती *अभिऊ.* हती (सं.भूत); *नेमिछं.* हती, [होय छे]

हुंशनाएक **मदमो.* [ओजस्वी, प्रभावशाळी] [फा.हुस्न परथी] [रा.]

हुंस, हूंस *चित्तसं.* अहंभाव, हूंपणुं

हुंस *आरारा. गुर्जरा.* होंश, *उत्साह [अ. हवस]; जुओ हुस

हू *वसंवि(ब्रा).* हुं (सं.अहं)

हूअ *लावल.* थया

हूअवह *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अग्नि (सं.हुतवह)

हूइ *उक्तिर. गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वीसरा.* होय, थाय, छे (सं. भवति)

हूओ जुओ हउओ

हूकळी *प्रेमाका.* होंकारा-पडकारा करी; जुओ हुकलइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हूके *प्रेमाका.* बराडा पाडे, [हूकाहूक करे]; जुओ हूंकी

हूतउ *गुर्जरा.* -मांथी (अप.होंतउ)

हूतुं *अखाका. कादं(शा). प्रेमाका.* हतुं (सं. भू परथी)

हूयउ *तेरका. लावल. वीसरा.* थयुं (सं.भूत)

-हूल *प्राचीसं.* पुष्प (सं.फुल्ल)

हूंकी *नेमिछं.* हाक मारी, गर्जना करी; जुओ हूके

हूंडियात *प्रेमाका.* हूंडी लखी आपनार

हूंतउ जुओ किहां हूंतउ

हूंता *कृष्णच.* -थी, [-मांथी]

हूंती *आरारा. प्रद्युचु.* -थी, (पासे)थी

हूंफइं *गुर्जरा.* [रोषमां] हांफे (सं.उष्मायते)

हूंस *अखाछ.* *चडसाचडसी, *स्पर्धा, [ममत, अहंभाव, हूंपणुं]; जुओ हुंस

हूंस जुओ परहुसीउ, परहूंस

हृदय-कपाट *प्रेमाका.* हृदयरूपी बारणुं

हृदयचइ *वसंवि.* हृदयना

हृदि *नलाख्या.* हृदयमां

हे *कामा(शा).* हय, घोडो; जुओ हए, हेसाला

हेखि, हेखी **गुर्जरा. *विराप.* [गुस्से थईने] [सं.हेष्]

हेज *अखाका. अखाछ. आरारा. *ऋषिरा. ऐतिरा. कस्तुवा. कादं(ध्रु). कादं(शा). कामा(शा). चारफा. जिनरा. दशस्कं(१). नरका. नलरा. प्रेमाका. मदमो. लावल. विमप्र. वेताप. शृंगामं. सिंहा(शा).* हेत, प्रीत, राग, आसक्ति (सं.हृद्य)

हेज **अखाका.* [तेज, बळ]

हेजु करइ *उक्तिर.* हेत करे

हेठलि *उक्तिर. नलाख्या.* हेठळ, नीचे (सं.अधस्तात्, प्रा.अहट्ठा) [दे.हेट्ठ]

हेठिलुं *उक्तिर.* हेठळनुं, नीचेनुं

हेड *अखाका. विक्ररा.* गुनेगारना पगने जकडी राखनारुं लाकडानुं एक साधन

हेडबेडी *नरका.* हेडरूपी बेडी, पगनी बेडी, [हेड अने बेडी, पगनी अने हाथनी बेडी]

हेडाऊ *उक्तिर. वीसरा.* घोडानो वेपारी, सोदागर (सं.हेडावुक)

हेत *अखाका. अखाछ. कादं(शा).* हेतु, कारण, मूळ, [रहस्य]; *देवरा. सिंहा(शा).* हेतुथी, कारणे, -थी; जुओ हीत

हेत *प्रेमाका.* हित, भलुं

हेत *नलाख्या.* [मूळ मुद्दो], सारमात्र

हेतइ *आरारा.* हेतुथी, कारणथी, माटे

हेतक *सिंहा(शा).* हितु, हितस्वी

हेत-खप *प्रेमाका.* हेत अने श्रम, [हित अने खंत]

हेतबाद *प्राचीका.* हेतुवाद, कुतर्कमूलक वादविवाद

हेतुवाद *अखाछ.* कुतर्क, [खोटी दलील]

हेम *अखाका.* हिम, हिमालय पर्वत; *दशस्कं(२).* हिम, [झाकळ]; *मदमो.* शीतळ

हेमर *अंगवि. कामा(त्रि).* घोडो [सं.हयवर]; जुओ हेंमर

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमसुता *प्रेमाका.* हिमालयनी पुत्री, पार्वती

हेमाती *मदमो.* पक्षकार, स्वजन [अ. हिमायती]

हेमाळो **नरका-२.* [शियाळो] [सं.हिम-काल]

हेयपणें *आनंस्त.* हेयपणाथी, त्याज्य रूपे

हेर *अखाछ.* हरि

हेरइ *अखाका. उक्तिर. नेमिछं. प्रेमाका.* जुए, नीरखे [दे.]

हेरकांनि *अभिऊ.* संदेशवाहकोने (सं.हेरक)

हेरणां (हेरणां हेरे) *नरप(द).* छूपी रीते जोवुं ते, [छूपी नजरो कर्या करे]

हेरा *विमप्र.* [चक्कर, फेरा, आंटा]

हेरावे *नरका.* *ललकारीने बोलावे, [*खोळीने भेगुं करे]

हेरु *उक्तिर. प्रेमाका.* गुप्तचर (सं.हैरिक)

हेरूं *उषाह.* छूपी तपास, [चोरी] [दे.]

हेर्युं **नरका.* [लई लीधुं, वश कर्युं]

हेल *नरप-२. *नरप(द).* [माथे उपाडेली] गागर

हेल *नरका.* हेलारो, धक्को

हेलइ *आरारा.* जलदी, तरत ज (दे.); *जिनरा.* सहजपणे, सरळताथी, [तरत ज]

हेलडी *नरका. नरप.* हेल, पाणी लाववाना वासणनी मांडणी

हेलडी *रूस्तस.* रमतमां, घडीमां [सं.हेला]

हेलवे, हेळवे *चित्तसं. नरका.* मन मळे, मन मेळवे

हेला *दशस्कं(१). हरिख्या.* रमत, लीला; वेग, झडप; **ऐतिका. गुर्जरा. प्रेमाका. विराप. रूस्तस.* रमतमात्रमां, लीला-पूर्वक, सरळताथी, तुरत ज (सं.हेला)

हेलामां *अखाका. प्रेमाका.* सहेज वारमां, सहेलाईथी, तुरत ज

हेलां *अंबरा. ऋषिरा. ऐतिरा. नरप(द). प्राचीका. प्राचीफा. प्रेमाका. लावल. वाग्भवा.* रमतमात्रमां, अनायास, सहेलाईथी, क्षणवारमां (सं.हेला)

हेलि *जिनरा. विक्रच.* रमतमात्रमां, सहेलाईथी

हेलि *लावल.* *हेले चडी छे, [*घूमे], [*अली]

हेलि, हेली *नरका. लावल.* हे सखी, (अली) सखी

हेलिइं *ऐतिरा.* सहजमां, [तरत ज]

हेली जुओ हेलि

हेलो *चित्तसं.* सरळताथी [सं.हेला]

हेव *आरारा. उषाह. मदमो. शृंगामं.* हवे, अत्यारे (सं.अथ+वा) [अप.अहवइ]

हेव *गुर्जरा. *रूपच.* खरेखर, जरूर, [ज] (सं.एव)

हेवउ *उक्तिर.* हेवा, प्रबळ इच्छा, आदत (सं.हेवाकः)

हेवातण *नरका.* सौभाग्यावस्था (सं. अविधवा+त्वन)

हेवि *आरारा.* हवे

हेवुं *मदमो.* एवुं

हेषारव *नेमिछं.* हणहणाट [सं.]

हेषारा *ऋषिरा.* हणहणाट (सं.हेषारव)

हेसमी *नेमिछं.* एक जातनुं पकवान

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेसारव *कादं(शा).* हणहणाट (सं.हेषारव)

हेसाला *कामा(त्रि).* घोडार [सं.हयशाला]; जुओ हे

हेंमर *ऐतिरा.* उत्तम घोडा [सं.हयवर]; जुओ हेमर

है *उषाह. नलाख्या.* केवलप्रयोगी अव्यय, हे

हैइं *प्रबोप्र.* हृदयमां

हैय *गुर्जरा.* हाय

हैयड *प्रबोप्र.* हैयुं (सं.हृदय+क)

हैयाली *उषाह.* कोयडो, उखाणुं; जुओ हीयाल

हैयुं (हियुं काढ) **अखाछ.* [प्राण अर्पी दे]

होइ *गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* छे, थाय (सं.भवति)

होइला *नरका.* थया (म.)

होइसिइं *नेमिछं.* हशे (सं.भविष्यति)

होइहो **पंचवा.* [छे]

होईए *प्रेमाका.* थईए, थजो

होउ *उक्तिर.* उद्‌गारवाचक, हो (सं.अवम्)

होउ *उक्तिर.* थयुं (सं.भू परथी)

होऐ *पंचवा.* होई, होय (सं.भवति)

होठ राळे जुओ राळे होठ

होठे पडी *नरका-२.* लोकोनी चर्चा पामी, [बोलाती थई]

होड *नरका.* स्पर्धा, बराबरी; **प्रेमाका.* [स्पर्धा, वाद, चडसाचडसी]

होड [होड पाडइ] *विमप्र.* हरीफाई, [शरत लगावे, दाव लगावे]

होडपातनु *षडाबा.* होड करवी, शरत मारवी ते

होडाहोड **प्रेमाका.* [चडसाचडसी, परस्पर वाद]

होडि *अभिऊ.* होडमां, शरतमां

होडि *जिनरा.* तुलना, [समानता, बराबरी]

होती *प्रेमाका.* थती

होद्दो *नरका.* हाथीनी पीठ उपर मूकेली बेठक, अंबाडी [सं.हवदज]

होमिवु *उक्तिर.* होमवुं (सं.हु परथी)

होयजे *आरारा.* होजे, थजे

होयो *ऋषिरा.* होजो, थजो (सं.भवतु)

होयो *प्रेमाका.* थयो (सं.भूत)

होला *षडाबा.* ओळो, चणा आदि धान्यना लीला शेकेला दाणा

होलाववुं *दशस्कं(१).* 'होलोलो' करीने बाळकने बहेलाववुं

होलास *कामा(त्रि).* उल्लास

होशी *मदमो.* होंशथी तैयार करेला, [होंशभर्या]

होसिइ, होस्यइ *ऋषिरा. लावल.* हशे, थशे (सं.भविष्यति)

होंकार **प्रबोप्र.* [पडकार, बूम]

हौउ, हौउओ, हौओ *उषाह. कादं(शा). नलाख्या.* थयो (सं.भूतकः)

ह्रइ, ह्रिइ *उपबा. गुर्जरा. वाग्भबा. विराप. षष्टिप्र.* द्वितीय, चतुर्थी, षष्ठीनो अनुग, -ने, माटे; जुओ रइं, रहइ, हरइं

ह्रव *प्रेमाका.* धरो; नदीमांनो पाणीनो ऊंडो पहोळो लांबो खाडो [सं.]

ह्रिइ जुओ ह्रइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थोडी शब्दार्थचर्चा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादकीय भूमिकामां दर्शाव्युं छे ते मुजब आ संकलित कोशमां शब्दार्थना जे सुधारावधारा थया छे ते कयां कारणोथी अने केवी रीते थया छे एनो ख्याल आवे ते हेतुथी अहीं नमूना रूपे थोडी शब्दार्थचर्चा आपी छे. जुदांजुदां सामयिकोमां अलग लेखो रूपे आ शब्दार्थचर्चा प्रसिद्ध थई छे, अने ए ज लेखो थोडा फेरफार ने उमेरण साथे, अहीं मूक्या छे तेथी स्वाभाविक रीते एमां अकारादिक्रम तूटे छे. पण चर्चायेला शब्दो नीचे अकारादि क्रममां गोठव्या छे अने एमनी चर्चा कया स्थाने थई छे ते खंडक-क्रमांक अने पृष्ठांकथी दर्शाव्युं छे.

अउले खाले वहै, १ – ५६८
अउल्हाइ, २ – ५६८
अउगनाइ, ३ – ५६८
अउगउ, ४ – ५६९
अकज, ७ – ५७१
अकाज, ७ – ५७१
अखतर, ८ – ५७२
अखत्र, ८ – ५७२
अखंत्र, ८ – ५७२
अखाडो, ५ – ५६९
अगम, ९ – ५७३
अगाज, १० – ५७५
अघाट ऊभो, ११ – ५७७५
अच्छउं, १२ – ५७६
अछूतउ, ६ – ५७०
अज उभां, १३ – ५७६
अजंण, १४ – ५७७
अडसाला, १५ – ५७७
अडसीला, १५ – ५७७
अगाल, १६ – ५७७
अणगाल, १६ – ५७७
अणाथ, १७ – ५७८
अणाथि, १७ – ५७८
अणिअ आखइ, १९ – ५७९
अणिख, १८ – ५७९
अणीय आखइ, १९ – ५७९
अणीसर, २० – ५७९
अणूरति, २१ – ५८०
अणूरुं, २१ – ५८०
अत, २२ – ५८१
अतिधज, २३ – ५८२
अतिसंता, २४ – ५८२
अधरास, २५ – ५८२
अनिआउ, ३३ – ५९०
अनिवड, २६ – ५८४
अनु भाव, २७ – ५८६
अनुभाव, २७ – ५८६
अन्नैयो, ३३ – ५९०
अन्या, ३३ – ५९०
अन्याई, ३३ – ५९०
अंन्ना, ३३ – ५९०
अप्रमाण, २८ – ५८६
अबाह, २९ – ५८७
अबोखण, ३० – ५८७
अभोखउ, ३० – ५८७
अभोखण, ३० – ५८७
अभोखणुं, ३० – ५८७
अमलीमाण, ३१ – ५८९
अमलीमान, ३१ – ५८९
अमाइ, ३२ – ५८९

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमाणुं, ३२ – ५८९
अमान, ३२ – ५८९
अमानी, ३२ – ५८९
अमामो, ३२ – ५८९
अरज, ३४ – ५९३
अलगुं, ३५ – ५९३
अलगेरी, ३५ – ५९३
अंक भरवो, ३६ – ५९५
आघाट ऊभो, ११ – ५७५
आघ, ३७ – ५९६
आघलउ, ३७ – ५९६
आघुं, ३७ – ५९६
आघेरुं, ३७ – ५९६
आछुं, १२ – ५७६
आडइ, ३८ – ५९७
आडौ, ३८ – ५९७
आथ, १७ – ५७८
आथि, १७ – ५७८
आथ्य, १७ – ५७८
आदर, ३९ – ५९८
आदरवुं, ३९ – ५९८
आभोखउ, ३० – ५८७
उगउ, ४ – ५६९
उशंकल, ४४ – ६०३
उसंकल, ४४ – ६०३
उसीकल, ४४ – ६०३
उसींकल, ४४ – ६०३
ऊलववुं, २५ – ५८२
ओलववुं, २५ – ५८२
ओशिंगळ, ४४ – ६०३
ओशींकळ, ४४ – ६०३
ओशींगल, ४४ – ६०३
ओसंकल, ४४ – ६०३
ओसीकल, ४३ – ६०३
करो, ४० – ६०१
काण, ४५ – ६१३
काणि, ४५ – ६१३
काणी, ४५ – ६१३
कांणि, ४५ – ६१३
किण गानइ, ४३ – ६०२
कुलकाणि, ४५ – ६१३
खगमंडल, ४१ – ६०१
खगाकार, ४१ – ६०१
खगां, ४१ – ६०१
खत्र, ८ – ५७२
खराप, ४२ – ६०२
गान, ४२ – ६०२
निगम, ९ – ५७३
निवड, २६ – ५८४
मुहकाणि, ४५ – ६१३

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. अउले खाले वहै

*जिनरा.*मां शालिभद्रनी रिद्धिना वर्णनमां नीचेनी पंक्ति आवे छे :

*जीहो **अउले खाले वहै**, जीहो कस्तूरी घनसार. ४,११*

संपादक 'अउले'ना 'तरल, अवलेह' एवा अर्थो आपे छे, जे अहीं कोई रीते बेसता नथी. 'अउले खाले वहै' ए रूढिप्रयोग होवानुं समजाय छे. अवळी खाळे वहेवुं एटले ऊभरावुं, छलकावुं. शालिभद्रने घरे कस्तूरी अने कपूर अंगलेपमां एटलां वपराय छे ने धोवाईने खाळमां एटलां वहे छे के खाळ एनाथी ऊभराय छे. ए नोंधपात्र छे के आवो रूढिप्रयोग राजस्थानी शब्दकोश के रूढिप्रयोगकोशमां नोंधायेलो नथी.

२. अउल्हाइ

जिनरा.-अंतर्गत 'गोडी पार्श्वनाथ स्तवन'मां नीचेनी पंक्तिओ आवे छे :

देव घणाइ देवले, गउडेचा राय,
दीठा ते न सुहाइ रे, गउडेचा राय,
इक दीठा मन हुलसइ, गउडेचा राय,
*इक दीठा **अउल्हाइ**, रे गउडेचा राय,*

'ओलावुं' शब्द 'बुझावुं, ठरवुं' एवा अर्थमां जाणीतो छे. पण ए अर्थ अहीं नथी ए स्पष्ट छे. 'हुलसइ' (उल्लास पामे)ना विरोधी अर्थनो ज ए शब्द होई शके. नाहटा 'संकुचित थवुं' एवो अर्थ ले छे. पण 'उल्लास पामे'ना बराबर विरोधी अर्थमां आ शब्द नोंधायेलो मळे छे. 'देशीशब्दसंग्रह' 'ओहुल्लि' एटले 'खिन्न' अने 'ओहुल्लिय' एटले 'म्लान' अर्थ आपे छे. तो अहीं पण "एक देवने जोतां मन उल्लास पामे, एक देवने जोतां मन खिन्न थाय" एम अर्थ बराबर बेसे.[1]

३. अउगनाइ

*उक्ति.*मां 'अउगनाइ' शब्द नोंधायेलो छे ते ध्यान खेंचे छे. एनो संस्कृत पर्याय एमां 'अपकर्णयति' अपायेलो छे.

आ 'अउगनाइ' ते 'अवगणे' ? *उक्ति.*मां संस्कृत पर्यायो घडी काढेला मळे छे अने संस्कृत कोशो 'अपकर्णयति' शब्द नोंधता नथी. पण *उक्ति.*ने 'अवगणे' ज अभिप्रेत होय तो संस्कृत 'अवगणयति' ए न आपी शके एम मानवुं मुश्केल छे. बीजी बाजुथी, 'अवगणे'नुं जूनुं रूप 'अउगणइ' होय अने ए ज 'अवगणयति' परथी आवे, 'अउगनाइ' नहीं. एटले 'अउगनाइ' ए 'अउगणइ'थी जुदो शब्द होवानो संभव रहे छे. एनो 'अपकर्णयति' ए पर्याय आपवामां आव्यो छे तो तेनो अर्थ 'सांभळे नहीं, ध्यानमां न ले' एवो अभिप्रेत होवानुं संभवित छे.[2]

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. अउगउ, उगउ

*उक्ति.*मां 'अउगउ-मुगउ' अने 'उगउमुगउ' ए शब्दो नोंधायेला छे अने एनो पर्याय अवाङ्मुकः आपवामां आव्यो छे. देखीती रीते ज 'ऊगोमूगो' ए द्विरुक्त शब्द छे. एनो अर्थ तो 'मूगो' ज. 'ऊगो' ने 'अवाङ्' परथी व्युत्पन्न करी शकाय ?

'अउगउ' के 'उगउ' शब्द एकलो पण 'मूगो'ना अर्थमां वपरायो छे. जेमके, *प्राचीसं.*-अंतर्गत 'नेमिनाथ-चतुष्पदिका'मां –

***अउगी** अच्छि, सखि झखि मन आल,*

*षडाबा.*मां –

*गुरे भणिउं – 'म वच्छ ! **उगउ** रहि को कांइ नहीं कहइं.'*

बीजा उदाहरण परत्वे संपादके 'agitated, alarmed' (क्षुब्ध, भयभीत) एवो अर्थ आप्यो छे. पण त्यां बीजा साधुए दडबडावतां चेलो लागणीना आवेशमां आवी धुसकां भरे छे त्यारे गुरु एने 'वत्स, रड नहीं. मूगो रहे' एम कहे छे तेवो अर्थ लेवानो छे.[३]

५. अखाडो

'अखाडो' शब्द कुस्ती, व्यायाम के स्पर्धा माटेनी जग्याना अर्थमां जाणीतो छे. सं.'अक्षपाटक' परथी ए ऊतरी आव्यो छे. *उक्ति.* 'अक्षपाटक' एवो पर्याय आपी 'अखाडउ' शब्द नोंधे छे. मध्यकालीन गुजरातीना बेत्रण प्रयोगो आ संदर्भमां नोंधपात्र छे.

गुर्जरा. तथा *विराप.*मां –

पार्थु एकु दल कोडि विहाडइ,

*इणि स्थउं कोइ मिलइ न **अखाडइ.** २.५३*

*विराप.*ना संपादको 'अखाडइ'नो अर्थ 'मल्लयुद्धमां' अने *गुर्जरा.*ना संपादको 'a wrestling ground' एम अर्थ आपे छे. आमां कुस्ती के कुस्तीनुं मेदान एवो अर्थ अभिप्रेत होय तो ते योग्य नथी. सर्व प्रकारनी शौर्यस्पर्धामां पार्थनी तोले कोई न आवे एम ज अर्थ होई शके. पार्थ कुस्तीबाज नथी, बाणावळी छे.

गुर्जरा.-अंतर्गत 'पंचपांडवचरित्ररास'मां अन्य त्रणेक स्थाने आ शब्द वपरायेलो छे :

*तुम्हि मंडावउ नवउ **अखाडउ,** नवनव भंगि पुत्र रमाडउ. ४:१*

*राधावेधु करीउ दिखाडइ, तिसउ न कोई तीण **अखाडइ.** ४.८*

*इम परीक्षा हुई **अखाडइ,** तींछे अरजुनु चडीउ पवाडइ ४.२०*

अहीं प्रसंग कौरव-पांडवोनी शस्त्रविद्यानी परीक्षानो छे. तेथी 'अखाडउ' एटले

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'शौर्यस्पर्धा' एवो अर्थ बधे स्पष्ट छे. 'शौर्यस्पर्धानुं स्थान' एवो अर्थ पण लई शकाय.

वधारे रसप्रद छे ते तो 'अखाडउ'ना बीजा बे प्रयोगो. *षडावा.*मां चैत्यवर्णनना प्रसंगे द्वारेद्वारे अखाडामंडप साथे प्रेक्षामंडप होवानो उल्लेख आवे छे. संपादके 'अखाडामंडप'नो अर्थ 'pavilion' आप्यो छे ते तो देखीती रीते ज भूलभरेलो छे. पण अहीं 'अखाडामंडप' एटले 'शौर्यस्पर्धानुं स्थान' एवो अर्थ होवा करतां 'रमतनुं स्थान, क्रीडाभूमि' एवो होवा वधारे संभव छे. चैत्यमां शौर्यस्पर्धा होई शके ? *नरप.*ना एक पदमांनो 'अखाडो' शब्दनो प्रयोग आ संदर्भमां उपयोगी नीवडे तेवो छे :

वृंदावनमां रच्यो ***अखाडो,*** *नाचे गोपी गोवाल. ५४.१*

'अखाडो' शब्द अहीं 'शौर्यस्पर्धा'ना अर्थमां नथी ते स्पष्ट छे. गोपी-गोपाल नृत्य करे छे. एटले 'क्रीडाभूमि' एवो अर्थ ज लेवानो रहे. *षडावा.*मां पण 'नृत्यादि क्रीडाओनुं स्थान' एवो अर्थ बंध बेसे. आ 'अखाडो' शब्दनो जरा जुदो पडतो प्रयोग गणाय.[४]

६. अछूतउ

'अछूत' शब्द 'अस्पृश्य, हलकी जातिनो माणस' ए अर्थमां खूब जाणीतो छे. *उक्ति.*मां 'अछूतउ' शब्द जुदा अर्थमां होय एम समजाय छे. एमां पर्याय 'अच्छुप्त' अपायेलो छे, जेनो अर्थ 'अस्पृष्ट' थाय. पण 'मइलउ', 'छोति', 'अछूतउ' एम शब्दक्रम छे ने *उक्ति.*मां शब्द कया जूथमां मुकायो छे तेमांथी केटलीक वार एना अर्थनी चावी मळे छे. अहीं 'मइलउ'नो विरुद्धार्थी शब्द 'अछूतउ' समजीए तो एनो अर्थ 'स्पर्शदोषना अभाववाळो, निर्मल' एम करवो जोईए. 'छोति'नो अर्थ 'स्पर्शदोष' थाय ज छे.[५]

पूरक नोंध

१. 'मों करमायुं' जेवामां 'करमावुं' जेम, 'ओलावुं'नो लाक्षणिक अर्थ निस्तेज थवुं लईए तो अर्थ कदाच बेसे. 'ओहुल्ल-'ने मूळ तरीके लेतां पण अर्थ घटे छे. 'ओहुल्ल'-नां मूळमां 'अव+फुल्ल-' (करमावुं) छे. अपभ्रंश साहित्यमां ते वपरायो छे. जेमके स्वयंभूकृत 'पउमचरिउ'मां, पुष्पदंतकृत 'महापुराण'मां. त्यां 'मुख'नुं ते विशेषण छे. टीकाकारे 'म्लान', 'सुकायेलुं' अर्थ करेल छे. 'ओहल्ल-' एवो पाठ लिपिदोष जणाय छे. 'ओहुर-' पण मळे छे. विशेष माटे जुओ रत्ना श्रीयन्, Des'ya and Rare Words, पृ.६१, ६२.

२. नामधातु 'अवकर्णय' – 'ध्यानमां न लेवुं' बाणनी 'कादंबरी'मां वपरायानुं मोनिअर-विलिअम्झे नोंध्युं छे.

३. में 'अनुशीलनो' (१९६५, पृ.९३–९५)मां 'अउगउ', 'उगा' विशे नोंध आपेली छे. तेमां प्राकृत, जूनी तथा मध्यकालीन गुजरातीना ११मीथी १७मी शताब्दीमां मळता प्रयोगो, तथा मराठी प्रयोगनी नोंध लीधी छे. 'अनुसंधान'ना प्रस्तुत अंकमां ज

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कनुभाई शेठ संपादित 'सुभद्रासति-चतुष्पदिका' (१३मी सदी)मां पण आ शब्दनो प्रयोग मळे छे :

*'**अउगी** आछु न बोलिसि माए.' (कडी ३४).*

४. पुष्टिमार्गीय वैष्णव कवि हरिदासना मुख-परंपरामां पण मळता एक धोळमां 'क्रीडाभूमि' (रासक्रीडा माटेनी रंगभूमि) एवा अर्थमां 'अखाडो'नो प्रयोग मळे छे :

*एक रच्यो **अखाडो** रे, सज्ज थया पोते.*

(संदर्भ कृष्ण-गोपीओनी रासलीलानो : जुओ 'हरि वेण वाय छे रे हो वंनमां', पृ.७४, कडी २).

५. सं.'छुप्त-', प्रा.'छुत्त-' = 'स्पृष्ट', पछीथी, 'दूषित स्पर्शवाळुं'. प्राकृतमां पण 'छुत्ति' 'अशौच' एवा अर्थमां वपरायेलो छे, जेना परथी जू. गुज. 'छोति', हिं. 'छूत' थया छे. 'अछूत' शब्द 'अस्पृष्ट' (हिं.अछूता), तेमज 'अस्पृश्य' (हिं.'अछूत') बंने अर्थमां रूढ छे. 'छूताछूत'मां धात्वर्थ जळवायो छे. प्रस्तुत नोंध क्रमांक ७मां पण 'अछूतउ' 'अस्पृश्य' ए अर्थमां होवानी शक्यता छे.

– ह. भायाणी

[अनुसंधान–१]

□

७. अकज, अकाज

'अकज' के 'अकाज' एटले 'अकार्य, न करवा जेवुं कार्य, अघटित के निंद्य कार्य'. मध्यकाळमां आ शब्द 'नकामुं, व्यर्थ, खोटुं' एवा अर्थमां पण व्यापक रीते प्रयोजायो छे.

*अखाका.*मां एक सोरठो नीचे मुजब मळे छे :

राजस केरी रज आवी पेठी आंखमां,

*तेणे थयुं **अकज** शुद्ध वस्तु अविलोकवा.*

संपादके 'अकज'नो 'अकार्य, न करवा जेवुं काम' एवो अर्थ लीधो छे. पण वधारे योग्य रीते 'न थवा जेवुं, अघटित' एवो अर्थ लेवो जाईए : 'शुद्ध वस्तु अवोलकवा माटे अघटित थयुं.'

'अकाज'नो एक प्रयोग एमां आ प्रमाणे छे :

अलवे-शुं आले ज जातां, घसाये गजराज,

*तेणे ग्रहस्थनां घर गडगडे, वाहाला ! त्यम अडे थाय **अकाज.***

संपादके आनो पण 'अकार्य, न करवा जेवुं काम' एवो अर्थ आपेलो छे. अहीं पण 'न करवा जेवुं' नहीं, पण 'न थवा जेवुं काम' एम अर्थ करवो वधारे योग्य छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हानि' के 'नुकसान' एवो अर्थ पण लई शकाय : 'मार्गे चालतां गजराज जराक घसाय तेनाथी गृहस्थनां घर खखडी पडे छे, तेम वहाला ! तमारा अडवाथी हानि/नुकसान थाय छे.' आगळ कृष्ण नेत्र नाखे त्यां प्राण हरे छे एवी वात छे. तेम एनो हाथ अडवाथी पण हानि थवानुं ज अभिप्रेत होय. हाथीनुं दृष्टांत पण ए ज सूचवे छे.

*रूपच.*मां संपादके 'अकाज'नो अर्थ 'व्यर्थ' आप्यो छे. पण ए अर्थ संदर्भमां बंधबेसतो नथी. संदर्भ एवो छे के कुंवरी भोगमग्न होवानी वात राजा पासे आवे छे त्यारे ए गुस्से थईने बोले छे के *रे रे किसिउ अकाज* ? देखीती रीते ज अहीं 'अघटित कार्य, निंद्य कार्य' एवो अर्थ छे : 'आ केवुं अघटित कार्य ?'

*विराप.*मां 'अकाजि'नो अर्थ संपादकोए 'अकारण' आप्यो छे. *गुर्जरा.*मां पण आ कृति छपायेली छे अने त्यां पण 'अकाजि'नो अर्थ 'without any purpose' आपेलो छे. बन्नेमां लेवायेलो अर्थ शंकास्पद लागे छे.

संदर्भ एवो छे के कीचके वर्तविला त्रास पछी द्रौपदी विराट राजाने फरियाद करतां कहे छे के *ईणइं हउं इम अकाजि पीडी /विगोइ.* कीचके द्रौपदीने त्रास आप्यो ते अकारण, कोई हेतु विना के अघटित कार्यथी, अघटित रीते, खराब रीते, खोटुं करीने ? "एणे मने आम खोटी रीते, खराब रीते पजवी" एम अर्थ होवानो वधारे संभव छे.

८. अखत्र, अखंत्र, अखतर, खत्र

मध्यकाळमां आ शब्द 'निंद्य, खराब, अयोग्य, अनिष्ट' एवा अर्थोमां वपरायेलो देखाय छे. प्राकृत कोश 'अखत्त (अक्षात्र)' 'क्षत्रियधर्मथी विरुद्ध, जुलम' एवा अर्थमां नोंधे छे. पण 'क्षत्रियधर्मथी विरुद्ध'मांथी 'निंद्य, खराब' एवो अर्थ विकसी शके. ए नोंधपात्र छे के मध्यकालीन गुजरातीमां 'अखत्र' के 'अखंत्र' क्षात्रधर्मना संदर्भमां ज नहीं, व्यापक, सर्वसामान्य संदर्भमां वपरायो छे.

गुर्जरा.-अंतर्गत वस्तिगकृत 'चिहुंगति चोपाई'मां एक पंक्ति आम मळे छे :

***खत्रअखत्र** कीधां सवि वार, डोकरनी कोइ न करइ सार.*

वृद्धावस्थानी स्थितिना वर्णननी आ पंक्ति छे. देखीती रीते, माणसे जिंदगीमां करेलां सारांनरसां कार्योनो अहीं उल्लेख छे. 'खत्र' एटले 'सारुं, योग्य', 'अखत्र' एटले 'खराब, अयोग्य'. संपादकोए अनुक्रमे 'good' अने 'improper' अर्थो आप्या छे ते बराबर छे.

*सिंहा(म).*मां संपादके 'अखत्र, अखंत्र'नो 'क्षत्रियने न छाजे एवुं कार्य' एवो स्थूळ शब्दार्थ कर्यो छे, तेमां ए वात वीसरी जवाई छे के आ शब्द अहीं क्षत्रियने नहीं, ब्राह्मणने संदर्भे वपरायो छे. *लोभ लगइ **अखंत्र** ज किउं* तथा *परीक्षा जोई, नवि करुं **अखत्र*** बन्नेमां 'निंद्य, खराब कर्म' एवो सामान्य अर्थ स्पष्ट छे : "लोभने लीधे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निंद्य कर्म कर्युं', "आ तो परीक्षा करी. हुं कदी निंद्य कर्म करुं नहीं."

*हरिख्या.*मां संपादके 'अखत्र'नो 'गंदुं' एवो अर्थ आप्यो छे ते पण बराबर नथी. बाग उजाडी नाखवामां आव्यो तेना संदर्भमां एवी पंक्ति आवे छे के *जात न रही पुष्प केरी, थयुं परम* ***अखत्र.*** अहीं 'घणुं खराब – खोटुं कार्य थयुं / अनिष्ट थयुं / नुकसान थयुं' एम अर्थ करवो ज योग्य छे.

आरारा.-अंतर्गत राजसिंहकृत 'आरामशोभाचारित्र'मां दीकरीनी अवदशा थयेली छे तेने अनुलक्षीने माता बोले छे के *अणचींत्युं ए* ***अखत्र*** *सूं दीसइ ?* संपादके आपेलो 'अनिष्ट' अर्थ अहीं बराबर बंध बेसे छे.

भगवद्गोमंडल 'अखत्र' = 'अखतर'नो 'गंदुं, मेलुं, नठारुं' एवो अर्थ नोंधे छे तेमां 'गंदुं, मेलुं'ना अर्थनो आधार कदाच *हरिख्या.* होय. बीजा '१. मळ, विष्ठा, २. घणुं, बहु' एवा अर्थो पण नोंधाया छे, पण एना कोई आधारो अपाया नथी. 'पोतानी जातने डाह्युं मानतुं मनावतुं' एवो अर्थ आपी निष्कुळानंदनी आ पंक्ति टांकी छे – *अति* ***अखतर*** *नर नरसा घणा रे.* परंतु एमां 'निंद्य' एवो अर्थ ज होवा संभव छे, पाछळ 'नरसा' (=खराब) शब्द आवतो होवा छतां. आने अर्थनी द्विरुक्ति लेखी शकाय.

९. अगम, निगम

'अगम' ने 'निगम'नुं जोडकुं घणी वार वपराय छे. एमां ए बे शब्दो खरेखर शुं दर्शावे छे ते विचारवा जेवुं छे. एना केटलाक प्रयोगो जोईए.

*अखाका.*मां –

निगम अगम *कहे, पार को नव लहे.*

*नरका.*मां –

✺ *न लहे जोगिया, मुनिवर कोटिया,*
निगम *ने* ***अगम*** *ते हुंने थापी.*

✺ ***अगम*** *गुरु थकी* ***निगम*** *शिष्य निपना,*
ब्रह्मनी वातनो भेद जाणे.

*मदमो.*मां –

✺ *शाहास्त्र भणावो एहने सार,* ***अगंम-नीगंम*** *जे अपरंपार.*

✺ ***अगंमनीगम*** *जोतीक-जनीन न्याअ-वात पर नेह.*

'निगम' शब्द एकलो वपरायेलो पण मळे छे. पण एनो बधे एकसमान प्रयोग छे. जेमके,

*चतुचा.*मां –

नीगम *नेतनेत करी भाखे.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*नरका.*मां –

*नेतिनेति करी **निगम** भाखे*

*प्रेमाका.*मां –

*जेने **निगम** नेतिनेति गाय.*

*अखाका.*मां 'अगम'नो अर्थ 'अगम्य' आपवामां आव्यो छे. *नरका.*मां पहेली पंक्ति परत्वे 'अगम्य, कळी न शकाय एवुं' ए अर्थ तथा बीजी पंक्ति परत्वे 'गूढ शक्ति धरावनार, भविष्यनो विचार करी शकनार' ए अर्थ आपवामां आव्यो छे. आ बीजो अर्थ 'अगम' शब्द गुरुनुं विशेषण होवाने कारणे अपायो छे पण ए अर्थ लेवा माटे शो आधार छे ते स्पष्ट थतुं नथी. आ पंक्ति परत्वे 'निगम'नो अर्थ तो अपायो ज नथी. एम लागे छे के अन्यत्र बधे 'अगमनिगम' ए शास्त्रग्रंथोने दर्शावतुं जोडकुं होय तो अहीं पण एम ज मानवुं जोईए अने 'गुरु' 'शिष्य' ए शब्दोने जुदी रीते घटाववा जोईए. 'अगम' ने 'निगम' एम बन्ने छूटां पाडीने उल्लेखवामां आवे छे ते परथी ए बंने शास्त्रग्रंथोना प्रकारो होवानुं स्पष्ट छे तेथी 'अगम'नो 'अगम्य, न कळी शकाय एवुं' ए अर्थ पण योग्य नथी.

*मदमो.*मां 'अगंम'नो अर्थ 'आगम, शैव शास्त्रो' आपवामां आव्यो छे. संस्कृत कोश 'आगम'नो एक आवो अर्थ नोंधे छे पण बीजा 'परंपरागत पवित्र शास्त्रग्रंथो' 'ब्राह्मणग्रंथो' 'वेद' एवा अर्थो पण नोंधे छे. अहीं 'शैव शास्त्रो' एवो संकुचित विशिष्ट अर्थ लेवा माटे शुं कारण छे ए समजातुं नथी. 'अगंम'नो ए अर्थ करीए तो एनी साथे आवेला 'नीगम' शब्दनो शो अर्थ करवो ? *मदमो.*मां 'नीगम'नो अर्थ अपायो ज नथी.

'निगम' शब्दनो सर्वत्र 'वेदग्रंथो' एवो अर्थ करवामां आव्यो छे. एने संस्कृत कोशनो आधार छे, परंतु संस्कृत कोश 'वेदनी समजूती आपतो परवर्ती ग्रंथ' एवो पण अर्थ आपे छे.

'अगम' ने 'निगम' द्वारा मूळ ग्रंथ – वेद अने एना परवर्ती ग्रंथोनो उल्लेख होय ए ज तर्कगम्य लागे छे. कया शब्दनो कयो अर्थ करवो एनो थोडो कोयडो छे ने कदाच मध्यकाळमां संस्कृतमां छे तेवी अस्पष्ट स्थिति ज होय. छतां वधारे संभवित ए लागे छे के 'अगम' द्वारा मूलग्रंथो – वेदग्रंथो अभिप्रेत होय अने 'निगम' द्वारा एना परवर्ती ग्रंथो. नरसिंहनी कृतिमां 'अगम' गुरु अने 'निगम'ने शिष्य कहेल छे ते आ संदर्भमां सूचक बने. 'नेति नेति' कहेनार मात्र वेदग्रंथो ज शा माटे ? त्यां पण 'शास्त्रग्रंथो' एवो सामान्य ने व्यापक अर्थ लेवो जोईए एम लागे छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. अगाज

'अगाज' एटले अग्राह्य. मध्यकालीन गुजरातीमां एनी केटलीक भिन्नभिन्न अर्थछायाओ विकसेली देखाय छे.

*शृंगामं.*मां आ मुजब पंक्ति मळे छे :

साची प्रीति न जां मिलइ, तां मनि हुइ ***अगाज.***

संपादके 'अग्राह्य' अर्थ आप्यो छे, ए अहीं 'अस्वीकार्य'ना अर्थमां छे एम समजाय छे : "साची प्रीति ज्यां न मळे त्यां ए मनमां अग्राह्य – अस्वीकार्य बने छे – मन एने स्वीकारी शकतुं नथी."

*प्रेमाका.*मां आ प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

द्राविडदल सागर ***अगाज.***

संपादके 'अग्राह्य, अगाध' एवो अर्थ आप्यो छे. 'अग्राह्य' एटले 'जेनो पार न पामी शकाय एवो, विशाळ' एवी अर्थछाया एमां जोई शकाय.

आरारा.-अंतर्गत समयप्रमोदकृत 'आरामशोभाचोपाई'मां नीचे मुजबनी पंक्ति मळे छे :

आरामसोभा सुं लीधउ संजम राजीयइ रे

ते गुरु पासि ***अगाज.***

'अगाज' अहीं 'संजम'नुं विशेषण छे. एनो संपादके 'दुष्कर' अर्थ आप्यो छे ते एम बेसाडी शकाय के 'जेने सहेलाईथी ग्रहण न करी शकाय ते, जेने सहेलाईथी आचरी न शकाय ते.'

'अगाज'नो कोयडारूप प्रयोग तो *विमप्र.*मां छे :

वीरपुत्र बोलाविवा, ए तु आविवा,

राउ करइ तु ***अगाज*** *तु.*

संपादके 'अगाज'नो 'वगर हरकते' एवो अर्थ आप्यो छे ते केवी रीते आवी शके ते तो प्रश्न छे ज, ते उपरांत संदर्भमां ए बंधबेसतो थतो नथी. संदर्भ तो वीर वणिकने त्यां पुत्र विमल जन्म्यो एनो छे. विमलना जन्मने अनुलक्षीने राजा 'अगाज' करे छे. आ 'अगाज' एटले शुं ? पछी वर्णन तो जन्मोत्सवनुं आवे छे. 'अगाज' एटले 'अग्राह्य, घणुं मोटुं' एवो अर्थ थई शके. आगळ आपणे 'विशाळ' अर्थ कर्यो ज छे तो अहीं 'अगाज' एटले 'मोटो उत्सव' एवो अर्थ करी शकाय ?

११. अघाट (आघाट) ऊभो

*नंदब.*मां आ प्रमाणेनी उक्ति आवे छे :

साचुं बोल ***उभो आघाट,*** *राजा तें मारो शा माट ?*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादके 'अघाट'नो अर्थ 'पूरेपूरुं' आप्यो छे ते संदर्भमां बेसाडी शकातो नथी. उपरांत 'अघाट' आवो अर्थ केवी रीते आपी शके ते प्रश्न छे.

आपणे त्यां 'आघाट' चतु:सीमा माटे वपरातो शब्द छे. मकान 'आघाट' एटले एनी चार सीमा साथे वेचाण आप्यानुं लखातुं होय छे. अहीं 'उभो आघाट'नो अर्थ 'चारे आघाट – सीमा वच्चे ऊभो रहीने' एटले 'जाहेरमां, खुल्लेखुल्लुं' एम होवानुं समजाय छे : "राजाने तें केम मार्यो ए जाहेरमां, खुल्लेखुल्लुं साचुं बोली दे." ए नोंधपात्र छे के 'अघाट'नुं 'आघाट' एवुं पाठांतर मळे छे.

१२. अच्छउं, आछुं

'आछुं' शब्द अत्यारे गुजरातीमां 'झीणुं, बारीक' एवा अर्थमां प्रयोजाय छे, पण संस्कृत-प्राकृतमां 'अच्छ' एटले 'सुंदर, निर्मल' एवा अर्थो छे. हिंदीमां 'अच्छुं' शब्द 'सुंदर, सरस' एवा अर्थमां छे ए जाणीतुं छे अने राजस्थानी कोश पण 'आछौ'ना 'अच्छा, सुंदर, भला, उत्तम' एवा अर्थो नोंधे छे, 'बारीक, झीणुं' एवो अर्थ नहीं.

मध्यकालीन गुजरातीमां पण आ शब्द 'सरस, सुंदर'ना अर्थमां होय एवुं जणाय छे. नरपतिकृत 'वीसळदेव रास' (संपा. ज्हॉन डी. स्मिथ)मां 'आछउ' शब्दनो 'good, fine' (सरस, सुंदर) एवो अर्थ ज लेवायेलो छे. त्यां ***आछि*** *गोरी,* ***आछा*** *चावळ* एवा प्रयोगो मळे छे ते आ अर्थनुं समर्थन करे छे.

परंतु *तेरका.* (संपा. हरिवल्लभ भायाणी)मां 'अच्छय' शब्दनो 'आछुं' अर्थ अपायेलो छे. *अति* ***अच्छउं*** *सुकुमाल चीरु* एवी उक्तिने संदर्भे अपायो छे एटले 'आछुं'नो अत्यारे प्रचलित 'बारीक, झीणुं' ए अर्थ ज अभिप्रेत होवानुं मानी शकाय.

*प्राचीफा.*मां पण 'आछउं'नो 'झीणुं' अर्थ अपायेलो छे. एमां पण आ वस्त्रनुं विशेषण ज छे – *अति****आछउ*** *सुकमाल चीरु,* ***आछां*** *अंबर.*

एम लागे छे के मध्यकालीन गुजरातीमां वस्त्र संदर्भे पण 'आछुं'नो 'सरस, सुंदर' एम ज अर्थ होवो जोईए. उपरना संदर्भोमां बारीक वस्त्रनी कोई प्रस्तुतता नथी. 'वर्णकसमुच्चय' (संपा. भोगीलाल सांडेसरा)मां सामान्य सूचना रूपे ***अच्छां*** *कपडां पहरियइ* एवी उक्ति मळे छे तेमां 'सुंदर, सरस' अर्थ ज लेवानो रहे छे. 'माल निगद' (कोई खाद्य पदार्थ)ने ***आछु*** कहेल छे त्यां पण 'बारीक' अर्थने अवकाश नथी, 'सुंदर' अर्थ ज लेवो जोईए.

[कंकावटी]

□

१३. अज उभां

*सिंहा(शा).*मां एक पंक्ति आ प्रमाणे मळे छे :

अज उभां *लें जे दान, मागण जांणि नवी द्ये मान.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादके शब्दकोशमां 'अज' शब्द आपी एनी सामे प्रश्नार्थ मूक्यो छे. भगवद्गोमंडलमां 'अज केडे' शब्द मळे छे, जेनो अर्थ छे 'हवे पछी'. ते बतावे छे के 'अज' शब्द 'आज' माटे वपराय छे. 'आज'नुं मूळ 'अद्य' एटले 'अत्यारे, 'हमणां'. तो 'अज उभां' एटले 'अत्यारे ज' 'ऊभाऊभ' एम अर्थ न होई शके ? पापयादीना वर्णनमां आ पंक्ति आवे छे एटले 'अत्यारे ज' 'ऊभाऊभ'नुं तात्पर्य 'हठ करीने' एवुं घटावी शकाय : "जे ऊभाऊभ, हठ करीने दान ले ते पाप अने दान आपनार लेनारने मागण समजीने मान न आपे ते पण पाप."

१४. अजंण

*मदमो.*मां एक पंक्ति आ प्रमाणे मळे छे :

*अंन, नीर, नीद्रा नहीं, **अजण** आठु जांम.*

संपादके 'अजंण'नो अर्थ 'अजीर्ण, अजंपो' आप्यो छे. जेने रक्तपित्त थयो छे एवा माणसनी मनोवेदनानुं आ वर्णन छे, एटले 'अजीर्ण' एवा अर्थने तो अवकाश ज नथी. कदाच 'अजंण' शब्द 'अजीर्ण'मांथी आव्यो होवानी संभावना लेखे ज ए नोंध्यो होय, केमके 'अजंपो' अर्थ तो संदर्भमां बराबर बेसी जाय छे. उर्दू कोश अरबी 'अजून' शब्द 'गूंदवुं, खमीर करवुं' एवा अर्थमां नोंधे छे. 'अजंण' शब्द एना परथी आव्यो होवानी संभावना छे. 'अजंण' एटले 'वलोवाट, अस्वस्थता, अजंपो' : आठे पहोर अजंपो, वलवाट.

१५. अडसाला/अडसीला

*नेमिछं.*मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

*हिवइ थाउ ढीला, अति **अडसीला** किम न थईइ देव.*

संपादके 'अडसीला'नो अर्थ 'आडा शीलवाळा' आप्यो छो जे भाग्ये ज संतोषकारक गणाय. 'राजस्थानी सबदकोस' 'अडसाला' शब्द 'हठीला'ना अर्थमां नोंधे छे. अहीं 'अडसीला'नो 'हठीला' ए अर्थ बराबर बंधबेसतो आवे छे. 'अडी बेसवुं' एटले 'हठ करवी, जीद करवी' ए जाणीतो शब्दप्रयोग छे. *नेमिछं.*नी प्रस्तुत पंक्तिमां प्रास 'अडसीला' शब्द ज मागे, 'अडसाला' नहीं, अने 'सील' (शील) एक सार्थक घटक बने छे, तेथी 'अडसीला'ने भ्रष्ट पाठ मानी शकाय तेम नथी. एटले 'अडसाला' (जो ए शब्दमां भूल न थई होय तो) उपरांत 'अडसीला' शब्द 'हठीला'ना अर्थमां आपणे स्वीकारवानो रहे : "देव, बहु हठीला न थईए."

१६. अणगाल/अगाल

देहलकृत *अभिऊ.*मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

*जेहनि घरि भाजि **अणगाल,** तेहना सामि विना सूनो संसार.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादके 'अणगाल'नो अर्थ 'पुष्कळ' आप्यो छे अने सं.'अनर्गल'मांथी एनी व्युत्पत्ति बतावी छे. 'अनर्गल'मांथी 'अणगाल' न आवी शके एटले 'अणगाल'ना 'पुष्कळ' एवा अर्थने माटे आधार रहेतो नथी. प्राकृत कोश 'अणगाल' शब्द 'दुर्भिक्ष, अकाल'ना अर्थमां नोंधे छे ते ज अहीं होवानो संभव छे. अलबत्त, अहीं 'अकाल' एटले 'खराब समय, माठी दशा' एवो कंईक अर्थ करवो पडे : "जेना घरे खराब समये बधुं नष्ट कर्युं छे, तेनो स्वामी विना सूनो संसार छे. "

मध्यकाळमां 'अगाल' शब्द अकाल, अयोग्य समय, कवखत एवा अर्थोमां वपरायेलो मळे ज छे. जेमके *प्राचीफा.*-अंतर्गत 'विरह देसाउरी फागु'मां

*फागुणि घरि प्रीय मेल्हए, यौवन पहलिइ **अगालि.***

(फागणमां प्रियतमे मने घरमां एकली छोडी दीधी, कवखते, ताजी युवावस्थामां.)

'अगाल'मां 'अ+काल' छे, 'अणगाल'मां 'अन्+काल' छे.

१७. अणाथ, अणाथि, आथ, आथि, आथ्य

*ललिरा.*मां नीचे मुजब पंक्ति आवे छे :

*जु हुइ **अणाथि** घरि, तु जईइं परदेसि.*

संपादकोए 'अणाथि'नो अर्थ 'अनाथ' आप्यो छे, जे खोटो छे. 'अनाथ' परथी तो 'अणाह' आवे, 'थ' पण टके नहीं. मध्यकाळमां 'अणाह' शब्द वपरायेलो मळे ज छे. 'अणाथि' शब्द तो 'अन्+अस्ति' परथी आव्यो छे, अर्थ छे 'कंई न होवुं ते, दारिद्र्य, गरीबी'. उपर्युक्त पंक्तिमां ए अर्थ स्पष्ट छे : जो घरमां दारिद्र्य होय तो परदेशे जईए.

'अणाथ', 'अणाथि' ए शब्दो 'दारिद्र्य, गरीबी के दरिद्र, गरीब' एवा अर्थमां अने 'आथ', 'आथि', 'आथ्य' ए शब्दो 'पूंजी, समृद्धि, धनसंपत्ति' एवा अर्थमां मध्यकाळमां व्यापक रीते प्रयोजायेल मळे छे. जेमके, *दशस्कं-१.*मां –

*घरमां **अणाथ** व्यापी सर्वत्र.*

(घरमां बधे दारिद्र्य व्यापेलुं हतुं.)

*नंदब.*मां –

***अणाथने शी आथ्य** ?*

(दरिद्रने शी संपत्ति ?)

*गुण माटइ **आथ** सहू लहइ.*

(गुणने कारणे सहु समृद्धि पामे छे.)

आ छेल्ला ग्रंथमां 'आथ'नो 'अर्थ, समृद्धि' एम अर्थ आप्यो छे तेमां 'आथ' शब्द 'अर्थ' परथी आव्यो होवानुं मनायुं लागे छे, जे साचुं नथी.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. अणिख

देहलकृत *अभिऊ.*मां सांढणीना वर्णनमां नीचे प्रमाणे उक्ति आवे छे :

अणिख *तणखा कानि.*

संपादके अणिखनो अर्थ 'दोडती वखते आंख बंध करी होय तेवी' एम आपे छे अने एनी व्युत्पत्ति सं. 'अनीक्ष्'मांथी बतावे छे. अर्थ अने व्युत्पत्ति बन्ने शंकास्पद लागे छे. अहीं आंखनुं नहीं पण केवळ काननुं वर्णन होय एवुं लागे छे. 'कानमां अणिख तणखा छे' एवो अन्वय जणाय छे. अरबीमां 'अनीक' शब्द छे जेनो अर्थ छे 'सुंदर, अद्भुत'; राजस्थानीमां 'अणिख' शब्द छे जेनो अर्थ छे 'भयानक, तेजस्वी'. अहीं आवो कोईक अर्थ होवानी संभावना छे : काने सुंदर/तेजस्वी तणखा छे. 'तणखा' एटले शुं ए पण कोयडो छे. संपादके ए शब्दने अग्निना तणखाना अर्थमां लीधो छे, पण ए भाग्ये ज बंध बेसे. काननी ए कोईक लाक्षणिकता होवानो संभव छे. छेवटे आ वर्णन अस्पष्ट ज रहे छे एम कहेवुं पडे.

१९. अणिअ/अणीय आखइ

लावल.-अंतर्गत 'स्थूलिभद्र एकवीसो'मां नीचे मुजब पंक्ति आवे छे :

मझ ***अणीय आंखइ*** *प्रीय पाखइ, विरहि दाझइ देहडउ.*

संपादके 'अणीय आंखइ'नो अर्थ 'अणियाळी आंखे' एवो आप्यो छे, पण ए 'अणीआलि आखइ' एवा पाठांतरथी दोरवाया लागे छे. विरहिणी कोशानी आ उक्ति छे अने विरहभावनी अभिव्यक्तिमां अणियाळी आंखनुं कंई प्रयोजन नथी. खरेखर तो 'आंखइ'ने स्थाने 'आखइ' एटलुं ज पाठांतर लेवा जेवुं हतुं. 'अणीय आखइ' एटले आखी अणीए, अखंडपणे, संपूर्णपणे. उपर्युक्त पंक्तिनो अर्थ आवो कंईक थाय : "प्रियतम विना मारो देह संपूर्णपणे/अखंडपणे विरहथी दाझे छे."

ए नोंधपात्र छे के आ ज ग्रंथमां एक बीजी कृति 'चोवीस जिन स्तवन'मां 'अणिय आखइ' एवो शब्दप्रयोग मळे छे अने संपादके एनो अर्थ 'आखी अणीए, अँणीशुद्ध' एवो आप्यो छे. 'अखंडपणे, पूरेपूरा' एवो अर्थ बराबर बेसे छे :

पुरुष ***अणिअ आखइ,*** *सौख्य ते चंग चाखइ,*

(पुरुष ए सुंदर सुखो अखंडपणे चाखे छे.)

२०. अणीसर

*विक्ररा.*मां युद्धवर्णनमां आ प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

फोडी ***अणीसर*** *जरह जरद सवि तनु तीर जडंती.*

संपादके 'अणीसर'नो अर्थ 'अणीदार' आप्यो छे. ए रीते ए जरह, जरद – जे बख्तरनां नामो छे – तेनुं विशेषण बने. पण बख्तरने अणीदार केवी रीते कही शकाय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

? तीरने कही शकाय पण ए शब्द तो पंक्तिमां घणो दूर छे अने एनी साथे 'अणीसर'नो अन्वय करवो मुश्केल छे. वस्तुतः भगवद्गोमंडल 'अणीसर'नो अर्थ 'आरपार' आपे छे ने एना समर्थनमां नीचेनुं उदाहरण 'बुद्धिप्रकाश'मांथी आपे छे :

*कंठ [कठ] चंदण कोर्यां भमार पड्यां **अणीसर** एह.*

(चंदनकाष्ठ कोर्यां अने एनी आरपार काणां पड्यां.)

*विक्ररा.*मांनी पंक्तिमां आ अर्थ बंधबेसतो थाय छे : जरह जरद ए बख्तरोने आरपार वींधीने तीर शरीर साथे जडाय छे.

गुर्जरा.-अंतर्गत हीराणंदकृत 'विद्याविलास-पवाडउ'मां पण आ शब्द वपरायेलो छे :

*फोडइ पक्खर जरद **अणीसर** तीरइ तीर पडंति.*

(पाखर अने जरदने आरपार वींधे छे अने तीर उपर तीर पडे छे.)

२१. अणूरुं, अणूरति

*नेमिछं.*मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

*हुं सदा **अणूरी**, एक न पूरी तइं पुहुचाडी आस.*

संपादके 'अणूरी'नो अर्थ 'दासी, पत्नी' एवो आप्यो छे, अने एना मूळमां सं 'अनुचरी' शब्द मान्यो छे. पण मध्यकाळमां 'अणूरुं' शब्द व्यापक रीते 'अधूरुं, ओछुं, न्यून' एवा अर्थमां वपरायेलो मळे छे अने भगवद्गोमंडले आ अर्थमां आ शब्द नोंध्यो पण छे. त्यां 'कान्हडदेप्रबंध'मांथी पंक्ति पण उद्धृत थई छे. अन्यत्र आ शब्द वपरायेलो छे. तेनां उदाहरण जुओ :

आरारा.-अंतर्गत पूंजाऋषिकृत 'आरामशोभाचरित्र'मां –

*पीहरनी वांछा करइ, नही **अणूंरुं** तांह.*

(पियरमांथी कंई इच्छे एवुं त्यां कंई ओछुं नथी.)

*विमप्र.*मां –

*किसिउं **अणूंरुं** ताहरइ स्वामि.*

(तारा स्वामीने शुं ओछुं छे ?)

गुर्जरा.-अंतर्गत शालिसूरिकृत 'विराटपर्व'मां –

*एतलइं अति पराभव पूरी, एक दासपण चित्त **अणूरी**.*

(एक तो दासपणाने लीधे जेने मनमां ओछुं आव्युं हतुं/जे असंतुष्ट हती एवी ए हती, तेमां अति अपमानथी ए भराई.)

*गुर्जरा.*ना संपादकोए 'अणूरी'नो अर्थ 'unfulfilled, unsatisfied' (वणपुरायेली इच्छाओवाळी, असंतुष्ट) एवो अर्थ आप्यो छे ए संदर्भमां अत्यंत उचित

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे. ए ज अर्थ *नेमिछं*.नी उपर्युक्त पंक्तिमां बंध बेसे छे : "हुं सदा वणपुरायेली इच्छावाळी रही. तें मारी एक पण आशा पूरी न करी." असंतुष्ट, कर्कशा स्त्रीनो ज आ उद्‌गार छे.

भगवद्‌गोमंडलमां उद्धृत थयेली पद्मनाभकृत 'कान्हडदेप्रबंध'मांनी पंक्ति आ प्रमाणे छे :

*लागुं वली **अणूरुं** मानि, जोतां आवइ मरण निदानि.*

वीरमदेवनुं कपायेलुं मस्तक अल्लाउद्दीननी पुत्री पिरोजा समक्ष आवे छे त्यारे एना रूप पर ए वारी जाय छे. अने पछी आ उद्‌गार करे छे. कान्तिलाल ब. व्यासे पोताना संपादनमां आ पंक्तिनो अर्थ आम कर्यो छे : "(एने जोतां) वळी मनमां (कांईक) जुदो ज (अणूरुं; सर. अणु=अन्यत्, प्रा.गु.का.सं.) भास थाय छे (लागुं) के (जो) तेने (तां) (वीरमदेने) (सर. पाठान्तर – जे तां) खरेखर (निदानि) मरण आप्युं छे (के केम) ! (एटलुं तेज अने ताजगी मुख पर हती !)"

व्यासना अनुवादनी मुश्केलीओ स्पष्ट छे – 'मानि'ने 'मनि' तरीके लेवुं पड्युं छे, 'अणूरुं'ने स्थाने 'अणु'नी कल्पना करवी पडी छे वगेरे. संदर्भमां पंक्ति कंईक अस्पष्ट तो रहे ज छे, छतां 'अणूरुं' शब्द तो एना प्रचलित अर्थमां ज अहीं छे एमां शंका नथी. वीरमदेवे पिरोजानुं मोढुं जोवा इनकार कर्यो हतो ते याद करी पिरोजा अत्यारे, आ उद्‌गार पछी टोणो मारे छे के "वीर पुरुषे जे वचन लीधुं हतुं के कुंवरीनुं मोढुं नहीं जोउं तेनो ते भंग करी रह्या छे. जे सुकुलीन साहसिक पुरुष होय छे ते मरण समये पण पोतानुं मान मूकता नथी." ए जोतां आ पंक्तिनो अर्थ आम होवानो संभव लागे छे : "पण (ए मस्तक) मान परत्वे ऊणुं लाग्युं. ए जोतां मरण नक्की आव्युं छे." आ अर्थ दुराकृष्ट लागे तो "वळी ओछुं आव्युं छे एम माने छे" एटले कंईक अर्थ लेवो जोईए.

'अणूरुं'ना मूळमां सं.'अन्+पूर्' छे. आनुं संज्ञारूप 'अणूरति' (सं.'अन्+पूर्ति') पण समयप्रमोदकृत 'आरामशोभा चोपाई'मां वपरायेलुं मळे छे :

*किसीय **अणूरति** तास.*

(एने शी न्यूनता / खोट छे ?)

२२. अत

षडाबा.मां नीचे प्रमाणेना एकथी वधु प्रश्नोत्तर मळे छे :

"छम्मास उत्कृष्टु तपु रे जीव ! करी सकइ ?"

*"**अत** न सकुं."*

संपादक प्रबोध पंडिते 'अत'ना 'now, here' एवा अर्थो आप्या छे ने आ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द सं.'अत्र' परथी आवेलो मान्यो छे. 'अहीं' अर्थ लईए तोपण एनुं तात्पर्य 'आ बाबतमां' एम छे एवुं समजवुं जोईए. पण 'अत' सं.'अत्र' परथी आवेलो मानवो योग्य छे के केम ते प्रश्न छे. संस्कृतमां 'उत' संदेहवाचक, अनिश्चिततावाचक छे तेना परथी पण 'अत' आवी शके अने ए अर्थ आ संदर्भमां बराबर बंधबेसतो आवे छे : "कदाच न करी शकुं." एम लागे छे के 'कदाच' अर्थ ज लेवो जोईए.

२३. अतिधज

*विक्रा.*मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

अतिधज मांड्इ शत्रुकार.

संपादके 'अतिधज'नो 'पैसादार' एवो अर्थ आप्यो छे. ए 'कोटिध्वज' शब्दथी दोरवाया लागे छे. पण 'शत्रुकार' (=सदाव्रत, अन्नदानशाला) पैसादार केवी रीते होई शके ? 'ध्वज' शब्द उत्तुंगतानुं सूचन करे, कदाच समृद्धिनुं पण. परंतु अहीं 'अतिधज' एटले 'भारे मोटो, भव्य' एवो ज कंईक अर्थ लेवो जोईए.

२४. अतिसंता

*ऋषिरा.*मां नीचे मुजब पंक्तिओ मळे छे :

निज करइ जे तरू रोपीया, पीऊ साथि आवंतां,
*ते तरू दीठा नयणले, नव सा थई **अतिसंता.***

संपादके 'अतिसंता'नो अर्थ 'अत्यंत थाकेल' आप्यो छे ने एनी व्युत्पत्ति सं. 'अतिश्रान्त'मांथी बतावी छे. व्युत्पत्ति तो बराबर छे, पण अर्थ संदर्भमां संगत थतो नथी. जे वृक्षोने पोते रोप्या हता तेने जोतां ऋषिदत्ताने थाक लागे ? के सारुं लागे ? 'अतिसंता' (अतिश्रान्त) एटले 'विश्रांत, अत्यंत आराम पामेल' एवो अर्थ ज लेवो जोईए.

२५. अधरास, ओलववुं, ऊलववुं

नरसिंहना एक पदमां नीचे मुजबनी पंक्ति मळे छे :

*कालिंदीने कांठडे वाले **ओलवियो अधरास** रे.*

*नरका.*ना संपादके 'अधरस'ना बे अर्थो आप्या छे – (१) नीचेनो भाग (सं. अधःअंश) अने (२) अधरनो भाग; अने 'ओलवियो'नो 'पचावी पाड्यो, संताड्यो' एवो अर्थ आप्यो छे. *नरप.*ना संपादके 'अधरास'नो 'रासलीलामां' एवो अर्थ आप्यो छे अने एमां सं.'अधिरास' शब्द होवानुं मान्युं छे. तथा 'ओलवियो'नो 'कह्युं' एवो अर्थ आपी एनी व्युत्पत्ति सं.'उद्लप्'मांथी बतावी छे. देखीती रीते ज 'ओलवियो अधरास' ए वर्णन आ बन्ने अर्थघटनोमां अस्पष्ट ज रहे छे. "नीचेनो भाग/अधरनो भाग पचावी पाड्यो/संताड्यो' ए अर्थ घणो कढंगो छे अने 'रासलीलामां कह्युं' ए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थने प्रस्तुत वर्णनमां केवी रीते स्थान आपवुं ते कोयडो रहे छे.

वस्तुतः आ कालिंदीने कांठडे कृष्णे गोपीनी करेली छेडछाडनुं, शृंगारक्रीडानुं वर्णन छे. तेथी 'अधरास' ए 'अधरासव'ने स्थाने आवेलो शब्द होवानो संभव छे एवुं डॉ. भायाणीए मने सूचन कर्युं ते वाजबी लागे छे. 'ओलववुं' शब्द मध्यकाळमां 'छुपावुं, संताडवुं' एवा अर्थमां जोवा मळे छे ते उपरांत 'ओळववुं' शब्द 'पचावी पाडवुं, लई लेवुं, चोरी लेवुं' एवा अर्थमां अत्यारे पण प्रचलित छे. सं.'अपलप्' एटले 'छुपाववुं', एमांथी 'चोरीछूपीथी लई लेवुं' एवो अर्थ आवी शके. आ रीते 'ओलवियो अधरास'नो अर्थ आम थई शके : अधरासव एटले के अधररस चोरी लीधो / बळात्कारे लीधो / झूंटवी लीधो.

'ऊलववुं'/'ओलववुं' शब्द वधारे तो 'छुपाववुं, संताडवुं'ना अर्थमां मध्यकाळमां वपरायो छे. जेमके, *अंबरा.*मां –

(१) सइयाणी आगलि तूं पेट सिउ ***उलवइ.***

(२) अलूक परइ ***ऊलवइ*** *आप.*

संपादके 'संताडे, छुपावे' एवो अर्थ आप्यो छे ते बराबर बेसी जाय छे : (१) सुयाणी आगळ तुं पेट शुं छुपावे छे ? (२) घूवडनी पेटे पोतानी जातने संताडे छे.

*सिंहा(म).*मां –

देवदत्त मनि सुप्रमाण, मनशुधिइ करइ वखाण.

कइ कारिमु परीक्षा भणी, राजकुयर ***उलवीउ*** *मति घणी.*

संपादके 'छुपाववुं, संताडवुं' एवो अर्थ आप्यो छे ते योग्य छे : ''देवदत्ते मनमां विचार्युं के राजा खरा मनथी वखाण करे छे के खोटेखोटा ? एनी परीक्षा करवा एणे घणी बुद्धिथी राजकुंवरने संताडी दीधो.''

*वाग्भवा.*मां –

जिहां सादृश्य शरखाइतु अपह्नव ***उलविवापूर्वक*** *इसिउं बोलीइ.*

संपादक भोगीलाल सांडेसराए 'अपह्नुतिपूर्वक, ढांकवा साथे' एवो अर्थ आप्यो छे ते मूळमां ज छे एम कहेवाय : ''ज्यां सादृश्यने कारणे अपह्नवपूर्वक एटले ढांकीने आम कहेवामां आवे.''

गुर्जरा.-अंतर्गत शालिसूरिकृत 'विराटपर्व'मां –

मरण नइं भइ गिउ मझ भोलवी,

किस्यूं किह्यां उरतु हिव ***ओलवी.***

संपादकोए 'assuage, cool down' (शांत करवुं, ठारवुं) एवो अर्थ आप्यो छे पण आ भ्रष्ट पाठनुं परिणाम छे. संपादकोने पाठ 'उर' मळ्यो छे तेनुं तेमणे 'उरतु'

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्युं छे.

*विराप.*मां पाठ आ प्रमाणे छे :

किसउं क्यांह रिह्यउ अह ***ओलवी.***

संपादकोए 'छुपावी' अर्थ आप्यो छे ते बराबर बेसे छे : "हवे शुं क्यांक पोतानी जातने छुपावीने रह्यो छे ?"

मध्यकाळमां आ शब्द 'पचावी पाडवुं, चोरीथी लई लेवुं' एवा अर्थमां पण अन्यत्र वपरायो छे ज. जेमके,

*नलरा.*मां –

कहिनी वस्तु न जाय ***उलवी.***

संपादके 'खोटी रीते पचावी पाडवुं' एवो अर्थ आप्यो छे ते यथायोग्य छे : "(नळना राज्यमां) कोईनी वस्तु ओळवी/पचावी पाडी शकाती नथी."

आ शब्द 'लोप करवो, द्रोह करवो' एवी जरा जुदी अर्थछायामां पण वपरायो छे ए खास नोंधपात्र छे. जेमके *आनंस्त.*मां *शासनमार्गनइ* ***उलवइ*** एम उक्ति छे त्यां शासनमार्गनो लोप / द्रोह करवानो अर्थ छे. संपादके 'लोप करे' एवो अर्थ आप्यो ज छे. *उपबा.*मां साधुमार्गने तथा गुरुने ओळववानी वात छे त्यां पण ए ज अर्थ छे, अने संपादके ए अर्थ लीधो छे. *हरिफा.*मां *गिउ हरि* ***उलवी*** एवी उक्ति आवे छे तेमां संपादके आपेलो 'संताई' ए अर्थ शंकास्पद लागे छे, केमके मध्यकाळमां 'ऊलववुं' / 'ओलववुं' एटले 'संतावुं' नहीं, पण 'संताडवुं' एवो अर्थ व्यापकपणे छे. अहीं द्रोह करवो एटलेके छेतरवुं एवो अर्थ होवा संभव छे : "हरि अमारो द्रोह करी / अमने छेतरीने चाल्यो गयो."

[एतद्, एप्रिल–जून, १९९४]

□

२६. अनिवड, निवड

*आरारा.*मां 'अनिवड' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो मळे छे :

मत घउ कोई पासे ***अनिवड*** *आईवा रे.*

संपादके सं. 'अनिवर्त'मांथी व्युत्पत्ति सूचवी 'अनिवड'नो अर्थ 'साव ? एकदम ?' एम नोंध्यो छे. देखीती रीते ज, संदर्भमां कंईक बेसी शके तेवा अर्थनो तर्क करवामां आव्यो छे. मूळ तरीके दर्शावेल सं.'अनिवर्त' आवो अर्थ भाग्ये ज आपी शके.

*जिनरा.*मां 'अनिवड' शब्द अनेक वार वपरायो मळे छे. जेमके,

(१) ***अनिवड*** *थातां वार न लागइ जे सगा.*

(२) न कहइ फेरि वचन जउ किसा, तइं ***अनिवड*** *जाणी तो दिसा,*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीसउ वड वयरागि जिसा, ए वइराग कहउ किण मिसा.

*(३) पलकमांहि **अनिवड** हुअउ रे, तिण तुझनइ साबासि रे.*

(४) सीख करै वाटै मिल्या रे, वीछडवानी वार,

*ते तो अह्म सुं सीख न का करी रे, **अनिवड** जेम विचार.*

संपादके 'अनिवड' शब्द शब्दकोशमां नोंध्यो छे, पण एनो अर्थ आप्यो नथी. *जिनरा.*मां 'निवड' शब्द पण वपरायो छे :

*(१) वात कहइ जे पापनी, तिण साथइ हो करुं **निवड** सनेह.*

*(२) बगसि गुनह ए बापजी, हिव मो सुं हो धरि **निवड** सनेह.*

*(३) जेह सुं **निवड** सनेह ते तउ वीसार्या नवि वीसरइ.*

एम लागे छे के 'निवड'ना प्रयोगो ज चावीरूप बने तेवा छे. बधे 'निवड' 'स्नेह'नुं विशेषण छे. त्रीजुं दृष्टांत 'गाढ, ऊंडो' एवो अर्थ स्पष्ट रीते आपे छे : ''जेना प्रत्ये गाढ/ऊंडो स्नेह होय ते विसार्या वीसरता नथी.'' पहेलां बे दृष्टांतोमां पण ए अर्थ निर्विघ्ने लई शकाय छे. ए बन्ने पंक्तिओ प्रभुप्रार्थनाना पदमांथी छे. पहेली पंक्तिमां पोते पाप साथे ऊंडो स्नेह कर्यो हतो तेनो उल्लेख छे, बीजी पंक्तिमां तीर्थंकरदेवनो ऊंडो स्नेह प्रार्थ्यो छे.

'निवड' शब्द 'निकट'मांथी आव्यो होवानो तर्क थई शके. प्राकृत कोश 'णिअड (निकट)' शब्द 'पासे, पासेनुं' एवा अर्थमां नोंधे छे. जो आ बराबर होय तो 'निवड' एटले 'निकटनो, आत्मीय, गाढ' एवो अर्थ लेवानुं खोटुं न कहेवाय. अने 'अनिवड'नो 'दूरनुं, अनात्मीय' एवो अर्थ थाय.

ए नोंधपात्र छे के 'निवड'नी पेठे 'अनिवड' स्नेहना विशेषण तरीके क्यांय वपरायेलो नथी. ए एकलो ज वपरायो छे. एथी एमां 'अनात्मीय' उपरांत 'पराया' 'निःस्नेही' एवा अर्थने पण अवकाश जणाय छे. जेमके,

(१) जे सगा छे तेमने अनात्मीय / पराया थतां वार लागती नथी.

(३) पलकमां अनात्मीय / परायो / निःस्नेही थई गयो छे ते माटे तने शाबाशी घटे छे. (मातानुं दीक्षा लेवा तैयार थयेल पुत्र प्रत्येनुं आ व्यंगवचन छे.)

(४) जुदा थवाने प्रसंगे रस्ते मळी गयेला लोको पण विदाय मागे छे / रजा मागे छे तो अमारी केम विदाय / रजा न मागी अने आम पराया / निःस्नेहनी जेम विचार कर्यो ?

बीजा उदाहरणना अन्वयो बराबर स्पष्ट थता नथी, पण एमां 'अनिवड'नो आवो ज अर्थ लेवानो रहे.

[डॉ. भायाणीए, पछी, 'निवड'नी व्युत्पत्ति सं. 'निबिड'मांथी दर्शावी. पण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थघटन तो एमनुं एम ज रहे छे.]

२७. अनुभाव, अनु भाव

*गुर्जरा.*मां 'अनुभाव' शब्द आ प्रमाणे वपरायो छे :

*वाजइ तूर अनाहत, नाह तणइ **अनुभावि**,*
आणइ एक अनेकप, एक पलाणइं वाहु.

संपादकोए 'अनुभाव'नो 'by the dignity, by the authority' (गौरवथी, अधिकारथी/सत्ताथी) एवो अर्थ आप्यो छे. प्रसंग नेमिनाथना वरघोडानो छे. एमां 'अधिकार के सत्ता'नो अर्थ प्रस्तुत जणातो नथी, केमके नेमिनाथ राजवी नथी, राजकुमार छे. एना करतां 'गौरव, महिमा' एवो अर्थ वधु प्रस्तुत बने तेवो छे. त्यां पण 'गौरवथी' नहीं पण 'गौरवमां, गौरव अर्थे' एम अन्वय वधु उचित लागे छे : "नाथना गौरव के महिमाने अर्थे शरणाइ वागे छे" वगेरे.

*आनंस्त.*मां पण 'अनुभाव' शब्द मळे छे :

*भवोभवथी अभिनव ए द्रव्यथी **अनुभावथी** ते कहीइ छइ.*

संपादके 'अनुभाव'नो 'कर्मनो विपाक' एवो अर्थ आप्यो छे, पण अहीं पाठनुं वाचन ज दोषयुक्त होय एवुं लागे छे. स्तवननी जे पंक्तिनी समजूती तरीके आ वाक्य आवे छे ते पंक्ति आ प्रमाणे छे :

भविभवि रे द्रव्य भावथी भाखीइ रे.

जोई शकाय छे के मूळमां 'अनुभाव' नथी, 'द्रव्य' अने 'भाव' छे, एटले विवरणना 'अनुभाव' शब्दने 'अनु भाव' तरीके वांचवो जोईए. 'अनु' एटले 'अने'. 'अनु' आ अर्थमां मध्यकालीन साहित्यमां वारंवार वपरायो छे. जेमके, *गुर्जरा.*मां –

- *पणमीउ सामीउ नेमिनाहु **अनु** अंबिकि माडी*
- *सवे सलक्खण रूयवंत **अनु** कंचणवन्नि*
- *सीसि चमर बंबाल **अनु** कंठि कुसुमह माल.*

२८. अप्रमाण

*गुर्जरा.*मां आ शब्द आ रीते वपरायेलो मळे छे :

*तिमि खिण मेल्हिउं वणचरि बाणुं, ऊडिउं गयणि हूउं **अप्रमाणु**.*

संपादकोए 'अप्रमाण'नो अर्थ 'unknowable, invisible' (अज्ञेय, अदृश्य) एवो आप्यो छे. बाण आकाशमां गयुं तेथी अदृश्य थई गयुं एम तेमणे घटाव्युं लागे छे. पण 'अप्रमाण'नो आवो अर्थ लेवा माटे कोई आधार जणातो नथी. 'अप्रमाण' एटले 'असिद्ध', अहीं 'निष्फळ, नकामुं' : "ते क्षणे वनचरे बाण छोड्युं. ते आकाशमां गयुं ने तेथी निष्फळ नीवड्युं."

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*आरारा.*मां पण आ शब्द वपरायेलो मळे छे :

*वहिली नावि तु तुं जाणि, मइ तुझ दीठउ **अप्रमाण.***

संपादके 'अप्रमाण'नो 'असिद्ध' एवो अर्थ आप्यो छे. अहीं 'असिद्ध' एटले 'अशक्य, असंभवित' : "वहेली न आवे तो तने हुं जोई शकुं ते तुं अशक्य/असंभवित जाणजे (एटले के हुं-तुं मळी शकीशुं नहीं)."

२९. अबाह

*गुर्जरा.*मां 'अबाह' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो छे :

*तापिइं पीडिउ विलवइ **अबाह.***

संपादकोए 'अबाह'ना मूळमां 'बाहु' शब्द मानी एनो अर्थ 'without hands' (हाथ विना) एवो आप्यो छे. आ अर्थ अहीं असंगत छे ते सहेलाईथी समजाय एवुं छे. रडवानुं वळी बाहु विनानुं केवुं ? ए स्पष्ट छे के 'अबाध' परथी 'अबाह' आवेलो छे ने एनो अर्थ थाय 'अंतराय विना, अत्यंत, खूब' : "तापथी पीडवामां आवेलो ते खूब विलपे छे."

ए नवाईनी वात छे के अन्यत्र 'अबाहु' शब्द वपरायेलो छे त्यां संपादकोए एने 'अबाध'मांथी व्युत्पन्न करी एनो 'without obstacle, freely' (अन्तराय विना, विघ्न विना, मुक्तपणे) एवो अर्थ आप्यो छे. निर्दिष्ट प्रयोगो आ प्रमाणे छे :

*(१) पांचि पंचाले लिउ सनाहु, आविउ घडूउ कूंयरु **अबाहु.***

*(२) धाइं धसइं ते ऊधसइं, विलसइं हसइं **अबाहु.***

बीजा उदाहरणमां 'मुक्तपणे' अर्थ चाली शके तेम छे पण 'अन्तराय विना' एटले 'खूब' ए अर्थ पण करी शकाय : "मुक्तपणे/खूब हसे छे." पण पहेला उदाहरणमां ए अर्थ योग्य रीते बंध बेसशे नहीं. त्यां 'अबाहु' कुंवर घटोत्कचनुं विशेषण छे. एटले 'जेने कशो अंतराय नडतो नथी एवो वीरपुरुष, अप्रतिरोध्य' एवो कंईक अर्थ लेवो जोईए एम लागे छे : "अप्रतिरोध्य घटोत्कच कुंवर आव्यो."

३०. अभोखउ, आभोखउ, अभोखण, अभोखणुं, अंबोषण, अबोखण

*विक्रच.*मां 'अभोखु' शब्द आम वपरायेलो छे :

*खापरउ जाम पहुतु बारि, दीयउ **अभोखु** पाणीधारि.*

संपादके 'अभोखु'नो 'अपोषण' अर्थ आप्यो छे. 'अपोषण' (सं.आपोशान) एटले जमती वखते, आरंभे के अंते आचमन लेवुं ते. अहीं ए अर्थ केवी रीते संगत बने ? भीजन प्रसंग तो अहीं छे ज नहीं. खापरो बारणे आवे छे त्यारे तेना करवामां आवता सत्कारनुं अहीं वर्णन छे, जेमां पाणीनी धाराथी 'अभोखु' आपवामां आव्युं एम कहेवामां आव्युं छे. ए वर्णन आचमन साथे बंध बेसे नहीं.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए नोंधपात्र छे के *उक्तिर.* 'अभोखउ' (तेमज 'अभोखणुं') शब्दनो अर्थ 'अभ्युक्षणम्' आपे छे, जेनो अर्थ थाय छे 'सिंचन, छंटकाव'. वणी अन्य कृतिओमां 'अभोखण' शब्द वपरायेलो मळे छे त्यां बधे सत्कारनो प्रसंगसंदर्भ छे. सत्कारमां पाणीथी पण धोवानी प्रणालिका जूना समयमां हती. तेथी अहीं 'अभोखुं' एटले 'सत्कार रूपे पाणीनुं सिंचन' एवो अर्थ ज लेवो जोईए.

अन्य प्रयोगो आ प्रमाणे छे ;

*विमप्र.*मां –

सोवन करवी दीइ ***अभोखण,*** *साजण हरखि भरिया.*

संपादके 'आवकार' अर्थ आप्यो छे, पण "सुवर्णनी झारीथी पाणी सींचे छे" एवो अर्थ स्पष्ट छे.

*लावल.*मां –

मनि विण ***अभोखण*** *दि घणां, वीरमती मेल्हइ बेसणां.*

संपादके 'अभोखण'नुं मूळ सं.'अम्भोष्ण' मानी 'गरम पाणी' एवो अर्थ कर्यो छे. पण सत्कार रूपे सींचवामां आवता पाणीनो अर्थ स्पष्ट छे. बेसणां आपवानुं पछी आवे छे ते पण सूचक छे.

*आरारा.*मां –

संपुटि मिल्या बारि ए, ***आभोखइ*** *आपउ वारि ए.*

लग्न वेळाए वरने पोंखवामां आवे छे ते प्रसंगनो अहीं संदर्भ छे एटले संपादके 'अभोखइ'नो लीधेलो 'सत्कार रूपे पाणीनुं सिंचन करवामां' ए अर्थ यथायोग्य छे.

*अभिऊ.*मां 'अंबोषण' शब्द मळे छे :

राणी सुदर्शना दीधलां भृंगार रे, ***अंबोषण*** *सहूनि मानिं हवा.*

संपादके 'अंबोषण'नो 'कोगळा' अर्थ आप्यो छे, जे भाग्ये ज प्रस्तुत गणाय. प्रसंग महेमानोना स्वागतनो छे एटले 'अंबोषण' ते 'अभोखण'ने स्थाने आवेलो होय एम लागे छे. "बधांने मान रूपे पाणीनुं सिंचन करवामां आव्युं" एवो अर्थ लई शकाय छे.

'अबोखण', अलबत्त, *सिंहा(शा).*मां 'अपोशण' एटले 'भोजन वेळाना आचमन'ना अर्थमां वपरायेलो मळे छे :

अबोट ***अबोखण*** *अति घणां, को भिक्षावश थाय.*

ब्राह्मणना व्यवहारोना वर्णनमां आ आवे छे तेथी अबोट करवा, आचमन लेवुं, भिक्षा मागवी वगेरेने ब्राह्मणना व्यवहारो तरीके समजी शकाय छे. आथी संपादके आपेलो 'अपोशण' अर्थ योग्य छे. पण 'अभिवन-ऊझणुं'मां 'अंबोषण' ए 'अभोखण'नो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रष्ट पाठ होवानी शक्यता ज बळवान छे.

३१. अमलीमाण, अमलीमान

*ऐतिका.*मां 'अमलीमान' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो मळे छे :

*जग मांहे **अमलीमान** सूरि ज तेज समान.*

संपादके 'निर्मल मानवाला' एवो अर्थ आप्यो छे ते भूलभरेलो छे. 'अमली' ए शब्द सं.'अमर्दित' परथी आवेलो छे. 'अमलीमान' एटले 'जेनुं मान अमार्दित, अखंडित रह्युं छे एवो.

*जिनरा.*मां पंक्ति छे :

*बंधव **अमलीमाण.***

'अमलीमाण'नो अर्थ 'अगंजित' (अपराजित) आप्यो छे ते चाली शके. मान मर्दित न थवुं एटले अपराजित रहेवुं.

३२. अमाइ, अमामो, अमाणुं, अमान, अमानी

*तेरका.*मां 'अमाइ' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो छे :

*लहिय छिद्दं सवि दुख **अमाइ.***

संपादके शब्दकोशमां 'अमा-' सामे प्रश्नार्थ मूक्यो छे, परंतु एमणे आ पंक्तिनो अनुवाद "लाग मळतां सौ दु:ख आवी पडे छे" एवो आप्यो छे. 'अमाइ'नो 'आवी पडे छे' एवो अर्थ संदर्भथी बेसाडेलो छे ए स्पष्ट छे.

'माइ' एटले 'माय, समाय'. 'अमाइ' एनो विरोधी शब्द होवानुं समजाय छे. 'अमाइ' एटले 'न माय' एटलेके 'ऊभराय'. 'छिद्र/लाग मळतां सौ दु:ख ऊभराय छे' एम ए अर्थ बराबर बंध बेसी जाय छे. ए नोंधवुं जोईए के राजस्थानी कोश 'अमाइ' शब्दनो 'अप्रमाण, बहुत, अधिक' एवो अर्थ आपे छे. त्यां 'अमाइ' क्रियापद नहीं पण विशेषण छे.

'अमा-' परथी बनेलो बीजो एक विशेषणशब्द छे 'अमामो'. 'जिनराज-कृति-कुसुमांजलि'मां ए वपरायेलो छे :

*(१) एकण दूध **अमामो** दीयो, घृतनो बीडो बीजी लीयो.*

*(२) चरणकरण धन माल, **अमामो** लूटिसी.*

पहेली पंक्तिने संदर्भे संपादके 'अमूल्य' अर्थ आप्यो छे तेमां कंईक भ्रान्ति थयेली जणाय छे. 'अमामो' शब्दना मूळमां 'अमा-' होवानुं स्पष्ट छे, आथी एनो अर्थ 'न माय तेटलुं, अमाप, पुष्कळ' एम ज लेवो जोईए. दूधने अमूल्य कहेवामां कंई स्वारस्य नथी, घणुं दूध आप्युं एम ज अभिप्रेत होई शके. बीजी पंक्तिमां पण 'पुष्कळ'नो अर्थ बराबर बेसी जाय छे. राजस्थानी कोश 'अमाव' शब्द 'खूब, बेहद'ना अर्थमां नोंधे छे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते 'अमाप' साथे तेम 'अमामो' साथे संबद्ध गणाय.

भगवद्गोमंडल तथा बृहद् गुजराती शब्दकोश 'अमामो' शब्दनो 'अमूल्य' अर्थ आपे छे ते पण भ्रान्त गणवुं जोईए. भगवद्गोमंडले 'आनंदकाव्यमहौदधि'मांथी *पण साटुं बाझे नहीं, कहे* ***अमामो*** माल ते उदाहरण आप्युं छे तेमां पहेली दृष्टिए 'अमूल्य' अर्थ बेसी जाय, पण समग्र प्रयोगपरंपरा जोतां 'अमाप, पुष्कळ' ए अर्थ ज लेवो जोईए. प्रसंगसंदर्भ मळे तो आ वात वधारे सारी रीते स्थापित करी शकाय.

*अखाका.*मां 'अमाणुं', 'अमान', 'अमानी' मळे छे ते पण 'अमा-' साथे संकळायेला ज मानवा जोईए :

भाईओ ! भव संताप, भात देखीने भूलवुं,
अक्षर ***अमाणुं*** *आप, आठे पहोर अखो कहे.*

संपादके 'अमाणुं'ना मूळमां अरबी 'अमान' शब्द मानी 'रक्षण' एवो अर्थ आप्यो छे तेने संदर्भमां केवी रीते बेसाडवो ते कोयडो ज छे. 'अमाणुं' एटले 'मान – माप वगरनुं, अनंत' एवो अर्थ लेतां वाक्यार्थ बराबर बेसी जाय छे : ''आत्मतत्त्व अक्षर अने अनंत छे.''

ए अनुभव अद्भुत ***अमान.***

संपादके 'अमान' शब्दना बे अर्थ आप्या छे : सं.'अ-मान' एटले 'अहंभाव विनानो' अने अरबी 'अमान' एटले 'निर्भयतानो, अमरत्वनो'. 'मान' शब्द संस्कृतमां 'माप'ना अर्थमां पण छे ए संपादकने स्मरणमां आव्युं नथी तेथी ज आवा अर्थोमां खेंचाई जवानुं बन्युं छे. अहीं पण पंक्तिनो अर्थ स्पष्ट छे : ''ए अनुभव अद्भुत अने अमाप, अनंत छे.''

पिंड-ब्रह्मांड ते काच ज स्थानी, तेहेनुं पोषण वस्तु सदा ***अमानी.***

संपादके 'अमानी'नो 'मानी शकाय नहीं तेवो' एवो अर्थ आप्यो छे त्यां वळी, एमां 'मान' शब्द रहेलो होवानुं वीसराई जवाथी त्रीजा ज भळता अर्थ तरफ खेंचाई जवानुं बन्युं छे. अहीं 'वस्तु' शब्द स्त्रीलिंगनो होवाथी 'अमान'नुं 'अमानी' थयुं छे. 'आप' अमान, पण 'वस्तु' अमानी. अर्थ तो एक ज छे. वस्तु एटले ब्रह्मने 'अमाप, अनंत' कहेवामां आवेल छे.

[अनुसंधान–२]

□

३३. अनिआउ, अन्या, अंन्ना, अन्नैयो, अन्याई

'अन्याय' शब्द आजे आपणे बीजाओ प्रत्येना अणछाजता, हानिकर्ता ने जुलमी वर्तन माटे वापरीए छीए. मध्यकाळमां आ शब्द 'दोष', 'वांक', 'गुनो', 'अटकचाळुं', 'तोफान' एवा अर्थोमां तथा 'अन्यायी' शब्द 'अटकचाळो' 'तोफानी' एवा अर्थोमां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वपरातो देखाय छे. जेमके,

*उषाह.*मां –

***अनिआउ** अह्मे सवि कीधा, सांसहि देव मुरारि.*

संपादके 'अनिआउ'नो 'अन्याय' एवो अर्थ आप्यो छे. पण आ बाणासुरना मंत्री कुंभ अने महादेवनी उक्ति छे. कृष्णने शरणे आवतां तेओ आम बोले छे. कुंभ महेता अने महादेवे वळी कया अन्याय कर्या हता ? कृष्णनी सामे थवानो दोष, गुनो एमणे कर्यो ए ज. एथी आ पंक्तिनो अर्थ आम ज करवो योग्य छे : "अमे घणा वांकगुना कर्या छे मुरारि देव, ए आप सही लो."

*नलरा.*मां –

कूबर दुष्टमां मूलगु, सेवइ व्यसन सात रे,
***अन्या** मारगि ते हींडइ, नवि जाणइ पुण्य वात रे.*

संपादके 'अन्या'नो 'अन्याय' एटलो ज अर्थ आप्यो छे. पण अहीं पुण्यमार्गनी सामे अन्यायमार्ग मुकायेलो छे, तेथी अन्यायमार्ग एटले दुष्कर्मनो, पापनो मार्ग एवो अर्थ वधारे उचित छे : "कुबेर दुष्टोनो अग्रणी छे. ए सात व्यसनो सेवे छे ने दुष्कर्म, पापकर्मने मार्गे चाले छे. पुण्यनी वात ए समजतो नथी."

*चतुचा.*मां –

*एहवो **अन्या** मनमां धरी, वढशो वहालाने साथ.*

गोपी साथे क्रीडा करतां कृष्णथी राधानुं नाम लेवाई गयुं ए संदर्भमां बोलायेलुं आ वाक्य छे. संपादके योग्य रीते ज 'अन्या'नो 'दोष, वांक' एवो अर्थ आप्यो छे : "वहालानो ए दोष मनमां राखीने एनी साथे झघडो करशो ?"

प्रेमाका.-अंतर्गत 'दशमस्कंध'मां –

*अमो आचर्या **अन्या** कैं लक्ष.*

संपादकोए 'अन्या'नो 'अन्याय, दोष' एवो अर्थ आप्यो छे, परंतु वृक्षनो अवतार पामेला कुबेरना बे पुत्रो नलकुबेर अने मणिग्रीव मद्यपान, विषयलंपटता वगेरे पोतानां निंद्य कर्मोनो स्वीकार करतां आ वाक्य बोले छे तेथी 'अन्या'नो 'दोष, दुष्कर्म' एवो अर्थ ज योग्य गणाय.

ए ज कृतिमां –

स्वभाव छे स्त्री तणो रे, नग्न सर्वथा नाह्य,
*एवुं जाणी अमे पेठा जळमां, ए थई आव्यो **अन्याय.***

संपादके अहीं 'दोष' अर्थ आप्यो छे ए यथायोग्य छे. गोपीओ पोते नदीमां नग्न थईने नाही एने पोतानो दोष गणावे छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेमानंदकृत 'नळाख्यान'मां पण 'अन्या' शब्द वपरायेलो छे :

*नळ छे कुंवारो, नथी कन्या, छे ब्रह्मानो मोटो **अन्या.***

नळने माटे कन्या नथी सर्जी ए ब्रह्मा एटलेके विधातानो मोटो दोष छे एम अहीं अभिप्रेत छे.

*कस्तुवा.*मां –

*लोभे लक्षण जाय, **अन्या** अति अधर्मे.*

संपादके 'अन्या'नो 'अन्याय' एवो अर्थ आप्यो छे, पण अहीं लोभनां परिणामो वर्णव्यां छे, तेथी 'दोष'नो अर्थ लेवो ज वाजबी छे : "लोभ करवाथी सारां लक्षण नष्ट थाय छे, अधर्मनो दोष थई जाय छे."

*वेताप.*मां –

*पारवती बोल्या मावडी, 'अरे शीव, **अन्या** आवडी,*
जीव ए सहु कोना जाय छे, ए पाप आपरणें थाय छे.'

संपादके 'अन्याय' अर्थ आप्यो छे ते देखीती रीते चाले, पण पांच पुरुषो मरवा तैयार थया छे ते संदर्भमां आ वाक्य बोलायुं छे तेथी 'खोटुं कर्म' एवो अर्थ ज वधारे उचित गणाय : "अरे शिव, आ केटलुं खोटुं थाय छे ! आ सहुना जीव जाय छे एनुं पाप आपणने लागे छे."

*चंद्रवा.*मां –

*जुए सौ को जगत, कोये केहे नहि **अंज्ञा.***

निशा विशेनी समस्यामां आ पंक्ति आवे छे तेथी संपादके आपेलो अर्थ 'दोष, वांक, खोडखांपण' यथायोग्य छे : "आखुं जगत एने जुए छे अने कोई एमां कशी खोडखांपण होवानुं कहेतुं नथी."

एमां ज –

*कीधो पितानो काळ, एह पण मोटो **अन्या.***

छास विशेनी आ समस्या छे तेथी संपादके आपेलो 'दोष' ए अर्थ बराबर छे : "एणे पोताना पितानी हत्या करी छे, ए एनो मोटो दोष / मोटुं दुष्कृत्य छे."

*नरका.*मां –

*ओ पेलो ओशियाळो आवे, **अन्नैयो** अपार.*

अहीं 'अन्नैयो' ए 'अन्यायी'ने स्थाने छे. संपादके एना 'वांकाबोलो, अणचियो' एवा अर्थो आप्या छे, एमांथी 'वांकाबोलो' ए अर्थ माटे कोई आधार जणातो नथी. नटखट कृष्णने अनुलक्षीने आ उद्‌गार छे एटले 'अणचियो' अर्थ चाले, पण वधारे योग्य अर्थ 'अटकचाळो, तोफानी, मस्तीखोर' ए गणाय.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*नलाख्या.*मां –

*राजाइ सा माटि मेहेली, एहेवु नही **अन्याई.***

अहीं 'अन्याई' ए 'अन्यायी'ने स्थाने छे. संपादके 'अन्याय करनार' एवो एनो अर्थ आप्यो छे ते चाले तेम छे. 'खोटुं करनार' पण चाली शके : "राजाए शा माटे तने तजी ? ए एवो अन्याय करे तेवो, खोटुं करे तेवो नथी."

३४. अरज

'अरज' शब्द आपणे 'विनंती, प्रार्थना' एवा अर्थमां वापरीए छीए. *मदमो.*मां एनो प्रयोग कंईक जुदा अर्थमां होय एवुं जणाय छे :

*पापपुन्यनी ए शी **अरज**, आपणे तो विद्यानी गरज.*

मोहनाने पंडित पासे भणाववा मूकती वखते पंडित कोढियो छे, केवांकेवां पाप करवाथी माणस कोढियो थाय अने एनुं मों जोवाथी केवुं पाप लागे ए बधुं राजा मोहनाने समजावे छे त्यारे मोहना आ वाक्य बोले छे. देखीती रीते ज अहीं 'अरज'नो 'प्रार्थना, विनंती' ए अर्थ बंध न बेसे. संपादके 'फरियाद' एवो अर्थ आप्यो छे एनो कशो आधार जणातो नथी, ते उपरांत संदर्भमां ए अर्थ पण भाग्ये ज संतोषकारक गणाय. वस्तुतः अरबी 'अर्ज' शब्दनो 'प्रार्थना' उपरांत 'निवेदन, रजूआत, दरखास्त' एवो अर्थ पण छे अने एवा ज कोईक अर्थमां ए शब्द अहीं प्रयोजायेलो जणाय छे : "पापपुण्यनी आ शी रजूआत ? (पापपुण्यनी आवी वात शा माटे कहो छो ?) आपणे तो विद्या साथे ज काम छे."

३५. अलगुं, अलगेरी

'अळगुं' शब्दने आजे आपणे बहुधा 'जुदुं'ना अर्थमां वापरीए छीए. पण एनो एक अर्थ 'वेगळुं, दूर, आघुं' पण छे अने मध्यकाळमां 'अळगुं' शब्द सामान्य रीते ए अर्थमां ज वपरायेलो जोवा मळे छे. जेमके, *आरारा.*मां –

वाडी मांही दीठउ कूउ....

*जोवा लागी **अलगी** थाई...*

(वाडीमां कूवो जोयो. आघी जईने एमां जोवा लागी.)

*राइ अणावइ **अलगी** गई, कन्या आवइ हरखित थई.*

(दूर गयेली ए कन्याने राजा बोलावे छे. ए हर्षित थईने आवे छे.)

***अलगांथी** पाणी रे आणतां, मत तुझ विससंका होइ रे.*

(दूरथी पाणी लावीने तने विषनी शंका थाय एवुं करवुं न हतुं.)

संपादके पण 'अलगुं'नो 'दूर, आघुं' एवो अर्थ ज आप्यो छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*नेमिछं.*मां –

***अलगी** नांखइ सोवनत्रोटी.*

(सोनानी त्रोटी दूर फेंकी दे छे.)

*जइ मझ सरिखी नारि थूक जिम **अलगी** लांखइ.*

(मारा जेवी स्त्रीओने थूंकनी जेम वेगळी करी नाखे छे / तजी दे छे.)

संपादके 'अळगी, जुदी, दूर' एम अर्थो नोंध्या छे तेमां 'जुदी'नी जरूर नथी. 'वेगळुं, दूर' ए अर्थ स्पष्ट ज छे.

*कादं(शा).*मां –

*रा आगली महेली ग्यु **अलगु** अंत्यज एहवुं भाखी.*

((पोपटने) राजानी पासे मूकी, आवुं कहीने अंत्यज आघो जतो रह्यो.)

कां रही अलगी ? एटला मांहां शुं थाकी ?

(केम वेगळी – आघी थई गई ? एटलामां थाकी गई ?)

राजाने नवडाववानुं बंध करनार दासी प्रत्येनी आ उक्ति छे.

संपादके 'जुदुं' अर्थ आप्यो छे ए योग्य नथी. बीजा उदाहरण परत्वे केशवलाल ध्रुवे पण 'वेगळी' एवो अर्थ ज कर्यो छे.

*नलाख्या.*मां –

....कोएक नर आ मंदिर रही,

*हवडां मुझने स्पर्स ज थयु, झालूं एटलि **अलगू** थयु.*

(कोई एक पुरुष आ महेलमां छे. हमणां मने एनो स्पर्श थयो, पण एने पकडुं एटलामां तो ए दूर जतो रह्यो.)

संपादके 'जुदुं' अर्थ आप्यो छे ते संदर्भमां योग्य रीते बंधबेसतो थतो नथी.

*उषाह.*मां –

*अधमाधम **अलगेरी** थटी.*

संपादके 'अळगी' अर्थ आप्यो छे तेमां एनो आजनो 'जुदी' ए अर्थ अभिप्रेत जणाय छे. देखीती रीते तो ए बेसे. द्वारकामां जुदाजुदा लोकोना वासना वर्णननी आ पंक्ति छे. तेथी सौथी हलका वर्णना लोकोनुं निवासस्थान जुदुं छे एवो आ पंक्तिनो अर्थ लई शकाय. पण निवासस्थान जुदुं ज नहीं, दूर – सौथी दूर – छेले होवानो अर्थ अभिप्रेत होवानो संभव छे.

*विमप्र.*मां –

*भड भडवाय हता घणा, ते तु आपणा **अलग** लेई जीव तु.*

(पराक्रमी वीर पुरुषो हता ते पण पोताना जीवने वेगळा लई जाय छे / नासीने

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बचावी ले छे.)

संपादके पण 'अलग'नो अर्थ 'दूर' आप्यो छे.

३६. अंक भरवो

संस्कृतमांथी आवेलो 'अंक' शब्द 'खोळो' ए अर्थमां आपणे त्यां जाणीतो छे. सार्थ गुजराती जोडणीकोश दे.'अंकिअ' परथी आवेलो बीजो 'अंक' पण नोंधे छे अने एनो 'आलिंगन' एवो अर्थ आपे छे. परंतु आ अर्थमां आ शब्द अत्यारे जाणीतो नथी. मध्यकाळमां 'अंक' शब्दना 'आलिंगन' ए अर्थना प्रयोग मळे छे, पण ए कृतिओना संपादके 'खोळो' एवो अर्थ ज लीधो छे. जेमके,

नरका.मां –

ताहरुं चलण दीसे घणुं घर विशे,
*समुद्रतनया हींडे **अंक भरतां.***

संपादके 'अंक भरतां'नो अर्थ 'खोळो भरतां, आजीजी करतां' एवो आप्यो छे. आ उक्ति राधाने उद्देशीने कहेवायेली छे. राधानुं जो घरमां चलण होय, तो लक्ष्मीनुं स्थान ऊतरतुं बतावबानो उद्देश ज होय एम मानी संपादक 'खोळो भरतां' एटले 'आजीजी करतां' एवा अर्थ तरफ गया जणाय छे. पण एमां एक मुश्केली छे. 'खोळो भरवो'नो 'आजीजी करवी' एवो अर्थ लेवा माटे कोई आधार नथी. हा, 'खोळो पाथरवो' एटले 'आजीजी करवी' एम अर्थ थाय छे खरो.

पण 'अंक भरवो' एटले 'आलिंगन लेवुं' एवो अर्थ अन्य घणे स्थाने जोवा मळे छे. तेथी उपरना दाखलामां पण ए ज अर्थ लेवो जोईए. राधिकानुं घरमां चलण छे अने लक्ष्मीजी पण आलिंगन लेतां फरे छे ए जातनो वाक्यान्वय थई शके.

नरसिंह महेतानी ज बीजी पंक्तिओमां 'अंक भरवो'नो 'आलिंगन लेवुं' एवो अर्थ बराबर बेसे छे :

*प्रेमदा प्रेमसुं पान अधिक रे, **अंक भरि** नाथ उरमांहे राखे.*

(प्रेमदा अधिक प्रेमपान करे छे अने नाथने अलिंगन आपी पोताना हृदयमां राखे छे.)

***अंक भरी** आशवाश दईने लई मंदिरमां पधराव्या रे.*

(आलिंगन लई, आसनावासना करी लई जईने महेलमां पधराव्या.)

भगवद्गोमंडल पण दयारामनी नीचेनी पंक्ति उद्धृत करी 'अंक भरवो'नो 'बाथ भीडवी' एवो अर्थ आपे छे :

*हा ना करतां रे **भरी अंक,** अधर उठावी रे लाव्या कुंज निःशंक.*

(गोपी हा-ना करती रही अने कृष्ण एने बाथमां लई, ऊंचे उठावी कुंजभवनमां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाव्या.)

ए नोंधपात्र छे के संस्कृत कोश 'अंक' एटले 'बगल' अने 'अंकपालिका' एटले 'आलिंगन' एवा अर्थो आपे छे.

३७. आघुं, आघेरुं

'आघुं' शब्द अत्यारे सामान्य रीते 'दूर'ना अर्थमां वपराय छे. 'आघो आव' एटले 'पासे आव' एवो प्रयोग विरल छे. परंतु मध्यकाळमां 'आघुं' शब्द 'आगळ, पासे, नजीक' एवा अर्थमां ज मोटे भागे वपरातो जोवा मळे छे. जेमके,

*विक्रच.*मां –

थरहर कंपइ नावइ ***आघ.***

(थरथर कंपे छे अने नजीक आवतो नथी.)

संपादके 'आघा, दूर' एवो अर्थ आप्यो छे ते खोटो छे.

*आरारा.*मां –

जेतलि जोई ***आघु*** *थई, आराम उपरे मीट ज गई.*

(आगळ / पासे जईने जुए छे त्यां बगीचा उपर नजर गई.)

तव जोवइ ते ***आघी*** *थाइ, उणि हत्यारी लाधउ दाइ.*

(त्यारे आगळ / पासे जईने ते जुए छे. पेली हत्यारीने लाग मळी गयो.)

संपादके 'आगळ' अर्थ आप्यो छे ते चाले तेम छे.

*नलाख्या.*मां –

एहवूं कही रथ ***आघु*** *खेड्यु.*

(एवुं कहीने एणे रथ आगळ चलाव्यो.)

आघेरु *जईनि चींतवि.*

(आगळ जईने विचार करे छे.)

संपादके 'दूर' एवो अर्थ आप्यो छे, ते बीजा उदाहरणमां बंधबेसतो लागे, पण 'आगळ' अर्थ लेवो ज उचित छे. पहेला उदाहरणमां 'आगळ' ए अर्थनुं औचित्य स्पष्ट छे.

*नरप(द).*मां –

नासी जाए, ***आघो*** *आवे, सुंदर सांम.*

(सुंदरश्याम घडीक नासी जाय छे, घडीक पासे / नजीक आवे छे.)

संपादके 'नजीक' अर्थ आप्यो छे ए बराबर छे.

नरसिंह महेताना एक बीजा पदमां पण आवी पंक्ति मळे छे :

आघा *आवीने आलिंगन मागे.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पासे / नजीक आवीने आलिंगन मागे छे.)

*षडाबा.*मां –

***आघउं** पियाणउं न करइ.*

(आगळ प्रयाण करता नथी.)

संपादके पण 'आगळ' अर्थ आप्यो छे.

*अखाका.*मां –

*आकाशथी **आघेरुं** चालवुं, शुं बेठा छो हारी.*

अहीं संपादके आपेलो 'दूर' अर्थ बेसे तेम छे, पण वस्तुतः एना मूळमां 'आगळ' एवो अर्थ ज रहेलो छे : "आकाशथीये आगळ चालवानुं छे. हारी शुं बेठा छो ?"

*चित्तसं.*मां –

***आघो** न चाले मारो लक्ष.*

(मारुं ध्यान आथी आगळ जतुं नथी.)

*निज रूपे थई **आघो** वट्यो.*

(आत्मरूप थईने ए आगळ वध्यो.)

***आघो** उकेल जो न होइ कशो.*

(जो आनाथी आगळ कोई उकेल न होय.)

संपादके पण 'आगळ' अर्थ ज आपेल छे.

*विराप.*मां –

*कुण मुर्ख जि आवइ **आघउ.***

संपादके 'समक्ष' अर्थ आप्यो छे ते चाले, पण 'पासे, नजीक' ए अर्थ वधारे योग्य छे : "पासे आवे एवो कोण मूर्ख छे ?'

*विमप्र.*मां –

*चाउचीयाविउ वाघलु ए तु, **आघलउ** कोई न थाइ तु.*

(वाघ रोषे भरायो. कोई एनी आगळ / पासे आवतुं नथी.)

संपादके आपेलो 'नजदीक' अर्थ बराबर छे.

'आधुं'ना मूळमां सं.'अग्र' छे तेथी 'आगळ' ए एनो मूळभूत अर्थ होवानुं समजाय एवुं छे.

३८. आडइ, आडो

सार्थ जोडणीकोश 'आडे आववुं'नो 'वच्चे (विघ्न के राहत तरीके) पडवुं' एवो अर्थ आपे छे. एटलेके विघ्नरूप थवुं के राहतरूप थवुं ए संदर्भ पर आधारित छे. पण राजस्थानी कोश 'आड'ना 'रक्षा, शरण, सहायता, मदद, आश्रय, आधार' एवा अर्थो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने 'आडौ आणो/आवणो'नो 'मदद करवी' एवो अर्थ आपे छे. मध्यकालीन गुजरातीमां 'शरण' के 'मदद'ना अर्थना प्रयोगो मळे छे. जेमके,

*प्रेमाका.*मां –

*सर्व बेठां मूळ वाढे, तम विना कोण **आवे आडे.***

संपादके 'आडे'नो 'वच्चे' एवो अर्थ आप्यो छे ते सीधा शब्दार्थनी दृष्टिए बराबर छे, पण अहीं राहत रूपे वच्चे आववानी वात छे एटले 'आडे आवे'नो 'मददे आवे' एवो अर्थ वधारे सुभग छे : "बधां मूळ वाढी रह्यां छे त्यारे कोण मददे आवशे ?"

*जिनरा.*मां –

*श्री जिनराज सुविधि साहिब सुं किम पहुंचीजइ **आडइ.***

(जिनराज सुविधिनाथना शरणमां केम पहोंचीए ?)

संपादके 'आडइ'नो 'हठ करीने' एवो अर्थ आप्यो छे ते खोटो छे ए स्पष्ट छे. एमां ज –

प्रहसम थास्यै मुझ वारी, इम चिंतवि चउथी नारी,

***आडौ** तब कोई न **आसै**...*

(चोथी स्त्री विचारे छे के सवारे मारो वारो आवशे, त्यारे कोई मारी मददमां नहीं आवे.)

संपादके 'काममां आवशे' एवो अर्थ आप्यो छे ते पण चाले.

३९. आदर, आदरवुं

'आदर' शब्द 'मान-संमान'ना अर्थमां अने 'आदरवुं' शब्द 'आरंभ करवो'ना अर्थमां आपणे वापरीए छीए. जोडणीकोश 'आदरवुं' शब्दनो 'स्वीकार करवो' एवो अर्थ पण आपे छे.

मध्यकाळमां 'आदर' शब्द 'प्रयत्न'ना अर्थमां पण वपरातो देखाय छे. *अखाछ.*मां आ अर्थ लेवामां आव्यो छे. जेमके,

*ते अल्प **आदरे** आवे हाथ –*

(अल्प प्रयत्नथी ए हाथमां आवे.)

*जेवे **आदरे** करीने ग्रहे, तेवुं मुक्ता जामी रहे.*

(जेवा प्रयत्नथी / जेवी निष्ठाथी स्वीकारे तेवुं मोती बने.)

शुद्ध पारसने जे जे अडे, ते ते कंचन थई नीमडे

*पण ते **आदर** केनो नव करे.*

(पण ते कशाने माटे प्रयत्न करतो नथी.)

'आदर' शब्द 'आश्रय, स्वीकार'ना अर्थमां पण मळे छे. जेमके *अखाका.*मां –

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*सद्गुरु केरा चरण **आदर** करी....*

(सद्गुरुना चरणनो आश्रय लईने....)

संपादके 'प्रयत्न' अर्थ आप्यो छे ते अहीं चालें तेम नथी.

आ ज रीते, 'आदरवुं' पण 'प्रयत्नशील थवुं, प्रवृत्त थवुं, करवुं' एवा अर्थमां वपराय छे. *अखाछ.*मां 'प्रयत्न करवो' एवो अर्थ लेवायो छे. जेमके,

*भूचरनी कांई बीजी पेर, एम जाणी अखा **आदेर.***

(भूचरनी कोई बीजी ज रीत छे एम समजीने तुं प्रयत्नशील था.)

*एणे रसे जीव करे **आदरी.***

(आ रसथी जीव प्रवृत्त थाय छे.)

*डाह्या पंडित थइ जे **आदरे**, तें अखा वार्युं केम करे ?*

(डाह्या पंडित थईने जे प्रवृत्त थाय छे तें वार्युं केम करे ?)

*प्रेमाका.*मां –

*जे वेळा **आदरिया** द्रोण, त्यारे कुंवरने राखे कोण ?*

(द्रोण ज्यारे प्रवृत्त थया, त्यारे कुंवरनी रक्षा कोण करे ?)

*जो **आदरुं** तो असुरकुळने त्रेवडुं तृणमात्र.*

(जो हुं प्रवृत्त थाउं तो असुरकुळने तणखला समुं लेखुं.)

संपादके 'आरंभ करवो' एवो अर्थ लीधो छे पण उपरनो अर्थ वधारे योग्य छे.

*अखेगी.*मां –

*अणजाण्ये जे **आदरे**....*

(समज्या विना जे (भक्ति) करे...)

संपादकोए 'आरंभे' अर्थ लीधो छे ते देखीती रीते चाले पण '-ने माटे प्रवृत्त थाय' 'करे' एवो अर्थ अभिप्रेम जणाय छे.

*भक्ति उपरे **आदर्यो.***

(भक्ति विशे प्रवृत्त थयो.)

संपादकोए अहीं 'प्रयत्नशील थयो' एवो अर्थ लीधो छे ते बराबर छे.

*नलाख्या.*मां –

*मंद हास्य करी रा उच्चरि : 'नारी, मूरखता **आदरि.**'*

(मंद हास्य करीने राजा बोल्यो : नारी, तुं मूर्खाई करे छे.)

संपादके 'शरू करे छे; मान आपे छे' एवा अर्थो आप्या छे ते अहीं अप्रस्तुत छे.

'आदरवुं' शब्द 'स्वीकारवुं, सत्कारवुं, आश्रय लेवो, पामवुं' एवा अर्थोमां पण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वपरायेलो मळे छे. जेमके, *गुर्जरा.*मां –

रिसहि राज्यकला धुरि ***आदरी.***

(ऋषभे प्रथम राज्यकला स्वीकारी.)

संपादकोए 'to receive respectfully' (सत्कारवुं) एवो अर्थ आप्यो छे ते चाले तेवो छे.

*आरारा.*मां –

मइ पिणि तुझनइ ***आदर्यउ*** *हो, जाणी आंबानी डालि.*

(में आंबानी डाळ जाणीने तारो आश्रय कर्यो हतो.)

तेहनइ जाइ बेटी एक, यौवनवय ***आदरीय.***

(तेने एक पुत्री जन्मी. ते यौवनवयने पामी.)

संपादके 'आश्रय लीधो' एवो अर्थ आप्यो छे ते पण चाले.

*लावल.*मां –

केवलकमला ***आदरी.***

(केवळज्ञानरूपी लक्ष्मी पाम्या.)

संपादके 'आदर करी, स्वीकारी' एवा अर्थ आप्या छे तेमांथी 'स्वीकारी' अर्थ नभी शके.

*नरका.*मां –

ए रस शुकसनकादिके, वळी शिव-शिवाए ***आदर्यो.***

(शुकसनकादिक अने शिव-शिवाए ए रसनो स्वीकार कर्यो / तेओ ए रस पाम्या.)

ऊंघ, आहार ने आळस में ***आदर्या.***

(में ऊंघ, आहार ने आळसनो आश्रय लीधो.)

भूल्या भमता फरे, अन्यने ***आदरे.***

(भूल्या भटके छे अने अन्यनो आश्रय ले छे.)

संपादके 'आवकारवुं, सत्कारवुं' एवा अर्थो लीधा छे ते आ संदर्भमां सुभग लागता नथी.

*आनंस्त.*मां –

परम चरणधर्म ते धर्म तुह्मारो जाणीइ ***आदरीइ.***

(परम चारित्रधर्मनो, ते तमारो धर्म जाणीने, आश्रय करीए.)

संपादके 'आदरीए' एवो पर्याय आप्यो छे ते 'शरू करीए' एवा अर्थमां ज अभिप्रेत गणाय. ए अर्थ अहीं उपयुक्त जणातो नथी.

सार्थ जोडणीकोश 'आदरवुं'नो 'संवनन करवुं' ने 'अदरावुं'नो 'विवाह के सगपण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थवुं' एवा अर्थो नोंधे छे. खास करीने पारसीओमां 'अदरावुं' शब्द आ अर्थमां प्रचलित छे. मध्यकाळमां 'आदरवुं' शब्द ज 'विवाह के सगपण करवुं' एवा अर्थमां प्रयोजायेलो मळे छे. जेमके,

*आरारा.*मां –

कुलधर, ***आदरि*** *म था गमार,*

(कुलधर, (पुत्रीनो) विवाह कर, गमार न था.)

संपादके पण 'सगपण कर' ए अर्थ ज आप्यो छे.

*गुर्जरा.*मां –

हुं नवि देखी आदरी, ***आदरी*** *यादवराइ.*

(यादवराये मारी साथे विवाह करी मने आदरथी जोई नहीं.)

संपादकोए योग्य रीते 'betrothed' एवो अर्थ आप्यो छे.

*चित्तसं.*मां 'आदरवुं'नो एक विलक्षण प्रयोग मळे छे :

जेम चंबुकगिरिनी सत्ताए करी लोहोनौका आवे ***आदरी.***

संपादके 'खेंचाईने' अर्थ आप्यो छे ते ज आ संदर्भमां बंध बेसे एवो छे. "जेम लोहचुंबकवाळा पर्वतना प्रभावथी लोढानी नौका खेंचाईने आवे...."

४०. करो

'करो' शब्दनो अर्थ 'घरनी बाजुनी दीवाल' एवो सार्थ जोडणीकोश नोंधे छे अने ए अर्थमां ए शब्द प्रचलित छे. *नंदब.*मां आ शब्द वपरायो छे अने संपादके एनो ए अर्थ ज आप्यो छे. पंक्ति आ प्रमाणे छे :

वणीक ते जे नही आकरो, गांम ते जेहमां होये ***करो.***

देखीती रीते ज 'करो' शब्दनो उपर्युक्त अर्थ अहीं बंधबेसतो थतो नथी. करो घरने होय, गामने नहीं; अने घरने करो होय ज, पछी करो के करावाळुं घर होय तेने ज गाम कहेवाय एम कहेवानो कंई अर्थ खरो ? वस्तुतः राजस्थानी कोश 'करौ' शब्द 'किसान'ना अर्थमां नोंधे छे. अहीं ए अर्थ बराबर बंध बेसे छे : "जेमां खेडूत वसतो होय ते ज गाम."

४१. खगां, खगमंडल, खगाकार

'खग' शब्द आपणे 'पंखी'ना अर्थमां ज लईए छीए. 'ख' एटले आकाश, एमां गति करे ते 'खग'. पण देश्य 'खग' शब्द 'आकाश'ना अर्थमां छे अने ए मध्यकालीन गुजरातीमां प्रचलित होवानुं जणाय छे. जेमके,

*वेताप.*मां –

डोले ***खगमंडल*** *चित....*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(कदाचित आकाशमंडळ डोले...)

संपादके पण 'गगनमंडळ' ए अर्थ ज आप्यो छे.

*प्रेमाका.*मां –

*मा भर रे ओहरुं डगां, तूझ-पे त्रूटी पडशे **खगां.***

(आगळ डगलां न भरतो, नहीं तो तारा पर आकाश तूटी पडशे.)

संपादके आपेलो 'पक्षीओ' अर्थ देखीती रीते ज खोटो छे.

संतो, मन रे मारीने मज्जन करे, परम ज्योतमां भळे,

***खगाकार** ए तो थई रहे...*

(मनने मारीने ब्रह्मभावमां डूबे ने परम ज्योतमां लीन थाय ते आकाशवत् / शून्यवत् थईने रहे....)

संपादके 'पंखीना जेवुं, आकाशमां (ब्रह्ममां) मुक्त रीते विहरनार' एवो अर्थ आप्यो छे ते बराबर नथी.

४२. खराप

जोडणीकोश 'खराब'ना 'नठारुं, अनीतिमान्, भ्रष्ट' एवा अर्थो नोंधे छे अने ए ज प्रचलित अर्थो छे. पण अरबी 'खराब' शब्द 'विनाश, बरबादी' एवो अर्थ पण धरावे छे अने मध्यकाळमां ए अर्थमां आ शब्द वपरायेलो मळे छे. जेमके,

*अखाका.*मां –

*मध्य अहंता करे **खराप.***

'खराप' अहीं 'खराब'ने स्थाने छे अने संपादके ए पर्याय मूकीने ज काम चलाव्युं छे. पण जोई शकाय छे के 'खराब'नो चालु अर्थ अहीं कथयित्वने बराबर प्रगट करतो नथी, "मध्ये अहंता विनाश / बरबादी करे छे" एवो अर्थ लेवाथी ज कथयित्व बराबर ऊघडे छे.

४३. गान, किण गानइ

'गान' शब्द 'गीत, गायन' एवा अर्थमां जाणीतो छे. पण मध्यकाळमां ए 'गणना, विसात' एवा अर्थमां पण मळे छे, जेमके, *आरारा.*मां –

कहइ ब्राह्मण, "मुझ प्राण, तेह पणि रायना जाण,

*तु कन्या **किण गानइ....**"*

(ब्राह्मण कहे छे – मारा प्राण पण राजाना छे, तो मारी कन्या शी विसातमां ?)

संपादके 'कई विसातमां' एवो ज अर्थ आप्यो छे.

*जिनरा.*मां –

*इम विचार करता मन माहे लाखे **गाने** लोको रे...*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(आम मनमां विचारता लाखोनी गणतरी / संख्यामां लोको....)

संपादके 'गाने'नो 'ज्ञाने' अर्थ आप्यो छे ते खोटो छे.

सं.'गणना' प्रा.'गण्णा' परथी 'गान' शब्द आव्यो जणाय छे.

[गुजरात दीपोत्सवी अंक, सं. २०५०]

□

४४. उशंकल, उसंकल, उसीकल, उसींकल, ओशिंगळ, ओशींकळ, ओशींगल, ओसंकल, ओसीकल

बोलीकक्षाए वपरातो 'ओशिंगण' शब्द आपणने परिचित छे. ए शब्द आपणे 'आभारी, ऋणी, उपकृत, अहेसानमंद' एवा अर्थमां योजीए छीए अने शब्दकोशो पण ए शब्दने ए अर्थमां ज नोंधे छे. भगवद्गोमंडले एनो एक वधारानो अर्थ 'बदलो वाळी आपनारुं' नोंध्यो छे ते विरल अपवाद छे. कोशो 'ओशिंकळ/ओशिंगळ' ए शब्द पण नोंधे छे अने आ ज अर्थमां नोंधे छे. एक ज शब्दना आ बे उच्चारभेदो होय एवी एमनी समज जणाय छे. भगवद्गोमंडले 'उसंकल, उसीकल' वगेरे घणा उच्चारभेदो नोंध्या छे, पण एणे पण त्यां बधे 'आभारी, ऋणी' एवो ज अर्थ दर्शाव्यो छे.

मध्यकालीन साहित्यमां 'ओशिंगण' एवुं 'ण'कारवाळुं रूप जोवा मळ्युं नथी, 'ल'कारवाळुं रूप ज जोवा मळे छे – उशंकल, उसंकल, उसीकल, उसींकल, ओशिंगळ, ओशीकल, ओशींकळ, ओशींगल, ओसंकल, ओसीकल वगेरे. स्वाभाविक रीते ज मध्यकालीन साहित्यना आपणा घणा संपादको-अभ्यासीओ आ मध्यकालीन प्रयोगने 'ओशिंगण'ना अत्यारना अर्थमां – 'आभारी, उपकृत' एवा अर्थमां – वांचवा ललचाया छे, जे आपणा कोशोए पण कर्युं छे. पण मध्यकालीन 'उसींकल' वगेरे शब्द, 'ओशिंगण'थी ऊलटा ज अर्थमां, 'ऋणी' नहीं पण 'ऋणमुक्त', ने एमांथी विकसेला केटलाक अर्थोमां वपरातो होवानुं स्पष्टपणे देखाय छे. ए नोंधपात्र छे के *ऐतिरा.*(१९१६)ए सौप्रथम 'गुण-उसंकल'नो 'गुणनी भरपाई' (=गुण/उपकारनो बदलो) एवो अर्थ आप्यो छे. ते पछी *उपबा.*(१९३५)मां 'उसंकल'नो 'fulfilling the obligation' (ऋण चूकववुं ते) एवो अर्थ अपायो छे. आ पछी *मदमो.*(१९५५)मां 'ओशीकल/ओशींगल'नो 'ऋणमुक्त' एवो अर्थ अपायो छे ने एना अर्थनुं भारतीय विद्याभवननां प्रकाशनोमां अने अन्यत्र क्यांक-क्यांक अनुसरण थयेलुं छे, पण आ शब्दने 'ओशिंगण, आभारी, ऋणी' एवा अर्थमां लेवानुं पण व्यापकपणे जोवा मळे छे.

'उसींकल थवुं / करवुं' एटले 'ऋण, उपकार के एना भारमांथी मुक्त थवुं.' एमांथी 'बदलो वाळवो' 'वचन पाळवुं' वगेरे अर्थोनो पण विकास थयो छे. आ विविध अर्थोने अनुलक्षीने 'उसींकल' वगेरेना मध्यकालीन प्रयोगो आपणे जोईए.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुक्त थवुं के करवुं – ऋण, उपकार के एना भारमांथी

(१) *सिंहा(म).*मां राजा उपर एक वखते उपकार करनार ब्राह्मण वांकमां आवे छे ने राजसभा एने शूळीए देवानुं सूचवे छे त्यारे राजा कहे छे –

*एह उपगार **उसीकल** केम, पसाउ करी पुहचाडो खेम. (११४)*

(एना उपकारना भारमांथी मुक्त केम थवाय ? भेटसोगाद आपी एने क्षेमकुशळ घेर पहोंचाडो.)

संपादके 'आभारी, ओशिंगण' अर्थ लई अनुवाद आप्यो छे – "एना उपकारनो हुं ओशिंगण छुं," एमां 'केम' शब्द बाकात रह्यो छे. उपरांत, संदर्भमां पण ए अर्थ टकी शके तेम नथी.

(२) *नलाख्या.*मां हंस नळने कहे छे –

*प्राणदान ति मूझने दीधुं ते **ओशीकल** थांउं,*
प्रत्युपकार करेवा, राजा, कुंडिनपुरि हूं जांउं. (६, १९)

(तें मने प्राणदान कर्युं छे तेना ऋणमांथी मुक्त थाउं.)

संपादके 'ओवारणा लीधेल, वारी जवायेलुं, उपकृत' एवा अर्थो नोंध्या छे. रा. चू. मोदीए एमना संपादनमां 'आभारी' अर्थ आप्यो छे. आ अर्थो योग्य नथी.

(३) *विक्ररा.*मां –

माता कही गंग समान, अडसठि तीरथ मांहिं प्रध्यान,
*निशिदिन धोई पीइ पाय, तुहि **ओसंकल** पुत्र न थाय. (४७६)*

(माताना पग धोईने रोज पीए तोये पुत्र एना ऋणमांथी मुक्त न थाय.)

संपादके 'ओशिंगण, आभारी' ए अर्थ आप्यो छे, जे टकी शकतो नथी.

(४) *नलरा.*मां –

ताहरी दृष्टिइ संपनु, जीवी दीधू माय,
*तूझ **उसीकल** नवि थाउं, प्रणमउ तारा पाय. (६९०)*

(तारी नजरे चड्यो अने माता ! तें मने जीवतदान आप्युं. तारा ऋणमांथी हुं मुक्त नहीं थाउं.)

(५) ए ज कृतिमां पोताने आश्रय आपनार दधिपर्णने नल कहे छे –

*मित्र सहोदर भाई माहरु, **उसीकल** नही थाउं ताहरु. (१०२१)*

(तुं मारो मित्र, सहोदर, भाई छे. तारा ऋणमांथी हुं मुक्त नहीं थाउं.)

बंने परत्वे संपादके 'आभारी, ओशिंगण' अर्थ आप्यो छे, जे खोटो छे.

(६) रत्नसूरिशिष्यकृत 'रत्नचूडरास' (१६५३) (संपा. ह. चू. भायाणी, १९७७)-मां –

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यमघंटा समजावे छे के शेठे तमने कंईक आपवानुं कह्युं छे तेथी ए घडामां देडको मूकी हाथ नाखवानुं तमने कहेशे अने पछी –

*"घडा-माहि कांइ छइ सही", "**ओसींकल** हूया अम्हे भई." (२२९)*

(तमे कहेशो के घडामां कांईक छे एटले ए कहेशे के अमे ऋणमुक्त थया.)

संपादके शब्दकोश आप्यो छे पण अर्थो आप्या नथी.

(७) ए कृतिमां ज, माळी ज्यारे 'कांईक'नी मागणी करे छे त्यारे शेठ कहे छे –

*सउ पंचास लिउ तुम्हे सही, **ओसीकल** तुम्हे करउ सही. (३०२)*

(पचास-सो रूपिया लई लो अने अमने ऋणमुक्त करो.)

(८) एमां ज सुतारने राजी करवानुं वचन आपेलुं. एने समाचार आपवामां आवे छे के राजाने त्यां दीकरो अवतर्यो छे. पछी –

*"रुलियाइत अम्हे थया छउं सही", "**ओसीकल** अम्हे हूआ भई." (३०७)*

(सुतार कहे छे के अमे राजी थया. एटले शेठे कह्युं के अमे ऋणमांथी छूट्या.)

(९) *प्रेमाका.*-अंतर्गत 'अभिमन्यु-आख्यान'मां पांडवोने पोते दास तरीके राख्या एनो अफसोस व्यक्त करी विराट राजा कहे छे –

*ते भार **ओशींकळ** करो, उत्तराकुंवरी मारी वरो. (२२, ८)*

(ते भारमांथी मने मुक्त करो.)

संपादके 'ओशिंगळ; हळवो, ऋममुक्त; आभारी' एवा अर्थो नोंध्या छे, जेमां संपादक अर्थ परत्वे अनिश्चित होवानुं देखाय छे. चिमनलाल त्रिवेदी वगेरेए तथा विनोद अध्वर्यु वगेरेए एमनां संपादनोमां 'आभारी, उपकृत' एवो अर्थ लीधो छे, जे खोटो ज छे.

(१०) *दशस्कं(२).*मां –

*शत कल्प सेवा करवा रहीए, पण माना **ओशीकळ** नव थईए.*

(१०९, ४६)

(सेंकडो कल्पो सेवा करीए, तोये माना ऋणमांथी मुक्त न थवाय.)

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे.

(११) ए कृतिमां ज, नंदजी प्रत्ये कृष्ण कहे छे –

*अमो **ओशंकळ** केम थईए रे, गोकुळ-स्वामी ?*

एवुं कहीने आंसु भरियां अंतरजामी. (१२२, पद ७, १)

(हे गोकुळना मालिक, तमारा ऋणमांथी अमे केम मुक्त थईए ?)

संपादके शब्दकोशमां आ संदर्भ नोंध्यो नथी.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवद्‌गोमंडले आ पंक्तिओ उद्धृत करी 'ओशियाळुं, गरजु' एवो अर्थ आप्यो छे, जे टकी शके एम नथी.

(१२) *सिंहा(शा).*मां –

*बहु द्रव्य खरच्यो बापनो, आपी **उशंकल** थायुं. (२०, १३४)*

(पितानुं घणुं द्रव्य में वापर्युं छे, हवे पाछुं आपीने ऋणमुक्त बनुं.)

संपादकना शब्दकोशमां आ पंक्तिनो संदर्भ नथी.

(१३) *वेताप.*मां विदाय लेता सिद्धने विक्रम कहे छे –

ताहरो भार माथे मुनें, कष्ट एटलुं काप्य,

*कांईक मागो मुझ-कने, ते **उशंकल** थाउं. (१, ४३७–३८)*

(मारी पासे कंईक मागो, जेथी तमारा ऋण-भारमांथी मुक्त थाउं.)

संपादके आ अने पछीना उदाहरण परत्वे 'ऋणमुक्त' अर्थ आपेल छे.

(१४) एमां ज, वड परथी शबने लावी आपवानुं वचन न पाळी शकेलो विक्रम सिद्धने कहे छे –

*महाराज आज रात्ये जाउं छुं, अरुणोदये **उशंकल** थाउं छुं. (११, ७)*

(सवार पडतां ज, वचन आप्युं छे तेना भारमांथी मुक्त थाउं छुं.)

(१५) *कस्तुवा.*मां कूड करनार गणिकाने विक्रम हरावे छे तेथी मुलताननो राजा पोतानी धन्यता प्रगट करे छे अने –

***उसंकल** अमने करो, घणुं वांक विवेक,*

देहें शुभ छे दीकरी, आपुं तमने एक. (७१७)

(तमने ओळख्या नहीं ए अमारा विवेकनो दोष थयो. हवे तमे करेला उपकारना भारमांथी अमने मुक्त करो. मारी सुंदर दीकरी छे ते हुं तमने आपुं.)

संपादके 'आभारी' अर्थ आप्यो छे. भगवद्‌गोमंडले पण आ उदाहरण संदर्भे 'आभारी, उपकार नीचे दबायेलुं, अहेसानमंद' एवा अर्थ नोंध्या छे. आ अर्थो उपयुक्त नथी.

(१६) *रूस्तस.*मां असदखान रूस्तमखानने कहे छे –

*लूंण-**ओसीकल** तमारो थाउ, डाभे मोरचे एकलो जाउ. (१२७)*

(तमारुं लुण खाधुं छे तेना ऋणमांथी मुक्त थाउं. युद्धना डाबे मोरचे हुं एकलो जईश.)

संपादके 'ओशिंगण' अर्थ आप्यो छे, जे योग्य नथी.

(१७) वस्ताकृत पद (भगवद्‌गोमंडलमां उद्धृत)मां –

त्यां लगण सौ रहे एकठां,

*ज्यां लगी **ओशिंगण** थाय रे.*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ऋणमुक्त थाय – ऋणानुबंधनथी मुक्त थाय – त्यां सुधी सौ एकठां रहे छे.)

भगवद्गोमंडले 'बदलो वाळी आपनारुं' एवो अर्थ नोंध्यो छे ते पण बेसे अने आ प्रकारना अर्थने टेको छे ते हवे पछी आपणे जोईशुं.

अहीं 'ण'कारवाळो 'ओशिंगण' शब्द छे ते ध्यान खेंचे छे. मध्यकाळना 'ल'कारवाळा प्रयोगथी ए एकमात्र अपवाद छे अने तेथी भ्रष्ट पाठ होवानो वहेम जाय छे. ए आजनो 'ओशिंगण' शब्द तो नथी ज, केमके आजना अर्थमां 'ओशिंगण थाय त्यां सुधी सौ एकठां रहे छे' एवी रचना न थई शके, 'ओशिंगण होय त्यां सुधी सौ एकठां रहे छे' एवो प्रयोग थई शके.

बदलो वाळवो

'ऋणमुक्त थवुं' एटले 'ऋण चूकववुं, बदलो वाळवो'. 'उसींकल करवुं' एटले तो, सामान्य रीते, 'ऋणमुक्त करवुं' ज; पण 'उसींकल थवुं' एटले 'बदलो वाळवो' एवा अर्थने अवकाश रहे छे. आ पहेलां आपणे जे उदाहरणो जोयां तेमांथी क्रमांक (७), (९) अने (१५)मां 'उसींकल' 'करवा'नी विनंती छे त्यां ऋण के भारमांथी मुक्त करवानो, ऋण के भार उतारवानो अर्थ ज लई शकाय छे ए जोई शकाय छे. बाकीनां उदाहरणोमां 'उसींकल' 'थवा'नी वात छे त्यां बधे ज 'बदलो वाळवो' एवा अर्थने अवकाश रहे छे. जेमके (१)मां *एह उपगार **उसींकल** केम* (थवाय) एटले "एना उपकारना भारमांथी मुक्त केम थवाय" तेम 'एना उपकारनो बदलो केम वाळी शकाय ?' एवो अर्थ लीधो ज छे ए आपणे आगळ जोयुं छे. आ पूर्वे आपणे नोंधेलां उदाहरणोमां '-ना उसींकल थवुं' एवी रचनाओनो समावेश थयो छे, पण ते उपरांत '-ने उसींकल थवुं' एवी रचना पण मळे छे अने त्यां 'बदलो वाळवो' ए अर्थ वधु स्वाभाविक लागे छे. अपकारना पण उसींकल थवानी वात आवे छे त्यां तो ए अर्थ लेवो अनिवार्य लागे छे. आ अर्थ 'उसींकल करवुं'ना प्रयोगमां प्रवेश्यानुं पण एक उदाहरण मळे छे ए बतावे छे के मध्यकाळमां 'उसींकल' शब्द घणा संदर्भोमां वपरातां एनो 'मुक्त थवा'नो चोक्कस अर्थ न रहेतां 'बदलो वाळवो' जेवा व्यापक अर्थोने स्थान मळ्युं छे.

आ अर्थनां केटलांक उदाहरणो हवे जोईए :

(१८) *उपवा.मां –*

*समकितना देणहार गुरुनइं घणे भवे बिमणीतिमणी जां लगइ अनंतगुणी इम सघलं गुणाकारे मेली उपगारना सहस्रनी कोडे **उसंकल** थाई न सकइं*

(२६९)

(सम्यक्त्वना दातार गुरुने घणां जन्मोमां बमणा-तमणाथी मांडीने अनंतगणा सुधीना सर्व प्रकारना गुणाकार करीने हजारो उपकारथी पण बदलो न वाळी शकाय.)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहीं '-ने उसंकल थवुं' एवो प्रयोग छे ते नोंधपात्र छे.

संपादके 'ऋण चूकववुं ते' एवो अर्थ आप्यो छे, जे बराबर छे.

(१९) *नलरा.*मां पोताना हाथने डसनार नागने नल कहे छे –

*दूधदायकनइ डसीइ किम ?, **उसींकल** थयु मझ करी इम ! (७५८)*

(जेणे दूध पायुं एने केम डसाय ? तें मने आवी रीते बदलो वाळ्यो !)

'ऋणमुक्त थयो' करतां 'बदलो वाळ्यो' ए वधारे संगत लागे छे.

संपादके 'आभारी' अर्थ आप्यो छे, जे खोटो छे.

(२०) *ऐतिरा.*-अंतर्गत कीर्तिसागरशिष्यकृत 'भीम चोपाई'मां –

सोवन बराबर तोलइ जोय, खंधि करी करै तीरथ कोय,

*इंद्रमाल पहेरावे माय, गुण**उसंकल** तोइ न थाय. (१५२)*

(माताने इंद्रमाळ पहेरावे तोये एना गुण-उपकारना भारमांथी मुक्त न थवाय / एना गुण-उपकारनो बदलो न वळे.)

संपादके 'गुणनी भरपाई' एवो अर्थ आप्यो छे.

आ संदर्भमां जुओ आ पूर्व (१) 'उपकार-उसीकल' तथा (१६) 'लूंण-ओसीकल'.

(२१) *दशस्कं(१).*मां कृष्ण तरीके अवतार लई रहेला विष्णु शेषने पोताना ज्येष्ठ भ्राता – बलराम – तरीके अवतरवा कहे छे –

विष्णु कहे, "रामा-अवतारे तमो कीधी सेवा सबळ रे;

*आ वारे कनिष्ठ थई सेवुं, थाउं तमने **ओसींगळ** रे" (८, २२)*

(रामावतारमां तमे – नाना भाई लक्ष्मण बनी – मारी घणी सेवा करी हती. आ वखते हुं नानो भाई बनी तमारी सेवा करुं अने तमने बदलो वाळुं / तमारा ऋणमांथी मुक्त थाउं.)

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे.

२२. *सिंहा(शा).*मां ब्राह्मण पुत्र मेळववा माटे शिवनी अपार भक्ति करे छे, पछी –

शिव तो थया अति आकला, "एह-नें सुअ अपाय,

*पांचसे पुत्र ज आपतां, **उशंकल** न थाय." (२०, ३०)*

(एने शुं आपवुं ? पांचसो पुत्र आपतांये एनी भक्तिनो बदलो न वळे.)

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे, एने थोडो खेंचीने बेसाडी शकाय, पण 'बदलो वळवा'नो अर्थ साहजिक रीते बेसे छे. .

(२३) एमां ज, पापोनी यादी वर्णवतां –

नीवांण पुरावें, विष-स्युं वेर, पाडोसी उपर राखें झहेर,

*गोडे वाडी लीली घणी, **उसंकल** न करे विद्या भणी. (१९, ४७२)*

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(विद्या भणीने एनो बदलो न वाळे.)

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे, पण अहीं तो 'करे'वाळो प्रयोग छे ने 'ऋममुक्त करे' ए अर्थ अभिप्रेत नथी ज. तेथी 'बदलो वाळे' ए अर्थ ज उपयुक्त छे.

(२४) *नंदब.*मां –

गुण के अवगुण ***ओसींकल*** *थाये, पीत्री पंड तारे तो साहे. (२४१)*

(गुण के अवगुण – उपकार के अपकारनो बदले वाळीए त्यारे ज पितृ पंड ले.)

अपकारना संदर्भमां 'ऋणमुक्ति' नहीं पण 'बदलो'नो अर्थ ज बेसे.

संपादकना शब्दकोशमां आ शब्द नोंधायो नथी.

(२५) *कस्तुवा.*मां हंसहंसणीनी वातमांथी कस्तुरचंद शुभ रात्रि-योग जाणे छे ने पोते पोतानी पत्नीथी दूर छे एनो अफसोस करे छे. हंसना पूछवाथी कारण कहे छे. पछी –

हंसनी कहें रे, "हंस, सुमि, पुछें ***उशंकल*** *थावो,*
आ वेला तम्यो एहनें मंदिर मध्ये लेइ जावो." (४१६)

(हंसणी कहे छे के "हंस, सांभळो. एने पूछ्यानो बदलो वाळो.")

संपादके 'आभारी' अर्थ आप्यो छे.

(२६) *वेताप.*मां लक्ष्मीजी विष्णुने कहे छे –

भली भगत्य करें भांमीनि, ते आपणनें भार,
कीजें ***उशंकल*** *एहनें, तुं नोंधारां-आधार. (२३, २५)*

(आ स्त्रीओ आपणी खूब भक्ति करे छे. एनो आपणने भार चडे. तो एमने बदलो वाळो.)

संपादके आ अने पछीनां उदाहरणो परत्वे 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे, पण अहीं पण (२३)ना जेवो 'उशंकल कीजे' प्रयोग छे एटले 'बदलो वाळो' ए अर्थ ज लेवानो रहेशे.

(२७) एमां ज, गरीब माबाप चार पुत्रोमां पोतानी जेवी-तेवी मिलकत वहेंची दे छे. पछी –

माबाप कहें, "सपूत छो तम्यो, किम जीवीशुं करमां अम्यो"
"जेहनें शीवजीनि क्रीपा हशें, ते तमने ***उशंकल*** *थशे.*
नहीतर वारा फरती वार, च्यार पुत्र नें दाढा च्यार." (२४, १३–१८)

(माबाप कहे छे के तमे तो सपूत छो पण आ मुश्केल वखतमां अमे केम जीवीशुं ? दीकरा उत्तर आपे छे के जेना उपर शिवजीनी कृपा हशे ते तमने बदलो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाळशे/तमारा ऋणमांथी मुक्त थशे.)

अहीं '-ने उशंकल थवुं' ए प्रयोग छे ए नोंधपात्र छे.

(२८) एमां ज, रोगिष्ठ राजानो उपचार करवा आवनार वैद्य कहे छे –

नव नाडी कोठा बोहोतर तणी वखाणी जाणुं वात,

***ओशंकल** थायुं एटलुं रोग-परिख्या ख्यात. (६, २८)*

(तमे जे कंई पुरस्कार आपवाना छो एनो बदलो वाळी शकुं एटलुं मारुं रोगपरीक्षानुं ज्ञान छे.)

राजाए पुरस्कार जाहेर कर्यो छे पण उपचार थयो नथी एथी ए मळ्यो तो नथी. माटे 'ऋणमुक्त' अर्थ लेवानुं अगवडभर्युं छे.

(२९) *मदमो.*मां काबुलीने गयेली गंगनी पत्नी दूधां, गंग अने काबुली वच्चे युद्ध थाय छे त्यारे, काबुलीने गंगना कमरनी कटार लई एनो घात करवा कहे छे, जे काबुली समजी शकतो नथी. ए वखते गंग कहे छे –

ए सुं समजे मुरखो, तु जोजे माहारा हाथ.

*खाधु-पीधुं माहरू, ते **ओशींगल** कीध,*

एने कहुं ते में लहूं, रूडी शीक्षा दीध. (६९१–९२)

(ए मूर्ख शुं समजवानो छे. हवे तुं मारो हाथ जोजे. आज सुधी तें मारुं खाधुं-पीधुं तेनो आज बदलो वाळी आप्यो. तें जे एने कह्युं ते हुं समजी गयो. तें सारी शिखामण आपी.)

संपादके आ अने पछीनां उदाहरणो परत्वे 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे पण अहीं 'ओशींगल कीध' एवी रचना छे. 'तारी जातने ऋणमुक्त करी' एम अर्थ लई शकाय, पण 'बदलो वाळ्यो' ए अर्थ वधु स्वाभाविक लागे छे. अनंतराय रावळे एमना संपादनमां आ अर्थ लीधो छे.

(३०) एमां ज, गुणकाना पंजामां सपडायेली मोहना एमांथी छटकी नासी जवा तत्पर थई होय छे त्यारे विचारे छे –

*गुणका गुण दीधो मुने, कांईक **ओशीकल** थाउ. (१०१६)*

(गुणकाए मने गुण-उपकार कर्यो छे, ते तेना ऋणमांथी कंईक मुक्त थाउं / एनो बदलो वाळुं.)

वस्तुतः अहीं 'गुण दीधो' ए कटाक्षमां बोलायेलुं वचन छे. गुणकाए तो अपकार कर्यो छे. एटले 'ऋणमुक्त थवा' करतां 'बदलो वाळवो'नो अर्थ वधु उपयुक्त गणाय. आ उद्‌गार पछी जेणे जेवुं कर्युं होय तेवुं सामुं करीए तेवी मतलबनो छप्पो आवे छे ते पण 'बदलो वाळवो'ना अर्थनुं ज समर्थन करे. मोहना जाय छे पण गुणकाना

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाककान कापीने.

(वचन) पाळवुं

'वचन' जेवा शब्दना संदर्भे 'उसींकल' शब्द आवे त्यारे 'वचनना भारमांथी मुक्त थवुं' एवो अर्थ थाय. एमांथी 'वचननी पूर्ति करवी, वचन पाळवुं' एवा सामान्य अर्थ पण विकसी शके. मध्यकाळमां एवो प्रयोग पण सांपडे छे जेमां वचननी पूर्ति करीने एमांथी छूटी जवानुं अभिप्रेत नथी, वचननुं अनुवर्तन – अनुपालन करवानो अर्थ छे. एटलेके '(वचन) पाळवुं'नी व्यापक अर्थछाया आपणे लेवानी रहे छे. अगाउना (२५)मा उदाहरणमां *पुछें **उशंकल थावो*** एटले "पूछ्युं छे तो ए मुजब वर्तो – करो" एवो अर्थ अभिप्रेत होवानी पण शक्यता गणाय. 'वचन' जेवा शब्दो साथे आवता 'उसींकल' शब्दना अन्य प्रयोगो हवे आपणे जोईए.

(३१) पद्मनाभकृत 'कान्हडदे-प्रबंध' (१४५६) (भा.३–४, संपा. कांतिलाल ब. व्यास, १९७७)मां विष्णुनो अवतार लेखायेल कान्हडदे कहे छे –

राउल भणइ, "व्यास कुण साखि, ताहरउ धूम न जोसिउं आंखि,
*थ्या **उसंकल** अवसर भलइ, दीधउं वचन जनमि आगिलइ." (४,२९१)*

(राजा कहे छे – व्यास, कोण साक्षी बनशे ? तुं जौहरनो जे अग्नि पेटावीश तेनो धुमाडो हुं मारी आंखथी जोईश नहीं. आगला जन्ममां अमे जे वचन आप्युं हतुं तेना भारमांथी आ शुभ अवसरे अमे मुक्त थया / ते वचन आ शुभ अवसरे अमे पाळ्युं.)

आ पछी अलूखानना स्कंध भांगीने रुद्रने छोडाव्यानो तथा वालिवध ने शिशुपालवधनो कान्हडदेने मुखे उल्लेख थयो छे. ते पछी देव कलियुगमां अवतार लई, पोतानुं वचन पाळी स्वस्थाने गया एम वर्णन छे.

संपादके संबंधित पंक्तिनो "अमे आवा (धर्म)युद्धमां वीरगति पामवानो मंगल अवसर मळतां (ईश्वरना) बहु ओशिंगण थया छीए" एवो अनुवाद कर्यो छे. एटलेके 'उसंकल' शब्दने एमणे 'उपकृत'ना अर्थमां लीधो छे. भगवद्गोमंडले पण आ पंक्तिने संदर्भे 'आभारी, उपकृत' अर्थ आप्यो छे, जे योग्य नथी.

(३२) *शृंगारं.*मां युद्ध माटे प्रयाण करती वखते अजितसेन पोतानी पत्नी शीलवतीने कहे छे –

*वचन **उंसीकल** आपणा, हवइ म विसारसि चित्ति,*
दिन दिन अधिक वधारयो, वहाली आपणी प्रीति रे (८६६)

(पोतानां वचननुं पालन करजे अने हवे मने चित्तमांथी विसारती नहीं.)

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे, परंतु 'मुक्ति'नी वात अहीं संगत बने तेम

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नथी.

(३३) *मदमो.*मां पुरुषवेशे एक स्त्रीने परण्या पछी विदाय लेतां मोहना कहे छे –

*जरूर जातरा माहारे जावुं, इष्ट देवने **ओशीकल** थावुं. (१०५०)*

(मारे अवश्य जात्राए जवानुं छे अने इष्टदेवना ऋणमांथी मुक्त थवानुं छे / इष्टदेवने बदलो वाळवानो छे / इष्टदेवनी मानता पूरी करवानी छे.)

अहीं '-ने ओशीकल थवुं' एवो प्रयोग छे तेथी 'बदलो वाळवा'नो अर्थ वधारे साहजिक रीते बेसे. संदर्भ तो जात्रानी मानता (वचन) मानेली होय अने एनुं पालन करवानुं छे एवो समजाय छे. तेथी 'पाळवुं, पूर्ति करवी'नो अर्थ पण होवानो संभव रहे छे.

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे. अनंतराय रावळे पण एमना संपादननां ए ज अर्थ आप्यो छे.

आभारी, ऋणी

'ल'कारवाळुं रूप वपरायुं होय अने 'आभारी, ऋणी' एवो अर्थ – ने एवो ज अर्थ – थतो एवुं एक विरल उदाहरण मळे छे ए खास नोंधपात्र छे. आमां बे शक्यता छे : (१) 'ओशिंगण' अने 'ओसिंकल' जुदा ज शब्दो होय अने अहीं 'ओशिंगण'ने स्थाने 'ओसिंकल' कोईक भूलथी आवी गयो होय; (२) 'ल'कारवाळा रूपनो ज अर्थविकास थयो होय – ऋणमुक्त करवुं, 'ऋणमुक्त थवानी तक आपवी, ऋणमुक्त थवानी तक आपी आभारी करवुं. ने पछी 'ल'कारवाळुं रूप 'ण'कारवाळा रूपमां परिवर्तन पाम्युं होय.

प्राप्त उदाहरण कमलविजयकृत 'चंद्रलेखा रास' (जैन गूर्जर कविओ, बीजी आवृत्ति, भा.६, पृ.४७०)मां छे :

गुरुपदयुग युगतस्युं, वलि वंदु बहु वार,

__ओसिकल__ बहु एहना, ग्यानदानदातार. (५)

(गुरुना पदयुग्मने योग्य रीते अनेक वार वंदुं छुं. गुरु ज्ञानदान आपनार छे ने अमे एमना खूब ऋणी छीए.) १९६४ जेटलो वहेलो आ प्रयोग मळे छे ते खास नोंधपात्र छे.

व्युत्पत्ति

'उसींकल' शब्दनी जुदीजुदी व्युत्पत्तिओ सूचववामां आवी छे :

(१) त्रंबकलाल एन. दवे (ए स्टडी ऑव् गुजराती लॅंग्विज, १९३५) सं. उत्संकलित, प्रा.उस्संकलिअ एवी व्युत्पत्ति सूचवे छे.

(२) हरिवल्लभ भायाणी (मदनमोहना, १९५५) सं.उत्+शृंखला, प्रा.ओ+सिंखला

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवी व्युत्पत्ति सूचवे छे.

(३) के. का. शास्त्री (नळाख्यान, १९५६) सं.अप-शृंखल परथी 'उसींकल' आव्यो होवानी शक्यता दर्शावे छे.

(४) कांतिलाल ब. व्यास (कान्हडदे प्रबंध, भा.३–४, १९७७) सं.उपसंग्रह, प्रा.उव-संग्रह साथे 'उसींकल'ने सरखाववानुं सूचवे छे.

आमांथी बीजी व्युत्पत्ति वधारे प्रतीतिकर जणाय छे. सं.उत्+शृंखल परथी आवेलो बीजो एक शब्द 'उच्छृंखल' (मध्यकाळनो 'उछंकल') आपणने जाणीतो छे. एमां नियमनी शृंखला छोडी देवानो अर्थ छे त्यारे 'उसींकल'मां ऋण के भारनी शृंखला. एकमां अ-पालननो अर्थ छे, बीजामां पालननो अर्थ विकसे छे अने आम एक ज मूळमांथी आवेला बन्ने शब्दो, अंते, अर्थना बे विरुद्ध छेडा व्यक्त करता देखाय छे. शब्दार्थना इतिहासनो आ कौतुकमय दाखलो छे.

[फार्बस गुजराती सभा त्रैमासिक, जान्यु.–मार्च, १९९०]

□

४५. काण, काणि, काणी, कांणि, कुलकाणि, मुहकाणि

'काण' शब्द अत्यारे 'मरण पाछळनी रोककळ, खरखरो, दिलसोजी' ए अर्थमां जाणीतो छे. 'काणे जवुं' 'काण मांडवी' 'मोंकाण' 'काण-मोंकाण' वगेरे प्रयोगो आपणने मळे छे. आपणा कोशो 'काण' शब्दनो आ अर्थ ज नोंधे छे; भगवद्गोमंडल बीजा घणा अर्थो नोंधे छे, पण तेमांथी केटलाक संस्कृत शब्दकोशने आधारे मुकायेला जणाय छे, तो बीजा केटलाक अर्थोनी प्रमाणभूतता शंकास्पद जणाय छे.

'एना घरमां तो रोज आम काण मंडाय छे', 'ए दुखियाराए मारी पासे मोंकाण मांडी' जेवा 'काण'ना लाक्षणिक प्रयोगो पण व्यवहारमां सांभळवा मळे छे, जेमां 'दुःख के झघडानुं वातावरण', 'दुःखभरी कथनी' ए अर्थो विकस्या छे. पण आपणा कोशोए व्यवहारना आ प्रयोगोनी नोंध नथी लीधी, भगवद्गोमंडले पण नहीं.

'काण' शब्दनो पूर्व-इतिहास तो आपणने थोडो मूंझवे एवो छे. छेक अपभ्रंश-काळथी आ शब्द वपरातो आव्यो छे अने एमां विभिन्न अर्थछायाओ जोवा मळे छे. अहीं, आजे जाणीता अर्थथी जुदा अर्थोमां आ शब्द प्रयोजायो छे तेनी नोंध लेवानो उपक्रम छे.

अपभ्रंशना अने गुजरातीना 'काण' शब्दना प्रयोगो बहुधा जुदी अर्थपरंपरा दर्शावे छे तेथी ए बन्नेने अलग पाडीने आपणे वात करीशुं. (अपभ्रंशना प्रयोगो डॉ. हरिवल्लभ भायाणी पासेथी मने प्राप्त थया छे, अनुवाद साथे.)

अपभ्रंशना प्रयोगो

(१) स्वयंभूकृत 'पउमचरिय' (नवमी सदीनुं चोथुं चरण) (संपा. हरिवल्लभ चू.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भायाणी, १९५३)मां –

आएं समाणुं फिर कवण खत्तु,
घाइज्जइ नासंतो वि सत्तु
*जं फिट्टइ जम्म-सयाहं **काणि***
किर जाम पधावइ सूल-पाणि. (१०, १२, १–२)

रावण साथेना युद्धमां हारीने नासी जता वैश्रवणने मारी नाखवा माटे कुंभकर्ण तेनी पाछळ जवा करे छे त्यारे बोलायेली आ उक्ति छे. एनो अनुवाद आ प्रमाणे थाय : "आनी साथे वळी क्षात्रधर्म (पाळवानी) ते वात होय ? (आवा) नासता शत्रुने पण हणवानो ज होय, जेथी सेंकडो जन्मनी 'काणि' फीटे – एवुं कहेतो ज्यां ते हाथमां शूल पकडीने दोडवा जाय छे, त्यां....."

संपादके आ अने पछीना उदाहरणने अनुलक्षीने 'वैर ?' एम अर्थ नोंध्यो छे. वस्तुतः आ संदर्भमां अहीं 'सेंकडो जन्मनुं वैर', 'सेंकडो जन्मनो झघडो', 'सेंकडो जन्मथी मने लागेलुं कलंक' एम 'वैर', 'झघडो', 'कलंक' त्रणे अर्थो बेसे छे. 'कलंक' अर्थ पछीथी राजस्थानी-गुजरातीमां विकसेला 'लज्जा'ना अर्थ साथे संबंध व्यक्त करे, परंतु अपभ्रंशनी 'काणि'ना प्रयोगनी परंपरा 'झघडा'ना अर्थने वधारे टेको आपे छे, जे आपणे हवे पछी जोईशुं. 'वैर'नो अर्थ 'झघडा' साथे संकळायेलो ज गणाय.

देशी शब्दसंग्रहे 'काणि' शब्दनो 'वैर' एवो अर्थ नोंध्यो छे ते आवा कोईक प्रयोगने अनुलक्षीने हशे.

(२) ए ज कृतिमां –

*सहुं सालएहिं किर **कवण काणि,***
जई घाइय तो तुम्हहुं जि हाणि. (१३, ११, ९)

मय राक्षस रावणने एना साळाओ खरदूषणने न मारवानी सलाह आपे छे ते प्रसंगनी आ उक्ति छे. एनो अनुवाद आम थाय : "साळानी साथे ते 'काणि' करवानी होय ? तेने मार्यो होय तो तेथी तने ज हानि थाय."

अहीं 'वैर' के 'झघडो' ए अर्थ बेसी शकशे, पण 'कलंक' ए अर्थ बेसी नहीं शके.

(३) साधारण कविकृत 'विलासवइ कहा' (१०३७) (संपा. र. म. शाह, १९७७)मां –

*एहु चोरु समप्पि, म करहि **काणि**. (१, १०, ७)*

नायक पोताना आश्रये आवनार चोरने रक्षण आपे छे त्यारे एने पकडवा मागनार नायकने आ शब्दो कहे छे – "आ चोर सोंपी दे. 'काणि' न कर." अहीं स्पष्ट रीते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो 'झघडो' अर्थ बेसे छे. "अमारी साथे दुश्मनावट न कर / वेर न बांध" एम अर्थ पण लई शकाय.

(४) रत्नप्रभसूरिकृत 'रिसह-पारण-संधि' (११८२) (संधिकाव्यसमुच्चय, संपा. र. म. शाह, १९८०)मां –

*धणवंत दिंत न हु करहि **काणि**. (३, ३)*

"धनवान लोको दान देवामां 'काणि' करता नथी" ए वाक्यमां 'काणि'नो 'वेर', 'झघडो' के 'कलंक' अर्थ न ज बेसे, 'संकोच' एवो अर्थ ज बेसे. राजस्थानी-गुजरातीमां 'शरम, संकोच' एवा अर्थमां 'काणि' शब्द वापरवानी दीर्घ परंपरा मळे छे पण ए शब्द आटलो वहेलो आ अर्थमां वपरायेलो मळे छे ए खास नोंधपात्र छे. अपभ्रंशमां 'झघडो' ए अर्थनी व्यापक परंपरानी साथे आ अर्थनुं अस्तित्व सविशेष नोंधपात्र बने.

(५) मेरुतुंगाचार्यकृत 'प्रबंधचिंतामणि' (१३०५) (संपा. जिनविजय मुनि, १९३३)मां –

*लच्छि-वाणि-**मुहकाणि**, सा पइं भागी मुह मरउं,*
हेमसूरि-अत्थाणि, जे ईसर ते पंडिया. (पृ.९२, पद्य २०२)

हेमचंद्राचार्यनी प्रशस्ति करवानी स्पर्धामां ऊतरेला बे चारणोमांनो एक एमने आवता जोईने आ प्रमाणे कहे छे – "लक्ष्मी अने सरस्वती वच्चे जे 'मुहकाणि' छे, ते तें मिटावी. हुं तारा मों पर ओळघोळ थाउं छुं. हेमसूरिनी सभामां जेओ श्रीमंत छे तेओ पंडित पण छे."

लक्ष्मी अने सरस्वती एक स्थाने रहेतां नथी, ए रीते एमनी वच्चे 'वेर' के 'झघडो' होवानी वात जाणीती छे. एटले अहीं 'मुहकाणि'नो एवो कोई अर्थ लेवानो थाय. 'मुह' शब्दने लक्षमां लईए एटले 'बोलचालनो झघडो' एम करवानुं थाय. 'कलंक' के 'शरम, संकोच' ए अर्थने अहीं अवकाश जणातो नथी.

आम, अपभ्रंशनां चार उदाहरणोमां 'काणि' शब्दनो जे एक अर्थ सुसंगत अने सरळ रीते बेसे छे ते 'झघडो' छे. एथी एनी प्रमाणभूतता सौथी वधारे गणाय. ए चार उदाहरणोमांथी त्रणेकमां 'वेर' ए अर्थने अवकाश रहे छे, पण 'शरम, संकोच' ए अर्थने लगभग अवकाश नथी. एक उदाहरणमां 'वेर', 'झघडो' ए अर्थोने बिलकुल अवकाश नथी ने निर्विवाद रीते 'संकोच'नो अर्थ बेसे छे, जे अर्थने पछीनी परंपरानो टेको छे. आ परथी 'झघडो'ना अर्थमां 'काणि' ए अपभ्रंशमां जूनो प्रयोग होवानुं समजाय. 'लज्जा, संकोच'ना अर्थमां 'काणि'नो प्रयोग ए पाछळनो फणगो समजाय. पछीथी बंने प्रयोगो साथे चालता होवानुं पण आ उदाहरणो बतावे छे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुजरातीना प्रयोगो

(१) *प्राचीसं.*-अंतर्गत पाल्हणकृत 'आबूरास' (१२३३)मां –

त करिज मंदिर तिजपाल तुहुं,

हियइ म धरिजहु ***काणि.*** *(२३)*

राजा सोम तेजपालने आबु पर मंदिर बांधवा माटे जग्या आपे छे त्यारे बोलायेली आ उक्ति छे. संपादकोए अहीं 'काणि'नो अर्थ 'चिंता' कर्यो छे. ए अर्थ संदर्भमां बेसे छे. पण गुजरातीना जे अन्य प्रयोगो मळे छे तेमां 'चिंता' अर्थ भाग्ये ज जोवा मळे छे, 'लज्जा, शरम, संकोच' ए अर्थ अत्यंत व्यापक छे. एमांथी 'संकोच' ए अर्थ अहीं सरस रीते बेसी जाय छे : "मनमां संकोच न राखतो". अने राजस्थानी शब्दकोश 'काण' 'काणि' ए शब्दोना अनेक अर्थो नोंधे छे तेमां 'मान, प्रतिष्ठा, इज्जत; लोकलज्जा, मर्यादा; संकोच; हद, सीमा' ए अर्थो छे, पण 'चिंता' ए अर्थ नथी. एटले चिंता ए अर्थने आ पद्यना संदर्भ सिवाय बीजो टेको नथी एम कहेवाय. आ रीते अहीं 'संकोच' ए अर्थ लेवो ज इष्ट कहेवाय. ('चिंता' ए अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्रमांक ११).

(२क) *गुर्जरा.*-अंतर्गत वस्तिगकृत 'चिहुंगति चोपाई' (१४मी सदी पूर्वार्ध)मां –

पुद्गल तणीय संख्या जाणि फिरतइं जीवि न कीधी ***काणि*** *(४९)*

संपादके 'a visit of condolence' (खरखरो) ए अर्थ आप्यो छे, जे ए शब्दनो अत्यारे प्रचलित अर्थ छे. पण अहीं ए कोई रीते बंधबेसतो थतो नथी. 'संकोच' ए अर्थ ज संगत बने तेम छे – "पुद्गलनी घणी संख्या छे. एमां भटकवामां जीवे कशो संकोच राख्यो नथी." मतलब के जीव अनेक पुद्गलोमां भम्यो छे.

(२ख) *गुर्जरा.*-अंतर्गत शालिभद्रसूरिकृत 'पंच पांडव चरित रास' (१३५४)मां –

मइं मुरखि अजाणि अविणउ कीधउ तुम्हा रहइं,

मूं मोटि ***मुहकाणि*** *तुम्हं खमु अवराहु मुह. (८,१२)*

वनवास पामेला पांडवोने पुरोचन द्वारा आ शब्दो कहेवडावी दुर्योधन एमने वारणावत जवा विनंती करे छे. संपादकोए अहीं 'मुहकाणि'नो अर्थ 'a visit of condolence' (खरखरो) आप्यो छे, जे 'मोंकाण' शब्दनो अत्यारे प्रचलित अर्थ छे. परंतु ए स्पष्ट छे के आ संदर्भमां ए अर्थ तद्दन असंगत छे. अपभ्रंशनो 'वैर' 'झघडो' ए अर्थ पण बेसी शके तेम नथी. गुजराती परंपरामां व्यापक रीते जोवा मळतो 'लज्जा, शरम'नो अर्थ बेसी शके खरो – "में मूरखाए अजाणपणे तमारो अविनय कर्यो. मने एनी खूब शरम आवे छे. तमे मारा अपराधनी क्षमा करो" – परंतु 'दुःख' 'वसवसो' 'अफसोस' एवो अर्थ कदाच वधु उपयुक्त लागे – "मने एनुं भारे दुःख छे, मने एनो भारे वसवसो / अफसोस छे." तो, 'काणि' शब्दना आ प्रकारना अर्थनो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संभव केटलांक उदाहरणोमां आपणने देखायो छे (जुओ आ पूर्वे ६, १४, १९ अने २० तथा हवे पछी २१) एनुं अहीं समर्थन सांपडे छे एम कहेवाय. 'मुहकाणि'नो आ उदाहरणमां तो 'काणि'थी कंई विशेष अर्थ होय एम जणातुं नथी.

(२) मेरुसुन्दरगणिकृत 'शीलोपदेशमाला' (१४६९) [संपा. ह. चू. भायाणी वगेरे, १९८०]मां शब्दकोशमां 'काणि=मर्यादा, दाक्षिण्य, लाज (काणिइं पाडी = शरममां नाखी, शरमावी)' एवी नोंध मळे छे, परंतु प्रयोगस्थान दर्शाव्युं नथी तेथी आ अर्थोने प्रयोगनो खरेखर केटलो टेको छे ते नक्की थई शकतुं नथी. 'काणिइं पाडी' एम ज प्रयोग होय तो 'मर्यादा, दाक्षिण्य' ए अर्थोने अवकाश केटलो रहे ए प्रश्न छे. 'दाक्षिण्य' ए अर्थने तो परंपरानो के कोशोनो टेको पण जणातो नथी. ए अर्थ शाने आधारे अपायो हशे ते स्पष्ट थतुं नथी.

(३) *आरारा.*-अंतर्गत राजकीर्तिकृत 'आरामशोभारास' (१४७९)मां –

जे थांनकथी आवीयां कहिता मं करिसि ***कांणि.*** *(६४)*

माथे बगीचावाळी विद्युत्प्रभा तरफ राजा आकर्षाय छे. मंत्री ए कन्याने तेनो परिचय पूछे छे त्यारे आ वाक्य बोले छे. अहीं 'कांणि' शब्द 'शरम, लज्जा, संकोच'ना अर्थमां छे ए स्पष्ट छे : "तुं क्यांनी छो वगेरे कहे, लजवाती नहीं."

(४) *हरिवि.* (संभवतः १५मी सदी)मां –

वयरीय विरहीय मारतु मार तु न करि ***कांणि.*** *(५२)*

कृष्णना कामबाणथी वींधायेली विरहिणी गोपीनी आ उक्ति छे. संपादके 'कांणि'नो अर्थ 'लज्जा' नोंध्यो छे अने आ प्रमाणे अनुवाद आप्यो छे – "कामदेव पोताना वैरी विरहीने मारी नाखतां पण लाजतो नथी." 'लज्जा' ए अर्थ, आम, अहीं यथायोग्य छे. ए नोंधपात्र छे के गुजराती संपादन-प्रकाशनमां 'कांणि' शब्दनो 'लज्जा' एवो अर्थ सौ प्रथम अहीं नोंधायो छे – १९६५मां.

(५) *नलाख्या.* (१५मी सदी)मां –

विहिची मेरु महागिरि नाप्यु पात्र तणि तां पाणि,
तु शूं दान कर्युं मि महीमांहां, मनि मोटी ए ***काणि.*** *(४, ८)*

नळना मननो विचार अहीं व्यक्त थयो छे. संपादके 'काणि' शब्दनो 'खरखरानी कथनी, मरेला पाछळनी रोककळ' एवो अर्थ आप्यो छे ते 'काण' शब्दना अत्यारे प्रचलित प्रयोगनो अर्थ छे, पण आ संदर्भमां ए केम लागु पडे ए कोयडो छे. अहीं 'संकोच' ए अर्थ बंध बेसे छे – "सुपात्रना हाथमां मेरु पर्वत वहेंची न आप्यो तो में आ पृथ्वीमां शुं दान कर्युं कहेवाय एनो नळना मनमां भारे संकोच हतो."

कदाच, 'खटक' 'वसवसो' ए अर्थ वधारे सारी रीते बंध बेसे : "नळना मनमां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारे वसवसो हतो.'' ('खटक' 'वसवसो' ए अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्रमांक १७क अने २१)

(५क) *कादं(ध्रु).* तथा *कादं(शा).* (१५मी सदी)मां –

इतर कन्यानी पिरि जु मेहेलीइ ***कुल-काणि.***

ध्रुवे शब्दकोशमां 'प्रतिष्ठा' अने टिप्पणमां 'कुळनी ख्याति, प्रतिष्ठा' एम अर्थ आप्यो छे अने हिंदी 'कुलकानी' शब्दनो हवालो आप्यो छे. शास्त्रीए 'कुलनी मर्यादा' अर्थ आप्यो छे, जे संदर्भमां बराबर वधारे बंध बेसे छे : ''अन्य कन्याओनी पेठे जे कुलमर्यादाने छोडे छे.''.

(६) *वीसरा.* (१४५० के पछी)मां –

हम तुम्ह बार वरसकी ***कांणि.*** *(२९)*

राजमती वीसलदेवने टोणो मारे छे के तारा देशमां मीठाना खडको छे, पण ओरिस्साना धणीने त्यां तो हीरानी खाणो छे, त्यारे वीसलदेव ओरिस्साना राजदरबारमां जवानुं मनथी नक्की करी ले छे अने आ उक्ति बोले छे. 'कांणि' शब्द आ कृतिमां आ उपरांत बीजां बे स्थाने वपरायो छे, ते बधां स्थानोने अनुलक्षीने संपादक एनो अर्थ 'agreement, convention' (समजूती, रूढि) एवो आपे छे. प्रस्तुत स्थाने ए अनुवाद आम करे छे – 'You and I (must undertake) an agreement (to remain separate) for twelve years.' (तारे अने मारे बार वरस सुधी जुदां रहेवानी समजूती करवी जोईए.)

संपादक स्वीकारे छे के 'कांणि'नो अर्थ कोयडारूप छे. पूर्वे माताप्रसाद गुप्ताए आपेला 'सोगंद', 'प्रतिज्ञा' ए अर्थ माटे कोई प्रमाण न जडवाथी राजस्थानी शब्दकोशे आपेला 'behavioural convention'मांथी 'behavioural constraint, convention' एवो अर्थ विकस्यो होय एवुं ए अनुमान करे छे. संपादक अहीं 'behavioural constraint, convention' एवा शब्द वापरे छे ते परथी समजाय छे के एमने 'व्रत, नियम, लोकाचार'नो अर्थ अभिप्रेत छे, जे 'agreement' शब्द व्यक्त न ज करी शके अने 'convention' पण एने माटे पूरतो शब्द न गणाय.

राजस्थानी शब्दकोशे 'कांणि'ना आपेला अर्थ (जे आ पूर्वे आपणे नोंध्या छे)मांथी कयो अर्थ 'behavioural convention' द्वारा संपादकने अभिप्रेत हशे ते समजातुं नथी. कोशमां 'लोकलज्जा, मर्यादा' अर्थ छे, पण एमां 'अदब' 'आमन्या'नी अर्थछाया छे, 'व्रत, नियम, लोकाचार'ना अर्थने अवकाश आपे एवुं कशुं नथी. समग्र परंपरामां पण अन्यत्र क्यांय आ शब्द आ अर्थमां वपरायेलो देखातो नथी. आ कृतिमांनां बीजां

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बे स्थानोए तो ए अर्थने भाग्ये ज अवकाश छे ने 'लज्जा, संकोच'ना अर्थने पूरो अवकाश छे एम हवे पछी आपणे जोईशुं. एटले 'व्रत, नियम, लोकाचार' ए अर्थने कोई टेको होय एवुं जणातुं नथी. आ संदर्भमां ए केटलो उपयुक्त छे ए पण विचारवा जेवुं छे.

राजस्थानी-गुजराती परंपरामां व्यापक रीते मळतो 'लज्जा, संकोच'नो अर्थ तो अहीं बेसतो नथी ज, अपभ्रंशनो 'झघडो, वेर' ए अर्थ पण नहीं. बृहत्हिन्दीकोशे सूरदासनी एक पंक्तिना टेका साथे आपेलो 'कानि, कानी' ए शब्दनो 'कष्ट, दुःख' ए अर्थ अहीं बराबर बेसी जाय छे – "मारे ने तारे (हवे) बार वरसनुं (वियोगनुं) कष्ट (उठाववानुं)." परंतु आ अर्थने राजस्थानी-गुजराती परंपरामांथी बहु ओछो टेको मळे छे. ('कष्ट'ना अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्रमांक १९). तेम छतां अन्य प्रमाणभूत अर्थ न सांपडे त्यां सुधी आ अर्थने स्वीकारवानुं विचारी शकाय. गुप्ताने संपादकना अर्थो तो स्वीकार्य जणाता नथी.

(७) ए ज कृतिमां –

बोलइ भावज छंडीय ***काणि.*** *(५०)*

राजमतीने छोडी परदेश खेडवा तैयार थयेला वीसलदेवने भाभी ठपको आपे छे ते प्रसंगनी आ पंक्ति छे. संपादके अहीं अनुवाद आम आप्यो छे – 'His brother's wife spoke, abandoning convention' (भाभी रूढि, लोकाचारनो त्याग करी बोली). आ अनुवाद नभे तेम छे, पण परंपरामां मळता 'लज्जा, संकोच, लोकलज्जा, मर्यादा' ए अर्थोथी आगळ जवानी जरूर नथी – "भाभी संकोच छोडीने, मर्यादा छोडीने बोली."

(८) ए ज कृतिमां -

चालियउ ऊलग छंडी(य) ***काणि.*** *(५३)*

वीसलदेव नीकळवानी तैयारी करे छे त्यारे आ पंक्ति आवे छे. संपादके अनुवाद आम आप्यो छे – "he (wanted to) go into service as a courtier, abandoning convention" (रूढि तजीने ए राजसेवा माटे जवा तैयार थयो). अहीं पण 'रूढि' करतां 'लोकलज्जा, कुलमर्यादा' ए अर्थो ज वधु उपयुक्त गणाय.

(९) *आरारा.*-अंतर्गत विनयसमुद्रकृत 'आरामशोभा चोपाई' (१५२७)मां –

मागि मागि हिव म करिसि ***काणि.*** *(६२)*

पोताना उपर उपकार करनार विद्युत्प्रभा प्रत्ये बोलायेली आ नागनी उक्ति छे. अहीं 'काणि'नो 'संकोच' ए अर्थ अत्यंत स्पष्ट छे – "माग, माग, हवे संकोच न राखती."

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१०) नाकरकृत 'आरण्यक-पर्व' (१६मी सदी मध्यभाग) (महाभारत भा.२, संपा. केशवराम का. शास्त्री, १९३४) :

विद्या न भणि, लोपि निजकर्म,
अवसर आवि नवि करि धर्म,
*त्रिया तणी जे आणइ **काणि**,*
तेह तु आलशी चोथु जाणि. (१०६, ४१)

कृतिमां चार प्रकारना आळसुओनुं वर्णन थयेलुं छे, तेमां आ आखी कडीमां चोथा प्रकारना आळसुनुं वर्णन छे. संपादके अहीं 'काणि'ने अर्वाचीन गुजराती 'काण'ना अर्थने आधारे घटाव्यो छे अने "स्त्री मरी जतां जे रडतो आवे" एवो अर्थ कर्यो छे. विशेष समजूती पण आपी छे के "मुद्दे तेम न करतां तेणे सत्ताथी बीजी स्त्री करवी, तो ते आळसु न गणाय." देखाई आवे छे के वाक्यान्वय साथे घणी छूट लईने अर्थ करवामां आव्यो छे अने समजूती पण साहसिक छे. अहीं 'लाज, शरम, संकोच' ए अर्थ बेसाडवामां कशी मुश्केली लागती नथी – "स्त्रीनी जे लाज-शरम राखे, एने कहेवा योग्य कही न शके ए चोथो आळसु."

(११) *अंबरा.*(१५८३)मां –

देवादित्य राणी प्रति कहइ, लज्जा कारण मुझ मनि दहइ,
*अपयश एक धर्मनी हाणि, कहु साचुं म करु मनि **काणि**. (१०७–०८)*

राजाराणी वनवासमां छे. राणीने पहेलेथी पेट रह्युं हतुं ते हवे गर्भ वधतां राजाने एनी जाण थाय छे. ए प्रसंगे राजा राणीने खरी हकीकत पूछतां आ शब्दो बोले छे. संपादके 'काणि' शब्दनो अर्थ 'चिंता' आप्यो छे, जे पहेली दृष्टिए बेसी जाय, परंतु 'चिंता' अर्थने परंपरानो टेको नथी अने क्रमांक १नी पेठे 'लज्जा, संकोच' ए अर्थ वधारे योग्य रीते बंध बेसे छे : "राजा देवादित्य राणीने कहे छे के (वानप्रस्थमां पुत्रजन्मनो अवसर आवतां) मने लज्जा थाय छे ने तेथी मनमां बळे छे. धर्मभंगनो अपयश आमां रहेलो छे. खरेखर हकीकत शुं छे ते कहो, मनमां कशो संकोच न राखो."

(१२) *आरारा.*-अंतगर्त समयप्रमोदकृत 'आरामशोभा चोपाई'(१५९५)मां –

*आव्यउ पीहरि तुम्ह तणइ, खोलउ छंडी **काणो** रे. (१०५)*

पोतानो पिता लाडुनो घडो लाव्यो छे ते खोलवा राणी राजाने विनंती करे छे, त्यारे राजा द्वारा बोलायेली आ उक्ति छे. अहीं 'काण' (प्रास-अर्थे 'काणो')नो 'संकोच' ए अर्थ स्पष्ट छे – "तारा पियरथी ए आव्यो छे, माटे तुं ज संकोच छोडीने एने खोल."

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१३) *आरारा.*-अंतर्गत पूजाऋषिकृत 'आरामशोभा रास'(१५९६)मां –

*राजा बोलइ, 'म करु **काणि**', जोसी जंपइ मधुरी वांणि,*
'करउ सजाई वीवाह तणी, जिम सुख हुवइ राजा भणी.' (७२-७३)

प्रधान विद्युत्प्रभाना पिताने राजा पासे लावे छे ते प्रसंगनुं आ वर्णन छे. अहीं पण 'काणि'नो 'लज्जा, संकोच' ए अर्थ स्पष्ट छे. राजाना शब्दोनुं तात्पर्य एम छे के लज्जा, संकोच राख्या विना तारी शी इच्छा छे ते कहे, जेना जवाबमां ए ब्राह्मण (जोशी) विवाहनी तैयारी करवानुं सूचवे छे.

(१४) *कर्पूमं.*(१६१९)मां –

*उलग करतुतु, प्रभू, ताहरी, कसी **काणि** म आणेस माहरी. (३१६)*

प्रधान राजकुमारना शयनगृहमां छुपाईने सर्पने मारीने राजाने चौथी घातमांथी बचावे छे ने राणीना स्तन पर पडेला लोहीना छांटाने लूछवा जाय छे, त्यारे राजकुमार जागी जाय छे. प्रधानना हाथमां तलवार जोईने ए चमके छे, चिंतातुर बने छे अने पूछे छे – "आ ते तारी रीत ? निर्लज थईने हाथमां खड्ग लईने जोतो हतो ?" जवाबमां प्रधान उपरनी उक्ति बोले छे. संपादके, अलबत्त संदर्भने आधारे ज, अहीं 'काण'नो अर्थ 'शंका' कर्यो छे. ए अर्थ लेतां पंक्तिनो अनुवाद आम थाय – "स्वामी, हुं तमारी सेवा करतो हतो, मारा पर कशी शंका न लावशो." 'शंका' ए अर्थ आ संदर्भमां बराबर बेसी जाय छे. राजकुमार तरत प्रधानने शिक्षा करावावानुं मनमां विचारी पण ले छे, परंतु परंपरामांथी ए अर्थने टेको मळतो नथी ने आगळनी पंक्तिमां 'निर्लज' शब्द वपरायो छे ते जोतां अहीं 'लज्जा, संकोच'नो अर्थ रहेलो मानवो (मारी कशी शरम न राखशो, मारो कशो संकोच न राखशो) के 'शरम, संकोच' ए अर्थमांथी 'शंका'नो अर्थ विकस्यो छे एम मानवुं के पछी 'खटको/(शंकानुं) शल्य' एवो अर्थ लेवो ते कोयडो छे. ('खटको' ए अर्थ माटे जुओ क्रमांक १४ अने २०.)

(१५) *जिनरा.*-अंतर्गत जिनराजसूरिकृत 'वइरकुमार गीत'(१७मी सदीनुं पहेलुं चरण)मां –

*जउ तइ कबही अवगणी, धोटा, करि लोगणकी **काण**, धोटा,*
तउ परदेशी मीत ज्युं, धोटा, ऊठि चलेसी प्राण, धोटा.

(४, पृ.७१–७२)

दीक्षा लई संयममार्गे पळेला वज्रस्वामीनी मातानी पुत्रवात्सल्यनी लागणी व्यक्त करता गीतनी आ कडी छे. संपादके 'काण' शब्दनो 'लिहाज' (लज्जा, संकोच, अदब, मलाजो) अर्थ आप्यो छे ते यथायोग्य छे. माता अहीं कहे छे के लोकलाजने कारणे जो तुं मने अवगणीश तो हे पुत्र, मारा प्राण परदेशी मित्रनी पेठे चाली नीकळशे.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(राजस्थानी 'धोटा' एटले पुत्र.)

(१६) *उक्तिर.*(१७मी सदीनुं पहेलुं चरण)मां –

साधुसुन्दरगणिए 'काणि' शब्द नोंध्यो छे अने एनो संस्कृत पर्याय 'कानिः' आप्यो छे, परंतु आ तो मूळ शब्दनुं संस्कृतीकरण जणाय छे. तेथी 'काणि' शब्दना अर्थ पर कशो प्रकाश पडतो नथी. नहीं तो ते समयनी ज अर्थनी नोंध घणी मार्गदर्शक बनी होत.

(१७) *प्रद्युचु.*(१६२६)मां –

*तुम्हे केहनी म करु **कांणि**, हारइ ते शिर मूंडी आणि. (१२०)*

सत्यभामा अने ऋक्मिणीने गर्भ छे अने बन्ने वच्चे शरत थाय छे के पुत्रजन्ममां जे पाछळ रहे ते हारी गणाय. आ संदर्भमां बोलायेली आ उक्ति छे. संपादके 'काणि' शब्दनो 'लज्जा' एवो अर्थ आप्यो छे अने ए यथायोग्य छे. आ पंक्तिमां एम कहेवायुं छे के तमारे कोईनी शरम राखवानी जरूर नथी, जे हारे ते माथुं मूंडावे.

(१७क) एमां ज –

*ऊंपनु कोप थई चिचि **कांणि**. (५४८)*

आ पंक्तिनो शब्दकोशमां संदर्भ नथी. अहीं 'संकोच, खटको' एवो अर्थ संदर्भमां बराबर बंध बेसे छे : "(कृष्णे प्रद्युम्नकुमार साथे लडवानो) संकोच के खटको छोडी दीधो अने ए क्रोधाविष्ट थया." ('खटको' ए अर्थ माटे जुओ क्र.५ अने २०)

(१७ख) एमां ज –

*छांडी हापा शेठनी **कांणि**, धूरत एक घरि घालिउ आंणि. (३२७)*

आ पंक्तिनो पण आपेला शब्दकोशमां संदर्भ नथी. अहीं 'लाज, शरम'नो अर्थ स्पष्ट छे : "हापा शेठनी लाज छोडीने एणे एक धूर्तने बोलावी घरमां घाल्यो."

(१७ग) पुण्यसागरकृत 'अंजनासुंदरी रास' (१६५३) (जैन गूर्जर कविओ, भा.३, पृ.२२ पर उद्धृत अंश)मां –

सेवकनि सानिधि करी, देवो अविरल वाणि,
*जेम वेगे सिद्धि चढइ, काइ म राखिस **काणि**.*

सरस्वतीदेवीनी आ स्तुतिमां 'काणि'नो 'संकोच' अर्थ स्पष्ट छे : 'सेवकने सहाय करीने, अविरल वाणी आपजो, जेथी जलदी सिद्धि मळे. जरा पण संकोच न करशो.'

(१८) *हरिख्या.*(१६४८)मां –

तेडी लावो कन्याने ए वर सहित, भगवान !
*साथे जनेता तेडजो, तमे रखे करता **काण**. (११, ७)*

एक ब्राह्मणनी कन्यानो विवाह करावी आपवानुं हरिश्चन्द्र माथे ले छे त्यारे ए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्राह्मण प्रत्ये बोलायेला आ हरिश्चन्द्रना शब्दो छे. संपादके 'ठपकापात्र वर्तणूक' एवो अर्थ लीधो छे (जे भगवद्गोमंडलें समाव्ी लीधो छे !), जे संदर्भमां, जरा कढंगी रीते पण बेसे छे – "कन्यानी माताने पण साथे लावजो, (न लाववानी) ठपकापात्र वर्तणूक (भूल) न करशो." परंतु आ अर्थने परंपरानो टेको नथी अने परंपरानो जाणीतो 'संकोच' ए अर्थ अहीं आबाद रीते बेसी जाय छे – "माताने साथे लावजो, संकोच करशो नहीं." आ स्थितिमां, अहीं 'संकोच' ए अर्थ ज रहेलो होवानुं मानवुं जोईए.

(१८क) एमां ज –

ज्यम होय त्यम कहो, ऋषिजी ! रखे करता ***काण.***

अहीं 'संकोच'नो अर्थ स्पष्ट छे : "जेवुं होय तेवुं कहेशो, रखे कंई संकोच करता."

(१९) *प्राचीका.*-अंतर्गत अज्ञात कविकृत 'माधवानल कथा'(अनुमाने १७मी सदी पूर्वार्ध)मां –

सुणी वात काम्यन्य तणी, मन मांहि उपनी ***काणि,***
जेणि परि राजा दशरथ मूउ, तेणि पिरि माधव जाणि. (४१७)

कामकंदलाना मृत्युना समाचार मळतां एना आघातथी माधव मृत्यु पामे छे ते प्रसंगनुं वर्णन करती आ पंक्तिओ छे. संपादके 'काणि' शब्दनो 'विचार, चिंता, वात' एवा अर्थोनो तर्क कर्यो छे अने गुजराती 'कहाणी, काण' ए शब्दो तरफ ध्यान दोर्युं छे, पण अहीं 'काणि' शब्दनो प्रयोग थोडो कोयडारूप छे. 'लज्जा, संकोच' ए जाणीतो अर्थ अहीं उपयुक्त नथी; 'चिंता' ए अर्थने परंपरानो टेको नथी (जुओ आ पूर्वे क्रमांक १ अने ११) ते उपरांत अहीं 'चिंता' करतां आघातनी लागणीनो निर्देश वधु संभवित गणाय. तो पछी अहीं ए हिंदी 'कानि' (कष्ट, दुःख) शब्द रहेलो मानवो ? के पछी 'काणि'ना 'संकोच' अर्थमांथी 'खटको, शल्य' एवो अर्थ विकस्यो होवानुं अने अहीं अर्थ होवानुं मानवुं ? ('कष्ट, शल्य' ए अर्थो माटे जुओ क्रमांक ६, १४ अने २१)

(२०) *अखाका.*-अंतर्गत 'सोरठा'(१७मी सदी मध्यभाग)मां –

सहुय तारो साज, तुं स्वामी सर्वे तणो. (२१७)
बहु पग, बहु पाण, बहु नासा ने नेत्र बहु,
कर्ता न करे ***काण,*** *अंग-विचरण अळगां अखा. (२१८)*
नीचथी अतिशे नीच, आचरतुं नव ओसरे,
(पाठां. सहुए तोरां काज)
कर्म असंख्यनो कीच, तुंने न लागे, त्रीकमा ! (२१९)

आ सृष्टि ब्रह्मनो विस्तार छे, पण ब्रह्म एनाथी अलिप्त छे ए वेदांतना तत्त्वविचारने

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रजू करती आ पंक्तिओ छे. संपादके 'काण' शब्दनो 'कहाण, कथन' एवो अर्थ आप्यो छे, पण ते संदर्भमां अस्पष्ट ज रहे छे. अहीं पण 'काण' शब्दनो प्रयोग थोडो कोयडारूप छे, पण 'संकोच'नो अर्थ ज वधु प्रतीतिकर छे : ब्रह्म अनेक रूपे विस्तरे छे, एमां ए कर्ता कशो संकोच राखतो नथी, पण एनां ए अंगोनुं प्रवर्तन कर्ताथी जुदुं ज होय छे.

(२१) आनंदघनकृत 'बावीसी'(१७मी सदी उत्तराध)मां –

ज्ञांनस्वरूप अनादि तुह्मारुं ते लीधुं तुह्मे तांणी,
*जुओ अज्ञानदशा रीसावी, जातां **काणि** न आंणी हो. (१९, १)*

आ मल्लिजिनने संबोधायेली स्तुतिरूप उक्ति छे. एमांना 'काणि' शब्दना प्रयोगनुं सविशेष महत्त्व छे, ते एटला माटे के एनो ज्ञानविमलसूरिए करेलो (१७१३) अर्थ आपणने प्राप्त थाय छे. ज्ञानविमलसूरि आ कडीनी समजूती आ प्रमाणे आपे छे : 'हे नाथ ! तुह्मारुं अनादि ज्ञानस्वरूप निरूपाधिक ज्ञान ते तुह्मारुं तुह्मे ताणी लीधुं – निरावरणी थई संग्रह्युं. ते देखी अज्ञानदशा अनादिनी हती ते रीसावी गई. ते जाती जाणी देखीनइं काई मनमां शंका कांसलि नाणी, मनावी पणि नहीं.'

ए स्पष्ट छे के ज्ञानविमले 'काणि' शब्दना 'शंका' 'कांसलि' ए अर्थो कर्या छे. 'जातां काणि न आणी' ए वाक्य एमणे मल्लिनाथने संदर्भे घटाव्या छे ने अज्ञानदशाने चाली जतां जोईने मल्लिनाथना मनमां कशी 'शंका' के 'कांसलि' न थई एम एमनुं कहेवानुं छे. 'कांसलि' शब्दनो संपादके 'खटक, वसवसो' एवो अर्थ आप्यो छे (ए अर्थ शब्दकोशोमां नोंधायेलो मने मळ्यो नथी के कोई बीजो प्रयोग पण मळ्यो नथी; ए 'कासळ' एटले 'नडतर'नुं ज अन्य रूप ?) 'खटक' ए अर्थ अहीं बराबर बेसी जाय छे. 'शंका' शब्दने अहीं 'अचकाट, द्विधा' एवा अर्थमां आपणे लेवानो रहे, 'वहेम'ना अर्थमां नहीं. आ अर्थो 'संकोच'ना अर्थनी नजीक आवी जाय छे.

गमे तेम, मध्यकाळमां 'काणि' शब्द 'शंका' 'खटक' 'वसवसो' एवी अर्थछायामां समजवामां आवतो हतो एनो पाको पुरावो ज्ञानविमलसूरिना आ विवरणमांथी प्राप्त थाय छे अने आ पूर्वे आ अर्थोनो संभव देखायो छे (शंका – १४; कष्ट, दुःख, खटक – ६, १४, १९, २०, २२) तेने आथी टेको मळे छे.

'जातां काणि न आंणी' ए वाक्यने ज्ञानविमले मल्लिनाथ साथे जोड्युं छे तेने पछीनी कडीओनुं समर्थन छे. पछीथी निद्रा ने स्वप्नदशा रिसाई गई ने नाथे मनावी नहीं, मिथ्यामतिने अपराधिनी जाणी नाथे घरथी बहार काढी ए प्रकारनी उक्तिओ मळे छे. पहेली दृष्टिए तो आपणे अज्ञानदशानी साथे वाक्य जोडी दईए अने अज्ञानदशाए जातां कंई 'काणि' (संकोच, वसवसो) न करी एम अर्थ करी बेसीए. परंतु पछीनी कडीओनी उक्तिलढणो जोतां ज्ञानविमलसूरिना अर्थघटनने न स्वीकारवा कारण जणातुं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नथी.

(२२) *सम्यचो.*(१७मी उत्तराध)मां –

थया अने थास्ये जे सिद्ध अंश निगोद अनंत प्रसिद्ध,

तो जिनशासन सी भयहाणि, बिंदु गयै जलधि सी ***काणि.*** *(९२)*

संपादके 'काणि'नो 'हानि, खोट' एवो अर्थ आप्यो छे ते संदर्भ जोतां यथायोग्य लागे छे. स्वोपज्ञ बालावबोधमां पण 'काणि' शब्द एम ने एम रह्यो छे पण कथयितव्य स्पष्ट छे : "जे जीवो सिद्ध थया छे अने थशे ए तो निगोदना अनंतमा भाग समान छे, एथी प्रतिपक्षी माने छे तेम जिनमतमां संसारने कशो भय, कशी हानि नथी – संसार चाल्या ज करवानो छे, जेम सागरमांथी एक बिंदु ओछुं थये सागरने कोई हानि के खोट नथी." आ, वळी, 'काणी' शब्दनी एक विशिष्ट अर्थछाया छे, जोके 'संकोच' ए अर्थमांथी 'ओछप, खोट' एवा अर्थ सुधी जई शकाय. (आ अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्र.२४.)

(२३) जगन्नाथकृत 'सुदामो' (१७०० आसपास) (महाकवि प्रेमानंद अने बीजा आठ कविओना सुदामाचरित्र, संपा. मंजुलाल र. मजमुदार, १९२२)

रखे ***काण्य*** *(?) करता किशी तो मागतां मन मांहे. (१९)*

संपादके 'काण्य' विशे प्रश्नार्थ कर्यो छे, तेथी एमने ए शब्द बेठो नथी एम समजाय छे. परंतु अहीं एनो 'संकोच' अर्थ स्पष्ट छे : "मागतां मनमां जराये संकोच न राखशो."

(२४) प्रीतमदासकृत 'दाणलीला' (१८मी सदी) (प्रीतमदासनां कृष्णभक्तिनां पदो, संपा.अश्विनभाई पटेल, १९८९, प्रस्ता. पृ.२९ तथा ७५ पर उद्धृत अंश)मां –

दूध दहींनी ***काण*** *चलावे, छास दुर्लभ छे ब्रिजवासी.*

अहीं क्र.२४नो 'हानि, नुकसान' ए अर्थ ज संभवित लागे छे : "(कृष्ण) दहीं दूधनुं घणुं नुकसान करे छे. तेथी व्रजवासीओने छास पण दुर्लभ थई गई छे."

(२५) शामळकृत 'सूडाबहोतेरी'(१७६५)मां –

छापाना थापा करुं, गान करुं केम ***काण्य*** *?,*

गीतानां बतां करुं, हरिकीर्तनमां हाण्य.

कुलटा भगतने पोतानो संग करवा कहे छे तेनो उत्तर आपतां भगत आ प्रमाणे कहे छे. आमां 'काण्य' शब्दनो शो अर्थ करवो ते जरा कोयडो छे. ए तो स्पष्ट छे के कुलटानुं सूचन भगतने हरिकीर्तनमां हानि समान लागे छे. एमां 'छापा'ना 'थापा', 'गान'नी 'काण्य', 'गीता'नां 'बतां' करवा जेवुं एमने लागे छे. 'थापा' 'बतां' ए शब्दो द्वारा अहीं शुं अभिप्रेत छे ते स्पष्ट नथी, पण कंईक विपरीत स्थिति उद्दिष्ट छे ए तो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समजाय छे. आ रीते विचारीए त्यारे 'गान'नी सामे 'काण्य' एटले 'रोककळ' एवो अर्थ ज बेसे. मध्यकाळमां आ अर्थमां 'काण्य' शब्दनो आ विरल प्रयोग जणाय छे.

(२६) छेल्ले एक प्राचीन दुहो जोईए :

गुण मोटा, दिन नान्हडा, राति अंधारि जाणि,
कागल तेहू सांकडा, तिणि लखतां हुइ ***कांणि.***

अहीं 'काणि'नो 'लज्जा' ए अर्थ अत्यंत स्पष्ट छे – "तारा गुण मोटा, ज्यारे दिवस टूंका छे; वळी अंधारी रात छे अने कागळ सांकडो छे तेथी लखतां मने लज्जा आवे छे – लखतां हुं लाजुं छुं एम तुं जाणजे."

जोई शकाय छे के गुजरातीमां 'काणि'ना 'शरम, संकोच' ए अर्थनी घणी व्यापक अने दीर्घ परंपरा छे – एनो दाखलो तो आपणने छेक अपभ्रंश-काळमां जड्यो छे. परंतु गुजरातीमांये तेरमी सदीथी सत्तरमी सदी सुधीना दाखला जडे छे. पछी पण एना दाखला हशे ज, पण आपणी पासे एनी नोंध नथी. जैन कविओनी कृतिओमां तो 'काणि' शब्द आ अर्थमां ज जोवा मळे छे ने राजस्थानी कोश एनी घणी अर्थछाया नोंधे छे, तेथी गुजराती-राजस्थानीनो ए सहियारो वारसो होवानुं, राजस्थानमां एनी सविशेष व्यापकता होवानुं समजाय छे.

आपणे त्यां 'काणि' शब्दना बीजा अर्थो लेवाया छे त्यां केटलेक ठेकाणे 'शरम, संकोच'नो अर्थ सरळताथी बेसे छे अने लेवायेला अर्थो छोडावाना थाय छे. 'चिंता', 'शंका' ए अर्थो संदर्भमां नभे छे, परंतु 'शरम, संकोच'नो अर्थ बेसतो होवाथी ए अर्थो पण छोडवा जेवा लेखाय. 'कष्ट, पीडा, दुःख' ए अर्थने अवकाश आपे एवां बेत्रण उदाहरणो सांपडे छे, पण ए अर्थने हजु विशेष समर्थननी आवश्यकता छे एम लागे छे. अखानी पंक्ति जेवा कोई प्रयोग हजु विशेषपणे कोयडारूप रहे छे. अत्यारना अर्थमां 'काण' शब्दनो प्रयोग आ नोंधमां आव्यो नथी, पण ए तो नोंध माटे जे जातना सूचीकरणनी मदद लेवाई छे तेनी मर्यादा होई शके. ए सूचीकरणमां अत्यारना अर्थना प्रयोगो नोंधाया नथी. अपभ्रंशनो 'वेर' के 'झघडो' ए अर्थ गुजराती सुधी पहोंच्यो नथी.

व्युत्पत्ति

'काण' के 'काणि' शब्दनी व्युत्पत्ति शामांथी ते विशे कशो ज प्रकाश पडतो नथी. *उक्तिर*ए एनो 'कानिः' एवो संस्कृत पर्याय आपेलो, परंतु संस्कृतमां आवो कोई शब्द ज नथी, एटले ए कृत्रिम संस्कृतीकरण होवानुं नक्की थाय छे. आ उपरांत 'कथानिका' के 'कदनी'मांथी 'काणि'नी व्युत्पत्ति केटलाक विद्वानोए सूचवी छे, पण ध्वनिफेर, अर्थसंगति वगेरेनी दृष्टिए एमां भाग्ये ज कंई प्रतीतिकर छे. आथी हाल

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो 'काणि' शब्दने, केटलाक विद्वानोए कह्यो छे तेम, 'देश्य' शब्द – अज्ञात मूळनो शब्द ज लेखवो रह्यो. 'वेर' के 'झघडा'ना अर्थनो, 'शरम, संकोच'ना अर्थनो अने 'पीडा, कष्ट' तथा 'रोककळ' (आ बंने अर्थो संकळायेला हशे ?)ना अर्थनो – त्रणे 'काणि', 'काण' जुदा हशे के एक ज अने एक ज होय तो आ अर्थविकास केम समजाववो ए बधो कोयडो ज छे.

[गुजरात, दीपोत्सवी अंक, सं.२०४५]



Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षण निधिनां प्रकाशनो

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरितमहाकाव्य–ग्रंथ १	संपा. मुनि चरणविजयजी	१९८७
ग्रंथ २ (पुनर्मुद्रण)	संपा. मुनि चरणविजयजी	१९८७
Studies in Deśya Prakrit	H. C. Bhayani	1988
हैमसमीक्षा (पुनर्मुद्रण)	मधुसूदन मोदी	१९८९
हैम स्वाध्यायपोथी (डायरी)	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९
हेमचन्द्राचार्यकृत अपभ्रंश व्याकरण (सिद्धहैमगत) (द्वितीय संस्करण)	संपा. हरिवल्लभ भायाणी	१९९३
विजयपालकृत द्रौपदीस्वयंवर (पुनर्मुद्रण)	आद्य संपा. जिनविजयजी मुनि संपा. शान्तिप्रसाद पंड्या	१९९३
कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य स्मरणिका		१९९३
अनुसंधान–१ (अनियतकालिक)		१९९३
अनुसंधान–२–३		१९९४
अनुसंधान–४		१९९५
अपभ्रंश व्याकरण (हिन्दी अनुवाद)	प्रा. बिन्दु भट्ट	१९९४
प्रबंधचतुष्टय	संपा. रमणीक शाह	१९९४
हैम संगोष्ठी	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९९५
आवश्यक-चूर्णि	संपा. मुनि पुण्यविजयजी मुद्रणाधीन सहायक रूपेन्द्रकुमार पगारिया	

*

नेमिनंदन ग्रंथमालानां हमणांनां प्रकाशन

अलंकारनेमि	मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९
हेमचन्द्रावार्यकृत महादेवबत्रीशी-स्तोत्र	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९
श्रीजीवसमास-प्रकरण टीकाकार मलधारी हेमचन्द्रसूरि	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९९४
हेमचन्द्रसूरि (गुजराती अनुवाद)	चं. ना. शिनोरवाला	१९९४
सूरीश्वर अने सम्राट (पुनर्मुद्रण)	मुनि विद्याविजयजी	१९९४

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ कोशनी विशिष्टताओ

* एमां मध्यकालीन गुजराती कृतिओना ६६ संपादनग्रंथोमां अपायेला ७१ शब्दकोशो संकलित करेला छे. आशरे २०,००० जेटला शब्दो एमां समाविष्ट छे.
* शब्दो साथे ए ज्यांथी लेवामां आव्या छे ए आधारग्रंथोनो निर्देश करवामां आव्यो छे, जेथी अभ्यासीओने मूळ शब्दप्रयोग सुधी पहोंचवानी सगवड मळे छे.
* मूळ ग्रंथमां अपायेला शब्दार्थो एम ने एम स्वीकारी लेवामां नथी आव्या पण जरूर जणाई त्यां शब्दना प्रयोगस्थान सुधी जई शब्दार्थोने चकास्या छे ने एमां आवश्यक शुद्धि करी छे. आ शुद्धि माटे संपादके संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशी, गुजराती, राजस्थानी, हिंदी, फारसी, उर्दू शब्दकोशो तेमज अन्य संदर्भग्रंथोनी सहाय लीधी छे. ए रीते आ मात्र संकलित कोश नथी, संशोधित कोश छे. एने प्रमाणभूत बनाववानी सर्व कोशिश करवामां आवी छे.
* कोई वार मूळना भ्रष्ट पाठ सुधारीने नवा शब्दने प्रकाशमां लाववानुं पण बन्युं छे.
* संस्कृतादि भाषामांथी शब्दमूळ दर्शाववामां आव्युं छे ते उपरांत राजस्थानी-हिंदी-मराठी वगेरे भाषाओना शब्दोनी समान्तरता दर्शाववामां आवी छे.
* आ ग्रंथ मध्यकालीन गुजराती भाषाना ज नहीं पण मध्यकालीन राजस्थानी अने हिंदी भाषाना अभ्यासमां पण उपकारक बनी शके एम छे. त्रणे भाषानो केटलोक समान शब्दवारसो छे ज.

*

एक नूतन शिखरनुं आरोहण

मित्र जयंत कोठारी एक पीढ अनें खडतल पर्वतारोहक छे... जयंतभाईए 'गुजराती साहित्यकोश (मध्यकालीन)' अने 'जैन गूर्जर कविओ'नुं नवसंस्करण – एवां बे उन्नत शिखरो सर कर्या पछी हवे आ त्रीजुं शिखर पण सर कर्युं छे.

*

जयंतभाईए मात्र शब्दसूचिओनुं संकलन ज नथी कर्युं. एम करे तो जयंतभाई शाना ? तेमणे ज्यांज्यां अर्थ वगेरे बाबत शंकास्पद जणाई त्यांत्यां चोकसाई अने शुद्धि करी छे, अने ते माटे अनेक कोशो उथलाव्या छे, अनेक मूळ कृतिओ के संलग्न कृतिओने तपासीने यथाशक्य प्रामाण्य साधवानी मथामण करी छे. आ कोशथी मूळ कृतिओने समजवामां जे सहाय मळशे, ते उपरांत घणी अर्थघटननी गूंचो पण ऊकलशे, अने तुलनात्मक सामग्री गुजराती शब्दोना इतिहास माटे पण सहायभूत बनशे... दृढ संकल्पबळे आवा कोशनुं परिश्रमसाध्य काम पार पाडवा माटे 'धन्यवाद' शब्द तो घणो मोळो लागे... जयंतभाईए जे नानो छोड उछेर्यो छे तेमांथी आगळ जतां वृक्ष बने एवी आशा अने श्रद्धा आपणे केम न राखीए ?

हरिवल्लभ भायाणी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org